मनोरमा इयर बुक 2001

मलयाला मनोरमा

कोट्टयम, कोझिकोड, कोच्चि, तिरुवनंतपुरम, पालक्काड, कण्णूर, कोल्लम, त्रिशूर

मलयाला मनोरमा के प्रसार कार्यालय

मुंबई: 6ठी मंजिल, आफिस न. 7, न्यू एक्सेलयिर विल्डिंग मुंबई – 400001, फोन:– 022–2037403, फैक्स: 022 2079610, चेन्नई: यूनिट बी, हेविट्री, तीसरी मंजिल, न. 23, स्पुर्टांक रोड, इग्मोर चेन्नई – 600031, फोन: 044 8212267, 8231567, 8218689, 8218694, फैक्स: 044 88218694, नयी दिल्ली: 7ए. काशी हाउस, पहली मंजिल, कनाट प्लेस, नयी दिल्ली–110001, फोन– 011 37101661, 3314640, 3314650, फैक्स– 011 331470, कलकत्ता: 43–2बी, सुहासिनी गांगुली सरानी, कलकत्ता–700025, फोन– 033 4555962, 4556995, फैक्स– 033 4556995, हैदराबाद: न. 304, कन्कार्ड एपार्टमेंटस, सोमाजरागुडा, हैदराबाद–500082, फोन– 040 314168, 3324692, फैक्स– 040 3322970 बंगलौर: इंपायर इन्फेंट्री, न.–29, इन्फेंट्री रोड, बंगलौर–560001, फोन– 080 2867345, 2860995, 2863195, फैक्स–080 2866176, कोयंबत्तूर: तीसरी मंजिल, 385 डा. नांजप्पा रोड, कोयंबत्तूर–641018, फोन– 0422 236852, फैक्स– 236871, भोपाल: पुष्प शोभा, सी–11, हाउसिंग बोर्ड कालोनी, कोह ए फिजा भोपाल भोपाल–462001, म.प्र, लखनऊ: फ्लैट न. 314, उजाला एपार्टमेंट, सेक्टर–20, इंदा नगर, लखनऊ–226017, पटना: 608, जगत ट्रेड सेंटर, फ्रेजर रोड, पटना – 800001, फोन:– 0612–233809, चंडीगढ़: इंडियन एक्सप्रेस सोसायटी कांप्लेक्स, प. न. 18, सेक्टर – 48, चंडीगढ़–160047, फोन:– पी.पी. 646146, जयपुर: ए. 723, हरिमार्ग, मालवीय नगर, जयपुर–17, फोन:– 0141–520752 (पी.पी.)

कोट्टयम-686 001, केरल, भारत

प्रधान संपादक — के. एम. मात्यु

संपादक — मामन मात्यु

प्रबंध संपादक — फिलिप मात्यु

कार्यकारी संपादक — जेकब मात्यु

प्रभारी संपादक — के.सी. नारायणन

मुख्य उप संपादक — पाल मनालिल

वरिष्ठ उप संपादक — राजेश कालिया

उप संपादक — एस. रांगनी, बीजु मताई, विप्लव सेनगुप्ता

संपादकीय शोध — वी. कुंजि मात्यु

लेखकीय सहयोग — चंद्रभान प्रसाद, समकालीन भारत में दलित चेतना (11) ● प्रो. राम शरण जोशी, आतंकवाद और हम (25) ● आ. अवस्थी, साइबर अपराध (31) ● विष्णु नागर, प्राथमिक शिक्षा किस तरफ (39) ● हर्षदेव, नई शताब्दि में भारत में शिक्षा (43) ● शांति देव, भारतीय संगीत: ऐतिहासिक सर्वेक्षण : (49) ● वी. राधिका, भारतीय महिला (60) ● प्रो. एम.एस. स्वामीनाथन, जनता का खाद्य उत्पादन (68) ● सी. विजय राघवन एवं एस.एस. नायर, गुणसूत्र तकनीकी—एक महानतम खोज (81) ● वी. जार्ज मात्यु, प्रश्नोत्तरी, (90) ● हर्ष पांडे, शताब्दी के अवसान पर हिंदी साहित्य (218) ● वी. विजय कुमार, पिछले सौ वर्षों की प्रमुख घटनाएँ (225) ● प्रो. राजप्पन नायर, भौतिक विज्ञान में आधुनिक विकास (242) ● कृष्ण चैतन्य, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला (517) ● अलका पांडे, भारतीय साहित्य (520) ● शमशेर अहमद खान, बीसवीं सदी का बाल साहित्य (548) ● सुब्बुडु, भारतीय संगीत एवं नृत्य (551) ● डा. जयदेव तनेजा, रंगमंच (555) ● विनोद भारद्वाज, भारतीय सिनेमा (559) ● विजय कुमार, सिडनी ओलंपिक (758)

आवरण एवं सज्जा : विनोद आर. उन्नितान

मूल्य – 70 रुपये

मनोरमा इयर बुक का प्रकाशन स्वतंत्र रूप से पांच भाषाओं में होता है। हिंदी के अतिरिक्त मनोरमा इयर बुक मलयालम, अंग्रेजी, तमिल एवं बंगला में उपलब्ध है।

मलयाला मनोरमा कंपनी लिमिटेड के लिये मामन मात्यु द्वारा मलयाला मनोरमा प्रेस, कोट्टयम से संपादित, मुद्रित एवं प्रकाशित। रजिस्ट्रेशन नं. 44699/89

रेडियो खगोलिकी का जन्म अप्रत्याशित रूप से हुआ । सन् 1931 में एक अमरीकी रेडियो इंजीनियर कार्ल जेंस्की ने बेल टेलिफोन प्रयोगशाला में काम करते हुए अन्तरिक्ष से निरन्तर आ रहे एक विकिरण को देखा । यह आश्चर्यजनक बात है कि उस समय के खगोलशास्त्रियों ने इस आविष्कार पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया लेकिन एक अमरीकी रेडियो आपरेटर ग्रोते रेबर का ध्यान इस ओर गया और उसने बाह्य अन्तरिक्ष में होनेवाली घटनाओं का अध्ययन अपने आप करने की सोची । उसने लगभग दस सालों तक अकेले ही आकाश का अध्ययन किया और विकिरणों का विश्लेषण किया । सन् 1937 में उसने संसार की सबसे पहली रेडियो दूरबीन इलिनाथस में अपने घर के पिछवाड़े पर लगायी । इस दूरबीन में 31 फुट 5 इंच की वलयाकार डिश थी । सन् 1940 में उसने संसार में अपनी तरह का आकाश का पहला परिदृश्य प्रस्तुत किया । इस प्रकार रेडियो खगोलिकी का जन्म खगोलिकी की एक नई शाखा के रूप में हुआ ।

रेडियो दूरबीन कई मामलों में प्रकाश की दूरबीन जैसी है, इसमें धातु का एक परावर्त्तक लगा होता है । इस परावर्त्तक के साथ एक एंटिना भी होता है । धातु का परावर्त्तक रेडियो ऊर्जा को एकत्र करता है और उसे एंटिना पर अभिकेन्द्रित करता है। इसे फिर अपेक्षित बारम्बारिता (फ्रीक्वेंसी) पर बदला जा सकता है । एंटिना से विकिरण को एक अत्यधिक संवेदनशील रेडियो रिसीवर ग्रहण करता है और उसे रिकार्ड करता है । इसका विश्लेषण कम्प्यूटर के द्वारा किया जाता है ।

छठे दशक में उपग्रह टेक्नॉलाजी के कारण खगोल सम्बंधी खोज बहुत आगे बढ़ी । इसके पहले खगोल का अध्ययन पृथ्वी से होता था । अब उपग्रहों के कारण नक्षत्रों की घटनाओं अध्ययन वायुमंडल से ऊपर उठकर किया जाना संभव हो गया है । इस प्रकार खगोल का अध्ययन दो तरह से होने लगा है – पृथ्वी की सतह से और दूसरा वायुमंडल के ऊपर से । इससे खगोलिकी के क्षेत्र में नए–नए विशेष क्षेत्रों, एक्स–रे, अल्ट्रावायलेट, गामा रे, इन्फ्रारेड आदि का द्वार खुल गया ।

सन् 1940 में रडार खगोलिकी का तब जन्म हुआ जब हंगरी के भौतिक वैज्ञानिक जाल्टन ने चांद पर माइक्रो तरंगों की किरणों को छोड़ा और उनकी गूंज का उसने पता लगाया। यह अब रेडियो खगोलिकी का एक अंग बन गया है क्यों कि माइक्रो तरंगों को विद्युत् चुम्बकीय स्पेक्ट्रम का एक अंग माना जा सकता है ।

मन्दाकिनी या आकाशगंगा

मन्दाकिनी या आकाशगंगा तारों के विशाल पुंज हैं जो गुरुत्वाकर्षण की शक्ति से एक–दूसरे से बंधे हुए हैं । ये पुंज इतने विशाल हैं कि इन्हें भी 'प्रायद्वीप ब्रह्मांड' कहा जाता है। आकाश में मन्दाकिनी फैली हुई दिखाई देती हैं । लेकिन ये कई समूह आपस में गुंथ कर पुंज बनते है ।

जब पहली बार ब्रह्मांड में विस्फोट के बाद पदार्थों का विस्तार हुआ, आकाश में गैस से भरे खरबों प्रायद्वीप बन गए। ये गैस के प्रायद्वीप (या प्रोटो–गैलक्सी या अधिमन्दाकिनी) अपनी ही गति–विशेष से घूमने लगे। बड़ी ही मंदगति से घूमने वालों का आकार लगभग गोल रहा । शेष वलयाकार रूप में भिन्न–भिन्न लम्बाइयों के बने । इनकी लम्बाई उनके घूमने की गति पर आधारित थी । बहुत से गैस प्रायद्वीपों के घूमने की गति इतनी अधिक थी कि उनका आकार चपटी तश्तरी (डिस्क) की तरह हो गया । इन तश्तरियों के किनारों से सर्पिल भुजाएं निकली। इन तश्तरियों का केन्द्र मन्दाकिनी केन्द्र के चारों ओर वर्तुलाकार पथ में निरन्तर घूमनेवाले असंख्य आद्य–नक्षत्रों के द्वारा बना जबकि सर्पिल भुजाओं का निर्माण बहुत अधिक सूक्ष्म धूल से भरे, सामान्य आवर्तन में फंसी गैसों की धाराओं से हुआ जो सर्पिल रूप में ढल गए। इस तरह मन्दाकिनी विभिन्न आकारों और रूपों में निर्मित हुई। ज्यों–ज्यों गैसीय प्रायद्वीप स्थिर होने लगे, स्थानीय संघनन – आद्य नक्षत्रों – की प्रक्रिया मन्दाकिनी की कई बिन्दुओं में शुरु होने लगी । ये संघनन (कंडेन्सेशन) अपने ही भार के दबाव से घने गैस के गोले के रूप में संकुचित होने लगे । इस प्रकार के संकुचन के फलस्वरूप, गैसीय गोलों का तापमान धीरे–धीरे बढ़ने लगा और उनकी गरम सतह से गरम तरंग और तब दृश्यमान प्रकाश के छोटे वेवलेंग्थ निकलने लगे।

जब इन संकुचित होने वाले आद्य नक्षत्रों का केन्द्रीय वायु मंडल ज्वलनांक लगभग 10 करोड डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुंच गया, संकुचन की प्रक्रिया रुक गई, तापनाभिकीय प्रतिक्रियाएं शुरु हुई और नक्षत्रों के रूप में करोड़ों गोलों का जन्म हुआ। जब तारे निकले, पहले की ठंडी और अंधेरी आद्य मन्दाकिनी चमकीले तारों की आज की मन्दाकिनी के रूप में बदल गई।

प्रकाश की गति 300 गुना बढ़ाना संभव

अमरीका में वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि प्रकाश की सामान्य गति 186,000 मील प्रति सेकंड को तीन सौ गुना तक बढ़ाया जा सकता है। इस खोज से चौंकाने वाले नतीजे सामने आ सकते हैं। प्रकाश की गति में भारी इजाफे का अर्थ होगा कि जैसे ही प्रकाश पुंज अपनी यात्रा शुरु करेगा, वह गंतव्य पर पहुंच जाएगा। वैज्ञानिकों ने अपने अनुसंधान का विवरण अभी गोपनीय रखा है। इसे 'नेचर' में समीक्षा के लिए भेजा गया है।

नक्षत्र या तारे

गंदाकिनी का 98 प्रतिशत भाग तारों से बना है । शेष 2 प्रतिशत में *अन्तर–नक्षत्रीय या खगोलीय गैस और बहुत* ही अधिक घने रूप में छायी धूल है । तारों के बीच का सामान्य गैस–घनत्व प्रति घन सेंटीमीटर हाइड्रोजन अणु का लगभग दसवां हिस्सा है ।

तारे गुच्छों का निर्माण करते हैं । खगोल में ऐसे तारे अपवाद हैं जो अलग–थलग अकेले पड़े हों । ऐसे तारों की संख्या 25 प्रतिशत से अधिक नहीं है । युग्म तारे (तारों के जोड़े) लगभग 33 प्रतिशत हैं । शेष सभी तारे बहुसंख्यक हैं । वृश्चिक राशि का नक्षत्र ज्येष्ठा एक तारा न होकर दो हैं – युग्म तारा । ब्रह्महृदय या कैपेला और अल्फा सेन्तौरी मे प्रत्येक में तीन तारों और मिथुन या कास्टर में छह तारे हैं।

हमारे नेत्रों से जो तारे एक दिखलाई पड़ते हैं वे दूरबीन से देखने पर युग्म तारे नजर आते हैं । ये युग्म नक्षत्र–गुरुत्वाकर्षण के एक ही उभयनिष्ठ केन्द्र के चारों ओर घूमते है। ये एक दूसरे की परिभ्रमण कक्षा में एक साल से लेकर हजारों साल की लंबी अवधि तक पाये जाते हैं ।

जब नक्षत्र में हाइड्रोजन कम हो जाती है इसका बाहरी क्षेत्र फूलने लगता है और वह लाल हो जाता है । यह तारों की आयु की पहली निशानी है । ऐसे तारों को 'रक्त दानव' कहते हैं। हमारा तारा, सूर्य, आगामी 5 अरब वर्षों में ऐसा ही रक्त दानव बन जाएगा – ऐसी सभावना है ।

इनका रक्त दानव नाम एकदम सार्थक है । इनकी विमा यानी लंबाई चौड़ाई बहुत ही विशाल हैं । मिसाल के लिए आर्दा या बेटेलोगौस का व्यास लगभग 48 करोड़ किलोमीटर या सूर्य के व्यास का 350 गुना है । एक दूसरा रक्त माइरा का व्यास 64 करोड़ किलोमीटर हैं ।

प्रकाश की चमक की मात्रा में कम–ज्यादा होनेवाले तारों को चिरकांति तारा कहते हैं । इस प्रकार के तारों में प्रथम ज्ञात है डेल्टा सेफाइ जिसे सन् 1784 में बहरे और गूंगे अंग्रेज ज्योतिष विद्वान गुडरिच ने देखा था । उसने देखा कि डेल्टा सेफाइ प्रत्येक 5 दिन और 9 घंटे में अपनी चमक मे कम ज्यादा होता रहता है । ऐसे कम ज्यादा चमक वाले तारों को सेफाइड चिरकांति तारा कहा गया । ऐसे तारों में अधिक से अधिक चमक की कमी–बेशी कुछ घंटों की अवधि से लेकर *हजार दिनों या इससे अधिक की अवधि की होती है* । सामान्य तारे पर जितना ही कम चमक–मंद–चमक का चक्र होगा उतना ही अधिक प्रकाशवान वह तारा होगा ।

नये और अभिनव तारे वे हैं जिनकी कांति एकाएक दस से बीस गुना या इससे अधिक बढ़ जाती है और फिर धीरे–धीरे कम होकर सामान्य हो जाती है । दोनों तरह के तारों के बीच के फर्क को अभी ठीक से समझा नहीं जा सका है। ऐसा लगता है कि इनमें मात्रा का भेद है, जाति का नहीं । एकाएक चमक के बढ़ने का रहस्य आंशिक या पूर्ण विस्फोट में देखा गया है । नये तारों मे ऐसा लगता है कि केवल बाहरी भाग मे विस्फोट होता है, जबकि अभिनव तारों में पूरे के पूरे तारे में विस्फोट होता है। नए तारे अभिनव तारों से अधिक जल्दी उत्पन्न होते है ।

पो.सी.एफ.पावेल के शब्दों मे इस तारे की संपूर्ण संरचना खंडित हो जाती है । यह अपनी लपटों की चमक में इतना चमकने लगता है कि पहले के तीस दिनों में इसकी कांति की तीक्ष्णता हमारे 100 करोड़ सूर्य की कांति के बराबर हो जाती है

ब्लैक होल: जब किसी नक्षत्र का अंत होता है तो आश्चर्यजनक स्थितियां होती हैं। नक्षत्र का भार सूर्य के भार से तीन गुना अधिक हो जाता है। निपात होने के साथ यह सघन होता जाता है। सघनता तब तक जारी रहती है जब तक यह इतना सघन हो जाये कि कुछ भी यहां तक कि प्रकाश भी इसकी गुरुत्व से नहीं बच पाये। इस प्रकार यह अंधक्षेत्र हो जाता है और इसको देखा नहीं जा सकता।

सामान्य सापेक्षता के अनुसार पदार्थ की बाढ़ीज अंतरिक्ष में वक्राकार होती हैं। और अगर पदार्थ की बाढ़ी बहुत सघन हो जाये (टनों पदार्थ छोटी सी जगह में समाहित हो जाये) तो यह अंतरिक्ष मे गहरी अनंत खाई के समान हो जाता है जिसे ब्लैक होल कहते हैं।

गुरुत्व तरंगें: गुरुत्व तरंगें तब उत्पन्न होती हैं जब अंतरिक्ष मे बुरी तरह से खलबली मचती है (जब कोई नक्षत्र ढहता है)। इस प्रकार के भीमकाय हलचलों से अंतरिक्ष समय की रबड़ प्रकार की मैट के साथ सभी दिशाओ में गुरुत्व उर्जा को छिन्न–भिन्न कर देती है। यह तरंगें केवल अंतरिक्ष में ही यात्रा नहीं करती है। जिस प्रकार से ध्वनि प्रकाश से भिन्न प्रकार से संकेत देती है उसी प्रकार अंतरिक्ष समय में कंपन इलेक्ट्रोमैग्नेटिक स्पेक्ट्रम द्वारा दिये जाने वाले संकेतों से पूरी तरह से अलग होते है। सुपरनोवा विस्फोट के केंद्र जहां प्रकाश के फोटान बिखर कर विलीन हो जाते है को भी यह तरंगें पीछे छोड़ देती हैं

ब्रह्मांड की आयु: ब्रह्मांड के वृहद स्तर की बनावट के अध्ययन का विज्ञान कास्मोलोजी कहलाता है। इस की शुरुवात बीसवीं शती में हुई जब 1915 मे आइंस्टीन ने सापेक्षता का सामान्य सिद्धांत का प्रतिपादित किया। इस सिद्धांत के द्वारा ब्रह्मांड की गणितीय स्वरूप समझा जा सकता है। 1930 एवं 1940 में एडविन हब्ल का आंकलन बहुत कम 1.8 बिलियन वर्ष की आयु का था, लेकिन वर्तमान आंकलन के अनुसार ब्रह्मांड की आयु 13 बिलियन वर्ष है। खगोलिकी की दुनिया में कई वर्ष लग गये हब्ल का उत्तराधिकारी ढूंढने मे जो हब्ल द्वारा किये गये परिगणन में अंकीय गलती को ढूंढ सके। हब्ल द्वारा परिगणन के बाद खगोलकों द्वारा किये गये परीक्षणों से भिन्न–भिन्न मत सामने आये।

1990 में हब्ल दूरबीन का प्रक्षेपण का मुख्य उद्देश्य हब्ल के परिगणन की तथ्यता का पता करना था। चूंकि स्थल पर स्थापित दूरबीनों से उतनी उत्कृष्टता की अपेक्षा नहीं की जा सकती जितनी अंतरिक्ष में स्थापित दूरबीन से जिससे छि छोटी से छोटी वस्तु भी दिखने मे कोई समस्या नहीं होती।

हब्ल ने एक अति विशाल काले छिद्र की खोज की है जो सूर्य की अपेक्षा कम से कम 300 मिलियन गुना बड़ा है।

हब्ल दूरबीन की खोजों के विश्लेषण से पता चलता है कि ब्रह्मांड अभी काफी युवा है। यह केवल 8 बिलियन वर्ष पुराना है।

अन्तरिक्ष की खोज

अंतरिक्ष अभियान अब चार दशक पुराना है । इसका आरंभ रूस के स्पुतनिक और अमरीका के एक्स्प्लोरर से हुआ है । 1969 में मानव ने चाद की धरती पर पैर रखे। इसके बाद आए अन्तरिक्ष केन्द्र (स्पेस स्टेशन) जिन्हें स्काइलैब और सैल्यूट कहा गया । आदमी ने अन्तरिक्ष में चलना और नष्टप्राय उपग्रहों की मरम्मत करना सीख लिया है ।

संयुक्त राज्य के 1989 में वोयजर के 12 वर्षीय नेप्ट्यून तक की यात्रा ने इस दौरान अनेक ग्रहों और उनके चंद्रमाओं के बारे में अनेक नई खोजें की हैं। .

अंतरिक्ष यात्रा ने ब्रह्मांड की खोज के नये आयाम दिये। खगोलज्ञ अब चंद्रमा और अन्य ग्रहों के करीब से फोटो खींच सकते हैं, जबकि पहले पृथ्वी के घने वायुमंडल को चीरते हुए धुंधले रूप में यह दिखायी पड़ते थे। हालांकि 2000 मीटर ऊंचे पहाड़ों पर वेधशालाओं की स्थापना की जा चुकी है फिर भी प्राप्त चित्र या अवलोकन स्पष्ट नहीं हो सकता। केवल अंतरिक्ष में जाकर ही स्पष्ट अवलोकन किया जा सकता है और साथ ही विकिरण जैसे एक्स रे या अल्ट्रावायलेट किरणों का अध्ययन किया जा सकता है जिन्हे हमारा वातावरण पृथ्वी पर नहीं आने देता है। अन्तरिक्ष युग, 4 अक्टूबर 1957 से शुरू हुआ जब रूस ने स्पुतनिक-1 और एक महीने बाद लाइका नामक कुतिया के साथ स्पुतनिक-2 छोड़ा । कुतिया के हृदय की धड़कन, उसका तापमान और अन्य प्रतिक्रियाओं की जिनको पृथ्वी पर रेडियो तरंगों द्वारा एकत्रित किया गया के अध्ययन से यह पता लगा कि अंतरिक्ष में बहुत देर तक आदमी भी जीवित रह सकता है।

31 जनवरी, 1958 तक अमरीकी प्रथम उपग्रह एक्स्प्लोरर नहीं छोड़ा गया लेकिन इसके उपकरणों ने अन्तरिक्ष युग की प्रथम महत्वपूर्ण खोज की थी । वह थी पृथ्वी के चारों ओर वेन एलेन विकिरण बेल्ट जहां पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र में सूर्य से इलेक्ट्रान और प्रोटान फंस जाते हैं । ठीक इसके बाद चन्दमा तथा अन्य ग्रहों के अभियान पर उपग्रह भेजे गए जिन्होंने रास्ते में ही सूर्य से निकलने वाले उप-आणविक कणों की सौर वायु का पता लगाया ।

अक्टूबर 1959 में रूसी लूना-3 से प्राप्त चित्रों के द्वारा चन्दमा का दूर रहने वाला भाग मानव जाति को पहली बार देखने को मिला । अमरीकी मेरिनर-2 ने सन् 1962 में शुक्र के पास से गुजरते हुए उसके उच्च तापमान और घूमने की उलटी दिशा -- इन दोनों बातों की पुष्टि की । सन् 1965 में मेरिनर-4 ने मंगल पर बने गढ़ों के उल्लेखनीय चित्र भेज कर इस तथ्य को प्रकट किया । अन्तरिक्ष अभियान के आरंभिक कार्य के बाद के ग्रह संबंधी अभियानों ने विस्तार दिया और सुधार किया । इसके परिणाम स्वरूप सुदूर नियन्त्रण (रिमोट कंट्रोल) द्वारा जीवन की संभावना की खोज के लिए चन्दमा शुक्र और मगल में उपग्रह उतारे गए इस शृंखला मे वोयेजर 1, 2 की अंतरिक्ष यात्रा ने ब्रह्मांड के बारे में वैज्ञानिकों को नये विचार प्रतिपादित करनें में मदद की है।

सौर्य कियाकलापों के अध्ययन के लिये सूर्य का करीब से अध्ययन किया जा रहा है। बृहस्पति और इसके आगे की भी अंतरिक्ष यात्रायें की जा रही हैं। वैज्ञानिकों की योजना है कि सौर्य प्रणाली में आश्चर्यजनक धूमकेतुओं का गहन अध्ययन किया जाये।

अंतरिक्ष युग के पहले 23 वर्षों में मानव की अंतरिक्ष यात्रा 3 प्रतिशत रही इस दौरान लगभग 2400 अंतरिक्ष यान भेजे गये अन्तरिक्ष में यात्रा करने वाला प्रथम मानव रूसी व्यक्ति यूरी गैगरीन था जिसने अप्रैल 12, 1961 को पृथ्वी की एक परिक्रमा लगाई । बाद में रूसी अन्तरिक्ष यात्री जिनमें महिला अन्तरिक्ष यात्री महिला वेलंतीन तेरशकोव भी थीं (जून

अंतरिक्षीय तूफान

मौसम की भविष्यवाणी के द्वारा अगर आप मौसम के मिजाज को जानने के लिये उत्सुक रहते हैं तो कुछ सदमे के लिये तैयार हो जाइये। हमारी उपग्रहों पर बढ़ती निर्भरता पृथ्वी के मौसम पर विपरीत प्रभाव डाल रही है। मोबाइल फोन संप्रेषण, प्रसारण, इलेक्ट्रानिक मानचित्र, पर्यावरणीय मानिटरिंग यहां तक की मौसम की साधारण जानकारी पाने के लिये हम इन पर निर्भर हो गये हैं। यह बात दीगर है कि अंतरिक्ष से पृथ्वी पर आने वाली किसी भी विद्युत-चुम्बकीय सक्रियता की मार सबसे पहले इन्ही को झेलनी पड़ती है।

सबसे बड़ी समस्या सूर्य पैदा करता है। बावजूद इसके कि सूर्य पृथ्वी से 9.3 करोड़ मील की दूरी पर है लेकिन सघन गैस का यह गोला गह हमारे सौरमंडल की सबसे बड़ी परमाणु भट्टी है। यह खतरनाक कणों का हमेशा उत्सर्जन करता रहता है जिसे सौर वायु कहा जाता है।

स्थिति तब विषम होती है जबसूर्य की सतह विस्फोट के बाद जलती है तब यह उच्च ऊर्जा के कण सैकड़ो मील प्रति सेकेंड की रफ्तार से पृथ्वी की विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र से टकराते है। फलस्वरूप बड़े स्तर पर विद्युतीय गड़बड़ी हो जाती है जिसे जियोमैगनेटिक तूफान कहा जाता है।

जब यह कण सूर्य की चुम्बकीय क्षेत्र अपने साथ लेकर पृथ्वी के ऊपरी वातावरण में पंहुचते हैं तब पृथ्वी के विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र में उतार-चढ़ाव बन जाता है। यह उतार-चढ़ाव बिजली की तारों के द्वारा ट्रांसफार्मरों के फुंकने का एक कारण बन जाता है।

क्यूबेक में मार्च 1989 मे अंतरिक्ष में एक बड़े तूफान के कारण वहां की पावर ग्रिड पर प्रभाव पड़ा। 9 घंटे तक वहां की 60 लाख आबादी को संपूर्ण अंधकार में रहना पड़ा। सूर्य की यह क्रियाशीलता का चक्र 11 वर्षीय होता है, इस प्रकार विश्व की समस्त इलेक्ट्रिक कंपनियां इस स्थिति से निपटने के लिये अपने को तैयार कर रही हैं।

16, 1963) कक्ष में 5 दिनों तक रहीं। लघु अन्तरिक्ष यान 'मरकुरी' के द्वारा अमरीकी अन्तरिक्ष यात्रियों ने अत्यंत साधारण सामान्य उड़ानें भरीं। लेकिन सन् 1965 में दो व्यक्तियों वाले जेमिनी की उड़ान से एक श्रृंखला की शुरुआत हुई जिससे उन्होंने इस क्षेत्र में रूस के नेतृत्व को छीन लिया। जेमिनी कार्यक्रम के अन्तरिक्ष यात्रियों के दल ने चन्द्रमा पर आगामी अपोलो अभियान के लिए जोखिम से पूर्ण कलाबाजियों, राकिंग प्रक्रियाओं और अन्तरिक्ष में चलने का अभ्यास किया।

अपोलो के चन्द्रमा पर उतरने के संबंध में खास बात उसका चार पैरों वाला 'लूनर माड्ल' जिसमे दो व्यक्ति चांद की धरती को छू सकते थे। 21 जुलाई 1969 को चन्द्रमा पर मानव का पहला कदम अपोलो 11 से नील आर्मस्ट्रॉंग और एडविन एल्ड्रिन ने रखा। अपोलो कार्यक्रम के दौरान 12 अमेरिकियों ने चन्द्रमा पर कदम रखा। वे 3800 कि. ग्रा. भार की चट्टाने और मिट्टी ले आए। चांद से लाए गए इन नमूनों से और सतह पर और चक्कर काटते हुए मूल उपग्रह के द्वारा किए गए वैज्ञानिक परीक्षणों से वैज्ञानिकों को अन्तरिक्ष में हमारे सबसे निकट के पड़ोसी के विस्तृत चित्र बनाने में बड़ी मदद मिली है।

यद्यपि अब चांद की यात्रा की योजना नहीं बनाई जा रही है, तथापि आदमी चांद पर लौटेंगे ही। संभवत: वहाँ वे अन्टार्कटिका की तरह छोटे वैज्ञानिक आधार केन्द्र बनाएंगे जहां से भूवैज्ञानिक चांद का अध्ययन करेंगे और खगोलशास्त्री आकाश का पर्यवेक्षण। इस प्रकार के 'उपनिवेश' धातुओं के लिए चन्द्रमा के पटल में खुदाई का काम भी करेंगे।

मानव की मंगल यात्रा की योजना बन रही है हांलांकि यह अगली शती के प्रारम्भ से पूरी नहीं होगी मंगल तक आने-जाने में एक वर्ष से अधिक का समय लगेगा और 6 चालक दो अंतरिक्ष यानों में यात्रा करेंगें। संभवता मंगल यात्रा संयुक्त रूप से आयोजित की जायेगी।

अमरीकन स्काइलैब अन्तरिक्ष केन्द्र और इसके रूसी प्रतिरूप सेल्युत में अन्तरिक्ष यात्रियों ने पृथ्वी के संसाधनों के सर्वेक्षण कार्य का और उपग्रहों द्वारा प्राप्त खगोलीय प्रेक्षणों का विस्तार करना शुरु कर दिया है। स्काईलैब और रूस के सेल्यूत और मिर के चालक दल ने फोटोग्राफ्स और चुम्बकीय टेप से अंतरिक्ष और पृथ्वी के स्रोतों का गहन अध्ययन किया। वे अपने साथ 72 कि.मी. (45 मील) चुम्बकीय टेप जिसमें कई यांत्रिक परिणाम संग्रह थे,

सूर्य का 'छोटा भाई'

वैज्ञानिकों ने एक तारा खोज निकाला है जिसे सूर्य जैसा भी कहा जा सकता है। भूरे रंग के तथा आकार में छोटे इस तारे की परिक्रमा करने की कक्षा इस तरह की है कि यह किसी भी समय कभी भी पृथ्वी पर भी कहर बरपा सकता है।

अंतरिक्ष वैज्ञानिकों ने इस तारे को नेमेसिस नाम दिया है। यह सूर्य के चारों ओर एक विशालकाय कक्षा में चक्कर लगाता है। इस कक्षा का आकार इतना विशाल है कि इसे प्रकाश वर्ष में नापा जाता है। प्रकाश वर्ष वह दूरी है जो प्रकाश की किरण एक वर्ष में तय कर सकती है। यह लगभग 6000 अरब मील के बराबर होती है।

हर 2.60 करोड़ साल बाद सूर्य का यह तारा हमारे सौर मंडल में महज एक प्रकाश वर्ष की दूरी पर होता है। यहां पर ओर्ट क्लाउड नामक एक क्षेत्र है जहां ग्रहों के निर्माण के बाद का बचा मलवा पड़ा है। यह मलवा बेहद विशाल और भारी मात्रा में है। वैज्ञानिकों को आशंका है कि नेमेसिस के प्रभाव से क्लाउड में तबाही मच सकती है व मलबे के कण ग्रहों की ओर रूख कर सकते हैं।

वैज्ञानिकों में यह जिज्ञासा काफी समय से थी कि क्या सूर्य का कोई छोटा साथी भी है। इस काम में हाल ही में वैज्ञानिकों के दो दलों को सफलता मिली। अमरीका के लुसियाना विश्वविद्यालय में भौतिकी के प्रोफेसर जोन मेट्स के नेतृत्व में वैज्ञानिकों के पहले दल ने इस बात की पुष्टि की है कि यह छोटा भूरा तारा ही सूर्य का साथी है। यह इतना बड़ा हो ही नहीं पाया कि चमक सके।

वैज्ञानिकों ने ओर्ट क्लाउड से 82 धूमकेतुओं का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि ये सभी वृहस्पति ग्रह से कहीं बड़े आकार के किसी तारे के गुरुत्व बल से कई बार प्रभावित हुए होंगे। इस तारे की सूर्य से दूरी पृथ्वी की सूर्य से दूरी की 25,000 गुना रही होगी। मेट्स के मुताबिक सौरमंडल से नेमेसिस की दूरी इतनी अधिक है कि इसका ग्रहों पर तो सीधा प्रभाव नहीं पड़ेगा लेकिन वह धूमकेतुओं को सौर मंडल की आरे आने के लिए प्रभावित कर सकता है।

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रोफसेर रिचर्ड मुलर ने अपोलो-14 द्वारा चंद्रमा से लाए गए चट्टानों के नमूनों की जांच की उनके द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में कहा गया है कि चंद्रमा में किसी तरह की सुरक्षा परत न होने का मतलब है कि इसके 4.5 अरब साल के इतिहास में कई बार भीषण अंतरिक्षीय बमबारी होती रही होगी।

उनके अनुसार नमूनों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि चंद्रमा पर इस तरह की बमबारी होती रही है। वे इसका कारण ओर्ट क्लाउड का किसी भारी आकार के तारे से प्रभावित होना बताते हैं। उनके मुताबिक इस तारे के कारण धूमकेतु अपनी स्थायी कक्षा से बाहर आ जाते हैं। वे इस संभावना से भी इनकार नहीं करते हैं कि ये धूमकेतु पृथ्वी पर भी अपना कहर बरपा सकते हैं।

मुलर व अन्य वैज्ञानिकों का मानना है कि यह भूरा तारा सूर्य का एक चक्कर लगाने में करीब 2.6 करोड़ साल लगाता है। कुछ वैज्ञानिक यह बात पहले ही कह चुके हैं कि पृथ्वी भगती है। उनके मुताबिक इस दौरान पृथ्वी पर धूमकेतुओं का हमला होता है। करीब 6.5 करोड़ [illegible] पहले संभवत: इसी तरह की घटना [illegible] सफाया हो गया था।

संयुक्त राज्य अमरीका और रूस दोनों ने ही 1993 में अपना अंतरिक्ष अभियान जारी रखा । अमरीकी अंतरिक्ष यान शटल डिस्कवरी एवं एंडेवर वैज्ञानिक उपग्रह भेजने में व्यस्त रहे। नासा द्वारा मंगल की जानकारी एवं खोज के लिये सितंबर 1992 को भेजे गये अंतरिक्ष यान ने अगस्त 1993 में 5.8 कि.मी. की दूरी से पृथ्वी सतह की पहली फोटो भेजी ।

11 देशों की संयुक्त यूरोपियन स्पेस एजेंसी सफलतापूर्वक कोरोउ, फ्रेंच गयाना से अपने एरियन राकेट से उपग्रहों का प्रक्षेपण कर रही है । अगस्त 1989 में यहां से विश्व की पहली अंतरिक्ष दूरबीन हिपारकस का प्रक्षेपण किया गया था।

चीन ने 14 अगस्त 1992 को आस्ट्रेलियन दूर संचार उपग्रह ओपटस बी-1 को अंतरिक्ष में स्थापित कर अपने को व्यवसायिक अंतरिक्ष बाजार के देशों में सम्मिलित कराया ।

भारत ने भी देश में निर्मित बहुउद्देशीय इन्सेट-2 ए को 10 जुलाई 1992 और इनसेट 2-बी को 23 जुलाई 1993 को युरोपियन स्पेस एजेंसी के एरियन राकेट द्वारा अंतरिक्ष में भेजा।

12 अप्रैल 1981 को मानव के अंतरिक्ष में प्रथम यात्रा की 20 वीं वर्ष गांठ के दिन पहला स्पेस शटल 'कोलम्बिया' कक्ष में पहुंचा । अन्तरिक्ष उड़ानों और अनुसंधानों के क्षेत्र में शटल कोलम्बिया, चैलेंजर, डिस्कवरी और एटलांटिस ने कई प्रथम स्थान प्राप्त किए । शटल चैलेंजर ने प्रथम अमरीकी महिला सोली राइड को 18 जून 1983 में अन्तरिक्ष की यात्रा कराई ।अगस्त 30, 1983 को पहली रात्रि उड़ान में अमरीका के पहले नीग्रो गुई एस. ल्यूफोर्ड ने अन्तरिक्ष डाक्टर विलियम थार्न्टन की आंखों के सामने कई अन्तरिक्ष व्यायामों का प्रदर्शन किया ।

नवम्बर 1984 में शटल ने दो खराब हुए उपग्रहों – पल्पा बी 2 और वेस्टर 6 की मरम्मत करने में सफलता पाई । इन उपग्रहों को फिर से काम में लाया जा सकता है । अप्रैल 1984 में शटल ने उपग्रह सोलर मैक्स की मरम्मत और पुनर्जीवन का कार्य सफलता से किया । इस ऐतिहासिक कार्य के लिए अन्तरिक्ष यात्रियों को अपने यान से बाहर निकलना पड़ा और 6 घंटे 44 मिनट अन्तरिक्ष में चलना पड़ा ।

सोवियत रूस ने 20 फरवरी 1986 को मिर नामक तीसरी जेनरेशन की नयी अंतरिक्ष प्रयोगशाला को कजाकिस्तान में बैकानूर कास्मोड्रोम से अंतरिक्ष में छोड़ा । इस प्रकार यह अप्रैल 1982 से पृथ्वी के चारों ओर चक्कर काट रहे सेल्यूट-7 का साथी हो गया । मिर माड्यूलर केन्द्र है और इसमें एक ही समय कई अंतरिक्ष यान ठहर सकते हैं । सोवियत संघ ने कई सोयूज यान मिर और सल्यूट भेजे। चालक दल ने बाद में सल्यूट से मिर और मिर से सल्यूट की यात्रा अंतरिक्ष में तैर कर की । दोनो अंतरिक्ष केन्द्र एक दूसरे से 3000 किलोमीटर की दूरी पर पृथ्वी का चक्कर काट रहे हैं ।

उड़ान के 75 सेकेंड बाद 29 जनवरी 1986 को अमरीकी उपग्रहीय कार्यक्रमों को एक धक्का लगा जब उनका स्पेस शटल चैलेंजर अन्तरिक्ष में आधी दूर पर ही फट गया। छह अन्तरिक्ष यात्री और एक स्कूल अध्यापिका क्रिस्टा मारे गए।

चैलेंजर दुर्घटना न केवल अमरीका के लिए बल्कि भारत समेत दूसरे देशों के लिए भी चिंता का विषय थी । भारत ने बहुउद्देशीय उपग्रहों का अमरीकी शटलों के द्वारा छोड़े जाने का कार्यक्रम बनाया था । बावजूद इसके अमरीका फिर से अंतरिक्ष दौड़ में शामिल हो गया । 29 सितम्बर 1988 को केप कौनावेरल से अंतरिक्ष शटल 'डिस्कवरी' का प्रक्षेपण किया गया । मार्च 1989 में अंतरिक्ष यान एटलांटिस 1300 मिलयन कि.मी. की वरुण यात्रा पर भेजा गया ।

सोवियत रूस ने इसी प्रकार का बुरान नामक अंतरिक्ष यान का सितम्बर 1988 में प्रक्षेपण किया जो बहु-उद्देशीय परिवहन प्रणाली – इनर्जिया के लक्ष्य को सफलतापूर्वक पूरा कर के पृथ्वी पर लौट आया ।

9 अक्टूबर 1990 को अमरीका ने अंतरिक्ष वैज्ञानिक यान यूलीसस को सूर्य के ध्रुवीय क्षेत्र के अध्ययन के लिये भेजा । यूरोपीय संकाय, चीन, जापान, भारत और ब्राजील भी अपने अन्तरिक्ष कार्यक्रम में आगे बढ़ रहे हैं ।

रूस ने अंतरिक्ष यात्रियों के भेजने का क्रम जारी रखा। दो रूसी अंतरिक्ष यात्रियों ने अंतरिक्ष में 'मिर' स्टेशन पर 366 दिन रह कर विश्व कीर्तिमान बनाया। इसके पूर्व अमरीकी अंतरिक्ष यात्री 1973-74 में 83 दिनों तक रहे थे। रूस व अमरीका ने 1993 में अंतरिक्ष कार्यक्रम जारी रखे। अमरीका अंतरिक्ष यान 'डिस्करी' व एंडेपर उपग्रहों को अंतरिक्ष में स्थापित करने में व्यस्त रहे। 'नासा' की मंगल खोज सितंबर 1992 से जारी है। अगस्त 1993 में पहली बार इसने मंगल की सतह के करीब से फोटो भेजी थी। इस समय यह मंगल की सतह से 5.8 मिलयन किलोमीटर की दूरी पर था।

(भारत के अन्तरिक्ष कार्यक्रम के लिए – देखें – भारत)

भारत भी दूसरे ग्रहों में जीवन की खोज करेगा

भारतीय वैज्ञानिक पृथ्वी से इतर ब्रहमांड में जीवन की खोज करने के लिए एक अनूठी परियोजना शुरू कर रहे हैं। सुप्रसिद्ध खगोल भौतिकशास्त्री एवं 'इंटर यूनिवर्सिटी सेंटर फोर एस्ट्रोनोमी एंड एस्ट्रोफिजिक्स' के निदेशक जयंत नार्लीकर ने बताया कि इस परियोजना के तहत अक्टूबर माह में हैदराबाद से गुब्बारे उड़ाए जाएंगे। ये गुब्बारे धरती से 15 से लेकर 35 किलोमीटर तक की ऊंचाइयों पर वायुमंडल के विभिन्न स्तरों की हवा के नमूने इकट्ठे करेंगे।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन 'इसरो' और कई अन्य संस्थान यह परियोजना प्रायोजित कर रहे हैं।

हवा के इन नमूनों ने सूक्ष्म जीवों की उपस्थिति और मात्रा का पता लगाने के लिए भारत और ब्रिटेन के प्रयोगशालाओं में उनका विश्लेषण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वायुमंडल की ऊपरी सतह में अधिक मात्रा में बैक्टीरिया होने पर यह कहा जा सकता है कि वे दूसरे ग्रह से आए होंगे।

परियोजना फ्रेड होयल और चन्द्र विक्रम सिन्हा के इस सिद्धांत पर आधारित है कि बैक्टीरिया दूसरे ग्रहों से धूमकेतु द्वारा आरोपित किए गए हैं। डा. नार्लीकर ने बताय कि यह माना गया है कि धूमकेतु अपने साथ हिमकृत सूक्ष्म जीवों को लाए। जब वे सूर्य के निकट पहुंचे, तो हिमद्रवित बैक्टीरिया वायुमंडल में चले गए।

सौर मंडल

सौर मंडल का केन्द्र सूर्य में स्थित है । सूर्य नौ ग्रहों के परिवार का मुखिया है । यह ग्रह हैं – बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस, नेप्च्यून और प्लूटो, इन ग्रहों में कम से कम 46 उपग्रह सैकड़ों एस्टिरायड या छोटे ग्रह और हजारों उल्काएं हैं। मंदाकिनी के केन्द्र से लगभग 30,000 से ले कर 33,000 प्रकाश वर्ष की दूरी पर एक कोने में सौर मंडल स्थित है । गैस और धूल की घूमने वाली एक पट्टी – आदि सौर नीहारिका से इसका जन्म हुआ है । इसी घूमनेवाली पट्टी से ग्रह और सौर मंडल के शेष सदस्य निकले हैं ।

ग्रह के लिए प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द 'प्लैनेट' ग्रीक शब्द प्लेनेटेस से निकला है । प्लेनेटेस का अर्थ है – घुमक्कड़ या यायावर। आकाश में हमेशा स्थिर दिखाई पड़नेवाले तारों से अलग, ये ग्रह अपनी–स्थिति बदलते रहते हैं और कभी कभी गायब भी हो जाते हैं । इसलिए इन्हें प्लेनेट या घुमक्कड़ कहा गया। पहले ज्ञात ग्रहों का नामकरण रोम के देवताओं – मर्क्यूरी, वीनस, मार्स, जुपिटर और सेटर्न – के नाम से किया गया । शेष ग्रहों का जब पता चला तब उनका भी पुराने ढर्रे पर यूरेनस नेप्च्यून और प्लेटो नाम दिया गया ।

आन्तरिक ग्रह और बाह्य ग्रहों के रूप में इन ग्रहों का विभाजन किया गया है । आन्तरिक ग्रह हैं बुध शुक्र पृथ्वी और मंगल। पृथ्वी आन्तरिक ग्रहों में सबसे बड़ी और घनी है। सभी आन्तरिक ग्रह घने चट्टानों से बने हैं और इन्हें पार्थिव ग्रह कहा जाता है। क्योंकि ये पृथ्वी के समान हैं । बाह्य ग्रह – बृहस्पति, शनि, यूरेनस और नेप्च्यून, बहुत बड़े हैं और इनका बड़ा उपग्रहीय परिवार है। ये प्रायः हाइड्रोजन और हीलियम गैस से बने हैं । इनको बार्हस्पत्य या जोवियन कहते हैं । ये बृहस्पति के समान हैं । जोवियन, बृहस्पिति का युनानी नाम है। ये सभी ग्रह बड़ी तेजी से घूमते हैं । इनका वातावरण घना है और ये आंतरिकया पार्थिव ग्रहों की अपेक्षा अधिक महीन तत्वों से बने हैं ।

सूर्य पर एक लाख कि.मी.ऊंची लपटें

भारत द्वारा भेजे गए 'ट्रांजीशन रिजन एंड कोरोनल एक्सप्लोरर' ट्रेस नामक सैटेलाइट ने सूर्य की सतह की कुछ तस्वीरें भेजी, जिसमें सूर्य की सतह पर गैसों की भीषण ज्वाला दिखाई दी।

यह भीषण ज्वाला लगभग एक लाख किलोमीटर से भी ऊंची उठी। यह ज्वाला सूर्य के जिस भाग से उठी वहां एक गड्ढे का निर्माण हो गया। यह गड्ढा इतना बड़ा था कि इसमें हमारी पृथ्वी आसानी से समा सकती थी। इस भीषण ज्वाला के उठने का कारण सूर्य की सतह के नीचे चुंबकीय क्षेत्र का संयुक्त होना और उसमें आया बदलाव माना जा रहा है। वैज्ञानिकों के मुताबिक सूर्य की सतह में हुए इस विस्फोट की अधिकांश गैस वापस सूर्य में समा जाएगी। अधिक शक्तिशाली लपटें सेटेलाइट के संकेत आदि में गड़बड़ ला सकती है। 'ट्रेस' को चुंबकीय क्षेत्र तथा सूर्य की सतह पर उठती लपटें और गरम गैसों के प्रवाह के अध्ययन के लिए अप्रैल 1998 में भेजा गया था। सूर्य की सतह पर मौजूद गैसों का तापमान छह हजार सेंटीग्रेट है। इसकी सतह के ऊपर एक हल्का सा वातावरण है, जो कि कोरोना कहलाता है। यह सूर्य की सतह से भी ज्यादा गरम है। वैज्ञानिक इस बात से काफी आश्चर्यचकित हैं और यह समझने में असमर्थ हैं कि कोरोना इतना गरम क्यों है।

सूर्य

मंदाकिनी के केन्द्र से सूर्य की दूरी आधुनिक अनुमान के आधार पर 32,000 प्रकाश वर्ष है । सूर्य और उसके पड़ोसी तारे सामान्य तौर से एक गोलाकार कक्षा में 250 कि.मी. प्रति सेकेंड की औसत गति से मंदाकिनी के केन्द्र के चारों ओर परिक्रमा करते हैं । इस गति से केन्द्र के चारों ओर एक चक्कर पूरा करने में सूर्य को 25 करोड़ साल लगते हैं। यह अवधि ब्रह्मांड वर्ष कहलाती है ।

अन्य सभी तारों की तरह, सूर्य मुख्य रूप से हाइड्रोजन से भरा है । इसके आन्तरिक भाग में होने वाले आणविक संघातों से इसमें ऊर्जा उत्पन्न होती है । यह हिसाब लगाया गया है कि सूर्य प्रति सेकेंड हाइड्रोजन का लगभग दस खरब पाउंड उपयोग करता है । इस दर पर यह हाइड्रोजन के अपने भंडार को लगभग 5 अरब वर्षों में समाप्त कर लेगा और एक रक्त दानव बन जाएगा। यह आशंका भयावह है। रक्त दानव बनने पर सूर्य अपने व्यास का सौ गुना फूल जाएगा और उसकी रक्त वर्ण चमक हजार गुना बढ़ जाएगी। क्षितिज के लगभग 25 प्रतिशत भाग में सूर्य फैल जाएगा इसके निकटतम ग्रह बुध और शुक्र पिघल जाएंगे । पृथ्वी के समुद्र सूख जाएंगे और पृथ्वी सीसे के द्रवांक के ताप के बराबर तप कर उजाड़ चट्टान बन जाएगी। पृथ्वी पर सभी प्रकार का जीवन समाप्त हो जाएगा । सूर्य रक्त दानव के रूप में दस करोड़ वर्ष रहेगा और धीरे धीरे अपना बाहरी आच्छादन के पतले कलेवर को छोड़ता हुआ समाप्त हो जाएगा। यह बारीक कलेवर धुंधला सफेद बौना सूर्य होगा जो आज के मंगल के आकार से बड़ा नहीं होगा । इस छोटे तारे के चारों ओर राख हुई पृथ्वी चक्कर काटती रहेगी ।

सूर्य का चमकने वाला जो हिस्सा हम देखते हैं दीप्तिमान स्तर कहलाता है । इसके ऊपर वर्ण मंडल है । इसे वर्ण मंडल इसलिए कहते हैं क्यों कि इसका वर्ण रक्तिम होता है। इस स्तर के पीछे है सूर्य का प्रभामंडल युक्त किरीट जो ग्रहण के समय दिखाई पड़ता है । प्रकाश–किरण सम्बन्धी खोजों से पता चला है कि वर्ण मंडल और किरीट के बीच एक स्पष्ट बहुत संकरा क्षेत्र है जिसे संक्रमण क्षेत्र कहते हैं दीप्तिमान स्तर का तापमान लगभग 6000° सेल्सियस वर्ण मंडल का लगभग 32400° सेल्सियस और संक्रमण–क्षेत्र का लगभग 324000° और

किरीट, लगभग 2,700,000° सेल्सियस का है। अंतरिक्ष में बहुत दूर तक फैला किरीट एक्स–रे विकीर्ण करने की क्षमता रखता है। प्रत्येक स्तर के गैस का घनत्व उसके बढ़ते हुए उन्नतांश के अनुसार उसी तरह घटता है जिस प्रकार पृथ्वी का वायु मंडल उसकी ऊंचाई के अनुसार क्षीण हो जाता है। इस दृष्टि से सूर्य का सबसे कम घनत्व वाला क्षेत्र किरीट है।

सूर्य के क्रोड़ में जहां तापनाभिकीय प्रतिक्रियाएं होती रहती हैं वहां तापमान का स्तर डेढ़ करोड़ डिग्री केल्विन (के) है। इस क्रोड़ का घनत्व पानी के घनत्व से सौ गुना अधिक होता है। क्रोड़ के बाहरी भाग में संवहनी क्षेत्र है। केतली में खौलते पानी की तरह गैसों के भयंकर उबाल उत्पन्न ऊर्जा को दीप्तिमान स्तर की ओर पहुंचाता है। बैंगनी, जामुनी, नीला, हरा, पीला, नारंगी और लाल रंगों के समुच्चय से किरीट का दृश्यमान क्षेत्र प्रकाश बना है। इस समुच्चय के ऊपर सैकड़ों काली रेखाएं – फाउनहोफर रेखाएं – खिंची हुई हैं। प्रत्येक रेखा सौर वायुमंडल में उपस्थित किसी न किसी तत्व को इंगित करती है। इस तत्व के घनत्व और तापमान को रेखाओं की तीव्रता और चौड़ाई से जाना जाता है।

सूर्य सभी दिशाओं में प्रोटान (हाइड्रोजन अणुओं के नाभिक) के रूप में अपने तत्व को लगातार बरसाता रहता है। कभी–कभी यह उत्सर्जन बहुत अधिक होता है। इसे सौर ज्वाला कहा जाता है। इनसे सूर्य की सतह से ऊपर की ओर ताप दीप्त पदार्थों के ढेर के ढेर भेजे जाते हैं। कभी–कभी ये पदार्थ सूर्य के वायुमंडल से बाहर निकलकर अंतरिक्ष में सैकड़ों मील तक फैल जाते हैं और तब ये सौर ज्वाला के रूप में दिखलाई पड़ते हैं। सूर्य के वायुमंडल के सतही स्तर किरीट से होती हुई यह ज्वाला पृथ्वी के आकार से 20 से 40 गुना आकार वाले विशाल बादल के रूप में गरम आयनीय गैस को लगभग 100 कि.मी. प्रति सेकेंड की गति से निकालती रहती हैं। अत्यधिक आकर्षक सौर ज्वालाएं जो हाल के वर्षों में देखी गई हैं वे 28 फरवरी 1942, 19 नवम्बर 1949 और 13 दिसम्बर 1971 को घटित हुई हैं।

प्रोटोन की इससे कम लेकिन अनवरत धारा किरीट से निकलती रहती है और पूरे सौर मंडल में फैल जाती है। सन् 1958 में अमरीकी भौतिक वैज्ञानिक यूजीन नारमैन पार्कर ने इस बाहर निकलनेवाली धारा को सौर वायु कहा। उपग्रहों के

सौर ज्वालाओं की भविष्यवाणी संभव

उत्तरी ज्योतियां एक ऐसी प्राकृतिक घटना है, जिसका संबंध उत्तरी ध्रुव क्षेत्र 'आर्कटिक' से है। इस बसंत में यूरोप के ऊपर विशाल ज्योतियां छाई रही, जिनसे नाटकीय लाल–हरी अतिशबाजी दक्षिण में फ्लोरिडा तक दिखाई दी। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह जगमगाता 'प्रकार शो' सूर्य से निकलने वाले विद्युत आवेशित कणों के शक्तिशाली विस्फोट के कारण देखा गया।

ऐसी सौर गड़बड़ियों को सौर ज्वालाएं कहते हैं। इनसे पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र में विकृतियां आ जाती हैं तथा विद्युत प्रेक्षण समाप्त हो जाता है। सन् 1989 में क्वीबेक में इतना अंधेरा छाया रहा कि 60 लाख लोग प्रभावित हुए। आवेशित कणों के बादल उपग्रहों की इलेक्ट्रानिक प्रणालियों में बाधा डालते हैं जिससे संचार नेटवर्क खराब हो जाते हैं।

वैज्ञानिक सूर्य के इस दुर्व्यवहार को रोकने के लिए कुछ नहीं कर सकते, लेकिन वे यह भविष्यवाणी अवश्य कर सकते हैं कि इस प्रकार की सौर ज्वालाएं कब उठेंगी। ये ज्वालाएं हर 11 वर्ष बाद उठती हैं और यह वर्ष ज्वालाओं के पीक का है। वैज्ञानिकों ने दो विधियां विकसित की हैं। वे दो सप्ताह पहले ही इन ज्वालाओं की भविष्यवाणी कर सकते हैं। अमरिकी अंतरिक्ष एजेंसी 'नासा' के जार्ज विथब्रो का कहना है कि अंतरिक्ष यात्रियों को चेतावनी दी जा सकती है कि वे अपने अंतरिक्ष यान से बाहर न निकले, जब सौर ज्वालाओं का डर हो। वे विकिरण के दुष्प्रभाव से बचे रहेंगे। यहां तक कि केवल दो घंटे पहले की चेतावनी से इंजीनियर लगभग 600 कक्षागत उपग्रहों की अति संवेदनशील प्रणालियों को बंद कर देंगे या उन्हें कम खतरनाक कक्षा में ले जाएंगे। पृथ्वी पर विद्युत कंपनियां भी विद्युत प्रणालियों में संभावित बाधाओं को दूर कर सकेंगी।

वैज्ञानिकों को यह जानने की जरूरत पड़ी कि सूर्य के दूसरी ओर क्या हो रहा है, क्योंकि यही क्षेत्र घूमकर पृथ्वी की ओर आ जाता है। वैज्ञानिक अंतरिक्ष में नौ करोड़ 30 लाख मील की दूरी तथा 8,64,000 मील लंबे उबलते गैस के गोले में झांकते हैं। एरिजोना में दो भौतिकविदों ने धधकते सूर्य के कंपनों को सुना तथा सूर्य के दूसरी ओर उथल पुथल की ध्वनि को दर्ज किया। वैज्ञानिकों ने 'साइंस' पत्रिका में बताया कि उन्होंने सोलर तथा हीलियोस्फरिक वेधशाला के यंत्रों से सूर्य के अंदर कंपन की पहचान की। उन्होंने एक प्रकार की 'अल्ट्रसाउंड छाया' देखी।

गत मई में फ्रेंच तथा फिनिश शोधकर्ताओं ने सूर्य के पीछे प्रेक्षण की एक और विधि बताई। उन्होंने सूर्य के पीछे अंतरिक्ष में तैरते हाइड्रोजन परमाणुओं का अध्ययन किय। देखा गया कि सौर ज्वालाओं के चारों ओर परमाणु एक शीशे का काम करते हैं। सूर्य के अधिक सक्रिय क्षेत्र में ऐसी हाइड्रोजन होती है, जो पराबैंगनी प्रकाश की विशिष्ट फ्रीक्वेंसी छोड़ती है। यही प्रकाश स्वतंत्र रूप से बिखरी हाइड्रोजन को आलोकित करता है, ठीक उसी तरह जैसे कोई फ्लैशलाइट कुहासे में चमकती है। इस प्रकार वैज्ञानिकों को कई सप्ताह पहले मालूम हो गया कि सूर्य के कौन–से क्षेत्र समस्याएं पैदा करेंगे।

चाहे ये विधियां अच्छी हों, फिर भी वैज्ञानिक यह जानने का प्रयत्न कर रहे है कि किसी क्षेत्र से कितनी अधिक सौर ज्वालाएं निकलेंगी। कहा जा रहा है कि अंरिक्ष मौसम की भविष्यवाणी करना पृथ्वी के मौसम की भविष्यवाणी से दशकों वर्ष पीछे है, लेकिन और सुधरे प्रेक्षण से प्रगति हो सकती है। नासा के गोडर्ड अंतरिक्ष उड़ान केंद्र की [illegible]बरा टाम्पसन ने कहा–'अंतरिक्ष अत्यधिक खतरों [illegible] इसे और अधिक मैत्रीपूर्ण बनाने के प्रयत्न [illegible]

अभी तक सौर मंडल के अंत के पास पहुंचने के कोई नहीं दिखाई दिए। लेकिन उसी समय पाईअनियर का हो रहा था। इसका छोटा सा ऊर्जा का स्रोत रेडियो लित प्लेटोनियम 238 दूर हट गया था। इसके सभी रह में से तीन वैज्ञानिक साधन 1996 में बन्द हो गए र एक 1997 में बन्द हो गया जो इसका ब्रह्माण्डीय करण का अन्वेषक था।

लगभग 15.929 बिलियन किमी दूर, मानव निर्मित सर्वाधिक दूरी के इस तत्व का अन्तिम उद्देश्य अभी भी शेष रह गया है एवं इसकी पहुंच के बाहर रह गया है। एक विशाल टेलिस्कोप, जिसको नासा ने गहन अन्तरीक्ष के अध्ययन के बनाया था यह दूर स्थित पाइनियर-10 की तरफ घूम गया और संकेत ग्रहण करने लगा। शोरगुल के वातावरण में भी यह स्पष्टतया ज्ञेय था। यह आवाज आठ वाट के रेडियो ट्रांसमीटर से आ रही थी। रात्रि प्रकाश के लिए यह बहुत कम है।

यह 44,730.2 किमी प्रतिघंटे की गति से यात्रा करता है। इसके साधन आज भी सौर मंडल के बाह्य सीमा का अन्वेषण कर रहे है, लेकिन सूर्य-वायु अन्तरिक्ष के शीत बाह्य अंधेरे में इसे बिखेर देने में लगी है। वैज्ञानिक वापसी के हासमान का सामना करने के विरुद्ध इसके संचालन का का... नासा ने 31 मार्च को सभी संवादों को बन्द कर दिया।

पाइनियर वैज्ञानिकों के साथ उन वैज्ञानिकों के लिए भी यह दु:खद समाचार है जो आकाशीय संकेतों के विवेचना में लगे हैं और किसी अन्य पृथ्वी की बौद्धिकता की खोज में लगे हैं। उन्होंने कई बार पाइनियर की अस्पष्ट आवाज का उपयोग अपने लक्षणों के परीक्षण के लिए किया है। इससे दूर संभावित सभ्यता के अस्पष्ट रेडियो के संदर्शों की मिलने की प्रत्याशा बनती है। उन्होंने अपने मुख्य परीक्षण साधन को ही खो दिया जो अन्तरिक्ष में जीवन की खोज करता जो संभवत: कठिन है।

लेकिन नियति की इच्छा से शान्त पाइनियर-10 को भी एक अन्तिम कार्य पूर्ण करना है जैसा कि इसका बाहरी ब... तारों के बीच आरंभ है। अपने साधनों के साथ मानवता को बताने के लिए एक बधाई पट्टी लाता कि किसने इसको बनाया है।

मात्र 100,000 वर्षों में यह हमारे सौर मंडल के सर्वाधिक नजदीक तारे के पास पहुंच जाएगा। इस मन्द लाल तारे को प्रोक्सिमा सेंचुरी कहते हैं। इसके बाद वहां से, कौन जानता है कि किन-किन तारों की यात्रा करेगा। यह अब भी तारों के बीच पृथ्वी का राजदूत बना हुआ है।

पृथ्वी

पृथ्वी के सबध में प्रारम्भिक व्यवस्थित सिद्धांत भूकेन्द्रित था जिसके अनुसार पृथ्वी ब्रह्मांड का एक ऐसा अचल केन्द्र है जिसके चारों ओर सूर्य नक्षत्र तथा अन्य खगोलपिंड चक्कर काटते हैं। अलेक्जेन्ड्रिया के यूनानी दार्शनिक कलाडियस टॉलमी ने इस मत का अन्तिम रूप प्रस्तुत किया। उसने सन् 140 ई. के लगभग खगोलिकी पर एक विश्वकोश बनाया। इसका अरबी भाषा का संक्षिप्त संस्करण 'अल्मगेस्त' नाम से

भू आकृति सतह का 30% सतह तापमान 88 से 58 डिग्री सेल्सियस
वातावरण 1000 किमी
भूपृष्ठ 12-60 किमी मोटा
बादल 10 से 12 किमी तक पाये जाते है।
मैंटल 1900 किमी मोटा। सिलिकेट पदार्थ
बाहरी क्रोड 20880 किमी मोटा, द्रव, लौह निकेल सल्फर
आंतरिक क्रोड. 1370 किमी मोटा ठोस 4000डिग्री से.

...की बनावट

1400 सालों तक खगोलिकी का बाइबिल बना ...

सूर्य-केन्द्रित सिद्धान्त का सर्वप्रथम प्रवर्तन पोलैं... खगोलज्ञ निकोलस कापरनिक (1473-1543 ... किया। कापरनिक अपने लेटिन नाम कापरनिकस के ... अधिक प्रसिद्ध है। 1543 में कापरनिकस ने 'डी रिवोलु... आरबियम सोयलेसटियम' पुस्तक प्रकाशित की जि... सिद्धान्त की स्थापना की कि सूर्य ब्रह्मांड का केन्द्र है तथा ग्रह इसकी परिक्रमा करते हैं।

अपने समय के और खगोलज्ञों के समान कापर... भी विश्वास था कि सौर व्यवस्था विश्व का पर्याय ... थी जिसे अभी हाल में ही ठीक किया गया है। ... वृत्ताकार मार्ग देकर भी गलती की। इस भूल को ... जोहनीस केप्लर ने (1570-1630) सुधा... में कापरनिकस का मत सुदृढ़ और अपराजे... खगोलज्ञ गैलिलियो गेलिली (1564-1642 ... के मत को मिटने से बचाने का सौभाग्य प्राप्त ... के पूर्व उसे यह जान कर प्रसन्नता हुई कि ... स्वीकार हो रहा है और टालमी के पक्षध... भूकेन्द्रित सिद्धान्त को अन्तिम धक्का ... ने दिया। उ... (1642-1726 ई.) ने दिया। उ... सिद्धान्त का प्रतिपादन किया और इस... जोड़ा। खगोलिक विचारों के इतिह... फिलासाफिया नेचुरलिस प्रिंसिपिया मै... से प्रसिद्ध) एक मोड़ उत्पन्न करती ...

पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों की रच...

किया। अभी तक सौर मंडल के अंत के पास पहुंचने के कोई लक्षण नहीं दिखाई दिए। लेकिन उसी समय पाईअनियर का अंत हो रहा था। इसका छोटा सा ऊर्जा का स्रोत रेडियो संचालित प्लेटोनियम 238 दूर हट गया था। इसके सभी ग्यारह में से तीन वैज्ञानिक साधन 1996 में बन्द हो गए और एक 1997 में बन्द हो गया जो इसका ब्रह्माण्डीय किरण का अन्वेषक था।

लगभग 15.929 बिलियन किमी दूर, मानव निर्मित सर्वाधिक दूरी के इस तत्व का अन्तिम उद्देश्य अभी भी शेष रह गया है एवं इसकी पहुंच के बाहर रह गया है। एक विशाल टेलिस्कोप, जिसको नासा ने गहन अन्तरीक्ष के अध्ययन के बनाया था यह दूर स्थित पाइनियर–10 की तरफ घूम गया और संकेत ग्रहण करने लगा। शोरगुल के वातावरण में भी यह स्पष्टतया ज्ञेय था। यह आवाज आठ वाट के रेडियो ट्रांसमीटर से आ रही थी। रात्रि प्रकाश के लिए यह बहुत कम है।

यह 44,730.2 किमी प्रतिघंटे की गति से यात्रा करता है। इसके साधन आज भी सौर मंडल के बाह्य सीमा का अन्वेषण कर रहे है, लेकिन सूर्य–वायु अन्तरिक्ष के शीत बाह्य अंधेरे में इसे बिखेर देने में लगी है। वैज्ञानिक वापसी के ह्रासमान का सामना करने के विरुद्ध इसके संचालन की कीमत के कारण नासा ने 31 मार्च को सभी संवादों को बन्द कर दिया।

पाइनियर वैज्ञानिकों के साथ उन वैज्ञानिकों के लिए भी यह दु:खद समाचार है जो आकाशीय संकेतों के विवेचना में लगे हैं और किसी अन्य पृथ्वी की बौद्धिकता की खोज में लगे हैं। उन्होंने कई बार पाइनियर की अस्पष्ट आवाज का उपयोग अपने लक्षणों के परीक्षण के लिए किया है। इससे दूर संभावित सभ्यता के अस्पष्ट रेडियो के संदर्शों की मिलने की प्रत्याशा बनती है। उन्होंने अपने मुख्य परीक्षण साधन को ही खो दिया जो अन्तरिक्ष में जीवन की खोज करता जो संभवत: कठिन है।

लेकिन नियति की इच्छा से शान्त पाइनियर–10 को अब भी एक अन्तिम कार्य पूर्ण करना है जैसा कि इसका बाहरी बहाव तारों के बीच आरंभ है। अपने साधनों के साथ मानवता को बताने के लिए एक बधाई पट्टी लाता कि किसने इसको बनाया है।

मात्र 1,00,000 वर्षों में यह हमारे सौर मंडल के सर्वाधिक नजदीक तारे के पास पहुंच जाएगा। इस मन्द लाल तारे को प्रोक्सिमा सेंचुरी कहते हैं। इसके बाद वहां से, कौन जानता है कि किन–किन तारों की यात्रा करेगा। यह अब भी तारों के बीच पृथ्वी का राजदूत बना हुआ है।

पृथ्वी

पृथ्वी के सबंध में प्रारम्भिक व्यवस्थित सिद्धांत भूकेन्द्रित था जिसके अनुसार पृथ्वी ब्रह्मांड का एक ऐसा अचल केन्द्र है जिसके चारों ओर सूर्य नक्षत्र तथा अन्य खगोलपिंड चक्कर काटते हैं। अलेक्जेन्ड्रिया के यूनानी दार्शनिक कलाडियस टॉलमी ने इस मत का अन्तिम रूप प्रस्तुत किया। उसने सन् 140 ई. के लगभग खगोलिकी पर एक विश्वकोश बनाया। इसका अरबी भाषा का संक्षिप्त संस्करण 'अल्मगेस्त' नाम से 1400 सालों तक खगोलिकी का बाइबिल बना रहा।

पृथ्वी की बनावट

सूर्य–केन्द्रित सिद्धान्त का सर्वप्रथम प्रवर्तन पोलैंडवासी खगोलज्ञ निकोलस कापरनिक (1473–1543 ई.) ने किया। कापरनिक अपने लेटिन नाम कापरनिकस के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। 1543 में कापरनिकस ने 'डी रिवोलुशनियस आरबियम सोयलेसटियम' पुस्तक प्रकाशित की जिसमें इस सिद्धान्त की स्थापना की कि सूर्य ब्रह्मांड का केन्द्र है और पृथ्वी तथा ग्रह इसकी परिक्रमा करते हैं।

अपने समय के और खगोलज्ञों के समान कापर–निकस का भी विश्वास था कि सौर व्यवस्था विश्व का पर्याय है। यह भूल थी जिसे अभी हाल में ही ठीक किया गया है। उसने ग्रहों का वृत्ताकार मार्ग देकर भी गलती की। इस भूल को जर्मन खगोलज्ञ जोहनीस केप्लर ने (1570–1630) सुधारा। बाकी बातों में कापरनिकस का मत सुदृढ़ और अपराजेय था। इटली के खगोलज्ञ गैलिलियो गेलिली (1564–1642 ई) ने कापरनिकस के मत को मिटने से बचाने का सौभाग्य प्राप्त किया। अपनी मृत्यु के पूर्व उसे यह जान कर प्रसन्नता हुई कि उसका समर्थित मत स्वीकार हो रहा है और टालमी के पक्षधर पीछे हट रहे हैं।

भूकेन्द्रित सिद्धान्त को अन्तिम धक्का सर आइज़ाक न्यूटन (1642–1726 ई.) ने दिया। उसने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया और इसको गति के नियमों से जोड़ा। खगोलिक विचारों के इतिहास में उनकी पुस्तक फिलासाफिया नेचुरलिस प्रिंसिपिया मैथेमेटिका (प्रिंसिपिया नाम से प्रसिद्ध) एक मोड़ उत्पन्न करती है।

पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों की रचना के संबंध में आधुनिक

सहित समझाया गया है। किसी सागर के बीच पर्वत श्रेणी का निर्माण, नये सागर की उत्पत्ति के लिए लगातार जमीन तैयार करता है। यूरोप और अफ्रीका से अलग होकर अमरीका का दूसरी तरफ घूमना इसी का परिणाम है। ध्वंसात्मक प्लेट गति सम्पूर्ण प्रशान्त महासागर के चारों तरफ पायी जाती है, जिसके कारण 'स्थलमंडल' के चारों तरफ कई प्लेटें नीचे की तरफ खिसक रही हैं। संरक्षात्मक प्लेट गति, विध्वंसक भूकम्प का कारण बनती है। यह वहीं होता है जहां निकटवर्ती प्लेटें स्थानान्तरण की गलती से एक दूसरे पर सटकने लगती हैं, जैसा की केलिफोर्निया की सैन एण्ड्रिल की गलती में हुआ। प्लेटों पर एकाएक दबाव के कारण भूकम्प आते हैं। इसके कारण पृथ्वी की पपड़ी की सीमान्त परत भाग ऊपर उठ जाता है और दूसरा झुक जाता है। भूकम्प क्षेत्र और वर्तमान में पर्वत निर्माण क्षेत्र दोनों घटनाएं साथ-साथ होती हैं।

प्लेट विवर्तनिकी

महाद्वीपीय विस्थापन के सिद्धान्त का समर्थन करते हुए आविष्कारों ने 19 वीं सदी के छठे दशक में भू-विज्ञान की एक नवीन संकल्पना प्लेट विवर्तनिकी को जन्म दिया । प्लेट विवर्तनिकी में पृथ्वी की हलचल के फलस्वरूप बनी चट्टानों का अध्ययन होता है जो प्लेट के रूप में हैं। इस संकल्पना ने भूविज्ञान के अध्ययन में उसी प्रकार से क्रान्तिकारी परिवर्तन किया जैसा कि खगोलिकी में कापरनिकस सिद्धान्त ने किया था कापरनिकस सिद्धान्त ने पृथ्वी और सौर प्रणाली के संबंध में हमारे विचारों में आमूल-चूल परिवर्तन ला दिया । प्लेट विवर्तनकी ने स्वयं पृथ्वी के विषय में हमारी संकल्पना में महान परिवर्तन किया । इसने प्रमाणित कर दिया कि पृथ्वी स्थिर नहीं है, बल्कि गत्यात्मक है और सही माने में जीवित है ।

महाद्वीपीय विस्थापन का सिद्धान्त यह मानकर चलता है कि महाद्वीप विशालकाय जहाजों की तरह सागर में चलते हैं। प्लेट विवर्तनिकी हमें बताती हैं कि केवल महाद्वीप ही गतिशील नहीं है बल्कि महासागर भी गतिशील हैं । इसका कारण यह है कि पृथ्वी की शीर्ष पपड़ी (जैसा कि हमारा विचार है) ग्रेनाइट या बेसाल्ट का अखंडित, खोल नहीं है, बल्कि प्लेट कहलाने वाले बहुत-से कठोर खंडों का मोज़ेक है । इन प्लेटों में पृथ्वी की ठोस ऊपरी पपड़ी ही शामिल नहीं है, बल्कि उसके नीचे का सघन मैंटल भी उसी में आता है। उनकी औसत मोटाई 100 कि.मी. है । ये सब एस्थनोस्फीयर नामक पृथ्वी के ऊपरी मैंटल पर तिर रहे हैं और वृहदाकार जहाज़ों की तरह महाद्वीपों एवं महासागरों को अपनी पीठ पर लादकर ले जाते हैं ।

ये सभी प्लेटें एक-दूसरे के सापेक्ष में निरंतर गतिशील हैं। महाद्वीपीय विस्थापन और प्लेट विवर्तनिकी के बीच विभेद करने में सभ्रांति इस मान्यता से है कि महाद्वीप और प्लेटें समानार्थी हैं । लेकिन ऐसा नहीं है । महाद्वीप प्लेटों के एक भाग का ही निर्माण करते हैं जबकि आसपास के महासागर प्लेटों के शेष भाग हैं । महाद्वीप ही अकेले विस्थापन नहीं करते। विस्थापन प्लेटों का होता है जिनमें महाद्वीप एवं महासागर दोनों सम्मिलित हैं । इसलिए अब हम महाद्वीपीय विस्थापन के बजाय प्लेटों की गतिशीलता की चर्चा करते हैं।

पृथ्वी का पुनर्मापण

भौतिकविज्ञानियों ने गुरुत्व बल के आधार पर पृथ्वी का पुनर्मापण करके पता लगाया कि पहले के मापन से पृथ्वी का वजन कम है। उनके अनुसार पृथ्वी का भार 5972 के आगे 18 जीरो मीट्रिक टन है। जबकि स्कूल की किताबों में पथवी का वजन 5978 के आगे 18 जीरो मीट्रिक टन बताया जाता है।

स्थल मंडल

स्थल मंडल पृथ्वी का ऊपरी पटल है जिसके ऊपर हमारे महाद्वीप एवं समुद्री भाग स्थित हैं । महाद्वीप क्षेत्रों में यह सर्वाधिक मोटा है जहां इसकी औसत मोटाई 40 कि.मी. है। समुद्री भागों में यह अत्यधिक पतला है जहां इसकी अधिकतम ऊंचाई 10 से 12 कि.मी. तक हो सकती है। यह पृथ्वी के संपूर्ण आयतन का लगभग 1 प्रतिशत और उसके कुल द्रव्यमान का 0.4 प्रतिशत है। यद्यपि स्थल मंडल में तकनीकी दृष्टि से भूमि-भाग और समुद्री तल दोनों को ही शामिल किया जाता है, फिर भी अक्सर इसका प्रयोग केवल भूमि-तल दर्शाने के लिए ही किया जाता है। इस दृष्टि से स्थल मंडल संपूर्ण पृथ्वी का केवल चौथाई भाग है। शेष तीन चौथाई भाग समुद्र ने ले लिया है।

भूमि तल पर चट्टानी दृश्यांश वाले भागों को छोड़कर, शेष संपूर्ण भाग बालू या मृदा है । समस्त बालू और अधिकांश मृदा जो हमें आज दिखाई पड़ती है, वह प्राचीन चट्टानों से उत्पन्न हुई है । मूलरूप से स्वयं चट्टाने गलित मैग्मा से बनी थीं जो पृथ्वी के भीतरी भाग से फूटकर निकला था । पृथ्वी की शक्तिशाली हलचलों ने कुछेक चट्टानों को ऊपरी सतह तक उठा दिया जहां उन पर जलवायवी प्रभाव पड़े। चट्टानों को टूटकर बालू बनने की जो प्रक्रिया है, भुविज्ञान में 'अपक्षयण' कहलाती है। चट्टान – अपक्षयण में बहुत-से घटक काम करते है जिनमें स्वयं 'जलवायु' अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

जब सूर्य द्वारा अत्यधिक तप्त चट्टाने वर्षा से अचानक ठंडी होती हैं तो वे चिटक कर टूट जाती हैं । जब यही प्रक्रिया हजारों वर्षों तक चलती रहती है तो बड़ी-बड़ी चट्टानें चूर-चूर होकर बालू बन जाती हैं । इसी प्रकार, पाला भी चट्टानों को तोड़ सकता है । चिटकी चट्टानों की दरार में फंसा हुआ पानी सर्दी पड़ने पर हिम का रूप धारण कर लेता है और फैल जाता है । यह दबाव अक्सर चट्टानों को फोड़ देता है । इनके साथ अन्य संयोगों ने मिलकर भूमि की उस रूप में रचना की है, जिस रूप में आज हम देखते हैं । दृश्य भूमि की आकृतियां स्थल मंडल की चट्टानी उप-रचना से निर्धारित होती हैं । भूवैज्ञानिक दृष्टि से कहा जाए तो वे सभी पदार्थ जिनसे पृथ्वी पटल का निर्माण हुआ है, चट्टानें हैं, चाहे वे ग्रेनाइट गोलाश्म हों, दाह्य कोयला हों, चिकनी मिट्टी हो या बालू-कंकड़ के अदृढ़ खंड हों ।

स्थल मंडल को बारह जलवायु प्रदेशों में विभाजित किया जाता है । हम जानते हैं कि पृथ्वी का ऊपरी भाग, अर्थात् इसका दृश्य धरातल, विगत काल में आमूल-चूल परिवर्तनों का शिकार हुआ है । भूवैज्ञानिकों का कहना है कि हजारों वर्षों के दौरान, पृथ्वी के शीतलन एवं संकुचन के परिणाम के रूप में इतने सारे परिवर्तन हुए हैं ।

पर्वत

पर्वतों को पारंपरिक ढंग से उनकी उत्पत्ति की रीति के अनुसार चार प्रकारों में विभाजित किया जाता है: वलन पर्वत, ब्लॉक पर्वत, ज्वालामुखीय पर्वत और अवशिष्ट पर्वत ।

वलन पर्वतों के उठने का कारण यह है कि दवाव के जरिए उनके भीतर की चट्टानें मुड़ गई हैं और सिलवटदार हो गई।जिस प्रकार से एक मेजपोश को जब मेज के साथ-साथ खींचा जाता है तो उसमें सिलवटें पड़कर तहें बन जाती हैं, उसी प्रकार पृथ्वी की पपड़ी की चट्टानें पार्श्वक दवाव पड़ने पर वलन पर्वत बन जाती हैं । जब दवाव अत्यधिक होता हैं तो तहें कठोरता से सिकुड़कर लहरदार हो जाती हैं । इसके आगे भी दवाव पड़ने की स्थिति में वे लहरें एक-दूसरे पर चढ़ जाती हैं । जब लहरें एक-दूसरे पर चढ़ती हैं तो उत्तुंग होती जाती हैं । एक दूसरे से टकराती पट्टियों के दवावों से ही चट्टाने मुड़कर पर्वत के रूप में ढल सकती हैं । इससे निष्कर्ष यह निकलता है कि हमारी समस्त वड़ी पर्वत प्रणालियां प्लेटों के संघटन से ही निर्मित हुई हैं । ऐसे ही संघटन क्षेत्र के कारण हिमालय पर्वत का आविर्भाव हुआ ।इसी प्रकार ऐंडीज़ (दक्षिणी अमेरिका), राकी पर्वत (उत्तरी अमेरिका) और आल्पस (यूरोप) का उदय हुआ । हिमालय, ऐंडीज़, राकी और आल्पस कम उम्र के पर्वत हैं और इन्हें नव वलन पर्वतों के रूप में वर्गीकृत किया गया है । सुपर महाद्वीप, पनगेय के अलग होने के साथ जो महाद्वीपीय विस्थापन हुआ इससे ये पर्वत अस्तित्व में आये । जिन पर्वतों को प्राचीन वलन पर्वत कहा जाता है, वे पनगेय का निर्माण करने हेतु महाद्वीपीय राशियों के एकत्रित होने के काफी पहले विस्थापन-पूर्व युग में निर्मित हुए थे । प्राचीन वलन पर्वतों में यूरोप का पेनाइन्स, अमेरिका का अपालाचिपन्स और भारत के अरावली पर्वत बहुत पहले ही जलवायु से प्रभावित होकर ठूंठ वनकर रह गए हैं ।

ब्लॉक पर्वत, दरारों या भ्रंशों में पृथ्वी की ऊपर की गतियों के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आया । जव इस प्रकार पृथ्वी का ऊर्ध्व संचलन होता है, दो निम्न तुंगों के वीच का उन्नत क्षेत्र उसी रूप में रह जाते हैं और वह उच्च क्षेत्र, ब्लॉक पर्वत प्रायः इतने ढालू होते है कि इन पर चढ़ना मुश्किल होता है, जैसे फ्रांस में वसिगेज पर्वत और पश्चिमी जर्मनी में ब्लैक फारेस्ट पर्वत।

ज्वालामुखीय पर्वत: ज्वालामुखीय विस्फोट होने के जो पदार्थ वाहर निकलता है, वह छिद्र या विवर के आसपास गिर जाता है और एक पर्वत का निर्माण करता है जो आम तौर से शंकु का रूप होता है और उसके शीर्ष पर विवर होता है। जापान में फुजीयामा, इटली में वेसूवियस और एंडीज़ (दक्षिणी अमेरिका) में चिम्वोराजो और कोटोपाक्सी इसी प्रकार के पर्वतों के उदाहरण हैं ।

अवशिष्ट पर्वत: कुछेक पर्वत इतनी गहराई तक विच्छिन्न और मौसम के प्रभाव तथा नदियों के क्रिया-कलाप से प्रभावित होते हैं कि वे कंकाल मात्र रह जाते हैं । न्यूयार्क के कैट्सकिल पर्वत इस प्रकार के पर्वतों के विशिष्ट उदाहरण हैं ।

प्रमुख पर्वत शिखर

नाम	देश	ऊंचाई(मी)
माउंट एवरेस्ट	नेपाल-तिब्बत	8848
माउंट गाडविन	भारत	8611
कंचनजंगा	भारत-नेपाल	8126
धौलागिरि	नेपाल	8172
नंगा पर्वत	भारत	8126
अन्नपूर्णा	नेपाल	8078
नंदादेवी	भारत	7817
माउंट कामेट	भारत	7756
गुरला मंधाता	तिब्बत	7728
तिरिच मीर	पाकिस्तान	7700
मिन्या कोन्का	चीन	7590
माउंट कम्युनिज्म	पूर्व सोवियत रूस	7495
पोवेता शिखर	पूर्व सोवियत रूस	7439
मुजताग अटा	चीन	7434
चोमो लहारी	भारत-तिब्बत	7100
मुजताग	चीन	7282
अकोंन कागुआ	अर्जेन्टाइना	6960
ओजॅस डेल सलादो	अर्जेन्टाइना-चिली	6868
सेरो	अर्जेन्टाइना	6773
मर्सीडारिओ हुआसकारन	पेरू	6768
लियुलैकालो वाल्कैनो	चिली	6723
तुपुनगाटे	चिली-अर्जेन्टाइना	6550
सजामा वाल्कानो	वोलिविया	6520
इल्लामपू	वोलिविया	6482
विलकानूरा	पेरू	6300
चिम्वोराजो	यूकडोर	6267
माउंड मैककिलनी	अलास्का	6194

भूकंप

भूकपनीयता की घनी पट्टी का विस्तार हिमालय व सर्वोच्च ऊंचाई वाली चोटियों के समानान्तर है। यहां भूकंप भार के यूरेशिया के नीचे धंसने के कारण भू-पर्पटी (earth crust की 20 मी तक की गहराई से आते है। चार विनाशकारी भूकंप- कांगड़ा (1905), विहार (1934), और असम (1897 1950) मे हिमालय पर्वत श्रेणी की 2400 किमी लंबाई उससे सटे सिंधु-गंगा के मैदान में पिछले एक शताब्दी के दौरा आए हैं। विशाल भूकप आते हैं जव पृथ्वी के ऊपरी खोल में 2 किमी गहराई से प्रत्यास्थ ऊर्जा (Elastic Energy) सहस वाहर निकलती है। यह ऊर्जा भूपर्पटी के भंगुर (Brittle) शैल मे तनाव के रुप में एकत्रित होती रहती है और इस कारण उत्पन्न प्रतियल जव भंगुर शैलों की सहन सीमा को पार कर जाता तो उनको विभंगित कर देता है। शैलों के विभंगन द्वारा उत्पन्न फटाव ही ऊर्जा के आकस्मिक निष्कासन का साधन है। ऐसे पर्पटी-विभंग पृथ्वी की ऊपरी सतह तक कम ही पहुंचते है। अधिकांश ऊर्जा का विमोचन भ्रंशित शैलों के 6 से 10 मी. क कभी 20 मी. तक के विसर्पण (खिसकाव) के कारण उत्पन्न भूकंपी तरगों को रूप में होता है। तरंगित होकर जमीन हिलने डुलने लगती है जिसका विनाशकारी प्रभाव हम पृथ्वी की सतह पर अनुभव करते हैं।

पृथ्वी का वाह्य 100 किमी तक गहरा भंगुर शैलों से बना खोल-स्थलमंडल स्थिर ना होकर सतत पारिर्वक गति में रहता

स्थलमंडल के गोलाकार टुकड़े या प्लेटें गतिमान होने के रण एक दूसरे से किन्हीं क्षेत्रों में अलग होकर दूर हटने और य क्षेत्रों में टकराने की प्रक्रिया में रहते हैं। इन स्थल मंडलीय टों की सीमा में अधिकांश भूकंप आते हैं। पृथ्वी पर भूकंप पट्टिकाएं प्लेट सीमाओं का रेखांकन ही हैं। हिमालय पर्वत श्रेणी भारतीय व एशियाई प्लेटों की सीमा का निर्धारण करती है। हिमालय के विस्तार व संरचना में भारतीय प्लेट का एशियाई प्लेट की ओर अभिसारण व अन्ततः मिलन अथवा टकराव का साढ़े

भूकंपीय स्केल

रिक्टर स्केल एक लघु गणकीय स्केल है। इसका आविष्कार 1935 में भूभौतिक शास्त्री चार्ल्स रिक्टर द्वारा किया गया था। इसके द्वारा भूकंप से उत्पादित उर्जा को नापा जाता है। दो या इससे कम अंक को स्पष्टतया अनुभव किया जा सकता है जबकि 5 अंक के बाद का भूकंप हानिकारक हो सकता है। भूकंप मापन की अधिक प्रासंगिकता, उसके घनत्व की शक्ति है जिसके लिए सुधारित मरकलिस्केल विशाल रूप में प्रयोग की जाती है।

सुधारित मरकलि मात्रा स्केल (1956)

1. अनुभवजन्य नहीं, धीमा और लंबे काल प्रभाव वाला लंबा भूकंप।
2. आराम करनेवाले लोगों द्वारा अनुभव जन्य, जो ऊपरी मालों या उपयुक्त स्थान पर हो।
3. घर के अन्दर अनुभव जन्य। लटकती हुई वस्तुए झूलने लगती हैं। छोटी ट्रक के जाने जैसा कंपन अनुभव होता है। इसका अनुभव भूकंप जैसा नहीं किया जा सकता हैं।
4. लटकती हुई वस्तुए झूलने लगती है। बड़ी ट्रकों के जाने से उत्पन्न जैसा कंपन या बड़ी गेंद की दीवार पर धक्के का अनुभव, खड़ी कारें हिलने लगती हैं, खिड़कियां, दरवाजे खड़खनाने लगते है, शीशे चटक जाते हैं। चार के उच्चतम स्वर पर क्राकरी टूटने लगती हैं। लकड़ी की दीवारें और फ्रेम टूट जाते हैं।
5. बाहर महसूस किया जा सकता है। दिशा का अनुमान किया जा सकता है। सोते लोग जाग जाते हैं। तरल पदार्थ बिखर जाते हैं और कुछ नष्ट हो जाते हैं, छोटी अस्थिर वस्तुएं अपने स्थान से हट जाती है या अव्यवस्थित हो जाती हैं। दरवाजे झूलने लगते हैं, बन्द और खुलने लगते हैं। शटर और चित्र घूमने लगते हैं। घड़ी का पेन्डुलम बन्द हो जाता है, आरंभ हो जाता है या रफ्तार बदल देता है।
6. सभी द्वारा अनुभूत, बहुत से लोग डर जाते हैं और दरवाजे के बाहर भागने लगते हैं, लोगों का चलना अवव्यस्थित हो जाता है। खिड़कियां, डिसेज और शीशे के बर्तन टूट जाते हैं। नुमाइशी चीजें और पुस्तके अपने खानों से गिर जाती है। दीवार से तस्वीरें गिर जाती हैं। फर्नीचर इधर उधर हो जाता हैं। कमजोर प्लास्टर और राजगीरी–डी टूट जाती है। छोटी घंटियां बजने लगती हैं, पेड़ और झाड़िया स्पष्टता हिलने लगती हैं।
7. खड़ा रहना मुश्किल, चालकों के भी ध्यान में आता है, वस्तुएं तेजी से हिलती हैं। फर्नीचर टूट जाते हैं। राजगीरी–डी में क्षति, एवं दरारे, कमजोर पत्थर, टाईल्स छज्जे भी टूट जाते हैं, राजगीरी–सी में कुछ दरारें आ जाती हैं; तालाबों में लहरें उठने लगती हैं, पानी मटमैला हो जाता है, बलुए और ककरीले किनारों में थोड़ी सी सरकन और गडढे बन जाते हैं, कंकरीट की सिचाई व्यवस्था नष्ट हो जाती है।
8. कार का संचालन प्रभावित हो जाता है, राजगीरी–सी का नुकसान कुछ ध्वस्त हो जाती हैं, राजगीरी–बी में भी क्षति; राजगीरी–ए में नुकसान नहीं होता है; चिमनी अपने स्थान से हट जाती हैं या गिर जाती हैं; कचरे का अंबर बन जाती हैं स्मारक, मीनारें नष्ट हो जाती हैं। तालाब अपने जगह से हट जाते हैं; कमजोर दीवारे फेंक दी जाती हैं; पेड़ों की शाखाएं टूट जाती हैं; धाराओं के बहाव तथा कुएं के तापक्रम में परिवर्तन हो जाता है।
9. सामान्य भगदड़ मच जाती है; राजगीरी–डी नष्ट हो जाती है; राजगीरी–सी का बहुत नुकसान होता है, कभी–कभी पूरी तरह गिर जाती है; राजगीरी–बी भयानक रूप से नष्ट हो जाती हैं; नींव का सामान्य नुकसान होता है; पानी को सुरक्षित रखनेवाले तालाबोंका भयानकनुकसान होता है; भूमिगत पानी की पाइपें टूट जाती हैं; जमीन में स्पष्ट दरारें बन जाती हैं; कछारी भूमि से बालू और कीचड़ फेंक दिया जाता हैं।
10. अधिकांश भवन और बनावट अपनी नींव के साथ नष्ट हो जाती हैं; कुछ बेहतर ढंग से निर्मित काष्ठ–निर्माण और पुल नष्ट हो जाते हैं; बांधों नहरों और तटबन्धों को भयानक नुकसान होता हैं; बड़े पैमाने पर जमीन खिसक जाती है, नहरों नदियों और झीलों से पानी किनारों पर फेंक दिया जाता हैं; बालू और कीचड़ क्षैतिज रूप से किनारों और समतल भूमि में फेंक दिया जाता है। रेल की पटरिया टेढ़ी हो जाती हैं।
11. रेल लाइन भयानक रूप से टेढी हो जाती हैं। भूमिगत लाइनें पूरी तरह से बेकार हो जाती हैं।
12. पूरी तरह से सर्वनाश; भयानक कंपन दृष्टि की सभी चीजें और स्तर नष्ट हो जाता है। वस्तुएं हवा में उछाल दी जाती हैं।

राजगीरी–ए उत्तम कारीगरी, मसाला और आकृति, पुन शक्ति दी गई है जिससे उनकी आवृति को रक्षा देने की ताकत दें।

राजगीरी बी अच्छी कारीगरी और मसाला, पुनः शक्तिमान, लेकिन उनकी बनावट इस प्रकार नही रहती है कि उनको पार्श्विक ताकत दे सकें।

राजगीरी सी सामान्य कारीगरी; बहुत कमजोर नहीं होती है कि किनारों को बांधना पड़े लेकिन क्षैतिज ताकतों के विरुद्ध न तो उनकी बनावट होती है और शक्ति प्रदान की गई होती है।

राजगीरी डी कमजोर वस्तुओं और मसाले का उपयोग; कारीगरी का निम्नतम मानक।

विशाल मरुस्थल

नाम	देश	क्षेत्रफल वर्ग किमी में
सहारा	उत्तरी अफ्रीका	9065000
लिवयन	उत्तरी अफ्रीका	1683500
आस्ट्रेलियान	आस्ट्रेलिया	1554000
ग्रेट विक्टोरिया	आस्ट्रेलिया	323800
सीरियन	अरव	323800
अरेवियन	अरव	129500
गोवी	मंगोलिया	1036000
रव आल खाली	अरव	647500
कालाहारी	वाट्सवाना	518000
ग्रेट सैंडी	आस्ट्रेलिया	414400
ताकला माकन	चीन	323800
अरुनता	आस्ट्रेलिया	310800
कारा कुम	दक्षिण–पश्चिमी टर्किस्तान	272000
नूवियन	उत्तरी अफ्रीका	259000
थार	उत्तरी पश्चिमी भारत	259000
किज़िलकुम	मध्य टर्किस्तान	233100

मरुस्थल

मरुस्थल पृथ्वी की सतह का वह हिस्सा हैं जहां पर सूखे के कारण जीवन मुश्किल है । मरुस्थल को तीन भागों में विभक्त किया गया है । 1. उष्णकटिवंध (गर्म) उदाहरणार्थ – सहारा, अरवियन, अटाकामा, आस्ट्रेलियन एवं थार मरुस्थल । 2. मध्य याम्योत्तर (शीतोष्ण) उदाहरणार्थ – गोवी, ग्रेट वेसिन (संरा.) पैंटागोनियत (अर्जेंटाइना) और तुर्किस्तान मरुस्थल) 3. उच्च याम्योत्तर (ध्रुवीय/ठंडे) उदाहरणार्थ अंटार्टिका । मरुस्थल में उच्च तापमान 58 डिग्री सेल्सियस तक और निम्न तापमान 88 डिग्री सेल्सियस तक होता है यहां औसत वार्षिक वर्षा 250 मि. मी. होती हैं ।

द्वीप

द्वीप काफी विशाल भूभाग में व्याप्त हैं । सवसे वड़े 16 द्वीपों का कुल क्षेत्रफल पांच करोड़ 60 लाख वर्ग किलोमीटर है जो कि यूरोपीय महाद्वीप के क्षेत्रफल से अधिक है । छोटे द्वीप की संख्या हजारों में है । द्वीप मोटे तौर से तीन प्रकार के होते हैं – महादेशी, महासागरीय और प्रवाल ।

महादेशी द्वीप वे हैं जो कि महादेशी उपतटों से उदित होते हैं, यथा–व्रिटिश द्वीप समूह, या न्यूफाउन्डलैंड । इन द्वीपों की भूवैज्ञानिक संरचना उन महाद्वीपों के समान होती है जिनसे ये संवंधित होते हैं । महासागरी द्वीप वे हैं जो महासागर के हृदय से उभरते हैं । उनकी भूवैज्ञानिक संरचना का निकटतम तटों से कोई संवंध नहीं होता । वे अधिकांशत: अंत:समुद्री पर्वतों या अंत:समुद्री ज्वालामुखियों के शीर्ष होते हैं । उदाहरणार्थ, असेसन और ट्रिस्टान दा कुन्या मध्य अटलांतिक पर्वत श्रेणी से निकले है जवकि सेंट हेलेना और टेनेरिफ सामुद्री ज्वालामुखियों से वने हैं ।

प्रवाल द्वीप : प्रवाल पालिप कहे जाने वाले ये द्वीप समुद्री जीवों की रचना हैं । ये समुद्री जीव समुद्र में उपनिवेश वना कर उसमें जमा हो जाते हैं । जव जीव मृत हो जाते हैं तो चूना–पत्थर जैसे तत्व के वने उनके कंकाल एक वड़ा गुच्छा वना देते हैं जिनमें से कुछेक पानी के ऊपर उभर आते हैं ।

इस प्रकार के प्रवाल की विशिष्टता शैल भित्ति का निर्माण करने में है । शैल भित्ति का निर्माण करनेवाले प्रवाल गर्म उष्ण कटिवंधीय सागरों में फूलते–फलते हैं । वे प्राय: द्वीपों की कोरों के साथ–साथ भित्तियों का निर्माण करने लगते हैं । इस प्रकार की भित्तियों को तटीय प्रवाल भित्ति कहते हैं । वहुत–से उष्ण कटिवंधीय द्वीपों में ऐसे तटीय प्रवाल हैं । ये सागर की तवाही से द्वीपों की रक्षा करते हैं । कभी–कभी तटीय प्रवाल भित्ति वाला द्वीप डूवने लगता है । उसकी तटरेखा सवसे पहले डूवती है, जवकि प्रवाल निर्माण ऊपर की ओर होता रहता है । सागर डूवती तटीय रेखा पर धावा वोल देता है और प्रवाल भित्ति को शेष द्वीप से अलग–थलग कर देता है । इस प्रकार की भित्ति को 'प्रवाल

विश्व के सर्वाधिक विशाल द्वीप

नाम	क्षेत्रफल वर्ग किलोमीटर में	अवस्थिति
ग्रीनलैंड	2175600	आर्कटिक महासागर
न्यूगिनी	821030	प. प्रशांत महासागर
वार्निया	744370	हिंद महासागर
मालागासी रेप	590000	हिंद महासागर
वैफिन द्वीप	476070	ऑर्कटिक महासागर
सुमात्रा	473600	हिंद महासागर
होन्शू	227970	उ.प. प्रशांत महासागर
ग्रेट व्रिटेन	218040	उ. अटलांटिक महासागर
इलिसमेयर द्वीप	212600	आर्कटिक महासागर
विक्टोरिया द्वीप	212200	आर्कटिक महासागर
सेलेवेस	189040	हिंद महासागर
साउथ आइलैंड (न्यूजीलैंड)	150460	दक्षिणी–पश्चिमी प्रशांत महासागर
जावा	126290	हिंद महासागर
लूज़ोन	120790	प. प्रशांत महासागर
नार्थ आइलैंड	114690	द.प. प्रशांत महासागर
न्यू फाउन्डलैंड	110680	उ. अटलांटिक महासागर
क्यूवा	114524	कैरीवियन सागर
आइसलैंड	102846	उ. अटलांटिक महासागर
मिंडानाओ	101500	प. प्रशांत महासागर
आयरलैंड (उत्तरी आयरलैंड एवं रिप–आफ आयरलैंड)	82460	उत्तरी अटलांटिक महासागर
होकैडो	77720	उ.प. प्रशांत महासागर
हिस्पानिओला डाम–रिप एवं हैती	76480	कैरीवियन सागर
सखालिन	74070	उ.प. प्रशांत महासागर
टस्मानिया	67900	द.प. प्रशांत महासागर
श्रीलंका	65610	हिंद महासागर

पांच करोड़ वर्षों का इतिहास निहित है। भारत महाद्वीप के एशिया के साथ जुड़ने के बाद भी भारतीय प्लेट 50 मिमी प्रतिवर्ष की रफ्तार से उत्तर की ओर अभिसरित हो रही है। इस कारण भारत का अग्रभाग क्षेप भ्रंशित होकर अपने से ही कटकर ऊपर उठे भाग–हिमालय महान के नीचे निरन्तर क्षेपित हो रहा है। यह प्रक्रिया अभी कई लाख वर्षों तक चलती रहेगी। ऐसा अनुमान है कि हिमालय रूपी भारत एशिया प्लेटों की टकराव सीमा बड़े पैमाने के भूकंपों द्वारा भविष्य में आठ या दस और फटेगी। पश्चिम से पूर्व तक 2400 किमी लंबाई की हिमालयी अधिक्षेपित चाप निरन्तर सक्रिय है जिससे कुछ सौ वर्षों तक बड़े भूकंप आने की संभावना है।

हिमालय में भूकंप

संपूर्ण हिमालय पर्वत चाप नंगा पर्वत से नमचा बरवा तक विवर्तनीक व्यवहार एकसमान है। इस विशेषता की गवाही देता है हिमालय पर्वत का चापाकार जो आज तक विकृति तनावों के विमोचन के बाद भी नहीं बदला। इसका मतलब है कि शैलों में एकत्रित तनाव व उस तनाव को सहने की क्षमता पश्चिमी से पूर्वी सिरे तक समान है। तदापि, हिमालय पर्वत श्रृंखला एक साथ एक ही समय में भूकंपों द्वारा नहीं फटी। क्योंकि वह अनेक भ्रंशों द्वारा कई भागों में विभाजित है। कई विदारण भ्रंश हिमालय को इन फटाव भागों में बांटते हैं।

कांगडा, बिहार व असम में आये चार भूकंपों के विश्लेषण से पता चला है कि हिमालय के उन भागों में भविष्य में भूकंपों द्वारा क्षति की संभावना है जहां वह पिछले 30 या अधिक वर्षों से नहीं आए। यही भाग भूकंपीय अन्तराल हैं। जहां निकट भविष्य में फटाव की संभावना अत्यधिक है। बड़े भूकंपों की पुनरावृत्ति अवधि भिन्न–भिन्न भागों में एकसमान होना चाहिए परन्तु हिमालय के विभिन्न भागों को विभाजित करने वाले भ्रंशों के कारण यह पर्वत श्रृंखला एक ही समय, एक साथ फट नहीं सकती। इस कारण बड़े भूकंप इस प्लेट सीमा के विभिन्न भागों में एक ही पुनरावृति अवधि में आएंगे पर एक साथ कभी नहीं। यह भूकंपीय अन्तराल की अवधारणा है।
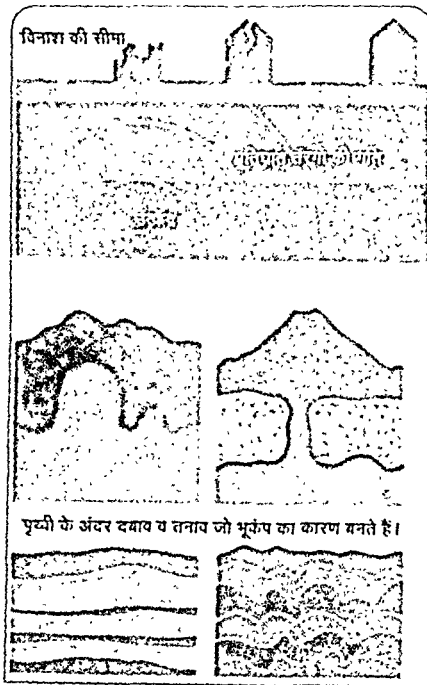
पृथ्वी के अंदर दबाव व तनाव जो भूकंप का कारण बनते हैं।

भूकंपीय अन्तराल की परिकल्पना

हिमालय में बड़े भूकंप आने की संभावनाएं उन भागों में अधिक है जहां वह पहले नहीं आए, अर्थात भूकंपीय अन्तराल वह स्थान हैं जो पिछले सौ वर्षों में नहीं फटे हैं। कांगड़ा (1905), बिहार व असम (1934, 1987) व असम (1950) में आए भूकंपों के स्थानों के बीच के भाग भूकंपीय अन्तराल हैं। यह भाग निम्नलिखित हैं:

1. कश्मीर–अन्तराल: कांगड़ा भूकंप से स्थान से पश्चिमी भाग।

2. केन्द्रीय–अन्तराल: कांगड़ा व बिहार भूकंपों के बीच का भाग। यह अन्तराल 700 किमी लंबा है। यहां निकट भविष्य में दो भूकंप आने की संभावना अत्यधिक है।

3. असम अन्तराल: 1897 व 1950 में असम में आए दो भूकंपों के बीच का भाग।

इन अन्तरालों में काफी समय से व्याप्त भूकंपीय शांति निकट भविष्य में आनेवाले विनाशकारी भूकंपों के पहले की चुप्पी है। खत्री व विस ने इस भूकंपीय शान्ति की अवधि लगभग 30 वर्ष बतायी है। इसी प्रकार की भूकंपीय गतिविधियों में गिरावट व शांति छाई रही थी जो कांगड़ा, बिहार व असम के भागों में भूकंप आने पर सहसा भंग हुई। केन्द्रीय गैप बहुत बड़ा है, यहां निकट भविष्य में दो बड़े भूकंप आने की संभावना है। असम अन्तराल में दीर्घकाल तक होनेवाली विकृतियों द्वारा भूतल के 2.5 मिमी तक ऊपर उठने का प्रमाणा 1974–1975 में रिकार्ड किया गया है। असम अन्तराल के पूर्वी व पश्चिमी सिरे पर भूकंपीय गतिविधियां अब कुछ तेजी से चल रही हैं और पुनरावृत्ति की अवधि के अनुमान के अनुसार यह भाग अब कभी भी फट सकता है। इसी प्रकार 700 किमी लंबा केन्द्रीय हिमालय अन्तराल अब से 2150 इस्वीं तक किसी भी समय फट सकता है। भविष्य में भूकंपों से ग्रसित होने के स्थान तो भूकंपीय अन्तराल की अवधारण द्वारा ज्ञात हुआ हैं और यह भी अनुमानित है कि लगभग कितनी अवधि के पश्चात इन स्थानों में भूकंप आने की संभावना है, परन्तु यह भविष्यवाणी करने में अभी वैज्ञानिक समर्थ नहीं हैं कि किस वर्ष किस भाग और किस दिन भूकंपीय अन्तरालों का भाग भूकंपों द्वारा ग्रसित होगा।

जानवरों, जैसे चूहे, चिड़ियों व कुत्ते इत्यादि का असाधारण व्यवहार किसी क्षेत्र में भूकंप आने का कुछ घंटे पहले पूर्वानुमान करा देता है। वैज्ञानिक अभी इसप्रकार की अल्पवधि भविष्यवाणी करने में भी सक्षम नहीं हैं।

विशाल मरुस्थल

नाम	देश	क्षेत्रफल वर्ग किमी में
सहारा	उत्तरी अफ्रीका	9065000
लेयियन	उत्तरी अफ्रीका	1683500
आस्ट्रेलियान	आस्ट्रेलिया	1554000
ग्रेट विक्टोरिया	आस्ट्रेलिया	323800
सीरियन	अरव	323800
अरेवियन	अरव	129500
गोवी	मंगोलिया	1036000
रव आल खाली	अरव	647500
कालाहारी	वाट्सवाना	518000
ग्रेट सैंडी	आस्ट्रेलिया	414400
ताकला माकन	चीन	323800
अरुनता	आस्ट्रेलिया	310800
कारा कुम	दक्षिण–पश्चिमी टर्किस्तान	272000
नूवियन	उत्तरी अफ्रीका	259000
थार	उत्तरी पश्चिमी भारत	259000
किज़िलकुम	मध्य टर्किस्तान	233100

मरुस्थल

मरुस्थल पृथ्वी की सतह का वह हिस्सा हैं जहां पर सूखे के कारण जीवन मुश्किल है। मरुस्थल को तीन भागों में विभक्त किया गया है। 1. उष्णकटिवंध (गर्म) उदाहरणार्थ – सहारा, अरवियन, अटाकामा, आस्ट्रेलियन एवं थार मरुस्थल। 2. मध्य याम्योत्तर (शीतोष्ण) उदाहरणार्थ – गोवी, ग्रेट वेसिन (संरा.) पैंटागोनियत (अर्जेंटाइना) और तुर्किस्तान मरुस्थल) 3. उच्च याम्योत्तर (ध्रुवीय/ठंडे) उदाहरणार्थ अंटार्टिका। मरुस्थल में उच्च तापमान 58 डिग्री सेल्सियस तक और निम्न तापमान 88 डिग्री सेल्सियस तक होता है यहां औसत वार्षिक वर्षा 250 मि. मी. होती हैं।

द्वीप

द्वीप काफी विशाल भूभाग में व्याप्त हैं। सवसे वड़े 16 द्वीपों का कुल क्षेत्रफल पांच करोड़ 60 लाख वर्ग किलोमीटर है जो कि यूरोपीय महाद्वीप के क्षेत्रफल से अधिक है। छोटे द्वीप की संख्या हजारों में है। द्वीप मोटे तौर से तीन प्रकार के होते हैं – महादेशी, महासागरीय और प्रवाल।

महादेशी द्वीप वे हैं जो कि महादेशी उपतटों से उदित होते हैं, यथा–ब्रिटिश द्वीप समूह, या न्यूफाउन्डलैंड। इन द्वीपों की भूवैज्ञानिक संरचना उन महाद्वीपों के समान होती है जिनसे ये संवंधित होते हैं। महासागरी द्वीप वे हैं जो महासागर के हृदय से उभरते हैं। उनकी भूवैज्ञानिक संरचना का निकटतम तटों से कोई संवंध नहीं होता। वे अधिकांशत: अंत: समुद्री पर्वतों या अंत: समुद्री ज्वालामुखियों के शीर्ष होते हैं। उदाहरणार्थ, असेसन और ट्रिस्टान दा कुन्या मध्य अटलांतिक पर्वत श्रेणी से निकले है जयकि सेंट हेलेना और टेनेरिफ समुद्री ज्वालामुखियों से वने हैं।

प्रवाल द्वीप : प्रवाल पालिप कहे जाने वाले ये द्वीप समुद्री जीवों की रचना हैं। ये समुद्री जीव समुद्र में उपनिवेश वना कर उसमें जमा हो जाते हैं। जव जीव मृत हो जाते हैं तो चूना–पत्थर जैसे तत्व के वने उनके कंकाल एक वड़ा गुच्छा वना देते हैं जिनमें से कुछेक पानी के ऊपर उभर आते हैं।

इस प्रकार के प्रवाल की विशिष्टता शैल भित्ति का निर्माण करने में है। शैल भित्ति का निर्माण करनेवाले प्रवाल गर्म उष्ण कटिवंधीय सागरों में फूलते–फलते हैं। वे प्राय: द्वीपों की कोरों के साथ–साथ भित्तियों का निर्माण करने लगते हैं। इस प्रकार की भित्तियों को तटीय प्रवाल भित्ति कहते हैं। वहुत–से उष्ण कटिवंधीय द्वीपों में ऐसे तटीय प्रवाल हैं। ये सागर की तवाही से द्वीपों की रक्षा करते हैं। कभी–कभी तटीय प्रवाल भित्ति वाला द्वीप डूवने लगता है। उसकी तटरेखा सवसे पहले डूवती है, जवकि प्रवाल निर्माण ऊपर की ओर होता रहता है। सागर डूवती तटीय रेखा पर धावा वोल देता है और प्रवाल भित्ति को शेष द्वीप से अलग–थलग कर देता है। इस प्रकार की भित्ति को 'प्रवाल

विश्व के सर्वाधिक विशाल द्वीप

नाम	क्षेत्रफल वर्ग किलोमीटर में	अवस्थिति
ग्रीनलैंड	2175600	आर्कटिक महासागर
न्यूगिनी	821030	प. प्रशांत महासागर
वार्निया	744370	हिंद महासागर
मालागासी रेप	590000	हिंद महासागर
वैफिन द्वीप	476070	आर्कटिक महासागर
सुमात्रा	473600	हिंद महासागर
होन्सू	227970	उ.प. प्रशांत महासागर
ग्रेट ब्रिटेन	218040	उ. अटलांटिक महासागर
इलिसमेयर द्वीप	212600	आर्कटिक महासागर
विक्टोरिया द्वीप	212200	आर्कटिक महासागर
सेलेवेस	189040	हिंद महासागर
साउथ आइलैंड (न्यूजीलैंड)	150460	दक्षिणी–पश्चिमा प्रशांत महासागर
जावा	126290	हिंद महासागर
लूज़ोन	120790	प. प्रशांत महासागर
नार्थ आइलैंड	114690	द.प. प्रशांत महासागर
न्यू फाउन्डलैंड	110680	उ. अटलांटिक महासागर
क्यूवा	114524	कैरीवियन सागर
आइसलैंड	102846	उ. अटलांटिक महासागर
मिंडानाओ	101500	प. प्रशांत महासागर
आयरलैंड (उत्तरी आयरलैंड एवं रिप–आफ आयरलैंड)	82460	उत्तरी अटलांटिक महासागर
होकैडो	77720	उ.प. प्रशांत महासागर
हिस्पानिओला डाम–रिप एवं हेती	76480	कैरीवियन सागर
साखालिन	74070	उ.प. प्रशांत महासागर
टस्मानिया	67900	द.प. प्रशांत महासागर
श्रीलंका	65610	हिंद महासागर

महासागर

नाम	क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर)
प्रशांत	165242000
अटलांटिक	82362000
हिंद	73556000
आर्कटिक	13986000

प्रमुख सागर

नाम	क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर)
दक्षिणी चीन सागर	8142960
कैरेबियन सागर	2753170
भूमध्य सागर	2503880
बेरिंग सागर	2268190
मैक्सिको की खाड़ी	1542990
ओखो ट्स्क सागर	1527506
पूर्वी चाइना सागर	1249150
हडसन की खाड़ी	1232320
जापान सागर	1007510
अंडमान सागर	797720
उत्तरी सागर	575300
काला सागर	461990
रेड सागर	437710
बाल्टिक सागर	422170
फारस की खाड़ी	238800
सेंट लारेंस की खाड़ी	237760

रोधिका कहते है । क्वीन्स लैंड (आस्ट्रेलिया) के समुद्र तट के समांतर 1920 किलोमीटर से अधिक फैला दि ग्रेट बैरियर रीफ इसी प्रकार से निर्मित हुआ जान पडता है । यह सबसे बडी ज्ञात प्रवाल भित्ति है जिसका निर्माण हजारों वर्ष में अनगिनत प्रवाल उपनिवेशों के चूनाश्म ककालों से हुआ है ।

छिछले पानी के केन्द्रीय समुद्रताल (लेगून) सहित निम्न वृत्ताकार द्वीप प्रवाल वलय कहलाते हैं । प्रवाल द्वीप वलय सभवत: प्रवाल द्वीप विकास में अंतिम चरण को दर्शाते हैं । जब चारों ओर प्रवाल की रचनावाले द्वीप डूब जाते हैं तो प्रवाल मडल पानी के ऊपर बचा रहता है जबकि द्वीप पानी के नीचे अतर्धान हो जाता है । कालातर में प्रवालीय चूना-पत्थर की भित्ति का जब अपक्षय हो जाता है, उस पर मिट्टी निकल आती है । तब चिडियो या हवा द्वारा वहा लाए गए बीज अंकुरित होकर वनस्पति का उत्पादन करते हैं । ऐसी स्थिति में प्रवाल भित्ति निवास के योग्य क्षेत्र बन जाता है, यही वास्तव में प्रवाल द्वीप है ।

पवाल द्वीप वलय के दो भाग होते हैं – केन्द्रीय समुद भाग (जलीय क्षेत्र) और इर्द-गिर्द की भित्ति भूमि । कभी-कभी जलीय भाग भू धरातल से कहीं अधिक विशाल होता है । केन्द्रीय प्रशांत महासागर के मार्शल द्वीप समूह में कवाजेलिन इसका उदाहरण है जहा जलीय क्षेत्र 2850 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्रफल घेरे है जिसकी कुल लबाई 280 किलोमीटर है दूसरी ओर, केन्द्रीय प्रशात महासागर में लाइन द्वीप समूह में क्रिसमस द्वीप – एक ऐसा प्रवाल द्वीप वलय है जिसका भू क्षेत्रफल सर्वाधिक 480 वर्ग किलोमीटर है । इसका समुद्रताल (लैगून) सापेक्षिक रूप से नगण्य है ।

जल मंडल

अनुमान है कि जलमंडल में लगभग 1,460,000,000 घन कि.मी. पानी है । इसमें से 97.3 प्रतिशत महासागरों और अंतर्देशीय सागरों में है । शेष 2.7 प्रतिशत हिम नदों, और बर्फ टोपों, मीठे जल की झीलों, नदियों और भूमिगत जल के रूप में पाया जाता है । महासागरीय जल और मीठे जल का कुल स्टाक, भूवैज्ञानिक इतिहास में हमेशा ही बिल्कुल स्थिर रहा है । लेकिन महासागरीय और मीठे जल का अनुपात, जलवायु की दशाओं के अनुसार हमेशा बदलता रहा है । जब जलवायु अत्यधिक शीत होती है तो बहुत-सा समुद्री जल हिमनदों और बर्फ टोपों द्वारा अवशोषित हो जाता है और समुद्री जल की कमी के कारण मीठे जल का परिमाण बढ़ जाता है । जब जलवायु गर्म हो जाती है तो हिमनद और बर्फ टोप के पिघलने से मीठे जल की कमी के कारण समुद्री जल का परिमाण बढ़ जाता है। पिछले 60 से 80 वर्षों के दौरान किए गये समुद्र स्तर प्रेक्षण दर्शाते हैं कि समुद्र जल धीरे-धीरे बढ़ रहा है। इसका अर्थ यह है कि जलवायु गर्म होती जा रही है ।

प्रसिद्ध जल प्रपात

नाम	देश	ऊंचाई (मीटर)
ऊंचाई के अनुसार.		
एंजल	वेनेजुला	807
कुकेनाम	वेनेजुला	610
रियन	सं.रा.अमेरिका	491
किंग जार्ज पष्ठम	गुयाना	488
अपर योसेमाइट	सं.रा.अमेरिका	436
गवार्नी	फ्रांस	422
टुगेला	दक्षिणी अफ्रीका	411
वोलोमांबी	आस्ट्रेलिया	335
टकाकाव	कनाडा	305

जल के घनत्व के अनुसार

नाम	देश	औसत वार्षिक प्रवाह (घन मीटर प्रति सेकेंड)
गोरिया	ब्राजील	13300
खोन	भारत-चीन	11600
नियाग्रा	कनाडा	6000
पालो अफोन्सो	ब्राजील	2830
अरुबूपुंगा	ब्राजील	2750
इगुओजू	अर्जेन्टाइना	1750
पैटोस मारीबोंडा	ब्राजील	1500
विक्टोरिया	जिम्बाब्वे	1090
ग्रैन्ड	लैब्रेडर	1000
कैचेर	गुयाना	660

महासागर पृथ्वी के कुल धरातल क्षेत्रफल के 70.8 प्रतिशत भाग को आच्छादित किए हैं और इनमें 144.5 करोड़ घन कि.मी. पानी है ।

सौरताप महासागर के जल को गतिशील रखता है । भूमध्य रेखीय क्षेत्र में सूर्य पानी को गर्म कर देता है जिससे यह फैलकर कुछेक इंच ऊपर उठ जाता है ।

भूमध्य रेखा में यह अतिरिक्त उठान पानी को नीचे उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों की ओर बहने के लिए प्रेरित करती है । चूंकि भूमध्य रेखा का गर्म पानी उत्तर और दक्षिण की ओर बहता है, अत: ध्रुवीय क्षेत्रों में भारी ठंडा पानी (भारी, क्योंकि पानी में अत्यधिक संघनन होता है) गर्म जल के नीचे चला जाता है और तल के साथ-साथ धीरे-धीरे भूमध्य रेखीय क्षेत्रों तक फैल जाता है ।

इस अंत: प्रवाह में पृथ्वी की घूमने की शक्ति के कारण उलझाव पैदा हो जाता है । चूंकि पृथ्वी पूर्व की ओर चक्कर लगाती है, इसलिए समुद्र का पानी पश्चिम की ओर आने के लिए प्रेरित होता है और वह उत्तरी गोलार्ध में थोड़ा दाहिनी ओर और दक्षिणी गोलार्ध में थोड़ा-सा बाईं ओर मुड़ जाता है । यह फ्रांसीसी गणितज्ञ के नाम पर कोरि ऑलिस प्रभाव के रूप में जाना जाता है जिसने एक सौ वर्ष पहले इसकी खोज की थी ।

महाद्वीपों के विपरीत, महासागर एक-दूसरे में इतने स्वाभाविक रूप से विलीन हो जाते हैं कि उनके बीच की सीमा का निर्धारण करना कठिन हो जाता है । फिर भी भूगोल वेत्ताओं ने महासागरीय क्षेत्र को चार महासागरों, - प्रशान्त महासागर, अटलांटिक महासागर, हिंद महासागर और आर्कटिक महासागर

लम्बी नदियां

नाम	देश महाद्वीप	लम्बाई (किलोमीटर में
अमेजन	दक्षिणी अमेरिका	6447/6750
नील	अफ्रीका	6670
मिसिपि मिसोरी	सं.रा.अमेरिका	5970
यांग्नरी कियांग	चीन	5470
ओव-इरतीश	पूर्व सोवियत रूस	5150
कांगो	अफ्रीका	4666
अमूर	एशिया	4350
हवांग	चीन	4344
लेना	सोवियत रूस	4260
मेकेंजी	कनाडा	4240
मेकांग	एशिया	4183
नाइज़र	अफ्रीका	4183
परान	दक्षिण अमेरिका	3942
येनिसी	पूर्व सोवियत रूस	3804
मुरे-डालिंग	आस्ट्रेलिया	3717
वोल्गा	पूर्व सोवियत रूस	3685
मडीरया	दक्षिण अमेरिका	3218
यूकोन	अलासका-कनाडा	3184
सेंट लारेंस	कनाडा-सं.रा.अमेरिका	3057
रिओ ग्रांड	सं.रा.अमेरिका-मैक्सिको	3033
पुरुस	दक्षिणी-अमेरिका	2977
साओ फ्रांसिस्को	दक्षिणी-अमेरिका	2900
सालवीन	एशिया	2815
डेन्यूब	यूरोप	2775
यूफेटस	एशिया	2735
सिंध	एशिया	2735
टोकनटिन्स	दक्षिणी अमेरिका	2735
ब्रह्मपुत्र	एशिया	2700
सियर दरिया	पूर्व सोवियत रूस	2700
सी	चीन	2655
गंगा	भारत	2655
ओरिनोको	दक्षिणी अमेरिका	2575
नेल्सन	कनाडा	2575
जैम्बेजी	अफ्रीका	2575
उराल	पूर्व सोवियत रूस	2533
अमू-दरिया	पूर्व सोवियत रूस	2494
ओलेनेक	पूर्व सोवियत रूस	2494
परागुए	दक्षिणी अमेरिका	2494
जापुरा	दक्षिणी अमेरिका	2494
अर्कान्सस	सं.रा.अमेरिका	2333
कोलराडो	सं.रा.अमेरिका -मैक्सिको	2333
डेनीपर	पूर्व सोवियत रूस	2280
रिओनीग्रो	दक्षिणी अमेरिका	2253
आरेन्ज	अफ्रीका	2172
कोलीमा	पूर्व सोवियत रूस	2148
इरावती	बर्मा	2132
ओहियो	सं.रा.अमेरिका	2100
कामा	पूर्व सोवियत रूस	2030
डोन	पूर्व सोवियत रूस	1966
कोलम्बिया	अमेरिका-कनाडा	1953
सस्करचेवान	कनाडा	1940
पीस	कनाडा	1923
डालिंग	आस्ट्रेलिया	1866
अंगारा	पूर्व सोवियत रूस	1862
टिगरीस	एशिया	1850
सनगारी	एशिया	1818
पिचोरा	पूर्व सोवियत रूस	1788
स्नेक	सं.रा.अमेरिका	1670
रेड	सं.रा.अमेरिका	1638
चर्चिल	कनाडा-अमेरिका	1610
पिल्कोमायो	दक्षिणी अमेरिका	1610
उरुगुए	दक्षिणी अमेरिका	1610
मैगढलेना	कोलम्बिया	1610

– में विभाजित, किया है । परिभाषा के अनुसार इन महासागरों में सागर, उपसागर, खाड़ियां तथा अन्य उनसे संलग्न महासागरीय प्रवेशद्वार शामिल है ।

महासागरों में सबसे बड़ा और सबसे पुराना प्रशान्त महासागर है । पृथ्वी के क्षेत्रफल के 35.25 प्रतिशत भाग पर यह फैला है । इसकी सर्वाधिक चौड़ाई 16880 किलोमीटर और सर्वाधिक गहराई 11516 मीटर (मिंडानाओ डीप) है । इसमें द्वीपों का सर्वाधिक संगुटीकरण है जो मोटे तौर पर तीन समूहों में है – माइक्रोनेशिया, मेलानेशिया और पालीनेशिया ।

अटलांटिक महासागर – दूसरा सबसे बड़ा महासागर – पृथ्वी के क्षेत्रफल के 20.9 प्रतिशत भाग को घेरे है । इसकी सर्वाधिक गहराई 8381 फीट (मिलवाकी डीप) है।

हिंद महासागर – तीसरा सबसे बड़ा महासागर – भारत में कन्या कुमारी से दक्षिणी ध्रुव एंटार्टिका तक फैला है । यह पृथ्वी के कुल धरातल क्षेत्र के 14.65 प्रतिशत भाग में है। इसकी सर्वाधिक गहराई 7725 मीटर (प्लैनेट डीप) है ।

आर्कटिक सही रूप से महासागर नहीं है । इसमें जलपोत नहीं चल सकते है । यह उत्तरी ध्रुव के चारों ओर फैला है और शीतकाल में पूर्णतया बर्फ से जमा हुआ है और वर्ष के शेष भाग में अपने ही हिम से ढका रहता है । फिर भी, इसका पृथक अस्तित्व है और 1 करोड़ 30 लाख वर्ग किलोमीटर से अधिक का इसका क्षेत्रफल इसे महासागर कहने के लिए बाध्य करता है ।

यद्यपि महासागरों की संख्या चार ही है, तथापि सागरों की संख्या सात है । विख्यात सात समुद्रों की रचना पहले तीन महासागरों को भूमध्य रेखा के साथ–साथ उत्तर और दक्षिण में विभाजित करने के और उनमें आर्कटिक को जोड़ने से हुई है। इस प्रकार उत्तरी प्रशांत, दक्षिणी प्रशांत, उत्तरी अटलांटिक, दक्षिणी अटलांटिक, उत्तरी हिंद, दक्षिणी हिंद और आर्कटिक सागर हैं।

नदियां, झीलें और जलप्रपात

विश्व की सबसे लंबी दो नदियां हैं – दक्षिणी अटलांटिक सागर तक बहनेवाली अमेज़न (अमेज़ोनाज़) और भूमध्य सागर तक बहनेवाली नील (बहरे–एल–नील) । इनमें से कौन सबसे अधिक लंबी है, यह साधारण माप का मामला न होकर परिभाषा का मामला है ।

वर्ष 1969 में मापी गई अमेजन नदी की लंबाई 6447 किलोमीटर है । बाद की गणना में इसे 6750 किलोमीटर पाया गया । बेल्जियम के एम. डेवराय की माप के अनुसार नील नदी की लंबाई 6670 कि.मी. है । यदि हम अमेजन के निम्न आंकड़े 6447 कि.मी. को मानें तो नील नदी 223 किलोमीटर अधिक लंबी है यदि अधिक आंकड़े 6750 कि.मी. पर विचार किया जाए तो अमेजन 80 किलोमीटर अधिक लंबी है ।

फिर भी नदियों का गुण विवेचन करने में प्राथमिक मापदंड यह है कि वे कितना पानी ले जाती हैं और नौ संचालन तथा कृषि के लिए वे कितने क्षेत्र को सुविधा प्रदान करती हैं । इन आधारों पर नील नदी अमेजन से काफी बड़े अंतर से पीछे रह जाती है। अमेजन में सर्वाधिक लंबा 3700 कि.मी. नौगम्य जल क्षेत्र है। विश्व में सभी नदियों की अपेक्षा इसका जल प्रवाह अत्यधिक है, यथा – औसतन 119000 घन मीटर पानी प्रति सेकेंड (क्यूसेक) जो बाढ़ में 2000000 घन मीटर तक बढ़ जाता है । इसका मुहाना विश्व में सबसे बड़ा 70 लाख वर्ग किलोमीटर है । इसकी लगभग 15,000 सहायक नदियां हैं, सबसे लम्बी सहायक नदी मेडीरा की लम्बाई 3200 किलोमीटर है ।

वायु मंडल

वायु मंडल पृथ्वी की रक्षा करने वाला रोधी आवरण है। यह सूर्य के गहन प्रकाश और ताप को नरम करता है । इसकी ओज़ोनिक (O_3) पर्त सूर्य से आने वाली अत्यधिक हानिकर परावैंगनी किरणों को अधिकांशतया सोख लेती हैं और इस प्रकार जीवों की विनाश से रक्षा करती हैं । वायुमंडल गुरुत्व द्वारा पृथ्वी से बंधा हुआ है । चन्द्रमा जैसा उपग्रह जिसकी गुरुत्व शक्ति बहुत कम होती है, वायु मंडल को नहीं धारण कर सकता है ।

वायु दबाव का सीधा और सरल अर्थ है किसी दिए बिंदु पर संपूर्ण वायु कालम का भार पड़ना । निश्चय ही, हवा का भार बहुत कम होता है । एक घन लिटर का एकसाथ हवा का भार लगभग 1.3 ग्राम का होता है । समुद्र तल पर हवा का दबाव वर्ग से.मी. 1033.6 होता है ।

वायु मंडल में विभिन्न गैसें और जलवाष्प होते हैं और अपने सर्वाधिक ऊपरी भाग में यह परमाणविक कणों से आवेशित होते हैं । पृथ्वी से 50 किलोमीटर की दूरी तक वायुमंडल में 78 प्रतिशत नाइट्रोजन, 21 प्रतिशत आक्सीजन (02) और निम्न प्रतिशत में आर्गान, कार्बन डाइ–आक्साइड, निआन, हीलियम और मेथेन इसी क्रम से विद्यमान हैं । तीस मील से ऊपर, वायुमंडल परमाण्वीय आक्सीजन (01) ओजोन (03) हीलियम और हाइड्रोजन से बना हुआ है ।

अपोलो–16 मिशन द्वारा चन्द्रमा के धरातल पर छोड़े गए एक कैमरे के जरिए हाल ही में ऊपरी वायुमंडल में परमाणु हाइड्रोजन की उपस्थिति की पुष्टि हुई है । कैमरे ने पृथ्वी से बाहर की ओर फैले हुए लगभग 64000 कि.मी. तक परमाणु हाइड्रोजन के बादल का रहस्योद्घाटन किया है ।

निम्न वायुमंडल में लगभग 12 किलोमीटर तक 0.0 से लेकर 1 प्रतिशत तक की सांद्रता में जलवाष्प है । यद्यपि वायुमंडल में जलवाष्प का परिमाण बहुत कम है, फिर भी इसका अत्यधिक महत्व है क्योंकि वायुमंडल में पानी के बिना पृथ्वी पर कोई मौसम नहीं होता । जल मंडल से वाष्पोत्सर्जन के जरिए (और पौधों के वाष्पीकरण द्वारा भी) पानी वायुमंडल में प्रवेश करता है और हिम एवं वर्षा के रूप में वायु मंडल से विदा लेता है । यह कभी न समाप्त होने वाला एक चक्र है ।

जिस जलवाष्प का पृथ्वी से वाष्पीकरण होता है, उसी से बादल बनता है । वे अत्यधिक सूक्ष्मदर्शीय आकार की नन्हीं–सी बूंदें होती है जो अत्याधिक हल्की होने के कारण वर्षा के रूप में नीचे गिरने में अक्षम होती हैं । इसलिए वे वायु तरंगों पर तैरती रहती हैं जब तक कि वे द्रवित होकर वर्षा के रूप में नहीं गिरतीं

पृथ्वी से विद्युत् की महोर्मि ही तड़ित को इतनी भयानक घटना बना देती है । फिर भी इस संबंध में पहल बादल ही करते हैं जो अपेक्षाकृत कमजोर वज्रपात को नीचे भेजते है। वह अग्रगामी वज्रपात कहलाता है । इसकी अनुक्रिया में पृथ्वी अत्यधिक सपुंजित, वज्रपात बादल तक भेजती है । इस सभी क्रिया–कलाप में एक सेकेंड से कम समय लगता है, इसलिए हम अग्रगामी

त और प्रति वज्रपात को तड़ित् की एक ही दमक के रूप
ते है ।
सूखी हवा विद्युत् का सशक्त प्रतिरोध करती है । जब हवा
ाप्प से भरी होती है तो यह एक सरल चालक बन जाती
फिर भी, वज्रपात को हवा में तेजी से निकलने के लिए बहुत
क शक्ति की जरूरत पड़ती है । विद्युत् का यह अत्यधिक
र्जन (वज्रपात के) मार्ग के चारों ओर की वायु को गर्म कर
है जिससे तापमान लगभग 10,000° से. तक तापदीप्त
जाता है । इसी तापदीप्त वायु को हम तड़ित दमक के रूप
देखते हैं । ताप से अचानक हवा फैल जाती है जो ताप के
ाप्त होने पर फिर शीघ्रता से संकुचित होती है । इस अचानक
ाव और संकुचन से मेघ गर्जना उत्पन्न होती है जो कि हमारे
नों के लिए परिचित है । यद्यपि दोनों घटनाएं एक साथ घटित
ती हैं, फिर भी हम दमक को पहले देखते हैं क्योंकि ध्वनि की
लना में प्रकाश कहीं अधिक तीव्र गति से चलता है ।

जैसे-जैसे हम ऊपर चलते चले जाते हैं, वायुमंडल का
स्वरूप और संघटन बदलता जाता है । उच्चता के अनुसार
व्यवस्थित चार महत्वपूर्ण मंडल हैं: क्षोभ सीमा सहित क्षोभ मंडल; 2-समताप सीमा सहित समताप मंडल; 3-मध्य सीमा सहित मध्य मंडल और आयन मंडल या वाह्य वायुमंडल।

मानसून

द्वितीय वायुमंडलीय चक्र में, मानसून स्वयं में एक तत्व के रूप में स्वीकार किया जाता है। मानसून ऐसे वायुमंडलीय चक्र से संबंधित है जिसके कारण मौसम के रूप में यह चलता रहता है। यदि यह मौसमी प्रत्यावर्तन का चक्र नियमपूर्वक होता तो संसार के कुछ क्षेत्रों में ही मानसूनी हवाओं की व्यवस्था होती। एशिया में ही इस प्रकार का मानसूनी चक्र अपने आदर्श रूप में पाया जाता है। अमरीका, उत्तरी आस्ट्रेलिया, पश्चिमी अफ्रीका में ही इसी प्रकार का मानसून है।

मानसून के तत्व की व्याख्या विभिन्न सिद्धांतों से की जाती है, जैसा (अ) थल और जल विभिन्न उर्जा, (ब) उष्णकटिबन्धी और अन्तर उष्णकटिबन्धी व हवा क्षेत्रों का मौसमी परिवर्तन, (स) त्वरित, ऊपरी वायुमंडलीय व हवा की गतियां और तेज गर्मी, (ड) ई एल निनो ला निना प्रभाव–

भारतीय मानसून: सच्चे अर्थों में मानसून को हिन्द महासागर के चारों तरफ देखा जा सकता है। संसार के मानसून व्यवस्था की तुलना में भारतीय मानसून की व्यवस्था, उठने का केन्द्र बिन्दु, हवा राशि और गति पूर्णतया भिन्न है। देश का प्रायद्वीपीय आकार दक्षिणी पश्चिमी मानसून को बांट देता है और मानसून बगल से उत्तर की तरफ अरब सागर शाखा की तरफ चला जाता है और पूर्व की ओर बंगाल की खाड़ी की तरफ चला जाता है।

वर्षा: जबकि दक्षिणी पश्चिमी मानसून 1 मीटर सामान्य वर्षा पूरे देश के मैदानों में करता है। इसे सामान्य वर्षा कहा जाता है। लेकिन कई स्थान ऐसे हैं जैसे पश्चिमी घाट के हवा क्षेत्र में 100-250 से.मीटर वर्षा होती है। खासी-जयन्तियां पहाड़ी के ढलान में संसार की सर्वाधिक 965 सेन्टीमीटर वर्षा प्राप्त होती है। 'अनावृष्टि' का प्रयोग तब किया जाता है जब देश में 85% या इससे कम वर्षा होती है। यह तभी होता है जब दक्षिण पश्चिमी मानसून नहीं आता है।

भारतीय मानसून की विशेषताएं:

1. भारतीय उपमहाद्वीप की उष्णकटिबन्धीय स्थिति,
2. हिमालय, उत्तर से शीत हवाओं का अवरोधक है और मध्य एशिया की उच्च दबाव क्षेत्र की सूखी हवाओं को रोकता है। यह मात्र दक्षिणी पश्चिमी मानसून को तिब्बती पठारों से पार करने से रोकता ही नहीं बल्कि उन्हें उत्तरीभारतीय क्षेत्रों में फैलाता भी है।
3. भारतीय-उपमहाद्वीपीय उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र के उच्च और निम्न दबाव के कारण मानसून नियन्त्रित होता है।
4. गर्मी के कारण, तापक्रम बढ़ता है (भारत में 40 से 45°c तक तापक्रम होता है।)
5. सर्वाधिक निम्न दबाव (700 एन बी तक नीचे) यह उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र में होता है जो हवा को हिन्द महासार से अपनी तरफ खिंचता है।
6. मानसून बड़ी तेजी से अशान्त होकर पूरे भारत में फैल जाता है।
7. अन्तर उष्ण कटिबन्धी परिवर्तित क्षेत्र उत्तरी मैदानों में बदलता रहता है।

बादलों की पकड़

बादलों को पकड़ना शायद उतना ही असंभव कार्य है जितना कि इंद्रधनुष को बोतल में बंद करना। लेकिन उत्तरी चिली के एक पहाड़ी गांव कलेटा चुंगुन्गो के निवासियों ने बादल को पकड़ने जैसा असाधारण कार्य कर डाला। उन्होंने बादल को जाल में फंसा कर पानी की आपूर्ति करने में सफलता प्राप्त की। कलेटा गांव के निवासियों को करीब की घाटियों में बहने वाली नदियों से पानी लाने में अनेक दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। यह गांव प्रशांत महासागर के तूफान के विरुद्ध धारा में पड़ता है जिसके कारण यहां वर्षा बहुत कम होती है। परिणामस्वरूप यहां के 300 निवासी पानी के टैंकरों पर निर्भर रहते थे। इस पानी की कीमत गांववासियो के लिये वहन करना उनकी आजीविका को शून्य कर देती थी। फलस्वरूप यहाँ के किसानों ने पलायन करना प्रारंभ कर दिया।

इसी दौरान चिली के पर्यावरण वैज्ञानिकों ने कनाडा के शोधकर्ताओं व अंतर्राष्ट्रीय कोश संस्थाओं की मदद से इस गांव की अमूल्य धरोहर, प्रत्येक रात्रि को काफी नीचे से गुजरने वाले चमनचाका नामक बादल का दोहन करने में सफलता प्राप्त करली। चमनचाका नामक बादल को घेरने के लिये उन्होंने 86 बारीक नायलान की तारों से बने जालों को बादल के गुजरने वाले रास्ते की पहाड़ियों पर लगाया। बादलों के वाष्प जब इनमें फंसकर सघन होगये तो वे पानी की बूंदो के रूप में बन गये जिन्हें जलस्रोत में इकट्ठा कर लिया गया। इस पानी को छानकर क्लोरीन मिलाकर साफ कर लिया गया। लगभग एक जाल से 700 लिटर पानी की प्राप्ति हो जाती है, कुल मिलाकर एक महीने में जलापूर्ति 300,000 लिटर रही। बादल को पकड़ कर पानी की आपूर्ति टैंकरों से लाये पानी की तुलना में पांच गुना सस्ती पड़ी।

मानसून अपनी उच्चतम् अवस्था में अपनी ताकत वायुमंडलीय दवाव से प्राप्त करता है जो हवा के क्षेत्र परिवर्तन के कारण उत्पन्न होता है।

मानसून का आरंभ 20 मई से आरंभ होता है और 15 जुलाई तक पूरे देश में फैल जाता है।

0. मानसून की समाप्ति का आरंभ उत्तर क्षेत्रों से पहली सितंबर, मध्यभारत में सितंबर के अंत और दक्षिणी भाग में नंवबर के प्रथम सप्ताह में पूर्ण रूपेण समाप्त हो जाती है। (इसे उत्तरी पूर्वी मानसून कहा जाता है।)

1. मानसून की वापसी अपने साथ तूफान जैसी मुसीबतें भी लाती हैं। जिससे जन और धन की बड़े पैमाने पर हानि होती है। ऐसा अधिकतर भारत के पूर्वी किनारे पर होता है।

जीव मंडल

जीव मंडल की सर्वप्रथम संकल्पना लगभग एक सौ साल पहले आस्ट्रियन भूवैज्ञानिक एडवर्ड सुएस ने की थी। उस समय इस धारणा को विशेष महत्व नहीं दिया गया। परन्तु आज जीव मंडल, मानव के सम्मुख सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्या बन गई है।

जीवमंडल का विशिष्ट अभिलक्षण यह है कि यह जीवन को आधार प्रदान करती है। अनुमान है कि जीव-मंडल में शैवाल, फंगस और काइयों से लेकर उच्चतर किस्म के पौधों की साढ़े तीन लाख जातियां हैं तथा एक कोशीय प्राणी प्रोटोजोआ से लेकर मनुष्य तक एक करोड़ दस प्रकार की प्राणि-जातियां इसमें सम्मिलित हैं। जीवमंडल इन सभी के लिए आवश्यक सामग्री जैसे प्रकाश, ताप, पानी, भोजन तथा आवास की व्यवस्था करता है। जीव मंडल या पारिस्थितिक व्यवस्था, जैसे कि यह सामान्यतया जानी जाती है, एक विकासात्मक प्रणाली है। इसमें अनेक प्रकार के जैविक और भौतिक घटकों का संतुलन बहुत पहले से ही क्रियाशील रहा है। जीवन की इस निरंतरता के मूल में अन्य संबंधों का एक सुगठित तंत्र काम करता है। वायु, जल, मनुष्य, जीव-जंतु, वनस्पति एंव प्लवक, मिट्टी और जीवाणु ये सब जीवन-धारण प्रणाली में अदृश्य रूप से एक दूसरे से गुंथे हुए हैं। यह व्यवस्था पर्यावरण कहलाती है।

भूवैज्ञानिक समय

युग	काल	युगान्तर	मिलियन वर्ष पहले	विकास एवं घटनाएं
नूतन जीव युग	चतुर्थ काल	अग्निकाल		महा-हिमकाल:
		अग्निनूतन काल	2	आधुनिक मानव
		लिलिओ सी		उत्पन्न हुआ
		अल्प नूतन काल		
	तृतीय काल	ओलिगोसी		बहुत सी स्तनी पैदा हुई
		आदि नूतन	66	अल्पाइन पृथ्वी गति के कारण
		पुरा काल		अल्पास, हिमालय और राकी
				का निर्माण
मध्य जीव युग	खटीमय		135	डायनासोर की मृत्यु, चांक का जमाव
	जुरासिक		205	अधिक मात्रा में डायनासोर
	ट्रियासिक		250	पहला डायनासोर और स्तनी
पुरा जीव युग	परमियन		290	बड़े-बड़े द्वीप घूमकर विशाल
				द्वीप समूह पंगाइया का निर्माण
	कार्बन युक्त		355	विशाल कोयले से युक्त जंगल
	डेवोनियन		412	कालडोनियन पृथ्वी गति से प्रणांग
				और मछली
	सिलुरियन		435	पृथ्वी पर प्रथम पौधा
	आरडोविसियन		510	बिना रीढ़ की हड्डी के जानवर
	काम्ब्रियन		550	ट्रिलोबाइटस-शेल की पहली मछली
प्राचीन युग	प्रिकम्ब्रियन			पहली-जेली मछली एवं कीड़े [illegible]

पारिस्थितिक तंत्र या पर्यावरण की अपनी लय और गति होती है जो नाजुक रूप से संतुलित आवर्तनों के संपूर्ण सेट पर आधारित है । सभी जीव–रोगाणु, पेड़–पौधे, पशु–वर्ग और मनुष्य – ये सभी पर्यावरण के साथ स्वयं अपना समायोजन करने और उसकी लय के साथ अपने जीवन को सुव्यवस्थित करने के कारण आज तक जीवित रहे हैं । इसलिए यह नितांत आवश्यक है कि इन आर्वतनों को अक्षुण्ण बनाए रखा जाए ।

सौर ऊर्जा जीव मंडल को बनाए रखती है और जीव मंडल को मिलने वाली कुल ऊर्जा का 99.88 प्रतिशत भाग इसी से प्राप्त होता है । सूर्य सतत् रूप से सौर–ताप के रूप में अपनी ऊर्जा को उड़ेलता रहता है । प्रकाश में क्वान्टम कहलाने वाला ऊर्जा पुंज होता है । क्वान्टम ऊर्जा का अंश उसकी आवृत्ति का समानुपाती होता है । तरंग की लम्बाई जितनी छोटी होती है उतनी ही उसकी आवृत्ति उच्च होती है और उसमें ऊर्जा अंश अधिक होता है । जिस प्रक्रिया के द्वारा सौर ऊर्जा अणुओं में अंतरित हो जाती है उसे प्रकाश–रासायनिक प्रक्रिया कहते हैं । इस प्रक्रिया में सूर्य का प्रकाश अणु में इलेक्ट्रानों को उत्तेजित करता है और उन्हें बाहर की ओर धकेलता है। इस प्रक्रिया से मुक्त इलेक्ट्रान अपने पड़ोसी परमाणु या अणु से निकले इलेक्ट्रानों के साथ जोड़ा बनाते हैं और इस प्रकार निर्मित इलेक्ट्रान–युगलों से नए अणुओं का सृजन होता है ।

जीव मंडल में सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रकाश रासायनिक क्रिया–कलाप, पौधों में होने वाला प्रकाश संश्लेषण है । प्रकाश संश्लेषण एक जटिल प्रक्रिया है । इसमें क्लोरोफिल–अणुओं और पौधों में अन्य वर्णकों द्वारा अवशोषित प्रकाश इस प्रकार से इलेक्ट्रानों में स्थानान्तरित होता है जिससे कि मजबूत आक्सीकारकों का निर्माण हो जाए । जो अणु अन्य अणुओं से इलेक्ट्रानों को तुरंत अलग करते हैं उनका आक्सीकरण कर देते हैं । जो अणु अन्य अणुओं को इलेक्ट्रोन की आपूर्ति करते हैं, उनका अपचयन कर देते हैं । ये आक्सीकारक और अपचायक ही कार्बन डाई आक्साइड और पानी के अणुओं से कार्बोहाइड्रेट और आक्सीजन उत्पन्न करने में पौधों की सहायता करते हैं । पौधे सांस छोड़ने में आक्सीजन बाहर निकालते हैं, लेकिन उस कार्बोहाइड्रेट को बनाए रखते हैं जो ऊर्जा में बदल जाते हैं और रासायनिक बांड के रूप में संचित हो जाती है, जिसमें एडीनोसिन ट्राइफासफेट (एटीपी) उल्लेखनीय है जो कि सभी जीवित कोशिकाओं के लिये आधारभूत ऊर्जा का काम करता है । एटीपी के उच्च ऊर्जा फास्फेट बांडों में 12,000 कैलोरी होती हैं और जब वे तोड़े जाते हैं तो वे 7,500 कैलोरी का मोचन करते हैं।

शाक–सब्जियों और पौधों से भोजन पाने वाले शाकाहारियों तथा अपने भोजन के लिए शाकाहारियों पर निर्भर रहने वाले मांसाहारी प्राणियों द्वारा यह ऊर्जा आहार श्रृंखला तक ले जायी जाती है । मनुष्य जैसे सर्वाहारी अपनी ऊर्जा पौधों और पशुओं, दोनों स्रोतों से प्राप्त करते हैं । पौधों और पशुओं (मनुष्य सहित) द्वारा प्राप्त की गई अधिकांश ऊर्जा जीवन प्रक्रिया को बनाए रखने के लिए उपयोग की जाती है व खर्च की जाती है।

जीवन के क्रम में जो ऊर्जा व्यय नहीं की जाती, वह मृत पदार्थ में संचित हो जाती है । वियोजित जीवाणु मृत पदार्थ को तोड देते हैं और उसे ह्यूमस या जैव अवसादों में परिवर्तित करके जीव मंडल में कार्बन डाइआक्साइड, पानी और ताप का मोचन करते हैं । इस प्रकार जीवन के बुनियादी संघटक मिट्टी में वापस आ जाते हैं । पौधे मिट्टी से अपने पोषक तत्व प्राप्त करते हैं और यह चक्र चलता रहता है ।

ताप आवर्तन

ताप जीवन की प्राथमिक जरूरतों में से एक है । इसकी आपूर्ति सौर विकिरण द्वारा की जाती है । गणना की गई है कि पृथ्वी की कक्षा तक (वायुमंडल के ठीक ऊपर) पहुंचने वाला सौर ताप प्रति मिनट प्रति वर्ग सेन्टीमीटर लगभग दो कैलोरी होता है। लेकिन पृथ्वी वायुमंडल के शीर्ष तक पहुंचने वाले विकिरण का आधे से कम भाग प्राप्त कर पाती है ।

लगभग दो प्रतिशत भाग वायुमंडल में ओजोन–परत द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है । वायु मंडलीय जलवाष्प, कार्बन डाइआक्साइड और धूल कण लगभग 18% भाग का अवशोषण कर लेते हैं । मेघ लगभग 23% भाग का आकाश में परावर्तन कर देते हैं । पृथ्वी को केवल शेष 38% भाग ही प्राप्त होता है । लेकिन यह प्रक्रिया यहीं समाप्त नहीं हो जाती । प्राप्त 38% सौर विकिरण में से पृथ्वी दीर्घ तरंग विकिरण द्वारा 7% भाग का पुनः विकिरण कर देती है जिससे पार्थिव ऊर्जा का स्टाक घटकर 31%रह जाता है ।

इसी के साथ, वायुमंडल द्वारा विकीर्णित 22% भाग में से 16% भाग अन्ततोगत्वा विसरित विकिरण के रूप में पृथ्वी तक पहुंचता है जबकि शेष 6% भाग असाध्य रूप से आकाश में नष्ट हो जाता है । इस प्रकार, कुल मिलाकर, वायुमंडल तक पहुंचन वाली सौर ऊर्जा में से लगभग 47% पृथ्वी को प्राप्त होती है। इसी बीच, सूर्य और पृथ्वी के धरातल के बीच मध्यस्थ के रूप में काम करने वाला वायुमंडल संवेद्य ऊष्मा के रूप में 5% ऊर्जा और जल वाष्प में गुप्त ऊष्मा के रूप में लगभग 24% ऊर्जा रोक लेता है । यह आवश्यक है कि ऊष्मा का अवशोषण और पुनःविकिरण संतुलित रहे । अन्यथा विकिरण से ऊष्मा परिणामों की वृद्धि या कमी के अनुसार पृथ्वी को ऊष्मा में सकल वृद्धि या सकल कमी का अनुभव होगा। अवशोषण और पुनःविकिरण के बीच संतुलन का नियमन मुख्यतया वायुमंडल में जलवाष्प द्वारा होता है । वायुमंडल में बहुत कम परिमाण में, लगभग 0.001 प्रतिशत जल है । वायु मंडलीय जल का यह नगण्य परिमाण, पृथ्वी की जलवायु पर प्रभाव डालता है। ऊष्मा के अवशोषण और विकिरण के बीच संतुलन बनाए रखने के अलावा, यह जल आवर्तन को नियंत्रित रखता है और हमारी जलवायु संबंधी दशाओं का निर्धारण करता है।

कार्बन का आवर्तन

जीव मंडल में कार्बन तथा उसके यौगिकों का जटिल मिश्रण, निर्माण, रूपांतरण तथा वियोजन की हर स्थिति में विद्यमान है। व्यावहारिक रूप से सभी जैव पदार्थ प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया में उत्पन्न होते हैं । पौधे कार्बन डाइ आक्साइड और जल को कार्बोहाइड्रेट में बदलने के लिए सूर्य की विकिरण ऊर्जा का उपयोग करते हैं और इस प्रक्रिया में वायु से कार्बन डाइआक्साइड खींचते हैं और जल को विभक्त करके हाइड्रोजन पाते हैं । जबकि पौधे प्रकाश संश्लेषण के दौरान कार्बन डाई आक्साइड का अवशोषण करते है, वहीं सभी जीवित प्राणी सांस

छोड़कर कार्बन डाइआक्साइड का विमोचन करते हैं और मृत पदार्थ के संबंध में अपघटक बैक्टीरिया भी यही काम करते हैं। लेकिन जब कि और अपघटन सतत रूप से हर समय चलता रहता है, वहीं प्रकाश संश्लेषण केवल दिन के समय होता है। दिन के समय, वायुमंडल में कार्बन डाइआक्साइड औसतन प्रति दस लाख 320 भाग से लेकर लगभग 305 भाग तक नीचे आता है, लेकिन रात में यह बढ़कर भूस्तर के निकट प्रति दस लाख 400 भाग तक आता है। (कार्बन डाइआक्साइड के रूप में) कार्बन के दैनिक उत्पादन और उपभोग के अलावा, पृथ्वी में कई रूप में कार्बन का वृहत्त स्टाक है। इस स्टाक में अकार्बनिक निक्षेप (कैल्शियम कार्बोनेट आदि जैसे मुख्यतया कार्बोनेट) और कार्बनिक फोजिल निक्षेप (मुख्यतया कोयला, शैल और तेल) हैं। जब हम अतिरिक्त ईंधन को जलाते हैं तो हम उस वायुमंडल में अधिक कार्बन डाइआक्साइड की ही वृद्धि करते हैं जो पहले से ही अधिक परिमाण में है।

आक्सीजन आवर्तन

आक्सीजन केवल जीवन को ही आधार प्रदान नहीं करती बल्कि जीवित तत्वों के अंदर व्यावहारिक रूप से महत्वपूर्ण चौथाई भाग के लगभग परमाणुओं के इमारती खंड के रूप के रूप में आधारभूत भूमिका भी निभाती है। आक्सीजन आवर्तन को प्रभावित करने वाला घटक स्वयं मनुष्य है जो कि पृथ्वी में सबसे नव्य प्राणी है। वह श्वसन की प्रक्रिया में आक्सीजन खींचता है कार्बन डाइआक्साइड बाहर निकालता है और इस प्रकार आक्सीजन का स्टाक कम करके कार्बन डाइआक्साइड की आपूर्ति में वृद्धि करता है। इससे भी आगे बढ़कर वह अतिरिक्त ईंधनों को जलाता है और आक्सीजन आपूर्ति को और अधिक कम कर देता है। वह वनों को काटकर और उन पर शहर बसाकर प्रकाश संश्लेषण क्रिया को कम कर देता है।

कुछेक खगोलज्ञों का विचार है कि वायुमंडल में आक्सीजन की मूल आपूर्ति सूर्य की परा बैंगनी किरणों से हुई थी जिसने ऊपरी वायुमंडल में जल अणुओं को तोड़कर उन्हें हाइड्रोजन और आक्सीजन में विभक्त कर दिया। वायुमडल में आक्सीजन का चाहे जो मूल स्रोत रहा हो, महत्वपूर्ण बात यह है कि पौधे प्रकाश संश्लेषण के जरिये आक्सीजन की आपूर्ति में वृद्धि कर रहे हैं। वे हमारी आक्सीजन की आपूर्ति में ही वृद्धि नहीं कर रहे हैं बल्कि उस कार्बन डाइआक्साइड की कुल आपूर्ति में भी कमी कर रहे हैं जो खतरे की स्थिति तक बढ़ती जा रही है।

नाइट्रोजन आवर्तन

जिस रूप में नाइट्रोजन वायु मंडल में प्राप्त होता है, उस रूप में उच्च प्राणियों द्वारा उसका उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे यौगिकीकृत करना होता है, अर्थात् इसका रासायनिक यौगिक में समावेश करना होता है। दूसरे शब्दों में नाइट्रोजन को अमोनिया या अमीनो ऐसिडों में बदलना होता है जिससे कि उनका उपयोग पौधों और प्राणियों द्वारा किया जा सके।

भूमि पर 'वायुमंडलीय नाइट्रोजन' का स्थिरीकरण डाइजोट्राफ नामक जीवों द्वारा किया जाता है जो नाइट्रोजन स्थिरीकरण को उत्प्रेरित करनेवाले एन्जाइम नाइट्रोजिनेस को संश्लेषण के लिए आनुवंशिक कूट रखते हैं। ये जीव मोटे रूप से दो वर्गों में रखे जा सकते हैं – सहजीवी और गैर–सहजीवी। सहजीवी डाइजोट्राफ शिंबी जैसे पौधों की कुछेक प्रजातियों के सहयोग से क्रियाशील होते हैं। वे भूमि पर नाइट्रोजन स्थिरीकरण के सर्वाधिक भाग (83 प्रतिशत) का योगदान करते हैं। शेष (17 प्रतिशत) का योगदान करनेवाले गैर–सहचारी एजेन्ट में नीले हरे शैवाल, आक्सीजन की अपेक्षा रखनेवाले वायुजीवी अवायवीय तथा बैक्टीरिया शामिल हैं। जीवमंडल द्वारा अपेक्षित कुल वार्षिक नाइट्रोजन का अनुमान 105 करोड़ मीट्रिक टन लगाया जाता है। इसमें से डाइजोट्राफ 14 करोड़ मीट्रिक टन पूरा करते हैं। तड़ित् या अग्नि जैसे गैर–जैविक एजेन्ट 4 करोड़ मीट्रिक टन का योगदान करते हैं। शेष 87 करोड़ मीट्रिक टन मृत पौधों और जीवों में संगृहित नाइट्रोजन से आता है। प्रकृति द्वारा नाइट्रेटों के रूप में ये पुन: आवर्तित होते हैं। जीवाणु अपघटित होकर नाइट्रेटों को अमीनो ऐसिडों में परिवर्तित कर देते हैं। वायु जीवी दशाओं में जहां आक्सीजन उपलब्ध होती है, वहां जीवाणु, अमीनो ऐसिडों को कार्बन डाइआक्साइड, पानी और अमोनिया में आक्सीकरण करने के लिए फिर हस्तक्षेप करेंगे। इस प्रकार अमोनिया के रूप में नाइट्रोजन वायु मंडल में फिर लौट आती है। मनुष्य ने औद्योगिक रूप से नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करके इस प्राकृतिक आवर्तन में बाधा पहुंचाई है। वह अब कृत्रिम विधियों से नाइट्रोजन को स्वांगीकरण रूपों में परिवर्तित कर रहा है। पिछले कुछेक दशकों में नाइट्रोजन वाले उर्वरकों का उत्पादन अधिकाधिक हुआ है। इसका आशय यह है कि वायुमंडल में नाइट्रोजन का अतिरिक्त निवेश हुआ है। यह अतिरिक्त निवेश प्राकृतिक निर्गम की अपेक्षा पहले से ही अधिक है। हम अभी यह नहीं कह सकते कि यह अतिरिक्त निवेश किस सीमा तक और किस दिशा में जीवमंडल को प्रभावित करेगा।

जल आवर्तन

जल, जीव मंडल के प्रकार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह जीवन के सभी रूपों, पौधों, प्राणियों और मनुष्य के लिए आवश्यक है। जल आवर्तन की दो सुस्पष्ट शाखाएं हैं – वायुमंडलीय शाखा और पार्थिव शाखा। वायु मंडल में पानी मुख्यतया गैसीय रूप में होता है। पृथ्वी पर यह अधिकांशतया तरल रूपों में और ठोस (हिम) रूपों में है। जीव मंडल के लिए पानी महत्वपूर्ण है, क्योंकि पानी से ही जीव मंडल अपने सर्वाधिक प्रचुर तत्व – हाइड्रोजन को प्राप्त करता है। कार्बोहाइड्रेट के रूप में हाइड्रोजन सभी जीवित चीजों के लिए ऊर्जा के अत्यधिक महत्वपूर्ण स्रोत का निर्माण करता है। यद्यपि महासागरों में जल की आपूर्ति प्रचुर मात्रा में है, फिर भी यह प्रत्यक्ष रूप से हमारे उपयोग में नहीं आता। हम अपनी नदियों और मीठे पानी की झीलों और अवमृदा में समाविष्ट जल के छोटे स्टाक – एक प्रतिशत से कम – पर निर्भर हैं। पानी का यह छोटा स्टाक ताजे जल के इससे भी छोटे स्टाक 0.01 प्रतिशत द्वारा फिर से भर जाता है जो जल वाष्प के रूप में वायुमंडल में प्रवाहित रहता है और जिसका अधिकांश भाग वर्षा के रूप में पृथ्वी पर गिरता है। जीव मंडल का जल आवर्तन वाष्पन व वर्षण के अन्दर विनिमय पर निर्भर करता है। पृथ्वी पर तरल जल वाष्पन और वाष्पोत्सर्जन के जरिए वाष्प के रूप में वायु मंडल में चला जाता है। वर्षा या हिम के रूप में यह वाष्प पृथ्वी पर लौट आता है।

पर्यावरण

पर्यावरण सुरक्षा, पृथ्वी के अस्तित्व का प्रश्न वन चुका है। यह अंतर्सवंधित संकट का विज्ञान है। पर्यावरण के संकट के साथ–साथ इस पृथ्वी पर हमारे हर जीवनोपयोगी कार्यकलाप का भविष्य संकट में पड़ गया है। विसंगति तो यह है कि विकास की अंधाधुंध दौड़ में पर्यावरण सुरक्षा महज एक नारा वन कर रह गया है। हम इस मोर्चे पर वुरी तरह पिछड़ गये हैं और आगे भी कोई क्रांतिकारी परिवर्तन आने की कोई संभावना नहीं है। किसी देश के ऐश्वर्य साधनों की आपूर्ति के लिये किसी देश का पर्यावरण नष्ट हो जाता है। याद में वह संकट उस देश के साथ–साथ उपभोगवाद में डूवे देशों को भी अपनी जकड़ में ले लेता है। एक डूवते जहाज पर सवार सव लोग देर सवेर डूवेंगे ही। फैक्ट्रयों से उठता धुंआ, रसायनिक दूषित जल का नदियों मे वहाव विभिन्न विमारियों का वाहक है, पेयजल संकट का भी कारण है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, सिमटते जंगलों की वजह से वांझ होती भूमि और रेगिस्तान का वढ़ता प्रसार एक दूसरे पर आधारित है। भूमि कटाव से वाढ़ का खतरा वढ़ रहा है।

निसंदेह यह एक भयावह परिस्थिति है। प्रतिवर्ष अनियमित वर्षा की वजह से वाढ़ व सूखे का खतरा पैर फैला रहा है। कृषि को गंभीर खतरा पैदा होता जा रहा है। भूमि की उपजाऊ शक्ति समाप्त होती जा रही है।

स्पष्टता हम विकास की ओर एक कदम वढ़ाते हैं वहीं पर्यावरण के क्षेत्र में दस कदम पीछे हट जाते हैं।

वढ़ती आवादी व गरीवी से हमारे पर्यावरण पर एवं संसाधनों पर वोझ वढ़ता जा रहा है। स्वतंत्रता प्राप्त दो दशकों तक पर्यावरण सुधार कार्य पर वहुत कम ध्यान दिया गया। चौथी पंचवर्षीय योजना में पर्यावरण पर ध्यान गया, लेकिन गैरनियोजित कार्यक्रमों का परस्पर तालमेल नहीं वैठ सका। लालफीताशाही व भ्रष्टाचार की वजह से आधी शताव्दी का लम्वा समय वीत जाने के वाद भी हम इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कुछ नहीं कर सके। राष्ट्रीय स्तर पर समग्र रूप से विकास कार्यक्रमों एवं पर्यावरण संरक्षण के वीच तालमेल विठाने की ओर काम करना लगभग असंभव सा वन गया है। विभिन्न राज्य सरकारें परस्पर विवादों में उलझ कर राजनीतिक हित साधन हेतु पर्यावरण के मुद्दों को नकारती दिखती है।

वन संपदा – सर्वप्रथम वन संपदा पर ही एक विहंगम दृष्टि डालें तो पता चलता है कि स्थिति वड़ी विकट है। हमारे देश में 75.23 मिलियन हैक्टेयर भूमि को वन क्षेत्र (अधिसूचित) माना गया है। इसमें से 40.61 मिलियन हैक्टेयर को आरक्षित श्रेणी में रखा गया है। 21.51 मिलियन हैक्टेयर को संरक्षित माना गया है। वन रिपोर्ट 1993 के अनुसार कुल वनक्षेत्र 6,40,107 वर्ग किलोमीटर है, यह कुल भूमि का 19.47 प्रतिशत मात्र है। लैंडसेट उपग्रह द्वारा 1993 में भेजे गये चित्रों के अनुसार रिकार्ड किये गये वनक्षेत्र 7,7008 मिलियन है जिसमें से से 64,0107 मिलियन हैक्टेयर वास्तविक हरित है। इसमें सें 25.0275 मिलियन हैक्टेयर छिछला हरित और 38.576 मिलियन हैक्टेयर गहरा वनाच्छादित है। 41.492 मिलयन हैक्टेयर आरक्षित वन, 23.308 मिलियन हैक्टेयर संरक्षित वन, 12.208 मिलियन हैक्टेयर गैरदर्जा और 0.4256 मिलियन हैक्टेयर ग्रोव वन है।

हमारी वन नीति 1988 के अनुसार कुल भौगोलिक क्षेत्र का कम से कम 33 प्रतिशत वनाच्छादित होना चाहिये। जिलावार देखें तो 413 जिलों में से 105 जिलों में 33 प्रतिशत, 52 जिलों मे 25 प्रतिशत, 217 जिलों में 0.1 से 19 प्रतिशत तक ही वनाच्छादित्त क्षेत्र है।

विश्व वन जीव कोष की रिपोर्ट के अनुसार अन्य देशों की तुलना में भारत में शीतोष्ण वनों का तेजी से क्षरण हो रहा है। अन्य वनक्षेत्र पर भी आवादी व वढ़ती व्यवसायिकता का दवाव वढ़ रहा है। भारत की 329 मिलियन हैक्टेयर भूमि में 174 मिलियिन हैक्टेयर भूमि का क्षरण हो गया है। इसमें कृषि योग्य भूमि, गैर कृषि क्षेत्र एवं वन शामिल है।

भूमि क्षरण के कारण – सारे सर्वेक्षणों एवं खोजवीन से यह तो स्पष्ट हो गया है कि पेड़ लगाना मात्र घट रहे जंगलों का विकल्प नहीं है। इससे मात्र 25 प्रतिशत ही लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। हमारे देश में औसतन प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष लगभग 7 पेड़ो का इस्तेमाल हो जाता है। वर्तमान जनसंख्या को 7 से गुणा करें तो पता चलता है कि प्रति वर्ष लगभग 600 करोड़ पेड़ कट जाते हैं। प्रति वांध पर 25 लाख पेड़ डूव जाते हैं। विकास परियोजनाओं में प्रतिवर्ष 3 मिलियन हैक्टेयर वन नष्ट हो जाता है। दरअसल इस काम में सवसे अधिक नियमों का उल्लंघन होता है। वन नियमों के अनुसार एक पेड़ के वदले दस पेड़ लगाये जाने चाहियें। लेकिन गत दो दशकों में मात्र एक प्रतिशत ही पेड़ लगाये गये हैं। अवैध कटाई से होने वाले नुकसान से अधिक नुकसान अनुपयोगी व अदूरदर्शी विकास योजनाओं में होता है। जलावन लकड़ी का दोहन 235 मिलियन क्यूविक मीटर तक वढ़ गया है पिछले पांच वर्षों में 43 से भी अधिक अभारण्यों को रौंदा गया है। काजीरंगा के पास पेट्रोरसायन रिफाइनरी सवसे वडा उदाहरण है। विभिन्न परियोजनाओं के नाम पर या सड़कें चौड़ी करने के लिये अभयारण्यों की अनदेखी कर दी जाती है।

पशुधन का दवाव – पशुधन के चारे के नाम पर काटे जा रहे जगलों का विश्लेषण करने से पता चला कि जहां पहले पशुधन विशेषकर गाय, भैंस या वकरी के चारे के लिये लोग मोटे अनाज, खली, खरपतवार, घास आदि पर निर्भर थे वहीं [illegible] वे लोग जंगल पर निर्भरता वढ़ा रहे हैं। जंगल विभाग [illegible] सरकार के वजट का वहुत कम हिस्सा मिलता है। [illegible] ही एकड़ भूमि पर पेड़ लगाये जाते हैं और उन्हें [illegible] वकरी आदि चट कर जाते हैं।

हमारा देश जीव–जन्तुओं की [illegible] लेकिन वनों के अत्यधिक दोहन से [illegible] में पड़ता जा रहा है। इसके अतिरिक्त [illegible] कटाव से उपजाऊ मिट्टी [illegible]

एवं अनियंत्रित वर्षा एवं बाढ़ का खतरा बढ़ रहा है। भूमि कटाव एवं क्षरण से कृषि उत्पादन पर भी गहरा असर हो रहा है। राष्ट्रीय वन नीति में वनों के बहुआयामी प्राकृतिक स्वरूप, वनवासी एवं स्थानीय लोगों के अधिकारों की भूमिका वन एवं उसके आस–पास की भूमि तथा अन्य आरक्षित एवं संकट ग्रस्त क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने तथा विकास कार्यक्रमों को लागू करने के लिये राष्ट्रीय वनारोपण एवं इको विकास बोर्ड लगा हुआ है। वनजीवों के मामले में वनजीव सरक्षण एव आरक्षण तथा उनके निवास स्थान को सयमित करने के लिये प्रमुख योजनायें बनायी गयीं हैं। इस क्षेत्र में यह कोशिश की जा रही है कि वन जीवों को उनके निवास स्थान के समीप ही संरक्षित किया जाये। 752 राष्ट्रीय उद्यान, 421 वनजीव अभ्यारण्य, 21 प्रोजेक्ट टाइगर एरिया तथा 8 बायोस्फेयर रिजर्व्स की पहलता से इन जीवों को बचाया जा रहा है, लेकिन समस्या तो यह है कि अधिकांश अभ्यारण्य खतरे में हैं। विकास के नाम पर चल रही परियोजनाओं से जिन अभयारण्यों को खतरा हो गया है उसका स्पष्ट उदाहरण कांजीरंगा, भरतपुर का पक्षी विहार आदि 43 अभ्यारण्य हैं। सरकार के स्पष्ट निर्देशों के बावजूद बड़े–बड़े कारखाने प्रदूषण नियंत्रण पर बहुत कम ध्यान देते हैं। छोटे कारखाने या अवैध रूप से गली–गली में चल रहे कारखाने आज पर्यावरण के लिये गम्भीर खतरा बन गये हैं। बढ़ते वाहन भी आज शहरों के पर्यावरण के लिये गम्भीर खतरा बन गये हैं। र

में इस कारण बढ़ रहे श्वास रोग एक चेतावनी
कदर प्रदूषित हो गयी हैं कि मछलियां तक मर
औद्योगिक कूड़ा, जैसे फ्लाई ऐश, फोस्फोडियम,
स्टेज तथा विभिन्न तरल रसायनिक कूड़े को कि
कहां फेंका जाये या संभाला जाये एक समस्या बन
केमिकल, टाक्सिक, ज्वलनशील एवं विस्फोटक र
को नियंत्रित रखना एक गंभीर समस्या है।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने 17 राज्यों में
के नगरों का सर्वेक्षण किया जिसके अनुसार 90 प्र
प्रदूषित था। और इस जल प्रदूषण को रोकने के ल
प्रयत्न विफल हो चुके हैं और यह समस्या भयावह होत
है। हजारों वर्षों से भारत में तालाबों पर आधारित कृ
जल व्यवस्था प्रचलित रही। सूखे के समय यहीं ताला
की प्राणरक्षा करते थे। आज विकास की दौड़ में हम
और मोटर पम्प द्वारा भूमिगत जल पर निर्भर हो चुके हैं
गांवों में तालाब समाप्त हो चुके है और भूमिगत जल का
दोहन के कारण भूमिगत जल स्तर कम होता जा रहा

कुल मिलाकर स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी है कि अग
भी नहीं सचेते और युद्ध स्तर पर पर्यावरण पर ध्यान नहीं
गया तो शायद सोचने के लिये भी समय नहीं बचेगा।

पारिस्थितिकी

मानव की प्रकृति से छेड़–छाड़, रासायनिक बहिःस्राव, परमाणविक कचरा, तेजाबी वर्षा और वायुमंडल में लगातार बढ़ रही कार्बन डाइआक्साइड की मात्रा के कारण मानव के लिए पारिस्थितिक संकट उत्पन्न हो गया है। परिभाषा के अनुसार पारिस्थितिकी वह अध्ययन है जो विभिन्न जीवों के संबंध में उनके अपने–अपने पर्यावरण के विषय में किया जाता है। इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण जैव जगत यानी कवक सहित सारे पौधे, सूक्ष्म जीव सहित जानवर और मनुष्य तक आ जाते हैं। फिर स्वयं पर्यावरण भी है जिसमें जैवमंडल में विद्यमान चेतन जीव ही नहीं, बल्कि प्रकृति में क्रियाशील अचेतन शक्तियां भी हैं। यद्यपि पारिस्थितिकी में जीवों के सभी वर्ग आ जाते हैं फिर भी इसमें केन्द्रीय भूमिका निभानेवाला मानव है क्योंकि जीव–वर्गों में एकमात्र उसी ने प्रकृति से टक्कर ली है। स्थापित प्राकृतिक पद्धतियों के विरुद्ध उसकी लड़ाई का एक लम्बा इतिहास है। परन्तु बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ही इस संघर्ष ने एक संकट का रूप धारण कर लिया है। इसी को 'परिस्थितिजन्य संकट' कहा गया है।

जब से मनुष्य ने प्रकृति में उपलब्ध भोजन पर निर्भर रहना छोड़ दिया और अपना भोजन स्वयं उगाने लगा, तभी से उसने प्राकृतिक पद्धतियों में दखल देना शुरू कर दिया। ऐसा तब हुआ जब मनुष्य ने सुमेरिया, मिस्र और सिन्धु घाटी की प्रथम महान नदी घाटी सभ्यताओं को जन्म दिया। तब से वह प्राकृतिक पद्धतियों के विरुद्ध किसी न किसी संघर्ष में जुटा हुआ है।

औद्योगिक क्रान्ति के बाद पारिस्थितिक पद्धतियों में
दखलअन्दाजी तेजी से बढ़ गई। उस समय तक मनुष्य ने
के दूर–दराज कोनों तक अपने उपनिवेश स्थापित कर लि
जहां कहीं भी वह गया, उसने प्रकृति से संघर्ष किया
हुआ। इस प्रथम चरण को उसने 'प्रकृति पर विजय'
अब वह हतप्रभ है कि कौन किस पर विजय प्राप्त कर रहा है।

पारिस्थितिक पद्धति में सभी जीव–वर्ग, पौधे और
एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। किसी भी वर्ग के मामले में
देने से दूसरे वर्गों पर दीर्घ स्थायी प्रतिक्रिया होगी। पर्याव
जटिलताओं को भलीप्रकार समझे बिना हम उसके
व्यापक रूप से दखल दे रहे हैं। दखलअन्दाजी के काफी
बाद हमें क्षति की व्यापकता का पता चला है और तब तक
असामान्य हो चुकी है। 'डोडो' इसका उदाहरण है।

यह स्पष्ट है कि जैव मंडल एक समेकित मंडल है और इस
विभिन्न भाग एक–दूसरे से संबंधित है। प्रो. बेरी कामोनर
अनुसार ये आपसी संबंध, विशेषकर खाद्य श्रृंखला, पर्याव
हमारी जीवन यात्रा के प्रयासों को गति प्रदान करते हैं
विस्तार देते हैं। कामोनर इसको स्पष्ट करने के लि
निम्नलिखित उदाहरण देते हैं। "यदि हम प्रतिग्राम
कीटनाशी की एक इकाई डालें तो उसमें रहनेवाले
प्रतिग्राम 10 से 40 इकाई प्राप्त करेंगे और इन
खाकर जीवित रहनेवाले कठफोड़े पक्षियों में कीटनाशी का
बढ़कर प्रतिग्राम 200 इकाई तक हो जाएगा"।

कृषि कार्य, प्राकृतिक पद्धतियों के विरुद्ध मानव की प्रथम महान चुनौती थी । उसने अपने लिए खाद्य उगाने के लिये जंगल साफ कर डाले तथा विशाल सिंचाई प्रणालियां बनाई ताकि उसकी फसलों के लिए अबाध रूप से पानी की आपूर्ति मिलती रहे और इस प्रकार मानव फला-फूला । जैसा कि प्लेटो कहते हैं – प्राचीन काल के लोग जानते थे कि आवश्यकता से अधिक फसल उगाने और चराई करने से मृदा का क्षरण होगा जिसके फलस्वरूप उपजाऊ भूमि रेगिस्तान में परिणत हो जाएगी । परन्तु इतना जानने पर भी वे सावधान नहीं हुए । इसका परिणाम हम उस मलबे के रूप में देख सकते हैं जो हमारी महान सभ्यताएं अपने पीछे छोड़ गई हैं ।

प्राचीन सुमेरिया – आधुनिक ईराक – महान बेबीलोनियाई साम्राज्य का खलिहान था । सुमेरियावासी दो फसलें बोते थे। इन दो फसलों के बीच भेड़ों को चराते थे । आजकल ईराक की भूमि के 20 प्रतिशत से भी कम भाग में खेती की जाती है। इसके परिदृश्य में टीले नजर आते है जो विस्मृत शहरों के प्रतीक हैं। प्राचीन सिंचाई निर्माणस्थल ऐसे गाद से भरे पड़े हैं जो भूक्षरण के अन्तिम परिणाम है । उर्स का प्राचीन बन्दरगाह आजकल समुद्र से 250 कि.मी. की दूरी पर है और इसकी इमारतें गाद में 10 मीटर गहरी दबी हुई हैं ।

भूक्षरण के अतिरिक्त एक और कारण है जो अच्छी जमीन को बंजर क्षेत्र में परिवर्तित कर सकता है । यह है खारापन। खारापन वहां पैदा होता है जहां भूमिगत जल का स्तर उसके अत्यधिक इस्तेमाल के कारण नीचा हो जाता है । दुनियाभर में जमीन के ऐसे विशाल क्षेत्र हैं जो खारेपन से प्रभावित हैं। ये क्षेत्र मैक्सिको, अमरीका के बहुत से भाग, भारत, चीन और दक्षिण पूर्वी एशिया में विद्यमान हैं । इस कटु अनुभव के बावजूद दुनियाभर में भूमिगत जल का अंधाधुंध इस्तेमाल जारी है ।

शताब्दियों तक हम उपजाऊ जमीनों को विशाल मरुभूमियों में परिवर्तित करते रहे परन्तु अब तक हमें यह पता नहीं है कि रेगिस्तानों को हरा-भरा कैसे बनाया जाए । इज़रायल के दावों के बावजूद यह अब भी दूर की कौड़ी है । हमारे सभी प्राकृतिक संसाधन इसी प्रकार नष्ट हो रहे हैं ।

औद्योगिक क्रान्ति के बाद से हमारे प्राकृतिक संसाधन जैसे कोयला और तेल का दोहन खतरे की सीमा तक पहुंच गया है। दोनों ही समाप्ति के कगार पर हैं। आजकल चूंकि तेल उत्पादक देश दुनिया के बाकी देशों को अपने चंगुल में फंसाए हुए है इसलिए शक्ति के वैकल्पिक ऐसे स्रोतों के बारे में सोचना है जो कोयला और तेल की तरह समाप्त नहीं होगा।

जिसे हम नष्ट करते हैं उसकी पूर्ति नहीं कर पाते और न ही प्रकृति उसे पहले की गति से पूरा कर पाती है । हमारे वर्तमान खनिज तथा जीवाश्म ईंधन के भंडार को जमा करने में प्रकृति को लाखों वर्ष लगे हैं परन्तु इन्हें समाप्त करने में हमें केवल चंद शताब्दियां ही लगेंगी । लुटेरे और परभक्षी के रूप में हम अन्य सभी प्राणियों से आगे हैं इसलिये हम अपने को निर्माता और चिन्तक मानते हैं । अंधाधुंध नष्ट करने की क्षमता की तुलना में हमारी विचारशक्ति और सर्जक क्षमताएं कहीं कम हैं ।

कोई भी पक्षी अपने घोंसले को नष्ट नहीं करेगा । परन्तु अपेक्षाकृत अधिक बुद्धिमान मानव (होमो-सेपियन) इस हानिकारक कार्य में काफी चतुर है । अनुमान लगाया गया है कि ब्रिटेन में एक व्यक्ति प्रतिदिन लगभग 700 ग्राम कचरा फेंकता है । इस कचरे के साथ औद्योगिक उप-उत्पादों का वह कचरा भी शामिल है जिसे न उत्पादक और न ही उपभोक्ता रखना चाहता है ।

हाल के वर्षों में प्रौद्योगिकी में जो प्रगति हुई है उसे 'प्रौद्योगिक क्रान्ति' की संज्ञा दी गई है । यह क्रान्ति, अन्य सभी क्रान्तियों की भांति असफल रही है । एक ओर तो इसके कारण दुर्लभ सामग्री की खपत तेज हुई, दूसरी ओर इसने काफी अवांछित कचरे को जन्म दिया है । इससे कचरे का ढेर लगता जा रहा है और इसका निपटान करना मुश्किल हो गया है । इनमें कुछ कचरा जैसे संश्लेषित प्लास्टिक बायो-डिग्रेडेबल नहीं है । अतः ये परिस्थिति-प्रणाली के लिए वर्षों तक खतरा बने रहेंगे ।

परन्तु इन सब में सबसे खराब वे प्रदूषक हैं जिन्हें उन्नत प्रौद्योगिकी हमारे चारों ओर फैला रही है।

सुविचारित अध्ययन से पता चला है कि वायु प्रदूषण से वनस्पति को हानि पहुंच सकती है और सामान्यतः पौधे की वृद्धि में रुकावट आ सकती है । इसकी झलक हमें पौधों के उत्पादों में अपेक्षाकृत कम पोषकता तथा उसके परिणामस्वरूप इन पर निर्भर रहनेवाले जानवरों और मनुष्यों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले कुप्रभावों में मिलती है । यद्यपि इस क्षेत्र में हमारी उल्लेखनीय उपलब्धि है परन्तु बाद में पड़ने वाले प्रभाव इनसे कहीं अधिक महत्वपूर्ण होंगे।

हमारे कारखाने प्रचुर मात्रा में ऐसा कचरा नदियों और झीलों में डाल रहे हैं जिनमें घुलनशील नाइट्रोजन और फ़ास्फेट है । इनसे पानी में शैवाल और उसी प्रकार के सूक्ष्मजीवों की प्रचुरता हो जाती है जो अन्य प्राणियों के लिए घातक सिद्ध होती है और अन्ततः वे सब मिट जाते हैं ।ज्वलनशील ईंधन का व्यापक प्रयोग सभी प्राणियों के लिए दो तरह से हानिकर है। यह आक्सीजन की मात्रा कम कर कार्बन डाइ आक्साइड की मात्रा को बढाता है । यदि हम उस बिन्दु पर पहुच जाए जहा ज्वलनशीलता की दर प्रकाश संश्लेषण की दर से अधिक हो तो हमारे लिए रात में आक्सीजन की सप्लाई पाना कठिन हो जाएगा । सर्दियों में वायुमंडल में आक्सीजन की मात्रा वास्तव में कम हो जाएगी जबकि कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा बढ़ जाएगी ।

सन् 1860 और 1960 के बीच ज्वलनशील ईंधन ने वायुमंडल की कार्बन डाइ आक्साइड में लगभग 14 प्रतिशत की वृद्धि कर दी है । पिछली मात्रा कई सदियों से एक जैसी ही बनी हुई थी । जब आप एक टन हाइड्रोकार्बन जलाते हैं तो आपको लगभग 1 1/3 टन पानी और इससे दुगनी मात्रा कार्बन डाइ आक्साइड मिलती है । कार्बन डाइ आक्साइड और जलवाष्प दोनों ही इस पृथ्वी को हरित बनाते हैं क्योंकि ये सूर्य की किरणों को पृथ्वी तक पहुंचने देते हैं (लघु तरंग विकिरण) और साथ ही दीर्घ तरंग की ऊष्मा विकिरण को पृथ्वी से अन्तरिक्ष में जाने से रोकते हैं अतः वायुमंडल में कार्बन-डाइआक्साइड की मात्रा बढ़ जाने से पृथ्वी का तापमान भी अवश्य बढ़ेगा ।परन्तु फिर भी, आजकल प्रदूषण का एकमात्र महानतम स्रोत है वायुमंडल में परमाणु-अस्त्रों के विस्फोट से उत्पन्न रेडियोधर्मिता । परमाणविक परीक्षणों के निक्षेप से पृथ्वी के धरातल का प्रत्येक भाग और इसके सभी निवासी प्रदूषण से प्रभावित होते हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि हाल [illegible] में पर्यावरण की रक्षा और पारिस्थितिक संरक्षण की [illegible] बारे में

मानव की चेतना काफी जागृत हो गई है। दुनिया भर में होनेवाली विरोध-रैलियां और जन-प्रदर्शन इस बात के संकेत हैं हरित आंदोलन के प्रति जागरूकता आई है।

'ग्रीन्स' दल के नेतृत्व में पर्यावरणविदों ने पश्चिम जर्मनी के संसदीय चुनाव में सन् 1983 में 28 सीटें जीतीं। 'ग्रीन पीस' नामक पर्यावरण प्रदूषणरोधी ग्रुप ने सरकार पर दबाव बनाए रखा ताकि पृथ्वी पर जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके विश्व के अनेक भागों में सुरक्षा उपायों के बिना परमाणु विस्फोट तथा परमाणविक और विषैला रासायनिक कचरा जमा करने के विरोध में कड़ा प्रतिरोध हुआ है

पादप संसार

चार सौ वर्ष ईसा पूर्व प्रथम वनस्पति विज्ञानी थियोफ्रास्टस, जो अरस्तू के शिष्य थे, ने पहली बार वर्गों का निर्धारण किया था। उन्होंने पेड़ झाड़ियां, छोटी झाड़ियां और घास आदि को अलग-अलग वर्ग में रखा था। पहली शताब्दी में मिस्र के चिकित्सक डिस्कोरिड्स ने औषधि के काम आने वाले एक पौधे के बारे में लिखा था। रोमन साम्राज्य के टूटने के बाद आग की कई शताब्दियों में विज्ञान पर बहुत कम काम हुआ। वनस्पति विज्ञान पर यूरोप में काफी काम हुआ लेकिन प्रारम्भिक स्तर पर किये गये कार्य का ब्योरा उपलब्ध नहीं है पर अरब में प्रारंभिक स्तर पर किये गये कार्य का ब्योरा सुरक्षित है।

1859 में चार्ल्स डार्विन द्वारा लिखी गयी पुस्तक 'जीव की उत्पत्ति' ने इस विषय में एक नया मोड़ ला दिया। प्रकृति का एक नया अर्थ-नया आयाम मिला जो किसी भी प्रजाति के भूतकाल से सबंधित हो गया। वर्गीकृत करने की योजना प्रकृति के अनुसार एक ऐसा कार्य बन गया जो कि उत्पत्ति के विकास से जुड़ गया। इस प्रकार पूर्व योजनाएं भी प्रकाश में आने लगीं।

पेड़ पौधों का वैज्ञानिक वर्गीकरण का लगातार पुन-र्निरीक्षण किया जाता रहा। 1800 के मध्य के दौरान वनस्पति विज्ञानियों ने सारे पेड़ पौधों को दो मुख्य वर्गों में रखा। क्रिप्टोगेम्स (छुपे हुए प्रजनन भाग) और फनरोगम्स (दिखायी देने वाले प्रजनन भाग) क्रिप्टोगम्स में फर्न मासेस शैवाल और कवक पौधे रखे गये। इस प्रकार के पौधों में दिखायी देने वाले प्रजनन भाग जैसे बीज-या फूल नहीं होते हैं फनरोगम्स में वह पौधे रखे गये जिसमें फूल या बीज की उत्पत्ति होती है।

आज परम्परागत दो वर्गीय प्रणाली के विरुद्ध पांच वर्गीय प्रणालियां प्रयुक्त की जा रही है। बैक्टीरिया शैवाल की कुछ किस्मों और कवक को अब पौधों की श्रेणी में नहीं रखा जाता है। इन्हें अब इनके अपने समूह में रखा गया है। मोनेरा समूह म बैक्टीरिया और नीली हरी शैवाल (इसे सायनोबैक्टीरिया) भी कहते हैं। प्रोटिस्टा समूह में इयूग्लेनायड शैवाल पीली हरी शैवाल, सोने-और भूरे रंग की शैवाल, डायाटोम्स और डाइनोफ्लेगेल्लेट्ट शैवाल हैं। फगाइ समूह में सारे कवक आते है।

शेष पेड पौधे समूह को विभिन्न विज्ञानियों ने पांच से अठारह मुख्य वर्गों में रखा है। वर्गीकरण की बड़ी संख्या संवहनी पौधों (ट्रेकियोफायटा) के अस्वीकार के कारण, क्योंकि प्राकृतिक रूप से इनकी बहुत बडी संख्या आपस में एक जैसी है, संवहनी पौधों का वर्ग मुख्य प्रभाग माना जाता है।

प्राय: 6 मुख्य समूह को मान्यता मिली हुयी है। निम्न तालिका सूची में 6 प्रभाग, उनके उपप्रभाग ट्रेकियाफायटा प्रभाग और पर्णोपसिडा उपप्रभाग का विवरण है।

प्रभाग क्लोरोफायटा (हरित शैवाल)

प्रभाग क्लोरोफायटा (स्टोनवार्टस कभी-कभी प्र क्लोरोफायटा म माना जाता है)

प्रभाग पैकोफायटा (भूरी शैवाल)

प्रभाग रोडाफायटा (लाल शैवाल)

प्रभाग ब्रायोफायटा (मोसेस, लिवरवर्ट्स हार्नवार्ट्स)

ट्रैकियोफायटा प्रभाग (सवहनी पौधे – वर्गीकरण में इ

द्वारा अपने वंश का विकास करते हैं। जैविक संसार को दो मुख्य उप प्राणि जगत में बांटा जा सकता है : प्रोटोजोआ-मेटाजोआ । इस प्रणाली में उप प्राणि जगत प्रोटोजोआ में केवल प्रोटोजोआ ही आते हैं अर्थात एक कोशिकीय जीव । बाकी सारे जंतु जिसमें मनुष्य भी सम्मिलित है को मेटाजोआ उप जगत में रखा गया है ।

फायलम प्रोटोजोआ : आंख से न दिखायी पड़ने वाले इन जंतुओं का पता सन 1600 में सूक्ष्मदर्शी की खोज होने से पहले नहीं था । चूंकि इनकी एक-कोशिकीय संरचना काफी जटिल होती है और जो अपना कार्य असंख्य कोशिकाओं वाले जीवों की तरह करती है इसलिये इसे एसेल्यूलर या नान सेल्यूलर भी कहा जाता है ।

फायलम मेसोजोआ : मेसोजोआ छोटे जंतु हैं जो 1/2 इंच (1.3 से.मी) लंबाई से कम और साधारण बनावट के होते हैं। इस वर्ग के जंतु परजीवी होते हैं और इनका जीवन चक्र प्रजनन अलैंगिक वंश वृद्धि खासा जटिल होता है ।

फाइलम पोरिफेरा : पोरिफेरा सामान्यतः आद्य अनेक कोशिकीय स्पंज होते हैं जो किसी ठोस वस्तु से चिपक कर जल के अंदर रहते हैं । इसकी अधिकतर 5,000 प्रजातियां खारे पानी में पायी जाती है ।

फायलम सीलेंटरेटा : सीलेंटरेटा वर्ग के जंतु समुद्री जंतुओं की तरह होते हैं । इनमें ऊतक, स्पर्शक और विलक्षण कोशिकाएं (निनेटोसाइटस) होती हैं जिनका प्रयोग अवश कर देने वाले जहर या पकड़ने के लिये होता है, इनके शरीर की संरचना दो पर्तो की होती है - बाहरी एपिडर्मिस जो एक्टोडर्मल ओरिजिन की और अंदरी पर्त गैस्ट्रोडर्मिस जो इंडोडर्मल ओरिजिन की होती है । अंदर की पर्त जठरवाही गुहा को घेरे रहती है । दोनों पर्तो को जेली के प्रकार के ऊतक अलग करते हैं । जठर वाही गुहा पाचन और संचरण का कार्य करती है लेकिन चूंकि इनके गुदा नहीं होती है इसलिये इनका पाचन तंत्र अपूर्ण कहा जाता है ।

फायलम टेनोफोरा : इस वर्ग के जंतु प्रायः काम्ब जेली और समुद्री वालनट होते हैं जो गर्म समुद्रों में तैरते रहते हैं। इनका शरीर पारदर्शी होता है और देखने में जेली मछली से काफी समानता रखते हैं ।

फायलम प्लेटिहेलमिंथीस : इस वर्ग के सदस्य साधारण चपटे कृमि होते हैं । पिछले वर्ग के जंतुओं की अपेक्षा इनकी

Echinodermata
Echinoderms

Pogonophora
Beard bearers

Chordata
Chordates

Tardigrada
Water bears

Protozoa

Pentastomida
Tongue worms

Mesozoa
Minute parasites

Arthropoda
Arthropods

Porifera
Sponges

Chaetognatha
Arrow worms

Coelenterata
Coelenterates

Anelida
Segmented worms

Ctenophora
Comb jellies

Echiuroidea
Spoon worms

Platyhelminthes
Flatworms

Sipunculoidea
Peanut worms

Nemertina
Ribbon worm

Mollusca
Molluscs

Aschelminthes

Brachiopoda
Lamp shells

Entoprocta

Bryozoa
Moss animals

Acanthocephala

Phoronida

प्राणि जगत
(मेटाजोआ)

[illegible] अपने वंश का विकास करते हैं [illegible] संसार को [illegible] [illegible] प्राणि जगत में [illegible] जा सकता है । प्रोटोजोआ [illegible] [illegible]जोआ । इस प्रणाली में [illegible] प्राणि जगत प्रोटोजोआ में [illegible] प्रोटोजोआ ही आते हैं [illegible] एक कोशिकीय जीव । [illegible] सारे जंतु जिसमें मनुष्य भी सम्मिलित है को मेटाजोआ [illegible] जगत में रखा गया है ।

फायलम प्रोटोजोआ: आंख से न दिखायी पड़ने वाले इन [illegible] का पता सन 1600 में सूक्ष्मदर्शी की खोज होने से पहले [illegible] था । चूंकि इनकी एक कोशिकीय संरचना काफी जटिल [illegible] है और जो अपना कार्य असंख्य कोशिकाओं वाले जीवों की [illegible] करती है इसलिये इसे एसेल्यूलर या नान सेल्यूलर भी कहा [illegible] है ।

फायलम मेसोजोआ: मेसोजोआ छोटे जंतु हैं जो [illegible] 2 इंच [illegible] 3 से.मी.) लंबाई से कम और साधारण बनावट के होते हैं । [illegible] वर्ग के जंतु परजीवी होते हैं और इनका जीवन चक्र प्रजनन [illegible] [illegible]गिक वृद्धि खासा जटिल होता है ।

फाइलम पोरिफेरा: पोरिफेरा सामान्यत: आद्य अनेक [illegible]कोशिकीय स्पंज होते हैं जो किसी ठोस वस्तु से चिपक कर जल के अंदर रहते हैं । इसकी अधिकतर 5,000 प्रजातियां खारे पानी में पायी जाती हैं ।

फायलम सीलेंटरेटा: सीलेंटरेटा वर्ग के जंतु समुद्री जंतुओं की तरह होते हैं । इनमें ऊतक, स्पर्शक और विलक्षण कोशिकाएं (निमेटोसाइट्स) होती हैं जिनका प्रयोग अवश कर देने वाले जहर या पकड़ने के लिये होता है इनके शरीर की संरचना दो पर्तों की होती है बाहरी एपिडर्मिस जो एक्टोडर्मल ओरिजिन की और अंदरी पर्त गैस्ट्रोडर्मिस जो इंडोडर्मल ओरिजिन की होती है । अंदर की पर्त जठरवाही गुहा को घेरे रहती है । दोनों पर्तों को जेली के प्रकार के ऊतक अलग करते हैं । जठर वाहि गुहा पाचन और संचरण का कार्य करती है लेकिन चूंकि इनके गुदा नहीं होती है इसलिये इनका पाचन तंत्र अपूर्ण कहा जाता है ।

फायलम टेनोफोरा: इस वर्ग के जंतु प्राय: काम्ब जेली और समुद्री वालनट होते हैं जो गर्म समुद्रों में तैरते रहते हैं । इनका शरीर पारदर्शी होता है और देखने में जेली मछली से काफी समानता रखते हैं ।

फायलम प्लेटिहेलमिंथीस: इस वर्ग के सदस्य साधारण चपटे कृमि होते हैं । पिछले वर्ग के जंतुओं की अपेक्षा इनकी

द्वारा अपने वंश का विकास करते हैं। जैविक संसार को दो मुख्य उप प्राणि जगत में बांटा जा सकता है। प्रोटोजोआ मेटाजोआ। इस प्रणाली में उप प्राणि जगत प्रोटोजोआ में केवल प्रोटोजोआ ही आते हैं अर्थात एक कोशिकीय जीव। बाकी सारे जंतु जिसमें मनुष्य भी सम्मिलित हैं को मेटाजोआ उप जगत में रखा गया है।

फायलम प्रोटोजोआ: आंख से न दिखायी पड़ने वाले इन जंतुओं का पता सन 1600 में सूक्ष्मदर्शी की खोज होने से पहले नहीं था। चूंकि इनकी एक-कोशिकीय संरचना काफी जटिल होती है और जो अपना कार्य असंख्य कोशिकाओं वाले जीवों की तरह करती है इसलिये इसे एसेल्यूलर या नान सेल्यूलर भी कहा जाता है।

फायलम मेसोजोआ: मेसोजोआ छोटे जंतु हैं जो 1/2 इंच (1.3 से.मी.) लंबाई से कम और साधारण बनावट के होते हैं। इस वर्ग के जंतु परजीवी होते हैं और इनका जीवन चक्र प्रजनन अलैंगिक वंश वृद्धि खासा जटिल होता है।

फाइलम पोरिफेरा: पोरिफेरा सामान्यत: आद्य अनेक कोशिकीय स्पंज होते हैं जो किसी ठोस वस्तु से चिपक कर जल के अंदर रहते हैं। इसकी अधिकतर 5,000 प्रजातियां खारे पानी में पायी जाती हैं।

फायलम सीलेंटरेटा: सीलेंटरेटा वर्ग के जंतु समुद्री जंतुओं की तरह होते हैं। इनमें ऊतक, स्पर्शक और विलक्षण कोशिकाएं (निनेटोसाइटस) होती हैं जिनका प्रयोग अवश कर देने वाले जहर या पकड़ने के लिये होता है, इनके शरीर की संरचना दो पर्तों की होती है – बाहरी एपिडर्मिस जो एक्टोडर्मल ओरिजिन की और अंदरी पर्त गैस्ट्रोडर्मिस जो इंडोडर्मल ओरिजिन की है। अंदर की पर्त जठरवाही गुहा को घेरे रहती है। दोनों को जेली के प्रकार के ऊतक अलग करते हैं। जठर वाही पाचन और संचरण का कार्य करती है लेकिन चूंकि इनके गु[illegible] नहीं होती है इसलिये इनका पाचन तंत्र अपूर्ण कहा जाता है।

फायलम टेनोफोरा: इस वर्ग के जंतु प्राय: काम्ब जेली और समुद्री वालनट होते हैं जो गर्म समुद्रों में तैरते रहते हैं। इनका शरीर पारदर्शी होता है और देखने में जेली मछली से काफी समानता रखते हैं।

फायलम प्लेटिहेलमिंथीस: इस वर्ग के सदस्य साधारण चपटे कृमि होते हैं। पिछले वर्ग के जंतुओं की अपेक्षा इनकी

दिखाई पड़ती है। पहले वे अत्यधिक छोटे प्राणी थे किन्तु वे आगे चलकर निर्भीक शिकारी बन गए और अन्य सभी जीव–जातियों पर शासन करने लगे।

स्तनधारियों में मनुष्य नर–वानर की कोटि में आता है। नर–वानरों में विशिष्टता यह थी कि उनके हाथ पकड़ की दृष्टि से अति उत्कृष्ट थे और उनमें देखने–सुनने की शक्ति उत्तम कोटि की थी किन्तु सूंघने की शक्ति कमजोर थी। नर–वानरों में बंदर, कपि और मनुष्य आते हैं। बंदरों का एक अपना ही वर्ग है जिन्हें निम्न नर–वानर या प्रोसिमिअन कहा जाता है। लंगूर, लोरिस लजीला वानर और पेड़ों पर रहनेवाले छछूंदर आदि इसी समूह से संबंधित हैं।

मनुष्य और कपि मिलकर उच्च नर–वानर मानवाभ बनाते हैं। मानवाभ को दो समूहों में विभक्त किया जाता है – पांगिडी (कपि) और होमिनिडे (मनुष्य)। श्रोणि प्रदेश [illegible] और पैरों की रचना और आकार के मामले में मनुष्य कपि से भिन्न प्रकार के हैं। इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य अपने पैरों पर सीधा खड़ा होकर चल सकते हैं जबकि कपि को चलने के लिए [illegible] का भी प्रयोग करना पड़ता है। [illegible] अफ्रीका के गोरिल्ला और चिम्पैंजी [illegible] गिबन और ओरंगउटान। [illegible]

चार्ल्स एफ हकेट के अनुसार [illegible] वह होमिनिडी है जो [illegible] समउदग्रयी [illegible] सीधी संस्थिति [illegible] औजारों [illegible] नैपुण्य [illegible] [illegible] और बीच [illegible] निर्माण [illegible] प्रवेश [illegible] विकास और [illegible]

विकास की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण मोड़ उष्ण अंतराल के दौरान लगभग 50 000 वर्ष पहले आया जबकि अत्यंत [illegible] हिमकाल में बर्फ पीछे हट रही थी।

इसी समय में होमोसेपिएन्स (विचारशील मानव) के रूप में एक नए प्रकार के मनुष्य का उदभव विभिन्न सफल उत्परिवर्तनों के बाद हुआ। चार्ल्स एफ हाकेट के अनुसार इस समय तक मानव वंश में एकल सुसंबद्ध सर्वव्यापी किन्तु विभिन्न प्रकार की जातियां शामिल थीं [illegible] न चल पानेवाली होमिनिडे समाप्त हो [illegible] सभी उत्तर [illegible] पूर्णतया उद्ग्रयी काम्प्लेक्स [illegible] मस्तिष्क का विकास लगभग वर्तमान आकार [illegible] जिसमें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक और [illegible] परिवर्तन आता गया।

इस प्रकार विकसित एवं विचारशील मानव–जाति में [illegible] लक्षण उभर आए – 1. अत्यधिक कुशल मस्तिष्क [illegible] 3. चपटा चेहरा और, 4. जैसा कि [illegible] जाता है उच्चारण संबंधी समस्त प्रकार [illegible] का प्रयोग। मानव के इस नए सम्मिश्रण [illegible] की उदग्रसीधी संस्थिति वाले कांप्लेक्स के ढांचे [illegible] हुआ लेकिन इससे किसी लाभकारी विशेषताओं का लोप [illegible] लेकिन यह एक जीवन एवं मूलभूत सम्मिश्रण [illegible] नवीन अनुकूली विकिरण मानव विकिरण के द्वितीय [illegible] उदय हुआ। यह विचारशील मानव सम्मिश्रण भी उद्ग्रयी [illegible] के समान देशान्तरण और जीन प्रवाह के जरिए फैला। [illegible] रफ्तार अविश्वसनीय थी। यह काम्प्लेक्स उन लोगों [illegible] हुआ जिन्होंने सहयोग करने, गतिशील रहने, तकनीकों में सुधार करने और कम शक्तिवाले प्रतियोगियों के साथ [illegible] या उन्हें नष्ट करने में अद्वितीय क्षमता प्राप्त की।

लगभग 40 000 वर्ष पहले होमिनिडे जाति के सभी समूह विकसित तकनीकों को आत्मसात कर चुके थे। निऐंडरथल मानव को इसका अपवाद माना जा सकता है। सेपिएन्स [illegible] काम्प्लेक्स के स्थापित हो जाने के बाद भी [illegible] मानव यूरोप में थे। इससे पता चलता है कि [illegible] काम्प्लेक्स का उदय यूरोप में नहीं हुआ। लेकिन हमें [illegible] भी जानकारी नहीं है कि सेपिएन्स काम्प्लेक्स का [illegible] स्थान कौन सा है। जैसा कि सेपिएन्स में देखा गया, [illegible] में चपटे शिशु चेहरे का अभाव था उनका मस्तिष्क [illegible] मानव के मस्तिष्क से औसतन बड़ा था।

जीन

कैंब्रिज की कैवेंडिश प्रयोगशाला के 24 वर्षीय वैज्ञानिक डा. जे.डी. वाट्सन और 36 वर्षीय ब्रिटेन के वैज्ञानिक डा. फ्रांसिस क्रिक ने 2 अप्रैल 1953 में डी.एन.ए. की संरचना को [illegible] किया था। प्रतिष्ठित विज्ञान पत्रिका दी नेचर के संपादक को 900 शब्दों में लिखे गये संक्षिप्त पत्र में उन्होंने स्पष्ट किया कि डी.एन.ए. कुंडलाकार है। बाद में डी एन ए जैविक जगत का सर्वाधिक चर्चा का अनुसंकेत बन गया। डा. वाटसन और डा. क्रिक को इस खोज के लिये 1962 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार में उनके एक और सहभागी लंदन के किंग्ज कालेज के डा. मोरिस विल्किन्स भी थे जिन्हें डी एन ए अणु का एक्स–रे चित्र खींचने में सफलता मिली थी। पृथ्वी पर मानव जीवन के इतिहास में यह खोज महत्वपूर्ण घटना थी क्योंकि जीवन की मूल भूत इकाई न्यूक्लिक एसिड पृथ्वी पर अरबों वर्षों से विद्यमान था।

पड़ती है। पहले वे अत्यधिक छोटे प्राणी थे किन्तु वे आगे चलकर निर्भीक शिकारी बन गए और अन्य सभी जीव-जातियों पर शासन करने लगे।

स्तनधारियों में मनुष्य नर-वानर की कोटि में आता है। नर-वानरों में विशिष्टता यह थी कि उनके हाथ पकड़ की दृष्टि से अति उत्कृष्ट थे और उनमें देखने-सुनने की शक्ति उत्तम कोटि की थी किन्तु सूंघने की शक्ति कमजोर थी। नर-वानरों में बंदर, कपि और मनुष्य आते हैं। बंदरों का एक अपना ही वर्ग है जिन्हें निम्न नर-वानर या प्रोसिमिअन कहा जाता है। लंगूर, लोरिस, शर्मीला वानर और पेड़ों पर रहनेवाले छछूंदर आदि इसी समूह से संबंधित हैं।

मनुष्य और कपि मिलकर उच्च नर-वानर मानवाभ बनाते हैं। मानवाभ को दो समूहों में विभक्त किया जाता है - पांगिड़ी (कपि) और होमिनिडे (मनुष्य)। श्रोणि प्रदेश, टांगों और पैरों की रचना और आकार के मामले में मनुष्य कपि से भिन्न प्रकार के हैं। इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य अपने पैरों पर सीधे खड़े होकर चल सकते हैं जबकि कपि को चलने के लिए अपने हाथों का भी प्रयोग करना पड़ता है। पांगिड़िया के चार कुल हैं - अफ्रीका के गोरिल्ला और चिम्पेंजी तथा दक्षिणी-पूर्वी एशिया के गिबन और ओरंगउटान। होमिनिडे का एक ही कुल है - मनुष्य।

चार्ल्स एफ हाकेट के अनुसार सही माने में हमारा पहला पूर्वज वह होमिनिडे है जो सीधे खड़े होने में काबिल हुआ। इसे सम उद्धर्षी कह सकते हैं। उनके अनुसार - जैसे ही होमिनिडे सीधी संस्थिति, द्विपादी चाल, हाथ से काम करने और सामान्य औजारों का निर्माण करने और उन्हें अपने साथ ले चलने की निपुणता प्राप्त की और वह भाषा का प्रयोग करना सीख गया, मनुष्य बन गये। इस प्रकार मानव विकास का चक्र पूरा हो गया। सम उद्धर्षी स्पीशीज अत्यंत नूतन युग में जावा और चीन से लेकर यूरोप उत्तरी अफ्रीका और संभवतः दक्षिणी अफ्रीका तक विस्तृत भू-भाग में रहते थे। इस स्पीशीज ने सर्वप्रथम निम्नलिखित सम उद्धर्षी विशिष्टताओं को प्राप्त किया (1) पूर्व भाषा की उपलब्धि, (2) पैर घसीट कर चलने के बजाय लंबे डग भरने की चाल, (3) सवाना या घास के मैदान के खुले प्रदेश में प्रवेश करने के जोखिम का सफलतापूर्वक उठाना (4) अधिक सहयोग के आधार पर व्यापक रूप से एवं प्रभावपूर्ण ढंग से शिकार उद्यम में संलग्न होना (5) सामान टोने की तकनीक का विकास और (6) अपने रोमों को त्यागने की शुरुआत।

विकास की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण मोड़ उष्ण अंतराल के दौरान लगभग 50,000 वर्ष पहले आया जबकि अत्यंत नूतन हिमकाल में बर्फ पीछे हट रही थी।

इसी समय में होमोसेपिएन्स (विचारशील मानव) के रूप में एक नए प्रकार के मनुष्य का उद्भव विभिन्न सफल उत्परिवर्तनों के बाद हुआ। चार्ल्स एफ. हाकेट के अनुसार इस समय तक मानव वंश में एकल, सुसंबद्ध, सर्वव्यापी किन्तु विभिन्न प्रकार की जातियां शामिल थीं। न चल पानेवाली होमिनिडे समाप्त हो गए। सभी उत्तर जीवी होमिनिडे पूर्णतया उद्धर्षी काम्प्लेक्स के उत्तराधिकारी थे। मस्तिष्क का विकास लगभग वर्तमान आकार तक हो गया था जिसमें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक औसत परिमाण में कुछ परिवर्तन आता गया।

इस प्रकार विकसित एवं विचारशील मानव-जाति में चार विशिष्ट अभिलक्षण उभर आए - 1. अत्यधिक कुशल मस्तिष्क, 2. यथातथ्य भाषा, 3. चपटा चेहरा और, 4. जैसा कि आज सार्वभौम रूप से देखा जाता है, उच्चारण संबंधी समस्त प्रकार की निपुणताओं का प्रयोग। मानव के इस नए सम्मिश्र (कांपलेक्स) का उदयसीधी संस्थिति वाले कांप्लेक्स के ढांचे के अंदर हुआ लेकिन इससे किसी लाभकारी विशेषताओं का लोप नहीं हो पाया। लेकिन यह एक जीवन एवं मूलभूत सम्मिश्रण या जिससे एक नवीन अनुकूली विकिरण मानव विकिरण के द्वितीय चरण-का उदय हुआ। यह विचारशील मानव सम्मिश्रण भी उद्धर्षी सम्मिश्रण के समान देशान्तरण और जीन प्रवाह के जरिए फैला।

इसकी रफ्तार अविश्वसनीय थी। यह काम्प्लेक्स उन लोगों पर सिद्ध हुआ जिन्होंने सहयोग करने, गतिशील रहने, तकनीक में सुधार करने और कम शक्तिवाले प्रतियोगियों के साथ अनुकूलन करने या उन्हें नष्ट करने में अद्वितीय क्षमता प्राप्त की।

लगभग 40 000 वर्ष पहले होमिनिडे जाति के सभी समूह विकसित तकनीकों को आत्मसात कर चुके थे निऐंडन्यरल मानव को इसका अपवाद माना जा सकता है। सेपिएन्स (विचारशील) काम्प्लेक्स के स्थापित हो जाने के बाद भी निऐंडन्यरल मानव यूरोप में थे। इससे पता चलता है कि सेपिएन्स काम्प्लेक्स का उदय यूरोप में नहीं हुआ। लेकिन हमें इस बात की भी जानकारी नहीं है कि सेपिएन्स कांप्लेक्स का उद्गम स्थान कौन-सा है। जैसा कि सेपिएन्स में देखा गया, निऐंडन्यरल में चपटे शिशु चेहरे का अभाव था उनका मस्तिष्क हमारे आज के मानव के मस्तिष्क से औसतन बड़ा था।

जीन

कैंब्रिज की कैवेंडिश प्रयोगशाला के 24 वर्षीय वैज्ञानिक डा. जेम्स सी वाट्सन और 36 वर्षीय ब्रिटेन के वैज्ञानिक डा. फ्रांसिस च क्रिक ने 2 अप्रैल 1953 में डी.एन.ए. की संरचना को रेखांकित किया था। प्रतिष्ठित विज्ञान पत्रिका "दी नेचर" के संपादक को 900 शब्दों में लिखे गये संक्षिप्त पत्र में उन्होंने स्पष्ट किया कि डी.एन.ए. कुंडलाकार है। बाद में डी.एन.ए. जैविक जगत का सर्वाधिक चर्चा का अनुसंकेत बन गया। डा. वाट्सन और डा. क्रिक को इस खोज के लिये 1962 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार में उनके एक और सहभागी लंदन के किंग्ज कालेज के डा. मोरिस विल्किन्स भी थे जिन्हें डी.एन.ए अणु का एक्स-रे चित्र खींचने में सफलता मिली थी। पृथ्वी पर मानव जीवन के इतिहास में यह खोज महत्वपूर्ण घटना थी क्योंकि जीवन की मूल भूत इकाई न्युक्लिक एसिड पृथ्वी पर अरबों वर्षों से विद्यमान था।

दो कुंडलियों की संरचना वास्तव में जीवन का कुंडलाकार सोपान है । यह दो कुंडलाकार सोपान शुगर और फास्फेट के होते हैं और इस सोपान के स्तंभ नाइट्रोजन वेसेज के होते हैं जिन्हें प्यूरीन्स एवं पाइरीमिडिन्स कहते हैं । यह वेसेज हाइड्रोजन वांड्स से वंधित होते हैं । प्यूरीन, एडेनाइन (ए) केवल थाइमीन (टी) से जोड़ा वनाते हैं । दूसरा प्यूरीन गुआनीन (जी) दूसरे पाइरीमिडिन साइटोसी (सी) से जोड़ा वनाता है । इस प्रकार के विशिष्ट रसायनिक टेप पर आधारीय अक्षरों के जोड़े इंगित करते हैं कि अगर एक लड़ी का क्रम दिया जाये तो दूसरी लड़ी का क्रम स्वतः ही निश्चित किया जा सकता है । डी.एन.ए की पुनरावृत्ति के दौरान, जो कि सभी जीवित प्राणियों के विकास और पुनर्जीवन की मूलभूत प्रक्रिया है, डी.एन.ए के दो तंतु गुच्छ अकुंडलित होकर दो अलग पट्टियों में हो जाते हैं प्रत्येक पट्टी के सम्मुख नये तंतु गुच्छ वन जाते है जो विद्यमान के संपूरक होते हैं । इस प्रकार डी.एन.ए की पुनरावृत्ति प्रक्रिया के दौरान कोई त्रुटि से विकृतता या परिवर्तन अगर आ जाती है तो यह आने वाली पीढियों में स्थानांतरित होती रहती हैं ।

डी.एन.ए की संरचना का खुलासा हो जाने से पीढियों में परिवर्तन या म्यूटेशन्स की यांत्रिक प्रक्रिया के वारे में संकेत मिलने लग गये हैं । इस प्रकार एक ही झटके में डा. वाट्सन क्रिक के कार्य ने दिखाया कि किस प्रकार आनुवांशिक इकाइयां स्वयं को प्रदर्शित करती हैं ? किस पकार उनकी संपूरक इकाई वनती है या परिवर्तन आता है और साथ ही कैसे वह जैविक क्रियाकलापों की वृद्धि को नियन्त्रित करती हैं ?

वाट्सन के शब्दों में यदि कहा जाये तो अभी तक हम सोचते थे कि हमारा भाग्य नक्षत्रों की गतिविधियों में छिपा है किंतु अव हमें पता है कि हमारे भाग्य के अधिकांश भाग का रहस्य जीन संरचना में ही निहित है । इस प्रकार डी.एन.ए की रचना के पकाश में आने से रासायनिक संदर्भ में जीन के क्रिया-कलापों को समझने का मार्ग खुला । डी.एन.ए. के द्विसूत्र ने जेव-रासायनिक विज्ञान में क्रांति ला दी और जेव रसायन, आनुवांशिकी व दवाओं के क्षेत्रों में आश्चर्यजनक विकास हुए ।

जेनिटिक कोड

प्रजनन के माध्यम से मां-वाप के विशेष गुण उनकी सतानों में पहुंचते हैं । ये गुण माता-पिता और उनकी संतानों में विशेष प्रोटीन संरचनाओं द्वारा सुनिश्चित किये जाते हैं । हालांकि माता-पिता विभिन्न गुण निर्धारित करने वाले इन प्रोटीनों को संतानों में नहीं भेजते वल्कि उनके द्वारा प्रदत्त डी.एन.ए. का कूटवद्ध संदेश जो कि आनुवांशिक अणु है, यह कार्य सम्पन्न करता है ।

डी.एन.ए के न्यूक्लियोटाइड वेसं में, जो एक विशेष क्रम में डी. एन. ए. में स्थित होते है, जीवों की आनुवांशिक सूचनाएं संगृहीत रहती हैं । विशिष्ट रूप में पंक्तिवद्ध अमिनो अमलों की लंबी पंक्तियों के रूप में स्थित प्रोटीन की विशिष्ट भाषा में अनूदित किये जाते हैं । प्रोटीन की विशिष्टताएं अमिनो अम्लों की व्यवस्था के अनुसार एक क्रम में रहती है और इन क्रमों का निश्चय डी.एन.ए में स्थित न्यूक्लियोटाइड द्वारा होता है । आर.एन.ए. और अन्य एन्जाइम प्रोटीन सिन्थीसिस की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं । जीन की कार्य विधियों की जेव-रासायनिक प्रकृति डी.एन.ए., आर.एन.ए. और जीवन-पोषण की प्रोटीनों की सहभागिता को रेखांकित करती है । वाट्सन और क्रिक के इस कार्य को डा. हरगोविंद खुराना, डा. नीरेनवर्ग और डा. हॉल्ली ने आगे वढ़ाया । 1960 में इन्होंने कोशिकीय रसायन शास्त्र को विभिन्न संदर्भों में डी.एन.ए. द्वारा नियन्त्रण की भूमिका का खुलासा किया ।

ग्रेगर जोहन मेंडल ने वर्ष 1885 में दर्शाया कि कुछेक आनुवांशिक घटक समस्त जैविक स्पीशीज़ में क्रियाशील रहते हैं । डैनिश जीव-वैज्ञानिक विलहेम जोहान्सेन ने इन घटकों को जीन कहा और यह नाम प्रचिलत हो गया ।

जीन उन गुणसूत्रों में स्थित होते हैं जो कोशिका की नाभिक में रहते हैं । जीन, गुणसूत्र और नाभिक एक साथ मिलकर, चर्चिल के प्रसिद्ध वाक्यांश के अनुसार, समस्या के भीतर रहस्य से लिपटी पहेली का निर्माण करते हैं । जीन पहेली का रूप लेते हैं जवकि गुणसूत्र रहस्य का और नाभिक समस्या का प्रतिनिधित्व करते हैं । डी.एन.ए. का रहस्य उन नथों में है जो सीढ़ी के दोनों किनारों को जोड़ता हैं । ये नथ दो अर्ध नथों या दो भागों का निर्माण करते हैं जिनमें से प्रत्येक अर्ध भाग सीढ़ी के एक किनारे से जुड़ा होता हैं । ये अर्ध नथ छोटे अणु के चार प्रकारों में से एक प्रकार के हो सकते हैं, यथा – ऐडेनीन (ए), साइटोसिन (सी), थायमीन (टी) और गुआनिन (जी) । सीढ़ी के संलग्न खंड के साथ इन अर्ध नथों में से प्रत्येक को न्युक्लिआटाइड के नाम से जाना जाता है । एक किनारे पर अर्ध नथ दूसरे किनारे के केवल विशिष्ट साथी से ही जुड़ा होगा । विशिष्ट साथियों का यह पूर्व निर्धारित विन्यास दर्शाता है कि ये छोटे अणु नई भाषा के निर्धारित कूट या शब्दों के वर्णो का रूप निर्माण करते हैं। वस्तुतः यह पता चला है कि यही स्थिति है ।

ए केवल टी के साथ और सी केवल जी के साथ नथ का निर्माण करता है । इसलिए ए-टी, टी-ए, सी-जी, जी-सी जोड़े एक प्रकार से चार वर्णों वाली वर्णमाला की रचना करती हैं जिसके जरिए संदेश दिया जा सकता है । यह चार वर्णों वाली वर्णमाला आनुवाशिक कूट की रचना करती है । आनुवांशिक कूट जटिल होने के साथ-साथ विस्तृत भी है । वर्ष 1977 मे फेड सगार ने इस वात का उल्लेख किया कि विषाणु के डी एन.ए. कूट का जव कम्प्यूटर पर कूट वाचन किया गया तो उससे 15 मीटर लवा मुद्रित अंश निकला । इस दर से मानव डी.एन ए. का कम्प्यूटर अंश 16,000 कि. मी. लंवा होगा ।

डी.एन.ए. के अत्यधिक लंवे तंतु गुच्छ, जीवित कोशिका के क्रोड़ के भीतर अंतग्रंथन करते हैं । डी.एन.ए. इतना संकरा और कसाववदार कुंडलित होता है कि मानव शरीर की सभी कोशिकाओं के सभी जीन आसानी से 1.25 सेमी घन में आ जाएगे । फिर भी, यदि ये सभी डी. एन.ए. तंतु गुच्छ खोल दिए जाएं और आपस में जोड़ दिए जाएं तो ये पृथ्वी से सूर्य और फिर सूर्य से पृथ्वी तक फैल जायेंगे । कोशिका और शरीर संवृद्धि के सभी प्रकार्यो को जीन नियंत्रित करते हैं । अधिकांश कोशिकाओं के जीवन में दो मुख्य घटनायें (विभाजन के जरिये) गुणन और प्रोटीनों का संश्लेषण है । ये दोनों सक्रियाएं, जीन में कोडित रूपरेखा के आधार पर चलती हैं । कोशिका के विभाजित होने से पहले, डी.एन.ए. सीढ़ी वीच में नीचे विभक्त हो जाती है। न्युक्लिओटाइड ए.एस.टी.एस से और सी.एस.जी.एस.से अधिकाधिक रूप में उसी प्रकार पृथक हो

डी.एन.ए

वैज्ञानिकों ने मानव-जीवन की संरचना का ताना बाना बुन लिया। उन्होंने मनुष्य के शरीर की रचना, प्रकृति और गुण-दोषों को निर्धारित करनेवाले जीन समूह का पूरा नक्शा उतारने में ऐतिहासिक सफलता पाई है। यह एक प्रकार से मानव जीवन को विज्ञान के हाथों में सौंप देने की शुरूआत भी कही जा सकती है। पूरी संभावना है कि अब आदमी बुढ़ापे और मृत्यु से लड़ सकेगा। दूसरी ओर, माता-पिता जीन विज्ञान के जरिए अपनी भावी संतान के लिए अच्छी-अच्छी विशेषताओं और गुणों का निर्धारण कर सकेंगे।

यह सफलता ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान के निदेशक डा. फ्रांसिस कोलिन्स की अगुवाई में ह्यूमेन जेनोम परियोजना के अंतर्गत लंबे शोध और अनुसंधानों के बाद हासिल की है। इस परियोजना में अमरीकी संस्थान सेलेरा जेनोमिक्स कोरपोरेशन के अध्यक्ष और मुख्य विज्ञान अधिकारी डा. क्रेग वेन्टर तथा ब्रिटिश सैंजर सेंटर के निदेशक डा. जोन सल्सटन का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। उनके अलावा फ्रांस, जर्मनी, जापान और चीन के वैज्ञानिक भी उनके साथ दिमाग खपा रहे थे। जीन वह किताब है जिसके 'पन्नों' पर वैज्ञानिक भाषा में वह सब लिखा हुआ है जो दूसरों से हमारे अलग होने या जो हम नहीं हैं उसके कारणों की सारी जानकारी को बताती है या फिर यह भी बताती है कि किसी व्यक्ति विशेष को किन कारणों ने 'अच्छा' या 'खराब' बनाया है अथवा कोई स्वस्थ या बीमार क्यों है और जब इतना सब जाना जा सकेगा तो फिर किसी मनुष्य को बीमारी से छुटकारा दिलाना और उसे बीमार बनाना भी विज्ञान के लिए संभव हो जाएगा। बीमार होने से पहले ही बीमारी की रोकथाम हो सकेगी और स्थायी इलाज भी संभव हो जाएगा। यह भाषा गुणसूत्रों (क्रोमोसोम्स) पर लिखी होती है।

जीन का रहस्य खोलने के लिए वैज्ञानिकों ने डीएनए का निर्माण करने वाली 3.1 अरब आधारभूत युग्मों या उप-इकाइयों को क्रमबद्ध किया। इस डीएनए (डीओक्सीरीबोन्यूक्लिक एसिड) में भी लगभग 50.000 जीन समाए होते हैं, हालांकि इनकी सही संख्या अभी भी पता नहीं है। डीएनए कोशा के भीतर मौजूद न्यूक्लियस है जिसमें जीवन की इबारत लिखी होती है। डीएनए में एडेनाइट, थाइमीन, गुएनाइन और सिस्टोसाइन युग्म करा रूप में मौजूद होते हैं तथा इनको न्यूक्लियोटाइड कहते हैं। यही जीवन संरचना का आधार हैं। लेकिन इन युग्मों की गठन प्रक्रिया बहुत जटिल है। एक-दूसरे से जुड़ने की इनकी प्रक्रिया भिन्न-भिन्न होती है। वैज्ञानिकों ने इन्हीं युग्मों को क्रमबद्ध करने के बाद उनका अध्ययन किया और इस सफलता का द्वार खोला। हर तीन युग्मों का समूह एमीनो एसिड के निर्माण पर नियंत्रण रखता है। एमीनो एसिड प्रोटीन निर्माण करते हैं और इन प्रोटीनों से ही कोशिकाओं, हारमोनों और शरीर के अन्य तमाम अवयव बनते हैं। हर औसत जीन में करीब एक हजार एमिनो एसिड्स होते हैं। किसी आदमी की आंखें यदि नीली हैं या वह कैंसर का मरीज है तो उसके लिए कोई अकेली जीन नहीं कारण नहीं होती है वरन् यह कहीं बहुत अधिक जटिल प्रक्रिया है। जीन की पहचान कर लेने के बाद उनके द्वारा बनाए जाने वाले प्रोटीन की पहचान भी वैज्ञानिकों के लिए आसान हो जाएगी जिससे यह मालूम किया जा सकेगा कि कौन सी जीन किस प्रकार का प्रोटीन बनाती है और वह शरीर में क्या काम करता है। इसके दो सुखद परिणाम होंगे। एक, जीन में मौजूद कमी या खामी को दूर करना संभव होगा और दो, चिकित्सक ऐसी बीमारियों के लिए दवाएं ईजाद कर सकेंगे जो अब तक लाइलाज में जैसे कैंसर, हृदय रोग, एड्स और अलझीमर आदि।

इस शोध परियोजना से जुड़े एक वैज्ञानिक जोन हेरिस का तो कहना है कि अब 'अमरत्व' प्रदान करना संभव हो जाएगा अर्थात् किसी व्यक्ति की आयु को कम नहीं, 1200 साल लंबा भी किया जा सकेगा। उनके अनुसार बेशक, इससे दुनिया में आबादी बढ़ने और पीढ़ियों के बीच संघर्ष की आशंकाएं भी जन्म लेंगी। आलोचकों का कहना है कि इस शोध की बदौलत जैविक भेदभाव का खतरा ज्यादा होगा क्योंकि माता-पिता जीन में परिवर्तन के जरिए भावी संतान के लिए शरीर की आकृति, रूप-सौन्दर्य, प्रतिभा और विशिष्टताओं की मांग करेंगे। इसी तरह बीमा कंपनियां अरबों डालर बचा सकेंगी क्योंकि किसी व्यक्ति की जीन रिपोर्ट पहले से ही बता देगी कि उसे कब क्या बीमारी होगी।

क्या करता है जीन

* मानव जीनोम में 50 हजार से ज्यादा जीन हैं – लेकिन ठीक-ठीक कोई नहीं बता सकता कि कुल कितने जीन हैं। जीनोम पर व्यक्ति की संरचना निर्भर करती है और तय होता है कि कोशिकाएं किस तरह काम करेंगी।
* प्रत्येक व्यक्ति की जीन संरचना दूसरे व्यक्ति से अलग होती है – लेकिन जुड़वां बच्चों में, समान जीन संरचना हो सकती है। किसी भी व्यक्ति में आधे जीन माता से और आधे पिता से आते हैं।
* कोशिकाएं अपने कार्य संचालन, मरम्मत, रक्षा और विभाजन के लिए जिन प्रोटीनों का इस्तेमाल करती हैं वे जीन के निर्देश पर ही बनते हैं। जीन प्रत्येक कोशिका के केंद्रक में क्रोमोसोम में होते हैं।
* किसी भी व्यक्ति में 22 क्रोमोसोम के अलावा दो अतिरिक्त क्रोमोसोम लिंग निर्धारण वाले होते हैं – एक्स और वाई। स्त्री में ऐसे दो एक्स क्रोमोसोम होते हैं, जबकि पुरुष में एक एक्स क्रोमोसम होता है और एक वाई।

एक बार किसी जीन विशेष का शरीर की खास गड़बड़ी से संबंध स्थापित हो जाए तो फिर वैज्ञानिक इस जीन को संशोधित कर, ठीक कर या बदलकर या फिर इससे बनने वाले प्रोटीन को अलग तरह से बनाकर शारीरिक गड़बड़ी का इलाज कर सकते हैं।

ा है जैसे खींचने से ज़िपर अलग–अलग हो जाता है । अब क् किए गए न्युक्लिओटाइड ए, टी, सी और जी कोशिका ुक्त रूप से तैरते न्युक्लिओटाइड से उपयुक्त साथी को उठा हैं । इस प्रकार विभक्त सीढ़ी डी.एन.ए. की दो परिपूर्ण ढ़ियां बन जाती हैं जो एक–दूसरे के पूर्णतया समान होती हैं। एन.ए का एक बार विभाजन हो जाने के बाद, शेष कोशिकाएं, य कोशिकायें भी द्विगुणित होकर, अंत में उसी प्रकार की कोशिकाएं उत्पन्न करती हैं ।

विकासशील शरीरों में कोशिकाओं की पुनरावृत्ति विभेदन के द होती है । अधिकांश स्पेशीज़ में जीवन एक निषेचित अंडे कोशिका से प्रारंभ होता है । एकल कोशिका द्विगुण, चतुर्गुण कर इस प्रकार बढ़ती रहती है। साथ ही जीन के विभिन्न सेट भिन्न कोशिकाओं में विशिष्ट भौतिक विशेषकों का विकास रते हुए क्रियाशील होते हैं, जबकि हाथ, पैर, मस्तिष्क आदि रीर के विभिन्न अंग विशिष्ट कोशिकाओं का निर्माण करते हैं। स प्रक्रिया को 'विभेदन' के रूप में जाना जाता है ।

विभेदन में सुनिर्धारित रूप से नियमित कार्य निहित होता है। ाथ से लिये गये काम से संबंधित कोशिकाएं संकेन्द्रित हो जाती और वे अपने अन्य क्रिया–कलाप बंद कर देती हैं और जब ाम पूर्ण हो जाता है तो वे भी काम करना बंद कर देती हैं । ानुवांशिक क्रिया–कलापों की शुरुआत व समाप्ति को जीन से ंलग्न दो अणुओं, यथा – विप्रेरक और दमनकर की उपस्थिति ारा निर्धारित किया जाता है। माता–पिता से उत्तराधिकार में जेन जीनों को हम प्राप्त करते हैं, वे हमारे आनुवांशिक विशेषकों ा निर्धारण करते हैं । जैसा कि पहले सोचा जाता था, ानुवांशिक लक्षण एक मुश्त रूप में अंतरित नहीं होते । उत्तराधिकार में प्राप्त विभिन्न विशेषकों के लिये विभिन्न जीन उत्तरदायी होते हैं । इस मामले में प्रत्येक जीन अन्य जीनों से अलग स्वाधीन रूप से कार्य करती है । किसी विशिष्ट विशेषक ेतु जीन, गुण–सूत्रों में विशेष स्थानों पर पाये जाते हैं ।

गुण–सूत्र धागे के समान होते हैं और वे कोशिका के नाभिक में पाये जाते है । वे सदैव जोड़े में होते हैं । गुण–सूत्रों की संख्या स्पीशीज़ के अनुसार भिन्न–भिन्न होती है । उदाहरणार्थ – फल–मक्खी में कुल मिला कर 4 जोड़े या 8 गुण–सूत्र, हरी मटर में 7 जोड़े (कुल 14), चुहिया में 20 (40) और मानव में 23 (46) गुण–सूत्र होते हैं ।

एक पंक्ति में व्यवस्थित हमारे 46 गुण–सूत्र नापने पर 2 मीटर से अधिक लंबे होंगे । फिर भी, वे नाभिक में समाये रहते हैं जो कि 2.5 से. मी. का लगभग चालीस हजारवां भाग है । नाभिक दो प्रकार की न्युक्लीक अम्ल – राइबो न्युक्लीक अम्ल (आर.एन.ए.) और डिआक्सी न्युक्लीक अम्ल (डी.एन.ए.) से भरा होता है । डी.एन.ए. गुण–सूत्र में केन्द्रित होता है, जबकि आर.एन. ए. न्युक्लिओली में संकेन्द्रित है । ये दोनों नाभिक में होते हैं ।

कोशिका के प्रधान प्रकार्यों में से एक प्रकार्य प्रोटीन का विनिर्माण करना है । मानव शरीर को विभिन्न प्रकार के हजारों प्रोटीनों की आवश्यकता होती है । इन सभी का निर्माण 20 अमीनो अम्लों से होता है । प्रत्येक जीन या (डी.एन.ए. तंतुगुच्छ के सुस्पष्ट खंड) में विशिष्ट प्रोटीन का निर्माण करने हेतु अनुदेश होते हैं । ये अनुदेश न्युक्लिओटाइड के नियमनिष्ठ अनुक्रम में गूढ़–संकेत में होते हैं । जिस प्रकार हम वाक्य में शब्दों का क्रम बदल कर उसका अर्थ बदल सकते हैं, उसी प्रकार जीन डी.एन.ए. के मात्र चार न्युक्लिओटाइड ए, टी, सी, जी का प्रयोग करके प्रोटीन की विस्तृत वर्ण मालाओं का निर्माण कर सकते हैं । मानव गुणसूत्रों (संख्या में 46) के एक सेट में सभी ए, टी, सी और जी को करोड़ों विभिन्न तरीकों से साथ–साथ प्रस्तुत किया जा सकता है । एक आनुवांशिकी विद्, एच. जे. मुलर ने अनुमान लगाया है कि ए, टी, सी. जी को एक साथ प्रस्तुत करने के विविध तरीकों की संख्या 256 में 2.4 अरब शून्य लगाने पर बनने वाली संख्या के बराबर होगी । यह संख्या कल्पना को चौंकाने वाली है ।

नाभिक के भीतर जीन से आगे बढ़ कर एम.आर.एन.ए. विशिष्ट के जमाव के लिये राइबोसोम की खोज में बाहर निकलता है । दूत आर.एन.ए. पर ए.यू.सी और जी का अनुक्रम ए.सी.यू., सी.जी.जी., सी.सी.यू., आदि जैसे तीन वर्णो के शब्दों के समूहों का निर्माण करता है । इन 3 वर्णों के शब्दों को कोडान कहते हैं । दूत आर.एन.ए. (एम.आर.एन.ए.) द्वारा ले जाया गया संदेश, अंतरण आर.एन.ए. (टी.आर.एन.ए.) तक अंतरित हो जाता है। टी.आर.एन.ए. की सहायता से राइबोसोम, कोशिका द्रव्य में संग्रहीत रसायनों से संदेश में इंगित अमीनो अम्लों को एकत्र करने हेतु आगे बढ़ता है । यहां, कोड में दिये गये अनुक्रम में अमीनो अम्ल आपस में जुड़े होते हैं और उस विशेष प्रोटीन का सश्लेषण पूर्ण हो जाता है । प्रत्येक कोशिका स्पीशीज़ के पूर्ण वयस्क का निर्माण करने की सामग्री और जानकारी से परिपूर्ण होती है । अतएव यदि किसी जीव के किसी अंग से कोई जीवित कोशिका उपलब्ध हो तो उस जीव का प्रजनन करना संभव है। कार्नेल विश्वविद्यालय के एफ.सी. स्टेवार्ड द्वारा छठे दशक में यह सिद्ध किया गया था। उसने पोषक घोलों से भरे शीशे के फ्लास्कों में गाजर के अत्यंत छोटे टुकड़े डाल दिये । उसने धीरे–धीरे फ्लास्कों को हिलाया और गाजर के टुकड़ों से निकली मुक्त कोशिकाओं को अलग कर दिया । इन मुक्त कोशिकाओं को स्वयं बढ़ने के लिये छोड़ दिया गया। वे परिपूर्ण गाजर के पौधों में विकसित हो गई । एक अंग्रेज वैज्ञानिक जे.बी. गर्डन ने मेंढक के अंडों से एक अन्य प्रयोग किया। उसने अंडों में न्युक्ली को नष्ट कर दिया । तत्पश्चात् मेंढक के अंडों को बेगची (टैड पोल) के आत्र ऊतकों से निकाली गई न्युक्ली से भर दिया । अंडे दाता टैडपोल की बिलकुल ठीक प्रतिकृति के रूप में विकसित हुए । यह प्रयोग इसी प्रक्रिया द्वारा अपने–आप मानव [illegible] एक पुंजन (क्लोनिंग) की संभावना का रास्ता [illegible] क्लोनिंग या एक पुंजन अलैंगिक प्रजनन है । [illegible] के लिये नर और मादा को एकाकार होने की [illegible] किंतु क्लोनिंग में नर से ली गई कोशिका [illegible] और मादा की कोशिका मादा । इस [illegible] से हो जाता है कि संतान दाता की [illegible]

जीन क्लोनिंग

कोशिका के स्तर पर [illegible] किस प्रकार काम करता है [illegible] की खोज से [illegible] आवश्यक [illegible] इन्फ्लुयेन्जा तथा [illegible]

के वैक्सीन आज बाजार में उपलब्ध है । बेक्टीरिया जैसी कोशिका में किसी दूसरे डी.एन.ए. के छोटे तंतु को प्रविष्ट करा देने पर उस तंतु को कई गुना बढ़ाने की प्रक्रिया जीन क्लोनिंग है । इस प्रक्रिया के अनुसार इन्सुलिन तथा कई प्रकार की अन्य दवाएं बनाने योग्य बैक्टीरिया की सृष्टि करने की क्षमता आज विज्ञान में है । औद्योगिक तथा दवायें बनाने वाली कई संस्थायें इस कारण से विकसित हुई हैं । भ्रूणों में अन्य जीन को क्लोन करके उससे मिश्रित जीनवाले जीव बनाये गये, यह विज्ञान की बहुत बड़ी उपलब्धि है ।

डी.एन.ए की अंगुली छाप

जीनों की पहचान में डी.एन.ए. एक सहायक है, यह जीवों के कूट संकेत की जानकारी हमें देता है । अर्थात् हर एक जीव को अलग पहचानने का आधिकारिक तथा विश्वसनीय उपाय है । एक व्यक्ति में ही असाधारण रूप में दिखाई देनेवाले आनुवांशिक लक्षणों की पहचान के लिए अंगुलिछाप विधा का प्रयोग होता है। दो अलग अलग व्यक्तियों के डी.एन.ए का पार्श्वचित्र एक प्रकार का नहीं होता ।1985 में डा. अलक जफ्री नामक वैज्ञानिक ने इस विधा को विकसित किया । करीब दो वर्षों के बाद ब्रिटेन तथा संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में इसको वैधानिक स्वीकृत मिली ।1988 में डा.वी.के कश्यप (सेंट्रल फोरनसिक प्रयोगशाला, हैदराबाद) ने भारत में सर्वप्रथम कानूनी स्वीकृति के लिए प्रयत्न किया । पितृत्व सिद्ध करने के 1989 तलशेरी (केरल) के एक प्रसिद्ध मुकदमे में यह रीति सफल हुई । मद्रास हाई कोर्ट के एक मुकदमे में इस विधा को अपनाया गया।

राजीव गांधी की हत्या संबंधी मुकदमे में तनु नामक मनुष्य बम को ठीक तरह पहचानने के लिए डी एन ए. की अंगुलिछाप विधा बहुत अधिक काम में आई । आधुनिक अनुसंधान प्रमाणित करते हैं कि हजारों प्रकार के स्पष्ट आनुवांशिकी संकेत एक व्यक्ति के डी.एन ए में गूढ दिखाई देते हैं । इन संकेतों को विधि चिकित्सा वैज्ञानिक आर पी एल एफ के द्वारा कई नमूनों के जीन के टुकड़ों की तुलना करने के लिए इस्तेमाल करते हैं ।

सैद्धान्तिक रूप से डी एन ए अंगुलिछाप विधा सरल जान पड़ने पर भी प्रयोग में बहुत जटिल है । अपराध संबंधी बातों में डी.एन.ए. अंगुलिछाप बहुत ही संवेदनात्मक विधा है । लेकिन शोध कार्य तथा बीमारी के निर्णय में आर पी एल एफ विश्लेषण बहुत ही साधारण तौर पर इस्तेमाल करते हैं । इस चिकित्सा प्रयोगशाला में किये जाने वाले विश्लेषण की कार्य विधि संक्षेप में इस प्रकार है ।(1) प्राप्त किये नमूने से डी एन ए के छोटे-छोटे टुकड़े बनाने के लिए एनजाइम मिलाया जाता है ।(2) इलक्ट्रोफोरोसिस के द्वारा इन टुकड़ों को लंबाई के अनुसार वर्गों में विभक्त किया जाता है ।(3) इलक्ट्रोफोरोसिस के द्वारा प्राप्त टुकड़ों को झिल्ली में स्थानान्तरित किया जाता है । इसे सदर्न ब्लोटिंग कहा जाता है।(4) डी.एन.ए. युक्त झिल्ली को रेडियो एक्टिव विलायक में डुबाया जाता है जिससे यू.एन.टी.आर भागों की पहचान हो जाती है ।(5) अंत में एक एक्स किरण फिल्म से यू.एन.टी.आर. भागों का संबंध स्थापित होता है जिससे वे भाग अच्छी तरह व्यक्त होते हैं।

इस प्रकार प्राप्त एक्स किरण फिल्म को ऑटो रेडियोग्राफ कहते हैं । उसमें समूह रूप में दिखाई पड़नेवाले भागों को डी.एन.ए. छाप कहते हैं । दो नमूनों के यू.एन.टी.आर. की लंबाई एक समान है तो डी.एन.ए. एक ही स्थान पर होते हैं। इन टुकड़ों की तुलना परस्पर की जा सकती है । यू.एन.टी.आर. की लंबाई समान होने पर, वे एक ही व्यक्ति से प्राप्त हैं। अधिकाधिक नमूनों का विश्लेषण आधार पर निर्णय पर पहुंचा जा सकता है।

जीन चिकित्सा

विविध भागों से जिस प्रकार व्यक्तियों की पहचान की जाती है उसी प्रकार बीमारियों के हेतु बननेवाले जीनों के मानचित्र का निर्माण भी संभव है । आनुवांशिक निशान लगानेवाला भाग से ज्ञात त्रुटिपूर्ण जीनों को डी.एन.ए. भागों से चिपके हुए पाये जाते हैं ।आनुवांशिकी इंजीनियरी के जीन चिकित्सा नामक एक शाखा में यह आती है। बीमार के सफेद रक्त कोशिकाओं को शरीर से निकाल कर चिकित्सित जीनों से युक्त कोशिका बीमार के शरीर में प्रविष्ट कराई जाती है । यह तीन घंटों की शल्य क्रिया है । बीमार के शरीर से सफेद कोशिकाओं को अलग कर उनमें सामान्य जीनों को प्रविष्ट कराते है इन कोशिकाओं को प्रयोगशाला में लाखों - करोड़ों की तादाद में बनाया जाता है । अंत में बीमारी से मुक्त कोशिकाओं को बीमार के शरीर में वापस सन्निविष्ट करते हैं । किसी विशेष जीन के अभाववाले बीमारियों में उन नष्ट जीनों का प्रदान करने का सिद्धान्त इस चिकित्सा में मौजूद है । कामकाजी जीनों को मनुष्य शरीरी में स्थानांतरित करने में जीन चिकित्सा प्रणाली लगी हुई है ।

कोशिका के केन्द्र में जीन को प्रविष्ट कर देना, जीन चिकित्सा की प्रथम प्रक्रिया है । प्रकृति के सब से आक्रामक विषाणु का अनुकरण करना ही इस के लिए अपनाया जानेवाला मार्ग है । ऐसे विषाणु जो बीमारी का कारण ही बनते, उन जीनों को दूरकर के आवश्यक जीनों को लगा कर मनुष्य कोशिका में स्थानांतरित करने में 1980 में वैज्ञानिकों ने विषाणु को इस्तेमाल किया । ये विषाणु कोशिका में प्रवेश करने तथा अपने साथ लाये गये आनुवांशिकी गुण को कोशिका के केन्द्र में प्रतिष्ठित करने में यह प्रक्रिया सफल हुई ।

आनुवांशिक इंजीनियरिंग

जैसे-जैसे जीव वैज्ञानिक आनुवांशिक कूट के संबंध में अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करते गये, वैसे-वैसे उन्होंने यह देखने के लिये जांच शुरू की कि क्या जीवों को काम में लाकर कूट को स्थायी रूप से परिवर्तित किया जा सकता है। इस संबंध में सभी प्रयत्नों को सामूहिक रूप से आनुवांशिक इंजीनियरी के रूप में वर्गीकृत किया गया है । आनुवांशिक

इंजीनियरी में जीनों का संलयन, विलोपन, प्रतिलोपन और पक्षांतरण शामिल है इन सभी प्रयत्नों में से सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रयत्न जीन का संकरण है, अर्थात् एक जीव के डी.एन.ए. के खंड को अन्य जीव के डी.एन.ए. के साथ रोपण करना । इस तकनीक में किया गया अनुसंधान संक्षेप में पुनः संयोजी डी.एन.ए. के रूप में जाना जाता है। प्लास्मिड व कुछेक एन्जाइम की खोज के जरिये यह सुगम हो गया ।इस दिशा में किये गये अग्रणी प्रयत्न इतने अधिक सफल हुए कि इस तकनीक का व्यापारिक कार्यों के लिये प्रयोग किया जाने लगा ।

इस तकनीक में सूक्ष्म शल्य-क्रिया शामिल है । इस शल्य क्रिया में यथार्थ मापी ओजारों को कुछेक उन एन्जाइमों द्वारा उपलब्ध किया जाता है जिन्हें पाल वर्ग ने आणविक सेकेल्पक सीवन कहा है । इन एन्जाइमों में से प्रतिबंध-एंजाइम नामक एनजाइम डी.एन.ए. को किसी अपेक्षित विशिष्ट विंदु पर काट कर विजातीय डी.एन.ए. से उसका रोपण कर सकता है । काट कर अलग किये गये जीन में चूल जैसे आकार के चिपचिपे किनारे होने चाहिये, जिससे कि उसकी विजातीय डी. एन.ए. के साथ दृढ़ता से तापानुशीतित किया जा सके। यह क्रिया भी प्रतिबंध एन्जाइम द्वारा की जानी है । इन दशाओं के होते हुए जीवाणु और पशु जैसे भिन्न प्रकार के डी.एन.ए. को पुनः संयोजित करना संभव हो जाता है। डी.एन.ए के खंड का विजातीय डी.एन.ए. के साथ रोपण करने का पहला सफल प्रयत्न स्टेवफोर्ड विश्वविद्यालय के पाल वर्ग द्वारा किया गया। उसने डी.एन.ए. की प्रारंभिक आपूर्ति सुविख्यात प्रयोगशाला जी.व.एस.वी. 40 (कपि विषाणु 40 के लिये संक्षिप्त शब्द) से ली । इसकी आनुवांशिक संरचना वहुत सरल होती है । जिसमें उच्च जीवों की कोशिकाओं में भरे हजारों जीनों की तुलना में कुल मिलाकर लगभग सात जीन होते हैं। जीवाणु में आनुवांशिक पदार्थ का प्रवेश करने के लिये वर्ग ने लामड़ा जीवाणु-भोजी नामक अन्य प्रकार के विषाणु को अपना वाहक (वेक्टर) वनाया, जो जीवाणु का शिकार करता हैं ।

इस संक्रिया में पहला चरण एस.वी. 40 के डी. एन.ए. अणु का टुकड़ा काटना था । यह प्रतिबंध एन्जाइम के प्रयोग से पूरा किया गया । जब इन्जाइम ने तंतुगुच्छित डी.एन.ए. को काटा तो उसने एक तंतुगुच्छ को दोनों छोरों पर वहिर्विष्ट करके छोड़ दिया। ये चिपचिपे छोर थे और इन्हें ऐसे विजातीय डी.एन.ए. में निविष्ट किया जाना था, जो इसी के समान विभाजित किये गये थे और जिसका एक तंतुगुच्छ दोनों छोरों पर पृथक था । ज़ब कटे हुए छोर एक साथ रखे गये तो एकल तंतुगुच्छ जुड़कर दुहरे तंतुगुच्छ हो गये और डी.एन.ए. वलय की दरार वंद हो गई । जब यह कार्य पूर्ण हो गया तो वर्ग ने पहले-पहले रोगाणु के दो स्पेशीज़ लेकर डी.एन.ए. को एकल डी.एन.ए. अणु के साथ जोड़ने की वैज्ञानिक उपलब्धि अर्जित की । इस उपलब्धि के लिये वर्ग को रसायन विज्ञान के लिये वर्ष 1980 का नोवेल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

पुनः संयोजन की प्रक्रिया निम्न प्रकार है — एक ई कोलन विभाजी जीवाणु को अपमार्जक द्वारा तोड़ा जाता है और उसके टुकड़ों को अपकेन्द्रण यंत्र में घुमाया जाता है जिससे कि प्लेस्मिडों को अलग किया जा सके । तव प्लैस्मिड को प्रतिबंध एन्जाइम मे निमज्जित किया जाता है जो प्लैस्मिड को विशिष्ट स्थान पर विभाजित का देता है । उसी एन्जाइम का प्रयोग रोगाणु से डी.एन.ए. के खंड को कतरने के लिये किया जाता है । विजातीय जीन को जीवाणु प्लैस्मिड की दरार में निविष्ट किया जाता है और इस प्रकार पुनः संयोजी अणु का निर्माण हो जाता है । नवीन संकर प्लैस्मिड को तव जीवाणु में डाला जाता है । जीवाणु कोशिका विभाजित हो जाती है और उसके साथ ही प्लैस्मिड भी विभाजित हो कर वहुगुणित हो जाता है ।

पुनः संयोजित डी.एन.ए. तकनीक लाभकारी अनुसंधान के वहुत से रास्ते खोलती हैं। सर्वप्रथम इंटरफेरोन, इन्सुलिन, हार्मोन आदि जैसी चिकित्सीय प्रोटीनों का उत्पादन होता है । इंटरफेरोन मानव शरीर द्वारा निर्मित शक्तिशाली प्रतिविषाणु-कारक एजेन्ट है किन्तु मांग की तुलना में इसकी आपूर्ति वहुत सीमित है । रक्त कोशिकाओं व अन्य मानव ऊतकों से इसका निष्कर्षण मंहगा भी है ।

इंटरफेरोन के एक इंजेक्शन की लागत 150 डालर तक है । फिर भी यदि इसे उत्पन्न करने के लिये जीवाणु की योजना वनाई जा सके (जैसा कि वर्ष 1981 के शुरु में कैशमैन ने किया) तो इंटरफेरोन की मात्रा वढ़ जायेगी और यह सस्ता हो जायेगा। इतना सस्ता कि इसके एक इंजेकशन की अधिकतम लागत एक डालर रह जायेगी । इसका कारण यह है कि विनिर्मात्री इकाई के रूप में जीवाणु अद्वितीय है । यांत्रिक एसेम्वली लाइन चाहे जितनी परिष्कृत हो, उसके साथ प्रतियोगिता कभी नहीं कर सकती । प्रत्येक वीस मिनट में पुनावृत्ति करता हुआ एकल जीवाणु 24 घंटों में करोड़ों जीवाणु उत्पन्न कर सकता है जिससे अटूट अनुक्रम में ये सभी इंटरफेरोन में परिवर्त्तित हो जाते हैं ।

यही वात इंसुलिन वृद्धिकर हार्मोन वैक्सीन आदि के मामले में भी लागू होती है । पहले से ही आनुवांशिक रूप से आविष्कृत जीवाणु का इन्जाइम यूरोगैनैस जैसे दुर्लभ औषधि के आपूर्तिकर्ता के रूप में उदय हो चुका है जिसका उपयोग रक्त थक्के को घुलाने के लिये किया जाता है । इसी प्रकार विटानडौरफिन मस्तिष्क के पीड़ानाशकों में से एक है। वौनेपन का इलाज करने में उपयोग किये जाने वाले मानव वृद्धि हार्मोन, जिनकी आपूर्ति पहले वहुत कम थी, उसका अव अधिक परिमाण में उत्पादन करने के लिये जीवाणु को अनुकूल वना लिया गया है।

इन्सुलिन का मामला जरा भिन्न प्रकार [illegible] इन्सुलिन का निष्कर्षण गाय और सुअर के [illegible] किया जाता था। इसकी आपूर्ति [illegible] यह पता चला कि कुछ लोगों को [illegible] होती है । अव इस [illegible] आविष्कृत जीवा[illegible] हैं जिनसे एन[illegible]

भोजन और पोषण

मानव भोजन के किसी विशेष वर्ग तक सीमित नहीं है । मनुष्य, पोधों और पशुओं दोनों से प्राप्त होने वाले विभिन्न प्रकार के भोजन कर सकता है और करता है । उसके लिये किसी अन्य मामले की तुलना में जीवन का आनंद भोजन की विविधता में है । विभिन्न प्रकार के भोजन की उसकी स्वाभाविक इच्छा उसके इस तथ्य से न्यायसंगत ठहरती है कि कोई भी एकल भोजन, जो हमारे लिये अपेक्षित है, वे सभी पोषक तत्व हमें प्रदान नहीं करता ।

चावल या गेहूं जैसे अनाज से जो मनुष्य जाति का प्रमुख आहार हैं, हमें अपनी पोषक आवश्यकताओं के एक छोटे भाग की ही पूर्ति हो पाती है । हमें अनाज की प्रतिपूर्ति ऐसे अन्य भोजनों से करनी पड़ती है, जिसमें काफी मात्रा में वसा और प्रोटीन हो तथा अल्प मात्रा में विटामिन और खनिज । इसका तात्पर्य यह है कि जितनी बड़ी हमारी आहार तालिका होगी, हमारा स्वास्थ्य उतना ही अच्छा होगा । यदि हम विश्लेषण करें कि हमारे भोजन में कौन–कौन से पोषक तत्व कितने अनुपात में होते हैं तो यह बात और अधिक स्पष्ट हो जाती है ।

भोज्य पदार्थों में पाये जाने वाले पोषक तत्वों को मोटे रूप से (1) कार्बोहाइड्रेट (2) वसा, (3) प्रोटीन, (4) खनिज, (5) विटामिन (6) जल के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। प्रोटीन वसा तथा कार्बोहाइड्रेट 'वृहत् पोषक' कहलाते हैं ।

प्रोटीन, शब्द ग्रीकमूलक 'प्रोटीओज' से बना है जिसका अर्थ 'प्रथम' है । प्रोटीन शरीर में सर्वाधिक बहुउपयोगी तत्व है। यह शरीर की कोशिकाओं का मुख्य पदार्थ है । ये मासपेशियों व अन्य ऊतकों तथा रक्त एन्जाइम जैसे महत्वपूर्ण तरल पदार्थों के महत्वपूर्ण घटक का निर्माण करता है जो भोजन की पाचन क्रिया में सहायक होते हैं । साथ ही, संक्रमण के विरुद्ध शरीर की रक्षा करने वाले प्रतिरक्षी भी प्रकृति में मुख्यतः प्रोटीन ही है।

भारतीय भोजन का प्रोटीन मूल्य

खाद्य पदार्थ	जैविक मूल्य	प्रोटीन–क्षमता अनुपात
चावल	68	2.2
गेहूं	65	1.5
मक्का	59	1.2
चना	68	1.7
लाल चना	57	1.5
मूंगफली	55	1.7
तेल	62	1.8
अंडा	94	3.9
दूध	84	3.1
मांस	74	2.3
मछली	76	3.5

प्रोटीन का पोषक–मूल्य आवश्यक अमीनों अम्ल संयोजन पर निर्भर करता है । अमीनों अम्ल ही ऐसी ईंट हैं जिनसे ऊतक प्रोटीन का निर्माण होता है और बदलाव भी होता है। आहारी प्रोटीनों में सामान्यतः पाये जाने वाले लगभग 20 अमीनो अम्ल हैं । इनमें से 10 अमीनों अम्लों को शरीर द्वारा स्वतः संश्लेषित किया जा सकता है । चाहे यह क्रिया अमीनो अम्लों के बीच पारस्परिक रुपान्तरण से हो या गैर–प्रोटीनों के बीच पारस्परिक रूपान्तरण से हो लेकिन 10 अमीनो अम्लों को इस प्रकार संश्लेषित नहीं किया जा सकता और उनकी आपूर्ति आहार द्वारा ही की जा सकती है । इन्हें आवश्यक अम्ल कहा जाता है वयस्कों को 8 आवश्यक अमीनो अम्लों और अवयस्कों को 9 या 10 की जरूरत पड़ती है ।

प्रोटीन की तरह वसा आहार का आवश्यक अंग है और यह कई प्रकार से शरीर के लिये महत्वपूर्ण है । यह ऊर्जा का संघनित स्रोत है और यह प्रोटीन या कार्बोहाइड्रेट द्वारा प्रदान की जाने वाली प्रति यूनिट ऊर्जा की तुलना में दुगने से अधिक ऊर्जा की आपूर्ति करता है । कुछेक वसा, विशेष रूप से वनस्पति तेल, शरीर को आवश्यक वसायुक्त अम्लों, लीनोलीइक, ऐराकिडानि अम्ल प्रदान करते हैं ।

रुधिर में परिसंचरण करने वाले वसा कई प्रकार के होते हैं – ट्राइग्लिसराइड, फास्फोलिपिड आदि । उपभोग की गई वसा की मात्रा और गुणवत्ता रुधिर में कोलेस्ट्रल के स्तर को प्रभावित करती है । बहु–असतृप्त वसायुक्त अम्लों का उच्च अनुपात रखने वाले मूंगफली के तेल, तिल्ली के तेल या करडी के तेल जैसे कुछेक वसा रक्त में कोलेस्ट्राल के स्तर को बहुत अधिक नहीं बढ़ाते । नारियल का तेल, मक्खन, घी और हाइड्रोजनकृत वनस्पति तेल (वनस्पति घी) जैसी अन्य वसा में उच्च अनुपात में संतृप्त वसायुक्त अम्ल होते हैं और ये कोलेस्ट्राल स्तरों को बहुत अधिक बढ़ा देते है । यह भी पाया गया है कि एक ही बार में अधिक मात्रा में वसा के उपभोग की तुलना में विभिन्न अवसरों पर वसा के कम परिमाण का उपभोग कोलस्ट्रल में कम वृद्धि करता है । कार्बोहाइड्रेट में प्रत्येक प्रकार के स्टार्च व शर्करा शामिल है। अनाज वाले खाद्य पदार्थों में अधिकाधिक रूप में स्टार्च होता है और गन्ने तथा ग्लूकोज़ विशुद्ध हैं । ये शरीर को ऊर्जा देने वाले मुख्य स्रोत हैं । ऊर्जा का सस्ते स्रोत होने के कारण भारतीय आहार में कार्बोहाइड्रेट की मात्रा अधिक होती है । संतुलित आहार का सरल तात्पर्य उस आहार से है, जो हमें शरीर की संवृद्धि और विकास के लिये सभी आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करें। संतुलित आहार अत्यावश्यक हो गया है क्योंकि अधिकांश भारतीय ऐसे भोजन का उपभोग करते हैं, जिनमें प्रोटीन की अपेक्षा कार्बोहाइड्रेट और वसा अधिक मात्रा में होते है । आगे दी गयी तालिकाओं में विभिन्न प्रकार के भोजन की मात्रा दी गई है जिससे कि औसत भारतीय के लिये संतुलित आहार का निर्माण हो जायेगा । भोजन की मात्रा आयु और कार्य के प्रकार के अनुसार भिन्न–भिन्न होगी । वृहत् पोषक कहलाने

विटामिन/खोज वर्ष	प्रमुख शारीरिक कार्य	कमी होने पर प्रभाव
वसा में घुलने वाला विटामिन 'ए' (रेटिनोल) 1913	सामान्य विकास, आंख की कोशिकाओं के सामान्य कार्य और दांत व हड्डियों के विकास के लिये। रात्रिअंधता को भी दूर करता है।	विकास रुक जाता है, रोगों का संक्रमण आसानी से हो जाता है। पाचन असमान्यता बढ़ जाती है, प्रजनन अंगों में दोष व [illegible] में रुकावट हो जाती है।
विटामिन 'डी' (कोलेकाल्सिफेरोल) 1925	आंतो से कैल्शियम और फास्फोरस के शरीर द्वारा ग्रहण करने का संयोजन करता है	हड्डियों और दांतों के निर्माण में कैल्शियम और फास्फोरस की उपयुक्तता के प्रभावित करता है। हड्डियों की अनेक बीमारियां हो जाती हैं।
विटामिन 'ई' (टोकोफिरोल्स) 1936	ऊतक, कोशिकाओं के आवरण, की सुरक्षा और विटामिन ऐ को नष्ट होने से बचाता है। लाल रक्त कणिकाओं को मजबूत करता है।	लाल रक्त कणिकाओं में कमी आ जाती है और यह टूटना शुरु हो जाती हैं।
विटामिन 'के' (फाइटोमिनाडियोन) 1935	प्रोथोम्बिन के निर्माण और रक्त के थक्का बनने की प्रक्रिया के लिए जरूरी	रक्त के थक्का बनने में ज्यादा समय लगता है। रक्तस्राव की संभावना बढ़ जाती है।
जल में घुलने वाले विटामिन विटामिन बी-1 (थाइमिन) 1936	वसा के मेटाबोलिज्म में महत्वपूर्ण सहायता, पाचन नली और तंत्रिका तंत्र के सामान्य कार्य के लिये जरूरी।	भूख की समाप्ति, शर्करा और स्टार्च के पाचन में परेशानी, मानसिक असंतुलन, मांसपेशियों में सामंजस्यता की कमी।
विटामिन बी-2 (राइबोफ्लेविन) 1935	कोशिकीय आक्सीकरण और विशिष्ट इन्जाइमों के निर्माण के लिये जरूरी। मुंह की लार झिल्ली व जबान को नष्ट होने से बचाता है।	सामान्य विकास में बाधा, ग्लासिटीज बीमारी का बड़ा कारण, आंख की बीमारी, या मोतियाबिंद।
विटामिन बी-6 (पायरीडाक्सिन) 1934	अन्य विटामिन बी की तरह कार्य करता है। प्रोटीन, वसा और कार्बोहाइड्रेट को तोड़ता है। ट्रिप्टोफान से नियासिन के निर्माण में उत्प्रेरक का काम करता है।	कमी से शरीर में खुजली, ऐंठन होती है। त्वचा में खुश्की होती है।
विटामिन बी-12 (सियानोकोबालामिन) 1948	लाल रक्त कोशिकाओं के विकास के लिये जरूरी, त्वचा, तंत्रिका ऊतक हड्डी और मांसपेशियों के लिये जरूरी।	घातक एनीमिया, कमजोरी, खाल का फटना, दर्द के साथ फटे हुए होंठ।
विटामिन सी (एस्कार्बिक एसिड) 1919	शरीर के अवयवों को मजबूती देने (दांत, हड्डी, कार्टिलेज आदि) घाव के जल्दी भरने व हड्डी के जुड़ने में तेजी।	संक्रमण में तेजी, दांत की कैविटी का [illegible], मसूड़ों व दांतों से खून का निकलना आदि। घाव का देर से भरना, व स्कर्वी बीमारी।

विटामिन बी में अन्य विटामिन इस प्रकार हैं : नाइकोटिनिक एसिड, पैंटोथिनिक एसिड, [illegible], [illegible], [illegible] एसिड, कोलीन और इनोसिटोल।

[illegible]से प्रोटीन, वसा व कार्बोहाइड्रेट से भिन्न विटामिन और खनिज [illegible] पोषक कहलाते है ।

विटामिनों को मोटे तौर से वसा विलेय और जल विलेय विटामिनों में विभाजित किया जा सकता है । विटामिन ए', 'डी', [illegible] और 'के' वसा विलेय विटामिन है, जबकि विटामिन 'सी' और [illegible]' (विटामिन बी-1, बी-2 व अन्य बी समूह के विटामिनों सहित) जल विलेय विटामिन हैं [illegible] सहकारी है । विटामिन [illegible] के रूप में विशिष्ट प्रोटीनों को [illegible] है [illegible] शरीर में कार्बोहाइड्रेट प्रोटीन और वसा के [illegible] हैं [illegible] प्रकार वे उस तंत्र में घनिष्ट रूप से [illegible] हैं [illegible] अंतिम उत्पाद के रूप में ऊर्जा, कार्बन [illegible]

का मोचन करते है । शरीर में अविसंख्य खनिज हैं, जो विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं । शरीर का 4 प्रतिशत भाग खनिज के कारण है। चूना और फास्फोरस लगभग तीन चौथाई खनिज तत्वों के रूप में हमारे शरीर में होते हैं । पांच अन्य खनिज यथा - पोटेशियम, गंधक, सोडियम, क्लोरीन और मैग्नीशियम का अंश और शेष अन्य खनिजों के रूप में होते हैं । बहुत से तत्व इतनी सूक्ष्म मात्राओं में होते है कि उन्हें सूक्ष्म मात्रिक तत्व या सूक्ष्म पोषक कहा जाता है ।

जल आहार का महत्वपूर्ण घटक है । एक औसत व्यक्ति में 45 लीटर जल (शरीर भार का 70 प्रतिशत) होता है। कोशिकाओं में 30 लीटर जल होता है । तीन लीटर जल रुधिर के प्लाज्मा में होता है । जहां निलंबित कोशिकायें 5 लीटर तक के कुल आयतन में रुधिर का निर्माण करती हैं। शेष 12 लीटर (45-33) कोशिकाओं के समूहों के बीच के स्थान में भरा रहता है। यह ऊतक तरल है जो शरीर की सभी कोशिकाओं को स्नान कराता है ।

उपभोग किये गये भोजन के पाचन और अवशोषण के लिये जल नितांत आवश्यक होता है । यह शरीर में अत्यधिक विलायक और निष्प्रभावक है । यह एक ऐसा पदार्थ है जिसमें शरीर की रासायनिक प्रतिक्रियायें घटित होती हैं । जल सभी कोशिकों और शरीर पदार्थों का वाहक है । यह शरीर के तापक्रम को नियमित करता है । यह शरीर में अत्यधिक शोधन करने वाला साधन है और अश्रु, स्वेद, मूत्र और मल के रूप में अवशिष्ट द्रव्य को बाहर निकालता है । जल पूर्ण पदार्थ शरीर में, विशेष रूप से जोड़ों में, स्नेहक का काम करते हैं । यह समस्त शरीर ऊतकों व तरलों का अंग है ।

अम्ल-रक्तता क्षारमयता निर्जलीकरण, शोक आघात, यूरीमिया और अपच आदि शरीर में लवण व जल की अपर्याप्तता

संतुलित आहार का संघटन

शाकाहारी मात्रा खाद्य पदार्थ (ग्राम)		मांसाहारी (जी)	शाकाहारी कैलोरी	प्रोटीन (जी)	मांसाहारी कैलोरी	प्रोटीन (जी)
अनाज	325	325	1150	29	1150	29
दाल व गिरी	100	50	320	22	160	11
दूध	200 (मिली)	100 (मिली)	235	8	117	4
मूल वाली सब्जियां	150	150	145	2	145	2
अन्य सब्जियां	100	100	50	3	50	3
पत्तीवाली सब्जियां	100	100	–	–	–	–
फल	100	100	80	–	80	–
अंडा	(एक)	50	–	–	85	6
मांस/मछली	–	100	–	–	195	18
वसा	50	50	450	–	450	–
गुड़	30	30	120	–	120	–
योग			2550	64	2552	73

भोजन की कैलोरी मात्रा

भोजन	मात्रा	कैलोरी
सेब	1	70
खूबानी	3	50
बीन्स	1/2 कप	15
ब्रेड (सफेद)	1 स्लाइस	70
फूल गोभी	1 कप	20
उबली पत्ता गोभी	1/2 कप	15
उबले गाजर	1/2 कप	20
सेरियस भूसी	1 आउंस	70
मक्का	1/2 कप	70
ककड़ी-खीरा	1	43
ताजे मशरूम	1/2 कि. ग्रा	125
संतरा	1	65
जमे हुए मटर	1/2 कप	60
नाशपाती	1	100
आलू	1	90
उबले पालक	1/2 कप	20
सब्जियों का रस	1/2 कप	20

के चिकित्सीय लक्षण है । जो तरल पदार्थ हम पीते है, जो ठोस पदार्थ हम खाते हैं उनसे ही मुख्यतया शरीर को जल प्राप्त होता है । वसा व कार्बोहाइड्रेट का शरीर में कार्बन डाइआक्साइड और जल में आक्सीकरण होता है ।

चावल, गहू, ज्वार, रागी, और बाजरा जैसे अन्न भारत में मुख्य भोजन हैं । अन्न कार्बोहाइड्रेट से सपन्न होते हैं । उनमें सामान्यत 6 से 12 प्रतिशत प्रोटीन होती है किन्तु यह प्रोटीन आवश्यक अमीनो अम्ल लाइसीन के मामले मे अपूर्ण होती है। फिर भी, अन्य अन्न की अपेक्षा चावल प्रोटीन लाइसीन से परिपूर्ण होता है ।

अधिकाश अनाज विशेष रूप से चावल खनिज के मामले में अपूर्ण होते हैं । फिर भी रागी विशेष रूप से चने और बाजरा लोह खनिज से सपन्न हैं । अनाज वाले संपूर्ण अन्न विटामिन-बी के महत्वपूर्ण स्रोत हैं, किन्तु धान की कुटाई में चावल की ऊपरी परतों से थायमीन समाप्त हो जाता है । कुटाई किये जाने पर भी उसना चावल अपने थायमीन पदार्थ को नहीं त्यागता । कैरोटीन की कुछ मात्रा रखनेवाली पीली मकई के सिवाय कोई अन्य अनाज विटामिन सी का स्रोत नहीं है ।

दालें या फलिया प्रोटीन के मामले में परिपूर्ण होती हैं । फिर भी दाल-प्रोटीनें आवश्यक अमीनों अम्ल मेथाइओनीन मे अपूर्ण होने के कारण सापेक्ष रूप से निम्न जैविक मूल्य की होती है, लेकिन ये लायसीन में समृद्ध होती हैं । दालें खनिज का समृद्ध स्रोत नहीं हैं, किन्तु ये विटामिन 'बी' में समृद्ध हैं। सूखी दालों में विटामिन 'सी' नहीं होता पर अगर उन्हें अंकुरित कर दिया जाये तो विटामिन 'सी' की पर्याप्त मात्रा उत्पन्न हो जाती है । अधिकांश हरी पत्ती वाली सब्जियां चूने, लौह, कैरोटीन, विटामिन 'सी', राइबोफ्लोकार्बन और फोलिक अम्ल के समृद्ध स्रोत हैं।

मूल और कंद कार्बोहाइड्रेटस से संपन्न होती है किन्तु गाजर जैसे भोजन के प्रोटीन विटामिन ए से परिपूर्ण होते हैं। आलू जैसे भोजन में उल्लेखनीय मात्रा में विटामिन 'सी' होता है जबकि टैपियोका जैसे भोजन में चूना भी होता है ।

अन्य सब्जियां वे हैं, जो पत्तीदार सब्जियों या मूल वाली सब्जियों की श्रेणी में नहीं आतीं । ये सब्जियां भिंडी, ककड़ी, खीरा, टमाटर, करेला, चिंचड़ा, बैगन आदि की तरह प्ररोह हैं। ये विटामिनों और खनिजों के काफी अच्छे स्रोत हैं ।

काष्ठ फल (नट) और तिलहन, वसा (तेल) प्रोटीन और खनिज के अच्छे स्रोत हैं । साथ ही मूंगफली एवं काजू जैसे काष्ठफल विटामिन के अच्छे स्रोत हैं ।

सामान्यत: सभी फल, और विशेषकर आंवला, अमरूद और नीबू विटामिन सी से समृद्ध होते हैं । आम और पपीता जैसे पीले फलों में केरोटीन होता है और खजूर जैसे सूखे फल लौह के स्रोत हैं ।

मछली और समुद्री भोजन प्रोटीन, 'बी' विटामिनों और साथ ही खनिजों विशेष रूप से चूने के समृद्ध स्रोत हैं ।

मांस वाले भोजन, प्रोटीन और बी–विटामिनों, विशेष रूप से विटामिन बी–12 के समृद्ध स्रोत हैं । वे सामान्यत: विटामिन ए के मामले में अपूर्ण होते हैं लेकिन यकृत इसका अपवाद है।

अंडा, विटामिन 'सी' को छोड़कर अन्य सभी पोषकों का समृद्ध स्रोत है । इसकी प्रोटीन उच्च गुणवत्ता वाली होती है।

दुग्ध व दुग्ध–उत्पाद : शिशुओं एवं छोटे बच्चों के लिये दुग्ध आदर्श भोजन है तथा अन्य सभी लोगों के लिये यह एक अच्छा पूरक भोजन है । इसमें विटामिन 'सी' और लौह के अतिरिक्त सभी पोषक तत्व होते हैं ।

मनुष्यों के लिये भोजन ही एक मात्र ऊर्जा का साधन है। इसका तात्पर्य यह है कि हमारी ऊर्जा की आवश्यकता के अनुरूप आहार तालिका में परिवर्तन होना चाहिये । यदि भोजन को ऊर्जा–निर्माण, शरीर निर्माण के लिये पदार्थों की उपलब्धि और शरीर–प्रक्रियाओं के नियमन जैसे कार्यों को पूरा करना है तो भोजन को नियोजित किया जाना चाहिये ।

हमको कौन सा भोजन कितनी मात्रा में ग्रहण करना चाहिये, यह प्रश्न हमारे लिये अपेक्षित ऊर्जा की मात्रा पर निर्भर करता है । भोजन ऊर्जा को कैलोरी नामक ऊष्मा–यूनिटों के रूप में नापा जाता है । वृहत् कैलोरी या किलो कैलोरी (के. कैलोरी) नामक शरीर वैज्ञानिक कैलोरी, एक किलो ग्राम पानी के तापक्रम को एक अंश सेन्टीग्रेड तक बढाने के लिये आवश्यक ऊष्मा की मात्रा है । एक ग्राम प्रोटीन या कार्बोहाइड्रेट 4.0 कैलोरी उत्पन्न करती है । एक ग्राम वसा 9 कैलोरी उत्पन्न करती है, जबकि एल्कोहल की इतनी ही मात्रा 7 कैलोरी उत्पन्न करती है । निम्नलिखित तालिकायें किशोरों और वयस्को में ऊंचाई भार का अनुपात दर्शाती हैं ।

किशोर – ऊंचाई–भार अनुपात

लड़के			लड़कियां	
ऊंचाई (से.मी.)	भार (कि.ग्रा)	आयु (वर्ष)	ऊंचाई (से.मी.)	भार (कि.ग्रा)
112.4	19.2	5 +	112.5	18.6
118.8	21.9	5 +	117.8	20.5
123.2	24.3	7 +	123.2	23.8
127.9	26.1	8 +	127.2	26.0
133.3	29.2	9 +	132.5	29.0
138.0	31.0	10 +	138.2	32.6
142.7	34.0	11 +	145.1	36.3
148.4	37.8	12 +	151.5	42.5
155.0	42.4	13 +	153.8	43.9
162.6	47.3	14 +	154.5	45.0
165.5	51.1	15 +	155.8	47.3
168.9	54.8	16 +	155.8	49.0

वयस्क: ऊंचाई–भार अनुपात

पुरुष भार कि.ग्रा में				स्त्री भार कि.ग्रा. में			
ऊंचाई	आयु			ऊंचाई	आयु		
से.मी.	20	35	50	से.मी.	20	35	40
148	42.7	47.6	50.9	148	38.6	44.0	47.1
153	45.4	50.4	53.5	150	40.3	44.8	47.7
158	48.6	53.5	56.3	153	41.9	46.6	49.5
163	51.1	56.3	59.4	155	42.8	47.7	50.1
168	54.0	60.1	63.7	158	44.9	49.5	52.1
173	58.1	64.0	68.3	160	46.0	50.6	53.0
178	61.9	68.5	72ह्य.4	163	47.3	52.1	54.9
183	66.0	73.3	77.8	165	49.1	54.1	57.3

आविष्कार

वैज्ञानिक आविष्कार एवं अनुसंधान हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इनसे अनेक यंत्रविन्यास तथा शिल्पतथ्य के सृजन के रास्ते खुलते हैं और मानव के जीवन स्तर में सुधार संभव होता है । सन् 1900 और 1950 के बीच हुए लगभग 46 अनुसंधानों की समीक्षा करते हुए ट्रेवर आई विलियम ने 'ए हिस्ट्री आफ टेक्नालाजी' ग्रंथ की रचना की है जिसमें वे कहते हैं कि 'फ्लूरोसेंट लैंप' और काटन पिकर उनके अनुसंधान के बाद के 50 से 80 वर्ष बाद प्रयोग में आ पाये। इसकी तुलना में फ्रेआन प्रशीतक उसके अनुसंधान के एक ही साल के अंदर प्रयोग में आ गया था । खोज और अनुसंधान कभी–कभी अनायास से ही हो जाते हैं पर अधिकतर ये नियमित योजना और परिश्रम का परिणाम होते हैं । रॉनटजन ने एक्स–रे का आविष्कार अनायास ही सन् 1895 में कर डाला जबकि मैडम क्यूरी ने रेडियम के आविष्कार में योजना वद्ध रूप से जी जान

लगा दिया और सन् 1898 में उन्हें सफलता मिली। बीसवीं सदी के अधिकांश आविष्कार सतत प्रयास और प्रयोगों के परिणाम है। हां कुछेक जैसे पेनसिलीन की खोज अनायास ही हो गई थी। अनायास प्राप्त आविष्कार गिने-चुने हैं परंतु साथ ही असाधारण प्रतिभा वाले वैज्ञानिक ही इस अनायास प्राप्त वैज्ञानिक उपलब्धि को एक नए आविष्कार का रूप दे सकता है। हो सकता है किसी सर्व सामान्य व्यक्ति के सामने भी वही परिणाम आया हो और उसने उसे यों ही छोड़ दिया हो। इसका एक स्पष्ट उदाहरण आर्कमिडीज़ का सिद्धांत है। हजारों व्यक्तियों ने यह देखा होगा कि जब पानी से लबालब भरे टब में नहाने के लिए उतरते है तो कुछ पानी बाहर निकल जाता है। इस पर किसी का ध्यान नही गया। परन्तु आर्कमिडीज़ को इस क्रिया के पीछे कोई सिद्धांत दिखाई दिया। कई आविष्कार तो युद्ध की अनिवार्य आवश्यकता के कारण हुए। जर्मनी ने इंग्लैंड को तहस-नहस करने के लिए राकेट विज्ञान और प्रक्षेपास्त्रों का आविष्कार किया। अमरीका ने जापान को कुचलने के लिए अणुबम का आविष्कार किया। मित्र राष्ट्रों ने आत्म रक्षा के लिए रडार और सोनार का आविष्कार किया।

ये सभी आविष्कार शांति के दिनों में जीवोपयोगी सिद्ध हुए। राकेट विज्ञान और प्रक्षेपास्त्रों ने अंतरिक्ष में खोज की राह प्रशस्त की और मनुष्य चांद पर पहुंच सका। अणुशक्ति का अब कई अच्छे कामों में प्रयोग हो रहा है। रडार और सोनार भी कई महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। उदाहरण के लिए सोनार से व्यावसायिक मत्स्य-ग्रहण अधिक सुरक्षित तथा उत्पादनकारी हो गया है।

आविष्कार	वर्ष	आविष्कारक	देश
आटोमेटिक राइफिल	1918	जान ब्राउनिंग	सं. रा. अमरीका
इलेक्ट्रानिक कम्प्यूटर	1824	डा. एलन एम टूरिंग	ब्रिटेन
इलेक्ट्रिक इस्तरी	1882	एच. डब्लयू सीली	अमरीका
इलेक्ट्रिक ब्लैंकट	1883	वियना प्रदर्शनी में प्रदर्शित	
इस्पात का उत्पादन	1855	हेनरी बेसेमर	ब्रिटेन
एक्स-रे	1895	विलहेल्म के.रॉनजन	जर्मनी
एटम बम	1945	जे राबर्ट ओपेनहीमर	सं. रा. अमरीका
कताई फ्रेम	1769	सर रिचर्ड आर्कराइट	ब्रिटेन
कताई मशीन	1779	सामुएल क्रांपटन	ब्रिटेन
कताई जेनी	1764	जेम्स हारग्रीव्स	ब्रिटेन
कलाई की घड़ी	1462	बार्थलोम्यू मेनफ्रेडी	इटली
कांच (रंगीन)	ल. 1080	आगसबर्ग	जर्मनी
कांच का सामान	ल. 1500 ई.पू.		मिस्त्र व मेसपटोमिया
कागज	105 ई.पू.		चीन
कार (वाष्प)	ल. 1769	निकोलस कुगनाट	फ्रांस
कार (पेट्रोल)	1888	कार्ल बेन्ज़	जर्मनी
कार्पेट स्वीपर	1876	मेलविल आर. बिसेल	अमरीका
कार्बोरेटर	1876	गाटलीब डेमलर	जर्मनी
कालमापी (क्रोनोमीटर)	1735	जान हेरीसन	ब्रिटेन
गगनचुंबी भवन	1882	डब्ल्यू. ले बैरन जेनी	अमरीका
गैल्वनोमीटर	1834	आंद्रे मेरी एम्पीयर	फ्रांस
गैस लाइटिंग	1792	विलियम मुरडाक	ब्रिटेन
ग्रामोफोन	1878	थामस अलवा एडीसन	अमरीका
ग्लाइडर	1853	सर जार्ज केयली	ब्रिटेन
घड़ी (यांत्रिक)	1725	आई-सिंग व लियांग लिंग-सैन	चीन
घड़ी (पेंडुलम)	1656	क्रिश्चियन हाइगन्स	नीदरलैंड्स
चक्र	ल 3300 ई.पू.	सुमेरियन सभ्यता	
चर्मपत्र (पार्चमेंट)	1797	ए.जी. गार्नरिन	फ्रांस
चश्मा (उत्तल)	1289		वेनिस, इटली
चाक (पाट्र्स व्हील)	ल. 6500 ई पू.		एशिया माइनर
जहाज (समुद्री)	ल. 7250 इ पू.	यूनानी जहाज	
जहाज (वाष्प)	1775	जे.सी. पेरियर	फ्रांस
जहाज (टरबाइन)	1894	मान. सर. सी. पारसन्स	ब्रिटेन
गाइरो दिग्सूचक	1911	एलमर ए. स्पेरी	अमरीका
ज़िप	1891	डब्ल्यू एल. जुडसन	अमरीका
जेट इंजन	1937	सर फ्रैंक व्हिटल	ब्रिटेन
जोड़यंत्र	1623	विल्हेल्म स्किकार्ड	जर्मनी
टाइपराइटर	1808	पेलग्रिन टैरी	इटली
टेरिलिन	1941	जे. आर. विनफील्ड, जे. टी. डिक्सन	ब्रिटेन
टेलीफोन (अपूर्ण)	1849	अन्तोनियो म्यूची	इटली
टेलीफोन (पूर्ण)	1876	एलेक्जैंडर ग्राहम बेल	अमरीका
टेलिविजन (यांत्रिक)	1926	जान लोगी बेयर्ड	ब्रिटेन
टेलिविजन(इलेक्ट्रानिक)	1927	पी. टी. फांसवर्थ	अमरीका

टैंक	1914	सर अर्नेस्ट स्विंगटन	ब्रिटेन
ट्रांजिस्टर	1948	वार्डीन, शाक्ली व ब्रैटाइन	अमरीका
ट्रांसफार्मर	1831	माइकेल फैरेडे	ब्रिटेन
डाइनमो	1832	हाइपोलाइट पिक्सी	फ्रांस
डिस्क ब्रेक	1902	डा. एफ. लेंचेस्टर	ब्रिटेन
डीजल इंजन	1895	रुडाल्फ डीजल	जर्मनी
तड़ित् चालक	1752	बेंजमिन फ्रेंकलिन	अमरीका
तांबे का काम	ल. 4500 ई.पू.	(प्राचीन प्रगलन स्थान)	
तार संचार	1787	एम. लमान	फ्रास
तार संचार कोड	1837	सामुएल एफ. वी. मोर्स	अमरीका
थर्मामीटर	1593	गेलीलियो गलीली	इटली
दूरबीन	1608	हैन्स लिपटशे	नीदरलैंडस
द्विफोकसी लेन्स	1780	बेंजामिन फ्रेंकलिन	अमरीका
धुलाई की मशीन (बिजली)	1907	हर्लो मशीन कंपनी	अमरीका
नियान लैंप	1910	जार्जस क्लाड	फ्रांस
नाइलान	1937	डा. वी. एच. करोथर्स	अमरीका
न्यूट्रान बम	1958	सैमुएल कोहेन	सं.रा. अमरीका
पनडुब्बी	1776	डी. बशनेल	अमरीका
पवन चक्की	ल. 3300 ई.पू.	सुमेरियन सभ्यता	
पावर लूम	1785	ई. कार्टराइट	ब्रिटेन
पास्चेरीकरण	1867	लुई पास्चर	फ्रांस
पार्किंग मीटर	1935	कार्लटन सी मैगी	अमरीका
पिरामिड	ल. 2685 ई.पू.		मिस्र
पैराशूट (हवाई छतरी)	1797	ए. जी. गार्नरिन	फ्रांस
पैरालेल कंप्यूटिंग	1979	सर्मर क्रे व डेविड जेलर्नेट्स	सं. रा. अमरीका
पोर्सलेन	851	सबसे पहले चीन में प्रचलित था	
प्रिंटिंग प्रेस	1455	जोहान गुटेन बर्ग	जर्मनी
प्रिंटिंग रोटरी	1846	रिचर्ड हो	सं. रा. अमरीका
प्रिंटिंग (वेब-फैड रोटरी)	1865	विलयम बुलक	सं. रा. अमरीका
प्रोपेलर (जहाज)	1837	फ्रैंसिस स्मिथ	ब्रिटेन
फाउंटेन पेन	1884	लेविस ई. वाटरमैन	अमरीका
फिल्म (मूक चलचित्र)	1885	लुई प्रिंस	फ्रांस
फिल्म (बोलपट)	1922	जे. एंगल, जे. मुसोली व एच. वागट	जर्मनी
फिल्म (संगीत ध्वनियुक्त)	1923	डा. ली. दे, फारस्ट	अमरीका
फोटोग्राफी (धातु पर)	1826	जे. एन. नीप्स	फ्रांस
फोटोग्राफी (कागज़ पर)	1835	डब्लयू एच फाक्स टालबोट	ब्रिटेन
" (फिल्म पर)	1888	जान कारबट	अमरीका
बनसन बर्नर	1855	आर. विल्हेल्म वान बनसन	जर्मनी
बर्गलर अलार्म	1858	एडीवन टी. होल्मस	अमरीका
बिजली का लैंप	1879	थामस आलवा एडीसन	अमरीका
बिजली की मोटर (डी.सी)	1873	जेनावे ग्रामे	बेलजियम
" (ए. सी)	1888	निकोला टेसला	अमरीका
बेकलाइट	1907	लियो एच. बैंकलैंड	बेलजियम
बेरोमीटर	1644	इवांजलिस्टा टारिसेली	इटली
बैलून (गुब्बारा)	1783	जेकस व जोसफ़ मांटगोल्फर	बेलजियम
भाप का इंजन	1698	थामस सेवरी	ब्रिटेन
भाप का इंजन (पिस्टन)	1712	थामस न्युकामेन	ब्रिटेन
" (कंडेन्सर)	1765	जेम्स वाट	ब्रिटेन
मशीनगन	1718	जेम्स पकल	ब्रिटेन
माइक्रोप्रोसेसर	1971	राबर्ट नोयस व गार्डन मूर	अमरीका
माइक्रोफोन	1876	एलेक्जेंडर ग्रहामबेल	अमरीका
मानचित्र	ल. 3800 ई. पू.	सुमेरिया	
मारगराइन (कृत्रिम मक्खन)	1869	हिपालाइट एम. मूरिस	फ्रांस
मुद्रणयंत्र	ल. 1455	जोहान गुटनवर्ग	जर्मनी
(रोटरी)	1846	रिचर्ड हो	अमरीका
मोटर साइकिल	1885	जी डैमलर कान्सटाट के	जर्मनी
रबड़ (लेटक्स फोम)	1928	डनलब रबर कम्पनी	ब्रिटेन
" (टायर)	1846	थामस हानकाक	ब्रिटेन
" (वल्कनीकृत)	1841	चार्ल्स गुडइयर	अमरीका

(जलसह)	1823	चार्ल्स मकिनटोश	ब्रिटे
रिकार्ड (लांगप्लेइंग)	1948	डा. पीटर गोल्डमार्क	अमरीक
रुबिक क्यूब	1975	प्रो. एर्नो रुबिक	हंग
रेज़र (बिजली का)	1931	कर्नल जेकब स्किक	अमरीक
" (सेफ्टी)	1895	किंग सी गिलेट	अमरीक
रडार	1922	ए. एच. टेयलर व लियो सी. यंग	अमरीक
रेडियो तार संचार	1864	डा. महलोन लूमिस	अमरीक
" (पार अटलांटिक)	1901	जी. मार्कोनी	इटली
रेफ्रीजिरेटर	1850	जेम्स हेरीसन व एलेक्जेंडर केटलीन	अमरीक
रेयान	1883	सर जोसफ स्वेन	ब्रिटे
रेशम उत्पादन	ल. 50. ई.पू.		चीन
लाउड स्पीकर	1900	होरेस शार्ट	ब्रिटेन
लांड्रेट	1934	जे. एफ. कंट्रेल	अमरीका
लिफ्ट (यांत्रिक)	1852	एलिशा जी ओटिस	अमरीका
लिनोलियम	1860	फ्रेडरिक वालटन	ब्रिटेन
लेखन	3500 ई.पू.	सुमेरियन सभ्यता	
लेसर	1960	डा. चार्ल्स एच. टोन्स	अमरीका
लोकोमोटिव	1804	रिचर्ड ट्रवथिक	ब्रिटेन
लोहे का काम (कार्बराइज्ड)	ल. 1200 ई.पू.	सैपरस एण्ट नोरत पालस्तीन	
वायुयान	1903	ओरिविल व विलवर राइट	अमरीका
वायुयान (अदृढ़)	1852	हेनरी जिफार्ड	फ्रांस
" (दृढ)	1900	जी. एफ. वान जेपेलिन	जर्मनी
विद्युत चुंबक	1824	विलियम स्टर्जन	ब्रिटेन
वेल्डर (बिजली)	1877	एलीशा थामसन	अमरीका
शौचघर	1589	जे. हैरिंगटन द्वारा निर्मित	ब्रिटेन
साइकिल	1839-40	किर्क पैट्रिक मेकमिलन	ब्रिटेन
साइकिल टायर (वायवीय)	1888	जान वायड डनलप	ब्रिटेन
सिनेमा	1895	निकोलस व जीन लुमियरी	फ्रांस
सिलाई की मशीन	1829	बर्थलमी थिमोनियर	फ्रांस
सीमेंट (पोर्ट लैंड)	1824	जोसफ आस्पडिन	ब्रिटेन
सेफ्टीपिन	1849	वाल्टर हंट	अमरीका
सूक्ष्मदर्शी (माइक्रोस्कोप)	1590	ज़ेड जैनसन	नीदरलैंड
सेफ्टी मैचिस	1826	जानवाकर	ब्रिटेन
सेलोफेन	1908	डा. जे. बैंडनबेर्गर	स्विट्जरलैंड
सेलूलाइड	1861	एलेक्जेंडर पार्क्स	ब्रिटेन
सेल्फ स्टार्टर	1911	चार्ल्स एफ केटरिंग	अमरीका
स्राव फीता	1930	रिचर्ड ड्रू	अमरीका
स्टील उत्पादन	1855	हेनरी बेसेमर	ब्रिटेन
स्टेनलेस स्टील	1913	हैरी ब्रेयरले	ब्रिटेन
स्लाइड रुल	1621	विलियम आफट्रेड	ब्रिटेन
हाइड्रोजन बम	1952	एडवर्ड टेलर	सं. रा. अमरीका
हेलीकाप्टर	1924	एटीन ओहमिशेन	फ्रांस
होवर क्राफ्ट	1955	सी. एस. काकरील	ब्रिटेन
हृदय कृत्रिम	1957	विलयम कोल्फ	नीदरलैंड

आधार: गिनिस बुक आफ आन्सर्स

कृत्रिम नाभिकीय विस्फोट

परमाणु हथियार अपनी मारक क्षमता को विखंडन प्रक्रिया से प्राप्त करते हैं। इस प्रक्रिया में जब भारी न्यूक्लियस का विखंडन (फिशन) या जब हल्के न्यूक्लियर को जोड़ा जाता है (फ्यूजन) तब भारी मात्रा में ऊर्जा का विसर्जन होता है। विखण्डन प्रारंभ के लिए, भारी तत्व के न्यूक्लियस पर न्यूट्रान्स की बमबारी की जाती है। न्यूक्लियस दो तत्वों में विखंडित होता है, ऊर्जा के साथ दो या अधिक न्यूट्रान का विमोचन करता है। प्रत्येक न्यूट्रान में पर्याप्त मात्रा में ऊर्जा होती है जो दूसरे भारी न्यूक्लियस में फैलता है और यह प्रक्रिया लगातार होती रहती है। यह क्रमिक प्रतिक्रिया का आधार है जो नाभिकीय हथियारों को संभव बनाती है। यह इतनी तीव्र गति से संचालित होती है कि प्रत्येक न्यूट्रान एक सेकन्ड के दस बिलियन भाग में दुगुन हो जाते हैं और पूरी प्रतिक्रिया एक सेकेण्ड के कुछ मिलियन भाग में ही संपन्न हो जाती है। ऊर्जा के उत्पादन का परिमाण

आरंभ की प्रतिक्रिया से मिलियन समय से भी अधिक तेज होता है। उदाहरणार्थ 0.45 किलोग्राम यूरेनियम के विखंडन से छोड़ी गई ऊर्जा 3000 टन कोयले के जलने या 9000 टन टी.एन.टी के विस्फोट से प्राप्त ऊर्जा के बराबर होती है।

समस्थानिक यूरेनियम–यू–235 ऐसा तत्व है जो न्यूक्लियर की क्रमिक प्रतिक्रिया को रोकने में सक्षम है, जबकि यह मात्र 0.7 प्रतिशत प्राकृतिक यूरेनियम का निर्माण करती है। एक अन्य विखंडित तत्व प्लटोनियम 239, जिसका निर्माण अतिरिक्त न्यूट्रान से होता है, जो यू 235 में पाया जाता है, यह यूरेनियम 238 से अधिक स्थायी होती है। यूरेनियम 235 और प्लटोनियम–239 दोनों का उपयोग विखंडन या परमाणु बम के उत्पादन के लिए किया जाता है।

विस्फोटक विखण्डन प्रतिक्रिया का परमाणु बमों के उपयोग में कम से कम नाजुक द्रव्यमान की आवश्यकता होती है। विखंडित वस्तु की कम से कम मात्रा जब एक बार प्रेरित कर दी गई तो स्वामार्पक, क्रमिक लगातार प्रतिक्रिया से संचालित होगी। यदि एक अविस्फोटित आटमिक बम नाजुक द्रव्यमान का प्रवाह एक जगह पर आरंभ कर देते हैं तो आकस्मिक रूप से न्यूट्रान की क्रमिक प्रतिक्रिया आरंभ हो जाती है और न्यूक्लियर विस्फोट का कारण बनती है। इसीलिए नाजुक द्रव्यमान को व्यावहारिक रूप से ऊपरी सीमा पर रखा जाता है। उसकी मात्रा आरंभिक बम के अनुरूप रखी जाती है। आकस्मिक विस्फोट को रोकने के लिए, परमाणु बम में दो अलग भाग होते है और प्रत्येक में उपनाजुक द्रव्यमान रहता है। जब बम का विस्फोट नहीं करना है, इन दोनों भागों को संयोजित कर दिया जाता है और केन्द्रीय विस्फोट को प्रतिबंधित कर दिया जाता है, इसके चारों तरफ एक अति नाजुक द्रव्यमान उत्पन्न कराया जाता है। यह द्रव्यमान काफी मात्रा में और गाढ़ा होता है। यह न्यूट्रान के फैलने के अवसर को कम करता है।

संलयन परमाणु बम हथियार जैसे कि हाइड्रोजन या एच–बम में हल्के केन्द्रक को उच्च तापक्रम पर संलयित होने के लिए बाध्य किया जाता है, फलस्वरूप यह भारी केन्द्रक बन जाता है। यह इलेक्ट्रान सहित भारी ऊर्जा का विमोचन करता है। इसे थर्मोन्यूक्लियर रिएक्शन कहा जाता है। इसमें उसी प्रक्रिया को अपनाया जाता है जिस प्रकार सूर्य या दूसरे तारे गर्मी और प्रकाश का उत्पादन करते है। दो नामिकों के आपस में मिलने से प्रतिक्रिया आरंभ हो जाती है। एक आरंभिक विस्फोटक बम साधारणत: ही निशाने पर लगाया जाता है। हाइड्रोजन और ड्यूटेरियम का उपयोग किया जाता है। संधि संलयन प्रतिक्रिया विखण्डन प्रतिक्रिया की तुलना में एक यूनिट में 4 गुना अधिक ऊर्जा का उत्पादन करती है। इसके अतिरिक्त, संधि संलयन बमों की जगह हजारों गुना अधिक ऊर्जा का निर्माण करती है। इनके [illegible] की क्षमता को बढ़ाने के लिए सामान्य यूरेनियम के साथ थर्मोन्यूक्लियर बम भी लगा दिये जाते हैं। जब बमवर्षा की जाती है तब यूरेनियम विखण्डित हो जाता है जिससे उच्च उर्जा वाले न्यूट्रान, संधि संलय प्रतिक्रिया प्रारंभ कर देते है। जो उच्च [illegible] विस्फोट का कारण बनता है।

कंप्यूटर अनुकरणीय नामिकीय विस्फोट क्या है? नामिकीय विस्फोट का अनुकरण, कंप्यूटर अनुकरणीय कोई प्राकृतिक घटना, [illegible] के आदर्श पर आधारित है, लेकिन अब कुछ वास्तविक तत्वों पर आधारित है क्योंकि इस समय निश्चित कंप्यूटर जैसे स्रोत उपलब्ध है। एक नामिकीय विस्फोट प्रतिक्रिया की कल्पना कीजिए जहां पर न्यूट्रानों के विस्फोटों को नियन्त्रित किया जाता है। यह सर्वविदित बात है। इसमें अवफोटन और ऊर्जा नियन्त्रण की समस्याओं की कुछ भौमिक अनुरूपता होती है, लेकिन वे भिन्न होती हैं। इन्हें अति ऊर्जा में उत्पादित किया जाता है। ये संघर्ष को दबा लेती हैं और ऊर्जा की सघनता को स्वीकार कर लेती है। उन्हें एटम से संचालित करके विखण्डित तत्वों में उत्पादित किया जाता है।

अनुकरण का आरंभ 'सतता के समीकरण' से होता है जिसमें दी गई मात्रा के न्यूट्रान की संख्याओं में परिवर्तन की गति, परिमाण में उत्पादन की गति में प्राप्त न्यूट्रान से ऋणात्मक होती है और इसकी सीमाएं बढ़ती है। अधिकांश मामलों में प्रायोगिक आंकडे के आकलन का आरंभ चाहते हैं। समयनिष्ठ समीकरण, थर्मलाइजेशन से संबन्धित होते हैं। विस्फोट से उत्पादित न्यूट्रान और उसके उत्सर्जन व्यवस्थित हो जाते हैं। परमाणु अस्त्रों में स्थिति के अनुसार सुधार लाया जा सकता है। जैसा कि ज्ञात है कि विघटन के लिये क्रास सेक्शन अलग–अलग हैं, कम क्षमता के पदार्थ, परावर्तक और स्त्रोतों का प्रयोग किया जा सकता है।

कंप्यूटर का नमूना भी इसी सिद्धान्त पर आधारित है। इसकी दशा का प्रदर्शन, अनुकरणीय वितरण, गति में वृद्धि, विस्फोटन से अलग, 2 पक्षीय या 3 पक्षीय यथार्थ दृष्टि और कंप्यूटर संचालन की नकल, फोटोजनित स्थान इस प्रक्रिया को बहुरूपता प्रदान करेगी। इन सिद्धान्तों का उपयोग करके इसे विविधता प्रदान की जाएगी। अन्य प्रक्रियाएं जैसे थर्मोन्यूक्लियर प्रतिक्रिया भी इसमे जोड़ी जाएगी, जो न्यूक्लियर को संसाधित करेगी। इसकी भी कल्पना की गई है या जान लिया गया है।

ऐसे ही अनुकरण की कल्पना दबाव, तापक्रम एवं दृष्टि के लिए भी कंप्यूटर केसे जटिल आकलनों को सरल करके उसके अनुकरण करता है। प्रथम स्तर पर, भौतिक सिद्धातों के गणितीय विश्लेषण, नमूने के संचालन से समीकरण के रूप में व्यक्त होता था। इसमें प्राय: जटिलता होती है क्योंकि इसमें अनेक पैरामीटर्स का सहारा लेना पड़ता था।। इसके बाद कंप्यूटर पर्यावरण रूप से कार्यक्रम को, समीकरण को, और उत्पादित संख्यीय परिणामों को सरल करने लगा अब ये देखने योग्य है।

नामिकीय अनुकरण में, वास्तविक चीजों में इसकी तुलना यह दिखाएगी कि प्राथमिक कल्पनाएं तार्किक हैं। क्या अनुकरणीय नामिकीय विस्फोट पैरामीटर के परिवर्तन का वास्तविक चित्र देगा? विषम परिस्थितियों जैसे अत्यधिक दबाव, तापक्रम आदि परिस्थितियों में उसके क्रमिक अध्ययन सुगम होंगे। इसका ग्राफिकल संचालन उच्च पूर्णता की दशा तक पहुंच गया है। इसमें समस्या के पुन: सरलीकरण और स्मृति की भी क्षमता है। अनुकरणीय दशाओं में नुकसान और तापक्रम से बचाते हुए सही समय पर विस्फोट का संकेत देते हैं।

अनुकरण का सिद्धान्त कितना विश्वसनीय है? इस प्रकार के प्रयोगों का परिणाम संतोषजनक है। उदाहरण के लिये बोइंग जेट विमान की वर्तमान नमूने की आकृति पूरी तरह से कंप्यूटर अनुकरण पर आधारित है और इसमें किसी मशीनी सहयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती है। आयुध के आकार का विस्तार और आधुनिकीकरण तुरन्त आवश्यक है।

मूलतत्व

मूलतत्व ऐसे पदार्थ को कहते हैं जिसे सामान्य रासायनिक पद्धतियों से तोड़ने पर अन्य सरल पदार्थ नहीं मिल सकता मूलतत्व की यही परिभाषा है। मूलतत्व वे मूल-पदार्थ हैं जिनके रासायनिक मिश्रणों से अन्य वस्तुओं का निर्माण होता है। प्रकृति में प्राप्त मूलतत्व 92 हैं – सबसे हल्के मूलतत्व हाइड्रोजन (सं.1) से लेकर सबसे भारी मूलतत्व यूरेनियम (सं.92) तक। प्लूटोनियम नामक मूलतत्व (सं.94) यूरेनियम और थोरियम के अयस्कों में सूक्ष्म मात्रा मिलता है।

यूरेनियम से भारी जितने मूलतत्व हैं वे मानव-निर्मित हैं और इन्हें परायूरेनियमिकी कहते हैं । इनका निर्माण न्यूक्लीयर रिएक्टरो या त्वरकों द्वारा होता है अथवा ये हाइड्रोजन बम विस्फोटों के मलवों से अलग किये जाते है । इनमें प्रथम नेप्टूनियम (मूलतत्व 93) हैं जिसकी खोज 1940 में हुई । अधुनातन मूलतत्व (स. 109) है जो 1982 में दर्मस्टाट (प. जर्मनी) में हेविलान शोध संस्थान (जी.एस. आई) द्वारा खोज निकाला गया सं. 103। (1961 तक के मूलतत्व निम्नलिखित सारणी में सम्मिलित हैं।)

मानव-निर्मित मूलतत्व शीघ्र ही अपक्षय को प्राप्त होते हैं। मसलन, मूलतत्व 109 एक सेकंड के पांच हजारवें भाग के समय तक टिका रहता है, फिर वह मूलतत्व 107 वन जाता है । थोड़े ही समय बाद वह अल्फा कण का उत्सर्जन करता है और वह मूल तत्व 105 बन जाता है । इसके बाद नाभिक का एक प्रोटान न्यूट्रोन में बदल जाता है । इस प्रक्रिया मे वह एक धन इलेक्ट्रान (पासिट्रान) का उत्सर्जन करता है और मूलतत्व 104 बन जाता है । यह मूलतत्व दो भागों में टूट जाता हैं, इसके साथ अपक्षयण की प्रक्रिया रुक जाती है ।

मूल तत्वों की संख्या उनके परमाणु-नाभिकों के प्रोटोनों के आधार पर निर्धारित की जाती है । परन्तु परमाणु नाभिक में उपस्थित न्यूट्रानों के कारण परमाणुओं के द्रव्यमान में वृद्धि होती है जिससे उसके टिकाऊपन तथा रेडियो-धर्मिता पर प्रभाव पड़ता है । समान मूलतत्वों के परमाणुओं में विभिन्न संख्याओं के न्युट्रान हो सकते हैं । ये उनके आइसोटोप कहलाते हैं । ज्ञात परमाणुओं के लिए लगभग 8000 आइसोटोप हो सकते हैं । परन्तु वास्तव में अब तक 2000 ही ज्ञात हैं ।

मुलतत्व	प्रतीक	परमाणु	परमाणु संख्या	आविष्कारक भार	वर्ष
अर्बियम	ई आर	68	167.3	सी. मोसेंडर	1839
आइन्स्टेनियम	ई	99	254.0	ए. खियार्सो एवं अन्य	1953
आक्सीजन	ओ	8	16.0	जे. प्रीस्टले	1774
आयरन (लोहा)	एफ ई	26	55.9		प्रागैतिहासिक
आयोडीन	आई	53	126.9	बी. कोर्टोयस	1811
आर्गान	ए	18	39.9	डब्लयू. रेमसे व जे. रेली	1894
आर्सेनिक	ए एस	33	74.9	ए. मैग्नस	(?) 1250
आस्मियम	ओ एस	76	190.2	एस. टेन्नंट	1803
ईडियम	आई एन	49	114.8	एफ. रीच व टी. रिचटर	1863
इटर्बियम	वाई बी	70*	173.0	सी. मैरिग्नाक	1878
इरिडियम	आई आर	77	192.2	एस. टेन्नट	1803
इट्रियम	वाई	39	88.9	जे. गैवालिन	1794
एक्टीनियम	ए सी	89	227.0	ए. डवायर्न	1899
एन्टीमनि	एस बी	51	121.8	बी. वलंटाइन	1604
एमेरिशियम	ए एम	95	243.0	जी. सी. वार्ड व अन्य	1944
एल्युमिनियम	ए एल	13	27.0	एफ. वोलर	1827
एस्टेटीन	ए टी	85	210.0	ई. सेग्रे व अन्य	1940
कापर (तांबा)	सी यू	29	63.5		प्रागैतिहासिक
कार्बन	सी	6	12.0		प्रागैतिहासिक
केडमियम	सी डी	48	112.4	स्ट्रामेयर	1817
कैलीफोर्नियम	सी एफ	98	251.0	एस. थामसन व अन्य	1950
केल्शियम	सी ए	20	40.1	एच डेवी	1808
कोबाल्ट	सी ओ	27	58.9	जी. ब्रांट	ल. 1735
क्यूरियम	सी एम	96	248.0	जी. सीवार्ग व अन्य	1944
क्रिप्टान	के आर	36	83.8	डब्ल्यू रामसे और एम ट्रेवर्स	1898
क्रोमियम	सी आर	24	52.0	एन वॉ क्यूलिन	1797
क्लोरीन	सी एल	17	35.5	के. शील	1774
गैडोलिनियम	जी डी	64*	157.3	जे. सी. द मरिग्नाक	1880
गैलियम	जी ए	31	69.7	एल. द बाइसबाड्रान	1875
गोल्ड	ए यू	79	197.0		प्रागैतिहासिक

र्कोनियम	ज़ेड आर	40	91.2	एम. क्लाप्रोथ	1789
र्गोनियम	जी ई	32	72.6	जी. विंडलर	1886
क (जस्ता)	जेड एन	30	65.4		प्रागैतिहासिक
नोन	एक्स ई	54	131.3	डब्ल्यू रामसे और एम ट्रैवर्स	1898
टन (वालफ्राम)	डब्ल्यू	74	183.9	जी एंड एफ एयूयर	1783
बैअम	टी बी	65*	158.9	सी. मोसेंडर	1843
इटेनियम	टी आई	22	47.9	डब्ल्यू जार्ज	1791
न	एस एन	50	118.7		प्रागैतिहासिक
क्नीशियम	टी सी	43	99.0	ई. सेग्रे व सी पेरीर	1937
न्टेलम	टी ए	73	181.0	ए. इकबर्ग	1802
ल्युरियम	टी इ	52	127.6	एम. वान रिचन्स्टीन	1782
डस्प्रोसियम	डी वाई	66*	162.5	एल. द. बाइसबाड्रान	1886
थुलियम	टी एम	69*	168.9	पी. क्लेव	1879
थैलियम	टी एल	81	204.4	डब्ल्यू क्रूक्स	1861
थोरियम	टी एच	90	232.0	जे. बर्जीलियस	1828
नाइट्रोजन	एन	7	14.0	डी. रदरफोर्ड	1772
नायोबियम	एन बी	41	92.9	हेचेट	1801
निकेल	एन आई	28	58.7	ए. क्रानस्टेट	1751
नियान	एन ई	10	20.2	डब्ल्यु रामसे व एम ट्रैवर्स	1898
नियोडिमियम	एन डी	60*	144.2	सी. वान वेल्सबाख	1885
नेप्टूनियम	एन पी	93	237.0	ई. मैकमिलन व पी. एबलसन	1940
नोबेलियम	एन ओ	102	254.0	फल्डिस व अन्य	1951
पैलेडियम	पी डी	46	106.4	डब्ल्यू वाल्टस्टन	1803
पोटैशियम	के	19	39.1	एच डेवी	1807
पोलोनियम	पी ओ	84	210.0	पी. एण्ड एम क्यूरी	1898
प्लूटोनियम	पी. यू.	94	242.0	जी. सी. बोर्ग व अन्य	1940
प्रेजिओडिमियम	पी आर	59*	140.9	सीवान वेल्सबाख	1885
प्लेटिनम	पी टी	78	195.1	डी. द उलोआ	1735
प्रोमिथियम	पी एम	61*	147.0	जे. मार्नस्की व अन्य	1947
प्रोटेक्टिनियम	पी ए	91	231.0	एफ. सोडी व अन्य	1917
फर्मियम	एफ एम	100	253.0	ए घिओसों व अन्य	1952
फास्फोरस	पी	15	31.0	एच. ब्रांड	1669
फ्रेंसियम	एफ आर	87	223.0	एम. पेरी	1939
फ्लुओरीन	एफ	9	19.0	एच. मायसान	1886
बर्कीलियम	बी के	97	249.0	एस. थामसन व अन्य	1949
बिस्मथ	बी आई	83	209.0	सी. जेफ्री द यंगर	1953
बेरीलियम	बी ई	4	9.0	एन. वाक्यूलिन	1798
बेरियम	बी ए	56	137.3	एच डेवी	1808
बोरान	बी	5	10.8	एच. डेवी	1808
ब्रोमीन	बी आर	35	79.9	ए. बैलार्ड	1826
मरक्यूरी (पारा)	एच जी	80	200.6		प्रागैतिहासिक
मालिब्डनम	एम ओ	42	95.9	के. शील	1778
मैंडलीवियम	एम वी	101	256	ए वियासों व अन्य	1955
मैंगनीज़	एम एन	25	54.9	शील द्वारा पहचाना गया	1774
मैग्नीशियम	एम जी	12	24.3	जेब्लाख द्वारा पहचाना गया	1755
यूरेनियम	यू	92	238.0	ई. एम. पेलीगांट	1841
यूरोपियम	ई यू	63	152.0	ई. डेमार्के	1896
रीनियम	आई	75	186.2	इनोडाक व अन्य	1925
रुथेनियम	आर यू	44	101.1	के. क्लास	1844
रुबीडियम	आर बी	37	85.5	आर. बनसन व जी. किर्चाफ	1861
रेडान	आन एन	86	222.0	रदरफोर्ड (थारोन आइसोटोप)	1899
				ई. डार्न (रे–1900 डान आइसोटोप)	
रेडियम	आर ए	88	226.1	पी. और एम. क्यूरी	1898
रोडियम	आर एच	45	102.9	डब्ल्यू. वालास्टन	1803
लारेंशियम	एल डब्ल्यू	103	257.0	ए. घिओसो व अन्य	1961

लीथियम	एन आई	3	6.9	ए. अर्फवेडसन	1817
लेड (सीसा)	पी बी	82	207.2		प्रागैतिहासिक
लैन्थेनम	एल ए	57*	138.9	सी. मोसांटर	1839
ल्यूटीशियम	एल यू	71*	175.0	जी. अर्बाइन	1907
वैनेडियम	वी	23	51.0	ए. डेलरियो	1801
समारियम	एस एम	62	150.4	एल. दे. बाइसबाड्रान	1879
सलीनम	एस ई	34	79.0	जे. ब्रज़ीलियस	1817
सल्फर (गंधक)	एस	16	32.1		प्रागैतिहासिक
सिलिकन	एस आई	14	28.1	जे. ब्रजीलियस	1824
सिल्वर	ए जी	47	107.9		प्रागैतिहासिक
सेशियम	सी एस	55	132.9	आर. बनसव व जी. किर्चाफ	1860
सीरियम	सी ई	58	140.1	जे. ब्रेजीलियस व डब्ल्यू. हिसलिंगर	1803
सोडियम	एन ए	11	23.0	एच. डेवी	1807
स्कैन्डियम	एस सी	21	45.0	एल. निल्सन	1879
स्ट्रान्शियम	एस आर	38	87.6	एच. डेवी	1808
हाइड्रोजन	एच	1	1.0	एच. कवेंडिश	1766
हीलियम	एच ई	2	4.0	जे. सी. पी. जानसन और	
			एन. लाकयर	1868	
हैफनियम	एच. एफ	72	178.5	डी. कास्टर तथा जी. दी. हेवसी	1923
होल्मियम	एच ओ	67	164.9	जे. सोरट व एम. डेलाफेंटाई	1878

मूलतत्व 108 का आविष्कार अभी तक नहीं हुआ है ।
* दुर्लभ मृदा : (रेअर अर्थस) परमाणु क्रमांक 57 से 71 तक के पंद्रह मूलतत्व सम्मिलित रूप से रेअर अर्थ कहलाते हैं, क्योंकि ये अपने रासायनिक व्यवहार में असाधारण रूप से समान होते हैं ।

जीव-प्रौद्योगिकी

जीव-प्रौद्योगिकी की उत्पत्ति 1970 के दशक में हुई जब आणविक एंव कोशिकीय जीव-विज्ञान की नवीनतम खोजों ने नये औद्योगिक प्रतिष्ठानों को मानवता की भलाई के लिए उपयोग करने के लिए एक नया रास्ता दिखाया। जीवों या उनसे प्राप्त पदार्थों का उपयोग करके मनुष्यों के लिए मूल्यवान वस्तुओं का उत्पादन करना ही जीव-प्रौद्योगिकी है। यह एक बहुआयामी विज्ञान है जिसका विकास जीव-विज्ञान, रसायन-विज्ञान व अभियांत्रिकी आदि के समन्वित उपयोग से हुआ है । जीव प्रौद्योगिकी को मोटे तौर पर सूक्ष्म जीव-प्रौद्योगिकी, पादप जीव-प्रौद्योगिकी व जन्तु जीव-प्रौद्योगिकी आदि में विभाजित किया जा सकता है।जीव-प्रौद्योगिकी में मुख्यत: आनुवंशिक अभियांत्रिकी के रूप में विख्यात डी.एन.ए तकनीक (रिकाम्बिनैन्ट डी.एन ए टेक्नोलॉजी) प्रोटोप्लास्ट फ्यूजन, हाइब्रिडोमा टेक्नोलॉजी कोश-संवर्धन, ऊतक-संवर्धन, जननद्रव्य विकास, भ्रूण प्रतिस्थापन तकनीक, एन्जाइम व प्रोटीन संश्लेषण आदि सम्मिलित है। कृषि, वानिकी, बागवानी, चिकित्सा, स्वास्थ्य, रासायनिक उद्योग, खाद्य संबंधी उद्योग, प्रदूषण नियंत्रण व पर्यावरण संरक्षण आदि में जीव-प्रौद्योगिकी के उपयोग की बहुत संभावनाएं हैं।

कृषि

कृषि, वानिकी व बागवानी के क्षेत्र में जीव प्रौद्योगिकी के उपयोग में आनुवंशिक अभियांत्रिकी द्वारा नई पादप-जातियों का विकास, उत्तम बीजो का उत्पादन, वर्धित पोषक मूल्यों वाली फसलों का विकास, पौधों में कीटों, खर-पतवार नाशक दवाओं, खारापन, सूखा, वायरस-जन्य रोगों आदि के प्रति प्रतिरोध-क्षमता का विकास, ईंधन व चारा देने वाली फसलों का उत्पादन, नेत्रजन एकत्र करने वाली जीन्स के प्रतिस्थापन द्वारा खाद्यान्न की फसलों में जैविक नेत्रजन एकत्रण, एजोला, एजोबैक्टर व राइजोबियम आदि से बनने वाली जैविक खादों का उत्पादन, अधिक क्षमता वाली प्रकाश-संश्लेषण विधियों का विकास, पौधों की वृद्धि से संबंद्ध रेगुलेटरों व हारमोन्स का विकास, कीटों कीड़ों व मच्छरों के नियंत्रण के लिए विशिष्ट जैविक-नाशकों का विकास, स्वयमेव कीटनाशक व खर-पतवार नाशक पदार्थ उत्पन्न करने वाले पौधों का विकास, वाणिज्यिक महत्व के पौधों का उत्पादन तथा पौधों को ठंड में जमने से रोकने वाले सूक्ष्म जीवों का विकास आदि गतिविधियां शामिल हैं ।

ऊतक-संवर्धन के जरिए सूक्ष्मागु प्रसारण तकनीक का सजावटी, हरियाली वाले तथा फसली पौधों के बड़े पैमाने पर उत्पादन करने में अत्यधिक महत्व है । इस तकनीक का उपयोग करके अनार, केला, सब्जियां, इलायची, गन्ना तथा आर्किड आदि की नई जातियां भारत में व्यावसायिक तौर पर उत्पन्न की जा चुकी हैं । ऊतक-संवर्धन द्वारा उत्पन्न बांस, सरसों, चावल, ऑयल पाम, चन्दन, औषधीय पौधे, यूकिलप्टस, हल्दी, कपास, पपीता, सारावन, फर्न, रबर, काफी आदि की जातियों पर भी प्रयोग व मूल्यांकन जारी है ।

पशु चिकित्सा-विज्ञान

पशु चिकित्सा-विज्ञान के क्षेत्र में जीव-प्रौद्योगिकी के उपयोगों में पशुओं के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए हार्मोन्स,

तकनीक का उपयोग संक्रामक रोगों से बचने के लिए सुरक्षित और प्रभावी प्रतिरोधक दवाओं का उत्पादन, भ्रूण-विस्थापन, आनुवंशिक अभियांत्रिकी के प्रयोग से पशु-प्रजनन की नई विधियों का विकास, कोश-संवर्धन, मछलियों व लार्वे के लिए खाद्य-पदार्थों का उत्पादन, डी.एन.ए. तकनीक द्वारा मछली की वृद्धि, हारमोन्स का उत्पादन, जीन तकनीक द्वारा मछलियों के पोषक मूल्यों में अभिवृद्धि, उत्प्रेरित प्रजनन तकनीक के द्वारा अधिक मछलियों का उत्पादन, हाइब्रिडोमा तकनीक व आनुवंशिक अभियांत्रिकी के जरिए सूक्ष्मजीवों व जीवाणुओं द्वारा होने वाली महामारक बीमारियों की रोकथाम के लिए प्रतिरोधी दवाओं का उत्पादन, प्रतिकूल परिस्थितियों व पर्यावरण के विरुद्ध सहनशक्ति व प्रतिरोध-क्षमता बढ़ाने के लिए शुक्राणु या अंडे की अवस्था में ही जीनों में परिवर्तन करना आदि सम्मिलित हैं ।

भ्रूणांतरण तकनीक के जरिए पशुओं की अच्छी प्रजातियों के तेजी से बहुलीकरण में तथा उत्तम जनन-दव्य के संरक्षण के तरीके आविष्कृत करने में मदद मिलती है। कृत्रिम गर्भाधान के साथ मिलकर यह विद्या, उत्तम उत्पादन क्षमता वाली पशु प्रजातियों की संख्या-वृद्धि में बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई है । गाय व भैंसों में सफल रूप से भ्रूणांतरण के प्रयोग किए गए हैं । देवदाइन स्पिलट एम्ब्रयो तकनीक से उत्पन्न पहले बछड़े का जन्म नवंबर 1988 में हुआ था । विश्व में पहली बार परखनली में निषेचित एक भ्रूण के अंतरण द्वारा मुर्राजाति की एक भैंस के बच्चे का जन्म करनाल में स्थित राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान में हुआ। नर पशुओं का वंध्याकरण करने के लिए, अभी हाल में, वैज्ञानिकों ने पशुओं में जन्म-निरोधी टीके, तालशार का विकास किया है । यह सस्ता, सुरक्षित व अधिक प्रभावकारी है । इससे निम्न किस्मों के पशुओं का वंध्याकरण करके उनकी संख्या को क्रमशः कम किया जा सकता है ।

औषधि एवं स्वास्थ्य

सस्ती व अच्छे किस्म की दवाएं, संक्रामक रोगों को रोकने के लिए अच्छी प्रतिरोधी दवाएं, उत्तम जनन-निरोधी साधन, हारमोन्स, प्रतिरोध-क्षमता परखनली किटें, कैन्सर की वैक्सीन आदि के उत्पादन तथा आनुवंशिक रूप से पैदा होने वाली बिमारियों की रोकथाम में जीव-प्रौद्योगिकी का व्यापक प्रयोग हो रहा है। रति-क्रिया द्वारा फैलने वाली बिमारियों व कैंन्सर की पहचान एवं उपचार, दवाओं के अतिप्रयोग से उत्पन्न दुष्प्रभावों का उन्मूलन, मज्जा के प्रतिस्थापन में संभावित खतरों से बचाव, ट्यूमर की पहचान आदि में जीव-प्रौद्योगिकी द्वारा विकसित मोनोक्लोनल एन्टीबॉडीज का प्रयोग होता है । जीव-प्रौद्योगिकी द्वारा, रोगों के उपचार में काम आने वाली इन्टर फेरॉन, मनुष्य के वृद्धि हारमोन्स, इन्सुलिन, टिशू प्लाज्मिनोजेन ऐक्टीवेटर यूरोकाइनेज, इन्टरल्यूकिन-2, रिलेक्सिन, ट्यूमर नेक्रोसिस फैक्टर, एरिथ्रोपोइटिन, फैक्टर-1 फैक्टर-3 व लंग सरफैक्टेन्ट प्रोटीन आदि बहुमूल्य मानव-प्रोटीनों का निर्माण हो रहा है ।

कोश-संवर्धन से उत्पन्न होने वाले पदार्थों में पोलियो, चेचक, खसरा, रूबेला, रेबीज, टिक बोन एनसिफैलाइटिस, रिन्डरपेस्ट आदि बिमारियों को रोकने वाले जीवाणु-टीके वृद्धि हारमोन्स, ह्यूमन ग्रोथ एच, इंटरफेरॉन (अल्फा एवं बीटा), थाइमोसिन तथा प्लाज्मिनोजन एक्टिवेटर प्रमुख हैं। डी.एन.ए. में फेर-बदल करने की क्षमता का सबसे बड़ा उपयोग उन आनुवंशिक बिमारियों को रोकने में हो सकेगा जो जीन-दोषों के कारण उत्पन्न होती हैं। इसकी सबसे बड़ी संभावना उन दोषों में होगी जिनको मज्जा-कोशाओं में दोषरहित नई जीनों के प्रत्यारोपण से दूर किया जा सकता है।

खाद्य

खाद्य-पदार्थों से संबद्ध उद्योगों में जीव-प्रौद्योगिकी के उपयोग के प्रमुख उदाहरण हैं – कीटों व चूहों आदि से मुक्त रखकर खाद्यान्नों का प्रभावी भंडारण करने की विधियां, खाद्य-पदार्थों की पोषक-क्षमता का विकास, उनका बेहतर परिरक्षण, उनके स्वाद की अभिवृद्धि, एककोशीय प्रोटीनों का उत्पादन, मशरूम (खुंबी) की खेती, खाने वाले शैवालों का उत्पादन और खाने को सड़ने से बचाने वाली विधियां आदि। एककोशीय प्रोटीन का उपयोग तो द्वितीय विश्वयुद्ध के समय से चला आ रहा है। इसके लिए सूक्ष्म जीवों (बैक्टीरिया) की कैन्डिडा आरबोरिया, कैन्डिडा यूटिलिस सैकेरोमाइसीज सेरेविसी आदि को सूप या सॉसजों में मिला दिया जाता है । इससे प्रचुर मात्रा में प्रोटीन का उपयोग किया जाता है, क्योंकि सोयाबीन या मछली से बनने वाले चारे बहुत मंहगे पड़ते है। जीव-प्रौद्योगिकी का मीठे पदार्थों के निर्माण में औद्योगिक स्तर पर व्यापक प्रयोग हो रहा है । ग्लूकोज आइसोमरेज, इन्वर्टेज व एमाइलेज जैसे एन्जाइमों के उत्पादन से हाई फ्रक्टोज कॉर्न स्वीटनरों जैसे अत्यन्त लाभदायक पदार्थों का निर्माण संभव हो सका है ।

बेकर्स यीस्ट, वाइन, एल, सेक, लेजर, बियर, सोया सॉस, सॉवर, फ्रेंच ब्रेड, योगर्ट, चीज, सिरका व टेम्फ आदि भी कुछ ऐसे ही खाद्य एवं पेय पदार्थ हैं जो सूक्ष्मजीवों से बनाए जाते हैं। एल-लाइसीन, 5 आइनोसिनिक एसिड तथा 5 गुआनिलिक एसिड जैसे अमीनोएसिड तथा स्वाद बढ़ाने वाले न्यूक्लियोटाइड भी बैक्टीरिया से पैदा किए जाते हैं । जीव-प्रौद्योगिकी का उपयोग सूक्ष्मजीवी प्रक्रिया द्वारा कृषि के अवशिष्ट पदार्थों से महत्वपूर्ण रसायन बनाने, ऐन्टीबायोटिक्स, विटामिन, स्टीरॉयड आदि बनाने तथा औद्योगिक उत्पादों को खराब होने से बचाने आदि में व्यापक रूप से हो रहा है ।

पर्यावरण

जीव-प्रौद्योगिकी का उपयोग पर्यावरण के संरक्षण व सुधार के लिए भी हो रहा है । इसमें, उत्परिवर्तित सूक्ष्मजीवों के प्रयोग द्वारा नष्ट न होने वाले रासायनिक पदार्थों का जैविक हनन करना, मलवे तथा औद्योगिक बहावों का शुद्धीकरण, कीटनाशक दवाओं जैसे खतरनाक पदार्थों का प्रबंधन, प्रदूषण के सूचकों का विकास, रिसाव से फैले तेल व अन्य हाइड्रोकार्बन पदार्थों की आनुवंशिक अभियांत्रिकी द्वारा पैदा की गई बैक्टीरिया की नई प्रजातियों द्वारा होने वाले संक्षरण की रोकथाम, जैविक लीचिंग, जैविक खनन, वेक्टर कन्ट्रोल की विधि द्वारा संक्रामक बिमारियों की रोकथाम, ठोस अवशेषों का निस्तारण, अवशिष्ट पदार्थों से बायोगैस का निर्माण, वायु प्रदूषण की रोकथाम तथा पर्यावरण के परिवीक्षण के लिए जैविक संवेदकों का उपयोग प्रमुख हैं । सूक्ष्मजीवी प्रक्रियाओं से पैदा होने वाले ईंधनों में एथेनॉल, मीथेनॉल, मीथेन, हाइड्रोन आदि प्रमुख हैं । सीवेज

टैंकों में जैविक अवशिष्टों को समाप्त करने में वैक्टीरिया, शैवाल व प्रोटेजोआ आदि का प्रयोग होता है। कुछ तरह के स्यूडोमोनास नामक वैक्टीरिया अनेक हाइड्रोकार्वन अणुओं तथा जहरीले एरोमेटिक पदार्थों जैसे वेन्जीन, टूलूइन एंव जाइलीन आदि को तोड़कर समाप्त कर सकते हैं। स्यूडोमोनास प्यूरिडा नामक वैक्टीरिया में चार हाइड्रोकार्वनों को नष्ट करने वाली जीनों से युक्त प्लाज्मिड होता है । कुछ सूक्ष्मजीव अणुओं को नष्ट नहीं कर पाते हैं, पर उन्हें ऐसे रूपों में वदल देते हैं कि दूसरे सूक्ष्मजीव उन्हें नष्ट कर सकें। इसको सह–चयापचय कहते हैं। उदाहरण के लिए शक्तिशाली कीटनाशक दवा पैराथियान, का अपघटन सह–चयापचय की प्रक्रिया द्वारा क्यूडोमोनास एरोजिनोसा एंव स्यूडोमोनास स्टुट्ज़ेरी नामक वैक्टीरिया मिलकर करते हैं। और इस प्रकार इनके विश्लेपन को समाप्त किया जा सकता है। और मानव पर विपरीत प्रभाव को रोका जा सकता है।

अतिचालकता

विश्व में उत्पन्न कुल विद्युत ऊर्जा का आधा भाग तो संवाहन में नष्ट हो जाता है । दरअसल यह केवल वरवादी है । वैज्ञानिक और इंजीनियर्स की सदैव से यह आकांक्षा रही है कि कोई ऐसा अतिचालक वन जाये जिससे ऊर्जा का इतना वड़ा भाग वेकार न जाये । हाल की खोजों से संकेत मिले हैं कि ऐसा संभव है और तभी से ऐसी— जादुई धातु की खोज की कोशिशें वढ़ गयी हैं । अगर ऐसा हो गया तो यह तकनीकी क्रांति होगी । विद्युत ऊर्जा का एक वड़ा भाग तो वचेगा ही साथ ही अतिचालकता, विकास के और वहुत रास्ते खोल देगा, जैसे कि चुम्बकीय पथ पर दौड़ती अति तीव्र वुलेट ट्रेन, उच्च शक्ति की छोटी इलेक्ट्रिक कार, कई गुना अधिक शक्तिशाली कम्प्यूटर, सुरक्षित और वहुत अधिक ऊर्जा वाले एटामिक रियेक्टर आदि विकास के नये आयाम वन जायेंगे ।

संक्षेप में एक नये विश्व की शुरुआत होगी । इस प्रकार अतिचालकता रातों रात एक जादुई शब्द हो गया, और इसके साथ ही मानों सोता हुआ संसार झटके से उठ गया । पिछले सारे शोध को एक किनारे कर वैज्ञानिक पागलों की तरह इस खोज में जुट गये, इस इच्छा के साथ कि जो भी सफल होगा मानवता के उज्जवल भविष्य का सारा श्रेय उसी को होगा ।

विद्युत चालक का मूल प्रश्न है प्रतिरोध और इस प्रतिरोध में ताप एक वड़ा मुद्दा है । आज के चालक को अति चालक में वदलने का एक ही तरीका है कि चालक को अति कम तापक्रम पर रखा जाये यानी की परमशून्य या डिग्री केल्विन पर जो –273 डिग्री सेल्सियस है ।

जव चालक को इस तापमान पर लाया जाता है तो उसका विद्युत प्रवाह में सारा प्रतिरोध समाप्त हो जाता है । लेकिन पृथ्वी पर इस तापमान को वनाये रखना वहुत कठिन और खर्चीला है । यही वजह है कि इस सदी की शुरुआत में ही अतिचालकता का पता लग जाने के वावजूद प्रयोगशालाओं में यह सदैव से ही जटिल प्रश्न वना रहा ।

अतिचालकता का पता सन् 1911 में डच भौतिक विज्ञानी हेइक केमरलिंघ ओंनेस ने लगाया था । वह पारे पर ताप द्वारा विभिन्न विद्युत चालकों का अध्ययन कर रहे थे । परमशून्य के निकट कुछ ही तापमान पर प्रतिरोध इतना कम हो गया कि उसका मापना संभव नहीं था ।

अतिचालकता का यह पारगमन वहुत उच्च या असीमित विद्युत चालक के लिये सामान्य पाया गया था । 1933 में डब्ल्यू. मेइसनर और आर. आर. आस्केनफेल्ड ने पता लगाया कि अगर अतिचालक को सामान्य चुम्बकीय क्षेत्र में रखा जाये तो चालक के अंदर के क्षेत्र को यह प्रतिकर्षित कर देता है उनकी इस खोज ने संभावनाओं के दरवाजे खोल दिये ।

लेकिन अतिचालकता की स्थापना केवल 4.2 केल्विन तापमान पर संभव है । यह वह तापमान है जिसपर हीलियम गैस का द्रवीकरण हो जाता है । अतिचालक साधनों के रोधित एंव कसकर वंद किये गये पात्र को द्रव हीलियम में रखना पड़ेगा। इसमें काफी खर्च आयेगा और प्रयुक्तता भी काफी सीमित हो जाती है – जापान की प्रोटोटाइप चुम्बकीय ट्रेन, कुछ कण उत्प्रेरक, महंगी चुम्बकीय वोतल जो परमाणु संलयन शोध में काम आती है आदि ऐसे उदाहरण हैं।

इस संदर्भ में पिछले वर्ष कई नये तथ्य सामने आये । शोधकर्ताओं ने कई असामान्य रासायनिक यौगिकों का पता लगाया हालांकि इन्हें भी अतिचालक वनाने के लिये ठंडा करना पड़ा लेकिन 100 डिग्री केल्विन पर और द्रव हीलियम की जगह द्रव नाइट्रोजन प्रयुक्त किया गया जो कि सस्ता भी है । ये नये यौगिक घने चुम्बकीय क्षेत्र को पैदा करने में भी सक्षम पाये गये।

निम्न ताप पर अतिचालकता वाले पदार्थ (सीसा, टिन, पारा आदि) अपनी इस गुणवत्ता से अलग हो जाते हैं जव सार्थक चुम्बकीय क्षेत्र वनाने के लिये इनमें काफी विद्युत प्रेषित की जाती है। लेकिन सिरेमिक्स – नियोवियम और टिटोनियम के आक्साइड का मिश्रपदार्थ उच्च चुम्बकीय क्षेत्र के वावजूद अपने अति चालकता के गुणों को वनाये रखता है ।

1973 तक वैज्ञानिक अतिचालकता के ताप को 23 डिग्री केल्विन से अधिक नहीं कर पाये। आई.वी.एम. के ज्यूरिख प्रयोगशाला के कार्ल एलेक्स मुलर ने सिरेमिक्स (मेटल आक्साइड) को प्रयुक्त किया । कमरे के तापमान पर सिरेमिक्स लगभग अचालक होते हैं और इनका प्रयोग विद्युत रोधन के रूप में किया जाता है। मुलर ने प्रेषण तापमान 35 डिग्री केल्विन तक वढ़ाया। भौतिकी संसार ने उनकी हसी उड़ायी फिर भी जापानी और चीनी वैज्ञानिक उन्हें गम्भीरता से ले रहे थे।

उन लोगों ने इस प्रयोग को कई वार दुहराया और 38 केल्विन तापमान पाने में सफल रहे। 1955 से अतिचालक पदार्थों का अध्ययन कर रहे हाउस्टन विश्वविद्यालय के प्रो. पाल सी डब्ल्यू चू ने इस चुनौती को स्वीकार कर लिया ।

उन्होंने अतिचालक पदार्थ को उच्च दाव में रखा और पाया

[illegible] तापमान 52 डिग्री केल्विन तक लाया जा सकता है। लेकिन [illegible] तापमान अधिकतम था। सामान्य वायुमंडलीय दवाव के 10 से 12 हजार गुना अधिक दवाव पर अतिचालक पदार्थ का [illegible] ढांचा क्षतिग्रस्त हो जाता है इसलिये अधिक दवाव ठीक नहीं था।

चू ने स्ट्रोन्टियम, जो कि परमाणविक आकार में छोटा होता है, को बेरियम के स्थान पर प्रयुक्त किया। प्रेषण तापमान में वृद्धि केवल 2 डिग्री की हुई। लेकिन जब उन्होंने कैल्शियम तत्व का प्रयोग किया, जो कि और भी छोटे परमाणु आकार वाला तत्व है, तापमान काफी गिर गया। इसके वाद चू ने लैंथानम को प्रयुक्त किया। चू के एक स्नातक शिष्य ने रेयर अर्थ्स (दुलर्भ मृदा) यट्रियम को लैंथेनम की जगह प्रयुक्त किया।

दुर्लभ मृदा दरअसल दुर्लभ नहीं हैं। उदाहरण के लिये यट्रियम तांबे की अपेक्षा वहुतायत में पाया जाता है। इस संदर्भ में दुर्लभ शब्द भौगोलिक आधार पर प्रयुक्त किया जाता है। भारत और चीन दो ऐसे राष्ट्र हैं जहां पर दुर्लभ मृदा के विशाल भंडार हैं। इस प्रकार वू और चू ने पहले 93 डिग्री केल्विन तापमान और फिर कुछ दिन वाद 98 डिग्री केल्विन तापमान तक वृद्धि करने में सफल रहा।

भारतीय वैज्ञानिकों ने भी इस दिशा में कार्य प्रारम्भ किया। उन्होंने पहले हस्तस्त परिणामों को प्राप्त किया और फिर इसमें और उन्नति की रिपोर्ट दी। जापान ने इस उपलब्धि की व्यवसायिक संभावनाओं को वहुत तेजी से पहचाना। जापान का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं उद्योग मंत्रालय ने निजी क्षेत्र शोध को प्रोत्साहन दिया और जापान की कंम्पनियों ने अतिचालकता के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर ली है।

अमरीका में भी अतिचालकता शोध के वजट को दुगना कर दिया गया है और वैज्ञानिकों को अद्यतित सूचना प्राप्त करवाने के लिये कंम्प्यूटर डेटा वैंक उपलब्ध कराया गया है।

सामान्य तापमान पर स्थायी अतिचालकता की खोज किसी भी समय संभव है और यह अगर संभव हो गया तो निश्चय ही शताब्दी की वैसी ही महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी जैसे कि 1950 में ट्रांजिस्टर की खोज थी। नेशनल फिजिकल लैबोरेटरी के वैज्ञानिकों ने प्रयोगशाला परिस्थितियों के अंदर सामान्य तापक्रम पर अतिचालक की खोज का दावा भी कर दिया है।

पश्चिम इस खवर से उद्वेलित है कि चू और वू द्वारा रिकार्ड किये गये तापमान को भारत और जापान ने [illegible] कर लिया है। इस समय 240 डिग्री केल्विन तापमान तक पाने की रिपोर्ट है। यह तापमान [illegible] इसका अर्थ यह हुआ कि कोई वैज्ञानिक [illegible] है। पिछले वर्ष प्रेषण तापमान चार गुना तक [illegible] मिली थी और अगर इस वर्ष इसी दर से सफलता [illegible] एक वर्ष के भीतर ही सामान्य तापमान पर अतिचालकता [illegible] हो जायेगी।

क्रायोजिनिक्स

क्रायोजिनिक्स अर्थात् निम्नतापिकी नवीनतम विज्ञानों में से है और बीसवी सदी में अस्तित्व में आया है। 'क्रायोजिनिक्स' यूनानी मूल का शब्द है जिसका अर्थ है शीतोत्पादक। इसका संबंध बहुत निम्न तापमान के उत्पादन तथा उसके भौतिक और [illegible] परिणामों के अध्ययन से है।

सामान्यतः बहुत निम्न तापमान का मतलब −150सें से कम तापक्रम से लगाया जाता है। परम शून्य स्पष्टतः निम्नतापिकी की सीमा में ही आता है। परम शून्य तापमान प्राप्त करना पृथ्वी पर संभव नहीं है।

अब तक इस पृथ्वी पर जो निम्नतम तापमान प्राप्त किया जा सका है वह परमशून्य से ऊपर की डिग्री का दस लाखवां भाग है। दुनिया भर के वैज्ञानिक परमशून्य के ऊपर की डिग्री [illegible] तक पहुंचने का उपक्रम कर रहे हैं। एक जानकारी अनुसार [illegible] से काफी निचले तापमान का संसार है। इस [illegible] संसार में अजीव घटनाएं घटती हैं। [illegible] रहता है, उसे छोड़कर अन्य सभी [illegible] वन जाते है। रवड़ इतना भुरभुरा वन [illegible] की तरह चटकने लगता है। चोट करने पर [illegible] की तरह [illegible] लगता है। वायु ठोस खण्ड के [illegible] जाते है। ये सभी घटनाएं परम शून्य पर नहीं [illegible] 10 विंदु के अन्दर–अन्दर घटती है।

[illegible] में दूसरे नम्बर की सवसे हल्की गैस (सवसे हल्की गैस हाइड्रोजन है) हीलियम [illegible] सिद्ध हुई है। इस गैस को [illegible] खगोलशास्त्री [illegible] स्पेक्ट्रोस्कोप द्वारा [illegible] रैमसे ने पृथ्वी पर [illegible] वाद में यह सिद्ध [illegible] में मिलती है और [illegible] पृथ्वी पर मुक्त होती है। [illegible] हीलियम का होता है।

हीलियम के कई [illegible] और [illegible] है। [illegible] काम आती है। सन् 1908 तक इसके [illegible] असफल रहे इसके वाद [illegible] द्रवीकरण किया। [illegible] द्रवीकरण किया गया। [illegible] हीलियम [illegible] गुण है जिन्हें [illegible] सका है। निम्नतापिकी में [illegible] परम शून्य तापमान के आस-पास [illegible] माध्यम है। [illegible] परम शून्य तापमान के आस-पास [illegible] परिवर्तित नहीं होता।

निम्न तापमान पर [illegible] घटनाओं में से एक है अति चालकता। [illegible] हीलियम [illegible] जाने वाले किसी

फ्लास्क के एक खाने में रखा जाता है तो यह ठोस दीवार में से रिसकर दूसरे खाने में पहुंच कर समान तल बना लेती है।

एक और आश्चर्यजनक घटना है 'अति चालकता' अतिचालकता का आविष्कार सबसे पहले सन् 1911 में डा. एच. कामेरलिंग ओनस ने लीडन विश्वविद्यालय में किया था जिन्हें इससे पहले हीलियम के द्रवीकरण के लिए सन् 1913 में नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया था। परन्तु फिर भी, केवल सन् 1957 में आकर इस सिद्धान्त को प्रायोगिक रूप दिया जाने लगा । इलियोनायस विश्वविद्यालय के नोबल पुरस्कार विजेता जान बारडीन (1956) और उनके साथियों ने सन् 1957 में अतिचालकता संबंधी प्रथम सिद्धान्त प्रस्तुत किया। यह सिद्धान्त क्वान्टम यांत्रिकी पर आधारित है और अधिक तकनीकी है । अब लगभग 300 अतिचालक पदार्थ ज्ञात है, जिनमें 25 तत्व हैं और शेष मिश्र धातु या यौगिक हैं ।

अतिचालकता (अर्थात् विद्युत प्रतिरोध का पूर्ण लोप) का उपयोग विद्युत् इंजीनियरी में करने से उसकी क्षमता में वृद्धि लागत में कमी और बिजली ग्रिड की विश्वसनीयता में सुधार हो सकता है । अतिचालक नियोबियम के बने भुजा-भर के व्यास की प्रेषण लाइन से इतनी बिजली भेजी जा सकती है जितनी कि आजकल सम्पूर्ण संयुक्त राज्य में व्यस्त घंटों में भेजी जाती है ।

निम्नतापिकी के और भी अनेक उपयोग है । उदाहरण के लिए द्रव नाइट्रोजन से द्रुत प्रशीतन द्वारा बैक्टीरिया एन्जाइम, आक्सीकरण तथा रासायनिक प्रतिक्रियाओं के कारण होने वाली सड़न प्रक्रिया को कम किया जाता है; इसके साथ ही खाद्य पदार्थो के स्वाद, संरचना, सुगंध, पोषण-मूल्य और रंग-रूप में सुधार भी लाया जा सकता है ।

चूंकि तापिकी प्रशीतन पद्धतियां पारम्परिक पद्धतियों से अधिक किफायती हैं, अतः जहाज द्वारा खाद्य पदार्थ, फल, सब्जियां तथा अन्य सड़ने वाले खाद्य-पदार्थो को प्रशीतित करके भेजने में इनका लाभ उठाया जा सकता है ।

चिकित्सा क्षेत्र में अस्पतालों में रोगियों को चढाने के लिए इंसानी रक्त को सामान्यतः तीन सप्ताह से अधिक समय तक परिरक्षित नहीं किया जा सकता। द्रव नाइट्रोजन का इस्तेमाल करते हुए हाल ही में विकसित की गई एक नई रक्त प्रशीतन तकनीक से अब रक्त को महीनों – यहां तक कि सालों तक सुरक्षित रखा जा सकता है। अस्पतालों के मज्जा बैंकों में मज्जा के भंडारण के लिए भी निम्नतापिकी का इस्तेमाल किया जा सकता है।

सामान्य शल्यक्रिया के क्षेत्र में भी क्रायोजिनिक्स के काफी उपयोग है । पार्किनसन रोग तथा अनैच्छिक संचालन की अन्य विकृतियों के इलाज के लिए भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है । फोड़ों को प्रशीतित करके रक्त की हानि के बिना उन्हें दूर किया जा सकता है । आंखों की मोतियाबिन्द दूर करने में तथा टांसिल के आपरेशन मे भी रक्तहीन क्रायोसर्जरी का इस्तेमाल किया जा सकता है ।

देश में प्राकृतिक गैसों के द्रवीकरण के किफायती तरीके उपलब्ध न होने के कारण प्रतिवर्ष उनकी काफी मात्रा जला दी जाती है । तेलशोधक कारखानों या तेल-क्षेत्रों में जलाई जाने वाली गैसों का निम्नतापिकी – पद्धति से द्रवीकरण किया जा सकता है और देश के दूरदराज के क्षेत्रों में बसे उन लोगों के इस्तेमाल के लिए भेजा जा सकता है जिन्हें शहरी गैस-लाइनों की सुविधा उपलब्ध नहीं है। द्रवीकृत मीथेन से पराध्वनिक उड़ानों की लागत लगभग एक तिहाई तक कम की जा सकती है।

आजकल भारत के लगभग एक दर्जन केन्द्रों में क्रायोजिनिक्स के उपयोग के संबंध में काम हो रहा है । इनमें राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली, टाटा फंडामेंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, बम्बई, भारतीय विज्ञान संस्थान बैंगलोर, इंडियन एसोसिएशन फार कल्टीवेशन आफ साइंसेज, जादवपुर, दिल्ली विश्वविद्यालय का भौतिकी विभाग, सालिड स्टेट द्रवीकरण लैबोरेटरी, दिल्ली और इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टैक्नालाजी, कानपुर शामिल हैं ।

बहुलक

बहुलक (पॉलीमर) एक जातीय नाम है जो अधिक अणुभार वाले पदार्थो को दिया गया है । बहुत बड़ी संख्या में पाए जाने तथा इनके अणुओं में कई तरह के परमाणुओं की उपस्थिति होने की वजह से, इन पदार्थो की अनगिनत श्रेणियां हैं । इनकी रासायनिक संरचना, भौतिक गुण, यांत्रिक व्यवहार, तापीय विशेषताएं भिन्न-भिन्न हो सकती हैं । इनका वर्गीकरण निम्नलिखित रूपों में किया जा सकता है।

प्राकृतिक व कृत्रिम बहुलक

अपनी उत्पत्ति के हिसाब से बहुलकों की प्राकृतिक व संश्लेषित दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है । जो बहुलक प्राकृतिक वस्तुओं से पृथक किए जाते हैं, उन्हें प्राकृतिक बहुलक कहते हैं । उदाहरणस्वरूप कपास, रेशम, ऊन, रबर इत्यादि । सेलोफेन, सेलुलोज, रेयॉन, चमड़ा आदि प्राकृतिक बहुलकों के रासायनिक परिष्करणों द्वारा बनाए गए पदार्थ हैं । कम [illegible] वाले अंशों को मिलाकर संश्लेषित किए जाने वाले बहुलकों को कृत्रिम बहुलक कहते हैं, जैसे-पालीथीन, पी.वी.सी. [illegible], टेरीलीन आदि ।

कार्बनिक व अकार्बनिक बहुलक

ऐसे बहुलक जिनकी रीढ़-मेखला कार्बन के परमाणुओं से बनी होती है, कार्बनिक बहुलक कहलाते है । कार्बनिक [illegible] बगल वाली सभी कक्षाओं में हाइड्रोजन, ऑक्सीजन [illegible] [illegible] शन होते हैं । अधिकांश बहुलक [illegible]

[illegible] बहुतायत होने की वजह से ही प्राय: [illegible]

प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करने वाले प्रेरक स्नायुओं (मोटर नर्व) को प्रभावित करता है। इनके साथ अन्य प्रतिक्रियाओं के योग से ध्वनि के प्रति हमारी शारीरिक अनुक्रियाएं प्रवृत्त होती हैं।

एक पुरानी उक्ति है कि ध्वनि या तो संगीत होगी या शोर। इस पृथक्करण का तात्पर्य है जो कुछ भी कानों को प्रिय लगे वह संगीत है और वह सब कुछ जो कानों को अप्रिय लगे वह शोर है। कानों में किरकिराहट पैदा करनेवाली या कटुता उत्पन्न करने वाली ध्वनियों से हमें झुंझलाहट और बेचैनी-सी हो जाती है। ध्वनि के इस अप्रिय प्रभाव को आजकल 'ध्वनि प्रदूषण' की संज्ञा दी गई है। सभी शहरों और कस्बों में ध्वनि प्रदूषण व्याप्त है – कहीं ज्यादा तो कहीं कम। इसके लिए ध्वनि प्रदूषण के बड़े अपराधी आजकल के महानगर हैं जिनके कोलाहलपूर्ण यातायात कानों के लिए खतरा पैदा करते है। पश्चिम जर्मनी में हाल ही में किए गए एक अध्ययन से जाहिर हुआ कि तकरीबन 6 करोड़ 30 लाख की आबादी में लगभग 25 लोग ऐसी जगहों में रहते है जहां शोरगुल का स्तर अधिक है। तुलनात्मक दृष्टि से यह एक छोटी प्रतिशतता है परन्तु इसमें केवल उन्हीं लोगों का उल्लेख है जिन्हें अधिकतम खतरा है। लगातार शोर सुनते रहने पर मध्य कान के नाजुक अंग धीरे धीरे खराब होते जाएंगे इसका नतीजा यह होगा कि वे भीतरी कान को ध्वनि आवेग प्रेषित करने में नाकामयाब होते जाएंगे और एक वक्त ऐसा आएगा कि ध्वनि के प्रति शरीर की अनुक्रियाएं भी चुप्पी साध लेंगी।

समय पद्धतियां

समय मापन के प्राचीनतम उपकरणों में धूप घड़ी और जल घड़ी जैसी कई युक्तियां शामिल थी जो मिस्र में काम में लाई जाती थी। ये उपकरण स्थूल प्रकार के थे। ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में अलेक्जेंड्रिया के एक यूनानी इंजीनियर केसिबियस ने जल घड़ी का डिजाइन फिर से बनाकर उसे लोकप्रिय बनाया था।

उन्नत जलघड़ी, प्राचीन टाइमपीसों में से सबसे बढिया थी। मध्यकाल में घटते वज़न द्वारा चालित यांत्रिक घडियां इस्तेमाल में आई। ये जलघडी की तुलना में अधिक सुविधाजनक थी परन्तु उतनी सही नहीं थी। दोनों में दिन भर में आधे घंटे तक की अशुद्धि आती थी।

सन् 1884 में समय की न्यूनतम इकाई 'सेकिंड' की परिभाषा निश्चित की गई जिसके अनुसार सेकिंड उस अवधि के 1/86400 के बराबर है जो पृथ्वी अपनी धुरी के चारों ओर एक चक्कर पूरा करने में लेती है या 24 घंटे के एक दिन के 1/86400 भाग के बराबर है। इसका तात्पर्य है कि 24 घंटे का दिन 86400 सेकिंडों का बना हुआ है।

परन्तु घूमते समय पृथ्वी डगमगाती है। इस डगमगाहट के कारण घूमने के समय में उतार-चढ़ाव आता है। अतः सन् 1960 में यह निर्णय किया गया कि घूमने की अवधि को प्राथमिक इकाई (अर्थात् 24 घंटे का दिन) मानना छोड़ दिया जाए और (पृथ्वी द्वारा सूर्य के चारों ओर) की जाने वाली परिक्रमा अवधि की गणना का आधार बनाया जाए। अतः सेकिंड की पुनःपरिभाषा की गई जिसके अनुसार सेकिंड उस समय के 1/31,556925,9747 भाग के बराबर है जो पृथ्वी सूर्य की चारों ओर एक परिक्रमा करने में लेती है। इस प्रकार 365 दिन के एक वर्ष में 315 लाख सेकिंड होते हैं।

सन् 1967 में 'नाप-तोल के महा सम्मेलन' में सेसियम परमाणु घड़ी द्वारा निर्धारित सेकिंड को अन्तर्राष्ट्रीय इकाई पद्धति (एस. आई.) के अन्तर्गत समय की इकाई के रूप में मान्यता प्रदान की गई। परमाणु सेकिंड की परिभाषा के अनुसार यह वह समय है जो सेसियम इलेक्ट्रान द्वारा 9,192,631,770 चक्कर पूरा करने में लगाया जाता है।

यह परिभाषा जितनी विशुद्ध लगती है, असल में उतनी परिशुद्ध नहीं है क्योंकि सेसियम इलेक्ट्रान परिभाषित मान से कभी अधिक तो कभी उससे कम चक्कर लगाता है। परन्तु यह विचलन केवल चन्द चक्कर ऊपर-नीचे तक का ही है अर्थात् 91,920 लाख चक्करों में से चन्द चक्कर अधिक या कम होता है जो कि नगण्य है।

परमाणु घड़ी के दो विशेष लाभ है। न तो यह वायुमंडल की तरंगों से और न ही पृथ्वी के घूमने से होने-वाले उतार-चढ़ाव से प्रभावित होती है। दूसरी बात हाल के वर्षों में काफी महत्वपूर्ण बन गई है क्योंकि सन् 1970 के बाद से यह यह देखा गया है कि पृथ्वी के चक्कर के समय में प्रतिवर्ष एक सेकिंड की कमी होती जा रही है।

चूंकि यह अशुद्धि ध्यान में आ गई है अतः संसार भर की घड़ियों को वर्ष के प्रारंभ में ही ठीक किया जा रहा है ताकि उनका समय परमाणु घड़ी से मेल खा जाए। ब्रिटिश नेशनल फिजिकल लेबोरेटरी द्वारा विकसित परमाणु घड़ी बहुत ही शुद्ध समय बताती है। 300 वर्षों की अवधि में इसमें केवल एक सेकिंड का अन्तर आता है।

जनवरी 1972 से नाप-तोल के महासम्मेलन के मुख्यालय पेरिस में कोआर्डिनेटेड यूनिवर्सल टाइम (यू टी सी) नामक एक और नए सार्वत्रिक समय को समन्वित रूप से रखा जा रहा है। यह किसी अकेले परमाणु घड़ी पर आधारित नहीं है अपितु विश्वभर के 18 समय केन्द्रों की परमाणु घड़ियों के औसत पठन पर आधारित है।

यू.टी.सी. समय में प्रतिदिन सेकिंड के 10 करोड़वें भाग से अधिक घट-बढ़ नहीं होती। इसके कारण परमाणु घड़ियों की अत्यल्प अशुद्धि भी नगण्य रह गई है। आशा की जाती है कि यू. टी. सी. पद्धति में ढाई लाख वर्ष तक बिल्कुल सही समय मिलता रहेगा।

विभिन्न देशों की समय पद्धतियों का अन्तर्राष्ट्रीय आधार पर आपसी संबंध दर्शाने के लिए मानक समय पद्धति प्रारंभ की गई। इस प्रयोजन के लिए पृथ्वी को 24 देशान्तर जोनों में बांटा गया है जिनमें से प्रत्येक जोन एक घंटे या एक घंटे

के 15 डिग्रियों के बराबर होता है। शून्य जोन ग्रीनविच (लन्दन) में स्थित है जो जी एम.टी. या ग्रीनविच मीन टाइम देता है। 12 वें जोन की 180 वें याम्योत्तर रेखा यानी अन्तराष्ट्रीय तिथि रेखा (इन्टरनेशनल डेट लाइन) से बांटा जाता है।

इस लाइन के पूर्वी ओर के जोनों को घंटा चिह्न उपसर्ग के साथ एक से बारह तक की संख्या दी गई है जिनसे ग्रीनविच समय प्राप्त करने के लिए घटाए जाने वाले घंटों की संख्या का पता चलता है।

इसी प्रकार पश्चिम की ओर के जोनों को जमा चिह्न उपसर्ग के साथ समान रूप से संख्या दी गई है जिनसे ग्रीनविच समय प्राप्त करने के लिए जोड़े जाने वाले घंटों की सख्या का पता चलता है।

तिथि रेखा (डेट लाइन) एक सर्पिल रेखा है जो न्यूनाधिक रूप से 180 वीं. याम्योत्तर रेखा की सम्पाती है। जब तिथि रेखा (डेट लाइन) को पश्चिम की ओर क्रास किया जाता है तो तारीख को एक दिन बढ़ा देना चाहिए। जब लाइन को पूर्व की ओर क्रास किया जाता है तो तारीख को एक दिन घटा देना चाहिए। उत्तरी अक्षारा 48 डिग्री और 75 डिग्री के बीच यह रेखा कुछ मुड़ी हुई है जिसके परिणामस्वरुप सम्पूर्ण एशिया इस रेखा के पश्चिम की ओर पड़ता है।

ग्रीनविच माध्य समय

निम्नलिखित जोन ग्रीनविच माध्य समय से उतने घंटे आगे है जितना कि कोष्ठक में दिखाया गया है।

फिजी, न्यूजीलैंड आदि (12 घंटे), न्यू केलेडोनिया न्यू हेब्राइड्स आदि (11 घंटे), क्वींसलैंड तस्मानिया आदि (10), जापान, कोरिया आदि (9), चीन, हॉगकांग, फिलिपाइन्स आदि (8), सिंगापुर (7 1/2), जावा थाइलेण्ड आदि (7), बर्मा, कोकोस कीलिंग द्वीप समूह (6 1/2), बांग्लादेश (6), भारत, श्रीलंका अन्डमान-निकोबार द्वीपसमूह (5 1/2), पाकिस्तान (5), मारीशस सिसलीज आदि (4), ईरान (3 1/2), ईराक इथियोपिया आदि (3), टर्की, ग्रीस, बल्गारिया आदि (2), स्वीडन, नार्वे, डेनमार्क आदि (1)।

निम्नलिखित क्षेत्र ग्रीनविच समय से उतने घंटे पीछे हैं जितने कोष्टक में दिखाए गए हैं।

आइसलैंड, मेडीरा आदि (1), एज़ोरेस, केप वर्डे आदि (2), ग्रीनलैंड और पूर्वी ब्राजील (3), न्यूफाउन्डलैंड, लेब्रेडार फ्रेंच गिनी व उरुग्वे (3 1/2) कनाडा (68°W के पूर्व) ग्रीनलैंड (थूले क्षेत्र) पोर्टोरिको आदि (4), कनाडा (68°W) से 85°W तक), जमायका, बहामा, बहामा द्वीप, क्यूबा, हैती, पेरु, पनामा आदि (5), कनाडा (85°W से 102°W), कोस्टारिका, सेल्वाडोर होंडूरस, ग्वाटेमाला, निकारागुआ, अमेरिका के मध्य भाग और मैक्सिको के कुछ भाग (6), कनाडा 102°W से 120°W), अमेरिका के पहाड़ी राज्य और मैक्सिको के कुछ भाग (7), कनाडा (120°W के पश्चिम में), अलास्का (दक्षिणपूर्वी), अमेरिका के पश्चिमी राज्य और मैक्सिको के कुछ भाग (8), अलास्का (क्रास साउण्ड के उत्तरी भाग), यूकोन, क्रिसमस द्वीपसमूह (09) अल्यूशियन द्वीपसमूह, अलास्का (पश्चिमी तट), सामोआ, मिडवे द्वीप समूह (11)।

आजकल इस 24 घंटे वाले समय का इस्तेमाल विशेषकर रेलवे और अन्य परिवहन संगठनों द्वारा अधिकाधिक किया जा रहा है। इसका सबसे अधिक लाभ यह है कि इसके साथ 'पूर्वाह्न' और अपराह्न शब्द लगाना नहीं पड़ता। 24-घंटे की पद्धति में दिन शून्य घंटे वाली मध्यरात्रि से शुरु होता है और इसके बाद के घंटों को 0 से 23 तक संख्या दी जाती है।

समय परिरक्षण

समय के पालन में भारतीय अपने आलस्य के लिए जाने जाते है। समय पालन का अर्थ अपनी घड़ी को रेडियो से मिलाकर रखना है। भारत में समय के मूल्य को मुश्किल से महत्व दिया जाता है, लेकिन यह कहना कि यह विज्ञान का अति विकसित क्षेत्र है और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग में इसका महत्व है तो बहुत से लोगों को यह मजाक लगेगा।

सपूर्ण देश में आकाशवाणी के श्रोता समाचार प्रसारण के पहले पिप की आवाज से परिचित है, परन्तु बहुत कम ही लोग जानते होंगे कि यह मानक समय को सूचित करता है, जो प्रसारण समय के लिए बनाया गया है। दूरदर्शन पर मानक समय को देखा जा सकता है। दोनो प्रसारण समय भारतीय मानक समय (आई एस टी), जिनकी व्यवस्था और प्रसारण दिल्ली की राष्ट्रीय भौतिक पयोगशाला (ने.फी.लै.) से होता है।

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग में समय परिरक्षण अति विशिष्ट क्षेत्र है। समय पालन तथा राष्ट्रीय घटकों तक इसे पहुंचाने के लिए, उच्च तकनीक का उपयोग किया जाता है। 'दी ब्यूरो इंटरनेशनल डेस पोइसेट मेजर्स' (बी आई पी एम) एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन है जो जी.एम.टी. की व्यवस्था करती है। समय और बारंम्बारता सकेत विभिन्न केन्द्रों जैसे राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला को प्रदान करती है, जो अपनी घड़ी को बी.आइ.पी.एम. के समतुल्य रखते हैं। राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला की मानक इकाई में लगे वैज्ञानिक कहते है कि जिन्हें इसकी आवश्यकता है उन्हें इसको उपलब्ध कराये बिना समय परिरक्षण का कोई उपयोग नहीं है।

परिशुद्ध और यथार्थ समय का महत्व समय और बारम्बारता सकेत के प्रचार-प्रसार के अर्थ में है। संचार के साधन, नौकायन अन्तरिक्ष उड़ान, भूभौतिकी और रेडियो गणित ज्योतिष में इसका उपयोग होता है। समय और बारम्बारता के प्रचार के लिए, जिसका सम्बन्ध रेडियो प्रसारण से है, अधिकांश तकनीक उसी में लगे रहती है। यह एक प्रकार का 'रेडियो ट्रान्समीशन' है जो नौकायन या दूरदर्शन की व्यवस्था से सम्बन्धित तथा समर्पित है या उपयोगकर्ताओं के संकेत अभिप्रेत के रूप में होता है।

अभी तक राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला भूआधारित व्यवस्था का उपयोग कर रहा था, जो रेडियो तरंगों का उप आयन मंडलीय प्रसार करता है। वास्तव में भूआधारित तकनीक का उपयोग सम्पूर्ण संसार में लगभग तीन दशक तक होता रहा। इस व्यवस्था में अन्तर्निहित कमियां है, जिसके कारण उच्च परिशुद्धता के उपयोग जैसे अन्तरिक्ष यान उड़ान केन्द्र और रेडियो गणित ज्योतिष निरीक्षणशालाओं को समस्याएं होती है।

समय और वारम्बारता प्रसारण में वातावरणिक रेडियो शोर को उच्च वैण्ड में उपयोग किया जाता है। दूसरा, समय प्रसारण के लिए उपयोग किया गया वैण्ड का विस्तार बहुत संकीर्ण होता है। इतना होने पर भी सौर विस्तार और भूचुम्बकीय तूफान के कारण अनिश्चितता बनी रहती है।

इन समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए वैज्ञानिकों ने समय और वारम्बारता के प्रसारण के लिए सेटेलाइट आधारित व्यवस्था को विकसित किया है, इसके लिए भारत सर्वाधिक सुविधाजनक है, क्योंकि साधारणत: परिक्रमा पथ में मुश्किल से पृथ्वी के कुछ हजार कि.मी. ऊपर आयन मंडल थोड़ा ऊपर रहता है, जो पृथ्वी के अधिकांश भाग को आवृत्त कर लेता है। यह वातावरणिक शोर जिसे वारम्बारता के प्रसारण के लिए उपयोग किया जाता है तो शोर का स्तर प्राय: शून्य हो जाता है।

सेटेलाइट समय प्रसारण दो प्रकार का होता है – एकल मार्गीय और द्विमार्गिय। एकल मार्गीय प्रसारण में उपयोगकर्ता सेटलाइट द्वारा सीधे समय संकेत प्राप्त करता है। ये संकेत सेटेलाइट में लगे परमाणुविक घड़ी से उत्पन्न हो सकते है या सेटेलाइट संदेश वाहक द्वारा भूआधारित घड़ी से प्रसारित किये जाते हैं।

द्विमार्गीय प्रसारण में भू आधारित स्टेशन, जो सेटेलाइट द्वारा प्रसारण और दूसरा समय–संकेत को ग्रहण करने का कार्य साथ करते हैं। प्राय: द्विमार्गीय तुलना सारे प्रसारण को निकाल देता है, लेकिन द्विमार्गीय व्यवस्था के उपयोगकर्ता सीमित संख्या में हैं, जैसे राष्ट्रीय समय अनुरक्षण प्रयोग शालाएं जिन्हें किसी दूसरे ढंग से शुद्ध समय के प्रसारण का साधन उपलब्ध नहीं होता है।

राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला की प्रसारण व्यवस्था का 'इनसैट' में स्थित पृथ्वी पर का स्टेशन उत्तर प्रदेश के सिकंदराबाद में है। स्टेशन की सेशियम घड़ी को 'राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला' के मानक प्रयोगशाला की मास्टर घड़ी के समतुल्य रखा जाता है। स्टेशन के पास भी एक समय कोड जनरेटर है, जो सेटेलाइट के सहयोग से इसमें 'पीसी' द्वारा डाली गई सूचनाओं को इकट्ठा करता है और प्रत्येक घंटे का मूल्यांकन करता है। यह सब कम्प्यूटर द्वारा पूर्ण होता है। अधिग्रहण करने की व्यवस्था, तुरन्त समाप्त होने वाले परिवर्तन और कूटानुवाद से सुसज्जित रहता है, जो उस दिन के समय का प्रदर्शन करता है और सेटेलाइट की सहायता करता है।

राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला के मानक विभाग के वैज्ञानिक डा. ए. सेनगुप्ता के अनुसार, सम्पूर्ण अन्त: द्वीप में एक जैसी व्याप्ति, विश्वसनीयता, सतत समय की उपलब्धता, पूर्ण स्वचालित नियंत्रक, कूटानुवाद, वास्तविक समय, और वारम्बारता, स्थानान्तरण और निम्न अधिग्रहण कीमत, और स्तरीय की शुद्धता सेटेलाइट आधारित समय प्रसारण के लाभ हैं।

राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला के संगठन द्वारा अधिग्रहण व्यवस्था तकनीक का विकास किया गया, जिसे दो कम्पनियों को आर्थिक लाभ के लिए स्थानान्तरित किया गया है। डिश एन्टेना और समय जनरेटर सहित अधिग्रहण व्यवस्था की कीमत लगभग तीन लाख है। आर्थिक रूप से इस व्यवस्था की प्रगति से लगातर 'भारतीय मानक समय' प्राप्त कर सकता है।

समय के पारम्परिक उपयोगकर्ताओं जैसे रेडियो, दूरदर्शन केन्द्र और रेडियो गणित ज्योतिष प्रयोगशालाओं के अलवा सेटेलाइट आधारित समय प्रसारण व्यवस्था उपयोगकर्ताओं की विस्तृत किस्में पा सकेगा। इसमें रेलवे स्टेशन, विमान पत्तनम्, महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थान, राज्य विद्युत बोर्ड (पावरनेट वर्क के लिए) समकालिकता के लिए इसका उपयोग करेंगे।

यदि एक बार अधिग्रहण व्यवस्था की मांग बढ़ जाती है तो किसी भी दशा में सेटेलाइट द्वारा समय प्रसारण का भविष्य उज्जवल हो जायेगा और इनके साधनों की कीमतें एकाएक नीचे गिर जायेंगी।

अंक

आजकल जो अंक प्रतिदिन के प्रयोग में हैं, वे अरबी अंक कहलाते हैं क्योंकि अरब वालों से ही ये अंक यूरोप में पहुंचे। वास्तव में इनका प्रारंभ भारत में हुआ और इसलिए इन्हें भारतीय अंक कहना ही उपयुक्त है। शून्य की संकल्पना और अंक पद्धति (जिसमें दशमलव पद्धति भी शामिल है) अंक विज्ञान में भारत का योगदान है। अरबवासियों ने भारतीय पद्धति को अपनाया। यूरोप वासियों ने इसे अरबवासियों से प्राप्त किया। (देखिए विज्ञान की युगान्तरकारी घटनाएं)।

भारतीय गणित विद्या को अरबी स्रोतों से यूरोप तक पहुंचाने में जिन विद्वानों का प्रमुख हाथ रहा उनमें सबसे प्रसिद्ध है – पिसा के लिओनार्ड (सन 1202)। अन्य महत्वपूर्ण विद्वान हैं – सेविले के जान (1135) बाथ के एडेलार्ड (1142), चेस्टर के राबर्ट (1142), क्रिमोना के जेरार्ड (1240) और सेक्रोबोस्को (1242)।

रोमन अंक वे हैं जिनका इस्तेमाल प्राचीन रोमवासियों द्वारा किया जाता था। ये अंक, अक्षर हैं जिन्हें संख्याओं में परिवर्तित कर लिया गया था।

जैसे I = 1, V = 5, X = 10 आदि। ये अरबी अंक पद्धति के अनुसार नहीं चलते। रोमन अंक के सामान्य नियम इस प्रकार हैं:

(1) एक अक्षर की पुनरावृत्ति से उसके मूल्य की भी पुनरावृत्ति होती है। जैसे XX=10 + 10 = 20 (2) अपेक्षाकृत अधिक मूल्य वाले अक्षर के बाद एक अक्षर रखने से उसका मूल्य भी उसमें जुड़ जाएगा। जैसे: VI = 5 + 1 = 6

(3) अपेक्षाकृत अधिकमूल्य वाले अक्षर से पहले कोई अक्षर रखने से उसका मूल्य उसमें से घट जाएगा। जैसे: IV = 5 – 1 = 4

(4) किसी अंक के ऊपर एक 'डैश' चिह्न लगाने पर

उसके मूल्य में हजार गुणा वृद्धि हो जाएगी। जैसे $\overline{X} = 10 \times 1000 = 10,000$

अक्षर के रूप में इस्तेमाल किए जाने पर कुछ अरबी अंकों से काफी भ्रांति पैदा होती है। इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है बिलियन जिसका मूल्य अमरी... हजार मिलियन तथा बर्तानिया में दस लाख ... बराबर होता है।

अरबी अंक व उनके समतुल्य रोमन संख्याएं नी...

अरबी और रोमन

1	I	6	VI	11	XI	16	XVI	30	XXX	200	
2	II	7	VII	12	XII	17	XVII	40	XL	400	
3	III	8	VIII	13	XIII	18	XVIII	50	L	500	
4	IV	9	IX	14	XIV	19	XIX	90	XC	900	
5	V	10	X	15	XV	20	XX	100	C	1000	M

गुणक $\overline{V}$ 5000 $\overline{X}$ 10,000 $\overline{L}$ 50,000 $\overline{C}$ 100,000 $\overline{D}$ 500,000 $\overline{M}$ 1,000,0...

बड़े अंक

संख्या	अमरीका और फ्रांस	इंग्लैंड और अन्य यूरोपीय देश	भार...
1 और 5 शून्य	एक सौ हजार	एक सौ हज़ार	एक लाख
1 और 6 शून्य	मिलियन	मिलियन	दस लाख
1 और 7 शून्य	दस मिलियन	दस मिलियन	एक करोड़
1 और 8 शून्य	सौ मिलियन	सौ मिलियन	दस करोड़
1 और 9 शून्य	बिलियन	मिलियर्ड (हजार मिलियन)	सौ करोड़
1 और 12 शून्य	ट्रिलियन	बिलियन	अरब
1 और 15 शून्य	क्वाड्रिलियन	हज़ार बिलियन	–
1 और 18 शून्य	क्विनटिलियन	ट्रिलियन	–
और 21 शून्य	सैक्सटिलियन	हज़ार ट्रिलियन	–
और 24 शून्य	सैप्टिलियन	क्वाड्रिलियन	–
और 27 शून्य	आक्टिलियन	हज़ार क्वाड्रिलियन	–
और 30 शून्य	नानिलियन	क्विन्टिलियन	–
और 33 शून्य	डेसिलियन	हज़ार क्विन्टिलियन	–

अंतर्राष्ट्रीय मात्रक

वर्तमान शताब्दी के पूर्वार्ध में माप–तौल की दो ...णालियां व्यापक रूप से प्रचलित रहीं – इम्पीरियल और ...ट्रिक इम्पीरियल प्रणाली समूचे ब्रिटिश साम्राज्य में चल ... थी।

अमरीका सहित समस्त अंग्रेजी भाषी राष्ट्रों में इम्पीरियल ...ली का ही प्रचलन था। मीट्रिक प्रणाली फ्रांस एंव अन्य ...ीय देशों, उनके उपनिवेशों तथा अधीन क्षेत्रों में चलती थी। ...म्पीरियल प्रणाली का उद्‌गम प्राचीन एंग्लो–सैक्सन ...ों से हुआ था। माप–तौल के ये मात्रक कामचलाऊ थे ...ो सभी जगह प्राप्य मानकों पर आधारित थे – जैसे मानव ...थ। स्पष्ट है, इन्सान का हाथ कोई सही माप हरगिज़ ... सकता, क्योंकि व्यक्ति–भेद और स्थान–भेद की दृष्टि ...में फर्क आ जाता है।

...ूठे के पोर की दूरी इंच कहलाई। सम्राट एडगर के ... से लेकर उनके तने हुए हाथ की बड़ी उंगली के ... तक का फासला गज ठहराया गया। ज़मीन का वह परिमाण एकड़ स्थिर किया गया जितनी ज़मीन को बैलों के जोड़े ने एक दिन भर में जोता था। मील शब्द का संबंध रोमन सैनिकों के एक हज़ार कदमों की दूरी था, यह अंदाज़न 1618 गज की निकली। सिपाहियों के कदम हमेशा एक जैसे हों, यह जरूरी नहीं। लिहाज़ा, 1760 गज की दूरी को मील माना गया।

इस तरह के विलक्षण मात्रकों के संगुटीकरण से इम्पीरियल प्रणाली के माप–तौल विकसित किए गए। यद्यपि ये आधारभूत मात्रक सूक्ष्म रूप से निर्धारित हो चुके हैं, किन्तु उन्हें छोटे या बड़े मात्रकों में परिवर्तित करते हुए गणितीय यातना का अनुभव होता था। मिसाल के लिए एक मील $12 \times 3 \times 220 \times 8$ इंच होता है और एक लघु टन $16 \times 16 \times 14 \times 2 \times 4 \times 20$ ड्राम होता है।

इम्पीरियल प्रणाली के विपरीत, मीट्रिक प्रणाली सुस्पष्ट और सुविचारित है। फ्रांस ने इस प्रणाली को 1790 में अपनाया था और नेपोलियन द्वारा अन्य यूरोपीय देशों में

मीट्रिक माप–तोल की तालिका रेखीय माप

10	मिलिमीटर (मिमी)	=	1	सेंटीमीटर	(सेमी)
10	सेंटीमीटर	=	1	डेसीमीटर	(डेमी)
10	डेसिमीटर	=	1	मीटर	(मी)
10	मीटर	=	1	डेकामीटर	(डेकामी)
10	डेकामीटर	=	1	हेक्टोमीटर	(हेमी)
10	हेक्टोमीटर	=	1	किलोमीटर	(किमी)

क्षेत्रीय माप

100	वर्ग मिलिमीटर	=	1	वर्ग सेंटीमीटर
10,000	वर्ग सेंटीमीटर	=	1	वर्ग मीटर
100	वर्ग मीटर	=	1	एअर
100	एअर	=	1	हेक्टेअर
100	हेक्टेयर	=	1	वर्ग किलोमीटर (वर्ग कि.मी.)

आयतन माप

1	लिटर	=	0.001	घनमीटर	
10	मिलिलिटर (मिलि)	=	1	सेंटीलीटर	(सेली)
10	सेंटीलिटर	=	1	डेसीली	(डेली)
10	डेसिलिटर	=	1	लीटर	(ली)
10	लिटर	=	1	डेकालीटर	(डेकाली)
10	डेकालिटर	=	1	हेक्टालीटर	(हेली)
10	हेक्टो लिटर	=	1	किलोलीटर	(किली)

तोल

1	मिलिग्राम (मिग्रा)	=	1	सेंटीग्राम	(सेग्रा)
10	सेंटीग्राम	=	1	डेसीग्राम	(डे ग्रा)
10	डेसिग्राम	=	1	ग्राम	(ग्रा)
10	ग्राम	=	1	डेकाग्राम	(डेका ग्रा)
10	डेकाग्राम	=	1	हेक्टाग्राम	(हे ग्रा)
10	हेक्टोग्राम	=	1	किलोग्राम	(कि ग्रा)
10	किलोग्राम	=	1	मेट्रिकटन	(ट)

घन माप

1000	घन मिलीमीटर	=	1	घन सेंटीमीटर
1000	घन सेंटीमीटर	=	1	घन डेसीमीटर
1000	घन डेसीमीटर	=	1	घन मीटर

सरल परिवर्तन तालिका भारतीय मात्रक

तोले का ग्राम में

तोला	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ग्राम	11.66	23.33	34.99	46.66	58.32	69.98	81.65	93.3	104.97	116.64

सेर का किलोग्राम में

सेर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
किलोग्राम	0.93	1.87	2.80	3.73	4.67	5.60	6.53	7.46	8.40	9.33

मन का क्विंटल में

मन	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
क्विंटल	0.37	0.75	1.12	1.49	1.87	2.24	2.61	2.99	3.36	3.73

माप–तौल की द्वि–परिवर्तन तालिका

नोट: मध्यवर्ती संख्याए (1 से 100) संदर्भानुसार अपने दोनों ओर के एक या दोनों कालमों को द्योतित करती है

यथा: सेंटीमीटर = 0.394 इंच और 1 इंच = 2.540 सेंटीमीटर

1 मीटर = 1.094 गज और 1 गज = 0.914 मीटर

1 किलोमीटर = 0.621 मील और 1 मील = 1.609 किलोमीटर

सेंटीमीटर		इंच	मीटर		गज	किलोमीटर		मील
2.540	1	0.394	0.914	1	1.094	1.609	1	0.621
5.000	2	0.787	1.829	2	2.187	3.219	2	1.243
7.620	3	1.181	2.743	3	3.281	4.828	3	1.864
10.160	4	1.575	3.658	4	4.374	6.437	4	2.485
12.700	5	1.969	4.572	5	5.468	8.047	5	3.107
15.240	6	2.362	5.486	6	6.562	9.656	6	3.728
17.780	7	2.756	6.401	7	7.655	11.266	7	4.350
20.320	8	3.150	7.315	8	8.749	12.875	8	4.971
22.860	9	3.543	8.230	9	9.843	14.484	9	5.592
25.400	10	3.937	9.144	10	10.936	16.094	10	6.214
127.000	50	19.685	45.720	50	54.681	80.468	50	31.068
254.000	100	39.370	91.439	100	109.361	160.936	100	62.136

हेक्टेआर		एकड़	वर्ग किलोमीटर		वर्ग मील	किलो ग्राम		ओ.पौं
0.404	1	2.471	2.590	1	0.386	0.454	1	2.205
0.809	2	4.942	5.180	2	0.772	0.907	2	4.409
1.214	3	7.413	7.770	3	1.158	1.361	3	6.614
1.619	4	9.884	10.360	4	1.544	1.814	4	8.818
2.023	5	12.355	12.950	5	1.931	2.268	5	11.023
2.428	6	14.826	15.540	6	2.317	2.722	6	13.228
2.833	7	17.298	18.130	7	2.703	3.175	7	15.432
3.237	8	19.769	20.720	8	3.089	3.629	8	17.637
3.642	9	22.240	23.310	9	3.475	4.082	9	19.842
4.047	10	24.711	25.900	10	3.861	4.536	10	22.046
20.234	50	123.554	129.498	50	19.306	22.680	50	110.231
40.468	100	247.108	258.995	100	38.611	45.359	100	220.462

मीट्रिक टन		दीर्घ टन	मीट्रिक टन		लघु टन	लीटर		पिंट
1.016	1	0.984	0.907	1	1.102	0.568	1	1.760
2.032	2	1.968	1.814	2	2.205	1.136	2	3.520
3.048	3	2.953	2.722	3	3.307	1.705	3	5.279
4.064	4	3.937	3.629	4	4.409	2.273	4	7.039
5.080	5	4.921	4.536	5	5.512	2.841	5	8.799
6.096	6	5.905	5.443	6	6.614	3.409	6	10.559
7.112	7	6.889	6.350	7	7.716	3.978	7	12.319
8.128	8	7.874	7.257	8	8.818	4.546	8	14.078
9.144	9	8.858	8.165	9	9.921	5.114	9	15.838
10.161	10	9.842	9.072	10	11.023	5.682	10	17.598
50.803	50	49.211	45.359	50	55.116	28.412	50	87.990
110.605	100	98.421	90.718	100	110.231	56.824	100	175.990

लीटर	गलन	लीटर		गलन	
4.546	1	0.220	31.822	7	1.540
9.092	2	0.440	36.368	8	1.760
13.638	3	0.660	40.914	9	1.980
18.184	4	0.880	45.460	10	2.200
22.730	5	1.100	227.298	50	10.999
27.276	6	1.320	454.596	100	21.997

इसका प्रचार हुआ था। फ्रांस द्वारा स्वीकृत इस नई प्रणाली में दूरी का एकक मीटर है जो कि पृथ्वी के ध्रुववृत पाद के दस लाखवें अंश के बराबर होता है। इसमें तौल का एकक किलोग्राम है जो कि एक घन डेसीमीटर (0.1 घन मीटर) पानी के द्रव्यमान के समान निर्धारित है। एक घन डेसीमीटर पानी का आयतन एक लिटर कहलाता है। सन् 1870 में फ्रांस ने एकीकृत मीट्रिक प्रणाली का विकास करने के लिए विभिन्न देशों का एक सम्मेलन बुलाया था। 1875 में पेरिस में मीटर के समझौते पर हस्ताक्षर हुआ। इस समझौते के फलस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय माप–तौल का ब्यूरो कायम किया गया। साथ ही समय–समय मिलकर आवश्यकतानुसार नए मात्रकों के निश्चय के लिए माप–तौल का महासम्मेलन भी स्थापित हुआ।

सन् 1889 में प्लेटिनम–इरिडियम एलाय से निर्मित एक छड़ मानक किलोग्राम के रूप में पुनर्निर्धारित हुआ। यह छड़ पेरिस की एक तिजोरी में सुरक्षित रखी गयी है।

आज विश्व के लगभग सभी राष्ट्र मीट्रिक प्रणाली को अपना चुके हैं*।

1954 में आयोजित, माप–तौल महासम्मेलन ने मीट्रिक प्रणाली को अंतर्राष्ट्रीय रूप से उपयुक्त प्रणाली के रूप में अपनाया गया। 1960 में इसे 'सिस्टम इंटरनेशनल डी यूनिट्स' अर्थात् अंतर्राष्ट्रीय मात्रक प्रणाली का नाम दिया गया।

यह प्रणाली लंबाई, द्रव्यमान, समय और तापमान के चार स्वतंत्र बुनियादी मात्रकों पर टिकी हुयी है। लंबाई और द्रव्यमान के मात्रक क्रमश: मीटर और किलोग्राम है। समय का मात्रक सेकिंड है जो कि परमाणु घड़ी के रूप में निर्धारित है। तापमान का मात्रक सेलसियस डिग्री (सेंटिग्रेड) या केल्विन है और इसके द्वारा फारेनहाइट डिग्री का प्रतिस्थापन हो गया है। सम्मेलन ने समय मात्रक मिनट, घंटा, आदि के साथ तथा डिग्री, मिनट, सेकेंड जैसे कोणीय मापों तथा नाटिकल मील नाट आदि सुप्रतिष्ठित मात्रकों को भी स्वीकार किया।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुए चमत्कारपूर्ण विकास के फलस्वरूप सम्मेलन लंबाई, द्रव्यमान, समय आदि मापों के मात्रकों को सूक्ष्म रूप से निर्धारित करने पर बाध्य हो गया। इसके अतिरिक्त, सम्मेलन के सामने माप के नए मात्रक स्वीकृत कर उन्हें पारिभाषित करने की आवश्यकता उपस्थित हुई। इस दिशा में सम्मेलन के प्रयासों के फलस्वरूप जटिल एवं उच्च स्तरीय तकनीकी अंतराष्ट्रीय प्रणाली का विकास हुआ। इन परिभाषाओं की अभिव्यक्ति ऐसी विशिष्ट वैज्ञानिक शब्दावली में निबद्ध है जो आम आदमी की पहुंच के बाहर है। इस प्रणाली की संक्षिप्त रूपरेखा तालिकाओं के रूप में नीचे दी जा रही है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली के मात्रक तीन वर्गों में बांटे जा सकते हैं।

1. आधारमात्रक जो उस प्रणाली की बुनियाद बनते हैं।

2. पुरकमात्रक जो आधार मात्रकों के संबंधों से बनते हैं।

* 1971 में [illegible] मीट्रिक [illegible] 1 [illegible] निश्चय किया [illegible] पूर्ण रूप से मीट्रिक [illegible] सन् 1 [illegible] मीट्रिक [illegible] सम्मेलन ने [illegible] [illegible]।

संपूरक मात्रक

रेडियन–समतलीय कोण	रेड	1960
स्टेरेडियन–घन कोण	स्टेरे	1960

सरल व्यंजकों से व्यक्त आधार मात्रक

परिमाण	नाम	चिह्न
क्षेत्र	वर्ग मीटर	मी2
आयतन	घन मीटर	मी3
गति	मीटर प्रति सैकेंड	मी/से
सघनता	किलोग्राम प्रति घन मीटर	किग्रा/मी3
विशिष्ट आयतन	घन मीटर प्रति किलोग्राम	मी3/कि. ग्रा.
ज्योतिर्मयता	केन्डला प्रति वर्ग मीटर	केंडे/मी2

3. संपूरकमात्रक जो कोणीय मापों में प्रयुक्त होते हैं।

इस प्रणाली की विशिष्टता उसकी संसक्तता में है। मात्रकों के संसक्त समुच्चय का लक्षण यह है कि किन्हीं दो राशियों के गुणनफल या भागफल से परिणामी राशि का मात्रक प्राप्त हो जाता है। दूसरे शब्दों में प्रणाली के सभी मात्रक एक दूसरे से संबद्ध हैं और दूसरे मात्रकों के संदर्भ में व्याख्येय भी हैं।

आधार मात्रकों को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया जा सकता है :

मीटर

फ्रांस स्थित अंतर्राष्ट्रीय संगठन माप–तौल के अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन ने मीटर की एक नई परिभाषा देने का निश्चय किया था। अब मीटर पथ की वह दूरी है जिसमें प्रकाश निर्वात स्थान में एक सैकेंड के 1/299,792,458 अंश के समयांतराल में यात्रा करने के लिए लेता है।

किलोग्राम

यह किलोग्राम के द्रव्यमान का वह [illegible] पेरिस के समीप अंतर्राष्ट्रीय माप–तौल ब्यूरो की [illegible] है। सभी आधार मात्रकों में द्रव्यमान का मात्रक ही [illegible]

अंतर्राष्ट्रीय मात्रक

आधार मात्रक	चिह्न	[illegible]
मीटर–लंबाई का मात्रक	मी	[illegible]
किलोग्राम–द्रव्यमान का मात्रक	[illegible]	[illegible]
सैकेंड–समय का मात्रक	से	[illegible]
ऐम्पियर–विद्युत-धारा का मात्रक	[illegible]	[illegible]
केल्विन–[illegible] का मात्रक	[illegible]	[illegible]
केन्डेला–[illegible] का मात्रक	[illegible]	[illegible]
मोल–पदार्थ की [illegible]		

* [illegible]

: जिसके नाम के पहले ऐतिहासिक कारणवश पूर्वलग्न किलो) लगा है ।

सेकिंड

सीसियम 133 परमाणु की मूल अवस्था के दो अति सूक्ष्म स्तरों के बीच जो संक्रमण होता है उसके संगत विकिरण के 9192631770 आवर्तन-काल की समयावधि को सैकंड कहते हैं ।

ऐम्पीयर

यदि अनंत लंबाई के और उपेक्षणीय अनुप्रस्थ प्रतिच्छेद (क्रास सेक्शन) वाले दो सीधे और समांतर चालक एक मीटर की दूरी पर रखे जाएं तो इन चालकों के बीच जो धारा प्रति मीटर 2 × 10-7 न्यूटन बल उत्पन्न करती है उसे एम्पीयर कहते हैं।

केल्विन

पानी के त्रिगुण बिंदु के ऊष्मागतिकीय तापमान का 1/273.16 वां अंश केल्विन कहलाता हैं ।

कैन्डेला

प्लाटिनम के हिमांक तापमान पर और 101.325 न्यूटन प्रति वर्ग मीटर दाब पर किसी कृष्णिका (ब्लैक बाडी) के 1/600000 वर्ग मीटर पृष्ठ पर लंब दिशा में मापी गई ज्योति तीव्रता को कैन्डेला कहते है ।

मोल

किसी तरल पदार्थ की उस मात्रा को मोल कहते है जितनी कि 0.021 कि.ग्रा. कार्बन-12 के परमाणु में निहित मूल सत्ता के बराबर है ।

व्युत्पन्न मात्रक और विशिष्ट नाम

मात्रक	नाम	चिह्न
आवृत्ति	हर्ट्ज	हज़
बल	न्यूटन	न्यू
दबाव	पास्कल	का
विद्युत की मात्रा	कोलम्ब	का
विद्युत तनाव	वोल्ट	वो
विद्युत प्रतिरोध	ओहम	ह्ल
ज्योति फ्लक्स	ल्यूमेन	ल्यू
प्रदीपन	लक्स	लस

संपूरक मात्रकों में (1) रेडियन-समतलीय कोण और (2) स्टेरेडियन – घन कोण, आते है ।

रेडियन

रेडियन वह समतलीय कोण है जिसका शीर्ष किसी वृत्त के केन्द्र पर हो तो वृत्त की परिधि में कोण द्वारा त्रिज्या के बराबर चाप कट जाता है ।

स्टेरेडियन

स्टेरेडियन वह घन कोण है जिसका शीर्ष किसी गोलक के केन्द्र पर हो तो गोलक के पृष्ठ पर कोण द्वारा उस पृष्ठ के बराबर क्षेत्रफल कट जाता है, जितना कि गोलक को त्रिज्या पर बने हुए वर्ग का क्षेत्रफल है ।

गुणन और भिन्न

गुणन और भिन्न उचित पूर्व लग्न द्वारा सूचित किये जाते हैं। 1000 तक के गुणन निम्नलिखित पूर्व लग्नो द्वारा सूचित होते हैं। डेका (10), हेक्टो (100) और किलो (1000) एक हजार तक के भिन्न इस प्रकार व्यंजित होते हैं: डेसि (1/10), सेंटि (1/100), और मिलि (1/1000) ।

1000 के ऊपर के गुणनों तथा भिन्नों को व्यंजित करने के लिए निम्नलिखित पूर्वलग्न स्वीकृत किए गए हैं ।

गुणन

टेरा (टी)	=	10^{12}	(1 के बाद 12 शून्य)
गिगा (जी)	=	10^{9}	(1 के बाद 9 शून्य)
मेगा (एम)	=	10^{6}	(1 के बाद 6 शून्य)
किलो (कि)	=	10^{3}	(1 के बाद 3 शून्य)
हेक्टो (एच)	=	10^{2}	(1 के बाद 2 शून्य)
डेका (डा)	=	10^{1}	(1 के बाद 1 शून्य)

भिन्न

डेसी	=	10^{-1}	(.1)
सेंटी	=	10^{-2}	(.01)
मिली	=	10^{-3}	(0.001)
माइक्रो	=	10^{-6}	(दशमलव के बाद 5 शून्य और 1)
नैनो	=	10^{-9}	(दशमलव के बाद 8 शून्य और 1)
पाइको	=	10^{-12}	(दशमलव के बाद 11 शून्य और 1)
फेमटो	=	10^{-15}	(दशमलव के बाद 14 शून्य और 1)
ऐट्टू	=	10^{-18}	(दशमलव के बाद 17 शून्य और 1)

इस प्रकार एक किलोमीटर 1000 मीटर है और एक मेगा-मीटर 1,000,000 मीटर है जबकि एक मिलिमीटर 0.001 मीटर है और एक माइक्रोमीटर 0.000,001 मीटर है ।

संकेतन, प्रयोग किए जानेवाले प्ररूप, पूर्वलग्न, चिह्न आदि के बारे में विस्तृत नियम बनाए गए हैं । चिह्नों के बाद पूर्ण विराम नहीं लगाया जाता, न ही उनमें बहुवचन लगते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के सहायक अंग के रूप में गठित माप-तौल की अंतर्राष्ट्रीय समिति ने कुछ मात्रकों के प्रयोग का मान्यता प्रदान की जो सही अर्थ में अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली का भाग तो नहीं थे, परन्तु व्यापक रूप से प्रचलन में थे । कुछ सामान्य मात्रक तथा उनके सम-तुल्य अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली के मात्रक नीचे दिए जा रहे हैं ।

अंतर्राष्ट्रीय समतुल्य मात्रक

लंबाई

1 ऐंग्स्टम	:	0.1	नानो मीटर (ना)
1 चेन		20.12	मीटर (मी)

1 इंजीनियर चेन	30.48	"
1 फैदम	1.829	"
1 फर्लांग	0.201 2*	किलोमीटर (किमी)
1 फुट	0.304 8*	
1 इंच	25.4	मिलीमीटर (मिमी)
1 लिंक	0.201 2*	मीटर (मी)
1 मील	1.609	किलोमीटर (किमी)
1 नाटिकल मील	1.852	"

अंतर्राष्ट्रीय

1 नाटिकल मील तार	1.855	"
1 नाटिकल मील इंग्लैंड		1.853"

क्षेत्र

1 एकड़	4047	वर्ग मीटर
1 वर्ग फुट	929.0	वर्ग सेंटीमीटर
1 वर्ग मील	2.599	वर्ग किलोमीटर
1 वर्ग गज	0.836 1*	वर्ग मीटर

आयतन

1 घन फुट	28.32	घन डेसीमीटर
1 घन इंच	16.39	घन सेंटीमीटर
1 तरल आउंस	28.41	"
1 गैलन, इम्पीरियल	4.546	घन डेसीमीटर
1 गैलन, अमरीका	3.785	"
1 पिंट, इम्पीरियल	0.586 3*	"

द्रव्यमान

1 ग्रेन	64.80	मिलिग्राम
1 हंड्रेड वेट	50.80	किलोग्राम
1 मन	37.32	"
1 आउंस	28.35	ग्राम
1 पौंड	0.453 6*	किलोग्राम
1 क्विंटल	100	"
1 सेर	0.9333 1*	"
1 तोला	11.66	ग्राम
1 टन	1.06	टन
1 टन (अमरीका)	0.907 2*	

वेग

1 फुट प्रति मिनट	0.005 08*	मीटर प्रति सैकंड
1 फुट प्रति सैकंड	0.304 8*	मीटर प्रति सैकंड
1 इंच प्रति सेकेंड	25.4	मिलि मीटर प्रति सैकंड
1 नाट	0.514 4*	मीटर प्रति सैकंड
	1.852	किमी प्रति घंटा
1 नाट (इंग्लैंड)	0.514 7*	मीटर प्रति सैकंड
	1.853	किमी प्रति घंटा
1 मील प्रति घंटा	0.447 0*	मीटर प्रति सैकंड
	1.609	किमी प्रति घंटा

ईंधन की खपत

1 गैलन प्रति मील	2.825	लिटर प्रति किलोमीटर
1 अमरीकी गैलन प्रति मील	2.352	"
1 मील प्रति गैलन	0.354 0*	कि.मी. प्रति लिटर
1 मील प्रति अमरीकी गैलन	0.425 1*	किलो मीटर प्रति लिटर

* अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली के संकलन-नियमों में एक यह है कि जब संख्यात्मक मान तीन अंकों से अधिक का हो जाए तो अंकों को दशमलव के बाद या पूर्व तीन-तीन के वर्गों में बांट कर अलग किया जाएगा। अलग करने के लिए तीन अंकों के बाद एक स्थान छोड़ देना चाहिए न कि अल्प विराम देकर अलग किया जाए, जैसा कि सामान्यतः किया जाता है। उपर्युक्त तालिका में मद 5 पर दशमलव के तीन अंकों के बाद स्थान छोड़ा गया है (0 304, 8 के बजाए 0 304 8) इस प्रकार जहां स्थान छूटे हैं, अल्प-विराम की तरह समझा जाए।

चिकित्सा

संसार भांति-भांति की चिकित्सा-पद्धतियों से संपन्न है- एलोपैथी, होम्योपैथी, आयुर्वेद, अरबी, मिस्री, ग्रीको-रोमन आदि। जहां पाश्चात्य चिकित्सा-पद्धति बहुमुखी विकास-प्रक्रिया से घिरी हुई, आयुर्वेद आदि पूर्वी पद्धतियों में उल्लेखनीय अमोघता के प्रति जागरूकता की भावना विकसित हो रही है।

मिस्री, बेबिलोनी, भारतीय तथा चीनी आदि सभी प्राचीन सभ्यताओं ने अपनी चिकित्सा-पद्धति का विकास किया था। मिस्र ने इस क्षेत्र में सर्वप्रथम पहल की और उसे सफलता भी मिली। ईसा पूर्व तृतीय सहस्राब्दी में ही मिस्र में एक सुविकसित चिकित्सा-पद्धति कायम हो गई थी।

हमारे पास बेबिलोनी चिकित्सा-पद्धति के बारे में विशेष जानकारी नहीं है। सिंधु घाटी सभ्यता के बारे में और भी कम जानते हैं। भारतीय पद्धति, हमारी जानकारी के अनुसार, ऋग्वेद-काल (ई.पू. 2000) से शुरू होती है। चीन में सर्वप्रथम ज्ञात वैद्यक-ग्रंथ ई.पू. 450 का है।

अन्य प्राचीन पद्धतियों के समान ही, मिस्री पद्धति अंधविश्वास और जादू-टोने के दबाव से आक्रांत थी। फिर भी इस पद्धति ने अनेक उपचार विकसित किए जो आज तक अमोघ साबित हुए हैं। मिस्र के चिकित्सक दर्दनाशक दवाओं तथा [illegible] औषधियों से भलीभांति परिचित थे। रोग-शमन के गु[illegible] पूर्ण खुरासानी अजवाइन का प्रथम प्रयोग मिस्री वैद्यों ने [illegible] था। स्कर्वी रोग तथा अंतड़ियों की बीमारियों के इला[illegible] प्रयुक्त प्याज़ पुराना मिस्री नुस्खा है।

चीनी चिकित्सा पद्धति सदियों पुरानी होगी, तभी तो ई. पू. 50 के लगभग चीन का पहला वैद्यक-ग्रंथ निकला था। भारतीय ऋग्वेद और बाद के अथर्ववेद के विपरीत चिकित्सा के क्षेत्र में एक विस्तृत विवेचन इस ग्रंथ में मिलता है जिसकी तुलना भारत की सुश्रुत संहिता या चरक संहिता से की जा सकती है। इसमें अन्य निदानों के साथ एक्युपंक्चर के संबध का विस्तृत वर्णन भी मिलता है जिसकी चर्चा इन दिनों सारे विश्व में हो रही है। छठी और नौवीं सदी के बीच में चीनी चिकित्सा-पद्धति, जो हान-यी के नाम से प्रसिद्ध है, कोरिया, जापान और दक्षिण पूर्वी एशिया के कई भागों में व्याप्त हो गई थी।

प्राचीन चीन ने अनेक उपचारों को विकसित किया था जिनमें से कई आज तक चले आ रहे हैं। खांसी को शांत करनेवाली इफेडरा बूटी 4000 वर्ष पहले ही चीनियों को ज्ञात थी। जुलाब के रूप में रूवार्ब का प्रयोग चीन में ही पहले-पहल हुआ था। कृमि को दूर करने के लिए कूष्मांड-बीजों के उपचार का विधान चीनियों की देन है। आजकल यह घेंघा-बुखार में भी प्रभावपूर्ण साबित हुआ है।

ग्रीको-रोमन पद्धति कई हद तक मिस्री पद्धति से विकसित हुई थी। इस पद्धति के अनेक उपचारों का स्रोत मिस्री पद्धति है। वैद्यक को रूढ़िवाद और जादू-टोने से मुक्त करने का क्रान्तिकारी कदम उठाने के लिये हमें मिस्रियों का शुक्रगुजार होना चाहिए। प्रसिद्ध यूनानी चिकित्सक हिपोक्रेट्स ने, जो कि पश्चिम में चिकित्सा शास्त्र के जनक माने जाते हैं। चिकित्सा में जादू-टोने और मंत्र-तंत्र की निंदा की। उन्होंने चिकित्सकों के लिए आचार-संहिता बनाई। हिपोक्रेट्स के साथ वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति का उदय हुआ।

अरब के चिकित्सकों ने भारतीय चिकित्सा पद्धति और ग्रीको-रोमन पद्धति का सश्लेषण करके चिकित्सा-विज्ञान में क्रांतिकारी परिवर्तन किया था। उन्होंने यह ज्ञान यूरोप को प्रदान किया। यूरोप में अरबी औषधियों का व्यापक एव चिरस्थायी प्रभाव पड़ा। अरब विद्वान अविसेन्ना (11 वीं सदी ई) द्वारा रचित 'कैनन' यूरोप में चिकित्सा-शास्त्र के छात्रों के लिए प्रारंभिक पाठ्य पुस्तक के रूप में काम आयी और 17वीं सदी तक यही पुस्तक प्रयोग में रही।

मुगल बादशाहों की हुकूमत में अरबी दवाइयां भारत में आई और यूनानी पद्धति के नाम से इस देश में दृढ़ मूल हो गई। इसकी वजह यह थी कि प्राचीन भारतीय और नई यूनानी पद्धति में कई समानताएं थीं। यूनानी शब्द संस्कृत के यवन शब्द से, जिसका अर्थ ग्रीक है, व्युत्पन्न है। यूनानी चिकित्सा-पद्धति आज तक भारत में प्रचलित है। आयुर्वेद नाम से विख्यात भारतीय पद्धति का ई.पू. 2000 में ही प्रादुर्भाव हो गया था। आयुर्वेद संस्कृत का एक शब्द है जिसका अर्थ है जीवन का विज्ञान। वस्तुतः यह शब्द दो संबद्ध भावों को अभिव्यक्त करता है – जीवन का विज्ञान और जीने की कला।

एलोपैथी या होम्योपैथी के विपरीत आयुर्वेद किसी विशेष चिकित्सा-पद्धति पर भरोसा नहीं रखता। आयुर्वेद पद्धति के उपचार में एलोपैथी, होम्योपैथी और प्राकृतिक चिकित्सा के सभी सिद्धान्त समाविष्ट हैं। भारतीय चिकित्सा की सर्केंद्रीय परिषद के अध्यक्ष पंडित शिव शर्मा कहते हैं, 'इस प्रकार, होम्योपैथी का अफीम जो कब्ज का निवारण करता है और एलोपैथी का अफीम जो कब्ज पैदा करता है, दोनों ही आयुर्वेद चिकित्सा-पद्धति में सम्मिलित हैं। आयुर्वेद के अनुसार शरीर-रचना-तंत्र में त्रिविध दोष रहते हैं – वात, पित्त और कफ जिनका शाब्दिक अर्थ वायु, पित्त और श्लेष्मा है। परन्तु इनकी व्याप्ति कहीं अधिक है यहां तक कि इन्ही के आधार पर शरीर का संपूर्ण क्रिया व्यापार चलता है।

उत्तम स्वास्थ्य से तात्पर्य है इन त्रि-दोषों का सुंदर सतुलन। मात्र एक दोष के साथ व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं। शरीर में इनमें से किसी दोष की प्रधानता शरीर-रचना के प्रकार को सूचित करता है। इसके आधार पर मानवों को तीन मन शारीरिक पकारों में विभाजित किया गया है – वातप्रकृति, पित्तप्रकृति और कफप्रकृति।

आयुर्वेद चिकित्सक रोगी का परीक्षण करते हुए दोषों की मात्रा का मूल्याकन करता है और देखता है कि इनमें से किस दोष का आधिक्य है। इसके आधार पर आवश्यक औषधि, आहार-विहार के उपचार द्वारा शारीरिक असंतुलन को सही कर देता है।

हेनिमन ने अपनी चिकित्सा-पद्धति होम्योपैथी से अलग पहचान कराने के लिए पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति का नाम एलोपैथी रखा। यह ग्रीक शब्द 'एलोज' से उत्पन्न हुआ। एलो का अर्थ 'अन्य' है जिसका निहितार्थ है कि अन्य औषधियों द्वारा रोगों का उपचार। इसका तात्पर्य यह

चिकित्सा शास्त्र के क्षेत्र में ऐतिहासिक घटनाएं

प्रणाली/आविष्कार/खोज	तिथि	आविष्कर्ता/लेखक	देश
आयुर्वेद	2000-1000 ई.पू.	आत्रेय	भारत
पाश्चात्य वैज्ञानिक पद्धति	460-370 ई.पू.	हिपोक्रेटस	यूनान
योग	200-100 ई.पू.	पतंजलि	भारत
अष्टांग हृदय	550 ई.पू.	वाग्भट	भारत
सिद्धयोग	पु. 750 ई.	वृदकुंट	भारत
शरीर-विज्ञान कीमियो*	1316	मोंडिनो	इटली
रसायन चिकित्सा	1493-1541	परासेल्सस	स्विट्जरलैंड

* शरीर विच्छेदन पर पहली पुस्तक

निकलता है कि रोग लक्षणों के प्रभाव के विपरीत दवाओं का प्रयोग एलोपैथी में होता है । ग्रीक शब्द 'होमोज़' से व्युत्पन्न 'होम्यो' का अर्थ है, रोग लक्षणों के समान असर करने वाली दवाओं से रोग का उपचार। दूसरे शब्दों में होम्योपैथी (शाब्दिक अर्थ–समान पीड़ा) 'समं समेन शाम्यति' (सम से सम का उपचार होता है) के सिद्धांत पर आधारित है जबकि एलोपैथी 'विषम विषमेन शाम्यति' के सिद्धान्त पर चलती है ।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान

संक्रामक जीवों द्वारा पैदा होने वाली अधिकांश बीमारियां दवाओं से ठीक की जा सकती है । बहुतों को टीका–लगाकर रोका जा सकता है तथा चेचक जैसी कुछ बीमारियों को पूरे तौर पर उन्मूलित किया जा चुका है । लेकिन एड्स (एक्वायर्ड इम्यूनो डिफिसिएन्सी सिन्ड्रोम) जैसी नई बीमारियां चिकित्सा विज्ञान को नई चुनौती दे रही हैं । एड्स का पहला मरीज 1981 में अमरीका में प्रकाश से आया था तब से आज तक लगभग 175 देशों में एड्स का प्रसार हो चुका है विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार पूरी दुनिया में लगभग एक करोड़ व्यक्ति एड्स से संक्रमित हुए हो सकते हैं, जिसका 80 प्रतिशत मात्र 10 देशों में होंगे। इनमें अमेरिका (कुल जनसख्या का 0.04 प्रतिशत) पश्चिमी यूरोप मध्य अफ्रीका (उदाहरण स्वरूप सायर में कुल जनसंख्या का 3.5 पतिशत) दक्षिण अमेरिका (विशेष रूप से ब्राजील) और कनाडा आदि शामिल हैं । भारत में हजारों एड्स संक्रमित व्यक्तियों का अभी तक पता चल चुका है । सबसे ज्यादा प्रभावित लोग महाराष्ट्र व तमिलनाडु में पाये गये हैं । एड्स की उत्पत्ति ह्यूमन इम्यूनो डिफीसिएन्सी वायरस (एच. आई. वी) से होती है जो प्राथमिक रूप से रक्त में पायी जाने वाली टी–4 लिम्फोसाइट नामक कोशाओं को नष्ट कर देते है । यह कोशाएं शरीर को प्रतिरोध शक्ति पदान करती है और इनके निष्प्रभावी हो जाने से रोग संक्रमण के प्रति शरीर की प्रतिरोध शक्ति कम हो जाती है। और इस दशा में सामान्य रूप से नुकसान न पहुचा पाने वाले रोगाणु भी शरीर पर मरणातक संक्रमण कर बैठते हैं । एक बार एड्स के वायरस का शरीर में पवेश होने के बाद बीमारी के प्रकट रूप में उभरने मे 8 से 10 वर्ष तक का समय लग सकता है किन्तु यह प्राय: सभी में जल्दी या देर से प्रकट हो जाती हैं । पश्चिमी विश्व में इस बीमारी से सबसे अधिक पभावित वे लोग होते हैं जो समलैंगिक मैथुन करते है या नसो के जरिये नशीली दवाओं की सुइया लगवाते है। लेकिन वे लोग जो स्त्री–पुरुष मैथुन ही करते हैं किन्तु एक समय में कई स्त्रियों से सम्पर्क बनाते है, भी इस रोग से पभावित हो सकते है और भारत मे यही इस रोग के प्रसार का सबसे बड़ा कारण है । रोगी को रक्त चढ़ाते समय तथा संक्रमित मां द्वारा शिशुओं मे भी यह रोग फैल सकता है । रोगियों को साधारण रूप से छूने से तथा मच्छरों के काटने से यह रोग नहीं फैलता है ।

एड्स का अभी तक कोई निदान नहीं ढूंढा जा सका है। वाइरस निरोधी दवाएं जैसे जाइडोवुडीन, ज्यादा से ज्यादा इस बीमारी को तेजी से उभरने से रोकने में सक्षम हुई है । इस वाइरस के विरुद्ध किसी टीके की खोज होना एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी, पर इस दिशा में बड़ी कठिनाइयां है । अभी तक हमारे प्रयास विभिन्न तरीकों से इस वाइरस के प्रसार को नियंत्रित करने तक ही सीमित है ।

जन्म से पूर्व गर्भावस्था में ही रोगों की जाच के तरीकों का विकास चिकित्सा विज्ञान की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है इस जांच से जन्म से पहले ही कुछ रागों का निदान किया जा सकता है । गर्भाधान के बाद 15 वें से 18 वें सप्ताह में यदि मां के रक्त में अल्फाफीटो पोटीन जैसे कुछ पदार्थों की मात्रा में वृद्धि पायी जाती है तो यह पता चला जाता है कि बच्चे के मस्तिष्क या रीढ रज्जु में कोई खराबी हो सकती है । भ्रूण का लगभग 6 सप्ताह बाद अल्ट्रासाउंड द्वारा जाच करने पर उसकी आयु तथा उसमें होने वाले किसी भी सरचनात्मक या कंकाल सबधी दोष का पता लगाया जा सकता है । अधिक जाच के लिए – कोरियानिक विलाई सेम्पलिंग (सी.वी.एस) नामक तकनीक का प्रयोग किया जाता है इसमें [illegible] सुइयों द्वारा भ्रूण व प्लासेन्टा के कुछ भागों से ऊतक के नमूने निकाल लिए जाते हैं और फिर उनका [illegible] कोशिकीय अध्ययन किया जाता है । गर्भाधान के 18 से 20 सप्ताह के बाद भ्रूण की त्वचा, यकृत या मेरु रज्जु से [illegible] बायोप्सी द्वारा ऊतक पाप्त किये जा सकते हैं । [illegible] दोषों को ठीक करने के लिए गर्भावस्था में ही [illegible] चिकित्सा भी की जा चुकी है – गर्भावस्था में ही [illegible] पड़ताल का विकास होने से बच्चे के [illegible] संभव हो गया है तथा हमारे देश में [illegible] में ही मादा शिशु का पता लगाकर [illegible]

निद्रा कोशिकाओं की पहचान

पहली बार वैज्ञानिकों ने मस्तिष्क के छोटे से भाग में निद्रा को प्रभावित करने वाली कोशिकाओं की पहचान करने में सफलता प्राप्त कर ली है। यह कोशिकाएं हमारी नींद को नियंत्रित करती है। शोधकर्ताओं का कहना है कि इस खोज से नींद के असंतुलन को दूर करने में नई औषधियों की खोज संभव हो सकेगी।

इसके पहले शोध से यह तो पता चला था कि नींद मस्तिष्क का वेंट्रोलेटरल प्री आप्टिक न्यूक्लियस द्वारा नियंत्रित होती है लेकिन ठीक कोशिकाओं का पता नहीं लग सका था। स्विटजरलैंड के जेनेवा विश्वविद्यालय के डा. माइकल मुहलेथाहरे और उनके सहकर्मियों ने चूहे के मस्तिष्क से निकाली गई कोशिकाओं के अध्ययन से पता लगाया कि इन कोशिकाओं की दो से तीन तिहाई कोशिकाओं के न्यूरान्स निद्रा से सबंधित है। सोकर उठने के समय इन कोशिकाओं को नोराड्रेनालीन, एसीटोलकोलाइन और सीरोटोनिन ने रखा गया। यह रसायन जागृत अवस्था में लाने मे सहायक होते है।

कभी–कभी सोने वाली कोशिकाओं को यह रसायन प्रभावित करने लगते है, जिससे निद्रा असंतुलन हो जाता है। लेकिन यह अभी ठीक से पता नहीं लग सका है कि इन रसायनों का विपरीत प्रभाव क्यों पड़ता है।

आरिओमाइसिन	1948	डुग्गर	अमरीका
रिसर्पिन	1949	जल वाकिल	भारत
टैरामाइसिन	1950	फिनले और अन्य	अमरीका
निम्नतापीय -शल्य-चिकित्सा	1953	हेनरी स्वेन	अमरीका
ओपन हार्ट सर्जरी	1953	वाल्टन लिलोहल	अमरीका
पोलियो माइलिटिस टीका	1954	जोनस साल्क	अमरीका
पोलियो माइलिटिस टीका (मुखीय)	1954	एलवर्ट सैबिन	अमरीका
गर्भ निरोधक गोलियां	1955	पिनकस	अमरीका
शल्यचिकित्सा के दौरान कृत्रिम हृदय का प्रयोग	1963	माइकेल डी बाके	अमरीका
हृदय प्रतिरोपण शल्य चिकित्सा	1967	क्रिश्चियन बर्नार्ड	दक्षिण अफ्रीका
प्रथम परखनली शिशु	1978	स्टेप्टो और एडवर्ड्स	ब्रिटेन
जीन चिकित्सा मानव पर	1980	मार्टिन क्लाइन	अमरीका
चेचक का उन्मूलन	1980	विश्व स्वास्थ्य संगठन की घोषणा	
कैंसर से जुड़े जीन	1982	रावर्ट वीनवर्ग और अन्य	अमरीका

लगे हैं । इस बात से ही इस बात को आंका जा सकता है कि दूषित विचारों वाले लोग इन वर्तमान चिकित्सकीय तकनीकों का किस हद तक दुरुपयोग कर सकते हैं ।

आनुवंशिक अभियांत्रिकी के जरिये कोशिकाओं के केन्द्रक में स्थित आनुवंशिक पदार्थों मे फेर बदल की जा सकती है। यह पदार्थ ही जीव में विभिन्न लक्षणों के प्रकट होने को नियंत्रित करते हैं । इस पदार्थ की इकाइयों को जीन्स कहते है । जीन्स का मुख्य घटक डी-आक्सीराइवो न्युक्लिक एसिड (डी.एन.ए.) है । रिकाम्बिनेन्ट डी.एन.ए. तकनीक के विकास ने जीव विज्ञान व चिकित्सा विज्ञान के अध्ययन के क्षेत्र को माइक्रोस्कोप (सूक्ष्मदर्शी यंत्र) के विकास के बाद होने वाले किसी भी अन्य तकनीकी विकास से अधिक सीमा तक आंदोलित किया है । किसी भी जीव से किसी विशेष जीन को अलग करने तथा उसके गुणों की पहचान करने की प्रक्रिया के विकास का अत्यन्त व्यापक उपयोग संभव है । हमारे लिए बहुत अधिक महत्व वाली कई प्रोटीनों का संशलेषण करने वाले डी.एन.ए. अशों को बनाकर या अलग करके बेक्टीरिया, यीस्ट, जानवरो आदि की कोशाओं में प्रतिस्थापित करके अनेक शुद्ध पदार्थों का बडे पैमाने पर उत्पादन किया जा सकता है । इन्सुलिन जैसे हारमोन, वृद्धि-हारमोन्स, कैन्सर व एड्स को रोकने वाली इन्टरफेरान व इण्डरल्युकिन जैसी प्रोटीनो तथा हृदय-स्तंभन को रोकने में प्रयुक्त होने वाली- आर.टी.पी.ए. (रिकाम्बिनट टिशु प्लाज्मिनोजेन ऐक्टिवेटर) नामक दवा आदि ऐसे सैकड़ों पदार्थों में प्रमुख हे जिनका निर्माण इस तरह से हो रहा है । इस विधि से पैदा किए गए प्रोटीन ऐन्टीजेनों को या तो सीधे टीके के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है या फिर उनको नुकसान न पहुंचाने वाले दूसरे वायरसों मे प्रविष्ट कराकर जीवित टीकों के रूप में अधिक प्रभावी ढंग से प्रयोग में लाया जा सकता है। इस तकनीक का सबसे अधिक उपयोग/जीन- प्रतिस्थापन चिकित्सा में हो सकता है जिसमें आवश्यक डी.एन.ए. खंड को ऐसे जीवों की कोशिकाओं मे प्रविष्ट कराया जा सकता है जिनमें उसकी कमी हो और इस प्रकार जीन दोषों को स्थायी रूप से दूर कर दिया जाता है । यह तरीका उस विशेष एन्जाइम या फेक्टर को बदलने से ज्यादा अच्छा है । क्योंकि यह प्रतिस्थापन मात्रा एक बार ही करना पड़ता है । किन्तु एन्जाइम को बार-बार देना पड़ता है।

दूसरा क्षेत्र जिसमें बहुत अधिक प्रगति की गई है, वह है विभिन्न अंगों का प्रतिस्थापन/इसका नेत्र-पटल, गुर्दा, मज्जा, हृदय फेफड़ों तथा यकृत की बीमारियों में बहुत उपयोग है । अंधापन पैदा करने वाले रेटिनल डिजेनरेटिव रोग में रेटिनल पिगमेंट इपीथीलियम, पार्किन्सन रोग में मस्तिष्क के सेब्सटेन्शिया नाइग्रा नामक भाग तथा मधुमेह के रोगियों में आइलेट कोशिकाओं के प्रतिस्थापन द्वारा दोषों को दूर करने की दिशा में प्रयोग जारी है । किसी भी मृत व्यक्ति की आंख से मृत्योपरान्त 6 घंटे के अन्दर कार्निया निकाल कर उपयोग में लाया जा सकता है । भारत में ही दस लाख ऐसे अंधे हैं जिनकी आंख कार्निया के प्रतिस्थापन के बाद फिर से दृष्टिमय हो सकती है । गुर्दो के सम्पूर्ण रूप से निष्क्रिय हो जाने का सर्वोत्तम उपचार अच्छे गुर्दे द्वारा प्रतिस्थापना ही है । इसके लिए सबसे अच्छा गुर्दा समदर्शी जुड़वा व्यक्ति का होता है क्योंकि उसमें ह्यूमन ल्युकोसाइट ऐन्टीजेन (एच.एल.ए ऐन्टीजेन) एक जैसा ही होने के, शरीर की प्रतिरोधक शक्ति द्वारा बदलकर लगाये गये गुर्दे का उपेक्षित नहीं किया जाता है । अन्यथा यह - ऐन्टीजेन नये गुर्दे को शरीर में स्वीकृत नहीं होने देगा । नजदीकी सबंधियो में यह ऐन्टीजेन एक जैसा

मलेरिया की नई दवा

केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआई) ने मलेरिया की बीमारी में असाधारण और अधिक फायदेमंद सिद्ध होने वाली एल्फाबिटन नामक एक नई औषधि विकसित कर लेने का दावा किया है। संस्थान के निदेशक सी.एम. गुप्ता ने बताया कि यह नई औषधि एक सिंथेटिक दवा है और इसका मानव पर सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा चुका है। अब यह जल्द ही बाजार में उपलब्ध होगी। जो इसके पूर्व [illegible] थी। उन्होंने बताया कि 'एल्फाबिटन' नामक यह नयी औषधि 'प्राइमाक्विन' नाम के मलेरिया की दवा [illegible] है। प्राइमाक्विन के दुष्प्रभाव अधिक है, [illegible] बाजार में उपलब्ध मलेरिया [illegible] की तुलना में कई गुना [illegible]

हो सकता है । कवकों से पैदा की गई दवा साइक्लोस्पोरिन के प्रयोग से भी गुर्दे के उपेक्षित हो जाने की प्रक्रिया को रोका जा सकता है । लगभग 80 प्रतिशत गुर्दे प्रतिस्थापन के बाद एक वर्ष से 5 वर्ष तक काम करते रहते हैं । नजदीकी संबंधियों के गुर्दे ज्यादा वर्षो तक काम करते हैं । हृदय का पहला प्रतिस्थापन 1967 में डा. क्रिश्चियन बर्नाड द्वारा किया गया था आजकल प्रतिवर्ष लगभग 1500 लोगों में हृदय का प्रतिस्थापन किया जा रहा है । हृदय के प्रतिस्थापन के बाद 80 प्रतिशत से लोग एक वर्ष से पांच वर्ष तक जीवित रहते हैं । सबसे लम्बी अवधि 19 वर्ष तक पाई गई है । यकृत का प्रतिस्थापन भी काफी सफल हो चला है तथा लगभग 70% लोगों में यह एक वर्ष तक काम करते रहते हैं । मज्जा के प्रतिस्थापन के द्वारा इक्युनोडिफीशियन्सी के रोग शत प्रतिशत तथा ल्युकीमिया के रोगी 10 से 50 प्रतिशत की सीमा तक ठीक किये जा सकते हैं । मधुमेह से पीड़ित रोगियों में भी अग्नाशय का प्रतिस्थापन किया जाता है लेकिन इसमें 50 प्रतिशत लोगों में ही एक वर्ष तक की कार्यशीलता पाई गई है ।

फाइबर आप्टिक इन्कडोस्कोपों का बीमारियों की जांच व उपचार में व्यापक उपयोग हो रहा है । इनके केन्द्र में स्थित आप्टिक फाइबरों से जब प्रकाश गुजरता है तो इन ट्यूब जैसे उपकरणों से मोड़ वगैरह होने के बावजूद भी सारे अंदरूनी अंग साफ दिखाई देते हैं । आजकल फेफड़ों की जांच के लिए ब्रांकोस्कोप, आमाशय के ऊपरी आंत केलिए गैस्ट्रोस्कोप, निचली आंत केलिए कोलन स्कोप, उदर केलिए लेपेरोस्कोप, स्त्रियों के जननांगों के लिए हिस्तीरोस्कोप, हड्डियों के जोड़ों केलिए आर्थोस्कोप तथा रक्त की नलिकाओं केलिए ऐन्जियोस्कोप ादि उपलब्ध हैं । इनसे अंदरूनी हिस्सों को देखने के अलावा बायोप्सी के द्वारा ऊतकों के नमूने इकट्ठा करने बाहुयांशों (फारे बॉडीज) को दूर करने, छोटे मांसपिंडो (न्यूमरो) को काटक अलग करने तथा नसों से रक्त का बहाव रोकने आदि में भी इ उपकरणों का प्रयोग होता है । कुछ दशाओं में एक अच चिकित्सक इन इन्डोस्कोपों की मदद से उन परिणामों को प्राप कर सकता है जिनके लिए आमतौर पर एक बड़ी शल्यक्रिय की आवश्यकता पड़ सकती है ।

अल्ट्रासाउण्ड व लेज़र के प्रयोग ने चिकित्सा विज्ञान के क्षे में आंदोलन ला दिया है । अल्ट्रासाउण्ड का उपयोग अंदरून अंगों को देखने के लिए ही नहीं बल्कि बिना किसी शल्यक्रिय के पेशाब के मार्ग व पित्ताशय में पैदा होने वाली पथरियों व तोड़कर व बारीक बनाकर दूर करने में भी किया जाता है । इ एक्सट्रा कार्पोरियल शॉक वेव लिथोट्रिप्सी (ई.सी.एस.डब्ल्यू.एल कहते हैं । मुधुमेह के रोगियों में अंधेपन को रोकने के लिए आंर के नेत्रपटल का लेजर द्वारा फोटो का ऑगुलेशन किया जात है । शल्य-क्रिया में लेजर का उपयोग ऊतकों को काटने के लि किया जाता है । इसका प्रयोग रक्त की नसों में से एथीरोसेलेरोटि प्लेक्स को निकालने के लिए भी किया जाता है ।

इस तरह आजकल कम्प्यूटरीकृत तकनीकों के प्रयो से विकसित युक्त कम्पयुटराइजड एक्सियल टोमोग्राफ (सी.ए.टी. स्कैन) तकनीक, रेडियो धर्मिक खतरों के बिन कोमल ऊतकों की जांच-परख करने वाली उत्तम तकनीव मैगनेटिक रेसोनैन्स इमोजिन्ग (एम.आर.आई. स्कैन) तथ शरीर के विभिन्न ऊतकों की चयावचय प्रक्रियाओं क अध्ययन करने में सहायक पॉज़ीट्रॉन इमीशन टोमोग्राफ (पी.ई.टी.स्कैन) तकनीक आदि बहुत ही परिष्कृत तरीकों क चिकित्सा में व्यापक प्रयोग हो रहा है ।

मानव शरीर

मानव शरीर बहुत ही उलझी हुई रचना है। इसमें करोड़ों ोशिकाएं है जो आश्चर्यजनक ढग से व्यवस्थित और आपसी ाक्रियता से कार्य करती हैं। वैज्ञानिकों ने मानव शरीर को ाठ भागों में बांटा है। 1. अस्थि पंजर , 2. मासपेशिया, . रक्त संचरण और श्वसन तन्त्र, 4. पाचन तन्त्र, 5 त्सर्जन प्रणाली, 6. ग्रन्थि-प्रणाली, 7. तान्त्रिका तन्त्र और . त्वचा।

ास्थि पंजर

मानव अस्थि पंजर में 206 अस्थियां होती है। यह सख्या वादास्पद है। कुछ लोग कहते हैं कि मानव अस्थिपजर मे स्थियों की संख्या 212 होती है। संख्या की यह भिन्नता स्थि-नसों के कारण है। अस्थि पंजर ढांचे की तरह काम रता है, जिसमें मांसपेशियां चिपकी रहती हैं और कोमल गों की सुरक्षा करती है। प्रत्येक अस्थि का आकार टीकता और सुस्पष्टता से निर्मित है। कुछ अस्थियां आपस पुष्टता और कुछ अस्थियां शिथिलता से जुड़ी हैं। प्रत्येक का निर्माण अपने विशिष्ट उत्तरदायित्व को पूर्ण करने के ढंग से हुआ है।

मानव अस्थि पंजर को मुख्यता: दो भागों में बांटा गया है प्रथम-अक्षीय अस्थिपंजर और द्वितीय उपवंधीय अस्थि पंजर। अक्षीय अस्थि पंजर में सिर, गला और धड़ हैं उपवंधीय अस्थि पंजर में भुजाएं और पैर हैं।

अस्थि पजर का निर्माण अस्थियों, सन्धियों और उपास्थि से होता है। इनका कार्य शरीर के कोमल ऊतकों और अंगो को आश्रय और सुरक्षा प्रदान करना है। मांसपेशियों को जुड़ने का स्थान प्रदान करना है जिससे शरीर को गति मिल पाना संभव होता है। अस्थियां, लंबी, छोटी, घनाकार चौड़ी और विषम प्रकारों की होती है। लंबी अस्थियां अन्दर से पोपली होती है। इसमें मज्जा भरी रहती है। इन्हीं से रक्त कोशिकाओं का निर्माण होता है।

अक्षीय अस्थि पंजर शिशुओं की रीढ़ में 33 भिन्न अस्थियां होती है, जिसे करोरुका कहा जाता है। प्रौढ़ों में मेरुदंड के नीचे की नौ अस्थियां दो भागों में बट जाती है।

ऊपर की पांच मिलकर 'विकास्थि' और नीचे की चार मिलकर 'काकिक्स' का निर्माण करती हैं। मानव जीवन का महत्वपूर्ण भाग रीढ की अस्थि में 24 कशेरुकाएं होती हैं। इसमें सात गले की ग्रीवास्थि, 12 वक्षीय आस्थि छाती में, पांच कटि की, पीठ के नीचे होती है। कटि में एक विकास्थि और एक काकिक्स होती है।

वक्ष की करोरुका में 12 जोड़ी पसली होती हैं। ऊपर के 7 जोड़े सामने आकार छाती की हड्डियों से जुड़ जाते हैं। शेष 5 जोड़ों में से 3 उपास्थि पसली से तुरन्त जुड़ जाते हैं। अन्तिम दो असंबन्धित रहती हैं। स्तन की आस्थि छाती की दीवार के बीच में स्थित होती है और एक पत्ती का आकार बनाती है। उपास्थि पसली और 12 कशेरुकाएं एक ढांचा वक्षीय कोटर तैयार करती हैं।

गरदन की लंबाई कुछ भी हो। यह सात करोरुकाओं से बना होता है। ऊपर की दो अस्थियों को 'शीर्षाधार' और 'धुरी' के नाम से जाना जाता है। शीर्षाधार सिर को थामे रहता है और इसे कंदुक की तरह घुमाता रहता है।

खोपड़ी का निर्माण कपाल और मुख की अस्थियों से होता है। आठ अस्थियां मस्तिष्क को एक मजबूत बाक्स में बन्द करके रखती है। खोपड़ी में आंखों और कानों के लिए विवर बनाती है। खोपड़ी के पीछे पश्चकपाल अस्थि रंध्रक कोष छिद्रित होती है जिसमें मेरुरज्जु (सुषम्ना नाड़ी) गुजरती है। ऊपर तथा बगल के मुख्य भाग में दो भित्तिकास्थि होती है। प्रत्येक भित्तिकास्थि के नीचे एक अस्थाई अस्थि होती है। जिसमें कान के लिए विवर होता है और घुंडी के आकार जैसा कोशिकीय भाग धारण करते हैं। इन्हें स्तनाकार प्रणाली कहते है। सामने की अस्थि मस्तक ... र ... मस्तिष्क और नाक को अलग करते हैं और खोपड़ी को आधार प्रदान करते है। कनपटी की दो अस्थियों में से प्रत्येक अस्थि में तीन छोटी-छोटी अस्थियां मध्यकान में होती हैं। पहली हथौड़े के आकार की, दूसरी निहाई के आकार की, और तीसरी रकाब के आकार की होती हैं। ये ही कान के बाहरी भाग को गति प्रदान करते हैं। कण्ठिका अंग्रेजी की 'यू' के आकार की आस्थि है। यह गले के आगे और जीभ की जड़ से पास होती है।

उपबन्धीय आस्थि पंजर अक्षीय आस्थि पंजर से जुड़ी अस्थियां ऊपर और निम्न सिराओं की होती हैं। यह उपबन्धीय अस्थिपंजर का निर्माण करती हैं। भुजाओं को भुजा मेखला का सहारा मिलता है, जो कंधे की अस्थि के प्रत्येक तरफ होती है। ऊपरी भुजा की अस्थि को प्रगण्डिका कहते हैं। अन्तःप्रगण्डिका और बहिर प्रगण्डिका भुजा के अग्र भाग का निर्माण करती हैं। हाथ में 8 करभ 5 करभास्थि जो हथेलियों का निर्माण करती है। 14 अंगुल्यास्थियां जो अंगुलियों का निर्माण करती है।

नीचे की नितान्तता का अस्थिगत ढांचे का निर्माण भी ऊपरी नितान्तता जैसा ही होता है। दो अनाम 'अस्थियां या नितम्ब अस्थि में प्रत्येक के तीन भाग होते हैं। प्रथम-श्रोणिफलक, द्वितीय-आसनास्थि और तृतीय-जंघनास्थि है। नितम्बास्थि, विकास्थि और काकिक्स, तीनों करोरुका के स्तंभ को मिलकर श्रोणी मेखला का निर्माण करते हैं। इन्हें पैरों का सहारा मिलता है। जान्वस्थि या जानुफलक घुटनों की टोपी का निर्माण करते हैं। अन्तर्जंघिका और बहिर्जंघिका पैर के नीचे के भाग की अस्थियां है। पैर के अस्थिपंजर में तीन भाग होते हैं। टखने में 7 छोटी टखनास्थियां, 5 प्रपदास्थियां मेहराव का निर्माण करती हैं। पैर की अंगुलियां का निर्माण 14 अंगुल्यास्थियों से होता है।

चेहरे की अस्थियां: चेहरे में 14 अस्थियां होती है। एक नीचे के जबड़े की अस्थि जिसे अधोवर्ती जंभिकीय या जबड़ा अधोहनु अस्थि कहते हैं। दो उर्ध्व जंभिकीय जो ऊपर के जबड़े और मुंह के लिए ऊपरी छत का निर्माण करती है। दो नासास्थियां जो नाक का निर्माण करती हैं। एक सीरिका जो पीछे के अधोवर्ती नासास्थि पट का निर्माण करती है। दो
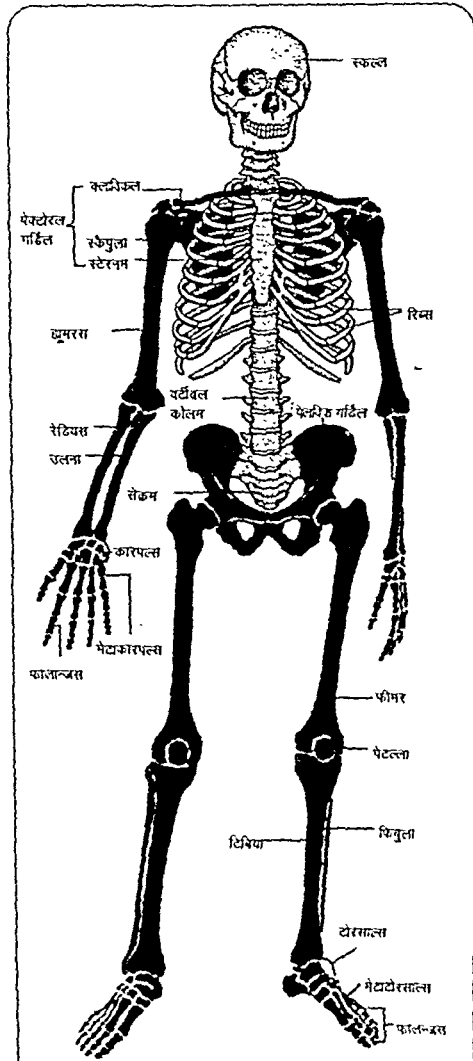
मानव शरीर की अस्थि संरचना

धोवर्ती नासास्थियां, शुक्तिका जिसे अधोवर्ती अस्थि भी कहा जाता है। दो गण्डास्थियां जो गाल का निर्माण करती हैं। दो क्रिगल अस्थियां और तालु अस्थियां होती हैं।

मांस पेशियां

ये शरीर को गति देने में सहायक होती हैं और इनके संकुचन से ताप बनता है। यह शरीर के तापक्रम को स्थिर रखने में सहायक होता है। इन मांसपेशियों का अन्तिम सिरा विभिन्न अस्थियों के ऊतकों से जुड़ा रहता है जिसे 'नस' कहा जाता है। इसीलिए जब मांसपेशियों से संबंध स्थापित किया जाता है तब एक अस्थि दूसरी अस्थि के अनुरूप घूमने लगती है, जिससे पूरी शरीर को गति मिलती है। जैसे चलते समय या शरीर के एक भाग के गतिशील होने पर या अंगुलियों के घुमाते समय होता है। ऊर्जा का निर्माण और पेट की मांसपेशियों को नियन्त्रित नहीं किया जा सकता है।

रक्त संचार प्रणाली

वृद्धि और शरीर का कार्य प्रणाली को उचित ढंग से चलने के लिए शरीर के प्रत्येक भाग का पोषण और आक्सीजन आवश्यक है। शरीर में अनावश्यक पदार्थों का संग्रह और विष के रूप में फैल जाने के पूर्व उन्हें बाहर निकालना होता है। रक्त संचारण प्रणाली शरीर को आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति तथा अनावश्यक वस्तुओं को बाहर निकालता है। इसका निर्माण हृदय, रक्त वाहिनी और रक्त से मिलकर होता है। रक्त भी शरीर की सुरक्षा प्रणाली का एक अंग है। जब श्वेत रक्त कण, बाहरी हमलावारो से शरीर की रक्षा करते है तो ... रोग प्रतिरोधात्मक हो जाते है।

हृदय भी एक मांसपेशी है जो लगभग दो समान भागों मे बंटा होता है। इसका आधा भाग फेफड़े से रक्त प्राप्त करता है और शरीर के शेष भागों तक पहुंचाता है और दूसरा आधा भाग शरीर में संचरित रक्त को फेफड़ों तक वापस लाता है। जब रक्त हृदय की मांसपेशियों के सम्पर्क मे आता है तब धमनी में फेंक दिया जाता है और छोटी-छोटी नसों मे प्रवेश करता है और पुनः रक्त शिराओं से होकर फेफड़े में आता है। रक्त को, शिराएं पतली दीवारों तक पहुंचाती हैं। यह शरीर के प्रत्येक ऊतक तक पहुंचता है। प्रत्येक स्थिति मे रक्त को शिराओं से होकर हृदय इसके बाद फेफड़े तक यात्रा करनी पड़ती है। इस क्रिया में कोशिकाओं तक पहुंचने में अधिक आक्सीजन प्राप्त कर लेता है।

श्वसन प्रणाली : श्वसन प्रणाली हवा से आक्सीजन को ग्रहण करती है व कार्बन डाई आक्साइड और जलवाष्प को बाहर निकालती है। हवा का प्रवेश नाक और मुंह से होता है और स्वरयन्त्र या वाग्यन्त्र या श्वासतन्त्र या वायु वाहिनी से यात्रा करती है। श्वास नली इसे दो भागों में बांट देती है और वायु फेफड़ों में प्रवेश करती है। इसके बाद अनेकों भागों में बंटकर बड़ी संख्या में वायु-स्थानों का निर्माण करती है। कोशिकाओं में स्थित रक्त आक्सीजन को सोख लेता है और कार्बन डाई आक्साइड का विमोचन कर देता है। यह कार्बन डाई आक्साइड निःश्वास द्वारा बाहर निकल जाता है।

पाचन प्रणाली

पाचन तन्त्र एक नली है जो मुख से लेकर गुदाद्वार तक फैली रहती है। भोजन एवं तरल पदार्थ शरीर द्वारा ग्रहण किये जाते है और इन्हे छोटे-छोटे अणुओं में विभाजित कर रक्त संचार तन्त्र द्वारा सोख लिये जाते है। इसी क्रिया को पाचन क्रिया कहते है। यह यान्त्रिक और रासायनिक प्रक्रिया है। भोजन का प्रवेश मुख से होता है। जहां पर चबाने और लार मिलाकर इसे तोड़ा जाता है। इससे निगलने मे आसानी हो जाती है। इसके बाद भोजन, भोजननली से आमाशय की यात्रा करता है। आमाशय में पहुंचने के बाद मांसपेशीय दीवारे यान्त्रिक रूप से भोजन को तोड़ना आरंभ करती हैं। पेट में एसिड और पाचक रस मिलने से रासायनिक क्रिया होने लगती है।

अन्त में तरलीकृत भोजन छोटी आंत में आता है। छोटी आंत के पहले भाग में, जिसे 'ग्रहणी' कहा जाता है। अग्न्याशय में पाचक रस मिलाये जाते हैं। ये पाचक तत्व भोजन को रासायनिक रूप से तोड़ते हैं। वसा के पाचन के लिए पित्त मिलता है जिसका निर्माण यकृत में होता है और पित्ताशय में इसका संग्रह होता है। वयस्क व्यक्ति की छोटी आंत लगभग 21 फीट (6.4 मीटर) लंबी होती हैं। इसका अधिकांश भाग भोजन का शोषण करने में लगा रहता है।

बचे हुए भोजन का तरल पदार्थ बड़ी आंत में ढकेल दिया जाता है, जो लगभग 12 फीट (3.7 मीटर) लंबी होती है। बड़ी आंत मे तरल पदार्थ का अधिकांश भाग सोख लिया जाता है और सूखे हुए पदार्थ आगे ढकेल दिये जाते हैं।

उत्सर्जन प्रणाली

सामान्य रूप से जल एवं अन्य कुछ छोटे अणुओं जैसे सोडियम और पोटेशियम को बाहर निकालता है। यह इस क्रिया को इस प्रकार पूर्ण करता है कि जब रक्त गुर्दे से गुजरता है तब दो प्रभावी छननी से विभिन्न अविरजित अणुओ से छुटकारा पा जाता है। वे तरल जिन्हें गुर्दे विमोचित करती है उसे मूत्र कहा जाता है। यह नली से होकर शरीर के बाहर जाता है। इस नली को मूत्र वाहिनी कहा जाता है। इसका संबध मूत्राशय से होता है। मूत्राशय मूत्र को तब तक धारण करता है, जब तक कि वे शरीर से बाहर नही निकाल दिये जाते है।

ग्रंथि

शरीर की क्रियाओं को नियन्त्रित करनेवाली दो प्रणालियां – ग्रन्थियां और नाड़ी संस्थान हैं। ग्रन्थियां शरीर पर नियन्त्रण रासायनिक संवेदकों के माध्यम से करती है। इन संवेदकों को हारमोन कहा जाता है। हारमोनों का स्राव, विभिन्न अन्तः स्रावी ग्रन्थियों से होता है। कुछ ग्रन्थियां हारमोनो को सीधे रक्त प्रवाह में छोड़ती हैं।

एक मुख्य ग्रन्थि, पीयूष या श्लेष्मीय ग्रन्थि हो जो सिर के मध्य, मस्तिष्क के नीचे अवस्थित है। यह कम से कम 8 तरह के हारमोन उत्पादित करती है। ये हारमोन वृद्धि, गुर्दा कार्य प्रणाली और जनन अंगों के विकास को प्रभावित करते है। श्लेष्मीय ग्रन्थियों के हारमोन, दूसरी ग्रन्थियों को अपने

हारमोन उत्पादित करने के लिए प्रेरित करते हैं इसीलिए पीयूष ग्रन्थि को मुख्य ग्रन्थि कहा जाता है। एक अन्य थायराइड ग्रन्थि जो पसली की अस्थि के नीचे होती है। यह एक ऐसा अन्तः स्राव उत्पन्न करती है जो शरीर चयापचय की गति को नियन्त्रित करता है तथा यौनांग (अण्डाशय और डिम्बाशय) के ऊतकों का निर्माण करते है। इसके साथ-साथ कुछ ऐसे अन्तः स्रावों का भी निर्माण करते है जो पुरुष और स्त्री के गुणों को निर्धारित करता है। प्रत्येक गुर्दे के ऊपर आधिवृक्क ग्रन्थियां होती हैं जो कोरिजोन और एपिनाफ्रिन जिसे एड्रेनलिन कहा जता है, का उत्पादन करती हैं। अग्न्याशय मात्र पाचक एनजाइम का ही उत्पादन नहीं करता बल्कि इन्सुलिन और ग्ल्यूकोन का भी उत्पादन करता है, जो शरीर के उपयोग के लिए वसा और शक्कर को भी नियन्त्रित करते हैं।

नाड़ी संस्थान (तन्त्रिका तन्त्र)

नाड़ी संस्थान में मस्तिष्क सुषुम्ना नाड़ी और नसें हैं। ये शरीर की गति को नियन्त्रित करती हैं। मस्तिष्क का निचला भाग मुख्य क्रियाकलापों जैसे श्वसन, हृदय गति, शरीर का तापक्रम, भूख और प्यास को नियन्त्रित करता है। इसके बाद दृश्य, ध्वनि, स्पर्श, गन्ध और स्वाद केन्द्रों के क्षेत्र तथा हाथ और पैर सीधे स्वयं चालित मांसपेशियों क्रियाओं के क्षेत्र होते हैं। यही पर सूचनाओं को एकत्रित एवं शोधित करके उच्च क्रियाएं पूरी की जाती हैं।

मस्तिष्क, नसों की सहायता से सूचनाएं प्राप्त करता है और भेजता है। इसमें से अधिकांश सुषुम्ना नाड़ी से जुड़ी होती हैं। सुषुम्ना नाड़ी की रक्षा सुषुम्ना स्तंभ द्वारा की जाती है। नसें, सुषुम्ना नाड़ी को शरीर के प्रत्येक भाग तक पहुंचाती हैं और जोड़ती है। इनकी यात्रा भुजाओं, पैरों और धड़ के प्रत्येक भाग तक होती है। ये नसें शरीर के विभिन्न भागों से सूचनाएं लाती हैं और सूचनाओं को मस्तिष्क तक पहुंचाती हैं। इसके बाद सूचनाओं को मांसपेशियों और नाड़ियों द्वारा पूरे शरीर में फैला दिया जाता है।

त्वचा

त्वचा वह बाहरी आवरण है जो शरीर के आन्तरिक भागों की रक्षा करता है। यह शरीर का सबसे अधिक लंबा अंग है। यह [illegible] तत्वों से शरीर की रक्षा तथा अतिरिक्त जल को वाष्प में [illegible] करने में सहायक है। त्वचा की नसे स्पर्शी सूचनाएं प्रदान करती है। त्वचा शरीर के ताप क्रम को 98.6 डिग्री फारेनहाइट (लगभग 36 डिग्री सेल्सियस) रखने में सहायता करती हैं। त्वचा में रक्त बहाव को कम करके तापक्रम को सुरक्षित रखा जाता है या रक्त बहाव को तेज करके त्वचा से स्वेद के वाष्पीकरण [illegible] करता है। बाल और नाखून त्वचा के गौण अंग हैं।

दांत

[illegible] दो समूहों में दांत आते है। प्रथम समूह के दांत [illegible] बाल्यकाल में उगते हैं। इन दांतों को प्राथमिक, [illegible] दांत, अस्थाई और झड़ने वाला दांत कहा जा सकता है [illegible] दूसरे समूह के दांतों द्वारा हटा दिये जाते हैं। इन्हें [illegible], प्रौढ़ या स्थाई दांत कहा जाता है।

सभी दांत जबड़े की कोशकीय मुकुलिका से विकसित होते है। अस्थाई और स्थायी दांतों के लिए मुकुलिकाओं का निर्माण शिशु के जन्म के पूर्व ही आरंभ हो जाता है। मुकुलिका से सबसे पहले किरीट विकसित होता है। यह कठोर और दन्तवल्क से ढका हुआ भाग जो बाद में स्पष्ट हो जाता है। जब किरीट पूरी तरह से विकसित और कठोर हो जाता है, तब जड़े विकसित होने लगती है। किरीट के पूर्ण विकसित और जड़ों के दो-तिहाई बनने पर दांत बाहर निकलता है या मसूढे से बाहर निकलता है।

शिशु का प्रथम दांत सामान्यतः 6 से 9 माह की अवस्था में निकलता है। अस्थाई दांत 2 या 3 साल तक 20 की संख्या तक निकल आते हैं। इसमें से 10 ऊपर के जबड़े में और 10 नीचे के जबड़े में होते हैं। इसी समय जबड़ों में स्थाई दांतों के बनने प्रक्रिया आरंभ हो जाती है। जब स्थाई दांत अस्थाई दांतों की जगह लेने लगते है, तब अस्थाई दांत की जड़, जबड़े के ऊतकों द्वारा अन्तर्लीन कर ली जाती है।

मानव मुंह में 32 दांत होते है। स्थाई दांतों में सबसे पहले दिखाई देने वाली प्रथम दाढ़ होती है। इसे छह वर्षीय दाढ़ कहते हैं। अंतिम को तृतीय दाढ़ या बुद्धि दांत कहते है।

जब सामान्य मुंह में दांत अच्छी तरह से उग आते है, तब ऊपरी कर्तन दांत थोड़ा नीचे के कर्तन दांतों से बढ़े हुए होते हैं। शेष दांत ऊपर नीचे बराबर होते है। ऊपर के दांत नीचे के दांतों के समरूप होते है।

ऊपर नीचे के समरूप दांतों को अवरोधन कहा जाता है। यदि ऊपर और नीचे के दांत ठीक तरह से एक दूसरे का सामना नहीं करते हैं, तब इस दशा को अनावरोधन कहा जाता है। ये चबाने के साथ चेहरे की सुडौलता को भी प्रभावित करते हैं। अस्थि चिकित्सकों और दांत चिकित्सकों को अनावरोधक दांतों को ठीक करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। इससे ये दांतों की दिशा को सही दशा में मोड़ देते है।

प्रजनन प्रणाली

प्रजनन वह प्रक्रिया है जिससे कोई जीवधारी अपने जैसा प्राणी उत्पन्न करता है। यह प्रक्रिया या तो अलैंगिक अर्थात कोई जीवधारी जब अकेले अपने जैसा उत्पादन करता है या लैंगिक जिसमें नर और मादा दोनों कोशों की आवश्यकता होती है। अंग, ग्रन्थियां, और अन्य बनावट जो प्रजनन के लिए समर्थ बनाते है, उन्हें प्रजनन प्रणाली के नाम से जाना जाता है।

लैंगिक प्रजनन: मादा डिंब का नर शुक्र के साथ मिलन की क्रिया को सामान्यतः लैंगिक प्रजनन कहा जाता है, अर्थात दो भिन्न व्यक्ति अपने गुण सूत्रों का प्रयोग एक नये जीव के निर्माण के लिए करते है जो सामान्यतः उनके माता-पिता के समरूप होते है, लेकिन दोनों में से किसी एक की पूर्ण प्रतिकृति नहीं होगी। यह प्रजनन मानव जाति को एक अनन्त विविधता प्रदान करता है।

मानव प्रजनन: पुरुष के बाह्य प्रजनन अंग [illegible] और शिश्न है। अण्डकोश, [illegible] का स्थान है। [illegible] निर्माण अण्डाशय में होता है और इन्हें [illegible] में एकत्रित किया जाता है। यह [illegible]

ली से मिलता है। जिसे शुक्रवाहिनी कहते हैं। इसीसे वीर्य ा शुक्राणु विस्तृत क्षेत्र में एकत्रित होते हैं, जिसे शुक्राशय कहते हैं। विक्षेपण नली इसे मूत्र मार्ग तक पहुंचाती है। त्राशय से एक पतली नली, जिसमें से होकर सामान्यतः मूत्र और वीर्य आता है। शुक्रीय तरल, वीर्य के लिए तरलता प्रदान करता है। मूत्रमार्ग के चारों तरफ बहुत सारी ग्रन्थियां होती , जिसमें प्रोस्टेट ग्रन्थि और कोपरग्रन्थि है। लिंग या शिश्न थुन का अंग है।

स्त्री के वाह्य प्रजनन अंग को सामूहिक रूप से योनि, गर्भाशय, डिम्बवाही नली और अण्डाशय कहा जाता है। योनि का आकार नली जैसा है जो योनि मुख से गर्भाशय तक जाता है। योनि स्त्री का वह अंग है जो सहवास के लिये व गर्भाशय से शिशु के बाहर आने के लिये मार्ग की भूमिका निभाता है। गर्भाशय का आकार उल्टी नाशपाती जैसा होता है। इसकी दीवारें मोटी और मांसपेशिय होती है लेकिन प्रसरणशील होती हैं। इसकी लंबाई 7.5 सेन्टीमीटर और चौडाई 5 सेन्टीमीटर होती है। इसी कक्ष में भ्रूण बढ़ता है। गर्भाशय की ग्रीवा योनि में आकर खुलती है। मुत्राशय के भाग ग्रीवा के ऊपर डिंबवाही नली से जुड़े होते हैं। गर्भाशय के पास प्रत्येक तरफ दो अंडाशय होते हैं। प्रत्येक अंडाशय में लगभग 300,000 अंडे होते हैं, जो भ्रूण विकास के समय बनते हैं।

अंडोत्सर्ग प्रक्रिया में केवल एक अंडा अंडाशय में छोड़ा जाता है। यह घटना महीने में केवल एक बार घटती है। अंडोत्सर्ग के 24 घंटे के अन्दर यदि मैथुन हो जाता है तब निषेचन क्रिया हो सकती है। पुरुष मात्र 3 मिलीलीटर वीर्य, स्त्री की योनि में छोड़ता है। वीर्य की इस अति अल्प मात्रा में 200 मिलियन से लेकर 300 मिलियन तक शुक्राणु होते हैं। ये शुक्राणु, योनि, ग्रीवा और गर्भाशय में अंडाणु से मिलने के लिए तैरते रहते है।

मानव रोग

रोग वह दशा है जो शरीर की सामान्य कार्य प्रणाली या किसी भाग को नुकसान पहुंचाता है। प्रत्येक जीवधारी चाहे वे वनस्पति हो पशु हो, दोनों बीमारी के शिकार हो सकते है। उदाहरण के लिए मुनष्य प्रायः छोटे बैक्टीरिया से प्रभावित होते है और बैक्टीरिया उनसे छोटे वायरस से प्रभावित हो सकते हैं।

सैकड़ो विभिन्न रोगों का पता चला है कि प्रत्येक के अपने विशिष्ट लक्षण और संकेत हैं। इसके द्वारा चिकित्सक उस समस्या का निदान करने में सहायता लेता है। लक्षण वह बात है जिसकी खोज रोगी खुद कर सकता है, जैसे बुखार, रक्त रिसाव, या दर्द में। संकेत वह है जिसका पता डाक्टर लगा सकता है। प्रत्येक बीमारी का कोई न कोई कारण होता है जबकि कुछ कारणों का अभी पता लगाना शेष है। प्रत्येक बीमारी प्रारंभ होने का चक्र या आरंभिक चक्र या प्रभावी होने का कारण समाप्ति और समाप्त होने पर पीड़ित को या तो अंशतः अयोग्य कर देता है या मार देता है।

स्थानीय बीमारी उसे कहते है जो एक समुदाय के कई लोगों पर एक साथ आक्रमण करती है। जब यह किसी विशेष क्षेत्र में वर्ष दर वर्ष आक्रमण करती है तब उसे स्थानीय बीमारी कहते हैं।

तीक्ष्ण बीमारी बड़ी तेजी से प्रारंभ होती हैं और बहुत कम समय तक चलती हैं। उदाहरण के लिए एक तीक्ष्ण हृदय आघात बिना किसी संकेत के आक्रमण करता है और शीघ्र घातक हो जाता है। पुराने रोग का आरंभ धीरे से होता है। कभी-कभी वर्षों तक बना रहता है। क्रनिक रुप से प्रारंभ होने वाली और लंबी अवधि तक चलने वाली सान्धिवातीय बुखार इसे पुरानी बीमारी बना देते हैं।

रोग के प्रकारः हवा, कफ छींक द्वारा फैलने वाले रोगों को संसर्ग जन्य या संक्रानक रोग कहते हैं। छोटे कीटाणु, बैक्टीरिया और फंगी भी संसर्गजन्य रोगों को उत्पन्न कर सकते हैं। इनके वाहक वायरस छोटे रोगाणु और कीटाणु भी हो सकते हैं। ये प्रभावित मनुष्य में पलते हैं और दूसरे तक फैलते हैं और अंडे देते हैं। कभी-कभी रोग उत्पन्न करने वाले तत्व एक व्यक्ति में बिना लक्षण के भी मिलते हैं। उपगामी वाहक, रोग को किसी व्यक्ति में प्रवेश करा देते हैं। व्यक्ति को इनके प्रवेश की जानकारी ही नहीं हो पाती है।

कुछ बीमारियां भोजन की अशुद्धता, शरीरिक सुरक्षा की कमी, तान्त्रिका तन्त्र का कमजोर होना भी बीमारी के कारण हो सकते हैं। कुछ बीमारियां रोगी के सीधे संपर्क, बर्तनों, कपडों के उपयोग या छूने से उत्पन्न होती हैं, उनहें स्पर्श जन्य रोग कहते हैं।

मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारणों से अयोग्यता और कमजोरी बढ़ती हैं। कुछ बीमारियां नशे, स्थूलता, कुपोषण, जनसंख्या वृद्धि के कारण उत्पन्न होती हैं।

इसके बाद हजारों से अधिक जीन से संबंधित जन्मजात कमियां होती हैं। छोटे जीन बहुत से रसायनों के उत्पादन के लिए उत्तरदायी होते हैं, जिसकी आवश्यकता शरीर में होती है। इनका न होना या गलत ढंग से काम करना भयंकर रूप से स्वास्थ को विकृत कर देता है। वंशानुगत कमियों का जो शरीर के रसायन को प्रभावित करते है, इन्हें जन्मजात चपापचय संबंधी कमी कहा जाता है। कुछ मानसिक विकलांगता वंशानुगत होती है।

रोगाणु शरीर में कैसे आक्रमण करते हैंः मानव एक ऐसे संसार में निवास करता है, जहां बहुत सारे दूसरे जीवित प्राणी भोजन और जन्म लेने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। रोगोत्पादक तत्वों को सामान्यतः रोगाणु कहा जाता है, जो मानव शरीर पर आक्रमण करके बीमारियों के कारण बनते हैं। ये मानव उत्तकों और तरल पदार्थों का अपनी आवश्यकता के लिए उपयोग करते हैं। शरीर की सामान्य सुरक्षात्मक प्रणाली इन आक्रमणकारियों को निकालने का प्रयास करती हैं।

रोगोत्पादक तत्व शरीर में कई प्रकार से प्रवेश करते हैं जैसे सामान्य सर्दी से न्यूमोनिया और टी.बी. के रोगाणु श्वास में प्रवेश करते है। यौन रोग मानव शरीर में लैंगिक संपर्क से प्रवेश करते हैं। पेचिश हैजे और टाइफाइड ज्वर के कीटाणु शरीर में दूषित जल, भोजन या साधनों के प्रयोग से प्रवेश करते हैं।

कीटाणु भी रोगों को फैलाते है। मक्खियां रोगाणुओं को मानव मल या दूसरी बेकार की वस्तुओं से भोजन और मादक पेयों तक ले जाती हैं। रोगाणु, मानव शरीर में, मच्छरों, जुओं, चीलरो, पिस्सुओं और डंसों के काटने से भी फैलते हैं।

मानव शरीर रोगों से कैसे संघर्ष करता हैः सुरक्षा की

न: सुनने की इंद्रिय होने के साथ-साथ संतुलन के लिए अपेक्षित।
मला: देखिए पीलिया।
रबंकल: कीटाणुओं से होनेवाला घाव जो बहुत पीडा देता और पीप भरा होता है।
ारसिनोमा: देखिए कैंसर।
ार्टिको स्टीरा धड्स: एड्रिनल ग्रंथि के कार्टेक्स द्वारा निःत हारमोन।
ार्निया: नेत्रगोलक के ऊपर की पारदर्शी परत जिससे काश प्रवेश करता है।
ार्बन मोनाक्साइड-विषाक्तन: मोनाक्साइड गैस के सूंघने ऊतकों में विष का प्रवेश होता है। यह गैस प्राय: कार से िकलनेवाली धुएं और अच्छी तरह हवादार जगह न होने पर ोयले की आग से पैदा होती है।
ार्बोहाइड्रेट: कार्बन, हाइड्रोजन और आक्सीजन का एक ौगिक रसायन जो भोजन का एक महत्वपूर्ण अंग है।
ाला जार: जीवाणुओं द्वारा फैलने वाला रोग।।
ोरीटी (कोरोनरी) हृद्‌रोग: चक्रीय धमनियों का, जो ृदय की मासपेशियों को रक्त पहुंचाती हैं सिकुड़ना या ंद होना।
केफासिस (कूबड़): रीढ़ की हड्डी का चक्राकार जिसमें पीठ ा ऊपरी भाग में कूबड़ बनता है। कूबड़वाला व्यक्ति इसलिए ...ा कहलाता है।
: गंधकधारी प्रोटीन जो त्वचा और बाल के ऊपरी नाखूनों जैसे शृंग ऊतकों को बनाता है।
: यौवनारंभ और पूर्ण यौवन के बीच के जीवन ।।
: त्वचा में कठोर, रेशेदार स्कार ऊतकों का गुच्छा।
खांसी (हूपिंग कफ): ब्रांकियल-नलियों और ऊपरी वायुमार्गों पर भयंकर संक्रमण से होनेवाली खांसी।
: प्रोटीन, चर्बी कार्बोहाइड्रेट, विटामिन जैसे तत्वों के भोजन में कमी से होनेवाली अवस्था।
कुशिंग सिंड्रोम: कार्टिजोन और दूसरे एड्रिनल होरमोन से होनेवाले लक्षण।
कुष्ठ रोग: त्वचा, तंत्री, मज्जा और अस्थियों का रोग जो जीवाणुओं से होता है।
कुहनी: हाथ के ऊपरी हड्डी और नीचे की हड्डी का झोलदार जोड़।
केशिका (केपिलरी): सूक्ष्म झिल्लीवाली रुधिर-वाहिका।
कैंसर: कोशिकाओं की अनियंत्रित असामान्य वृद्धि से होनेवाली बीमारी।
कैलस: छाला। कठोर मोटी त्वचा जो प्राय: हाथ या पैर के तलुए में लगातार दबाव से या घर्षण से बन जाती है।
कोमा: गहरी संज्ञाहीन नींद।
कोरी/कोरिया: यांत्रिक मांस-पेशियों की ऐंठनेवाली गति जो गंभीर हालत में आंखों को चलानेवाली पेशियों को छोड़ बाकी सभी पेशियों को प्रभावित कर सकती है।
कोलेस्ट्राल: खून और शरीर के ऊतकों तथा भोजन में पाया जानेवाला पदार्थ।
क्यू-ज्वर: हल्का संक्रामक रिकट्सी रोग।

क्रमांकुचन: ग्रसिका, आंत, डिंबवाहिनी जैसी पेशीनलिका में होनेवाले संकुचन के तरंग का क्रम।
क्रेटीनता: अवरुद्ध विकास की जन्मजात अवस्था।
क्वाड्रिसेप्स (चतु: शिरस्क): ऊरु भाग में चार मांसपेशियों का समूह।
क्वाशियोर कार: अत्यधिक प्रोटीन की कमी से होनेवाला रोग। स्तनपान बंद कर देने के बाद होता है।

ख

खंडतालु: जन्मजात। तालु के दोनों हिस्से एक साथ न बढ़कर मुख में विवर की ऊपरी पर्त को खंडित करते हैं।
खर्राटा: कोमल तालु का कोलाहल पूर्ण स्पंदन।
खसरा: त्वचा-विकार, ज्वर, शीत जैसे लक्षणों वाला छूत का विषाणु रोग।
खांसी: वायु-तंत्री से एकाएक वायु की स्फोट जो श्वास नलिका में या वायुतंत्री में किसी रुकावट के कारण होता है।

ग

गतिरोग: मितली या वमन जो गति के कारण होती है।
गलगंड (कंठमाल): थायरायड ग्रंथि की साधारण सूजन।
गर्भ निरोध: गर्भ को रोकना। गर्भ न होने देना।
गर्भपात: गर्भ के पहले 90 दिन के दौरान भ्रूण का गर्भाशय से समय के पहले निकल जाना।
गर्भाशय: स्त्री के श्रोणि प्रदेश में स्थित नाशपाती के आकार का अवयव।
गाउट: शरीर की रासायनिक प्रक्रिया में विकृति आने से यूरिक अम्ल की अत्यधिक मात्रा में उत्पादन से होनेवाला रोग।
गुच्छिका (गंग्लआन): स्नायु शिराओं को आपस में जोड़ने के लिए काम मे आने वाली स्नायु कोशिकाओं का समूह।
गुर्दा: देखिए वृक्क ।
गूंगापन: वाक् असमर्थता।
ग्रंथिल ज्वर: देखिए एक केन्द्र काणुता।
ग्रसनी: मुख के पृष्ठ पर और नासिका-मार्ग के ऊपर का लगभग 11.5 सेमी (4.5 इंच) लंबा विवर जिसके नीचे ग्रसिका और कंठ है।
ग्रसिका (ग्रासनली): 24 सेमी (10 इंच) लंबी पेशीनली जो गले से उदर तक भोजन ले जाती है।
ग्रीवा : योनि से गर्भाशय तक का भाग।
गेंग्रीन: आमतौर पर खून के न होने पर कोषों में आक्सीजन की कमी से ऊतकों की मृत्यु।
ग्लोकोमा: नेत्र गोलकों में द्रव के दबाव के बढ़ने से होने वाला नेत्ररोग।
ग्लोबुलिन: रक्त का एक घटक जो लंबा संश्लिष्ट प्रोटीन अणु है।
ग्रहणी धमनी: छोटी आंत की पहली 25 सेमी धमनी।

घ

घुटना (जानु): ... निचला ... के ऊपरी सिरे से

घाण और स्वाद: भोजन की महक को पाने के लिए घाण और स्वाद की इन्द्रियां मिलकर काम करती हैं।

च

चक्कर (वर्टिगो): भयंकर चक्कर आना। रोगी को लगता है कि उसका सिर तेजी से घूम रहा है।
चागा रोग: एक प्रकार की सोने की बीमारी।
चेचक: अत्यधिक संक्रामक रोग। कभी यह विश्वभर में सबसे [illegible] के [illegible] उन्मूलन हो चुका है।

छ

छता: त्वचा की एक प्रत्यूर्जक प्रतिक्रिया ।
छाजन (पामा): मुंह और दूसरे अंगों पर सामान्यतया होनेवाला त्वचा रोग।
छाला: त्वचा में द्रव का इकट्ठा होकर बुलबुला बनना। प्रायः यह रगड़ या जलने से होता है।
चिकेन पाक्स: बचपन में प्रायः होनेवाला एक भयंकर संक्रामक रोग।

ज

जड़ता: अधिक शराब पी लेने के बाद का उत्तर प्रभाव।
जत्रुक (कालरबोन): जत्रुक जो स्कंध अस्थि को वक्ष की अस्थि से जोड़ती है और भुजा को सहारा देती है।
जनन ग्रंथि: स्त्रियों में अंडाशय और पुरुषों में वृषण।
जननमूत्र तंत्र: जनन और मूत्र व्यवस्थाएं।
जन्म चिह्न: जन्म के समय बना सूजन या निशान।
जन्मजात विकृति: जन्म के समय रहने वाली विकृति।
जबड़ा: जबड़े के दो हड्डियां हैं ऊपरवाला मैक्सिला स्थिर है और कपाल का अंग है। नीचेवाला मैंडिबुल मैक्सिला से दो समान चूलियों से जुड़ा हुआ है।
जरा दूरदर्शिता: नजदीक की चीजों को देखने में कठिनाई।
जलशीर्ष: जन्म के समय सामान्य संचार के अवरोध के कारण मस्तिष्क की रंध्राओं में जमा प्रमस्तिष्कमेरुद्रव से होनेवाला सिर का असामान्य तौर पर बड़ा होना।
जिह्वा (जीभ): जीभ के ऊपरी सतह पर हजारों स्वादग्रंथि (टेस्ट बड्स) हैं जो तंतु शिराओं से बने हैं और चार तरह के स्वाद–मीठा, खट्टा, नमकीन और कड़ुआ का पता लगाती हैं।
जीवाण्विक रोग: हानिकारक जीवाणुओं से होनेवाला रोग
जेजुनम (मध्यांत्र): छोटी आंत के बीच का भाग।
जेट लेग: शरीर के चौबीस घंटे की स्वतः निर्मितलय–दैनिक लय का दिन और रात की प्राकृतिक लय के साथ स्थित सामंजस्य में व्यवधान से गड़बड़ी।
जीरोफ्थेलमिया: विटामिन–ए की कमी से आंखों का रोग।

झ

झिल्ली: शरीर की पर्त को आवृत करनेवाली शरीर के अंगों को अलग–अलग करनेवाली ऊतकों की पतली पर्त।

ट

टांसिल्स: गले के पृष्ठभाग में लसीका ऊतक की दो चपटी ग्रंथियां हैं।
टॉसिलाइटिस: टांसिल्स का सूजना।
टाइफस: रिकेट्सी सूक्ष्म जीवाणुओं से होनेवाले संक्रामक रोगों का वर्ग टाइफाइड ज्वर।
टाक्साइड: टाक्सिन जिसका हानिकारक प्रभाव नष्टकर दिए जाने पर भी शरीर में प्रतिरक्षी तत्वों को उत्तेजित करने की क्षमता रखता है।
टाक्सिन: स्टेफिलोकोकी या डिप्थीरिया जैसे जीवाणुओं द्वारा उत्पन्न विषैला पदार्थ।
टाक्सिमिया: रक्त संचार में विद्यमान किसी भी प्रकार के विष के लिए प्रयुक्त किया जानेवाला चिकित्साशास्त्र का शब्द।
टिक: मुख की पेशियों का लगातार संकुचन की संवेदना।
टिनिटस: कानों में लगातार गूंजने वाली आवाज।
टीका लगाना: शरीर में कीटाणुओं का (सामान्यतया इंजेक्शन द्वारा) प्रवेश करा कर छूत के रोग के हलके लक्षणों को उत्पन्न करना और इस प्रकार शरीर को रोग प्रतिरोधी बनाना।
टेकीकार्डिया: हृदयगति का अत्यधिक वेग जो सामान्यतया 100 प्रति मिनट से ऊपर होता है जबकि सामान्य गति 65 से 80 प्रति मिनट है।
टेटनस: ऐच्छिक पेशियों का संकुचन (तनाव) पैदा करनेवाला भयंकर संक्रामक रोग।
टेटनी (अपतानिका): खून में कैल्शियम की कमी से होनेवाला दौरा।
टेपवर्म: आंतों में पलनेवाला परजीवी वर्म।
ट्यूमर: शरीर के अन्दर या बाहर सूजन।
ट्राइकिनासिस: छोटे राउंड वर्म द्वारा उत्पन्न परजीवी रोग।
ट्रामा: व्रण या घाव जो दो तरह के होते हैं। (1) खरोंच जैसे शारीरिक घाव ।(2) वेगात्मक आघात जो मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव करता है।
ट्रकिया: वायु नली उपस्थियुक्त नली जो कंठ से फैलकर बाएं और दाएं भागों में बंटकर लगभग 23 सेमी लंबी है।

ड

डायरिया: बार–बार और अधिकता से होनेवाला दस्त।
डायाफ्राम: वक्ष और उदर को अलग करनेवाली मांसपेशियां।
डिप्थीरिया: जीवाणु से होनेवाला एक भयंकर संक्रामक रोग।
डेनड्रफ (रूसी): बालों में मृत त्वचा के छोटे–छोटे कणों का इकट्ठा होना।
ड्राप्सी (जलशोथ): देखिए ओयडेमा।

त

तंत्री (तंत्रिका): मस्तिष्क और सुषुम्ना तथा शरीर के अन्य भागों में सूक्ष्म विद्युत रासायनिक आवेगों का संचार करनेवाला विशेष कोशों का गुच्छा।
तंत्रिका यंत्र: वातावरण के प्रति शरीर की प्रतिक्रियाओं और अंतरंग कार्य व्यवस्थाओं को संचालित करनेवाली तंत्री–कोशों का तन्तु–जाल।
तंत्रिका शूल (न्यूरालिजिया): तंत्रिका में होनेवाला आवर्ती

ल जो एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर बढ़ता अनुभव ता है।
त्रिका शोथ (न्यूरिटिस): तंत्रिका या तंत्रिकाओं की सूजन जसमें दर्द हो भी सकता है, नहीं भी हो सकता है।
पेदिक: माइक्रोबैक्टीरियम ट्यूबरक्लोसिस जीवाणु से नेवाला छूत का रोग।
तापमान: सामान्य मानव शरीर का तापमान लगभग 37 सें 98.6 फा) है।
ारा: देखिए पुतली।
ालु: मुख की छत जिसका कठोर भाग हड्डियों के विभाजन े बना है और जो मुख और नाक विवरों को अलगाता है।
तिल: त्वचा में रंगीन धब्बा।
तिल्ली: देखिए प्लीहा।
ीव्र ग्राहिता: किसी टीके, कीड़े के दंश, सूई लगाने अथवा द्वा विशेष से होने वाली तीव्र प्रतिक्रिया।
तुषार-उपघात: कम तापमान में देर तक रहने से शरीर के खुले भाग की त्वचा और ऊतकों को होनेवाली क्षति।
त्वक् रक्तिमा: त्वचा के सतही वाहिकाओं में खून के दबाव से होनेवाली असाधारण लाली।
त्वक् शोथ (डर्मेटाइटिस): त्वचा की सूजन।

थ

थाइमस: हृदय के पास उरोस्थि के नीचे एंडोक्रीन ग्रंथि।
 २. ग्रंथि: कंठ के नीचे वायु नली के दोनों ओर स्थित ोक्रीन ग्रंथि।
थूक: फेफड़ों और वायु मार्गों में उत्पन्न श्लेष्मा युक्त द्रव्य।
थैलेमस: दो मस्तिष्क अर्धगोलकों के बीच मस्तिष्क में गहरे दो अंडाकार पदार्थों वाले तंत्री ऊतकों का समूह।
थोरेक्स: हृदय, फेफड़े और ग्रसिका को धारण करनेवाला वक्ष विवर।
थ्रश: देखिए मोनिलिएलीज।
थ्राम्बोसिस: खून के जम जाने से रुधिर वाहिका का अवरोध।

द

दंत (दांत): ऊपरी व निचले जबड़े की हड्डियों से निकलते हैं। इन हड्डियों के मोटे भाग कूपिकाओं से इनको आधार मिलता है।
दमा: खांसी सांस की कमी और सांस के तेज चलने से बारबार होनेवाले आघात की सांस की नली की बीमारी।
दाह, द्रवदाह: आग से अथवा खौलते द्रव से जलने से होने वाली मृत्यु या व्रण।
दिल का दौरा: दिल की मांसपेशी को जानेवाली धमनियों में अवरोध से हृदय को रक्त की आपूर्ति न होने से होता है।
दीर्घदृष्टि: निकट की चीजों को न देख पाना जैसे पढ़ते समय अक्षरों को न देख पाना।
दुग्धस्रवण: स्तनों द्वारा दूध का निकलना।
द्विशिरस्क (बाइसेप्स): एक ही टेक्न के द्वारा दो अलग- अलग मांसपेशियों की शिराओं का काम करनेवाली मांसपेशी।

ध

धमनी: हृदय से शरीर के ऊतकों तक खून ले जानेवाली रक्त वाहिनी। फेफड़ों को खून पहुंचानेवाली प्लुमोनरी धमनी को छोड़ बाकी सब धमनियों में प्रचुर मात्रा में आक्सीजन वाला खून होता है।
धमिनी काठिन्य (आर्टीरियोक्लियो रोसिस): एक लंबी बीमारी जिसमें धीरे-धीरे धमनियां सिकुड़ती जाती हैं और व्यक्ति की आयु के साथ-साथ कम लचीली होती जाती है।

न

नख (नाखून): अंगुलियों और पैर के अंगूठों के सिरों के ऊपरी सतह पर कांटेदार परतें।
नपुंसकता: पुरुष या स्त्री का प्रजनन योग्य न होना।
नाभिरज्जु: माता के गर्भ में प्लैसेन्टा से भ्रूण को जोड़नेवाली संरचना।
नारकोलेप्पी: आन्तरिक अंगों का नियंत्रण करनेवाले मस्तिष्क के अंग ।
नासिक (नाक): घ्राण का और श्वास प्रणाली के प्रवेश द्वारों में से एक अंग।
निकटदर्शिता (मायोपिया): दूर की चीजों को देखने में कठिनाईवाला दृष्टि दोष।
निद्रा: वह अवस्था जिसमें चेतनमस्तिष्क काम करना बंद कर देता है।
निद्रारोग: उष्णटिबंधीय अफ्रीका में व्यापक रोग। ट्राइपेनोसोम्स नामक सूक्ष्म प्रोटोजुआ पराजीवी से यह रोग फैलता है।
निमोनिया: फेफड़ों की बहुत अधिक सूजन। जीवाणु निमोकास्सी या विषाणु से यह रोग हो सकता है।
निम्न रक्तचाप (हाइपोटेन्शन): यह जरुरी नहीं है कि निम्न रक्तचाप किसी रोग का लक्षण हो क्योंकि बहुत से लोगों को स्वाभाविक रूप से निम्न रक्तचाप रहता है।
नियोथोरेक्स: प्लूराओं के बीच गैस या वायु की छाती में उपस्थिति।
निश्चेतना (एनेस्थेसिया): शरीर के सभी या किसी एक हिस्से में संवेदना का न होना।
नियूमोकोनाइसिस: फेफड़े में रेशों का बनना जो प्रायः श्वास मे धूल के लगातार जाने से होती है।
निषेचन औषधि: (उर्वरक ओषधि): प्रजनन तंत्र के ठीक से न काम करने पर होने वाले बांझपन को दूर करने के लिए दी जानेवाली औषधि।
निस्टेग्मस: आंखों का लगातार स्वतः चलना।
नील शिशु: शिशु जिसकी त्वचा और ओंठ जन्मजात हृदरोग के कारण नीले पड़ गए हैं।
नेत्रश्लेष्मला: नेत्र गोलक को आच्छादित करनेवाली और पुतलियों को सीधी रखनेवाली गीली झिल्ली।
नेत्रोत्सेध: नेत्र गोलक का आसाधारण रूप से बाहर निकल आना।

प

पक्षाघात (लकवा): शरीर के एक या अनेक भागों में संवेदन की कमी या क्षति।
पट्टिकाणः रक्त में रंगहीन सूक्ष्म कोशिका जो खून जमने के समय प्रमुख भूमिका निभाती है।

परानुकंपी तंत्रिका यंत्र: स्वैच्छिक तंत्रिका यंत्र का एक हिस्सा। आपात स्थिति के बाद शरीर को पुनः स्वस्थ बनाने के लिए जिम्मेदार ।

पराश्रव्यलेखन: शरीर की गहन संरचना का पता लगाने, पहचानने के लिए उच्च बारंबारता ध्वनि तरंगों को प्रयोग।

परितारिका: आंखों की पुतली से घिरा गोल रंगीन भाग।

परिशेपिका: लंबी आंत के अंधनाल से अलग निकली हुई 10 से.मी. लंबी खोखली तथा बंद मुंह नलिका जो उदर के निचले दाएं भाग में है।

परिसर्प पसली: त्वचा का सूजन और उस पर फफोला पड़ना। छाती के ढांचे को बनानेवाली मुड़ी हुई हड्डियों में से एक।

पाइलेटिक स्टेनसिस: जठर निर्गम की रुकावट पाचन नली में भोजन का तरल तत्वों में विभक्त होना जिससे वह रक्त–धारा में घुल सके और ऊर्जा ऊतकों की मरम्मत तथा विकास के लिए प्रयुक्त हो सके।

पाद (पद): 100 से अधिक स्नायुओं से जुड़ी हुई 26 अस्थियां और 3 संधियां पाद में होती हैं।

पारकिन्सनिज्म: ऐच्छिक गति को नियंत्रित करनेवाले मस्तिष्क भाग को प्रभावित करनेवाला रोग।

पित्त: वसा के पाचन में उपयोगी पीले हरे रंग का कड़ुवा द्रव। यह आंतों में जठर के अम्ल को प्रभावहीन बनाने में मदद करता है।

पित्ताशय: नाशपाती के आकार का भंडारण (7.5 से.मी. से 10 से.मी.) जिसमें यकृत द्वारा निःसृत पित्त इकट्ठा होता रहता है और पित्त नली से आंतों में जाता है।

पीयूष ग्रंथि (पिट्यूटर ग्रंथि): मस्तिष्क के निचले भाग से जुड़ी एक छोटी ग्रंथि।

पीलिया: खून में पित्त के रंग कारक तत्व के कारण शरीर की त्वचा और आंखों की सफेदी का पीला होना।

पुटक: शरीर के अनेक भागों में पाया जानेवाला सूक्ष्म छिद्र।

पुतली (कनीनिका): आंख की परितारिका के केन्द्र का बिंदु, जो आंखों में प्रकाश के प्रवेश की मात्रा को नियंत्रित करता है।

पबर्टी (यौवनारंभ): यौवनारंभ काल।

पूतिजीवरक्तता: एक गंभीर अवस्था। इसे खून का विषाक्त होना भी कहते हैं। इसमें जीवाणु या अन्य कीटाणु खून में कई गुना हो जाते हैं और पूरे शरीर में फैल जाते हैं।

पेरिटोनियम: उदर, आंत और अन्य उदर अंगों के [illegible] को आच्छादित करनेवाली झिल्ली।

पेशी: शरीर के संचालन के लिए आवश्यक ऊतक। शरीर में लगभग 650 पेशियां हैं जो तीन तरह की हैं – [illegible] संबंधी, अंतरंग और हृद।

पेशी दुष्पोषण: पेशी को कमजोर बनानेवाला [illegible] संचालन को नियंत्रित करनेवाली पेशियां [illegible] है। इसे परम्परागत माना जाता है।

पेच टेस्ट: एक परीक्षण जिसमें किसी द्रव्य को [illegible] के पास रखकर या अंतःक्षेपण द्वारा [illegible] है कि क्या वह व्यक्ति इस द्रव्य [illegible]

पैराथाइराइड ग्रंथि (परावटु ग्रंथि): [illegible] फास्फोरस को नियंत्रित करनेवाले [illegible]

पोलाग्रा: विटामिन–बी के निकोटनिक अम्ल और प्रोटीन की कमी से उत्पन्न पोषण संबंधी रोग।

पोलिपस: नाक, ब्लैडर, गर्भाशय, आंत जैसे अंगों की झिल्लियों से निकलनेवाला ट्यूमर।

पोलियोमाइलिटिस: तंत्री यंत्र का भयंकर विषाणु–संक्रमण जिससे प्रायः पक्षाघात हो जाता है।

प्यूपेरल बुखार: प्रसव से बाद स्त्रियों में अक्सर होनेवाला उपद्रव।

प्रधान: रक्त संचार यंत्र के बेकार होने से प्रधान के लक्षण प्रकट होते हैं। इनके समूह को प्रधान कहते हैं।

प्रतिआविष (एंटिटाक्सिन): एक प्रकार का प्रतिरक्षी जो जहर में घुलकर जहर के असर को बेकार कर देता है।

प्रतिजैविक (एंटिबायटिक्स): जीवाणु से होनेवाले रोगों के उपचार में अधिकतर काम में लाए जानेवाले रसायन जो फगस जीवाणुओ तथा फफूंदी से उत्पन्न होता है।

प्रतिरक्षी (एंटिबाडी): रोग से आक्रान्त होने पर शरीर के दो प्रमुख तत्व जो सक्रिय होते है। रुधिर सीरम में पाए जानेवाले ग्लोबीन या प्रोटीन गामा का रूप प्रतिरक्षी है। बाहरी तत्व (जिसे प्रतिजन (एंटिजेन) कहते हैं जो सामान्यतया प्रोटीन है) जैसे जीवाणु या कोई बाहरी रक्त कोष से रक्षा करने के लिए ये तत्व (प्रतिरक्षी) पैदा होते हैं।

प्रतिरक्षीकरण: स्वस्थ शरीर में किसी संक्रामक रोग से प्रतिरक्षा के लिए उपयुक्त पदार्थ, प्रायः रोग के हल्के रूप का कृत्रिम उद्दीपन।

प्रतिरोपण शल्यक्रिया: अस्वस्थ अंगों या ऊतकों के स्थान पर स्वस्थ अंगों या ऊतको का प्रतिस्थापन।

प्रतिवर्त: किसी उत्तेजना के प्रति शरीर की स्वाभाविक प्रतिक्रिया।

प्रतिहिस्टामिन: किसी ऐलर्जी के लक्षण का उपचार करने के लिए दवा।

प्रपादिका: अंगूठे को एड़ी की हड्डियों से मिलानेवाली [illegible] हड्डियों में से एक।

प्रपुटी: दाब या घर्षण से शरीर के किसी भाग में [illegible] छोटे काड़।

प्रमस्तिष्क: मस्तिष्क के दाएं–बाएं [illegible]

प्रमस्तिष्क आघात: मस्तिष्क के अन्दर [illegible] फट जाने से रक्तस्राव ।

प्रलाप: भयंकर मानसिक अस्थिरता।

[illegible]

[illegible]

[illegible] का एक तिहाई अफगानिस्तान पर नियंत्रण हो गया। संयुक्त राष्ट्र का शांति प्रयास 30 अप्रैल 98 को विफल हो गया और लड़ाई फिर से भड़क उठी। तालिवान ने दावा किया कि 85% देश पर उसका नियंत्रण है और वहां पर सख्त इस्लामिक नियम लागू हैं। अगस्त 98 में तालिवान ने मजारे शरीफ पर कब्जा कर लेने का दावा किया।

ऐसा कहा जा रहा है कि अमरीका द्वारा अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी के रूप में आरोपित सउदी के अरबपति बिन लाडेन के नेतृत्व में 5,000 पाकिस्तानी कट्टरवादी गुरिल्ले, 3,500 पाकिस्तान के नियमित सैनिक और अरब देशों के 1000 लड़ाकों की नियुक्ति की गई है। तालिबान ने लाडेन के प्रत्यार्पण को नामंजूर कर दिया है।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार अफगानिस्तान विश्व का सबसे अविकसित देश है। युद्ध की भयावता के कारण यहां के निवासी अन्य पड़ौसी देशो में शरण लिये हुए हैं। अफगानिस्तान में एक करोड़ से अधिक बारूदी सुरंगे बिछीं हैं।

अर्थ-व्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। पशु-पालन एक अन्य मुख्य धंधा है और निर्यात की मुख्य वस्तुएं हैं – पशु, फल, ऊन और चमड़ा। कोयला, नमक, प्राकृतिक गैस, पेट्रोलियम, लोहा और तांबा प्रमुख खनिज हैं।

हाल की घटनाये: केवल पाकिस्तान और युनाइटेड अरब अमीरात ने ही तालिबान सरकार को मान्यता दी है।

पिछले दो वर्षों में तालिबान और विरोधी गुटों के संयुक्त प्रयास से सूखा पीड़ित लोगों को अमरीका ने [illegible]

व्यक्ति मारे जा चुके हैं। इस्लामी कट्टरपंथी ([illegible] सात्वेशन पार्टी) का दावा है कि 1990 के आम [illegible] उसे सत्ता से वंचित रखा गया था। जून 1997 में अ[illegible] में देश में पहली वार विभिन्न दलों की सम्मिलित सर[illegible] और इसके वाद ही देश में वीभत्स नरसंहार हुअ[illegible] उग्रवादियों ने 100 नागरिकों की हत्या कर दी [illegible] 1998 में अल्जीरिया इस वात पर सहमत हुआ कि [illegible] व्यक्तियों की का दल गठन करे जो कि हिंसा के का[illegible] अन्वेषण करे।

ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि अल्जीरिया एक द[illegible] गृहयुद्ध के आतंक से वाहर निकल रहा है। फ्रांस वे[illegible] दूतावास और अन्य कार्यालय के खोलने के समझौ[illegible] पड़ौसी देश मोरक्को के साथ सुधरते संबध का अर्थ [illegible] यहां स्वतंत्रता और शांति का पदार्पण हो रहा है। सितंब[illegible] में सात वर्षीय इस्लामिक विद्रोह के वाद, एक शांति योज[illegible] लोकमत किया गया था। अगस्त महीने में देनविटोर के [illegible] में मंत्रिमंडल ने त्यागपत्र दे दिया।

इस देश की कृषि उपज गेहूं, जौ, आलू, आर्टी[illegible] पटसन और तम्बाकू हैं। खजूर, अनार और अंजीर फल बहुतायत से पैदा होते हैं। शराब और जैतून के तेल उत्पादन होता है। किन्तु सबसे महत्वपूर्ण धंधा पशुपा[illegible] है। महत्वपूर्ण खनिज हैं – लोहा, जस्ता, पारा, तां[illegible] एन्टिमनी, फास्फेट और पेट्रोलियम।

राष्ट्रपति: अब्देलअज़ीज़ बाउटेफ्लिका, प्रधानमंत्री: अ[illegible] [illegible]

ग्रैव (सर्वाइकल) और 12 वक्षीय (थोरासिक) कशेरुका से होते हुए प्रथम कटि कशेरुक तक व्याप्त है।
मेलानिन: त्वचा, आंखों की परितारिका, बाल जैसे शरीर के अंगों को रंग देनेवाला स्वाभाविक गहरा रंग कराक तत्व।
मोच (क्रैम्प): मांसपेशियों का दर्दभरा खिंचाव।
मोनिलियासिस: फफूंद द्वारा होनेवाला संक्रमण। खमीर जैसा कवक (कैंडिडा एलिबकन्स) बहुतायत से मिलता है।
मोनोन्यूक्लीयासिस: इसे ग्रंथि रोग भी कहते है। संभवतः विषाणुओं से होनेवाला एक संक्रामक रोग।
मोटापा (स्थूलता): शरीर में चर्बी की अधिकता से होनेवाले अतिभार के कारण उत्पन्न अवस्था।

य

यकृत: उदर के ऊपरी दायें भाग में स्थित शरीर की ग्रंथि।
यकृत् शोथ: यकृत की सूजन।
यकृत सिरोसिस: यकृत बीमारी जिसमें कोशिकाएं धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है।
याज: स्पाइरोकेटी जीवाणु से होनेवाला रोग।
यूरीमिया: गुर्दे से छनकर उत्सर्ग पदार्थ सामान्यता जो मूत्र में निकल जाते हैं की उपस्थिति से रक्त का विषाक्त होना।
येलो फीवर (पीत ज्वर): अफ्रीका और दक्षिण अमरीका के जंगलों में रहनेवाले मच्छरों से फैलनेवाला विषाणु रोग।
योनि: मांसपेशी मार्ग जो श्लेष्मा झिल्ली से बना है। 10-12 सेमी (4-5 इंच) लंबा यह पतला या स्त्री के बाह्य जनन अंग से लेकर गर्भ-मुख तक फैला है।
योनिच्छद: योनि के प्रवेश पर ग्रंथि।

र

रंजक हीन जीव (अल्बिनो): त्वचा, बाल और आंखों में श्याम वर्ण की कमीवाला व्यक्ति।
रक्त रुधिर: शरीर की यातायात व्यवस्था।
रक्तदाब: धमनी की पर्तों पर पड़ने वाला खून का दबाव।
रक्तस्राव: रक्तवाहिनी से खून का निकलना। यदि रक्तस्राव अधिक होता है और प्रौढ़ व्यक्ति के एक लीटर (2 पिंट) खून से ज्यादा की क्षति होती है तो आघात पहुंचेगा।
रक्तघात: सामान्यतः स्ट्रोक (आघात) कहा जाता है। मस्तिष्क की रक्त कोशिका के पर्त के फट जाने से अथवा खून के जमाव से मस्तिष्क में रक्त-संचार में बाधा होने से हो जाता है।
रक्ताणु: लाल रुधिर कोष ।
रक्तदान: एक व्यक्ति (दाता) के खून का दूसरे के संचार व्यवस्था के अन्दर प्रवेश कराना।
रजोनिवृत्ति: स्त्रियों की मासिक धर्म की अनियमितता और उसके बंद हो जाने से जीवन शैली में उत्पन्न परिवर्तन।
रतिरोग: लैंगिक संबंधों से उत्पन्न रोग।
राइनाइटिस: नाक के श्लेष्मा झिल्ली का सूजन जिससे नाक बहने लगती है।
रिंग वर्म (टाइनिया): त्वचा का अत्यधिक संक्रामक कवक संक्रमण।
रिकेट्स: भोजन में विटामिन डी की कमी से और त्वचा में बच्चों की हड्डियों का मुलायम हो जाना।
रिकेट्सी रोगी: छोटे आकार के सूक्ष्म जीवाणुओं से होनेवाला रोग।
रूमेटायड आर्थोइटिस: देखिए संधिशोथ।
रूमेटिज्म: विकार जिसमें जोड़ों, हड्डियों और उनसे सबद्ध ऊतकों में दर्द होता है।
रूमेटी ज्वर: स्ट्रेप्टोकोकस जीवाणुओं से उत्पन्न टाक्सिन (विष) के कारण होनेवाला रोग।
रेटिना: आंख के पृष्ठ में प्रकाश-संवेदनशील क्षेत्र।
रेडियस (बहिःप्रकोष्ठिका): भुजा के अग्र भाग की दो हड्डियों में छोटी हड्डी जो अंगूठे की ओर स्थित है।
रेनाड्स डिसीज: हाथ और पैर का प्रभावित करनेवाला धमनियों का रोग जिसमें अस्थायी तौर पर रक्तसंचार रुक जाता है जिससे अंग दर्द के साथ-साथ सुन्न हो जाता है। इस रोग का उल्लेख सबसे पहले मॉरिस रेनाल्ड (1834-81) जो फ्रांस के थे, किया था।
रेसस (आर. एच.) कारक: बहुत से लोगों में लाल रक्तकोश की सतह पर विद्यमान संश्लिष्ट तत्व। आर-एच कारक वाले व्यक्तियों को आर एच पाजिटिव और इसके न रहने पर आर एच निगेटिव कहा जाता है।
रैबीज (अलर्क): विषाणु से होनेवाला केन्द्रीय नाड़ी तंत्र का संक्रामक घातक रोग।
रैश: प्रायः अनेक छोटे-छोटे धब्बों वाले त्वचा के लाल भाग जो अस्थायी उभार है।
रोगनिरोध: रोग के उपचार के स्थान पर रोकथाम के लिए औषधि का प्रयोग।
रोगाणु: रोग पैदा करनेवाले किसी भी सूक्ष्म जीवाणु के लिए वैज्ञानिक नाम।
रोजेसी: मुख को विकृत करनेवाला त्वचारोग जिसके कारण का अभी पता नहीं चल सका है।

ल

लसीका: लसीका वाहिका में संचरण करनेवाला और ऊतकों में उत्पन्न पारदर्शक पीला द्रव।
लसीकाणु: श्वेत रक्तकोष अथवा ल्यूकोसाइट का एक रूप।
लार: तीन लाला ग्रंथियां (गाल में पैरोटिड; जीभ के नीचे का ग्रंथि और जबड़े के नीचे की ग्रंथि) से निकलनेवाला श्लेष्मायुक्त द्रव।
लिंग हारमोन: किशोरावस्था में लैंगिक गौण [illegible]।
लैंगिक प्रजनन: सृष्टि की निरंतरता।
ल्यूकेमिया: एक रोग जिसमें खून बनानेवाले अंग श्वेत रक्तकोशों की मात्रा में अधिकता पैदा करते हैं। ये [illegible] विकास के अवस्था में ही होते हैं।

व

वंध्यता: सामान्य तौर पर बच्चे पैदा न कर सकने की [illegible]
वक्ष: शरीर में गर्दन और उदर के बीच का भाग।
वसा (चर्बी): एक आवश्यक भोजन [illegible] से गर्म तो लेकर [illegible] है।

इरस रोग (विषाणु रोग): बहुत सूक्ष्म जीवों के द्वारा नेवाले रोग।
तस्फीति: प्रौढ़ावस्था या वृद्धावस्था का एक रोग जिसमें फड़ों के वायु-कोष बढ़ जाते हैं।
हिकारोध: रक्तवाहिका का शरीर में प्रविष्ट किसी पदार्थ रा अनुरोध।
किरण रोग: गामा किरण, नाभिकीय विकिरण अथवा त्स किरण जैसे उच्च ऊर्जा विकिरण में अधिक रहने से रीर पर होनेवाला प्रभाव।
क्षत: ऊतकों की असामान्य अवस्था जैसे घाव, व्रण, ल्सर, ट्यूमर आदि।
क्षेप: शरीर के एक अंग से दूसरे अंग में रोग का फैलना।
टामिन: असंबद्ध रासायनिक तत्वों का एक वर्ग जो शरीर ो रसायनिक प्रक्रियाओं के लिए सूक्ष्म रूप में आवश्यक हैं।
द्रधि: शरीर के ऊतक (टिशू) में दर्द भरा सूजन जो ाधारणतया हानिकारक जीवाणुओं के आक्रमण के कारण ता है।
ापुटीशोध: बड़ी आंत में या कोलन में विकृति जिससे पेशियों ो परत से अन्दर की थैली बाहर निकल जाती है।
ापात्तन: अल्प मात्रा में विष का शरीर के लिए हानिकारक होना। ।
ाष्ठ (मल): भोजन का अवशेष जो आंतड़ियों से बाहर ाकलता है।
क्क(गुर्दा): खून से बेकार के तत्वों को अलग करनेवाला अंग।
द्धि: गर्भ से लेकर शारीरिक परिपक्वता तक होनेवाले ाकास की प्रक्रिया।
षण: वृषणकोष में स्थित दो पुरुष लैंगिक ग्रंथियां।

श

-चिकित्सा: निश्चेतना-इथर का प्रयोग कर विकार, या रोग का शल्य (आपरेशन)।
ाशक ओष्ठ: ऊपर के ओंठ की जन्मजात विकृति । जन्म के हले चेहरे के दोनों ओर का मिल न पाने से उत्पन्न विकृति।
ारा: शरीर के सभी भागों से हृदय को रक्त पहुंचाने वाली ाधिरवाहिका।
ारा-शोथ: शिराओं में रुधिरवाहिका की थाम्बासिस के ाथ-साथ प्रायः होनेवाली सूजन।
ारोवेदना: मस्तिष्क स्वयं ये वेदना की अनुभूति नहीं करता ेकिन मस्तिष्क की रक्त वाहिकाओं को जानेवाली स्नायु ाटकर संवेदना पैदाकर सकती हैं और कपाल के अन्दर ा परिवर्तनों से होनेवाले दबाव के प्रति बहुत अधिक ांवेदनशील होती है।
ाश्न: पुरुष जननेंद्रिय जो शंकुक के आकार का स्पंजी ऊतक समूह से बना है और ढीली-ढाली त्वचा में स्थित है।
ीत शल्य चिकित्सा: शल्य चिकित्सा में प्रयुक्त एक विधि ाजसमें अत्यधिक कम ताप के प्रयोग से ऊतक को नष्ट किया ाता है।
ाुक्र (वीर्य): शिश्न से स्खलन के समय निकलनेवाला गाढ़ा ाफेद द्रव।
ाुक्रवाहक: वृषण से मूत्रमार्ग या शुक्राणु को ले जानेवाली नली।
शुक्राणु: पुरुष जनन कोशिका अथवा शुक्र कोश का वैज्ञानिक नाम।
शोथ: व्रण, जलन अथवा संक्रमण के प्रति ऊतक की प्रतिक्रिया।
श्लेष्मा: घना तरल द्रव जो श्लेष्मल झिल्लियों को तरल बनाती है।
श्वेताणु: श्वेत रक्त कोशिका जिसका काम खून में आए जीवाणुओं समेत बाहरी तत्वों पर आक्रमण करना और उन्हें जीर्ण करना है।
श्वसनी शोथ: श्वसनी का जो श्वासनली से दोनों फेफड़ों तक जानेवाली नली है में सूजन।
श्वसन: सांस लेना या छोड़ना। फेफड़ों में वायु के जाने और निकलने की क्रिया है। इस क्रिया में रक्त आक्सीजन लेते हैं और हवा में कार्बन डाइआक्साइड छोड़ते हैं।
शूल: उदर में नलियों में होनेवाले मरोड़ से उठने वाला रुक-रुक कर होनेवाला भयंकर दर्द।

स

संकोचन: किसी नली, वाहिका या अंग के मुख का सिकुड़न।
संतुलन: अपने परिवेश के संदर्भ में शरीर का रख-रखाव और प्रत्यक्षीकरण।
संधिशोथ (आर्थराइटिस): जोड़ों का सूजन जो गठिया कहलाता है। यह अनेक रोगों का सूचक है।
संयोजी ऊतक: शरीर के अवयवों के कंकाल के सहारा देनेवाले रेशेदार ऊतक।
संविदारण: किसी अंग या ऊतक का फटना या टूटना।
सपोज़िटरी: कोको बटर या ग्लिसरीन का छोटा सिलेंडर जो मलाशय या योनि में डाला जाता है।
सर्दी-जुकाम: श्वास की विशेषकर गले और श्वसन की संक्रामक बीमारी जो अनेक प्रकार के विषाणुओं से होती है।
सर्वव्यापी (पेंडमिक) रोग: संक्रामक रोग।
सल्फेनोमाइड: औषधि-वर्ग जो 1930 में पहली बार प्रयुक्त होने पर अनेक जीवाणु रोगों के लिए वरदान सिद्ध हुआ।
साइनस: आम तौर पर हड्डियों में खोखला विवर। इस शब्द का प्रयोग अक्सर कपाल के चार परानासल – साइन्स के लिए होता है – (1) सामने (ललाट का) (2) जंभिक (गाल की हड्डियों का (3) स्फीत नाड़ी (नाक के पृष्ठ भाग का) (4) झर्झरिक (सामनेवाले साइनस के पीछे और नीचे)
साइको सेमेटिक (मनःशारीरिक): शरीरिक और मानसिक लक्षणोंवाले रोगों के लिए प्रयुक्त शब्द।
साइटिक: नितंब-तंत्रिकाओं में होनेवाला दर्द। शरीर से सबसे बड़ी दो तंत्रिकाएं हैं जो मेरुदंड से लेकर पाद तक फैली हुई हैं।
साइमेटेडी: पेप्टिक अल्सर के लिए अमरीका में हाल में बनाई गई दवा।
सार्कोमा: मांसपेशी, उपस्थि अथवा हड्डी जैसे संयोजक ऊतकों की अस्वस्थ वृद्धि या कैंसर ।
साल्मनेलता: साल्मनेल जीवाणुओं द्वारा होनेवाला विषाक्त भोजन का एक रूप।
सिफलिस: अति भयंकर रतिरोग जो सर्पिल आकार के जीवाणु से होता है।

सिस्टाइटिस: मूत्राशय का सूजन जिससे बारबार पेशाब करने की इच्छा और पेशाब करते समय ज़लन होती है।
सिस्टाल (प्रकुंचन): हृदय का लयात्मक संकुचन जिससे रक्त संचार तंत्र में खून पंप किया जाता है।
सीरम: खून के जमने के बाद खून में रहनेवाला पीला द्रव।
सीसा विषाक्तता: सीसे से बने पेंट (रंग), अनेकों औद्योगिक प्रक्रियाओं और मोटरकार के धुओं से होनेवाली विषाक्तता सीसा विषाक्तता के स्रोतों में प्रमुख हैं।
सेंट एंथोनी की आग: त्वचा की जली हालत का एक प्रचलित नाम जिसे पहले विरुप समझते थे, यह अर्गटरोग से संबंधित है।
सोरियासिस: आम तौर पर हल्का, लेकिन लगातार रहनेवाला त्वचा रोग जो अपनी भीषणता की मात्रा में घटता-बढ़ता रहता है।
सौर केन्द्रण (सोलार प्लेक्सस): ऊपरी उदर में तंत्रिका-संधियों के जमघट को सूचित करनेवाला शब्द। ये अनुकंपी तंत्रिका के अंग हैं।
सौर दाह: सूर्य के विकिरण से उत्पन्न त्वचा का जलन।
स्कर्वी: भोजन में विटामिन-सी (एस्कार्बिक अम्ल की कमी के कारण होनेवाला हीनताजन्य रोग)।
स्कारटम : शिश्न के नीचे लटकनेवाली थैली।
स्कारलेट फीवर: बच्चों की एक छूत की बीमारी।
स्कालियोसिस: मेरुदंड की दोनों ओर की वक्राकृति।
स्कैपुला: स्कंधों के पृष्ठभाग पर स्थित त्रिकोणात्मक चपटी हड्डी जिसे आम तौर पर कंधे की पट्टी कहते हैं।
स्कैबीज़: सर्कोप्टीस स्कैबी नामक कुटकी के कारण होनेवाला अत्यधिक संक्रामक त्वचा रोग।
स्खलित चक्रिका: मेरुदंड की हड्डियां (कशेरुकी) अंतराकशेरुक बिंब (जो कुल 23 हैं) नाम के मृदु केन्द्रवाले उपस्थियों के वलय में अलग-अलग की गई हैं और ये गद्दों की तरह मेरुदंड की हड्डियों के लिए काम करती हैं। अंतराकशेरुक बिंब के खिसक जाने को स्खलित चक्रिका कहते हैं। इससे कमर-दर्द होता है।
स्टाई: पलकों की सूजन जो अश्रुग्रंथियों संक्रमण से होता है।
स्टेरायड: समान रासायनिक संरचनावाले प्राकृतिक पदार्थों के समूह का नाम।
स्ट्रबिसमस: दोनों आंखों से एक साथ एक ही वस्तु पर केंद्रित न कर पाने की अवस्था।
स्ट्रोक: धमनी-अवरोध के कारण होनेवाला मस्तिष्क का आघात।
स्तन: स्त्री-जाति का दूध उत्पन करने अंग।
स्थानिक (इंडेमिक) रेग: क्षेत्र-विशेष या जन-संख्या विशेष में फैला रोग।
स्नायु: रेशेदार ऊतकों का समूह जो हड्डियों अथवा उपास्थियों को जोड़ते हैं।
स्पंदन: हृदय का संकुचन (सिस्टाल) और स्फुरण (डायस्टाल) के दो भागों वाला आवेग जो धमनियों में प्रवाहित है।
स्पाइना बाइफाइडा: एक जन्मजात विकार जिसमें मेरुदंड की हड्डियों का विकास ठीक से नहीं होता । इससे मेरुदंड जो शरीर का प्रमुख तन्तु है - ठीक से सुरक्षित नहीं होता।
स्प्रूस: छोटी आंत की भयंकर बीमारी। इससे छोटी आंत शरीर चर्बी और कुछ विटामिनों को ठीक से पचा नहीं पाती।
स्फिंक्टर: किसी अवयव के निकास अथवा प्रवेश प सामान्यतया स्थित पेशियों के रेशों का वृत्त।
स्फीतशिरा: प्राय: पैरों में होनेवाला त्वचा सतह पर र कोशिकाओं में उभार और गांठ।
स्वांतर्गहरण: शरीर की आंतरिक क्रियाओं और अंगों व स्थिति-गतियों को अनुभव करने की क्षमता।
स्वापक (नारकोटिक): सुषुप्ति पैदा करनेवाली, पीड़ा द करनेवाली और स्वस्थ अनुभव करानेवाली दवा।
स्वेदन (पसीना): स्वेदन-ग्रंथियों द्वारा निकाला जानेवा द्रव जो 99 प्रतिशत पानी है।

ह

हर्निया: किसी अवयव की मांसपेशी, दूसरे आच्छादि करनेवाले ऊतक कमजोर हो जाते हैं और अंग विशेष क एक हिस्सा फूल जाता है।
हाइपोकोन्ड्रिया: स्वास्थ्य के संबंध में रुग्ण चिंता बिना कि स्पष्ट शारीरिक कारण के अनेक प्रकार के लक्षणों के सा यह चिंता आती है।
हाजकिन्स रोग: लसीका पर्व, अस्थि-मज्जा यकृत अ प्लीहा को बाधित करनेवाला कैंसर रोग। अंग्रेज डाक्ट 'थामस हाजकिन' (1798-1866) के नाम पर रखा गय
हारमोन: रुधिर धारा में सूक्ष्म मात्राओं में शरीर के चारों अ ले जाए जानेवाला रासायनिक संदेशवाहक।
हिचकी: डायफ्राम का रहकर बारबार यांत्रिक संकुचन
हिस्टेमिन: शरीर की रक्षा-व्यवस्था में हिस्सेदार स ऊतकों में विद्यमान एक रासायनिक पदार्थ। हिस्टेमिन शो (सूजन) और एलर्जी के लक्षणों के लिए जिम्मेदार है।
हिस्टेरोक्टामी: गर्भाशय का शल्य चिकित्सा द्वारा निका जाना।
हीनताजन्य रोग: विटामिन और खनिज तत्वों की आवश्य मात्रा में भोजन में न होने से होनेवाला रोग।
हीमोग्लोबिन: रक्त कोष में लोह और प्रोटीन का यौगि जिससे खून का रंग लाल होता है और जो फेफड़ों आक्सीजन लेकर शरीर के ऊतकों तक पहुंचाती है अ बेकार के तत्व कार्बन डाइआक्साइड लेकर लौटाती है।
हीमारायड: गुदा नस की परत की शिरा का बढ़ना।
हीमोफिलिया: एक आनुवांशिक रोग जिसमें असामान्य रु से धीरे धीरे खून जमता है।
हुकवर्म रोग (अंकुशकृमि रोग): परजीवी कृमि द्वारा जनि गंभीर शीतोष्ण प्रदेशीय रोग।
हृदय: वक्ष में मांसपेशी अंग जो 70 धड़कन प्रति मिनट व गति से खून को शरीर के हरभाग में पंप करता है।
हृद्दाह: अपच से होनेवाला हृदय में जलन की संवेद जिसमें आमाशय का अम्ल ग्रास नली में चला जाता है
हैजा (कालरा): वाइब्रियो कालरी नामक कीटाणु फैलनेवाला भयंकर संक्रामक रोग।
हैलियोटिस: बदबूदार सांस। दांत के गिरने, मसूड़े, टांसिल नाक, साइनसेज अथवा फेफड़ों संक्रमण से गुर्दे के ठीक न काम करने से अथवा आमाशय या आंतों की बीमारी से सकता है।

होमियो पेथी: 'ज़हर की दवा ज़हर है' इस सिद्धान्त पर आधारित उपचार की गैर-पारम्परिक व्यवस्था। संम्युअल हेनेमान (1755-1843) द्वारा जर्मनी में 1796 में स्थापित।

होमियोस्टेसस: विभिन्न जैविक प्रक्रियाओं के आन्तरिक संतुलन को स्थिर बनाए रखने की शरीर की क्षमता।

ह्युमरस (प्रगंडिक): कंधे से कुहनी के जोड़ तक फैली हड्डी।

हविट्लो (परानखत्लप): नाखून के नीचे ऊतकों का सूजन जो प्रायः गंभीर नहीं होता।

क्ष

क्षत: देखिए आरोद और एलक्लाइड्स

क्षुद्रांत (इलियम): छोटी आंत का लगभग 3.5 मीटर लंबा निचला भाग जो बड़ी आंत की ओर ले चलता है। वसा और कार्बोहाइड्रेट का पाचन इस भाग में होता है।

कंप्यूटर

बीसवीं सदी में कंप्यूटर क्रांति के चलते अब सूचनाओं की प्राप्ति और इनके संसाधन में काफी तेजी आई है। आज खिलौनों, शब्द संसाधकों, (वर्ड प्रोसेसर्स), पॉकेट कैलकुलेटरों, रोबोट और घरेलू साज-सामान आदि अनगिनत चीजों तक में माइक्रो प्रोसेसर प्रयुक्त हो रहे हैं। माइक्रो प्रोसेसर के बिना आधुनिक मशीनों की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

पांच पीढ़ियां: पिछले चार दशकों में कंप्यूटर की पहली चार पीढियां क्रमशः वेक्यूम ट्यूब तकनीकी, ट्रांजिस्टर और प्रिंटेड सर्किट तकनीकी, इंटिग्रेटेड सर्किट तकनीकी और वेरी लार्ज स्केल इंटिग्रेटेड (VLSI) तकनीकी पर आधारित थीं। चौथी पीढ़ी की VLSI तकनीकी में माइक्रो प्रोसेसरों का वजन केवल कुछ ग्राम तक रह गया था। एक दो वर्ग इंच की सिलिकोन चिप 512 K या 512 x 1024 बिट तक स्टोर कर सकता है। (बिट बाइनरी डिजिट को कहते है।) आज पीढ़ी के कंप्यूटर तो कृत्रिम बुद्धि वाले हो गए हैं।

कंप्यूटर वास्तव में एनलोग या डिजिटल मशीनें ही हैं। अंकों को एक सीमा मे परस्पर भिन्न भौतिक मात्राओं में परिवर्तित करनेवाले कंप्यूटर एनालोग कहलाते हैं। जबकि अंकों का इस्तेमाल करनेवाले कंप्यूटर डिजिटल कहलाते हैं। एक तीसरी श्रेणी हाइब्रिड कंप्यूटरों की भी है। इनमें अंकों का संचय और परिवर्तन डिजिटल रूप में होता है लेकिन गणना एनालोग रूप में होती है।

एनालोग कंप्यूटर केवल विशेष वैज्ञानिक और तकनीकी क्रियाकलापों के लिए ही होते हैं जबकि डिजिटल कप्यूटर वैज्ञानिक क्षेत्रों के साथ-साथ व्यवसाय और प्रशासनिक क्षेत्रों में भी काम आते हैं। आज कंप्यूटर की दुनिया मे डिजिटल कंप्यूटरों का ही बोलबाला है। नवीनतम डिजिटल कंप्यूटरों को ही अब माइक्रो कंप्यूटर कहा जाता है।

इतिहास

यांत्रिक कैलकुलेटर का उद्‌गम दो गणितज्ञों ब्लेज पास्कल (1623-62) और गोटफ्रीड विल्हेम लेबिंट्ज (1646-1716) के कार्यों में खोजा जा सकता है। लेकिन चार्ल्स बेवेज (1792-1871) ने जोन नेपियर (1550-1617) द्वारा खोजों गए लघुगुणक अंकणों को समाहित कर सकनेवाली आलपरपज कैलकुलेटिंग मशीन बनाने का विचार किया था।

आधुनिक कंप्यूटर क्रांति इस सदी के चौथे दशक में आरंभ हुई थी। 1904 में खोजे गए थर्मियोनिक (तापायनिक वोल्व) को वैज्ञानिक विन्न विलियम्स ने 1931 में गणक यंत्र के रूप में उपयोगी पाया था। हावर्ड एकेन द्वारा निर्मित हावर्ड मार्क-1 कंप्यूटर विश्व का पहला डिजिटल कंप्यूटर था जिसमें इलेक्ट्रो मैकेनिकल यंत्रों का प्रयोग हुआ था। इसे 1944 में इंटरनेशनल बिजनेस मशीन (IBM) और हावर्ड विश्वविद्यालय ने मिलकर विकसित किया था।

1946 में विश्व का पहला पूरी तरह से इलेक्ट्रोनिक डिजिटल कंप्यूटर ENIAC या इलेक्ट्रोनिक न्यूमेरिकल इंटिग्रेटर एंड कैलकुलेटर बना। पहली पीढ़ी का यह कंप्यूटर वैक्यूम ट्यूब टेक्नोलोजी पर आधारित था। इसमें दस अंकों की बीस संख्याओं को स्टोर किया जा सकता था। यह दस अंकों का दो संख्याओं का गुणनफल तीन मिलीसेकेंड (एक सेकेंड का एक हजारवां भाग) में निकाल सकता था और प्रति सेकेंड 5000 योग कर सकता था। इस कंप्यूटर में 18,000 वैक्यूम ट्यूब, 70,000 रेसिस्टर, 10,000 कैपेसिटर और 6,000 स्विच होते थे। तीन टन वजनी इस कंप्यूटर की लंबाई 100 फुट, ऊंचाई दस फुट और मोटाई 3 फुट थी। यह दशमलव प्रणाली की मशीन थी जबकि आज के कंप्यूटर बाइनरी (0,1) द्विसंकेत संख्या व्यवस्था पर आधारित होते हैं।

जून 1945 में प्रसिद्ध गणितज्ञ जानवान न्यूमैन ने इलेक्ट्रोनिक डिसक्रीट वैरिएबल ओटोमैटिक कंप्यूटर (EDVAC) पर अपनी रिपोर्ट दी। डिजिटल कंप्यूटरों के लिए वान न्यूमेन के ढांचे में इनपुट, आउटपुट, मेमोरी, अर्थमेटिक लोजिकल यूनिट (ALU) और कंट्रोल यूनिट थे। एक सेंट्रल प्रोसेसर यूनिट (CPU) पर आधारित इस परंपरागत डिजाइन में एक नियमित परिदृश्य या प्रोग्राम के जारिए काम होता था।

बाइनरी सिस्टम (द्विअंकन व्यवस्था)

शून्य और एक के अनंत संयोजन मिलकर बाइनरी व्यवस्था बनाते हैं। दस आधार की गणना या परिकलन में शून्य सहित दस संकेत या सिफर जरूरी होते हैं। जबकि दो आधार की गणना में केवल दो सिफरों, शून्य और एक की जरूरत होती है। निम्न अंकों के लिए बाइनरी संख्या इस प्रकार लिखी जाती है।

कम्प्यूटर मे एक सिस्टम यूनिट, एक की–वोर्ड और विजुअल डिसप्ले यूनिट (VDU) होते हैं। जवकि प्रिंटर महज एक सहायक इकाई होता है। इससे माइक्रोकंप्यूटर के आउटपुट को हाई कोपी के रूप में प्राप्त किया जाता है। इसका की–वोर्ड सामान्य टाइपराइटर की–वोर्ड की तरह ही होता है। हालांकि इसमें कुछ विशेष चीजें और भी जुड़ी रहती हैं। VDU माइक्रो कंप्यूटर का वीडियो डिस्पले टर्मिनल होता है। यह मोनोक्रोम (स्वेत–स्याम) या रंगीन होता है।

सिस्टम यूनिट किसी भी माइक्रोकंप्यूटर का सवसे अहम भाग है। इसमें माइक्रो प्रोसेसर की गति 6.5 लाख आपरेशन प्रति सेकेंड होती है। साथ ही इसमें डायनमिक रैंडम एक्सेस मेमोरी (DRAM), एक फ्लोपी डिस्क ड्राइव, विल्ट इन स्पीकर और मैनेजमेंट एनलार्जमेंट के लिए कुछ एक्सपेंशन स्लोट होते हैं। इसके अलावा माइक्रो कंप्यूटर की मेमोरी वढ़ाने के लिए अतिरिक्त RAM वोर्ड, चिप और मोडयूल भी इसमें लगाए जा सकते हैं। ROM माइक्रो कंप्यूटर आपरेशनों के लिए जरूरी प्रोग्रामों को स्टोर करता है।

मोड्यूलर

माइक्रो कंप्यूटर का डिजाइन मोडयूलर होता है। इसके मोड्यूल एक संवाहक से जुड़े रहते हैं। इसका संवाहक (या वस) PDP-11 के UNI-BUS का माइक्रो प्रोसेसर रूप है। जवकि INTEL कंप्यूटर MULTI-BUS आधारित होता है।

माइक्रो प्रोसेसर या सिलिकोन चिप ALU और कंट्रोल यूनिट को मिलाता है। जवकि मेमोरी (ROM और RAM), माइक्रो प्रोसेसर की–वोर्ड इंटरफेस, VDU आदि, एक्सपेंशन स्लोट, स्पीकर और टाइमिंग सर्किट सभी माइक्रो कंप्यूटर सिस्टम के मदरवोर्ड पर होते हैं।

अधिकतर 8–विट के माइक्रो प्रोसेसरों में एक समय में केवल 64 किलो वाइट (KB) मेमोरी होती है। जवकि अधिकांश 16–विट माइक्रोप्रोसेसरों में 256 KB से 16 MB (मेगावाइट) मेमोरी हो सकती है। साथ ही 16–विट माइक्रो प्रोसेसर 8–विट मा. प्रो. के मुकावले दो से दस गुना अधिक तेजी से आंकडों को प्रोसेस कर सकता है।

डेस्क टोप सिस्टम

चौथी पीढ़ी के माइको कंप्यूटरों जैसे IBM-PC और मैकिंन्टोश आदि फ्लापी डिस्क ड्राइव (FDD) और CD ड्राइवस वाले छोटे डेस्क टोप सिस्टम हैं। इनमें एक माइक्रोप्रोसेसेर और RAM, और पांच एक्सपेंशन स्लोट होते हैं। ये विभिन्न आपरेशन सिस्टम जैसे MS-DOS, विंडो–95, OS/2 और मैक 05 के तहत काम करते हैं।

फ्लोपी डिस्क

माइक्रो कंप्यूटरों में सहायक स्टोरेज के रूप में सवसे ज्यादा इस्तेमाल फ्लोपी डिस्क का होता है। यह प्लास्टिक के खोल में वंद गोल विनाइल डिस्क होती है। इसका अव अंतर्राष्ट्रीय मानक आकार साढ़े तीन इंच हैं। इसके दोनों ओर सूचनाएं स्टोर की जा सकती हैं। सूचनाओं को सिंगल, डवल या हाई डेंसिटी में स्टोर किया जाता है। डिस्क की रिकार्डिंग क्षमता का पता डेंसिटी से चलता है। अमूनन ज्यादातर डिस्कें 180 KB, 360 KB, 720 KB, 1500 KB और 1440 KB की होती हैं। अव मैग्नेटो ओप्टिव ड्राइव और कार्ट्रिज 21 MB, 128 MB, 650 MB और 1 GB क्षमता में भी उपलब्ध हैं। ये लेसर आधारित हैं। इसलिए काफी महंगी होती है।

हार्ड डिस्क ड्राइव

विनचेस्टर या हार्ड डिस्क की क्षमता फ्लापी डिस्क से काफी ज्यादा होती है। लेकिन इन्हें फ्लापी डिस्क की तरह वदला नहीं जा सकता।

आजकल की हार्ड डिस्कें साढ़े तीन इंच तक छोटी हो सकती हैं और इनकी क्षमता 40MB से 2GB तक होती है। अक्सर फ्लोपी डिस्क को हार्डडिस्क के साथ कंजक्शन में इस्तेमाल किया जाता है।

आपरेटिंग सिस्टम (OS)

यह किसी भी कंप्यूटर में ऐसे प्रोग्रामों का समूह है जो कंप्यूटर में सभी आपरेशनों जैसे CPU मेमोरी, की–वोर्ड, फ्लोपी डिस्क, VDU इत्यादी की देख–रेख और इंतजाम रखता है। इसका मुख्य काम डिस्क में फाइलें सुरक्षित रखना और कंप्यूटर और इसके अंदर मौजूद अन्य पुर्जों में संचार वनाए रखना है। माइक्रो कंप्यूटर आन करने पर इसमें जानेवाली पावर प्रक्रिया वूटिंग कहलाती है।

प्रिंटर

माइक्रो कंप्यूटर के साथ आमतौर पर डोट मेट्रिक्स प्रिंटर का प्रयोग होता है। इसमें 9 लंववत पिनें मैट्रिक्स पैटर्न वनाकर प्रति इंच 5 से 16.5 कैरेक्टर तैयार करती हैं। डोट मैट्रिक्स प्रिंटर समांतर संचार पोर्ट द्वारा माइक्रो कंप्यूटर सिस्टम के पीछे से जुड़ा रहता है। आजकल 1066 कैरेक्टर प्रति सेकेंड की गति से छपाई करने वाले प्रिंटरों का प्रयोग होता है। इंकजेट और वयलजेट प्रिंटर अव काफी सस्ते भी हैं। हालांकि आजकल इस्तेमाल होनेवाले लेसर जेट प्रिंटर काफी तेज और प्रभावी मगर थोड़े महंगे होते हैं।

नेटवर्किंग

नेटवर्क ऐसी व्यवस्था हैं जिसमें कंप्यूटर सूचनाओं और इनके स्रोतों का आदान प्रदान करते हैं। यह आदान प्रदान छोटी दूरी (लोकल एरिया नेटवर्क) या वड़ी दूरियों (वाइड एरिया नेटवर्क) के लिए हो सकता है। नेटवर्किंग से किसी भी संगठन में हर कोई एक दूसरे से संपर्क कर सकता है, सूचनाओं का आदान–प्रदान कर सकता है और स्रोतों और आंकड़ों तक हरेक की पहुंच हो सकती है। नेटवर्किंग किसी भी छोटे–वड़े संगठन के लिए विकसित की जा सकती है।

80 के दशक में पीसी के विकास के साथ ही लोकल एरिया नेटवर्क (LAN) काफी प्रचलित हो गया। LAN में आस–पास के कंप्यूटर केवलिंग व्यवस्था से आपस में जुड़े रहते हैं। इससे सूचनाओं का प्रसार व आदान–प्रदान तथा कंप्यूटर स्रोतों का आदान–प्रदान काफी आसान हो गया।

दुनिया का सबसे तेज कंप्यूटर

विश्व की प्रमुख कंप्यूटर कपनी आईबीएम ने दुनिया का सबसे तेज कंप्यूटर तैयार कर लिया है।

यह कंप्यूटर कितना शक्तिशाली एवं तेज है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि एक व्यक्ति एक करोड़ साल में एक केलकुलेटर की मदद से जितनी गणनाएं कर सकता है, उतनी गणनाएं यह कंप्यूटर एक सेकंड से भी कम समय में कर सकता है। अमरीका सरकार इस कंप्यूटर का इस्तेमाल परमाणविक हथियारों के परीक्षण के लिए करेगी। इस कंप्यूटर का निर्माण अमरीका के डिपार्टमेंट आफ एनर्जीज एक्सीलेरेटड स्ट्राटेजिक कंप्यूटिंग इनिसएटिव (एएससीआई) के लिए किया है।

इंटरनेशनल बिजनेस मशीन कारपोरेशन (आईबीएम) ने इस कंप्यूटर का औपचारिक उद्घाटन किया। इस कंप्यूटर के बन जाने के बाद व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि पर अमरीका द्वारा हस्ताक्षर किए जाने का अमरीकी कांग्रेस का विरोध मंद पड़ जाएगा। इस संधि के तहत विश्व भर में परमाणविक हथियारों के भूमिगत परीक्षणों की जरूरत होती है, लेकिन यह सुपर कंप्यूटर इस जरूरत को समाप्त कर देगा। यह कंप्यूटर कैलिफोर्निया स्थित लारेंस लीवरमोर लैब में लगेगा।

अमरीकी राष्ट्रपति की कंप्यूटर संबंधी परिषद के सदस्य तथा कैलिफोर्निया स्थित प्रयोगशाला के प्रमुख सूचना अधिकारी डेविड कूपर के अनुसार 'एएससीआई व्हाइट' नामक यह सुपर कंप्यूटर परमाणु हथियारों की डिजाइन तथा उम्र समेत परमाणविक विस्फोट से संबंधित सभी कारकों को संग्रहीत करेगा। इसके कारण अमरीकी सरकार वास्तविक भूमिगत परमाणविक परीक्षण किए बगैर परमाणु हथियारों का निर्माण एवं भंडारण कर सकेगी।

अमरीकी सीनेट ने गत वर्ष परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि का अनुमोदन करने से यह कहते हुए इनकार कर दिया था कि अमरीका को भूमिगत परमाणविक परीक्षणों को जारी रखने का अधिकार है।

यह सुपर कंप्यूटर विश्व शतरंज चैम्पियन गैरी कास्परोव को पराजित करने वाले शतरंज खेलने वाले डीप ब्ल्यू कंप्यूटर से एक हजार गुना शक्तिशाली है।

यह सुपर कंप्यूटर दो बास्केट बाल कोर्ट के बराबर की जगह लेगा। इसका वजन 17 हाथियों के बराबर होगा। आईबीएम ने अमरीकी सरकार को 11 करोड़ डालर में बेचा है। इस सुपर कंप्यूटर में 8192 माइक्रोप्रोसेसर हैं। आईबीएम के अधिकारियों एवं विशेषज्ञों का कहना है कि यह सुपर कंप्यूटर 512 कंप्यूटरों को जोड़ेगा तथा इसका उपयोग इलेक्ट्रानिक व्यवसाय से लेकर कार डिजाइनिंग जैसे हर तरह के कामों में हो सकेगा।

अपडेट सूचनाएं लोगों तक पहुंच रही है। इंटरनेट अब घरों में भी खूब इस्तेमाल हो रहा है। आप को इनफार्मेशन हाइवे से नई सूचना लेनी हो या हब्बल टेलिस्कोप, चेचन्या के विद्रोहियों, जंगलों की कटाई या किसी भी विषय पर बहस में भाग लेना हो, बस अपने इंटरनेट के की-बोर्ड पर उंगलियां चलाइये और इसमें शामिल हो जाइे। चीन में जनसंख्या वृद्धि के आंकड़ों से लेकर टाइम पत्रिका का ताजा अंक आप की उंगलियों की जद में होगा। रोम या पेरिस में किसी आर्ट गैलरी की सैर हो या हालीवुड की किसी नई फिल्म का प्रीमियर, या फिर खान-पान, खेल-कूद आदि पर कोई नई म्यूजिक वीडियो देखनी हो यह सब इंटरनेट पर घर बैठे ही देखा जा सकता है।

इंटरनेट पर अधिकांश नेटवर्क कुछ खास फाइलों को डाटा बेस, प्रोग्राम्स या ई मेल के रूप में दूसरे नेटवर्कों को भी उपलब्ध कराते हैं। अनेक व्यवसायिक आन लाइन सेवाएं अपने सदस्यों को मासिक शुल्क लेकर कनेक्शन देती हैं। इनमें आन लाइन कांफ्रेसिंग, इलेक्ट्रानिक मेल ट्रांसफर, प्रोग्राम डाउनलोडिंग, मौसम, स्टोक एक्सचेंज, ट्रेवेल एवं टूर, विश्व कोश, स्पोर्ट्स फैन, संगीतकारों, कलेक्ट वीडियो क्लिप, विज्ञापन, बाजार इत्यादी संबंधी सूचनाएं होती हैं।

इंटरनेट ने सिर्फ घरों में घुसपैठ ही नहीं की बल्कि अब तो वह पूरे घर का संचालन भी कर सकता है। ब्रिटेन में अब ऐसे 'इंटरनेट घर' ही बनने लगे हैं जहां से व्यक्ति जीवन की हर छोटी-बड़ी जरूरत बिना कहीं जाए इंटरनेट के जरिए पूरी कर सकता है। ब्रिटिश सरकार के भारत स्थित उच्चायोग द्वारा प्रकाशित पुस्तिका ब्रिटेन टुडे के मुताबिक ऐसे घरों में चाहे बाग में पानी देना हो अथवा पशुओं को चारा हर काम के लिए बस कंप्यूटर पर बैठकर कुछ निर्देश देने होंगे। इन मकानों का बाहरी रंग रूप तो आम मकानों की तरह होगा लेकिन घर के अंदर का नजारा थोड़ा अलग होगा। घर का हर कोना इंटरनेट के जरिए स्वचालित प्रक्रियाओं से जुड़ा होगा और तारों के जरिए हो बाहर की दुनिया भी घर के अंदर रखे एक कंप्यूटर में समाई होगी। इन मकानों को लेइंग होम्स नाम की एक कंपनी बना रही है और उसने कुछ माडल हाउस बना लिए हैं। कंपनी के एक प्रवक्ता के अनुसार ये मकान नई सदी में जल्द ही अपनी एक विशिष्ट पहचान बना लेंगे और इनमें रहना एक स्टेट्स सिंबल हो जाएगा।

यह मकान लंदन के उत्तरी इलाके में बसे शहर से बाहर बनाए जा रहे हैं। इन मकानों में 72 डाटा, बैंक, उच्च गति वाले इंटरनेट कनेक्शन, चार निजी कंप्यूटर और दो अत्याधुनिक सपाट स्क्रीन वाले टेलीविजन लगे होंगे। यह सब आपस में एक-दूसरे से जुड़े होंगे। इन यंत्रों की मदद से आप जलते गैस चूल्हे को नियंत्रित कर सकेंगे तो खिड़की व दरवाजे के साथ-साथ उनके पर्दे भी बंद कर सकेंगे। इतना ही नहीं घर के बाहर भी जब कहीं सफर पर हों तो लैपटाप के जरिए ये सब कार्य किए जा सकेंगे।

इन कंप्यूटरों पर दुनिया भर की सेवाएं भी उपलब्ध होंगी। बच्चों के लिए घर बैठे शिक्षा मिलेगी तो गृहणियां सब्जी से लेकर रोजमर्रा के किराने के समान का आर्डर भी दे पाएंगी। किसी दूसरे शहर अथवा देश में जाना हो तो होटल भी बुक कराया जा सकेगा। उनकी एक खासियत यह भी होगी कि

दूर संचार

आधुनिक समय में जीवन की गति को प्रभावित करने वाला सबसे बड़ा साधन दूर संचार है । यह वाणिज्य, उद्योग तथा आर्थिक गतिविधियों में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है तथा सम्पूर्ण विश्व को एक दूसरे के बहुत नजदीक ले आया है । पहले दो दशकों में हुई आश्चर्य-जनक प्रगति के कारण दूर संचार के क्षेत्र में बड़ी तेजी से परिवर्तन आया है । आज सूचनाओं आंकड़ों तथ्यों तथा चित्रों आदि का विश्व के एक कोने से दूसरे कोने में बड़ी आसानी से हस्तांतरण संभव है ।

दूर-दूर स्थित दो स्थानों के बीच संचार का सबसे पुराना तरीका टेलीग्राफ था । 1876 में अलेक्जेन्डर ग्राहम बेल ने टेलीफोन की खोज की जिससे मनुष्य की आवाज का एक स्थान से दूसरे स्थान तक प्रसारण संभव हो सका । टेलीग्राफ तथा टेलीफोन दोनों में ही पसारण करने वाले तथा उसे ग्रहण करने वाले सिरों को धातु के तारों से जोड़ा जाता है । जिसमें से होकर विद्युत धारा की विविधिता के द्वारा ध्वनि के विद्युत सकेत गुजरते हैं । इस शताब्दी के प्रारम्भ के समय मार्कोनी द्वारा बेतार तकनीक की खोज के पश्चात संचार तकनीकों में आंदोलनकारी परिवर्तन हुए । प्रसारक व ग्राहक सिरों को अब तारों से जोडना जरूरी न रहा । इसके विपरीत, विद्युत चुम्बकीय तरगों, जिनकी खोज मैक्सवेल ने 1873 में की थी, के उपयोग से एक स्थान से दूसरे स्थान तक सूचना संदेश भेजना संभव हो सका ।

इस शताब्दी के पूर्वार्ध में बेतार-संचार में अत्यधिक प्रगति । बेतार टेलीग्राफ व बेतार टेलीफोनों से जुड़े देश व द्वीप, पानी के जहाज व हवाई जहाज अपने अड्डों से तथा एक दूसरे से बेतार का उपयोग करके आसानी से सूचनाओं का आदान-प्रदान कर सकते हैं । दूर संचार सामरिक अभियानों का एक अभिन्न अंग बन गया । समाचारों, कार्यक्रमों तथा संगीत का रेडियो द्वारा नियमित प्रसारण इतना लोकप्रिय हुआ कि यह आधुनिक जीवन का एक हिस्सा बन गया । दूरदर्शन के आविर्भाव से इसे और बल मिला तथा इससे बड़ी संख्या में दर्शकों के लिए कार्यक्रमों व सूचनाओं का दृश्य रूप में प्रसारण संभव हुआ ।

शहरों, कस्बों तथा दूसरे घनी आबादी वाले प्रदेशों में घर, कार्यालयों तथा दूसरी जगहों के टेलीफोन खम्भे पर खिंची लाइनों के द्वारा या भूमिगत तारों के द्वारा केन्द्रीय एक्सचेंज से जुड़े रहते हैं । एक्सचेंज द्वारा विभिन्न उपकरण या तो स्वयं चालित रूप से, चलते-बदलते रहते हैं, या फिर उनको एक-एक करके जोड़ा या अलग किया जाता है । इस काम के लिए सहकेन्द्री तारों तथा सूक्ष्मतरंगों के सम्पर्क का प्रयोग किया जाता है-क्योंकि इन तरीकों से एक साथ कई चैनलों का उपयोग संभव है और इससे कई लोग एक ही समय में बात कर सकते हैं । ऐसे संचार माध्यमों में विद्युत टेली टाइपराइटरों को जोड़कर टाइप किए हुए संदेशों को प्रसारित व संग्रहीत करके, टेलेक्स की सुविधा भी प्राप्त की जाती हैं। इसी तरह फेक्स मशीनों के द्वारा छपी हुई कागजों व तस्वीरों को यथावत एक जगह से दूसरी जगह प्रसारित किया जा सकता है ।

कृत्रिम उपग्रहों के आविष्कार ने सार्वभौमिक संचार के इतिहास में एक नये युग का सूत्रपात किया है । संचार उपग्रह अंतरिक्ष में तीव्र क्षमता वाले प्रसारण का कार्य करते हैं, जिससे दुनियां में अलग-अलग भागों में दूर-दूर स्थित केन्द्र भी माइक्रोवेव संपर्क के द्वारा एक दूसरे से जोड़े जा सकते हैं। भू-अप्रगामी (जियोस्टेशनरी) उपग्रह भूमि से 3600 कि.मी. की ऊंचाई पर स्थित होते हैं । तथा पृथ्वी के किसी भी स्थान से देखने पर इनकी स्थिति स्थिर बनी रहती है । इस तरह के तीन उपग्रह यदि सममितीय रूप से स्थित करा दिये जायें तो सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्रभावी हो सकते है तथा पृथ्वी का कोई भी स्थान दूसरे स्थान से जोड़ा जा सकता है । भारत के इनसेट-1 ए तथा जुलाई 1992 में प्रक्षेपित किये गये इनसेट-2 ए, समकालिक में स्थित ऐसे ही उपग्रह हैं । इनसे भारत के विभिन्न नगरों के बीच में टेलीफोन व टेलेक्स परिपथों को स्थापित करने में मदद मिली है । आजकल सारा अन्तर्राष्ट्रीय दूर संचार उपग्रहों पर निर्भर हो गया है । साथ ही पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में रेडियो व टेलीविजन भी उपग्रह प्रौद्योगिकी के द्वारा ही जुड़ा हुआ है यह अंतरिक्ष युग की ही देन है । कंप्यूटरों के वृहत्तर जाल लार्ज एरिया नेटवर्क (एल.ए.एन.) से ही रेलवे व एअर लाइन्स में सुदूर स्थानों के बीच के आरक्षण, सुदूर, स्थित बैंकों की सेवायें तथा मौसम से संबंधित आंकड़ो का संग्रहण व आंकलन संभव हुआ है ।

संचार के क्षेत्र में प्रकाश तरंगों का प्रयोग प्रारंभ होने से प्रकाशिय संचार की आधुनिक प्रौद्योगिकी का विकास हुआ है। इस विधि में ऑप्टिकल फाइबर, जो अति उत्तम शुद्धता वाले काँच के बहुत लम्बे (कई हजार किलोमीटर) व पतले धागे होते हैं, का प्रयोग, प्रसारण सिरे व ग्राहक सिरे को जोड़ने में किया जाता है । छोटे-छोटे अर्द्धचालक लेजरों के द्वारा सूचनाओं को क्रमबद्ध-प्रकाश स्पंदन रूप में इन रेशों से गुजारा जाता है । ग्राहक सिरे पर इन प्रकाश स्पंदनों को उपयुक्त संसूचकों व विसंकेतकों के द्वारा मूल सूचनाओं में बदला जाता है । ऑप्टिकल फाइबर संचार तकनीक का प्रयोग करके मनुष्य की आवाज, दूरदर्शन के चित्रों तथा कंप्यूटर के आंकड़ो को बड़ी आसानी व सुविधा से संचारित व संग्रहित किया जाता है । ऑप्टिकल फाइबर न केवल सस्ते होते हैं बल्कि वे आवर्तकों का प्रयोग किए बिना ही संदेशों को बहुत लम्बी दूरियों तक ले जाते हैं । कई तरह के तकनीकी लाभों के अलावा इनकी चैनल क्षमता भी बहुत अधिक होती है । इस प्रकार फाइबर ऑप्टिक्लस ने दूर संचार के क्षेत्र में [illegible] भविष्य निश्चित रूप [illegible] होगा ।

भाग तीन

विश्व परिदृश्य

गठबधन का एक तिहाई अफगानिस्तान पर नियंत्रण हो गया। संयुक्त राष्ट्र का शांति प्रयास 30 अप्रैल 98 को विफल हो गया और लड़ाई फिर से भड़क उठी। तालियान ने दावा किया कि 85% देश पर उसका नियंत्रण है और वहां पर सख्त इस्लामिक नियम लागू हैं। अगस्त 98 में तालियान ने मजारे शरीफ पर कब्जा कर लेने का दावा किया।

ऐसा कहा जा रहा है कि अमरीका द्वारा अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी के रूप में आरोपित सउदी के अरबपति बिन लाडेन के नेतृत्व में 5,000 पाकिस्तानी कट्टरवादी गुरिल्ले, 3,500 पाकिस्तान के नियमित सैनिक और अरब देशों के 1000 लड़ाकों की नियुक्ति की गई है। तालिबान ने लाडेन के प्रत्यार्पण को नामंजूर कर दिया है।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार अफगानिस्तान विश्व का सबसे अविकसित देश है। युद्ध की भयावता के कारण यहां के निवासी अन्य पड़ौसी देशों में शरण लिये हुए हैं। अफगानिस्तान में एक करोड़ से अधिक बारूदी सुरंगे बिछीं हैं।

अर्थ–व्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है । पशु–पालन एक अन्य मुख्य धंधा है और निर्यात की मुख्य वस्तुएं हैं – पशु, फल, ऊन और चमड़ा । कोयला, नमक, प्राकृतिक गैस, पेट्रोलियम, लोहा और तांबा प्रमुख खनिज हैं ।

हाल की घटनायें: केवल पाकिस्तान और युनाइटेड अरब अमीरात ने ही तालियान सरकार को मान्यता दी है।

पिछले दो वर्षों में तालिवान और विरोधी गुटों के संयुक्त प्रयास से सूखा पीड़ित लोगों को अमरीका ने खाद्य सामग्री मुहैय्या कराई।

भारत में दूतावास: अफगानिस्तान दूतावास, शांति पथ, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021, फोन: 6886625, 4103328 फैक्स: 6875439 ।

मुम्बई: 115, वाकेश्वर रोड़–400 006: फोन: 8128577 ।

Indian Mission in Afghanisatan: Embassy of India, Malalai Wat, Shahre-Nau, Kabul, Afghanistan. Tel: 00-93-30556.

अल्जीरिया

Democratic and popular Republic of Algeria (Al-Jumhuriya al-Jaazairiya ad-Dimuqratiya ash-Shabiya)

राजधानी: अल्जीयर्स; क्षेत्रफल: 2,381,741 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 31.5 मिलयन्; भाषा: अरबी और फ्रेंच; साक्षरता: 62%; धर्म: इस्लाम; मुद्रा: दिनार; 1 अनरीकी डालर = 66.85 दीनार; प्रति व्यक्ति आय: 4,792 डालर।

भूतपूर्व फ्रेंच कालोनी अल्जीरिया उत्तरी अफ्रीका में एक स्वाधीन गणराज्य है और भूमध्य सागर के तट पर 1000 किलोमीटर तक फैला हुआ है। समुद्र तट के मैदान बहुत उपजाऊ हैं । लगभग 2500 मीटर ऊंचा एटलस पहाड़ इस देश को दो भागों में बांटता है । 3 जुलाई, 1962 को अल्जीरिया स्वाधीन गणराज्य बना ।

1992 से शुरु हुए गृहयुद्ध में अब तक 60,000 व्यक्ति मारे जा चुके हैं। इस्लामी कट्टरपंथी (इस्लामिक साल्वेशन पार्टी) का दावा है कि 1990 के आम चुनावों में उसे सत्ता से वंचित रखा गया था। जून 1997 में आम चुनावों में देश में पहली बार विभिन्न दलों की सम्मिलित सरकार बनी और इसके बाद ही देश में वीभत्स नरसंहार हुआ जिसमें उग्रवादियों ने 100 नागरिकों की हत्या कर दी। जुलाई 1998 में अल्जीरिया इस बात पर सहमत हुआ कि विशिष्ट व्यक्तियों की का दल गठन करे जो कि हिंसा के कारणों का अन्वेषण करे।

ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि अल्जीरिया एक दशक के गृहयुद्ध के आतंक से बाहर निकल रहा है। फ्रांस के साथ दूतावास और अन्य कार्यालय के खोलने के समझौते और पड़ौसी देश मोरक्को के साथ सुधरते संबध का अर्थ है कि यहां स्वतंत्रता और शांति का पदार्पण हो रहा है। सितंबर 99 में सात वर्षीय इस्लामिक विद्रोह के बाद, एक शांति योजनापर लोकमत किया गया था। अगस्त महीने में बेनबिटोर के नेतृत्व में मंत्रिमंडल ने त्यागपत्र दे दिया।

इस देश की कृषि उपज गेहूं, जौ, आलू, आर्टीचोक, पटसन और तम्बाकू हैं । खजूर, अनार और अंजीर जैसे फल बहुतायत से पैदा होते हैं । शराब और जैतून के तेल का उत्पादन होता है । किन्तु सबसे महत्वपूर्ण धंधा पशुपालन है । महत्वपूर्ण खनिज हैं – लोहा, जस्ता, पारा, तांबा, एन्टिमनी, फास्फेट और पेट्रोलियम ।

राष्ट्रपति: अब्देलाजीज बाउटेफ्लिका, प्रधानमंत्री: अली बिन फलेज।

भारत में दूतावास: अल्जीरिया के गणराज्य का दूतावास, बी 3/61, सफदरजंग इनक्लेव, नई दिल्ली–110 029, फोन: 6185057, 3794809 फैक्स: 6185062

Indian Mission in Algeria: Embassy of India, 14, Rue Des Abassides, El-Biar, Algiers, Algeria. Tel: 00-213-2-923444; Fax: 00-213-2-924011.

अल्बानिया

Republic of Albania (Republika e Shqiperise)

राजधानी: तिराना; क्षेत्रफल: 28,748 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 3.4 मिलयन; भाषा: अल्बानी, यूनानी; साक्षरता: 100%; धर्म: इस्लाम, ईसाई, एथीज़्; मुद्रा: लेक; 1 अमरीकी डालर = 135 लेक; प्रति व्यक्ति आय: 2,804 डालर ।

अल्बानिया दक्षिण–पूर्व में बल्कान प्रायद्वीप के पश्चिमी तट पर स्थित है । सर्वप्रथम 1912 में एक स्वाधीन राज्य के रूप में अल्बानिया की स्थापना हुई । 1920 में गणराज्य बना। 1992 के चुनाव में पूर्व साम्यवादियों की भारी पराजय हुई और गैर साम्यवादियों की नयी सरकार बनी। आर्थिक बिखराव और सामाजिक असंतोष बढ़ गया । दिसंबर 199[illegible] में यूरोप का पहला इस्लामी राज्य बना । अधिकतर जनसं[illegible] मुस्लिम है ।

1997 की शुरुवात में अल्बानिया में असफल [illegible] निवेश को लेकर असंतोष से अराजकता फैल गयी। डा.[illegible] बेरिशा सरकार को हटाने की मुहिम चल पड़ी। उनपर [illegible]

आयरलैंड या आयर उत्तरी अंटलाटिक में ग्रेट ब्रिटेन के पश्चिम में एक द्वीप है ।

आयरलैंड द्वीप में 32 काउण्टीज है किन्तु आयरलैंड राज्य में केवल 26 काउण्टीज़ सम्मिलित हैं । शेष 6 काउण्टीज को मिलाकर बने प्रदेश को उत्तरी आयरलैंड कहते हैं, जो सीधे यूनाइटेड किंगडम के शासन के अधीन है ।

इतिहास में आयरलैंड का उदय 432 ई. में सैंट पैट्रिक के आगमन और ईसाई धर्म के फैलने के साथ आरंभ होता है। 12 वीं शताब्दी में नार्मन सामन्तों के आक्रमण के बाद आयरलैंड में लगभग आठ शताब्दियों तक ब्रिटेन का शासन रहा। 1921 में ब्रिटेन ने आयरलैंड को कामनवेल्थ के अन्तर्गत लगभग एक स्वाधीन राज्य के रूप में मान्यता प्रदान कर दी और इसका नाम आयरिश फ्री स्टेट पड़ा। 1932 में यहां ईमान डी वलेरा के नेतृत्व में फियाना फेल पार्टी सत्ता में आई और उसने देश को ब्रिटेन ताज के प्रति निष्ठा के बंधन से पूरी तरह मुक्त करा दिया 1937 में एक नया संविधान स्वीकृत हुआ जिसने आयरलैंड को एक गणराज्य बना दिया। 1949 में आयरलैंड ने औपचारिक रूप से अपने को एक गणराज्य घोषित कर दिया और कामनवेल्थ से अलग कर लिया। 1973 में आयरलैंड ई.ई.सी. का सदस्य बन गया।

शुरू में आयरलैंड की अर्थ–व्यवस्था मुख्यत: कृषि पर आधारित थी । किन्तु हाल की दशाब्दियों में यहां अधिकाधिक विदेशी पूंजी का निवेश होने के परिणामस्वरूप औद्योगिक उत्पादन तेजी से बढ़ा है । कुल राष्ट्रीय उत्पाद में निर्यात का योगदान 50 प्रतिशत है । निर्यात की मुख्य मदें हैं – डेरी उत्पाद, खाद्य पेय, मशीनरी और जीवित पशु ।

आयरलैंड में फरवरी 97 में तलाक को वैधानिक दर्जा दिया गया।

राष्ट्रपति: श्रीमती मैरी मक्लीज; प्रधानमंत्री: बेर्टी अर्हैन

भारत में दूतावास: आयरलैंड का दूतावास, 230 जोरबाग, नई दिल्ली–110 003; फोन: 4626733, 4626741; फैक्स: 4697053 ।

वाणिज्य दूतावास: बम्बई रायल बाम्बे याट क्लब चैम्बर्स, अपोलो बंदर, मुम्बई–400 039; फोन: 2872859 ।

आत्महत्या को विवश हैं पुरुष?

आस्ट्रेलिया में प्रबल नारीवाद के कारण पुरुष आत्महत्या की दर में बेतहाशा वृद्धि हुई है। आस्ट्रेलिया में पुरुषों के अधिकारों के लिए सक्रिय डा. जेम्स हिल्टन ने अपनी पुस्तक 'प्रीज्युम्ड गिल्टी' (कामकाजी पुरुषों के विरुद्ध अदृश्य युद्ध) के विमोचन के अवसर पर कहा कि प्रबल नारीवाद पुरुषों में हीनभावना को बढ़ावा दे रहा है। हिल्टन के अनुसार, आस्ट्रेलिया में महिलाओं के अधिकारों में वृद्धि के साथ ही 20 से 39 वर्ष की आयु वर्ग के पुरुषों की आत्महत्या दर में 70 प्रतिशत की वृद्धि आई है। यहां पुरुषों में इस बात को लेकर भी निराशा बढ़ती जा रही है कि उन्हें कई मामलों में महिलाओं के समान दर्जा नहीं मिल रहा है।

Indian Mission in Ireland: Embassy of India, 6, Leeson Park, Dublin-6, Ireland. Tel: 00-353-1-4970843; Fax: 00-353-1-4978074.

आस्ट्रेलिया

Commonwealth of Australia

राजधानी: कैनबरा; क्षेत्रफल: 7,682,300 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 19.2 मिलियन; भाषा: अंग्रेजी; साक्षरता: 100%; धर्म: ईसाई; मुद्रा; आस्ट्रेलियन डालर; 1 अमरीकी डालर = 1.55 आस्ट्र. डालर; प्रति व्यक्ति आय: 22,452 डालर ।

आस्ट्रेलिया संपूर्ण आस्ट्रेलिया महाद्वीप को घेरे हुए हैं। हिंद महासागर और प्रशांत महासागर के बीच में स्थित है। दक्षिण पूर्व में तस्मानिया है ।

इस महाद्वीप में विविध प्रकार के पेड़–पौधे और दुर्लभ पशु–पक्षी पाए जाते हैं । आस्ट्रेलिया में मूल आदिवासियों की संख्या लगभग 1,60,000 है । लगभग आधे आदिवासी शहरों और कस्बों में रहते हैं । बहुत से आदिवासी अभी भी शहरों व कस्बों से दूर रहते हैं और परम्परागत आदिवासी ढंग से रहना पसंद करते है । आस्ट्रेलिया में 40,000 वर्षों से अधिक समय से रह रहे आदिवासियों ने ही बूमरैंग का आविष्कार किया ।

आस्ट्रेलियाई समाज में कई संस्कृतियों के लोग रहते हैं। प्रत्येक 10 आस्ट्रेलियावासी में से चार पहली या दूसरी पीढ़ी के प्रवासी हैं । आस्ट्रेलिया की उदार अप्रवासी नीति के परिणामस्वरूप अब वहां 100 से भी अधिक देशों के लोग आकर बस गए हैं। आस्ट्रेलिया जहां संसार का एक सबसे विरल जनसंख्या वाला देश है, वहीं वह संसार का एक सबसे अधिक शहरीकरण वाला देश भी है जिसकी 85 प्रतिशत जनसंख्या शहरों में रहती है । इस महाद्वीप के बहुत बड़े भाग में बहुत थोड़ी वर्षा होती है ।

आस्ट्रेलिया एक संघ राज्य है । शासन के अधिकार राष्ट्रीय सरकार और 6 राज्य सरकारों के बीच बंटे हुए हैं। आस्ट्रेलिया की संसद के अधिकारों का निर्धारण एक लिखित संविधान में किया गया है, जो 1 जनवरी, 1901 से लागू हुआ है जब यहां के उपनिवेशों ने मिलकर आस्ट्रेलिया संघ राज्य बनाने का निर्णय लिया । इस संघ राज्य में सम्मिलित राज्यों के नाम हैं – न्यू साउथ वेल्स, विक्टोरिया, क्वीन्सलैंड, साउथ आस्ट्रेलिया, वेस्टर्न आस्ट्रेलिया और तस्मानिया ।

राज्यों की राजधानियां: सिडनी, मेलबोर्न, ब्रिसबेन, एडलेडे, पर्थ और हाबर्ट ।

मार्च, 1986 में क्वीन एलिजाबेथ द्वितीय ने आस्ट्रेलिया ऐक्ट 1986 की उद्घोषणा पर हस्ताक्षर किया और इस प्रकार ब्रिटेन के साथ आस्ट्रेलिया के शेष अन्तिम संबंध भी समाप्त हो गए । क्वीन एलिजाबेथ वैधानिक रूप में आस्ट्रेलिया की सम्राज्ञी हैं ।

मार्च 1997 में आस्ट्रेलिया की सीनेट ने अचिकित्सिक बीमारी की स्थिति में स्वैच्छिक मृत्यु के नार्थन टैरिटेरी ला को समाप्त कर दिया।

20 वीं शताब्दी के दौरान अपनी उत्तम उत्पादक कृषि

... पहले स्पेनिश गिनी
... और अफ्रीका के ... गट इलोवी, लिटल इलोवी और
... सम्मिलित हैं। 1975 में प्रेसीडेण्ट मैसियस
... सब स्थानों के नाम बदल दिए। इस तरह सान्ता
... का नाम मलाबो रखा गया।
... सितम्बर 1979 को राष्ट्रपति फ्रैंरिस्को मैसियस नुएमा
... मसोगो ने उन्हें अपदस्थ करके सत्ता हथिया ली।
... द्वीप अधिकतर पहाड़ी है। 3000 फीट की
... कॉफी और 2000 फीट की ऊंचाई तक
... की खेती होती है। एबोनी, महागनी और ओक के
... भी हैं। अन्य उत्पाद हैं- कोकोआ, काफी, इमारती
... ताड़ तेल और केले।
राष्ट्रपति ब्रिगेडियर जनरल टियुडोरो ओबियंग नुएमा
मसोगो प्रधानमंत्री: सिराफिन सेरिचे डाउगान।

इज़राइल

(State of Israel) Medinat Israel

राजधानी: जेरुसलम, क्षेत्रफल: 20,772 वर्ग किलोमीटर जनसंख्या: 6.2 मिलियन; भाषा: हिब्रू (शासकीय) और अरबी साक्षरता: 95% (यहूदी), 96% (अरब); धर्म: जूडा मुद्रा: शेकेल, 1 अमरीकी डालर = 4.22 शेकेल; प्रति व्यक्ति आय: 17,301 डालर।

इजराइल मध्य पूर्व (पश्चिमी एशिया) में स्थित है और तीनों ओर से अरब राज्यों से घिरा हुआ है। इस राज्य में प्राचीन फिलिस्तीन का थोड़ा-सा भाग है।

20 नवम्बर 1947 को राष्ट्र संघ ने फिलिस्तीन का विभाजन करके, एक भाग ज्यूज (यहूदियों) को और एक भाग अरबों को दे दिया। 15 मई 1948 को यहूदियों ने अपने भाग को इजराइल राज्य के नाम से घोषित कर दिया। पड़ोसी अरब देशों ने इजराइल पर आक्रमण कर दिया। 1949 में युद्ध विराम इजराइल के क्षेत्र में। लिहाई की वृद्धि हो चुकी थी मिस्र के साथ इजराइल की अनेक लड़ाई हुई। 1956 में सुएज संकट, 1967 में 6 दिवसीय युद्ध में गाजा ... पट्टी, पश्चिमी किनारा (जोर्डन की नदी) और सिनाई प्रायद्वीप पर इजराइल का कब्जा हो गया। 1973 में फिर युद्ध हुआ। 1978 में मिस्र और इजराइल में समझौता वार्ता ... राज्य अमेरिका के कैम्प डेविड में शुरू हुई। मार्च ... 79 में शांति संधि पर हस्ताक्षर हुए। अप्रैल 1992 में ... इजराइल सिनाई पट्टी से हट गया।

... 0 अगस्त 1993 को इज़राइल ने सीमित फिलिस्तीनी ... को सहमति दी। यह 26 वर्षों साथ के क्षेत्रों से सेना ... की समाप्ति का पहला कदम है। फिलिस्तीनी ... और इजराइल के मध्य 13 सितंबर को ... समझौता हुआ। इजराइल व जोर्डन ने जुलाई ... घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करके 46 वर्षीय युद्ध ... । अगस्त 95 में इज़राइल व फिलीस्तीन मुक्ति ... एक समझौते से वेस्ट बैंक में फिलीस्तीनी ... स्थापना हुई।

जून 1996 में इज़राइल के राइट विंग ... नये नेता नेतानयाहु ने कहा कि वे कभी भी अ... राज्य को समर्थन नहीं देंगें। इजराइल ने जू... जेरुसलम में फिलीस्तीनियों द्वारा सुसाइडल ब... शांति वार्ता बंद कर दी।

इज़राइल ने अपने छोटे-से भू-प्रदेश में बड़े कौशल ... कुशलता से कृषि और उद्योग दोनों का विकास किया ... रेगिस्तान को हरा-भरा बना दिया है। कृषि विकास की प्रमुख ... हैं- सामूहिक कृषि, सिंचाई की योजनाएं और रेगिस्तानी भूमि ... के लायक बनाना। निर्यात की प्रमुख मद हैं रसीले फल। इस ... का उद्योग भी व्यापक स्तर पर है। हीरा-तराशने के उद्योग में इस ... का स्थान बेलजियम के बाद दूसरे नम्बर पर है। जोर्डन की घा... मृत सागर से नमक, गंधक और पोटाश प्राप्त होता है।

गाजा स्ट्रिप: क्षेत्रफल: 363 वर्ग किलोमीटर, जनसं... 1,054200, इजराइल व पी.एल.ओ. के बीच 1993-94 के समझौते के तहत यह क्षेत्र स्वायत्तशासी क्षेत्र होगा... रक्षा का कार्य एजराइल का होगा और नागरिक प्रशासन ... फिलीस्तीनी अधिकारियों के पास होगा। यहां पर रहने वाले अधिकतर शरणार्थी अरब हैं।

वेस्ट बैंक: क्षेत्रफल: 5,879 वर्ग किलोमीटर, जनसंख्या 1,557000, यहां के अधिकांश शहरों का प्रशासन फिलीस्तीनी अधिकारियों के पास है, लेकिन एक बड़े भू-भाग पर इजराइल का कब्जा है। 1994 में जेरिको को फिलीस्तानियों को दिया ग... 1995 में यहां स्वायत्ता दी गई। 1997 में आंशिक तौर पर हे... से हटने पर समझौता हुआ।

जून 1999 में वेस्ट बैंक में जेरुसलम म्यनिसिपल अथारिटी को विस्तार देने की घोषणा की, फिलीस्तीनियों ने इसका विरोध किया, उनकी मान्यता है कि पूर्वी जेरुसलम भविष्य में उनकी राजधानी होगी। मार्च 2000 में इजराइल ने वेस्ट बैंक से अपनी सेना को बुलाना प्रारंभ किया। राष्ट्रपति वीजमैन को एक फ्रांसीसी व्यवसाई से मंहगा तोहफा लेने के आरोप के बाद त्यागपत्र देना पड़ा।

अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की अध्यक्षता में प्रधानमंत्री इहुद व यासर अराफात के बीच बातचीत बिना किसी समाधान के समाप्त, जेरुसलम मुख्य विवाद का कारण था।

राष्ट्रपति: मोशी कटजर; प्रधानमंत्री: एहुड बारक।

भारत में दूतावास: इज़राइल का दूतावास, 3 औरंगज़ेब रोड़, नई दिल्ली-110 011, फोन: 3013238; फैक्स: 3014298.

वाणिज्य दूतावास: 50 जी, देशमुख मार्ग, मुम्बई-400 039, फोन: 3862793.

Indian Mission in Israel: Embassy of India, 4, Kaufman Street, Sharbat House, Post Box No. 50095, Tel Aviv 68012, Israel. Tel: 00-972-3-5101431; Fax: 00-972-3-5101434

इटली

(Italian Republic) Republica Italiana

राजधानी: रोम; क्षेत्रफल: 301,278 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 57.8 मिलियन; भाषा: इटालियन; साक्षरता:

97%; धर्म: ईसाई; मुद्रा; लिरा; 1 अमरीकी डालर = 1,808.84 लिरा; प्रति व्यक्ति आय: 20,585 डालर ।

इटली यूरोप के उस प्रायद्वीप में है, जो आल्पस पहाड़ से आरंभ होकर भू-मध्यसागर के अन्दर तक फैला हुआ है । भू-मध्यसागर में स्थित सिसली, सार्डीनिया, एल्बा और कैपरी द्वीप भी इटली के अंग हैं ।

किसी जमाने में इटली महान रोमन साम्राज्य का मुख्यालय था। बाद में मध्य युग में यह विगठित होकर छोटे-छोटे कई राज्यों में बंट गया । आधुनिक इटली का विकास उस समय आरंभ हुआ जब सवोया का राजा विक्टर इमानुएल इटली का सम्राट बना। 11 फरवरी, 1929 को वेटिकन को एक स्वाधीन राज्य के रूप में मान्यता मिली । 28 अप्रैल, 1945 को फासिस्ट नेता मुसोलिनी की फांसी हो गई । उसके बाद 2 जून, 1946 को हुए जनमत संग्रह में इटली ने अपने को गणराज्य बनाने का निर्णय किया । सम्राट ने अपना पद छोड़ दिया ।

दूसरे विश्व युद्ध के बाद इटली ने कृषि उत्पादन में क्रान्ति करके दिखाया है । मुख्य फसलें हैं- अंगूर, गेहूं, चुकन्दर, फल और सब्जियां । इटली संसार के उन्नत औद्योगिक देशों में है । प्रमुख औद्योगिक उत्पादन है- बिजली के, मशीनों के और इलेक्ट्रानिक्स उपकरण, मोटरगाड़ियां और रसायन । इटली का व्यापारिक पोत बेड़ा काफी बड़ा है । जिसमें 110 लाख टन भार के पोत हैं । विमान बेड़े की क्षमता 12 अरब यात्री/किलोमीटर और 1 अरब टन/किलोमीटर सामान है।

केंद्र में रोमानो प्रोडी की साम्यवादी सरकार ने रोजगारी व माफिया को समाप्त करने की लड़ाई छेड़ने का संकल्प लिया था।

राष्ट्रपति: कार्लो अजेगलियो; **प्रधानमंत्री:** गियुलियानो अमाटो।

भारत में दूतावास: इटली का दूतावास, 50-ई, चंद्रगुप्त मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110 021, फोन: 6114355, 6114359; फैक्स: 6873889.

इटालियन कल्चरल सेंटर, 2, गोल्फ लिंक्स, नई दिल्ली। फोन: 4627807; फैक्स: 4629812.

वाणिज्य दूतावास: मुम्बई: इटली का महावाणिज्य दूतावास, 72, जी देशमुख मुम्बई: 400 026. फोन: 3874071, फैक्स: 3874074.

कलकत्ता: 3, राजा संतोष रोड, कलकत्ता-700027; फोन: 4792414, फैक्स: 4793892 ।

चेन्नई: 5 वीं मंजिल, सुदर्शन बिल्डिंग, नं 86, चामियर्स रोड; फोन: 860623.

Indian Mission in Italy: Embassy of India, Via XX Settembre, 5, 00187, Rome, Italy. Tel: 00-39-06-4884642, Fax: 00-39-06-4819539.

इथियोपिया

(People's Democratic Republic of Ethiopia) Ye Etiyop'iya Hexbawi Dimokrasiyawi Republic;

राजधानी: अदिस अबाबा; **क्षेत्रफल:** 12,21,900 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 64.1 मिलयन; **भाषा:** अमहारिक गालिंगा, टिग्रियाना एवं 60 अन्य लघु भाषाएं; **साक्षरता:** 35%; **धर्म:** ईसाई और इस्लाम; **मुद्रा:** बिर्र; 1 डालर =7.52 बिर्र; **प्रति व्यक्ति आय:** 574 डालर ।

इथियोपिया उत्तरी-पूर्वी अफ्रीका का एक पहाड़ी देश है। एरिट्रिया प्रान्त से होकर समुद्र तक पहुंचने का रास्ता है । यह प्रान्त 1952 में इथियोपिया राज्य में सम्मिलित हुआ था और बाद में इस राज्य का अंग बन गया ।

इथियोपिया संसार का एक प्राचीनतम देश है जिसका बड़ा रंगीन इतिहास है । इथियोपिया के वर्तमान राजपरिवार अपने आपको सम्राट सोलोमन और विख्यात महारानी शीबा के वंशज होने का दावा करते हैं । इथियोपिया के अन्तिम सम्राट हेल सेलासी प्रथम को मार्क्सवादी सशस्त्र सेनाओं ने अपदस्थ करके 1974 में सत्ता अपने हाथ में ले ली ।

इस सरकार का विरोध 1991 से शुरू हुआ और इथियोपियन नेता मेंगिस्टु हैली मरियम को देश छोड़कर भागना पड़ा। विरोधी गुटों के मोर्चे इथियोपियन रिवाल्यूशनरी डेमोक्रेटिक फ्रंट ने विभिन्न दलों की संयुक्त सरकार की स्थापना की।

इस देश की अर्थ-व्यवस्था मुख्यत: कृषि और पशु-चारण पर निर्भर है । 1977 में इस देश की निर्यात से हुई आय में से 60 प्रतिशत आय काफी के निर्यात से हुई थी । खालें, चमड़ा दालें और तिलहनों का भी निर्यात होता है । उद्योगों में खाद्य संसाधन, वस्त्र निर्माण और स्थानीय उपभोग की वस्तुएं सम्मिलित हैं ।

राष्ट्रपति: डा. नेगास्सो गिडाडा; **प्रधानमंत्री:** मेलेस जेनावी।

भारत में दूतावास: इथियोपिया का दूतावास, 7/50 जी., सत्य मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110 021; फोन: 6119513, 6119514; फैक्स: 6875731.

Indian Mission in Ethiopia: Embassy of India, Kabena (Aware District) Post Box No. 528, Addis Ababa, Ethiopia. Tel: 00-251-1-552100; Fax: 00-251-1-552521

फिल्मों के प्रति रुचि अधिक

इटैलियन अपना खाली समय बिताने के लिये किताबें पढ़ने के बजाये फिल्में देखना अधिक पसंद करते हैं। एक सर्वेक्षण से यह बात सामने आई कि 95 प्रतिशत से अधिक यहां के लोग टी.वी. या फिल्में देखते हैं। किताबें पढ़ने वालों की प्रतिशतता 12 से कम है और उनके द्वारा पढ़ी गई किताबों की भी संख्या 12 से कम ही रही।

इण्डोनेशिया

(Republic of Indonesia) Republik Indonesia;

राजधानी: जकार्ता; **क्षेत्रफल:** 1,904,569 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 212.2 मिलयन; **भाषा:** बहासा इण्डोनेशियन, डच अंग्रेजी और अन्य आस्ट्रोनेशियन भाषाएं; **साक्षरता:** 85%; **धर्म:** इस्लाम, ईसाई, हिन्दू, बौद्ध; **मुद्रा:** रुपया; 1 अमरीकी डालर = 7,835 रुपए; **प्रति व्यक्ति आय:** 2,651 डालर ।

इण्डोनेशिया बहुलद्वीपीय राज्य है, जिसमें 13000 से

भारत में दूतावास: इराक का दूतावास, 169–171, जोरवाग, नई दिल्ली–110 003; फोन: 4618011, 4618012; फैक्स: 4631547.

वाणिज्य दूतावास: मुम्वई: पनोरमा, 203 वालकेश्वर रोड मुम्वई: 400 006; फोन: 3633887, 3678927.

Indian Mission in Iraq: Embassy of India, House No 6, Zokak No. 25, Mohalla 306, Hay Al Magrib, P.O. Box-4114, Adhamiya, Baghdad, Iraq. Tel: 00-964-1-4222014; Fax: 00-964-1-422-9549.

ईरान

(Islamic Republic of Iran) Jomhori-e-Islami-e-Iran

राजधानी: तेहरान; **क्षेत्रफल:** 1,648,000 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 67.4 मिलयन; **भाषा:** फारसी, तुर्क, कुर्दिश,और अरवी; **साक्षरता:** 79%; **धर्म:** इस्लाम; **मुद्रा:** रियाल; 1 अमरीकी डालर = 1,750 रियाल; **प्रति व्यक्ति आय:** 5121 डालर ।

ईरान एक प्राचीन और महान देश है, जो अपनी सभ्यता और वीरता के लिए विख्यात है ।

पहली वंश के अन्तिम शासक मोहम्मद रेज़ा को देशव्यापी विद्रोह के कारण ईरान छोड़कर भागना पड़ा । फरवरी 1979 में इस्लाम के धर्मगुरु अयातुल्ला खुमेनी देश के भाग्य की गाड़ी चलाने के लिए ईरान लौटे । ईरान पहली अप्रैल 1979 को इस्लामिक गणराज्य वना ।

लोगों का प्रमुख उद्यम खेती है । खेती की मुख्य उपज हैं – गेहूं, जौ, चावल, फल, ऊन और चुकन्दर । आय का एक महत्वपूर्ण साधन है कैस्पियन सागर की स्टर्जियन मछली (जिससे कैवियर प्राप्त होता है)। ईरान मध्य पूर्व में तेल पैदा करने वाले सवसे वड़े क्षेत्रों में से एक है । खुरासान और करमान में पन्ना और दूसरे रत्न मिलते हैं । हैण्डलूम पर वने फारस (ईरान) के गलीचे सारे संसार में मशहूर हैं

राष्ट्रपति ने अगस्त 1997 को पहली वार इरान में उपराष्ट्रपति पद एक महिला मसौमेह इब्टेकर को सौंपा।

राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री: मोहम्मद खतामी।

भारत में दूतावास: ईरान के इस्लामिक गणराज्य का दूतावास, 5 वाराखम्भा रोड़, नई दिल्ली–110 001 फोन: 3329600; फैक्स: 3325493.

वाणिज्य दूतावास: 4–47 स्वप्नलोक, जमुनादास रोड मुम्वई, फोन: 3630073.

Indian Mission in Iran: Embassy of India, 46, Mir-Emad, Corner of 9th Street, Dr.Beheshti Avenue, P.O. Box 15875-4118, Tehran (Islamic Republic of Iran) Te: 00-98-21-8755103; Fax: 00-98-21-8755973

उक्रेन

(Ukrayina)

राजधानी: कीव; **क्षेत्रफल:** 603 [illegible] **जनसंख्या:** 49.5 मिलयन; [illegible] **साक्षरता:** 99%, **धर्म:** [illegible]

1 अमरीकी डालर = 4.47; **प्रति व्यक्ति आय:** 3,194 डालर।

पूर्व सोवियत संघ के दक्षिण पश्चिम में स्थिति उक्रेन को दिसम्वर 1991 में स्वतंत्रता मिली । काला सागर तट इसके पास है और सीमाएं रोमानिया, हंगरी, पोलैंड और चेकोस्लावाकिया (पश्चिम देश) और वाइलोरशिया, रूस से मिली है । पूर्व सोवियत संघ का यह भाग घना वसा हुआ है। पूर्व सोवियत संघ का दूसरे अमीर देश में सर्वाधिक कीमती जमीन है । 1985 में सोवियत संघ के कुल उत्पादन का 46 प्रतिशत यहां हुआ था । इसे सोवियत संघ का गेंहू क्षेत्र भी कहा जाता था ।

मिस्र और इजराइल के वाद उक्रेन सर्वाधिक अमरीकी मदद पाने वाला तीसरा देश है। जुलाई 97 में नाटो चार्टर पर हस्ताक्षर के साथ उक्रेन गुट निर्पेक्ष देश हो गया। अव वह अपने संवंध रूस व पश्चिम से सामान्य रूप से रख सकता है।

कृषि: गेंहू, शुगर वीट, सूरजमुखी, कपास, फलैक्स, तम्वाकू, सोया, फल एवं सव्जी, मांस एवं दूध ।

प्राकृतिक स्रोत: कोयला, लौह अयस्क, मैग्नीज, तेल, नमक रसायन।

उद्योग: फेरस मेटालर्जिकल, रसायन, मशीनरी, कागज, टी.वी., उपभोक्ता सामान, खाद्य उद्योग।

राष्ट्रपति: लियोनिद कुच्मा। **प्रधानमंत्री:** वलेरीपुस्तोयियोटेन्को।

भारत में दूतावास: उक्रेन का दूतावास, 46, पश्चिमी मार्ग, वसंत विहार, नई दिल्ली–110 057, फोन 6146043; फैक्स: 6146043

Indian Mission in Ukraine: Embassy of India, 4, Terokhina Street, Padol District, Kyiv-254080, Ukraine. Tel: 00-380-44-4356661. Fax: 00-380-44-4356619

उजबेकिस्तान

Ozbekiston Republikasy

राजधानी: ताशकन्द; **क्षेत्रफल:** 447,400 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 24.8 मिलयन; **भाषा:** उजबेक, रूसी; **साक्षरता:** [illegible]; **धर्म:** इस्लाम; **मुद्रा:** [illegible]; 1 अमरीकी डालर = [illegible]68.70 सोम; **प्रति व्यक्ति आय:** 2,053 डालर।

पूर्व [illegible] गणराज्य उजबेकिस्तान [illegible] स्वतंत्र हुआ [illegible]किस्तान, किर्गिस्तान, [illegible] और तुर्कमेनिस्तान इसके पड़ोसी हैं [illegible] पर प्रमुख है । [illegible] है । [illegible] 55% [illegible] है, [illegible] हैं।

[illegible]

भारत में दूतावास: प्लाट नं. 40, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110021; फोन: 467–07–74, 467–07–75; फैक्स: 467–07–73.

Indian Mission in Uzebekistan: Embassy of India, Ulitsa Alexie Tolstogo No.3, Tashkent, Uzbekistan. Tel:00-998-71-1338357; Fax: 00-998-71-1361976.

उरुग्वे

(Oriental Republic of Uruguay) Republica Oriental del Urúrguay

राजधानी: मोन्टेवीडियो; **क्षेत्रफल:** 1,76,215 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 3.3 मिलयन; **भाषा:** स्पेनिश; **साक्षरता:** 97%; **धर्म:** ईसाई; **मुद्रा:** पेसो; 1 अमरीकी डालर = 11.48 पेसो; **प्रति व्यक्ति आय:** 8,623 डालर।

उरुग्वे दक्षिणी अमरीका का सबसे छोटा गणतंत्र है। यह प्लेट नदी के मुहाने के उत्तरी किनारे पर स्थित है। इसके उत्तर में ब्राजील तथा पश्चिम में अर्जेंटाइना है।

उरुग्वे किसी समय स्पेनिश साम्राज्य का एक भाग था और बाद में ब्राज़ील का एक प्रान्त बन गया। यह 1825 में स्वतंत्र हो गया। पशुपालन उरुग्वे का मुख्य व्यवसाय है और इसके कुल भू–क्षेत्र का 60 प्रतिशत भाग इसी काम में आता है। इसके मुख्य उत्पाद मांस, ऊन, खालें, मक्का, गेहूं, खट्टे फल, चावल, तम्बाकू, जई तथा अलसी हैं। मुख्य उद्योग विनेरी, मांस डब्बा–बंदी तथा कपड़ा है।

राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री: जोर्गे बाट्टल।

भारत में दूतावास उरुग्वे का दूतावास, ए–16/2 वसंत विहार नई दिल्ली–110057, टेलीफोन 6151991, 6151992 फैक्स 6144306

एल सल्वाडोर

(Republic of El Salvador) Republica do El Salvador

राजधानी: सैन सल्वाडोर, **क्षेत्रफल:** 21,393 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 6.3 मिलयन; **भाषा:** स्पेनिश; **साक्षरता:** 71%, **धर्म:** ईसाई; **मुद्रा:** कोलोन; 1 डालर = 8.76 कोलोन; **प्रति व्यक्ति आय:** 4,036 डालर।

एल सल्वाडोर मध्य अमरीका में स्थित है। यह 1821 में स्वाधीन हुआ।

1992 में समाप्त हुए 12 वर्ष तक चलने गृहयुद्ध में 75,000 लोगों ने प्राण गवायें।

यह प्रमुखतः कृषि प्रधान देश है। मुख्य फसल काफी है। देश के कुल निर्यात में आधा निर्यात काफी का होता है। अन्य फसलों में कपास, मक्का और चीनी हैं। मछली–पालन का विकास हो रहा है और देश की निर्यात वस्तुओं में मछली का महत्वपूर्ण स्थान है। उद्योग विकसित हो रहे हैं।

राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री: फांसिस्को फ्लोरेस।

भारत में दूतावास: 186, मायापुरी, रास्ता मोरा रोड, कलकत्ता, फोन: 461164।

Indian Mission in El Salvador: Honorary Consulate General of India, Calle Padres Aguilares, 626, Col. Escalon, San Salvador, El Salvador. Tel 00-503-266622; Fax 00-503-269561.

एण्टीगुआ एण्ड बारबूडा

राजधानी: सेंट जान्स; **क्षेत्रफल:** 442 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 64,246; **भाषा:** अंग्रेजी और पैटोइज़; **साक्षरता:** 90%; **धर्म:** ईसाई; **मुद्रा;** पूर्वी कैरीबियन डालर; 1 अमरीकी डालर = 2.70 कैरीबियन डालर; **प्रति व्यक्ति आय:** 9,277 डालर।

एण्टीगुआ ब्रिटिश वेस्ट इंडीज के द्वीपों में से एक है और राजनैतिक दृष्टि से बारबूडा और रेडोण्डा नामक दो द्वीपों का भाग है। रेडोण्डा बिल्कुल निर्जन है। एण्टीगुआ एण्ड बारबूडा 1 नवम्बर, 1981 को स्वाधीन हुआ।

यहां के निवासी मिले–जुले यूरोपीय नीग्रो उद्भव के हैं। अर्थ–व्यवस्था कृषि प्रधान हैं। चीनी और कपास मुख्य निर्यात हैं। पर्यटन आय का मुख्य साधन है।

गवर्नर जनरल: जेम्स कार्लिस्ले; **प्रधानमंत्री:** लेस्चर बर्ड।

एस्टोनिया

(Republic of Estonia) Esti Vabariik

राजधानी: तालिन्न; **क्षेत्रफल:** 45,100 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 1.4 मिलयन;; **भाषा:** एस्टोनियन; **साक्षरता:** 100%; **धर्म:** ईसाई; **मुद्रा:** क्रून; 1 अमरीकी डालर = 14.62 क्रून; **प्रति व्यक्ति आय:** 7,682 डालर।

एस्टोनिया अगस्त 1991 में सोवियत संघ से अलग होकर स्वाधीन देश बना। स्टालिन के नेतृत्व में 50 वर्ष पूर्व सोवियत संघ ने एस्टोनिया समेत 3 बाल्टिक राज्यों पर अधिकार किया था। एस्टोनिया के पश्चिम एवं उत्तर में बाल्टिक राज्य पूर्व में रूस और दक्षिण में लैटविया की सीमाएं हैं।

कृषि और दुग्ध उत्पादन प्रमुख व्यवसाय हैं। 22 प्रतिशत क्षेत्र में वन है जहां से उद्योग को कच्ची सामग्री मिलती हैं।

कृषि उत्पादन: खाद्यान्न, आलू, सब्जी।

प्राकृतिक स्रोत: शेले भंडार, लकड़ी पीट, फास्फोराइट्स।

उद्योग: फर्नीचर, मैच एवं पल्प, चमड़ा, कपड़े, कृषि यंत्र, विद्युत मोटर।

पूर्व सोवियत राज्यो में एस्टोनिया ने सर्वप्रथम अपनी मुद्रा क्रून जून 92 में जारी की थी।

राज्याध्यक्ष: लेन्नार्ट मेरी, **प्रधानमंत्री:** मार्ट लार।

भारत में दूतावास: आनेररी कंसलेट जनरल आफ दी रिपब्लिक आफ एस्टोनिया, ए–11, कैलाश कालोनी, पहली मंजिल, नई दिल्ली–110 048; फोन: 6449808; फैक्स: 6484575.

एरिट्रिया

(State of Eritrea)

राजधानी: असमारा; **क्षेत्रफल:** 117,600 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 4.1 मिलयन; **भाषा:** टिगरिगना एवं अन्य स्थानीय भाषाएं; **साक्षरता:** 20%; **धर्म:** ईसाई एवं इस्लाम; **मुद्रा;** नक्फा। एक अमरीकी डालर = 6.0 नक्फा; **प्रति व्यक्ति आय:** 833 डालर।

इथियोपिया के सुदूर उत्तर का राज्य एरिट्रिया लाल सागर के अफ्रीकी तट पर स्थित है । 1890 में यह इटैलियन कालोनी बना लेकिन 1941 में ब्रिटेन ने इसे इटली से जीत लिया । द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र ने इसे यहां की जनता की इच्छा के विरुद्ध इथियोपिया का स्वशासित प्रदेश के रूप में मान्यता दी ।

1962 में इथियोपिया के शासक हैली सेलेस्सी ने एरिट्रिया पर कब्जा कर लिया । 1960 के मध्य से ही यहां पर संघर्ष शुरू हो गये । एरिट्रियन लिबरेशन फ्रंट (ई एल एफ) और अन्य दल जैसे एरिट्रियन पीपुल्स लिबरेशन फ्रंट जो कि अलग प्रांत की मांग कर रहे थे, का सेना के साथ लगातार संघर्ष से प्रांत की स्थिति बिगड़ गयी। 1993 में अफ्रीका का 30 वर्षीय सबसे बड़ा गृह युद्ध समाप्त हुआ और 24 मई को एरिट्रिया स्वाधीन हुआ । संयुक्त राष्ट्र एवं अफ्रीकन युनिटी ने इसको सदस्यता दी ।

एरिट्रिया में 9 जातीय समुदाय हैं और मात्र 5 प्रतिशत कृषि भूमि है ।

राष्ट्रपतिः इसासिस अफेवर्की ।

ओमान

(Sultanate of Oman) Saltanat' Uman

राजधानीः मस्कट; **क्षेत्रफलः** 300,000 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्याः** 2.4 मिलयन; **भाषाः** अरबी; **साक्षरताः** 59%; **धर्मः** इस्लाम; **मुद्राः** ओमानी रियाल; 1 अमरीकी डालर = 0.39 ओ.रि.; **प्रति व्यक्ति आयः** 9,960 डालर।

ओमान की सल्तनत जो पहले मस्कट और ओमान कहलाती थी, अरब प्रायद्वीप के दक्षिणी-पूर्वी भाग में स्थित है । इसका तट अरब सागर, ओमान की खाड़ी और फारस की खाड़ी तक फैला हुआ है । वर्तमान ओमान नाम इसने 1970 में ग्रहण किया ।

जहां-जहां जल उपलब्ध है, वहां की भूमि बड़ी उपजाऊ है। बटीना का तटीय मैदान छुहारा, फल तथा अनाजों के लिए प्रसिद्ध है । यहां की अर्थ-व्यवस्था में तेल की प्रमुख भूमिका है।

राज्याध्यक्ष और शासनाध्यक्षः सुलतान कायेबस बिन सेद।

भारत में दूतावासः ओमान का दूतावास, 16, ओलोफ पाल्मे मार्ग, बसन्त विहार, नई दिल्ली-110 057; टेलीफोनः 6140215; फैक्सः 6146478.

वाणिज्य दूतावासः 21 जोली मेकर्स एपार्टमेंट, 3 कुफ्फे परेड कोलाबा, बम्बई-400 005

Indian Mission in Oman: Embassy of India, P.O. Box 1727, Ruwi-112, Muscat, Sultanate of Oman. Tel: 00-968-702957; Fax: 00-968-797547.

अंगोला

Republic of Angola (Republica de Angola)

राजधानीः लुआण्डा; **क्षेत्रफलः** 1,246,699 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्याः** 12.9 मिलयन; **भाषाः** पुर्तगाली, बन्टू; **साक्षरताः** 40%; **धर्मः** कबीलाई धर्म और ईसाई; **मुद्राः** रीएडजस्टेड क्वांजा; 1 अमरीकी डालर = 257,128 री.; **प्रति व्यक्ति आयः** 1,821 डालर ।

अंगोला 1975 में स्वाधीन राज्य बना । इसका पूर्व नाम पुर्तगाली पश्चिमी अफ्रीका था ।

16 वर्ष तक चले गृह युद्ध की समाप्ति 1991 में हुयी लेकिन एम.पी.एल.ए. (पीपुल्स मूवमेंट फार लिबरेशन आफ अंगोला) और यू.एन.आई.टी.ए. (यूनियन फार दी टोटल लिबरेशन फार अंगोला) में फिर से संघर्ष शुरू हो गया ।

अगस्त 1998 में राष्ट्रपकि कबीला के समर्थन में कांगो (सायर) में अंगोला ने हजारों सैनिक भेजे।

मुख्य खाद्यान्न फसलें – ज्वार, बाजरा और कसावा हैं। प्रमुख वाणिज्यिक फसलें काफी, कपास, तेल, ताड़ और सीसल हैं । मुख्य उद्योग : वस्त्र, शराब, सीमेंट, तेल परिष्करण और चीनी हैं । अंगोला अपनी मणियों के लिए विख्यात है और संसार के कुल मणियों में से दसवां भाग अंगोला में बनता है। प्रमुख निर्यात हैं – कच्चा पेट्रोलियम, काफी, हीरे, कच्चा लोहा, मछली, सीसल और इमारती लकड़ी ।

राष्ट्रपतिः जोस एडवर्डो डास सैंटोस; **प्रधानमंत्रीः** फर्नांडो फ्रांका वान डुनेम।

भारत में दूतावासः अंगोला गणराज्य का दूतावास सी-17, माल्चा मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110 021; फोनः 6110701, 6882680; फैक्सः 6113512

Indian Mission in Angola: Embassy of India, Apartment D, Ist Floor, Predio Dos Armazens Carrapas, No 81 Rua Marechal Broz Tito, Caixa Postal 6040, Luanda, Angola. Tel:00-244-2-345398; Fax: 00-244-2-342061.

अण्डोरा

Principality of Andora (Principat d' Andora)

राजधानीः अण्डोरे-ला-विले; **क्षेत्रफलः** 464 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्याः** 65,939; **भाषाः** कैटालन, स्पेनिश और फ्रेंच; **साक्षरताः** 100%; **धर्मः** ईसाई; **मुद्राः** फ्रांसीसी फ्रैंक, एवं स्पेनिश पेसेटा; 1 अमरीकी डालर = 6.13 फ्रेंच फ्रैंक और 155.4स्पेनिश पेसेटा; **प्रति व्यक्ति आयः** 18,000 डालर ।

1278 में स्थापित अण्डोरा राज्य फ्रांस और स्पेन के बीच बार्सिलोना और टूलो से बराबर दूरी पर पूर्वी पेरीनीज की घाटी में स्थित है ।

अण्डोरा का कोई निश्चित संविधान नहीं है और उसकी अंतर्राष्ट्रीय मान्यता भी संदिग्ध है । यह नाममात्र के लिए फ्रांस और स्पेन के अर्जेल बिशप के अधीन है । शासन 28 निर्वाचित सदस्यों की परिषद द्वारा चलाया जाता है ।

अण्डोरा कृषि प्रधान देश है । मुख्य उपज है – खाद्यान्न, आलू और तम्बाकू । लोहा, सीसा, श्वेत खनिज नामक, पत्थर और इमारती लकडी प्रमुख व्यापारिक उत्पाद हैं, किन्तु आय का मुख्य साधन पर्यटन है ।

शासनाध्यक्षः फ्रांस के राष्ट्रपति एवं [illegible] (स्पेन), कार्यकारी परिषद के **अध्यक्ष**, [illegible] परिषदः मार्क फोर्ने ।

कजाकस्तान

(Republic of Kazakhstan) Republikasy

राजधानी: अस्टाना (आकमोसा); क्षेत्रफल: 2,717,300 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 14.9 मिलयन; भाषा: कजाख, रूसी, जर्मन; साक्षरता: 98%; धर्म: इस्लाम, ईसाई; मुद्रा: टेंग ; 1 अमरीकी डालर = 132.80 टेंग; प्रति व्यक्ति आय: 4,378 डालर।

पूर्व सोवियत गणराज्य कजाकस्तान 16 दिसम्बर 1991 में स्वतंत्र हुआ ।कैस्पियन सागर से चीन की सीमाओं तक कजाकस्तान रूस, उजबेकिस्तान और किरमिजिया से घिरा है ।सोवियत गणराज्य के दूसरे वृहद राज्य में लगभग 100 राष्ट्रीयता वाले लोग रहते हैं ।लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या शहरी है ।आधी से अधिक जनसंख्या रूसियों और उक्रेनियों की है जो उद्योग एवं फार्मो में कार्यरत् हैं ।

जुलाई 98 में रूस और कजाकस्तान के बीच शांति एवं सहयोग का समझौता हुआ, इसके अंतर्गत बाहरी आक्रमण पर सैनिक सहयोग का प्रावधान रखा गया। जनवरी 99 में राष्ट्रपति नजरबेयेव दुवारा 7 वर्षों के लिये निर्वाचित हुए।

कृषि: खाद्यान्न, शुगर बीट, आलू, सब्जी, मांस, दूध अंडे। उच्च गुणवत्ता वाले ऊन के लिये यहां की भेंड़े विख्यात हैं ।

प्राकृतिक स्रोत: पूर्व सोवियत संघ का लगभग आधे का तांबा, लेड, जस्ते का भंडार यहां है ।अन्य खनिज है कोयला, टंगस्टर्न, तेल, निकेल, क्रोमियम, मालिब्डनम, मैग्नीज ।

उद्योग: लौह अयस्क, सल्फ्यूरिक एसिड, फेरोकंक्रीट, निटवियर, फुटवियर, हेजरी। औद्योगिक उत्पादन में पूर्व सोवियत संघ के गणराज्यों में कजाकस्तान का तीसरा स्थान है ।

राष्ट्रपति: नुरसुल्तान नजरबायव: कार्यकारी प्रधानमंत्री: कासीमझोमार्ट टोकायेव।

भारत में दूतावास: 4, आलोफ पाल्मे मार्ग, वसंत विहार, नई दिल्ली-110 057; फोन: 6144779; फैक्स: 6144778.

Indian Mission in Kazakhstan: Embassy of India, Ulitsa Maulenova 71, Almaty-480091, Kazakhstan. Tel. 00-7-3272-671411; Fax: 00-7-3272-676767.

कतार

(State of Qatar) Dawletal-Qater

राजधानी: दोहा; क्षेत्रफल: 11,437 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 723,542; भाषा: अरबी, अंग्रेजी; साक्षरता: 79%; धर्म: इस्लाम; मुद्रा: रियाल; 1 अमरीकी डालर = 3.64 रियाल; प्रति व्यक्ति आय: 20,987 डालर ।

कतार 160 मील लम्बी जीभ के आकार की भूमि है जिसकी नोक फारस (अरब) की खाड़ी को छूती है ।यह लगभग तीन ओर से फारस की खाड़ी से घिरा है ।दक्षिण में सउदी अरब है । 3 सितम्बर 1971 में ब्रिटेन ने जब फारस की खाड़ी से अपना आधिपत्य समाप्त कर दिया तो कतार स्वतंत्र हुआ ।कतार में पूर्ण राजतंत्र है ।यहां की अधिकांश आबादी राजधानी दोहा में और इसके आसपास रहती है ।अब पाकिस्तान, इरान और ओमान के प्रवासियों की संख्या मूल कतारवासियों से अधिक है ।आजकल तेल उद्योग से राष्ट्रीय आय का 90 प्रतिशत से भी अधिक भाग आता है, लेकिन इसमें आबादी का केवल 5 प्रतिशत भाग ही काम करता है ।अब कतार सड़क मार्ग से शेष अरब क्षेत्र से तथा वायुमार्ग द्वारा विश्व से जुड़ा है ।

मई 98 में अमीर ने घोषणा की कि कतर अगली शताब्दि के प्रारंभ में लोकतंत्र को अपनायेगा और कुवैती लोकतंत्र की तरह हो जायेगा।

1999 में महिला दिवस के अवसर पर खाड़ी देशों में पहली बार यहां महिलाओं ने स्थानीय परिषद के चुनावों में मतदान में हिस्सा लिया।

अमीर: शेख हमद बिन खलीफा अल थानी ।

भारत में दूतावास: कतार का दूतवास, ई.पी.-31ए, चंद्रगुप्त मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110 021, फोन: 6117988; फैक्स: 6886080.

वाणिज्य दूतावास: बजाज भवन, नारीमन प्वाइंट, मुम्बई-400 021, फोन: 2027192.

Indian Mission in Qatar: Embassy of India, P.O. Box 2788, Al-Hilal Area, Doha, Qatar. Tel: 00-974-672021; Fax: 00-974-670448.

कनाडा

राजधानी: ओटावा; क्षेत्रफल: 9,976,139 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 30.8 मिलयन;; भाषा: अंग्रेजी और फ्रेंच; साक्षरता: 97%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: डालर; 1 अमरीकी डालर = 1.50 कनाडियन डालर; प्रति व्यक्ति आय: 23,582 डालर ।

कनाडा संसार का दूसरे नम्बर का सबसे बड़ा देश है। यह पश्चिम में अलास्का और छोटे फ्रांसीसी द्वीप सेंट पीयरे एण्ड मिक्वेलन को छोड़कर उत्तरी अमरीका के सम्पूर्ण उत्तरी भाग में फैला हुआ है । 27 प्रतिशत जनसंख्या फ्रेंच बोलती है और शेष अंग्रेजी ।

कनाडा एक संघ है जिसमें 10 प्रान्त और 2 क्षेत्र सम्मिलित है ।संघ की राजधानी ओटावा है ।कनाडा राष्ट्रमंडल का सदस्य है ।ऐतिहासिक 1982 के कनाडा ऐक्ट' के द्वारा ब्रिटेन ने संवैधानिक अधिकार कनाडा को सौंप दिए ।

10 लाख से अधिक जनसंख्या वाले प्रान्तों के नाम ये है ओण्टेरियो (80), क्युबेक (60), ब्रिटिश कोलंबिया (20), अलबर्टा एवं मनिटोबा (10) ।

कनाडा मूलत: एक कृषि प्रधान देश था और वनों की कटाई, मछली पकड़ने के लिए विख्यात था किन्तु उसने अपने को विश्व का एक अग्रणी औद्योगिक देश बना लिया है। इस देश से निर्यात होने वाली वस्तुओं की सूची में क्रमशः मोटरगाड़ियों के पुर्जे, लकड़ी का गूदा और इमारती लकड़ी के नाम सबसे ऊपर हैं ।गेहूं अभी भी निर्यात होने वाली एक मुख्य वस्तु है ।कनाडा का औद्योगिक ढांचा विदेशी पूंजी, विशेषतया अमरीकी पूंजी के आधार पर निर्मित हुआ है ।

एस्बेस्टस, चांदी, निकेल और जस्ते के उत्पादन में कनाडा आज संसार में सबसे आगे है ।अन्य कई खनिजों जैसे लोहा, तांबा, यूरेनियम, कोबाल्ट, सल्फर, सीसा और

कनाड़ा के प्रांत,एवं क्षेत्र

प्रान्त	राजधानी	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी)
अलबर्टा	एडमाण्टन	644,390
ब्रिटिश कोलंबिया	विक्टोरिया	929,730
मनिटोबा	विन्निपेग	548,360
न्यू ब्रुंसविक	फ्रेडरिक्टन	72,090
न्युफाउण्डलैंड	सेण्ट जान्स	371,690
नोवा स्कोशिया	हेलीफैक्स	52,840
ओण्टैरियो	टोरण्टो	891,190
प्रिंस एडवर्ड आईलैंड	चार्लोटटाउन	5,660
क्युबेक	क्युबेक	1,356,790
सस्कैचेवेन	रेगिना	570,700
क्षेत्र		
युकोन क्षेत्र	ह्वाइटहार्स	478,970
नार्थ वेस्ट क्षेत्र	यलोनाइफ	3,293,020

सोने की दृष्टि से कनाडा समृद्ध है । इस देश में तेल और प्राकृतिक गैस के विशाल भंडार हैं । हालांकि कच्चे तेल के उत्पादन में कनाडा का स्थान संसार में नवां है ।

जून 1997 के चुनावों में लिबरल पार्टी को एक बार फिर सत्ता संभालने का मौका मिला।

राज्याध्यक्ष: क्वीन एलिज़ाबेथ द्वितीय; गवर्नर जनरल: एड्रिएन्ने क्लार्क्सन, प्रधानमंत्री: जीन क्रेशियन ।

भारत में दूतावास: कनाडा का हाई कमीशन, 7/8 शांति पथ, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110 021; फोन: 6876500; फैक्स: 6870031

Indian Mission in Canada: High Commission of India, 10, Springfield Road, Ottawa, Ontario KIM 1C9, Canada. Tel: 00-1-613-7443751; Fax: 00-1-613-7440913.

कम्बोडिया

(Kingdom of Cambodia) Preach Reach Ana Pak Kampuchea

राजधानी: फोम पेन्ह; क्षेत्रफल: 181,035 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 12.1 मिलयन;; भाषा: खमेर, फ्रेंच; साक्षरता: 65%; धर्म: थेरवाद बौद्ध धर्म; मुद्रा: रील; 1 अमरीकी डालर = 3,800 रील; प्रति व्यक्ति आय: 1,257 डालर ।

दक्षिण पूर्व एशिया में भारत-चीन प्रायद्वीप पर स्थित कम्पूचिया का नाम कम्बोडिया था और अक्तूबर 1970 से मई 1975 के बीच इसका नाम खमेर गणराज्य था 1, मई 1989 में इसका नाम फिर कम्बोडिया रखा गया ।

संयुक्त राष्ट्र की पर्यवेक्षता में गई 1993 में संविधान सभा के लिये यहां बहुदलीय चुनाव हुए । खमेर रोग ने चुनाव का बहिष्कार किया । फंसीपेक को सर्वाधिक सीटें मिली । 14 वर्षीय वियतनाम द्वारा स्थापित नोम पेन्ह प्रशासन की समाप्ति हुयी और तीन दलों ने मिलकर अंतिरिम सरकार बनायी ।लेकिन सितंबर 1993 में नया संविधान प्रभावी हुआ और इसके साथ राज्यशाही की वापसी हुयी । नोरोडेम शिघांनुग राज्याध्यक्ष बने और उनके बेटे रनारिध प्रथम प्रधान मंत्री एवं हुन सेन द्वितीय प्रधान मंत्री बने ।

जून 97 में रोग विद्रोहियों ने कहा कि पोल पोट को गिरफ्तार कर लिया गया है। फोम पेन्ह में सेना के विरोधी गुटों में संघर्ष छिड़ गया। 7 जुलाई को दूसरे प्रधानमंत्री हुन सेन ने देश का नियंत्रण अपने हाथों में ले लिया और सर्वोच्च शक्ति नेता बन गये। उनके विरोधी प्रथम प्रधानमंत्री नोरोडम रानारिद्ध जो देश छोड़ कर भाग गये थे ने संयुक्त राष्ट्र संघ के हस्तछेप की मांग की।

नेशनल एसंबली ने रानारिद्ध के समस्त अधिकार समाप्त कर दिये लेकिन उनकी प्रतिबद्ध पार्टी ने नये प्रथम प्रधानमंत्री उंग हुवाट के चुनाव को चुनौती दी। महाराजा सिहानाउक ने प्रथम प्रधानमंत्री की नियुक्ति को स्वीकृत देदी।

फरवरी 98 में प्रिंस रानारिद्ध ने एकतरफा युद्ध विराम की घोषणा कर दी।लेकिन उनकी अनुपस्थित में फोन फेन्ह में अवैध हथियारों की आपूर्ति के अभियोग पर एक सैनिक अदालत ने उन्हें पांच वर्ष की सजा की घोषणा करदी। एशियान ने संयुक्त राष्ट्र संघ से रानारिद्ध की सुरक्षित वापसी की सुनिष्चतता की मांग की। 15 अप्रैल को पोलपोट की मृत्यु हो गई।

संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव कोफी अन्नान ने कंबोडिया में जुलाई 98 में आम चुनावों के पूर्व वहां की जनता से जागरूक मतदान की अपील की, महाराजा ने भी जनता से ऐसी ही अपील की। हुन सेन चुनाव जीत गये। विरोधी दलों का कहना था कि चुनावों में खुलकर हेराफेरी की गई।

कम्बोडिया अप्रैल 99 में एशियान का सदस्य बना। 1997 से संयुक्त राष्ट्र संघ सामान्य सभा से इसकी सदस्यता खाली पड़ी थी क्योंकि झगड़ा इस बात का था कि कौन सा दल प्रतिनिधित्व करेगा।

कम्बोडिया एक अविकसित देश है । यहां 50 प्रतिशत भूमि पर वन है । कुल कृषि योग्य भूमि के 80 प्रतिशत भाग में चावल की खेती होती है । पशु पालन और मछली पकड़ने का काम काफी उन्नत है । वनों में मूल्यवान इमारती लकड़ी भरी पड़ी है ।

लोहा, तांबा, मैंगनीज़ और सोना भी मिलता है।

राज्याध्यक्ष: प्रिंस नोरोडम सिंघानुक। मंत्रिमंडल के साथ राष्ट्रपति: हुन सेन।

भारत में दूतावास: कम्बोडिया लोक गणराज्य का दूतावास, न.14, पंचशील मार्ग, नई दिल्ली-110 017; फोन: 6495092; फैक्स: 6495093.

प्रथम राजधानी सार्वजनिक

विदेशी पर्यटक अब खमेर राजाओं की पहली राजधानी 20 अमरीकी डालर का शुल्क अदा करके देख सकेंगे। कंबोडिया के निवासियों के लिये यह शुल्क 1 अमरीकी डालर है।

यह पुरानी राजधानी फ्नोम कुलेन पहाड़ी की चोटी पर है और सेना के नियंत्रण में है।

Indian Mission in Cambodia: Embassy of India, Villa No. 777, Boulevard Monivong, Phnom Penh, Cambodia Tel: 00-855-23-210912; Fax: 00-855-23-364489.

कोटे डी आइवरी (आइवरी कोस्ट)

Republiaue de lq Cote dlvoire

राजधानी: अविदजान (व्यवहारिक) यामोउस्स्क्रो (आधिकारिक); **क्षेत्रफल:** 322,462 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 16.0 मिलयन, **भापा:** फ्रेंच और कवायली; **साक्षरता:** 40%; **धर्म:** इस्लाम और ईसाई; **मुद्रा:** फ्रैंक सी.एफ.ए.; 1 अमरीकी डालर = 612.79 फ्रैंक, सी.एफ.ए.; **प्रति व्यक्ति आय:** 1,598 डालर ।

आइवरी कोस्ट की सीमा उत्तर में माली और बुरकीना की सीमा से, पूर्व में घाना की सीमा से, दक्षिण में गिनी सागर से और पश्चिम में लाइवेरिया व गिनी की सीमा से मिली हुई है।

आइवरी कोस्ट पहले फ्रांस का एक उपनिवेश था । यह 7, अगस्त 1960 में स्वाधीन हुआ और इसका नाम फ्रेंच के आधार पर ठीक किया गया ।

इस देश की 90 प्रतिशत आवादी खेती, वानिकी और मछली पकड़ने के काम में लगी हुई है । आइवरी कोस्ट संसार में काफी पैदा करने वाले देशों में तीसरा सवसे वड़ा देश है। यह अफ्रीका में इमारती लकड़ी का उत्पादन करने वाला सवसे महत्वपूर्ण देश है । अन्य महत्वपूर्ण वाणिज्यिक फसलें है – कोकोआ, केले और अनानास ।

राष्ट्रपति: हेनरी कोनान वेडी। **प्रधानमंत्री:** डानियल काव्लान डंकन ।

भारत में दूतावास: मास्को में स्थित कोटे–डी आइवरी का दूतावास।

आनरेरी कंसुलेट: पुंज हाउस, एम–13, कनाट प्लेस, नई दिल्ली–110001, फोन: 3323621, फैक्स: 3357134.

Indian Mission in Cote D'Ivoire (Ivory Coast): Embassy of India, Villa No. 105, Rue L 98, 7eme Tranche, Cocody/II Plateaux-Angre, 06 B.P. 318, Abidjan 06, Cote d'Ivoire. Tel: 00-225-423769; Fax: 00-225-426649.

क्रोएशिया

(Republic of Croatia) Republica Hrvatska

राजधानी: ज़ाग्रेव; **क्षेत्रफल:** 56,538 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 4.6 मिलयन;; **भापा:** सर्वो क्रोएशियन; **साक्षरता:** 97%; **धर्म:** ईसाई; **मुद्रा:** क्यूना; 1 अमरीकी डालर = 7.11 क्यूना ; **प्रति व्यक्ति आय:** 6,749 डालर ।

पूर्व युगोस्लाविया का दूसरा बड़ा गणराज्य क्रोएशिया दक्षिणी पूर्व यूरोप में एडियाट्रिक समुद्र तल पर स्थित है ।

वर्तमान क्षेत्र में क्रोएट छठी शताब्दी में आकर बसे थे। 1091 में क्रोएशिया हंगरी के साथ संयुक्त हुआ और 1918 में प्रथम विश्वयुद्ध तक हंगेरियन प्रशासन के अंतर्गत रहा । 1929 में क्रोएशिया नये राज्य संघ–सर्व्स, क्रोएट और सोलवेन्स में मिला जिसे नया नाम युगोस्लाविया कहा गया।

इसके साथ ही क्रोएशिया युगोस्लाविया संघ के 6 गणराज्यों में एक हो गया । 25 जून 1991 को क्रोएशिया ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी । सर्वो ने विद्रोह कर दिया और 7 महीने तक गृहयुद्ध चला । क्राजिना एवं अन्य सर्व वाहुल्य क्षेत्रों ने सर्विया के साथ संघ वनाने की इच्छा प्रकट की ।

1992 की शुरूआत में संयुक्त राष्ट्र पीस कीपिंग मिशन पहुंचा । युरोपियन समुदाय ने 15 जनवरी 1992 को क्रोएशिया को मान्यता दी। सर्व एवं क्रोएट में जातीय संघर्ष जारी रहे।

जातीय समुदाय: क्रोट्स–75%, सर्व्स–12%, अन्य–13%।

कृषि उत्पाद: गेहूं, आलू, ओलिव, प्लम्स, पशुधन, लकड़ी। **उद्योग:** विद्युत, कोयला, लिग्नाइट, सीमेंट, चीनी, इस्पात, प्लास्टिक कपड़ा ।

मई 2000 में क्रोएशिया नाटो का सदस्य वन गया।

राष्ट्रपति: स्टिपे मेसी; **प्रधानमंत्री:** ज्इवान राकान।

भारत में दूतावास: क्रोएशिया गणराज्य का दूतावास, 70 रिंग रोड, लजपत नगर III, नई दिल्ली–110 024. टेलिफोन: 6924761; फैक्स: 6924763.

Indian Mission in Croatia: Embassy of India, Boskoviceva 7A, 10000 Zagreb, Croatia. Tel: 00-385-1-430063; Fax: 00-385-1-4817907.

क्यूबा

(Republic of Cuba) Republica de Cuba

राजधानी: हवाना; **क्षेत्रफल:** 114,524 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 11.1 मिलयन; **भापा:** स्पेनिश; **साक्षरता:** 96%; **धर्म:** ईसाई एवं धर्म को न मानने वाले; **मुद्रा:** पेसो; 1 अमरीकी डालर = 1.00 पेसो; **प्रति व्यक्ति आय:** 3,967 डालर ।

वृहत्तर एण्टिलीज़ के सवसे वडे द्वीप क्यूवा को एण्टिलीज़ का मोती कहा जाता है । इसके पड़ोसी देश हैं– संयुक्त राज्य अमरीका, मैक्सिको, जमैका और हैटी । वहामाज़ द्वीपसमूह इसके उत्तर में हैं ।

कोलम्वस ने 1492 में क्यूवा की खोज की और स्पेन ने इस देश पर चार शताब्दियों तक शासन किया । 1898 में क्यूवा एक स्वाधीन गणराज्य वना ।

1959 में डा. फीडल कैस्ट्रो ने तानाशाह प्रेसीडेण्ट जनरल वटिस्टा की सरकार का तख्ता पलट दिया और सत्ता अपने हाथ में ले ली। 1962 में अमरीका को पता चला कि सोवियत संघ ने क्यूवा को आण्विक प्रक्षेपास्त्र दिये हैं। राष्ट्रपति जे.एफ. कनेडी के चेतावनी देने पर यह प्रक्षेपास्त्र लौटाये गये। 1976 में साम्यवादी संविधान को लागू किया गया और संसद के प्रत्यक्ष चुनावों 1992 से प्रारंभ हुए। जनवरी 1998 में फीदल कास्त्रो दुवारा राष्ट्रपति पद के लिये निर्वाचित हुए।

पोप जान पाल द्वितीय ने क्यूवा की यात्रा की और वहां पर कैतोलिक स्कूलों की वापसी की मांग की। ।

क्यूवा संसार में चीनी का सवसे वड़ा उत्पादक है । दूसरे नम्वर की फसल तम्वाकू है । हाल के वर्षों में पशु–पालन, मुर्गी पालन और मछली पकड़ने का उद्योग महत्वपूर्ण हो गए हैं । क्यूवा में निकेल के काफी भंडार है । वहां तांवा, क्रोमाईट और मैंगनीज़ भी मिलता है ।

राष्ट्रपति : डा. फीडल कैस्ट्रो रुज़; प्रथम उप–राष्ट्रपति : रऊल कैस्ट्रोज रुज़ ।

भारत में दूतावास: क्यूबा गणराज्य का दूतावास, 4, गुनरिका मार्ग, वसन्त विहार, नई दिल्ली–110 057, फोन: 6143849; फैक्स: 6143806

Indian Mission in Cuba: Embassy of India, Calle 21, No. 202, Esquina aK, Vedado, La Habana, Cuba. Tel: 00-53-7-333777; Fax: 00-53-7-333287.

कांगो

(Republic of Congo) Republique du Congo

राजधानी: ब्राज़ाविले; **क्षेत्रफल:** 342,000 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 2.8 मिलयन; **भाषा:** फ्रेंच, लिंगला, कांगो और टेके; **साक्षरता:** 75%; **धर्म:** कबीलाई धर्म और ईसाई; **मुद्रा:** फ्रैंक सी.एफ.ए.; 1 अमरीकी डालर = 612.79 फ्रैंक सी.एफ.ए.; **प्रति व्यक्ति आय:** 995 डालर।

कांगो गणराज्य जो पहले फ्रांसीसी भूमध्य रेखीय अफ्रीका का एक भाग था, 1958 में फ्रेंच कम्युनिटी के भीतर एक स्वायत्तशासी राज्य बना और अगस्त 1960 में पूर्ण स्वाधीन हुआ । 1969 में यहां एक नया संविधान लागू किया गया 1990 में मार्क्सवाद की दुबारा घोषणा की गई। 1992 में लोकतांत्रित तरीके से चुनी सरकार सत्ता में आई।।

कांगो से मुख्य निर्यात हैं– इमारती लकड़ी हीरे, ताड़ तेल, कच्चा पेट्रोलियम चीनी और मूंगफली ।

राष्ट्रपति: जनरल डेनिस सास्सओ नेग्यसो; **प्रधानमंत्री:** बर्नार्ड कोक्लास।

कांगो (भूतपूर्व सायर)

(Democratic Republic of the Congo)

राजधानी: किंशासा; **क्षेत्रफल:** 2,344,885 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 52.0 मिलयन; **भाषा:** फ्रेंच और किसुहिली; **साक्षरता:** 77%; **धर्म:** ईसाई और आत्मवादी एवं इस्लाम; **मुद्रा:** न्यू सायर; 1 अमरीकी डालर = 4.50 न्यू सायर; **प्रति व्यक्ति आय:** 822 डालर ।

रिपब्लिक आफ सायर अक्तूबर 1971 तक डेमोक्रेटिक रिपब्लिक आफ दि कांगो अथवा संक्षेप में कांगो (किंशासा) के नाम से जाना जाता था । नाम के इस परिवर्तन ने इसे अपने पड़ोसी रिपब्लिक आफ दि कंगो अथवा कांगो (ब्रज़ाविले) से अलग पहचान दी । 1971 में इस देश ने कांगो नदी का नाम बदलकर सायर नदी कर दिया । मूल रूप से यह बेल्जियम का उपनिवेश था, जिसे 30 जून, 1960 को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

सायर में आर्थिक संकट 1980 से प्रारंभ हुआ और 1990 तक स्थिति विकट हो गई। राष्ट्रपति मोबुटु ने अनेक राजनीतिक दोलं पर पिछले 20 वर्ष से चल रहे प्रतिबंध को समाप्त करने की घोषणा की। 1991 में उन्होंने विपक्षी दल द्वारा सत्तारूढ़ होने को स्वीकार कर लिया। 1994 में रुवांडा में हुए जातीय संघर्ष के परिणामस्वरूप लाखों हुतु शरणार्थी यहां आ गये।

वर्ष 1997 में सात वर्ष तक चले गृहयुद्ध के बाद राष्ट्रपति मोबुटु का पतन हो गया। मार्च महीने में तीसरा सबसे बड़ा शहर किसानगंज पर विद्रोहियों का कब्जा हो गया। आपातकाल की घोषणा कर दी गई। विद्रोही कुपोषण के शिकार 80,000 रुवांडा के शरणार्थियों को संयुक्त राष्ट्र द्वारा उनके अपने देश को पंहुचाने में सहमत हो गये। अप्रैल में दक्षिणी कपास प्रमुख क्षेत्र लुबुमबाशी पर विद्रोहियों का कब्जा हो गया। अमरीका ने मोबुटु से सत्ता छोड़ने को कहा। नेल्सन मंडेला ने मोबुटु व विद्रोही नेता लारेंट कबीला की बातचीत में मध्यस्थता का काम किया। 16 मई को मोबुटु ने सत्ता चोड़ दी और कबीला राज्यप्रमुख बन गये। सायर का नया नाम डेमोक्रेटिक रिपब्लिक आफ कांगो रखा गया।

जून 1998 में संयुक्त राष्ट्र मानव अधिकार के दल ने 1996–97 के दौरान कबीला पर रुवांडा के शरणार्थियों की हत्या करने का आरोप लगाया।

राष्ट्रपति कबीला को 98 में विकट सैनिक विद्रोह का सामना करना पड़ा। अर्थुर जाहिदी अगोमाके नेतृत्व में विद्रोहियों ने दो पूर्वी शहर (गोमा व बुकावु) पर कब्जा कर लिया। अमरीका को रुवांडा पर इस विद्रोह को सहायता देने का शक है।

रुवांडा और उगांडा यहां पर कबीला व अलगाववादी गुट को सहायता दे रहे हैं। अगस्त 99 को उगांडा की पीपुल्स डिफेंस फोर्सेस और रुवांडा पैट्रियाटिक आर्मी में झड़पें हुई।

सायर की मुख्य परिसम्पति कटांगा की तांबे की खानें और कसाई में हीरे के भंडार है । यह देश कोबाल्ट, कैडमियम, मैंगनीज़, जस्ता और यूरेनियम जैसे अन्य खनिजों से भी समृद्ध है ।

यहां के वनों में महोगनी, इबोनी और टीक जैसी उच्च किस्म की इमारती लकड़ी की प्रचुरता है । मुख्य कृषि उत्पाद काफी और खजूर–तेल हैं ।

राष्ट्रपति: लारेंट काबिला; **प्रधानमंत्री:** जन. लुकुलिया बोलोंगो।

भारत में दूतावास: कांगो गणराज्य दूतावास, सी 56 पंचशील एनक्लेव, नई दिल्ली–110 017; फोन: 6222796; फैक्स: 6227226.

Kr 493

711

किरिबती

(Republic of Kiribati)

राजधानी: बारिकी (तरावा एटोल पर); **क्षेत्रफल:** 861 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 85,501; **भाषा:** जिल्बर्टी और अंग्रेजी; **साक्षरता:** 90%; **धर्म:** ईसाई; **मुद्रा:** आस्ट्रेलियन डालर; 1 अमरीकी डालर = 1.55 आ. डालर; **प्रति व्यक्ति आय:** 800 डालर ।

जिल्बर्ट द्वीप समूह अभी हाल तक ब्रिटिश उपनिवेश था। 11 जुलाई, 1979 को यह किरिबती (किरिबास) नाम से स्वाधीन हुआ ।

ये द्वीप पश्चिमी प्रशान्त महासागर में काफी लम्बे–चौड़े इलाके में फैले हुए हैं, जिनकी संख्या लगभग 33 है । बनाबा द्वीप को छोड़कर शेष सब द्वीप निचले प्रवाल द्वीप हैं, जिनमें नारियल, केवड़ा और फणस के बागान हैं ।

यहां की जनसंख्या में माइक्रोनेशियन और पोलिनेशियन हैं । कृषि और मछली पकड़ना प्रमुख उद्योग हैं । बनावा द्वीप में उच्च कोटि के फास्फेटिक भंडार हैं । इनमें से फास्फेटिक निकाला और निर्यात किया जाता है । निर्यात की अन्य महत्वपूर्ण वस्तु नारियल है ।

राष्ट्रपति: टेयुरोरो टिटो ।

किरगिजिस्तान

(Republic of Kyrgyzstan) Kyrgyz Respublikasy

राजधानी: विशकेक; क्षेत्रफल: 198,500 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 4.9 मिलयन; भाषा: किरघिज़, रूसी; साक्षरता: 97%; मुद्रा: सोम; 1 अमरीकी डालर= 42.70 सोम; प्रति व्यक्ति आय: 2,317 डालर ।

दिसम्बर 1991 में स्वतंत्र हुआ पूर्व सोवियत गणराज्य किरघिजिया तियान–शान पहाड़ पर स्थित है । चीन, कजाक–स्तान, उजबेकिस्तान और टाडजिकिस्तान इसके पड़ौसी हैं ।

कृषि: किरगिजिया पशु प्रजनन के लिए विख्यात है मधुमक्खी पालन काफी विकसित है ।

उत्पादन: खाद्यान्न, कपास, आलू, सब्जी, फल, मांस, दूध, अंडे और ऊन ।

उद्योग: चीनी, खाद्यान्न, कपास, ऊन, टैनिंग, आटा चक्की, तम्बाकू लकड़ी, कपड़ा, इंजीनियरिंग मेटलर्जी, तेल एवं खदान।

राष्ट्रपति: अस्कर अकोयेव; प्रधानमंत्री: अमनगेल्डी मुरालियेव।

भारत में दूतावास: ए1/6 सफदरजंग एंक्लेव, नई दिल्ली: 110 029. फैक्स 6197344.

Indian Mission in Kyrgyzstan Embassy of India, 164-A, Chui Avenue (Prospect), Bishkek-720001, Kyrgyzstan. Tel 00-996-312-210863, Fax 00-996-312-660708.

कुवैत

(State of Kuwait) Dowlat al-Kuwait

राजधानी: कुवैत शहर, क्षेत्रफल: 17,818 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 2.2 मिलयन; साक्षरता: 79%; भाषा: अरबी, अंग्रेजी; धर्म: इस्लाम; मुद्रा: कुवैती दिनार; 1 अमरीकी डालर = 0.31 कुवैती दिनार; प्रति व्यक्ति आय: 25,314 डालर।

कुवैत एक छोटा–सा अरब राज्य है, जो फारस की खाड़ी के उत्तरी–पश्चिमी तट पर इराक और सऊदी अरब के बीच स्थित है । यह संसार के सबसे धनी देशों में से एक है।

कुवैत की स्थापना 1756 में अल–सबान वंश के शासन के अधीन हुई । 19 जून, 1961 को इसे स्वाधीनता मिली।

कुवैत संसार में पैट्रोलियम पैदा करने वाला चौथा सबसे बड़ा देश है । इराक ने कुवैत पर 2 अगस्त 1990 को आक्रमण करके अपने अधिकार में ले लिया था । लेकिन संयुक्त राष्ट्र के नेतृत्व में संयुक्त दल ने इराक को पराजित कर कुवैत को मुक्त करा लिया ।

1999 में कुवैत ने महिलाओं को मतदान व संसद चलाने के लिये अधिकार देकर लोकतंत्र की ओर एक कदम बढ़ाया। अगर इस आदेश को स्वीकृत मिल जाती है तो 2002 के चुनावों में महिलायें हिस्सा ले सकेगीं।

अमीर: शेख जबीर अल–अहमद अल–जबीर अल सबाह; प्रधानमंत्री: शेख साद अल–अब्दुल्ला अस सलेम अस सबाह।

भारत में दूतावास: कुवैत का दूतावास, 5–ए शान्ति पथ, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन: 4100791; फैक्स: 6873516.

वाणिज्यिक दूतावास: 120 डी वाचा रोड, वासवानी मैंशन, मुम्बई–400 004, फोन: 2873007, 2871879।

Indian Mission in Kuwait: Embassy of India, Diplomatic Enclave, Arabian Gulf Street, P.O. Box.No. 1450-Safat, 13015-Safat, Kuwait. Tel: 00-965-2530600; Fax: 00-965-2525811.

केन्या

(Republic of Kenya) Jamhuria Kenya

राजधानी: नैरोबी; क्षेत्रफल: 582,646 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 30.3 मिलयन; भाषा: किसवाहिली, अंग्रेजी किकियू, एवं स्थानीय भाषाएं; साक्षरता: 78%; धर्म: कबायली, ईसाई और इस्लाम; मुद्रा: शिलिंग; 1 अमरीकी डालर = 75.80 शिलिंग; प्रति व्यक्ति आय: 980 डालर ।

केन्या पहले ब्रिटिश उपनिवेश था । 12 दिसंबर 1963 में यह कामनवेल्थ के अन्तर्गत एक स्वाधीन गणराज्य बना।

केन्या की समृद्धि का मुख्य आधार कृषि उत्पादन है। मुख्य वाणिज्यिक फसलें हैं– कॉफी, चाय, अनाज, नरकुल और अकरकरा । केन्या अफ्रीका के उन थोड़े से देशों में से एक है, जिनमें डेयरी उद्योग अच्छा विकसित है । खनिज उद्योगों की व्यवस्था की जा रही है । पर्यटन की काफी उन्नति हुई है ।

जून 1997 में लोकतंत्र के लिये तीव्र संघर्ष प्रारंभ हुआ और 1991 के बाद अरप मोई के नेतृत्व के विरुद्ध सबसे अधिक हिंसा हुई। जनवरी 1998 में अरप मोल अंतिम (पांचवी बार) पांच वर्षों के लिये राष्ट्रपति बने। उत्तरी–पूर्वी केन्या में रिफ्ट वैली बुखार के प्रकोप से पांच हजार व्यक्ति मरे। अमरीकी दूतावास के निकट के शक्तिशाली बम विस्फोट में 200 से अधिक लोग मारे गये।

राष्ट्रपति: डेनियल टी. अराप मोई ।

भारत में दूतावास: केन्या का हाई कमीशन, 34 पश्चिमी मार्ग, वसन्त विहार, नई दिल्ली–110 057; फोन: 6146537; फैक्स: 6146550

Indian Mission in Kenya: High Commission of India, Jeevan Bharati Building, Harambee Avenue, P.O Box 30074, Nairobi, Kenya. Tel: 00-254-2-222566; Fax: 00-254-2-334167.

केप वर्डे

(Republic of Cape Verde) Republica de Cabo Verde

राजधानी: प्रैया; क्षेत्रफल: 4033 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 4,05,748; भाषा: पुर्तगाली; साक्षरता:

72%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: एस्क्युडो; 1 डालर = 94.71 एस्क्युडो; प्रति व्यक्ति आय: 3,233 डालर ।

केप वर्डे जो पहले एक पुर्तगाली उपनिवेश था, पश्चिमी अफ्रीका से दूर अटलांटिक महासागर में स्थित है। इसमें 10 बड़े द्वीप और 5 छोटे द्वीप सम्मिलित हैं जो वायु की दिशा के आधार पर अभिवात और अनुवात समूह में बंटे हुए हैं ।

यहां की मिट्टी अच्छी नहीं है और खेती नाममात्र की होती है। खाद्यान्न आयात की प्रमुख आवश्यकता है। नमक, मछली, कॉफी और मूंगफली का निर्यात होता है। केप वर्डे 5 जुलाई, 1975 को स्वाधीन हुआ था। जब पुर्तगालियों ने इस द्वीप की खोज की थी, तो यहां कोई आबादी नहीं थी। पुर्तगाली यहां आकर बसे और बागानों में काम करने हेतु नीग्रो लोगों को बाहर से ले आए। इस समय केप वर्डे के निवासी उन्हीं के वंशज है ।

राष्ट्रपति: एंटोनियो मास्कैरेनहास मांटेरियो; प्रधानमंत्री: कार्लोस वैगा ।

कैमरून

(Republic of Cameroon)

राजधानी: याओण्डे; क्षेत्रफल: 475,442 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 15.4 मिलियन; भाषा: फ्रेंच और अंग्रेजी; साक्षरता: 63%; धर्म: कबीलाई धर्म, ईसाई एवं इस्लाम; मुद्रा: फ्रैंक सी.एफ.ए.; 1 अमरीकी डालर = 612.79 फ्रैंक सी.एफ.ए.; प्रति व्यक्ति आय: 1,474 डालर ।

आरंभ में कैमरून पश्चिमी अफ्रीका में जर्मन उपनिवेश का एक भाग था। 1960 में यह गणराज्य बना। 1961 में ब्रिटिश कैमरून इसमें सम्मिलित हो गया और इस तरह कैमरून संघीय गणराज्य बन गया।

कैमरून में एक केन्द्रीय सरकार और दो प्रान्तीय सरकारें – पूर्वी कैमरून और पश्चिमी कैमरून हैं।

कैमरून मुख्यतः कृषि प्रधान देश है। यहां कोकोआ, ताड़ तेल, कॉफी, रबर, मूंगफली, केला और कपास पैदा होती है। पूर्वी कैमरून औद्योगिक दृष्टि से समृद्ध है – यहां के प्रमुख उद्योग अल्युमीनियम और रसायन हैं ।

राष्ट्रपति: पाल बिया; प्रधानमंत्री: पीटर मसानि मुसोंगे।

कोमोरोस

(Federal Islamic Republic of Comoros) Jumhuriyat al-Qumer al-Itthadiyah al-Islamiyah

राजधानी: मोरोनी; क्षेत्रफल: 1862 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 562,723; भाषा: अरबी और कोमोरोन; साक्षरता: 57%; धर्म: इस्लाम और ईसाई; मुद्रा: कोमेरियन फ्रैंक; 1 अमरीकी डालर = 459.59 को. फ्रैंक; प्रति व्यक्ति आय: 1,398 डालर ।

कोमोरोस द्वीपसमूह पहले फ्रांसीसी उपनिवेश था। यह अफ्रीका और मेडागास्कर के बीच मोज़म्बिक चैनल के उत्तरी छोर पर स्थित है। इस द्वीप समूह में 4 द्वीप ग्रैनडे–कोमोरो, अनजौन, मयोही और मोवली और बहुत से छोटे द्वीप और प्रवाल भित्तियां सम्मिलित हैं। मुख्य द्वीप ज्वालामुखी हैं और सबसे बड़ा द्वीप ग्रैनडे–कोमोरो पर माउण्ट करथला (2361 मीटर) ऊंचा है। यह एक सक्रिय ज्वालामुखी है। इन द्वीपों में घने वन हैं ।

अगस्त 1997 में अंजौन के पृथकतावादी जो फ्रांस के पक्ष में जाना चाहते हैं ने मुख्य शहर मुट्सामुडु में एक रैली में कोमोरोस संघ से अलग अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की। वे मयाटू जो कि फ्रांस के अधीन क्षेत्र है के बराबर स्वायत्ता चाहते हैं।

फरवरी 98 में मतदाताओं ने हिंद महासागर द्वीप नज्वानी को कोमोरोस से अलग करने के पक्ष में मतदान किया।

जनसंख्या में कई नस्लों के लोग–अरब, अफ्रीकी, मलागसी, फारसी, भारतीय, इण्डोनेशियाई और यूरोपीय हैं। अफ्रीकी और अरब प्रभाव सबसे ज्यादा है। शुद्ध यूरोपीय जनसंख्या लगभग 1500 है। ग्रैनेडे–कोमोरो सबसे अधिक जनसंख्या वाला द्वीप है और इसी द्वीप पर राजधानी मोरोनी है। कृषि अर्थ–व्यवस्था का मूल आधार है ।

राष्ट्रपति: अज अली असौमानी; प्रधानमंत्री: बियानरिफ टारिफ।

भारत में दूतावास: आनरेरी कंसुलेट, बी–50 गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली। टलिफोन: 6221385; फैक्स: 6462747.

Indian Mission in Comoros (Republique Federale Islamique Das). Honorary Consulate of India, B.P 504, Restaurant Fakri, Moroni, Comoros. Tel. 00-269-732129; Fax: 00-269-732222.

कोरिया (उत्तरी)

(Democratic People's Republic of Korea) Chosun Minchu-chui Inmin Konghwa-guk

राजधानी: पियांगयग, क्षेत्रफल: 1,20,538 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 21.7 मिलियन; भाषा: कोरियाई; साक्षरता: 95%, धर्म: बौद्ध धर्म और कन्फ्युशियस का धर्म, अब अधिकतर धर्म को न मानने वाले; मुद्रा: वोन; 1 अमरीकी डालर = 2.20 वोन; प्रति व्यक्ति आय: 900 डालर ।

कोरिया लोकतान्त्रिक गणराज्य कोरियाई [illegible] उत्तरी भाग में स्थित है ।

दूसरे विश्व युद्ध के दौरान अमरीका ने [illegible] पर और रूस ने उत्तरी कोरिया पर [illegible] पोट्सडम सम्मेलन में अमरीका और [illegible] इलाकों के बीच 38 अक्षांश [illegible] मान लिया गया। उत्तरी कोरिया [illegible] कोरिया लोकतंत्रीय गणराज्य [illegible]

किम द्वितीय सुंग जो [illegible] का 1994, जुलाई में [illegible]

सब उद्योगों का [illegible] किसानों में बांट [illegible] विकास में [illegible]

दोनों कोरिया का एकीकरण संभव

उत्तर कोरिया तथा दक्षिण कोरिया के बीच प्योंगयांग में हुए ऐतिहासिक समझौते पर दस्तखत के बाद दक्षिण कोरिया ने महत्वाकांक्षी दस्तावेज जारी कर शीतयुद्ध का माहौल दूर करने पर जोर दिया। दस्तावेज के प्रस्तावों में दोनों राष्ट्रों के बीच सैन्य हाटलाइन तथा विसैन्यीकृत सीमा पर रेलवे क्रासिंग की व्यवस्था का उल्लेख है।

इस बीच दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति किम दई जुंग ने कहा कि शिखर वार्ता से दोनों देशों के एकीकरण की संभावना बनी है। दक्षिण कोरिया के एक आर्थिक दैनिक समाचार-पत्र ने विचार व्यक्त किया है कि दोनों देशों ने एकीकरण की बुनियाद रखकर का इतिहास रचा है। शिखर वार्ता में भाग लेने गए दक्षिण कोरिया के प्रतिनिधिमंडल के हवाले से जारी एक आधिकारिक वक्तव्य में इस बात का उल्लेख किया गया है कि उत्तर कोरियाई राष्ट्रपति किम जोंग इल तथा दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति किम दई जुंग की बातचीत के बाद उत्तर कोरिया के लिए यह लाजमी है कि दोनों देशों के बीच भावी व्यावसायिक परियोजनाओं के लिए वे वैधानिक तथा प्रक्रियात्मक कार्यप्रणाली की शुरुआत करें। समझौतों में जो मुख्य कार्यप्रणालियां शामिल होंगी, उनमें निवेश संबंधी गारंटियां, दोहरे कराधनों से छूट, भुगतान निर्धारण तथा बैंक निधि हस्तांतरण और बौद्धिक संपदा संरक्षण की व्यवस्थाएं उल्लेखनीय होंगी।

दस्तावेज में कहा गया है कि कोई अप्रत्याशित सैनिक संघर्ष टालने के लिए दोनों देशों के बीच सीधे हाटलाइन की व्यवस्था होगी। ज्ञातव्य है कि 1950-53 के कोरियाई युद्ध तथा उसके बाद संघर्ष विराम होने के बावजूद ये दोनों ही दे तकनीकी दृष्टि से युद्ध जैसी स्थिति में बने रहे तथा दो के बीच तब से शांति के लिए कोई स्थायी समझौता नहीं सका था। दक्षिण कोरिया ने इस बात पर भी जोर दिय कि दोनों देशों के बीच रेलवे सेवा फिर से बहाल की ज जो कि कोरियाई युद्ध के दौरान स्थगित हो गई थी। इस अलावा इमजिन गैंग नदी पर सीमा क्षेत्र में बाढ़ निरो एक परियोजना निर्मित करने की बात भी कही गई द.कोरिया ने कहा है कि वह किम जोंग इल की द. कोरिया यात्रा की तैयारी करेगा, जिन्होंने यहां होने वाले शिखर सम्मेलन में भाग लेने का निमंत्रण स्वीकार कर लिय है। मूल मुद्दों पर वार्ता का आधार स्थापित करने, विश्वास बढ़ाने तथा आर्थिक संबंधों को शुरू करने की भावना के साथ यह समझौता आज संपन्न हो गया।

सम्मेलन दो दिन तक चला। वक्तव्य में यह भी कहा गया है कि दोनों देश धीरे-धीरे उन परिवारों के पुनर्मिलन के लिए कदम उठाएंगे जो कोरिया प्रायद्वीप में लगभग 50 वर्ष पूर्व हुए युद्ध के कारण बिछुड़ गए थे। जापान ने दोनों देशों के बीच हुए शिखर बैठक का स्वागत किया है। इस बारे में जापानी विदेश मंत्री योहेई कोनो ने कहा कि उनको आशा है कि उत्तर तथा दक्षिण कोरिया तनाव कम करने के लिए पारस्परिक बातचीत जारी रखेंगे। जापान ने 1991 में उत्तर कोरिया के साथ अपने संबंधों के सामान्यीकरण की बातचीत आरंभ की थी।

रसायनों पर ध्यान दिया गया है। देश कोयले और लोहे और कई प्रकार धातुओं से समृद्ध है। टंग्स्टन, ग्रेफाइट और मैग्नेसाइट के उत्पादन में उत्तरी कोरिया संसार के पांच प्रमुख देशों में से एक है।

[illegible] में भी उत्तरी कोरिया और दक्षिण कोरिया के एकीकरण के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक प्रयास और वार्ताएं आयोजित हुईं लेकिन वे असफल रहीं। मार्च 1994 में उत्तरी कोरिया ने स्वयं को परमाणविक अप्रसार संधि से अलग कर लिया। ऐसा करने वाला [illegible] विश्व का पहला देश है।

जुलाई 98 में किम जांग [illegible] को संसद में सर्वसम्मति से निर्वाचित किया गया।

अगस्त महीने में दोनों कोरियाई देशों ने एक दूसरे के बीच ट्रेन यात्रा प्रारंभ की और विभाजन के बाद बिछुड़े परिवारों को एक दूसरे से मिलने की अनुमति देने की घोषणा की।

राष्ट्रपति: किम जांग [illegible] **प्रधानमंत्री**: हांग सोंग नाम।

भारत में दूतावास: कोरिया लोकतंत्रीय गणराज्य का दूतावास एच-1, महारानी बाग, नई दिल्ली 110065 टेलिफोन 6829644, 6829645 फैक्स 6466357

Indian Mission in Korea (Democratic People's Republic) Embassy of India, 6, Munsudong District Daedonggang, Pyongyang, DPR Korea. Tel (00) 850 2 3817526, Fax 00-850-2-3817619

कोरिया (दक्षिण)

(Republic of Korea) Taehan Min'guk

राजधानी: सियोल; क्षेत्रफल: 98,859 वर्ग किलोमीटर जनसंख्या: 47.3 मिलियन; भाषा: कोरियाई; साक्षरता 98%, धर्म: बौद्ध धर्म, ईसाई और कन्फ्युशियस का ध मुद्रा: वोन, 1 अमरीकी डालर = 1,190.75 वोन; प्रति व्यक्ति आय: 13,478 डालर।

कोरिया गणराज्य कोरियाई प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग में है। 15 अगस्त 1948 को कोरिया गणराज्य की औपचारिक घोषणा हुई थी

राष्ट्रपति किम यांग साम के पुत्र ह्यून-चुल, अगस्त 1997 में एक प्रमुख घोटाले में लिप्त पाये गये।

अर्थ-व्यवस्था का आधार कृषि है। मुख्य फसल चावल है। गेहूं, जौ और आलू की भी खेती होती है। मछली भोजन और निर्यात का बड़ा स्रोत है। कोयले के बड़े भंडार हैं। अन्य धातुएं हैं - लोहा, टंगस्टन, ग्रेफाइट और फ्लुराइट। हाल के वर्षों में वस्त्र, इलेक्ट्रानिक्स, स्टील और पेट्रो रसायन उद्योगों ने बड़ी तरक्की की है।

प्योंगयांग सम्मेलन से 10 लाख परिवारों के सदस्यों को अपने बिछुड़ों से मिलने का सौभाग्य मिला।

राष्ट्रपति: किम डाय जुंग। प्रधानमंत्री: ली हान डांग।

भारत में दूतावास: कोरिया गणराज्य का दूतावास, 9 [illegible]न्दगुप्त मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन: [illegible]885412; फैक्स: 6884840.

वाणिज्य दूतावास: कोठारी विल्डिंग, 114 एन एच रोड, [illegible]द्रास–600 034, फोन: 472131

Indian Mission in Korea (Republic of): Embassy of [I]ndia, 37-3, Hannam-dong, Yongsan-ku, C.P.O. Box [illegible]466, Seoul. Tel: 00-82-2-798 4257/7984268; Fax: 00-[8]2-2-7969534.

कोलम्बिया

(Republic of Colambia) Republica de Colombia

राजधानी: वोगोटा; **क्षेत्रफल:** 1,138,400 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 40.0 मिलयन; **भाषा:** स्पेनिश; **साक्षरता:** 91%; **धर्म:** ईसाई; **मुद्रा:** पेसो; 1 अमरीकी डालर = 1,939.50 पेसो; **प्रति व्यक्ति आय:** 6,006 डालर।

कोलम्बिया गणराज्य दक्षिणी अमरीका के उत्तर–पश्चिम में स्थित है और पनामा जलडमरु मध्य तक फैला हुआ है। राजधानी वोगोटा सन् 1538 ई. में स्थापित हुई थी। यह समुद्रतल से 8600 फीट की ऊंचाई पर एण्डीज़ पर्वत है।

कोलम्बिया पहले दक्षिण अमरीका स्पेनिश साम्राज्य का एक हिस्सा था। 1819 में साइमन वोलिवर ने स्पेन की सेनाओं को निर्णायक पराजय दी और इस प्रकार स्पेन का प्रभुत्व समाप्त हो गया। विशाल कोलम्बिया महासंघ में न्यु ग्रेनेडा को वेनेजुएला और इक्वेडोर के साथ मिलाने की वेलिवर की योजना अंगोर्टुरा सम्मेलन (1819) के माध्यम से पूरी हुई।

आज कोलंबिया नशीले द्रव्यों की तस्करी पर सरकार द्वारा कड़े कदम उठाये जाने के कारण रक्तजनित हिंसा से ग्रस्त है।

कोलम्बिया की मुख्य उपज काफी है। देश के कुल निर्यात में 61.2 प्रतिशत भाग काफी का होता है। अन्य उत्पादन केले, ताजे फूल, सूती कपड़े, चीनी, चावल, तम्बाकू, मक्का और गेंहूं हैं। कोलम्बिया संसार में पन्ने का प्रमुख उत्पादक है। यहां प्लैटिनम और सोना भी वड़ी मात्रा में मिलता है। लैटिन अमरीका में कोलम्बिया में कोयले के सवसे वड़े भंडार हैं। निकेल और प्राकृतिक गैस के भी काफी वड़े भंडार हैं।

वस्त्र, पेय पदार्थ, खाद्य पदार्थ, रसायन और अलौह खनिज मुख्य उद्योग हैं।

तकासा घाटी में जनवरी 1999 में भूकंप से लगभग 2,000 व्यक्ति मारे गये।

राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री: एंड्रेस पस्त्राना।

भारत में दूतावास: कोलम्बिया का दूतावास, 4/21, शांति निकेतन, नई दिल्ली– 110 021; फोन: 6872771, 6110773; फैक्स: 6112486

Indian Mission in Colombia: Embassy of India, Calle 71 A, No.6-30, Officina 501, Edificio Multifinanaciera, Santa fe de Bogota, Colombia. Tel: 00-57-1-2175143; Fax: 00-571-2127648.

कोस्टारिका

(Republic of Costa Rica) Republica de Costa Rioca

राजधानी: सैन जोज़; **क्षेत्रफल:** 51,100 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 3.6 मिलयन; **भाषा:** स्पेनिश; **साक्षरता:** 95%; **धर्म:** ईसाई; **मुद्रा:** कोलोन; 1 अमरीकी डालर = 290.73 कोलोन; **प्रति व्यक्ति आय:** 5,987 डालर।

कोस्टारिका गणराज्य मध्य अमरीका का एक राज्य है। यह निकारगुआ और पनामा के वीच स्थित है।

लगभग तीन शताब्दियों तक कोस्टारिका स्पेन के अमरीकी उपनिवेश का एक हिस्सा था। 1821 में यह स्वाधीन हुआ।

यह देश कृषि प्रधान है। काफी सवसे महत्वपूर्ण उपज है। देश के निर्यात का आधा काफी होता है। निर्यात की अन्य वस्तुएं है–केले, कोकोआ, पशु और हाल में चीनी भी निर्यात होने लगी है।

उद्योग: औषधियां, फर्नीचर, एल्यूमिनियम, कपड़ा आदि।

राष्ट्रपति: मिगुअल एंजेल रोड्रिगुएज।

भारत में दूतावास: आनेररी कंसुलेट जनरल, डी–388 डिफेन्स कोलानी, नई दिल्ली–110 024, टेलिफोन: 4631549; फैक्स: 3327231

वाणिज्य दूतावास: स्टैंडर्ड विल्डिंग, 346, डा.डी.एन.रोड, मुम्वई–400 001, फोन: 215332

Indian Mission in Costa Rica: Honorary consulate General of India, 4407-1000 San Jose, Costa Rica. Tel: 00-506-2232341; Fax: 00-506-2232231.–

गयाना

(Co-operative Republic of Guyana) Kyrgyz Respublikasy

राजधानी: जार्ज टाउन; **क्षेत्रफल:** 2,14,969 [illegible]; **जनसंख्या:** 7,05,156; **भाषा:** अंग्रेजी, [illegible] उर्दू, क्रियोल; **साक्षरता:** 98%; **धर्म:** ईसाई, हिन्दु और [illegible]; **मुद्रा:** गयाना डालर; 1 अमरीकी डालर = 177.30 [illegible] डालर; **प्रति व्यक्ति आय:** 3,403 डालर।

गयाना (पुराना नाम व्रिटिश गयाना) [illegible] उत्तरी–पूर्वी तट पर है।

गयाना 1814 में व्रिटेन के अधीन [illegible] 1966 को राष्ट्रमंडल के भीतर [illegible]

इस देश की अर्थ–व्यवस्था [illegible] चावल और वाक्साइट प्रमुख [illegible] भी वड़े–वड़े भंडार हैं। [illegible] वन हैं।

खराव स्वास्थ्य के [illegible] हट गईं।

राष्ट्रपति: [illegible]

Indian M[illegible] India, 10, A[illegible] Building, F[illegible] 63996[illegible]

ग्वाटेमाला

(Republic of Guatemala) Republica de Guatemala

राजधानी: ग्वाटेमाला सिटी; क्षेत्रफल: 1,08,889 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 12.7 मिलयन; भाषा: स्पेनिश और रेड इंडियन बोलियां; साक्षरता: 56%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: क्वेडजल; 1 अमरीकी डालर = 7.78 क्वेटज़ल; प्रति व्यक्ति आय: 3,505 डालर ।

ग्वाटेमाला गणराज्य मध्य अमरीका के पांचों राज्यों में तीसरा सबसे बड़ा राज्य है और इसकी जनसंख्या भी इन सभी राज्यों में सबसे अधिक है । 50 प्रतिशत जनसंख्या रेड इंडियन नस्ल की है और 45 प्रतिशत लैटिनो अथवा यूरोपियनों और रेड इंडियन की मिली–जुली नस्ल की है । रेड इंडियन मय सभ्यता के निर्माता थे और स्पेनी विजेताओं ने इस सभ्यता को समाप्त कर दिया था ।

लगभग तीन शताब्दियों तक स्पेनी उपनिवेश रहने के बाद ग्वाटेमाला 1939 में स्वाधीन हुआ । ग्वाटेमाला ने ब्रिटिश हण्डुरास (बेलिज़) पर अपना दावा जताया, जिसके फलस्वरूप 1963 में ब्रिटेन के साथ ग्वाटेमाला के राजनयिक संबंध टूट गए ।

इस देश की मिट्टी बहुत उपजाऊ है । कृषि प्रमुख उद्यम है । काफी सबसे महत्वपूर्ण फसल है । निर्यात की अन्य महत्वपूर्ण वस्तुएं हैं – केले, कपास, गोंद, चीनी, मक्का, तम्बाकू, फल और मांस ।

राष्ट्रपति: अलवोरो आरजू ।

Indian Mission in Guatemala: Honorary Consulate of India, P.O. Box No. 886, 14 Calle 14-84 zona 10, Oakland, Ciudad de Gautemala, Gautemala. Tel: 00-502-3682271; Fax: 00-502-3664049.

गिनी

(Republic of Guinea) Republique de Guinee

राजधानी: कोनक्री; क्षेत्रफल: 245,857 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 7.5 मिलयन; भाषा: फ्रेंच और 8 राष्ट्रीय भाषाएं; साक्षरता: 36%; धर्म: इस्लाम, ईसाई और कबीलाई; मुद्रा: गिनी फ्रैंक; 1 अमरीकी डालर = 1300 गि. फ्रैंक; प्रति व्यक्ति आय: 1,782 डालर ।

गिनी पश्चिमी अफ्रीका में है । यह पहले फ्रांसीसी उपनिवेश था । पांचवें (फ्रांसीसी) गणराज्य के संविधान के अन्तर्गत गिनी ने फ्रांस से अलग होने का निर्णय किया और 2 अक्तूबर 1958 को उसने अपने को स्वाधीन गणराज्य घोषित कर दिया ।

गिनी काफी, शहद, केले, ताड़ गिरी, लोहा और अल्युमीनियम अयस्क का निर्यात करता है। गिनी में संसार का सबसे बड़ा बाक्साइट का भंडार है ।

राष्ट्रपति: ब्रिगेडियर जनरल लैनसाना कोन्ट; प्रधानमंत्री: लैमियन सिडेमे।

भारत में दूतावास: मास्को में स्थित गिनी का दूतावास।

आनेररी कंसुलेट जनरल आफ दी रिपब्लिक आफ गिनी, 5/4 शांति निकेतन, नई दिल्ली–110 021. फोन: 6885312; फैक्स: 341668.

गिनी–बिसाऊ

(Republic of Guinae-Bissau) Republic da Guine-Bissau

राजधानी: बिसाऊ; क्षेत्रफल: 36,125 वर्ग किलोमीटर जनसंख्या: 1.2 मिलयन; भाषा: क्रिओलू, पुर्तगाली और आदिवासी; साक्षरता: 55%; धर्म: इस्लाम, ईसाई और कबीलाई धर्म; मुद्रा: पेसो; 1 अमरीकी डालर = 612.79 पेसो; प्रति व्यक्ति आय: 616 डालर ।

गिनी–बिसाऊ पहले पुर्तगाली गिनी था । इसके उत्तर में सेनेगल और पूर्व व दक्षिण में गिनी है । पश्चिम में इसकी सीमा अटलांटिक सागर से मिली हुई है । इस देश की कुछ भूमि मैदान है और कुछ पठारी है ।

मुख्य उद्यम कृषि है । चावल (समुद्रतटीय क्षेत्र में), नारियल, कसावा, शकरकंद और मक्का प्रमुख खाद्य फसलें हैं । मूंगफली, नारियल और ताड़ तेल प्रमुख वाणिज्यिक फसलें हैं । पशु पालन खूब होता है ।

गिनी बिसाऊ ने 1973 में एक तरफा आज़ादी की घोषणा कर दी । पुर्तगाल ने 1974 में इसे मान्यता प्रदान की ।

राष्ट्रपति: *मालाम बकाई सान्हा* ; प्रधानमंत्री: फ्रांसिस्को फाडुल।

ग्रेनाडा

राजधानी: सेंट जार्जस; क्षेत्रफल: 344 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 98,000; भाषा: अंग्रेजी और फ्रेंच अफ्रीकी पटोइस; साक्षरता: 85%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: पूर्वी कैरीबियन डालर; 1 अमरीकी डालर = 2.70 पू. कै. डालर; प्रति व्यक्ति आय: 5,838 डालर ।

ग्रेनाडा ब्रिटिश विंडवर्ड द्वीप समूह में सबसे दक्षिण में है और इसमें दक्षिणी ग्रेनाडाइन्स (द्वीप) सम्मिलित हैं । इनमें सबसे बड़ा द्वीप कैरियाकू है । इस देश में घने वन हैं और ज्वालामुखी उद्भव के पहाड़ उत्तर से दक्षिण तक फैले हुए हैं । ग्रेनाडा 1974 में स्वाधीन हुआ ।

यहां की आबादी में यूरोपियन, नीग्रो और कैरियबन इंडियन मिले–जुले हैं ।

पर्यटन उद्योग उन्नति कर रहा है, हालांकि अर्थ–व्यवस्था का आधार कृषि है । निर्यात की मुख्य वस्तुएं हैं – कोकोवा, जायफल और केले । अन्य फसलों में नारियल, खट्टे रसीले फल, गन्ना, कपास और मसाले सम्मिलित हैं ।

गवर्नर जनरल: डेनियल विलियम्स प्रधानमंत्री: कीथ मिचेल ।

भारत में दूतावास: आनेररी कंसुलेट आफ ग्रेनाडा, 12, सुंदर नगर, नई दिल्ली–110 003; फोन: 4626724; फैक्स: 332–8307·

गैबन

(Gabonese Republic) Republique Gabonaise

राजधानी: लिवरविले; क्षेत्रफल: 267,667 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 1.2 मिलयन; भाषा: फ्रेंच और बान्टू बोलियां; साक्षरता: 63%; धर्म: ईसाई और कबीलाई

धर्म; मुद्रा: फ्रैंक सी.एफ.ए.; 1 अमरीकी डालर = 612.79 फ्रैंक; प्रति व्यक्ति आय: 6,353 डालर ।

गैबन गणराज्य अफ्रीका के पश्चिमी तट पर स्थित है। पहले यह फ्रेंच इक्वेटोरियल अफ्रीका का एक प्रान्त था । इसे 17 अगस्त, 1960 को स्वाधीनता मिली ।

अभी तक यहां की अर्थ-व्यवस्था मुख्यतः वानिकी पर निर्भर थी । किन्तु अब खनन का प्राधान्य है । इस देश के दक्षिणी भाग में मोआण्डा में मैंगनीज़ के भंडार है, जो संसार के सबसे समृद्ध मैंगनीज़ भंडारों में से एक हैं । कच्चे पेट्रोलियम के उत्पादन में गैबन अफ्रीका का पांचवां सबसे बड़ा देश है । यहां यूरेनियम, सोना और लोहा भी निकलता है ।

राष्ट्रपति: ओमार बोन्गो; प्रधानमंत्री: जीन फ्रांसिसइयोटोमे इगाने।

गैम्बिया

(Republic of The Gambia)

राजधानी: बांजुल; क्षेत्रफल: 11,295 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 1.26,800 मिलियन; भाषा: अंग्रेजी और मन्डिका; साक्षरता: 39%; धर्म: इस्लाम (90%) और ईसाई; मुद्रा: डलासी; 1 अमरीकी डालर = 11.44 डलासी; प्रति व्यक्ति आय: 1,453 डालर।

गैम्बिया अफ्रीका के पश्चिमी तट पर भूमि की एक पतली पट्टी पर बसा हुआ देश है, जो गैम्बिया नदी के दोनों ओर लगभग 30 मील तक फैला हुआ है । यह तीनों ओर से सेनेगल से घिरा हुआ है इस देश की लगभग आधी जनसंख्या मन्डिन्गो कबीले की है ।

पहले गैम्बिया एक ब्रिटिश उपनिवेश और संरक्षित राज्य था । 18 फरवरी 1965 को यह राष्ट्रमंडल के भीतर एक स्वाधीन राज्य बना और अप्रैल 1970 में गणराज्य बना ।

यहां की प्रमुख फसल मूंगफली है । चावल और ताड़ की गिरी भी पैदा होती है । आयात की मुख्य वस्तुएं हैं – वस्त्र, खाद्यान्न और निर्मित वस्तुएं ।

राज्याध्यक्ष: ले. योया जामेह ।

भारत में दूतावास: आनेररी कंसुलट जनरल आफ दी रिपब्लिक आफ गैम्बिया, वेस्टन हाउस, ओखला इंडस्ट्रियल एस्टेट, नई दिल्ली–110 020; फोन: 6838070; फैक्स: 6847080

घाना

(Republic of Ghana)

राजधानी: अकरा; क्षेत्रफल: 2,38,537 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 19.5 मिलियन; भाषा: अंग्रेजी (शासकीय भाषा) और आठ प्रमुख राष्ट्रीय भाषाएं; साक्षरता: 64%; धर्म: ईसाई और इस्लाम; मुद्रा: सेडी; 1 अमरीकी डालर = 2,652 सेडी; प्रति व्यक्ति आय: 1,735 डालर ।

घाना पश्चिमी अफ्रीका में है और इसमें भूतपूर्व ब्रिटिश उपनिवेश गोल्ड कोस्ट और ब्रिटिश शासनाधीन टोगोलैंड सम्मिलित हैं ।

6 मार्च, 1957 को घाना स्वाधीन हुआ और जुलाई, 1960 को यह राष्ट्रमंडल के भीतर एक स्वाधीन गणराज्य बन गया ।

घाना मुख्यतः कृषि प्रधान देश है। यहां सर्वोत्तम किस्म का कोकोआ पैदा होता है, जो इस देश के निर्यात की प्रमुख वस्तु है । अन्य नकदी फसलों में कोलानट, ताड़ उत्पादन केले, काफी, सीनट और रबर सम्मिलित हैं । घाना इमारती लकड़ी सोना, हीरे, मैंगनीज़ और बाक्साइट का भी निर्यात करता है।

राष्ट्रपति: फ्लाइट लेफ्टीनेंट जेरी जान रालिंग्स; उप राष्ट्रपति: कोव अर्कोह।

भारत में दूतावास: घाना का हाई कमीशन, 50 एन सत्यमार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन: 6883315; फैक्स: 6883202.

Indian Mission in Ghana: High Commission of India, No.9, Ridge Road, Roman Ridge, P.O. Box CT-5708, Cantonments, Accra, Ghana. Tel: 00-233-21-775601; Fax: 00-233-21-772176.

चाड

(Republic of Chad) Republique du Tchad

राजधानी: एनजमेना; क्षेत्रफल: 1,284,000 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 8.0 मिलियन; भाषा: फ्रेंच और अरबी; साक्षरता: 48%; धर्म: इस्लाम, ईसाई और कबीलाई धर्म; मुद्रा: फ्रैंक सी.एफ.ए.; 1 अमरीकी डालर = 612.79 फ्रैंक सी.एफ.ए.; प्रति व्यक्ति आय: 856 डालर ।

चाड गणराज्य फ्रेंच इक्वेटोरियल अफ्रीका का एक प्रान्त था। 11 अगस्त 1960 को इसे स्वाधीनता मिली।

इस देश की अर्थ-व्यवस्था कृषि और पशुपालन पर आधारित है । निर्यात की मुख्य मदें कपास और मांस हैं । लोग पशु, भेड़ और ऊंट पालते हैं।

राष्ट्रपति: इद्रीस डेबी; प्रधानमंत्री: नसौर जी. कोयदा।

चिली

(Republic of Chile) Republica de Chile

राजधानी: सैण्टियागो; क्षेत्रफल: 756,626 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 15.2 मिलियन; भाषा: स्पेनिश; साक्षरता: 95%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: पेसो; 1 अमरीकी डालर = 489.17 पेसो; प्रति व्यक्ति आय: 8,787 डालर ।

चिली गणराज्य दक्षिणी अमरीका के पश्चिमी समुद्र तट पर उत्तर में पेरु और बोलिविया के बीच से लेकर दक्षिण में केप हार्न तक फैली भू-पट्टी पर स्थित है ।

आरंभ में चिली स्पेन का उपनिवेश था। 18 सितम्बर, 1810 में स्वाधीन हुआ । चिली दक्षिण अमरीका का प्रथम देश था, जहां 1970 में मार्क्सवादी सरकार चुनाव के माध्यम से बनी। 1973 में सेना ने इस सरकार का तख्ता पलट दिया ।

यद्यपि इस देश में गेहूं और अन्य खाद्यान्नों की खेती होती है किन्तु चिली को अपनी आवश्यकता का एक-तिहाई खाद्यान्न आयात करना पड़ता है । यह संसार में तांबे का सबसे बड़ा उत्पादक और सबसे बड़ा निर्यातक देश है । इस देश में नाइट्रेट, सोने, चांदी, लिथियम, मोलीब्डेनम और लोहे के

व्यापार के लिये खुलापन

चिली व सिंगापुर ऐसे दो देश हैं जिनकी सीमायें व्यापार के लिये सर्वाधिक खुली हैं। । । । व्यापार विशेषज्ञों द्वारा एक सर्वेक्षण से पता चला है कि मार्केट इंडेक्स में यह दोनों देश तेजी से बढ़ रहे हैं। उनका सर्वेक्षण औसत शुल्क, आयात कोटा, निर्यात सबसिडी, निवेश सीमा आदि 16 मापदंडो पर आधारित था।

चिली व सिंगापुर के बाद हांगकांग, एस्टोनिया, और पेरू है। इस सूची में सबसे नीचे सउदी अरबिया, चीन और उजबेकिस्तान हैं।

बड़े भंडार हैं। तेल उत्पादन से देश के तेल की आधी आवश्यकता पूरी होती है। चिली समुद्री उत्पादनों और फलों का निर्यात करता है।

राष्ट्रपति: रिकार्डो लागोस।

भारत में दूतावास: चिली का दूतावास, 146, जोर बाघ, नई दिल्ली–110 003; फोन: 4617123, 4617165; फैक्स: 4617102

Indian Mission in Chile: Embassy of India, 871, Triana, Post Box No. 10433, Santiago, Chile. Tel: 00-56-2-2352005; Fax: 00-56-2-2359607

चीन

(People's Republic of China) Zhonghua Renmin Gonghe Guo

राजधानी: बीजिंग (पीकिंग), **क्षेत्रफल:** 9,561,000 वर्ग किलोमीटर **जनसंख्या:** 1264.5 मिलियन, **भाषा:** चीनी (मण्डारिन), **साक्षरता:** 82% **धर्म:** बौद्ध धर्म और ताओ धर्म; **मुद्रा:** युआन, 1 अमरीकी डालर = 8.28 युआन, *प्रति व्यक्ति आय:* 3105 डालर।

चीन संसार का सबसे अधिक जनसंख्या वाला और क्षेत्रफल की दृष्टि से संसार में तीसरे नम्बर का देश है। इसमें 22 प्रान्त, 5 स्वायत्तशासी क्षेत्र और चार नगर क्षेत्र सम्मिलित हैं।

चीन संसार का एक प्राचीनतम देश है। 1971 में यह गणराज्य बना। 1 अक्टूबर, 1949 को पीकिंग में चीन को एक लोकतंत्रात्मक गणराज्य घोषित किया गया।

26 अक्टूबर, 1971 को चीन को राष्ट्रवादी चीन (ताइवान) के स्थान पर राष्ट्रसंघ की सदस्यता प्रदान की गई।

चीन मुख्यतः कृषि प्रधान देश है। प्रमुख फसलें है – चावल, चाय, तम्बाकू, गन्ना, जूट, सोयाबीन, मूगफली और सन। प्रमुख वन उत्पाद हैं – बीक और टिंग तेल। मुख्य उद्योग हैं – सूती और ऊनी वस्त्र मिलें, लोहा, चमड़ा और बिजली के उपकरण। कोयला, मैंगनीज, लोहा, सोना, तांबा, सीसा, जस्ता, चांदी, टंगस्टन, पारा, एण्टीमनी और टिन प्रमुख खनिज हैं। पेट्रोलियम उद्योग का लगातार विकास हो रहा है।

चीन एक अणुशक्ति सम्पन्न देश है और अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी में काफी आगे है। उसने अप्रैल 1970 में अपना पहला उपग्रह छोड़ा था।

हांगकांग चीन के बीच सीधी रेलवे सेवा (2350 किलोमीटर, 29 घंटे) मई 97 में प्रारंभ की गयी।

जून 1998 में यहां आयी भीषण बाढ़ से 2500 व्यक्तियों की मृत्यु हुई। जुलाई 99 में चीन ने फालुन गांग क्षेत्र में क्वासी धर्म पर प्रतिबंध लगा दिया। निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन देने के लिये संविधान में संशोधन किया गया।

तिब्बत: पांच स्वशासी क्षेत्रों में से एक, ऊंचे पहाड़ो पर विरल आबादी वाला है। इसकी राजधानी ल्हासा है और जनसंख्या 2.44 मिलियन है, जिसमें 500,000 चीनी मूल के हैं। चीन ने यहां पर 1953 में थियोक्रेटिक बुद्ध शासन को हटाकर साम्यवादी सरकार की स्थापना की। 1959 में यहां असंतोष फैला जिसे चीनी सरकार ने कुचल दिया। दलाई लामा और एक लाख तिब्बती भारत में शरण लिये हुए हैं।

राष्ट्रपति: जियांग जेमिन; **उप राष्ट्रपति:** हु जिंटाओ; **प्रधानमंत्री:** झु रोंगजी; **नेशनल पीपुल्स कांग्रेस के चेयरमैन:** लि पेंग।

भारत में दूतावास: चीन का दूतावास, 50–डी शान्ति पथ, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन: 6871585, 6871586; फैक्स: 6885486.

Indian Mission in China: *Embassy of India, 1, Ri Tan* Dong Lu, Beijing 100600, China. Tel: 00-86-10-65321908; Fax: 00-86-10-65324684.

हांगकांग

हांगकांग ब्रिटेन की कालोनी था। इस पर ब्रिटेन ने 156 वर्ष तक शासन किया। इसे एक समझौते के अंतर्गत चीन को सौंप दिया गया और 1 जुलाई 97 को यह चीन का विशेष प्रशासनिक क्षेत्र बन गया।

राजधानी: विक्टोरिया; **क्षेत्रफल:** 1071 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या** 7.0 मिलियन; **भाषा:** अंग्रेजी और कैण्टोनी; **साक्षरता:** 75%; **धर्म:** कन्फ्युशियन धर्म और बौद्ध धर्म; **मुद्रा:** हांगकांग डालर; 1 अमरीकी डालर = 7.78 हांगकांग डालर; **प्रति व्यक्ति आय:** 20,763 डालर।

हांगकांग चीन के दक्षिणी–पूर्वी तट पर कैण्टन नदी के मुहाने पर स्थित है। इसमें हांगकांग द्वीप, काउलून प्रायद्वीप, जिन्हें नया प्रदेश कहा जाता है और 230 से भी अधिक छोटे–छोटे द्वीप सम्मिलित हैं। हांगकांग 1943 से एक ब्रिटिश उपनिवेश रहा है। 1988 में ब्रिटेन ने नया प्रदेश का इलाका 99 साल के पट्टे पर लिया था। 19 दिसम्बर, 1984 को हुए एक करार के अधीन 1 जुलाई, 1997 से हांगकांग पर चीन की प्रभुसत्ता स्थापित हो गयी।

यहां की लगभग सारी आबादी चीनियों की है, अन्य राष्ट्रीयताओं के लोग इक्का–दुक्का है।

हांगकांग संसार के ऐसे बड़े बंदरगाहों में से एक है, जहां माल एक जहाज़ से उतार कर दूसरे जहाज़ पर लादा जाता है। यहां हल्के उद्योगों की प्रधानता है, जैसे सूती कपड़ा, प्लास्टिक, इलेक्ट्रानिक, फोटोग्राफी दूरबीक्षक शीशे बनाने के उपकरण आदि। 6 जुलाई 98 को चेक लेप कोक में हांगकांग का नया हवाई अड्डा यातायात के लिये खोला गया। इसके र्निाण के लिये समुद्र में भराव करके भूमि तैयार की गई।

चीफ एक्जीक्यूटिव: टुंग ची–वा।

Indian Mission in Hong Kong: Consulate General of India, 16-D United Centre, 95, Queensway, Hong Kong. Tel: 00-852-25284028; Fax: 00-852-28664124.

चेक गणराज्य

(Ceska Republika)

राजधानी: प्राग; क्षेत्रफल: 78,864 वर्ग किलो- मीटर; जनसंख्या: 10.3 मिलयन ; भाषा: चेक; धर्म: ईसाई; साक्षरता: 99%;मुद्रा: चेक क्राउन; 1 अमरीकी डलर = 34.29 क्राउन;प्रति व्यक्ति आय: 12,362 डलर ।

चेक एवं स्लोवाक संघीय गणराज्य (चेकोस्लोवाकिया) के विघटन के साथ 1 जनवरी 1993 को चेक गणराज्य और स्लोवाकिया स्वतंत्र हुए ।

मध्य युरोप का गणराज्य चेकोस्लोवाकिया में 64 % चेक और 31% स्लोवाक थे एक जनवरी 1969 में चेकोस्लोवाक समाजवादी गणराज्य की स्थापना हुई जिसमें दोनों देशों को समान अधिकार प्राप्त थे । 1990 में देश ने अपना नाम वदल लिया । नया नाम चेक एण्ड स्लोवाक फेडरेशन रिपब्लिक रखा गया और पूर्व साम्यवाद की विदा के प्रतीक के रूप में शब्द समाजवाद हटा दिया गया। साम्यवाद के वाद सुधारों को लेकर दोनों क्षेत्रों में संबंध विगड़ने लगे। जून 92 में 74 वर्षीय पुराना संघ चेक एवं स्लोवाक अलग होने पर सहमत हो गये ।

चेक गणराज्य की सीमाएं जर्मनी, पौलेंड, स्लोवाकिया और आस्ट्रिया से मिली हैं ।

कृषि: शकरकंद, गेंहू, आलू, जौ, मक्का और राई ।

उद्योग: पिग आयरन, कूड स्टील, रोल्ड स्टील उत्पाद, सीमेंट, कागज़, सल्फ्यूरिक एसिड, सिंथेटिक फाइवर्स, चीनी, वियर, आभूषण और कार ।

खनिज: कोयला, केओलिन, यूरेनियम

मुद्रा संकट के कारण पिछले डेढ़ वर्षों से सकल घरेलू उत्पाद रुका हुआ है। जून 98 में वाक्लेव हावेल एक वार फिर पांच वर्षों के लिये राष्ट्रपति निर्वाचित हुए।।

राष्ट्रपति: वाक्लेव हावेल; प्रधानमंत्री: मिलोस जिमान

भारत में दूतावास: चेक गणराज्य का दूतावास, 50-एम, नीति मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110 021, फोन: 6110205; फैक्स: 6886221.

वाणिज्य दुतावास: मुंबई: कोंपिया, 5, देशमुख मार्ग मुंबई. फोन: 492829.

कलकत्ता: 24 वी, पार्क स्टीट, कलकत्ता-700 0[illegible] फोन: 2916683; फैक्स: 2473835.

Indian Mission in Czech Republic: Embassy of India, Valdstejnska 6, Malastrana, 118 00 Prague, Czech Republic. Tel: 00-420-2-57320255; Fax: 00-420-2-57316756.

जर्मनी

(Federal Republic of Germany) Bundesrepublik Deutschland

राजधानी: वर्लिन (योन की [illegible]) क्षेत्रफल: 357,020 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: [illegible] मिलियन; भाषा: जर्मन; साक्षरता: 100%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: ड्यूश मार्क; 1 अमरीकी डालर = 1.83 ड्यूश मार्क; प्रति व्यक्ति आय: 22,169 डालर।

फेडरल रिपब्लिक आफ जर्मनी (पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के विलय के बाद संयुक्त जर्मनी) की उत्तर दिशा में उत्तर सागर और बाल्टिक है और दक्षिण में [illegible], कांसटैंस और नदी दक्षिण-पश्चिम सीमा तक है । प्रमुख नदियां राइन, डानुवे की एल्वे, [illegible] और [illegible] हैं। एल्प्स में स्थित सबसे ऊंचा पर्वत [illegible] है जिसकी ऊंचाई 2963 मीटर है ।

कृषि 48 प्रतिशत भूभाग में होती है 29 प्रतिशत भूभाग वनाच्छादित है । लिग्नाइट, कोयला, लोहा, तांबा और [illegible] आदि अयस्क वहुतायत में है ।

1871 से अनेक प्रांतो का यह संयुक्त देश था । द्वितीय विश्व युद्ध से 1990 तक दो राष्ट्रों संघीय गणराज्य जर्मनी (प. जर्मनी) और जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य में (पूर्वी जर्मनी) विभाजित रहा दोनों राष्ट्रों का एकीकरण 3 अक्टूवर 1990 को हुआ और 1932 के वाद पहला सामान्य चुनाव संयुक्त जर्मनी में 2 दिसंबर 1990 को संपन्न हुआ।

योन रोमन कालीन प्राचीनतम शहर है । इसकी जनसंख्या 2,90,000 है वर्लिन (क्षेत्रफल 883 वर्ग किमी, जनसंख्या 3,410,000) प्राचीन प्रशिया और हिटलर की राजधानी था, संयुक्त जर्मनी को फिर से राजधानी बनायी गयी । हैम्वर्ग (1.6 लाख) म्युनिख (1.1 लाख) कोलोने (9 लाख) ऐसेन (6 लाख) [illegible] (5 लाख) फ्रैंकफर्ट (6 लाख) उस्सेल डार्फ (5 लाख) [illegible] (5 लाख) लीपजिंग (5 लाख) व्रेमेन (5 लाख) [illegible] (5 लाख) ड्रेस्डेन (5 लाख) अन्य वड़े शहर है ।

संघीय गणराज्य जर्मनी लोकतांत्रिक, [illegible] और सघीय सविधान का देश है। इसमें 16 [illegible] हैं - बडेन-उटेम्वर्ग, वावेरिया, [illegible], [illegible], [illegible] सेक्सोनी नार्थ राइन वेस्टफेलिया, [illegible]

सारलैंड क्लेसविग–होल्सटीन और लैंड आफ वर्लिन और पूर्व के पांच राज्य जो 1990 में विलय हुए ब्रांडेन्बर्ग, मैक्लेनबर्ग, सैक्सोनी, सैक्सोनी अन्हाल्ट और थूरिंग्या।

बंडेस्टाग सर्वोच्च व्यस्थापिका अंग है। पूर्वी जर्मनी के 144 सदस्यों को मिलाकर 1990 में कुल सदस्यता 663 हो गयी। सभा के सदस्य चार वर्ष के लिये प्रत्यक्ष निर्वाचन से चुने जाते हैं। संघीय गणराज्य जर्मनी 23 मई को संविधान दिवस और 3 अक्टूबर को एकीकरण दिवस मनाता है।

मुख्य उद्योग: ऊर्जा, रसायन, मेटलर्जी, यंत्रिक एवं विद्युत इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रोनिक्स आदि।

संघीय राष्ट्रपति का चुनाव संघीय परम्परा के अनुसार 5 वर्षो के लिये होगा।

जर्मनी ने 32 वर्षों से चल रहे समस्त परमाणु संयत्रों को बंद करने का निर्णय लिया।

राष्ट्रपति: जोहान्नस राउ; चांसलर: गिलहार्ड शोडर।

भारत में दूतावास: जर्मन संघीय गणराज्य का दूतावास, 6, ब्लोक 50–जी, शांति पथ, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन: 6871831, 6871891; फैक्स: 6873117, 6877623.

वाणिज्य दूतावास: मुंबई होयेस्ट हाउस, 10 वी मंजिल, नरीमन पाइंट फोन: 234422

कलकत्ता हेरिटग्ज पार्क रोड कलकत्ता–700 027; फोन: 459141.

चेन्नई 22 सी.आई.सी. रोड पोस्ट बाक्स 6801, चेन्नई–600 105; फोन: 711141.

Indian Mission in Germany: Embassy of India, Adenauerallee 262-264, 53113 Bonn, Germany Tel: 00-49-228-54050; Fax: 00-49-228-5405154

जमैका

राजधानी किंगस्टन, क्षेत्रफल: 11,425 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 2.6 मिलियन, भाषा: अंग्रेजी एवं जमैकन शिशेल; साक्षरता 85%; धर्म: ईसाई, मुद्रा: जमैकी डालर 1 अमरीकी डालर = 38.18 जमैकी डालर; प्रति व्यक्ति आय: 3,389 डालर।

जमैका वेस्ट इंडीज के ग्रेटर एण्टीलीज समूह का एक द्वीप है, जो केरीबियन–सागर में स्थित है। यह क्यूबा से 144 किलोमीटर दक्षिण में है। समुद्रतट पर जलवायु उष्णकटिबंधीय है जबकि पहाड़ी क्षेत्र में समशीतोष्ण है।

1494 में कोलम्बस जमैका पहुंचा था। 1655 तक स्पेन ने इस पर शासन किया। उसके बाद इस पर ब्रिटेन का अधिकार हो गया। 1962 में जमैका पूर्ण स्वाधीन देश और कामनवेल्थ का सदस्य बन गया।

कृषि, खनन और पर्यटन अर्थ–व्यवस्था की रीढ़ की हड्डी हैं। मुख्य फसल गन्ना है। शीरा और रम महत्वपूर्ण उप उत्पादन हैं। केलों, रसीले फलों और नारियल का भी उत्पादन होता है। जमैका संसार में बाक्साइट और अल्युमीनियम पैदा करने वाला दूसरे नम्बर का सबसे बड़ा देश है। अन्य उद्योग हैं – सीमेंट, तम्बाकू और उपभोग की वस्तुएं।

राज्याध्यक्ष: महारानी एलिजाबेथ द्वितीय; गवर्नर जनरल: हावर्ड फेलिक्स कूके; प्रधानमंत्री: पार्सिकल पैर्टसन।

भारत में दूतावास: ओटावा स्थित जमैका का दूतावास।

Indian Mission in Jamaica: High Commission of India, 4, Retreat Avenue, P.O. Box No. 446, Kingston-6, Jamaica. Tel: 00-1-876-9273114; Fax: 00-1-876-9782801.

जापान

(Nippon)

राजधानी: टोक्यो; क्षेत्रफल: 377,765 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 126.9 मिलियन; भाषा: जापानी; साक्षरता: 100%, धर्म: शिंटो और बौद्ध धर्म; मुद्रा: येन; 1 अमरीकी डालर= 109.86 येन; प्रति व्यक्ति आय: 23,257 डालर।

जापान में चार मुख्य द्वीप होन्शू, हुकैदो, क्युशु और शिकोकु और अन्य बहुत से छोटे द्वीप सम्मिलित हैं। जिनमें ओकिनावा भी है।

जापान को जापान सागर सोवियत रूस और कोरिया से पृथक करता है और पूर्वी चीन सागर चीन से पृथक करता है। जापान का 16,654 मील का समुद्रतट गहरा और खूब कटा–फटा है। महत्वपूर्ण बन्दरगाह है – याकोहामा, कोबे, नगोया और ओसाका।

कहा जाता है कि जापानी साम्राज्य की स्थापना 660 ई.पू. में सम्राट जिम्मू ने की थी। लेकिन 1868 तक कोई केन्द्रीय सत्ता नहीं थी। इसी समय सम्राट मीजी ने सारे जापान को एक करके अपने अधीन किया। पहले अन्य देशों के साथ जापान के व्यापारिक संबंध बहुत कम थे। 1854 में अमरीका के कोमोडोर पेरी ने जापानियों को राजी किया और तभी जापान ने अमरीका के साथ व्यापारिक सन्धि की। जापान का पहला संविधान 1889 में बना। 1904–05 में रूस–जापान युद्ध में जापान की विजय होने से यूरोप के देशों में जापान की प्रतिष्ठा बढ़ गई।

जापान के लोगों का मुख्य भोजन चावल है। जापान की कृषि योग्य भूमि में से आधी भूमि में चावल की खेती होती है। अन्य फसलों में गेहूं, जौ, आलू और तम्बाकू हैं। जापान में चूना–पत्थर और गंधक मिलता है। अन्य खनिजों में जापान निर्धन है और जापान के उद्योग आयात किए गए कच्चे माल पर निर्भर है। जापान उद्योगों में संसार के सर्वाधिक उन्नत देशों में से एक है। प्रमुख उद्योग हैं– मोटरगाड़िया, लोहा और इस्पात, रसायन, वस्त्र (सूती, ऊनी, रेशमी और कृत्रिम) मछली पकड़ना, मिट्टी के बर्तन, बारीक नाप–तोल की मशीनें, उर्वरक, मशीनें और पोत–निर्माण। जापान में मछली पकड़ने का उद्योग बहुत बड़े पैमाने पर है

अप्रैल 1997 में जापान के मंत्रीमंडल ने अमरीका को अखिनोवा में अपना सैन्य अड्डा चलाने की सहमति दे दी।

नागानो शहर में शीत ओलंपिक का आयोजन 98 में हुआ।

जापान इस समय समस्याओं से ग्रस्त है। तीन वर्षों में येन 40% दुलक गया, और इससे पूरे क्षेत्र को धक्का लगा।

फरवरी 98 में बेरोजगारी 3.9% के रिकार्ड स्तर तक पंहुच गयी।

9 अगस्त 99 को जापान ने उगते सूर्य के ध्वज को आधिकारिक रूप दिया और इस प्रकार युद्ध काल के विवाद की समाप्ति हो गई।

राज्याध्यक्षः सम्राट अकिहितो; प्रधानमंत्रीः योशिरो मोरी।

भारत में दूतावासः जापान का दूतावास, 50 जी, शांति पथ, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन 6876581; फैक्सः 6885587

सांस्कृतिक एवं सूचना केंद्र–32 फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली–110001, फोनः 3329803; फैक्सः 3327803

वाणिज्य दूतावासः मुंबईः बाबासाहेब दहानुकर मार्ग कुम्बाला हिल, मुंबई–400 026; फोनः 4933857

कलकत्ताः 12, पिटोरिया स्ट्रीट, कलकत्ता–700 071; फोनः 222241

चेन्नईः 60 स्पर टैंक रोड, चेतपुर, चेन्नई–600 031; फोनः 865606

Indian Mission in Japan: Embassy of India, 2-2-11, Kudan-Minami, Chiyoda-ku, Tokyo-102-0074, Japan Tel: 00-81-3-32622391; Fax: 00-81-3-32344866.

ज़ाम्बिया

(Republic of Zambia)

राजधानीः लुसाका; क्षेत्रफलः 752,620 वर्ग किलोमीटर जनसंख्याः 9.6 मिलियन; भाषाः बन्तू और अंग्रेजी; साक्षरता 78%; धर्मः ईसाई, इस्लाम और अनिमिज्म; मुद्राः क्वाचा। अमरीकी डालर = 2,378 क्वाचा; प्रति व्यक्ति आय. 719 डालर।

दक्षिणी अफ्रीका के भूमिबद्ध गणतंत्र ज़ाम्बिया का यह नाम ज़ाम्बेज़ी नदी के नाम पर पड़ा जो यहां की सबसे बड़ी नदियों में है। मूल रूप से इसे उत्तरी रोडेशिया कहा जाता था। ज़ाम्बेज़ी नदी इसे जिम्बाब्वे से अलग करती है। करीबा बांध, जो विश्व के सबसे बड़े मानव–निर्मित बांधों में से एक गिना जाता है, जाम्बेजी नदी पर ज़ाम्बिया और जिम्बाब्वे के मध्य सीमा–रेखा पर बना है।

ज़ाम्बिया 24 अक्तूबर, 1964 को स्वतंत्र हुआ और यह राष्ट्रमंडल के भीतर गणतंत्र है

मई 1996 में यहां की संसद ने एक बिल पारित कर पूर्व राष्ट्रपति केनेथ कौंडा को अपना कार्यालय दुबारा चलाने पर प्रतिबंध लगा दिया।

यहां के मुख्य कृषि उत्पाद मक्का, तम्बाकू, मिलिट, कसाव, मूंगफली, कपास और चीनी है।

खनिजों की दृष्टि से देश समृद्ध है। यहां पाए जाने वाले खनिजों में तांबा, जस्ता, कोबाल्ट, सीसा, यूरेनियम और मैंगनीज़ सम्मिलित है। यद्यपि तांबा खनन का ज़ाम्बिया की अर्थ–व्यवस्था पर प्रभुत्व है और यह देश की 80 प्रतिशत विदेशी मुद्रा अर्जित करता है, लेकिन विश्व मंडी में तांबे की कीमतों में भारी गिरावट के कारण देश ने कृषि उत्पादन की तरफ बदलाव किया है।

90 के दशक में यहां अब तक लगभग 5 लाख बच्चे एड्स के कारण अनाथ हो चुके हैं।

राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्रीः फ्रेड्रिक चिलुबा; उपराष्ट्रपतिः क्रिस्टोन टेम्बो।

भारत में दूतावासः हाई कमीशन आफ ज़ाम्बिया, [illegible] 79, आनंद निकेतन, नई दिल्ली–110 021; [illegible] 4101289; फैक्सः 4101520

Indian Mission in Zambia: High Commission of India, 1, Pandit Nehru Road, P.O. Box [illegible] Zambia. Tel: 00-260-1-253159; Fax: [illegible]

डेबिट कार्ड

रायटर के अनुसार जापान राष्ट्र स्तर पर डेबिट कार्ड जारी करने जा रहा है क्योंकि इससे न केवल ई-कामर्स में लाभ होगा [illegible] फायदे भी होते हैं।

जापान के इस कार्ड से [illegible] खरीदारी को [illegible] गया है [illegible] रेस्तरां और अन्य व्यावसायिक [illegible] सकेगा। डेबिट कार्ड अमरीका और यूरोप में पहले से ही प्रचलित है, जिसे 1000 से अधिक [illegible] संस्थाओं ने जारी किया हुआ है।

जापान में अमरीका की तुलना में [illegible] खरीदारी एक [illegible] है। यहां के [illegible] का मानना है कि ऐसा हो जाने के बाद [illegible] और [illegible] लोगों में खरीदारी की इच्छा में बढ़ोतरी होगी।

वर्ष 1999 में जब से डेबिट कार्ड को जारी किया गया था तो इसे विशेष सफलता नहीं मिली थी, इस समय इसको स्वीकार करने वालों की संख्या में प्रमुख निप्पन [illegible], [illegible] स्टोर्स, [illegible] इनकॉर्पोरेशन और बिक कैमरा कंपनी ही थे।

विगत वर्ष में लगभग 11.11 अरब येन (103.4 मिलियन डालर) की निकासी डेबिट कार्ड के द्वारा की गई थी। इसमें बिक कैमरा की अकेली हिस्सेदारी 60 प्रतिशत थी। बावजूद इसके डेबिट कार्ड द्वारा खरीददारी का प्रतिशत एक ही था। जापान की डेबिट कार्ड प्रोमोशन एसोसिएशन इसके विस्तार की भरपूर कोशिश कर रहा है। लेकिन जापान के शीर्ष बैंक जैसे बैंक आफ टोक्यो–मित्सुबिशी और यहां की सबसे बड़ी खुदरा कंपनी योकाडो आदि शायद सुरक्षा कारणों से अपने को इससे अलग रखे हुए हैं।

होकर स्वाधीन राष्ट्र बना। ब्लैक सी, टर्की, अर्मीनया, और अज़रबैजान से इसकी सीमाएं मिलती हैं। यहां का वातावरण स्वच्छ एवं गर्म है और यह प्राकृतिक संपदा के लिये विख्यात है। यहां पर विश्व की सबसे बड़ी मैंग्नीज खादान हैं।

सोवियत संघ से अलग होने वाला देश जार्जिया संयुक्त राष्ट्र का 179वां सदस्य वर्ष 1992 में बना। 1994 में इसने कामनवेल्थ आफ इंडिपेंडेंट स्टेट्स की सदस्यता 1994 में ली। फरवरी 94 में रूस के साथ आर्थिक व सैन्य सहयोग का समझौता किया। 1993 में अलगाववादी गुट अबकाजियन के साथ संघर्ष तेज हो गया। मई 94 में युद्ध विराम की घोषणा की गई। शेवर्नाडजे 1995 व 1998 में जानलेवा हमले से बाल-बाल बचे।

कृषि: चाय, साइट्रस फल, अंगूर, खाद्यान्न, सब्जी, आलू, रेशम, तम्बाकू, यांस, युकिलप्टस।

प्राकृतिक स्रोत: मैंगनीज, कोयला, लकड़ी, तेल, संगमरमर, लोहा।

उद्योग: फुड प्रोसेसिंग, चाय, शराब, कपड़ा, केमिकल फाइबर, कागज़, मेटलर्जी।

जार्जिया संयुक्त राष्ट्र का 179 वां सदस्य जुलाई 92 में बना। 1994 में जार्जिया ने कामनवेल्थ की सदस्यता ली।

राष्ट्रपति: एडवर्ड शेवर्नाडजे; प्रधानमंत्री: ओट्टार पैट्रीट्सिया।

जिबूती

(Republic of Djibouti) Jumhouriyya Dijbouti

राजधानी: जिबूती; क्षेत्रफल: 21,783 वर्ग किलोमीटर, जनसंख्या, 447,439; भाषा: फ्रेंच,अरबी, अफ्फार, ईस्सा; साक्षरता: 46%; धर्म: इस्लाम; मुद्रा: जिबूती फ्रैंक; 1 अमरीकी डालर = 177.72 जि. फ्रैंक; प्रति व्यक्ति आय: 1,266 डालर।

पहले इस देश का नाम फ्रेंच सोमाली लैंड था और उसके बाद अफार्स और इसास फ्रेंच क्षेत्र था। 22 जून, 1977 को इसे स्वाधीनता मिली और उस समय इसने अपना नाम जिबूती रखा। यह इथियोपिया और सोमालिया के बीच में लाल सागर और अदन की खाड़ी के मोड़ पर स्थित है और इसलिए सामरिक दृष्टि से इसका बहुत महत्व है।

भूमि उपजाऊ नहीं है क्योंकि अधिकांशतया ज्वालामुखी रेगिस्तान है। स्थानीय आबादी अधिकतर मुसलमानों की हैं। खेती केवल उन सीमित क्षेत्रों में संभव है, जहां सिंचाई की सुविधाएं हैं। राज्य की मुख्य सम्पत्ति भेड़ें, बकरियां और ऊंट हैं। प्रमुख उत्पादन नमक है। असोल और इसास झीलों में नमक के विशाल भंडार हैं। लगभग सारा व्यापार राजधानी जिबूती में केन्द्रित है।

राष्ट्रपति: इस्माइल ओमर गुएलेह; प्रधानमंत्री: बरकत गाउराद हमादोउ।

जिम्बाबवे

(Repulic of Zimbabwe)

राजधानी: हरारे; क्षेत्रफल: 390,272 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 11.3 मिलयन; भाषा: अंग्रेजी, शोना और नडेबैला; साक्षरता: 85%; धर्म: कबायली और ईसाई; मुद्रा: डालर; 1 अमरीकी डालर = 38.30 जिम्बाब्वे डालर; प्रति व्यक्ति आय: 2,669 डालर।

जिम्बाबवे, जिसे पहले दक्षिणी रोडेशिया कहा जाता था, दक्षिण मध्य अफ्रीका में स्थित है। जिम्बाब्वे ने सत्तारूढ़ अल्पसंख्यक गोरी सरकार के विरुद्ध कड़े संघर्ष के बाद स्वतंत्रता प्राप्त की। मार्च 1996 के चुनावों में राबर्ट मुगाबे दूसरी बार राष्ट्रपति निर्वाचित हुए।

जिम्बाब्वे खनिजों से भरपूर हैं। विशेष रूप से यहां तांबा, निकल, सोना, एस्बेस्टस, क्रोम और कोयला मिलता है। यहां की वांकी कोयला खान विश्व की सबसे बड़ी कोयला खान है। उद्योगों में खाद्य परिशोधन, धातुएं कपड़ा और इंजीनियरिंग शामिल हैं। मक्का, मूंगफली, कपास और तम्बाकू यहां की मुख्य फसलें है जिनमें तम्बाकू सबसे महत्वपूर्ण हैं।

नये संविधान प्रारूप 2000 को जनमत ने अस्वीकार कर दिया।

जून 2000 चुनावों में मुगाबे की पार्टी बहुत कम अंतर से विजयी होकर सत्ता में आई।

राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री: राबर्ट जी. मुगाबे।

भारत में दूतावास: हाई कमीशन फार दि रिपब्लिक आफ जिम्बाब्वे, बी-8, आनंद निकेतन, नई दिल्ली-110 021; फोन: 6885060; फैक्स: 6886073

Indian Mission in Zimbabwe: High Commission of India, No 12, Natal Road, Belgravia, Post Box 4620, Harare, Zimbabwe. Tel: 00-263-4-795955; Fax: 00-263-4-722324

जोर्डन

(Hashemite Kingdom of Jordan) al Mamlaka al Urduniya al Hashmeiyah

राजधानी: अम्मान; क्षेत्रफल: 89287 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 5.1 मिलयन; भाषा: अरबी, अंग्रेजी, साक्षरता: 87%; धर्म: इस्लाम; मुद्रा: जोर्डन दिनार; 1 अमरीकी डालर = 0.71 जो. दि.; प्रति व्यक्ति आय. 3,347 डालर।

जोर्डन दक्षिणी-पश्चिमी एशिया में है। यहां संवैधानिक राजतंत्र था। पहले इसका नाम ट्रांसजोर्डन था। 1949 में इसका नाम बदल कर जोर्डन का हाशिमी राज्य रखा गया। आबादी में प्रधानता अरबों की है, जिसमें से अधिकांश मुसलमान हैं। 1946 में जोर्डन स्वाधीन हुआ।

जोर्डन मोटे तौर पर रेगिस्तानी है किन्तु इसका पश्चिमी भाग उर्वर है, जहां रसीले फल, गेहूं, जौ, अलसी और तरबूज़ पैदा होते हैं। इस देश से निर्यात होने वाली सबसे महत्वपूर्ण वस्तु फास्फेट है, किन्तु विदेशी मुद्रा की सबसे अधिक राशि पर्यटन से प्राप्त होती है।

25 जुलाई 1994 को वाशिंग्टन में इजराइल व जोर्डन के बीच समझौता हुआ और संयुक्त घोषणापत्र जारी करके 46 वर्ष की कटुता को दूर कर दिया।

47 वर्षों तक राज कर चुके किंग हुसैन का फरवरी 99

राष्ट्रपति : इमोमाली राहमोनोव; प्रधानमंत्री : याक्ये असिमोव।

भारत में दूतावास: आनेररी कांसुलेट, दी सूर्या होटल, फ्रेंड्स कालोनी, नई दिल्ली–110 065; फोन: 6835070. फैक्स: 6837758.

Indian Mission in Tajikistan: Embassy of India, 45, Bukhoro Street (Formerly Sveridenko Street), Dushanbe, Tajikistan Tel: 00-992-372-217172; Fax: 00-992-372-510045

ट्यूनीशिया
(Republic of Tunisia)

राजधानी: ट्यूनिस; क्षेत्रफल: 164,150 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 9.6 मिलयन; भाषा: अरबी (सरकारी) और फ्रेंच; साक्षरता: 67%; धर्म: इस्लाम; मुद्रा: दीनार; 1 अमरीकी डालर = 1.19 दीनार; प्रति व्यक्ति आय: 5,404 डालर।

यह गणतंत्र उत्तरी अफ्रीका में भूमध्यसागर तट पर बसा है। पहले यह फ्रांस का संरक्षित क्षेत्र था। इसे 1955 में स्वतन्त्रता मिली और 1957 में यह गणतंत्र बन गया।

ट्यूनीशिया एक कृषि प्रधान देश है। यहां की पैदावार गेहूं, जौ, जई, खजूर, जैतून, खूबानी, बादाम, अंजीर, आड़ू, सब्जियां और अल्फा घास है। मुख्य खनिज फास्फेट, लोहा, सीसा और जस्ता हैं। मुख्य निर्यात वस्तुएं जैतून का तेल, शराब, फास्फेट और अनाज हैं।

राष्ट्रपति. जन. जाइन अल अबीन बेन अली; प्रधानमंत्री: हमीद करोवी।

भारत में दूतावास: एम्बेसी आफ ट्यूनीशिया, 23, पश्चिमी मार्ग, वसन्त विहार, नई दिल्ली–110 057; फोन: 6145346; फैक्स: 6145301

Indian Mission in Tunisia: Embassy of India, 4, Place Didon, Notre Dame, Tunis 1002. Tel: 00-216-787819, Fax: 00-216-1-783394.

ट्रिनीडाड एण्ड टोबैगो
(Republic of Trinidad and Tobago)

राजधानी: पोर्ट आफ स्पेन; क्षेत्रफल: 5128 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 1.3 मिलयन; भाषा: अंग्रेजी; साक्षरता: 98%; धर्म. ईसाई. हिंदु एवं इस्लाम; मुद्रा: ट्रि. और टोब डालर; 1 अमरीकी डालर = 6.28 ट्रि. और टोब डालर; प्रति व्यक्ति आय: 7,485 डालर।

ट्रिनीडाड वेस्ट इंडियन द्वीप समूह के सुदूर दक्षिण में (विंडवार्ड द्वीप समूह के दक्षिण में) स्थित है जो इन द्वीपों में दूसरा सबसे बड़ा द्वीप है। यह दक्षिणी अमरीका के उत्तरी तट के बहुत निकट है। टोबैगो को अक्सर राबिन्सन क्रूसो द्वीप कहते हैं क्योंकि यह विश्वास किया जाता है कि इसी द्वीप पर क्रूसो अकेला छूट गया था। यह ट्रिनीडाड से केवल 20 मील दूर है। टोबैगो अपने पक्षी और जीव–जंतुओं के समृद्ध भंडार के लिए प्रसिद्ध है।

ट्रिनीडाड और टोबैगो पहले ब्रिटिश उपनिवेश था जिसे 1962 में स्वतंत्रता मिली और 1976 में यह गणतंत्र हो गया।

यहां के उद्योगों में तेल शोधन, निर्मित वस्तुएं और पर्यटन है। मुख्य फसलें गन्ना, खट्टे फल और कोको हैं।

राष्ट्रपति: आर्थर एन.आर. राबिंसन; प्रधानमंत्री: वासुदेव पाण्डे।

भारत में दूतावास: हाई कमीशन आफ ट्रिनीडाड एण्ड टोबैगो, 131, जोरबाग, नई दिल्ली–110 003; फोन: 4618186. फैक्स: 4624581

Indian Mission in Trinidad and Tobago: High Commission of India, No.6, Victoria Avenue, Post Box No. 530, Port of Spain, Trinidad and Tobago, West Indies. Tel: 00-1-868-6277480; Fax: 00-1-868-6276985.

टुवालो

राजधानी: फुनाफुटी; क्षेत्रफल: 26 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 10,588; भाषा: टुवालुअन, अंग्रेजी; साक्षरता: 95%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: आस्ट्रेलियन डालर; 1 अमरीकी डालर = 1.55 आ. डालर; प्रति व्यक्ति आय: 800 डालर।

पहले एलिस द्वीप समूह कहा जानेवाला टुवालो पश्चिमी प्रशान्त महासागर में छितरे हुए नौ मूंगा टापुओं से बना है जो फिजी के उत्तर में तथा सोलोमन आइसलैण्ड के पूर्व में स्थित हैं। यह टुवालो के नाम से 1975 में स्वतंत्र हुआ। यहां की मिट्टी अच्छे किस्म की नहीं है और इसमें केवल गुजारे लायक नारियल ही उगाया जा सकता है। नारियल गिरी और डाक टिकट यहां के लिए मुख्य विदेशी मुद्रा अर्जित करते हैं।

गवर्नर जनरल: टोमासी पुआपुआ; प्रधानमंत्री: आयोनाटाना आयोनाटाना।

टोगो
(Republic of Togo)

राजधानी: लोमे; क्षेत्रफल: 56,785 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 5.0 मिलयन; भाषा: फ्रेंच (सरकारी) और कबायली; साक्षरता: 52%; धर्म: कबायली और ईसाई; मुद्रा: फ्रेंक सी.एफ.ए.; 1 अमरीकी डालर = 612.79 फ्रेंक सी.एफ.ए., प्रति व्यक्ति आय: 1,372 डालर।

रिपब्लिक आफ टोगो, जो पहले टोगोलैण्ड कहलाता था, अफ्रीका के पश्चिमी तट पर स्थित है और एक पतली पट्टी सी है जो गिनी नार्थ की खाड़ी से लेकर बरकिना फासो तक फैली है। टोगो 1960 में स्वतंत्र हुआ।

यहां के मुख्य उत्पाद काफी, कोको, कपास, ताड़ गिरी, सेमल, रुई और मूंगफली है। टोगो के बहुत से प्राकृतिक संसाधन भी तक लगभग अविकसित हैं, लेकिन फास्फेट का अधिकाधिक खनन किया जा रहा है और आजकल यही देश का मुख्य निर्यात है।

प्रधानमंत्री यूजिने कोफ्फी ने नेशनल एसेंबली में अपने खिलाफ सेंसर मोशन के पारित हो जाने के बाद त्यागपत्र दे दिया।

राष्ट्रपति: जन. गांसिंग्बे याडेमा; प्रधानमंत्री: रिक्त।

भारत में दूतावास: आनरेरी कंसुलेट आफ दी रिपब्लिकन आफ टोगो, टी एंडटी मोटर्स लिमिटेड, 212 ओखला

इंडस्ट्रियल स्टेट, फेस-3, नई दिल्ली-110020, फोन: 6821005, फैक्स: 6821013

टोंगा

(Kingdom of Tonga) Puleanga Fakaktui O Tonga

राजधानी: नुकू एलोफा; क्षेत्रफल: 748 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 1,09,082; भाषा: अंग्रेजी और टोंगन; साक्षरता: 93%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: पांगा; 1 अमरीकी डालर = 1.61 पांगा; प्रति व्यक्ति आय: 2,250 डालर ।

टोंगा दक्षिण-पश्चिमी प्रशान्त महासागर में 169 द्वीपों और टापुओं का देश है । मकर रेखा और अंतर्राष्ट्रीय समय रेखाएं एक-दूसरे को टोंगा के बिल्कुल नज़दीक काटती हैं।

टोंगा 1900 में ब्रिटिश संरक्षित राज्य बना और 4 जून, 1970 को स्वतंत्र राज्य बना ।

टोंगा कृषि-प्रधान देश है । स्थानीय उपभोग के लिए फलों और सब्जियों का उत्पादन होता है सबसे महत्वपूर्ण निर्यात फसल नारियल गिरी है और इसके बाद केले का नम्बर आता है ।

प्रायद्वीपीय देश 1999 में संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बना।

राज्याध्यक्ष: सम्राट टाउफाहू टोपोऊ चतुर्थ; प्रधानमंत्री: बैरोन वैइया।

भारत में दूतावास: काउन्सलेट आफ टोंगा, मार्फत जी.पी (पी.) लिमिटेड, 17 चितरंजन एवेन्यू, कलकत्ता-700 072; फोन: 27-3568 ।

डेनमार्क

(Kingdom of Denmark) Kongeriget Danmark

राजधानी: कोपेनहेगन; क्षेत्रफल: 43,074 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 5.3 मिलियन ; भाषा: डैनिश; साक्षरता: 100%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: क्रोन; 1 अमरीकी डालर = 6.95 क्रोन; प्रति व्यक्ति आय: 24,218 डालर ।

डेनमार्क उत्तरी यूरोप में नार्थ सागर और बाल्टिक सागर के बीच स्थित है । देश में जटलैंड प्रायद्वीप, जीलैंड, फुनेन और बोर्नहोल्म और 480 छोटे-छोटे द्वीप सम्मिलित हैं । ग्रीनलैंड फारो द्वीप भी डेनमार्क राज्य के भाग हैं ।

डेनमार्क में संवैधानिक राजतंत्र है । यहां सम्राज्ञी और संसद (फोकटिंग) दोनों संयुक्त रूप से वैधानिक सत्ता के स्वामी हैं ।

लगभग 70 प्रतिशत भूमि पर कृषि होती है । डेनमार्क संसार में दूध और उससे निर्मित वस्तुओं का एक सबसे बड़ा निर्यातकर्ता है । मछली पकड़ना एक अन्य महत्वपूर्ण उद्यम है । डेनमार्क अपनी सहकारी संस्थाओं के लिए विख्यात है। पहली सहकारी सोसायटी 1866 में बनी थी । उद्योगों में प्रमुख हैं- पोत निर्माण, विभिन्न प्रकार की मशीनें, वस्त्र, लोहे और इस्पात की वस्तुएं।

वाशिंगटन स्थित पापुलेशन क्राइसिस कमेटी ने अपने अध्ययन में डेनमार्क को रहने के लिये सर्वश्रेष्ठ स्थान माना है।

राज्याध्यक्ष: क्वीन मारग्रेट द्वितीय; प्रधानमंत्री: पाल [illegible] ।

प्रथम यौन परिवर्तन

वर्ष 1952 में यह चमत्कार हुआ जब अमरीकी के जार्ज जोर्गेनसन ने अपना देश छोड़ा और दो वर्षों के बाद डेनमार्क की राजधानी में एक खूबसूरत युवती के रूप में नये नाम क्रिस्टीने जोर्गेनसन के नाम से जाने गये। युवक से युवती बनने के लिये उन्होंने 5 आपरेशन करवाये और लगभग 2000 हार्मोन्स के इंजेक्शन लगवाये। इस प्रकार युवक से युवती बनने वाले वे विश्व में प्रथम थे। इसके बाद तो उनसे प्रेरणा लेकर कितने ही लोग लिंग परिवर्तन के लिये उत्साहित हो गये। इस विषय पर न जाने कितनी फिल्में बनीं और कितनी ही किताबें लिखी गईं।

भारत में दूतावास: रायल डच दूतावास, 11 औरंगजेब रोड, नई दिल्ली-110 011; फोन: 3010900; फैक्स: 3792019.

वाणिज्य दूतावास: मुंबई-एल.एण्ड टी. हाउस, नरोत्तम मोरारजी मार्ग, बलार्ड एस्टेट; फोन: 2614462.

चेन्नई: 8, कैथेड्रल रोड, चेन्नई-600 086; फोन: 473333.

कलकत्ता: मैकल्यूड हाउस, 3 नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता-700 001; फोन: 287476

Indian Mission in Denmark: Embassy of India, Vangehusvej 15, 2100 Copenhagen, Denmark. Tel: 00 4539299201; Fax: 00-45-39270218

डेनमार्क के बाहरी क्षेत्र

दी फेरोइ आइसलेंड: क्षेत्रफल: 1399 वर्ग किमी, जनसंख्या: 41,059, राजधानी : टोर्शवान । आइसलैंड उत्तरी एटलांटिक में पहाड़ी और ज्वालामुखीय उत्पत्ति पर है। डेनमार्क की पार्लियामेंट में आइसलैंड का प्रतिनिधित्व 1851 से है । अनेक मामलों में यहां स्वशासन है ।

प्रधानमंत्री: एडमंड जोयेन्सन।

ग्रीनलैंड: क्षेत्रफल: 2,175,600 वर्ग किमी. जनसंख्या 59,300, राजधानी: गोताब। यह विश्व का सबसे बड़ा आइसलैंड है व उत्तरी एटलांटिक और ध्रुवीय समुद्र के मध्य है। 80 प्रतिशत क्षेत्र बर्फ से ढंका है। 1930 से डेनमार्क के अधिकार में ग्रीनलैंड 1953 में डेनिश किंगडम का हिस्सा बना। 1979 में ग्रीनलैंड को होम रूल मिला। [illegible] ग्रीन लैंडिक नाम अधिकारिक रूप से प्रयुक्त [illegible] ग्रीनलैंड अब कलाललिट्ट नुनाट हो गया। राजधानी [illegible] की जगह अब नुक है। यहां एल्यूमिनियम [illegible] प्राकृतिक क्रायोलाइट पाया जाता है ।

प्रधानमंत्री: एल.ए. [illegible]

डोमिनिका

(Commonwealth of Dominica)

राजधानी: रोज़ियो; क्षेत्रफल: 75[illegible] जनसंख्या: 64,88[illegible]; भाषा: अंग्रेजी [illegible] साक्षरता: 90%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: [illegible]

1 अमरीकी डालर = 2.7 पू.कै. डालर; प्रति व्यक्ति आय: 5,102 डालर ।

डोमिनिका गणराज्य लेसर एण्टीलिस में स्थित है ।पहले यह एक ब्रिटिश संरक्षित राज्य था । 1967 में इसे ब्रिटेन के सह–राज्य का दर्जा मिला और 1978 में इसे पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त हुई ।

यह द्वीप मूलत: ज्वालामुखी और मोटे तौर से पहाड़ी है। इसकी आबादी में नीग्रो, मुल्टोज़, कैरिब इंडियन और यूरोपियन सम्मिलित हैं ।

यहां से केले, कोकोआ, नारियल की गिरी और फलों का निर्यात होता है ।

राष्ट्रपति: वर्नोन लार्डेन शा; प्रधानमंत्री: एडिसेन जेम्स।

भारत में दूतावास: आनरेरी कंसुलेट आफ कामनवेल्थ आफ डोमनिका, 283, गुलमोहर एंक्लेव, नई दिल्ली–110 049; फोन: 6862595, फैक्स: 6510860

डोमिनिकन रिपब्लिक

(Republica Dominica)

राजधानी: सैण्टो डोमिंगो; क्षेत्रफल: 48,442 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 12.6 मिलियन; भाषा: स्पेनिश; साक्षरता: 82%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: पेसो ओरो; 1 अमरीकी डलर = 15.95 आर.डी.; प्रति व्यक्ति आय: 4,598 डलर।

डोमिनिकन रिपब्लिक ग्रेटर एण्टीलिस के दूसरे नम्बर के सबसे बडे द्वीप हिस्पैनिओला के पूर्वी दो–तिहाई भाग में स्थित है । आरंभ में यह स्पेन के अधीन था । 1844 में इसे स्वाधीनता प्राप्त हुई ।यह राज्य कृषि–प्रधान है । मुख्य फसलें गन्ना और काफी हैं ।

राष्ट्रपति: लियोनेल फर्नांडेस रेईना।

ज़

(nited Republic of Tanzania)

राजधानी: डोडोमा; क्षेत्रफल: 9,45,087 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 35.3 मिलियन; भाषा: किस्वेहिली और अंग्रेजी; साक्षरता: 68%; धर्म: ईसाई और इस्लाम; मुद्रा: शिलिंग; 1 अमरीकी डालर = 796.13 शिलिंग; प्रति व्यक्ति आय: 480 डालर ।

पूर्वी अफ्रीका में स्थित तंजानिया में टांगानिक तथा जंज़ीबार और पेम्बा के द्वीप सम्मिलित हैं । जंज़ीबार और पेम्बा के द्वीप दारुसलम के उत्तर में मुख्य भूमि के तट से लगभग 40 किमी दूर हैं ।

अप्रैल 1964 में पीपुल्स रिपब्लिक आफ जंज़ीबार और पेम्बा तथा टांगानिका रिपब्लिक ने एक साथ मिलकर यूनाइटेड रिपब्लिक आफ तंजानिया का गठन किया ।

यहां की अर्थ–व्यवस्था कृषि प्रधान है । यहां की मुख्य नकदी फसलें साइसल, गन्ना, कपास और काफी हैं । द्वीपों में लौंग उगाई जाती है, विशेष रूप से पेम्बा में । पशुपालन व्यापक पैमाने पर किया जाता है । हीरा यहां का महत्वपूर्ण निर्यात है । अन्य खनिजों में सोना, टिन और नमक हैं ।

राष्ट्रपति: बेन्जमीन मकापा; प्रधानमंत्री: फेडरिक सुमये।

भारत में दूतावास: हाई कमीशन आफ तंजानिया, 10/1, सर्वप्रिया विहार, नई दिल्ली–110016; फोन: 6853046; फैक्स: 6968408.

Indian Mission in Tanzania: High Commission of India, NIC Investment House, Samora Avenue, 7th & 8th Floor, Wing 'A', P.O. Box 2684, Dar-es-Salaam, Tanzania. Tel: 00-255-51-117175; Fax: 00-255-51-118761.

ताइवान

(Republic of China) Chung-hua Min-kuo

राजधानी: ताइपे; क्षेत्रफल: 35,981 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 22.3 मिलियन ; भाषा: मेण्डेरिन चीनी, ताइवान, हाक्का डायलेक्ट्स; साक्षरता: 94%; धर्म: बौद्ध, ताओयिसम और कन्फूशियस; मुद्रा: न्यू ताइवान डालर; 1 अमरीकी डालर = 31.83 न्यू ता. डा.; प्रति व्यक्ति आय: 14,200 डालर।

ताईवान पहले फारमूसा कहलाता था ।इस राज्य में केवल ताइवान ही नहीं वरन् कई छोटे द्वीप सम्मिलित हैं ।

मूल रूप में ताइवान और इसके आसपास का क्षेत्र चीन का भाग था । 1950 में चांग काईशेक ने ताइवान को नेशनलिस्ट रिपब्लिक आफ चाइना का मुख्यालय बनाया । यद्यपि ताइवान अभी तक यह दावा करता रहा है कि वही समूचे चीन की वैधानिक सरकार है, लेकिन 1971 में इसने संयुक्त राष्ट्रसंघ की सदस्यता तथा सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता खो दी है जो साम्यवाद चीन को प्राप्त हो गई ।1987 में 38 वर्षों के बाद मार्शल ला हटा लिया गया और 1991 में 43 साल से चला आ रहा आपात शासन की समाप्ति हो गयी।मई 1996 में इस द्वीप के पहले प्रत्यक्ष राष्ट्रपति पद के चुनाव में ली टेंग हुई की भारी मतों से विजय हुई।

अगस्त 1997 में लीन चान (1993 से प्रधानमंत्री) ने द्वीप में हुए नरसंहार जिससे सारा देश स्तब्ध रह गया था की जिम्मेवारी लेते हुए पद से त्यागपत्र दे दिया।

यहां की मुख्य कृषि फसलें चावल, चाय, चीनी, शकरकन्द, रैमी, पटसन और हल्दी है ।वनों से प्राप्त काफूर पर सरकार का एकाधिकार है । यहां के उद्योगों में सूती कपड़ा, बिजली का सामान, लोहे की वस्तुएं, कांच और साबुन है । कोयला, संगमरमर, पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस यहां के मुख्य खनिज हैं ।

पचास वर्षों के शासन के बाद मार्च में नेशनलिस्ट पार्टी चुनाव में पराजित हो गई और विपक्षी पार्टी डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी सत्ता में आई। चीन के साथ टकराव बढ़ा।

राष्ट्रपति: चेन शुइ–बियान; प्रधानमंत्री: टांग फी।

तुर्कमेनिस्तान

(Republic of Turkmenistan) Turkmenostan Respublikasy

राजधानी: अश्काबाद (पोल्टोराट्सक); क्षेत्रफल: 488,100 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 5.2 मिलियन; भाषा: तुर्कमेन, रूसी; साक्षरता: 100%; धर्म: इस्लाम; मुद्रा:

मनात; 1 अमरीकी डालर= 2,550 मनात; प्रति व्यक्ति आय: 2,550 डालर।

पूर्व सोवियत गणराज्य तुर्कमेनिस्तान के पश्चिम में कैस्पियन सागर है। उजवेकिस्तान, इरान और अफगानिस्तान इसके पड़ौसी हैं। काराकुम रेगिस्तान 80 प्रतिशत भूभाग में फैला है।

अक्टूवर 1991 में तुर्कमेनिस्तान ने स्वतंत्रता की घोषणा की और दिसंवर में सी.आई.एस. की सदस्यता ली।

कृषि: मक्का, अंगूर, फल और सब्जी, कपास, ऊन, फर, और सेरीकल्चर भी।

प्राकृतिक स्रोत: ओजो सिराइट, तेल, कोयला, गंधक, नमक, मैग्नीशियम।

उद्योग: खाद्य, कपड़ा, रसायन, सीमेंट, कृषि यंत्र, फेरोकंक्रीट, फुटवियर निटवियर।

राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री: सापारमुराद नियाजोव।

भारत में दूतावास: तुर्कमेनिस्तान के दूतावास, 6/16, शांतिनिकेतन, नई दिल्ली–110 021; फोन: 6118409; फैक्स: 6118332.

Indian Mission in Turkmenistan: Embassy of India, Nogina Hotel, Baba Japarov Street, 11, P.O. Box No. 80, Ashgabat-13, Turkmenistan. Tel: 00-99-312-418756; Fax: 00-99-312-469030.

थाईलैण्ड

(kingdom of Thailand) Muang Thai or Prathet Thai

राजधानी: वैंकाक; क्षेत्रफल: 513,115 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 62.0 मिलयन; भाषा: थाई, चीनी, अंग्रेजी एवं मलय; साक्षरता: 94%; धर्म: वौद्ध और इस्लाम; मुद्रा: वाहट; 1 अमरीकी डालर = 38.76 वाहट; **प्रति व्यक्ति** आय: 5,456 डालर।

थाईलैण्ड, जो पहले स्याम कहलाता था, दक्षिण–पूर्व एशिया में एक संवैधानिक राजतंत्र है।

प्राचीन काल से यहां निरंकुश शासन था, लेकिन 1932 में यह संवैधानिक राजतंत्र वन गया। 1948 में देश ने अपना वर्तमान नाम थाईलैण्ड ग्रहण किया। जून 97 में किंग भूमिवोल ने अपने शासन के पचास वर्ष पूरे कर विश्व के सवसे लंबे समय के तानाशाह होने का कीर्तिमान बनाया।

देश का मुख्य धंधा खेती है जिनमें जनसंख्या का 60 प्रतिशत लगा है। यहां की मुख्य फसल चावल है, जिसका वड़ा भाग निर्यात कर दिया जाता है। अन्य कृषिजन्य निर्यात नारियल, तम्वाकू, कपास और टीक हैं। पिछली शताब्दी से थाईलैण्ड ने अपने देश में निर्मित और संसाधित वस्तुओं के निर्यात में वृद्धि की है। खनिजों में टिन, मैंग्नीज़, टंगस्टन, एन्टीमनी, लिग्नाइट और सीसा शामिल हैं। पर्यटन का वहुत विकास हुआ है।

राज्याध्यक्ष: सम्राट भूमियोल अदुलयादेज अयुलदेट; **प्रधानमंत्री:** चुआन लीकपाई।

भारत में दूतावास: रायल थाई दूतावास, 56–एन, न्याय मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन: 6115678; फैक्स: 6872029.

वाणिज्य दूतावास: मुंवई: 90 कृष्णा वाग, दूसरी मंजिल, 43 वी देसाई रोड़, मुंवई–400 026; फोन: 3631404

कलकत्ता: 90, मेन्डोविले गार्डेन्स, वालिगंज, कलकत्ता–700 019; फोन: 460836

Indian Mission in Thailand: Embassy of India, 46, Soi 23 (Prasarnmitr) Sukhumvit Road, Bangkok-10110, Thailand. Tel: 00-66-2-2580300; Fax: 00-66-2-2584627.

न्यूज़ीलैण्ड

राजधानी: वेलिंग्टन; **क्षेत्रफल:** 269,057 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 3.8 मिलयन; **भाषा:** अंग्रेजी और माओरी वोली; **साक्षरता:** 100%; **धर्म:** ईसाई; **मुद्रा:** डालर; 1 अमरीकी डालर = 1.93 न्यूज़ीलैण्ड डालर; **प्रति व्यक्ति आय:** 17,288 डालर।

न्यूज़ीलैण्ड दक्षिणी प्रशान्त महासागर में स्थित है। इसके पश्चिम में तासमन सागर है। इसमें उत्तरी द्वीप तथा दक्षिणी द्वीप नाम के दो वड़े द्वीप तथा असंख्य छोटे द्वीप हैं। 1907 ई. में इसे डोमिनियन का दर्जा प्राप्त हुआ।

डेरी उद्योग, मांस तथा ऊन यहां के मूल उद्योग हैं। गेहूं, जई और जौ यहां की मुख्य फसलें हैं। खनिज पदार्थों में कोयला और सोना शामिल हैं। लुगदी और कागज़ उद्योग यहां अति विकसित है। लोहा, इस्पात और एल्युमीनियम नए उद्योग हैं।

राज्याध्यक्ष: महारानी एलिज़ावेथ द्वितीय; **गवर्नर जनरल:** सर मिकाइल हार्डी वोयज (मार्च 20001 से डेम सिल्विया कार्टराइट) **प्रधानमंत्री:** सुश्री हेलेन क्लार्क।

भारत में दूतावास: हाई कमीशन आफ न्यूजीलैंण्ड, 50 एन न्याय मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021, फोन: 6883170; फैक्स: 6876554 (वीसा कार्यालय), 6883165

Indian Mission in New Zealand: High Commission of India, 180, Molesworth Street, P.O. Box 4045, Wellington, New Zealand. Tel: 00-64-4-4736390; Fax: 00-64-4-4990665.

समुद्रपार क्षेत्र

कुक आइसलैंड और न्यू स्वशासित क्षेत्र हैं। सेज डिपेनडेंसी और टोकेलाऊ न्यूजीलैंड के अंतर्गत हैं।

दी कुक आइसलैंड (241 वर्ग किमी) 1901 में इसे न्यूजीलैंड प्रशासन के अंतर्गत लाया गया था। न्यूजीलैंड के सहयोग से 1955 में इसे स्वशासन राज्य का दर्जा मिला। **जनसंख्या:** 20,000.

न्यू (259 वर्ग किमी) का पहले प्रशासन आइसलैंड के अंतर्गत था। 1974 में न्यूजीलैंड के सहयोग से इसे स्वशासन मिला। **जनसंख्या:** 2,500.

न्यू विश्व का कोरल आइसलैंड रोज डिपेंडेंसी (414,400 वर्ग किमी) एंडार्टिक क्षेत्र को 1923 में न्यूजीलैंड प्रशासन के अंतर्गत लाया गया था।

टोकेलाऊ (10 वर्ग किमी) इसे 1928 में न्यूजीलैंड शासन के अंतर्गत लाया गया था। **जनसंख्या:** 1,600.

नाइजर

(Republic of Niger) Republique du Niger

राजधानी:नियामी;क्षेत्रफल: 1,267,000 वर्गकिलोमीटर; जनसंख्या: 10.1 मिलियन ; भाषा: फ्रेंच तथा हौसा; साक्षरता: 14% (1995); धर्म: इस्लाम तथा कबायली; मुद्रा: फ्रैंक सी.एफ.ए.; 1 अमरीकी डालर = 612.79 फ्रैंक.सी.एफ.ए: प्रति व्यक्ति आय: 739 डालर ।

नाइजर गणराज्य पश्चिमी अफ्रीका के मध्य में स्थित है।

नाइजर पहले फ्रेंच पश्चिमी अफ्रीका का एक हिस्सा था जो 1970 में पूर्ण रूप से स्वतंत्र हो गया ।

जनवरी 96 में राष्ट्रपति महानामे आउसमाने को सैन्य शासक इब्राहिम मैइनासारा ने पदच्युत कर दिया और देश के स्वतंत्र चुनाव आयोग को भंग कर दिया। मैइनासारा जिन्हें 52 प्रतिशत मत मिले थे राष्ट्रपति बन गये।

यह एक कृषि प्रधान देश है । यहां की मुख्य फसलें मूंगफली और कपास हैं । लोगों का अन्य महत्वपूर्ण धंधा पशुपालन है ।यहां यूरेनियम के भंडार मिले हैं जिसका खनन हो रहा है ।

राष्ट्रपति: डायडा मालाम वांके; प्रधानमंत्री: इब्राहिम अस्साने मायाकी

नाइजीरिया

(Federal Republic of Nigeria)

राजधानी: अबुजा; क्षेत्रफल. 923,768 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 123.3 मिलियन; भाषा अंग्रेजी, हौसा, इबो तथा योरुबा; साक्षरता: 57%; धर्म इस्लाम, ईसाई तथा कबायली; मुद्रा. नेइरा; 1 अमरीकी डालर = 97 85 नेइरा; प्रति व्यक्ति आय 795 डालर ।

नाइजीरिया संघ गिनी की खाड़ी के बीच पश्चिमी अफ्रीका का सर्वाधिक जनसंख्या का तटीय राज्य है । दक्षिण पश्चिमी नाइजीरिया से होकर दक्षिण की ओर नाइजर नदी बहती है जहां आकर इसकी मुख्य सहायक बेनुई नदी मिलती है । नाइजर नदी गिनी खाड़ी में गिरती है और वहां विस्तृत दलदली डेल्टा बनाती है ।

नाइजीरिया 1960 में एक स्वतंत्र राज्य बना और अक्तूबर 1963 में गणराज्य बना ।यह राष्ट्रमंडल में शामिल है ।जनरल इब्राहिम बाबानगिडा के नेतृत्व में चल रहे 1985 से सैन्य शासन ने 12 जून 1993 को हुए नये राष्ट्रपति के चुनाव को मान्यता नहीं दी ।इस असफल चुनाव के विजेता मौशू अबियोला ने लंदन में विकसित सरकार बनायी । आंतरिक दबावों के कारण बाबानगिडा ने 26 अगस्त को शोनेकन को नागरिक राष्ट्रपति नामांकित किया । रक्षा मंत्री जनरल अबाचा के नेतृत्व में नवंबर 1993 में सेना के शासन की वापसी हो गयी। अबियोला जो कि भूमिगत थे ने बाहर आकर स्वंय के राष्ट्रपति होने की घोषणा कर दी, उन्हें जून 1994 में गिरफ्तार कर लिया गया।(उनकी पत्नी को 96 में एक सैनिक ने गोली मार कर हत्या कर दी) पूर्व राष्ट्रपति ओलुसेगुन ओब्सांजो को आजीवन कारावास की सजा दी गयी। जून 95 को सेना के शासन की समाप्ति कर दी गयी और राजनीतिक दलों पर दो वर्षों के प्रतिबंध को समाप्त कर दिया गया। नागरिक शासन की वापसी की तिथि 1998 में रखी गयी है।

लेखक व पर्यावरणविद् केन सारो-विवा और उनके आठ साथियों के मृत्युदंड से सारा विश्व स्तब्ध रह गया। इसकी हर जगह आलोचना हुई, और नाइजीरिया की कामनवेल्थ सदस्यता समाप्त कर दी गयी।

नियमडी अजिकिवी के 15 वर्षीय सैनिक शासन की समाप्ति के बाद 29 मई 1999 को ओलेसुगन ओबासान्जो का निर्वाचन राष्ट्रपति पद के लिये हुआ। वे अब तक यहां के तीसरे नागरिक राष्ट्रपति हैं।

नाइजीरिया में आर्थिक संकट बढ़ गया है, बेरोजगारी तेजी से बढ़ रही है। और अधिकतर नाइजीरिया वासियों की क्रय शक्ति क्षीण हो चुकी है।

मुख्य कृषि उत्पादन, खजूर का तेल, ताड़, खजूर, कपास, रबड़, मूंगफली तथा छाले हैं । मुख्य खनिज टिन, सीसा, कोलम्बाइट, कोयला और लौह अयस्क हैं । विभिन्न प्रकार की इमारती लकड़ी के लिए यहां के वनों का व्यापक उपयोग हो रहा है । 1970 से कच्चे तेल का निर्यात महत्वपूर्ण हो गया है । यहां नाना प्रकार के उद्योग हैं जिनमें बीयर, सीमेंट, सिगरेट तथा एल्युमीनियम उत्पाद प्रमुख हैं ।

इस वर्ष उत्तरी नाइजीरिया के काचिया और कादुना में इसाइयों और मस्लिमों के बीच सांप्रदायिक दंगों में अनेक जानें गईं। अप्रैल महीने में नाव दुर्घटना में 500 लोग मारे गये।

सरकार के अध्यक्ष एवं राष्ट्रपति: जन. ओलेसुगन ओबासान्जो।

भारत में दूतावास: हाई कमीशन आफ नाइजीरिया, 21, ओलोफ पाल्मे मार्ग, वसन्त विहार, नई दिल्ली-110 057; फोन: 6146221; फैक्स: 6146617

Indian Mission in Nigeria: High Commission of India, 8-A, Louis Farrakhan Crescent, Victoria Island, P.M.B.2322, Lagos, Nigeria. Tel: 00-234-1-2618494; Fax: 00-234-1-2612660.

नामीबिया

राजधानी: विंडहाक; क्षेत्रफल: 826,700 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 1.8 मिलियन; भाषा: अंग्रेजी, अफ्रीकी, जर्मन; धर्म: ईसाई और कबायली; साक्षरता: 76%; मुद्रा: नामीबियन डालर; 1 अमरीकी डालर = 6.03 ना.डालर; प्रति व्यक्ति आय: 5,176 डालर ।

नामीबिया, जिसे साउथ वेस्ट अफ्रीका कहा जाता था, अफ्रीका के अटलांटिक तट पर स्थित है ।

यहां की जनसंख्या में सबसे अधिक ओवाम्बो हैं ।

नामीबिया की सबसे मूल्यवान सम्पत्ति हीरे हैं ।उसके बाद तांबा, जस्ता, सीसा, जर्मेनियम और मैंगनीज का नम्बर है । पशुओं की नस्ल संवर्द्धन का उद्योग महत्वपूर्ण है । पशु-भेड़ और बकरियों की बहुतायत है । मछली पकड़ना आय का पूरक साधन है ।

दक्षिण अफ्रीका की नामीबिया में कठपुतली सरकार को अंतर्राष्ट्रीय दबाव के बाद हटना पड़ा और 5 अक्टूबर 1988 को जेनेवा में दक्षिण अफ्रीका, क्यूबा और अंगोला के बीच शांति समझौते के फलस्वरूप 1989 में स्वाधीनता का मार्ग खुला। समस्त विदेशी सेनायें हट गयी और संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव के अनुसार चुनाव संपन्न हुए।

राष्ट्रपति: साम नुजोमा; प्रधानमंत्री: हेग गेइनगोब।

भारत में दूतावास: हाई कमीशन आफ रिपब्लिक आफ नामीबिया, डी-6/24, वसंत विहार, नई दिल्ली-110 057; फोन: 6140389; फैक्स: 6116120.

वाणिज्य दूतावास: ब्लाक ए, शिवसागर एस्टेट, डा. आनि बसन्त रोड, मुंबई-400 018. फोन: 4920402. फैक्स: 4950309

Indian Mission in Namibia: High Commission of India, 97, Nelson Mandela Avenue, P.O. Box 1209, Windhoek, Namibia. Tel: 00-264-61-226037; Fax: 00-264-61-237320.

नार्वे

(Kingdom of Norway) Kongeriket Norge

राजधानी: ओसलो; क्षेत्रफल: 323,895 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 4.5 मिलयन; भाषा: नार्वेजियन; साक्षरता: 100%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: क्रोन; 1 अमरीकी डालर = 7.81 क्रोन; प्रति व्यक्ति आय: 26,342 डालर।

नार्वे स्कैण्डेनेविया प्रायद्वीप के पश्चिमी भाग से मिला हुआ है। इसका विस्तार स्कागेरैक नामक स्थान-जो इसे डेनमार्क से अलग करता है - से लेकर आर्टिक महासागर में नार्थ केप (उत्तरी अंतरीप) तक है, जहां इसकी सीमाएं फिनलैण्ड और सोवियत रूस से मिलती हैं।

नार्वे 'लैण्ड आफ मिडनाइट सन' (मध्यरात्रि सूर्य का देश) कहलाता है क्योंकि उत्तरी क्षेत्र में मध्य मई से लेकर जुलाई के अंत तक सूर्य अस्त ही नहीं होता और नवम्बर के अंत से जनवरी के अंत तक सूर्योदय नहीं होता।

यहां के मुख्य कृषि उत्पाद जौ, जई, राई और आलू हैं। मछली पकड़ना यहां का मुख्य धंधा है क्योंकि यहां काड, हेरिंग, व्हेल, टुना, सील, मेकेरेल तथा सालमन मछलियां बड़ी तादाद में मिलती हैं। यहां के वन बहुत से उद्योगों के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराते हैं। खनन यहां का प्रमुख उद्योग है। यहां कोयले की तो कमी है लेकिन बड़े-बड़े कारखानों को चलाने के लिए जल विद्युत की प्रचुरता है। यहां के प्रमुख निर्माण उत्पाद खाद्य पदार्थ, मशीनरी और धातु पदार्थ, लकड़ी, कागज़ और लुगदी एल्युमिनियम तथा इलेक्ट्रो-केमिकल पदार्थ हैं।

नार्वे पर निर्भर क्षेत्र: स्वालवर्ड (62,700 वर्ग किमी) जान मेयेन (380 वर्ग किमी); बावेट आइलैंड (60 वर्ग किमी); पीटर एल आइलैंड (249 वर्ग किमी) और क्वीन माड लैंड।

राज्याध्यक्ष: किंग हैराल्ड पंचम; प्रधानमंत्री: जेन्स स्टोल्टेनबर्ग।

भारत में दूतावास: नार्वे का दूतावास, शान्ति पथ, चन्द्रगुप्तपुरी, नई दिल्ली-110 021; फोन: 6873532; फैक्स: 6873814.

वाणिज्य दूतावास: मुंबई: नौरोजी मैन्शन, 31, नाथेलाल पारिख मार्ग, फोन: 242042. फैक्स: 2046576.

कलकत्ता: 230 ए, जे सी बोस रोड, कलकत्ता; फोन: 2474757. फैक्स: 401953.

चेन्नई: हार्बर गेट, 44/45 राजाजी सलाई चेन्नई-600 001; फोन: 5221170. फैक्स: 5233235.

Indian Mission in Norway: Embassy of India, Niels Juels Gate 30-0244, Oslo, Norway. Tel: 00-47-22443194; Fax: 00-47-22440720.

निकारागुआ

(Republic of Nicaragua) Republica de Nicaragua

राजधानी: मानागुआ; क्षेत्रफल: 130,000 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 5.1 मिलयन; भाषा: स्पेनी तथा अंग्रेजी; साक्षरता: 66%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: कोरडोबो; 1 अमरीकी डालर = 12.03; प्रति व्यक्ति आय: 2,142 डालर।

निकारागुआ गणराज्य मध्य अमरीका के बीच स्थित है। यह 1838 ई. में स्वतंत्र राज्य बना। सोमोज़ा राजवंश ने निकारागुआ पर 1933 से 1979 तक शासन किया। 1984 में हुए चुनावों में सैन्डिनिस्ता नेशनल लिबरेशन फ्रंट प्रमुख राजनीतिक शक्ति के रूप में उभर कर आया जिसके नेतृत्व में सशस्त्र क्रान्ति द्वारा तृतीय सोमोज़ा का तख्ता पलट दिया गया। लेकिन अमरीकी समर्थन द्वारा निकारागुआन नेशनल गार्ड (सोमोस्टन) के भूतपूर्व सदस्यों द्वारा डेनियल ओर्टेगा की सरकार के विरुद्ध पिछले 9 वर्षों से युद्ध चल रहा था। लगभग 30,000 लोग मारे जा चुके हैं। 1990 में ओर्टेगा की चुनावी पराजय के साथ गृह युद्ध समाप्त हो गया।

राष्ट्रीय आय का मुख्य स्रोत कृषि है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृषि उत्पादन कपास, काफी और गन्ना है। मुख्य उद्योग: माचिस, चमड़ा, बीयर और प्लास्टिक का सामान हैं। यहां सोना, तांबा, चांदी, सीसा और जस्ता पाया जाता है।

राज्यध्यक्ष: आरनोल्डो अलेमन।

भारत में दूतावास: आनेररी कांसुलेट, 3, फैक्ट्री रोड, नई दिल्ली-110 029, फोन: 6198427. फैक्स: 6199306.

नीदरलैण्ड

(Kingdom of the Netherlands) Koninkrijkder Nederlandern

राजधानी: एमस्टर्डम, सरकार का केन्द्र: दि हेग; क्षेत्रफल: 41,160 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 15.9 मिलयन; भाषा: डच; साक्षरता: 100%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: गिल्डर; 1 अमरीकी डालर = 2.06 गिल्डर; प्रति व्यक्ति आय: 22,176 डालर।

नीदरलैण्ड्स साम्राज्य में नीदरलैण्ड्स तथा एण्टिलीज शामिल हैं इस देश में समतल भूमि है जिसकी समुद्री सतह से औसत ऊंचाई 37 फीट है। इस देश का बड़ा क्षेत्र समुद्री सतह से नीचा है। इसकी सुरक्षा बांधों द्वारा की जाती है जिसकी लम्बाई लगभग 1500 [illegible]

यहां की कृषि का यंत्रीकरण हो गया है । सबसे बड़ा औद्योगिक क्षेत्र खाद्य पदार्थों का है । यहां के निर्यात का लगभग एक–चौथाई भाग दुग्ध पदार्थों का है । अन्य प्रमुख उद्योगों में रासायनिक पदार्थ, धातु कर्म, मशीनरी तथा बिजली का सामान सम्मिलित हैं । एमस्टर्डम हीरों, बहुमूल्य धातुओं तथा कला निधि के केन्द्र के रूप में विश्व विख्यात है

1998 में समलिंगी विवाह को वैधानिकता दी गई।।

राज्याध्यक्ष: महारानी वीयाट्रिक्स विलहेलमिना आर्मगार्ड; **प्रधानमंत्री:** विम कोक।

भारत में दूतावास: नीदरलैण्ड्स का दूतावास, 6/50 एफ, शान्ति पथ, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन: 6884951; फैक्स: 6884956.

वाणिज्य दूतावास: दी इंटरनेशनल, तीसरी मंजिल, 16 एम कार्वे रोड, चर्च गेट, मुंबई; फोन: 2016846; फैक्स: 2069436.

31, नेताजी सुभाष रोड़, कलकत्ता, फोन: 2208515; फैक्स: 2481614.

काथोलिक सेंडर, 64 आरमेनियन स्ट्रिट, चेन्नई–600 001; फोन: 585829; फैक्स: 580245

Indian Mission in Netherlands: Embassy of India, Buitenrustweg 2, 2517 KD, The Hague, Netherlands. Tel: 00-31-70-3469771; Fax: 00-31-70-3617072.

डच क्षेत्र

अरुबा: दी आइसलैंड (क्षेत्रफल : 193 वर्ग किमी, जनसंख्या: 68,675) दक्षिण कैरिवियन पर स्थित 1828 से डच वेस्ट इंडीज का भाग बना और 1845 से नीदरलैंड एंटिल्स का भाग बना। 1954 में अंतरिम स्वशासन प्राप्त किया। संवैधानिक रूप से यह नीदरलैंड से 1 जनवरी 1986 में ही अलग हुआ। पूर्ण स्वतंत्रता 10 वर्षीय काल में दिये जाने का वादा किया गया था। राजधानी: ओरेनजेस्टेड, प्रधानमंत्री: जान एच ईसा।

नीदरलैंड एंटिल्स (क्षेत्रफल: 800 वर्ग किमी जनसंख्या: 207,827) वेस्टइंडीज के दो आइसलैंड समूह से बना है, दी लीवर्ड समूह (कुराकाओ और बोनेरे) और विंड वार्ड आइसलैंड। 1954 से यह नीदरलैंड के भाग है लेकिन आंतरिक मामलों में इसे पूर्ण स्वशासन प्राप्त है। राजधानी: विलेस्सटाड; गर्वनर: डा. जयिमे एम. साले। प्रधानमंत्री: सुसान्ने कामेलिया रोमर।

नेपाल

(Kingdom of Nepal) Sri Nepala Sarkar

राजधानी: काठमाण्डू; **क्षेत्रफल:** 147,181 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 23.9 मिलयन; **भाषा:** नेपाली, मैथिर, भोजपुरी; **साक्षरता:** 27%; **धर्म:** हिन्दू, वौद्ध, इस्लाम; **मुद्रा:** नेपाली रुपया; 1 अमरीकी डालर = 68.33 नेपाली रुपया; **प्रति व्यक्ति आय:** 1,157 डालर।

नेपाल हिमाचल के दक्षिण ढलान पर भारत और चीन के बीच में स्थित है। इसके उत्तर में तिब्बत का प्रांत सिक्किम और पश्चिम बंगाल, विहार व उत्तर प्रदेश है।

इतिहास: यहां पर 1846 से 1951 का शासन रहा। यही परिवार प्रधानमंत्री की था नवंबर में राणा प्रधानमंत्री ने त्यागपत्र दि 1961 में 15 ताल्लुकेदार ने अपना मिलाया।

16 अप्रैल 1990 से लगातार लोकतांत्रि के कारण सहाराज शाह ने सरकार को वर्खा और निर्वाचित पंचायत प्रणाली को भंग कर दिय 1990 को महाराजा ने नये संविधान की घोष नये संविधान में महाराजा के अधिकारों को दिया।

इस संविधान के अनुसार नेपाल बहुदलीय प्रण राज्यतंत्र बन गया। संसद के दो सदन बने 205 की प्रतिनिधि सभा जिसमें 10 सदस्यों का नामांकन के द्वारा होता है।

नेपाल में वन सम्पदा और क्वार्ट्ज भंडार की समृद्ध । यहां से निर्यात होने वाली मुख्य वस्तुएं चावल, पशु, खालें, गेहूं तथा जड़ी–वूटियां हैं ।

सम्राट: वीरेन्द्र वीर विक्रम शाह देव; **प्रधान मंत्री:** कोइराला।

भारत में दूतावास: रायल नेपाली एम्बेसी, बाराखम्भा नई दिल्ली–110 001; फोन: 3329969, फै 3326857.

वाणिज्य दूतावास: 19, वुडलैण्ड्स स्टनंडेल रो कलकत्ता–700 027; फोन: 452024.

Indian Mission in Nepal: Embassy of India, Lain Chaur, Post Box No. 292, Kathmandu, Nepal. Tel: 00-97-71-414990; Fax: 00-97-71-413132.

नौरु

(Republic of Nauru) Naoero

राजधानी: यारेन नौरु; **क्षेत्रफल:** 21.1 वर्ग किलोमीट **जनसंख्या:** 10,605; **भाषा:** अंग्रेजी और नौरु की स्थानी भाषा; **साक्षरता:** 99%; **धर्म:** ईसाई; **मुद्रा:** आस्ट्रे. डालर 1 अमरीकी डालर = 1.55 नौ. डालर; **प्रति व्यक्ति आय.** 10,000 डालर ।

नौरु मध्य प्रशान्त महासागर में एक छोटा–सा द्वीप है । यह अण्डाकार प्रवाल द्वीप है जिसकी परिधि लगभग 12 मील है और यह ऐसी समुद्री चट्टान से घिरा हुआ है, जो समुद्र के ज्वार से आक्रान्त रहती है । नौरु 31 जनवरी, 1968 को स्वाधीन गणराज्य बना । नौरु के कुल क्षेत्रफल के लगभग 4/5 भाग में फास्फेट वाली चट्टानें हैं । इस देश से निर्यात की एकमात्र वस्तु फास्फेट है ।

राष्ट्रपति: रिने हैरिस।

भारत में दूतावास: नौरु गणराज्य का महावणिज्य दूतावास, एस–327 ...

पनामा

(Republic of Panama) Republica de Panama

राजधानी: पनामा सिटी; क्षेत्रफल: 77,082 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 2.9 मिलियन; भाषा: स्पेनी, अंग्रेजी; साक्षरता: 91%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: बलबोआ; 1 अमरीकी डालर = 1 बलबोआ, प्रति व्यक्ति आय: 5,249 डालर ।

डमरूमध्य जो उत्तरी और दक्षिणी अमरीका को अलग करता है, के दक्षिणी छोर पर पनामा का भू-क्षेत्र पतली पट्टी सा है । इसके सबसे संकरा बिन्दु, जो 50 मील चौड़ा है, पर प्रसिद्ध पनामा नहर के द्वारा अंध महासागर और प्रशान्त महासागर मिलते हैं । इसने 1903 में अपने आपको स्वतंत्र घोषित कर दिया । अंध महासागर और प्रशान्त महासागर को मिलाने वाली पनामा नहर पर नियंत्रण को लेकर पनामा और संयुक्त राज्य अमरीका में लम्बे समय से विवाद चलता रहा है । 1978 में यह निर्णय लिया गया कि संयुक्त राज्य अमरीका इस शताब्दी के अंत तक अपने सभी दावे पनामा के पक्ष में त्याग देगा।

यहां की मिट्टी बड़ी उपजाऊ है, लेकिन लगभग आधी भूमि पर खेती नहीं होती । यहां की मुख्य फसलें केला, काफी और अनाज हैं । उद्योग मुख्यतः चीनी और एल्कोहलिक पेय पदार्थों पर केन्द्रित हैं समुद्री केकड़ा और झींगे की जाति के समुद्री जन्तु पकड़ना भी यहां का एक महत्वपूर्ण व्यवसाय है । यहां इमारती लकड़ी विशेष रूप से महागनी के बड़े भंडार हैं ।

राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री: सुश्री मिरेया मोसकोसो।

भारत में दूतावास: पनामा का दूतावास, सी-321, डिफेन्स कोलोनी, नई दिल्ली-110 024, फोन: 4642518; फैक्स: 4642350.

वाणिज्य दूतावास: मेकर आरकेड, कफी परेड, 53, ग्राउन्ड फ्लोर, मुंबई-400 005, फोन: 21-5585

Indian Mission in Panama: Embassy of India, No.10325, Avenida Federico Boyd y Calle 51, Bella Vista, Apdo 8400, Panama 7, Republic of Panama. Tel. 00-507-2642416; Fax: 00-507-2642855.

पराग्वे

(Republic of Paraguay) Republica del Paraguay

राजधानी:असनस्यान;क्षेत्रफल: 406,752 वर्ग किलोमीटर, जनसंख्या: 5.5 मिलियन; भाषा: स्पेनी और गुआरानी, साक्षरता 92%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: गुआरानी; 1 अमरीकी डालर = 3,311 गुआरानी; प्रति व्यक्ति आय: 4,288 डालर।

पराग्वे दक्षिणी अमरीका के भूमिबद्ध देशों में से एक है जो बोलविया, ब्राजील और अर्जेंटाइना से घिरा है । पराग्वे नदी पर लगभग 1800 मील तक नौका-चालन किया जाता है और स्टीमर असंसिओन तक आते हैं जो देश का मुख्य पोर्ट है। यह 1811 में स्वतंत्र हुआ ।

यहां की लगभग 75 प्रतिशत आबादी कृषि तथा उसके सहयोगी धंधों में लगी है जिनमें पशु-पालन प्रमुख धंधा है । सबसे महत्वपूर्ण कृषि फसलें मक्का, कपास, सोयाबीन, तम्बाकू और फल हैं । राज्य में इमारती लकड़ी के अपार स्रोत हैं । यहां खाद्य उत्पाद, बनी लकड़ी, टाले व चमड़ा हैं ।

राष्ट्रपति: लुइस कोंजालेज माकि।

Indian Mission in Paraguay: Honorary Consulate General of India, Avda. Eusebio Ayale 3663 Km 4, Asuncion, Paraguay. Tel: 00-595-21-660111; Fax: 00-595-21-660115.

पलाऊ

(Republic of Palau or Belau)

राजधानी: कोरोर; क्षेत्रफल: 1,632 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 18,467; भाषा: पलाउन और अंग्रेजी; साक्षरता: 98%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: यू.एस. डालर; प्रति व्यक्ति आय: 5000 डालर।

पश्चिमी प्रशांत में एक आर्कीपेलागो। 26 आइसलैंड और 300 आइसलेट्स से बना हुआ है। 1914 में जापान ने इस पर कब्जा कर लिया था। जो कि 1947 में यू.एन. ट्रस्ट टेरिटोरी आफ दी पैसिफिक आइसलैंड का भाग बन गया और प्रशासन संयुक्त राज्य अमरीका के पास दे गया। 1981 में स्वायत्त गणराज्य की घोषणा की और 1992 में स्वतंत्र राष्ट्रीय राज्य बन गया। एक अक्तूबर 1994 में स्वतंत्र गणराज्य हो गया। 15 दिसंबर 1994 में यह संयुक्त राष्ट्र का 185 वां सदस्य बना। पूर्वी बाबेलथुआप में नयी राजधानी का निर्माण हो रहा है।

प्राकृतिक स्रोत: मछली पालन, मुख्य रूप से टूना।

पर्यटन प्रमुख उद्योग है। प्रति वर्ष लगभग 40,000 पर्यटक आते हैं।

राष्ट्रपति: कुनिवो नाकामुरा।

पाकिस्तान

(Islamic Republic of Pakistan) Islam-i-Jamhuriya-e-Pakistan

राजधानी: इस्लामाबाद; क्षेत्रफल 796,095 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या 150.6 मिलियन; भाषा: उर्दू (शासकीय), पंजाबी, सिंधी, पश्तो, बलूची, अंग्रेजी; साक्षरता: 38%; धर्म: इस्लाम; मुद्रा: रुपया; 1 अमरीकी डालर = 51.65 रुपया; प्रति व्यक्ति आय: 1,715 डालर ।

इस्लामिक रिपब्लिक आफ पाकिस्तान, अब केवल पश्चिमी पाकिस्तान रह गया है । यह मूल रूप से 1947 में ब्रिटिश भारत को भारत तथा पाकिस्तान, दो राज्यों में विभाजित करके अस्तित्व में आया । पाकिस्तान की सीमाएं अफगानिस्तान, ईरान, भारत और चीन से मिलती हैं ।

पाकिस्तान की अर्थ-व्यवस्था का मूलाधार कृषि है । गेहूं, गन्ना, कपास और चावल यहां की मुख्य फसलें हैं । परंतु संसाधनों तथा विदेशी दान और सहायता से उद्योगों का विकास किया जा रहा है ।

मई 28 को पाकिस्तान ने पांच परमाणु बम परीक्षण किया और दो दिन बाद एक और परमाणु बम परीक्षण किया।

[illegible]

गवर्नर: जन. वास्को रोजा वियेरा ।

अजोरेरा आइसलैंड: क्षेत्रफल: 2248 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 238,000; एटलांटिक महासागर में स्थित, 1976 में आंशिक स्वायत्ता मिली।

दी मदेरिया आइसलैंड: क्षेत्रफल: 795 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 4,37,312; उत्तरी पूर्वी अफ्रीका के समुद्र तल पर स्थित। 1976 से स्वायत्ता मिली हुई है।

पेरु

(Republic of Peru) Republica del Peru

राजधानी: लीमा; क्षेत्रफल: 1,281,215 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 27.1 मिलयन; भाषा: स्पेनी और क्वेचुआ; साक्षरता: 89%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: सोल; 1 अमरीकी डालर = 3.40 सोल्स; प्रति व्यक्ति आय: 4,282 डालर ।

पेरु दक्षिणी अमरीका के प्रशान्त तट पर है । एण्टीस पर्वत शृंखला पेरु पर आच्छादित हैं यहां एन्डियन पर्वतों पर संसार के अति दुर्लभ पशुओं की कुछ नस्लें पाई जाती हैं जिनका अब संरक्षण किया जा रहा है । इनमें विकुना (उंट की नस्ल का अमरीकी स्तनपोशी पशु) इलामा, अल्पाका तथा संकर नस्ल का पेकोविकुना शामिल हैं ।

पेरु मूल रूप में प्रसिद्ध इन्का (रेड इंडियन) साम्राज्य की राजधानी थी । यह 28 जुलाई 1821 में स्वतंत्र हुआ। अप्रैल 97 में जापानी राजदूत के घर में मार्क्सवादियों द्वारा 126 दिनों से बंधक बनाये गये 71 व्यक्तियों को लीमा में पेरु की सेना ने धावा बोल कर सफलतापूर्वक छुड़ा लिया।

यहां के मुख्य कृषि उत्पादन कपास, ऊन, चीनी, काफी, चावल और आलू हैं । मक्का, जिसका जन्मस्थान पेरु है, रेड इंडियनों का मुख्य भोजन है जो एल्फा उल्फा की खेती भी करते हैं । मत्स्य भोज्य उत्पादकों में सबसे महत्वपूर्ण है । देश खनिजों से भरपूर है और कुछ खानों में तो इनका शासकों के समय से आज तक खनन जारी है । पेरु चांदी का प्रमुख उत्पादक है । विश्व में तांबे की सबसे बड़ी खानों में से कुछ पेरु में हैं । यहां के मुख्य निर्यात कपास, मत्स्य उत्पाद, पेट्रोलियम, चीनी और लौह अयस्क हैं ।

राष्ट्रपति: एलबर्टो फुजिमोरी; प्रधानमंत्री: एलबर्टो बुस्टामन्टे बेलाउण्डे।

भारत में दूतावास: पेरु का दूतावास, डी–6/13 सी, वसंत विहार, नई दिल्ली–110057; फोन: 6143937, फैक्स: 6146427

वाणिज्य दूतावास: 6–के डुबाश मार्ग, मुंबई–400 023; फोन: 2871084

Indian Mission in Peru: Embassy of India, Avenue Salaverry, 3006, Magdalena del Mar, Lima, 17, Peru. Tel: 00-51-1-2616006, Fax: 00-51-1-4610374.

पोलैण्ड

(Republic of Poland) Rzeczospolita Polska

राजधानी: वारसा; क्षेत्रफल: 3,12,677 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 38.6 मि... 99%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: ज्लोटी; 1 अमरीकी डालर = 4.03 ज्लोटी; प्रति व्यक्ति आय: 7,619 डालर ।

मध्य यूरोप के ऊपरी भाग के पीपुल्स रिपब्लिक के रूप में पोलैण्ड इतिहास का प्रारंभ ईसा की दसवीं शताब्दी से प्रारंभ होता है । अठारहवीं सदी में इसका विभाजन हुआ और यह 1918 में स्वतंत्र हो गया । 1939 में नाजियों के पोलैण्ड पर आक्रमण से द्वितीय विश्व युद्ध का प्रारंभ हुआ । 1944 में यह देश पुनः मुक्त, कराया गया ।

नोबेल पुरस्कार विजेता लेक वालेसा के नेतृत्व में सालिडेरिटी आंदोलन की साम्यवाद तानाशाही के 1989 में हुए पतन में बड़ी भूमिका रही है । 1990 में साम्यवादी दल भंग कर दिया गया। 1991 में सरकार ने देश में सर्वाधिक महत्वाकांक्षी निजीकरण कार्यक्रम की शुरुवात की थी । 1993 मई में प्रधानमंत्री हाना सुचोक की सरकार अविश्वास मत में गिर गयी और राजनीतिक बिखराव पौलेंड में आ गया, सितंबर 1993 में चुनाव हुए और साम्यवादियों को विजय मिली ।

जुलाई 96 में पोलैंड आर्गनाइजेशन फार इकोनोमिक कोआपरेशन एंड डेवलेपमेंट का 28वां सदस्य बना।

जुलाई 97 में अतिवृष्टि से पौलैंड में भारी तबाही हुई। यह तबाही शताब्दि की सबसे भयंकर थी।

यहां की 32 प्रतिशत जनता कृषि कार्यों में लगी है। यहां की मुख्य फसलें राई, गेहूं, जई, आलू, चुकन्दर, तम्बाकू और फ्लैक्स हैं। देश में खनिज सम्पदा के विशाल भंडार हैं, विशेष रूप से कोयले के। इसके अलावा लोहा, लिग्नाइट, प्राकृतिक गैस, सीसा और जस्ता भी पाया जाता है । कपड़ा, रासायनिक पदार्थ और धातु–कर्म यहां के प्राचीन स्थापित उद्योग हैं । नए उद्योगों में मोटरगाड़ी, ट्रेक्टर, भारी मशीनें, जहाज निर्माण और वायुयान निर्माण उद्योग शामिल हैं । यहां के मुख्य निर्यात जलपोत, कोयला, स्टील तथा कपड़ा है ।

राष्ट्रपति: अलक्सान्डर क्वासिवेस्कि; प्रधानमंत्री: जर्झी बुजेक।

भारत में दूतावास: पौलैंड का दूतावास 50 एम, शान्ति पथ, चाणक्यपुरी, नईदिल्ली–110021; फोन: 6889211; फैक्स 6871914.

वाणिज्य दूतावास: मुंबई मानवी एपार्टमेंट्स 36, बी.जी. खेर मार्ग, मुंबई: 400 006; फोन: 3633863. 3633376

Indian Mission in Poland: *Embassy of India, Rejtana 15 (Flats 2 to 7), Mokotow, 02-516 Warsaw, Poland. Tel: 00-48-22-8495800, Fax: 00-48-22-8496705.*

फ्रांस

(French Republic) Republique Francaise

राजधानी: पेरिस, ... वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 59.4 ... 99%; धर्म: ईसाई; ... प्रति व्यक्ति ...

देशों स्पेन, जर्मनी और इटली के बीच में स्थित है। नेपोलियन की जन्मस्थली कोर्सिका द्वीप फ्रांस का एक भाग है।

पुराने जमाने में फ्रांस में राजतंत्र था। फ्रांस की क्रान्ति (1789-1793) ने यहां गणतंत्र स्थापित किया। उसके बाद यहां गणतंत्रात्मक और शाही शासन व्यवस्था एक-दूसरे के बाद चलती रहीं। 1958 में चार्ल्स डिगाल के नेतृत्व में यहां पांचवें गणतंत्र की स्थापना हुई।

6 सितंबर 95 को फ्रांस ने परमाणु बम के परीक्षण किये। दुनिया भर में इसके विरोध के कारण जनवरी 96 में फ्रांस ने परीक्षण बंद करने की घोषणा की।

97 में विधायिका के चुनावों में साम्यवादी गठबंधन को सफलता मिली।

कृषि उत्पादन के संबंध में फ्रांस आत्मनिर्भर है और बड़ी मात्रा में कृषि उत्पादनों का निर्यात करता है। निर्मित वस्तुओं में सबसे महत्वपूर्ण हैं- रसायन, सिल्क, सूती वस्त्र, मोटरगाड़ियां, विमान, पोत, अतिसूक्ष्म नाप-तोल की मशीनें, इलेक्ट्रानिक उपकरण, इत्र और शराब। पिछले 20 वर्षों के दौरान शहरी विकास और तकनीकी प्रगति के फलस्वरूप फ्रांस के निवासियों का दैनिक जीवन बहुत बदल गया है।

विदेश विभाग: फ्रेंच गयाना, गुआडिलोप, मार्टिनिक्व, रीयुनियन।

विदेशी क्षेत्र: फ्रेंच पालीनेशिया, फेंच सदर्न और एंटार्टिक लैंड्स, न्यू कैलेडोनिया और आधीन क्षेत्र।

टेरिटोरियल कलेक्टिव्ज: सेंट पियरो और मिक्वेलोन; मेयोटे।

राष्ट्रपति: जैक शिराक प्रधानमंत्री: लियोनेल जासपिन

भारत में दूतावास फ्रांस का दूतावास, 2/50 ई शान्ति पथ, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110 021; फोन: 118790; फैक्स 6872305.

वाणिज्य दूतावास: मुंबई: दत्ता प्रसाद बिल्डिंग, दूसरी मंजिल, नौरोजी गामाडिया क्रास रोड, मुंबई-400 026 फोन: 4949808.

कलकत्ता: 23/6, पार्क मैशन्स, कलकत्ता-700 016; फोन: 29-0978

चेन्नई: 202, प्रेस्टीज पोइंट, 16 हडोस रोड, चेन्नई-600 006; फैक्स: 473177.

पाण्डिचेरी: रुइडेला मैरीन, पाण्डिचेरी-605 001

Indian Mission in France: Embassy of India, 15, Rue Alfred Dehodencq, 75016 Paris, France. Tel. 00-33-1-40507070, Fax: 00-33-1-40500996.

फिजी

(Republic of Fiji)

राजधानी: सुवा; क्षेत्रफल: 18,376 वर्ग किलोमीटर, जनसंख्या: 8,12,918; भाषा: अंग्रेजी और फिजी की भाषा; साक्षरता: 91%; धर्म: ईसाई, हिन्दू एवं इस्लाम; मुद्रा: डालर; 1 अमरीकी डालर = 1.97 डालर; प्रति व्यक्ति आय. 4,231 डालर।

फिजी में लगभग 300 द्वीप हैं। ये न्यूजीलैंड से 1100 मील उत्तर में है। इन द्वीपों में सबसे बड़ा द्वीप विति लेवु है, जो इस देश के सब द्वीपों के कुल क्षेत्रफल के आधे से बड़ा है। इसी द्वीप पर इस देश की राजधानी सुवा है। फिजी आस्ट्रेलिया, न्युज़ीलैंड और उत्तरी अमरीका के बीच मुख्य मार्ग पर स्थित है और दक्षिणी-पश्चिमी प्रशान्त महासागर में संचार का केन्द्र है।

ये द्वीप 1874 में ब्रिटिश शासन के अधीन आ गए थे। यहां के यूरोपीय गन्ने के खेतों में काम करने हेतु भारतीय मजदूरों को लाने का काम 1879 में आरंभ हुआ। वहां गए सभी भारतीय मज़दूर इन्हीं द्वीपों में स्थायी रूप से बस गए। यहां की आधी जनसंख्या इन्हीं भारतीय मज़दूरों के वंशजों की है।

यहां के मूल निवासी, मेलानेशियन, आबादी का 43 प्रतिशत है और शेष आबादी में यूरोपीय, चीनी व अन्य लोग सम्मिलित हैं। 10 अक्तूबर, 1970 को ब्रिटेन ने फिजी को स्वाधीनता प्रदान कर दी।

फिजी एक विख्यात पर्यटक केन्द्र है मुख्य उत्पाद कृषि से मिलते हैं। कुल निर्यात में 90 प्रतिशत भाग चीनी और नारियल का है। खनन कम है और उद्योग कुछ ही हैं।

अक्तूबर 1987 में सैनिक शासक कर्नल सिटिवेनी रेयुका ने भारतीय प्रवासियों के नेता डा. थिमोकी बवादा के नेतृत्व में निर्वाचित लोकप्रिय सरकार को अपदस्थ करके फिजी को गणराज्य घोषित किया।

अक्टूबर 1987 सेना के कर्नल सटिविनी राबुका ने भारतीय जातीय दल के नेता डा. तिमोची बावादा की लोकप्रिय निर्वाचित सरकार को अपदस्थ करते हुए फिजी को गणराज्य घोषित कर दिया। दिसंबर महीने में एक बार फिर नागरिक सरकार बनी।

स्वदेशी फिजी वासियों के पक्ष में 1990 में एक नया संविधान लागू किया गया। 70 सदस्यीय संसद में भारतीयों के लिये 27 सीटें रखीं गईं। राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री पद स्वदेशी फिजी वासियों के लिये सुरक्षित रखे गये। जुलाई 97 में रंगभेद रहित संविधान जिसमें भारतीयों की राजनीतिक शक्ति पर लगी रोक को हटाने का प्रावधान था को स्वीकृत दी गई।

लेबर पार्टी के नेता महेंद्र चौधरी प्रथम भारतीय जाति के नेता हैं जिन्हें 1999 में प्रधानमंत्री बनाया गया।

मई 19 को एक व्यवसाई जार्ज स्पीट कुछ बंदूकधारियों के साथ संसद में घुस कर प्रधानमंत्री महेंद्र चौधरी और उनके मंत्रिमंडल के सहयोगियों को बंधक बना लिया। उसकी मांग थी कि फिजी के मूल लोगों के ही हाथ में सत्ता होनी चाहिये। सेना ने मार्शल ला घोषित कर दिया। दो महीनों के इस नाटक के बाद यहां पर सत्ता का हस्तांतरण हुआ। और दो महीने की कैद के बाद प्रधानमंत्री चौधरी व उनके साथी रिहा हुए। महेंद्र चौधरी अगस्त महीने में भारत की यात्रा पर आये।

राष्ट्रपति: रातू जोसेफा इलोयिलो; प्रधानमंत्री: लैसेनिया बकार्से।

Mission in Fiji High Commission of India, Suite No. 270, Central Suva, Suva, Fiji Islands, P.O. Box No. 471, Suva, Fiji Islands. Tel: 00-679-301125; Fax: 00-679-301032.

फिनलैंड

(Republic of Finland)/Suomen Tasavalta

राजधानी:हेलसिंकी:क्षेत्रफल: 338,000 वर्ग किलोमीटर: जनसंख्या: 5.2 मिलियन; भाषा: फिनिश एवं स्वीडिश; साक्षरता: 100%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: मार्का; 1 अमरीकी डालर = 5.55 मार्का; प्रति व्यक्ति आय: 20,847 डालर।

फिनलैंड बाल्टिक सागर के तट पर स्थित है और पहले यह रूसी साम्राज्य का एक भाग था। 1917 में इसे स्वाधीनता मिली।

मार्च 1995 के चुनावों में सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी को सत्ता मिली। फिनलैंड ने 1 जनवरी 1996 को ई.यू. की सदस्यता ली।

और कागज़ की लुगदी उद्योग बहुत विकसित हैं। अन्य उद्योग हैं पोत निर्माण, धातु वस्त्र, चमड़ा और रसायन। फिनलैंड के पास व्यापारिक पोतों का विशाल समुद्री बेड़ा है। पोतों का कुल भार 1,649,687 टन (1985)।

फरवरी के राष्ट्रपति चुनावों में पहली बार फिनलैंड में महिला राष्ट्रपति निर्वाचित हुईं।

राष्ट्रपति:सुश्री टार्जा हालोनेन;प्रधानमंत्री:पावो लिप्पोनेन।

भारत में दूतावास: फिनलैंड का दूतावास,ई-3, न्याय मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110 021; फोन: 6115258; फैक्स: 6886713

*वाणिज्य दूतावास:*मुंबई: 40 ए, पेडर रोड, मुंबई-400 026, फोन: 3863371, फैक्स: 3873680.

कलकत्ता: कलैण्ड हाउस, 6 वीं मंजिल, चित्रकूट, 230 ए, आचार्य जगदीश चन्द्र रोड, कलकत्ता-700 020, फोन: 2474757, फैक्स: 2401953.

चेन्नई: 742, अन्न सालई, चेन्नई: 600 002, फोन: 8523622,फैक्स: 8521253

Indian Mission in Finland: Embassy of India, Satamakatu 2 A 8, 00160, Helsinki, Finland. Tel: 00-358-9-608927; Fax: 00-358-9-6221208.

फिलिस्तीन

फिलिस्तीन मुक्ति मोर्चे (पी.एल.ओ) के अध्यक्ष यासर अराफात ने 15 नवंबर 1988 को अल्जीरिया में स्वतंत्र फिलिस्तीन की ऐतिहासिक घोषणा की थी। उनकी घोषणा के राज्य की सीमाएं गाजा पट्टी और रिवर जोर्डन के पश्चिमी किनारे तक थी। फिलिस्तीन का मुख्यालय ट्यूनिश में 1994 में यासर अराफात के जेरिको आने तक रखा गया।

फिलिस्तीनी अरबों की राष्ट्रीय प्रेरणा के रूप में पी.एल.ओ की स्थापना 1964 में की गयी थी। 1974 में संयुक्त राष्ट्र ने इसे स्थायी निरीक्षक ओहदा दिया और 1976 से पी.एल.ओ अरब लीग का स्थायी सदस्य बन गया।

40 वर्षों के अविरल संघर्ष के बाद अस्तित्व में नये राष्ट्र को भारत समेत लगभग 80 देशों ने तुरंत ही मान्यता दे दी।

हालांकि इजराइल की दक्षिण पंथी लिकुड ब्लाक की सरकार और वाम दृष्टिकोण के लेबर पार्टी ने यिटझाक शमिर – प्रधानमंत्री के साथ पी.एल.ओ. को फिलिस्तीन जनता का वैधानिक प्रतिनिधि मानने से इंकार कर दिया।

44 वर्षीय अरब इज़राइल संघर्ष में फिलिस्तीनियों की मांग वेस्ट बैंक और गाजा पट्टी में राजधानी जेरूसलम को लेकर स्वशासन की रही है।

1993 अगस्त में एक बड़ा ऐतिहासिक मोड़ आया जब इज़राइल ने फिलिस्तीनी स्वशासन को मान्यता दे दी। इजराइल गाजा पट्टी और वेस्ट बैंक से हट जायेगा। सितंबर के पूर्वार्ध में पी.एल.ओ. और इज़राइल ने एक दूसरे को मान्यता देने की घोषणा की। 13 सितंबर को ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर किये गये इस ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर वाशिंगटन में किये गये। 13 मई 1994 को इजराइल ने जेरिको को फिलिस्तीनी अधिकारियों को सौंप दिया और 5 जुलाई को अराफात ने यहां पर फिलिस्तीनी सरकार की स्थापना की।

जनवरी 96 में राष्ट्रपति पद के चुनावों में श्री अराफात को 82% मत मिले व वे भारी बहुमत से निर्वाचित राष्ट्रपति बने।

अमरीका के राष्ट्रपति क्लिंटन की मध्यस्था में बातचीत का दौर शुरु हुआ। जुलाई 97 में जेरूसलम में सुसाइड बाम्बिंग के बाद इजराइल ने बातचीत का दौर बंद कर दिया।

यासर अराफात ने फरवरी 98 में महमूद अब्बास को अपना उत्तराधिकारी बनाया।

4 मई 1999 को स्वतंत्र फिलीस्तीनी राज्य की घोषणा की जानी थी लेकिन इजराइल में तुरंत बाद होने वाले चुनावों और वाई समझौता जिस पर अभी बातचीत जारी थी के लागू न होने के कारण यह घोषणा नहीं की जा सकी।

पोप जान पाल द्वितीय ने फिलीस्तीन की यात्रा पर अपने वक्तव्य में स्वतंत्र फिलीस्तीन राज्य पर सहमति जताई।

भारत में दूतावास: फिलिस्तीन राज्य का दूतावास, सी-1/27 वसंत विहार, नई दिल्ली-110 057 फोन 6146605; फैक्स: 6142942

Indian Mission in Palestine: Representative office of India, 182-49, Shurta Street, Al Remal, P.O. Box 1065, Gaza City, State of Palestine. Tel. 00-972-7-2825423, Fax: 00-972-7-2825433

फिलीपीन्स

(Republic of the Philippines) Republika ng Pilipinas

राजधानी: मनीला, **क्षेत्रफल** 299 404 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या 80 3 मिलियन भाषा फिलीपिनो और अंग्रेजी, साक्षरता 95% धर्म ईसाई और इस्लाम मुद्रा:पीसो, 1 अमरीकी डालर = 39 73 पीसो प्रति व्यक्ति आय 3 555 डालर।

फिलीपीन्स एशिया के दक्षिणी पूर्वी तट से 600 मील दूर विषवत् रेखा के उत्तर में 15 अक्षांश पर स्थित है।

फिलीपीन्स 7100 द्वीप पुंज है जिसमें मुख्य द्वीप समूह लुजोन और मिन्डानाओ हैं।

देश के उद्योगों में रबड़ उत्पाद तेल शोधन फल संरक्षण और डब्बा-बंदी आरा-पिसाई कागज नमक, सिगार और सिगरेट सीमेंट उर्वरक प्लाईवुड और लम्बर

कुछ देशों की वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर

देश	वार्षिक वृद्धि दर (%) (1990-99)
1. यमन	4.7
2. अफगानिस्तान	4.5
3. जॉर्डन	3.8
4. ओमान	3.6
5. इजराइल	3.0
6. पाकिस्तान	2.8
7. एरिट्रिया	2.5
8. नेपाल	2.5
9. संयुक्त अरब अमीरात	2.5
10. ब्रुनेई दारुस्सलाम	2.5
11. बहरीन	2.4
12. इराक	2.4
13. फिलिपीन्स	2.3
14. मिस्र	2.0
15. सिएरा लियोन	1.9
16. ईरान	1.9
17. दक्षिण अफ्रीका	1.8
18. भारत	1.8
19. सिंगापुर	1.7
20. बंगलादेश	1.7
21. न्यूजीलैंड	1.5
22. इंडोनेशिया	1.5
23. ब्राजील	1.4
24. अर्जेंटीना	1.3
25. फिजी	1.2
26. फ्रांस	1.2
27. आस्ट्रेलिया	1.1
28. श्रीलंका	1.0
29. अमरीका	0.9
30. स्विट्जरलैंड	0.8
31. नीदरलैंड्स	0.6
32. युगोस्लाविया	0.5
33. जर्मनी	0.4
34. ग्रीस	0.4
35. स्वीडन	0.4
36. डेनमार्क	0.3
37. जापान	0.3
38. यूनाइटेड किंगडम	0.2
39. बेल्जियम	0.2
40. इटली	0.1
41. चेक गणराज्य	0.0
42. पुर्तगाल	0.0
43. कुवैत	-1.3
44. बल्गारिया	-0.6
45. हंगरी	-0.3

स्रोत: वर्ल्ड हेल्थ रिपोर्ट 2000

धातु और कांच के बर्तन, फर्नीचर और कपड़ा चिकित्सा और फार्मेसी पदार्थ, खाद्य पदार्थ तथा पेय पदार्थ सम्मिलित हैं ।

यहां की मुख्य कृषि फसलें चावल, मक्का, चीनी, तम्बाकू, अल्बाका, अनन्नास, नारियल, केले, आम आदि हैं ।

फिलीपीन्स प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर है । यहां लोहा, चांदी, सोना, क्रोमाइट, मैंगनीज और तांबे के वाणिज्यिक भंडार हैं । यहां संगमरमर की खानें तथा घने वन भी हैं तथा इसके क्षेत्रीय समुद्र में मछली पकड़ने की विस्तृत संभावनाएं हैं ।

फर्डिनान्ड मार्कोस 1965 से 86 तक राष्ट्रपति रहे। उनके बाद कोराजान एक्विनो ने यह पद संभाला। वर्ष के अंत में अमरीका ने सुबिक बे नेवल स्टेशन छोड़ दिया।

29 मई 1998 में उपराष्ट्रपति जोसेफ एस्त्राडा 13वें राष्ट्रपति बने। एस्त्राडा सिनेमा जगत के प्रसिद्ध स्टार थे, बाद में वे राजनीति में आ गये।

राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री: जोसेफ एस्त्राडा।।

भारत में दूतावास: एम्बेसी आफ फिलीपीन्स 50-एन न्याय मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110 021; फोन: 4101120; फैक्स: 687 6401.

वाणिज्य दूतावास: मुंबई: इंडस्ट्री हाउस, 159, चर्चगेट रिक्लेमेशन, मुंबई-400 020. फोन: 2020375, 2024792.

कलकत्ता: मर्केन्टाइल बिल्डिंग (दूसरी मंजिल), ब्लाक ई-10, लाल बाजार, कलकत्ता-700 001; फोन: 286962, 2287102.

चेन्नई: आर्टी आरकेट, 86 डा. राधाकृष्णन रोड, चेन्नई: फोन: 2350856, 2351016

Indian Mission in Philippines: Embassy of India, 2190 Paraiso Street, Dasmarinas Village, Makati City, Philippines, P.O. Box No. 2123 MCPO, Makati City, Philippines. Tel: 00-632-8430101; Fax: 00-632-8158151.

बरकिना फासो

राजधानी: ओगाडुगु; क्षेत्रफल: 274,200 वर्ग किलोमीटर, जनसंख्या. 11.9 मिलयन; भाषा: फ्रेंच तथा स्थानीय भाषाएं; साक्षरता: 19%; धर्म: कबीलाई धर्म और इस्लाम; मुद्रा. फ्रैंक सी.एफ.ए.; 1 अमरीकी डालर = 612.79 फैंक सी.एफ.ए; प्रति व्यक्ति आय: 870 डालर।

बरकिना गणराज्य पश्चिमी अफ्रीका में स्थित है और माली, नाइजर, बेनिन, टोगो, घाना और आइवरी कोस्ट से घिरा हुआ है । पहले यह फ्रेंच वेस्ट अफ्रीका का एक प्रान्त था, जिसे अपर वोल्टा कहा जाता था । 1960 में इसे पूर्ण स्वाधीनता मिली । 1984 में इसका नाम बदल कर बरकिना फासो रखा गया।

बरकिना फासो एक कृषि प्रधान देश है और इसकी 80 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है । पशु-पालन का काम काफी तरक्की पर है । मुख्य फसलें हैं- सोरघम, ज्वार-बाजरा रतालू, कपास, चावल, मूंगफली और कैरिटी । उद्योगों के नाम पर स्थानीय दस्तकारियां ही हैं ।

राज्याध्यक्ष: कैप्टन ब्लैजी कोम्पायरे; प्रधानमंत्री: कादे स्तिसयर ओउएगो।

भारत में दूतावास: बरकिना फासो दूतावास, जी-5, आनंद

निकेतन, नई दिल्ली-110 021, फोन: 4671678, 4671679; फैक्स: 4671745

वाणिज्य दूतावास: कलकत्ता: 186 शरत बोस रोड, कलकत्ता-700 029, फोन: 46-1164

Indian Mission in Burkina Faso: Embassy of India, No. 167, Rue Joseph Badoua, B.P. 6648, Ouagadougou-01, Burkina Faso. Tel:00-226-312009; Fax:00-226-312012

बारबडोस

राजधानी: ब्रिजटाउन; क्षेत्रफल: 430 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 259,191; भाषा: अंग्रेजी; साक्षरता: 97%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: बारबडोस डालर; 1 अमरीकी डालर = 2.00 बारबडोस डालर; प्रति व्यक्ति आय: 12,001 डालर।

बारबडोस द्वीप कैरेबियन सागर के द्वीपों में सबसे पूर्व में पड़ने वाला द्वीप है। यह दक्षिणी अमरीका के उत्तर-पूर्व में लगभग 400 मील की दूरी पर है। इसे विंडवर्ड द्वीप समूह में सम्मिलित माना जाता है। बारबडोस 30 नवम्बर, 1966 को राष्ट्रमंडल के अन्तर्गत पूर्ण स्वाधीन राज्य बना।

बारबडोस की अर्थ-व्यवस्था में कृषि और पर्यटन का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। देश के कुल निर्यात का 90 प्रतिशत भाग चीनी, शीरा और रम है।

राज्याध्यक्ष: क्वीन एलिजाबैथ द्वितीय; गवर्नर जनरल: क्लीफोर्ड हजबंडज; प्रधानमंत्री: ओवन आर्थर।

Indian Mission in Barbados: Honorary Consulate of India, 91, Cherry Drive, Oxnards, St. James, Barbados. Tel.00-11-246-4380108; Fax: 00-11-246-4245496.

बोस्निया-हर्जेगोविना

(Republic of Bosnia and Herzegovina) Republika Bosna i Hercegovina

राजधानी: सरायेवा; क्षेत्रफल: 51,129 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 3.8 मिलयन; भाषा: सर्बो-क्रोएशियन; साक्षरता: 86%; धर्म: ईसाई एवं इस्लाम; मुद्रा: न्यू युगोस्लाव दीनार; एक अमरीकी डालर = 1.83 न.यू. दीनार; प्रति व्यक्ति आय: 1,690 डालर।

पूर्व युगोस्लाविया संघ का गणराज्य बोस्निया हर्जेगोविना परम्परागत रूप से बाल्कन की शक्ति का गढ़ समझा जाता रहा है। यहां पर तीन गुटों एवं धर्म (मुस्लिम, कैथोलिक और ऑर्थोडाक्स) के मध्य विस्फोटक स्थिति है।

जाति समुदाय: मुस्लिम स्लाव-43%, सर्ब्स-31%, क्रोट्स-17%, अन्य: 9%।

स्लाव्स ने 7वीं शताब्दी में देश को स्थापित किया था। 1463 में तुर्कों ने बोस्निया को जीत लिया। बर्लिन कांग्रेस (1878) में यह क्षेत्र आस्ट्रो-हंगेरियन प्रशासन को तुर्की साम्राज्य के अंतर्गत दिया गया। 1908 में आस्ट्रो-हंगेरियन द्वारा इस क्षेत्र पर पूर्ण कब्जा कर लेने से अंतर्राष्ट्रीय तनाव बन गया जो बाद में प्रथम विश्वयुद्ध में परिणति हुआ।

क्रोट्स और मुस्लिमों ने 1991 में स्वतंत्रता के लिये मत दिया। फरवरी 1992 में स्वतंत्रता के लिये जनमत संग्रह आयोजित किया गया। एक सर्ब गणराज्य की स्थापना बोस्निया के सर्ब बाहुल्य क्षेत्र में की गयी। जनमत संग्रह का सर्बों द्वारा विरोध करने पर हिंसा एवं युद्ध शुरू हो गया। अप्रैल में गणराज्य की स्वतंत्रता को संयुक्त राज्य एवं यूरोपीय देशों ने मान्यता दे दी। भयानक युद्ध चलता रहा। सर्बों ने हजारों बोस्निया के नागरिकों को मार डाला। बोस्निया का 3 चौथाई हिस्सा सर्बों के आधीन हो गया।

सरायेवो में लोग गोलियों एवं बम के आतंक में जी रहे हैं। जेनेवा व संयुक्त राष्ट्र में शांति वार्ता के बावजूद मारकाट जारी है। मार्च 93 में सर्ब मुस्लिम और क्रोट्स के मध्य एक संघ को बनाने का समझौता हुआ। अगस्त में बोस्निया के विभाजन का प्रस्ताव रखा गया। युद्ध बंद किया गया। अमरीका, ब्रिटेन, रूस, फ्रांस और जर्मनी द्वारा तैयार की गयी शांति योजना पर विचार प्रारंभ हुआ। सर्ब के बंदूकधारियों द्वारा सार्जीवो के बाजार में भारी तबाही करने के बाद नाटो ने सर्बों के अधिकार में बोस्नियन क्षेत्र पर भारी हवाई हमले किये।

सितंबर 1995 में बोस्निया के युद्धरत गुट ने साढ़े तीन वर्षों से चल रहे युद्ध को समाप्त करने के लिये देश के विभाजन करने पर राजी हो गये। एक भाग सर्ब विद्रोहियों के लिये और दूसरा भाग मुस्लिम व क्रोट्स के लिये नियत किया। लेकिन वस्तुत सर्ब जातीय संघर्ष में लगे रहे।

फरवरी 96 में युद्ध समाप्त हुआ और रोम में में एक बैठक में डायटन समझौते पर विश्वास दुहराया गया। समस्या यह आयी युद्ध के कारण देश की तहस-नहस आर्थिक स्थिति को ठीक करने के लिये 5 बिलियन डालर कहां से आयें। मार्च में सरजीवो का एकीकरण हुआ जब पांच सर्ब क्षेत्र मुस्लिम क्रोट्स संघ को दिये गये। जुलाई में संयुक्त राष्ट्र युद्ध अपराध ट्रिब्यूनल ने बोस्नियन सर्ब के राजनीतिक नेता राडोवान काराडजिक के गिरफ्तारी वारंट जारी किये। राडोवान ने बाद में पद से हटने की बात की। सितंबर में संघीय संसद और तीन व्यक्तियों की सामूहिक प्रेसिडेंसी के लिये चुनाव हुए।

बोस्निया के सर्ब, क्रोट्स व मुस्लिम नेताओं ने सेंट्रल बैंक और अंतरिम करेंसी जोकि दोनों भागों के लिये अलग-अलग तैयार की गयी पर सहमति जताई। नाटो का सैन्य दल जो कि यहां पर काम कर रहा था को 98 में हटा लिया गया।

कृषि उत्पाद: गेंहू, मक्का, आलू, प्लम्स, लकड़ी, भेंड आदि।

उद्योग: कपड़ा, लकड़ी, रंग्ज, सीमेंट, विद्युत, कोयला, इस्पात।

राष्ट्रपति: अलिजा इजेटबेगोविक, प्रधानमंत्री: हैरिस सिलाजजिक (मुस्लिम) स्वेटोजार मिहाजलोनिक (सर्ब)

भारत में दूतावास: एम्बैसी आफ बोस्निया एंड हर्जेगोविना, 57, पूर्वी मार्ग, वसंत विहार, नई दिल्ली-110057, फोन: 6147415, फैक्स: 6143042.

बल्गारिया

(Republic of Bulgaria) Republika Bulgaria

राजधानी: सोफिया; क्षेत्रफल: 110,912 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 8.2 मिलयन; भाषा: बल्गेरियन, तुर्की; [illegible]

98% धर्म ईसाई; मुद्रा: लेव; 1 अमरीकी डालर = 1.82 लेव; प्रति व्यक्ति आय: 4,809 डालर।

बल्गारिया की स्थापना 681 ई. में दक्षिणी–पूर्वी यूरोप में हुई थी और 9 सितम्बर, 1944 को यहं समाजवादी गणराज्य स्थापित हुआ ।

4 दशकों के बाद देश में पहला स्वतंत्र चुनाव सितम्बर 1990 में हुआ और 11 सदस्यीय कार्पोरेट प्रेसीडेंसी सत्ता के लिये निर्वाचित हुई ।

अप्रैल 97 में संसदीय चुनावों में रिफार्मिस्ट यूनियन आफ डेमोक्रेटिक फोर्स को भारी बहुमत के साथ विजय मिली।

यहां की मुख्य फसलें हैं– गेहूं, रई, जौ, मक्का, चुकन्दर, जई, आलू और तम्बाकू । मुख्य खनिज कोयला, कच्चा लोहा, तांबा, सीसा और जस्ता हैं ।

राष्ट्रपति : पीटर स्टोयानव; प्रधानमंत्री: ईवान कोस्टोव।

भारत में दूतावास: बल्गारिया के लोकतंत्रीय गणराज्य का दूतावास, ई.पी. 16/7, चन्द्रगुप्त मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन: 6115549; फैक्स: 6871677

Indian Mission in Bulgaria: Embassy of India, 31, Patriarch Evtumi Blvd., Sofia 1000, Bulgaria Tel: 00-359-2-9867672; Fax: 00-359-2-9801289.

बहरीन

State of Bahrain/Dawlat al-Bahrayn

राजधानी मनामा; क्षेत्रफल 669 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या 6,29 090 भाषा अरबी और अंग्रेजी; साक्षरता 85%; धर्म: इस्लाम मुद्रा दिनार, 1 अमरीकी डलर = 0 38 दिनार; प्रति व्यक्ति आय 13111 डलर।

15 अगस्त 1971 को स्वाधीन होने वाला बहरीन एक अरब राज्य है, जिसमें अरब की खाडी के 33 छोटे–छोटे द्वीप सम्मिलित हैं । बहरीन सबसे बडा द्वीप है और इसी के नाम पर इस द्वीप समूह का नाम है । इस देश में स्वाधीन राजतंत्र है ।

पशुपालन, कृषि और मछली पकडने जैसे परम्परागत धंधों के साथ ही बहुत–से आधुनिक उद्योग भी स्थापित हो गए हैं इस राज्य की आय का अधिकाश भाग तेल से प्राप्त होता है । लोगों के रहन–सहन का स्तर बहुत ऊंचा है । माध्यमिक स्तर तक शिक्षा नि:शुल्क है और उच्च स्तर की शिक्षा में छात्रवृतियों के रूप में बड़ी मात्रा में सरकारी सहायता उपलब्ध है ।

अमीर: शेख हमद बिन ईसा अल–खलीफा; प्रधानमंत्री: शेख खलीफा बिन सुलमान अल–खलीफा ।

वाणिज्य दूतावास: पांचवी मंज़िल, मेकर टावर, एफ कफ परेड रोड़, कोलाबा, मुंबई–400 005, फोन: 2185856; फैक्स: 2188817.

धर्म: ईसाई; मुद्रा: बहामी डालर; 1 अमरीकी डालर = 1 बहामी डालर; प्रति व्यक्ति आय: 14,614 डालर ।

बहामाज़ राज्य फ्लोरिडा के दक्षिण–पूर्वी तट से दूर स्थित एक द्वीप समूह है । इसमें 700 से अधिक द्वीप और 2000 छोटे द्वीप और चट्टानें हैं । केवल 30 प्रतिशत द्वीपों में आबादी है ।

सबसे बड़ा द्वीप एंड्रोस है किन्तु सबसे अधिक आबादी वाला द्वीप न्यू प्राविडेन्स है । राजधानी नसाऊ, न्यू प्राविडेन्स द्वीप पर ही है । 75% जनसंख्या नीग्रो है, शेष यूरोपीय हैं ।

बहामाज़ को स्थानीय स्वशासन 1964 में मिला और स्वाधीनता 1973 में मिली ।

5 से 14 वर्ष की आयु के बीच वाले बच्चों के लिए शिक्षा नि:शुल्क और अनिवार्य है ।

पर्यटन मुख्य उद्योग है और मछली पकड़ना मुख्य धंधा है । फल और सब्जियां भी पैदा होती हैं ।

गवर्नर जनरल: ओरविले टेणक्वस्ट; प्रधानमंत्री: हुबर्ट इंग्राहम।

बंगलादेश

(People's Republic of Bangladesh; Gana Prajatani Bangladesh)

राजधानी: ढाका; क्षेत्रफल: 148,393 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या 128.1 मिलियन; भाषा: बंगाली, चकमा और माघ; साक्षरता: 38%; धर्म: इस्लाम, हिंदू, बौद्ध, ईसाई; मुद्रा: टका; 1 डालर = 49.50 टका; प्रति व्यक्ति आय: 1,361 डालर ।

बंगलादेश तीनों ओर से भारत से घिरा हुआ है । इसके दक्षिण–पूर्व में बर्मा है । इसकी भूमि सीमाएं भारत और बर्मा से मिलती है । बंगलादेश 1971 में एक स्वाधीन देश के रूप में अस्तित्व में आया ।

अर्थ–व्यवस्था मुख्यत: कृषि पर आधारित है । चावल सबसे मुख्य खाद्यान्न फसल है । बंगलादेश संसार में जूट का सबसे बडा उत्पादक है, संसार में पैदा होनेवाले संपूर्ण जूट का 80 प्रतिशत इसी देश में पैदा होता है । उद्योगों की दृष्टि से बंगलादेश एक पिछड़ा हुआ देश है । प्रमुख औद्योगिक उत्पादन हैं– वस्त्र, चीनी, जूट, चाय, काली–मिर्च, उर्वरक, प्राकृतिक गैस, बिजली, इस्पात, सिले सिलाए कपडे, तम्बाकू, रबर, रसायन और मशीनें ।

राष्ट्रपति: शहाबुदीन अहम्मद, प्रधानमंत्री: शेख हसीना बजाद।

भारत में दूतावास: बंगलादेश का हाई कमीशन, 56–महात्मा गांधी रोड, लाजपत नगर–III, नई दिल्ली–110 024; फोन: 6834668; फैक्स: 6840596.

[illegible]रुण्डी

[illegible]epublic of Burundi)-Republikay' Uburundi

राजधानी: बुजुमबुरा; क्षेत्रफल: 27,834 वर्ग किलोमीटर; [illegible]नसंख्या: 6.1 मिलयन; भाषा: फ्रेंच और किरुण्डी; [illegible]क्षरता: 35%; धर्म: कबीलाई और ईसाई; मुद्रा: बुरुण्डी [illegible]क; 1 अमरीकी डालर = 588.31 बुरुण्डी फ्रेंक; प्रति [illegible]क्ति आय: 570 डालर ।

बुरुण्डी गणराज्य पूर्वी अफ्रीका में एक छोटा-सा राज्य [illegible] । बुरुण्डी । जुलाई 1962 को स्वाधीन हुआ । इससे [illegible]हले यह बेल्जियम के अधीन राष्ट्र संघ के न्यस्त राज्य क्षेत्र रवाण्डा-बुरुण्डी का एक भाग था ।

यहां की जनसंख्या में हुटु या बहुटु कबीले के लोग, तुत्सी या वातुत्सी लोग और त्वा या बटवा पिगमी लोग हैं । अफ्रीका का बहुल आबादी और निर्धनतम् राष्ट्र महाद्वीप के भयंकरतम आदिवासी युद्ध का साक्षी रहा है। 1972-73 के हुटु विद्रोहियों के असफल प्रयास में 10,000 तुत्सी और 1,50,000 हुटु मारे गये थे। 1980 में तुत्सी बहुमत के साम्राज्य ने जातीय विद्वेश को दूर करने का संकल्प किया। जून 1993 में हुए पहले लोकतंत्रीय चुनावों में हुटु समुदाय के सीप्रियन एनटारियामिरा प्रेसिडेंट निर्वाचित हुए। अप्रैल 1994 में सीप्रियन अपने पड़ौसी रुआंडा के राष्ट्रपति के साथ एक विद्रोह में मार दिये गये। एमनेस्टी इंटरनेशनल के अनुसार जातीय हिंसा में लगभग 1,00,000 लोग मारे गये और 7,00,000 लोग निर्वासित हो गये।

अर्थ-व्यवस्था कृषि पर आधारित हैं । कसावा और शकरकंद प्रमुख खाद्य फसलें हैं और काफी प्रमुख व्यापारिक फसल है ।

राष्ट्रपति : मेजर. पीरी बयोया।

ब्राज़ील

(Federative Republic of Brazil) Republica Federativa do Brasil

राजधानी: ब्रासीलिया; क्षेत्रफल: 8,511,965 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 170.1 मिलयन; भाषा: पुर्तगाली, अंग्रेजी, जर्मन, इटालियन; साक्षरता: 85%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: कुजैरो रियाल; 1 अमरीकी डालर = 1.92 कुजैरो रियाल; प्रति व्यक्ति आय: 6,625 डालर ।

क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों दृष्टि से ब्राज़ील दक्षिणी अमरीका का सबसे बड़ा देश है । यह दक्षिणी अमरीका के लगभग मध्य में स्थित है । इस राज्य का अधिकांश भाग उष्णकटिबंध में पड़ता है । यह घने जंगलों और विशाल नदियों का देश है । अमेज़न और साओ फ्रांसिसको देश के [illegible] की नदियां हैं ।

ब्राज़ील की आधी से अधिक जनसंख्या इस समय शहरों में रहती है और ये शहर कुल राष्ट्रीय उत्पादन में लगभग [illegible] प्रतिशत योगदान करते हैं । सबसे महत्वपूर्ण शहर ये हैं- [illegible], रियो डि जनेरो, वेलो होरिजोन्टे, रिसाइफ, [illegible] और ब्रासीलिया । ब्रासीलिया आधुनिक भवन-निर्माण कला और नगर नियोजन का उत्कृष्ट नमूना है और इसे 21 अप्रैल, 1960 को राजधानी घोषित किया गया ।

ब्राजील के प्रमुख उद्योग-पोत निर्माण, मोटरकार, वस्त्र, खाद्य वस्तु, धातु एवं रसायन-साओ पौलो में केन्द्रित हैं । ब्राजील संसार में काफी, केले, कसावा और गन्ने का सबसे बड़ा उत्पादक है और संतरे, मक्का और कोकोआ के उत्पादन के संबंध में इसका स्थान संसार में दूसरे नम्बर पर है ।

ब्राजील के निर्यात की प्रमुख वस्तुएं हैं - सोयाबीन, चीनी, काफी, कच्चा लोहा, कोकोआ के बीज, मक्का, सीसल और तम्बाकू । ब्राज़ील में लोहे, फास्फेट, यूरेनियम, मैंगनीज, तांबे, कोयले, प्लेटिनम और सोने की खनिज सम्पदा के विशाल भंडार हैं । तेल पर राज्य का एकाधिकार है । फोनोग्राफ रेकार्ड और इन्सुलेशन के काम में इस्तेमाल होने के कारण लाखों का उत्पादन राज्य के एकाधिकार में है ।

1980 में ब्राज़ील विश्व की दसवीं आर्थिक शक्ति था। औद्योगिक व आर्थिक विकास में इस्पात, आटोमोटिव्ज, पेट्रोकेमिकल्स और यूटिलिटीज का बड़ा योगदान था। लेकिन इसके बाद बुरे दिन शुरु हो गये। भारी विदेशी कर्जा, बढ़ी हुई कर्ज दरें, तेल के दाम में बढ़ोत्तरी और विश्व मंदी के कारण 1980 से 1992 तक सकल घरेलू उत्पादन में वृद्धि मात्र 1.6% की रही। अगस्त 1992 में ब्राज़ील का विदेशी ऋण 123 बिलियन डालर था और मंदी दर 250 प्रतिशत थी जो कि विश्व में सर्वाधिक थी।

पिछले 25 वर्षों में ब्राज़ील में सबसे बड़ा कच्चे तेल का रिसाव हुआ। सरकारी कंपनी से लगभग 1 मिलयन गैलन कच्चा तेल स्थानीय नदी में बह गया।

राष्ट्रपति: फेर्नान्डो हेनरिक कारडोसो ।

भारत में दूतावास: ब्राज़ील का दूतावास, 8 [illegible] रोड, नई दिल्ली-110 011 फोन: 3017301; फैक्स: 3793684

Indian Mission in Brazil: Embassy of India, SHIS QI 09 Conj. 09 Casa [illegible], Lago Sul, CEP [illegible], Brasilia DF, Tel: 0-55-61-[illegible]; Fax: 0-55-61-[illegible]

बेलारुस

(Republic of Belarus) Respublika Belarus

क्षेत्रफल: 207,600 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 10.3 मिलयन; [illegible]; 99%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: [illegible]; 1 अमरीकी डालर = [illegible]; प्रति व्यक्ति आय: 6,319 डालर ।

[illegible] रूस, [illegible] लातविया, लिथुआनिया, [illegible] से घिरे हैं । [illegible] नाम बेलारुस रखा गया ।

कृषि: [illegible] हेम्प, खाद्यान्न, [illegible]

उद्योग: [illegible] केमिकल फाइबर, कागज, [illegible]

राज्याध्यक्ष: एलेक्जेंडर लुकाशेंकोव, प्रधानमंत्री: विलादिमिर अरमोहसिन (कार्यकारी) ।

भारत में दूतावास: बेलारूस का दूतावास, डी–6/23, वसंत विहार, नई दिल्ली–110 057. फोन: 6151202, 6151203; फाक्स: 6151203.

Indian Mission in Belarus: Embassy of India, Ulitsa Koltsova 4, Block No. 5, Minsk-220090, Belarus. Tel:00-375-17-2629399; Fax: 00-375-17-2629799.

ब्रुनाइ

(Brunei Darussalam) State of Brunei Darussalam Negara Brunei Darussalam

राजधानी: बन्दर सेरी बेगावान; (पहले ब्रुनाई शहर के नाम से प्रचलित) क्षेत्रफल: 5,765 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 322,982; भाषा: मलय, चीनी, अंग्रेजी; साक्षरता: 88%; धर्म: इस्लाम; मुद्रा: ब्रूनाई डालर; 1 अमरीकी डालर = 1.69 ब्रू. डालर; प्रति व्यक्ति आय: 16,765 डालर ।

ब्रूनाई सल्तनत दो मलेशियाई क्षेत्रों सरवाह और सारावाक के बीच में बोर्नियो द्वीप के उत्तर की ओर स्थित है । ब्रूनाई की आधे से अधिक जनसंख्या मलेशियाइयों की है, जो अधिकांश मुसलमान है । यह सल्तनत किसी जमाने में बहुत शक्तिशाली और स्वाधीन थी किन्तु बाद में अंग्रेजों ने इसे अपने साम्राज्य का अंग बना लिया और 1971 में इसे पूर्ण आन्तरिक स्वायत्तता मिली ।

ब्रूनाई के सबसे महत्वपूर्ण संसाधन तेल और प्राकृतिक गैस हैं । इस देश में अधिकांश तेल दूर समुद्र में अम्पा कुओं से निकाला जाता है । मुख्य खाद्य फसल चावल है । अन्य फसलें नारियल, साबू और रबर हैं । रबर का निर्यात होता है । राज्य मे निवेश करने वाली एजेंसी ने 98 में सुल्तान के भाई पर गोलिया चलवाईं।

10 अगस्त 98 को सुल्तान के 24 वर्षीय बेटे को सल्तनत का उत्तराधिकारी घोषित किया गया।

सुल्तान एवं प्रधानमंत्री: मुदा हसानल बोलकिया मुइज्जादिन बदुल्लाह ।

भारत में दूतावास: ब्रुनाई दारुस्सलम हाई कमीशन, ए–42, बसन्त मार्ग, नई दिल्ली–110 057. फोन: 6148340; फैक्स: 6142101

Indian Mission In Brunei: High Commission of India, Simpang 337, Lot No. 14034, Kampong Manggis, Jalan Muara, Bandar Seri Begawan BC3515, Brunei Darussalam. Tel: 00-673-2-339947; Fax: 00-673-2-339783.

बेनिन

Republic of Benin, Republique du Benin

दहोमी था) पश्चिमी अफ्रीका में गिनी की खाड़ी के उत्तर में स्थित है और टोगो, बरकिना फासो, नाइजर और नाइजेरिया से घिरा हुआ है ।

बेनिन, जो पहले फ्रेंच–वेस्ट अफ्रीका का एक प्रान्त था, 1 अगस्त, 1960 को स्वाधीन बना । इस देश में ताकत के बल पर सरकार का तख्ता पलटने की अनेक घटनाएं हुई हैं । 30 वर्षों में पहली बार स्वतंत्र राष्ट्रपति चुनाव 1991 में संपन्न हुए

बेनिन के मुख्य उत्पादन हैं – ताड़ तेल, गिरी, मूंगफली कपास, काफी तम्बाकू ।

राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री: मात्यू केरेकू ।

भारत में दूतावास: आनेररी कांसुलेट जनरल आफ दी रिपब्लिक दी बेनिन, वेस्टर्न हाउस, ओखला इंडस्ट्रियल एस्टेट नईदिल्ली–110020, फोन: 6831048; फैक्स: 684708[illegible]

बेलिज़

राजधानी: बेलमापान; क्षेत्रफल: 22,965 व[illegible] किलोमीटर; जनसंख्या: 0.3 मिलयन; भाषा: अंग्रेजी साक्षरता: 93%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: डालर; 1 अमरीक[illegible] डालर = 2 बे.डालर; प्रति व्यक्ति आय: 4,566 डालर

बेलिज़ मध्य अमरीका का एक गणराज्य है । पहले इसक[illegible] नाम ब्रिटिश हण्डुरास था । इसके पूर्व में कैरीबियन सागर उत्तर–पश्चिम में मैक्सिको और दक्षिण–पश्चिम में ग्वाटेमाल[illegible] है । आरंभ में यह ब्रिटिश उपनिवेश था जिसे 1964 स्वायत्त शासन का अधिकार दिया गया और 1981 में य[illegible] स्वाधीन हुआ । 1973 में इसका नाम बेलिज़ रखा गया इसकी मूल राजधानी बेलिज़ नगर थी, जो 1961 में ए[illegible] चक्रवात (तूफान) में नष्ट हो गई । एक द्वीप पर बसे नग[illegible] बेलमोपान को 1970 में राजधानी बनाया गया ।

इस देश की आधी से अधिक जनसंख्या अंग्रेजी भाषी नी[illegible] लोगों की है जो अधिकांशतया समुद्र तटीय क्षेत्रों में रहे हैं यहां के मूल निवासी रेड इंडियन में मायन्स और केकची है, जो अधिकतर संरक्षित इलाकों में रहते है ।

वन उत्पादन विशेषतया इमारती लकड़ी का निर्यात प्रमुख [illegible] चीनी और संतरा व चकोतरा जैसे फल प्रमुख उत्पादन है

यहां के वन्य जीवों में एक विचित्र जीव–मैंटी (उभय[illegible] स्तनपायी जीव) और कई किस्म के रेंगनेवाले जीव हैं ।

गवर्नर जनरल: कोलविले यांग; प्रधानमंत्री: सैद मुसा

भारत में दूतावास: आनेररी कंसुलेट आफ बेलिज़, ई–8/14, वसंत विहार, नई दिल्ली–110 057; फो[illegible] 6140819; फैक्स: 6141067

Mission in Belize: Honorary Consulte General India, 21, Nargusta Street, Belmopan, Belize, Cen[illegible] America. Tel: 00-501-8-22370; Fax: 00-501-8-20032.

राज्याध्यक्ष: एलेक्जेंडर लुकाशेंकोव, **प्रधानमंत्री:** विलादिमिर अरमोहसिन (कार्यकारी) ।

भारत में दूतावास: बेलारूस का दूतावास, डी-6/23, वसंत विहार, नई दिल्ली-110 057, फोन: 6151202, 6151203; फाक्स: 6151203.

[illegible] Ulitsa Kol [illegible] Tel:00-375-[illegible]

ब्रुनाइ

(Brunei Darussalam) State of Brunei Darussalam Negara Brunei Darussalam

राजधानी: बन्दर सेरी बेगावान; (पहले ब्रुनाई शहर के नाम से प्रचलित) **क्षेत्रफल:** 5,765 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 322,982; **भाषा:** मलय, चीनी, अंग्रेजी; **साक्षरता:** 88%; **धर्म:** इस्लाम; **मुद्रा:** ब्रूनाई डालर; 1 अमरीकी डालर = 1.69 ब्रू. डालर; **प्रति व्यक्ति आय:** 16,765 डालर ।

ब्रूनाई सल्तनत दो मलेशियाई क्षेत्रों सरवाह और सारावाक के बीच में बोर्नियो द्वीप के उत्तर की ओर स्थित है । ब्रूनाई की आधे से अधिक जनसंख्या मलेशियाइयों की है, जो अधिकांश मुसलमान है । यह सल्तनत किसी जमाने में बहुत शक्तिशाली और स्वाधीन थी किन्तु बाद में अंग्रेजों ने इसे अपने साम्राज्य का अंग बना लिया और 1971 में इसे पूर्ण [illegible]

दहोमी था) पश्चिमी अफ्रीका में गिनी की खाड़ी के उत्तर में स्थित है और टोगो, बरकिना फासो, नाइजर और नाइजेरिया से घिरा हुआ है ।

बेनिन, जो पहले फ्रेंच-वेस्ट अफ्रीका का एक प्रान्त था, 1 अगस्त, 1960 को स्वाधीन बना । इस देश में ताकत के बल पर सरकार का तख्ता पलटने की अनेक घटनाएं हुई हैं । 30 वर्षों में पहली बार स्वतंत्र राष्ट्रपति चुनाव 1991 में संपन्न हुए ।

बेनिन के मुख्य उत्पादन हैं – ताड़ तेल, गिरी, मूंगफली, कपास, काफी तम्बाकू ।

राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री: मात्यू केरेकू ।

भारत में दूतावास: आनेररी कांसुलेट जनरल आफ दी रिपब्लिक दी बेनिन, वेस्टर्न हाउस, ओखला इंडस्ट्रियल एस्टेट, नईदिल्ली-110020, फोन: 6831048; फैक्स: 6847080

बेलिज़

राजधानी: बेलमापान; **क्षेत्रफल:** 22,965 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 0.3 मिलयन; **भाषा:** अंग्रेजी **साक्षरता:** 93%; **धर्म:** ईसाई; **मुद्रा:** डालर; 1 अमरीकी डालर = 2 बे.डालर; **प्रति व्यक्ति आय:** 4,566 डालर ।

बेलिज़ मध्य अमरीका का एक गणराज्य है । पहले इसका नाम ब्रिटिश हण्डुरास था । इसके पूर्व में कैरीबियन सागर उत्तर-पश्चिम में मैक्सिको और दक्षिण-पश्चिम में ग्वाटेमाला है । आरंभ में यह ब्रिटिश उपनिवेश था जिसे 1964 [illegible]

राज्याध्यक्ष: एलेक्जेंडर लुकाशेंकोव, **प्रधानमंत्री:** व्लादिमिर अरमोहसिन (कार्यकारी) ।

भारत में दूतावास: बेलारूस का दूतावास, डी–6/23, वसंत विहार, नई दिल्ली–110 057. फोन: 6151202, 6151203; फाक्स: 6151203.

[illegible] ı, Ulitsa Kol [illegible] Tel:00-375-17-2629399; Fax: 00-375-17-2629799.

ब्रुनाइ

(Brunei Darussalam) State of Brunei Darussalam Negara Brunei Darussalam

राजधानी: बन्दर सेरी बेगावान; (पहले ब्रुनाई शहर के नाम से प्रचलित) **क्षेत्रफल:** 5,765 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 322,982; **भाषा:** मलय, चीनी, अंग्रेजी; **साक्षरता:** 88%; **धर्म:** इस्लाम; **मुद्रा:** ब्रूनाई डालर; 1 अमरीकी डालर = 1.69 ब्रू. डालर, **प्रति व्यक्ति आय:** 16,765 डालर ।

ब्रूनाई सल्तनत दो मलेशियाई क्षेत्रों सरवाह और साराबाक के बीच में बोर्नियो द्वीप के उत्तर की ओर स्थित है । ब्रूनाई की आधे से अधिक जनसंख्या मलेशियाइयों की है, जो अधिकांश मुसलमान हैं । यह सल्तनत किसी जमाने में बहुत शक्तिशाली और स्वाधीन थी किन्तु बाद में अंग्रेजों ने इसे अपने साम्राज्य का अंग बना लिया और 1971 में इसे पूर्ण आन्तरिक स्वायत्तता मिली ।

ब्रूनाई के सबसे महत्वपूर्ण संसाधन तेल और प्राकृतिक गैस हैं । इस देश में अधिकांश तेल दूर समुद्र में अपना कुओं से निकाला जाता है । मुख्य खाद्य फसल चावल है । अन्य फसलें नारियल, साबू और रबर हैं । रबर का निर्यात होता [illegible] । राज्य में निवेश करने वाली एजेंसी ने 98 में सुल्तान के [illegible] पर गोलियां चलवाईं ।

10 अगस्त 98 को सुल्तान के 24 वर्षीय बेटे को सल्तनत का उत्तराधिकारी घोषित किया गया।

सुल्तान एवं प्रधानमंत्री: मुदा हसानल बोलकिया मुइज्जादिन वदुल्लाह ।

दहोमी था) पश्चिमी अफ्रीका में गिनी की खाड़ी के उत्तर में स्थित है और टोगो, बरकिना फासो, नाइजर और नाइजेरिया से घिरा हुआ है ।

बेनिन, जो पहले फ्रेंच–वेस्ट अफ्रीका का एक प्रान्त था, 1 अगस्त, 1960 को स्वाधीन बना । इस देश में ताकत के बल पर सरकार का तख्ता पलटने की अनेक घटनाएं हुई हैं । 30 वर्षों में पहली बार स्वतंत्र राष्ट्रपति चुनाव 1991 में संपन्न हुए।

बेनिन के मुख्य उत्पादन हैं – ताड़ तेल, गिरी, मूंगफली, कपास, काफी तम्बाकू ।

राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री: मात्यू केरेकू ।

भारत में दूतावास: आनेररी कांसुलेट जनरल आफ दी रिपब्लिक दी बेनिन, वेस्टर्न हाउस, ओखला इंडस्ट्रियल एस्टेट, नईदिल्ली–110020, फोन: 6831048; फैक्स: 6847080

बेलिज़

राजधानी: बेलमापान; **क्षेत्रफल:** 22,965 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 0.3 मिलियन; **भाषा:** अंग्रेजी; **साक्षरता:** 93%; **धर्म:** ईसाई; **मुद्रा:** डालर; 1 अमरीकी डालर = 2 बे.डालर; **प्रति व्यक्ति आय:** 4,566 डालर ।

बेलिज़ मध्य अमरीका का एक गणराज्य है । पहले इसका नाम ब्रिटिश हण्डुरास था । इसके पूर्व में कैरीबियन सागर, उत्तर–पश्चिम में मैक्सिको और दक्षिण–पश्चिम में ग्वाटेमाला है । आरंभ में यह ब्रिटिश उपनिवेश था जिसे 1964 में स्वायत्त शासन का अधिकार दिया गया और 1981 में यह स्वाधीन हुआ । 1973 में इसका नाम बेलिज़ रखा गया । इसकी मूल राजधानी बेलिज़ नगर थी, जो 1961 में एक चक्रवात (तूफान) में नष्ट हो गई । एक द्वीप पर बसे नगर बेलमोपान को 1970 में राजधानी बनाया गया ।

इस देश की आधी से अधिक जनसंख्या अंग्रेजी भाषी [illegible] लोगों की है जो अधिकांशतया समुद्र तटीय क्षेत्रों में रहते हैं । यहां के मूल निवासी रैड इंडियन में मायन्स और [illegible] है, जो अधिकतर संरक्षित इलाकों में रहते हैं । [illegible]

[illegible] का उत्पादन विशेषतया इमारती लकड़ी का [illegible]

[illegible]

99%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: बल्जियम फ्रैंक; 1 अमरीकी डालर = 37.69 बे. फ्रैंक.; प्रति व्यक्ति आय: 23,223 डालर।

प्राचीन काल में गाल के निवासी बेलजी कहे जाते थे। छः सौ वर्ष ई.पू. में ये लोग राइन नदी पार करके दूसरी ओर आ गए। इन्हीं के नाम पर इस देश का नाम बेल्जियम पड़ा। इस देश का इतिहास बहुत उथल-पुथल वाला रहा है। 1830 में यहां स्वाधीन राजतंत्र स्थापित हुआ। दोनों विश्वयुद्धों के दौरान जर्मनी ने इस पर कब्जा कर लिया, लेकिन युद्ध समाप्त होते होते यह देश पुनः स्वाधीन हो गया।

बेल्जियम यूरोप का सबसे अधिक घनी आबादी वाला देश है। हालांकि मुख्यतः यह एक उद्योग प्रधान देश है किन्तु यहां कृषि और वानिकी का भी महत्व है। यहां की मुख्य उपज है – जई, राई, गेहूं, आलू, जौ और चुकन्दर है। इस देश का एकमात्र महत्वपूर्ण खनिज कोयला है। इस्पात, धातु की वस्तुएं, वस्त्र, शीशा, उर्वरक, चीनी, भारी रसायन आदि यहां के मुख्य उद्योग है। एण्टवर्प संसार का चौथे नम्बर का बड़ा बंदरगाह और संसार का हीरों के व्यापार का सबसे बड़ा केन्द्र है।

भाषाओं में विभिन्नता यहां असंतोष का कारण है। संसद ने केंद्रीय सरकार को तीन क्षेत्रों – वाल्लोयडिया, फ्लाडर्स और ब्रुसेल्स में हस्तांतरित कर दी गई है।

1999 में गाय वरहोफस्टाड्ट की सरकार सत्ता में आई।

राज्याध्यक्ष: किंग एल्बर्ट द्वितीय; प्रधानमंत्री: गाय वरहोफस्टाड।

भारत में दूतावास: रोयाल एम्बैसी आफ बेल्जियम, 50 एन. शान्तिपथ, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110 021; फोन: 6889851; फैक्स: 6885821.

वाणिज्य दूतावास: कलकत्ता: 5/1 ए. यगरफोर्ड स्ट्रीट, कलकत्ता-17; फोन: 476513.

मुंबई: गोरेना 11, एम. सी. दाहुनुकर मार्ग, कंबाला हिल्स, मुंबई-400 025, फोन: 4929202

Indian Mission in Belgium: Embassy of India, 217-Chausse de Vleurgat, 1050 Brussels, Belgium. Tel: 00-32-2-6409140, Fax: 00-32-2-6489638.

बोत्सवाना

(Republic of Botswana)

राजधानी: गैबरोन; क्षेत्रफल: 581,730 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 1.6 मिलियन; भाषा: अंग्रेजी और सेत्स्वाना; साक्षरता: 70%; धर्म: कबीलाई धर्म और ईसाई; मुद्रा: पुला; 1 अमरीकी डालर = 4.56 पुला; प्रति व्यक्ति आय: 6,103 डालर।

बोत्सवाना गणराज्य (पहले इसका नाम बेचुआनालैंड था) दक्षिणी अफ्रीका में स्थित है। इसके दक्षिण और पूर्व में दक्षिण अफ्रीका, पश्चिम में नामीबिया और उत्तर-पूर्व में ज़िम्बाब्वे है। सितम्बर, 1966 में बोत्सवाना स्वाधीन हुआ और तभी से इसका यह नाम पड़ा।

पशु पालन प्रमुख आर्थिक गतिविधि है। मांस प्रमुख निर्यात है। हीरा, मैंगनीज़, एस्बेस्टो, कोयला, तांबा और निकेल प्रमुख खनिज हैं।

राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री: फेस्टस मोगाई।

Indian Mission in Botswana: High Commission of India, Plot 5375, President Drive, Private Bag 249, Gaborone, Botswana. Tel: 00-267-372676, Fax: 00-267-374636.

बोलिविया

(Republic of Bolivia) Republic de Bolivia

राजधानी: लापाज़ (प्रशासनिक) और सुक्रे (न्यायिक); क्षेत्रफल: 1,098,581 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 8.3 मिलियन; भाषा: स्पेनिश, क्युचुआ, अइमारा; साक्षरता: 83%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: दी बोलिवियनो; 1 अमरीकी डालर = 5.87 बोलिवियन डालर; प्रति व्यक्ति आय: 2,269 डालर।

बोलिविया दक्षिणी अमरीका का एक राज्य है, जो एण्डीज़ पर्वत के आर-पार स्थित है। पेरू-बोलिविया सीमा पर टिटिकाका झील है, जो संसार की सबसे ऊंची झील (12,506 फुट) है।

आरंभ में यह "इन्का/साम्राज्य" का एक भाग था। 1825 में इसे स्वाधीनता मिली। दक्षिणी अमरीका के विख्यात स्वतंत्रता सेनानी साइमन बोलिवर के नाम पर इस देश का नामकरण हुआ है। लेटिन अमरीका के अधिकांश राज्यों की ही तरह बोलिविया में भी बलपूर्वक सरकार का तख्ता पलटने की अनेक घटनाएं हुई है।

देश का प्रमुख धंधा कृषि है, जिसमें 70 प्रतिशत जनसंख्या लगी हुई है। खनन सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्योग है। बोलिविया में लगभग 30,000 टन टिन पैदा होता है, जो संसार में टिन के कुल उत्पादन का लगभग 15 प्रतिशत है। दूसरे महत्वपूर्ण खनिज एण्टीमनी और टंगस्टन हैं।

राष्ट्रपति: हुगो बनजर सुरेज।

भारत में दूतावास: न्यूयार्क में स्थित बोलिविया का दूतावास।

Indian Mission in Bolivia: Honorary Consulate General of India, Hansa Ltda, Calle Mercado 1004, Esq Yanacocha, La Paz, Bolivia. Tel: 00-591-2-318081; Fax: 00-591-2-370397.

भूटान

(Kingdom of Bhutan) Druk-yul

राजधानी: थिम्पू; क्षेत्रफल: 46,500 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 0.9 मिलियन; भाषा: डेंग्खा, नेपाली, अंग्रेजी, गुरुंग, असमी; साक्षरता: 42%; धर्म: बौद्ध, हिन्दू; मुद्रा: न्गुलट्रम, भारतीय रुपया भी विधिमान्य मुद्रा है; 1 अमरीकी डालर = 43.49 न्गुलट्रम; प्रति व्यक्ति आय: 1,536 डालर।

भूटान हिमालय में एक पहाड़ी राज्य है। इसके उत्तर में चीन और दक्षिण में भारत है। यहां निरंकुश राजतंत्र है।

मुख्य उद्यम कृषि है। मुख्य उपज चावल, मक्का, ज्वार-बाजरा और मोम, गोंद, कस्तूरी जैसे वन उत्पादन है। यहां से इमारती लकड़ी और फलों का निर्यात होता है।

राज्याध्यक्ष: राजा जिग्मे सिंघी वांगचुक; मंत्रिमण्डल के अध्यक्ष: जिग्मे वाई थिनले।

भारत में दूतावास: शाही भूटानी दूतावास,

राज्याध्यक्ष: एलेक्जेंडर लुकाशेंकोव, प्रधानमंत्री: विलादिमिर अरमोहसिन (कार्यकारी) ।

भारत में दूतावास: बेलारूस का दूतावास, डी–6/23, वसंत विहार, नई दिल्ली–110 057. फोन: 6151202, 6151203; फाक्स: 6151203.

Indian Mission in Belarus: Embassy of India, Ulitsa Koltsova 4, Block No. 5, Minsk-220090, Belarus. Tel:00-375-17-2629399; Fax: 00-375-17-2629799.

ब्रुनाइ

(Brunei Darussalam) State of Brunei Darussalam Negara Brunei Darussalam

राजधानी: बन्दर सेरी बेगावान; (पहले ब्रुनाई शहर के नाम से प्रचलित) क्षेत्रफल: 5,765 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 322,982; भाषा: मलय, चीनी, अंग्रेजी; साक्षरता: 88%; धर्म: इस्लाम; मुद्रा: ब्रूनाई डालर; 1 अमरीकी डालर = 1.69 ब्रू. डालर; प्रति व्यक्ति आय: 16,765 डालर ।

ब्रूनाई सल्तनत दो मलेशियाई क्षेत्रों सरवाह और सारावाक के बीच में बोर्नियो द्वीप के उत्तर की ओर स्थित है । ब्रूनाई की आधे से अधिक जनसंख्या मलेशियाइयों की है, जो अधिकांश मुसलमान है । यह सल्तनत किसी जमाने में बहुत शक्तिशाली और स्वाधीन थी किन्तु बाद में अंग्रेजों ने इसे अपने साम्राज्य का अंग बना लिया और 1971 में इसे पूर्ण आन्तरिक स्वायत्तता मिली ।

ब्रूनाई के सबसे महत्वपूर्ण संसाधन तेल और प्राकृतिक गैस हैं । इस देश में अधिकांश तेल दूर समुद्र में अम्पा कुओं से निकाला जाता है । मुख्य खाद्य फसल चावल है । अन्य फसलें नारियल, सागू और रबर हैं । रबर का निर्यात होता है । राज्य में निवेश करने वाली एजेंसी ने 98 में सुल्तान के भाई पर गोलिया चलवाईं।

10 अगस्त 98 को सुल्तान के 24 वर्षीय बेटे को सल्तनत का उत्तराधिकारी घोषित किया गया।

सुल्तान एवं प्रधानमंत्री: मुदा हस्सानल बोलकिया मुइज्जादिन बदुल्लाह ।

भारत में दूतावास: ब्रुनाई दारुसलाम हाई कमीशन, ए–42, बसन्त मार्ग, नई दिल्ली–110 057, फोन 6148340; फैक्स: 6142101

Indian Mission in Brunei: *High Commission of India, Simpang 337, Lot No. 14034, Kampong Manggis, Jalan Muara, Bandar Seri Begawan BC 3515, Brunei Darussalam.* Tel: 00-673-2-339947; Fax: 00-673-2-339783

बेनिन

Republic of Benin, Republique du Benin

क्षेत्रफल: 112,622 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 6.4 मिलयन; भाषा: फ्रेंच और कबीलाई बोलियां; साक्षरता: [illegible] कबीलाई धर्म इस्लाम और ईसाई; मुद्रा: फ्रैंक [illegible] अमरीकी डालर = 612.79 फ्रैंक; प्रति [illegible]67 डालर ।

[illegible] लोकतांत्रिक गणराज्य (पहले इसका नाम दहोमी था) पश्चिमी अफ्रीका में गिनी की खाड़ी के उत्तर में स्थित है और टोगो, बरकिना फासो, नाइजर और नाइजेरिया से घिरा हुआ है ।

बेनिन, जो पहले फ्रेंच–वेस्ट अफ्रीका का एक प्रान्त था, 1 अगस्त, 1960 को स्वाधीन बना । इस देश में ताकत के बल पर सरकार का तख्ता पलटने की अनेक घटनाएं हुई हैं । 30 वर्षों में पहली बार स्वतंत्र राष्ट्रपति चुनाव 1991 में संपन्न हुए ।

बेनिन के मुख्य उत्पादन हैं – ताड़ तेल, गिरी, मूंगफली, कपास, काफी तम्बाकू ।

राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री: मात्यू केरेकू ।

भारत में दूतावास: आनेररी कांसुलेट जनरल आफ दी रिपब्लिक दी बेनिन, वेस्टर्न हाउस, ओखला इंडस्ट्रियल एस्टेट, नईदिल्ली–110020, फोन: 6831048; फैक्स: 6847080

बेलिज़

राजधानी: बेलमापान; क्षेत्रफल: 22,965 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 0.3 मिलयन; भाषा: अंग्रेजी, साक्षरता: 93%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: डालर; 1 अमरीकी डालर = 2 बे.डालर; प्रति व्यक्ति आय: 4,566 डालर

बेलिज़ मध्य अमरीका का एक गणराज्य है । पहले इसका नाम ब्रिटिश हण्डुरास था । इसके पूर्व में कैरीबियन सागर, उत्तर–पश्चिम में मैक्सिको और दक्षिण–पश्चिम में ग्वाटेमाला है । आरंभ में यह ब्रिटिश उपनिवेश था जिसे 1964 में स्वायत्त शासन का अधिकार दिया गया और 1981 में यह स्वाधीन हुआ । 1973 में इसका नाम बेलिज़ रखा गया । इसकी मूल राजधानी बेलिज़ नगर थी, जो 1961 में एक चक्रवात (तूफान) में नष्ट हो गई । एक द्वीप पर बसे नगर बेलमोपान को 1970 में राजधानी बनाया गया ।

इस देश की आधी से अधिक जनसंख्या अंग्रेजी भाषी नीग्रो लोगों की है जो अधिकांशतया समुद्र तटीय क्षेत्रों में रहे हैं यहां के मूल निवासी रेड इंडियन में मायन्स और केकचीस हैं, जो अधिकतर संरक्षित इलाकों में रहते हैं ।

वन उत्पादन विशेषतया इमारती लकड़ी का निर्यात प्रमुख है चीनी और संतरा व चकोतरा जैसे फल प्रमुख उत्पादन हैं

यहां के वन्य जीवों में एक विचित्र जीव–गेंटी (उभयचर स्तनपायी जीव) और कई किस्म के रेंगनेवाले जीव हैं

गवर्नर जनरल: कोलविले यांग; प्रधानमंत्री: सैद मुस[illegible]

भारत में दूतावास: आनेररी कंसुलेट आफ बेलिज़, [illegible] 8/14, वसंत विहार, नई दिल्ली–110 057; फ[illegible] 6140819; फैक्स: 6141067

Mission in Belize: Honorary Consulte Genera[illegible] India, 21, Nargusta Street, Belmopan, Belize, Ce[illegible] America. Tel: 00-501-8-22370; Fax: 00-501-8-2003

बेल्जियम

Kingdom of Belgium, Koninkrijk Bedgie (Du[illegible] Royaume de Belgique (French)

राजधानी: ब्रुसेल्स; क्षेत्रफल: 30,521 वर्ग किलो[illegible] जनसंख्या: 10.2 मिलयन; भाषा: डच, फ्रेंच, जर्मन; सा[illegible]

चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन: 6889807, 6889809; फैक्स: 6876710।

Indian Mission in Bhutan: Embassy of India, India House Estate, Thimphu, Bhutan. Tel: 00-9752-22162; Fax: 00-9752-23195.

मलावी

(Republic of Malawi)

राजधानी: लिलांग्वे; क्षेत्रफल: 1,18,784 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 10.4 मिलयन; भाषा: अंग्रेजी चिचेवा और लोम्वे–याव; साक्षरता: 56%; धर्म: ईसाई, कयायली और इस्लाम; मुद्रा: क्वाचा; 1 अमरीकी डालर = 43.28 क्वाचा; प्रति व्यक्ति आय: 523 डालर।

मलावी तन्ज़ानिया, मोजाम्बिक और जैम्बिया के बीच में स्थित है। न्यासा झील इसके पूर्व में है। मलावी पहाड़ों और झीलों का देश है। यहां अपार सौन्दर्य है – यह पर्यटकों का स्वर्ग माना जाता है। पहले इसका नाम न्यासालैंड था। इसे 1966 में स्वाधीनता मिली।

मलावी संसाधनों की दृष्टि से निर्धन है और कृषि भी केवल कामचलाऊ है। मुख्य वाणिज्यिक फसलें चाय, तम्बाकू गन्ना और कपास हैं।

जून 1993 में यहां की जनता ने राष्ट्रपति बांडा के निरंकुश शासन को अस्वीकार कर दिया। 63 प्रतिशत मतदान बहुदलीय राजनीतिक व्यवस्था के पक्ष में रहा।

राष्ट्रपति बाकिली मुलुजी।

मलेशिया

राजधानी: क्वालालंपुर; क्षेत्रफल: 3,30,434 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 23.3 मिलयन; भाषा: मलय, अंग्रेजी, चीनी, तमिल; साक्षरता: 83%; धर्म: इस्लाम, हिन्दू, बौद्ध; मुद्रा: रिनगिट; 1 अमरीकी डालर = 3.80 रिनगिट; प्रति व्यक्ति आय: 8,137 डालर।

मलेशिया 13 राज्यों का महासंघ है। इसमें सम्मिलित राज्यों के नाम हैं जोहोर, केदाह, केलान्तन, मलक्का, निगेरी, सेम्बिलन, पहांग, पर्लिस, पुलाऊ पिनांग, सबाह, सारवाक, सेलांगूर और तेरेनगन्नू। प्रत्येक राज्य की अपनी पृथक विशेषताएं हैं। यहां की आबादी में कई नस्लों के लोग हैं। कुल आबादी लगभग 150 लाख है, जिसमें 55 प्रतिशत मलायी है, 33.4 प्रतिशत चीनी हैं, 10.1 प्रतिशत भारतीय हैं और 1.4 प्रतिशत अन्य लोग हैं।

मलेशिया 1963 में अस्तित्व में आया। इसमें मलय जिसे 1957 में स्वतंत्रता मिली थी के साथ पूर्व ब्रिटिश शासित सिंगापुर, सबाह और सारावाक शामिल हुए। 1965 में सिंगापुर अलग हो गया।

मलेशिया रबर, टिन और ताड़ तेल का संसार में सबसे बड़ा उत्पादक है। यह काली मिर्च और इमारती लकड़ी का भी संसार में सबसे बड़ा निर्यातकर्ता है। अन्य महत्वपूर्ण फसलें हैं – नारियल, सब्जियां, अनानास, काफी, चाय, कोकोआ आदि।

मुख्य खनिज संसाधन हैं– लोहा, सोना, इलमिनाइट और बाक्साइट। पेट्रोलियम उद्योग भी मलेशिया की अर्थ–व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण बनता जा रहा है। प्रमुख उद्योग हैं– खाद्य उत्पाद, तम्बाकू, लकड़ी का सामान, बिजली का सामान, कपड़े, रासायनिक उत्पाद, निर्माण वस्तुएं, अलौह उत्पाद, परिवहन उपकरण और कृषि उत्पादों जैसे रबर और ताड़–तेल का संसाधन।

मलेशिया के लोकप्रिय उप प्रधानमंत्री अनवर बिन इब्राहिम जिन्होंने प्रधानमंत्री महाथिर के त्यागपत्र की मांग की थी को सितंबर 98 में हिरासत में ले लिया गया। पूर्व उप प्रधानमंत्री अनवर बिन इब्राहिमको उच्च न्यायालय ने अप्राकृतिक यौन व्यवहार के आरोप में 9 वर्ष के कारावास की सजा दी।

राज्याध्यक्ष: सुल्तान सलाहुद्दीन अब्दुल अजीज शाह अल्हाज; **प्रधानमंत्री:** डा. महथिर बिन मुहम्मद।

भारत में दूतावास: मलेशिया का हाई कमीशन, 50, एम सत्यामार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन 6111291; फैक्स: 6881538

असिस्टेंट हाई कमीशन: 287, टी.टी.के रोड, चेन्नई-600 018, फोन: 453599, 453580

Indian Mission in Malaysia: High Commission o India, No.2, Jalan Taman Duta, Off Jalan Duta, 5048(Kuala Lumpur, (or) P.O. Box No. 10059 G.P.O. 50704 Kuala Lumpur. Tel: 00-603-2533504; Fax: 00-603 2533507.

मंगोलिया

(Mongolian Republic) Mongol Uls

राजधानी: उलान बटोर; क्षेत्रफल: 15,65,000 व किलोमीटर; जनसंख्या: 2.5 मिलयन; भाषा: मंगोलियन साक्षरता: 83%; धर्म: बौद्ध और लामा धर्म; मुद्रा: तुगारिक 1 अमरीकी डालर = 1041.24 तुगरिक; प्रति व्यक्ति आय: 1,541 डालर।

मंगोलिया का जनतंत्रात्मक गणराज्य मध्य एशिया में है इसके उत्तर में रूसी संघ है और दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में चीन है। इसे 1921 में स्वाधीनता मिली। जुलाई 96 में मंगोलिय को वर्ल्ड ट्रेड आर्गनाइजेशन की सदस्यता मिल गयी।

पशु–पालन मुख्य उद्यम है। लोग घोड़े, बैल, भेड़, बकरी और ऊंट पालते हैं। पशुपालकों के संघ बने हुए हैं। सरकारी फार्मों में (1980 में फार्मों की संख्या 49 थी) बड़े पैमा पर खेती होती है। कोयला, टंगस्टन, टिन और तांबा खनि मिलते हैं।

मंगोलिया ने 1996 में विश्व व्यौपार संगठन की सदस्यता ली

राष्ट्रपति: जानलायबिन नारांटसात्रसाल्ट; प्रधानमंत्री नंयारिन इंखोबेयर

भारत में दूतावास: मंगोलियन जन गणराज्य का दूतावास 34, आर्चबिशप मकारियोस मार्ग, नई दिल्ली–110 003 फोन: 4631728; फैक्स: 4633240

Indian Mission in Mongolia: Embassy of India Zaluuchuudyn Urgun Chuluu 10, C.P.O. Box No. 691 Ulaanbaatar 210613, Mongolia. Tel: 00-976-1-329522 Fax: 00-976-1-329532

माली

(Republic of Mali) Republique due Mali

राजधानी: बमाको; क्षेत्रफल: 12,40,192 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 11.2 मिलियन; भाषा: फ्रेंच (सरकारी) बम्बारा एवं अन्य अफ्रीकी भाषाएं. साक्षरता: 31%; धर्म: इस्लाम और परम्परागत; मुद्रा: माली फ्रैंक; 1 अमरीकी डालर = 612.79 माली फ्रैंक. प्रति व्यक्ति आय: 681 डालर ।

माली पश्चिमी अफ्रीका का ऐसा देश है, जिसका कोई भी भाग समुद्र से मिला नहीं है । 1960 में इसने अपने को स्वाधीन गणराज्य घोषित किया ।

प्राकृतिक सम्पदा की दृष्टि से माली निर्धन है । केवल लगभग 20 प्रतिशत भूमि पर खेती होती है । मुख्य फसलें चावल, ज्वार-बाजरा और मूंगफली हैं । पशु पालन महत्वपूर्ण उद्यम है और चमड़े व खालों का उद्योग प्रमुख है । नदियों में मछली पकड़ने का काम बड़े पैमाने पर होता है और सूखी मछलियों का खूब निर्यात किया जाता है ।

राष्ट्रपति: अल्फा ओमार कोनारे; प्रधानमंत्री: इब्राहिम बोबाकर कीटा ।

माइक्रोनेशिया

(Federated States of Micronesia)

राजधानी: पालिकिर; क्षेत्रफल: 702 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 131,500; भाषा: अंग्रेजी और स्थानीय भाषाएं; साक्षरता: 90%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: सं रा. डालर. प्रति व्यक्ति आय: 1,700।

संघीय माइक्रोनेशिया राज्य पश्चिमी प्रशांत महासागर में कोरोलीन आइलैंड में 1800 मील तक विस्तृत है। संघ की चार सरकार हैं – पोहनपेई, कोसरेई, ट्रुक और याप । कोसरेई को छोड़कर प्रत्येक सरकारें कई आइसलैंड में फैली है । कुल 607 आइसलैंड है जो भौगोलिक दृष्टिकोण से उंचे स्थल, पहाड़, निचले स्थल व कोरल एटाल हैं ।

संघीय राज्य माइक्रोनेशिया 10 मई 1979 को स्वतंत्र होने से पूर्व संयुक्त राज्य के संरक्षण में था । नवम्बर 1986 में संयुक्त राज्य ने इसे स्वतंत्र संगठन की मान्यता दी । 17 सितंबर 1991 को यह संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बना । संयुक्त राज्य पर इसकी रक्षा का भार है और यह इसे वित्तीय सहायता उपलब्ध कराता है ।

उद्योग: पर्यटन, मत्स्य पालन।

राष्ट्रपति: लियो ए. फाल्कम।

माल्टा मध्य भूमध्यसागर में सिसली से 58 मील की दूरी पर और अफ्रीका के तट से लगभग 180 मील की दूरी पर स्थित एक द्वीप है । इस राज्य में पास में स्थित गोजो और कोमिनो द्वीप भी सम्मिलित हैं । माल्टा 1964 में स्वाधीन गणराज्य बना ।

इस पहाड़ी देश में प्राकृतिक संसाधन नहीं हैं । कपड़ों, जूतों, रबर की वस्तुओं और प्लास्टिक के सामान का निर्यात किया जाता है । कृषि उत्पादन में प्याज, आलू और टमाटर सम्मिलित हैं । इस द्वीप का प्रमुख उद्योग पर्यटन है ।

राष्ट्रपति: उफ्फो गीदो मार्को; प्रधानमंत्री: एडवर्ड फेनेक अदामी।

भारत में दूतावास: आनरेरी कंसुलेट आफ माल्टा, 1-हैली रोड, नई दिल्ली-110001, फोन: 6711050, फैक्स: 3329393

Indian Mission in Malta: High Commission of India, Regional Road, St. Julians, SGN 02, Malta. Tel: 00-356-344302, Fax: 00-356-344259

मालदीव

(Republic of the Maldives) Divedhi Raajjeyge Jumhuriya

राजधानी: माले; क्षेत्रफल: 298 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 300,220; भाषा: दिवेही; साक्षरता: 93%; धर्म: इस्लाम; मुद्रा: रुफिया; 1 अमरीकी डालर = 11.77 रुफिया; प्रति व्यक्ति आय: 4,083 डालर ।

मालदीव हिन्द महासागर में भारत के दक्षिण-पश्चिम में और श्रीलंका के पश्चिम में एक द्वीपसमूह है । इस द्वीपसमूह में 12 प्रवाल द्वीप और लगभग 2000 छोटे-छोटे द्वीप हैं । यह उत्तर से दक्षिण तक लगभग 300 मील लम्बा है ।

मालदीव 26 जुलाई, 1965 को आजाद हुआ । नवम्बर 1968 में गणराज्य बना ।

यहां के अधिकांश निवासी मछेरे हैं । नारियल, फल और ज्वार-बाजरा मुख्य फसलें हैं । मुख्य उद्यम मछली पकड़ना है और मुख्य उद्योग मछलियों का संसाधन है ।

राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री: मैमून अब्दुल गयूम ।

भारत में दूतावास: भारत में प्रतिनिधित्व नहीं। भारतीय हाई कमिश्नर का कार्यालय कोलंबो में। 25, मैलबोर्न एवेन्यु कोलंबो-10. फोन: 586 762

वाणिज्य दूतावास. नेशनल एस्टेट, सिनेमा, मुंबई-400 086 फोन. 5115111, फैक्स 5146311.

म्यानमार (वर्मा)

(Union of Myanmar) Pyeidaungzu Myanma Naingangandaw

राजधानी. यंगून (रंगून); क्षेत्रफल: 676,553 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 48.9 मिलयन; भाषा: वर्मी और कवीलाई; साक्षरता: 83%; धर्म: बौद्ध धर्म; मुद्रा: क्यात; 1 अमरीकी डालर = 6.07 क्यात; प्रति व्यक्ति आय: 1,199 डालर ।

आरंभ में ब्रिटिश भारत का एक भाग था, लेकिन अप्रैल 1937 में यह ब्रिटिश कामनवेल्थ का एक पृथक राज्य बन गया । 4 जनवरी, 1948 को इसे स्वाधीनता मिल गई । इसका नाम यूनियन आफ वर्मा रखा गया था। मई 1989 में इसका नया नाम यूनियन आफ म्यानमार रखा गया ।

यहां के मुख्य खनिज हैं– पेट्रोलियम, सीसा, टिन, जस्ता, टंगस्टन, तांबा, एण्टीमनी, चांदी और रत्न ।यहां के माणिक्य, नीलम और पहिताश्म विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं ।यहां से सागौन (टीक) की लकड़ी का निर्यात बड़ी मात्रा में होता है ।

जनरल नी विन जिन्होंने वर्मा पर 26 वर्षों से मजबूती के साथ शासन किया को 1988 में व्यापक जनअसंतोष ने अपदस्थ कर दिया । जून 1990 में 30 वर्षों में पहले निष्पक्ष चुनावों में नेशनल लीग फार डेमोक्रेसी को भारी बहुमत मिला। लेकिन सेना सत्ता हस्तांतरित करने में आनाकानी करती रही। विपक्ष की नेता सू की को नजरबंद कर दिया गया। 1987 में वर्मा को यू.एन.ओ. ने निम्नतम विकसित देश कहा जो कि एक समय में पूर्ण विकसित देश था ।

राज्याध्यक्ष एवं गर्वनर: जन. थान शेव ।

भारत में दूतावास: म्यानमार का दूतावास, 3/50 एफ, न्याय मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन: 6889007; फैक्स: 6877942

Indian Mission in Myanmar. Embassy of India, No. 545-547, Merchant Street, Post Box No 751, Yangon, Myanmar. Tel: 00-95-1-282550; Fax: 00-95-1-254086

१२ आइसलैंड

(Republic of the Marshall Islands)

राजधानी. दलाप–उलिगा–डैरिट (माजुरो एटाल पर); क्षेत्रफल: 181 वर्ग किलोमीटर, जनसंख्या 65,507; भाषा: मार्शलीज, अंग्रेजी, अन्य देशी भाषाएं, एवं जापानी; साक्षरता: 93%; धर्म: ईसाई, मुद्रा: डालर (सं.रा.); प्रति व्यक्ति आय: 1,680 डालर ।

रिपब्लिक आफ मार्शल आइसलैंड प्रशांत महासागर में दो आइसलैंड/एटाल श्रृंखला से बना है । रतक (सुर्योदय) चेन और रालिक (सूर्यास्त) चेन, मिलाकर 31 एटाल हैं । प्रत्येक एटाल अनेक छोटे आइसलैंड का समूह है जो लैगून के घेरे में है । राजधानी माजूरो से 3200 किमी दक्षिण–पश्चिम में होनोलुलू है । 92 प्रतिशत जनसंख्या मार्शलीज है ।

मार्शल आइसलैंड संयुक्त राज्य के संरक्षण में 1986 तक था । सितम्बर 1991 में आइसलैंड संयुक्त राष्ट्र का पूर्ण सदस्य बन गया । संयुक्त राज्य अमरीका रक्षा नीति पर नियंत्रण रखता है और वित्तीय सहायता उपलब्ध कराता है। पश्चिमी श्रृंखला में मुख्य क्वाजालेन में संयुक्त राज्य का मिसाइल टेस्ट रेंज और एयर फील्ड है ।

खनिज: फास्फेट भंडार एलिंग्लाप्लाप एटाल में हैं ।

कृषि: नारियल, टमाटर, मेलोन्स और ब्रेड फ्रूट

राष्ट्रपति: इमाटा काबुआ।

मेसेडोनिया

(Former Yugoslav Republic of Macedonia) Republika Makedonija

राजधानी: स्कोपजे; क्षेत्रफल: 25,713 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 2.0 मिलयन; भाषा: मासिडोनियन; साक्षरता 89%; धर्म: ईसाई एवं इस्लाम; मुद्रा: दीनार· 1 अमरीकी डालर = 56.86 दीनार; प्रति व्यक्ति आय: 4,254 डालर

जातीय समुदाय. मेसेडोनियन–67%, अल्बानियन 20%, अन्य–13% ।

पूर्व युगोस्लाविया का निर्धनतम गणराज्य मेसेडोनिया की सीमाएं बल्गारिया, मिस्र, अल्बानिया और युगोस्लाविया से मिलती हैं । 8 सितंबर 1991 में यहां पर स्वतत्रता के पक्ष में लोगों ने मत दिया लेकिन यूनान के मेसेडोनिया नाम के प्रति विरोध के कारण युरोपीय समुदाय व संयुक्त राज्य ने मान्यता देने से मना कर दिया । यूनान का कहना था मेसेडोनिया नाम इसके मेसेडोनिया प्रांत के क्षेत्र पर अधिकार का दावा है । मेसेडोनिया नाम परिवर्तन न करने पर दृढ़ है

8 अप्रैल 1993 को मेसेडोनिया संयुक्त राष्ट्र में युगोस्लाव रिपब्लिक आफ मेसेडोनिया के अस्थायी नाम के साथ 181 वां सदस्य बना । फरवरी 94 मे यूनान ने पर व्यापार प्रतिबंध लगा दिये। झंडे व चिन्ह की सम अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता से सुलझनी है। 1995 मे दोनों ने संबध सुधारने पर सहमति प्रकट की।

मेसेडोनिया के राष्ट्रपति ग्लिगोरोव बम आक्रमण मे तरह से घायल हो गये।

अक्टूबर 96 में युगोस्लाविया ने मेसेडोनिया के राजनयिक संबध बनाये।

कृषि उत्पादन: गेंहू, मक्का, कपास, लकड़ी, पशु

उद्योग: विद्युत, लिग्नाइट, इस्पात, सीमेंट ।

राष्ट्रपति: किरो ग्लिगोरोव, प्रधानमंत्री: [illegible]

मिस्र (ईजिप्ट)

(Arab Republic of
Arabiya

राजधानी: काहिरा; क्षे[illegible]
जनसंख्या: 68.3 मि[illegible]
51%; धर्म: इस्ल[illegible]
अमरीकी डालर [illegible]
3,041 डाल[illegible]

मिस्र, [illegible]
पूर्वी अफ्रीक[illegible]

म्यानमार (वर्मा)

(Union of Myanmar) Pyeidaungzu Myanma Naingangandaw

राजधानी: यंगून (रंगून); क्षेत्रफल: 676,553 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 48.9 मिलयन; भाषा: वर्मी और कदीलाई; साक्षरता: 83%; धर्म: बौद्ध धर्म; मुद्रा: क्यात; 1 अमरीकी डालर = 6.07 क्यात; प्रति व्यक्ति आय: 1,199 डालर ।

आरंभ में ब्रिटिश भारत का एक भाग था, लेकिन अप्रैल 1937 में यह ब्रिटिश कामनवेल्थ का एक पृथक राज्य बन गया। 4 जनवरी, 1948 को इसे स्वाधीनता मिल गई। इसका नाम यूनियन आफ बर्मा रखा गया था। मई 1989 में इसका नया नाम यूनियन आफ म्यानमार रखा गया।

यहां के मुख्य खनिज हैं– पेट्रोलियम, सीसा, टिन, जस्ता, टंगस्टन, तांबा, एण्टीमनी, चांदी और रत्न। यहां के माणिक्य, नीलम और पहिताश्म विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। यहां से सागौन (टीक) की लकड़ी का निर्यात बड़ी मात्रा में होता है।

जनरल नी विन जिन्होंने वर्मा पर 26 वर्षों से मजबूती के साथ शासन किये को 1988 में व्यापक जनअसंतोष ने अपदस्थ कर दिया। जून 1990 में 30 वर्षों में पहले निष्पक्ष चुनावों में नेशनल लीग फार डेमोक्रेसी को भारी बहुमत मिला। लेकिन सेना सत्ता हस्तांतरित करने में आनाकानी करती रही। विपक्ष की नेता सू की को नजरबंद कर दिया गया। 1987 में वर्मा को यू.एन.ओ. ने निम्नतम विकसित देश कहा जो कि एक समय में पूर्ण विकसित देश था।

राज्याध्यक्ष एवं गर्वनर: जन थान शेव ।

भारत में दूतावास म्यानमार का दूतावास, 3/50 एफ न्याय मार्ग चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन 6889007, फैक्स 6877942

Indian Mission in Myanmar Embassy of India, No 545-547, Merchant Street, Post Box No 751 Yangon Myanmar, Tel 00-95-1-282550, Fax 00-95-1-254086

मार्शल आइसलैंड

(Republic of the Marshall Islands)

राजधानी: दलाप–उलिगा–डैरिट (माजुरो एटाल पर); क्षेत्रफल: 181 वर्ग किलोमीटर, जनसंख्या 65 507 भाषा: मार्शलीज, अंग्रेजी, अन्य देशी भाषाएं एवं जापानी साक्षरता: 93%; धर्म: ईसाई, मुद्रा डालर (स रा), प्रति व्यक्ति आय: 1,680 डालर ।

रिपब्लिक आफ मार्शल आइसलैंड प्रशांत महासागर में दो आइसलैंड/एटाल श्रृंखला से बना है। रतक (सुर्योदय) चेन और रालिक (सूर्यास्त) चेन, मिलाकर 31 एटाल हैं। प्रत्येक एटाल अनेक छोटे आइसलैंड का समूह है जो लैगून को घेरे में है। राजधानी माजूरो से 3200 किमी दक्षिण–पश्चिम में हेनोलुलू है। 92 प्रतिशत जनसंख्या मार्शलीज है।

मार्शल आइसलैंड संयुक्त राज्य के संरक्षण में 1986 तक था। सितम्बर 1991 में आइसलैंड संयुक्त राष्ट्र का पूर्ण सदस्य बन गया। संयुक्त राज्य अमरीका रक्षा नीति पर नियंत्रण रखता है और वित्तीय सहायता उपलब्ध कराता है पश्चिमी श्रृंखला में मुख्य क्वाजालेन में संयुक्त राज्य का मिसाइल टेस्ट रेंज और एयर फील्ड है।

खनिज: फास्फेट भंडार एलिंग्लाप्लाप एटाल में हैं।

कृषि: नारियल, टमाटर, मेलोन्स और ब्रेड फ्रूट

राष्ट्रपति: इमाटा काबुआ।

मेसेडोनिया

(Former Yugoslav Republic of Macedonia) Republika Makedonija

राजधानी: स्कोपजे; क्षेत्रफल: 25,713 वर्ग किलोमीटर जनसंख्या: 2.0 मिलयन; भाषा: मासिडोनियन; साक्षरता 89%; धर्म: ईसाई एवं इस्लाम; मुद्रा: दीनार; 1 अमरीकी डालर = 56.86 दीनार; प्रति व्यक्ति आय: 4,254 डालर

जातीय समुदाय: मेसेडोनियन–67%, अल्यानियन–20%, अन्य–13% ।

पूर्व युगोस्लाविया का निर्धनतम गणराज्य मेसेडोनिया की सीमाएं बल्गारिया, मिस्र, अल्यानिया और युगोस्लाविया से मिलती हैं। 8 सितंबर 1991 में यहां पर स्वतंत्रता के पक्ष में लोगों ने मत दिया लेकिन यूनान के मेसेडोनिया नाम के प्रति विरोध के कारण युरोपीय समुदाय व संयुक्त राज्य ने इसे मान्यता देने से मना कर दिया। यूनान का कहना था कि मेसेडोनिया नाम इसके मेसेडोनिया प्रांत के क्षेत्र पर अधिकार का दावा है। मेसेडोनिया नाम परिवर्तन न करने पर दृढ़ रहा

8 अप्रैल 1993 को मेसेडोनिया संयुक्त राष्ट्र में युगोस्लाव रिपब्लिक आफ मेसेडोनिया के अस्थायी नाम के साथ 181 वा सदस्य बना। फरवरी 94 में यूनान ने इस पर व्यापार प्रतिबंध लगा दिये। झंडे व चिन्ह की समस्या अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता से सुलझनी है। 1995 मे दोनों देशों ने संबंध सुधारने पर सहमति प्रकट की।

मेसेडोनिया के राष्ट्रपति ग्लिगोरोव बम आक्रमण में तरह से घायल हो गये।

अक्टूबर 96 में युगोस्लाविया ने मेसेडोनिया के राजनयिक संबंध बनाये।

कृषि उत्पादन गेंहू, मक्का, कपास, लकड़ी, पशुधन

उद्योग विद्युत लिग्नाइट, इस्पात, सीमेंट ।

राष्ट्रपति: किरो ग्लिगोरोव, प्रधानमंत्री: जुबको जार्जी

मिस्र (ईजिप्ट)

(Arab Republic of Egypt) Jumhuriyah Misr Arabiya

राजधानी काहिरा क्षेत्रफल 997,677 वर्ग किलो जनसंख्या 68 3 मिलयन; भाषा अरबी, अंग्रेजी; सा 51%, धर्म इस्लाम और ईसाई; मुद्रा: मिस्री पाउ अमरीकी डालर = 3 41 मि. पौण्ड; प्रति व्यक्ति 3 041 डालर ।

मिस्र जिसे नील नदी का उपहार कहा जाता है, पूर्वी अफ्रीका में स्थित है ।

...ज़ाम्बिक नेशनल रजिस्टेंस मूवमेंट) गुरिल्ला ग्रुप के बीच ...ज युद्धविराम का समझौता हुआ । 15 वर्षीय इस गृह युद्ध मे लगभग 6 00,000 व्यक्ति मारे गये और लगभग 10 लाख लाग निर्वासित हुए, आधी से अधिक जनता सहायता खाद्यान्न पर निर्भर हैं ।

देश की अर्थ-व्यवस्था का आधार कृषि है । महत्वपूर्ण वाणिज्यिक फसलें हैं- काजू, चीनी, कपास और सीसल । मक्का, केले, चावल और नारियल भी पैदा होता है । खनिज ससाधन काफी मात्रा में विद्यमान हैं- हालांकि केवल कोयला, हीरे और बाक्साइट का दोहन होता है । संसार में टैटेलाइट (एक प्रकार का खनिज लौह) के जितने ज्ञात भंडार है, उनमें से दो-तिहाई भंडार मोज़ाम्बिका में हैं और यह देश संसार में हरितमणि का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है ।

राष्ट्रपति: जोकीम अलबर्टो किसानो; प्रधानमंत्री: डा. पासकोल एम. गोकुंबी।

Indian Mission in Mozambique: High Commission of India, Avenida Kenneth Kaunda No. 167, P.O. Box No. 4751, Maputo, Mozambique. Tel: 00-258-1-492437; Fax: 00-258-1-492364.

मोनाको

(Principality of Monaco)

राजधानी: मोनाको; क्षेत्रफल: 1.95 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 32,149; भाषा: फ्रेंच और मोनेगास्क एवं इटैलियन; साक्षरता: 99%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: फ्रैंक; 1 अमरीकी डालर = 6.13 फ्रैंक; प्रति व्यक्ति आय: 25,000 डालर।

मोनाको फ्रांस के दक्षिणी-पूर्वी भूमध्यसागर तट पर एक स्वाधीन देश है ।

इसमें एक-दूसरे से जुड़े हुए अनेक शहर हैं जैसे मोनाकोविले, ला काण्डेमाइन, फोण्टविले और मोण्टे कार्लो और इनमें जुआघर (कैसीनो), ओपेरा, विशाल होटल, दुकानें और उपनगर हैं ।

मोनाको एक फैशनेबल प्रमोद स्थान है, प्रतिवर्ष यहां हजारों पर्यटक आते हैं । इसके प्रमुख आकर्षण हैं – नाचघर और अन्तर्राष्ट्रीय मोटर स्पोर्ट्स- मोण्टे कार्लो रैली और मोनाको ग्रैंड प्री । आय के प्रमुख साधन हैं- पर्यटन, जुआ, कार और तम्बाकू की इजारेदारी । यहां बहुत से छोटे उद्योग हैं ।

राज्याध्यक्ष: प्रिंस रेनियर तृतीय; सरकार के अध्यक्ष: माइकल लिवेक्यु।

भारत में दूतावास: मोनाको का महावाणिज्य दूतावास, डीएलएफ सेंटर, संसद मार्ग, नई दिल्ली-110 001, फोन:3719206, फैक्स: 3719233.

मोरक्को

(Kingdom of Morocco) al-Mamlaka al Maghrebia

राजधानी: रबात; क्षेत्रफल: 4,58,730 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 28.8 मिलियन; भाषा: अरबी, बरबर; साक्षरता: 44%; धर्म: इस्लाम; मुद्रा: दिरहम; 1 अमरीकी डालर = 9.75 दिरहम; प्रति व्यक्ति आय: 3,305 डालर ।

मोरक्को राज्य अफ्रीका के उत्तर-पश्चिमी सिरे पर स्थित है । यहां संवैधानिक राजतंत्र है ।

एटलस पहाड़ मोरक्को में एक ओर से दूसरी ओर तक फैला हुआ है ।

मोरक्को ने 2 मार्च, 1956 को फ्रांस से राजनैतिक स्वाधीनता प्राप्त की और 1958 में उसने उत्तरी स्पेनिश प्रखण्डों पर अधिकार कर लिया ।

मोरक्को मुख्यत: कृषि प्रधान देश है, जहां जौ, गेहूं और मक्का पैदा होता है । अंगूर के बागान बहुतायत से हैं और खजूर की नियमित उपज होती है । पशु-पालन महत्वपूर्ण उद्यम है और मछली पकड़ने का काम सुव्यवस्थित है । सबसे महत्वपूर्ण खनिज फास्फेट है और मोरक्को इसका सबसे बड़ा निर्यातक है। अन्य खनिज हैं- लोहा, कोयला, सीसा और मैंगनीज़ ।

राज्याध्यक्ष: राजा मोहम्मद छठे; प्रधानमंत्री: अब्द-अर-रहमान यूसुफ।

भारत में दूतावास: मोरक्को का दूतावास, 33, आर्चबिशप मकारियोस मार्ग, नई दिल्ली-110 003, फोन: 4636921; फैक्स: 4636925

Indian Mission in Morocco: Embassy of India, 13, Charia Michlifen, Agdal, Rabat, Morocco. Tel: 00-212-7-671339; Fax: 00-212-7-671269.

मोलदोवा

(Republic of Moldova) Republica Moldaveneasca

राजधानी: किशिनेव; क्षेत्रफल: 33,700 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 4.3 मिलियन; भाषा: रोमानिया, उक्रेनियन; साक्षरता: 96%; धर्म: ईसाई, इस्लाम, मुद्रा: लियु.; 1 अमरीकी डालर = 10.92 लियु; प्रति व्यक्ति आय: 1,947 डालर ।

माल्डोविया को सोवियत संघ से दिसंबर 1991 में स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी । 1990 में इसका नया नाम मोलदोवा रखा गया । उक्रेन और रोमानिया इसके पड़ौसी हैं । यह क्षेत्र रोमानिया से 1940 में अलग हुआ था । यहां की भाषा रोमानियन है । यह उपजाऊ काली मिट्टी का मैदान है । यहां पर सोवियत संघ के चौथाई वाइनयार्ड हैं ।

मई 97 में मोलडोवा के नेताओं व अलग हुए क्षेत्र ट्रांसनियेस्ट्रा जिसने 95 में अपना अलग संविधान बना लिया था के नेताओं में समझौता हो जाने के कारण पुन: एकीकरण हो गया।

कृषि: खाद्यान्न, चुकन्दर, सब्जी, फल, अंगूर ।

उद्योग: वाइन, तम्बाकू, कैनिंग, लकड़ी, कपड़ा मटलर्ज डेयरी, टी.वी., फ्रिज, वाशिंग-मशीन ।

राष्ट्रपति: पेट्रु लसिन्ची; प्रधानमंत्री: इओन स्टुरेज।

मौरितानिया

(Islamic Republic of Mauritania) Republic Islamique de Mauritanie

राजधानी: न्वाकचोऐट; क्षेत्रफल: 10,30,700 किलोमीटर; जनसंख्या: 2.7 मिलियन; भाषा: अरबी, फ्रेंच (शासकीय); साक्षरता: 38%; धर्म: इस्लाम;

ओगुइया; 1 अमरीकी डालर = 205.02 ओगुइया; प्रति व्यक्ति आय: 1,563 डालर ।

मौरितानिया का इस्लामिक गणराज्य पश्चिमी अफ्रीका के अटलांटिक समुद्रतट पर स्थित है ।

मौरितानिया पहले फ्रांस का उपनिवेश था । 1958 में स्वायत्तशासी और 1960 में पूर्णतः स्वाधीन बना ।

इस देश की आबादी खानाबदोश है । पशु–पालन मुख्य उद्यम है । मछली पकड़ने का धंधा भी महत्वपूर्ण है । लोहे और तांबे के भंडार मिले हैं और उनका खनन होता है तेल की खोज हो रही है ।

राष्ट्रपति: मोआया ओल्ड सिडी अहम्मद ताया; प्रधानमंत्री: शेख अल अफया अल मोहम्मद खोयना।

मारीशस

राजधानी: पोर्ट लुई; क्षेत्रफल: 2,040 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 1.2 मिलयन; भाषा: अंग्रेजी, फ्रेंच और हिन्दुस्तानी; साक्षरता: 83%; धर्म: हिन्दू, ईसाई और इस्लाम; मुद्रा: रुपया; 1 अमरीकी डालर = 25.25 रुपया; प्रति व्यक्ति आय: 8,312 डालर।

मारीशस हिन्द महासागर में मेडागास्कर से लगभग 500 मील पूर्व में स्थित है इसे 1668 में पुर्तगालियों ने बसाया था। 1721 में इसपर फ्रांसीसियों का कब्जा हो गया और यहां अफ्रीकी गुलामों का आयात शुरु हो गया। 1810 में इस पर ब्रिटेन का कब्जा होगया और उनका शासन 1968 तक चला। गन्ने की खेती के लिये अंग्रेजों ने भारतीयों को यहां बसाना शुरु कर दिया।

12 मार्च, 1968 को मारीशस आज़ाद हुआ । प्रारंभ में यह ब्रिटेन की राजसत्ता से जुड़ा रहा और 1992 में गणतंत्र बन गया।

इस द्वीप की अर्थ–व्यवस्था केवल एक फसल अर्थात् गन्ने की फसल पर निर्भर है ।

चीनी, चाय और तम्बाकू का निर्यात होता है । पर्यटन उन्नत हो रहा है ।

राष्ट्रपति: कैसाम उतीम; प्रधानमंत्री: डा. नवीन चन्द्र रामगुलाम।

भारत में दूतावास: मारीशस का हाई कमीशन, 5 कौटिल्य मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन: 301–[illegible]12; फैक्स: 3019925

Indian Mission in Mauritius: High Commission of India, 6th Floor, Life Insurance Corporation of India Bldg. President John Kennedy Street, P.O. Box 162, Port Louis. Tel: 00-230-2083775, Fax: 00-230-2086859.

यमन

(Republic of Yemen) Al Jumhuriyah al Yamaniyah

राजधानी: सैना; वाणिज्य राजधानी: अदेन; क्षेत्रफल: [illegible] 000 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 17.0 मिलयन्; भाषा: अरबी, साक्षरता: 43%; धर्म: इस्लाम; मुद्रा: रियाल; 1 अमरीकी डालर = 148.15 रियाल; प्रति व्यक्ति आय: [illegible] डालर ।

मई 1990 में अरब पेनिनसुला के दक्षिणी–पश्चिमी यमन गणराज्य में उत्तर और दक्षिणी यमन का एकीकरण हो गया । उत्तरी यमन 1962 में बना था जबकि दक्षिणी यमन 1967 में स्वतंत्र हुआ ।

अप्रैल 1994 में दक्षिण और उत्तरी यमन की सैनिक टुकड़ियों में युद्ध छिड़ गया। 5 मई को आपातकाल की घोषणा कर दी गयी। 21 मई को दक्षिण यमन ने अपने को संयुक्त यमन से अलग करते हुए स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। 7 जुलाई, 94 को दो महीने तक चला गृह युद्ध उत्तरी यमन की सेनाओं के दक्षिण शहर एडेन पर कब्जे के साथ समाप्त हो गया। इस युद्ध के कारण लगभग 3 बिलयन डालर का नुकसान हुआ। 28 जुलाई को यमन सरकार ने कहा कि वह पराजित दक्षिण यमन से संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में बातचीत न करके घरेलू वातावरण में पुनःसंरचना का माहौल बनायेगा।

सदियों पूर्व यमन एक समृद्ध देश था । यहां मसाले और खनिजों की भरमार थी । महान शीबा रानी के राज्यकाल में यमन एक खुशहाल देश जाना जाता था । अरब दुनिया में दक्षिणी यमन ब्रिटिश साम्राज्य से 1967 में स्वतंत्र होकर अकेला साम्यवादी देश था ।

संसदीय चुनाव अप्रैल 1997 में हुए।

अर्थव्यवस्था तेल और कृषि पर आधारित है । इसके मुख्य कृषि उत्पाद काफी, खजूर, जड़ी–बूटी, फल मिलिट (मोटे अनाज) और मक्का है । कपास, काफी और खालें तथा चमड़े का निर्यात किया जाता है ।

राष्ट्रपति : अली अब्दुल्ला सलेह; प्रधानमंत्री: अब्दल करीम अल इरियानी

भारत में दूतावास: एम्बेसी आफ यमन अरब रिपब्लिक, 41, पश्चिमी मार्ग, वसंत विहार, नई दिल्ली–110 057. फोन: 9811141145; फैक्स: 6144383.

वाणिज्य दूतावास: मुंबई: 102, मेकर टावर्स, 'एफ' दसवीं मंजिल, कफे परेड, मुंबई। फोन: 2181586.

Indian Mission in Yemen: Embassy of India, Building No. 12, Djibouti Street, Post Box No. 1154, Sana'a, Yemen. Tel: 00-967-1-243440; Fax: 00-967-1-243439

युगांडा

(Republic of Uganda)

राजधानी: कंपाला; क्षेत्रफल: 241,139 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 23.3 मिलयन्; भाषा: अंग्रेजी और लुगान्डा, स्वाहिली; साक्षरता: 62%; धर्म: कबायली इस्लाम और ईसाई; मुद्रा: युगाण्डा शिलिंग; 1 अमरीकी डालर = 1,377.20 यु.शि.; प्रति व्यक्ति आय: 1,074 डालर ।

युगांडा पूर्वी अफ्रीका का एक विकट् स्थलीय राज्य है । यह पहले ब्रिटिश संरक्षित क्षेत्र था जो 1962 में स्वतंत्र हुआ और 1963 में गणतंत्र बना । 1985 में [illegible] टीटो ओकेलो के नेतृत्व में सेना ने मिल्टन ओबोटे की सरकार पर कब्जा कर लिया । मिल्टन ओबोटे [illegible] अमीन को गद्दी से उतार कर सत्ता में आए थे । 1972 में सभी एशियन लगभग 45,000 निर्वासित कर दिए गये । 1987 में मुद्रा का अवमूल्यन 77% [illegible]

यहा की अर्थ-व्यवस्था कृषि-प्रधान है । यहां की मुख्य उपज कपास और काफी हैं । चाय, चीनी, वनस्पति तेल, तिलहन, खाला, चना और तम्बाकू का निर्यात किया जाता है। यहां का मुख्य खनिज तांबा है ।

राष्ट्रपति: योवेरी मुसेवेनी; प्रधानमंत्री: अपोलो विसी बांदी।

भारत में दूतावास: हाई कमीशन आफ युगाण्डा, बी 3/26, वसन्त विहार, नई दिल्ली-110 057, फोन: 6144413; फैक्स: 6144405

Indian Mission in Uganda: High Commission of India, Plot 11, Kyadondo Road, Nakasero, P.O. Box 7040, Kampala, Uganda. Tel: 00-256-41-257368, Fax: 00-256-41-254943.

यूगोस्लाविया

(Federal Republic of Yugoslavia) *Savezna Republika Jugoslavija*

राजधानी:बेलग्रेड; क्षेत्रफल: 102,173 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 10.7 मिलयन; भाषा: सर्बो क्रोएशियन, अल्बानियन, स्लोवेनियन, मैकेडोनियन; साक्षरता: 98%; धर्म: ईसाई, इस्लाम, मुद्रा: न्यू दीनार; 1 अमरीकी डालर = 11.08 न्यू दीनार; प्रति व्यक्ति आय: 1,900 डालर ।

युगोस्लाविया पूर्व गणराज्य सर्बिया, मांटेनेग्रो सर्बिया के अंतर्गत स्वशासित क्षेत्रों – कोसोवा वोज-वोडिनो का संघ है। युगोस्लाविया की सीमाएं हंगरी, रोमानिया, बल्गारिया, मिस्र, अल्बानिया, क्रोएशिया एवं एडियाट्रिक समुद्र से मिलती हैं ।

बाल्कन प्रांत युगोस्लाविया एक छोटे राज्य सर्बिया से जो कि 1878 से स्वतंत्र है, विकसित हुआ । यह 6 गणराज्यों और दो स्वशासित राज्यों से बना है । गणराज्य: सर्बिया क्रोएशिया, स्लोवेनिया, मांटेनेग्रो, बोस्निया-हर्जेगोविना और मैसेडोनिया । सर्बिया के अंतर्गत प्रांत हैं – वोजवोडिना एवं कोसोवा । जाति समुदाय: सर्ब्स-36%, क्रोएट्स-20%, बोस्नियन मुस्लिम-9%, स्लोवेन्स-8%, मैकेडोनियन्स-6%, अल्बानियन्स-8%, मोंटेनेग्रिन्स-3%, अन्य-10% ।

युगोस्लाविया 1945 में गणराज्य बना । 45 वर्षों के साम्यवादी शासन के बाद यहां लोकतंत्र आया । युगोस्लाविया के महान नेता राष्ट्रपति मार्शल टीटो जो कि साम्यवादी थे, ने स्टालिन नीति को अस्वीकार कर के आर्थिक मदद एवं सैन्य अस्त्र पश्चिम से स्वीकार की । उनका निधन 1980 में हुआ।

1990 में विद्रोही गणराज्य एकता के लिये खतरा बन गये । जून 1991 में स्लोवेनिया और क्रोएशिया के उत्तरी गणराज्यों ने स्वतंत्रता की घोषणा की दी । क्रोएशिया में क्रोएट्स एवं सर्ब समुदाय में लड़ाई शुरू हो गयी । गृह युद्ध – जनवरी 92 में 10,000 लोगों की मृत्यु के बाद थमा और इसके बाद बोस्निया में फैल गया । अगस्त 1992 में विश्व ने सर्बियन नजरबंदी कैंप की लोमहर्षक तस्वीर देखी। यह कैंप बोस्निया-हर्जेगोविना जाति के सफाये का परिणाम थी । 10 लाख मुस्लिम एवं क्रोएट्स विस्थापित किये गये। कुछ लोगों का आरोप है कि युरोपियन देशों द्वारा फरवरी 92 में स्लोवानिया और क्रोएशिया से अलग हुए प्रांतों को मान्यता दिये जाने से देश में पहले चरण के जातीय दंगे भड़के । मैसेडोनिया ने 8 सितम्बर 1991 को स्वतंत्रता की घोषणा कर दी ।

1990 से आज तक जो कुछ हुआ उसने युगोस्लाविया की पूरे युरोप में भयंकर जाति संघर्ष और हत्याओं की जघनतम तस्वीर में बदल दिया । युगोस्लाविया में हुए गृह युद्ध से यूरोप में शरणार्थियों की 1945 के बाद पहली बार बाढ़ सी आ गयी । लगभग 20 लाख लोगों ने शरण ली ।

सं.रा. अमरीका ने स्लोवेनिया, क्रोएशिया और बोस्निया-हर्जेगोविना से अगस्त 1992 में राजनयिक संबंध बनाये।

युगोस्लाविया संघ, सर्बिया व मांटेनेग्रो को मिला कर बना । सितम्बर 1991 में संयुक्त राष्ट्र ने युगोस्लाविया की सदस्यता समाप्त कर दी व नये सिरे से आवेदन करने को कहा।

अगस्त 95 में सर्बो द्वारा नियंत्रित बोस्निया क्षेत्र में नाटो ने बमबारी की। अप्रैल 96 में युगोस्लाविया ने मैसिडोनिया से राजनयिक संबध स्थापित करके युरोपीय संघ की बेलग्रेड में राजदूत भेजने की शर्त पूरी की।

कोसोवा समस्या 1998 तक खतरनाक हो गई। राष्ट्रपति मिलोसेविक पर आरोप लगे कि वे यहां से अल्बानियन जाति के लोगों का सफाया कर देना चाहते हैं। नाटो ने जून महीने में सैन्य हस्तक्षेप करने का निर्णय लिया। कोसोवा लिबरेशन आर्मी द्वारा गुरिल्ला आक्रमण प्रारंभ हो गये। सर्बियन अधिकारियों ने कोसोवा लिबरेशन आर्मी के खिलाफ बड़ा मुहिम छेड़ दिया। अमरीका ने युगोस्लाविया पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध लगा दिये।

मार्च 99 में नाटो ने सर्बियन ठिकानों पर वायु आक्रमण शुरु कर दिये, जोकि जून में समाप्त हुए। कोसोवा लिबरेशन आर्मी ने नाटो के साथ समझौता करते हुए हथियार डाल दिये।

युगोस्लाविया में अक्टूबर महीने में जन आक्रोश के कारण तानाशाह स्लोबोडन मिलोसोविक को अपदस्थ कर विपक्ष के नेता वोजिस्टाव कोस्टोनिका नये राष्ट्रपति बनें, रूस समेत समस्त पश्चिमी देशों ने उनका समर्थन कर इसे लोकतंत्र की वापसी माना। युरोपीय संघ ने सर्बिया के विरुद्ध अनेक प्रतिबंध वापस लेने के लिये कहा है।

सर्बिया के अंतर्गत स्वशासित क्षेत्र

कोसोवा (राज.: प्रिस्टना, क्षेत्रफल: 10,887 वर्ग कि.मी. जनसंख्या: 2 मिलयन; वोजवोडिना: (राज.: नोवी सॉड, क्षेत्रफल 21,506 वर्ग कि.मी. जनसंख्या 2.05 मिलयन)।

कृषि उत्पाद: मक्का, शंकरकंदी, गेंहू, तम्बाकू, पशु एवं लकड़ी ।

उद्योग: विद्युत, कोयला, लिग्नाइट, लौहा, इस्पात, सीमेंट, मोटर गाड़ियां, लकड़ी के उत्पाद एवं पर्यटन ।

राष्ट्रपति: वोजिस्टाव कोस्टोनिका , प्रधानमंत्री: (रिक्त)

भारत में दूतावास: युगोस्लाविया का दूतावास: 3/50, नीति मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110 021, फोन: 6873661; फैक्स: 6885535

Indian Mission In Federal Republic of Yugoslavia: Embassy of India, Vase Pelagica 30, Senjak, Belgrade, 11000 YU, Yugoslavia. Tel: 00-381-11-3692431; Fax: 00-381-11-3692435.

मई 99 में पहली स्कॉटलैंड की संसद तीन सदी के बाद बनी। जुलाई में ब्रिटेन ने लीबिया के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किये।

31 अगस्त 97 को प्रिंसेस आफ वेल्स डायना का पेरिस के एक कार दुर्घटना में निधन हो गया।।

मई 99 में प्रथम स्कॉटिश संसद का गठन हुआ। नई वेल्स एसेंबली 600 वर्ष के बाद इसी महीने शुरु हुई।

राज्याध्यक्ष: महारानी एलिजाबेथ द्वितीय; प्रधानमंत्री: टोनी ब्लेयर ।

भारत में दूतावास: ब्रिटिश हाई कमीशन, शान्ति पथ, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन: 6872161; फैक्स: 6872882.

वाणिज्य दूतावास: मुंबई: हांगकांग बैंक बिल्डिंग, महात्मा गांधी रोड़,मुंबई–23; फोन: 230517, फैक्स: 2027940.

कलकत्ता: 1 हो ची मिन्ह सरनी, कलकत्ता–71; फोन: 225171, फैक्स: 223435.

चेन्नई: 24, एन्डरसन रोड, चेन्नई–600 006, फोन: 8273136, फैक्स: 829004

Indian Mission in United Kingdom High Commission of India, India House, Aldwych, London WC2B 4NA, United Kingdom. Tel: 00-44-171-8368484, Fax: 00-44-171-8364331.

ब्रिटेन पर निर्भर क्षेत्र

अंगुइला, बर्मूडा, ब्रिटिश अटार्टिक टेरिटेरी ब्रिटिश वर्जिन आइसलैंड, कैमान आइसलैंड फाकलैंड आइसलैंड, जिब्राल्टर, मांटेसरात पिटकैरन डूसी हेंडरसन एंड ओयेनो, सेन्ट हेलेना डिपेंडेंसीज (एसेंसन एंड ट्रिस्टान डा कुन्हा) [illegible] जिया एंड दी साउथ सैंडविच आइसलैंड एंड टुर्क्स [illegible] केस आइसलैंड।

[illegible] आफ मैन और दी चैनेल आइलैंड ब्रिटिश क्राउन [illegible] आधीन क्षेत्र हैं और उनकी अपनी व्यवस्थापिका एवं [illegible] प्रणाली है ।

आइस्ल आफ मैन: यह आयरिश सागर में स्थित है । [illegible]फल: 57 वर्ग किलोमीटर जनसंख्या 74,000 राजधानी: डगलस ।

दी चैनेल आइलैंड: फ्रांस के उत्तरी–पश्चिमी तट पर जर्सी, ग्वेर्नसे और ग्वेर्नसे के आधीन क्षेत्र । जनसंख्या 151,000 ।

अंगुइला: (सेंट किट्स नेविस का पूर्व भाग) 1969 में यह ब्रिटेन का आधीन क्षेत्र बना। 1982 में नया संविधान लागू हुआ। क्षेत्रफल: 155 वर्ग किलोमीटर, जनसंख्या: 9000, राजधानी: दी वैली।

बरमूडा: राजधानी: हैमिल्टन; क्षेत्रफल: 53.3 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 72,000; भाषा अंग्रेजी; धर्म: ईसाई; साक्षरता: 98 % मुद्रा: बरमूडा डालर; 1 अमरीकी डालर = 1 बरमूडा डालर; प्रति व्यक्ति आय: 24,000 डालर ।

बरमूडा पश्चिमी–उत्तरी अटलांटिक में लगभग 300 प्रवाल द्वीपों का समूह है । कहा जाता है कि स्पेन के जुआन डी बरमूडेज ने 1650 में इसका पता लगाया था । 1968 में बरमूडा को पूर्ण आन्तरिक स्वायत्तता सहित एक ब्रिटिश एसोसिएट राज्य का दर्जा प्रदान किया गया । कुल जनसंख्या का दो–तिहाई नीग्रो हैं । शेष लोग ब्रिटिश या पुर्तगाली नस्ल के हैं ।

मुख्य फसलें हैं – सब्जियां, फूल (विशेष रूप से ईस्टर लिली), केला और संतरे की जाति के फल हैं । राजस्व का प्रमुख साधन पर्यटन हैं ।

गवर्नर: दी लार्ड वैडिंगटन; प्रधानमंत्री: जान डब्ल्यू. डी. स्वान ।

माण्टसेरात : राजधानी: प्लाइमथ; क्षेत्रफल: 102 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 12,000; भाषा: अंग्रेजी और पटोइस, साक्षरता: 53%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: पूर्वी कैरेबियन डालर; 1 अमरीकी डालर = 2.69 पू.कै.डालर; प्रति व्यक्ति आय: 3,127 डालर (1985)।

एण्टीगुआ की ही भांति माण्टसेरात भी लीवर्ड द्वीपों में से एक द्वीप है । यहां की आबादी यूरोपीय और नीग्रो नस्ल का मिश्रण है । शुद्ध यूरोपिय अल्प संख्या में हैं कृषि लोगों की जीविका का प्रमुख आधार है । कपास और आलू जैसी निर्यात की मुख्य फसलें हैं ।

यह ब्रिटेन का एक सह–राज्य है और इसे पूर्ण आन्तरिक स्वायत्तता प्राप्त है ।

युनाइटेड अरब अमीरात

Itthad al-Imarat al-Arabiyah

राजधानी: अबू धाबी; क्षेत्रफल: 82,880 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 2.8 मिलियन; भाषा: अरबी; साक्षरता: 79%; धर्म: इस्लाम; मुद्रा: दिरहम; 1 अमरीकी डालर = 3.67 दिरहम; प्रति व्यक्ति आय: 17,719 डालर ।

फारस की खाड़ी में स्थित सात शेख राज्यों– अबू धाबी, दुबई, शारजाह, उम्म अल कुवैन, अजमान, फुजइराह और रस अल खैमा को मिलाकर युनाइटेड अरब अमीरात बना है । इनमें से पहले 6 शेख राज्यों ने 2 दिसम्बर 1971 को यूनियन दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए और अंतिम शेख राज्य यूनियन में फरवरी 1972 में शामिल हुआ ।

अबू धाबी, जो यूनियन की राजधानी है, इस क्षेत्र में सबसे बड़ा है । दुबई यूनियन का मुख्य बंदरगाह है और अब मध्य–पूर्व में सबसे बड़ा बन्दरगाह बन गया है । यूनाइटेड अरब अमीरात की लगभग समूची अर्थ–व्यवस्था तेल पर निर्भर है।

राष्ट्रपति: शेख जैद बिन सुलतान अल नहायन (अबू धाबी के); उपराष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री: शेख मकतूम बिन रशीद अल–मकतूम (दुबई के) ।

भारत में दूतावास: युनाइटड अरब अमीरात का दूतावास, ई पी–12, चंद्रगुप्त मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन: 4670830; टेलक्स: 6873272.

वाणिज्य दूतावास: मुंबई, बंगला न 7, जोली मेकर एपार्टमेंटस, कफे परेड, कोलाबा, मुंबई–400 005; फोन: 2183021

Indian Mission in UAE Embassy of India, Villa No. 9, Street No 5, Sector-2/33, Khalidiya, P O.Box No.4090, Abu Dhabi (UAE) Tel: 00-971-2-664800; Fax: 00-971-2-651518

यूनान (ग्रीक)

(Hellenic Republic) Elliniki Dimokratia

राजधानी: एथेन्स; क्षेत्रफल: 1 31,990 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 10.6 मिलियन; भाषा: यूनानी; साक्षरता: 95%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: ड्रैक्मा; 1 अमरीकी डालर = 304.91 ड्रैक्मा; प्रति व्यक्ति आय: 13,943 डालर ।

यूनान भू-मध्यसागर के तट पर बल्कान प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग में स्थित है ।

प्राचीन काल में यूनान लोकतंत्र, शिक्षा और संस्कृति का केन्द्र था । यह ईसा पूर्व पहली शताब्दी तक राजनैतिक दृष्टि से एक स्वाधीन देश था । इसी शताब्दी के उत्तरार्ध में रोमन सत्ता ने यूनान के राज्यों को अपने अधीन कर लिया । बाद में यूनानी बाइजेण्टाइन और ओटोमन साम्राज्य की अधीनता में 1830 ई. तक रहे जब यूनान एक राजतंत्र के रूप में स्वाधीन हो गया। अनेक उतार-चढ़ाव के बाद 1974 में राजतंत्र का उन्मूलन हो गया और तब से यूनान एक गणराज्य है ।

कुल क्षेत्र के एक तिहाई भाग में अनेक प्रायद्वीप है जिसमें से क्रेटे सबसे बड़ा है । यूनान एवं यूगोस्लाविया के पूर्व गणतंत्र मेसीडोनिया में 1995 में संबंधों को सामान्य करने के समझौते के साथ ही तनाव समाप्त हो गया ।

यद्यपि अभी हाल तक यूनान एक कृषि-प्रधान देश था किन्तु अब वहां अनेक प्रकार के उद्योग विकसित हो गए हैं। यूनान के पास व्यापारिक पोतों का विशाल बेड़ा है । पर्यटन यूनान का सबसे बड़ा उद्योग है ।

राष्ट्रपति: कांस्टेटिनोस स्टिफानोपोलस; प्रधानमंत्री: कोस्टास सिमिटिस।

भारत में दूतावास: यूनान का दूतावास, 16 सुन्दर नगर नई दिल्ली-110 003; फोन: 4617800; फैक्स 4601363.

महावाणिज्य दूतावास: मार्फत स्टीवर्ट्स एण्ड लायड्स आफ इंडिया लिमिटेड, 41 चौरंगी रोड, कलकत्ता-7[illegible] 071; फोन: 298198.

वाणिज्य दूतावास: एन-7, अल्ता मनोर, 72 [illegible] रोड, चेटपुट, चेन्नई-600031; फोन: 86[illegible]

Indian Mission In Greece: Embassy of [illegible] Kleanthous Street, 10674 Athens, Greece Tel: [illegible] 7216227; Fax: 00-301-7211252.

उरुण्डी की बेल्जियन ट्रस्टीशिप का एक भाग था, जो 1962 में स्वतंत्र हुआ ।

रवान्डा जातीय हिंसा का पर्याय बन चुका है। शताब्दियों से तुत्सी जाति ने हुतु जाति जो कि बहुसंख्यक (90%) में है पर आधिपत्य बनाये रखा। अगस्त 1993 में सरकार और तुत्सी विद्रोहियों में एक शांति समझौते पर हस्ताक्षर किये गये। हुतु बहुमत सरकार और तुत्सी समर्थक विद्रोहियों के बीच चार वर्ष तक चली लड़ाई जिसमें हजारो लोग मारे गये और विश्व ने सबसे बड़ी शरणार्थी समस्या का सामना किया। अप्रैल 1994 में राष्ट्रपति जुवेनल हब्यारिमाना बुरुण्डी के राष्ट्रपति के साथ एक रॉकेट हमले में मारे गये। इसी के साथ जातीय हिंसा भड़क उठी। मई महीने में किगाली हवाई अड्डा विद्रोहियों के कब्जे में आ गया। पश्चिमी रवान्डा के हुतु शरणार्थी ज़ायर (वर्तमान कांगो) की सीमा में भागे गये क्योंकि दो-तिहाई देश पर तुत्सी समुदाय का कब्जा हो गया था। शरणार्थी कैम्पों में प्रति दिन लगभग 1000 लोग भूख और बीमारियों से मरे। जुलाई में तुत्सी समर्थित रवान्डन पैट्रियाटिक फ्रन्ट ने एक हुतु (पी. बिजिमुंगु) को राष्ट्रपति बनाया। हिंसा और विप्लव जारी है। ज़ायर के केवल एक कैम्प में लगभग 5,00 000 शरणार्थी थे।

यहां की अर्थ-व्यवस्था कृषि पर आधारित है जो मुश्किल से गुजारे [illegible] है । कॉफी, कपास और पाइरेथ्रम [illegible] मुख्य [illegible] है । खनिजों में टिन अयस्क, टंगस्टन, [illegible] लाइट और [illegible] शामिल है । उद्योग विकसित नहीं है । [illegible] के रूप में किया जाना है तथा [illegible] और [illegible] होता है। जुलाई में ओ.ए.यू. द्वारा [illegible] अन्तर्राष्ट्रीय पैनल के अनुसार अगर सुरक्षा [illegible] [illegible] होती तो तुत्सी समुदाय [illegible] के नरसंहार को रोका जा सकता था।

राष्ट्रपति: [illegible] बिज़िमुंगु; प्रधानमंत्री: [illegible]

भारत में दूतावास: [illegible] 12, [illegible] नई दिल्ली [illegible] फोन: [illegible] फैक्स: [illegible]

Indian Mission in Rwanda: [illegible] M/S [illegible] B.P. [illegible] Kigali, Rwanda. Tel: [illegible] [illegible]

क 75 प्रतिशत क्षेत्रफल और 50 प्रतिशत जनसंख्या है। पूर्व सोवियत संघ का 70 प्रतिशत औद्योगिक एवं कृषि उत्पादन रूस से है।

रूस ने अब अंतर्राष्ट्रीय मामलों में पूर्व सोवियत संघ का स्थान लिया है। संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता और सुरक्षा परिषद में इसे सोवियत संघ का स्थान प्राप्त हुआ।

8 दिसम्बर 1991 में रूस, बाइलोरशिया और उक्रेन ने कामनवेल्थ आफ इंडिपेंडेंट स्टेट की स्थापना पर सहमति दी। इसका मुख्यालय मिंसक में है। सदस्य देश तीन संस्थापक और आठ अन्य अलग हुए देश – आर्मीनिया, अज़रबैजान, मोल्दावियो, कज़ाकस्तान, किरगिजिया, ताजिकिस्तान, टुर्कमेनिस्टीन, उज़बेकिस्तान, जार्जिया।

सी.आई.एस. एक राज्य नहीं है बल्कि स्वतंत्र राष्ट्रों का समूह है जो अंतर्राष्ट्रीय मामलों एवं विधि में सोवियत संघ का उत्तराधिकारी है।

सी.आई.एस. के संस्थापक रूस ने अपना नाम रशियन फेडरेशन रखा।

1993 में बड़े पैमाने पर बड़े और लघु सरकार नियंत्रित उद्योगों के निजीकरण का अभियान शुरु किया गया। राष्ट्रपति येल्तसिन को मार्च 1994 में कांग्रेस आफ डेपुटीज द्वारा रखे गये अविश्वास का सामना करना पड़ा। जुलाई 1994 में रूस पूर्व साम्यवादी देशों के साथ शांति हेतु सैन्य सहयोग के लिये नाटो में सम्मिलित हो गया।

जुलाई 97 में संसद ने आर्थोडाक्स क्रिश्चियनिटी, इस्लाम,, जुडाइज्म और बौद्ध धर्म को मान्यता दी।

रूस ने 98 में जी–8 सम्मेलन में पूर्ण सदस्य के रूप में भाग लिया।

रूस के अंतिम जार निकोलस द्वितीय और उनके परिवार जिनको बोल्शेविक क्रांति के दौरान गोली मार दी गई थी के ढांचे को को 80 वर्ष के बाद पीटर्सबर्ग में दफनाया गया

17 अगस्त 98 में रूस ने अपनी मुद्रा का गहरा अवमूल्यन किया और वर्ष के अंत तक इसकी गिरावट को 50% तक पंहुचने दिया। 9 अगस्त 99 को सर्गी स्टेपाशिन की सरकार को बर्खास्त करके विलादिमिर पुटिन को नया प्रधानमंत्री बनाया। येल्तिसिन ने पुटिन को अगले राष्ट्रपति पद के लिये अपना उत्तराधिकारी भी घोषित किया है।

अगस्त 99 में डागेस्टान के अनेक गावों पर मुस्लिम उग्रवादियों ने कब्जा कर लिया और रूस वहां पर सैन्य बल का प्रयोग कर रहा है।

प्राकृतिक स्रोत: लौह खदान, तेल, स्वर्ण, प्लेटिनियम, तांबा, जस्ता, लेड एवं टिन। रूस का स्वर्ण उद्योग विश्व में दूसरे स्थान पर है। स्टील मिल्स, बड़े बांध, तेल एवं गैस उद्योग और विद्युत, रेल, सड़कें साइबेरिया तक हैं।

रूस की परमाणुचालित पनडुब्बी के डूब जाने से समस्त नाविक मारे गये।

राष्ट्रपति: विलादिमिर पुटिन; प्रधानमंत्री: मिखाइल कासीआनोव

भारत में दूतावास: रूस के दूतावास, शान्ति पथ, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन: 6873800, 6873802; फैक्स: 6876823.

वाणिज्य दूतावास: नई दिल्ली: ब्लाक 50 ई, न्याया मार्ग चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021, फोन: 6909145, फैक्स: 609147.

मुंबई: पाम बीच, 42, लाला जगमोहनदास मार्ग; फोन: 3633628

कलकत्ता: 31, शेक्सपियर सरनी, कलकत्ता–700 017; फोन: 799973

चेन्नई: वाणिज्य महादूतावास, 14, सैनथोम हाई रोड, चेन्नई–600 004; फोन: 832320.

Indian Mission in Russian Federation: Embassy of India, 6-8 Ulitsa Vorontsovo Polye (Obukha), Moscow (Russia). Tel: 00-7-095-9171841; Fax: 00-7-095-9752337.

रोमानिया

राजधानी: बुखारेस्ट; क्षेत्रफल: 2,37,500 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 22.4 मिलयन; भाषा: रोमानियन हंगेरियन, जर्मनी; साक्षरता: 97%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: लियू (प्लूरल लियू;) । अमरीकी डालर = 16,249 लियू; प्रति व्यक्ति आय: 5,648 डालर।

रूमानिया यूरोप के मध्य भाग के दक्षिण–पूर्व में स्थित है।

रूमानिया में लम्बे समय से चली आ रही निकोलो चाउशेस्कू की तानाशाही का अंत 1989 में हो गया। 1990 में नेशनल साल्वेशन फ्रंट ने सत्ता हासिल कर ली।

काला सागर (ब्लैक सी) तट 245 कि.मी. लम्बा है। आधुनिक रोमानिया 1859 में बना। रोमानिया की अर्थ–व्यवस्था में अब उद्योगों का आधिपत्य है।

यहां के भारी उद्योगों में तेल निकालने की ड्रिलिंग रिंग, तेल शोधन के उपकरण, पेट्रोरसायन उद्योग, सीमेंट, ताप और जल विद्युत शक्ति, उच्च क्षमतावाले डीज़ल और बिजली के रेल इंजन, इंजीनियरिंग तथा उपभोक्ता वस्तुएं आदि का बाहुल्य है।

पिछली तीन दशाब्दियों में रोमानिया की खेती में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों का शुभारंभ 1945 में भूमि सुधारों से हुआ। छोटे और मंझोले किसानों की भू–सम्पत्ति को सहकारी समितियों में परिवर्तित कर दिया गया। यह काम 1949 में प्रारंभ हुआ और 1962 में पूरा हो गया। भूमि सहकारी किसानों की साझा–सम्पत्ति है जिस पर सभी मिल कर खेती करते हैं।

यहां का निर्यात मुख्यत: मशीन और उपकरण; रासायनिक पदार्थ, रसायन, उर्वरक तथा औद्योगिक उपभोक्ता वस्तुएं हैं।

राष्ट्रपति: एमिल कांसटेनिनेस्कु; प्रधानमंत्री: राडु वासिले

भारत में दूतावास: रोमानिया का दूतावास, 52–ए, बसन्त मार्ग, बसन्त विहार, नई दिल्ली–110 057; फोन: 6140447; फैक्स: 6140611

Indian Mission in Romania: Embassy of India, 11, Uruguay Street, Sector 1, Bucharest (Romania). Tel: 00-40-1-2225451; Fax: 00-40-1-2232681.

लक्ज़मबर्ग

(Grand Duchy of Luxembourg) Grand-Duche de Luxembourg

राजधानी:लक्ज़मबर्ग; क्षेत्रफल: 2,586 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 4,29,000; भाषा: फ्रेंच, अंग्रेजी, जर्मन; साक्षरता: 100%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: लक्ज़मबर्ग फ्रैंक; 1 अमरीकी डालर = 37.69 एल एफ; प्रति व्यक्ति आय: 33,505 डालर ।

लक्ज़मबर्ग एक छोटा–सा राज्य है जो जर्मनी, बेल्जियम और फ्रांस के बीच स्थित है ।

1867 में लंदन की संधि के द्वारा इसकी स्वाधीनता की पुष्टि की गई थी ।

लक्ज़मबर्ग यूरोपियन इकोनामिक कम्युनिटी, बेनेलेक्स, यूरोपियन स्टील एण्ड कोल कम्युनिटी और युरोटाम का सदस्य और उद्योगों की दृष्टि से अति विकसित देश है । यहां लोहे के विशाल भंडार हैं, जो यहां के विशाल इस्पात उद्योग का आधार । देश के निर्यात में 70 प्रतिशत भाग इस्पात का है । कृषि में केवल 10 प्रतिशत आबादी लगी हुई है ।

राज्याध्यक्ष: ग्रैंड ड्युक जीन; सरकार के प्रमुख: जीन–क्लाडे जंकर ।

भारत में दूतावास: लक्ज़मबर्ग का महावाणिज्य दूतावास, बी–35, ग्रेटर कैलाश–1, नई दिल्ली–110 048, फोन: 3230136, फैक्स:3238046

Indian Mission in Luxembourg: Honorary Consulate General of India, "Cabinet d'Avocats" Jim Penning, 31, *Grand-Rue, B.P. 282, L-2012, Luxembourg. Tel: 00-352-*473886; Fax: 00-352-222584.

लाओस

(Lao People's Democratic Republic) Sathalanalat Paxathipatai Paxaxon Lao

राजधानी: वियन्तियान; क्षेत्रफल: 236,800 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 5.2 मिलयन; भाषा: लाओ, अंग्रेजी, फ्रेंच और कबायली; साक्षरता: 57%; धर्म: बौद्ध धर्म; मुद्रा: न्यू किप; 1 अमरीकी डालर = 7,680 किप; प्रति व्यक्ति आय: 1,734 डालर ।

लाओस गणराज्य दक्षिण–पूर्व एशिया में सामरिक महत्व का देश है । 1893 से फ्रांस के संरक्षण में रहा लाओस 1949 में फ्रांसीसी संघ के अंतर्गत स्वाधीन गणराज्य बना। साम्यवादियों व रूढ़िवादियों में विरोधाभास के कारण यहां राजनीतिक उतापथल बन गई। 2 दिसंबर 1975 में यहां गणराज्य की घोषणा हुई।

1980 से 1988 तक वियतनाम द्वारा दी गई सैन्य व आर्थिक सहायता लाओस के लिये उपलब्धि रही। 1988 से यहां अमरीका और थाईलैंड द्वारा काफी निवेश किया गया। 1997 में लाओस को एशियान की सदस्यता मिली थी।

प्रमुख उत्पादन हैं – चावल, तम्बाकू, कपास, बेनज़ोइन, लाख, टिन, सीसा और जस्ता और सागौन (टीक) की लकड़ी। अन्य उद्योग छोटे स्तर पर हैं ।

राष्ट्रपति: खमाटे सिफोनडोन; प्रधानमंत्री: सिसावट केयाउनफान।

भारत में दूतावास: लाओस गणराज्य का दूतावास, ए 104/7 पर्मानंद एस्टेट, महारानी बाघ, नई दिल्ली–110 065, फोन: 6933319, फैक्स: 6323048

Indian Mission in Lao P.D.R.: Embassy of India, Rue That Luang, P.O. Box No. 225, Vientiane, Lao PDR. Tel: 00-856-21-413802; Fax: 00-856-21-412768.

लाइबेरिया

(Republic of Liberia)

राजधानी: मोनरोविया; क्षेत्रफल: 1,11,369 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 3.2 मिलयन; भाषा: अंग्रेजी और कबायली; साक्षरता: 38%; धर्म: ईसाई, इस्लाम; मुद्रा: डालर; 1 अमरीकी डालर = 1 लाइबेरियन डालर; प्रति व्यक्ति आय: 1100 डालर

लाइबेरिया अफ्रीका के अटलांटिक तट पर स्थित है । इसकी स्थापना 1822 में हुई थी और 26 जुलाई, 1947 को यह गणराज्य बना । लगभग 90 प्रतिशत आबादी खेती में लगी है और उसमें से अधिकांश बहुत निर्धन हैं । मुख्य फसलें – कसावा, काफी, कोकोवा और ताड़ तेल है । कच्चा लोहा और रबर निर्यात की मुख्य वस्तुएं हैं ।

1990 में आंतरिक विद्रोह में राष्ट्रपति मेजर जनरल सैमुएल कैन्योन दोय की हत्या हो गयी और पश्चिमी अफ्रीका की इकानामिक कम्यूनिटी पीस कीपिंग फोर्स द्वारा प्रोफेसर एमोस सायर के नेतृत्व में सरकार का गठन किया गया। पिछले 3 वर्षों से जो तीन प्रमुख गुट संघर्षरत हैं वे इस प्रकार है – (अ) चार्ल्स टेलर की रिबेल नेशनल पैट्रियाट्रिक लिबरेशन फ्रंट (ब) राष्ट्रपति एमोस सायर के नेतृत्व में अंतरिम सरकार (स) युनाइटेड लिबरेशन मूवमेंट । तीसरी शक्ति को सेना का समर्थन प्राप्त है।

25 जुलाई 1993 को ये तीनों गुट सहमत सरकार बनाने और फरवरी 94 में चुनाव कराने को राजी हो गये ।

राष्ट्रपति: चार्ल्स टेईलर।

लिचटेन्सटीन

(Principality of Liechtenstein) Furstentum Liechtenstein

राजधानी: वाडुज; क्षेत्रफल: 160 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 32,057; भाषा: जर्मन; साक्षरता: 100%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: स्विस फ्रैंक; 1 अमरीकी डालर = 1.49 स्वि. फ्रैंक ; प्रति व्यक्ति आय: 23,000 डालर ।

लिचटेन्सटीन ऊपरी राइन नदी पर आस्ट्रिया और स्विट्ज़रलैंड के बीच बसा एक छोटा–सा राज्य है । यह उत्तर से दक्षिण तक 24 किलोमीटर और पूर्व से पश्चिम तक 9 किलोमीटर में फैला हुआ है । 1866 में इसे स्वाधीनता मिली थी ।

विदेशी श्रमिक कुल आबादी के एक तिहाई हैं। अनेक अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों के यहां मुख्यालय हैं। 1868 से ही यह देश तमाम युरोपीय लड़ाइयों में तटस्थ रहा। 1984 में यहां महिलाओं को मतदान की स्वतंत्रता दी गई।

यहां की अर्थ-व्यवस्था मुख्यतः उद्योग प्रधान है । मुख्य उद्योग हैं- मशीनें और औजार, वस्त्र, खाद्य सामग्री और चमड़े का सामान ।

राज्याध्यक्ष: प्रिंस हंस आडम द्वितीय; प्रधानमंत्री: मारियो फ्रिक।

लिथुआनिया

(Republic of Lithuania) Lietuvos Respublika

राजधानी: विलनियस (विलना); क्षेत्रफल: 65,200 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 3.7 मिलयन; भाषा: लिथुआनियन; साक्षरता: 98%; धर्म, ईसाई; मुद्रा: दी लिटास । अमरीकी डालर=4.00 लिटास; प्रति व्यक्ति आय: 6,436 डालर ।

लिथुआनिया को अगस्त 1991 में स्वतंत्रता मिली । इसके पूर्व 1990 में इसने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी लेकिन सोवियत संघ ने आपूर्ति रोककर एवं अन्य उपायों से विफल कर दिया ।

लैटविया, वाइलोरशिया, पोलैंड और रूस से इसकी सीमाएं मिलती हैं ।

1940 तक लिथुआनिया मुख्यतः कृषि क्षेत्र था । तबसे अब तक पूर्ण औद्योगिकीकरण हुआ है ।

कृषि: खाद्यान्न, आलू, चुकन्दर, सब्जी, मांस, दूध अंडे।

प्राकृतिक स्रोत: 1,554,000 हेक्टेयर क्षेत्र में वन हैं जिसमें 70 प्रतिशत कोनिफर (शंकुवृक्ष) हैं । पीट के भंडार लगभग 4,000 एम सीयू मीटर के हैं ।

उद्योग: हैवी इंजीनियरिंग, शिप बिल्डिंग, निर्माण सामग्री, कारखाने, इलेक्ट्रानिक सामान, रसायन, कागज, चमड़ा, चीनी, कपड़े ।

राष्ट्रपति: वालदास अडामकुस; प्रधानमंत्री: रोलांडोस पक्स।

भारत में दूतावास: आनरेरी कंसुलेट आफ दी रिपब्लिक आफ लिथुआनिया, मोहन हाउस, जगरुदपुर कम्युनिटी सेंटर, कैलाश कालोनी एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110048, फोन: 6433135, फैक्स 6460191

लीबिया

(Socialist People's Libyan Arab Jamahiriya) al-Jamahiriyah al-Arabiya al-Libya al Shabiya al-Ishirakiya

राजधानी: त्रिपोली; क्षेत्रफल: 17,59,540 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 5.1 मिलयन; भाषा: अरबी; साक्षरता: 76%; धर्म: इस्लाम; मुद्रा: लीबियन दिनार; 1 अमरीकी डालर = 0.45 लीबियन दिनार; प्रति व्यक्ति आय: 6,697 डालर ।

लीबिया अफ्रीका के उत्तरी तट पर स्थित एक अरब राज्य है । 1977 में इसने अपना नाम 'सोशलिस्ट पीपुल्स लीबियन अरब जम्हूरिया' रखा ।

लीबिया पहले इटली का उपनिवेश था और 1952 में इसे स्वाधीनता मिली । 1969 में राजसत्ता हटा दी गयी ।

मुख्य कृषि उत्पाद हैं – खजूर, जैतून, बादाम और रसीले फल ।

मछली पकड़ना, तम्बाकू संसाधन, रंगाई और बुनाई महत्वपूर्ण उद्योग हैं ।

यहां 1957 में तेल के कुएं मिले और आज लीबिया संसार में तेल का एक प्रमुख उत्पादक है ।

राज्याध्यक्ष: कर्नल मुआमर अल-गदाफी

भारत में दूतावास: समाजवादी जनवादी लीबिया अरब गणराज्य का दूतावास, 22 गोल्फ लिंक्स, नई दिल्ली-110 003; फोन: 4697717; फैक्स: 4633005

Indian Mission in Libya: Embassy of India, 16/18, Shara Mamound Shaltut, Garden City, P.O. Box 3150, Tripoli, Libya. Tel: 00-218-21-3338212; Fax: 00-218-21-3337560.

लेबनान

(Republic of Lebanon) al-Jumhouriya al-Lubnaniya

राजधानी: बेरुत; क्षेत्रफल: 10,400 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 4.2 मिलयन; भाषा: अरबी, फ्रेंच, अंग्रेजी; साक्षरता: 92%; धर्म: ईसाई और इस्लाम; मुद्रा: पौण्ड; 1 अमरीकी डालर = 1,502 पौण्ड; प्रति व्यक्ति आय: 4,326 डालर।

लेबनान राज्य भू-मध्यसागर के किनारे सीरिया और इजराइल के बीच एक लम्बी भू-पट्टी पर है । यह 1941 में स्वाधीन देश बना ।

लेबनान मुख्यतः एक कृषि-प्रधान देश है, यहां जैतून का तेल, खाद्यान्नों और फलों का उत्पादन होता है । प्रमुख उद्योग हैं – तेल शोधन, खाद्य और सीमेंट । पर्यटन आय का मूल्यवान साधन है ।

संवैधानिक परम्परा के अनुसार मैरोनाइट क्रिश्चियन और सुन्नी मुस्लिम सत्ता के भागीदार होंगे । लेकिन ईसाईयों (42 प्रतिशत) और मुस्लिम (57 प्रतिशत) के बीच 14 वर्षीय घरेलू युद्ध के कारण स्थिर सरकार नहीं बन सकी ।

अक्टूबर 1990 में जनरल माइकल ओयन के नेतृत्व में क्रिश्चियन सेना को राष्ट्रपति इलियास हावी ने सीरियन मदद से हरा दिया और सत्ता पर अधिकार जमा लिया । उन्हें अरब देशों का समर्थन प्राप्त था । प्रधानमंत्री सलीम होस के राष्ट्रीय सहमति दल जिसमें 7 मुख्य दल – मैरोनाइट क्रिश्चियन, सुन्नी मुस्लिम, शिया मुस्लिम, ड्रूयूस, अर्मीनियन, ग्रीक आर्थोडाक्स, और ग्रीक कैथोलिक हैं की सरकार बनी सीरिया जिसकी 30,000 सैनिक टुकड़ियां लेबनान में हैं देश की सेना और राजनीति पर प्रभुत्व रखता है।

राष्ट्रपति: इमाइल लाहुद; प्रधानमंत्री: सलीम होस ।

भारत में दूतावास: लेबनान का दूतावास, 10 सरदार पटेल रोड, नई दिल्ली-110 021; फोन: 3013174; फैक्स: 373538.

वाणिज्य दूतावास: कलकत्ता-27 ए, कैमक स्ट्रीट, कलकत्ता-700 016; फोन: 447867

Indian Mission in Lebanon: Embassy of India, 31, Kantari Street, Sahmarani Building, P.O. Box No.113-5250 (Hamra) and 11-1764, Beirut, Lebanon. Tel: 00-961-1-372619; Fax: 00-961-1-373538.

लेसोथो

(Kingdom of Lesotho)

राजधानी: मसेरु; क्षेत्रफल: 30,355 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 2.1 मिलयन; भाषा: अंग्रेजी और लेसोथो; साक्षरता: 71%; धर्म: ईसाई और कबायली; मुद्रा: लोती; 1 अमरीकी डालर = 6.03 लोती; प्रति व्यक्ति आय: 1,626 डालर ।

लेसोथो राज्य साउथ अफ्रीका गणराज्य के भीतर स्थित एक औपनिवेशिक बस्ती है । पहले ये ब्रिटिश संरक्षित राज्य था और इसका नाम बसूटोलैण्ड था । 4 अक्तूबर 1966 को यह लेसोथो के नाम से स्वाधीन राज्य बना ।

इस देश का मुख्य उद्यम कृषि है । यहां बिजली और जल–विद्युत की व्यापक संभावनाएं है । निर्यात की प्रमुख मदें हैं – पशु, हीरे, ऊन और मोहरे ।

राज्याध्यक्ष: किंग लेट्सी तृतीय; प्रधानमंत्री: पकालिता मोसिसिली

लैटविया

(Republic of Lativia) Latvijas Republika

राजधानी: रिगा; क्षेत्रफल: 63,700 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 2.4 मिलयन; भाषा: लैटवियन; साक्षरता: 100%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: दी लाट्स; 1 अमरीकी डालर=0.59 लाट्स; प्रति व्यक्ति आय: 5,728 डालर।

लैटविया अगस्त 1991 में सोवियत संघ से अलग होकर स्वाधीन हुआ ।–1990 में इसने स्वतंत्रता का प्रयास किया था।

लैटविया के उत्तर एवं पश्चिम में बाल्टिक सागर है । एस्टोनिया, लिथुआनिया, बाइलोरशिया और रूस इसके पडोसी हैं । शहरीकरण ने मुख्य रूप से कृषि आधारित देश का स्वरूप बदल दिया है ।

कृषि: क्राप्स–ओट्स, जौ, राई, आलू, फ्लैक्स, शुगर बीट, मांस, दूध, अंडे, कैटल ब्रीडिंग, और डेयरी फार्मिंग मुख्य व्यवसाय है ।

प्राकृतिक स्रोत: पीट, ब्रिक्वेट्स जिप्सन ।

उद्योग: विद्युत, रेलवे यात्री कार और लम्बी दूरी के टेलीफोन एक्सचेंज, पेपर और ऊन की वस्तुएं । सान टिंबर, मिनरल उर्वरक, होजरी, कपड़े चमड़ा, फुटवियर, केमिकल फाइबर, बस, रेडियों रिसीवर्स ।

प्रधानमंत्री एंड्रिस स्केले ने अप्रैल 2000 में त्यागपत्र दे दिया।

राज्याध्यक्ष: सुश्री वाइरा विके फ्रीवर्गा; प्रधानमंत्री: एंड्रिस स्केले।

भारत में दूतावास: हानेररी कोसुलेट जनरल, 48/11, मलचा मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021, फोन: 6112931, फैक्स: 61113753.

वनातू

(Republic of Vanuatu) Ripablik Blong Vanuatu

राजधानी: विला; क्षेत्रफल: 14,760 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 189,036; भाषा: अंग्रेजी, फ्रेंच और बिस्लामा; साक्षरता: 36%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: वातू; 1 अमरीकी डालर = 129.25 वातू; प्रति व्यक्ति आय: 3,120 डालर ।

न्यू हेबराइड्स 1 जुलाई 1980 को वनातू के नाम से स्वतंत्र हुआ । यह प्रशान्त महासागर में 13 बड़े और 80 छोटे द्वीपों की दुहरी लड़ी है । इसमें इस्प्रतु सैन्टो सबसे बड़ा द्वीप है ।

मूल रूप से यह यूरोपीय समुद्री डाकुओं का अड्डा था, जो 1906 में फ्रांस और ब्रिटेन के नियंत्रण में आया ।

यहां की आबादी अधिकांशत: मेलेनेरियन नस्ल की है । मुख्य नकदी फसलें नारियल गिरी, काफी और कोको हैं । यहां सुअर पालन अति विकसित है । 1960 से यहां मैंगनीज़ का खनन किया जा रहा है, जिसे जापान को निर्यात कर दिया जाता हैं ।

राष्ट्रपति: जीन मैरी लेये; प्रधानमंत्री: डोनाल्ड कालपोकास।

वियतनाम

(Socialsit Republic of Vietnam) Cong Hoa Xa Hoi Chu Nghia Viet Nam

राजधानी: हनोई; क्षेत्रफल: 329,566 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 78.7 मिलयन; भाषा: वियतनामी, फ्रेंच, अंग्रेजी, चीनी; साक्षरता: 94%; धर्म: ताओ, बौद्ध, कन्फ्यूशियनिज्म, ईसाई, इस्लाम; मुद्रा: डोंग; 1 अमरीकी डालर = 13,963 डोंग; प्रति व्यक्ति आय: 1,689 डालर।

सोशलिस्ट रिपब्लिक आफ वियतनाम (भूतपूर्व नार्थ और साउथ वियतनाम को मिलाकर) एक पर्वतीय देश है। इसकी लगभग समूची लम्बाई से होकर एक पर्वत श्रृंखला जाती है जिसे अन्नामाइट श्रृंखला कहते हैं । पर्वत श्रृंखला के एक ओर उत्तर में उपजाऊ रेड रिवर डेल्टा और दूसरी ओर दक्षिण में मेकांग डेल्टा है । दोनों डेल्टाओं में भरपूर चावल पैदा होता है ।

वियतनाम युद्ध 1954 में दक्षिण वियतनाम में [illegible] द्वारा समर्थित सरकारी बलों व उत्तरी वियत[illegible] सोवियत सघ द्वारा समर्थित वियत कांग्रेस गुरिल्[illegible] पारभ हुआ। युद्ध 1973 तक चला ले[illegible] गुरिल्ला की गतिविधियां तब तक [illegible] दक्षिण वियतनाम में साम्यवाद स्था[illegible]

2 जुलाई 1976 को द[illegible] वियतनाम के एकीकरण के [illegible] वियतनाम का उदय हुआ। नदे [illegible] राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान और [illegible]

यह एक कृषि–प्रधान दे[illegible] पैदावार है जिसका नि[illegible] गन्ना, कॉफी और [illegible] में कोयला, टिन, [illegible] दक्षिण में सीमेंट, [illegible] उद्योग हैं ।

राष्ट्रपति: ट्रान लुक लुआंग प्रधानमंत्री: फान वान खाई।
भारत में दूतावास: वियतनाम का दूतावास, 17, कौटिल्य मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021, फोन: 3018059; फैक्स: 3017714

Indian Mission in Vietnam: Embassy of India, 58-60, Tran Hung Dao, Hanoi, Vietnam. Tel: 00-84-4-8244989; Fax: 00-84-4-8244998

वेटिकन सिटी

(The Holy See) Sato della Cittadel Vaticano

राजधानी: वेटिकन सिटी; क्षेत्रफल: 0.4 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 900; भाषा: लैटिन, इटैलीयन सभी भाषाएं मान्य; धर्म: ईसाई–कैथोलिक; मुद्रा: लीरा; 1 अमरीकी डालर = 1,710 लीरा।

वेटिकन सिटी पोप का नगर है और एक स्वतंत्र प्रभुसत्ता सम्पन्न राज्य है जिसमें सेन्ट पीटर की कैथेड्रल, वेटिकन महल और म्यूजियम, वेटिकन उद्यान तथा पड़ोसी इमारतें शामिल हैं वेटिकन का अपना रेलवे स्टेशन, डाक व्यवस्था और पुलिस है।

शहर राज्य का प्रशासन पोप द्वारा नियुक्त आयोग करता है। इसके पास वैधानिक, कार्यकारिणी और न्यायिक अधिकार होते हैं। इसके अस्तित्व का कारण होली सी, दी गवर्नमेंट आफ दी रोमन कैथोलिक चर्च को स्वतंत्र स्वरूप देने के लिये है। वेटिकन और इजराइल औपचारिक संबंध रखने के लिये सहमत हो गये। मार्च 1997 में वेटिकन ने लीबिया के साथ राजनयिक संबंध बनाये।

सुप्रीम पोंटिफ: पोप जान पाल द्वितीय (करोल वोज्टाइला); सेक्रेटरी आफ स्टेट एंजेलो सोडानो।

(Republic of Venezuela) Republica de Venezuela

राजधानी: कैरेकस, क्षेत्रफल 912 050 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 24 2 मिलियन भाषा स्पेनिश; साक्षरता 91%; धर्म ईसाई; मुद्रा बोलिवर 1 अमरीकी डालर = 622.25 बोलिवर; प्रति व्यक्ति आय 5 808 डालर।

वेनेजुएला (दक्षिणी अमरीका का छठा सबसे बड़ा राज्य) दक्षिणी अमरीका का सुदूर उत्तरी राज्य है। भूतपूर्व स्पेनिश उपनिवेश वेनेजुइला (लिटिल वेनिस) 1821 में स्वतंत्र हुआ।

वेनेजुइला खनिजों की दृष्टि से समृद्ध है। यह विश्व के प्रमुख तेल उत्पादकों में से है और ओपेक का सदस्य है। तेल समृद्धता सभी जगह पर लक्षित है। वेनेजुइला में हीरा भी खूब मिलता है और विश्व के हीरा उत्पादकों में इसका आठवां स्थान है।

अन्य खनिज लोहा, इस्पात, अल्युमीनियम, तांबा, टिन और मैंगनीज हैं। कृषि उत्पादों में काफी, कोको, ब्लेक बीन्स, केला, मक्का, चावल और चीनी हैं।

राष्ट्रपति: ह्यूगो चावेज।

भारत में दूतावास: वेनेजुइला का दूतावास, एन–114, पंचशील पार्क, नई दिल्ली–110017; फोन: 6496535; फैक्स: 6491686

Indian Mission in Venezuela: Embassy of India, Quinta Tagore, No.12, Avenida San Carlos, La Floresta, Apartado de Correo 61585, Chacao 1060, Caracas, Venezuela. Tel: 00-58-2-2857887; Fax: 00-58-2-2865131.

समोआ (पूर्व में वेस्टर्न समोआ)

(Independent State of Western Samoa) Malotuto'atasio Samoa i Sisifo

राजधानी: एपिआ; क्षेत्रफल: 2,835 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 229,979 भाषा: समोअन और अंग्रेजी; साक्षरता: 100%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: टाला (डालर); 1 अमरीकी डालर = 3.05 टाला; प्रति व्यक्ति आय: 3,832 डालर।

वेस्टर्न समोआ के दक्षिणी प्रशान्त महासागर में स्थित 4 द्वीप शामिल हैं जिनमें सवाई और उपोलु सबसे बड़े हैं। अन्तर्राष्ट्रीय समय रेखा वेस्टर्न समोआ के एकदम नज़दीक से गुजरती है। ईस्टर्न समोआ, (अमरीकन समोआ) जिसकी राजधानी फोगोटोगो है, संयुक्त राज्य अमरीका का अधीनस्थ क्षेत्र है।

वेस्टर्न समोआ 1 जनवरी 1962 को पूर्ण स्वतंत्र हुआ और यह राष्ट्रमंडल का सदस्य है।

यहां की अर्थ–व्यवस्था मुख्यत: कृषि पर आधारित है। यहां के प्रमुख उत्पाद मछली, कोको, केला, कचालू, शकरकन्द, खाल, वस्त्र और चटाइयां हैं।

जीवनभर के लिए राज्याध्यक्ष: मैलिएटोआ टनुमेफिली द्वितीय, प्रधानमंत्री: टोफिलाऊ इटि अलेसाना।

श्रीलंका

(Democratic Socialist Republic of Sri Lanka) Sri Lanka Prajathanthrika Samajavadi Janarajaya

राजधानी: कोलम्बो; क्षेत्रफल: 65,610 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 19.2 मिलयन; भाषा: सिंहली, तमिल और अंग्रेजी; साक्षरता: 88%; धर्म: बौद्ध, हिन्दू, इस्लाम और ईसाई; मुद्रा: रुपया; 1 अमरीकी डालर = 71.76 रुपए; प्रति व्यक्ति आय: 979 डालर।

श्रीलंका एक द्वीप है जिसे कम गहरा पाक जलडमरू भारत से अलग करता है। इसके पश्चिम में पाक जलडमरू और मन्नार की खाड़ी, उत्तर और पूर्व में बंगाल की खाड़ी तथा दक्षिण में हिन्द महासागर है।

श्रीलंका राष्ट्रमंडल के सदस्य के रूप में 1948 में स्वतंत्र हुआ। 1985 से यहां उत्तर में बसे तमिल मूल के लोग अलग प्रान्त और सरकार की मांग को लेकर रक्तिम संघर्ष में लगे हैं। 1978 में उन्हें कुछ सहूलियतें जैसे तमिल भाषा की स्वीकृति आदि मिली थी। तमिल युनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ने इस आंदोलन को विस्तार दिया। बाद में उग्रवादी संगठनों जैसे कि लिट्टे, ईलम, जे.वी.पी., ई.जी. आर.एल.एफ. आदि ने इस आंदोलन को हिंसात्मक रूप दे दिया।

29 जुलाई 1987 को एक ऐतिहासिक समझौता भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी और यहां के राष्ट्रपति जयवर्धने के बीच हुआ। इस समझौते के अंतर्गत भारत की सेना यहां पर जाकर उग्रवादी संगठनों से लोहा लेकर उनका

समर्पण करवायेगी। लंबे समय तक चली इस लड़ाई के बाद वहां की राजनीति के चलते 20 सितंबर 1989 को आई.पी.के.एफ. की भारत वापसी हुई।

11 जनवरी 1989 को राष्ट्रपति प्रेमदासा ने पांच वर्ष से चल रहे आपात शासन की समाप्ति की और फरवरी में आम चुनाव संपन्न कराये गये।

राष्ट्रपति प्रेमदासा की सुसाइड बम से एक मई 1993 को हत्या कर दी गयी।प्रधानमंत्री विजयतुंगे को राष्ट्रपति बनाया गया।

19 अगस्त 1994 को संसदीय चुनाव हुए और सुश्री चंद्रिका कुमारातुंगा की सरकार बनी। 9 नवंबर को राष्ट्रपति पद के चनाव हुए, और सुश्री चंदिका कुमारातुंगा राष्ट्रपति वनीं। उनके राष्ट्रपति बनने के वाद उनकी मां सिरिमावो भंडारनायके प्रधानमंत्री बनीं।

सेना और लिट्टे के वीच संघर्ष तीव्र हो गया। जुलाई 96 में सेना ने लिट्टे के कई ठिकाने नष्ट कर दिये। सात दिन तक चली लड़ाई में सेना ने लिट्टे के मुल्लाटिवे पर कब्जा कर लिया। अगस्त में विद्रोहियों के कब्जे से किलिनोच्ची शहर को भी छुड़ा लिया गया।।

श्रीलंका के मुख्य कृषि उत्पाद चाय, रबड़ और नारियल हैं। व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण खनिज ग्रेफ़ाइट है ।इसके अलावा लौह अयस्क, मोनाजाइट, इल्मेनाइट, चूना पत्थर, तेल और केयोलिन के भंडार भी हैं ।उद्योगों में सीमेंट, कपड़ा और उर्वरक सम्मिलित है ।श्रीलंका ने आर्थिक पुनर्निर्माण का कार्यक्रम हाथ में लिया है जिसमें महावली नदी का सिंचाई और जल–विद्युत के लिए उपयोग, गृह निर्माण कार्यक्रम, पूंजी निवेश, सम्वर्द्धन क्षेत्र आदि मुख्य कार्यक्रम हैं। मार्च 2000 में जाफना पेनिन्सुला के एलीफेंट पास में लिट्टे के साथ सेना का भीषण संघर्ष, मई महीने में श्रीलंका ने इजराइल से राजनयिक रिश्ते कायम किये। राष्ट्रपति कुमारतंगे द्वारा 17 वर्षीय जातीय संघर्ष को समाप्त करने के लिये संविधान संशोधन विधेयक को संसद में रखा गया लेकिन दो तिहाई वहुमत न होने के कारण पारित नहीं हो सका।

राष्ट्रपतिः श्रीमती चंदिका कुमारातुंगा।प्रधानमंत्रीः रत्नासिरी विक्रमानायाके।

भारत में दूतावास: हाई कमीशन आफ श्रीलंका, 27, कौटिल्य मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन: 3010201; फैक्स: 3793604

मुंबई: श्रीलंका होम, 34, हेनी मोदी स्ट्रीट; फोन: 2045861

डिप्टी हाई कमिशन: 9–डी, नवाब हबीबुल्ला एवेन्यू, एण्डरसन रोड, चेन्नई: 600 006; फोन: 476751

Indian Mission in Sri Lanka: High Commission of India, 36-38, Galle Road, P.O.Box No. 882, Colombo 3, Sri Lanka. Tel: 00-94-1-421605; Fax: 00-91-1-446403.

सऊदी अरेबिया

(Kingdom of Saudi Arabia) al-Mamlaka al 'Araiya as-Sa'udiya

राजधानी: रियाद (शाही) और जेद्दा (प्रशासनिक); क्षेत्रफल: 2,250,070 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 21.6 मिलियन; भाषा: अरबी; साक्षरता: [illegible]
1 अमरीकी डालर = 3.75 रियाल; प्रति व्यक्ति आय: 10,158 डालर ।

सऊदी अरेबिया अरब प्रायद्वीप के लगभग 80 प्रतिशत भाग में फैला हुआ है ।

यहां के होजा प्रान्त में मदीना है जहां 7 जून, 632 ई. में पैगम्बर मोहम्मद को दफनाया गया था और मक्का है जहां पैगम्बर का जन्म हुआ था ।यहां मक्का में एक महान मस्जिद है जिसमें काबा के पवित्र अवशेष सुरक्षित हैं ।काबा के एक ओर वह काला पत्थर है जिसके बारे में विश्वास किया जाता है कि इसे आरकेन्जल गेबरील ने अब्राहम को दिया था ।यह मकबरा समूचे विश्व के मुसलमानों का तीर्थस्थल है ।

सऊदी अरेबिया में पूर्ण राजतंत्र है, जहां कोई संसद नहीं है ।

सऊदी अरेबिया के पास विशाल तेल सम्पदा है और यह आज विश्व में पेट्रोलियम पदार्थों का सबसे बड़ा निर्यातक है। लोक राजस्व का प्रमुख स्रोत तेल से प्राप्त धन है । साथ ही सऊदी अरेबिया कृषि प्रधान देश है। यहां की मुख्य पैदावार खजूर, गेंहू, जौ, फल, सब्जी तथा ऊन हैं ।

राज्याध्यक्ष एवं शासनाध्यक्ष: सम्राट फहद इब्न अब्दुल अज़ीज़ अल सईद ।

भारत में दूतावास: सऊदी अरेबिया का दूतावास, डी–12, एन.डी.एस.ई. पार्ट–2, नई दिल्ली–110 049, फोन: 6252470. फैक्स: 6259333.

वाणिज्य दूतावास: माकेर टावर, एफ कफ परेड, मुंबई–400 005; फोन: 2181598

Indian Mission in Saudi Arabia: Embassy of India, B-1, Diplomatic Quarters, P.B.No. 94387, Riyadh-11693, Saudi Arabia. Tel: 00-966-1-4884144; Fax: 00-966-1-4884750.

स्पेन

(Espana)

राजधानी: मैड्रिड; क्षेत्रफल: 504,750 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 39.5 मिलियन; भाषा: [illegible] गैलिशियन; साक्षरता: 97%; [illegible] अमरीकी डालर = 155.44 [illegible] 16,212 डालर ।

1492 ई. में कोलम्बस [illegible] खोज के साथ स्पेन एक [illegible] इंग्लैंड द्वारा 1588 ई. [illegible] बाद स्पेन एक लघु [illegible] 1939 ई. में यहां [illegible] 1975 में [illegible] की स्थापना हुई।

परम्परागत [illegible] यहां के मुख्य [illegible] उद्योगों में इस्पात, [illegible] सम्मिलित हैं ।

राज्याध्यक्ष: सम्राट जुआन कारलोस; प्रधानमंत्री: जोस मरिया अजनार ।

भारत में दूतावास: एम्बेसी आफ स्पेन, 12 पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली–110 011; फोन: 3792085; फैक्स: 3793375

वाणिज्य दूतावास: मुंबई: 6, के. दुबाश मार्ग, मुंबई–400 023; फोन: 2874797,

कलकत्ता: नं. 1, तारातोल्ला रोड, गार्डेन रीच, कलकत्ता–700 024; फोन: 496452.

चेन्नई: 'लवडेल' 8, निम्मो रोड, सैन थोमे; फोन: 72008

Indian Mission in Spain: Embassy of India, Avenida de Pio XII 30-32, 28016, Madrid, Spain. Tel: 00-34-91-3450406; Fax: 00-34-91-3451112 (Embassy).

स्वाज़ीलैण्ड

(Kingdom of Swaziland) Umbuso weSwatini

राजधानी: म्बाबने; क्षेत्रफल: 17,363 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 985,335; भाषा: अंग्रेजी और स्वाज़ी; साक्षरता: 77%; धर्म: ईसाई और कबायली, मुद्रा: इलेंगेनी 1 अमरीकी डालर = 6.03 इलेंगेनी; प्रति व्यक्ति आय: 3,816 डालर।

स्वाज़ीलैण्ड का लगभग समूचा भाग दक्षिण अफ्रीका से घिरा है। पूर्व में मोज़ाम्बिक ही उसका अन्य पड़ोसी देश है।

स्वाज़ीलैण्ड पहले ब्रिटिश संरक्षित क्षेत्र था जिसे 6 सितम्बर 1968 को स्वतंत्रता प्राप्त हुई ।

यहां की अर्थ–व्यवस्था की मुख्य मद चीनी है। इसके बाद खट्टे फल, कपास, चावल और मक्के का स्थान है। लेकिन स्वाज़ी निवासियों की मुख्य सम्पदा पशुधन है। यहां खनिजों के पर्याप्त भंडार हैं। विशेष रूप से एस्बेस्टस, लोहा और कोयला ।

राज्याध्यक्ष: सम्राट मस्वाती तृतीय; प्रधानमंत्री: म्बांदिसा सिबुसिसो डलामिनी।

स्वीडन

(Kingdom of Sweden) Konungariket Sverige

राजधानी: स्टाकहोम; क्षेत्रफल: 449,793 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 8.9 मिलयन; भाषा: स्वीडिश; साक्षरता 100%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: क्रोना; 1 अमरीकी डालर = 8.16 क्रोना; प्रति व्यक्ति आय: 20,659 डालर।

स्वीडन नार्डिक देशों में सबसे बड़ा और क्षेत्रफल की दृष्टि से यूरोप का पांचवा बड़ा देश है । पश्चिम में स्केण्डेनेविया पर्वतमाला स्वीडन को नार्वे से अलग करती है। उत्तर–पूर्व की अपेक्षाकृत छोटी पर्वतमाला इसे फिनलैण्ड से अलग करती है। इसके अलावा स्वीडन बाल्टिक सागर और नार्थ सागर से घिरा है। स्वीडन में 1434 ई. से संवैधानिक राजतंत्र कायम है।

स्वीडन कोणीय वन, जल विद्युत, लोहा अयस्क, यूरेनियम तथा अन्य खनिजों की प्राकृतिक सम्पदा से भरा हुआ है लेकिन यहां तेल और कोयले के भंडारों की कमी है ।

यह देश उद्योगों की दृष्टि से अति विकसित है। आजकल देश के औद्योगिक उत्पादन का लगभग 40 प्रतिशत निर्यात कर दिया जाता है। मशीनी औजारों के निर्माण में स्वीडन का इस्पात विशेष रूप से विख्यात है। स्वीडन लकड़ी की लुगदी, कागज़ और इमारती लकड़ी के सबसे बड़े उत्पादकों में गिना जाता है।

राज्याध्यक्ष: सम्राट कार्ल सोलहवें गस्ताव; प्रधानमंत्री: गोरान पेरसन ।

भारत में दूतावास: स्वीडन का दूतावास, न्याय मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन: 6875760, 604961; फैक्स: 6885401.

वाणिज्य दूतावास: मुंबई: 84, साईनी रोड, मुंबई–400 025; फोन: 4360493; फैक्स: 42222703

कलकत्ता: 6, पूनम बिल्डिंग, 5/2 राउसल स्ट्रीट, फोन: 293639; फैक्स: 2476142

चेन्नई: वाणिज्य दूत, 6, कैथीड्रल रोड, चेन्नई: 600 086; फोन: 8275792; फैक्स: 8257150

Indian Mission in Sweden: Embassy of India, Adolf Fredriks Kyrkogata 12, Box 1340, 111 83 Stockholm, Sweden. Tel: 00-468-107008; Fax: 00-468-248505.

स्लोवेनिया

(Republic of Slovenia)

राजधानी: लुबलियाना; क्षेत्रफल: 20,251 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 2.0 मिलयन; भाषा: स्लोवेनियन; साक्षरता: 99%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: टालर; 1 अमरीकी डालर = 183.60 टालर; प्रति व्यक्ति आय: 14,293 डालर ; जाति समुदाय: स्लोवेनीज 91% अन्य 9%।

वर्तमान क्षेत्र में स्लोवेनीज 6 वीं शताब्दी से 8 वीं शताब्दी तक बसे लेकिन 9 वीं शताब्दी में जर्मन ने इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया । 1848 में एकीकरण के लिये संघर्ष शुरू हुआ । 1918 में युगोस्लाविया की स्थापना हुयी और अधिकांश स्लोवनीज नये राज्य में मिल गया ।

युगोस्लाव गणराज्य के सबसे अधिक क्षमता वाले स्लोवेनीज ने 25 जून 1991 को स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। फरवरी 92 में युरोपीय समुदाय ने इसे मान्यता दे दी।

कृषि उत्पाद: गेहूं, आलू, मक्का, लकड़ी एवं पशु धन ।

उद्योग: इस्पात, कपड़ा, विद्युत, मोटर गाड़ियां, सल्फ्यूरिक एसिड, बाक्साइट ।

राष्ट्रपति: मिलन कुकन, प्रधानमंत्री: अंद्रेज बाजुक।

स्लोवाकिया

(Slovensko)

राजधानी: ब्राटिस्लावा; क्षेत्रफल: 49,039 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 5.4 मिलयन; भाषा: स्लोवाक, मग्यार; साक्षरता: 100%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: न्यू कोरुना

क्राउन); 1 अमरीकी डालर = 41.04 कोरूना; प्रति व्यक्ति आय: 9,699 डालर।

चेकोस्लोवाक संघीय गणराज्य का विघटन 31 दिसंबर 1992 में दो देशों चेक एवं स्लोवाक में हुआ था। इस प्रकार चेक एवं स्लोवाक गणराज्य 1 जनवरी 1993 को अस्तित्व में आये। स्लोवाक की सीमाएं पोलैंड, उक्रेन, चेक गणराज्य, आस्ट्रिया एवं हंगरी से मिलती हैं।

उद्योग: मेटलर्जी, इंजीनियरिंग, रसायन, कपड़ा ग्लास।

कृषि: गेंहू, बाजरा, आलू, सब्जी, फल, शकरकंद।

खनिज: कोयला, मैग्नेसाइट, मेटलिक खदान।

राष्ट्रपति: रुडोल्फ शुस्टर, प्रधानमंत्री: मिकुलास जुरिंडा।

भारत में दूतावास: स्लोवाक गणराज्य का दूतावास, 50-एम. नीति मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110 021, फोन: 6889071; फैक्स: 6877941

Indian Mission in Slovak (Republic): Embassy of India, Radlinskeho 2, 81102, Bratislava, Slovak Republic. Tel: 00-421-7-52931700; Fax: 00-421-7-52931690.

संयुक्त राज्य अमरीका

United States of America

राजधानी: वाशिंगटन डी.सी.; क्षेत्रफल: 93,72,614 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 275.6 मिलयन; भाषा: अंग्रेजी; साक्षरता: 97%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: डालर; प्रति व्यक्ति आय: 29,605 डालर।

संयुक्त राज्य अमरीका एक संघीय गणतंत्र है, जिसमें 50 राज्य हैं जिनमें से केवल एक राज्य हवाई द्वीप को छोड़कर शेष सभी मुख्य भूमि पर हैं।

संयुक्त राज्य अमरीका उत्तरी अमरीका के मध्य भाग में फैला है। इसका गठन उन ब्रिटिश कालोनियों को मिला कर किया गया जो सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में उत्तरी अमरीका में स्थापित की गई थीं।

प्रथम विश्व युद्ध में यू.एस.ए. के भाग लेने और मित्र राष्ट्रों की विजय ने इसे विश्व शक्ति का गौरव प्रदान किया। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद यू.एस.ए. विश्व की महान शक्तियों में से एक गिना जाने लगा।

यह संघ प्रारंभ में 13 राज्यों से बना था जिसमें 7 अन्य राज्य बाद में शामिल हो गए। 30 अन्य राज्यों को भी जो पहले उपनिवेश थे, शामिल करके पूर्ण राज्य का दर्जा प्रधान कर दिया गया।

इस प्रकार अब इस संघ में कुल मिलाकर 50 राज्य है और इनके अलावा कोलम्बिया जिला अलग है। प्रत्येक राज्य का अपना अलग संविधान है। राज्यों के संविधानों में द्वि-सदनीय विधान मण्डलों (केवल नेब्रास्का राज्य को छोड़कर जिसमें एक-सदनीय विधान मण्डल है) एक गवर्नर तथा अपनी अलग न्याय-व्यवस्था है। राज्य सरकारें उन सभी मामलों का निपटारा स्वयं कर सकती हैं जो संघीय विधान मण्डल के लिए सुरक्षित नहीं है। नीचे की तालिका में संघ के वर्तमान राज्य, उनके डाक संकेत, राजधानी, क्षेत्रफल तथा जनसंख्या दी गई है।

संघ के राज्य

नाम	राजधानी	क्षेत्रफल (वर्ग कि. मी.)	जनसंख्या (1990)
अलाबामा (ए एल)	मांटोगुमरी	133916	4,040,587
अलास्का (ए के)	जुन्यू	1530700	550,043
अरीजोना (ए ज़ेड)	फोनिक्स	295260	3,665,228
अरकान्सास (ए आर)	लिटिल रोक	137754	2,350,725
केलीफोर्निया (सी ए)	सेकामेन्टो	411049	29,760,021
कोलेरेडो (सी ओ)	डेनवर	269596	3,294,394
कनेक्टीकट (सी टी)	हार्टफोर्ड	12997	3,287,116
डेलावेयर (डीई)	डोवर	5294	666,168
डिस्ट्रिक्ट आफ कोलम्बिया (डी.सी)	वाशिंग्टन डी.सी.	179	606,900
फ्लोरिडा (एफ एल)	टल्लाहस्सी	151940	12,937,926
जार्जिया (जी ए)	अटलांटा	152577	6,478,216
हवाई (एच आई)	होनोलूलू	16760	1,108,229
इडाहू (आई डी)	बोआइसे	216431	1,006,749
इलीनियास (आई. एल)	स्प्रिंगफील्ड	145934	11,430,602
इण्डियाना (आई एन)	इण्डियन अपोलिस	93719	5,544,159
आयोवा (आई ए)	डेस-मोआइन्स	145752	2,776,755
कन्सास (के एस)	टोपेका	213097	2,477,574
केन्टकी (के वाई)	फ्रैंकफोर्ट	104659	3,685,296
लुइसियाना (एल ए)	बेटन रोगे	123678	4,219,973
मेन (एम ई)	आगस्टा	86156	1,227,928
मेरी लैण्ड (एम डी)	अन्नापोलीस	27091	4,781,468
मेसाचुसेट्स (एम ए)	बोस्टन	21456	6,016,425
मिचिगन (एम आई)	लानसिंग	151585	9,295,297
मिन्नेसोटा (एम एन)	सेन्ट पाल	218601	4,375,009
मिसीसिप्पी (एम एस)	जैकसन	123515	2,573,216
मिसोरी (एम ओ)	जेफरसन सिटी	180515	5,117,073
मोन्टाना (एम टी)	हेलेना	380849	799,065
नेब्रास्का (एम टी)	लिंकन	200349	1,578,385
नेवादा (एन वी)	कारसन सिटी	286353	1,201,833
न्यू हैम्पशायर (एन एच)	कानकार्ड	24033	1,109,252
न्यू जर्सी (एन जे)	ट्रेनटान	20168	7,730,188
न्यू मेक्सिको (एन एम)	सान्ता फे	314923	1,515,069
न्यू यार्क (एन वाई)	अल्बानी	127190	17,990,455
नार्थ केरोलिना (एन सी)	रेले	136413	6,628,637
नार्थ डकोटा (एन सी)	बिस्मार्क	183118	638,800
ओहियो (ओ एच)	केलम्बस	107045	10,847,115
ओंकलाहोमा (ओ के)	ओकलाओमा सिटी	181186	3,145,585
ओरेगान (ओ आर)	सलेम	251419	2,842,321
पेनसिलवानिया (पी ए)	हेरिसबर्ग	117348	11,881,643
रोडे आइलैण्ड (आर आई)	प्रोविडेन्स	3139	1,003,464
साउथ कैरिलोना (एस सी)	कोलम्बिया	80583	3,486,703
साउथ डकोटा (एस डी)	पियरे	199730	696,004
टेनेसी (टी एन)	नाशाविले	109153	4,877,185
टेक्सास (टी एक्स)	आस्टिन	691030	16,986,510
अटाह (यू टी)	साल्टलेक सिटी	219888	1,722,850
वरमाउन्ट (वी टी)	मउण्ड पेलियर	24900	562,758
वर्जीनिया (व ए)	रिमाण्ड	105587	6,187,358
वाशिंगटन (डब्लयु ए)	ओलम्पिया	176480	4,866,692
वेस्ट वर्जीनिया (डब्लयु वी)	चार्ल्सटन	62758	1,793,477
विस्कान्सिन (डब्लयु आई)	मेडिसन	145436	4,891,769
व्यनिंग (डब्लयु वाई)	चेयेने	253325	453,5[illegible]

* यू.एस.ए. के राज्यों के दो अक्षरों (दोनों के पीटल अंग्रेजी अ[illegible] के डाक संक्षिप्तीकरण को जेड.आई.पी. कोड के साथ 1963 में किया गया। ये अक्षर पिछले संक्षिप्तीकरणों का तेजी से [illegible] जा रहे है।

शासन क्षेत्र तथा अन्य दूरस्थ इलाके

स्थान	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या 1990
पोर्टोरिको	8891	3,700,00
वर्जिन आइलैण्ड यू.एस.	342	101,809
गुआम	541	133,152
अमेरिकन सामोआ	199	46 773
[illegible] आइलैण्ड और [illegible] आइलैण्ड	70	0
मिडवे आइलैण्ड	5	453
वेक आइलैण्ड	8	302
जान्स्टन आइलैण्ड और सैण्ड आइलैण्ड	1.3	327
नार्दर्न मेरियाना आइलैण्डस	477	45,200
ट्रस्ट टैरिटरी आफ पैसिफिक आइलैण्डस	1380	अ.उ.

कृषि: प्रमुख फसलें – मक्का, गेहूं, सोयाबीन, जौ, ओट्स, चावल, चीनी, आलू, कपास, तंबाकू और डेयरी।

उद्योग: लौह और इस्पात, खाद्य, रसायन, धातु उत्पादन, इलेक्ट्रानिक, मशीनरी, परिवहन उत्पादन, उर्वरक और प्लास्टिक।

खनिज: कोयला, तांबा, जस्ता, फास्फेट, युरेनियम, लेड, सोना, चांदी, लोहा, मालिबियम, तेल।

निर्यात: मशीनरी, रसायन, मोटर गाड़ियां, वायुयान, रौन्ट सामग्री, खाद्य सामग्री।

संयुक्त राज्य अमरीका ऐसा पहला औद्योगिक राष्ट्र है जहां जनसंख्या का लक्ष्य निर्धारित नहीं किया जा सकता है। यहां पर बाहर से आकर बसने वालों की संख्या अधिक है। जुलाई 97 में अमरीका ने 1992 के बाद भूगर्भ परमाणु परीक्षण किया। पांच जुलाई को अमरीका का पथफाइंडर मंगल पर उतरा।

1998 में राष्ट्रपति क्लिंटन चीन यात्रा पर गये। इसी वर्ष क्लिंटन अनेक विवाद से घिर गये। इनमें से प्रमुख विवाद व्हाइट हाउस में कार्यरत मोनिका लेविंस्की के साथ उनके यौन संपर्क का खुलासा था। लोगों को गुमराह करने के आरोप पर उनपर महाभियोग लाया गया। जनवरी 99 में सीनेट में महाभियोग की कार्रवाई प्रारंभ हुई। सीनेट ने हाउस आफ रिप्रजेंटेटिव की उनको दंडित करने के फैसले को ठुकरा कर क्लिंटन को बरी कर दिया।

संयुक्त राज्य अमरीका ने फरवरी 99 में युनेस्को की सदस्यता कोश में कमी का कारण बताते हुए लेने से मना कर दिया। जुलाई 99 जान एफ कैनेडी जूनियर की वायु दुर्घटना में हुई मृत्यु से सारा देश स्तब्ध रह गया।

अमरीका के अंतरिक्ष यान कोलंबिया जिसका संचालन

पत्नियां अधिक कमाती हैं

अमरीका में एक चौथाई से अधिक पत्नियां अपने पतियों की तुलना में अधिक कमाती है। परंपरागत तरीका जिसमें पति नौकरी पर जाते थे और पत्नियां घर संभालती थी, में 1972 के 21 प्रतिशत से 1998 में बढ़कर 53 प्रतिशत हो गई है। शिकागो विश्वविद्यालय की नेशनल ओपेनियन रिसर्च सेंटर द्वारा किये गये सर्वेक्षण से यह तथ्य उभरा।

1960 से 1996 तक अमरीका में तलाक की दर दुगनी हो गई। और दिन ब्याही मांओं की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है।

एक महिला ने किया, ने चंद्रा एक्स रे दूरबीन को अंतरि में स्थापित किया।

क्यूबा के 6 वर्षीय इलियान गोंजालेज अपने पिता दुबारा मिला। श्रीमती हिलेरी ने न्यूयार्क से सीनेट का चुन लड़ने की घोषणा की। मार्च महीने में राष्ट्रपति क्लिंटन भारत की यात्रा की और आतंकवाद समेत अनेक मसलों भारत का समर्थन किया।

राष्ट्रपति: बिल क्लिन्टन ।

भारत में दूतावास: एम्बेसी आफ यू. एस. ए., शान्ति प चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021;फोन: 419800 24, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली–110 001(फो 3316841); 28 बी, इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ल 110 016(फोन: 6865301)

वाणिज्य दूतावास: मुंबई: लिंकन हाउस, 78, भूला देसाई रोड, मुंबई–400 026; फोन: 363361.

कलकत्ता: 5/1 हो ची मिन्ह सरनी, कलकत्ता–70 071; फोन: 225757.

चेन्नई:220, अन्नासालै, चेन्नई–600 006; फोन:4730

Indian Mission in United States of America: E bassy of India, 2107, Massachusetts Ave, NW, Washi ton DC 20008. Tel: 00-1-202-9397000; Fax: 00-1-2 2654351.

शासन क्षेत्र

पोर्टोरिको

(Commonwealth of Puerto Rico)

राजधानी: सैन जुआन; क्षेत्रफल: 8891 वर्ग किलोमीट जनसंख्या: 3.9 मिलयन; भाषा: स्पेनी और अंग्रेजी; ई ईसाई; मुद्रा: डालर; प्रति व्यक्ति आय: 6360 डालर

पोर्टोरिको का द्वीप यहां कैरिबियन में हिसपेनिओ (हाइटी और डोमिनिकन गणराज्य) से 50 मील पूर्व में स्थि है। 1952 में यह औपनिवेशिक दासता से मुक्त होकर र मंडल का स्वतंत्र सदस्य बना। इसका संयुक्त राज्य अमरी से गहरा संबंध है। यहां के लोगों को संयुक्त राज्य नागरिकता प्राप्त है लेकिन वोट देने का अधिकार नहीं यहां पूर्ण स्वतंत्रता के लिए आंदोलन चल रहा है।

पोर्टोरिको पूर्ण रूप से कृषि प्रधान देश था जिसकी अ व्यवस्था अब बड़ी तेजी से औद्योगिक अर्थ–व्यवस्था की बढ़ रही है। यहां की मुख्य फसलें चीनी, तम्बाकू और क है। उद्योगों में कपड़ा, सिले हुए वस्त्र, सिगार, एल्को रसायन तथा घरेलू उपकरण हैं। पर्यटन यहां के राजस्व मुख्य स्रोत है।

गवर्नर: डा. पेड्रो रोसेल्लो ।

गुआम: राजधानी: अगाना, क्षेत्रफल: 541 किलोमीटर, जनसंख्या: 149620.

कामनवेल्थ आफ दी नार्थ मैरियाना आइसलैंड: राजध सेइपान, क्षेत्रफल: 477 वर्ग किलोमीटर, जनसंख्या: 45,2

अमरीकन समाओ: राजधानी: पैगो पैगो, क्षेत्रफ 199 वर्ग किलोमीटर, जनसंख्या: 55,223.

अन्य प्रशांत महासागर में क्षेत्र: जान्स्टनएटोल (हवाई 1150 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम में स्थित दो

अमरीका के बढ़ते प्रभाव को रोकने की कोशिश

रूस और चीन विश्व में अमरीका के बढ़ते प्रभुत्व को रोकने की कोशिश में लगातार एक–दूसरे के करीब आ रहे हैं। इसी दिशा में अब दोनों ने अमरीका की प्रस्तावित राष्ट्रीय मिसाइल सुरक्षा प्रणाली के खिलाफ आवाज उठाई है। सोवियत संघ के विघटन और शीत युद्ध की समाप्ति के बाद अमरीका विश्व में जिस तरह अपना वर्चस्व कायम कर रहा है। अगर उस पर अंकुश न लगाया गया तो वह एकमात्र महाशक्ति होने का फायदा उठाते हुए आगे भी विभिन्न मामलों में अपनी ही मर्जी चलाता रहेगा।

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीन के राष्ट्रपति जियांग झेमिन ने मंगलवार को पेइचिंग में एक साझा बयान में अरीका को चेतावनी दी कि अगर वह अपनी मिसाइल सुरक्षा प्रणालियों की योजना को अमल में लाया तो इसके उसकी सुरक्षा के लिए भी गंभीर परिणाम होंगे। अमरीका का कहना है कि उसे उत्तर कोरिया, इराक और ईरान जैसे दुष्प्रवृत्ति वाले देशों से मिसाइल हमले का खतरा है इसलिए अपने बचाव की खातिर वह राष्ट्रीय मिसाइल सुरक्षा प्रणाली तैयार करना चाहता है। साथ ही वह एशिया क्षेत्र में तैनात अपने सैनिकों और क्षेत्र के अपने सहयोगी देशों के लिए क्षेत्रीय प्रक्षेपास्त्र सुरक्षा प्रणाली चाहता है। अमरीका चाहता है कि 1972 की मिसाइल विरोधी संधि में कुछ संशोधन कर उसे इन प्रणालियों की तैनाती करने दी जाए। लेकिन रूस और चीन ने कहा है कि अगर अमरीका ऐसा करता है तो विश्व में हथियारों की नई दौड़ शुरू हो जाएगा।

पुतिन और जियांग ने कहा है कि अमरीका अपनी योजना से एक तरफा सैन्य और सुरक्षा लाभ उठाना चाहता है। उनका कहना है कि अमरीकी अपनी योजना के लिए जो कारण बता रहे हैं वे सही नहीं हैं। रूस और चीन मानते हैं कि अमरीका की प्रस्तावित मिसाइल सुरक्षा प्रणालियों के उनकी और अन्य देशों की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर परिणाम होंगे। चीन उसकी क्षेत्रीय मिसाइल सुरक्षा प्रणाली का इसलिए भी जमकर विरोध कर रहा है क्योंकि उसे आशंका है कि अमरीका ताइवान को भी इसके तहत रखेगा। चीन ताइवान को अपना एक प्रांत मानता है और चेतावनी दे चुका है कि यदि उसने स्वतंत्र होने की घोषणा की तो उस पर हमला कर दिया जाएगा। पुतिन और जियांग ने संयुक्त बयान में कहा है कि किसी भी विदेशी मिसाइल सुरक्षा प्रणाली में ताइवान को शामिल किया जाना स्वीकार्य नहीं हो सकता और इससे क्षेत्रीय स्थिरता पर गंभीर असर पड़ेगा।

दरअसल सोवियत संघ के विघटन के बाद विश्व में एक ध्रुवीय व्यवस्था बन गई है और अमरीका उसी का फायदा उठाकर विभिन्न मामलों में अपनी चौधराहट दिखाता रहा है। उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) का पूरब की ओर विस्तार इराक पर हमले व कोसोवो में सैन्य हस्तक्षेप जैसी घटनाएं इसका प्रमाण हैं। विश्व में विभिन्न मामलों में वह अपने हितों के अनुरूप हस्तक्षेप करता है। आतंकवाद के मामले में भी वह दोहरा रवैया अपना रहा है। अपने खिलाफ आतंकवादी हमले होने पर उसने अफगानिस्तान में अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी सरगना ओसामा बिन लादेन के ठिकानों पर हमले कर दिए लेकिन दूसरे देशों के आतंकवादियों को अपने यहां प्रश्रय देता रहा है और उसने पाकिस्तान जैसे देश को आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले देशों की सूची में नहीं रखा है। सालों तक एक दूसरे के विरोधी रहे रूस और चीन अमरीका की चौधराहट को खत्म करने के लिए पिछले कुछ साल से करीब आ गए हैं। 1960 से करीब दो दशक तक तत्कालीन सोवियत संघ और चीन के संबंध काफी कटु रहे। लेकिन उसके बाद सोवियत नेता ब्रेझनेव और फिर मिखाइल गोर्बाचेव ने संबंध सुधारने के प्रयास किए। सोवियत संघ के विघटन के बाद रूसी राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन ने 1992 में चीन की यात्रा कर संबंध बेहतर बनाने का सिलसिला तेज किया। हाल के वर्षों में दोनों देशों की कई शिखर बैठकें हो चुकी हैं। दोनों देशों के करीब आने का एक प्रमुख कारण अमरीका तो है ही साथ ही इसमें दोनों के आर्थिक हित भी जुड़े हैं। दोनों देशों के बीच आपसी व्यापार बढ़ता जा रहा है जो पिछले साल पांच अरब डालर पर पहुंच गया था। रूस के तेल, प्राकृतिक गैस और हथियारों का चीन प्रमुख ग्राहक है।

पश्चिमी देश रूस और चीन में मानवाधिकारों के हनन का भी सवाल उठाते रहे हैं खासकर चेचन्या व तिब्बत में दोनों का जवाब रहा है कि यह उनके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप है। रूस नाटो के विस्तार से भी चिंतित रहा है। येल्तसिन के राष्ट्रपति रहते रुस और चीन एक घोषणा पत्र में कह चुके हैं कि वे बहु ध्रुवीय विश्व चाहते हैं। फिलहाल दोनों देश इस स्थिति में नहीं हैं कि वे अमरीका के खिलाफ कोई औपचारिक गठबंधन बना सकें, लेकिन वे उसके प्रभुत्व को कम करने में सहायक हो सकते हैं।

आइसलैंड। जनसंख्या: 1200, मिडवे आइसलैंड (हवाई श्रृंखला में पश्चिमी किनारे पर दो छोटे आइसलैंड)। जनसंख्या: 453 (1980) वेक आइसलैंड (हवाई के पश्चिम में 3700 किलोमीटर दूर तीन आइसलैंड)। जनसंख्या: 302 (1980)।

वर्जिन आइसलैंड आफ दी युनाइटेड स्टेट्स: राजधानी: अमाली, क्षेत्रफल: 342 वर्ग किलोमीटर, जनसंख्या: 101,809.

साइप्रस

(Republic of Cyprus) Kypriaki Dimokratia (Greek)/Kibria Cumhuriyeti (Turkish)

राजधानी: निकोसिया; **क्षेत्रफल:** 9,251 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 754,064; **भाषा:** यूनानी और तुर्की; **साक्षरता:** 95%; **धर्म:** ईसाई और इस्लाम; **मुद्रा:** साइप्रस पाउण्ड; 1 अमरीकी डलर= 0.90 साइप्रस पाउण्ड; **प्रति व्यक्तिआय:** 17,482 डलर।

हुयी लेकिन हत्याएं और लूटपाट का दौर जारी रहा । अप्रैल 1993 में वातचीत फिर से शुरू हुयी ।

कार्यक्रम वना कि दक्षिण अफ्रीका में 27 अप्रैल 1994 को प्रति व्यक्ति प्रति मत प्रणाली के आधार पर पहला सामान्य चुनाव कराया जायेगा और संवैधानिक सभा गठित की जायेगी। इस प्रकार पहली वार दक्षिण अफ्रीका में एक व्यक्ति एक मत के आधार पर 26–28 अप्रैल 94 में चुनाव संपन्न हुए। ए.एन.सी. को 62% मत मिले। 10 मई 94 को नेल्सन मंडेला को (प्रथम अश्वेत) राष्ट्रपति पद की शपथ दिलाई गयी। दक्षिण अफ्रीका को ओ.ए.यू., नाम, कामनवेल्थ और संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता दी गयी। मई 8, 1996 में साउथ अफ्रीका में पोस्ट अपार्थीड संविधान को अपनाया गया।

अप्रैल 97 में सरकार ने हिंदी, गुजराती तमिल, तेलगु और उर्दू की पढ़ाई को प्राइमरी स्कूलों में करवाने की स्वीकृति देदी।

यहां के मुख्य कृषि उत्पादन कपास, गेहूं, तम्वाकू, गन्ना और खट्टे फल हैं । अपने विशाल खनिज भंडारों के कारण साउथ अफ्रीका विश्व में सवसे वड़ा सोना और हीरा उत्पादक देश तथा वड़े यूरेनियम उत्पादक देशों में से एक है । विश्व के कुल सोना उत्पादन का 47 प्रतिशत यहीं होता है । अन्य खनिजों में कोयला, तांवा, टिन, मैंगनीज़, लोहा, सीसा और क्रोम शामिल हैं । निर्माण उधोगों में भारी इंजीनियरिंग, रसायन, कपड़ा तथा खाद्य परिरक्षण है

नेल्सन मंडेला ने अपनी 80वीं वर्षगांठ, 18 जुलाई 1998 के दिन ग्रासा माकेल से विवाह (उनका तीसरा विवाह) किया। ग्रासा पहले मोजाम्विक के राष्ट्रपति समोरा माकेल की पत्नी थीं। समोरा की हवाई दुर्घटना में मृत्यु हो गयी थी। जून 1999 में नेल्सन मंडेला ने अवकांश लिया। तावो वेकी जून 16 को नये राष्ट्रपति वने।

राज्याध्यक्ष एवं सरकार प्रमुखः तावो वेकी

भारत में दूतावास: दक्षिण अफ्रीका का दूतावास, वी–18, वसंत मार्ग, वसंत विहार, नई दिल्ली–110057, फोन: 6149411–20; फैक्स: 6143605

सी–2/15, वसन्त विहार, नई दिल्ली। फोन: 6878607, फैक्स:6878605.

वाणिज्य दूतावास: गांधी मेन्शन, 20–अल्टामाउंड रोड, कुंब्ला हिल, मुंवई–400 026, फोन: 3893725. फैक्स: 3893730

Indian Mission in South Africa: High Commission of India, 852, Schoeman Street, Arcadia-0083, Pretoria, South Africa. (P.O.Box. No. 40216, Arcadia-0007, Pretoria, South Africa. Tel: 00-27-12-3425392; Fax: 00-27-12-3425310.

सिंगापुर

(Republic of Singapore)

राजधानी: सिंगापुर सिटी; क्षेत्रफल: 616.3 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 4.0 मिलयन; भाषा: मलय, चीनी, तमिल और अंग्रेजी; साक्षरता: 91%; धर्म: वौद्ध, हिन्दू, इस्लाम, ईसाई और ताओ; मुद्रा: डालर; 1 अमरीकी डालर = 1.69 सिंगापुर डालर; प्रति व्यक्ति आय: 28,460 डालर ।

वच्चे चाहियें

सिंगापुर में अंत: मंत्रिमंडलीय समिति कारण ढूंढने में जुटी है कि सिंगापुर में विवाह और गर्भधारण में युवाओं की रुचि लगातार कम क्यों होती जा रही है?

गिरती हुई जन्म दर से चिंतित सरकार ने कम पढ़ी लिखी युवतियों को अधिक वच्चों को जन्म देने के लिये पोत्साहन देने का निर्णय लिया है। युवाओं में अधिक शिक्षा पाकर वेहतर रोजगार की अपेक्षा ने गर्भधारण में अत्यधिक कमी ला दी है, और वे विवाह या वच्चे पैदा करने के लिये तैयार नहीं है। इसलिये सरकार ने अपनी नीति में परिवर्तन करके कम पढ़ी लिखी युवतियों को अधिक वच्चे पैदा करने के लिये प्रोत्साहन देने का निर्णय लिया।

सिंगापुर एक छोटा द्वीप है जिसके पास लगभग 54 छोटे टापू हैं । यह मलाया प्रायद्वीप की दक्षिणी नोक पर स्थित है और प्रायद्वीप से यह पक्के पुल द्वारा जुड़ा है । इस द्वीप की लम्बाई लगभग 41.84 कि.मी. तथा चौड़ाई 22.53 कि.मी. है ।

सिंगापुर की आबादी मिली–जुली है जिसमें 76.5 प्रतिशत चीनी, 14.8% मलाया मूल तथा 6.4 % भारतीय है ।

अगस्त 1965 में सिंगापुर एक स्वतंत्र गणराज्य वन गया।

यह देश मलेशिया तथा अन्य दक्षिण पूर्वी एशियाई राज्यों के लिए व्यापारिक केन्द्र है । यहां के मुख्य निर्यात पदार्थ रबड़ और टीन हैं । उद्योगों में टिन शोधन, रबड़ सफाई, जाली लकड़ी का सामान, जहाज़ निर्माण, कपड़ा और इलेक्ट्रॉनिक्स सामान शामिल हैं ।

राष्ट्रपति: एस.आर. नाथन; प्रधानमंत्री: गोह चोक टोंग।

भारत में दूतावास: हाई कमीशन ऑफ सिंगापुर, ई–6 चंद्रगुप्त मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021, फोन 6885659; फैक्स: 6886798

वाणिज्य दूतावास: 94 सकार भवन, 230 नरीमन प्वांइट, मुंवई: 400 021, फोन. 2043209

द्वारा डाइनर्स, 8 ए दूसरी मंजिल, ए जे सी वोस रोड, कलकत्ता, फोन: 474990, 470400

एपेक्स प्लाजा, नुनगम्बाकम हाई रोड, चेन्नई–600 034, फोन: 473795, 476637

Indian Mission in Singapore: *High Commission of* India, "India House", 31, Grange Road, Singapore-239702, Tanglin P.O. Box No 92, Singapore-912304, Tel. (5)-65-7376777; Fax 00-65-7326909

स्विट्जरलैण्ड

(Swiss Confederation)

राजधानी: वर्न; क्षेत्रफल: 41,293 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 7.1 मिलयन; भाषा: जर्मन, फ्रेंच, इटेलियन और रोमन्श; साक्षरता: 100%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: स्विश फ्रैंक; 1 अमरीकी डालर = 1.49 स्विश फ्रैं; प्रति व्यक्ति आय: 25,512 डालर ।

स्विट्जरलैण्ड मध्य यूरोप में एक महासंघ है जो एक

पर्वतीय देश है । इसके मध्य भाग से एल्पाइन पर्वतमाला उठती है । यह देश अपनी झीलों के लिए विख्यात है ।

1921 से स्विट्जरलैण्ड पूर्ण रूप से स्वतंत्र देश रहा है । यह बहुभाषीय राज्य है जहां के अधिकांश निवासी एक से अधिक भाषाएं बोलते हैं ।

स्विस भूभाग में खेती की बहुत कम संभावना है । फिर भी अनेक छोटे कार्यकुशल फार्मों पर खेती होती है जिससे कृषक समाज का गुज़ारा चलता है । यहां मुख्य जोर पशु संवर्धन और दुग्ध उत्पादन पर दिया जाता है । वनों से पर्याप्त मात्रा में लकड़ी मिल जाती है । अति प्राचीन काल से स्विट्जरलैण्ड अपने कुटीर उद्योगों और बढ़िया किस्म के उत्पादों के लिए प्रसिद्ध है लेकिन यहां बड़े पैमाने में उत्पादन नहीं होता ।

यहां की बनी हाथ की और दीवार घड़ियां संसार भर में प्रसिद्ध हैं । सूक्ष्म यंत्र और मशीनें यहां का अन्य विशिष्ट उद्योग है । प्रत्येक मकान में बिजली की पर्याप्त उपलब्धि ने समूचे देश में सभी किस्म के लघु उद्योगों के पनपने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । पर्यटन यहां की आमदनी का तीसरा बड़ा साधन है । भारत सदा से स्विस सहायता का मुख्य भागीदार रहा है – विशेष रूप से पशु सम्वर्धन, ग्रामीण विकास, व्यावसायिक प्रशिक्षण के क्षेत्रों में तथा व्यावहारिक अनुसंधान के विभिन्न क्षेत्रों में ।

अप्रैल 99 में स्विटजरलैंड के मतदाताओं ने 125 वर्ष पुराने संविधान में संशोधन करने पर सहमति दे दी। इन संशोधनों में नये अधिकार जैसे हड़ताल आदि करना शामिल हैं ।

राष्ट्रपति: (2000) अडोल्फ ओगी।

भारत में दूतावास. स्विट्जरलैण्ड का दूतावास, न्याय मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021; फोन: 687372; फैक्स: 687 3093.

वाणिज्य दूतावास: मुंबई: 102, मार्कर चेम्बर्स IV, 10 वी मंजिल 222, जमनालाल बजाज मार्ग, नारिमन प्वाइंट, मुंबई–400 021. फोन 2831738; फैक्स: 2856566.

कलकत्ता: स्विस कांसुलर ऐजन्सी, 113 पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता–700 016

चेन्नई: स्विस कांसुलर ऐजन्सी, 224, टी.टी.के. रोड, चेन्नई–600 018

Indian Mission in Switzerland Embassy of India, Kirchenfeldstrasse 28, Postfach 406, CH-3000, Berne-6, Switzerland. Tel 00-41-31-3511110, Fax 00-41-31-3511557.

सियरा लियोन

(Republic of Sierra Leone)

राजधानी: फ्रीटाउन; क्षेत्रफल: 71,740 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 5.2 मिलियन; भाषा: अंग्रेजी और कबायली; साक्षरता: 31%; धर्म: इस्लाम, ईसाई और कबायली; मुद्रा: लियोन; 1 अमरीकी डालर = 1,776.20 लियोन; प्रति व्यक्ति आय: 458 डालर ।

इस क्षेत्र को सियरा लियोन (जिसका अर्द्ध सिंह का पर्वत है) नाम मूल रूप से पुर्तगाली नाविकों ने दिया था क्योंकि यहां की तटीय चोटियों के चारों ओर भीषण गरज के साथ वर्षा होती है । यह गिनी और लाइबेरिया के मध्य पश्चिमी अफ्रीका के उभार पर स्थित है । पहले यहां ब्रिटिश शासन था और 1961 में यह स्वतंत्र हुआ और 1971 में गणराज्य बना।

मई 97 में सैन्य विद्रोह ने अहमद तेजान कब्बाह की सरकार का तख्तापलट कर दिया। मार्च 98 में नाइजीरिया की नेतृत्व में इकोवासीसेना ने ले.कर्नल जानी पाल कोरोमा को सत्ता से हटा दिया और राष्ट्रपति कब्बाह दुबारा सत्ता में आये। जुलाई में संयुक्त राष्ट्र सैन्य पर्यवेक्षक योजना को सुरक्षा परिषद ने मंजूरी दी। पश्चिमी अफ्रीकी शांति सेना की मदद के लिये 70 सदस्यीय दल पूर्व सैनिक विद्रोह के अवशेषों को हटाने के लिये गया।

9 वर्ष के गृहयुद्ध ने देश की आर्थिक स्तिति को दयनीय बना दिया। 10% लोग पड़ौसी देशों में भाग गये यू.एन.डी.पी. की 174 देशों की सूची में सियरा लियोन क्रम में अंतिम स्थान पर है।।

यहां की अर्थ–व्यवस्था कृषि और खनन पर आधारित है यहां के मुख्य उत्पाद औद्योगिक हीरे और लौह अयस्क, बाक्साइट, कोला नट्स, ताड़ का फल, नारियल और काफी हैं ।

राज्याध्यक्ष: अहमद तेजान कब्बाह।

भारत में दूतावास: कांसुलेट जनरल, डा. एल. आर. भोजवानी, 1412–दयामल टावर्स, 211–नारिमन प्वाइंट, मुंबई–400 021, फोन: 2852617, 2876150; फैक्स: 2834004

Indian Mission in Sierra Leone: Honorary Consulate General of India, Post Box No. 26, 5, Rawdon Street, Freetown, Sierra Leone. Tel: 00-232-22-22452; Fax: 00-232-22-226343.

सीरिया

(Syrian Arab Republic)

राजधानी: दमास्कस; क्षेत्रफल: 1,85,180 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 16.5 मिलियन; भाषा: अरबी, कुर्दिश, आर्मीनियन; साक्षरता: 79%; धर्म: इस्लाम; मुद्रा: सीरियन पाउण्ड; 1 अमरीकी डालर = 46.25 सीरियाई पौण्ड; प्रति व्यक्ति आय: 2,892 डालर ।

मिडिल ईस्ट में सीरियन अरब रिपब्लिक टर्की, इराक, जोर्डन, फिलिस्तीन और लेबनान के बीच स्थित है । इसके पश्चिम में भूमध्य सागर है । ओरोन्टस और यूफ्रेट्स नदियां सीरिया से गुजरती हैं । यहां के प्रमुख बन्दरगाह लटाकिया और टारटौस हैं ।

सीरिया जो प्राचीन सभ्यता का केन्द्र है, पूर्ण स्वतंत्र प्रभुसत्ता सम्पन्न गणराज्य 1946 में बना

सीरिया अरब–इजराइल झगड़े में 1948 से ही जुड़ा रहा है। सीरिया और इजराइल के बीच बातचीत का कोई हल नहीं निकला।

फरवरी 98 में राष्ट्रपति ले. जनरल हाफेज अल–असद ने अपने भाई रियाफत को उपराष्ट्रपति पद से हटा दिया। असद 1999 में दुबारा राष्ट्रपति निर्वाचित हुए।

यहां के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि और पशु पालन है ।

यहां की मुख्य फसलें कपास, गेहू, तम्बाकू और जैतून है। खनिज के रूप में यहां केवल तेल पाया जाता है। उद्योगों में तेल निकालना, साबुन, कपड़ा, चमड़ा और तम्बाकू उद्योग है।

राष्ट्रपति: बशीर अल आजाद; प्रधानमंत्री: महमूद ज़ुवी।

भारत में दूतावास: एम्बेसी आफ सीरियन अरब रिपब्लिक, डी, 5/8, वसन्त मार्ग विहार, नई दिल्ली–110 057; फोन: 6140285; फैक्स: 6143107.

वाणिज्य दूतावास: मुंबई: तीसरी मंजिल, कम्बाट्टा बिल्डिंग, सर जमशेदजी टाटा रोड मुंबई–400 020; फोन: 221999

Indian Mission in Syria: Embassy of India, 40/46, Adnan Malki Street, Yassin Nowelati Building, P.O. Box 685, Damascus, Syria. Tel: 00-963-11-3739081; Fax: 00-963-11-3316703.

सुडान

(Republic of the Sudan)

राजधानी: खारतूम; क्षेत्रफल: 25,05,813 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 29.5 मिलयन; भाषा: अरबी, अंग्रेजी, दिनका और नुबियन; साक्षरता: 46%; धर्म: इस्लाम, ईसाई और कबायली; मुद्रा: दीनार; 1 अमरीकी डालर = 254 दीनार (पुरानी मुद्रा सुडानीड पौंड अभी भी प्रचलन में है और यह डालर के मुकाबले 2,540 है); प्रति व्यक्ति आय: 1394 डालर।

सुडान उत्तर पूर्वी अफ्रीका का एक गणतंत्र है। श्वेत नील नदी देश के बीच से गुजरती है और खारतूम के निकट नीली नील नदी से मिलती है। सुडान की आबादी अरबों, नीग्रो तथा अरब और नीग्रो के संकर रक्त के न्यूबियनों की है। सुडान 1995 में स्वतंत्र राज्य बना।

12 उत्तरी प्रांत अरब मुस्लिम आबादी के हैं जबकि 3 दक्षिणी प्रांतों में इसाई व ईश्वर की सार्वभौमिकता में विश्वास करने वालों की है।

दी सुडानीज पीपुल्स लिबरेशन आर्मी पिछले 16 वर्षों से इस्लामिक अरब प्रभुत्व से इसाई व ईश्वर की सार्वभौमिकता में विश्वास करने वालों के तीन दक्षिणी प्रांतों को हटाने के लिये गुरिल्ला लड़ाई लड़ रही है। अब तक 15 लाख लोग हिंसा और भुखमरी का शिकार हो चुके हैं।

अप्रैल 97 में सुडान की इस्लामिक सरकार ने दक्षिणी प्रांतो के विद्रोही गुट से गृहयुद्ध की समाप्ति के लिये शांति समझौता किया। इस समझौते के तहत हर चार वर्षों में इन प्रांतो के सुडान में बने रहने के लिये जनमत होगा। 1998 में सूखा और भयानक भुखमरी की स्थिति बन गई। दक्षिणी सुडान में प्रत्येक 10,000 बच्चों में से प्रतिदिन 15 बच्चे भुखमरी से मरने लगे। एस.पी.एल.ए. द्वारा एक तरफा युद्ध विराम की घोषणा के बाद यू.एन. वर्ल्ड फूड प्रोग्राम ने भोजन की आपूर्ति प्रारंभ की। अगस्त में अडिस अबाबा में शांति वार्ता विफल रही।

यू.एन. एच.सी.आर. ने सुडान पर मानव अधिकार के उल्लंघन का आरोप लगाया हा। कहा जाता है कि सुडान ने विद्रोहियों पर रसायनिक हथियारों का प्रयोग किया है।

यहां की मुख्य कृषि फसल ज्वार है जो देश के लोगों का मुख्य भोजन है। अन्य कृषि–पदार्थों में लम्बे रेशे की कपास, मूंगफली, तिल, खजूर, खाल और चमड़ा, लाल मिर्च, फलियां और मक्का शामिल हैं। सुडान संसार में अरबी गोंद का मुख उत्पादक है। चावल, मूंगफली, काफी, गन्ना और तम्बा कृषि उत्पादन के नई उपज है। सुडान की खनिज सम्प में तांबा, सोना, लोहा, मैंगनीज़ और मेगनेसाइट सम्मिलित है

राज्याध्यक्ष: ले. जनरल ओमार हसन अहमद अल–बशीर

भारत में दूतावास: सुडान का दूतावास, प्लाट न. 3 शांतिपथ, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110 021, फोन 6873785; फैक्स: 6883758

Indian Mission in Sudan: Embassy of India, P.O. Bo 707, 61, Africa Road, Khartoum-II, Sudan. Tel:00-249 11-471205; Fax: 00-249-11-472266.

सूरीनाम

(Republic of Suriname)

राजधानी: परमारिबो; क्षेत्रफल: 1,63,820 वर्ग किलोमीट जनसंख्या: 4,31,156 भाषा: डच, हिन्दी, सूरीनामी औ जैवेनीज, अंग्रेजी; साक्षरता: 93%; धर्म: इस्लाम, हिन्दू औ ईसाई; मुद्रा: सूरीनाम गिल्डर; 1 अमरीकी डालर = 809.50 गिल्डर; प्रति व्यक्ति आय: 5161 डालर।

सूरीनाम का भूतपूर्व नाम डच गुआइना था। यह दक्षिण अमरीका के उत्तरी–पूर्व तट पर स्थित है। 1975 में य स्वतंत्र हुआ।

यहां की आबादी नीग्रो, चीनी, ईस्ट इंडियन औ इण्डोनेशियाई जातियों के खानदानों की संकर नस्ल हैं यहां की आबादी का 40 प्रतिशत भाग मुलाटोज (यूरोपीय और ईस्ट इंडियन की मिश्रित जाति), अमेर–इंडियन और यूरोप के लोगों की है।

यहां की भूमि के बड़े भाग पर चावल की खेती होती है देश खनिजों की दृष्टि से समृद्ध है।

यह विश्व का सबसे बडा बाक्साइट उत्पादक है। देश के निर्यात का 90 प्रतिशत भाग बाक्साइट, एल्युमिना और एल्युमीनियम का निर्यात है।

राष्ट्रपति: रोनल्ड वेनेटियान; उपराष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री प्रतापनारायण राधाकिशुन।

Indian Mission in Suriname: Embassy of India, 10, Rode Kruislaan, Post Box No. 1329, Paramaribo, Suriname. Tel: 00-597-498344; Fax: 00-597-491106.

सेनेगल

(Republic of Senegal)

राजधानी: डकार; क्षेत्रफल: 196,162 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 9.5 मिलयन; भाषा: फ्रेंच तथा स्थानीय बोलियां; साक्षरता: 33%; धर्म: इस्लाम और कबायली; मुद्रा: फ्रैंक सी.एफ.ए.; 1 अमरीकी डालर = 612.79 एफ सी एफ ए; प्रति व्यक्ति आय: 1,307 डालर।

सेनेगल पश्चिमी अफ्रीका के उभार पर स्थित है। देश के दक्षिणी भाग में गैम्बिया का एक पतला विदेशी अंत: क्षेत्र है जो लगभग 200 मील अंदर तक चला गया है।

पहले यह फ्रांसीसी उपनिवेश था जो 1960 में स्वायतशासी गणतंत्र बन गया।

कृषि और पशुपालन यहा के मुख्य व्यवसाय हैं ।यहां लौह अयस्क तथा फास्फेट के विशाल भंडार हैं ।

विकासशील उद्योगों में खाद्य संसाधन, रसायन और कपडा शामिल हैं ।

1988 में सेनेगल और भारत में नए राजनयिक संबंधों का प्रारम्भ हुआ ।

राष्ट्रपति: अब्दौलाये वाडे ; प्रधानमंत्री: मामाडाउ लैमीन लौउम।

भारत में दूतावास: सेनगल गणराज्य का दूतावास, 30 पश्चिमी मार्ग वसंत विहार, नई दिल्ली–110 057; फोन: 6143720, फैक्स: 6144568

Indian Mission in Senegal: Embassy of India, 5, Avenue Carde, First Floor, BP 398, Dakar, Senegal. Tel 00-221-8225875; Fax: 00-221-8223585.

सेशेल्स
(Republic of Seychelles)

राजधानी: विक्टोरिया; क्षेत्रफल: 308 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 79,164; भाषा: क्रियोल, अंग्रेजी और फ्रेंच; साक्षरता: 84%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: रुपया; 1 अमरीकी डालर = 5.28 रुपए; प्रति व्यक्ति आय: 10,600 डालर

सेशेल्स पश्चिमी हिन्द महासागर में सुंदर द्वीपों का समूह है। मुख्य द्वीप माहे है, जिसमें राजधानी विक्टोरिया स्थित है। इस द्वीप समूह में करीब 92 द्वीप हैं, जिनमें से 45 प्रवालीय तथा शेष ग्रेनाइटिक हैं । सेशेल्स 1976 में गणतंत्र बना।

सेशेल्स 1770 तक पूर्ण निर्जन था, जब फ्रांसीसियों ने यहां 1768 में बस्तियां बसाईं । 1814 तक यहां पर मारीशस के भाग के रूप में शासन होता था । 1794 में अंग्रेजों ने इन द्वीपों पर अधिकार कर लिया । 1903 में यह अलग कोलोनी हो गया । 29 जून 1976 को इसे स्वतंत्रता मिली । 1979 से यहा एक दलीय शासन है ।

सेशेल्स की आबादी मिश्रित मूल की है, जिसमें यूरोपीय, अफ्रीकी, भारतीय तथा चीनी नस्लों का अद्भुत मिश्रण हैं । सेशेल्स ने एक मिश्रित भाषा विकसित की है जिसे क्रियोल कहा जा सकता हैं ।

कृषि उत्पादों में नारियल का प्रमुख स्थान है । दालचीनी अन्य मुख्य फसल है, जिसका निर्यात होता है। चाय और नीबू जैसी अन्य फसलें भी उगाई जाती हैं । मछली पकड़ना अन्य प्रमुख व्यवसाय है । टुना, मुलेट, मैकेरल, सारडाइन मछलियां, सीप और शंख यहां के तटीय जल में बहुतायत से मिलते हैं ।

राष्ट्रपति: फ्रांस अल्बर्ट रेने ।

आनरेरी कांसुलेट,52, फ्रैंड्स कोलोनी, नई दिल्ली। फोन: 6839235; फैक्स:4361131.

प्लॉट 478, पहली मंजिल, 13 वीं रोड, चेंबुर, मुंबई-400071; फोन:5512360; फैक्स: 5113850.

Indian Mission in Seychelles: High Commission of India, Le Chantier, Post Box No. 488, Victoria, Mahe, Seychelles. Tel: 00-248-224489; Fax: 00-248-224810.

सेन्ट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक
(Republique Centrafricaine)

राजधानी:बंगुई; क्षेत्रफल: 622,984 वर्ग किलोमीटर जनसंख्या: 3.5 मिलयन; भाषा: फ्रेंच और संघों; साक्षरता 60%; धर्म: ईसाई और कबीलाई धर्म; मुद्रा: फ्रैंक सी.एफ.ए.; 1 अमरीकी डालर = 612.79 फ्रैंक सी.एफ.ए.; प्रति व्यक्ति आय: 1,118 डालर ।

सेन्ट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक अफ्रीका के ऊष्ण कटिबंधीय क्षेत्र के बीच में स्थित है । 1958 में इसे स्वशासन मिला और 1960 में फ्रेंच कम्युनिटी के सदस्य राज्य के रूप में इसे पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त हुई । स्थल सेनाध्यक्ष कर्नल जीन बेडेल बोसाका ने राष्ट्रपति डेविड डैको को अपदस्थ करके सत्ता हड़प ली ।

1972 में बोसाका को देश का आजीवन राष्ट्रपति बना दिया गया । 1976 में बोसाका ने अपने को नेपोलियन की भांति सम्राट घोषित कर दिया । 1979 में जन विद्रोह ने इस नन्हें नेपोलियन को मार भगाया । दिलचस्प बात यह है कि 20 सितम्बर, 1979 को एक रक्तहीन क्रांति में डेविड डैको ने ही स्वंय-भू सम्राट बोसाका का तख्ता पलट दिया ।

मुख्य कृषि उत्पाद कपास और काफी हैं । निर्यात की प्रमुख मद कपास है । देश को निर्यात से होनेवाली कुल आय में से आधी हीरों से होती है । यूरेनियम के खनन का महत्व बढ़ता जा रहा है ।

राष्ट्रपति: आंगे-फेलिक्स पाट्से; प्रधानमंत्री: एनिसेट जार्जेस डोलोगुएले।

सेण्ट किट्स-नेविस
(Federation of St.Kitts and Nevis)

राजधानी: बस्सेटेरे; क्षेत्रफल: 269 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 45,000, भाषा: अंग्रेजी और पटोइस; साक्षरता: 98%; धर्म ईसाई मुद्रा ईस्ट कैरेबियन डालर; 1 अमरीकी डालर = 2.70 ई.कै.डालर; प्रति व्यक्ति आय: 10672 डालर।

सेण्ट क्रिस्टफर (किट्स) – नेविस पूर्वी कैरीबियन में दो द्वीपों का समूह है जो 3.22 कि.मी. चौड़े एक संकरे जलमार्ग से अलग होते हैं ।

1967 में इन द्वीपों को ब्रिटेन के साथ सह-राज्य का दर्जा दिया गया और 18 सितम्बर 1983 को ये स्वतंत्र हो गए । उस समय एंगुइल्ला सेण्ट किट्स-नेविस का एक भाग था । इस व्यवस्था के विरुद्ध एंगुइल्लावासियों ने विद्रोह कर दिया और इसे अलग कर दिया गया ।

यहां की आबादी मुख्यतः काले लोगों की है । यहां की अर्थ-व्यवस्था मुख्यत: कृषि पर आधारित है । कपास और गन्ना यहां की मुख्य फसलें है ।

गवर्नर जनरल: कुर्थेट एम सेबास्टियन; प्रधानमंत्री: डा. डेनजील डगलस।

सेण्ट विंसेण्ट एण्ड दी ग्रेनेडाइंस

राजधानी: किंगसटाउन; **क्षेत्रफल:** 388 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 118,000; **भाषा:** अंग्रेजी और फ्रेंच पटोइस; **साक्षरता:** 96%; **धर्म:** ईसाई; **मुद्रा:** ईस्ट कैरेबियन डालर; 1 अमरीकी डालर = 2.70 ई.कै.डालर; **प्रति व्यक्ति आय:** 4,692 डालर ।

सेण्ट विंसेण्ट विंडवार्ड द्वीप समूह में से एक द्वीप है जो बारबडोस के पश्चिम में स्थित है। यह 1969 में ब्रिटिश सह–राज्य बना। यह 27 अक्तूबर 1979 को स्वतंत्रत हुआ।

यहां की जनसंख्या मिश्रित मूल की है जिसमें यूरोपियन, नीग्रो और कैरीबियन इंडियन शामिल हैं ।

केला, आरारोट, नारियल गिरी, कपास और मसाले मुख्य निर्यात पदार्थ हैं। पर्यटन का महत्वपूर्ण स्थान है ।

गवर्नर जनरल: चार्ल्स जे. एंट्रोबस; **प्रधानमंत्री:** जेम्स फिट्ज एलेन मिच्चेल ।

सेण्ट लुसिया

राजधानी: केस्टाइस; **क्षेत्रफल:** 616 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 161,000; **भाषा:** अंग्रेजी और फ्रेंच पटोइस; **साक्षरता:** 80%; **धर्म:** ईसाई; **मुद्रा:** ईस्ट कैरेबियन डालर; 1 अमरीकी डालर = 5,183 गिल्डर; **प्रति व्यक्ति आय:** 5,437 डालर

सेण्ट लुसिया विण्डवार्ड द्वीप समूह का दूसरा सबसे बडा द्वीप है जो मार्टिनीक्वे के दक्षिण और सेण्ट विंसेण्ट के उत्तर में स्थित है। 22 फरवरी 1979 ई. को यह स्वतंत्र हुआ।

यहां की अर्थ–व्यवस्था कृषि पर आधारित है। नारियल, नारियल तेल, केला और कोकोआ यहां के मुख्य निर्यात हैं। निर्माण उद्योगों में प्लास्टिक का सामान, सिले हुए वस्त्र और बीयर सम्मिलित है ।

गवर्नर जनरल: कैल्लियोपा पी. लाउजी; **प्रधानमंत्री** केन्नी एंथोनी।

सैन मरीनो

(Most Serene Republic of San Marino)

राजधानी: सैन मरीनो; **क्षेत्रफल:** 61 वर्ग किलोमीटर **जनसंख्या:** 25,061; **भाषा:** इटेलियन; **साक्षरता** 99% **धर्म:** ईसाई; **मुद्रा:** लीरा; 1 अमरीकी डालर = 1,808 8[illegible] लीरा; **प्रति व्यक्ति आय:** 16,900 डालर ।

सैन मरीनो गणतंत्र इटली के अग्रभाग पर [illegible] में माउन्ट टाइटेनो की अड्रियाटिक दिशा की ओर [illegible] पर स्थित है। इसका दावा है कि यह यूरोप का [illegible] राज्य है क्योंकि इसकी स्थापना 301 ई. में की गई थी

यहां की मुख्य उपज गेंहू, शराब और [illegible] है [illegible] में कपड़ा, चीनी–मिट्टी उद्योग, [illegible] तथा ऊनी वस्तुएं हैं । राजस्व का मुख्य [illegible] है

कैप्टन्स–रीजेन्ट: प्रत्येक 6 [illegible] 60 सदस्यों की, निर्वाचित ग्रेट एण्ड [illegible] काउन्सिल द्वारा 6 महीनो में दो को रीजेंट्स की [illegible]

भारत में दूतावास: सैन मरीनो का [illegible] 15, औरंगजेब रोड, नई दिल्ली–110 011; फोन 3015850, फैक्स: 3019677.

सोमालिया

(Somalia Democratic Republic)

राजधानी: मोगाडिशु; **क्षेत्रफल:** 637,657 वर्ग किलोमीटर; **जनसंख्या:** 7.3 मिलियन; **भाषा:** सोमालिया, अंग्रेजी, अरबी, इटेलियन; **साक्षरता:** 24%; **धर्म:** इस्लाम; **मुद्रा:** सोमाली शिलिंग; 1 अमरीकी डालर = [illegible] सो.शिलिंग; **प्रति व्यक्ति आय:** 600 डालर ।

अफ्रीका के पूर्वी तट पर एक गणतंत्र के रूप में सोमाली डेमोक्रेटिक रिपब्लिक का गठन 1 जुलाई 1960 को भूतपूर्व इटेलियन सोमालीलैण्ड तथा ब्रिटिश सोमालीलैण्ड को मिलाकर हुआ। सोमालिया एक कृषि–प्रधान देश है। लेकिन 8.2 मिलियन हेक्टेयर उपजाऊ भूमि में से केवल 7 मिलियन हेक्टेयर भूमि पर ही खेती होती है। यहां पशुधन की संख्या 40.1 मिलियन है ।

वर्ष 1992 में सोमालिया में भीषण सूखा पड़ा । सूखे की महामारी और गृहयुद्ध ने सोमालिया को [illegible] पहुंचा दिया। 50 प्रतिशत की आबादी भुखमरी से पीड़ित हुई। लगभग 8,00,000 लोग केन्या भाग गये। जनवरी [illegible] में राष्ट्रपति सियाद बारे अपदस्थ कर दिये गये । सोमाली नेशनल मूवमेंट जो उत्तर में प्रमुख विद्रोही गुट है ने मई 1991 मे स्वतत्र सामाली लैंड रिपब्लिक की घोषणा की। राष्ट्रपति अब्दुरहमान अहमद अली [illegible] और [illegible] को राजधानी बनाया । सयुक्त राज्य और अन्य देशों की [illegible] सहायता की आपूर्ति का निरीक्षण कर रही है। दिसम्बर 92 में 14 गुटों के दो नेता अली महदी मुहम्मद फराह आदीदे ने संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में शांति योजना पर सहमति दी।

जनरल अदीदि को सोमाली नेशनल एलायंस को संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों पर हमले का दोषी पाया गया। [illegible] 30 000 अमरीकी सैनिक जो दिसम्बर 92 में संयुक्त [illegible] के तत्वाधान में आये थे वापस चले गये। राष्ट्र [illegible] गठन वर्तमान परिस्थितियों में बहुत कठिन है।

[illegible]

सोलोमन आइलैण्ड्स पापुआ गिनी के पूर्व में दक्षिण-पश्चिमी प्रशान्त महासागर में स्थित हैं । प्रारंभ में यह एक ब्रिटिश सरक्षित प्रदेश था, जिसे 1978 में स्वतंत्रता मिली।

यहां की आबादी मुख्य रूप से मेलानेशियन है । नारियल मुख्य नकदी फसल तथा चावल प्रधान खाद्य फसल है । मछली यहां के भोजन का मुख्य तत्व तथा निर्यात की प्रमुख मद है ।

गवर्नर जनरल: सर जान इनी लाप्ली; प्रधानमंत्री: मानासरेह सोगावारे।

हण्डुरास

(Republic of Honduras) Republic de Honduras

राजधानी: तेगुसीगल्पा डी.सी.; क्षेत्रफल: 112,088 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 6.1 मिलयन; भाषा: स्पेनिश; साक्षरता: 73%; धर्म: ईसाई; मुद्रा: लेम्पीरा; 1 अमरीकी डालर = 14.42 लेम्पीरा; प्रति व्यक्ति आय: 2,433 डालर।

हण्डुरास मध्य अमरीका में निकारगुआ, एल सल्वाडोर और ग्वाटेमाला के बीच स्थित है । कैरीबियन से मिला हुआ इसका लम्बा समुद्र तट है और दक्षिण में प्रशान्त महासागर में भी इसका संकरा मार्ग है ।

आरंभ में यह स्पेन का उपनिवेश था और 1821 में स्वाधीन हुआ । यहां अनेक बार तानाशाही, सैनिक शासन और शक्ति के बल पर सरकार का तख्ता पलटने की घटनाएं होती रही हैं ।

मुख्य फसल केला है । देश के निर्यात में 76 प्रतिशत भाग इसी का है । काफी, कपास, मक्का और तम्बाकू की भी पैदावार होती है । इमारती लकड़ी बहुतायत से उपलब्ध है और पशु-पालन एक मुख्य उद्यम है ।

राष्ट्रपति: कारलोस फ्लोरेस फाकस्से।

हंगरी

(Republic of Hungary) Magyar Koztarsasag

राजधानी: बुडापेस्ट; क्षेत्रफल: 93,033 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 10 मिलयन; भाषा: हंगेरियन, मेग्यार; साक्षरता: 99%; धर्म: ईसाई, मुद्रा: फोरिन्ट; 1 अमरीकी डालर = 239.80 फोरिन्ट, प्रति व्यक्ति आय: 10,232 डालर ।

हंगरी का इतिहास बड़ा उथल-पुथल वाला रहा है । इस देश पर क्रमशः हूणों, मेग्यारों, तुर्कों, हंगेरियनों और आस्ट्रियनों ने हमला करके इसे लूटा । 1918 में हंगरी एक स्वाधीन राज्य बना और 1919 में समाजवादी गणराज्य बना ।

यद्यपि हंगरी पहले मुख्यतः एक कृषिप्रधान देश था, किन्तु दूसरे विश्व युद्ध के बाद इसकी अर्थ-व्यवस्था में उद्योगों का योगदान बढ़कर 50 प्रतिशत से भी अधिक हो गया है । हंगरी इंजीनियरिंग उत्पादों, मशीनी औजारों, मोटरगाड़ियों और बिजली के व इलेक्ट्रानिक्स के सामान का निर्यात करता है। इस देश में आयात की मुख्य वस्तुएं हैं - कच्चा लोहा, कोयला, कच्चा तेल और उपभोग की वस्तुएं। 97 प्रतिशत से अधिक कृषि-भूमि पर सहकारी खेती होती है । लगभग 186,000 हेक्टेयर भूमि पर अंगूर की खेती होती है ।

मध्य यूरोप के देश हंगरी ने 1990 में लोकतंत्र और बाजारोन्मुख अर्थव्यवस्था को अपनाया ।

राष्ट्रपति: फेरेंक माड्ल; प्रधानमंत्री: विक्टर ओर्बान।

भारत में दूतावास: हंगरी का दूतावास, 2/50, नीति मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110 021; फोन: 611-4737; फैक्स:688-6742.

हंगेरियन ट्रेड आफिस: 30, गोल्फ लिंक, नई दिल्ली-110003, फोन: 4629006, फैक्स: 4627084

आफिस आफ दी कमर्शियल काउंसलर: एन-94, पंचशील पार्क, नई दिल्ली-110017, फोन: 6214962, फैक्स: 6214965

इन्फार्मेशन एंड कल्चरल सेंटर-1-ए जनपथ, नई दिल्ली-110011, फोन: 3014992, फैक्स: 3793161

Indian Mission in Hungary: Embassy of India, Buzavirag utca 14, 1025 Budapest, Hungary. Tel: 00-36-1-3257742; Fax: 00-36-1-3257745.

हैटी

(Republic of Haiti) Republique d' Haiti

राजधानी: पोर्ट-ओ-प्रिंस; क्षेत्रफल: 27,750 वर्ग किलोमीटर; जनसंख्या: 6.4 मिलयन भाषा: फ्रेंच (शासकीय), क्रियोले; साक्षरता: 45%; धर्म: ईसाई और वूडू; मुद्रा: गूर्ड; 1 अमरीकी डालर = 16.70 गूर्ड; प्रति व्यक्ति आय: 1,383 डालर ।

हैटी वेस्ट इंडीज़ का एक भाग है । इसे हिस्पानिओला कहा जाता है । यह अटलांटिक सागर में स्थित है । इसके पश्चिम में क्यूबा में और पूर्व में पोर्टोरिको है । यहां की आबादी में अधिकांश नीग्रो हैं । शेष लोग यहां आकर बसे फ्रांसीसियों और गुलामों के वर्णसंकर वंशज हैं । इस फ्रांसीसी बस्ती ने 1804 में अपने को स्वाधीन गणराज्य घोषित कर दिया ।

मुख्य कृषि उत्पाद काफी है । अन्य उत्पाद हैं - सीसल, कपास, खांड, कोकोआ और तम्बाकू । घरेलू खपत के लिए चावल भी पैदा किया जाता है । शीरे से रम और दूसरी किस्म की शराब बनती है और उनका निर्यात होता है । मुख्य खनिज बाक्साइट है जिसका निर्यात किया जाता है । विदेशी मुद्रा अर्जित करने का दूसरा सबसे प्रमुख साधन पर्यटन है ।

सरकार: फादर जीन बर्टाँड़ अरिस्टडे जो कि स्वतंत्र निर्वाचित राष्ट्रपति थे को अक्टूबर 1991 में सेना ने अपदस्थ कर दिया । जून 92 में जोसेफ नेरेटे अंतरिम राष्ट्रपति बने और प्रधानमंत्री पद मार्क बाजिन को मिला । अगस्त 93 में राबर्ट मालवाल प्रधानमंत्री बने ओर उन्होंने घोषणा की फादर अरिस्टेडे राष्ट्रपति पद पर लौटेंगे ।

राष्ट्रपति: रेने प्रेवाल; प्रधानमंत्री: जैक्वेस एडवर्ड एलेक्सिस।

भारत में दूतावास: हैटी का वाणिज्य दूतावास, 186 शरत बोस रोड, कलकत्ता-700 029; फोन: 46-1164

आनेररी कौन्सिल जनरल, बेल्वाडें व्यू, पेड्डर रोड, मुंबई-400 026; फोन: 492384 4

Indian Mission in Haiti: Honorary Consulate of India, C/o. Hnadal & Fils, 199, Rue Du Magasin de L'Etat, P.O Box No 633, Port-au-Prince (Republic of Haiti). Tel: 00-(509) 222310; Fax: 00-(509) 238489.

संयुक्त राष्ट्र संघ: विश्व शांति का प्रारूप

संयुक्त राष्ट्र ने अप्रैल 1995 में अपनी स्वर्ण जयंती नायी है, अपने 189 सदस्य देशों के साथ विश्व की ागरूकता और आशा का प्रतीक है। विशेषकर छोटे एवं छड़े देशों के लिये एक बड़ी जरूरत है।

1996 में युद्ध से छिन्न–भिन्न बोस्निया में शांति की थापना करके एक बड़ी उपलब्धि प्राप्त की और इस प्रकार श्व के लिए आशा का केंद्र और अंत: करण बना हुआ है; ौर विशेष रूप से अपने 188 सदस्यों में छोटे राष्ट्रों के विषय सचेत है। संयुक्त राष्ट्र, उसके 17 विशेष अभिकरण एवं 14 ुख्य कार्यक्रम और निधियां विश्व के किसी भी कोने के प्राय: भी मानवों से संबद्ध हैं। वर्ष 1994 में पलाऊ गणराज्य क्षेत्रफल 1,632 वर्ग किलोमीटर) 185 वां सदस्य बना।

184 वां सदस्य फ्रेंच – स्पेनिश ीमा पर पूर्वी पाइरेनी का देश अण्डोरा जुलाई 1993 में बना। रिट्रिया और मोनाको संयुक्त राष्ट्र के सदस्य मई 1993 में बने।

पूर्व युगोस्लाविया का गणराज्य मैसेडोनिया अप्रैल 1993 में 181 वां सदस्य बना।

चेकोस्लोवाकिया में विघटन के बाद चेक एवं स्लोवाक दो राष्ट्रों के उदय के साथ संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता 180 तक पहुंची। 179 सदस्य पूर्व सोवियत संघ का गणराज्य जार्जिया था।

संयुक्त राष्ट्र प्रभुत्व–संपन्न राज्यों के एक संघ के रूप में 24 अक्तूबर, 1945 को स्थापित हुआ और ये राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए परस्पर सहमति से बनाए गए एक घोषणा–पत्र का अनुपालन करने के लिए बाध्य हैं। इस घोषणा पत्र पर पचास राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने सैनफ्रांसिस्को में 26 जून, 1945 को हस्ताक्षर किए। आज संसार के प्राय: सभी स्वतंत्र राष्ट्र संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य हैं।

लंबे अर्से तक संयुक्त राष्ट्र में चीन का प्रतिनिधित्व ताइवान करता रहा जो अपने आप को राष्ट्रवादी चीन कहता था। साम्यवादी चीन, जो वास्तव में चीन का असली प्रतिनिधि था, संयुक्त राष्ट्र के बाहर ही रखा गया और इसका मुख्य कारण रहा है अमेरिका का निषेधाधिकार–वीटो।

इस विरोध का निवारण 1971 में हुआ जब साम्यवादी चीन को संपूर्ण चीन के प्रतिनिधि के रूप में प्रवेश दिया गया। इस प्रकार साम्यवादी चीन सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बन गया। ताइवान को न केवल परिषद की स्थायी सदस्यता से, बल्की संयुक्त राष्ट्र की प्राथमिक सदस्यता से भी हटा दिया गया।

दिसम्बर 1974 में संयुक्त राष्ट्र ने आर्थिक अधिकारों का एक घोषणा – पत्र स्वीकार किया। चौंतीस अनुच्छेदों वाला यह घोषणा–पत्र संयुक्त राष्ट्र के इतिहास में एक महत्वपूर्ण प्रलेख है। इसके अनुसार प्रत्येक राष्ट्र को "अपनी संपदा और प्राकृतिक संसाधनों पर स्वतंत्रतापूर्वक संपूर्ण प्रभुत्व जमाने का अपने राष्ट्रीय अधिकार–क्षेत्र के अन्तर्गत किसी भी विदेशी पूंजी–निवेश को नियंत्रित करने और उस पर अधिकार चलाने का और विदेशी संपत्ति को राष्ट्रीयकृत करने, विसंपत्तीकृत करने या उसके स्वामित्व का स्थानांतरण करने का अधिकार प्राप्त है।

सन् 1974 के इस घोषणा–पत्र ने विश्व के विकसित, विकासशी[illegible] और अविकसित देशों के बीच के असंतुलनों को कम करने की अनिवार[illegible] बाध्यता को मान्यता प्रदान की[illegible] इसने एक नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ[illegible] व्यवस्था का पुनर्विलोकन किया। इस नई व्यवस्था को कारगर बनाने के उद्देश्य से सन् 1975 में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.) का [illegible] किया गया और इसके प्रभारी अधिकारी के रूप में [illegible] महानिदेशक का पद बनाया गया।

संयुक्त राष्ट्रसंघ की आधिकारिक भाषाएं [illegible] अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी और स्पेनिश।

1946 से अब तक के महासचिव

ट्रिग्वावे लेय

नाम	राज्य	वर्ष
1. ट्रिग्वावे लेय	नार्वे	1946–53
2. डाग्वा हम्मरशोल्ड	स्वीडन	1953–61
3. यू. थान्ट	वर्मा	1962–71
4. क्वार्ट वाल्डहेम	आस्ट्रिया	1971–81
5. जेवियर पेरस डिक्वयर	पेरु	1982–91
6. बुत्रोस बुत्रोस घाली	मिस्र	1992–96
7. कोफी अन्नान	घाना	1997– –

डाग्वा हम्मरशोल्ड

यू. थान्ट

क्वार्ट वाल्डहेम

डिक्वयर
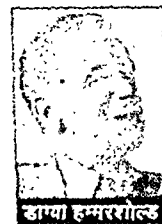
बुत्रोस घाली
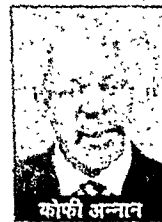
कोफी अन्नान

है। हर एक राष्ट्र के हक में एक-एक मत होता है परन्तु कुछ देश पांच प्रतिनिधि भेजते हैं। सभा की बैठक कम से कम वर्ष में एक बार होती है। सुरक्षा परिषद के अनुरोध पर महासचिव विशेष सत्र भी बुला सकते हैं।

महासभा संयुक्त राष्ट्र का वार्षिक बजट अनुमोदित करती है और इसी में प्रत्येक सदस्य के योगदान का निर्णय होता है। सुरक्षा परिषद सहित सभी विशेष समितियों के प्रतिवेदन सामान्य सभा के विचार के लिए रखे जाते हैं। मुख्य मुद्दों का निर्णय दो-तिहाई मतों की स्वीकृति से और शेष सामान्य बहुमत से स्वीकृत किए जाते हैं।

महासभा सुरक्षा परिषद के अस्थायी सदस्यों, आर्थिक तथा सामाजिक परिषद के सदस्यों और न्यासी परिषद के निर्वाचित सदस्यों को चुनती है। अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के सदस्यों को महासभा और सुरक्षा परिषद संयुक्त रूप से चुनती है। महासभा अपने अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का चुनाव प्रतिवर्ष करती है

अध्यक्ष: थियो बेन गिरोरान (नामीबिया)।

सुरक्षा परिषद: के 15 सदस्य हैं जिनमें से प्रत्येक का एक वोट है। इसके 5 स्थायी सदस्य हैं और 10 अस्थायी सदस्य अस्थायी सदस्यों को दो वर्ष के लिए दो तिहाई बहुमत से महासभा चुनती है। स्थायी सदस्य किसी भी निर्णय पर अपने निषेधाधिकार का प्रयोग कर सकते हैं। दो वर्ष की अवधि के बाद अवकाश प्राप्त करने वाले सदस्य साथ ही अगली अवधि के लिए पुनः चुनाव नहीं लड़ सकते। यदि किसी भी सदस्य-राष्ट्र के हित को प्रभावित करने वाला कोई मुद्दा परिषद में उठता है तो उस पर विचार करते समय उस राष्ट्र को मताधिकार न देते हुए चर्चा में सम्मिलित करते हैं।

परिषद की अध्यक्षता प्रति मास अलग-अलग देश करते हैं और इनकी वरीयता अंग्रेजी के अकारादि क्रम में निर्धारित होती है। स्थायी सदस्य: चीन, फ्रांस, रूस, ब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य अमेरिका। अस्थायी सदस्य: बहरीन, ब्राजील, गैबन, गैम्बिया, और स्लोवेनिया (31 दिसम्बर 1999 तक), मलेशिया, नामीबिया, कनाडा, नीदरलैंड्स और अर्जेंटाइना (31 दिसम्बर 2000 तक) सुरक्षा परिषद में नयी शक्तियां – भारत, जर्मनी एवं जापान को स्थायी सदस्य बनाने के लिये विस्तार किया जाना है।

आर्थिक तथा सामाजिक परिषद: महासभा के अधीन अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक, सामाजिक, शिक्षा-संबंधी, सांस्कृतिक, स्वास्थ्यपरक तथा एतत्संबंधी जितने भी प्रकार्य संयुक्त राष्ट्र के हैं, उन सब का कार्यान्वयन करना आर्थिक तथा सामाजिक परिषद का उत्तरदायित्व है। आर्थिक तथा सामाजिक परिषद के 54 सदस्य हैं जो महासभा के दो-तिहाई बहुमत द्वारा चुने जाते हैं। परिषद के अधीन निम्नलिखित प्रादेशिक आर्थिक आयोग कार्य करते हैं – ई.सी.ई. (यूरोप के लिए आर्थिक आयोग, जनेवा) एस्कैप (एशिया तथा प्रशांत सागरीय प्रदेश के लिए आर्थिक एवं सामाजिक आयोग बैंकाक), ई.सी.एल.ए (लैटिन अमेरिका के लिए आर्थिक आयोग सैंतियागो, चिली) ई.सी.ए. (अफ्रीका के लिए आर्थिक आयोग, ऐडिस अबाबा), ई.सी.डब्ल्यू.ए. (पश्चिमी एशिया के लिए आर्थिक आयोग, बगदाद)।

न्यासी परिषद: संयुक्त राज्य घोषणा-पत्र में प्रावधान है कि उन प्रदेशों में जहां अभी पूर्ण स्वायत शासन नहीं है उनके निवासियों के हितों की रक्षा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय न्यास व्यवस्था कायम की जाए और अलग-अलग न्यास-समझौतों के अनुसार इनको संयुक्त राष्ट्र शासन के अधीन रखा जाए। इन प्रदेशों को न्यासंगत प्रदेश कहते हैं। ग्यारह मूल न्यासंगत प्रदेशों में दस

भारत में संयुक्त राष्ट्र के कार्यालयों के पते

ए.पी.सी.टी.टी. : एशियन एंड पेसिफिक सेंटर फार ट्रांसपोर्ट आफ टेक्नालोजी, एडज्वाइनिंग टेक्नालोजी भवन, पोस्ट वाक्स न. – 4575, नयी महरौली रोड, नयी दिल्ली – 110016, फोन – 6856255/6856276, फैक्स – 91–11–6856274

एफ.ए.ओ. : फूड एंड एग्रीकल्चर आर्गनाइजेशन आफ दी युनाइटेड नेशंज, 55 लोदी एस्टेट, नयी दिल्ली – 1100 03, फोन – 4693060/4628877, फैक्स – 91–11–4620115

आई.एफ.सी. : इंटरनेशनल फिनैंस कार्पोरेशन, न. – 1, पंचशील मार्ग, चाणक्यपुरी, नयी दिल्ली – 1100 21, फोन – 3011306, फैक्स – 91–11–3011278

आई.एल.ओ. : इंटरनेशनल लेबर आर्गनाइजेशन, ईस्ट कोर्ट, थर्ड फ्लोर, इंडियन हैबिटेट सेंटर, लोदी रोड, नयी दिल्ली – 1100 03, फोन – 4602101–04, फैक्स – 91–11–4602111

आई.एम.एफ. : इंटरनेशनल मानिटेरी फंड, 7, जोर बाग, नयी दिल्ली – 1100 03, फोन – 4634223/4634224, फैक्स – 91–11–4635231

यू.एन.डी.सी.पी. : युनाइटेड नेशंजइंटरनेशनल ड्रग कंट्रोल प्रोग्राम, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, दूसरी मंजिल, 40, मैक्स मुलर मार्ग, नयी दिल्ली – 1100 03, फोन – 4625782/4633658, फैक्स – 91–11–4620127

यू.एन.डी.पी. : युनाइटेड नेशंज डेवलपमेंट प्रोग्राम, 55 लोदी इस्टेट नयी दिल्ली–3, फोन– 4629333/4628877, फैक्स – 91–11–4627612

यू.एन.ई.एस.सी.ओ. : युनाइटेड नेशंज एजुकेशनल, सांइटिफिक एंड कल्चरल आर्गनाइजेशन, युनेस्को हाउस, 8 पूर्वी मार्ग, वसंत विहार, नयी दिल्ली – 1100 57, फोन – 6110037/6110038/6110039, फैक्स – 91–11–6873351

यू.एन.एफ.पी.ए. : युनाइटेड नेशंज पापुलेशन फंड, 55 लोदी इस्टेट नयी दिल्ली – 1100 03, फोन – 4627986/4628877, फैक्स – 91–11–4628078, 4627612

यू.एन.एच.सी.आर. : युनाइटेड नेशंज हाई कमिश्नर फार रेफ्यूजीज, 14, जोरबाग, नयी दिल्ली – 1100 03, फोन – 4690730/4697279, फैक्स – 91–11–4620137

यू.एन.आई.सी. : युनाइटेड नेशंज इन्फार्मेशन सेंटर, 55 लोदी एस्टेट, नयी दिल्ली – 1100 03, फोन – 4623439/4628877, फैक्स – 91–11–4620293

यू.एन.आई.सी.एफ. : युनाइटेड नेशंज चिल्ड्रेन फंड, 72 लोदी इस्टेट नयी दिल्ली – 1100 03, फोन – 4690401/4691401, फैक्स – 91–11–4627521

यू.एन.आई.डी.ओ. : युनाइटेड नेशंज इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट आर्गनाइजेशन, 55 लोदी एस्टेट, नयी दिल्ली – 1100 03, फोन – 46298877, फैक्स – 91–11–4627612

यू.एन.आई.एफ.ई.एम. : युनाइटेड नेशंज डेवलपमेंट फंड फार वीमेन, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, दूसरी मंजिल, 40, मैक्स मुलर मार्ग, नयी दिल्ली – 1100 03, फोन – 4698297, फैक्स – 91–11–4622136

यू.एन.एम.ओ.जी.आई.पी. : युनाइटेड नेशंज मिलिट्री आबजरवर ग्रुप इन इंडिया एंड पाकिस्तान, 1/ए.बी. पुराना किला रोड, नयी दिल्ली – 1100 03, फोन – 3387706/3386661, फैक्स – 91–11–3384052

दी वर्ल्ड बैंक : 70, लोदी इस्टेट नयी दिल्ली – 1100 03, फोन – 4617241/4619491, फैक्स – 91–11–4619393

डब्ल्यू.एफ.पी. : वर्ल्ड फूड प्रोग्राम, 53, जोर बाग, नयी दिल्ली – 1100 03, फोन – 4693080/4694381–4, फैक्स – 91–11–4627109

डब्ल्यू.एच.ओ. : वर्ल्ड हेल्थ आर्गनाइजेशन, वर्ल्ड हेल्थ हाउस, इंद्रप्रस्थ एस्टेट, नयी दिल्ली – 1100 02, फोन 3317804/3318443/3318579/3319706, फैक्स – 91–11–3318607/3327972

या तो स्वतंत्र हुए हैं या स्वाधीन राष्ट्रों के साथ शामिल हुए हैं। केवल प्रशांत सागरीय द्वीप–समूह (माइक्रोनेशिया) अभी न्यास के अंतर्गत है और संयुक्त राज्य अमेरिका के शासन में है।

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय : अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय की स्थापना न्यायालय संविधि नामक एवं अन्त–र्राष्ट्रीय समझौते के अन्तर्गत की गई थी। यह कानून संयुक्त राष्ट्र घोषणा–पत्र का एक अभिन्न अंग है। संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य तथ्यतः न्यायालय संविधि के हिस्सेदार हैं। न्यायालय के 15 न्यायाधीश हैं।

अध्यक्ष: गुलवर्ट गुइलाओम (फ्रांस)।

यह न्यायालय हेग में है, यदि अन्यत्र कहीं भी उचित लगे तो वहां भी न्यायालय की बैठक हो सकती है। न्यायालय का खर्च संयुक्त राष्ट्र वहन करता है।

सचिवालय : सचिवालय का मुख्य प्रशासनिक अधिकारी महासचिव है और उनके अधीन महासभा के नियमों के अनुसार उनके द्वारा विश्व–भर से चुनकर नियुक्त किया गया अन्तर्राष्ट्रीय कर्मचारी वर्ग है। महासचिव, [illegible] मामले के उच्चायुक्त तथा निधि के मामले में [illegible] की नियुक्ति महासभा द्वारा की जाती है। प्रथम [illegible] ट्रिगवे लेय (नार्वे) 1946–53 थे। दुसरे डाग्वा [illegible] (स्वीडन) 1953–61, तीसरे ई. थांट (बर्मा) 196[illegible] चौथे क्वार्ट वाल्डहेम (आस्ट्रिया) 1971–81, [illegible]

जवियर पेरेस डिक्वयर 1982–1991व छठे मिस्र के बुत्रोस बुत्रोस घाली 1992 से 1996 तक रहे।

महासचिव: कोफी अन्नान (घाना) 1997 में पांच वर्षों के लिए नियुक्त हुए।

महासचिव की सहायता अवर महासचिव और सहायक महासचिव करते हैं ।

संयुक्त राष्ट्र प्रणाली: यदि कर्मिक दल एवं धन–व्यय के मापदंड से देखा जाए तो संयुक्त राष्ट्र के कार्य का मुख्य भाग घोषणा के 55 वें अनुच्छेद के संकल्पों में हैं – जीवन के उन्नत मानकों का संवर्धन, संपूर्ण रोजगार तथा आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति और विकास की स्थिति । सत्रह विशिष्ट अभिकरणों के अलावा चौदह मुख्य संयुक्त राष्ट्र कार्यक्रम और निधियां भी हैं जो विकासशील देशों में आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति प्राप्त करने के उद्देश्य से कार्यरत हैं ।

यू.एन.डी.पी.: संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम: बहुपक्षीय तकनीकी और पूर्व पूंजी निवेशी सहयोग के लिए विश्व का सबसे बड़ा अभिकरण है । संयुक्त राष्ट्र प्रणाली द्वारा दी जाने वाली प्राय: संपूर्ण तकनीकी सहायता के लिए इसी स्रोत से धन आता है । यू.एन.डी.पी. प्राय: सभी 150 सदस्य राज्यों और प्रदेशों के सभी आर्थिक और सामाजिक कार्यक्षेत्रों में कार्यरत है । यु.एन.डी.पी. की सहायता सरकारों के अनुरोध पर ही दी जाती है । अनुरोधकारी देश की समग्र राष्ट्रीय और प्रादेशिक योजनाओं के अनुसार आवश्यकता के वरीयता क्रम में यह सहायता प्रदान की जाती है ।

प्रशासक: जेम्स गुस्टावे स्पेथ (स.रा. अमरीका)।

यूनिसेफ: संयुक्त राष्ट्र शिशु निधि: इसकी स्थापना 1946 में युद्धोपरांत बच्चों की राहत के लिए संयुक्त राष्ट्र शिशु आपात निधि के रूप में की गई थी जो बाद में संयुक्त राष्ट्र शिशु निधि बन गई । इसकी गतिविधियां विकासशील देशों में बच्चों और माताओं के जीवन की गुणवत्ता को सुधारने के उद्देश्य से पहुंचाई जाने वाली सहायता पर केंद्रित है । सन् 1983 में यूनिसेफ लगभग 110 राज्यों में कार्य

संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य देश

सदस्य	प्रवेश वर्ष
1. अफगानिस्तान	1946
2. अलबानिया	1955
3. अल्जीरिया	1962
4. आण्डोरा	1993
5. अंगोला	1976
6. ऐंटिगुआ एवं बरबूडा	1981
7. अर्जेंटीना	1945
8. आर्मीनिया	1992
9. आस्ट्रेलिया	1945
10. आस्ट्रिया	1955
11. अजरबैजान	1992
12. बहमास	1973
13. बहरीन	1971
14. बंगलादेश	1974
15. बारबेडोस	1966
16. बेलारूस	1945
17. बेल्जियम	1945
18. बेलिज़	1981
19. बेनिन	1960
20. भूटान	1971
21. बोलिविया	1945
22. बोस्निया हर्जेगोविना	1992
23. बोत्सवाना	1966
24. ब्राजील	1945
25. ब्रुनाई	1984
26. बल्गारिया	1955
27. बर्कीना फासो	1960
28. बुरुंडी	192
29. कम्बोडिया	1955
30. कैमरून	1960
31. कनाडा	1945
32. केप वर्डे	1975
33. के. अफ्रीकी गणतंत्र	1960
34. चाड	1960
35. चिली	1945
36. चीन	1945
37. कोलम्बिया	1945
38. कोमोरोस	1975
39. कांगो गणतंत्र	1960
40. कांगो गणतंत्र लो.	1960
41. कोस्टारिका	1945
42. कोटे डी आइवरी	1960
43. क्रोएशिया	1992
44. क्यूबा	1945
45. साइप्रस	1960
46. चेक गणराज्य	1945
47. डेनमार्क	1945
48. जिबूती	1977
49. डोमिनिका	1978
50. डोमिनिकन गणराज्य	1945
51. इक्वेडोर	1945
52. मिस्र	1945
53. एल साल्वाडोर	1945
54. इक्वेटोरियल गिनी	1968
55. एरिट्रया	1993
56. एस्टोनिया	1991
57. इथियोपिया	1945
58. फिजी	1970
59. फिनलैंड	1955
60. फ्रांस	1945
61. गैबन	1960
62. गैंबिया	1965
63. जार्जिया	1992
64. जर्मनी	1973
65. घाना	1957
66. यूनान	1945
67. ग्रेनाडा	1974
68. ग्वाटेमाला	1945
69. गिनी	1958
70. गिनी–बिसाऊ	1974
71. गुयाना	1966
72. हैटी	1945
73. होंडुरस	1945
74. हंगरी	1955
75. आइसलैंड	1946
76. भारत	1945
77. इंडोनेशिया	1950
78. ईरान	1945
79. इराक	1945
80. आयरलैंड	1955
81. इज़राइल	1949
82. इटली	1955
83. जमाइका	1962
84. जापान	1956
85. जोर्डन	1955
86. कजाकस्तान	1992
87. केन्या	1963
88. किरिबटी	1999
89. कोरिया उत्तर	1991
90. कोरिया दक्षिण	1991
91. कुवैत	1963
92. किरगिजस्तान	1992

जनवरी 1951 को की गई थी। इसका पहला कार्यकाल तीन वर्ष था। सन् 1954 के बाद प्रति पांच वर्ष इसकी अवधि बढ़ती जा रही है। विश्व भर के शरणार्थियों के हित में इस संगठन के कार्य के लिए पहले 1954 में और पुनः 1981 में इसको नोबल शांति पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

मुख्यालय: पलाइ द नेशन्स, 1211, जनेवा 10, स्विट्ज़रलैंड।

उच्चायुक्त: सदाको ओगाटा (जापान)।

विशिष्ट अभिकरण: अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा अभिकरण – (आई.ए.ई.ए.): स्थापना 29 जुलाई, 1957 में, 26 अक्तूबर 1956 में न्यूयार्क के संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में इसकी संविधि को अनुमोदित किया गया था। इसका संयुक्त राष्ट्र के साथ एक संबंध समझौता है। सन् 1983 में इसकी सदस्य संख्या 112 थी।

मुख्यालय: विएना अन्तर्राष्ट्रीय केंद, पी.ओ. बाक्स 100, ए–1400, विएना, आस्ट्रिया, ए 2126

महानिदेशक: मोहम्मद अल बाराडेई (मिस्र)

यूनिडो : संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन: यह औद्योगिक सहयोग को संवर्धित करने तथा औद्योगिक संवर्धन के मामले में संयुक्त राष्ट्र के सभी संचालन–कार्यों का समन्वय करने के लिए बनाया गया अभिकरण है। यह औद्योगिक नीतियों के प्रत्येक पहलू पर विकासशील और अविकसित राष्ट्रों को परामर्श–सेवा प्रदान करता है। सन् 1985 में संयुक्त राष्ट्र के एक विशिष्ट अभिकरण के रूप में मान्यता दी गई।

मुख्यालय विएना अन्तर्राष्ट्रीय केंद्र, आस्ट्रिया।

महानिदेशक कार्लोस एल्फ्रेडो मैगारिनोज।

आई.एल.ओ.: अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन इसकी स्थापना सन् 1919 में राष्ट्र संघ के एक स्वायत्त अंग के रूप में हुई थी। इसकी संरचना अंत सरकारीय है और इसमें तीन पक्षों, सरकारों, नियोजकों और कामगारों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं। सन् 1969 में इसको नोबल शांति पुरस्कार मिला। 1984 में इसकी सदस्य संख्या 151 थी।

आई.एल.ओ का शासकीय निकाय अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन है और कार्यालय श्रम कार्यालय है।

मुख्यालय: अन्तर्राष्ट्रीय श्रम कार्यालय, सी एच–1211, जनेवा, स्विट्ज़रलैंड।

महानिदेशक: जुआन सोमाविया (चिली

एफ.ए.ओ.: खाद्य एवं कृषि संगठन: खाद्य और कृषि पर हाट स्प्रिंग्स, वरजीनिया में गई 1943 में आयोजित संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में इस संगठन की योजना बनाने के लिए अंतरिम समिति नियुक्त की और बाद में 16 अक्तूबर 1945 को संगठन स्थापित हुआ।

एफ.ए.ओ. संयुक्त राष्ट्र के सहयोग से विश्व खाद्य कार्यक्रम (डब्ल्यू.एफ.पी.) का प्रायोजन करता है।

मुख्यालय: वियाले दले तर्मे द फेरकले, रोम इटली।

महानिदेशक: जैक्वेस डियोफ (सेनेगल)

युनेस्को : संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन: संयुक्त राष्ट्र के एक शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन की स्थापना के उद्देश्य से। से 6 नवम्बर 1946 तक ब्रिटिश सरकार ने फ्रांस की सरकार के सहयोग से लंदन में एक सम्मेलन बुलाया। युनेस्को 4 नवम्बर 1946 को अस्तित्व में आया।

महानिदेशक: कोइचिरो मात्सुरा (जापान)।

डब्ल्यू.एच.ओ.: विश्व–स्वास्थ्य संगठन: संयुक्त राष्ट्र आर्थिक व सामाजिक परिषद ने स्वास्थ्य विषयक एक अकेली संस्था की स्थापना पर विचार करने के लिए जो अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाया उसके परिणामस्वरूप 22 जलाई 1946 को विश्व स्वास्थ्य संगठन का संविधान स्वीकृत हुआ। यह संविधान 7 अप्रैल 1948 को लागू हुआ।

मुख्यालय 1211 जेनेवा, 27, प्रादेशिक कार्यालय, अलक्जेंड्रिया, ब्राजविल, कोपन हेगन, मनीला, नई दिल्ली तथा वाशिंगटन।

महानिदेशक: ग्रो हारलम ब्रंटलान्ड (नार्वे)

आई.एम.एफ.: अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष: एक स्वतंत्र अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना 27 दिसम्बर 1945 को हुई थी और इसका कार्यारंभ पहली मार्च 1947 को हुआ था।

संयुक्त राष्ट्र के साथ इसका संबंध परस्पर सहयोग के एक समझौते के अनुसार निर्धारित है जो 15 नवम्बर 1947 को लागू हुआ था। कोष के अनुच्छेदों में प्रथम संशोधन 28 जुलाई 1969 में हुआ था। जिसमें विशेष आहरण अधिकारों (एस डी आर.) का प्रावधान रखा गया था। दूसरा संशोधन पहली अगस्त 1978 को लागू हुआ।

मुख्यालय 700, 19 वी गली एन डब्ल्यू, वाशिंगटन डी सी 20431; पैरिस एवं जनेवा में भी दफ्तर है।

प्रबंध निदेशक: होर्स्ट कोहलर (जर्मनी)

विश्व बैंक आई.बी.आर.डी.: पुनर्निर्माण एवं विकास का अन्तर्राष्ट्रीय बैंक: जुलाई 1944 के ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में प्रकल्पना की गई।

अंतर्राष्ट्रीय दशक

1983–1992	संयुक्त राष्ट्र विकलांग दशक
1983–1993	वर्णभेद व भेदभाव के विरुद्ध दूसरा दशक
1985–1994	एशिया और प्रशांत के लिये यातायात व संचार दशक
1990	प्राकृतिक विनाश को कम करने के लिये अंतर्राष्ट्रीय दशक
1990	अफ्रीका के लिये दूसरा औद्योगिक विकास दशक
1990	तीसरा निरस्त्रीकरण दशक
1990–1999	संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय कानून दशक
1990–2000	कालोनियलज्मि की समाप्ति केलिये अंतर्राष्ट्रीय दशक
1991–2000	चौथा संयुक्त राष्ट्र विकास दशक
1991–2000	अफ्रीका में यातायात व संचार का दूसरा दशक
1991–2000	नशे के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र दशक

विश्व बैंक का कार्यारंभ जून 1946 में हुआ। गरीब देशों आर्थिक विकास के हेतु धन और तकनीकी सहायता का ध करना इसका उद्देश्य है ।

मुख्यालय: 1818 एच गली, एन डब्ल्यू वाशिंगटन, सी।

प्रसिडेंट: जेम्स डी वोलफेन्सोह्न (अमरीका)

आई.डी.ए.: अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ: उधार देने वाला क अभिकरण जो 24 सितम्बर 1960 को आरंभ हुआ। शासन विश्व बैंक के हाथ में है। विश्व बैंक के सभी सदस्य ससे लाभ उठा सकते हैं ।

आई.एफ.सी.: अन्तर्राष्ट्रीय वित्त निगम: विश्व बैंक के स सह-संगठन की स्थापना जुलाई 1956 में हुई । तीन जून 1984 को इसकी प्रदत्त पूंजी चौवन करोड़ बयालीस लाख डालर थी जो 125 सदस्य राष्ट्रों से चंदे के रूप में आई थी। इसके अतिरिक्त निगम ने 23 करोड़ एक लाख डालर की राशि अर्जित भी की है। अल्प विकसित सदस्य देशों में उत्पादनकारी निजी उद्यमों की वृद्धि को प्रोत्साहित करते हुए विश्व बैंक की गतिविधियों के पूरक के रूप में भी आई.एफ.सी. कार्य करता है ।

सेक्रेटरी जनरल: जेम्स डी वोलफेन्सोह्न (अमरीका)

आई.सी.ए.ओ.: अन्तर्राष्ट्रीय नागरिक विमान संगठन: अन्तर्राष्ट्रीय नागरिक विमान संगठन की स्थापना के संबंध में शिकागो में पहली नवम्बर से सात दिसम्बर 1944 तक आयोजित एक सम्मेलन में सहमति हुई।

मुख्यालय: 1000 शेरब्रोक गली, पश्चिम, स्यूट 400, मोंट्रियल, क्यूबेक, कनाडा एच-3-ए 2-आर ।

प्रेसीडेंड: डा. अस्सद केटोइटे (लेबनान), सेक्रेटरी जनरलरेनाटो क्लाडियो कोस्टा पेरेरिया (ब्राजील)।

संचार: यू.पी.यू.: सार्वदेशीय डाक संघ की स्थापना: पहली जुलाई 1975 को हुई थी जब 9 अक्तूबर 1874 में बर्न में आयोजित डाक कांग्रेस के निर्णयों को स्वीकार किया गया था। इसका पहला नाम सामान्य डाक संघ (जनरल पोस्टल यूनियन) था जो बाद में 1878 में पेरिस में आयोजित सम्मेलन में बदला गया था ।

मुख्यालय: वेल्टपोस्ट्रासे आर 3000 बर्न 15 स्विट्ज़रलैंड।

महानिदेशक: थोमस ई. लीयेवे (अमरीका) ।

डब्ल्यू.एम.ओ.: विश्व मौसम विज्ञान संगठन: 1873 में स्थापित अन्तर्राष्ट्रीय मौसम वैज्ञानिक संगठन के निदेशकों का एक सम्मेलन 1947 में वाशिंगटन में हुआ और उसने विश्व मौसम विज्ञान संगठन की स्थापना का समझौता स्वीकृत हुआ। जब डब्ल्यू.एम.ओ. कांग्रेस का पहला सत्र 19 मार्च 1951 को पेरिस में हुआ तभी इसकी विधिवत् स्थापना हुई थी ।

मुख्यालय: काज़े पोस्ताले, 5 सी एच 1211, जनेवा 20, स्विट्ज़रलैंड ।

महासचिव: जी.ओ.पी. ओबासी (नाइजीरिया) ।

आई.एम.ओ.: अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन इसे 1982 तक अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री परामर्श संगठन (आई.एम.सी.ओ.) कहते थे। फरवरी-मार्च 1948 में जिनेवा में आयोजित संयुक्त राष्ट्र समुद्री सम्मेलन में बनाए गए समझौते के अनुसार इसकी स्थापना हुई थी ।

मुख्यालय 4 अलबर्ट एम्बैंकमेंट, लदन एस ई आई. 7 एस आर ।

महासचिव: विलियम ओ नील (कनाडा) ।

वर्ल्ड ट्रेड आर्गनाइजेशन (डब्ल्यू. टी.ओ.): यह स्थायी विश्व व्यवसाय संस्थान है, जो कि जनवरी 1995 में गेट के स्थान पर अस्तित्व में आया। गेट पर विचार 1947 में किया गया था और यह जनवरी 48 में अस्तित्व में आया था।

मुख्यालय: सेन्टर विलियम रपार्ड, 154 रुद लाउसाने, 1211, जनेवा 21, स्विट्ज़रलैंड ।

महानिदेशक: रेनाटो रुगेरियो (इटली)।

डब्ल्यू.आई.पी.ओ.: (वाइपो) विश्व बुद्धि संपदा संगठन स्थापना के समझौते पर 1967 में स्टाकहोम में 51 देशों द्वारा हस्ताक्षर हुए थे और अप्रैल 1970 में लागू हुआ था। 1974 में वाइपो संयुक्त राष्ट्र का एक विशेष अभिकरण बना था ।

मुख्यालय: 34, चेमिन द कालवरी, 1211, जनेवा 20, स्विट्ज़रलैंड ।

महानिदेशक: डा. कमाल इदीस (सूडान)

आई.एफ.ए.डी.: अन्तर्राष्ट्रीय कृषि विकास निधि: 1974 के विश्व खाद्य सम्मेलन की मुख्य सिफारिशों में एक इस निधि की स्थापना का प्रस्ताव था ।

एक अरब डालर की राशि के निक्षेप का वादा मिल जाने पर 30 नवम्बर 1977 को आई.एफ.ए.डी. अस्तित्व में आई और अगले महीने से निधि का प्रचालन जारी हुआ ।

मुख्यालय: 107 द्वारा दल सेराफिओ, रोम, इटली ।

प्रधान: फावजी एच. अल-सुल्तान (कुवैत)।

विश्व के संगठन

संयुक्त राष्ट्र के अलावा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों/संघों के अन्तर्गत एक ओर साठ साल पुराना राष्ट्रमंडल है तो दूसरी ओर विश्व का नवीनतम संघ सार्क है – अर्थात् प्रादेशिक सहयोग का दक्षिण एशियाई संघ जिसके सदस्य हैं – भारत, मालद्वीप, पाकिस्तान, बंगलादेश, श्रीलंका, भूटान और नेपाल।

ए.डी.बी. – एशियाई विकास बैंक: इसका पहला प्रायोजन इकाफे (एशिया तथा सुदूर पूर्व के लिए आर्थिक

परिषद) ने किया था और इसका कार्य 1966 में प्रारंभ हुआ था। 1975 में बैंक के 27 प्रादेशिक सदस्य और 14 प्रादेशिकेत्तर सदस्य थे जून 1974 में ए डी बी ने एशियाई विकास निधि (ए डी एफ) जारी किया था। इसका उद्देश्य जरूरतमंद देशों को रियायती दर पर उधार देना था।

अध्यक्ष: टडाओ चिनो (जापान)

मुख्यालय: मनीला

एशियान : दक्षिण पूर्वी राष्ट्र संघ: यह इंडोनेशिया, फिलिपीन्स, सिंगापुर तथा थाईलैंड का एक प्रादेशिक संगठन है जो 8 अगस्त 1967 को इन राज्यों के विदेश मंत्रियों के द्वारा बैंकाक में हस्ताक्षर की गई एक घोषणा के अनुसार संगठित किया गया था। बाद में 1984 में ब्रुनेई भी इसका सदस्य बना इसके उद्देश्य दक्षिण एशिया में आर्थिक प्रगति को त्वरित करना और उसके आर्थिक स्थायित्व को बनाए रखना है।

केंद्रीय सचिवालय जकार्ता, इंडोनेशिया में है और उसका अध्यक्ष महासचिव होता है। महासचिव का पद प्रति दो वर्ष प्रत्येक सदस्य देश को जाता है और देश को चुनाव का आधार अकारादि क्रम है। सचिवालय के ब्यूरो निदेशकों तथा अन्य पदों की भर्ती प्रति 3 वर्ष बाद होती हैं।

महासचिव: रोडोल्फो सी. सेवरिनो (फिलिपीन्स)।

मुख्यालय: जकार्ता (इंडोनेशिया)।

कैरेबियन कम्युनिटी एंड कामन मार्केट (सी.ए.आर.आई.सी.ओ.एम.) की स्थापना 1973 में की गई थी। इसका उद्देश्य आर्थिक, स्वास्थ्य, शिक्षा, संस्कृत, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, कर प्रशासन और विदेश नाति मे संयोजन के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिये की गई थी। सदस्य देश : एंटिगुआ एंड बरमुडा, बहामास, बारबडोस, बेलिज, डोमिनिका, ग्रेनेडा, गुआना, जमाइका, मांट्सेरात, सेंट किट्स एंड नेविस, सेंट लुसिया, सेंट विंसेंट और ग्रेनाडिन्स।

सेक्रेट्री जनरल. एडविन डब्ल्यू. कारिंग्टन (त्रिनिडाड एवं टोबैगो। मुख्यालय जार्जटाउन (गुआना)

कामनवेल्थ आफ इंडिपेंडेंट स्टेट्स (सी.आई.एस.): सोवियत संघ के बिखरने के बाद यह बनाया गया। पूर्व सोवियत गणराज्य के 15 प्रांतों में से 12 को लेकर इसकी स्थापना की गयी। 1995 में इसके सदस्य थे– अर्मीनिया, अज़रबेजान, बेलारूस, जार्जिया, कजाकिस्तान, किर्गिजस्तान, मोलदोवा, रूस, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, उक्रेन, और उजबेकिस्तान। कामनवेल्थ की नीतियां राज्य परिषद प्रमुख और सरकार प्रमुख परिषद द्वारा तय की जाती हैं।। कामनवेल्थ की राजधानी बेलारूस में मिन्स्क में है।

कार्यकारी सचिव: बोरिस बेरोजोवेस्की

राष्ट्रमंडल: इसके 53 सदस्य देश हैं जो विश्व के देशों के लगभग एक तिहाई है। ग्रेट ब्रिटेन तथा उसके साम्राज्य के अन्तर्गत डोमिनियनों और प्रदेशों के एक राष्ट्रमंडल को रूप देने का निर्णय 1926 के साम्राज्यीय सम्मेलन में लिया गया था

कामनवेल्थ हेड्स आफ गवर्नमेंट मीट (चोगम) एक महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय घटना बन चुका है। भारत में इसका सम्मेलन 1983 में हुआ था।

मुख्यालय: मार्लबोरोघ हाउस, पाल माल, लंदन

महासचिव: डान मकिकनन (न्यूजीलैंड)

यूरोपियन संघ: 1994 तक सि युरोपियन कम्युनिटी कहा जाता था। जो कि तीन संगठनों युरोपियन इकानोमिक कम्युनिटी (कामन मार्केट), दी युरोपियन कोल एंड स्टील कम्युनिटी और युरोपियन एटामिक एनर्जी कम्युनिटी (यूरेटोम) का सामूहिक रूप था। 15 देशों के बीच आर्थिक सहयोग के लिए पृष्ठभूमि का प्रावधान करती हैं। ये राज्य है – बेल्जियम, डेनमार्क, फिनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, मिस्र, आयरलैंड, लक्समबर्ग, नीदरलैंड्स, पुर्तगाल, स्पेन, स्वीडेन, यू.के.। आस्ट्रिया, फिनलैंड और स्वीडेन का ई.यू. में 1 जनवरी, 1995 में आगमन हुआ। नार्वे जो इसका सदस्य बनना तय था, वहां की जनता के स्वीकार करने से नहीं बन सका।

ई.यू. विश्व का सबसे बड़ा और सर्वाधिक समृद्धि का क्षेत्र बन चुका है। इसकी कुल जनसंख्या 320 मिलयन है।

अध्यक्ष, युरोपियन कमीशन: रोमानो प्रोडी (इटली)

महा सचिव : वाल्टर रिवमर (आस्ट्रिया)।

युरोपियन आर्थिक क्षेत्र (ई.ई.ए.) आने वाले दशक में ई.एफ.टी.ए. व ई.सी. के एकीकरण के प्रस्ताव को लेकर 1 जनवरी 1994 में इसकी स्थापना की गई। 1991 में ई.ई.ए. की स्थापना के लिये 1991 में की गई संधि को ई.एफ.टी.ए. व ई.सी. सदस्य देशों ने अपनी सहमति दे दी।

यूरेटम – यूरोपीय परमाणु ऊर्जा समुदाय की स्थापना: 1957 में रोम में उन छह राष्ट्रों द्वारा हस्ताक्षर एक संधि के अनुसार हुई थी जो ई.सी.एस.सी. और ई.ई.सी. के स्थापक थे। ई.ई.सी. की संस्थाओं द्वारा ही यूरेटम के कार्यों का नियंत्रण होता है। यूरेटम का उद्देश्य शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए नाभिकीय ऊर्जा का विकास करना है।

मुख्यालय: ब्रूसेल्स, बेल्जियम।

यूरोपीय संसद: यह 12 सदस्य राष्ट्रों से निर्वाचित 518 संसदीय प्रतिनिधियों की सदस्यता से बना है।

मुख्यालय: ब्रुसेल्स।

इसो : (ई.एस.आर.ओ.) यूरोपीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन: इसकी औपचारिक स्थापना 1964 में हुई थी और इसका उद्देश्य है केवल शांतिपूर्ण प्रयोजनों के लिए यूरोप के देशों के बीच अंतरिक्ष अनुसंधान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देना। सदस्य – बेल्जियम, डेनमार्क, फ्रांस, पश्चिम जर्मनी, इटली, नीदरलैंड्स, स्पेन, स्वीडन, स्विट्ज़रलैंड तथा यू.के.। आस्ट्रिया, आयरलैंड और नार्वे प्रेक्षक के रूप में भाग लेते हैं।

मुख्यालय: पैरिस, फ्रांस।

फ्रेंच समुदाय: ब्रिटिश राष्ट्रमंडल जैसा एक समूह है। इस समुदाय से संबद्ध रहने के इच्छुक फ्रेंच प्रदेशों में स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे पर आधारित एवं लोकतंत्रात्मक विकास की दृष्टि से प्रकाशित संस्थाएं चालू करना इसका उद्देश्य है। इस सिद्धांत की घोषणा और स्वीकृति का कार्य 1953 में लागू हुए (पंचम) फ्रेंच गणतंत्र के संविधान में हुआ था।

इस समुदाय के स्वतंत्र सदस्य है – 1. फ्रेंच गणतंत्र, 2. केंद्रीय अफ्रीकी गणतंत्र, 3. कोंगो–गणतंत्र, 4. गैबोन, 5. सेनेगल, 6. चाड, 7. मेडागास्कर, 8. जिबूती।

ग्रुप आफ 8 (जी–8) जी–7 सात प्रमख औद्योगिक ोकतांत्रिक देशों का समूह है जो विश्व की आर्थिक स्थिति ार अन्य मुद्दों पर वात करने के लिये वैठकें आयोजित रता है। इसकी स्थापना 22 सितंवर 1985 में हुई थी। नाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, यू.के., संयुक्त र ाज्य मरीका इसके प्रारंभिक सदस्य देश थे। 1998 में रूस ारा इसकी सदस्यता लेने के साथ ही इसका नाम जी–8 गया।

आई.ए.टी.ए.: अन्तर्राष्ट्रीय हवाई यातायात संघ की थापनाः सुरक्षित, नियमित और सस्ते हवाई यातायात का वर्धन करने और सहयोग के क्षेत्र को मंच प्रदान करने के द्देश्य से सन् 1945 में की गई थी । आजकल 40 न्तर्राष्ट्रीय हवाई सेवाएं (सक्रिय सदस्य) तथा 19 आंतरिक वाएं (सहयोगी सदस्य) इसमें आती हैं।

संघ का चरम अधिकार सामान्य सभा की वार्षिक वैठक निहित है । कार्यकारिणी समिति के अठारह निर्वाचित दस्य हैं ।

मुख्यालयः मांट्रियल, कनाडा और जेनेवा, स्विट्ज़रलैंड।

महानिदेशकः पियरेरे जीनियट

इन्टरपोलः यह 176 राष्ट्रों का पुलिस आयोग है । दस्य देशों की पुलिस गतिविधियों के समन्वय कार्य के लिए 1923 में इसकी स्थापना हुई थी । मुख्यालय पैरिस में है। 1986 के एक वम विस्फोट के वाद इसे लायन्स में स्थानांतरित करने का निर्णय किया गया है ।

नाटो : उत्तर एटलांटिक संधि संगठनः 1949 में वेलजियम, फ्रांस, लक्समवर्ग, यू.के , नीदरलैंड्स, कनाडा, डेनमार्क, आइसलैंड, इटली, नार्वे, पुर्तगाल और सं रा. अमेरिका के विदेश मंत्री वाशिंगटन में मिले और उत्तर एटलांटिक संधि पर हस्ताक्षर किए । 1952 में यूनान और तुर्की इसमें शामिल हुए । जर्मन संघीय गणराज्य 1955 में और स्पेन 1982 में इसमें आए। मार्च 99 में पोलैंड, हंगरी और चेक रिपब्लिक इसमें शामिल किये गये। इस प्रकार नाटो के सदस्य देशों की संख्या 19 हो गई।

मुख्यालयः व्रूसेल्स, वेल्जियम ।

महासचिवः जार्ज रावर्टसन ।

ओ.ए.एस. : अमरीकी राज्यों का संगठनः 1948 में वोगोटा, कोलम्विया में आयोजित अमरीकी राज्यों के नौवें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में ओ.ए.एस. का घोषणा–पत्र अनुमोदित हुआ ।

वाईस अमरीकी देश इसके सदस्य हैं । सवके अधिकार वरावर हैं और प्रत्येक का एक मताधिकार है ।

मुख्यालयः वाशिंगटन, डी सी ।

महासचिवः सीज़र गैवेंरिया ट्रुजिलो (कोलंविया)।

आर्गनाइजेशन आफ अरव पेट्रोलियम एक्सपोर्टिंग कंट्रीज़ इसकी स्थापना 1989 में की गई। सदस्य देशों की संख्या 10 हैं। मिस्त्र को 1989 में दुवारा इसकी सदस्यता [illegible] थी। अन्य सदस्य देशः– अल्जीरिया, वहरीन, [illegible], इराक, कुवैत, यू.ए.ई. सीरिया और सउदी [illegible] हैं।

ओ.ए.यू. : अफ्रीकी एकता संगठनः [illegible] में स्थापित हुआ । इसके स्थापक 30 [illegible] जिन्होंने अदिस अवावा में एकत्र होकर एक घोषणा–पत्र पर हस्ताक्षर किए जिसने सभी अफ्रीकी देशों के लिए समेकित स्वर उठाने का एक मंच प्रदान किया ।

संगठन के सदस्यों की संख्या 53 है ।

मुख्यालयःअफ्रीकी एकता भवन, अदिस अवावा, इथोपिया।

महासचिवः सलेम अहमद सलेम (तंजानिया)

ओ.ई.सी.डी.: आर्थिक सहयोग तथा विकास संगठन । द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत वाद युद्ध से तहस–नहस हुए यूरोप के पुनर्निमाण के लिए यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन (ओ.ई.ई.सी.) वनाया गया । आर्थिक सहयोग तथा विकास संगठन इसी के स्थान पर 1961 में स्थापित हुआ था ।

इस संगठन के सदस्य देश हैं:– आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया, वेल्जियम, कनाडा, टेनमार्क, जर्मनी, फिनलैंड, फ्रांस, यूनान, आइसलैंड, आयरलैंड, इटली, जापान, लक्जमवर्ग, दी नीदरलैंड्स, न्यूजीलैंड, नार्वे, पुर्तगाल, स्पेन, स्वीडन, स्विटजरलैंड, तर्की, यू.के., यू.एस.ए. और युगोस्लाविया को विशेष दजा4 दिया गया है ।

मुख्यालयः 2, रुइ आंद्रे पास्कल, 75775 पैरिस, सेड्रेक्स 16, फ्रांस।

महासचिवः डोनाल जे. जानसन (कनाडा)।

आर्गनाइजेशन आफ इस्लामिक कांफ्रेंस (ओ.आई.सी.)

इस संगठन की स्थापना 1969 में मोरक्को के रावट में मुस्लिम देशों के राज्याध्यक्षों के एक सम्मेलन और 1970 में पाकिस्तान के कराची शहर में इस्लामी देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक के बाद मई 1971 में की गई थी। इसमें पी.एल.ओ. को मिलाकर 51 सदस्य देश हैं।

संगठन की सर्वोच्च दल राज्याध्यक्षों का सम्मेलन है जो प्रत्यक तीन वर्ष में होता है। इसका उद्देश्य इस्लामी एकता , राष्ट्रीय विकास के अनेक क्षेत्रों में सहयोग, जातिवाद को समाप्त करना , पवित्र स्थलों की रक्षा करना और विश्व शांति में योगदान देना है।

पताः– किलो 6, मक्का रोड, पी.ओ.वी. 178, सउदी अरविया।

अरव लीग: प्रथम विश्व युद्ध में ओटोमन साम्राज्य के पतन के बाद अरवों में हुई राष्ट्रीय जागृति के फलस्वरूप इसका सूत्रपात हुआ था । इसका औपचारिक उद्घाटन 22 मार्च 1945 को हुआ था ।

अरव लीग [illegible] परिषद, एक महासचिव और कुछ समितियां हैं ।

[illegible] (21): [illegible]जीरिया, वहरीन, जिवूती, इराक, [illegible], [illegible], लीविया, मौरिटानिया, मोरक्को, [illegible], [illegible] मुक्ति संगठन, कत्तर, सऊदी अरव, [illegible], [illegible], सीरिया, ट्यूनीशिया, संयुक्त अरव [illegible]। [illegible]: ट्यूनीशिया ।

[illegible]: [illegible] मेगुइड (मिस्र)

[illegible]: 1962 में वगदाद में एक सम्मेलन वुलाया [illegible] का निर्णय लिया गया। इस [illegible]

प्रतिनिधि उपस्थित थे। उस समय ये पांचों देश तत्कालीन तेल व्यापार के अस्सी प्रतिशत पर नियंत्रण रखे हुए थे। 1998 में सदस्यता: अलजीरिया, इंडोनेशिया, ईरान, इराक, कुवैत, लीबिया, नाइजीरिया, कत्तर, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात तथा वेनेजुएला। ऐसे राज्य जो पर्याप्त मात्रा में अशोधित तेल निर्यात करते हैं और जिनके हित मूल रूप से इन देशों के हितों से मिलते-जुलते हैं वे इसकी सदस्यता पा सकते हैं। सितंबर 1992 में इक्वेडोर ने ओपेक की सदस्यता छोड़ दी और इरान ने कहा कि तेल बाजार में वह अपनी कार्यप्रणाली स्वयं बनायेगा।

मुख्यालय: ओबेरे डोनाउसट्रास 93, ए-1020 वियना, आस्ट्रिया।

महासचिव: डा. रिलवानु लुकमैन।

नान एलाइन्ड मूवमेंट (एन.ए.एम.) यह दल मुख्यता 114 विकासशील देशों का है। गुटनिर्पेक्षता के सिद्धांतो की व्याख्या बांडुग (इंडोनेशिया और घोषणा बिर्योनी (युगोस्लाविया) में की गई थी। 1956 में प. जवाहरलाल नेहरू, जोसिप ब्राज टीटो और गामेल अब्दुल नासर ने इसमें अपना विश्वास प्रकट किया था। गुट निर्पेक्ष आंदोलन का पहला सम्मेलन बेलग्रेड में 1961 में हुआ था और सिमें 25 देशों ने हिस्सा लिया था। इसका प्रमुख उद्देश्य शांति, निरास्त्रीकरण, विकास स्वतंत्रता और गरीबी व अशिक्षा का उन्मूलन है।

सार्क: दक्षिण एशियाई प्रादेशिक सहयोग संघ के सदस्य हैं — भारत, मालद्वीप, पाकिस्तान, बंगलादेश, श्रीलंका, भूटान एवं नेपाल। दिसम्बर 1985 के आरंभ में हुए ढाका शिखर सम्मेलन के निर्णयानुसार यह चालू हुआ था। दूसरा शिखर सम्मेलन 1986 में बंगलौर में तथा तीसरा 1987 में काठमांडू में हुआ।

मुख्यालय: काठमांडू, नेपाल।

महासचिव: निहाल रोड्रिगो (श्रीलंका)

गैरसरकारी संगठन

ऐमनेस्टी इंटरनेशनल: यह मानव-अधिकारों से संबद्ध एक विश्वव्यापी संगठन है और इसका मुख्यालय लंदन में है। इसकी शुरुआत एक ब्रिटिश वकील द्वारा 28 मई 1961 को अखबारों में दिए गए एक अपील के साथ हुआ। अब 150 देशों में इसके 5 लाख से अधिक सदस्य हैं। 1977 में इसे नोबल शांति पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

महानिदेशक: पियर्रे सेने (सेनेगल)

मुख्यालय: ईस्टन सेंट लदन डब्ल्यू.सी.आई.एक्स. 8 डी.जे.।

रेड क्रास: युद्ध या विपदा के समय में कठिनाइयों से राहत देने के उद्देश्य से स्थापित अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय। अन्तर्राष्ट्रीय रेड क्रास समिति 1863 में जे.एच. दुनांत (1826-1910) के समर्थन से स्थापित हुई थी। 14 राष्ट्रों से आए प्रतिनिधियों ने 1864 में जनेवा समझौते को स्वीकृति दी जिसके अनुसार घायलों का उपचार आदि करने वाले कार्मिक तटस्थता अपनाएंगे। आजकल सौ से अधिक राष्ट्रीय रेड क्रास समितियां हैं। इसको तीन बार (1917, 1944 तथा 1963) नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

मुख्यालय: जनेवा।

स्काउट्स एवं गाइड्स युवा ब्रिटेन के निवासी ले. जनरल सर राबर्ट, एस.एस. बाडेन पावेल (1857-1941) द्वारा संस्थापित युवा किशोरों के लिये विश्वव्यापी संगठित आंदोलन है। उन्होंने किशोरों की क्षमता को बढ़ाया और अपनी पुस्तक में स्काउटिंग, ट्रैकिंग और मानचित्र को बनाने के बारे में विस्तार से बताया है।

स्काउटिंग में अच्छे चरित्र, ईश्वर और देश के प्रति भक्ति, लोकसेवा और शारीरिक व मानसिक दृढ़ता को बढ़ाना इसका नारा है 'हमेशा सतर्क' रहो। 1982 में 115 देशों में इसके 13 मिलियन सदस्य थे। वर्ल्डस्काउट ब्यूरोस्विटजरलैंड के जेनेवा में है। इसी क्रम में 1910 में श्री पावेल व उनकी बहन एग्नेस ने दी गर्ल गाइड मूवमेंट की स्थापना की थी।

डब्ल्यू.सी.सी. : वर्ल्ड काउंसिल आफ चर्चेज़: ईसाई धार्मिक संगठनों की यह परिषद 23 अगस्त, 1948 को ऐम्स्टरडम में 44 देशों के 147 चर्च-संगठनों द्वारा औपचारिक रूप से संयोजित किया गया था। 1984 तक सदस्यों की संख्या बढ़कर 300 से अधिक तक पहुंच गई थी जो 100 से अधिक देशों से आए थे।

विभिन्न मतावलंबी ईसाई आंदोलनों के एकजुट होने के फलस्वरूप यह विश्व परिषद कायम हुई थी। 13 मई 1938 को उट्रेक्ट में एक अस्थायी समिति की नियुक्ति विश्व परिषद को स्थापना की तैयारी करने के लिए की गई थी यॉर्क के आर्चबिशप विलियम टेंपल इस समिति के अध्यक्ष थे

अध्यक्ष मंडल: प्रो. अन्ने मैरी आगरड (डेनमार्क) बिशप विंटन एंडर्सन (सं.रा. अमरीका), बिशप लेसली बोसेटो (सोलोमन आईसलैंड), सुश्री प्रियंका मेंडिस (श्रीलंका), हिज बीटिट्यूड पार्थिनियोस आफ एल्कजेंड्रिया (मिस्र), हिज होलीनेस पोप शेनाउडा (मिस्र), रिव. डा. युनिसे सांटना (पुएर्टो रिको), डा. आरोन टोलेन (कैमरून)

महासचिव: कोनरार रेज़र (जर्मनी)।

कार्यालय: पो.ओ. बाक्स 2100, 150 रुट द फर्ने, 1211 जनेवा 2, स्विट्ज़रलैंड।

युगों-युगों की सभ्यता

नागरिक समाज या संगठित सामाजिक-राजनैतिक सभ्यता का आविर्भाव पहले-पहल एक संकुचित भौगोलिक क्षेत्र में हुआ जिसके पश्चिम में मिस्र, पूर्व में सिंधु घाटी, उत्तर में अनातोलिया (एशिया माइनर) और दक्षिण में सुमेरिया (इराक और इरान) थे।

इन केन्द्रों के बाहर फैलकर सभ्यता ई.पू. 2000 दे

आसपास पश्चिम में भूमध्य सागरीय तट तथा द्वीप समूहों में और पूर्व में चीन तक पहुंच गई ।

प्राचीन शहर मंदिरों के आसपास केंद्रित रहे और इनमें सीमित कार्यकलाप होते थे । मंदिर का प्रधान पुरोहित शहर का भी प्रधान पुरोहित होता था । जल्दी ही कुछेक मंदिर दूसरों की अपेक्षा अधिक प्रमुख हो गए और इन के प्रधान पुरोहित नगर प्रमुखों में मुख्य बन गए । दूसरे शब्दों में कहें तो वे राजा बन गए । भू–क्षेत्र में अत्यधिक सीमित होने के कारण, ये आरम्भिक राज्य नगरों से कुछ ही बड़े थे । इस प्रकार के प्रारंभिक राज्यों में सिंधु घाटी, सुमेर और मिस्र थे।

सिंधु घाटी सभ्यता का पता सबसे बाद में लगा । यद्यपि इतिहास की पुस्तकों में इस सभ्यता का आगमन देर से हुआ, फिर भी सिंधु घाटी सभ्यता ज्ञात महान सभ्यताओं में सबसे पुरानी है । सिंधु घाटी में मेहरगढ़ तथा अन्य स्थानों पर किए गए हाल के अनुसंधानों से संकेत मिलता है कि सिंधु घाटी सभ्यता का आविर्भाव 7000 से लेकर 6000 ई.पू. के बीच हुआ था । कार्बन–14 विश्लेषण ने दिखाया है कि मेहरगढ़ की बाद की इमारतें ई.पू. छठी सहस्राब्दी से संबधित हैं । इसलिए पूर्ववर्ती वास्तु– शिल्प 6000 ई.पू. से पहले के काल का होना चाहिए । यह ज्ञात नहीं है कि सिंधु घाटी सभ्यता के निर्माता कौन थे । सभी संभावनाओं के अनुसार वे भूमध्य सागरीय प्रजाति के थे जो भारत के द्रविड़ों के समान थीं । हमें सिंधु घाटी सभ्यता के विषय में और अधिक जानकारी नहीं हो पाई है क्योंकि यहां से पाई गई मुद्राएं अभी पढ़ी नहीं जा सकी हैं । लेकिन जो हस्तकृतियां पाई गई हैं और खुदाई करने से जो आकृतियां निकली हैं, इनसे पता चलता है कि यह सभ्यता सुमेरियन और मिस्र की दंत–कथात्मक सभ्यताओं से किसी भी प्रकार से कम नहीं थी ।

सुमेरिया सभ्यता: यह मेसोपोटामिया के दक्षिणी अर्ध भाग में यूफ्रेट्स और टिगरीस की निचली घाटी में थी । हमें इस बात की जानकारी नहीं है कि सुमेरियन कौन थे । इस प्रजाति के लोगों का सिर चौड़ा, काया स्थूल और कद छोटा था । इनके चेहरे मांसल और इनकी नाक मध्यवर्ती धसकन के बिना मस्तक की रेखा की ओर बढ़ी हुई थी उनकी आंखें एक दूसरे से काफी अलग तिरछी थीं । सुमेरिया का इतिहास हलचल पूर्ण था । मूल सुमेरियन अनेक शताब्दियों तक कई बार अलकाडियन, बैबेलोनियन, असीरियन, चाल्डीयन आदि विदेशी आक्रमणकारियों से कुचले गए थे । लेकिन इन समस्त आक्रमणों एवं अशांति के दौरान प्राचीन सुमेरिया की सभ्यता अविकल बनी रही जिसमें आक्रमणकारी प्रजातियों ने अपना योगदान किया ।

मिस्र के लोगों का प्रजातीय उद्गम भी विवाद का विषय बना हुआ है । कुछेक लोग मानते हैं कि वे धातु कर्म से परिचित और श्रेष्ठ हथियारों से लैस विजेता एशियाई थे जिन्होंने नव प्रस्तर काल में नील घाटी में रहनेवाली जनजातियों पर आसानी से विजय प्राप्त कर ली थी । सुमेरिया से भिन्न, मिस्र का इतिहास न्यूनाधिक रूप से निर्बाध था । ई.पू. 1790 में एशियाई हाइक्सो जनजाति के आक्रमण और ई.पू. 1573 तक मिस्र के उनके आधिपत्य में रहने के सिवाय, मिस्र का शासन देशीय राजवंशों के उत्तराधिकारियों ने ही किया जिनके अधीन प्राचीन मिस्र की सभ्यता सभी दिशाओं में फली–फूली।

कुल मिलाकर; सिंधु, सुमेरियन और मिस्र की सभ्यताएं ई.पू. चौथी सहस्राब्दी की सर्वोत्कृष्ट मानव उपलब्धियां बनी रही । ई.पू. 2000 के आसपास फोनोशियन सीरियाई तट पर बस गये और उन्होने भूमध्यसागर में समुद्री साम्राज्य की आधार शिला रखी ।

हिट्टाइटों ने एशियां माइनर में राज्य की स्थापना की जिसका विस्तार बाद में पूर्व की ओर तथा दक्षिण में हुआ। माइसीनी (युनान की मुख्य भूमि), क्रीट और समीपवर्ती द्वीपों में अन्य जनजातियों ने, जिनके संबंध में भी हमें अधिक जानकारी नहीं है, ऐसे नगरों का निर्माण किया जो अपनी भव्यता में सुमेरिया और मिस्र के नगरों से होड़ लेते थे ।

सुमेरिया, सिंधु घाटी और मिस्र की महान सभ्यताएं मानवजाति के रंगबिरंगे एवं दीर्घकालीन इतिहास का मार्ग प्रशस्त करती हैं । युगों के दौरान प्रारंभिक सभ्यता से लेकर द्वितीय विश्व युद्ध तक उस इतिहास की रूपरेखा कालानुक्रम में नीचे दी गई है ।

ई.पू.

6000: मेहरगढ़, बलूचिस्तान और सिंधु घाटी में नव प्रस्तर बस्तियां, कई प्रकार के ईंटों के मकान, भैंस भेड़ और बकरी आदि पशुओं को पालतू बनाना, गेहूं और जौ की खेती, और तांबे का पता लग गया था ।

5000: सिंधु घाटी में खेती का विकास – गेहूं, जौ एवं फल के वृक्ष बेर खजूर, कपास की खेती, मिट्टी के बरतन और मनके । सुमेरिया में नवप्रस्तर बस्तियां पशुओं को पालतू बनाना, खेती का प्रारंभ । मिस्र में नवप्रस्तर बस्तियां ।

4000: सिंधु घाटी में कुम्हार के चक्के और धनुर्विद्या का आविष्कार, भट्टी में पकाए मिट्टी के बरतन लाल रंजित मृद्भांड स्थानीय पत्थरों और फीरोजा के मनके, तांबे को गलाना, सुमेरिया में सीसा (लेड) की खोज; मिस्र में सफेद रंग के मिट्टी के बरतन और कृषि का विकास ।

3500: सिंधु घाटी में मिट्टी के बरतनों का विकास, अनेक प्रकार के अलंकृत बरतन । सुमेरिया में कीलाक्षरी लिखावट का विकास, इरुडू, उर और इराक में सुमेरियाई मंदिर: सुमेरिया में कुम्हार के चक्के का प्रयोग ।

3000: सिंधु घाटी में ताम्र मिश्र धातु; कांसे का प्रयोग; अंगूर लता की खेती; सुमेरिया में उर में प्रथम राजवंश; पहिए वाले वाहनों का प्रयोग; वस्त्र का उत्पादन; योद्धा राजा मीनीस ने उत्तरी एवं दक्षिणी मिस्र को एकता के सूत्र में बांधा; फोनोसियन्स ने सीरिया तट पर अपनी बस्ती बसाई जिनके केंन्द्र टायर और सीडान थे क्रीट में प्रारंभिक मीनोअन सभ्यता।

2980: मेम्फिस मिस्र की राजधानी बनी; फारोह देवराजा बना ।

2870: एशिया माइनर में ट्रोजन संस्कृति का प्रारंभ ।

2850: चीन मे पारंपरिक सभ्यता जीवन की शुरुआत।

2650: मिस्र में प्रथम पिरामिड (आरोही पिरामिड) का निर्माण ।

2500: मिस्र में छठा राजवंश; प्राचीन राज्य का ध्वंस; संपूर्ण सुमेरिया में उर राजवंश का प्रभुत्व; 6 और 12 पर आधारित सुमेरिया की अंक प्रणाली; चंद्रमान का कैलेन्डर; वृत्त में 360 अंश एक घंटे में 60 मिनट, एक मिनट में 60 सेकेंड आदि; मिस्र ने समायोजन के बिना 365 दिन के कैलेंडर की शुरुआत की; मिस्र के लोगों ने पपाइरस की खोज की; चीन में विषुव और संक्रांति का निर्धारण किया गया, सुमेरिया भारत, मिस्र और चीन में खगोलीय प्रेक्षण की शुरुआत; सिन्धु घाटी में हड़प्पा सभ्यता (देखें भाग–3 भारत)।

2200: चीन में हंसिया राजवंश की पारंपरिक शुरुआत।

2000: क्रीट में मध्य मीनोअन युग; यूनान में माइसीने सभ्यता का केन्द्र बना; भारत में आर्यों की बस्ती; वैदिक सभ्यता ने अपना स्वरूप बनाया; ऋग्वेद का सृजन ।

1995: मिस्र में एमीनिमहट द्वारा 12 वें राजवंश की स्थापना ।

1800: बैबलोनियाई सम्राट हम्मूराबी ने नियम–संहिता की घोषणा की ।

1790: एशियाई जनजाति हाइक्सोस ने 13 वें राजवंश को बेदखल कर के मिस्र पर कब्जा किया ।

1580: क्रीटन सभ्यता अपने चरमोत्कर्ष पर ।

1500: यूनान में माइसीनियन सभ्यता फली–फूली ।

1480: मोसेस ने इस्राइलियों को मिस्र के बाहर खदेड़ दिया।

1400: माइसीनियनों ने क्रीट में क्नोसस राजमहल को नष्ट कर दिया । क्रीटन सभ्यता का विनाश ।

1380: अमेनहोटप (अमेनोफिस चतुर्थ) ने मिस्र के धर्म में क्रांति करके नए धर्म की घोषणा की ।

1362: मिस्र में विद्रोह, मिस्र को अपने बाहरी अधीन क्षेत्रों से हाथ धोना पड़ा ।

1345: मिस्र में 19 वां राजवंश, मिस्र ने अपनी पूर्ववर्ती शक्ति पुनः प्राप्त की ।

1200: उत्तरी भूमध्य सागर से फोनीशियन्स ने पैलेस्टाइन पर कब्जा किया; एशियाई जाति इसफैनो ने इटली में बस्ती बनाई। यूनानियों द्वारा ट्रायका होमरिक पर कब्जा।

1027: चीन में चाउ राजवंश की शुरुआत ।

1013: पैलेस्टाइन में इस्राइलियों का अभ्युदय; डेविड (1013–973) ने इस्राइली आधिपत्य की स्थापना की।

1000: मिस्र अब एक शक्ति नहीं रहा । भारत में महाकाव्य सभ्यता – रामायण, महाभारत, इन महान महाकाव्यों की रचना । फोनीशियन्स ने अपनी वर्णमाला और लिखावट का विकास किया ।

850: फोनीशियन्स ने अफ्रीका के उत्तरी समुद्र तट पर कार्थेज नगर का निर्माण किया ।

753: रोम नगर का पारंपरिक निर्माण ।

621*: ड्रैको ने एथीनियन नियमों का प्रकाशन किया ।

610: एशिया माइनर के पश्चिमी तट पर आयोनियन (संस्कृतयवन, फारसी–अरबी–यूनानी) नगर राज्यों का निर्माण ।

604: मेसोपोटामिया में नया साम्राज्य, राजधानी – बेबीलोन

594: सोलोन ने एथीनियन संविधान में सुधार किया।

586: बेबीलोनिया के लोगों ने जेरुसलम पर कब्जा किया।

560: अपने समय के सबसे अधिक धनी राजा क्रोइसस का लीडिया पर शासन । लीडिया के लोगों ने सर्वप्रथम ज्ञात व्यवस्थित मुद्रा जारी की ।

538: साइरस ने फारसी साम्राज्य की स्थापना की और बेबीलोन पर अधिकार कर लिया ।

509: रोम गणतंत्र की स्थापना ।

490: मैराथन का युद्ध; एथीनियनों द्वारा फारसी पराजित ।

483: भारत में बुद्ध का परिनिर्वाण ।

480: थर्मोपाइली का युद्ध – फारसियों द्वारा लिओनीडास के अधीन स्पार्टनों को खदेड़ दिया गया । सलामीस का (नाविक) युद्ध – थीमिस टोकल्स के अधीन एथीनियनों ने फारसियों को खदेड़ दिया ।

479: प्लाटिया और माइसेल के युद्ध – फारस पर क्रमशः भूमि और समुद्र द्वारा यूनान की विजय । यूनान में एथेनियत के प्रभुत्व का प्रारंभ । फारसियों का खतरा अंतिम रूप से खत्म हो गया । चीन में कन्फ्यूशियस का निधन ।

461: एथेन्स में पेरीकिल्स ने शक्ति अर्जित की ।

431: एथेन्स और स्पार्टा में पेलोपोनीशियन युद्ध भड़क उठा।

425: हेरोडोटस की मृत्यु ।

404: एथेनियन्स ने स्पार्टा के प्रति समर्पण किया; यूनान में स्पार्टन प्रभुत्व का प्रारंभ ।

399: सुकरात को मृत्युदंड ।

371: लेउक्ट्रा का युद्ध – थीबनों ने स्पार्टनों को पराजित किया और यूनान का नेतृत्व उनके हाथ में आ गया । थीबनों का प्रभुत्व ।

347: प्लेटो की मृत्यु ।

338: चैरोनिया का युद्ध मैसेडन के फिलिप द्वितीय ने यूनान के नगर राज्यों को पराजित किया और यूनान में अपना प्रभुत्व स्थापित किया ।

336: एलेक्जेंडर (सिकंदर) मैसेडन का राजा बना ।

334: ग्रैनीकस का युद्ध; एलेक्जेंडर की फारसियों पर प्रथम विजय ।

333: इसस का युद्ध, फारस के डैरियस पर सिकंदर की दूसरी विजय ।

332: सिकंदर ने टायर पर कब्जा कर लिया और मिस्र को अपने अधिकार में ले लिया ।

331: आरबेला (गौगामेला) का युद्ध; सिकंदर ने फारसियों को अंतिम रूप से पराजित किया ।

330: डेरियस की मृत्यु और फारसी साम्राज्य का अंत।

326: हाइडास्पेस का युद्ध; सिकंदर ने भारत के राजा पुरु को पराजित किया और पंजाब पर विजय पाई।

323: बेबीलोन में सिकंदर की मृत्यु; पटोलेमी प्रथम ने मिस्र में राजवंश की स्थापना की; अलेक्जेंड्रिया (मिस्र में) विश्व का बौद्धिक केन्द्र बना ।

*कठोर आधार संहिता जिसमें छोटे नियम भंग के लिए कठोर दंड की व्यवस्था थी, इसीलिए ड्रैकोनियन (क्रूर शासन) शब्द का प्रयोग।

321: चन्द्रगुप्त ने भारत में मौर्य साम्राज्य की स्थापना की; अरस्तू की मृत्यु ।

312: सेल्यूकस प्रथम ने एशिया में राजवंश की स्थापना की।

275: वेनेवेन्टस का युद्ध; रोम ने पाइरस को अंतिम रूप से पराजित किया व संपूर्ण इटली का निर्विवाद अधिपति वना।

274: अशोक भारत का सम्राट वना ।

264: रोम और कार्थेज के वीच प्रथम प्यूनिक युद्ध का प्रारंभ।

241: प्रथम प्यूनिक युद्ध का अंत; सिसली रोम का प्रथम प्रांत।

221: शीह हुआंग तीह ने समस्त चीनी राज्यों की विजय पूरी की ।

218: द्वितीय प्यूनिक युद्ध का प्रारंभ; कार्थेजियन सेनापति हैन्नीवल ने रोम पर आक्रमण किया ।

214: चीन की महान दीवार का निर्माण ।

215: चीनी श्रेष्ठ ग्रंथों को जलाया गया ।

212: रोमनों ने सायराक्यूज पर कब्जा किया; आर्कमिडीज़ का वध किया गया ।

202: चीन में पूर्वी हान राजवंश; रोमन सेनापति सीपिओ अफ्रीकैन्स के हाथों हन्नीवल की पराजय ।

201: द्वितीय प्यूनिक युद्ध का अंत; रोम का पश्चिमी भूमध्यसागर पर प्रभुत्व स्थापित ।

196: मैडेसन और यूनानी नगर राज्यों पर रोम की विजय

141: तृतीय प्यूनिक युद्ध भड़क उठा ।

146: रोमनों ने कार्थेज़ पर आक्रमण किया और उसे रोम का अंग वना लिया ।

124: सरकारी नौकरों को प्रशिक्षित करने के लिए चीन में कालेज की स्थापना ।

110: सम्राट ऊती के अधीन चीन ने दक्षिण–पूर्व की ओर अपना विस्तार किया ।

106: मैरियस और सुल्ला रोम के नेता बने ।

60: प्रथम त्रिशासक का निर्माण; पाम्पी, (जूलियस) सीज़र, क्रैसस ।

58: सीज़र ने गाल का विजय अभियान शुरू किया ।

55: सीज़र ने व्रिटेन पर विजय प्राप्त की ।

53: फारसियों से पराजित होकर क्रैसस रोम में अपमानित हुआ ।

49: सीज़र ने रूवीकान पार किया और पांपी को चुनौती दी।

48: फार्सालुस का युद्ध; सीज़र ने पांपी को पराजित किया।

46: सीज़र ने कैलेंडर में सुधार किया; वाद में यह जूलियन कैलेंडर के नाम से विख्यात हुआ ।

44: सीज़र की हत्या ।

43: द्वितीय शासकत्रय का निर्माण; ऐंटोनी और आक्टेवियन (आगस्तस), लेपीडड्स ।

42: फिलीपी का युद्ध; ऐंटोनी और आक्टेवियन ने ब्रूटस और उसके सहयोगियों को पराजित किया ।

31: ऐक्टियम का युद्ध; आक्टेवियन ने ऐंटोनी और क्लीओपैट्रा को पराजित किया और वह रोम का सम्राट वन गया ।

27: रोमन सेनेट ने आक्टेवियन को आगस्टस की पदवी से विभूषित किया । आक्टेवियन 'सीज़र आगस्टस' वन गया ।

4*: जीसस क्राइस्ट (ईसा) का जन्म ?

ईसवी

6: चीन ने सिविल सेवा परीक्षा प्रारंभ की ।

14: आगस्टस की मृत्यु ।

29: क्राइस्ट को सूली पर चढ़ाया गया ।

64: रोम की भयंकर आग ।

70: सम्राट टीटस ने यहूदी विद्रोह को दवा दिया और जेरुसलम को नष्ट कर दिया ।

79: वेसूवियस ज्वालामुखी का विस्फोट हुआ और उससे प्रसिद्ध रोमन नगर–पांपेई और हर्कुलेनियम नष्ट हो गए।

80: रोम कोलोसिअम पूर्ण हो गया ।

97: फारस की खाड़ी में चीन की घुसपैठ ।

117: हैड्रियन के अधीन रोमन साम्राज्य अपनी सर्वोच्च विस्तार पर पहुंच गया ।

180: मार्कस आरेलियस की मृत्यु; रोमन साम्राज्य के पतन का प्रारंभ ।

212: सम्राट कारा काला ने साम्राज्य के समस्त स्वतंत्र नागरिकों को रोम की नागरिकता प्रदान की ।

220: चीन में गृहयुद्ध के युग का प्रारंभ ।

230: जापान मे सम्राट सूजिन ने जापानी साम्राज्य का संगठन किया।

251: गाथों ने रोमन सम्राट डेसियस को हराया और मार डाला।

284: डाओक्लेशियन रोम का सम्राट बना । ईसाईयों का उत्पीड़न अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया ।

306: कान्सटैन्टाइन सम्राट वना ।

313: धर्मादेश ने रोमन साम्राज्य में ईसाईयों के प्रति सहनशीलता प्रदान की ।

320: भारत में गुप्तवंश का उदय ।

325: ईसाई चर्च की पहली महापरिषद, "कौंसिल आफ निकेया" ।

378: ऐड्रिअनोपिल का युद्ध; गाथों ने पूर्वी रोमन सम्राट वैलेन्स को पराजित किया और मार डाला ।

395: रोमन साम्राज्य का पूर्वी और पश्चिमी साम्राज्य में अंतिम रूप से विभाजन ।

410: गोथ, एलैरिक ने रोम पर कब्जा करके उसे नष्ट किया। इससे रोमन साम्राज्य का अंत माना जाता है ।

415: विसीगाथा ने स्पेन पर विजय का अभियान शुरू किया।

---

*ई.पू. 4 में ईसा मसीह का जन्म सदा ही कालक्रमवेत्ताओं के वीच विवाद का विषय रहा है और इसीलिए इसे प्रश्न चिन्ह के साथ दिया गया है। ईसाई युग का प्रारंभ जनवरी 1 754 (एयूसी) को रोम नगर की स्थापना के साथ हुआ ।

स्काइथियन संत डायोनीसियस इक्जीगस जिसने ईसवी सन् का आविष्कार किया था, ईसा मसीह का जन्म 753 एयूसी में माना है, लेकिन शुभ संदेश के अनुसार ईसा का जन्म महान हीरोद के शासन काल में, अधिक से अधिक 750 एयूसी में हुआ ।

विवाद का विषय होते हुए भी इस तारीख का अव तक प्रयोग किया जाता रहा है और इसी के परिणामस्वरूप सहज तर्क के आधार पर ईसा मसीह का जन्म ई.पू. 4 से कुछ समय पहले हुआ होगा जव हेरोद की मृत्यु हुई।

429: बर्बरों द्वारा उत्तरी अफ्रीका पर विजय का अभियान।
452: अट्टीला का इटली पर आक्रमण ।
455: बर्बरों द्वारा रोम की लूट ।
476: अंतिम पश्चिमी रोमन सम्राट रोमुलस आगस्तलुस ओडोवेकार द्वारा पदच्युत किया गया । पश्चिमी रोमन साम्राज्य का अंत ।
481: क्लोविस फ्रैन्स का राजा बना और उसने गौल पर कब्जा किया ।
527: पूर्वी रोमन सम्राट जस्टीनियन का राज्यरोहण
529: जस्टीनियन द्वारा दीवानी संहिता का प्रकाशन ।
538: जस्टीनियन ने कान्सटैन्टीनोपल में प्रसिद्ध ईसाई गिरजाघर हैगिया सोफिया का निर्माण किया ।
570: पैगंबर मोहम्मद का जन्म ।
589: वेन राजवंश के अधीन चीन का एकीकरण ।
618: टांग राजवंश ने चीन में शक्ति अर्जित की ।
622: मक्का से मदीना तक मोहम्मद का हेजीरा; मुस्लिम युग का प्रारंभ ।
632: मोहम्मद का निधन । प्रथम खलीफा अबूबेकर का राज्यारोहण ।
636: मुसलमानों द्वारा डमास्कस पर कब्जा।
638: मुसलमानों द्वारा जेरूसलम पर कब्जा ।
641: मुसलमानों द्वारा पर्शिया पर विजय ।
643: अलेक्जेंड्रिया पर कब्जा ।
698: कार्थेज पर हमला किया ।
718: कान्सटैन्टीनोपल पर महान मुस्लिम आक्रमण विफल हो गया ।
732: चार्ल्स मार्टेल द्वारा स्पेन में अतिक्रमण पर रोक ।
750: अब्बासिद खैलीफेट का प्रारंभ (ओमाय्याद के स्थान पर) ।
786: हारून-अल-रशीद का बगदाद में राज्यारोहण ।
800: पवित्र रोमन सम्राट के रूप में चार्लेमैगने का राज्याभिषेक ।
814: चार्लेमैगने की मृत्यु और उसके साम्राज्य का विभाजन।
827: मुसलमानों द्वारा सिसली पर आक्रमण ।
840: मुसलमानों ने बारी पर कब्जा किया और दक्षिणी इटली को अपनी हुकूमत में ले लिया ।
843: वर्दुन की संधि; 751 ई. में फ्रांस के राजा पिपिन द्वारा स्थापित कारोलिंजियन साम्राज्य का अंतिम रूप से विभाजन फ्रांस और जर्मनी के अस्तित्व पृथक राज्य के रूप में ।
862: रूरिक ने रूस में पहले नोवगराद और बाद में कवि में वाइकिंग राज्य की स्थापना की ।
866: जापान में फुजीवारा काल प्रारंभ हुआ ।
868: चीन में पहली मुद्रित पुस्तक ।
899: इंग्लैंड में महान एल्फ्रेड की मृत्यु ।
900: उत्तरी पश्चिमी अफ्रीका में घाना अपनी शक्ति के उत्कर्ष पर ।
960: चीन में सुंग राजवंश का प्रारंभ ।
982: नार्समैन ने ग्रीनलैंड की खोज की ।
987: फ्रांस के राजा ह्यु कैपेट ने कैपेटियन राजवंश की स्थापना की ।
1000: लीफ इरिकसन ने उत्तरी अमेरिका की खोज की।
1016: कैनूट इंग्लैंड का राजा बना ।
1066: नारमैंडी के ड्यूक विलियम प्रथम ने इंग्लैंड पर विजय प्राप्त की ।
1069: चीन में वांग-ऐन-शोह के सुधार ।
1071: मन्जीकर्ट का युद्ध; सेलजुकों ने बाइज़ान्टाइन सेना को नष्ट किया ।
1073: ग्रिगोरी सप्तम पोप बने ।
1075: सेल्जुक तुर्कों ने जेरूसलम पर कब्जा किया ।
1086: इंग्लैंड में महासर्वेक्षण पुस्तक का संकलन ।
1095: क्लरमोंट की कौंसिल; पोप अर्बन द्वितीय ने प्रथम धर्मयुद्ध का उपदेश दिया ।
1099: बौइलन के गाडफ्रे के अधीन प्रथम धर्मयुद्ध में जेरूसलम हथिया लिया गया ।
1148: डमास्कस पर कब्जा करने के लिए छेड़ा गया द्वितीय धर्मयुद्ध विफल रहा ।
1152: सम्राट फ्रेडेरिक बारबरोसा का राज्यारोहण ।
1154: एन्जाऊ के हेनरी ने इंग्लैंड में प्लैटेजेनेट राजवंश की स्थापना की ।
1161: चीन में युद्ध में विस्फोटक सामग्री का प्रयोग ।
1176: लेगनानो का युद्ध; फ्रेड्रिक बारबरोसा लोम्बार्डलीग द्वारा पराजित; इतालवी राज्य स्वायत्त बने ।
1185: जापान में कामाकुरा काल; जापान में सामंतशाही युग जो 1333 तक बना रहा ।
1189: फ्रेड्रिक बारबरोसा; फ्रांस के फिलिप आगस्टस और इंग्लैंड केलायन हार्ट रिचर्ड के अधीन तृतीय धर्मयुद्ध ।
1192: जेरूसलम को पुनः प्राप्त किए बिना तृतीय धर्मयुद्ध का अंत ।
1204: चौथे धर्मयुद्ध में कान्स्टैन्टीनोपल पर कब्जा ।
1206: चंगेज़ खां मंगोलों का राजा बना और उसने मध्य एशिया को रौंद डाला ।
1212: लास नावास तोलोसा का युद्ध; स्पेनियार्डो ने मुस्लिम मूरो पर निर्णायक विजय प्राप्त की ।
1215: चौथी लैटेरन कौंसिल; पोप का प्राधिकार अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचा; इंग्लैंड में मैग्नाकार्टा ।
1237: मंगोलिया द्वारा रूस पर आक्रमण ।
1260: चीन में कुबलाई खां का शासन ।
1291: लीग आफ उरी; स्विस महासंघ का प्रारंभ । धर्मयुद्धों का अंत हो गया ।
1309: पापासी एविगनान की ओर बढ़ा; बेबीलोनियन बंदी स्थिति का प्रारंभ ।
1314: बन्नोक बर्न का युद्ध; स्काटलैंड के राबर्ट ब्रूस ने अंग्रेजी सेना को परास्त किया ।
1336: जापान में आशीकागा काल ।
1338: इंग्लैंड और फ्रांस के बीच सौ वर्ष के युद्ध का आरंभ ।
1346: क्रेसी का युद्ध । फ्रेंच और स्काट पर अंग्रेजों की विजय ।
1348: ब्लैक डेथ यूरोप पहुंचा ।
1356: प्वाटियर्स का युद्ध; इंग्लैंड के ब्लैक प्रिंस ने फ्रांस को हराया ।

1360: व्रिटिगनी की शांति; इंग्लैंड के एडवर्ड तृतीय ने फ्रांस के कई क्षेत्रों को प्राप्त किया ।

1362: इंग्लैंड में अंग्रेजी राजभाषा वनी ।

1363: तैमूरलंग ने एशिया विजय का अभियान शुरू किया।

1368: चीन में मिंग राजवंश

1377: पोप रोम लौटे; वेवीलोनियन कैद का अंत ।

1381: इंग्लैंड में किसानों का विद्रोह ।

1398: तैमूर ने उत्तरी भारत पर आक्रमण किया ।

1415: अगिनकोर्ट का युद्ध; इंग्लैंड के हेनरी पंचम ने फ्रांस पर निर्णायक विजय प्राप्त की ।

1429: जोन आफ आर्क ने फ्रेंच सेना का नेतृत्व किया और अर्लियन्स पर कब्जा कर लिया ।

1431: जोन आफ आर्क को एक चुड़ैल के रूप में अग्निदंड में जलाया गया ।

1453: कान्सटैन्टीनोपल पर तुर्कों का कब्जा और वाइज़ानटाइन या पूर्वी रोमन साम्राज्य का अंत; सौ वर्ष के युद्ध का अंत ।

1455: सेंट एलवांस का प्रथम युद्ध; इंग्लैंड में वार आफ रोजेज़ का प्रारंभ ।

1469: कैस्टाइल की इसावेला के साथ अशगन के फर्डीनंड का विवाह और स्पेन में आधुनिक शासन का निर्माण ।

1485: वासवर्थ फील्ड का युद्ध; इंग्लैंड में ट्यूडर काल का प्रारंभ ।

1488: वार्थोलोमिव डियाज़ द्वारा केप आफ गुड होप पर घेरा।

1492: कोलम्वस द्वारा पश्चिमी द्वीप समूह की खोज।

1497: जान कैवट ने न्यूफाउंडलैंड की खोज की ।

1498: वास्को डी गामा समुद्री मार्ग से कालीकट पहुंचा ।

1499: अमेरिगो वेसपुगी ने दक्षिण अमेरिकी तट के भाग का चार्ट वनाया ।

1500: वेड्रोकेव्राल ने व्राजील की खोज की ।

1517: मार्टिन लूथर ने सुधार प्रारंभ किए । तुर्कों ने मिस्र पर विजय पाई ।

1520: प्रतापी सुलेमान तुर्की का सुलतान वना।

1521: कोर्टेस ने मैक्सिको पर विजय पाई । तुर्की ने वेलग्रेड पर कब्जा किया ।

1526: पानीपत का युद्ध; वावर ने भारत में मुगल साम्राज्य स्थापित किया ।

1532: फ्रैन्सिस्को पिज़ारो ने पेरु पर विजय पाई ।

1533: ईवान चतुर्थ (दि टेरिवल) रूस का ज़ार वना ।

1534: एक्ट आफ सुप्रीमेसी; हेनरी सप्तम ने अंग्रेजी चर्च पर नियंत्रण स्थापित किया ।

1542: प्रथम पुर्तगाली नाविक जापान पहुंचे ।

1545: कौंसिल आफ ट्रेंट का उद्घाटन ।

1556: अकवर मुगल सम्राट वना ।

1557: मकाओ चीन में स्थाई पुर्तगाली वंदरगाह वना ।

1558: एलिजावेथ प्रथम इंग्लैंड की रानी वनी ।

1577: ड्रेक ने संपूर्ण विश्व की समुद्री यात्रा, 1580 ई. तक पूरी कर लेने के लिए प्रारंभ की ।

1582: पोप ग्रेगोरी तेरहवें ने (नए प्रकार का) ग्रिगोरियन कैलेंडर की शुरुआत की ।

1585: जापान के तानाशाह हीडेयोशी ने देश को एक सूत्र में वांधा ।

1588: अंग्रेजों ने स्पेनी अर्माडा को पराजित किया ।

1598: नान्तेश की राजाज्ञा । फ्रांसीसी प्रोटेस्टेंटों को पूजा की आजादी दी गई; फ्रेंच धर्मयुद्धों का अंत ।

1600: अंग्रेजों ने ईस्ट इंडिया कंपनी वनाई ।

1602: डच ईस्ट इंडिया कंपनी वनी ।

1603: इंग्लैंड और स्काटलैंड राजसत्ताओं का एकीकरण; स्काटलैंड का जेम्स षष्ठम व्रिटेन का जेम्स प्रथम वना ।

1611: अंग्रेजी वाइवल के प्राधिकृत भाषांतर का प्रकाशन।

1613: मिकायल रोमानोव रूस का ज़ार वना और रोममानोव राजवंश की स्थापना की ।

1620: पिल्ग्रिम फादर्स न्यू इंग्लैंड में वसे ।

1628: इंग्लैंड में पेटीशन आफ राइट्स ।

1636: जापानियों को विदेश जाने की मनाही ।

1641: छोटे डच व्यापारियों के सिवाय, जापान ने सभी विदेशियों को जापान से वाहर निकाला ।

1642: व्रिटेन में गृह–युद्ध भड़क उठा ।

1644: चीन में चिंग राजवंश (मान्चू) ।

1649: इंग्लैंड के चार्ल्स प्रथम को फांसी; क्रामवेल इंग्लैंड का प्रोटेक्टर बना ।

1652: डच ने केप कालोनी स्थापित की ।

1655: लंदन का भीषण प्लेग ।

1660: व्रिटेन में राजतंत्र की वहाली; चार्ल्स द्वितीय ने रायल सोसाइटी बनाई ।

1661: फ्रांस के चान्सलर के रूप में रिचेली के उत्तराधिकारी मज़ारिन की मृत्यु; लुइस चौदहवें ने व्यक्ति के रूप में शासन संभाला ।

1666: लंदन का भीषण अग्निकांड ।

1688: इंग्लैंड में महान क्रांति; जेम्स द्वितीय ने व्रिटिश सिंहासन त्यागा ।

1689: इंग्लैंड में अधिकारों का विल ।

1694: वैंक आफ इंग्लैंड की स्थापना ।

1696: महान पीटर रूस का ज़ार वना ।

1701: स्पेनी उत्तराधिकार के युद्ध का प्रारंभ ।

1704: मार्लव्योरो ने व्लेनहीम के युद्ध में विजय पाई ।

1721: रावर्ट वाल्पोल इंग्लैंड का प्रथम प्रधानमंत्री वना ।

1739: फारस के नादिरशाह ने दिल्ली को रौंदा; स्पेन और व्रिटेन के बीच जेनकिन इथर्स का युद्ध शुरू हूआ ।

1740: महान फ्रेडेरिक प्रशिया का राजा वना; मैरिया थेरेसा आस्ट्रिया के सिंहासन की उत्तराधिकारी वनी; आस्ट्रियन उत्तराधिकार के युद्ध का प्रारंभ ।

1751: क्लाइव ने भारत में आर्कोट पर कब्जा किया और फ्रांसीसियों को आगे बढ़ने से रोका । तिव्वत पर चीन की विजय ।

1756: सात वर्षों के युद्ध का प्रारंभ ।

1757: क्लाइव ने वगाल पर विजय पाई

1760: वांडीवाश का युद्ध [illegible] को पराजित किया ।

1762: कैथेरिन द्वितीय [illegible]

1770: जेम्स कुक ने न्यू साउथ वेल्स की खोज की ।
1776: अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा ।
1787: अमेरिकी संविधान का मसौदा बना ।
1789: फ्रेंच क्रांति शुरू; बैसटाइल की पराजय (जुलाई 14); जार्ज वाशिंगटन संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति बने ।
1792: फ्रांस गणराज्य बना ।
1793: लुइस सोलहवें का सिर काटा गया ।
1795: नेपोलियन बोनापार्ट ने पेरिस की भीड़ को तितर-बितर किया (15 अक्तूबर) ।
1804: बोनापार्ट सम्राट बना ।
1805: ट्राफलगार का युद्ध और नेल्सन की मृत्यु, आस्टरलिट्ज का युद्ध (2 दिसम्बर) ।
1807: नेपोलियन ने संपूर्ण यूरोप पर नियंत्रण स्थापित किया; ब्रिटिश साम्राज्य में गुलाम व्यापार का उन्मूलन किया गया ।
1808: प्रायद्वीपीय युद्ध का प्रारंभ हुआ ।
1812: नेपोलियन मास्को से पीछे हटा ।
1815: वाटरलू का युद्ध; नेपोलियन को सेंट हेलेना भेजा गया।
1823: संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति ने "मनरो सिद्धांत" की घोषणा की ।
1832: इंग्लैंड में प्रथम सुधार बिल ।
1833: प्रथम ब्रिटिश कारखाना अधिनियम ।
1837: रानी विक्टोरिया ब्रिटिश सिंहासन की उत्तराधिकारिणी
1840: इंग्लैंड में पेनी डाक की शुरुआत ।
1846: कार्न नियम रद्द हुए और पील का त्यागपत्र ।
1848: फ्रांस के लुइस फिलिप ने गद्दी छोड़ी; द्वितीय फ्रांसीसी गणतंत्र की उद्घोषणा की गई; मार्क्स और एंजल्स ने कम्युनिस्ट घोषणापत्र का प्रकाशन किया । कैलिफोर्निया में सोने की खोज की गई ।
1849: ब्रिटेन ने पंजाब पर अधिकार जमाया ।
1851: डोवर और कालेस के बीच पनडुब्बी तार केबल आस्ट्रेलिया में सोने की खोज की गई ।
1852: नेपोलियन तृतीय फ्रांस का सम्राट बना ।
1853: कमांडर पेरी जापान में उतरा ।
1854: क्रीमिया युद्ध ।
1856: लिविंगस्टन ने अफ्रीका के आर पार तक अपनी यात्रा पूरी की ।
1857: भारतीय स्वाधीनता का प्रथम युद्ध ।
1858: ब्रिटिश ताज ने भारत की सत्ता संभाली ।
1861: अब्राहम लिंकन संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति बने; अमरीकी गृहयुद्ध ।
1862: बिस्मार्क प्रशा में चांसलर बना ।
1865: संयुक्त राज्य अमेरिका में दास प्रथा का उन्मूलन। लिंकन की हत्या ।
1867: कनाडा डोमिनियन स्थापित, रूस ने अलास्का अमेरिका को बेचा ।
1868: जापान में शोगुन तंत्र का उन्मूलन; शाही नेतृत्व के अधीन द्रुत पश्चिमीकरण ।
1869: स्वेज नहर का उद्घाटन ।
1870: पोप के अमोघत्व के सिद्धांत का प्रवर्तन ।
1871: फ्रांस-प्रशा युद्ध; प्रशा द्वारा फ्रांस की पराजय; ब्रिटेन में श्रमिक संघों को विधि सम्मत माना गया ।
1874: प्रधान मंत्री के रूप में डिजरैली ग्लैडस्टन का उत्तराधिकारी बना ।
1875: इंग्लैंड ने स्वेज नहर के शेयर खरीदे ।
1886: ब्रिटेन ने ऊपरी बर्मा पर कब्जा किया; कनाडा की पैसिफिक रेलवे पूर्ण हुई; ट्रान्सवाल में सोने की खोज की गई ।
1894: जापान ने चीन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की ।
1895: जापान ने फार्मोसा और कोरिया पर अधिकार जमाया।
1899: बोअर युद्ध प्रारंभ हुआ ।
1900: आस्ट्रेलियाई कामनवेल्थ उद्घोषित ।
1902: बोअर युद्ध समाप्त ।
1904: रूस-जापान युद्ध प्रारंभ ।
1905: पोर्ट्स माउथ की संधि के द्वारा रूस-जापान युद्ध का अंत । नार्वे स्वीडन से अलग हो गया ।
1906: रूस में प्रथम संसद ।
1907: न्यूजीलैंड स्वतंत्र उपनिवेश बना ।
1909: दक्षिण अफ्रीकी यूनियन का गठन ।
1911: चीनी क्रांति; अमंडसेन दक्षिणी ध्रुव पहुंचा।
1912: सनयात सेन के अधीन चीन गणतंत्र बना; टाइटानिक जहाज डूबा, 1513 जानें गईं ।
1914: साराजेवो में आस्ट्रिया के आर्कड्यूक फ्रेंसिस फर्डीनन्ड की हत्या कर दी गई (28 जून) । सर्बिया पर लापरवाही का संदेह किया; आस्ट्रिया ने सर्बिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की (जुलाई 28) । प्रथम विश्व युद्ध का प्रारंभ, जर्मनी ने रूस के विरुद्ध (1 अगस्त), फ्रांस के विरुद्ध (3 अगस्त), युद्ध की घोषणा की और बेल्जियम पर आक्रमण किया (3 अगस्त); इंग्लैंड ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की (4 अगस्त); आस्ट्रिया ने रूस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की (6 अगस्त); जापान ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की (23 अगस्त) । फ्रांस और जर्मनी के बीच मार्ने का युद्ध (6-10 सितम्बर) । जर्मन सेना का आगे बढ़ना रोक दिया गया; रूस ने टर्की के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की (2 नवम्बर); इंग्लैंड और फ्रांस ने भी यही किया (5 नवम्बर) ।
1915: जर्मनी ने ब्रिटेन के विरुद्ध हवाई हमले शुरू किए और पनडुब्बियों से नाकेबंदी की । जर्मनी ने अमेरिकी जहाज लुसीटानिया को डुबो दिया (7 मई) ।
1916: वर्दुन का युद्ध (21 फरवरी - 4 जुलाई) । फ्रांस ने जर्मनी को आगे बढ़ने से रोका; टानेनबर्ग का युद्ध; रूस की सेना को जर्मनी ने नीचा दिखाया (25 अगस्त); जूटलैंड का युद्ध । ब्रिटेन ने जर्मनी की नौ शक्ति तोड़ दी (31 मई); सोम्मे का युद्ध; फ्रांस ने अपनी सेना जर्मनी के विरुद्ध लगाई (1 जुलाई - 18 नवम्बर)) प्रधान मंत्री लायड जार्ज ने ब्रिटेन में युद्ध मंत्रिमंडल बनाया; पूर्वी मोर्चे पर जर्मनी आगे बढ़ा; विलना का पतन (18 सितम्बर); प्रिंस फेलिक्स युसुपोव द्वारा रूसी महायाजक रासपुटिन की हत्या (6 दिसम्बर) ।

1917: पैट्रोग्राद में रूसी सैनिकों का विद्रोह (10 मार्च); रूस में अंतरिम सरकार का गठन, ज़ार निकोलस द्वितीय ने देश त्यागा (15 मार्च)। रूस में बोल्शेविक क्रांति शुरू (6 नवम्बर)। रूस की क्रांतिकारी सरकार और जर्मनी के बीच युद्ध–विराम संधि का निर्णय किया गया (5 दिसम्बर)।

1918: जर्मनी और वोल्शेविक रूस के बीच ब्रेस्ट–लिटवोक संधि (3 मार्च)। ब्रिटेन ने जेरुसेलम पर कब्ज़ा किया (8 दिसंबर)। ज़ार ज़ारीना और बच्चों को एकाटरिगबर्ग में सूली पर चढ़ाया गया; जर्मनी में क्रांति भड़क उठी; सम्राट विलियम द्वितीय ने देश त्यागा; जर्मन गणतंत्र की उद्घोषणा की गई (9 नवम्बर)।

1919: पेरिस में शांति सम्मेलन का उद्घाटन (18 जनवरी)। वेनिटो मुसोलिनी ने इतालवी फासिस्ट पार्टी बनाई; भारत में जलियांवाला हत्याकांड (13 अप्रैल)। वरसेलस की संधि पर हस्ताक्षर किए गए (28 जून)।

1920: लीग आफ नेशन्स की प्रथम बैठक।

1921: आइरिश स्वतंत्र राज्य की स्थापना।

1922: मुसोलिनी का रोम में पदार्पण और इटली में फासिस्ट पार्टी की सरकार बनी।

1923: कमालपाशा के अधीन तुर्की गणतंत्र की उद्घोषणा।

1924: मैक्डोनाल्ड के नेतृत्व में ब्रिटेन में प्रथम श्रम सरकार; यूनान गणतंत्र बना; लेनिन की मृत्यु हो गई (21 जनवरी)।

1927: कर्नल लिंडबर्ग ने आंध्र महासागर के पार तक उड़ान की।

1928: कैप्टेन किंग्सफोर्ड स्मिथ ने प्रशान्त महासागर के उस पार तक उड़ान भरी।

1929: वाल स्ट्रीट ध्वंस; ग्रेट डिप्रेशन का प्रारंभ।

1933: हिंडेनबर्ग द्वारा हिटलर को चान्सलर नियुक्त किया गया; जर्मन रीचस्टैग में आग लगा दी गई (27 फरवरी)

1934: आस्ट्रियन चान्सलर डालफस की हत्या कर दी गई (25 जुलाई) हिंडेनबर्ग की मृत्यु हुई और हिटलर तानाशाह बन गया।

1935: इटली ने इथियोपिया के विरुद्ध युद्ध छेड़ा।

1936: इटली ने आदिस अबाबा पर कब्जा किया; स्पेन में गृह युद्ध छिड़ गया; इंग्लैंड के राजा एडवर्ड अष्टम ने देश त्यागा; किंग जार्ज षष्ठम के रूप में किंग एडवर्ड ड्यूक आफ यार्क के उत्तराधिकारी बने।

1938: चैम्बरलेन (इंग्लैंड), डालाडियर (फ्रांस), हिटलर (जर्मनी) और मुसोलिनी के मध्य म्यूनिख समझौता।

1939: जेनरल फ्रैंको ने स्पेन में तानाशाही स्थापित की (फरवरी); जर्मन ने पोलैंड पर आक्रमण किया; जर्मनी और रूस ने पोलैंड का विभाजन किया; द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रारंभ।

1940: जर्मनी ने डेनमार्क, नार्वे, हालैंड, बेल्जियम और लक्ज़ेमबर्ग पर हमला किया; डन्क्रिक को ब्रिटेन ने खाली किया। जर्मनी का पेरिस पर कब्जा। रूस ने लिथूनिया, लैटविया और इस्टोनिया पर कब्जा किया; फ्रांस ने जर्मनी के समक्ष आत्म–समर्पण किया (जून)।

1941: जर्मनी ने रूस पर आक्रमण किया (जून); पर्ल हार्वर पर जापान का हमला (7 नवम्बर); जापान ने मलाया, फिलीपीन्स और सारावाक पर कब्जा किया।

1942: मिडवे द्वीप से दूर जापानी नौसेना संयुक्त राज्य नौसेना से पराजित हुई (जून); एल अलामीन का युद्ध (23 अक्तूबर); मित्र राष्ट्रों ने जर्मन सेना को भगाया। जर्मनी पीछे हटी।

1943: धुरी शक्तियां–जर्मनी, इटली और जापान–सभी युद्ध क्षेत्रों से पीछे हटीं; मुसोलिनी ने इस्तीफा दिया। इतालवी फासिस्ट पार्टी खत्म हो गई। विजयी मित्र राष्ट्रों के नेता चर्चिल, रुज़वेल्ट और स्तालिन तेहरान में मिले।

1944: मित्र शक्तियों ने रोम में प्रवेश किया; फ्रांस वेल्जियम, हालैंड और बल्गेरिया को स्वतंत्र किया।

1945: अमेरीकियों ने ओकीनावा पर हमला किया; जापानी मंत्रिमंडल ने इस्तीफा दिया; राष्ट्रपति रुजवेल्ट की मृत्यु (12 अप्रैल); इतालवी देशभक्त सैनिकों द्वारा मुसोलिनी और उसकी पत्नी को गोली मारकर हत्या की गई (28 अप्रैल); हिटलर ने आत्महत्या कर ली (30 अप्रैल); मित्र राष्ट्रों की सेना के सामने जर्मन सेना ने आत्म–समर्पण किया (8 मई)।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद का काल

वर्ष 1945 में संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र पर हस्ताक्षर मनुष्य की शांति की खोज की एक युगांतरकारी घटना थी। इस समय विश्व समुदाय इसकी उपलब्धियों एवं विफलताओं का लेखा–जोखा कर रहा है (संयुक्त राष्ट्र के लिए देखें पृष्ठ –372।

1945: जून 26 को सैन फ्रांसिस्को में संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किए गए। हीरोशिमा में परमाणु बम छोड़ा गया (अगस्त 6); दूसरा परमाणु बम नागासाकी में छोड़ा गया (अगस्त 9)। जापान ने संयुक्त राज्य अमेरिका के सामने समर्पण किया; द्वितीय विश्वयुद्ध का अंत (नवम्बर 20)।

1946: लंदन में संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रथम नियमित सत्र का आयोजन (जनवरी)। ट्रिगवे ली प्रथम महासचिव नियुक्त किए गए; लीग आफ नेशन्स की औपचारिक समाप्ति; न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा का अधिवेशन (अक्टूबर 23)।

1947: इंडोनेशिया स्वतंत्र हो गया; भारत और पाकिस्तान को स्वतंत्र उपनिवेश की हैसियत प्राप्त हुई (अगस्त 15)।

1948: वर्मा गणतंत्र बना; गांधीजी की हत्या कर दी गई

जनवरी 30); श्रीलंका स्वाधीन हो गया; भारत के गवर्नर जनरल के रूप में चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, माउंटबेटन के उत्तराधिकारी बने; यहूदियों ने फिलिस्तीन में इज़राइल के नए राज्य की उद्घोषणा की।

1949: जनरल माओ-त्से-तुंग ने पीपुल्स रिपब्लिक आफ चाइना की घोषणा की; इंडोनेशिया का संयुक्त राज्य अस्तित्व में आया।

1950: भारतीय गणतंत्र की उद्घोषणा (जनवरी 26)। कोरियाई युद्ध का प्रारंभ; जार्ज बर्नार्ड शा की 94 वर्ष की आयु में मृत्यु (नवम्बर 2)।

1951: लीबिया स्वाधीन हुआ।

1952: ग्रेट ब्रिटेन के राजा जार्ज षष्ठम की मृत्यु और उसकी पुत्री एलिज़ाबेथ द्वितीय उसकी उत्तराधिकारिणी बनी; हेलसिंकी में ओलंपिक खेलों का प्रारंभ (जुलाई 1)।

1953: स्तालिन की 74 वर्ष की अवस्था में मृत्यु (मार्च 6); हिलेरी और तेनसिंह ने एवरेस्ट पर विजय पाई (29 मार्च)।

1954: रोडेशिया और न्यासालैंड के महासंघ का निर्माण; भारत में फ्रांसीसी उपनिवेश भारतीय नियंत्रण में आ गए।

1955: एलबर्ट आइन्स्टीन की मृत्यु (अप्रैल 18)।

1956: सूडान स्वाधीन गणतंत्र बना; पाकिस्तान ने स्वयं को इस्लामी गणतंत्र घोषित किया; फ्रांस ने इंडोचीन छोड़ दिया; कर्नल नासर मिस्र के राष्ट्रपति बने; राष्ट्रपति नासर द्वारा स्वेज़ नहर का राष्ट्रीयकरण; कम्युनिस्ट शासन के खिलाफ हंगरी में विद्रोह; रूस ने हंगरी में विद्रोह का दमन करने के लिए सेना भेजी।

1957: जर्मन संघीय गणतंत्र में सार को जोड़ा गया, पोलैंड में गोमुल्का के अधीन पोलिश कम्युनिस्ट पार्टी सत्ता में आई, घाना स्वाधीन हो गया, ट्यूनीशिया गणतंत्र बना; रूस ने प्रथम कृत्रिम उपग्रह (स्पुतनिक प्रथम) छोड़ा)।

1958: प्रथम अमेरिकी कृत्रिम उपग्रह एक्सप्लोरर प्रथम छोड़ा गया, ईराक गणराज्य बना; फ्रेंच गिनी स्वाधीन गणराज्य बना।

1959: फीडल कैस्ट्रो ने क्यूबा में बतिस्ता सरकार का तख्ता पलटा, अलास्का संयुक्त राज्य अमेरिका का 49 वां राज्य बना; चीन ने तिब्बत पर कब्जा किया दलाई लामा भारत भाग आए; श्रीलंका के प्रधान मंत्री भंडारनायके की हत्या; आर्चबिशप मकारिओस साइप्रस के प्रथम राष्ट्रपति निर्वाचित।

1960: कैमेरून, टोगो, बेल्जियम, घाना, साइप्रस और सोमालिया स्वाधीन गणराज्य बने। कांगो (ब्राज़ाविले), चाड, केंद्रीय अफ्रीकी गणराज्य और मलागासी स्वाधीन हो गए। रोम में ओलंपिक का आयोजन (अगस्त); नाइजीरिया कामनवेल्थ में स्वाधीन गणराज्य बना।

1961: अफ्रीका में रवान्डा और बुरुन्डी गणराज्य बने। सियेरा लीओन और दक्षिणी कैमेरून स्वाधीन हो गए; दक्षिणी अफ्रीका गणराज्य बना और उसने अपने को राष्ट्रमंडल से अलग कर लिया; सीरिया संयुक्त अरब गणराज्य से अलग हो गया। टंगानिका कामनवेल्थ के भीतर स्वाधीन बना; भारत ने पुर्तगाली उपनिवेश गोवा, दमन और दीव को अपने अधिकार में ले लिया।

1962: चीन द्वारा भारत की उत्तरी सीमा पर आक्रमण का प्रारंभ (सितम्बर 19)। 'ई थांट' संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव निर्वाचित (नवम्बर 30)।

1963: चीन और पाकिस्तान ने सीमा संधि पर हस्ताक्षर किए; मिस्र, सीरिया और ईराक ने अरब महासंघ का निर्माण किया; मलेशिया, सिंगापुर और दक्षिणी बोर्नियो ने मलेशियाई महासंघ बनाया। टेक्सास के डलेस में राष्ट्रपति जान एफ. कैनेडी की हत्या (नवम्बर 22); जंजीबार स्वाधीन बना।

1964: नए राज्य तंजानिया का निर्माण करते हुए टंगानिका और जंजीबार के बीच समझौते पर हस्ताक्षर; भारत के प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु (मई 27); माल्टा स्वाधीन बना; सोवियत प्रधानमंत्री ख्रुश्चेव सत्ता से हटाए गए; एलेक्सी कोसीज़िन प्रधानमंत्री और लियोनिड ब्रेज़नेव कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव बने; टोकियो में ओलंपिक खेल (अक्तूबर)।

1965: फील्ड मार्शल अयूब खां पाकिस्तान के राष्ट्रपति निर्वाचित; इंडोनेशिया ने अपने को संयुक्त राष्ट्र से अलग कर लिया (जनवरी 5); सर विंस्टन चर्चिल की मृत्यु (जनवरी 24); भारत-पाक युद्ध, रोडेशिया ने स्वाधीनता प्राप्त की; मोबुटु ने रक्तहीन क्रांति में सत्ता हथियाई।

1966: सेना ने घाना की सरकार सत्ता हथियाई और राष्ट्रपति एन्क्रूमा को पदच्युत किया, सुकर्णो (इंडोनेशिया) ने शासन की बागडोर सेनाध्यक्ष सुहार्तो को सौंपी (मार्च 12); गुयाना स्वाधीन बना।

1967: नासर ने इज़रायल के महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग अकबा की खाड़ी की नाकाबंदी की। पूर्वी नाइजीरिया बाइफरा गणराज्य बनने के लिए पृथक हो गया; इज़रायल ने संयुक्त अरब गणराज्य, सीरिया और जोर्डन पर हमला किया और गाजा, सिनाई और जेरुसलम पर कब्जा कर लिया; युद्धविराम के स्वीकार किए जाने के साथ स्वेज़ नहर क्षेत्र में लड़ाई बंद हो गई। रूस ने बोल्शेविक क्रांति की 50वीं वर्षगांठ मनाई।

1968: दक्षिणी प्रशांत महासागरीय द्वीप नोरु और मारिशस स्वाधीन हो गए; मार्टिन लूथर किंग की हत्या कर दी गई (मार्च 5); सोवियत रूस और वारसा संधि के देशों की सेना ने चेकोस्लोवाकिया पर हमला किया; स्वाज़ीलैंड स्वाधीन हो गया। 19 वें ओलंपिक खेल मेक्सिको सिटी में प्रारंभ हुए (अक्तूबर 9); भूमध्यरेखीय गिनी स्वाधीन हो गया।

1969: संयुक्त राज्य अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग और एडविन आल्ड्रिन चंद्रमा पर उतरे (जुलाई 21)। उत्तरी वियतनाम के राष्ट्रपिता, राष्ट्रपति डा. हो ची मिन्ह (79) का निधन (सितम्बर 4)।

1970: बर्टान्ड रसल (97) का निधन (फरवरी 3); राष्ट्रपति गमाल अब्दुल नासर (52) की मृत्यु (सितम्बर 29)। फ्रांस के भूतपूर्व राष्ट्रपति चार्ल्स दि गाल (79) की मृत्यु हो गई (नवम्बर 10); रक्षा मंत्री हफेज़ असद ने सीरिया में सत्ता पर कब्जा किया (नवम्बर 14); सोवियत लूनोखोद प्रथम चंद्रमा पर उतरा (नवम्बर 17); शेख मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व में अवामी लीग ने पाकिस्तान के प्रथम आम चुनाव में भारी बहुमत प्राप्त किया।

1971: अपोलो 14 के अंतरिक्ष यात्री शेपर्ड और मिचेल चंद्रमा पर उतरे (फरवरी 2)। मुजीवुर्रहमान ने वंगला देश को स्वाधीन घोषित किया (मार्च 26)। पाकिस्तानी सेना ने मुजीवुर्रहमान को कैद किया; रूस ने सेल्यूट प्रथम को अंतरिक्ष में भेजा; सोयूज अंतरिक्ष में ही सेलयूट से जुड़ गया (अप्रैल 19)। अपोलो 15 छोड़ा गया (अगस्त 8); चीन को संयुक्त राष्ट्र में शामिल किया गया और ताइवान को निकाला गया (अक्तूवर 25)। अरव अमीरात संघ का निर्माण (दिसम्वर 2); पाकिस्तान ने पश्चिम से भारत पर आक्रमण किया (3); भारत ने वांगलादेश को मान्यता दी; पाकिस्तानी सेना ने वांगलादेश में समर्पण किया (16); भारत-पाकिस्तान युद्ध समाप्त हो गया (17); याह्या खान द्वारा पाकिस्तान के राष्ट्रपति पद से इस्तीफा, भुट्टो राष्ट्रपति वने (20); डा. कुर्त वाल्डहेम को संयुक्त राष्ट्र का महासचिव नियुक्त किया गया।

1972: भुट्टो ने मुजीवुर्रहमान को मुक्त किया (जनवरी 8); पाकिस्तान ने राष्ट्रमंडल छोड़ा (अप्रैल 21)। म्युनिख ओलंपिक गांव में रक्त-पात, अरव गुरिल्लाओं ने इज़रायली खिलाड़ियों का अपहरण करके उन्हें मार डाला; निक्सन दूसरी वार राष्ट्रपति निर्वाचित (अगस्त 8)।

1973: व्रिटेन यूरोपियन कामन मार्किट में शामिल हुआ (जनवरी 1); मुजीवुर्रहमान के नेतृत्व में अवामी लीग ने वंगला देश में पहला चुनाव जीता (मार्च 2)। पैब्लो पिकासो का निधन (अप्रैल 8)। वहामास स्वाधीन हो गया (जुलाई 10); अफगानिस्तान में राजशाही का अंत गणराज्य की स्थापना (18); पश्चिमी जर्मनी, पूर्वी जर्मनी और वहामास संयुक्त राष्ट्र के सदस्य वने (19); इजरायल और मिस्र तथा सीरिया के वीच युद्ध भड़क उठा (अक्तूवर 6); पश्चिमी एशिया में युद्ध-विराम।

1974: मोहम्मदउल्ला वंगलादेश के राष्ट्रपति निर्वाचित (जनवरी 24); लीविया ने अमेरिकी तेल कंपनियों का राष्ट्रीयकरण किया (फरवरी 11); पाकिस्तान द्वारा वंगलादेश को मान्यता (22); सम्राट हेलीसेलासी पदच्युत (27)। जिग्मे सिंगये वांगचुक भूटान के राजा वने (जून 2)। साइप्रस की सेना ने राष्ट्रपति मकारिओस का तख्ता पलटा (जुलाई 15); निक्सन ने राष्ट्रपति के पद से इस्तीफा दिया; जेराल्ड फोर्ड ने संयुक्त राज्य अमेरिका के 38 वें राष्ट्रपति का पदभार संभाला (अगस्त 9)। वंगलादेश, गिनी-विसाय और ग्रेनाडा संयुक्त राष्ट्रसंघ के सदस्य वन गये (अक्तूवर 11); संयुक्त राष्ट्रसंघ के भूतपूर्व महासचिव यू थांट का वर्मा में निधन (25); माल्टा गणराज्य वना (दिसम्वर 15)।

1975: मुजीव ने राष्ट्रपति के रूप में पूर्ण शक्तियां अर्जित की; वंगलादेश में एक दलीय शासन (जनवरी 25)। मार्ग्रेट थैचर व्रिटिश अनुदारवादी दल की प्रथम महिला नेता निर्वाचित (फरवरी 11); सऊदी अरेविया के किंग फैजल की हत्या की गई (25)। ताइवान के राष्ट्रपति चियांग कैशेक की मृत्यु (अप्रैल 5); साइगान द्वारा कम्युनिस्टों के समक्ष समर्पण (30)। जापान की श्रीमती जुनको तैवेइ एवरेस्ट पर चढ़नेवाली प्रथम महिला पर्वतारोही वनीं (मई 17); आठ वर्षों वाद स्वेज़ नहर खोल दी गई (जून 5)। लगभग 500 वर्षों के पुर्तगाली शासन के वाद मुज़ाम्बिका आज़ाद हो गए (जुलाई 6); अफ्रीका के पश्चिमी तट से अलग साओ टोम और प्रिंसिपल द्वीप समूह पुर्तगाल से स्वाधीन हो गए (12) सोवियत यान "सोयूज़" अमेरिकी "अपोलो" अंतरिक्ष में जुड़ गए (17)। वंगला देश में सेना ने तख्ता पलटा; मुजीवुर्रहमान मार डाले गए; खोंडेकर मुश्ताक अहमद के अधीन नया शासन (अगस्त 15); इज़रायल ने मिस्र के साथ संधि पर हस्ताक्षर किए (सितम्वर 1); पापुआ (न्यू गिनी) आजाद हो गया (15); 'वीनस'-9 शुक्र ग्रह पर उतरा, जवकि मोड्यूल उपग्रह वन गया; अर्नाल्ड तोयानवी की मृत्यु (22)। अंगोला पुर्तगाली शासन से आज़ाद; स्पेनी तानाशाह फ्रैंको की मृत्यु (नवम्वर 20); जोन कार्लोस स्पेन के राजा वने (22)। लाओस गणराज्य वना (दिसम्वर 3)।

1976: प्रमुख सेनाध्यक्षों ने अर्जेंटीना में सत्ता हथिया ली; (मार्च 24)। जेम्स कलाघन नए व्रिटिश प्रधान मंत्री वने; हुआ कुओ फेंग चीन के प्रधान मंत्री वने (अप्रैल 5); श्रीमती गांधी और व्रेजनेव ने मित्रता एवं सहयोग वढ़ाने के लिए मास्को घोषणा पर हस्ताक्षर किए (जून 11); सीशेल्स स्वाधीन हो गया (29)। माओत्से-तुंग की मृत्यु (सितम्वर 9); हुआ कुओ-फेंग माओ के उत्तराधिकारी वने (अक्तूवर 9); माओ की विधवा श्रीमती चियांग चिंग और तीन शीर्षस्थ परिवर्तनवादी कैद कर लिए गए (12); संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत निर्वाचित (23)।

1977: जिम्मी कार्टर संयुक्त राज्य के राष्ट्रपति वने (जनवरी 20)। मोहम्मद दाऊद अफगानिस्तान गणराज्य के राष्ट्रपति वनाए गए (फरवरी 17)। भुट्टो की पीपुल्स पार्टी ने पाकिस्तान के चुनावों में भारी वहुमत से विजय पाई (मार्च 8)। मेजर जनरल ज़ियाउर्रहमान वंगलादेश के नए राष्ट्रपति बने (अप्रैल 21)। लिओनिड व्रेजनेव सोवियत राष्ट्रपति निर्वाचित (जून 16); जिवूती स्वाधीन हो गया (27)। पाकिस्तान में उथल-पुथल; जनरल जिया-उल-हक ने सत्ता हथिया ली; भुट्टो को पदच्युत करके कैद कर लिया गया (जुलाई 5); श्रीलंका के चुनावों में सिरिमावो का शासक दल साफ हो गया—जयवर्द्धने प्रधान मंत्री वने (22)। साइप्रस के राष्ट्रपति आर्च विशप मकारिओस की मृत्यु (अगस्त 3)। इयान स्मिथ रोडेशिया में निर्वाचित (सितम्वर 1); मिस्र के राष्ट्रपति सादात ने इज़राइल की ऐतिहासिक यात्रा की (नवम्वर 19)। मिस्र के विरुद्ध अरव मोर्चा गठित किया गया (दिसम्वर 4); चार्ली चैपलिन की मृत्यु (25)।

1978: जयवर्धने श्रीलंका के प्रथम राष्ट्रपति बने (फरवरी 4)। सैनिक शासन गुट ने अफगानिस्तान में सत्ता हथियाई (अप्रैल 27)। जिया-उर-रहमान ने बंगला देश के राष्ट्रपति का चुनाव जीता (जून 4) फौजी अफसरों ने मौरीटानिया में सत्ता हथियाई (जुलाई 10); केन्या के राष्ट्रपति जोमो केन्याटा की मृत्यु (22)। जिया-उल-ह[illegible] पाकिस्तान के राष्ट्रपति बने (सितम्बर 16); पीटर विलि[illegible] बोथा दक्षिणी अफीका के प्रधान मन्त्री निर्वाचित (26); डेनियल अरप मोई केन्या के राष्ट्रपति निर्वाचित (अक्तूबर 6); बैंकाक मे एशियाई खेल शुरू (९)।

1979: अंतर्राष्ट्रीय बाल दिवस का उद्घाटन (जनवरी 1); शाह ने ईरान त्यागा (16)। 14 वर्षों के निष्कासन के बाद आयातोल्ला खोमानी ईरान लौटे (फरवरी 1)। ईरान इस्लामी गणराज्य उद्घोषित (अप्रैल 1); भुट्टो को फांसी पर चढ़ाया गया (4)। ग्रीनलैंड को स्वाधीनता मिली (मई 1); मार्गरेट थैचर ब्रिटेन की प्रथम महिला प्रधान मंत्री बनीं (4)। वियना में कार्टर और ब्रेजनेव द्वारा साल्ट द्वितीय समझौते पर हस्ताक्षर (जून 18)। आयरलैंड से दूर हुए विस्फोट में माउंटबेटन मारे गए (अगस्त 27)। हवाना में छोटा गुटनिरपेक्ष सम्मेलन शुरू (सितम्बर 3); केंद्रीय अफ्रीकी साम्राज्य के सम्राट बोकास्सा एक उथल-पुथल में पदच्युत (21)। बोलविया में सेना ने सत्ता हथियाई (नवंबर 1)।

अस्सी का दशक

1980: जनवरी 5. रूस के अफगानिस्तान में आधिपत्य जमा लेने के बदले में अमेरिका ने रूस को अनाज भेजना रोक दिया। फरवरी 19. ट्रूडो कनाडा में पुनः सत्तारूढ़। अप्रैल 16. फ्रांसीसी दार्शनिक और लेखक जीन पाल-सार्त्रे का निधन। (17) स्वतंत्र जिम्बाब्वे का जन्म। मई 4. युगोस्लाविया के मार्शल टीटो का निधन। जून 12. जापानी प्रधान मंत्री ओहिरा की मृत्यु; सुजुकी नए प्रधान मंत्री बने। जुलाई 19. मास्को ओलंपिक खेलों का प्रारंभ हुआ। सितम्बर 6. झाओ जियांग ने पदभार संभाला। (10) लीबिया और सीरिया ने एकीकरण की घोषणा की। (23) कोसीगिन ने सोवियत प्रधानमंत्री के पद से इस्तीफा दिया। नवम्बर 5 रोनाल्ड रीगन ने जिमी कार्टर के विरुद्ध संयुक्त राज्य राष्ट्रपति के निर्वाचन में विजय हासिल की। दिसम्बर 19 भूतपूर्व सोवियत प्रधान मंत्री कोसीगिन की मृत्यु।

1981: जनवरी 1 अंतर्राष्ट्रीय विकलांग वर्ष। (22) रोनाल्ड रीगन स.रा. अमेरिका के 40 वें राष्ट्रपति बने। फरवरी 10 सोवियत खगोलविद् राय पैंथर ने पैंथर धूमकेतू की खोज की। मार्च 24 पाकिस्तान में सभी राजनैतिक दल भंग कर दिए गए। अप्रैल 12 संयुक्त राज्य अंतरिक्ष शटल-कोलंबिया ने दो अंतरिक्ष यात्रियों के साथ केप कनावेरेल से उड़ान भरी। मई 10 समाजवादी दल के प्रधान फ्रैंकोइस मिटरैंड ने फ्रांसीसी राष्ट्रपति का चुनाव जीता। (21) पियरे मोरो फ्रांसीसी प्रधान मंत्री बनाए गए। (30) बंगलादेश के राष्ट्रपति जिया-उर-रहमान की उनके आठ सहयोगियों के साथ हत्या कर दी गई, आपातकाल की घोषणा। जून 4. श्रीलंका ने आपातकाल की घोषणा की। जुलाई 29 ब्रिटेन के राजकुमार चार्ल्स व वेल्स की राजकुमारी डायना विवाहित हुए। सितम्बर 2 बेलिजे स्वाधीन हो गया। (22) 270 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली विश्व की सर्वाधिक तेज गतिवाली ट्रेन ने पेरिस से लियान्स तक अपनी पहली यात्रा की। अक्तूबर 6. कैरो में सैनिक परेड के दौरान सैनिकों के एक समूह द्वारा मिस्र के राष्ट्रपति अनवर सादात की हत्या कर दी गई। (14) होस्नी मुबारक मिस्र के चौथे राष्ट्रपति बने। (19) यूनान में समाजवादी सैन्य दल ने पुनः सत्ता संभाली। नवम्बर 1. एन्टीगुआ और बारबुडा स्वाधीन हो गए। (9) सेवानिवृत सेनापति यू सान यू. बर्मा के राष्ट्रपति बने। दिसम्बर 12. 61 वर्षीय पेरू के भूतपूर्व प्रतिनिधि हैवियर पेरेज़ डीक्वयर संयुक्त राष्ट्र के महासचिव निर्वाचित। (13) पोलैंड में सेना ने सत्ता हथियाई। (14) इज़रायल ने कब्जे में किया गया सीरियाई क्षेत्र गोलन हाइट अपने राज्य में मिलाने के लिए नया निर्णय बनाया। (31) फ्लाइट लेफ्टीनेंट जेरी रालिंग्स ने लीमान का तख्ता उलटकर पुनः सत्ता हथियाई।

1982: जनवरी 9. सिनाई से इजराइली सेनाओं की वापसी पर मिस्र और इजराइल में समझौता। फरवरी 15. श्रीलंका ने अपनी राजधानी जयवर्धनपुर में स्थानांतरित की। (17) जिम्बाब्वे के प्रधान मंत्री राबर्ट मुगाबे ने विख्यात राष्ट्रवादी जोशुआ निकोमो को मंत्रिमंडल से हटा दिया। (22) दक्षिण-दक्षिण सम्मेलन का उद्घाटन नई दिल्ली में किया गया-44 राष्ट्रों ने भाग लिया। मार्च 1. सोवियत अंतरिक्ष यान वीनस-13 शुक्र ग्रह पर उतरा। (9) चार्ल्स हागे आइरिश प्रधान मंत्री बने। (19) ब्रिटेन और वाटीकन ने चार शताब्दियों के बाद पूर्ण कूटनीतिक संबंध स्थापित किए। (23) स्विटजरलैंड द्वारा संयुक्त राष्ट्र में शामिल होने का फैसला। (24) लेफ्टीनेंट जनरल एच.एम. इरशाद ने बंगलादेश में सत्ता हथियाई। अप्रैल 2. अर्जेंटीना ने दक्षिणी अटलांटिक महासागर में ब्रिटिश उपनिवेश-फाकलैंड द्वीप समूह पर कब्जा किया। (6) ब्रिटिश नौसेना फाकलैंड के लिए रवाना हुई। (7) मैक्सिको में चिचेनल ज्वालामुखी के फटने से 10,000 लोगों की मृत्यु की आशंका। (23) मिस्र ने इजराइली कब्जे के 15 वर्षों बाद सिनाई प्रायद्वीप पुनः प्राप्त किया। (26) ब्रिटेन ने फाकलैंड से अलग स्थित दक्षिणी जार्जिया द्वीप पर फिर से कब्जा किया। मई 6. ब्रिटेन और अर्जेन्टीना ने संघर्ष समाप्त करने के लिए संयुक्त राष्ट्र का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। (9) ब्रिटेन की सेना द्वारा फाकलैंड की राजधानी पर हमला; परिक्रमा कर रहे सेल्यूट-7 की डाक (गोदी) पर मानव सहित सोवियत यान लगाया गया। जून 15. फाकलैंड में अर्जेन्टीना ने ब्रिटेन के सम्मुख आत्मसमर्पण किया; पी.एल.ओ. बेरूत छोड़ने पर राज़ी हो गया। सितम्बर 12. सोवियत अनुसंधान जहाज़ 'कैलिस्टो' द्वारा सैमोन एयरचिपलागो में विश्व के सबसे ऊंचे अतः सागरी पर्वत की खोज। (15) लेबनान में राष्ट्रपति बशीर गेमायेल (34) की बम विस्फोट में हत्या। अक्तूबर 1. कार्यकाल मध्य में ही हेलमुट स्किमिडाको को संसदीय वोट

द्वारा हटाकर अनुदारवादी विपक्षी नेता हेलमुट कोल पश्चिमी जर्मनी के चान्सलर निर्वाचित। नवम्बर 10. सैन डियागो के पास माउंट पालेमार में 1910 के बाद पहली बार हैली धूमकेतु दिखाई दिया; सोवियत राष्ट्रपति लियोनिड ब्रेझनेव (75) का देहांत। (30) आंद्रपोव सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव बने; सर रिचर्ड एटनबरो की फिल्म 'गांधी' का नई दिल्ली में विश्व में पहली बार प्रदर्शन।

1983: मार्च 5. आस्ट्रेलिया के श्रमिक दल के नेता बाब हाक को प्रधान मंत्री बनाया गया। (7) नई दिल्ली में सातवां गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन प्रारंभ हुआ। **जून 10.** दक्षिण पंथी टोरी दल का नेतृत्व करनेवाली ब्रिटिश प्रधान मंत्री मारग्रेट थैचर सत्ता में आई।(13) पायनियर-10 एक्सप्लोरर राकेट ने नक्षत्रों के बीच अंतिम यात्रा प्रारंभ करने के लिए सौरमंडल छोड़ा। **सितम्बर 19.** ब्रिटेन से स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद सेंट किट्स और नेविस विश्व के नवीनतम राष्ट्र बने। **अक्तूबर 3.** पोलैंड के गैर कानूनी सालिडरिटी फ्री ट्रेड यूनियन के नेता लेच वालेसा को 1983 का नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान किया गया। भूतपूर्व जापानी प्रधान मंत्री काकुए तनाका की लाकहीड एयरक्रैफ्ट कार्पोरेशन से घूस के आरोप में 50 करोड़ येन (रु. 22 करोड़) लेने का दोषी पाया गया और उसे चार वर्ष की कैद और घूस के बराबर की धनराशि के जुर्माने की सजा दी गई। (19) भारत में जन्मे अमेरिकी सुब्रमण्यम चन्द्रशेखर को साथी अमेरिकी प्रोफेसर विलियम फाउलर के साथ भौतिकी के लिए 1983 का नोबेल पुरस्कार मिला। (25) संयुक्त राज्य और छोटे केरीबियन देशों के सम्मेलन ने ग्रेनेडा पर शासन में सैनिक अधिकारियों को उखाड़ फेंकने के लिये आक्रमण किया। **नवम्बर 15.** साइप्रस के टर्की नियंत्रित क्षेत्र ने एकपक्षीय स्वाधीनता की घोषणा की। **दिसंबर 11.** जनरल हुसैन इरशाद ने अपने आपको बंगलादेश का राष्ट्रपति घोषित किया। (28) संयुक्त राज्य ने यूनेस्को से हट जाने की अधिसूचना दी।

1984: फरवरी 10. सोवियत राष्ट्रपति यूरी अंद्रोपोव की मृत्यु।(13) कोन्सटानटिन चेरनेनको सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के नए प्रधान बने।(21) "एंड क्वाइट फ्लोज़ द डान" लेखक के नोबेल पुरस्कार विजेता मिखाइल शोलोखोव (78) की मृत्यु। **अप्रैल 12.** अंतरिक्ष शटल चैलेंजर में सवार अंतरिक्ष यात्रियों ने अपंग उपग्रह सोलर मैक्स को अंतरिक्ष में प्रथम सुधार एवं मरम्मत को पूरा करके उसे फिर से चालू कर दिया। **मई 9.** फो दोरजी ने आक्सीजन के बिना माउंट एवरेस्ट पर विजय पाई। **सितम्बर 5.** कु. बचेन्द्री पाल प्रथम भारतीय महिला माउंट एवरेस्ट पर विजय पाई; ब्रियान मुलरोनी ने कनाडा में आम चुनाव जीता; प्रधान मंत्री पी. डब्ल्यू बोथा को दक्षिणी अफ्रीका का राष्ट्रपति चुना गया।

1985: जनवरी 14. हुन सेन कंपूचिया के प्रधान मंत्री निर्वाचित। सोवियत राष्ट्रपति कोन्सटानटिन चेरनेनको की मृत्यु। **मार्च 11.** मिखाइल गोर्बाचेव कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव चुने गए। (12) संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत रूस ने पंद्रह महीनों की चुप्पी के बाद जिनेवा में अस्त्र वार्ता आरंभ की। (21) बंगलादेश में हुए जनमत संग्रह में जनरल एच.एम. इरशाद को राष्ट्रपति के रूप में अपने पद पर बने रहने का जनादेश प्राप्त हुआ।(23) जनरल मोहम्मद जिया-उल-हक और मोहम्मद खां जुनेजो को पाकिस्तान में क्रमश राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री के पद की शपथ दिलाई गई। **अप्रैल 12.** संयुक्त राज्य सिनेटर जेक गार्न अंतरिक्ष शटल डिस्कवरी में छह अन्य लोगों के साथ कक्षा में गए। (30) अमेरिकी पर्वतारोही रिचर्ड बास, 55, माउंट एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचने वाले सबसे अधिक उम्र के व्यक्ति बने। **जून 1.** एलान गर्सिया को पेरु का राष्ट्रपति निर्वाचित किया गया। (2) एड्रीस पापनडू यूनान के प्रधान मंत्री पुनः निर्वाचित किए गए। **जुलाई 2.** ऐन्द्री ग्रोमेको सोवियत रूस के राष्ट्रपति निर्वाचित।(6) राबर्ट मुगाबे जिम्बाब्वे में पुनः निर्वाचित होकर सत्ता में आए। (29) विद्रोही सैनिकों द्वारा मिलटन ओबोटे का तख्ता उलट जाने के बाद जनरल टीटो ओकेलो युगांडा के राष्ट्रपति बने। **अगस्त 5.** विक्टर पास ऐसटेनसोरो बोलीविया के राष्ट्रपति निर्वाचित। (27) मेजर जनरल इब्राहीम बाबन गिडा नाइजीरिया के राष्ट्रपति बने। (30) वी किम वी सिंगापुर के राष्ट्रपति निर्वाचित किए गए। **सितम्बर 8.** जिम्बाब्वे के प्रधान मंत्री राबर्ट मुगाबे गुट निरपेक्ष आंदोलन के अध्यक्ष निर्वाचित।(16) ओलोफ पाल्मे स्वीडन के प्रधान मंत्री पुनः निर्वाचित। **अक्तूबर 21** राष्ट्रमंडल शिखर सम्मेलन, बहामास में नसाऊ नामक जगह पर। **नवम्बर 6.** बाल-पाइंट पेन का आविष्कार करने वाले जोस बीरो की मृत्यु; तनजानिया के राष्ट्रपति के रूप में अली हसन मविन्यिन्यी जूलियस न्यरेरे के उत्तराधिकारी बने; अनीबाल कवाको सिल्वा पुर्तगाल के प्रधान मंत्री बने।(19) रीगन और गोर्बाचेव जिनेवा में मिले, यह छह वर्षों में महाशक्तियों का प्रथम शिखर सम्मेलन था। **दिसम्बर 6.** गिन्नीस बुक आफ रिकार्ड्स अपने नाम के अनुरूप सर्वाधिक बिक्री वाली कापीराइट पुस्तक। (9) विनीसिओ सेरेजो गोटेमाला के राष्ट्रपति निर्वाचित। (25) 'कैस्पर द फ्रेन्डली घोस्ट' के निर्माता कार्टून-चित्रकार जोसफ डी ओरिओली की मृत्यु। (30) पाकिस्तान में मार्शल ला समाप्त।

1986: जनवरी 7. लीबिया द्वारा आतंकवादियों को समर्थन देने के बदले में संयुक्त राज्य ने लीबिया के विरुद्ध आर्थिक प्रतिबंध लगाए।(19) संयुक्त राज्य सौर प्रणाली के अनुसंधानकर्ता 'वाएजर' ने यूरेनस ग्रह के छह चन्द्रमाओं की खोज करके इनकी संख्या को 12 तक पहुंचा दिया। **फरवरी 8** भूतपूर्व प्रधान मंत्री हैदर अबुबेकर अल-अत्तास, 47, को दक्षिणी यमन का नया राष्ट्रपति नामित किया गया। (16) मेरिओ सोरेस 60 वर्ष में पुर्तगाल के प्रथम असैनिक राष्ट्रपति निर्वाचित किए गए। (20) सोवियत रूस ने 1982 के सेल्यूट-7 की अपेक्षा अधिक विकसित नए अंतरिक्ष स्टेशन मीर (शांति) को प्रक्षेपित किया।(25) स्वीडिश प्रधान मंत्री ओलोफ पाल्मे (59), की गोली मारकर हत्या कर दी गई। **मार्च 6.** मिखाइल गोर्बाचेव पांच वर्ष के लिए फिर से सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव निर्वाचित किए गए। (12) सामाजिक प्रजातांत्रिक उप-प्रधान मंत्री इंगवार कार्लसन को स्वीडन का प्रधान मंत्री निर्वाचित किया गया। (14) सोवियत

साथ परिक्रमा करने वाले अंतरिक्ष स्टेशन 'मीर' के साथ डाक किया। अप्रैल 2. यूनियन कार्बाइड कार्पोरेशन पर पश्चिम वर्जीनिया, संयुक्त राज्य अमेरिका में एक संस्थान में बहु-राष्ट्रीय रासायनिक संयंत्र में 221 सुरक्षा नियमों को भंग करने के लिए 13.8 लाख डालर (लगभग 1.7 करोड़ रुपए) का जुर्माना किया गया। (16) अर्जेंटीना ने ब्युएनोस एयर्स से अपनी राजधानी हटाकर केन्द्र में स्थित रिओ नीग्रो में राजधानी बनाने का निश्चय किया। (26) 18 वर्षीय मसवाती महाराने में राजतिलक समारोह के साथ विश्व का सबसे कम उम्र का शासक बना। (29) मास्को ने चेर्नोबिल बिजली घर में न्यूक्लीय क्षरण की सूचना दी। मई 2. संयुक्त राज्य की 30 वर्षीय एन बैन्क्राफ उत्तर ध्रुव पहुंचनेवाली प्रथम महिला बन गई। (6) नार्वे में 47 वर्षीय महिला प्रधान मंत्री श्री हार्लेम ब्रंटलैंड: निर्वाचित। जून 12. दक्षिणी अफ्रीका ने 1976 की सोवेतो आंदोलन की 10 वीं वर्षगांठ के ठीक पहले राष्ट्रव्यापी आपात स्थिति की घोषणा कर दी। जुलाई 15. वियतनामी कम्युनिस्ट पार्टी ने ले दुआन, की मृत्यु के बाद त्रुओंग चिन्ह नये उत्तराधिकारी बने। अगस्त 4. प्रधान मंत्री डा. महथिर मोहम्मद की नेशनल फ्रंट संयुक्त सरकार मलेशिया में पुनः सत्तारूढ़ हुई। (10) डा. जोवकुइन वाला गुएर ने डोमीनिकन गणराज्य के 64 वें राष्ट्रपति का पदभार संभाला। सितम्बर 1. हरारे, जिम्बाब्वे में निर्गुट आंदोलन का आठवां शिखर सम्मेलन शुरू हुआ। (22) सियोल में 10 वें एशियाड का प्रारम्भ हुआ। अक्तूबर 12 जेवियर पेरेज डे क्वियेलार जनवरी 1987 से और 5 वर्षों के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव निर्वाचित किए गए। (16) सोवियत रूस ने अफगानिस्तान से अपनी सेनाएं हटाना प्रारम्भ किया। (25) राष्ट्रपति रीगन ने घोषणा की कि ईरान को हथियार बेचने से प्राप्त लगभग 1 से 3 करोड़ डालर के मुनाफे का उपयोग निकारागुआ में चल रहे गुरिल्ला युद्ध के लिए अवैध रूप से किया गया। दिसम्बर 15. कैलिफोर्निया के एडवर्डस वायुसेना अड्डे से प्रयोगात्मक वायुयान 'वायेजर' पुन: ईंधन भरने के लिए उतरे बिना पृथ्वी की परिक्रमा करने अभूतपूर्व उड़ान पर निकला।

1987 जनवरी 1. चीन में लोकतंत्र की और मजबूती के लिए कैम्पस प्रदर्शन। (16) चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव हु यायोबैंग (72) ने इस्तीफा दिया, प्रधान मंत्री झाऊ जियांग नए महासचिव बने। (21) समाजवादी पार्टी नेता फ्रेन्ज विरेन्टिजकी के नेतृत्व में आस्ट्रिया में नई सरकार ने शपथ ली। फरवरी 2 फिलिपींस के राष्ट्रपति कोराजान एक्विनो नए संविधान के लिए भारी जनमत से विजयी। (7) जापान ने अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस को मान्यता दी। (19) श्रीलंका के राष्ट्रपति ने घोषणा की शांतिवार्ता केवल भारत की मौजूदगी में ही होगी। (21) पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल ज़िया भारत आए। मार्च 1. पाकिस्तान के मुख्य आणविक वैज्ञानिक डा. अब्दुल कादर खां ने लंदन से प्रकाशित एक पत्र को दिए साक्षात्कार में खुलासा किया कि पाकिस्तान के पास एटम बम है। (3) संयुक्त राज्य भारत को सुपर कंप्यूटर की बिक्री के लिए राजी। (5) राष्ट्रपति रीगन ने ईरान शस्त्र सौदे में गलती को स्वीकार किया। (25) विली ब्रान्ड्ट ने पश्चिम जर्मनी की विपक्षी पार्टी सोशल डेमोक्रेट पार्टी के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दिया। अप्रैल 2. इटली के राष्ट्रपति कोसिंगा ने सोशलिस्ट नेता बेटिनो क्रॉक्सी को दुबारा प्रधानमंत्री पद के लिए आमंत्रित किया क्योंकि पांच दलों का गठबंधन सरकार बनाने में असमर्थ रहा। (17) स्वीडिश राज्य रेडियो ने सूचना दी कि बोफोर्स ने भारत से सर्वाधिक बड़े हथियार सौदे को लेने के लिए भारतीय राजनीतिज्ञों और अधिकारियों को दलाली दी। (21) स्वीडन की सरकार ने बोफोर्स द्वारा भारतीय राजनीतिज्ञों और अधिकारियों को रिश्वत देने के मामले की जांच का आदेश दिया। (23) स्वीडन की बोफोर्स अस्त्र कंपनी ने भारत सरकार को बताया कि सौदे में किसी प्रकार की दलाली का भुगतान नहीं किया गया है। (29) कनाडा ने डा. कुर्ट वाल्हेम के आगमन पर प्रतिबंध लगाया। मई 7. दक्षिण अफ्रीका में राष्ट्रपति पी.डब्ल्यू. बोथा की नेशनल पार्टी चुनावों में विजयी। (9) संयुक्त राज्य में राष्ट्रपति चुनाव में डेमोक्रेटिक उम्मीदवार गैरी हार्ट ने यौन घोटाले के कारण अपने को चुनावों से अलग किया। (14) फिजी में रक्तहीन सैनिक क्रांति के बाद सरकार का पतन; सेना के सिटिवेनी रेबुका (38) ने सत्ता हथियाई। (18) स्वीडन के अर्थशास्त्री गुन्नार मिर्डाल (88) का निधन। जून 1. लेबनान के प्रधान मंत्री रशीद करामी का हेलीकाप्टर दुर्घटना में निधन। (12) ब्रिटेन में मारग्रेट थैचर की तीसरी ऐतिहासिक चुनाव जीत। (18) वियतनाम में फाम हुंग (74) फाम वोन डांग की जगह नए प्रधान मंत्री। जुलाई 10. दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति हुवान ने घोषणा की कि वे सत्ताधारी डेमोक्रेटिक जस्टिस पार्टी के अध्यक्ष पद से हट रहे हैं। अगस्त 1. मक्का में पुलिस के साथ संघर्ष में 200 ईरानियों की मृत्यु। सितम्बर 1. श्रीलंका में तमिल क्षेत्रों में लिट्टे ने नागरिक प्रशासन अपने कब्जे में लिया। (29) कर्नल रेबुका ने फिजी को प्रजातंत्र घोषित किया और देश में शासन के लिए अपने नेतृत्व में सैनिक परिषद का गठन किया। अक्तूबर 1. स्वीडन ने दक्षिण अफ्रीका से व्यापार पर प्रतिबंध लगाया। (11) महारानी एलिजाबेथ (द्वितीय) ने फिजी के संविधान में परिवर्तन के प्रस्ताव को ठुकराया। (17) कामनवेल्थ ने फिजी को सदस्यता से हटाने की घोषणा की। नवम्बर 2. चीन में झाऊ जियांग कम्युनिस्ट पार्टी के मुख्य बने। श्री सियाओपिंग केन्द्रीय सैनिक आयोग के अध्यक्ष पद पर बने रहे। (7) ट्यूनिशिया के राष्ट्रपति हबीब बौरगिबा पद से हटाए गए; प्रधान मंत्री जिने ई अबिदिन बेन अली ने राष्ट्रपति पद लिया। (18) चीन में उपप्रधान ली पेंग को झाऊ जियांग के स्थान पर प्रधान मंत्री चुना गया। दिसम्बर 1. अफगानिस्तान में नए संविधान के अंतर्गत डा. नजीबुल्लाह राष्ट्रपति निर्वाचित। (3) अंतरिक्ष यात्री यूरी रोमानेन्को (43) ने अंतरिक्ष में अपने ही देश के 300 दिन तक रहने के कीर्तिमान को तोड़ा। (20) रीगन और गोर्बाचेव ने वाशिंगटन में मध्यवर्ती श्रेणी के परमाणु प्रक्षेपास्त्रों को समाप्त करने के लिए ऐतिहासिक संधि पर हस्ताक्षर किए।

1988: जनवरी 13. चीन के राष्ट्रपति चिंग-चियांग-कुओ का दिल के दौरे से निधन। (17) निकारागुआ के

राष्ट्रपति डेनियल ओरटगा ने आपातकाल समाप्त किया । **फरवरी** 16. जे.वी.पी उग्रवादियों ने श्रीलंका के विपक्षी नेता विजय कुमारानातुंगा की गोली मार कर हत्या कर दी।(20) संयुक्त राज्य अमरीका ने पी.एल.ओं के संयुक्त राष्ट्र आब्जरवर मिशन को बंद किया । **मार्च** 11. वियतनाम के प्रधान मंत्री, फाम हुंग का निधन; इंडोनेशिया में सुहार्तो फिर से राष्ट्रपति बने।(22) संयुक्त राज्य और सोवियत संघ ने आणविक युद्ध के खतरे को कम करने के लिए संचार केन्द्र खोले।(31) आस्ट्रेलिया के भूतपूर्व प्रधान मंत्री सर विलियम मेक्मोहन का निधन। **अप्रैल** 8. जनरल यँग शांगकुन चीन के राष्ट्रपति निर्वाचित।(9) की पैंग चीन के नए प्रधान मंत्री बने।(14) अफगान शांति के लिए जेनेवा समझौते पर हस्ताक्षर । **मई** 9. फ्रांस में राष्ट्रपति फ्रांसिस मित्तरां दूसरे सत्र के लिए निर्वाचित। ईरान ने संयुक्त युद्धबंदी प्रस्ताव-598 को स्वीकारा।(26) सेन एल्विन बर्मा के सत्ताधारी सोशलिस्ट पार्टी के नेता और राष्ट्रपति निर्वाचित । **अगस्त** 12. बर्मा के राष्ट्रपति सेन ल्विन ने राष्ट्रपति और अन्य मुख्य पदों से त्यागपत्र दिया।(15) पराग्वे के राष्ट्रपति जनरल एलफ्रेडो स्ट्रोसेसनर ने 8 वां कार्यकाल शुरू किया।(17) पाकिस्तान के राष्ट्रपति जिया-उल-हक का हवाई दुर्घटना में निधन।(20) संयुक्त राष्ट्र की मध्यस्थता में ईरान-इराक ने युद्ध बंद किया।(25) संयुक्त राष्ट्र प्रधान सचिव जेवियर पेरेज की मौजूदगी में ईरान-इराक में जेनेवा में प्रत्यक्ष बातचीत शुरू । **सितम्बर** 10. ली कुआन यू सिंगापुर के लगातार 7 वीं बार प्रधान मंत्री बने।(11) पश्चिम जर्मनी की उन्नीस वर्षीय स्टेफी ग्राफ यू एस ओपेन टेनिस एकल महिला चैंपियनशिप जीत कर ग्रैन्ड स्लैम पूरा करके टेनिस के इतिहास में तीसरी महिला हुईं।(24) कनाडा के बेन जानसन ने 100 मीटर की दौड़ 9.79 सेकेण्ड के समय में पूरी कर अपने प्रदिद्वंदी कार्ल लुइस को पछाड़ा और विश्व के सबसे तेज धावक बने।(26) श्रीलंका के केन्द्रीय मंत्री लिओनेल जयतिलके की गोली मारकर हत्या।(27) मालदीव के राष्ट्रपति मामून अब्दुल गयूम तीसरे कार्यकाल के लिए पद पर बने रहे। कनाडा के बेन जानसन से [illegible] दवाओं के सेवन के आरोप में 100 मीटर दौड़ में [illegible] स्वर्ण पदक छीना गया । **अक्तूबर** 1. [illegible] की स्टैफी ग्राफ ने ओलम्पिक महिला एकल टेनिस [illegible] जीतकर ऐतिहासिक गोल्डेन प्राप्त किया।(28) [illegible] काउन्डा, जिम्बाब्वे के राष्ट्रपति पद पर [illegible] कार्यकाल के लिए दुबारा निर्वाचित। **नवम्बर** 3. [illegible] करीब लोगों के एक दल ने समुद्री रास्ते से [illegible] की राजधानी पर आक्रमण कर दिया, [illegible] आक्रमण विफल कर दिया।(8) सलमान रश्दी को [illegible] पुस्तक 'सेटेनिक वरसेस' के लिये 1988 का [illegible] पुरस्कार मिला। (9) संयुक्त राज्य के [illegible] प्रशासन में उपराष्ट्रपति रहे, जार्ज बुश राष्ट्रपति पद के लिए निर्वाचित।(15) पी.एल.ओ चेयरमैन यासर अराफात ने फिलिस्तीन को स्वतंत्र राष्ट्र घोषित किया। **दिसम्बर** 1. पाकिस्तान में आपातकाल हटा, राष्ट्रपति इशाक खां ने बेनजीर भुट्टो को पाकिस्तान का प्रधान मंत्री नियुक्त किया।(4) कार्लोस एंड्रेज पेरेज वेनेजुएला में राष्ट्रपति चुनाव जीतकर देश के पहले दो कार्यकाल के लिए राज्याध्यक्ष बने।(13) नामीबिया की स्वतंत्रता और अंगोला में शान्ति के लिए ब्राज़ाविले में अंगोला-क्यूबा और दक्षिण अफ्रीका ने समझौते पर हस्ताक्षर किए, नामीबिया 1 अप्रैल 1989 को स्वतंत्र राष्ट्र हो जाएगा।(23) अल्जीरिया के राष्ट्रपति चारली बेजेडिड तीसरे कार्यकाल के लिए निर्वाचित।

1989: जनवरी 2. आर. प्रेमदास श्रीलंका के नए राष्ट्रपति ।(7) जापान के सम्राट हिरोहितो का निधन, अकिहितो नए सम्राट।(8) सोवियत संघ और अमेरिका द्वारा पेरिस सम्मेलन में रासायनिक हथियार नष्ट करने की घोषणा।(20) जार्ज बुश अमेरिका के 41 वें राष्ट्रपति । **फरवरी** 3. जनरल एंड्रेज रोड्रिगुएज़ नये राष्ट्रपति।(22) अफगानिस्तान से सोवियत सेना की वापसी पूर्ण । **मार्च** 3. डी.बी. विजयतुंग श्रीलंका के प्रधानमंत्री।(12) सूडान के प्रधानमंत्री सादिक अल मेंहदी का इस्तीफा।(14) दक्षिण अफ्रीकी नेशनल पार्टी ने बोथा को हटाकर क्लॉक को राष्ट्रपति बनाया । **अप्रैल** 2. फिलिस्तीन मुक्ति संगठन के नेता यासर अराफात फिलिस्तीन के राष्ट्रपति निर्वाचित। पेइचिंग में लोकतंत्र समर्थक आंदोलन, लाखों छात्र सड़कों पर ।(24) जोर्डन के राष्ट्रपति का इस्तीफा।(25) जापान के प्रधानमंत्री नोबोरु ताकेशिता का इस्तीफा । **मई** 15. पेइचिंग के थ्यानमन चौराहे पर हजारों चीनी छात्रों का प्रदर्शन।(19) पेइचिंग में मार्शल ला लागू। ईरान के धार्मिक नेता अयातुल्लाह रूहोल्लाह खुमैनी का निधन। राष्ट्रपति बुश ने चीन के खिलाफ सैनिक प्रतिबंध लगाए । **जून** 5. पोलैंड के चुनाव में 'सोलिडेरिटी' की निर्णायक विजय। (20) राष्ट्रपति प्रेमदास द्वारा श्रीलंका में [illegible] की घोषणा। (24) [illegible] के स्थान पर [illegible] का [illegible] कम्युनिस्ट पार्टी का [illegible] । **जुलाई** 3. [illegible] के नए राष्ट्रपति [illegible] का निधन; (13) [illegible] [illegible] [illegible] । **अगस्त** 15. [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] (23) [illegible] [illegible] । **अक्तूबर** 1. [illegible] (23) [illegible] । **नवम्बर** 1. [illegible] [illegible] (22) [illegible] [illegible] (26) [illegible] [illegible] [illegible]

नोरिएगा फरार। (22) चाउशेस्कू देश छोड़कर भागते समय पकड़े गए। रोमानिया में भीषण संघर्ष, 12 हजार मरे, चाउशेस्कू सपरिवार वधक। (23) पनामा के अपदस्थ राष्ट्रपति मैनुएल एंटोनियो नोरिएगा ने आत्महत्या की। (29) चेकोस्लोवाकिया में 1948 के बाद पहली बार गैर साम्यवादी राष्ट्रपति वक्लाव हावेल चुने गये।

श्रीलंका से शांति सेना की वापसी

1990: जनवरी 4. पनामा के अपदस्थ तानाशाह जनरल नोरियेगा संयुक्त राज्य अमरीका की हिरासत में। सोवियत संघ ने चेकोस्लोवाकिया से अपने 80,000 सैनिकों को वापस बुलाने की घोषणा की। फरवरी 2. अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस पर 30 वर्षीय प्रतिबंध हटाया गया।(4) न्यूज़ीलैंड के रिचर्ड हैडली 400 विकेट लेने वाले विश्व के प्रथम खिलाड़ी बने। (7) पीटर पिटहार्ट चेक प्रधानमंत्री बने। सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी ने राज्य में 72 वर्षीय राज समाप्त किया। (11) दक्षिण अफ्रीका के नेता नेल्सन मंडेला 28 वर्षों के बाद जेल से रिहा। (16) सैम नुजोमा नामीबिया के पहले राष्ट्रपति। मार्च 2. नेल्सन मंडेला अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस के उप राष्ट्रपति निर्वाचित। (12) लिथुआनिया ने सोवियत संघ से अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा की। (14 श्रीमती अर्था पास्कल ट्राविल हैटी की प्रथम महिला राष्ट्रपति बनी। (15) मिखाइल गोर्बाचेव ने सोवियत संघ के कार्यवाहक राष्ट्रपति की शपथ ली। (19) पूर्वी जर्मनी ने दोनों जर्मनियों के विलय के पक्ष में मत दिया। (20) नामीबिया को स्वतन्त्रता अर्धरात्रि में। वैटिकन और सोवियत संघ में पूर्ण राजनैतिक संबंध स्थापित। (24) श्रीलंका से भारतीय शांति सेना का अंतिम जत्था वापस। (29) बाब हाक दुबारा आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री निर्वाचित। अप्रैल 23. ग्रीस में कंजरवेटिव न्यू डेमोक्रेसी पार्टी सत्तारूढ़। कंसर्वेटिव मिट सोटाकिस नये प्रधानमंत्री। नामीबिया संयुक्त संघ का 160 वा सदस्य। (27) वायोलेटा कामोरा निकारागुआ के राष्ट्रपति। मई 11. बाल्टिक गणराज्यों के तीन राष्ट्रपतियों ने बैठक की और निर्णय लिया कि मास्को से अपनी स्वतंत्रता वापस लेने के लिये एक संयुक्त मोर्चा बनाया जाये। (22) उत्तरी एवं दक्षिणी यमन का विलय होकर यमन गणराज्य का अभ्युदय। (29) बोरिस येल्तसिन रशियन संघ के राष्ट्रपति निर्वाचित। जून 2. तीन दिवसीय सम्मेलन के उपरांत संयुक्त राज्य राष्ट्रपति बुश एवं सोवियत संघ राष्ट्रपति गोर्बाचेव शीत युद्ध की समाप्ति के लिये सहमत। जुलाई 1. पूर्वी एवं पश्चिम जर्मनी ने सीमा रेखा समाप्त की। पश्चिम जर्मनी की मुद्रा पूर्व जर्मनी में भी मान्य। अगस्त 1. सोवियत संघ ने प्रेस की स्वतंत्रता एवं पत्रकारों के अधिकारों को स्वतंत्रता दी एवं सेंसर शिप हटायी। (2) रातों रात आक्रमण करके इराक ने कुवैत पर कब्जा किया। अमीर सऊदी अरब भाग गये। (5) इराक ने कुवैत में अपनी सहमति की सरकार स्थापित कर सैनिकों को हटाना प्रारम्भ। (6) पाकिस्तान के राष्ट्रपति गुलाम इशाक खां ने बेनजीर सरकार को भंग कर दिया। (25) संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने सदस्यों को कुवैत आक्रमण पर इराक के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र प्रतिबंधों को लगाने के लिये बल प्रयोग की अनुमति दी। (28) इराक ने कुवैत को 19 वां प्रांत घोषित किया। सितम्बर 12 पश्चिमी – पूर्वी जर्मनी एवं द्वितीय विश्व युद्ध के मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी की संयुक्त के लिये मास्को में एक संधि पर हस्ताक्षर किये। (20) एशियाई ओलंपिक समिति ने एशियाई खेलों में इराक के भाग लेने पर प्रतिबंध लगाया। (22) चीन की राजधानी बीजिंग में 11 वें एशियाई खेल प्रारम्भ। अक्टूबर 1. सोवियत संघ और दक्षिण कोरिया के बीच राजनैतिक संबंध कायम। (3) जर्मन संघीय गणराज्य (प. जर्मनी) और जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य (पू. जर्मनी) का विलय। नवंबर 6. श्री नवाज शरीफ ने पाकिस्तान के प्रधान मंत्री पद की शपथ ली। (12) जापान में महाराजा अकिहितो का सिंहासनारोहण। (19) नाटो और वार्सा समझौते के राष्ट्रों के बीच यूरोप में सैन्य कटौती संधि पर हस्ताक्षर के साथ शीतयुद्ध की समाप्ति। (22) प्रधानमंत्री मार्गेट थैचर ने पद से त्यागपत्र देने की घोषणा की। (28) जान मेजर ब्रिटेन के प्रधान मंत्री बने। (29) संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने इराक को कुवैत से 15 जनवरी 1991 तक हट जाने की चेतावनी दी। दिसम्बर 1. इंग्लिश चैनेल में 130 फीट नीचे समुद्र में ब्रिटेन और फ्रांस द्वारा चैनेल टनल परियोजना के पूर्ण होते ही ब्रिटेन शेष यूरोप से जुड़ गया। (10) जर्मनी चुनावों में हेल्मट कोल फिर चुने गए। वालेसा पोलैंड के राष्ट्रपति बने। (12) बंगलादेश के भूतपूर्व राष्ट्रपति इरशाद नजरबंद। (13) उत्तर व दक्षिण कोरियाई प्रधानमंत्रियों की एकीकरण पर वार्ता। (24) सूरीनाम के राष्ट्रपति रामसेवक शंकर को सेना ने हटाया।

स्वतंत्र जार्जिया

1991: जनवरी 6. सद्दाम हुसैन ने सैनिकों से युद्ध के लिए तैयार रहने को कहा। (10) राष्ट्रसंघ के महासचिव डी. कुइयार मध्यस्थता के लिए बगदाद रवाना। (18) इराकी प्रक्षेपास्त्र इजराइल पर गिरे। अमेरिका की हवाई बमबारी में

तेजी। (20) तुर्की अड्डों महत्वपूर्ण ठिकानों पर हमले। (23) इराक द्वारा कुवैती तेल कूपों में आग। संयुक्त राष्ट्र की इराक से फिर अपील। 13,000 भारतीय इराक और कुवैत में फंसे। इराकी सेनाएं सउदी अरब में घुसीं। (24) सहयोगी सेना के पोतों पर इराक द्वारा हमले का प्रयास। स. अरब में स्कड प्रक्षेपास्त्र गिराया गया। फ्रांस व कनाडा द्वारा भी हवाई बमबारी। (25) मित्र राष्ट्रों की सेना द्वारा कुवैती द्वीप पर कब्जा। 7 इराकी जेट विमान ईरान में उतरे। (27) सोमालिया में सरकार का तख्ता पलटा गया। (28) अमरीकी वायु सैनिक विमानों ने सहार (बंबई) हवाई अड्डे को तेल लेने के लिए प्रयोग किया। (30) इराकी सैनिकों का सऊदी शहर पर कब्जा। फरवरी 1. सऊदी सीमा पर 50,000 इराकी सैनिक जमा। (5) अमरीकी विमानों द्वारा बगदाद पर बमबारी। (12) 6000 से 7000 इराकी युद्ध में मारे गए। (13) बगदाद के एक आश्रयगृह पर हमले में 700 इराकी मरे। (15) इराक का सशर्त हटने का प्रस्ताव। (17) भारत में अमरीकी विमानों को तेल देना रोका गया। ईरान में ब्रिटिश और इटली दूतावासों पर हमले। (22) बुश ने इराक से 7 दिन के अंदर कुवैत छोड़ने को कहा। (24) सहयोगी सेना द्वारा जमीनी युद्ध आरंभ; 5500 इराकी सैनिक पकड़े गए।। वारसा संधि भंग। (26) इराक ने कुवैत से हटना आरंभ किया। पीछे हटती सेनाओं पर भी अमरीकी हमले। युद्ध-विराम असफलता पर संयुक्त राष्ट्र परिषद की बैठक। कुवैत फिर अमीर के नियंत्रण में। (27) इराक ने राष्ट्रसंघ की सभी शर्तें मानीं। मित्र राष्ट्रों की सेना दक्षिण इराक में घुसीं 50,000 से अधिक इराकी सैनिक बंदी बनाए गए। (28) खाड़ी में तोपें शांत हुईं। अमरीका ने सैनिकों की वापसी के लिए शर्तें रखी। बंगलादेश के चुनावों में बेगम खालिदा की पार्टी ने 140 सीटें जीतीं। मार्च 2. श्रीलंका के रक्षा राज्यमंत्री रंजन विजयरत्न व 29 अन्य कोलंबो में कार बम विस्फोट में मरे। (7) खाड़ी से अमरीकी और ब्रिटिश सैनिकों की वापसी शुरू। (14) कुवैत के अमीर लौटे। (15) अमरीकी सेना अचानक बगदाद की तरफ बढ़ी। (17) सोवियत संघ में चुनाव। (19) अधिसंख्य, सोवियत देश की एकता के पक्ष में। (20) बेगम जिया बंगलादेश की प्रधान मंत्री। अप्रैल 2. जार्जिया ने पृथक होने के लिए मतदान किया। (8) अल्बानिया चुनावों में कम्युनिस्ट विजयी (8); जार्जिया द्वारा स्वतंत्रता की घोषणा। (9) सोवियत सेना पोलैंड से हटनी आरंभ। (12) खाड़ी युद्ध औपचारिक रूप में समाप्त। (27) अंतरिक्ष शटल 'डिस्कवरी' फ्लोरिडा से छोड़ा गया। मई 7. अमेरिकी सेनाएं दक्षिण इराक से वापसी के अंतिम चरण में। (13) राष्ट्रपति बुश द्वारा रासायनिक हथियारों पर प्रतिबंध की घोषणा। (15) श्रीमती एडिथ क्रेसन फ्रांस की पहली महिला प्रधानमंत्री। (17) कोइराला नेपाल के प्रधानमंत्री। जून 1. यूरोप में हथियारों में कटौती। अमेरिका व सोवियत संघ में समझौते पर हस्ताक्षर। (8) बंगलादेश के भूतपूर्व राष्ट्रपति इरशाद को दस वर्ष की कैद। क्रोशियन संसद द्वारा स्वतंत्रता की घोषणा। जूलाई 1. स्टाइप मोसिक यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति चुने गए। स्लोनेनिया में फिर युद्ध भड़का। (10) द. अफ्रीका विश्व क्रिकेट में वापस। अगस्त 3. क्रोशिया में युद्ध-विराम। (16) सोवियत संघ में गोर्बाचेव अपदस्थ। येनायेव 8-सदस्यीय कमेटी के प्रमुख। आपातस्थिति की घोषणा। (21) गोर्बाचेव फिर सत्ता में। क्रांति विफल। (25) बेलोरशिया ने स्वतंत्रता की घोषणा की। कार्ल लुइस ने तोक्यो में 100 मीटर दौड़ का विश्व रिकार्ड तोड़ा। (29) अज़रबैजान द्वारा स्वतंत्रता की घोषणा। सितंबर 2. बाल्टिक देशों के साथ अमेरिका ने राजनयिक संबंध स्थापित किए। (6) सोवियत संसद ने नई यूनियन बनाने के पक्ष में वोट दिया। (7) जार्जिया ने सोवियत संघ से संबंध तोड़े। भारत ने बाल्टिक राज्यों को मान्यता दी। तजाख द्वारा स्वतंत्रता की घोषणा। 10 सोवियत गणराज्यों द्वारा आर्थिक संघ पर रजामंदी। (19) बंगलादेश में खालिदा बेगम नई सरकार की नेता। अक्तूबर 1. हैती के राष्ट्रपति को देश निकाला। (8) बिसवास बंगलादेश के नए राष्ट्रपति। (14) म्यानमार (बर्मा) की प्रतिपक्ष नेता आंग सान सू की को नोबेल शान्ति पुरस्कार मिला। (18) आठ सोवियत गणराज्यों ने आर्थिक संघीय संधि पर हस्ताक्षर किए। (22) जापान ने द. अफ्रीका पर से आर्थिक प्रतिबंध हटाए। (29) मियाजावा जापान के प्रधानमंत्री। नवंबर 2. चिलुग द्वारा जाम्बिया के राष्ट्रपति पद की शपथ। (11) चेचन (सोवियत संघ) द्वारा स्वतंत्रता की घोषणा। (19) बुतरोस घाली, संयुक्त राष्ट्र संघ के नए महासचिव बने। दिसंबर 3 टोगो के प्रधानमंत्री को बागियों ने गिरफ्तार किया। असद फिर सीरिया के राष्ट्रपति बने। विल्सन एमोती अलल्बानिया के प्रधानमंत्री। (20) पाल कीटिंग आस्ट्रेलिया के नए प्रधानमंत्री। (21) 11 सोवियत गणराज्यों द्वारा राष्ट्रकुल का गठन। (25) राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचेव के इस्तीफे के साथ ही सोवियत संघ की समाप्ति।

1992: जनवरी 1. अमरीका ने कम्बोडिया पर से [illegible] प्रतिबंध हटाए। (15) युरोपियन समुदाय ने क्रोएशिया व स्लोवेनिया को मान्यता दी। (20) झेलेव बल्गारिया के राष्ट्रपति चुने गए। (21) चीन और इज़राइल में [illegible] संबंध स्थापित। (27) भारत और इज़राइल में [illegible] राजनयिक संबंध कायम। फरवरी 2, बुश और [illegible] ने शीत युद्ध की समाप्ति की घोषणा की। [illegible] सूत्र में बंधे। (6) जे.आर.डी. टाटा को [illegible] जनसंख्या पुरस्कार। (15) जापान ने [illegible] (17) अमरीका ने चीन पर से प्रतिबंध [illegible] ने कुवैत के चार हेलीकॉप्टर लौटाये। [illegible] संधि पर हस्ताक्षर किये। (12) [illegible] (16) विश्व विख्यात सिने-विभूति [illegible] एवार्ड। (19) खालिदा [illegible] (23) पाकिस्तान [illegible] बलात्कार के आरोप में [illegible] 1. रूसी संघ समझौते पर [illegible] विवादग्रस्त काला [illegible] बेरीशा अल्बानिया के [illegible] कंजरवेटिव पार्टी फिर [illegible] [illegible] प्रतिबंध [illegible] संभाली। [illegible] बाहर जाने की [illegible]

के नज्दीवा । नजीव का प्रस्थान रुका।(22) काबुल में बागियों द्वारा 50 सदस्यीय अंतरिम परिषद का गठन। युगोस्लाविया में लड़ाई भड़की।(25) बागियों का काबुल पर कब्जा। अंतरिम सरकार बनी।(26) काबुल में सत्ता के लिए खूनी संघर्ष। मसूद की फौजों का राष्ट्रपति के महल पर कब्जा। पश्चिम एशिया शांति वार्ता का पांचवां दौर वाशिंगटन में।मोजादीदी ने काबुल में सत्ता संभाली।पाक ने नये शासन को मान्यता दी। भारत द्वारा अफगानिस्तान की नयी सरकार को मान्यता। मई 2. सियरा लिओन में सरकार का तख्ता पलटा। (4) हिकमतयार फौजों का काबुल पर हमला। (6) बोस्निया में युद्ध-विराम का उल्लंघन। लेबनान के प्रधानमंत्री करामी का इस्तीफा।(7) ताजिकिस्तान के राष्ट्रपति नाबियेव भागे। (8) रूस ने अपनी सेना स्वयं बनायी। (11) ताजिकिस्तान में मिली-जुली सरकार।(12) दक्षिण अफ्रीका में अंतरिम सरकार बनाने पर समझौता।(13) सोल लेबनान के नए प्रधानमंत्री। (15) 6 राष्ट्रकुल देशों में सुरक्षा समझौता।(17) सरायेवो में युद्ध जारी।(21) अफगानिस्तान में मसूद और हिकमतयार में समझौता। बोस्निया, स्लोवेनिया तथा क्रोएशिया राष्ट्रसंघ के सदस्य बने। काबुल में फिर घमासान लड़ाई। (23) बोस्निया में फिर युद्ध भड़का। (31) अमेरिका द्वारा युगोस्लाव सम्पत्ति पर कब्जा करने के आदेश। सरायेवो में युद्ध-विराम। जून 1. राबूका फीजी के प्रधानमंत्री। रियो-डी-जेनीरो में पृथ्वी सम्मेलन शुरू। व्लाक पोलैंड के नए प्रधानमंत्री। युगोस्लाविया पर अमेरिकी व्यापार प्रतिबंध। (8) अनंद परयाचून थाइलैंड के नए प्रधानमंत्री। (13) रियो में वन संरक्षण के प्रस्ताव पर सभी देश सहमत। (29) अल्जीरिया के राष्ट्रपति बोदिआफ की हत्या। संयुक्त राष्ट्र द्वारा सरायेवो में सैनिक भेजने को मंजूरी। (30) मोल्डोवन सरकार का इस्तीफा। रामोस ने फिलीपीन के राष्ट्रपति पद की शपथ ली। जुलाई 2. पेनिक युगोस्लाविया के प्रधानमंत्री। अली केफी अल्जीरिया के राष्ट्रपति बने। (9) मदर टेरेसा को यूनेस्को शांति पुरस्कार। (14) राबिन ने इजराइली प्रधानमंत्री का पद सम्भाला।(15) अमरीका ने भारत को विकसित कम्प्यूटरों की बिक्री पर प्रतिबंध लगाया। अगस्त 4 परमाणु परीक्षण पर प्रतिबंध पर अमरीकी सीनेट की हामी। (15) अफगान सरकार ने हिकमतयार को निष्कासित किया। (19) चीन और द. कोरिया में राजनयिक संबंध। सितंबर 17 युगोस्लाविया की सदस्यता खत्म करने का प्रस्ताव पारित। (22) ब्रिटेन और भारत ने प्रत्यार्पण संधि पर हस्ताक्षर किये। (23) युगोस्लाविया राष्ट्रसंघ से निष्कासित। ली डक वियतनाम के राष्ट्रपति चुने गए। अक्तूबर। सऊदी सेनाओं द्वारा कतर सीमा चौकी पर कब्जा।(2) जर्मन के पूर्व चांसलर विली ब्रांट का निधन। नवम्बर 1. अंगोला की राजधानी लुआंडा की लड़ाई में 300 मरे।(4) डेमोक्रेट उम्मीदवार बिल क्लिंटन राष्ट्रपति चुनाव में विजयी। दिसंबर 1. द. कोरिया तथा द. अफ्रीका में राजनयिक सम्बंध।(4) सुरक्षा परिषद सोमालिया में सैन्य कार्रवाई पर सहमत। (9) चार्ल्स और डायना का अलग होने का फैसला। (24) सर्बिया के राष्ट्रपति पद पर मिलोसेविक पुनः विजय।

1993: जनवरी 1. युरोपीय एकल बाजार प्रारंभ। चेक और स्लोवाक गणराज्यों का उदय हुआ। (2) हिकमतयार रब्बानी अफगानिस्तान के नए राष्ट्रपति बने। (4) अरप मोई केन्या के राष्ट्रपति फिर से। (20) बी.जे. क्लिंटन ने अमेरिका के 42 वें राष्ट्रपति का पदभार संभाला। (27) हावेल नए चेक राष्ट्रपति। फरवरी 2. भारत, मलेशिया में रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर।(3) दक्षिण अफ्रीका सरकार और अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस में राष्ट्रीय एकता साझा सरकार के गठन पर समझौता। (21) किम द. कोरिया के पहले असैनिक राष्ट्रपति बने।(26) आस्ट्रेलियाई टीम के कप्तान एलन बार्डर ने टेस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक 10,122 रन बनाने का सुनील गावस्कर का रिकार्ड तोड़ा। मार्च 5. बेन जानसन पर नशीली दवायें लेने के कारण पर जीवन पर्यन्त प्रतिबंध। (7) मास्ट्रिख्ट संधि विधेयक पर ब्रिटिश संसद में विरोध के कारण सरकार की हार।(10) सुहार्तो फिर से इंडोनेशिया के राष्ट्रपति चुने गये। (28) येलत्सिन के खिलाफ महा अभियोग प्रस्ताव गिरा। अप्रैल 1. अमरीका ने भारत को 'सुपर-301' के तहत कार्रवाई की धमकी दी। बोसनिया में युद्ध-विराम पर आंशिक अमल। (20) श्रीलंका में विपक्षी नेता ललित अतलतमुली की कोलम्बो में हत्या।(28) डेमिरल तुर्की के नये राष्ट्रपति बने। जनसमर्थन से इरीटिया इथियोपिया से आजाद।(29) स्टेफी गाफ के एक अर्धविक्षिप्त प्रशंसक ने मोनिका सेलेस पर हेमबर्ग में चाकू से हमला किया। मई 1. श्रीलंका के राष्ट्रपति प्रेमदास की कोलम्बो में बम विस्फोट में हत्या।(9) बोसनिया में युद्ध-विराम किया गया। (14) एरीट्रिया नया राष्ट्र बना। (25) भारत, कजाख में कई समझौतों पर हस्ताक्षर। जून 1. यूगोस्लाव के राष्ट्रपति अपदस्थ कर दिये गये। (2) ग्वाटेमाला के राष्ट्रपति हटाये गये। कम्बोडिया के आम चुनावों में विपक्ष मजबूत। नेपाल में स्टाक एक्सचेंज बना। (3) कम्बोडिया में प्रिंस सिंहानुक ने सरकार बनायी। (5) रामीरो ग्वाटेमाला के नए राष्ट्राध्यक्ष।(7) बांग्लादेश के पूर्व राष्ट्रपति इरशाद व उनकी पत्नी को सात वर्ष की कैद।(14) कैम्पबेल, कनाडा की प्रथम महिला प्रधानमंत्री बनी।(18) अज़रबैजान के राष्ट्रपति राजधानी बाकू से भागे। जुलाई 1. जर्मनी द्वारा सीमा सील। (3) अमरीका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन द्वारा परमाणु परीक्षणों पर प्रतिबंध की घोषणा। (16) रूस ने भारत के साथ क्रायोजेनिक इंजन सौदा तोड़ा। (18) जापान में 43 वर्ष पुराना एल.डी.पी. का शासन समाप्त हुआ। (19) जापान के प्रधानमंत्री मियाजावा का इस्तीफा। एल.डी.पी. संकट जारी। अगस्त 2. ब्रिटिश सरकार द्वारा मास्ट्रिख्ट संधि की पुष्टि। (17) होसोकावा, जापान के नए प्रधानमंत्री।(18) अमेरिका ने सूडान को 'आतंकवाद को बढ़ावा देने वाला' राष्ट्र घोषित किया।(29) ओंग टेंग चिओंग सिंगापुर के नए प्रधानमंत्री। सितंबर 2. अमरीका और रूस ने संयुक्त अंतरिक्ष अनुसंधान तथा ऊर्जा विकास को बढ़ावा देने के समझौते पर हस्ताक्षर किये। (7) भारत चीन में नियंत्रण रेखा का पालन करने को लेकर ऐतिहासिक समझौता। (9) इजराइल और फिलिस्तीन मुक्ति मोर्चे ने एक दूसरे को मान्यता दी। (13) फिलिस्तीनियों को

स्वतंत्रता मिली। (16) जार्जिया में युद्ध भड़का। (21) येलत्सिन ने संसद भंग की। (23) येल्तसिन ने संसद की संपत्ति कब्जे में ली। जून 12 को राष्ट्रपति चुनाव की घोषणा। **अक्तूबर** 1. संयुक्त राष्ट्र की जांच टीम इराक पहुंची। (3) आपातकाल आरंभ होने से मास्को में हिंसा। टी.वी. स्टेशन पर कब्जा। (4) मास्को में सेना की कार्रवाई के बाद रुत्सकोई, खसबुलातोव का समर्पण। आठ घंटे की इस कार्यवाही में 500 व्यक्ति गिरफ्तार। (5) मिस्र के राष्ट्रपति होसनी मुबारक तीसरी बार फिर राष्ट्रपति बने। (8) भारत द्वारा द.अफ्रीका पर से 47 वर्ष पुराना व्यापार प्रतिबंध समाप्त। (11) भारत–रूस मैत्री संधि। यूनान में पपनाड्रिपू फिर सत्ता में। (15) नेल्सन मंडेला और डी. क्लार्क को नोबेल शांति पुरस्कार। (18) पालक पोलैंड के नए प्रधानमंत्री। (19) जे.के.एल.एफ. के अध्यक्ष अमानुल्लाह ब्रुसेल्स में गिरफ्तार। (26) कनाडा के चुनावों में लिबरल पार्टी विजयी। **नवंबर** 6. न्यूजीलैंड में संपन्न चुनावों में किसी पार्टी को बहुमत नहीं। (17) न्यूजीलैंड में कंजरवेटिव पार्टी फिर सत्ता में। (22) भारत और दक्षिण अफ्रीका ने 39 वर्षों के बाद राजनयिक संबंध फिर बहाल हुए। (29) भारतीय उद्योगपति जे.आर.डी.टाटा का जेनेवा में निधन। **दिसंबर** 4. अमेरिका और यूरोपीय समुदाय में 'गैट' विश्व बाजार समझौतों पर सहमति। (23) अमरीका ने क्यूबा के राष्ट्रपति फिदेल कास्त्रो की विद्रोही पुत्री अलीना फर्नाडीस रह्मबुअल्टा को शरण देने की घोषणा की।

1994: जनवरी 2 अमरीका को कंप्यूटर युग में प्रवेश कराने वाले वैज्ञानिक थामस वाटसन का निधन। (3) फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन ने फिलिस्तीन–जार्डन समझौते को मंजूरी दी; फिजी के पूर्व प्रधानमंत्री राजू सर कमियासे मारा को देश का नया राष्ट्रपति चुना गया। **फरवरी** 1. भारत–जर्मनी के बीच प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में साझेदारी के लिए एक समझौता हुआ। (4) अमरीका ने विवादास्पद प्रेसलर कानून रद्द करने का फैसला किया। अमरीका ने वियतनाम के विरुद्ध व्यापारिक प्रतिबंध हटाया। (10) इजराइल और फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन के बीच पश्चिमी तट में गाजा और जेरिको से इजराइली सेना हटाए जाने तथा फिलिस्तीनी स्वशासन के संदर्भ में एक समझौता हुआ। अमरीका ने पूर्व यूगोस्लाविया से अलग हुए गणराज्य मेसीडोनिया को 'नाटो' का सदस्य देश युनान की नाराजगी के बावजूद मान्यता दी। (26) इस्राइल अधिकृत पश्चिमी तट में फिलिस्तीनी नमाजियों की हत्या की घटना के बाद इजराइल फिलिस्तीनी मुक्ति मोर्चा के बीच जारी वार्ता खटाई में पडी। **मार्च** 5. अफगानिस्तान में पूर्वी प्रांत लाधमान में राष्ट्रपति बुरहानुद्दीन रब्बानी और प्रधानमंत्री हिकमतयार के समर्थक गुटों के बीच संघर्ष में 24 लोग मरे और 40 घायल। (20) पाकिस्तान ने बंबई स्थित अपना वाणिज्य दूतावास को बंद करने की घोषणा की। (21) अल सल्वाडोर में हुए चुनाव में सत्तारूढ अलाजा रिपब्लिकना बासियोनलिस्ता पार्टी को विजय मिली। (24) मैक्सिको में राष्ट्रपति पद के सशक्त प्रत्याशी लुई डोनाल्ड कोलोसियो की तिजुआना में चुनाव प्रचार के दौरान गोली मारकर हत्या। (29) इटली के आम चुनाव में अरबपति व्यापारी सिल्वियो बस्थुसकोनी के दक्षिणपंथी गठबंधन ने विजय प्राप्त की। **अप्रैल** 3. युगांडा के राष्ट्रपति योवेरी मुसेवनी की सत्तारूढ नेशनल रजिस्टेंट मूवमेंट की नयी संविधान सभा के चुनावों में बहुमत प्राप्त हुआ। (7) रवांडा के राष्ट्रपति जुवेनल हेबरिमान एवं बुरुंडी के राष्ट्रपति सिप्रियन नतार्यामीरा किगली हवाई अड्डे के पास एक हवाई हमले में मारे गये। (22) जापान में सत्तारूढ गठबंधन ने दो सप्ताह की गहमागहमी के बाद विदेश मंत्री सुतोम हाता को प्रधानमंत्री बनाया। **मई** 3. दक्षिण अफ्रीका के आम चुनाव में अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस की विजय। (7) अरकसास राज्य के एक पूर्व सरकारी कर्मचारी सुश्री पोला कार्विन ने अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन के विरुद्ध यौन शौषण का मुकदमा दर्ज किया। (10) डा. नेल्सन मंडेला ने दक्षिण अफ्रीका के प्रथम अश्वेत राष्ट्रपति के रूप में पद की शपथ ली। (22) हैती के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र ने व्यापार प्रतिबंध लागू किया (28) ब्रिटेन सरकार ने 1982 में इजराइल के खिलाफ लगाये हथियार प्रतिबंध हटाया। **जून** 1. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में यमन में युद्ध विराम कर गृह युद्ध समाप्त करने पर वार्ता शुरू। (25) जापानी प्रधानमंत्री हाता ने इस्तीफा दिया (29) जापान में सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के अध्यक्ष तोमिची मूरायामा प्रधानमंत्री पद के लिए चुने गये। **जुलाई** 1. रोमान हर्जोग को जर्मनी के नये राष्ट्रपति की शपथ दिलायी गयी (9) उत्तर कोरिया के राष्ट्रपति किम इल सुंग का निधन फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन के अध्यक्ष यासर आराफात 27 वर्षों का निर्वासित जीवन जीने के बाद गाजा पट्टी आये। (13) उत्तर कोरिया में किम जोंग इल को देश की सत्तारूढ़ वर्कर्स पार्टी, सरकार और सेना का प्रमुख बनाया गया। (18) रवांडा देशभक्त मोर्चे ने पास्तूर बिजिमुंगू को देश का नया राष्ट्रपति नामजद किया। (20) बेलारूस के पहले निर्वाचित राष्ट्रपति अलेक्जेंडर लकाशेंको ने अपने पद की शपथ ली। (25) जॉर्डन के शाह हुसैन और इजराइल के प्रधानमंत्री यित्जाक राबिन ने वाशिंगटन में एक ऐतिहासिक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किये। **अगस्त** 3 बंगलादेश की लेखिका तस्लीमा नसरीन ने दो माह तक भूमिगत रहने के बाद ढाका में उच्च न्यायालय की एक खंडपीठ के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। (4) जार्डन और इजराइल ने आपसी समझौते के तहत 46 वर्ष बाद सीमा बंधन तोड़े। (10) बंगलादेश की लेखिका तस्लीमा नसरीन स्वदेश छोड़ने की अनुमति लेकर स्वीडन पहुंची। (19) श्रीलंका में पीपुल्स एलायंस की सुश्री चंद्रिका भंडारनायके कुमारतुंगा के नेतृत्व में 20 संसदीय साझा मंत्रिमंडल को पद और गोपनीयता की शपथ दिलायी गयी। (22) सोमालियाई उग्रवादियों ने द.प. सोमालिया में संयुक्त राष्ट्र शांति सेना पर हमला; 6 जवान घायल हुऐ। (28) मैक्सिको में राष्ट्रपति पद के चुनाव में अर्नेस्टो जेदिलो विजयी। **सितंबर** 7. भारत और वियतनाम ने हनोई में चार समझौतों पर हस्ता[illegible]ये। (19) हैती [illegible] क्षण के सैनिक शासकों द्वारा सत्ता[illegible] रजामंदी जाहिर किये जाने के बा[illegible] टला। (29) अमरीका में रूसी [illegible] सुरक्षा परिषद ने हैती से प्रतिबंध[illegible]

पारित कर दिया। अक्टूबर 3, भारत ने सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए औपचारिक रूप से अपना दावा पेश किया (4) पनामा के पूर्व तानाशाह मैनुअल नेरियेगा को 20 वर्ष की कैद की सजा सर्वोच्च न्यायालय ने सुनायी। (6) यूनेस्को ने संयुक्त राष्ट्र सहिष्णुता वर्ष तथा महात्मा गांधी की 125 वीं जयंती के सिलसिले में अहिंसा तथा सहिष्णुता के संवर्धन के लिए एक पुरस्कार की स्थापना की। (18) जार्डन और इस्राइल ने 46 वर्ष पुराने युद्ध को समाप्त कर पश्चिम एशिया में शांति कायम करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाया।(22) भारत और चीन ने सीधे बैंकिंग संबंध स्थापित करने, राजनयिकों और अधिकारियों, पासपोर्ट धारकों के लिए व वीसा प्रक्रिया आसान बनाने के लिए सहमति के दो करारों पर पेइचिंग में हस्ताक्षर कर द्विपक्षीय संबंधों में एक बड़ी रुकावट दूर की। (23) भारत और चीन ने पेइचिंग में द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग को 'नया रूप' देने का निर्णय किया।(26) इजराइल और जार्डन के बीच अराबा क्रासिंग पर बहुप्रतीक्षित शांति संधि सम्पन्न हो गयी।(28) मार्टिन लूथर किंग की पत्नी कोरेटा किंग को न्यूयार्क में गांधी विश्व एकता पुरस्कार प्रदान किया गया। नवंबर 7 ताजिकिस्तान के राष्ट्रपति पद का चुनाव जीता।(9) अमरीकी संसद के दोनों सदनों पर रिपब्लिकन पार्टी विजयी हुई। भारत को संयुक्त राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक परिषद के लिए 9 वीं बार सदस्य चुना गया। पाकिस्तान संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा समिति के सामने कश्मीर पर समर्थन न मिलने से प्रस्ताव पेश न कर सका। (13) चंद्रिका कुमारतुंग के राष्ट्रपति बनते ही लिट्टे का युद्धविराम घोषित। (17) अंतर्राष्ट्रीय सदभाव के लिए वर्ष 1992 का जवाहरलाल नेहरू पुरुस्कार कनाडा के मॉरिस एफ. स्ट्रांग को दिल्ली में प्रदान कर सम्मानित किया गया। (19) भारत की 21 वर्षीय सुंदरी एश्वर्य राय को सनसिटी, दक्षिण अफ्रीका में मिस वर्ल्ड चुना गया। (20) आयरलैंड में बर्टी एडर्न सर्वसम्मति से प्रधानमंत्री बने। अंगोला सरकार और यूनिटा विद्रोहियों के बीच 19 साल से जारी संघर्ष की समाप्ति के लिए लुसाका में शांति संधि हुई।(21) गिरिजा प्रसाद कोइराला ने नेपाल के प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दिया। (23) जाने माने उद्योगपति स्वराज पाल को सामाजिक सेवा के लिए ब्रिटेन की हाउस आफ कॉमन्स ने सम्मानित किया।(27) इजराइल ने जार्डन के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करने की घोषणा की। (28) उक्रेन में संपन्न राष्ट्रपति पद के चुनाव में दोनों उम्मीदवारों अल्वर्टो वोलोट तथा जूलियो मारिया सांगुनट्टी को बराबर मत मिले। (29) नेपाल में कम्युनिस्ट पार्टी (एकीकृत मार्क्स लेनिनवादी पार्टी) के अध्यक्ष मनमोहन अधिकारी को देश का प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया। दिसंबर 2 अमरीकी सीनेट ने व्यापार और तटकर पर आम समझौते 'गैट' को मंजूरी दी।(3) अंतर्राष्ट्रीय न्यायाधिकरण ने यूनियन कार्बाइड के पूर्व अध्यक्ष वारेन एंडरसन को भारत लाकर मुकदमा चलाने संबंधी फैसला दिया। (8) स्विटजरलैंड की संसद ने रक्षामंत्री कैस्पर विलिगार को वर्ष 1995 के लिए देश का राष्ट्रपति निर्वाचित किया। जापान की पार्लियामेंट के ऊपरी सदन ने 'गैट' समझौते को पारित किया।(14) नामीबिया में सैम नुयोमा दुबारा राष्ट्रपति चुने गये।(28) रूसी विमानों ने अपने एक गणराज्य चेचन्या पर बमबारी की।

डी.एन.ए. का डिकोड संभव

1995: जनवरी 1 उरुग्वे राउंड में 85 देशों के हस्ताक्षर के साथ विश्व व्यापार संगठन प्रभावी हो गया।(6) जोर्डन में दो बार प्रधानमंत्री रह चुके जेद बेन शाकर ने अब्देल सलाम मजाली के त्यागपत्र देने से एक बार फिर सरकार बनायी (26) इटली में लम्बर्ट डिनी का विश्वास मत प्राप्त; (31) सुरक्षा परिषद ने हैटी में काम करने के लिये नयी संयुक्त राष्ट्र बल को मंजूरी दी।

फरवरी 1, मोरक्को में किंग हसन ने विपक्षी दलों के दबाव से एकरूप सरकार भंग की। अब्देल लातिफ प्रधानमंत्री बने रहे। (6) (22) उत्तरी आयरलैंड में विवाद को अंत करने के लिये ब्रिटेन के प्रधानमंत्री जान मेजर व आयरलैंड के प्रधानमंत्री जान ब्रटोन ने समझौते पर हस्ताक्षर किये।

मार्च 20 टोक्यो के ओम शिंरी क्यो के गैस हमले से आतंक फैला, 12 जापानी मरे व 5000 घायल हुए। (23) इटली के पूर्व मंत्री रिनेटो रुगैरियो डब्ल्यू.टी.ओ. के डायरेक्टर जनरल बने।

अप्रैल 14 विनी मंडेला की पार्लियामेंट सदस्यता समाप्त। (15) मानवता उददेश्य के लिये संयुक्त राष्ट्र द्वारा आंशिक तेल बेचने का प्रस्ताव इराक को मंजूर।(16) पाकिस्तान में 12 वर्षीय इसाई बालक इग्बाल मसीह जिसे पाकिस्तान में बाल श्रमिक की बुराइयों को उजागर करने से विश्व ख्याति मिली थी की गोली मारकर हत्या। (27) इजराइल व सीरिया के बीच वाशिंग्टन में शांति वार्ता शुरू।

मई 1 सार्क ने साप्टा का अनुमोदन किया डेवलपमेंट फंड की स्थापना; अमरीका ने ईरान से व्यापारिक संबंध समाप्त किये। (8) जैक्विस शिराक फ्रांस के नये राष्ट्रपति बने। (18) पूर्वी जेरुसलम में इजराइल द्वारा समस्त अरब भूमि पर कब्जा करने की योजना पर संयुक्त राष्ट्र की आलोचना को अमरीका ने वीटो किया। (23) इजराइल में अरब प्रभुत्व वाले दलों ने विलआक राबिन को पूर्वी जेरुसलम में 100 एकड़ भूमि को जब्त करने की कार्यवाही रोकने पर मजबूर किया।(25) संयुक्त राज्य अमरीका के वैज्ञानिकों को पहली बार जीवित जीव के डी.एन.ए. को डिकोड करने में सफलता मिली। (26) संयुक्त राष्ट्र

फिलोसोफिक पुन: विजय।

सुरक्षित क्षेत्रों पर सर्वो के आक्रमण पर नाटो के युद्धक विमानों ने सर्व ठिकानों पर वमवारी की; नाटो की वमवारी का वदला लेने के लिये सर्व विद्रोहियों ने 200 संयुक्त राष्ट्र: शांति रक्षकों को वंधक वनाया। **जून** 1. दक्षिणी चीनी सागर में स्पार्टलीज आइसलैंड समूह पर कब्जे का विवाद चीन, फिलीपींस, ताइवान, वियतनाम, व्रुनाई और मलेशिया के दावे को लेकर गहरा गया। (3) 377 वंधक वने संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षकों में से 126 छुड़ाये गये। (19) रूस के दक्षिणी शहर वुड्डेन में वंधको का 6 दिनों का नाटक चेचन विद्रोहियों द्वारा शेष वंधको को छोड़ देने से समाप्त हो गया। (20) चेचन विद्रोहियों ने वंधकों के अंतिम दल को छोड़ कर चेचन्या में प्रवेश कर लिया। (22) जान मेजर ने सत्तारूढ़ दल कंजर्वेटिव पार्टी के अध्यक्ष पद से पार्टी में गुटवंदी के कारण त्यागपत्र दिया। (27) कत्तर में रक्तहीन सैनिक क्रांति में युवराज शेख हमदविन–अल थानी ने अपने पिता को सत्ताच्युत कर स्वंय सत्ता संभाल ली;

जुलाई 4. जान मेजर ने कंजर्वेटिव पार्टी के अध्यक्ष पद के चुनाव में अपने प्रतिद्वंदी जान रेडवुड को 218–89 मतों से पराजित किया। (12) अमरीका के राष्ट्रपति ने वियतनाम के साथ पूर्ण संवधों के वहाल करने की घोषणा की (27) संयुक्त राष्ट्र महासचिव वुतरोस घाली ने सर्व विद्रोहियों पर संयुक्त राष्ट्र शांति सेना द्वारा वमवारी करने को कहा। (28) वियतनाम एशियान का सदस्य वना।

अगस्त 1. हवल दूरवीन ने शनि के एक और चंद्रमा की खोज की। (5) दक्षिण कोरिया ने केनवेराल से अपना पहला दूरसंचार उपग्रह प्रक्षेपित किया। (6) विश्व ने हिरोशिमा–नागासाकी पर अमरीका द्वारा परमाणु वम गिराये जाने के 50 (15) साओ टोमे एवं प्रिंसिप में रक्तहीन सैनिक क्रांति में राष्ट्रपति मिगुएक ट्रोवोडा को गिरफ्तार करके पाच सदस्यीय सेना ने सत्ता पर कब्जा किया। (28) नेपाल में उच्च न्यायालय ने 13 जून को 205 सदस्यों की नेपाली संसद को भंग करने को गलत ठहराते हुए इसे वहाल करने के आदेश दिये।

सितंवर 4. फ्रांस ने मुरोरा एटाल पर परमाणु परीक्षण किया। (12) एम. शेरवहादुर देववा ने नेपाल के प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। (15) 190 देशों ने बीजिंग घोषणा को स्वीकार किया; वोस्नियन सर्वो ने नाटो द्वारा सप्ताह तक चले वमवारी के परिणाम स्वरूप सर्जीवों के क्षेत्र से अपने भारी तोपों को हटाने का फैसला लिया। (18) शेर वहादुर देववा को नेपाली संसद में विश्वास मत प्राप्त। (24) ताया, मिस्र में इजराइल और फिलीस्तीन मुक्ति मोर्चा 8 दिनों की वार्ता के वाद वेस्ट वैंक में फिलीस्तीनी स्वंय शासन को विस्तार देने के राजी। **अक्तूवर** 2. वंगलादेश की सरकार ने साप्टा का अनुमोदन किया। (9) म्यानमार की नेशनल लीग फार डेमोक्रेसी की नेता आंग सान सू की जो 6 वर्षों की नजरवंदी के वाद फिर दल की सचिव वनीं। (24) न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र के 50 वर्ष पूरे होने पर विशेष अधिवेशन प्रारंभ; (25) दी कार्फ्रेंस कमेटी आफ दी हाउस आफ रेप्रेजेंटेटिव व दी स्टेट आन दी फारेन आपरेशन एप्रोप्रियेशन ने वहुमत से सीनेट के व्राउन संशोधन जो कि प्रेसलर संशोधन को समाप्त करता है के निर्णय को अनुमोदित कर दिया।

नवंवर 5 इजराइल के प्रधानमंत्री यित्झाक राविन की हत्या। (6) एडवर्ड शेवर्डनाड्जे जार्जिया के पुन: राष्ट्रपति वने। (11) नाइजीरिया को अंतर्राष्ट्रीय सुझावों पर ध्यान न देने और संगठन के सिद्धांतों की अवहेलना करने पर कामनवेल्थ से निष्कासित किया गया।

दिसंवर 1. नाटो देश स्पेन के विदेश मंत्री श्री जैरेस सोलाना को सेक्रेटरी जनरल वनाने पर सहमत। (2) श्रीलंका की सेना ने जाफना फोर्ट पर कब्जा किया; (3) श्रीलंका की सेना ने जाफना फोर्ट पर राष्ट्रीय झंडा फहराया, (4) अमरीका ने युनाइटेड नेशन इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट आर्गनाइजेशन से अलग होने की घोषणा की। (12) वोस्निया हर्जेगोविना में पार्लियामेंट आफ युरोप कांग्रेस ने वहुमत से डायटन के शांति समझौता को स्वीकार करने के पक्ष में मत दिया; (14) पूर्व युगोस्लाविया के नेताओं ने पेरिस में वोस्नियन शांति समझौते पर हस्ताक्षर किये। (16) 15 युरोपियन संघ देशों के नेताओं ने योजना वनायी कि एक समान मुद्रा यूरो मानी जाये। (20) पी.एल.ओ व हमस हिंसा का सहारा लिये विना अपने मतभेद सुलझाने को तैयार। (22) इजराइल ने वेस्ट बैंक का क्षेत्र खाली कर इसे फिलीस्तीन नियंत्रण में दिया। (24) पी.एल.ओ. नेता यासर अराफात ने सेल्फ रूल पैलेस्टिनियन अथारिटी को भंग किया; रेने प्रवेल हैटी के नये प्रेसीडेंट बने; चेचन्या में मास्को द्वारा चुनाव कराने की कोशिश से विद्रोह भड़का; रूसी बलों ने गुडर्मेस पर कब्जा किया।

रूस में प्रथम राष्ट्रपति चुनाव

1996: जनवरी : 8. फ्रांस के पूर्व राष्ट्रपति फ्रांसिस मित्तरेंड 79 वर्ष की आयु में निधन। 11. रुयातारो हाशिमोतो जापान के नये प्रधानमंत्री। 16. पुर्तगाल में समाजवादी अधिवक्ता जोर्गे सैमपाइओ राष्ट्रपति निर्वाचित। 20. फिलिस्तीनियों ने स्वशासित क्षेत्र में अपना नेता चुनने के लिये मतदान का कार्य प्रारंभ किया; 25. यूरोप की 8 देशों की परिषद में रूस को भी शामिल कर लिया गया।

फरवरी: 12. भारत व नेपाल ने दो समझौतों पर हस्ताक्षर किये। जिसमें महाकाली नदी से पानी व विद्युत की भागेदारी भी है; सेंट्रल गाजा में व्हाइट हाउस में यासर अराफात ने राष्ट्रपति पद की शपथ ली। 16. इजराइल के प्रधानमंत्री ने फिलीस्तीनी राज्य की स्थापना से इंकार किया।

28. प्रिंसेस डायना, तलाक के लिये सहमत; इटली के सबसे शक्तिमान उद्योगपति गियान्नी अग्नेली ने 30 वर्ष के बाद फियेट की चेयरमैनी सिजरी रोमिटि को दी।

मार्च: 1. अंगोला सरकार व इसके विरोधी गुट यूनिटा में संयुक्त सरकार बनाने और जुलाई तक अपनी शक्तियों का विलय कर नयी राष्ट्रीय सेना के गठन पर सहमति। 3. बंगलादेश में प्रधानमंत्री खालिदा जिया ने बिना पार्टी की सरकार के तत्वाधान में चुनाव कराने की पेशकश की; स्पेन में प्रधानमंत्री फेलिपो गोंजालेज कंजर्वेटिव पार्टी के युवा नेता मारिया अजनेर से मत विभाजन में हारे; तुर्की में मेसुट यिलमाज और टांसु सिलर गठबंधन की सरकार बनाने को सहमत; 91 वर्षीय डेंग जियोपिंग चीन के राष्ट्रपति निर्वाचित। 9. पुर्तगाल में समाजवादी जोर्गे साम्पियो राष्ट्रपति बने। 11. आस्ट्रेलिया में लिबरल पार्टी के नेता जान हावर्ड 25वें प्रधानमंत्री बने; दक्षिण कोरिया के दो पूर्व राष्ट्रपतियों चू हान, और रोह टेइ वू पर विद्रोह व पीड़ित करने के आरोप पर मुकदमा प्रारंभ। 17. लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में विल्स क्रिकेट विश्व कप के फायनल में श्रीलंका ने आस्ट्रेलिया को हरा दिया।। 19. नेल्सन मंडेला के विनी के साथ 38 वर्षीय वैवाहिक संबंध समाप्त; जिम्बाब्वे में राष्ट्रपति राबर्ट मुगाबे छह वर्ष के अगले कार्यकाल के लिये निर्वाचित; चार वर्षों से विखंडित सारजीवो चार सर्ब क्षेत्रों के क्रोशिया संघ विलय हो जाने से एक हुआ। 22 फ्रांस ने नेपोलियन बोनापार्ट के शासन की 200वीं वर्ष गांठ मनायी। 23 ताईवान म प्रथम प्रत्यक्ष राष्ट्रपति चुनाव मे राष्ट्रपति ली टेंग हुई भारी बहुमत से विजयी। 29. सियरा मे सैनिक सरकार हटी अहमद तेजान कबाश नये राष्ट्रपति बने; म्यानमार मे नेशनल कनवेन्शन मे भविष्य में संसद म सेना को प्रतिनिधित्व देने का निर्णय लिया। 30. बंग्लादेश के प्रधानमंत्री खालिदा जिया ने त्यागपत्र दिया। संसद भंग।

अप्रैल: 2. रूस और बेलारूस राजनीति व आर्थिक संघ बनाने को सहमत। 3 यूरोपीय संघ ने मैड काऊ बीमारी पर काबू पाने के लिए 4.7 लाख ब्रिटेन की गायो को मार डालने का निर्णय लिया। 8 यूगोस्लाविया और मासिडोनिया में राजनयिक संबंध स्थापित। 10. कंबोडिया और वियतनाम में सीमा विवाद सुलझा। 12. दक्षिण कोरिया मे सत्ता धारी राष्ट्रपति किम के नेतृत्व में न्यू कोरिया पार्टी अल्पमत में। 16. पुर्तगाल सरकार ने समलिंगियो को विवाह करने की इजाजत दी। 20. नाइजीरिया में सर्वोच्च मुस्लिम अधिकारी इब्राहिम डासुकी को सेना ने अपदस्थ किया। मोहम्मद माचिकडो ने पद संभाला। 21. अमरीका रूस ने सितंबर 1996 में सी.टी.बी.टी. पर हस्ताक्षर करने के अपने संकल्प को दुहराया; चेचन्या के विद्रोही नेता जोखर दुडायेव रूसी सेना के मिसाइल आक्रमण में मारे गये। 23. इटली के आम चुनाव में सेंटर लेफ्ट ओलिव ट्री ब्लाक को बहुमत। 25. पराग्वे में राष्ट्रपति और विद्रोही जनरल में समझौता। 26. चीन, रूस, कजाकिस्तान, किर्गिजस्तान और ताजिकिस्तान ने 8000 किमी लंबी सीमा का असैन्यीकरण करने की संधि पर हस्ताक्षर किये; फिलीस्तीन की नेशनल काउंसिल ने यासर अराफात को दुबारा पी.एल.ओ. एक्जीक्यूटीव का प्रमुख चुना। 28. चेचन विद्रोही नेता दुडायेव मृत्यु के बाद उनके उत्तराधिकारी के रूप में यांडरबियेव चेचन गणराज्य (रूस) के राष्ट्रपति बने।

मई: 1. अमरीका की सीनेट ने स्त्री जनन अंगच्छेद को संघीय अपराध बनाने पर मत दिया और पांच वर्ष की सजा का प्रावधान तय किया। 3. स्थानीय व क्षेत्रीय परिषद के चुनावों में ब्रिटेन में कंजर्वेटिव पार्टी की पराजय। 5. स्पेन में नये प्रधानमंत्री जोस मारिया अजनार ने शपथ ग्रहण की। 8. दक्षिण अफ्रीका की संविधान सभा ने रंगभेद के बाद का स्थायी संविधान अपनाया। 9. 16 वर्ष में पहली बार युगांडा में राष्ट्रपति चुनावे। 10. मध्य एशिया के रास्ते से उत्तरी इरान से चीन और तुर्की के बीच नया रेल रास्ता प्रारंभ। 16. रूस के राष्ट्रपति बोरिस येल्तिलिन ने मृत्यु दंड को समाप्त करने के आदेश पर हस्ताक्षर किये। 17. इटली में रोमानो प्रोडी ने 55वीं सरकार बनायी। 20. ताइवान में ली टुंग हुइ देश के इतिहास में प्रथम निर्वाचित राष्ट्रपति बने 21. अमरीकी हाउस रिपब्लिकन ने पोलैंड, हंगरी, चेक गणराज्य को शामिल करने के लिये नाटो का विस्तार किया। 27. साइप्रस में दक्षिण पंथियों ने संसदीय चुनाव जीते। 31. बेंजामिन नेतानयाहू, इजराइल में प्रथम प्रत्यक्ष निर्वाचन में प्रधानमंत्री चुने गये।

जून: 1. परमाणु अस्त्रों की अंतिम खेप रूस को सौंप कर उक्रेन परमाणु विहीन देश बन गया; 2. गाजा हवाई अड्डे को अराफात ने यातायात के लिये खोला। 3. संयुक्त राष्ट्र की मानव स्थापन सम्मेलन तुर्की के इस्तान्बुल में प्रारंभ। 4. लिक्यूड पार्टी के नेता (निर्वाचित प्रधानमंत्री) बेंजामिन नेतानयाहू ने कहा कि वे स्वतंत्र फिलीस्तीनी राज्य के लिये सहमत नहीं; युरोप का एरियन-5 राकेट पहली उड़ान के दौरान तीस सेकेंड बाद ही ध्वस्त हो गया। 10. पाकिस्तान में महिलाओं के लिये मृत्युदंड की समाप्ति। 11 चेचन्या में 18 महीने से चल रहे युद्ध के बंद किये जाने पर सहमति के साथ रूसी सेनाओं की वापसी प्रारंभ। 14 स्लोवेनिया ने युरोपीय संघ की पूर्ण सदस्यता के लिये आवेदन किया। 17. चीन व अमरीका बौद्धिक संपदा अधिकार पर एक समझौते पर पहुंचे। 21. ब्रिटेन व युरोपीय संघ ने गाय मांस विवाद को फ्लोरेंस में बात-चीत के बाद सुलझाया। 23. शेख हसीना बंगलादेश की प्रधानमंत्री बनीं। 25. केपटाउन मे डेसमंड टुटु ने आर्चबिशप पद से अवकाश लिया। 26. अफगानिस्तान में तालिबान आक्रमण के बीच गुलबुदीन हेकमतयार ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली।

जुलाई: 1. आस्ट्रेलिया के उत्तरी क्षेत्र में विश्व में पहली बार मर्सी किलिंग का कानून पारित। 2. दक्षिण अफ्रीका की

इन्काता फ्रीडम पार्टी ने नेल्सन मंडेला की सरकार से अलग होने की घोषणा की। 4. रूस में सोवियत संघ युग के बाद के पहले राष्ट्रपति चुनाव में बोरिस येलत्सिन जीते। 10. नाइजर के मिलिट्री शासक जनरल इब्राहिम मेनासा राष्ट्रपति घोषित; पोलैंड ओ.ई.सी.डी. का 28वां सदस्य बना। 12. ब्राउन संशोधन पर अमल करते हुए अमरीका ने पाकिस्तान को आयुधों की खेप भेजना प्रारंभ। 19. मंगोलिया डब्ल्यू.टी.ओ. का सदस्य बना। 24. आस्ट्रेलिया की अदालत ने मर्सी किलिंग पर रोक लगादी; बुरुंडी के हुटु राष्ट्रपति सिलवेस्टर निटवांटुनगान्या ने अपने सहयोगी दल द्वारा उनके हटाने के मुहिम पर अमरीका के दूतावास में शरण ली। 25. बिल क्लिंटन ने चीन और ताइवान को दो देश माने; अमरीका ने घोषणा की कि वह छह पूर्व सोवियत संघ गणराज्यों–जार्जिया, कजाख्स्तान, किर्गिजस्तान, मोलडोवा, तुर्कमेनस्तिान और उजबेकिस्तान के साथ किसी प्रकार का शस्त्र समझौता नहीं करेगा; बुरुंडी में सेना ने मेजर पियरे बुयोबा को राष्ट्रपति घोषित किया और संसद को भंग किया। 27. जकार्ता में इंडोनेशियन डेमोक्रेटिक पार्टी के नेतृत्व के सवाल पर हिंसा भड़की, 28. 150 हुटुओं को बुरुंडी में टुट्सी सेना ने मारा; इथियोपिया की फातुमा रोबा ने अटलांटा में महिला मैराथन जीतकर पहली अफ्रीकी महिला बनीं। 29. अमरीका के महान एथलीट कार्ल लुइस ने लंबी कूद में स्वर्ण पदक जीत कर एक नया इतिहास रचा।

अगस्त: 2. सोमालिया के युद्ध के कमांडर और स्वघोषित राष्ट्रपति जनरल मुहमद फरा अइडीड का निधन। 6. अमरीका की शोधकर्ताओं ने एक अंतरीक्षीय पिंड की जांच करते हुए मंगल पर जीवन की घोषणा की। 8. सर्बिया और क्रोशीया ने राजनयिक संबंध स्थापित किये। 9. रूस में बोरिस येलत्सिन दूसरी बार राष्ट्रपति बने। 13. अफगानिस्तान में काबूल सरकार और इसके प्रमुख विरोधी अब्दुल रशीद डोस्तम युद्ध बंदि के लिए सहमत। 23. क्रोएशिया और युगोस्लाविया एक दूसरे को पहचान देने पर सहमत। 26. दक्षिण कोरिया में पूर्व राष्ट्रपति चुन डू वान को मृत्यु दंड और उनके सहयोगी राय टो वु को 22 वर्ष की सजा। 31. चेचनिया में रूस सरकार 31 दिसंबर 2001 तक चेचनिया को स्वतंत्रता देने पर सहमत।

सितंबर: 9. ओकिनावा ने अमरीकी सैनिक ठिकाने को कम करने को पक्ष में मतदान किया। 11. सी.टी.बी.टी. को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने मंजूरी दी। 14. बोस्निया में चुनाव; कंबोडिया में किंग ने खमेर रोग लेंग सेरी की क्षमा याचना को मंजूर किया। 15. इराक में 22 सदस्यीय अरब लीग इराक के बटवारे पर असहमत। 23. युनान में प्रधानमंत्री स्मिटिस चुनाव जीते। 24. बिल क्लिटन ने सी.टी.बी.टी. पर हस्ताक्षर किया। 25. युनान में स्मिट्सि मंत्रीमंडल ने शपथ ग्रहण की। 27. तालीबान ने काबुल पर कब्जा कर पूर्व राष्ट्रपति नजिब्बुला को फांसी पर लटका दिया; चीन व ब्रिटेन में 30 जून 1997 को हांगकांग चीन के सोपने की संधि पर हस्ताक्षर किया; बुरुंडी में पियरे बुययोबा राष्ट्रपति बने।

अक्तूबर : 1. नेतानयाहु और अराफात के बीच वाशिंग्टन में बातचीत प्रारंभ। 7. युनाइटेड अरब अमीरात में अनाधिकृत रूप से रह रहे 1,44,000 श्रमिकों को नये कानून के लागू होने से देश छोडना पड़ा; अफगानिस्तान में रब्बानी ने तालीबान से युद्ध घोषणा की। 12. न्यूजीलैंड में चुनाव; पापुआ न्यू गिनी के प्रधानमंत्री थियो डोरे मिरियुंग के हत्या। 21. जापान ने सुरक्षा परिषद में भारत को पराजित कर स्थायी सदस्यता हासिल की। 22. कतर के अमीर ने अपने तीसरे बेटे शेख जसीम को उत्तराधिकारी बनाया। 23. यूरोपिय परिषद में क्रोएशिया को अपना 40वां सदस्य बनाया। 24. म्यानमार के विपक्षीय नेता आन सांग सूकी को दुबारा उनके घर नजर बंद किया गया। 25. श्रीलंका ने सी.टी.बी.टी. पर हस्ताक्षर किये; नार्वे के प्रधानमंत्री ग्रो हारलेम ने त्यागपत्र दिया; बंग्लादेश ने सी.टी.बी.टी. पर हस्ताक्षर किय। 27. महात्मा गांधी के पूर्व महासचिव के विरोध के कारण लंदन में उनकी कुछ हस्तलिपियों की नीलामी टल गयी।

नवंबर : 1. भारत के प्रधानमंत्री एच.डी. देवगौड़ा हरारे में जी–15 सम्मेलन में भाग लेने को पहुंचे। 6. अमरीका के राष्ट्रपति चुनाव बिल क्लिंटन ने दूसरी बार जीती। 9. निकारागुआं में राष्ट्रपति पद के लिये वहां की सुप्रीम इलेक्टोरल काउंसिल ने कंजर्वेटिव पार्टी के अर्नोल डो अलीमान को निर्वाचित घोषित किया। 30. भारत ने रुस के साथ 40 बहुउद्देशीय एस.यू. 30 एच.के. लड़ाकू जेट खरीदने का समझौता किया।

दिसंबर : 4. नासा ने मंगल अभियान के लिए एक अंतरिक्ष यान का प्रक्षेपण किया, इस यान में 6 पहिये की गाड़ी है जो मंगल की सतह से चट्टानों के नमूने एकत्र करेगी। 6. ब्रिटेन के प्रधानमंत्री जान मेजर की कंजरवेटिव सरकार एक सांसद के दल छोड़ देने के कारण एक मत से अल्पमत से आ गयी। 9. विश्व व्यापार संगठन की पहली मंत्रीय स्तर की बैठक सिंगापुर में शुरु। 10. क्रेमलिन गर्वनरों के चुनाव में 6 गर्वनर विपक्षी वामपंथी दलों के चुने गये; दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति नेलसन मंडेला द्वारा नये संविधान पर हस्ताक्षर के साथ वहां पर अनेक दलों की मिलीजुली सरकार की परंपरा समाप्त हो गयी; खाड़ी युद्ध के 6 वर्ष के बाद इराक को खाद्यान्न, दवाई और अन्य स्वास्थ्य उपकरणों के खरीदने केलिए सुरक्षा परिषद ने सीमित तेल बेचने की मंजूरी दी; 13. घाना के संयुक्त राष्ट्र अधिकारी श्री कोफी अन्नान संयुक्त राष्ट्र महासचिव होंगे। 24. इसराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतानयाहु और फिलिस्तीनी नेता यासर आरफात में हेब्रोण से इसराइल के वापसी के लिए होनेवाले समझौते केलिए बातचीत शुरु; ताजिकिस्तान के राष्ट्रपति इमोमाली [illegible] और विपक्षीय इस्लामिक नेता श्री सैइद अब्दुल्ला [illegible] समझौता हो जाने से चार वर्ष से चल रहा गृह युद्ध समाप्त। 26. पेरु के लिमामे जापान के [illegible] के घर पर गुरिलाओं द्वारा 100 अधिकारी [illegible] [illegible] करने के 27. रुस व चीन में सीमा पर [illegible] समझौते पर हस्ताक्षर।

सायर में आपातकाल

1997: जनवरी: 14. हेब्रान के वेस्ट बैंक टाउन में फिलीस्तीनी स्वशासन के लिये इजराइल व पी.एल.ओ. में संधि पर हस्ताक्षर। 29. पाकिस्तान के उच्चतम न्यायालय ने बेनजीर भुट्टो सरकार के अपदस्थ को नामंजूर करते हुए तीन महीने के बाद उन्हें सत्ता में लौटाया।

फरवरी: 3. पाकिस्तान में चुनाव, फीका मतदान, केवल 25 से 30% मतदान हुआ। 4. ब्रिटेन ने घोषणा की कि अल्पसंख्यक समुदाय के उन 8000 लोग जो किसी राज्य के नागरिक नहीं रह गये हैं को अपनी नागरिकता देगा। 7. इक्वेडोर के राष्ट्रपति अब्दाला बुकाराम को कांग्रेस ने हटाया, फैबियन अलारकान ने अंतरिम राष्ट्रपति पद की शपथ ली। 9. इजराइल के नेतानयाहू और पी.एल.ओ. के यासर अराफात की इरेज में बैठक। 17. नवाज शरीफ पाकिस्तान के 13वें प्रधानमंत्री बने। 24. ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने भेड़ का क्लोन करने में सफलता अर्जित की। 28, उत्तरी कोरिया के उप रक्षा मंत्री किम क्वांग जिन का निधन। **मार्च :** 1. दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला फिलीपींस व अन्य देशों की यात्रा में मोजाम्बिक के स्व राष्ट्रपति समोरा माकेल की विधवा ग्रेसिया माकल को अपने साथ ले गये; अल्बानिया में प्रधानमंत्री अलेक्सांडर मेक्सी के पद छोड़ने के बाद हिंसा भड़की; अमरीकी वैज्ञानिकों ने स्काटलैंड के वैज्ञानिकों की तकनीक का इस्तेमाल करते हुए बंदर का क्लोन करने में सफलता अर्जित की, पाकिस्तान में शुक्रवार को कार्य दिवस में बदला गया। 3 जोर्डन के किंग हुसैन ने अपना मेहमानों वाले महल को अनाथालय मे बदला। 6 नेपाल में शेर बहादुर देउबा सरकार का पतन। 9. बंगला देश व चकमा शरणार्थियों के बीच ऐतिहासिक संधि, पिछले 11 वर्षों से त्रिपुरा में कैंपों में रह रहे 50,000 शरणार्थियों की इसी के साथ देश वापसी। 10. अल्बानिया में बड़े पैमाने पर लूट व हिंसा का दौर जारी; वैटिकन व लीबिया में राजनैयिक संबंधों की शुरुआत। 11. येलत्सिन ने प्रधानमंत्री चर्नोमिर्डिन व उपप्रधानमंत्री एनाटोली चुबाइस को छोड़कर पूरे मंत्रिमंडल को भंग किया; अमरीका ने संयुक्त राष्ट्र को चेतावनी दी कि पांच महाशक्तियां अपने अधिकार नहीं छोड़ेंगी; लाहौर के उच्च न्यायलय ने इस्लाम मे प्रेम विवाह को वैधानिक माना। 12. नेपाल में राष्ट्रीय प्रजातंत्र दल के लोकेंद्र बहादुर चंद के नेतृत्व में नयी संयुक्त सरकार का गठन। 13. नाइजीरिया से स्व निष्कासित नोबेल पुरस्कार से सम्मानित लेखक वोल सोइनका पर सैन्य नेता सानी अबाका के विरुद्ध युद्ध व हिंसा भड़काने का आरोप लगा; इयान बुलमुट जिन्होंने भेड़ का क्लोन किया था ने कहा कि मानव की क्लोनिंग अमानवीय होगी; संयुक्त राष्ट्र के महासचिव ने इजराइल को पूर्वी जेरुसलम में अरब इलाकों में यहूदियों की बस्ती न बनाने को कहा। 15. सायर का तीसरा बड़ा शहर किसानगानी विद्रोहियों के कब्जे में। 17. बोरिस येलत्सिन ने बोरिस नेम्सटर को प्रथम उप प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त किया। 21. हेलसिंकी में क्लिंटन व येलत्सिन के बीच नाटो व शस्त्रों पर वार्ता। 23. पाकिस्तान ने 38 भारतीय बच्चों को जिन्हें वह तीन वर्षों से कराची के निकट अपनी समुद्री सीमा में मछली पकड़ते हुए कैद किया था की रिहाई की। 24. इस्लामाबाद में आर्गनाइजेशन आफ इस्लामिक कान्फ्रेंस की अनोखी बैठक में कहा गया कि 'समस्त इस्लामिक भूमि पर कब्जे' की नीति को वापस लिया जाये; श्रीलंका की नौ सेना ने 100 उग्रवादी मारे। 25. फिल्म इंग्लिश पेशेंट को आस्कर; श्रीलंका ने यासर अराफात के श्रीलंका व लिट्टे के बीच मध्यस्थता करने के प्रस्ताव को नामंजूर किया; रूस भारत को दो लाइट वाटर परमाणु भट्ठी देने को सहमत। 27. दलाई लामा ने ताइवान यात्रा पर तिब्बत समेत एक देश दो प्रणाली अपनाने को कहा। 29. कैलिफोर्निया में बवासी रेलिजियन समूह के एक कंप्यूटर दल के 39 सदस्यों ने स्वर्ग का दरवाजा खुलने की मान्यता को लेकर सामूहिक आत्महत्या की; संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने अल्बानिया के लिये संयुक्त राष्ट्र बल को अधिकार दिये।

अप्रैल: 2. रूस व बेलारूस के बीच 'यूनियन ट्रीटी' संपन्न। इसमें इन दो स्लाविक देशों के बीच धीमें-धीमें एक संघ बनाने को कहा गया है। 3. पाकिस्तान की नेशनल एसेंबली ने सामूहिक बलात्कार पर मृत्यु दंड के प्रस्ताव को पारित किया; जापान के मंत्रिमंडल ने पूर्वी एशिया के महत्वपूर्ण सैनिक अड्डे ओकिनावा को अमरीका के सैनिकों द्वारा प्रयुक्त करने की इजाजत दी; रूस के राष्ट्रपति ने जुलाई में मैड्रिड में होने वाली नाटो की बैठक में भाग लेने से मना किया। 4. संयुक्त राष्ट्र मानव अधिकार आयोग ने मृत्यु दंड के विरुद्ध मत दिया और देशों से अपील की कि वे इसका उपयोग सीमित करें। 5. सायर के विद्रोहियों ने संयुक्त राष्ट्र को 80,000 भूख से पीड़ित सायर शरणार्थियों को अपने देश में वापस ले जाने की अनुमति दी। 6. अल्जीरिया में 90 से अधिक नागरिकों की इस्लामिक कट्टर पंथियों ने हत्या की। 7. एलिजाबेथ टेलर ने अपने पति लैरी फोर्टेन्सकी से तलाक लिया। यह उनका सातवां विवाह था; वियतनाम ने अमरीका के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किये। इसके अनुसार वह दक्षिणी वियतनाम में साइगोन प्रांत पर अपने कब्जे के कारण 140 मिलियन डालर के कर्जे को धीमे-धीमे चुकायेगा। 8. नयी दिल्ली में नाम के विदेश मंत्रियो की बैठक में सुरक्षा परिषद में विकासशील देशों की उपेक्षा करके मनमाने ढंग से इसका विस्तार करने पर विरोध प्रकट किया; राष्ट्रपति क्लिंटन ने इजराइल के प्रधानमंत्री नेतानयाहू द्वारा अमरीका के नेतृत्व में पश्चिमी एशिया बैठक की मांग को ठुकराया; नाम के विदेश मंत्रियों ने अपने 113 सदस्य देशों से इजराइल से वर्तमान संबंध समाप्त करने को कहा। 9. राष्ट्रपति गोवेतु

ने सायर में आपातकाल की घोषणा की; अमरीका ने जनरल मोबेतु से सत्ता से हटने के लिये कहा। 11. वर्लिन की एक अदालत ने जर्मनी की भूमि पर कुर्दिश नेता की हत्या के इरानियन अधिकारियों द्वारा आदेश देने के मामले में संलग्न पाया। इससे युरोपियन संघ के इरान से राजनयिक संबधों को धक्का लगा; अंगोला के गृहयुद्ध जिसमें पांच लाख से अधिक लोग मारे गये थे की समाप्ति पर उत्सव; लुआंडा में नेशनल युनिटी सरकार की स्थापना की गयी। 13. दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने अगले वर्ष से प्राइमरी स्कूल में हिंदी, तमिल, तेलगु, गुजराती और उर्दू को पढ़ाये जाने की अनुमति दी। 14. लेका जो अपने आप को अल्वानिया का राजा मानते हैं 58 वर्ष के अप्रवास के बाद देश वापस लौटे और राजतंत्र का आव्हान किया; विरोधी नेताओं ने सायर की राजधानी किन्हासा का घेराव किया। उनकी मांग राष्ट्रपति मोबेतु को हटाने की थी। 15. मक्का के वाहर मिना में तीर्थयात्रियों के तम्बुओं में आग लगने से 350 लोग मरे। मृतकों में 150 भारतीय भी थे; बोस्निया के सर्ब, क्रोएशिया और मुस्लिम नेताओं ने अकेले सेंट्रल बैंक को बनाने पर सहमति दी। अंतरिम मुद्रा अलग–अलग डिजाइन में छापी जायेगी। 22. सुडान की इस्लामिक सरकार व चार दक्षिणी विरोधी दलों के बाच शांति संधि के साथ 14 वर्षो से चल रहे गृहयुद्ध की समाप्ति; सबसे अधिक चमक वाला धूमकेतु हैली बोप सौर्य प्रणाली में प्रवेश करने के लिये पृथ्वी के निकट 200 मिलियन किलोमीटर की दूरी पर आया। 27. विनी मंडेला ए.एन.सी. वीमेन लीग की दुवारा अध्यक्ष निर्वाचित।

मई: 1. व्रिटेन में चुनाव; 18 वर्षों के कंजर्वेटिव दल की सत्ता को टोनी ब्लेयर के नेतृत्व में लेबर पार्टी को भारी वहुमत। 14. नेल्सन मंडेला की मध्यस्थता में पहली बार मोबेतु व विरोधी नेता लारेंट कबिला के बीच वार्ता। राष्ट्रपति मोबेतु के पद त्याग न मानने पर कबिला वार्ता से हटे। 5. ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ब्लेयर ने डाउनिंग स्ट्रीट में 10 नम्बर का आवास न अपनाते हुए परंपरा तोड़ी। वे अपनी पत्नी व तीन बच्चों के साथ 11 डाउनिंग स्ट्रीट के आवास में गये। 12. मालदीव में 12वां सार्क सम्मेलन प्रारंभ। 13. सार्क सम्मेलन ने साफ्टा को 2001 तक बढ़ाया। 17. सायर में विरोधी नेता लारेंट कबिला ने 7 महीने तक चले गृहयुद्ध के बाद स्वंय को राष्ट्राध्यक्ष घोषित किया। 19. चीन व हांगकांग में सीधी रेल सेवा प्रारंभ। 24. उदारवादी नेता मोहम्मद खतामी इरान के राष्ट्रपति वने। 26. फ्रांस में संसदीय चुनाव; पोलैंड ने नया संविधान अपनाते हुए, साम्यवादी युग की समाप्ति की। 27. नाटो और रूस के बीच संधि; सऊदी अरब ने पाकिस्तान के वाद अफगानिस्तान में तालिबन सरकार को मान्यता दी। 29. इंडोनेशिया में चुनाव।

जून: 2. क स्टीफेन मार्टिन और डेविड माइकेल साइबेरिया से 1920 किलोमीटर की यात्रा करके उत्तरी ध्रुव पर पंहुचने वाले ब्रिटेन के प्रथम नागरिक वने। 3. कनाडा में चेरटियन के नेतृत्व में लिबरल पार्टी दुवारा सत्ता में। 13. खमेर राग अधिकारी सोन सेन जिन्होंने नरसंहार कराया था को उनके नेता पोल पोट ने मृत्युदंड दिया। 25. रूस के अंतरिक्ष केंद्र मिर पर प्रैक्टिस के दौरान मानव रहित विमान टकरा गया। 27. ताजिकिस्तान में सरकार व विरोधी नेताओं के बीच शांति संधि के साथ ही पांच वर्षो से चल रहा गृहयुद्ध समाप्त; 30. 165 वर्ष के ब्रिटिश शासन के बाद अर्धरात्रि को हांगकांग चीन का भाग बना।

जुलाई: 1. चीन के प्रधानमंत्री लिपेंग ने कहा की हांगकांग के अधिग्रहण के बाद उनकी सरकार अगला लक्ष्य मकाओ और ताइवान को मिलाने का है; ब्रिटेन 12 वर्षों के बाद यूनेस्को में शामिल। 7. सोजेरनर गाड़ी ने मंगल गृह पर मिट्टी और चट्टानों के नमूने इकट्ठा करना शुरू किया। 8. मार्टिट में ऐतिहासिक नाटो की वैठक प्रारंभ। 18. पोलैंड के राष्ट्रपति ने नये संविधान पर हस्ताक्षर करते हुए साम्यवादी प्रणाली के अवसान की घोषणा कर दी। 23. लाओस और म्यानमार को एशियान की सदस्यता मिली 25. लाइबीरिया के राष्ट्रपति चुनाव में चाल्स टेलर भारी मतों से विजयी; ब्रिटेन की लेबर सरकार ने स्कोटलैंड को स्वायत्तता देने के लिए अपने कार्यक्रमों की घोषणा की।

अगस्त: 1. क्लिंटन ने लैटिन अमरीका को उच्च कोटि के वायुयान व अन्य हथियार बेचने के बीस वर्षीय प्रतिबंध को हटाया। 14. रूस के अंतरिक्ष स्टेशन मिर से अंतरिक्ष यात्रियों का सबसे मुश्किल अभियान के बाद वापस आना प्रारंभ। 18. रूस का अंतरिक्ष स्टेशन महत्वपूर्ण कंप्यूटर के खराब होने से नियंत्रण से बाहर हुआ; अफगानिस्तान में जनरल अहमद शाह मसूद के नेतृत्व की सेनाओं ने तालिबान के प्रमुख ठिकानों पर कब्जा किया। 22. तालिबान विरोधी नेताओं जिसमें प्रधानमंत्री अब्दुल रहीम गफूरजाई भी थे की वायुयान दुर्घटना में मृत्यु। 26. एफ.डब्ल्यू क्लार्क ने नेशनल पार्टी के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दिया, 31. प्रिसेंस आफ वेल्स डायना व उनके मित्र डोडी की पेरिस में कार दुर्घटना में मृत्यु।

सितंबर: 5. नोबेल पुरस्कार व भारत रत्न से सम्मानित मदर टेरेसा का 87 वर्ष की आयु में कलकत्ता में निधन। 6. प्रिसंस आफ वेल्स डायना का अंतिम संस्कार वेस्टमिंस्टर में। 9. दक्षिण अफ्रीका में क्लार्क की जगह मार्तिनस वान स्कालवीक नये अध्यक्ष बने। 11. स्काटलैंड में चुनाव। एडिनबर्ग में संसद की स्थापना के साथ ब्रिटेन के अंतर्गत रहते हुए स्वशासन रहेगा। 15. सिन फेन सहित उत्तरी आयरलैंड में समस्त दलों की शांति वार्ता प्रारंभ। 17. मोरक्को में अधिकारियों व विद्रोहियों के बीच चुनाव के द्वारा आगे का रास्ता खोलने पर सहमति। 19. [illegible] जेमिन चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सेक्रेटरी [illegible] निर्वाचित। 27. मलेशिया ने इंडोनेशिया में वनों में [illegible] से जूझने का आव्हान किया। 30. इजराइल व [illegible] में शांति वार्ता प्रारंभ; युरोप की मानव अधिकार [illegible] एम्मा योनिनो को अफगानिस्तान में तालिबान [illegible] के लिये वंदी वनाया।

अक्टूबर: 1. इस्लामिक [illegible] हमस शेख अहमद यासिन [illegible] किया। 7. सूर्य वहादुर [illegible]

तीन वर्षों में वे चौथे प्रधानमंत्री बने हैं। 20. सर विहीन मेंढक के भ्रूण का विकास करके ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया कि मानव अंगो के ट्रांसप्लांट के लिये मानव अंगों का विकास किया जा सकता है। 23. काबुल में जनरल अब्दुल रशीद डोस्टम को उपराष्ट्रपति बनाया गया; अमरीका ने पाकिस्तान को एफ-16 विमानों की खेप देने से मना किया; 27. एडिनबर्ग में चोगम की बैठक का समापन। 1999 में इसकी अगली बैठक दक्षिण अफ्रीका में होगी। 29. वाशिंग्टन बीजिंग में हाट लाइन प्रारंभ।

नवंबर: 3. डेनमार्क ने ई.एम.यू. में शामिल होने से मना किया। 5. जी-15 बैठक का समापन। 13. यासर अराफात ने कहा कि वे 1999 में स्वतंत्र फिलीस्तीन राज्य की घोषणा कर देंगे, चाहे इसका वार्ता पर कैसा भी असर हो; इटली के पुरातत्वविदों ने ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के रोमन विला की खोज की घोषणा की। 16. चीन के जनतंत्र के कट्टर समर्थक वी जिंगपेंग जो 18 वर्षों से जेल में बंद थे को अमरीका में निर्वासित किया गया। 19. भारतीय मूल की कल्पना चावला 5 अन्य चालक दल के सदस्यों के साथ कोलंबिया यान द्वारा अंतरिक्ष में। 22. सोलर आब्जर्वेटरी जो कि रोबोट के हाथ से छूटकर यान से तीन दिन पहले अलग हो गयी थी को कल्पना चावला समेत अंतरिक्ष यात्रियों ने उसे वापस अंतरिक्ष से पकड़ कर यान में लाने में कामयाबी पाई। 26. रूस, पेरु और वियतनाम एपेक में शामिल।

दिसंबर: 2. पाकिस्तान के राष्ट्रपति फारूक लेघारी ने उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को हटाये जाने की सरकारी सलाह को मानने से इंकार करते हुए पद से त्यागपत्र दिया। 10. कजाख की राजधानी अकोला बनी। पहले यह अलमाटी में थी। 16. नेल्सन मंडेला ए.एन.सी. की अध्यक्षता से हटे। 17. दक्षिण अफ्रीका में तावुम्बेके ए.एन.सी. के नये अध्यक्ष बने। 25. जाम्बिया के पूर्व राष्ट्रपति कौंडा को हिरासत में लिया गया। 31. संगीतज्ञ एल्टन जान को नाइटहुड की उपाधि।

डेंगू का प्रतिरोधी टीका विकसित

1998: जनवरी 1. मुहम्मद रफीक तरार पाकिस्तान के नौवें राष्ट्रपति बने। 4 2 केन्या में अरप मोई राष्ट्रपति निर्वाचित। 12. कनाडा की सुश्री लुइस फ्रेचेट संयुक्त राष्ट्र की उप महासचिव पद पर नियुक्ति। 13. फीदल कास्त्रो क्यूबा के फिर राष्ट्रपति निर्वाचित. 19 युरोपीय देशों ने मानव क्लोनिंग पर प्रतिबंध लगाने की संधि पर हस्ताक्षर किया। 17. टर्की में इस्लामी पार्टी पर प्रतिबंध लगाया गया। 19. अमरीकी वैज्ञानिकों ने पाच प्रकार के मैमर्नो के क्लोन बनाये। 21. चेकोस्लाविया के राष्ट्रपति वाक्लेव हावेल फिर निर्वाचित। 22. पोप जान पाल क्यूबा आये और फादल कास्त्रो से यहां कैथोलिक स्कूलों की वापसी को कहा। 26. ग्रो हार्लेम ब्रन्डलैंड विश्व स्वास्थ्य संगठन की महानिदेशक बनीं। 27 अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने अपनी सहयोगी मोनिका लेविंस्की के साथ यौन संबंधो को अस्वीकार किया।

फरवरी 2. फ्रांस ने विश्व के सबसे बड़े फास्ट ब्रीडर न्यूक्लियर रिएक्टर 'सुपर फेनिक्स' को बंद करने का निर्णय लिया। 3. यासर अराफात ने महमूद अब्बास को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। 8. अफगानिस्तान में आये दुबारा भूकंप से 250 और मरे; श्रीलंका की सेना ने लिट्टे गुरिल्लों को मार करके महत्वपूर्ण क्षेत्र किलिनोटी के उत्तरी शहर पर कब्जा किया 9. साइप्रस के राष्ट्रपति चुनावों में कोई भी विजयी नहीं हुआ। 10. टाइटैनिक फिल्म ने 14 आस्कर नामांकन जीते। 11. इराक ने संयुक्त राष्ट्र इंस्पेक्टरों को राष्ट्रपति के महल के उन भागों जहां सामूहिक विनाश के आयुध हो सकते हैं का निरीक्षण करने की सहमति दी; नाइजीरिया की सेना और सियेरा लियोन की ट्राइबल सेनाओं के बीच युद्ध तेज 1400 लोग ने गिनी की राजधानी कोनाक्री में शरण ली। 15. आस्ट्रेलिया को ब्रिटिश राज्यशाही से अलग करने के लिये 1999 का घोषणापत्र तैयार। 19 कंबोडिया के प्रिंस रानारिद्ध ने सरकारी सेना के साथ चल रहे युद्ध को समाप्त किया। 23. संयुक्त राष्ट्र के महासचिव कोफी अन्नान ने इराक के उपप्रधानमंत्री से संयुक्त राष्ट्र के इंस्पेक्टरों के निरीक्षणों पर रोक को हटाने के लिये एक समझौते पर हस्ताक्षर किये। 24. अमरीका के वैज्ञानिकों ने बछड़े का क्लोन (जन्म - 16 फरवरी) बनाया। 27. थाईलैंड के वैज्ञानिको ने डेंगु बुखार के लिये प्रतिरोधी टीका विकसित किया। 28. साइप्रस के राष्ट्रपति जी. क्लेरिडस दूसरी बार निर्वाचित।

मार्च 3. अंतरिक्ष यान गैलीलियो द्वारा भेजे गये फोटो से स्पष्ट होता है कि बृहस्पति के चंद्रमा युरोप में बर्फ की तह के नीचे विशाल सागर है। 4. इसराइल के राष्ट्रपति एजर वीजमान को संसद ने दुबारा राष्ट्रपति चुना। 5. फ्रांस के वैज्ञानिको ने मांसपेशी की एक कोशिका से बछिया का क्लोन बनाया (जन्म - 20 फरवरी); क्रेमलिन ने परमाणु बटन को मास्को से हटाकर घर्नाय में स्थापित किया; अमरीकी अंतरिक्ष यान लुनार प्रास्पेक्टर ने चंद्रमा के उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवों पर बर्फ के रूप मे पानी की खोज की 6. चंद्रिकाकुमारतुंगे द्वारा उत्तर में लिट्टे को 10 वर्ष के लिये शासन सौंपने के प्रस्ताव पर श्रीलंका में विरोध। 10. पश्चिमी देशों ने युगोस्लाविया के राष्ट्रपति मिलोसेविक को सर्बियन क्षेत्र कोसोवा में अल्बानियन पर पुलिस बल का प्रयोग न करने की चेतावनी दी। 11. इंडोनेशिया में जनरल सुहार्तो लगातार सातवीं बार राष्ट्रपति निर्वाचित 12. सिनफेन ने आयरलैंड के दुबारा एकीकरण की मांग को छोड़ दिया। 16. जियांग जेमिन चीन

के राज्याध्यक्ष व सेंट्रल मिलट्री के चेयरमैन और अपदस्थ प्रधानमंत्री ली पेंग चीन की संसद के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 18. कम्बोडिया के अपदस्थ प्रधानमंत्री रानारिद्ध को सेना की अदालत ने सत्ता पलटने के आरोप में 30 वर्ष की कैद की सजा दी। 22. कम्बोडिया के राजा सिन्हानाउक ने रानारिद्ध पर मार्च में दी गयी दो सजाओं को माफ किया। 23. 11 युरोपीय देश एक जनवरी 1999 से एकल मुद्रा अपनायेंगें। 30. कम्बोडिया के प्रिंस रानारिद्ध 9 महीने के निर्वासन के बाद कम्बोडिया वापस आये।

अप्रैल 2. रोल्स रायस को वी.एम.डब्ल्यू. ने खरीदा। 3. लंदन में दूसरी एशिया युरोप बैठक शुरू; आस्कर एवार्ड अब लास एंजेल्स की जगह हालीवुड से दिये जायेंगें। 9. मक्का में शैतान को पत्थर मारने की धार्मिक प्रथा के दौरान भगदड़ में 118 हज तीर्थयात्री मरे। 12. जी.पी. कोयराला नेपाल के नये प्रधानमंत्री बने। 15. पोल पाट की मृत्यु; चेक सासंदों ने नाटो की सदस्यता स्वीकार करने पर सहमत। 20. मैक्सिको के नोवल पुरस्कार विजेता लोकप्रिय लेखक आक्टोवियो पाज का निधन। 22. दुनिया की पहली क्लोन भेड़ डाली मां बनीं। 26. अराफात ने कहा कि वे ओस्लो में निर्धारित टाइमटेबल के अनुसार 4 मई 1999 को स्वतंत्र फिलीस्तीन राष्ट्र की घोषणा कर देंगें। 30 ब्रिटेन के डेविड हेम्पलीमान आडम ने 56 दिनों की यात्रा कर दुर्गम उत्तरी ध्रुव पर पंहुच कर एडवेंचर्स ग्रैंड स्लैम बनाया।

मई 2. अंगोला में संयुक्त राष्ट्र पर्यवेक्षण के कार्यकाल को 2 वर्ष के लिये और बढ़ाया गया। 7. मर्सडीज बेंज कार के निर्माता डेमलर बेंज अमरीका की तीसरी सबसे बड़ी कार निर्माण कंपनी क्रिसलर कार्पोरेशन को 40.9 अरब डालर की संपत्ति व कर्जों समेत खरीद लिया। 11. भारत ने पोखरण में तीन परमाणु परीक्षण किये। 12. अमरीका की धावक मैरियन जोन्स चीन के चेंग्डू में एक दौड़ को 10.71 सेकेंड में पूरा करके विश्व की सबसे तेज धाविका होने का गौरव प्राप्त किया। 13. भारत ने पोखरण में दो और नामिकीय परीक्षण किये। 15. जी–8 समूह ने भारत को सी.टी.बी.टी. पर हस्ताक्षर करने को कहा लेकिन प्रतिबंधों पर सहमत न हो सके। 17. जी–8 सम्मेलन बर्मिंघम में समाप्त, रूस ने पहली बार 8वें सदस्य को तौर पर इस में भाग लिया। 18. विख्यात नीलामी घर क्रिस्टी इंटरनेशनल को एक फ्रांसीसी व्यवसाई फ्रैंसिस पिनाल्ट ने 1190 मिलयन डालर में खरीदा। 21. इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुहार्तो ने 32 वर्ष के अनवरत शासन के बाद त्यागपत्र दिया। 24. हांगकांग में पहली बार चीनी सत्ता के आधीन विधायको के लिये निर्वाचन सम्पन्न। 26. अमरीका के टाम व्हाइटेकरएवरेस्ट चोटी पर पंहुचने वाले प्रथम अपंग व्यक्ति बने; इथियोपिया व इरिट्रिया में सीमा पर युद्ध प्रारंभ। 27. टोक्यो में 1995 में गैस आक्रमणकारी इकुओ हयाशी को उम्र कैद की [illegible] 28. पाकिस्तान ने पांच परमाणु परीक्षण किया। 29. [illegible] एस्ट्राडा फिलीपींस के नये राष्ट्रपति बने। 30. पाकिस्तान ने एक और परमाणु परीक्षण किया।

जून 2. 46 निशस्त्रीकरण सम्मेलन में 46 देशों ने भारत व पाकिस्तान से परमाणु परीक्षणों पर रोक लगाने को कहा। 5. इथियोपिया ने इरिट्रिया के साथ युद्ध समाप्त करने के अमरीका व रुवांडा के शांति प्रस्ताव को स्वीकारा; वोक्सवैगान ने 8 महीने की वैधानिक लड़ाई के बाद रोल्स रायस पर नियंत्रण पाया। 8. स्विटजरलैंड के सेप ब्लाटर फीफा के अध्यक्ष बने; नाइजीरिया के राज्याध्यक्ष जनरल सानी अबाका का निधन। 9. जनरल अब्दुलसलाम अबुबेकर नाइजीरिया के नये राज्याध्यक्ष बन। 15. पूर्वी टिमोर के लोगों ने इंडोनेशिया से पृथक और स्वतंत्रता के लिये प्रदर्शन किया; इंडोनेशिया ने पूर्वी टिमोर के सबसे प्रतिष्ठित नेता जानाना गुसामो को जेल से रिहा करने पर विचार किया; इथियोपिया और इरिट्रिया एक दूसरे पर वायु आक्रमण रोकने पर सहमत। 16. तालीबान की धार्मिक सेना ने अफगानिस्तान में लड़कियों के स्कूल बंद करवा दिये। 19. साईप्रस और तुर्की के बीच में तनाव बढ़ा। 21. इजराइल ने जेरुसलेम शहर की सीमा विस्तार करने का निर्णय लिया फिलिस्तीनियों ने इस पर अपना विरोध प्रकट किया। 22. चरनोबिल परमाणु संयत्र में एक मात्र रियेक्टर को दुबारा चालू किया गया। 30. अमरीकी एफ 16 लड़ाकू जहाज ने इराक के सतह से सतह मिसाइल क्षेत्र पर मिसाइल द्वारा आक्रमण। जोसफ एस्ट्राडा फिलिपीन के 13वें राष्ट्रपति बने।

जुलाई 3. अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने अपनी नौ दिवसीय चीन यात्रा इस आशा के साथ पूरी की कि उनके जन्म काल मे ही चीन में लोकतंत्र की वापसी हो जायेगी। 4. यूरोप ने लडेड पेट्रोल पर प्रतिबंध लगाया। 5. कायरो में आयोजित एक छोटे सम्मेलन में जोर्डन और फिलिस्तीनी नेता यासर अरफात ने इजराइल से जेरुसलेम के विस्तार योजना को छोड ने के लिए कहा। 6. यूरोप की सबसे बड़ी कार बनाने वाली कंपनी वोक्स वागेन ने ब्रिटेन की रोल्स रायस मोटर कार लिमिटड को 800 मिलियन पौंड पर खरीदा। 11. रूस के एक अखबार के अनुसार विश्व में भारत अकेला देश है। जो नियत्रित क्षमता का हाइड्रोजन बम बना सकता है। 12 फ्रांस ने ब्राजील को हराकर विश्व कप फुटबाल जीता। 17 रूस के अंतिम जार निकोलस द्वितीय और उनके परिवार की अस्थियों को दफनाया गया। 18. 80 वर्षीय नेल्सन मडेला ने 52 वर्षीय ग्रेसा माइकिल से [illegible] किया। 19. कोफी अन्नान का कहना है कि [illegible] न्यायालय कि स्थापना न्याय के क्षेत्र में एक बड़ [illegible] 164 देशो के एंक्लिकन बिशपों की लांबेद [illegible] सप्ताह पारभ हो रहा है में प्रमुख में [illegible] देशो को वरीयता के अनुसार [illegible] 24 मंगोलिया की संसद ने प्रधानमंत्री [illegible] सरकार को भंग कर दिया; [illegible] प्रधानमंत्री बनेंगें। 26. [illegible] 27. उत्तरी कोरिया ने [illegible] 28 इंडोनेशिया ने [illegible] सैनिक टुकड़ियों [illegible] कम्बोडिया में [illegible] उहराव। 29. [illegible] 30. [illegible] तुर्की को 6 दिन [illegible]

लेविंसकी अन्वेषण मामले में बिल क्लिंटन स्वतंत्र वकील केनथ स्टार के सवालों का जवाब देने केलिए तैयार 31. ब्रुनाई के सुल्तान ने अपने भाई प्रिंस जाफरी को मुक्त किया।

अगस्त 2. इथियोपिया और इरिट्रिया के नेताओं ने वरकिना फासो में शांति वार्ता प्रारंभ की। 4. कोसोवा में 20000 से 30000 तक एक जाति के लोगों ने देश छोड़ा। 6. इंडोनेशिया और पुर्तगाल पूर्वी टिमोर को विशेष दर्जा देने के लिए बातचीत पर सहमत। 7. मोनिका लेविंसकी ने ग्रांड ज्यूरी के समक्ष माना उनके बिल क्लिंटन के बीच यौन संबंध थे ; नैरोबी (केनिया) और दार एस सालाम (तजांनिया) में अमरीका की एंबसियों में कुछ मिनट के अंतराल के बाद के बम विस्फोटों में 200 मरे और 4000 घायल हुए. आंद्रेस पास्त्राना कांबोडिया के नये राष्ट्रपति। 8. इरान मे पहला महिला समाचार पत्र शुरू। 10. ब्रुनाई के 24 वर्षीय प्रिंस अल मुहाता दी बिल्ला राज्य के नया उत्तराधिकारी हो गये। 14. पाकिस्तान की पूर्व प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो और उनके पति आसिफ जरदारी को एसिगोल्ड मामले में रावल पिंडी मे अदालत में पेश किया गया।। 7. कोसोवा लिबरेशन आर्मी की अंतिम प्रमुख क्षेत्र जुनिक पर सर्बो का कब्जा. कांगो के राष्ट्रपति अंगोला से अपनी सरकार से समर्थन यात्रा पूरी कर वापस लौटे। 18. अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने वाशिंगटन में ग्रैंड ज्यूरी के समक्ष स्वीकार किया की उनके और मोनिका लेविंसकी के बीच यौन संबंध थे नाईरोबी दारे एस सलाम में हुए विस्फोटों के जिम्मेदार 2 और अभियुक्त पकड़े गये। 19. अफगानिस्तान में तालीबान ने कहा की वो नैरोबी और दारे एस सलाम मे हुए विस्फोटों के मुख्य अभियुक्त वोसम बिन लादेन को नहीं सौपेगा 20 अमरीका ने अफगानिस्तान के उन स्थलों पर जहा उसे संदेह था कि वहां आतकवादियों के प्रशिक्षण केंद्र हैं और वहां साऊदी ओसामा बिन लाडेम को शरण दी जा सकती है व सुडान जहां रसायन आयुधों की फैक्ट्री हैं पर 75 क्रूज प्रक्षेपास्त्र दागे. सुडान का दावा था कि वह फैक्ट्री दवाओं की फैक्ट्री थी। 24. म्यानमार में सू की सैनिक प्रशासन के विरुद्ध अपना आंदोलन वापस लिया। उन्हे 13 दिनों से यगून से बाहर जाने पर रोक लगा दी गई थी। 28. पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने कुरान व सुन्नाह को देश का सर्वोच्च नियम अपनाने की अपनी इच्छा प्रकट की। 29. आई.ए.ए.एफ ने कहा कि भविष्य की विश्व कप एथलीट स्पर्धा को नेल्सन मंडेला ट्राफी का नाम दिया जायेगा।

सितंबर 1. 2. गुट निर्पेक्ष सम्मेलन की बैठक मे अध्यक्षीय भाषण मे नेल्सन मंडेला ने काश्मीर का जिक्र किया. बेलारूस इसका 114 वां सदस्य बना।5. अंगोला सरकार ने भविष्य में जोनास साविम्बी से बातचीत करने से मना कर दिया। 7 मलेशिया में प्रधानमंत्री महातिर मुहम्मद ने वित्त मंत्रालय संभाला; रूस की ड्यूमा ने दूसरी बार नामांकित प्रधानमंत्री चेर्नोमर्डिन को अस्वीकार कर दिया। 9. महाभियोग के चलाये जाने के वातावरण के बीच बिल क्लिंटन ने अपने यौन प्रकरण के लिये क्षमा मांगी । 11. बिल क्लिंटन ने मोनिका लेविंस्की से एक प्रार्थना सभा में माफ करने व भूल जाने को कहा; अमरीका के हाउस आफ रेप्रेंजेटेटिव ने केनेथ स्टार की रिपोर्ट को सार्वजनिक करने को कहा; ड्यूमा ने ई. प्रिमाकोव को नये प्रधानमंत्री के रूप में स्वीकृति दी। 12. बिल क्लिंटन-मोनिका लेविंस्की यौन प्रकरण पर केनेथ स्टार की रिपोर्ट सार्वजनिक रूप मे जारी की गई। 13. स्टॉकहोम में एक सम्मेलन में 57 देशों ने रसायनिक आयुधों के उत्पादन व प्रयोग को रोकने पर सहमति दी। 15. बंगलादेश की विवादित लेखिका तसलीमा नसरीन वापस ढाका आयीं। 17. 40 देशों के अनुमोदन के बाद बारूदी सुरंगो के इस्तेमाल को बंद करने की अंतर्राष्ट्रीय संधि अंतर्राष्ट्रीय कानून मे बदली; उत्तरी पश्चिमी स्पेन में पिछले 30 वर्षों से स्वतंत्र बास्क राज्य की मांग को लेकर युद्धरत बास्क अलगाववादी संगठन इटा ने युद्ध विराम की घोषणा की। 20. चेचन्या द्वारा बंधक बनाये गये दो ब्रिटेन के सहायता कार्यकर्ता कैमिला कार व जान जेम्स एक वर्ष के पश्चात छोड़े गये। 21 रूस जापान को कुरीले प्रायद्वीप देने को सहमत। 22. इजराइल ने यौन प्रताड़ना पर सख्त कानून बनाया; 23 दक्षिण अफ्रीका में विपक्षी दलों ने दक्षिण अफ्रीका के लेसोथो में हस्तक्षेप करने की निंदा की। 24. नेलसन मंडेला को कनाडा ने ओर्डर आफ कनाडा सम्मान दिया। 27. जर्मनी मे आम चुनाव। 28. अलबानिया के प्रधानमंत्री फाटोस नानो ने राजनीतिक हत्या के बाद दंगों के कारण त्याग पत्र दिया। 29 प्रभाकरण के नेतृत्व में लिट्टे ने उत्तरी श्रीलंका के क्षेत्र किलिनोची पर दुबारा कब्जा किया।

अक्टूबर 3. आस्ट्रेलिया में आम चुनाव में प्रधानमंत्री जान हावर्ड दूसरी बार में निर्वाचित; तुर्की और सीरिया के बीच संबंध खराब हुये। 4. हवाई सुरक्षा के लिए आईसीएओ ने निर्णय लिया की पूरे विश्व मे पाइलटों को सामान्य अंग्रेजी का ज्ञान होना आवश्यक। 5. ब्राजील के राष्ट्रपति एफ.एच. कारदोसो दुबारा निर्वाचित। 6. फिलीपींस की पूर्व प्रथम महिला इमेल्डा मार्कोस आरोपों से मुक्त। 7. पाकिस्तान के जनरल जहांगीर करामात ने त्यागपत्र दिया। 9. पाकिस्तान की नेशनल एसेंबली ने कुरान व सुन्नत को सर्वोच्चता देने का प्रस्ताव पारित किया। 1. जर्मनी में एक सड़क का नाम महात्मा गांधी मार्ग रखा गया; 14. भारतीय अर्थशास्त्री अमर्त्यसेन को अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार। 15. नाइजीरिया के नोबेल पुरस्कार विजेता वाल सोइंका जो चार वर्ष पहले देश छोडकर चले गये थे वापस लौटे। 17 चिली के पूर्व तानाशाह जनरल अगस्टो पिनोचेट को अपने शासनकाल (1973-90) में एक स्पेन के नागरिक को चिली मे मार देने के आरोप पर लंदन मे गिरफ्तार किया गया। 18 चिली ने ब्रिटेन मे पिनोचेट की गिरफ्तारी का विरोध किया 20 मालदीव के राष्ट्रपति गयूम पांचवे कार्यकाल के लिये निर्वाचित; माइक टायसन को दुबारा लड़ने का लाइसेंस मिला। 21. इटली में साम्यवादी नेता मास्सिमो डी आलेमा के नेतृत्व में केन्द्र व साम्यवादियों की मिली-जुली सरकार बनी। 22. गिनी बसाऊ में गृहयुद्ध, विद्रोहियों ने बाफटा पर कब्जा किया; चिली ने लंदन में पिनोचेट की गिरफ्तारी के विरुद्ध प्रदर्शन पर प्रतिबंध लगाया। 23. युरोपियन संसद में एकल मुद्रा पर पहला युरोपीय संघ का बजट बनाया। इजराइल व फिलीस्तीन के बीच अंतरिम

शांति समझौता। 24. वाशिंग्टन में यासर अराफात व नेतानयाहु ने पश्चिमी एशिया शांति संधि पर हस्ताक्षर किये। 26. पेरु और इक्वेडोर में शांति समझौते पर हस्ताक्षर। 27. जनरल पिनोचेट को रिहा कराने के लिये अदालत में वैधानिक कार्रवाई प्रारंभ; अंतरिक्ष यात्री जान ग्लेन अंतरिक्ष यान डिस्कवरी से एक वार फिर अंतरिक्ष यात्रा पर, अंतरिक्ष में जाने वाले वे सर्वाधिक आयु के अंतरिक्ष यात्री हैं।

नवंवर 2. वैज्ञानिकों ने विश्व में पहली वार अंगूठे का विकास कर इसे एक व्यक्ति पर लगाया। 3. अमरीका में 34 सीनेटरों, 36 गवर्नरों, और राज्य प्रतिनिधियों के लिये चुनाव; संयुक्त राष्ट्र महासभा ने इराक से आई.ए.ई.ए. को सहयोग करने की अपील की। 5. जर्मन की नयी सरकार ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की सदस्यता की मांग छोड़ी 7. न्यूट गिंगरिच ने यू.एस. हाउस आफ रेप्रेजेंटेटिव ने स्पीकर पद से त्यागपत्र दिया; जान ग्लेन व अन्य अंतरिक्ष यात्री पृथ्वी पर वापस आये; अमरीका ने भारत व पाकिस्तान पर आंशिक प्रतिवंध हटाये। 8. वंगला देश में मुजिवुर रहमान हत्याकांड में 15 लोगों को मृत्युदंड 9. इथियोपिया ने ओ.ए.यू. द्वारा तैयार की शांति योजना को स्वीकार कर सीमा पर इरिट्रिया के साथ युद्ध वंद किया। 10. जर्मनी ने अप्रैल 99 तक नाटो में पोलैंड, हंगरी, और चेकोस्लोवाकिया को नये सदस्य के रूप में शामिल करने की मांग की; वरमूडा में लेवर पार्टी चुनावों में विजयी। 13. एपेके. में रूस, पेरू और वियतनाम नये सदस्य के रूप में शामिल। 14. इराक द्वारा संयुक्त राष्ट्र के अस्त्र निरीक्षकों को वापस वुलाने के लिये सहमत हो जाने से अमरीकी हमले का खतरा टला; कंवोडिया में हंडेन नये प्रधानमंत्री वने; क्लिंटन ने यौन शोषण के मामले में अदालत के वाहर समझौता करने के लिये पाउला जोंस को 8.5 लाख डालर दिये। 17. पृथ्वी धूमकेतु के करीव, पिछले 33 वर्षो के वाद जो उल्कापात की उम्मीद थी उससे वहुत कम हुई; विश्व व्यापार व आर्थिक स्थिति की समीक्षा करने के लिये कुआलालम्पुर में दो दिवसीय एपेक सम्मेलन प्रारंभ। 18. संयुक्त राष्ट्र अस्त्र निरीक्षकों ने इराक में कार्य प्रारंभ किया 20. फिलीस्तीनी अधिकारियों ने इजराइल सैनिकों द्वारा वेस्ट वैंक क्षेत्र को खाली कर देने के वाद अपना नियंत्रण किया; ड्यूमा की स्थाई सदस्य सुश्री गालियार स्टारवोयोटोवा की गोली मार कर हत्या कर दी गई। 23. आई.ए.ए. एफ. ने मैरियो जोन्स और हैले गेवेसे लीजी को वर्ष का एथलीट घोषित किया। 25. जियांग जेमिन टोक्यो में, किसी चीनी राज्याध्यक्ष की यह पहली जापान यात्रा है;

दिसंवर 2. क्यूवा में क्रिसमस की वापसी। 3. इंडोनेशिया में पहली वार लोकतांत्रिक तरीके से चुनाव 7 जून को होंगे। 7. एंडवर्स अंतरिक्ष यात्रियों ने अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के पहले दो विल्डिंग व्लाक को जोड़ा। 11. चिली के पूर्व तानाशाह पिनोचेट लंदन की अदालत में पेश किये गये। 12. ए. सोलेनिस्टिन ने रूस का सवसे वड़ा सम्मान आर्डर आफ एंड्रूज को स्वीकार करने से इंकार कर दिया। 15. कम्वोडिया एशियान का दसवां सदस्य वना। 17. अमरीका व व्रिटेन द्वारा इराक पर मिसाइल हमला। 18. अमरीका व व्रिटेन ने इराक पर और मिसाइलें दागी। 19. भारत ने एशियाई खेलों में 32 वर्ष वाद हाकी का स्वर्ण पदक जीता; विल क्लिंटन पर महाभियोग की कार्रवाई प्रारंभ। 20. अमरीका ने इराक पर हमले को रोका। 25. रूस और वेलारूस ने 1999 में एकीकरण का फैसला किया; कोसोवा विद्रोहियों ने 9 अक्टूवर के युद्ध विराम को तोड़ा। 28. इराक पर पश्चिमी देशों द्वारा दुवारा हमला; अरव देशों के सांसदों ने इराक के प्रति एकजुटता दिखाई। 29. इराक ने अमरीकी जेट लड़ाकू विमान को मार गिराने का दावा किया।

कृत्रिम मानव भ्रूण का विकास

1999: जनवरी 1. युरोप की एकल मुद्रा यूरा 11 देशों में मान्य। 3. पाकिस्तान क्रिकेट टीम की कप्तानी वासिम अकरम को दी गई; मुद्रा विनिमय 5 दर में एक यूरो 1.740 अमरीकी डालर व 49.68/73 रुपये के वरावर रखी गई। 5. अमरीका के लड़ाकू विमानों ने इराक के उड़ान वर्जित क्षेत्र में उड़ रहे इराकी विमानों पर मिसाइलें दागीं। 6. सियेरा लियोन में विद्रोहियों का कव्जा। 7. क्लिंटन पर महाभियोग की कार्रवाई प्रारंभ। 8. मलेशिया में अव्दुल्ला अहमद वादावी नये उप प्रधानमंत्री वने। 9 सियेरा लियोन सरकार विद्रोही नेता फोडे संकोह से वातचीत करने को राजी। 10. डयाना की कार दुर्घटना में मृत्यु पर जांच कर रही आधिकारिक जांच दल की रिपोर्ट के अनुसार कोई भी जीवित व्यक्ति का इस हादसे में हाथ नहीं है। 12. नूरसुल्तान नजरववाये कजाखस्तान के दूसरी वार 7 वर्ष के कार्यकाल के लिये राष्ट्रपति निवार्चित। 13. इराक द्वारा वातचीत की पेशकश के वावजूद अमरीका ने फिर मिसाइलों से हमला किया। 14. अमरीका की सीनेट में राष्ट्रपति क्लिंटन पर महाभियोग की कार्रवाई प्रारंभ; केन्या, तंजानिया और युगांडा ने पूर्वी अफ्रीका में आने जाने को सुगम वनाने के लिये आम पासपोर्ट रखने का फैसला लिया। 16. पाकिस्तान सरकार ने क्रिकेट टीम के भारत दौरे की अनुमति दी। 18. जिम्वावंवे के पूर्व राष्ट्रपति कनान वनाना को यौन प्रकरण में दोषी पाये जाने पर सश्रम कारावास की सजा हुई। 19. अमरीका ने युगोस्लाविया को चेतावनी दी कि अगर उसने संयुक्त राष्ट्र शांति सेना और युद्धकाल ट्रिब्यूनल के प्रतिनिधियों को कोसोवा में प्रवेश करने और 45 अल्वानियों की हत्या की जांच की अनुमति नहीं दी तो वो उस पर हमला कर देगा। 20. व्रिटेन के वैज्ञानिक जान विलमुट का कहना है कि वह कृत्रिम मानव भ्रूण का विकास करेंगे [illegible] जीमर व पार्किन्सन विमारियों को दूर करने [illegible] सेंगे।

22 नाटो के दुबारा हवाई हमले के डर से युगोस्लाविया ने युद्ध विराम निगरानी आयोग के अध्यक्ष विलियम वाकर के निष्कासन के फैसले को वापस लिया; कोफी अन्नान के अंगोला में शांति योजना को बंद करने के सुझाव के बावजूद सुरक्षा परिषद ने वहां पर संयुक्त राष्ट्र शांति सेना के बने रहने को कहा। 25. किंग हुसैन ने अपने 37 वर्षीय बड़े बेटे प्रिंस अब्दुल्ला को उत्तराधिकारी बनाने का निर्णय लिया। 26. एवरेस्ट पर सबसे पहले चढ़ने वाले एडमंड हिलैरी के बेटे पीटर हिलैरी दक्षिणी ध्रुव पर पंहुचे। 27. इंडोनेशिया ने कहा कि वह पूर्वी तिमोर को स्वतंत्रता देने पर राजी है। 30 अमरीकी वैज्ञानिकों को बंदर का क्लोन बनाने में असफलता मिली।

फरवरी 1: सुरक्षा परिषद ने पश्चिमी सहारा में शांति सेना को 11 फरवरी तक रहने को कहा; समुद्र में आपातकाल में जलयानों द्वारा सहायता मांगने को मोर्स कोड की आधिकारिक तौर पर विदाई। 3. कोसोवा के विद्रोही 11 महीने तक युद्धरत रहने के बाद बात-चीत करने पर सहमत। 4. संयुक्त राष्ट्र ने सन 2000 को शांति के लिये संस्कृत के रूप में मनाने का निर्णय लिया। 6. इथियोपिया व एरिट्रिया में फिर से युद्ध भड़का। 7. जार्डन के किंग हुसैन की मृत्यु, उनके पुत्र अब्दुल्ला नये किंग बने। 8 किंग हुसैन के अंतिम संस्कार में विश्व के नेताओं ने श्रद्धांजलि दी। 13 मोनिका लेविंस्की के मामले में हाउस आफ रेप्रेजेंटेटिव के दोनों तर्कों को सीनेट ने नामंजूर करते हुए राष्ट्रपति क्लिंटन को बरी किया; सीरिया में हफीज अल असद पाचवी बार राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। 15 नेल्सन मंडेला संसद को अंतिम बार संबोधित कर मई में चुनाव कराने को कहा। 16. कुर्दिश वर्कर्स पार्टी के नेता अब्दुल्ला ओकालान को केन्या मे गिरफ्तार कर तुर्की लाया गया। 17. रूस में मृत्युदंड को समाप्त किया गया, हिलैरी क्लिंटन अमरीकी सीनेट का चुनाव लड़ेंगी। 19 वेनेजुएला की सीमा पर वामपंथी गुरिल्लाओं और कोलंबिया के सैनिकों के संघर्ष में 42 मरे। 20. मिर स्टेशन के लिये अंतिम चालक दल 6 महीने की परियोजना को पूरी करने के लिये अंतरिक्ष गये; ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने पलों लेजर लाइट के पल्स की रफ्तार 186,000 मील प्रति सेकेंड से कम करके 0.01 मील प्रति सेकेंड करने में सफलता पाई। 21. कांगो के राष्ट्रपति लारेंट कबीला ने सरकार को भंग किया। 26. अमरीका ने युनेस्को में यह कह कर शामिल होने से मना कर दिया कि उसके पास 60 मिलयन डालर की अदायगी के लिये कोष नहीं है। 28. एरिट्रिया ने इथियोपिया के साथ युद्ध पर ओ.ए.यू. का शांति प्रस्ताव मंजूर किया।

मार्च 3: युगोस्लाविया ने दुहराया कि वह कोसोवा को अधिक स्वायत्ता तो दे सकता है आजादी नहीं दे सकता। 4. नासा द्वारा जुलाई में अंतरिक्ष में भेजी जाने वाली सबसे बड़ी दूरबीन का नाम भारतीय मूल के वैज्ञानिक सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर के नाम पर चंद्रा रखा गया। 6. बहरीन के अमीर इसायिन सलमान अल खलीफा का निधन। 7. इंटरनेशनल रेलवे यूनियन ने भारत को रेलवे द्वारा पाकिस्तान और इरान के रास्ते सेंट्रल एशिया से जोड़ने के लिये टास्क फोर्स का गठन किया। 10. सुश्री राना रसलाम मिस इस्राइल बनने वाली प्रथम अरब महिला। 11. पूर्वी तिमोर में लड़ रहे दो घटकों के प्रमुख एक्सानाना गुसामो और जाग्गा टैवर्स युद्धविराम को राजी। 12. पोलैंड, हंगरी और चेक गणराज्य नाटो में शामिल। 14. तालिबान और उत्तरीय शक्तियां संयुक्त रूप से अफगानिस्तान की सत्ता लेने को सहमत; पाकिस्तान के वासिम अकरम श्रीलंका के विरुद्ध लगातार तीन टेस्टों में तिकड़ी लेने वाले पहले गेंदबाज बने। 15. उत्तरी आयरलैंड में मानव अधिकार अधिवक्ता सुश्री रोजमैरी नेल्सन की कार बम द्वारा हत्या से शांति प्रक्रिया को धक्का लगा। 16. स्वतंत्र विशेषज्ञों की समिति की उच्चतम स्तर प्रशासन की आलोचना के बाद युरोपियन आयोग के राष्ट्रपति और 20 आयुक्तों का सामूहिक त्यागपत्र। 18. म्यानमार की लोकतंत्र समर्थक नेता आंग सान सू की के पति माइकल अरिस प्रोस्टेट ग्लैंड के कैंसर से बीमार, पत्नी से मिलने के लिये वीसा मांगा। 24. नाटो के सर्बिया में हवाई हमले शुरु, युगोस्लाविया में आपात काल की घोषणा; इटली के रोमानो प्रोडी युरोपियन संघ के राष्ट्रपति। 26. नाटो आक्रमण जारी; रूस की मांग कि बमबारी रोकी जाये को वीटो। 27. सु की के पति माइकल अरिस की ब्रिटेन में मृत्यु। 28. सर्बों के जातीय कहर से कोसोवा के लोगों ने पड़ोसी देशों में शरण लेना प्रारंभ किया। 31. नाटो ने युगोस्लाविया के शांति प्रस्ताव को अस्वीकार किया।

अप्रैल 1: युगोस्लाविया सैनिकों द्वारा तीन अमरीकी सैनिकों को बंदी बना कर टी.वी. पर उनकी परेड से नाटो में दहशत; केन्या ने हिंदमहासागर संघ बनाने की मांग करते हुए भारत व दक्षिण अफ्रीका से पहल करने का अनुरोध किया। 4. मलेशिया के पूर्व उप प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम की पत्नी ने नयी दल नेशनल जस्टिस पार्टी का गठन किया। 6. युगोस्लाविया ने एक तरफा युद्धविराम की घोषणा की लेकिन अमरीका के अस्वीकार करने पर नाटो ने बमबारी जारी रखी। 7. भारत ने रूस की मांग कि संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय को अमरीका से बाहर ले जाया जाये को समर्थन दिया। 9. नाइजर के राष्ट्रपति इब्राहिम देरे मैइनास्सारे की सैनिक विद्रोह में हत्या। 12. नाटो ने सर्ब ठिकानों पर बमबारी तेज की; इंडियन ओशन रिम ग्रुप में ओमान, यू.ए.ई., सीशेल्स, थाइलैंड और बंगलादेश शामिल। 14. चीन ने कहा कि वह केंद्र नियंत्रिक उद्योगों से 90 लाख श्रमिकों को 99 के अंत तक काम से हटा देगा; मलेशिया के अनवर इब्राहिम को भ्रष्टाचार के आरोप में 6 वर्ष की कैद। 15. पाकिस्तान की अदालत ने पूर्व प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो और उनके पति आसिफ जरदारी को भ्रष्टाचार का दोषी मानते हुए पांच वर्ष की कैद की सजा दी। 16. युगोस्लाविया ने जर्मनी के शांति प्रस्ताव को स्वीकार किया; 20. पूर्व जर्मन चांसलर हेलमुट कोल को अमरीका का सबसे बड़ा सम्मान प्रेसीडेंशियल मेडल आफ फ्रीडम दिया गया। 21 पूर्वी तिमोर में अलगाववादी विद्रोहियों और अखंडता के समर्थकों ने शांति समझौते पर हस्ताक्षर किये। 23 नाटो ने रूस के कोसोवा शांति प्रस्ताव को नामंजूर किया। 25. पूर्वी तिमोर पर 800,000 लोगों को मतदान द्वारा भविष्य का रास्ता तय करने के संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव पर इंडोनेशिया और पुर्तगाल सहमत। 28. रूस

और चीन सीमा निर्धारण के मानचित्र पर बातचीत से सहमत। 30. कंबोडिया के शामिल होने से एशियान की सदस्य संख्या 10 हुई; कोमोरोस में सेना ने ताजविडनि विन की सरकार का तख्ता पलटा।

मई 1: विदाई लेते हुए नेल्सन मंडेला ने रंगभेद नीति के विरुद्ध संघर्ष में मास्को की भूमिका की सराहना की। 2. सर्विया ने बंदी बनाये तीन अमरीकी सैनिकों को रिहा किया; खोजकर्ताओं ने माउंट एवरेस्ट के निकट 75 वर्ष पहले मरे ब्रिटेन के पर्वतारोही जार्ज मेलोरी का शीतित शव खोजा। 3. पनामा में पहली बार महिला राष्ट्रपति मर्वे कवाकाई बनीं। 5. विल क्लिंटन नाटो एकता को बढ़ावा देने के लिये युरोप गये; पूर्वी तिमोर के भविष्य के लिये इंडोनेशिया और पुर्तगाल के बीच न्यूयार्क मे ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर। 7. चुनावों में श्रमिक दल को बहुमत के साथ 300 वर्षों में पहली बार स्काटलैंड संसद मिली; 8. नाटो की मिसाइल ने बेलग्रेड के चीनी दूतावास से टकराई, चार मरे। 9. क्लिंटन ने बेलग्रेड में चीनी दूतावास पर मिजाइल हमले को तकनीकी गलती माना। 12. येल्तसिन ने प्रधानमंत्री येवगेनी प्रिमाकोव को हटाया उनके स्थान पर सर्गीस्टेफासिन नये प्रधानमंत्री बनाये गये। 13. रूस की संसद में येल्तिसिन पर महाभियोग की कार्रवाई प्रारंभ। 14. सहस्राब्दि का अंतिम विश्व क्रिकेट कप इंग्लैंड के लार्ड मैदान में प्रारंभ 15. येल्तसिन 17 वोटों से महाभियोग से बचे। 16. कुवैत में महिलाओं को मतदान का अधिकार मिला। 17. डोनाल्ड डेवर स्काटलैंड में प्रथम संसद के नेता बने। 18. इजराइल के चुनावों में इहुद बारक के नेतृत्व में लेबर पार्टी सत्ता में। 21 मलेशिया के बंदरगाह के निकट जल कर डूब जाने वाले जलयान से 1000 से अधिक लोगों को बचाया गया; नेपाल में नेपाली कांग्रेस पार्टी को चुनावों में बहुमत मिला; फिजी में भारतीय मूल के महेंद्र प्रसाद चौधरी को बहुमत मिला। 22. सुडान के पूर्व राष्ट्रपति गाफर अल निमेरी कायरो में 44 वर्ष के निर्वासन के बाद स्वदेश लौटे। 23. जोहांस रैन जर्मनी के नये राष्ट्रपति बने। 26. निकिता खुश्चेव के बेटे सर्गी अमरीका के नागरिक बने। 28. युगोस्लाविया के राष्ट्रपति स्लोबोडान मिलोसेविक को हेग की वार क्राइम ट्रिब्यूनल ने युद्ध अपराधी ठहराया। 29. नाइजीरिया में 15 वर्षीय सैनिक शासन की समाप्ति।

जून 1: पाकिस्तान में हिरासत में लिये गये पत्रकार नदीम सेठी को रिहा किया गया। 2. दक्षिण अफ्रीका में चुनाव; भूटान का अपना टी.वी. स्टेशन बना, भूटान प्रसारण सेवा महाराजा की रजत जयंती पर प्रारंभ। 3. भारतीय फ्लाइंग ले. नचिकेता को पाकिस्तान ने 8 दिनों की हिरासत के बाद रिहा कर भारत को सौंपा; मिस्र के राष्ट्रपति होस्नी मुबारक चार वर्ष के लिये पुनः नियुक्त किये गये; सर्बियन संसद ने कोसोवा के लिया जी–8 देशों के शांति योजना को मंजूरी दी; संयुक्त राष्ट्र ने पूर्वी तिमोर पर अपना ध्वज फहराया। 8. अमरीका की एफ.बी.आई. ने सउदी के ओसामा बिन लादेन को सर्वाधिक वांछित की सूची में रखा। 9. किंग अब्दुल्ला जार्डन के नये राज्याध्यक्ष बने। 11. सर्ब सैनिकों की वापसी के साथ कोसोवा में 79 दिनों तक चला युद्ध समाप्त; दक्षिण अफ्रीका में भारतीय मूल के जय नायडू बेकी सरकार में दुबारा मंत्री बने। 14. तावो बेकी दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति निर्वाचित 16. तावो बेकी ने राष्ट्रपति पद की शपथ ली। 18. पूर्वी तिमोर में विरोधी गुटों ने समझौते पर हस्ताक्षर किये, सुश्री वैइरा विके लैटविया की पहली महिला राष्ट्रपति बनीं। 19. कोलोगन सम्मेलन में जी–8 नेताओं ने जम्मू काश्मीर में नियंत्रण रेखा के उल्लंघन की भर्त्सना करते हुए क्षेत्र में युद्ध रोकने को कहा; आस्ट्रेलिया ने फाइनल में पाकिस्तान को हराकर क्रिकेट विश्व कप जीत कर दो बार विश्व विजेता होने का गौरव हासिल किया। 25. सर्वो व जातीय अल्बीनियन के बीच कोसोवा में गोलीबारी। 27. उत्तरी आयरलैंड के प्रथम प्रधानमंत्री डेविडट्रिम्वले पी.आर.ए. से मई 2000 तक हथियार डालने को कहा। 29. विद्रोही कुर्दिश नेता अब्दुल्ला ओकालान को अंकारा में देश द्रोह के आरोप में मृत्युदंड।

जुलाई 3: कोरिया में शांति वार्ता विफल। 4. डेविड लेवी इजराइल के तीसरी बार विदेश मंत्री बनें। 7. सियेरा लियोन में विरोधी गुटों में समझौता होने से आठ वर्ष से चल रहा गृह युद्ध समाप्त। 8. यू.के. ने लीबिया के साथ राजनयिक संबध शुरू किये। 9. बेल्जियम में 6 दलों की सहयोगी सरकार बनीं; इजराइल के प्रधानमंत्री इहुद बाराक पश्चिमी एशिया में शांति प्रक्रिया को शुरु करने के लिये राष्ट्रपति होस्नी मुबारक से मिलने मिस्र गये। 10. कांगो में युद्धरत 6 देशों ने लुसाका में शांति समझौते पर हस्ताक्षर किये। 11. इजराइल के प्रधानमंत्री बाराक व अराफात के बीच पहली बैठक। 15. दक्षिण अफ्रीका के पी.एम. बोथा को 1985 में रंगभेद आंदलोन के आठ कार्यकर्ताओं की हत्या का आरोपी माना गया। 16. इंडोनेशिया की सत्ताधारी पार्टी को जून में हुए चुनावों में पराजय मिली, मेघावती की पी.डी.आई. को भी बहुमत नहीं मिला। 17. मसाशुसेट्स में एक छोटा यान जिसमें जान कैनेडी जूनियर, उनकी पत्नी व साली थे लापता। 18. मिलोसेविक के विरोधी वुक ड्रासकोविक ने सर्व गृहयुद्ध की धमकी दी। 21. मैसाशुसेट्स के मार्था विनयार्ड के तट पर जान एफ केनेडी जूनियर का शव और वायुयान के ध्वस्त हिस्से मिले। 23. सिंगापुर में एशियान बैठक प्रारंभ। 24. पहली बार किसी महिला चालक सुश्री इलीन कोलिन्स के नेतृत्व में केप केनावेरेल से चंद्रा दूरबीन को लेकर अंतरिक्ष यान कोलंबिया का प्रक्षेपण। 28. इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका ने सी.डी.–रोम के कारण किताब की छपाई बंद की; बाराक और अराफात वी नदी के तटीय क्षेत्र पर सुरक्षा समझौते पर परिवर्तन लाने पर सहमत; टोंगा संयुक्त राष्ट्र का 188वां सदस्य। 29. ब्रिटेन में पहली बार सिक्ख तरसेम किंग को लार्ड बनाया गया। 30. सरजीवो में विश्व के देशों की बालकान बैठक में युगोस्लाविया को लोकतंत्र अपनाने को कहा। 31. अमरीकी सेना पनामा से सदी के बाद हटी

अगस्त 1: बिल गेट्स अपनी अधिकांश संपत्ति एच. गेट्स फाउंडेशन को देंगें जो कि विश्व का सबसे बड़ा निजी फाउंडेशन हो जायेगा। 4. ब्रिटेन के रक्षा सचिव जार्ज रावर्टसन नाटो के नये प्रमुख बने। 5. क्यूबा के ऊंची कूद में कीर्तिमान बनाने वाले जेवियर सोटोमेयर ड्रग टेस्ट में पकड़े गये और पैन अमरीकन खेलों में उनका स्वर्ण पदक छीना गया। 9. गुयाना की राष्ट्रपति सुश्री जैनेट जागन ने त्यागपत्र

किया, रूस में 18 महीनों में पांचवे प्रधानमंत्री व्लादिमिर पुटिन बने। 10. बंगला देश की कैबिनेट ने बलात्कार पर मृत्युदंड को मंजूरी दी। 11. शताब्दि का अंतिम सूर्य ग्रहण। 13. जर्मनी की टेनिस की महान खिलाड़ी स्टेफी ग्राफ ने टेनिस से विदाई ली। 26. बोस्नियन सर्ब जनरल मोमिर तालिक को वियना में युद्ध अपराधी के रूप में हिरासत में लिया गया। 30. इजराइल व फिलीस्तीन का वी समझौता असफल।

सितंबर 1: चीन ने ताइवान को धमकी दी कि अगर राष्ट्रपति ली टेंग हुई की राष्ट्र की मांग पूरी की गई तो वह उस पर आक्रमण कर देगा; माइक मूरे डब्ल्यू.टी.ओ. के प्रमुख बने; लुसाका में कांगो के विद्रोही नेताओं ने शांति समझौते पर हस्ताक्षर किये। 2. पीपुल्स लिबरेशन आर्गेनाइजेशन आफ तमिल ईलम के नेता एन. मनिवन्नासन की बम विस्फोट द्वारा हत्या; पनामा की पहली महिला राष्ट्रपति सुश्री मिरेया मोसकोसो ने शपथ ग्रहण की; पश्चिमी एशिया में शांतिवार्ता फिलीस्तीन द्वारा इजराइल पर पीछे हटने के आरोप के लगाये जाने के साथ बंद। 3 पूर्वी तिमोर के लोगों ने इंडोनेशिया से अलग होकर स्वतंत्र देश के पक्ष में मत दिया; इजराइल व फिलीस्तीन ने वी प्लान पर नये समझौते पर हस्ताक्षर। 7. पूर्वी तिमोर के स्वतंत्रता आंदोलन के नेता एक्सानाना गुसामो को इंडोनेशिया सरकार ने रिहा किया। 12. इंडोनेशिया के राष्ट्रपति हबीबे ने संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षकों को पूर्वी तिमोर जाने की मंजूरी दी। 13. मास्को में में आठ मंजिली भवन में शक्तिशाली बम विस्फोट से सौ मरे। 14. किरिबती, नौरू और टोंगा संयुक्त राष्ट्र के नये सदस्य। 16 अमरीका ने कहा कि वह ताइवान को संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बनाये जाने के विरुद्ध है। 20. कोलंबिया के शहर के मेयर की हत्या। 21. ताइवान में भयंकर भूकंप से 1700 लोग मरे, 4000 घायल; जापान के प्रधानमंत्री ओबुची सत्ता दल के मुखिया बने। 23. जकार्ता समर्थित आतंकवादियों ने पूर्वी तिमोर के लोगों पर आक्रमण किया। 25 सर्बिया में राष्ट्रपति मिलोसेविक के विरुद्ध प्रदर्शन। 26. यमन में पहली बार प्रत्यक्ष राष्ट्रपति पद के चुनावों में अली अब्दुल्ला साहेब दुबारा राष्ट्रपति निर्वाचित। 30. अमरीका ने 40 निर्धन देशों के ऋणों को माफ किया।

अक्टूबर 2: संयुक्त राष्ट्र मानव अधिकार आयोग की मैरी रॉबिंसन पूर्वी तिमोर में हुए अत्याचार की जांच करेंगी। 3. म्यानमार के मंत्री ने कहा कि यहां लोकतंत्र की वापसी होगी। 6. पूर्वी तिमोर में केनमरा के नेतृत्व में संयुक्त राष्ट्र 9000 सैनिक टुकड़िया और 1500 नागरिक पुलिस अधिकारियों की नियुक्ति करेगा; इंडोनेशिया में गोलकर पार्टी ने स्वीकार पद लिया। 8. ब्रिटेन की एक अदालत ने चिली के पिनोचेट की स्पेन में मानव अधिकारों के हनन के आरोप पर प्रत्यार्पण करने पर रोक। 10. राष्ट्रपति क्लिंटन ने कहा कि अगर सीनेट सी.टी.बी.टी पर सहमत नहीं होती है तो अमरीका निशस्त्रीकरण आंदोलन का नेतृत्व नहीं कर पायेगा। 12. पाकिस्तान में प्रधानमंत्री नवाज शरीफ द्वारा सेना प्रमुख परवेज मुशर्रफ को सेवामुक्त किये जाने के दो घंटे के अंदर ही सेना ने सत्ता पर कब्जा किया। 13. पाकिस्तान सेना प्रमुख मुशर्रफ ने कहा कि सेना को मजबूरी में देश को बचाने के लिये आगे आना पड़ा। 14 जूलियस न्येरेरे का निधन; पाकिस्तान में सेना ने नेशनल एसेंबली पर नियंत्रण किया, संविधान को स्थगित कर दिया गया और आपातकाल लगाया गया। 16. पाकिस्तान की सेना का देश पर पूरी तरह से कब्जा सेना प्रमुख परवेज मुशर्रफ ने स्वयं को चीफ एक्जीक्यूटिव घोषित किया। 18. कामनवेल्थ ने पाकिस्तान में सेना द्वारा 12 अक्टूबर को सत्ता हथियाने के कारण सदस्यता से वंचित कर दिया। 19. चीन के राष्ट्रपति जियांग जेमिन ब्रिटेन की चार दिवसीय यात्रा पर; चेचन्या मसले पर रूस ने जी-8 का समर्थन मांगा। 20. अब्दुर रहमान वाहिद इंडोनेशिया के नये राष्ट्रपति बने; मेघावती सुकर्णोपुत्री हारी; नवाज शरीफ सरकार द्वारा हिरासत में लिये गये 100 कट्टर आतंकवादियों को जनरल मुशर्रफ ने रिहा किया, इंडोनेशिया के प्रांत इरियान जया के निकट समुद्र में यात्री जलयान के डूब जाने से 200 यात्रियों के मरने की आशंका। 21 अमरीका पाकिस्तान को सैन्य सहायता दुबारा प्रारंभ नहीं करेगा; मेघावती सुकर्णोपुत्री इंडोनेशिया की उपराष्ट्रपति। 24. ब्रिटेन की चीन से दलाईलामा से बातचीत शुरू करने की अपील की। 25. अर्जेन्टाइना में राष्ट्रपति के चुनाव में विपक्ष भारी पड़ा। 26. रूस ने चेचन विद्रोही शामिल बासायव के सर पर 1 मिलियन डालर का पुरस्कार रखा। 27 अल्बानिया के प्रधानमंत्री पंडेली माजको ने त्यागपत्र दिया। 28 आर्मीनिया के प्रधानमंत्री की हत्या व संसद में गोली चलाने वाले का समर्पण।

नवंबर 1: रूस द्वारा चेचन्या के दूसरे शहर गुडरमस को घेरने और 100 अलगाववादियों को मार गिराने के साथ शरणार्थियों का जमावड़ा। 3 बंगला देश के पूर्व प्रधानमंत्री काजी जाफर अहमद को कैंसर अस्पताल के नाम पर सरकारी कोष से 10 लाख टका के गबन के आरोप पर 15 वर्ष का सश्रम कारावास। 6 आस्ट्रेलिया इंग्लैंड की महारानी को अपना राज्याध्यक्ष बनाये रखने पर सहमत। 9. श्री लंका ने ओट्टुसुद्दान, नेडुनकेनि, मंकुलम और कनागारायनकुलम पर लिट्टे का कब्जा माना। 10. मलेशिया के प्रधानमंत्री महातिर ने अचानक चुनावों की घोषणा की। 11. पाकिस्तान के सत्ताच्युत प्रधानमंत्री नवाज शरीफ पर देशद्रोह व अपहरण का आरोप लगाया गया। 12 पाकिस्तान में अमरीकी संस्थानों पर राकेट से हमला। 14. ब्रिटेन के मुक्केबाज लेन्नोक्स लुइस अमरीका के इवांडर होलीफील्ड को हराकर विश्व चैम्पियन बने; उक्रेन के राष्ट्रपति एल. कुचमा दुबारा निर्वाचित। 15. डर्बन में कामनवेल्थ बैठक में पाकिस्तान में सैनिक शासन की भर्त्सना की गई और नवाज शरीफ को रिहा करने की मांग की गई। 16. अमरीका संयुक्त राष्ट्र को एक अरब डालर का बकाया चुकाने पर सहमत; ताजकिस्तान के राष्ट्रपति ई. रखमनोव दुबारा सात वर्ष के कार्यकाल के लिये निर्वाचित। 18. श्रीलंका में वेवनिया में सेना और विद्रोहियों के बीच घमासान लड़ाई जारी। 23. नवाज शरीफ के पिता व भाई को हिरासत में लिया गया। 26. उत्तरी आयरलैंड में सत्ता में भागेदारी पर सहमति समझौते में प्रगति। 30 कुवैत की संसद ने महिलाओं को मतदान व चुनाव लड़ने के विधेयक को ठुकराया, सियेटल में विश्व व्यापार संगठन की बैठक के अवसर पर प्रखर विरोध, मलेशिया के प्रधानमंत्री दो तिहाई बहुमत से जीते; अनवर इब्राहिम की पत्नी वान अजिजाह ने विपक्ष की पहली संसदीय सीट जीती।

दिसंबर 1: उत्तरी आयरलैंड में 25 वर्ष में पहली बार ब्रिटेन के मंत्री के स्थान पर स्थानीय सरकार, प्रोटेस्टैंट व कैथोलिक

सत्ता में भागेदारी पर सहमत; सियेटल में वैठक के विरोध में दंगों के वाद नागरिक आपात की घोषणा। 3. उत्तरी आयरलैंड में पहली मंत्रिपरिषद की वैठक। 9. व्रिटेन के वीफ पर फ्रांस का प्रतिवंध जारी; *न्यायिक जांच में पता लगा कि मार्टिन लूथर किंग की एक साजिश में हत्या की गई थी;* इजराइल–सीरिया वातचीत शुरू करेंगें। 11. श्रीलंका के तमिल उग्रवादियों का सेना के शिविर पर हमला, जवावी कार्यवाही में 250 उग्रवादी मारे गये। 12. पुर्तगाल के एक यात्री विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने से चालक दल समेत 35 मरु। 13. चेचन विद्रोहियों ने रूसी सेना के एक सुखोई वमवर्षक को गिराया; सुडान के राष्ट्रपति ने संसद को भंग करते हुए तीन महीने के आपातकाल की घोषणा की। 14. कार्ल लुइस व जोयनर कर्सी को सदी का सर्वश्रेष्ठ ओलंपियन घोषित किया गया 15. अमरीका ने पनामा की संप्रुभता वापस की। 16. ग्रोज्नी में 100 से अधिक रूसी सैनिक मारे गये। 18. श्री लंका में मानव वम के विस्फोट में राष्ट्रपति कुमारतुंगा वाल–वाल वचीं हादसे में एक अधिकारी सहित अनेक मरे। 19. पुर्तगाल का उपनिवेश मकाओ चीन को सौंपा गया; वेनेजुएला में वाढ़ से मरने वालों की संख्या 500 तक पंहुची; इटली के प्रधानमंत्री मासिमो डी एलेमा ने त्यागपत्र दिया। 20. रूस में संसदीय चुनावों में किसी को वहुमत नहीं, वामपंथी आगे। 21. श्रीलंका में चुनावों में 75% मतदान। 22. श्रीलंका में चंद्रिका कुमारतुंगे ने राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण की। 24. फुटवाल के सितारे रोनाल्डो मिलेने से विवाह करेंगें; आइवरी कोस्ट में सेना ने सत्ता हथियाई। 27. हयल अंतरिक्ष दूरवीन की मरम्मत के लिये डिस्कवरी यान 8 दिन की योजना के लिये पहुचों। 28. ग्रोज्नी में चल रही लड़ाई में रूस को वढ़त मिली। 30. तुर्की के उच्च न्यायाधिकरण ने ओक्लान के मृत्युदंड के स्थगित करने से इंकार किया; श्री लंका की राष्ट्रपति चंद्रिका की एक आंख खराव होने की संभावना। 31. पाकिस्तान के तेज गेंदवाज शोएव अख्तर को आई.सी.सी. ने संदिग्ध गेंदवाजी पर प्रतिवंधित किया; रूस के राष्ट्रपति येल्तसिन का त्यागपत्र, विलादिमिर पुटिन कार्यकारी राष्ट्रपति।

विश्व की अर्थव्यवस्था

विश्व अर्थव्यवस्था को 2000 में खस्ता एशियाई आर्थिक स्थिति और रूसी रूवल में आयी गिरावट ने झकझोर दिया। इस वर्ष सितंवर महीने में रूस की विगड़ती आर्थिक हालत और इसका वहां के राजनीतिक परिवेश पर पड़ रहे प्रभाव ने पूरे विश्व को चिंता में रखा। पिछले चार वर्षों में रूवल के भाव में डालर के मुकावले 40% की सवसे वड़ी गिरावट से रूवल पर विश्वास उठ गया। तीन वड़े वैंक युनेक्सिम वैंक, मेनाटेप और मोस्ट वैंक ने एक में विलय होने को कहा। सेंट्रल वैंक ने गिरते हुए रूवल को संभालने में सहायता करने से इंकार कर दिया। आई.एम.एफ. जिसने 4.3 विलयन डालर की सहायता राशि जारी की थी असहाय होकर स्थिति को देख रहा था। विदेशी निवेशकों, जिन्होंने रूस में वड़ा निवेश किया था भारी घाटे की ओर तेजी से अग्रसर होने लगे। एक निवेशक वैंक क्रेडिट सुसे फर्स्ट वैंक का कहना है कि केवल दो महीनों में उसे 250 *मिलयन डालर का घाटा उठाना पड़ा।* इसी प्रकार जार्ज सोरोस क्वांटम वैंक को 2 विलयन डालर का घाटा उठाना पड़ा। दुनिया के स्टाक मार्केटों पर रूस की कठिनाइयों का भारी असर पड़ा।

जापान में जापानी वैंकों में सुधार के राजनीतिक चक्र और येन के समर्थन में हस्तक्षेप के कारण टोक्यो शेयर वाजार छह वर्षो के वाद गिरा।

हर तरफ व्यवसाय में अफरातफरी वनी रही। दुनिया के व्यवसायी क्या होगा क्या नहीं होगा को लेकर असमंजस की स्थिति में रहे। एशियाई वाजार में अविश्वास की स्थिति विकराल रूप ले गयी। कभी आशा कभी निराशा का दौर वना रहा। कम से कम छह में से चार युरोपियन देशों में भी अनिश्चितता वनी रही।

चीनी मुद्रा के अवमूल्यन की अफवाह ने वाजार की अफरातफरी को और वढ़ा दिया। छोटे एशियाई देश पिछले पचास वर्षों में आर्थिक गिरावट के कगार पर पहुंच गये। लैटिन अमरीका इस सूची में सवसे ऊपर रहा।

कुछ अर्थशास्त्रियों के अनुसार विश्व आर्थिक गिरावट का दौर प्रारंभ हो चुका है। अनेक भविष्यवाणियां की जा रही हैं कि वर्ष 1998 में सकल घरेलू उत्पादन में वृद्धि दो प्रतिशत से भी कम रहेगी। जो कि 1982 और 1975 की तुलना में वेहतर नहीं होगी। यह तीनों वर्ष विश्व आर्थिक गिरावट के प्रतीक रहे हैं। इसका प्रमुख कारण डूवे हुए वाजारों का एक वार फिर से उभर आना है। अगर अमरीका या युरोप की आर्थिक व्यवस्था ढहती है तो इसका असर पूरे विश्व में 1930 से भी वुरा होगा।

आधे से अधिक विश्व विकासशील देशों का है। अगर एक के वाद एक उभरती हुई आर्थिक शक्तियों का ढुलकना प्रारंभ हो गया तो निश्चय ही विश्व आर्थिक गिरावट की ओर तेजी से अग्रसर हो जायेगा। कुछ ही एशियाई देश हैं जिनकी निर्यात क्षमता *अभी भी आशा की किरण वनी हुई है।*

अमरीका जोकि विश्व की पांचवे भाग की आर्थिक शक्ति का मालिक है पर एशियाई संकट का असर पड़ सकता है। [illegible] डालर, निर्यात क्षमता व कम कीमत पर आधारभूत सुविधाएं [illegible] पर अब तक मंदी को रोके रखे हैं लेकिन निर्यात में हो रही [illegible] और आयात मे हो रही बढ़ोत्तरी इसके लिये चिंता [illegible] अगर विदेशी निवेशक वाल स्ट्रीट छोड़ कर [illegible] का वाजार ढह जायेगा। इसके अतिरिक्त [illegible] निर्मित वस्तुओ का एशियाई देशों में [illegible] की आर्थिक शक्ति विगत की वात [illegible]

यू.एन.डी.पी. द्वारा जारी [illegible] आशा की कोई किरण दिख[illegible] 21 वीं शताब्दि के प्रवेश द्वार [illegible] लोग आधारभूत आव[illegible]

उपभोक्ता वस्तुओं की चकाचौंध छायी क्यों न हो। रिपोर्ट के अनुसार 86 प्रतिशत से अधिक उपभोक्ता वस्तुओं का उपभोग केवल 20 प्रतिशत लोगों तक ही पंहुच पाता है। उपभोक्ता की दिशा तय व्यवहारिक हो जाती है जब जीने के स्तर और आय में विरोधाभास हो जाता है। आज जब लोग अपनी आय का उपयोग खाने, ऊर्जा, यातायात, शिक्षा, संचार और मनोरंजन में खर्च कर रहे हैं। लेकिन विश्व की 80% जनसंख्या इन उपभोक्ता वर्ग की ओर देख भी नहीं सकती क्योंकि वो तो आधारभूत आवश्यकताओं से भी वंचित है।

आज जिस संसार में हम रह रहे हैं उस संसार के 4.4 अरब लोग विकासशील देशों में रह रहे है। इस संख्या के एक चौथाई को जीवन की आधारभूत आवश्यकताएं जैसे शौचादि आदि की भी सुविधा नहीं है, लगभग एक तिहाई के लिये साफ पीने का पानी नहीं है, एक चौथाई के पास रहने के लिये मकान नहीं है। पांचवे हिस्से के पास चिकित्सीय सुविधायें नहीं हैं, पांचवे हिस्से के बच्चे, पांचवी कक्षा से अधिक पढ़ नहीं सकते और इतने ही बच्चे भूखे नंगे हैं। रिपोर्ट के अनुसार बढ़ता हुआ उपभोक्तावाद पर्यावरण पर जो असर डाल रहा है इसका भी खामियाजा इसी वर्ग को भुगतना पड़ रहा है। पर्यावर्णीय असर के कारण इस वर्ग में जो बिमारिया असाध्यता का रूप लेती जा रहीं हैं और इनके निवारण के लिये इनके पास किसी प्रकार का स्रोत नहीं है।

विश्व जनसंख्या का रुख

वर्ष 2000 में विश्व की जनसंख्या औसतन 6067 मिलयन थी। 6 अरब का आंकड़ा 12 अक्टूबर 1999 में पंहुच गया था। जनसंख्या में प्रतिवर्ष वृद्धि 78 मिलयन की है।

जनसंख्या में वृद्धि 1960 की तुलना में दुगनी हो गी है। 95% वृद्धि विकासशील देशों से है, जबकि युरोप, उत्तरी अमरीका और जापान में वृद्धिदर या तो धीमी हो गई है या रुक गई है।

यू.एन.एफ.पी.सी की स्टेट आफ वर्ल्ड पापुलेशन रिपोर्ट 1999 के अनुसार 1999 में विश्व जनसख्या 6 बिलयन और 2050 तक 8.9 बिलयन हो जायेगी रिपोर्ट कुछ विशिष्ट तथ्यों को रेखांकित करती है। 15 से 24 वर्ष के नवयुवाओं की सख्या में बढोतरी हुई है और इनकी संख्या 1.05 बिलयन से अधिक है, जबकि 65 वर्ष से अधिक लोगों की संख्या 578 मिलयन है। आज विश्व के देशों की सरकारों की मुख्य समस्या नवयुवाओं के लिये शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार की व्यवस्था करना है। और वृद्धों के लिये समाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना है।

जनसंख्या विस्फोट जिसकी शुरुवात 1930 से हुई अब संपूर्ण विश्व की समस्या बन गयी है। प्रति वर्ष विश्व जनसंख्या में लगभग 90 मिलयन लोग जुड़ रहे हैं। 1930 के 2 अरब का संसार पिछले छह दशकों में ढाई गुना बढ़ गया है और सन् 1998 में इसके 6 अरब तक पंहुचने की संभावना है। अगले दशक में जनसंख्या में वार्षिक वृद्धि 9 करोड सत्तर लाख होगी। और यह सारी वृद्धि अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमरीका से होगी। कुल वृद्धि का आधा भाग केवल अफ्रीका और दक्षिण एशिया से होगा।

कुछ हद तक परिवार नियोजन ने बेतहाशा जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाया है। (1965-70 से गर्भ निरोधकों का इस्तेमाल चार गुना बढ़ गया है) संयुक्त राष्ट्र का आंकलन वर्ष 2015 तक वार्षिक वृद्धि 8 करोड़ 60 लाख की है। 1995 के मध्य में विश्व की जनसंख्या 5.75 अरब थी।

चीन (1255.1 मिलयन) और भारत (206.5 मिलयन) विश्व के दो सबसे बड़े जनसंख्या वाले देश हैं। भारत का जनसंख्या घनत्व 270 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है जबकि चीन का केवल 120 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। भारत की जनसंख्या वृद्धि का प्रति वर्ष प्रतिशत 2 है जबकि चीन का 1.4 है। 11 जुलाई 1987 को जब पांच अरब शिशुओं का जन्म हुआ तभी से इस दिन को विश्व जनसंख्या दिवस के रूप में मनाया जाता है।

कैरो सम्मेलन सितंबर 1994 में जनसंख्या और विकास पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आई.सी.पी.डी.) कैरो सम्मेलन दरअसल जनसंख्या और विकास के क्षेत्र में एक नये युग की शुरुवात थी। आई.सी.पी.डी. एक्शन कार्यक्रम और सम्मेलन में लिये गये ऐतिहासिक निर्णयों में सुस्पष्टतया मानव की संख्या को जनसंख्या और विकास गतिविधियों के संदर्भ में रखा गया।

लोगों में जनचेतना फैला कर उनके अवसरों को बढ़ाकर और उन्हे इस योग्य बना कर कि वे मनुष्य के रूप में अपना महत्व समझें यही इसका मुख्य उद्देश्य था। दरअसल यही बात संतुलित जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में आर्थिक वृद्धि और स्थायी विकास की कुंजी है। प्रजनन स्वास्थ्य केंद एक्शन कार्यक्रम महिलाओं के विकास हेतु नारी-पुरुष समानता और पुरुष द्वारा अधिक सहयोग की आवश्यकता पर बल देता है। यह सार्वभौमिक प्रजननीय स्वास्थ्य की देख-रेख प्रतिपादित करता है। इसमें परिवार नियोजन भी शामिल है और यह नारी के लिये एक रूप-रेखा बनाता है जो नारी को अधिकार मिलने की आधारशिला है। यह सिद्धांत आई.सी.पी.डी. एक्शन कार्यक्रम का आधार है। अनेक देशों में यह काम प्रारम्भ हो चुका है।

पिछले तीस वर्षो में विकासशील देशों ने प्राथमिक स्वास्थ्य, परिवार नियोजन और अन्य प्रजनन संबधी स्वास्थ्य चिकित्साओं को विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं। परिणाम स्वरूप जन्म और मृत्यु दर में कमी आयी है, औसत आयु बढ़ी है और शिशु मृत्यु दर में कमी आयी है। यह प्रगति, शिक्षा व आर्थिक विकास, कम होते पीढ़ियों के अंतराल, जनसंख्या नीतियों में राजनीतिक प्रतिबद्धता और परिवार

नियोजन के प्रति यदलते व्यक्तिगत दृष्टिकोण के स्तरों से संबंधित है।

ऐसा होने के बावजूद यह भी सच है कि विभिन्न देशों और क्षेत्रों में काफी भिन्नता है। विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों में प्रजनन के दौरान मां की मृत्यु दर 15 से 50% अधिक है। गर्भ धारण करने के बाद और प्रजनन के दौरान हर वर्ष 5 लाख महिलाओं की मृत्यु हो जाती है। इन मौतों को स्तरीय परीक्षणों, उचित चिकित्सा और आपातकालीन प्रसूति देखरेख से रोका जा सकता है।

विश्व भर में लगभग 35 करोड़ लोग ऐसे हैं जिन्हें आधुनिक परिवार नियोजन संबंधी जानकारियां और सेवाओं के बारे में कुछ नहीं पता है। 12 करोड़ औरतें ऐसी हैं जिन्हे अगर आसानी से परिवार नियोजन का आधुनिक तरीका मिल जाये, उचित दाम का हो और उनके परिवार व समाज में स्वीकार हो तो वे परिवार नियोजन का पालन करने को उत्सुक हैं।

विश्व में लगभग 96 करोड़ लोग निरक्षर हैं। इनमें से दो तिहाई औरते हैं। 13 करोड़ बच्चे जिन्हे प्राथमिक शिक्षा भी नहीं मिलती है उनमें से 9 करोड़ लड़कियां हैं।

विकासशील देशों में ग्रामीण जनसंख्या का शहरों की ओर पलायन उनके स्रोतों पर दबाव बढ़ाता है। इन परिस्थितियों में एक देश से दूसरे देश की ओर प्रवास भी बढ़ जाता है। बहुत से देशों में लंबी आयु और कम होती जनसंख्या वृद्धि के कारण वृद्धों की संख्या बढ़ रही है।

कैरो कार्यक्रम कैरो सम्मेलन में जनसंख्या और विकास के क्षेत्र में अगले 20 वर्षों के लिये एक एक्शन कार्यक्रम को सहमति दी गयी। इस कार्यक्रम में सभी देशों के लिये प्रजनन चिकित्सा संबंधी देखभाल और परिवार नियोजन को उचित आयु के सभी लोगों तक पंहुचाने का सन् 2015 तक का लक्ष्य रखा गया है। इस कार्य के लिये विकासशील और संक्रमणशील अर्थव्यवस्था वाले देशों के लिये 17 बिलयन डालर का बजट सन 2000 तक निर्धारित किया गया है। यह राशि सन 2015 तक 21.7 बिलयन डालर हो जायेगी।

विश्व की भाषायें

अभी तक संसार की भाषाओं की संतोषजनक ढंग से गिनती नहीं हो पाई हैं। इस संबंध में कई अटकलें लगायी गयीं हैं। इसकी वजह यह है कि किसी भाषा को उसकी बोली से अलग करने में भ्रम पैदा हो रहा है। इसी कारण भाषाओं की संख्या के संबंध में विभिन्न परिकलन सामने आ रहे हैं और यह स्वाभाविक भी है। यहां पर हमने कतिपय फ्रांसीसी और अमरीकी भाषाविदों के अनुमानों को स्वीकार किया है जिन्होंने कुल 2796 भाषाओं की सूची बनाई है।

उक्त 2796 भाषाओं में से 1200 से अधिक अमरीकी – भारतीय कबीलों द्वारा बोली जाती है। इनमें से अधिकांश ऐसी भाषाएं हैं जिनके बोलने वाले एक हजार से अधिक नहीं हैं। अफ्रीकी–नीग्रो समूह 700 विभिन्न भाषाएं बोलते हैं जबकि आस्ट्रेलिया, न्यू गिनी और अन्य प्रशान्त महासागरीय द्वीप के निवासी 500 भाषाएं बोलते हैं। इसमें अज्ञात मूलवाले एशिया की लगभग 200 गौण भाषाएं और जोड़ लें तो विश्व की प्रमुख भाषाएं (जो 10 लाख और उससे अधिक लोगों द्वारा बोली जाती हैं) मुश्किल से 160 बनती हैं। दूसरे शब्दों में विश्व की अधिकांश भाषाएं, अर्थात् 85 प्रतिशत भाषाएं, संख्या की दृष्टि से छोटे समूहों द्वारा बोली जाती हैं जबकि प्रमुख भाषाओं के बोलने वाले 15 प्रतिशत हैं।

आजकल इण्डो हिटाइट के स्थान पर इण्डो–यूरोपियन (भारत यूरोपीय) शब्द को अधिक मान्यता दी जाती है। इसमें एनाटोलियन और मूल भारतीय भाषा शामिल हैं।

भाषा	बोलने वालों की संख्या (मिलयन)	प्रमुख क्षेत्र
मंदारिन	1075	चीन, ताइवान
अंग्रेजी	514	ब्रिटेन, अमरीका, कनाडा, आयरलैंड, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड
हिन्दी	496	उत्तरी भारत
स्पेनिश	425	स्पेन, लैटिन अमरीका
रूसी	275	रूस
अरबी	256	मध्य पूर्व
बंगाली	215	भारत, बंगला देश
पुर्तगाली	194	पुर्तगाल, ब्राजील
मलय–इंडोनेशियन	176	मलेशिया, इंडोनेशिया
फ्रांसीसी	129	फ्रांस, बेल्जियम, कनाडा, स्विटजरलैण्ड
जर्मन	128	जर्मनी, आस्ट्रिया,
जापानी	126	जापान, स्विटजरलैण्ड
उर्दू	106	भारत, पाकिस्तान
पंजाबी	96	भारत, पाकिस्तान
कोरियाई	78	कोरिया (उत्तर/दक्षिण)
तेलगू	75	आंध्र प्रदेश (भारत)
तमिल	75	तमिलनाडु (भारत) श्रीलंका, मलेशिया
मराठी	72	महाराष्ट्र (भारत)
कैंटोनीज	71	चीन
वुव	71	चीन
वियतनामी	69	वियतनाम
जावानीज	64	जावा (इंडोनेशिया)
इटैलियन	62	इटली
तुर्की	62	तुर्की
टागालोग	58	[illegible]
थाई	53	[illegible]

मिन	51	ताइवान, चीन, मलेशिया
स्वाहिली	50	पूर्वी अफ्रीका
उक्रेनियन	49	उक्रेन
कन्नड़	47	कर्नाटक (भारत)
पोलिश	45	पोलैंड
गुजराती	44	गुजरात (भारत)
हौसा	40	नाइजेरिया
फारसी	36	इरान
मलयालम	36	केरल (भारत)
हक्का	34	चीन
बर्मी	32	म्यानमार
उड़िया	31	उड़ीसा (भारत)
सुडानीज़	26	इंडोनेशिया
रोमानियन	26	रोमानिया
योरुबा	23	नाइजेरिया
अम्हारिक	21	इथियोपिया
डच	21	नीदरलैंड
सर्बो क्रोएशियन	21	क्रोएशिया, सर्बिया
पश्तो	19	अफगानिस्तान, पाकिस्तान
सिंधी	19	पाकिस्तान, भारत
इबो	18	नाइजेरिया
उजबेक	18	उजबेकिस्तान
नेपाली	16	नेपाल, भारत
हंगेरियन	14	हंगरी
सेबुआनो	13	फिलिपींस
फुला (पेयुल्थ)	13	कैमरून, नाइजेरिया
सिंहली	13	श्रीलंका
चेक	12	चेकोस्लोवाकिया
यूनानी	12	यूनान
अज़ेरी	11	अजरबेइजान
कुर्दिश	11	टर्की, इरान, इराक
असमी	10	असम (भारत)
बाइलोरशियन	10	बेलारूस
कैटालान	10	स्पेन, फ्रांस,अंडोरा
मदुरीस	10	मदुरा, इंडोनेशिया
मलागासी	10	मेडागास्कर
नियांगा	10	मलावी, ज़ाम्बिया
ओरोमो	10	प. इथियोपिया, उ.केन्या

विश्व के धर्म

मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास में धर्मों की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उनका उदय इस सृष्टि के प्रयोजन, प्रकृति और उद्देश्य संबंधी कुछ विश्वासों के रूप में हुआ और आगे चल कर उनका विकास विश्वासों की ऐसी सुसंगठित पद्धति में हुआ जिसने लोगों को एक सूत्र में बंधे समाज के रूप में आबद्ध रखा।

हिन्दू धर्म ने भारतीय जीवन और संस्कृति पर स्थायी प्रभाव डाला। बौद्ध धर्म ने दक्षिण-पूर्व एशिया और चीन के निवासियों के जीवन और उनकी संस्कृति में क्रान्तिकारी परिवर्तन पैदा किए। ईसाई धर्म और इस्लाम यूरोप और एशिया में फैले और उन्होंने लोगों के मन में प्रसुप्त उत्साह प्रज्जवलित करके विश्व के इतिहास में नए अध्यायों की शुरुआत की।

विश्व के धर्मों को मोटे रूप में तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है: (1) बड़े धर्म, (2) छोटे धर्म और (3) आदिम धर्म। बड़े धर्म हैं: बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म, कन्फ्युशी धर्म, हिन्दू धर्म और इस्लाम। भारत के जैन धर्म और सिक्ख धर्म, फिलिस्तीन का यहूदी धर्म, जापान का शिन्तो धर्म, चीन का ताओ धर्म और मूलत: फारस का पारसी धर्म छोटे धर्मों में गिने जाते हैं।

विभिन्न धर्म के अनुयायियों की अनुमानित संख्या

धर्म विश्व में	संख्या
इसाई	1,943,038,0000
रोमन कैथोलिक	*1,026,501,000*
प्रोटेस्टेंट्स	*316,445,000*
आर्थोडाक्स	*213,743,000*
एंग्लिकन्स	*63,748,000*
अन्य इसाई	*322,601,000*
मुस्लिम	1,164,622,000
धर्म में विश्वास न करने वाले	759,655,000
हिन्दू	761,689,000
चीन के लोक धर्म के अनुयायी	379,162,00
बौद्ध	353,794,000
विभिन्न मतों के अनुयाई	248,565,000
एथीस्ट्स	149,913,000
नये धर्मों के अनुयायी	100,144,000
सिक्ख	22,332,000
यहूदी	14,111,000
स्प्रिटिस्टस	11,785,000
बहाई	6,764,0000
कन्फूयशियस	6,241,000
जैन	3,922,000
शिन्तो धर्म	2,789,000
अन्य मतावलंबी	1,001,000
जोरोआस्ट्रियन्स	274,000
मंडीन्ज	38,000

स्रोत – वर्ल्ड अलमनाक – 2001

भारत देश

एशिया में भारत सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थिति में पश्चिमी समुद्रों के पार अरब और अफ्रीका तथा पूर्वी समुद्रों के पार बर्मा, मलेशिया और इंडोनेशिया प्रायद्वीप इसके दृष्टिपथ पर है और उत्तर में हिमालय की पर्वत श्रृंखलाएं भारत को पृथक् किए हुए हैं ।

भूस्थिति भारत भूमध्य रेखा के उत्तर में 8° 4' और 37° ' उत्तरी अक्षांश और 68° 7' तथा 97° 25' पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है । दक्षिण-पश्चिम में अरब सागर और दक्षिण-पूर्व में बंगाल की खाड़ी है । उत्तर, उत्तर-पूर्व और पश्चिमोत्तर भागों में हिमालय पर्वत की श्रृंखलाएं हैं । दक्षिणी किनारा कन्याकुमारी हिन्द महासागर द्वारा सतत प्रक्षालित होता रहता है ।

विस्तार उत्तर से दक्षिण तक 3214 कि.मी. और पूर्व से पश्चिम तक 2933 किमी क्षेत्र में व्याप्त भारत का सम्पूर्ण क्षेत्रफल 3,287,263 वर्ग कि.मी. है । इसकी पार्थिव सीमा 15200 कि.मी. और समुद्री तट 7516.5 किमी हैं । बंगाल की खाड़ी में अंडमान निकोबार द्वीप और अरब सागर में लक्षद्वीप भारतीय क्षेत्र के अंग हैं ।

पड़ौसी पश्चिम में इसकी सीमा पाकिस्तान, अफगानिस्तान से और पूर्व में बर्मा तथा बंगलादेश से मिली हुई हैं । उत्तरी सीमा में चीन का सिंक्यांग प्रदेश तिब्बत, नेपाल और भूटान सम्मिलित हैं।

भारत के प्रमुख भौगोलिक क्षेत्र मुख्य भाग सात क्षेत्रों में बंटा है (1) उत्तरी पर्वत श्रृंखलाएं जिनमें हिमालय और उत्तर-पूर्व के पहाड़ों की श्रेणियां शामिल हैं, (2) गंगा का मैदान, (3) मध्यदेशीय अधित्यका, (4) प्रायद्वीपीय पठार, (5) पूर्वी समुद्रतट, (6) पश्चिमी समुद्रतट, (7) समुद्र और द्वीपों के सीमान्त भाग ।

पहाड़ी क्षेत्र भारत में सात प्रमुख पर्वतीय श्रृंखलाएं हैं: (1) हिमालय श्रेणियां, (2) उत्तर और पूर्व की सीमा में फैली पटकाई और अन्य श्रेणियां, (3) विंध्य श्रृंखला जो गंगा के मैदानी भाग को दक्षिण घाट से अलग करती है, (4) सतपुडा (5) अरावली, (6) सह्यादि जो पश्चिमी तटीय मैदानों के पूर्वी किनारों में फैली है तथा (7) पूर्वी घाट जो भारत के पूर्वी तट पर अनियमित रूप से बिखरी है और पूर्वी तटीय मैदान की सीमा का निर्माण करती है।

हिमालय, जो विश्व में सर्वोच्च पर्वतीय व्यवस्था है, विश्व की नवजात पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है । यह लगभग 2500 कि.मी. क्षेत्र तक बिना किसी रुकावट के फैला हुआ है और लगभग 500,000 वर्ग कि.मी. क्षेत्र तक के भूभाग को घेरता है । इसमें विश्व की सर्वोच्च चोटी एवरेस्ट और 7500 मी. से अधिक ऊंचाई पर स्थित लगभग दस अन्य शिखर हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि इसका उदय चलायमान भारतीय प्रायद्वीप और दक्षिण एशिया के तिब्बतीय भाग के बीच लगभग 506 लाख वर्ष पूर्व हुई टक्कर से हुआ है । बहुत बाद में हिमालय को वर्तमान ऊंचाई मिली है ।

पटकाई और अन्य पर्वत श्रृंखलाएं भारत-बंगला देश-बर्मा सीमा के साथ-साथ फैली हैं । इनको सामूहिक रूप से पूर्वांचल कहा जाता है । ये श्रृंखलाएं जो एक चाप की तरह हैं, हिमालय के साथ-साथ बनी होंगी ।

अरावली श्रृंखला प्राचीनतम पर्वतीय व्यवस्थाओं में से एक है जो उत्तर पश्चिम भारत में फैली है । वर्तमान अरावली उस विशालकाय व्यवस्था का अवशेष मात्र है जो प्रागैतिहासिक समय में बर्फ की रेखा के ऊपर उठी हुई अनेक चोटियों वाली थी तथा भीमकाय विस्तार वाले हिमनदों का पोषण करती थी और ये हिमनद अनेक बड़ी-बड़ी नदियों को प्लावित करते थे।

विंध्य श्रृंखला भारत प्रायद्वीप की लगभग पूरी चौड़ाई में लगभग 1050 कि.मी. तक फैली है जिसकी ऊंचाई का औसत लगभग 300 मीटर है । ऐसा लगता है कि विंध्य श्रृंखला का निर्माण प्राचीन अरावली श्रृंखलाओं के टूटने से हुआ है ।

सतपुड़ा श्रृंखला एक अन्य प्राचीन पर्वतीय व्यवस्था है जो 900 कि.मी. की दूरी तक लगभग 1000 मीटर से ऊपर उठने वाली अनेक चोटियों वाली श्रृंखला है । यह त्रिभुजाकार है जिसका शीर्ष रत्नपुरी है और दो भुजाएं नर्मदा और ताप्ती नदियों के समानान्तर फैली हैं ।

सह्यादि अथवा पश्चिमी घाट लगभग 1200 मीटर औसत ऊंचाई वाली श्रृंखला लगभग 1600 कि.मी. लम्बी है और ताप्ती नदी के उद्गम स्थल से लेकर सुदूर दक्षिण भाग कन्याकुमारी तक व्याप्त दक्षिण पठार की पश्चिमी सीमा के साथ-साथ फैली है । यह अरब सागर के ऊपर स्थित है और मानसूनी हवाओं की पूरी ताकत को रोकती है और इस तरह पश्चिमी तट पर भारी वर्षा का कारण बनती है ।

पूर्वी घाट भारत के पूर्वी समुद तट पर स्थित है । इसे शक्तिशाली नदियां पर्वतों को कई बिखरे हुए टुकडों में बांटती हैं । गोदावरी और महानदी नदियों के बीच में बंटा उत्तरी भाग लगभग 1000 मीटर से अधिक ऊँचा है।

जलस्रोत भारत में तीन प्रमुख जलस्रोत है । (1) उत्तर की कराकोरम श्रेणी सहित हिमालय श्रृंखला, (2) मध्य भारत और विंध्य और सतपुड़ा श्रृंखलाएं और (3) सह्यादि अथवा पश्चिम तट के पश्चिमी घाट ।

भारत के कछारी मैदान अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं । गंगा के समतल मैदान में प्रकृति की हरियाली मीलों तक फैली है । नदियां हिमालय समूह की प्रमुख नदियां है – सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र। ये नदियां बर्फ और वर्षा दोनों से जलपूरित होती हैं और इसीलिए इनमें साल भर पानी बहता रहता है । हिमालय की नदियां समुद्र में लगभग अपने जल प्रवाह का 70 प्रतिशत पानी ले जाती हैं। इसमें मध्य भारत की नदियों का 5 प्रतिशत पानी भी शामिल है । ये गंगा में मिलती है और बंगाल की खाड़ी में गिरती है ।

सिंधु के कारण भारत का नाम हिन्दुस्तान पड़ा । इसके दोनों किनारों की घाटियां सभ्यता की पीठस्थली रही हैं जो सुमेरिया
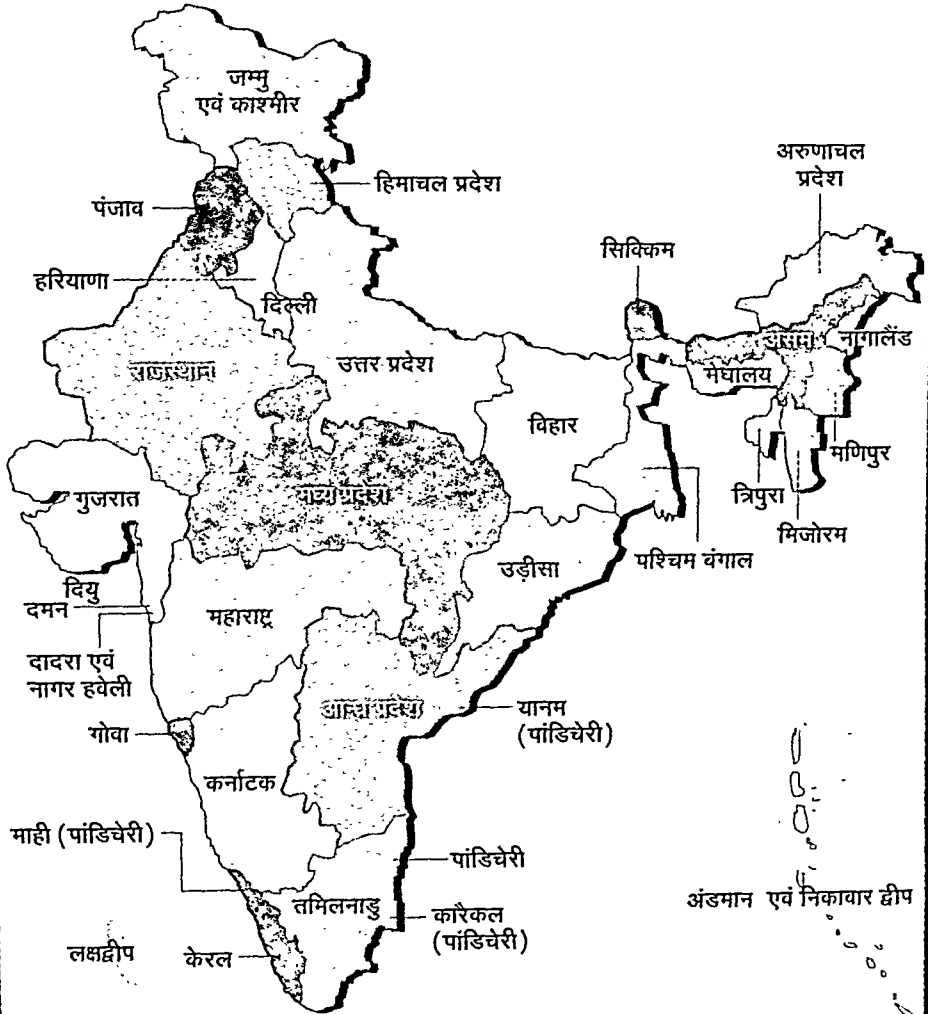
मायनों में श्रेष्ठ भी रही हैं। इस ऐतिहासिक नदी की पांच सहायक नदियां हैं – झेलम, चिनाव, रावी, व्यास और सतलज। इनसे पंजाव नाम वना – (पंज = पांच और आव – पानी (नदी) – पांच नदियों की भूमि। तिव्वत में कैलाश पर्वत से सिंधु निकलती है और हिमालय में कई मीलों की यात्रा करने के वाद पंजाव में अपनी सहायक नदियों से मिलती है। इसके वाद पाकिस्तान के सिंध से होती हुई अरव सागर में गिरती है।

गंगा पुराणों और इतिहास में समान रूप से प्रसिद्ध है। यह हिन्दुओं की सवसे अधिक पवित्र नदी है ... रत के हृदय भाग को आच्छादित करती है जो प्राचीन ... प्रमुख

भारत : मूलभूत तथ्य

राजधानी	:	नई दिल्ली
क्षेत्रफल	:	3287263 वर्ग कि.मी
जनसंख्या (1999 यू.एन. औसत)	:	99.81 करोड़
जनसंख्या (1991 जनगणना)	:	84.63 करोड़
वर्ष 2000 में अनुमानित		
जनसंख्या	:	102.2 करोड़
पुरुष	:	43.92 करोड़
महिला	:	40.11 करोड़
वृद्धि (1981–91)	:	16.297 करोड
दशक वृद्धि (1981–91)	:	23.50%
जनसंख्या का घनत्व	:	273 वर्ग कि.मी.
साक्षरता (97)	:	53.51%
पुरुष	:	64.13%
स्त्री	:	39.29%
पुरुष–स्त्री अनुपात	:	927 स्त्री 1000 पुरुषों
जन्म दर (1990–95)	:	3.9
औसत आयु		62.6 वर्ष
संभावित (1991-92)		
राष्ट्रीय आय (1988-89)		रु 4,73,246 करोड़ (वर्तमान मूल्य स्तर)
प्रति व्यक्ति वार्षिक आय		रु. 6929
शिशु मृत्यु दर (1990)		79 प्रति हजार पर
परिवार नियोजन		43%
जनसंख्या वृद्धि (90–95)		1%
शहरी जनसंख्या	:	26%
ग्रामीण जनसंख्या		74%
एक चिकित्सक पर लोग	.	2,272
जी.एन.पी. प्रतिव्यक्ति	:	310 डालर
जी.डी.पी. वृद्धि दर	:	5.3%
घरेलू बचत (जी.डी.पी.की के अनुसार)	:	20.2
विदेशी कर्ज (मार्च 1995)	:	95,321 मिलयन यू.एस.डालर
भारत का कुल निर्यात (94–95)	:	26223 मिलयन यू.एस.डालर (अंतिम)
भारत का कुल आयात (94–95)	:	28251 मिलयन यू.एस.डालर (अंतिम)
कैलोरी इन्टेक	:	2229 (औसत प्रति व्यक्ति प्रति दिन)
दहेज मृत्यु प्रतिदिन	:	17
60 वर्ष से ऊपर की जनसंख्या	:	6.1%
धूम्रपान करनेवाले (डब्ल्यू.एच.ओ. 1990)		
पुरुष	:	53%
महिला	:	3%
प्रति व्यक्ति उपभोग		
स्वर्ण	:	0.4 ग्राम (1994)
दूध	:	107 ग्राम
मीट	:	2 कि. ग्राम (1990)
इस्पात	:	20 किलो (1987)
कागज	:	3 किलो (89)
फोन	:	0.01
राज्य –25	:	असम, अरुणाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश कर्नाटक, केरल, गुजरात, गोवा, जम्मू एवं कश्मीर, तमिलनाडु, त्रिपुरा, नागालैंड, पंजाब, पश्चिमी बंगाल, बिहार, मध्य प्रदेश, मणिपुर, महाराष्ट्र, मिजोरम, मेघालय, राजस्थान, सिक्किम, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश
केंद्रशासित क्षेत्र–6	:	अंडमान निकोबार द्वीप समूह, चंडीगढ़, दादरा नागर हवेली, दमन और दियू, पांडिचेरी, लक्षद्वीप ।
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र*	:	दिल्ली

* दिल्ली को 69वें संविधान के एन.सी.टी. एक्ट 1991 में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र घोषित किया गया ।

केन्द्र था । यह हिमालय के हिमनद गंगोत्री से निकलती है और उत्तर–प्रदेश, बिहार तथा बंगाल में बहती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है । गंगा और उसकी सहायक नदियां यमुना, गोमती, घाघरा, शारदा, गंडक, चम्बल, सोन और कोसी भारत के मैदानी [illegible]

विशालतम कछार का निर्माण करती हैं। यह कछार भाग भारत के पूरे क्षेत्र का एक चौथाई है ।

ब्रह्मपुत्र तिब्बत से निकल कर हिमालय में 800 मील के लगभग बहती हुई दक्षिण पश्चिम की ओर पहले मुड़ती [illegible]

शाखा पद्मा से मिलती है और गंगा के साथ मिलकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है ।

दक्षिण की नदियां दीर्घकाल से अपने तटीय क्षेत्रों को अनाच्छादित करती हुई निम्नस्तरीय तत्वों वाली चपटी घाटियों का विकास करती रही है । प्रमुख दक्षिणी नदियां हैं – गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, पेण्णार, महानदी, दामोदर, शरवती, नेत्रवती, भारत पुषा, पेरियार, पम्पा, नर्मदा और ताप्ती ।ये नदियां वर्षा के जल पर ही निर्भर करती है। भारत में पूरे जल–प्रवाह का 30 प्रतिशत ये दक्षिणी नदियां देती है ।इनमें से पश्चिम की ओर बहने वाली 10 प्रतिशत प्रवाह देती है ।गोदावरी, कृष्णा, कावेरी और पेण्णार पश्चिमी घाट से निकलती है तथा पूरे पठार और पूर्वी तट से बहकर बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं । दूसरा बड़ा नदी–बेसिन (कछार) गोदावरी का है जो भारत के डेल्टा क्षेत्र का लगभग 10 प्रतिशत है कृष्णा बेसिन प्रायद्वीप का दूसरा और पूरे देश का तीसरा सबसे बड़ा बेसिन है ।

पठार के उत्तर–पश्चिम से महानदी और दामोदर निकलती हैं और पूर्व में बंगाल की खाड़ी की ओर बहती है । महानदी सबसे बड़ा कछार बनाती है और यह प्रायद्वीप में तीसरा और पूरे भारत में चौथा सबसे बड़ा कछार है ।

नर्मदा और ताप्ती पठार के सुदूर उत्तर किनारे से निकल कर अरब सागर मेंकैम्बे की खाड़ी में गिरती है। नर्मदा का बेसिन पर्याप्त रूप से बहुत विस्तृत है जो कृष्णा और गोदावरी के बेसिनों के बाद आता है ।शरवती, नेत्रवती, पेरियार और पम्बा पश्चिमी घाट से निकलती है और पश्चिमी घाट पार कर अरब सागर में गिरती हैं। ये नदियां अपेक्षाकृत छोटी होने से इनका जलग्रहण क्षेत्र (श्रेणी) सीमित है।

मौसम भारत एक विशाल देश हैं और यहां मौसम में भी विभिन्नता है। प्रमुख रूप से तीन मौसम मानें जाते हैं, वर्षा ऋतु (जून से सितंबर: दक्षिण पश्चिमी मानसून, अक्टूबर–नवंबर: उत्तर पूर्व मानसून) ग्रीष्म ऋतु (अप्रैल से जुलाई) और शरद ऋतु (अक्टूबर से फरवरी)।

भारत भ्रमण के लिये उपयुक्त समय जाड़े का होता है। हिमालय क्षेत्र घूमने के लिये उपयुक्त समय अप्रैल से सितंबर है। भारत के दक्षिणी भाग में सर्दी का प्रभाव नहीं पड़ता। यहां दिन गर्म और रातें समान्य होती हैं। इस प्रकार का मौसम सितंबर से मार्च तक चलता है। केरल में एक जून तक प्राय: मानसून स्थापित हो जाता है और उत्तर की ओर बढ़ता है, जुलाई तक यह पूरे देश में सिवाये पूर्वी समुद्री क्षेत्र तमिलनाडुऔर आंध्र प्रदेश के फैल जाता है।तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में अक्टूबर व नवंबर में उत्तरी पूर्वी मानसून का दौर होता है जबकि शेष भारत सर्दी की गिरफ्त में होता है।

पूर्वी समुद्री क्षेत्र में इस दौरान समुद्री तूफान आते हैं। जिससे, फसल संपत्ति व जीवन का नाश होता है।यह तूफान बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर में वातावरणीय दबाव के कारण पैदा होते हैं और तेज रफ्तार की हवाओ के साथ आगे बढ़ते हैं। पश्चिमी समुद्री क्षेत्र में एसे तूफान बहुत कम आते हैं।

भारत की जनता

भारत के लोग प्रमुख रूप से हिमालय पार से आई जातियों के वंशज हैं ।इस चर्चा का कभी अंत होने की संभावना नहीं है कि क्या भारत की भूमि में कभी कोई स्वदेशी जाति रही या नहीं ।

उत्तर–पश्चिमी हिमालय के शिवालिक पहाड़ियों के निचले भाग में रामापिथेकस नामक जाति के लोग पाए गए हैं । यह जाति लगभग 1 करोड़ चालीस लाख वर्ष पूर्व रहने वाली मानव जाति का प्रथम वंश मानी जाती है। आधुनिक अनुसंधानों से मालूम हुआ है कि आस्ट्रेलोपिथेकस जाति से मिलती–जुलती जाति भारत में 20 लाख वर्ष पूर्व रहती थी। किंतु इस खोज से भी रामापिथेकस के बाद 120 लाख वर्ष के अन्तराल के विकास की कहानी अधूरी रह जाती है ।

भारतीय जनसंख्या के जातीय मूल के सम्बन्ध में अनुसंधान कार्य बहुत कम हुआ है ।शायद आज इसका बहुत अधिक महत्व नहीं है । सच तो यह है कि आज की भारतीय जनसंख्या बहुजातीय है और कई जातियों के संबंधों का जटिल मिश्र रूप है ।शायद ही कोई अपने को किसी जाति–विशेष का शुद्ध वंशज कह सकता हो। फिर भी अनेक भारतीय अपने को आर्य सन्तान कहने में गर्व का अनुभव करते हैं ।

शास्त्रीय अभिरूप के अनुसार भारत की विभिन्न जातियों का विवरण यहां दिया जा रहा है । डा. बी. एस. गुहा के अनुसार भारत की जनसंख्या छह प्रमुख जाति वर्गों से निकली है:

(1) नीग्रिडो, (2) प्रोटो–आस्ट्रालायड अथवा आस्ट्रियाड, (3) मंगोलोयड, (4) भूमध्य सागरीय या द्राविड़ीय, (5) पश्चिमी ब्राकिसेफल्स तथा (6) नार्डिक आर्य ।

नीग्रोयड्स अफ्रीका से आए चौड़े शरीर के ब्राकिसेफेलिक नीग्रो भारत में आने वाले लोगों में सबसे पुरानी जाति है । ये आज दक्षिणी भारत के मैदानों में पहाड़ी जातियों (इरुलर, कोडर, पणियर और कुरुम्बर) के बीच टुकड़ों में मिलते हैं। लेकिन अंडमान–निकोबार द्वीप में ये जीवित है जहां इन्होंने अपनी भाषा को सुरक्षित रखा है ।

प्रोटो–आस्ट्रालायड अथवा आस्ट्रिक जाति के लोगों के लक्षण हैं – भूरे शरीर पर लहराते घने बाल, संकरा माथा, लम्बा सिर, धंसा हुआ माथा, उभरी हुई आंखें, नीचे की झुकी और चौड़ी नाक, ओमोटे जबड़े, लम्बे तालु और दांत तथा छोटे चिबुक ।

भारत के आस्ट्रिक लोग औसत कद, काले रंग, लम्बे सिर और प्राय: चपटी नाक वाले थे । संभवत: आदि नीग्रो

लोगों के साथ सम्पर्क के कारण इनका रंग काला और नाक चपटी हो गई होगी । आस्ट्रिक जाति के लोग पूरे भारत में फैले हैं और वे वर्मा, मलाया तथा दक्षिण पूर्व एशिया के द्वीपों में भी फैले हैं । आस्ट्रिक भारतीय जनता की आधारभूत जाति है।

आस्ट्रिक जाति ने भारतीय सभ्यता की नींव डाली । उन्होंने चावल और सब्जियों की खेती की और गन्ने से चीनी बनाई । पूर्वी और मध्य भारत में प्रचलित कोल या मुंडा भाषा के रूप में उनकी भाषा जीवित है ।

द्रविड़ जाति में तीनों उपजातियां – पेलियो – भूमध्यसागरीय, शुद्ध भूमध्यसागरीय और प्राच्य भूमध्य सागरीय हैं । वे एशिया माइनर, क्रेट तथा यूनान के पूर्व–हेलेनिक एगन्स जाति के जैसे प्रतीत होते हैं । उनको सिंधु–घाटी की सभ्यता के निर्माण का श्रेय मिला है जिसके अवशेष मोहनजोदड़ो, हड़प्पा तथा अन्य सिंधु नदी के शहरों में मिले हैं ।

मंगोल जाति के विभिन्न प्रकार के लोग भारत के उत्तर–पूर्व क्षेत्र–असम, नागालैंड, मिजो, गारो और जयंती पहाड़ियों में फैले हैं । सामान्यतया ये पीले रंग के हैं । तिरछी आंखें, उभरे कपोल कम बाल और औसत कद इनकी विशेषताएं हैं ।

नार्डिक आर्य जो भारत में आए थे । भारत–ईरानी शाखा के लोग थे जिन्होंने अपने मूल स्थान मध्य एशिया को लगभग 5000 वर्ष पूर्व छोड़ा था और मेसोपोटामिया में कुछ शताब्दियों से बस गए थे । भारत में आर्य लगभग 2000 ई.पू. और 1500 ई.पू. के बीच आए होंगे । उनका प्रथम निवास भारत में पश्चिमी और उत्तरी पंजाब था जहां से वे गंगा की घाटी और आगे फैले । भारत में आने पर आर्यों को सिंधु घाटी के लोगों की अत्यधिक उच्च सभ्यता का सामना करना पड़ा जिनके पास बड़े बड़े शहर किले, ईंटों की इमारतें और अन्य उच्च सभ्यता की अनेक सुविधाएं थीं। सिंधु घाटी के लोग नगरवासी थे जबकि आर्य गड़रिये जाति के थे ।

यद्यपि यह स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं कि सिंधु घाटी के लोगों और उनकी सभ्यता का क्या हुआ फिर भी यह अनुमान किया जाता है कि वे आगन्तुक आर्यों से मिल गए और इस संगम से एक नवीन संस्कृति बनी ।

जनसंख्या

भारत की जनसंख्या एक मार्च 1991 की जनगणना के अनुसार 84 630 करोड़ है । सयुक्त राष्ट्र के आंकलन के अनुसार 1999 में भारत की जनसंख्या 99 81 करोड़ है। भारत में पुरूषों की सख्या 43.923 करोड़ है और [illegible] ओं की सख्या 40 707 करोड़ है । इस प्रकार यहा लिंगानुपात 927 है । दुनिया के दूसरे सबसे बड़े आबादी वाले देश भारत में विश्व की कुल जनसख्या के 16% लोग रहते हैं, जबकि क्षेत्रफल की दृष्टि से यह विश्व का कुल 2.42 प्रतिशत भाग ही है।

जनसंख्या वितरण

32 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में जनसंख्या का वितरण बहुत असामान्य है । उत्तर प्रदेश की जनसख्या सर्वाधिक (16.44 प्रतिशत) है । जबकि लक्षद्वीप की (0.01 प्रतिशत है) सर्वाधिक जनसंख्या वाले 7 राज्य है उत्तर प्रदेश (13 करोड़ 87 लाख), बिहार (8 करोड़ 63 लाख), महाराष्ट्र (7.8 करोड़) पं. बंगाल (6.79 करोड़) आंध्र प्रदेश (6.63 करोड़) मध्य प्रदेश (6.61 करोड़) और तमिलनाडु (5.56 करोड़) । इस सात प्रांतों की कुल जनसंख्या देश की जनसंख्या का 66.4 प्रतिशत है । अन्य 16 प्रांत और केंद्र शासित प्रदेशों की कुल जनसंख्या देश की मात्र 4 प्रतिशत है । यह प्रांत हैं जम्मू एवं काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड, गोवा, अरूणाचल प्रदेश, पांडिचेरी, मिज़ोरम, चंडीगढ़, सिक्किम, अंडमान एवं निकोबार, दादरा एवं नागर हवेली, दमन एवं दियू और लक्षद्वीप । शेष प्रांतो में देश की एक से 7 प्रतिशत जनसंख्या है । दिल्ली में जनसंख्या की प्रतिशतता 1.11 है ।

जनसंख्या का घनत्व

हर दशक में जनसंख्या वृद्धि और क्षेत्रफल के वही रहने से जनसंख्या घनत्व में लगातार वृद्धि (1921 के दशक को छोड़कर) हुई है । 1901 में जनसंख्या घनत्व 7.7 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी हो गया । 1931 तक जनसंख्या घनत्व प्रति वर्ग किमी 100 व 1971 तक 200 से कम था। 1981 तक यह 200 को पार (216) कर 1991 तक 267 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी तक पहुंच गया।

जनसंख्या वृद्धि

भारत की जनसंख्या 1901 में 23 करोड़ 84 लाख थी । 1991 में भारत की जनसंख्या लगभग 84 करोड़ 63 लाख है । इन 9 दशकों में जनसंख्या की वृद्धि दर 254 प्रतिशत रही है । दशकीय वृद्धि जो कि 1901–1911 में 5.75 प्रतिशत थी, 1981–91 में बढ़कर 23.50 प्रतिशत रही ।

लिंगीय संरचना

भारत में लिंगीय अनुपात प्रति 1000 पुरूषों पर महिलाओं की संख्या से माना जाता है । 1991 में लिंगानुपात 927 था। 1901 से जनगणना आंकड़े दिखाते है कि 1951 एवं 1981 के दशक को छोड़ कर लिंगानुपात में गिरावट आती रही है । 1901 में लिंगानुपात 972 था । 1951 में यह 945 पर टिका रहा। सर्वाधिक गिरावट 1961–71 के दशक में आयी जब लिंगानुपात गिर कर 930 हो गया । लिंगानुपात में कमी के कई कारण दिये गये हैं ।

आधुनिक शिक्षा के वाद भी नसवंदी कराने वाले पुरुषों की संख्या घटी

आज से लगभग 20 साल पहले वर्ष 1982 में इसका प्रतिशत 22 के करीब था। उस समय नसवंदी के लिए कोई भी आधुनिक तकनीक नहीं आई थी और वकायदा चीर–फाड़ के जरिए नसबंदी की जाती थी। परिवार नियोजन कार्यक्रम के तहत लगे विशेषज्ञों के अनुसार आज जितने ज्यादा हम शिक्षित होते जा रहे है, चिकित्सा की नई नई तकनीकों को अपना रहे हैं उतने ही ज्यादा नसवंदी के मामलों में हम पिछड़ते जा रहे हैं। जबकि महिलाओं के आपरेशन के मुकावले नसवंदी काफी आसान है और पुरुष आपरेशन के दो घंटे वाद ही अपने काम पर वापस जा सकता है। जनसंख्या विस्फोट का यह भी एक प्रमुख कारण है, क्योंकि महिलाओं के मुकावले पुरुषों के एक से अधिक संवंध होते हैं।

परिवार नियोजन के लिए होने वाले कुल आपरेशन में से 95 से 97 प्रतिशत मामलों में महिलाएं ही अपना आपरेशन करवाती हैं। वह वीमार हो, उनमें खूनी की कमी हो। चाहे वह कामकाजी हो, पढ़ी–लिखी हो अथवा अनपढ़। अनपढ़ की तो वात छोड़िए आज का एक पढ़ा–लिखा पुरुष भी परिवार नियोजन जब कभी भी स्थायी रूप से चाहता है तो अपनी जगह अपनी पत्नी का ही आपरेशन करवाता है। नसवंदी के वारे में कई तरह की भ्रांतियां इसके आड़े आती हैं। जैसे सेक्स करने की क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना, आपरेशन के वाद काम न कर पाने का डर, पुरुषों द्वारा नसंवदी करवाना अपनी शान के खिलाफ समझना और इसके लिए महिलाओं को ही आगे लाना।

वर्ष 1996–97 में पुरुष एवं महिलाओं के आपरेशन के आंकड़ों के लिए उन चार राज्यों पर नजर डालें जहां जनसंख्या तेजी से वढ़ रही है तो पता चलता है कि वहां महिलाओं के आपरेशन के मुकावले नसवंदी केवल पांच से छह प्रतिशत तक ही सीमित है। उत्तर प्रदेश में इस दौरान 2,57,316 महिलाओं के आपरेशन और 270 नसवंदी, विहार में 81,507 और 914, राजस्थान में 1,98,999 और 1059, मध्यप्रदेश में 3,65,662 और 6069 के मामले प्रकाश में आए। देश की राजधानी के आंकड़ें भी कुछ कम नहीं हैं। वर्ष 1996–97 में महिलाओं के आपरेशन के 31,000 नसवंदी के 1500, 1997–98 में 35,000 और 1450, 1998–99 में 33,000 और 1400 के लगभग मामले दर्ज किए गए। वर्ष दो हजार में जनवरी तक महिलाओं के आपरेशन के 30,000 हजार और नसवंदी के केवल 1300 के लगभग मामले दर्ज हुए हैं।

साक्षरता

जनगणना के उद्देश्य के अनुसार कोई भी व्यक्ति किसी भी भाषा को लिख पढ़ सकता है – साक्षर माना जाता है। 1991 की जनगणना में 7 वर्ष की आयु के ऊपर के लोगों की साक्षर गणना की गयी। 1991 में साक्षरता 52 प्रतिशत रही।

छोटे परिवार की ओर

यह अविश्वसनीय तो है लेकिन सच्चाई यही है कि भारत में परिवार नियोजन कार्यक्रम में अनेक साल वीत जाने के वावजूद 59% महिला जनसंख्या किसी प्रकार का गर्भ निरोधक का प्रयोग नहीं करती हैं।

परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 1992–93 की रिपोर्ट जिसे इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फार पापुलेशन साइंसेज वंवई ने जारी किया है के अनुसार भारत में जन्म दर समय के साथ कम हो रही है। 24 प्रांतो और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की 13 से 49 वर्ष की आयु की महिलाओं पर सर्वेक्षण किया गया।

सर्वेक्षित की गयी जनसंख्या में 26% शहरी क्षेत्र में रह रही हैं। घरों में रहने वाले 38% 15 वर्ष की आयु से कम थे। 65 वर्षों से अधिक आयु वाले लोगों की प्रतिशतता 5 थी। 6 वर्षों से अधिक आयु की महिलाओं में 57% अशिक्षित और केवल 9% ही ऐसी थीं जिन्हे माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त थी। शहर और कस्वों में रहने वाली 67% महिलायें शिक्षित थीं। 82% घर के प्रमुख हिंदु, 11% मुस्लिम, और 3 प्रतिशत इसाई थे। 13 % अनुसूचित और 9% जनजाति के थे।

रिर्पोट के अनुसार भारत में समय के साथ उर्वरता कम हो रही है। 1990–92 में प्रति 1000 लोगों पर जन्म दर28.7% थी जो कि 10 वर्ष पूर्व के आंकड़ों से 15% कम हैं। कुल उर्वरता दर प्रति महिला 3.4 वच्चों की है।

मुस्लिमों में अन्य धर्मों की अपेक्षा उर्वरता दर अधिक है। इनमें कुल उर्वरता दर 4.4 वच्चे प्रति महिला हैं जो कि हिंदुओं से 1.1 अधिक है। सिक्ख, इसाई और अन्य धर्मों (मुख्यता जैन और वुद्ध धर्म) में यह दर तीन वच्चों से कम है। अनुसूचित जाति में यह दर 3.9 बच्चों की है जवकि जनजाति में 3.6 की है। सर्वेक्षण में पाया गया कि भारत में वच्चों की माओं का आयु वर्ग 16 वर्ष से 29 वर्ष का है।

प्रांतों में उर्वरता

प्रांतों में उर्वरता दर में वहुत अधिक भिन्नता है। दक्षिण भारत के राज्यों केरल, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और कनार्टक में और पश्चिम भारत के राज्यों गोवा, गुजरात और महाराष्ट्र में शेष भारत की तुलना में उर्वरता दर काफी कम है। दो प्रांतों केरल और गोवा में तो यह दर तो औसत से वहुत कम हो गयी है। दूसरी तरफ उत्तर प्रदेश, विहार, हरियाणा और अरुणाचल प्रदेश में प्रति महिला वच्चों की संख्या चार है। मध्य प्रदेश, मेघालय, राजस्थान और असम में उर्वरता दर राष्ट्रीय औसत से अधिक है।

विवाह के समय आयु

सर्वेक्षण के समय 15 से 19 वर्ष की विवाहित महिलाओं की प्रतिशतता 30 थी, और 25 से 29 वर्ष की विवाहित महिलाओं की प्रतिशतता 95 थी। 15 से 19 व

महिलाओं को शिक्षित होने का प्रोत्साहन देना बहुत जरूरी है क्योंकि शिक्षा ही महिलाओं को नयी सोच नया आयाम दे सकती है।

भारत में जनसंख्या घनत्व एवं लिंगानुपात

जनगणना वर्ष	घनत्व	लिंगानुपात
1901	77	972
1911	82	964
1921	81	955
1931	90	950
1941	103	945
1951	117	946
1961	142	941
1971	177	930
1981	216	934
1991	267	927

भारत की जनसंख्या घनत्व बनाने में जम्मू एवं काश्मीर में क्षेत्रफल एवं जनसंख्या के तुलनात्मक अध्ययन से जोड़ा गया है। वहां पर 1991 में जनगणना नहीं हुयी।

प्रांत/केंद्र शासित प्रदेशों का 1991 में जनसंख्या घनत्व

1991 में क्रम	प्रांत/संघीय क्षेत्र 1981	घनत्व 1991
1.दिल्ली	4,194	6,352
2.चंडीगढ़	3,961	5,632
3.पांडिचेरी	1,229	1,642
4.लक्षद्वीप	1,258	1,616
5.दमन एवं दियु	705	907
6.पश्चिम बंगाल	615	767
7.केरल	655	749
8.बिहार	402	497
9.उत्तर प्रदेश	377	473
10.तमिलनाडु	372	429
11.पंजाब	333	403
12.हरियाणा	292	372
13.गोवा	272	316
14.असम	230	286
15.दादरा एवं नागर हवेली	211	282
भारत	230	273
16.त्रिपुरा	196	263
17.महाराष्ट्र	204	257
18.आंध्र प्रदेश	195	242
19.कर्नाटक	194	235
20.गुजरात	174	2[illegible]
21.उड़ीसा	169	203
22.मध्य प्रदेश	118	[illegible]49

जनसंख्या विस्फोट

हम एक अरब हो रहे हैं। 11 मई की दोपहर 12.57 बजे भारतीयों की कुल आबादी 100 करोड़ का आंकड़ा पार कर लेगी। कुपोषण, भुखमरी, सूखा और पीने के पानी जैसे गंभीर संकटों से जूझ रहे देश के लिए यह कोई अच्छी खबर नहीं है। एक अरब भारतीय दुनिया की कुल आबादी का 16 प्रतिशत है जिनको विश्व के मात्र 2.4 फीसदी क्षेत्रफल में जीवन बिताना पड़ता है। इस तादाद में हर साल 1.60 करोड़ यानी हर साल एक आस्ट्रेलिया की बढ़ोतरी हो रही हैं। आबादी बढ़ने की रफ्तार यही रही तो 2045 तक हम जनसंख्या के मामले में चीन से भी आगे निकल जाएंगे।

यह उपलब्धि नहीं, खतरे की घंटी है। विडंबना यह है कि दुनिया भर में सबसे पहले परिवार नियोजन कार्यक्रम की शुरुआत करने वाला देश जनसंख्या के विस्फोट की सर्वाधिक गंभीर समस्या से जूझ रहा है।

आबादी के फूलते गुब्बारे के डरावने आकार का अनुमान राजधानी दिल्ली की हालत से लगाया जा सकता है जहां फिलहाल पीने के पानी की 53 प्रतिशत और बिजली की 40 प्रतिशत कमी है। इसी तरह 'सबको शिक्षा' का ढकोसला तो बहुत होता है पर आज भी दिल्ली के 40 फीसदी बच्चे स्कूल की शिक्षा से वंचित हैं। यहां रोटी, कपड़ा और घर तथा साफ हवा की बात नहीं उठाई जा रही हैं।

जनसंख्या विस्फोट का सबसे चिंताजनक पहलू उसके दोगुने होने की रफ्तार का लगातार घटता अंतराल है। इससे आबादी पर अंकुश के लिए समय-समय पर लागू की गई सरकारी योजनाओं के खोखलेपन का पता भी चलता है। आजादी से पहले भारत की जनसंख्या में 10 करोड़ की बढ़ोत्तरी होने में 42 साल लगे थे। लेकिन आजादी के बाद 10 करोड़ लोग [illegible] 12 साल में, फिर 10 करोड़ की दूसरी वृद्धि [illegible] साल में, तीसरी वृद्धि साढ़े सात साल मे, चौथी [illegible] साल में और पांचवीं में मात्र पांच साल दो महीने [illegible] लगा। सन् 1971 से 1996 के बीच 25 वर्ष [illegible] की आबादी 38.60 करोड़ बढ़ गई। [illegible] के बाद यह जनसंख्या किसी भी देश [illegible] ज्यादा है। इसी प्रकार 1981 से 19[illegible] वर्ष में भारत की आबादी में 25 [illegible] जो 1990 की अमरीका [illegible] इस आंकड़े को 20 वीं [illegible] हुई जनसंख्या वृद्धि से [illegible] अवधि में केवल 12.[illegible] देश की आबादी 23[illegible] 60 साल में [illegible] के 30 [illegible] करोड़ [illegible]

23.राजस्थान	100	129
24.हिमाचल प्रदेश	77	93
25.मणिपुर	64	82
26.मेघालय	60	79
27.जम्मू एवं काश्मीर	59	76
28.नागालैंड	47	73
29.सिक्किम	45	57
30.अंडमान एवं निकोबार द्वीप	23	34
31.मिजोरम	23	33
32.अरुणाचल प्रदेश	8	10

स्रोत: सेंसस आफ इंडिया

प्रांतो एवं केंद्रशासित प्रदेश में साक्षरता दर

क्रम प्रांत व केन्द्र शासित प्रदेश	साक्षरता दर (7+)		
	व्यक्ति	पुरुष	महिला
1. आन्ध्र प्रदेश	44.09	55.13	32.72
2. अरुणाचल प्रदेश	41.59	51.45	29.69
3. असम	52.89	61.87	43.03
4. बिहार	38.48	52.49	22.89
5. गोवा	75.51	83.64	67.09
6. गुजरात	61.29	73.13	48.64
7. हरियाणा	55.85	69.10	40.47
8. हिमाचल प्रदेश	63.86	75.36	52.13
9. कर्नाटक	56.04	67.26	44.34
10. केरल	89.81	93.62	86.17
11. मध्य प्रदेश	44.20	58.42	28.85
12. महाराष्ट्र	64.87	76.56	52.32
13. मणिपुर	59.89	71.63	47.60
14. मेघालय	49.10	53.12	44.85
15. मिजोरम	82.27	85.61	78.60
16. नागालैंड	61.65	67.62	54.75
17. उड़ीसा	49.09	63.09	34.68
18. पंजाब	58.51	65.66	50.41
19. राजस्थान	38.55	54.99	20.44
20. सिक्किम	56.94	65.74	46.69
21. तमिलनाडु	62.66	73.75	51.33
22. त्रिपुरा	60.44	70.58	49.65
23. उत्तर प्रदेश	41.60	55.73	25.31
24. पश्चिम बंगाल	57.70	67.81	46.56
केंद्र शासित प्रदेश			
1. अंडमान एवं निकोबार द्वीप	73.02	78.99	65.46
2. चंडीगढ़	77.81	82.04	72.34
3. दादरा एवं नागर हवेली	40.71	53.56	26.98
4. दमन एवं दियु	71.20	82.66	59.40
5. दिल्ली	75.29	82.01	66.99
6. लक्ष्यद्वीप	81.78	90.18	72.89
7. पांडिचेरी	74.74	83.68	65.63

स्रोत: सेंसस आफ इंडिया 1991

ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या

जनगणना वर्ष	जनसंख्या (मिलियन में)		कुल जनसंख्या का प्रतिशत	
	ग्रामीण	शहरी	ग्रामीण	शहरी
1901	243	26	89.2	10.8
1911	226	26	89.7	10.3
1921	223	28	88.8	11.2
1931	246	33	88.0	12.0
1941	275	44	86.1	13.9
1951	299	62	82.7	17.3
1961	360	79	82.0	18.0
1971	439	109	80.1	19.9
1981*	524	159	76.7	23.3
1991**	629	218	74.3	25.7

स्रोत. सैंसस आफ इंडिया

* असम में 1991 में जनगणना नहीं हो पायी थी, 1981 की जनगणना के आधार पर अनुमानित आंकड़े हैं।

** जम्मू काश्मीर की अनुमानित जनसंख्या।

धार्मिक सम्प्रदाय

भारत के प्रमुख धार्मिक सम्प्रदाय हैं: हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन और पारसी। इनमें अन्तिम दो संख्या में कम हैं पर अनेक सदियों से महत्वपूर्ण हैं। सन् 1991 में असम को छोड़कर कुल जनसंख्या में हिन्दुओं की संख्या 67.25 करोड़, मुस्लिम 9.52 करोड़ ईसाई 1.88 करोड़, सिक्ख 1.62 करोड़, बौद्ध 0.63 करोड़ जैन 0.33 करोड़ थी। 1981 से 91 तक आबादी में वृद्धि 15.68 करोड़ की हुई है। हिंदुओं की आबादी में वृद्धि 12.48 करोड़, मुस्लिमों की वृद्धि 2.34 करोड़, ईसाई–26 लाख, बौद्ध–17 लाख, सिक्ख–13 लाख और जैन केवल 2 लाख बढ़े हैं।

जहां लगभग हर धर्म के लोगों की आबादी में काफी वृद्धि हुई है जैन धर्म के अनुयायियों की वृद्धि केवल 4.42% ही है। इसके बाद ईसाईयों का स्थान आता है लेकिन उनकी वृद्धि दर 16.89% है। हिंदू 22.78%, सिक्ख 25.48%, बौद्ध 35.98% और मुसलमान 32.76% बढ़े हैं।

जैनों की आबादी बिहार, हरियाणा, मेघालय, मिजोरम, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, सिक्किम, पश्चिम बंगाल और

चंडीगढ़ में घटी है। त्रिपुरा और अंडमान निकोबार जहां जैनियों की आबादी बढ़ी है वह नाममात्र की है। यहां बढ़ोत्तरी केवल 9 लोगों की हुई है।

हिंदुओं की आबादी केवल एक राज्य मिजोरम में घटी है और वह भी केवल 457 लोगों की। बाकी हर प्रदेश में हिंदुओं की आबादी बढ़ी है। ईसाईयों की आबादी केवल आंध्र प्रदेश में घटी है। वहां पहले 14 लाख ईसाई थे अब घट कर 12 लाख रह गये हैं। सिक्ख अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, नागालैंड और पांडिचेरी में घटे हैं लेकिन कुल कमी 61 लोगों की है।

एक दिलचस्प बात यह है कि केरल में 1981 से 91 के 10 वर्षों में बौद्धों की आबादी में न तो कमी आयी है और न ही बढ़ोत्तरी हुई है। 1981 में वहां 223 बौद्ध थे और अब भी इतने ही हैं। लेकिन पंजाब में बौद्धों की जनसंख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। 1981 में वहां 799 बौद्ध थे जोकि 91 में बढ़ कर 24930 हो गये। इस प्रकार यहां बौद्धों की वृद्धि का प्रतिशत 3020.15 है। उत्तर प्रदेश में भी बौद्धों की वृद्धि खासी हुई है। यहां वृद्धि का प्रतिशत 305.99 है। 1991 में यहां बौद्ध 2.21 लाख हैं जबकि 81 में इनकी संख्या केवल-54 हजार थी।

लक्षद्वीप की कुल आबादी 51707 है और 1991 की जनगणना में यहां केवल एक सिक्ख बताया गया है। यानी एक पूरा सिक्ख परिवार भी वहां नहीं है। 1981 की जनगणना में तो वहां एक भी सिक्ख नहीं था।

कुल आबादी में वृद्धि के प्रतिशत के आंकड़ों को देखें तो स्थितियां कुछ भिन्न दिखती हैं। देश की कुल आबादी में हिंदुओं का प्रतिशत चूंकि 0.68 घटा है तो इसका असर बिहार (0.55), गुजरात (0.50), हरियाणा (0.15), कर्नाटक (0.32), मध्य प्रदेश (0.16), महाराष्ट्र (0.28), मणिपुर (2.37), मेघालय (3.36), मिजोरम (2.09), नागालैंड (4.24), उड़ीसा (0.75), पंजाब (1.47), राजस्थान (0.28), तमिलनाडु (0.19), त्रिपुरा (2.84), उत्तर प्रदेश (1.57), पश्चिम बंगाल (2.24) और दादर एवं नागर हवेली (0.08) पर भी पड़ा है। ईसाईयों का कुल आबादी में 0.13 प्रतिशत घटा है। सिक्खों का 1981 से 91 तक की आबादी में प्रतिशत न तो घटा है और न ही बढ़ा है।

देश में मुसलिम समुदाय की आबादी दूसरे प्रमुख धार्मिक समुदायों की तुलना में तेजी से बढ़ी है। 1981–91 के बीच इसमें 32.76 प्रतिशत वृद्धि हुई जबकि इस दौरान जनसंख्या वृद्धि का राष्ट्रीय औसत 23.79 प्रतिशत रहा।

भारत के जनगणना आयुक्त की ओर से जारी रिपोर्ट के अनुसार 1981–91 के बीच देश की मुसलिम जनसंख्या [illegible] करोड़ 40 लाख से [illegible] हिन्दू समुदाय की जनसंख्या में 22.[illegible] प्रतिशत की वृद्धि हुई, [illegible] दर राष्ट्रीय औसत की तुलना में [illegible] तीस राज्य और केन्द्र शासित [illegible] में से 25 में मुसलिम जनसंख्या अन्य समुदायों की तुलना में [illegible]

1991 में देश की कुल जनसंख्या में [illegible] हिस्सा 10.88 प्रतिशत [illegible] 11.67 प्रतिशत [illegible]

रह गया। इस अवधि में ईसाई, सिख और जैन समुदायों की जनसंख्या 16.81, 25.48 और 4.42 प्रतिशत बढ़ी। केवल बौद्ध धर्मावलंबी जिनकी आबादी केवल 0.77 प्रतिशत है।

रिपोर्ट के मुताबिक 1981 में हिन्दू आबादी 54 करोड़ 77 लाख 90 हजार थी जो 1991 में बढ़कर 67 करोड़ 25 लाख 90 हजार हो गई। मुसलमान सात करोड़ 17 लाख 20 हजार, ईसाई एक करोड़ 61 लाख 60 से एक करोड़ 88 लाख 90 हजार, सिख एक करोड़ 29 लाख 40 हजार से एक करोड़ 62 लाख 40 हजार, बौद्ध 46 लाख 50 से बढ़कर 63 लाख 20 हजार और जैन 31 लाख 90 हजार से बढ़कर 33 लाख 30 हजार हो गए।

रिपोर्ट में महिला पुरुष अनुपात को देखें तो प्रति एक हजार पुरुष के बीच सिक्खों में 888, हिन्दुओं में 925, मुसलमानों में 930, जैनियों में 946, बौद्धों में 952 और ईसाइयों में 994 महिलाएं थीं। अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, नागालैंड, चंडीगढ़, दादरा और नागर हवेली व दिल्ली में मुसलिम आबादी की वृद्धि दर 50 प्रतिशत से अधिक रही।

धार्मिक समाजशास्त्रियों के लिए रोचक तथ्य 1981 की जनगणना से मिलता है। गृहस्थ जनसंख्या का परिशिष्ट 183 उपवर्गों की सूची देता है जिनको अन्य धर्म और सम्प्रदाय के रूप में एक साथ गिना गया है। इनमें से 71,630 जोरोस्ट्रियन और 5,618 यहूदी है। 25,416 लोग धर्म से आदिवासी और 1367 जनजाति (नागालैंड में) हैं, 119 आत्मवादी और 25,985 जो सिर्फ गैर–ईसाई (मणिपुर, मेघालय तथा नागालैंड में 796 पैगन इन्हीं तीन राज्यों में और मणिपुर में 1,215 मीयन सम्प्रदाय के लोग हैं)।

अन्य जनजातियों ने अपनी विशिष्ट [illegible] धर्म के रूप में गिनाया है – उदाहरण के लिए [illegible] 484, ओरान, 32,252 संथाल, 148[illegible] गोंड, 4133 हो, 148,437 [illegible] 1296 नागा लोगों का उल्लेख है।

3382 संख्या वाले [illegible] अनुयायी ही हैं [illegible] है जैसे अग्रवाल, [illegible] मारवाड़ी, मलयाली, [illegible]

इनसे अधिक [illegible] के लगभग 29,[illegible] (तमिलनाडु, [illegible]

ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर) बताया है। मानव धर्म के 816 अनुयायी हैं जिनमें आधे से अधिक महाराष्ट्र में हैं ।

1981 की जनगणना कुछ अन्य रोचक तथ्य भी देती है: "भारत में असम को छोड़ कुल उर्वरता दर 3.9 ग्रामीण क्षेत्रों में, 2.8 शहरी क्षेत्रों में और 3.6 दोनों में मिलाकर हैं।

"यह भी ज्ञातव्य है कि मुसलमानों में उर्वरता दर सबसे अधिक है, इसके बाद बौद्धों, हिन्दुओं, सिखों, जैनों और ईसाइयों में है ।"

"राष्ट्रीय स्तर पर जैनियों और ईसाईयों में कुल उर्वरता दर समान 26 है। लेकिन ग्रामीण और शहर क्षेत्रों में जैनियों में ईसाईयों से अधिक उर्वरता है ।

सभी क्षेत्रों में कुल उर्वरता दर में यह स्पष्ट विरोध ग्रामीण–शहरी विभेदी–मिश्रण के कारण है । सिक्खों की कुल उर्वरता दर 3.4, हिन्दुओं और बौद्धों के लिए 3.6 और मुसलमानों की 4.1 है। विभिन्न जातियों में ईसाई स्त्री अनुपात पुरुषों की तुलना में बहुत अधिक है । प्रति 1000 पुरुषों में उनमें 992 स्त्रियां, बौद्धों में 953, जैनियों में 941, मुसलमानों में 937, हिन्दुओं में 933 और सिक्खों में 880 है ।

लेकिन दूसरी तरफ जनगणना के अनुसार ईसाई स्त्रियां देर से शादी करना पसंद करती हैं और इसलिए विवाहित स्त्रियों की उर्वर आयु वर्ग (15 वर्ष से 49 वर्ष) का प्रतिशत केवल 62.15 है, जबकि सिक्खों में यह 70.40%, जैनियों में 72.09%, बौद्ध में 79.26%, मुसलमानों में 80.42% और हिन्दुओं में 82.35% है ।

भारोपीय का उद्भव, विकास और प्रसार

भारत से लेकर यूरोप तक फैली भाषाओं में कुछ गहरी समानताएं हैं। इसका क्षीण आभास आज से दो–ढ़ाई हजार साल पहले भी था (पतंजलि) कि जिन शब्दों का संस्कृत में व्यवहार होता है, उनका प्रयोग देशांतर में भी होता है और इससे इनके इतने रूप हो जाते है कि एक शब्द को भी पूरी तरह समझ पाना एक महान उपलब्धि हो सकती है। इसका आभास धर्मप्रचार के लिए सदर देशों में जाने वाले बौद्ध हुआ है। इसके साथ ही इसका उन सभी भाषाओं से जिनको इस परिवार में शामिल किया जा सकता है, सीधा संबंध है; इसलिए, यह परस्पर दूरस्थ लगने वाली यूरोपीय भाषाओं की गुत्थियो को सुलझाने में समर्थ है।

मूल भाषा

ऐसी स्थिति मे विद्वानों को लगता रहा कि मूल भाषा या

जोड़ने और अपने देश को उस भाषा का मूल क्षेत्र सिद्ध करने की होड़ सी मच गई। यह आग्रह जर्मन विद्वानों में सबसे अधिक था, जो अंत तक बना रहा। पर दूसरे देशों के विद्वान, जैसे फ्रांसीसी, अपने को शुद्ध आर्य सिद्ध करने और मूल क्षेत्र को अपने देश में खींच लाने के लिए कम व्यग्र नहीं थे। इस नोक-झोंक में दोनों के बीच अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए जो तकरार छिड़ी, उससे नृतत्व नाम से अध्ययन की एक अन्य शाखा का जन्म हो गाया।

इस विवाद के कारण यह तय नहीं हो पा रहा था कि यह भाषा यूरोप में कहां बोली जाती थी। विवाद से बचने के लिए यह तय हुआ कि यह 'यूरोप में ही कहीं, समह्वेयर इन यूरोप/ बरो/बोली जाती रही होगी। यह 'कहीं' कहां और किस तरह तय हो, यह अलग प्रश्न था। इसलिए इस गोलमटोल ढंग से यूरोप के बीच रख दिया गया। इसके नामकरण को लेकर भी विवाद जारी रहा। अंततः, इसके लिए इंडोयूरोपीय, अर्थात् भारोपीय, शब्द स्वीकार कर लिया गया जिससे इसमें पूरे यूरोप का साझा रहे।

वह भाषा जिसे लुप्त मान लिया गया था उसकी पुनःसर्जना के प्रयत्न किए गए। इसके लिए परिवार की अधिकांश भाषाओं में ध्वनिगत और अर्थगत समानता रखने वाले शब्दों की तुलना करते हुए, बहुनिष्ठ घटकों के आधार पर धातु य मूलदंड, स्टेम, कल्पित किए गए। कभी संस्कृत वैयाकरणों ने संस्कृत के समग्र शब्दभंडार के लिए कुछ धातुओं की कल्पना की थी। वे उससे संस्कृत ही नहीं, प्राकृत, अपभ्रंश और आधुनिक आर्य भाषाओं तक के शब्दभंडार की व्युत्पत्ति कर सकते थे, इसलिये इनकी जो भी सीमायें मानी जायें, उनकी पद्धति की वैज्ञानिकता को आज तक चुनौती नहीं दी गई। आद्य भारोपीय की धातुओं के साथ कठिनाई यह है कि इनसे पूरे शब्द भंडार की व्याख्या नहीं हो पाती।

वंश वृक्ष

पिछली दो शताब्दियों में अथक परिश्रम करते हुए यूरोपीय विद्वानों ने भारोपीय भाषाओं का जो वंशवृक्ष बनाया है उसके अनुसार इसकी दो प्रधान शाखाएं केंटम और सतेम हैं। इनमें केंटम की अनेकानेक शाखाएं और उपशाखाएं हैं और यह यूरोप तक सीमित है इसलिए सतेम से अधिक प्राचीन है। सतेम पूर्वी-उत्तरी यूरोप से लेकर भारत तक फैली है और इसकी दो ही शाखाएं-भारतीय और ईरानी हैं, इसलिए यह नई है। यूरोपीय शाखाओं, प्रशाखाओ और टहनियों का नामोलेख करने के लिये भी कई पन्ने लग जायेंगें, इसलिये हम इसकी शाखाओं का ही उल्लेख करना पर्याप्त समझते हैं। ये हैं: जर्मनिक, केल्टिक, रोमांस, स्लाविक, लिथुआनियन और लेटवियन तथा ग्रीक।

'यूरोप में कहीं', या 'मध्य यूरोप' में रख कर इस भाषा को यूरोपीयों की साझी संपदा तो बना दिया गया था, पर भाषा को रक्त से जोड़ते समय नैन-नक्श का सवाल उठता था जो फिर उन विवादों को उभार देता जिसे शांत करने के लिए 'कहीं' और 'सबके साझे मे' जैसे हल निकाले गए थे। कुछ खींच-तान के बाद समझ में यह बात आई कि भाषा का रक्त संबंध से कोई संबध नहीं। पर जर्मन मानसिकता में बीसवीं शताब्दी तक आर्य जाति और रक्त का दावा बना रहा।

ये भारत में पहुंचे कैसे? इसका एक ही उत्तर था कि आर्यों ने भारत पर आक्रमण किया। यहां पहले से बसे काले लोगों को अपना दास बनाया और अपनी सत्ता स्थापित कर दी क्योंकि ऋग्वेद में देवों को गोरा और असुरों को काला तो बताया ही गया है, कालों पर गोरों की विजय भी दिखाई गई है। इस तथ्य को अभी किनारे रखा गया कि प्रकाश और अंधकार की इन शक्तियों के बीच युद्ध का कोई अन्य आशय है।

इनमें से किसी के पक्ष में निर्णायक प्रमाण नहीं थे परंतु इन मान्यताओं को बार-बार दुहरा कर एक ऐसा भ्रम बनाये रखा गया कि यह सच्चाई सा लगने लगा।

सबसे पहले तो हम नाम को ही लें, जो भ्रामक तो है ही, इसमें अतिव्याप्ति भी है। कारण इससे ऐसा लगता है जैसे इसमें भारत और यूरोप की सभी भाषाओं का समावेश है, जब कि यूरोप में हंगरी, फिनलैंड, एस्टोनिया, लैपलैंड, मोल्दाविया, अंशतः फ्रांस और स्पेन के और भारत में द्रविड़ और मुंडा या कोल तथा नाग भाषा-समूह के अनेक क्षेत्र हैं जिनको भारोपीय में नहीं माना जाता। जब हम संस्कृत या वैदिक जैसी किसी भाषा के लिए इसका प्रयोग करने को बाध्य होते हैं तो इसकी भ्रामकता बहुत बढ़ जाती है।

किसी एक भाषा से भारोपीय समुदाय की सभी भाषाओं के जन्म की सूझ के पीछे कहीं संस्कृतज्ञों का यह विश्वास काम कर रहा था कि दूसरी सभी भाषाएं संस्कृत से पैदा हुई है। उस भाषा के लुप्त होने की घोषणा, बिना किसी छानबीन के, इतनी जल्दी में इसलिए की गई कि संस्कृत की जिन विशेषताओं को स्वीकार किया गया था, उनके आधार पर संस्कृतज्ञों का यह दावा सही सिद्ध हो जाता। यह शासकों के मनोबल को गिरा सकता था। इसके बाद भी वे सभी विद्वान जो यह मानते थे कि वेद भरोपीय अभिलेख हैं न कि भारतीय (हिटनी), या यह कि वेद भारोपीय (आर्य) भाषा के शैशव के ग्रथ है (मैक्समूलर), या यह कि ऋग्वेद के पुराने मंडल भारत से बाहर रचे गए थे (हिल्लेब्रांट, ग्रियर्सन, बरो, कोसबी) वे प्रकारांतर से स्वीकार कर रहे थे कि आद्य भारोपीय वैदिक से अभिन्नता या सर्वाधिक निकटता रखती है। अत: आधुनिक यूरोपीय भाषाओं को इसके समकक्ष रख कर धातुओ की कल्पना करने में एक खोट थी। इससे यूरोप मे इस भाषा का प्रवेश जिस केंद्र या केंद्रों से हुआ था, उसके/ उनके पूर्वरूप का परिचय तो मिल सकता था, आद्य भारोपीय का नही। पर जो विद्वान यूरोप को ही मूल क्षेत्र सिद्ध करने पर उतारू थे, उनके लिए यह अकल्पनीय था। फिर [illegible] के कारण निकटतम ध्वनि और अर्थ रखने वाले [illegible] एकाधिक धातुओ की सर्जना करनी पड़ती है। [illegible] भारोपीय का आभास और दूसरी यूरोप में उसके [illegible] ठीक पहले या पहुंचने के बाद परंतु अन्य [illegible] पहले के क्षेत्र मे पयुक्त भाषा में प्राप्त मूल [illegible] का तद्भव, या भारतीय बोलियों के [illegible] सकती है।

इसे मध्य यूरोप की भाषा ने उस भूभौतिक परिवेश के

का सहारा लिया था। दो भौगोलिक परिवेशों में वनस्पतियां भिन्न होंगी ही और यदि यूरोपीय भाषाओं की संख्या इतनी बड़ी है कि वह भारोपीय भाषाओं का जंगल प्रतीत हो तो, अधिकांश भाषाओं से जिन वनस्पतियों की पुष्टि होगी, वे उसी परिवेश की होंगी ही। वर्च/वर्ज अकेला ऐसा पौधा था जिसकी निकटता भूर्ज से थी। यूरोपीय निवास के लिए यह अकेला प्रमाण था। परंतु पुरावानस्पतिकी के एक अध्येता (फीर्टिक पाल) ने परागविश्लेषण से पाया कि जिन पौधों को जिनको भारोपीय परिवेश का पौधा माना गया था, उसमें अधिकांश तो प्रस्तावित काल में उसमें उगते ही नहीं थे और जो उगते थे वे बहुत विरल थे। इनमें से कुछ जैसे ऐपल के लिए मूल शब्द तुर्की के क्षेत्र की किसी भाषा से लिया गया था। यह स्थिति वाईन या अंगूर की लता की थी। इसकी बागवानी 2500 ई.पू. के आसपास आरंभ होती है और यह भी उसी क्षेत्र से आगे बढ़ी थी। स्पष्ट है कि ये नाम उस भाषा के हैं जो तुर्की से आगे यूरोप की ओर बढ़ी थी, न कि इसके विपरीत।

वानस्पतिक शब्दावली को पूर्वनिश्चित निष्कर्षों पर पहुंचने के लिए चुना गया था। अन्यथा साझी शब्दावली से ऐसी जलवायु का पता चलता है जिसमें साल में कुछ समय बहुत अधिक गर्मी पड़ती थी और बरसात बहुत अधिक होती थी (ओटो श्रेडर)। भौतिक संस्कृति से यह सिद्ध होता था कि वे नौचालन में दक्ष थे। कताई-बुनाई करते थे और सूती तथा ऊनी दोनों तरह के वस्त्र बुनते और पहनते थे। वे सिले I, अनसिले वस्त्र उसी तरह पहनते थे जैसे भारत में धोती र साड़ी पहनी जाती थी। इन बातों की ओर ध्यान ही नहीं दिया गया। यह इस बात का प्रमाण था कि वे जिस भौगोलिक परिवेश में रहते थे, वह ऊष्ण कटिबंधीय था और जिस काल में वे यूरोपीय क्षेत्र मे पहुचे थे उस काल में वे वनस्पतियां उसमें प्रधान रूप से उगती थीं जिनको आद्य-भारोपीय के लिए प्रस्तावित किया गया था। इससे यह भी सिद्ध होता था कि आद्य-भारोपीय बोलने वाले पशुचारण की अवस्था मे नहीं थे। उनकी एक विकसित संस्कृति थी, जब कि दूसरी सहस्राब्दी ई. पू. के मध्य तक यूरोप का सास्कृतिक स्तर पशुचारण से आगे नहीं बढ़ पाया था। इसीलिए आर्यों को भी पशुचारी सिद्ध करने के प्रयास किए गए थे, जब कि ऋग्वेद से उन्नत और चतुर्मुखी विकास की पुष्टि होती है।

सतेम और केंटम का वर्गीकरण भी निर्दोष नहीं है। केंटम में भी सतेप के तत्व पाए जाते है और यूरोप की ही पूर्वी-उत्तरी भाषाएं सतेम वर्ग में आती है। ये दो भाषारूप युरोप में नहीं उभरे थे। पश्चिमी दक्षिणी चीन के तुर्किस्तान क्षेत्र तूखार से प्राप्त प्राचीन अभिलेखों में, जिन्हें तूखारियन-ख कहा जाता है, केंटम के लक्षण मिलते हैं। यह उस लघु पामीर के निकट है जिसे कभी मैक्समूलर ने संयुक्त भारोपीय परिवार का मूल निवास घोषित किया था।

वंशावली तैयार करते हुए वंशवृक्ष की बुनियादी अपेक्षाओं की अवहेलना की गई है। यह स्वीकार किया जाता है कि संस्कृत उपलब्ध भाषाओं में सबसे प्राचीन, अधिक विशद, अधिक निखोट, अधिक सुपरिष्कृत है और यही एकमात्र ऐसी भाषा है जो ग्रीक, लातिन, जर्मनिक, लिथुआनी आदि सभी से सीधा जुड़ाव रखती है, जबकि उनमें परस्पर अलगाव है। इससे संस्कृत सभी की मूल भले न सिद्ध हो, वह तना तो सिद्ध होती ही है, जिससे ये शाखाएं जुड़ी हैं। एक से बहु का विशाखन तो संभव है, पर बहु से एक का नहीं।

फिर, यदि वंशवृक्ष का तर्क सही है तो पीछे की ओर लौट कर हमें एक ऐसी भाषा पर पहुंचना चाहिए जिसमें पूरी एकरूपता हो और उसकी बोलियां न हो। कारण अनेक से अनेक की उत्पत्ति में जन्मगत संबंध का आधार ही समाप्त हो जाएगा। परंतु पुनर्सर्जित रूपों से एक ऐसी भाषा का पता चलता है जिसमें अनेक बोलियां थीं। इतना ही नहीं। कुछ आत्मग्रस्त यूरोपीय भाषाविदों ने मूल की तलाश में इससे भी पीछे जाकर जिस मूलातिमूल की तलाश की है/मैलोरी/ उसका नाम उन्होंने नोस्त्रातिक लैंग्वेज, अर्थात् 'हमारी भाषा', रखा है। पर इसमें भी उन्हें बहुत सी बोलियां दिखाई देती हैं और इस आधार पर उन्होंने दावा किया है कि सामी, द्रविड़ और आस्त्रिक आदि भाषाएं और इनका व्यवहार करनेवाले यूरोप में ही रहते थे और 'हमारी भाषा' बोलते थे। यह समय में उल्टी यात्रा है। इससे केवल यह सिद्ध होता है कि अकेले भारोपीय ही नहीं, दूसरी भाषाओं के तत्व भी यूरोप में लगभग उतने ही प्राचीन चरण में पहुंचे थे। इसलिए खोज यह होनी चाहिए कि किस क्षेत्र में इन भाषाओं का संपर्क भारोपीय से संभव था। भारत में द्रविड़, कोल या आस्त्रिक ये निजी भाषा क्षेत्र हैं। स्थान नामों पर ध्यान दें/रामविलास शर्मा/तो पाएंगे कि इन दोनों के छोटे-छोटे अंचल उसी भाषा क्षेत्र में बाद तक बने रहे हैं जिसमें उस भाषा के अंचल थे जिसा विकास वैदिक में हुआ-मुंडा झाड़-पेड़, हिं.झाड़ी, झालवाड़, झाड़खंड, झरिया, बिड़हर/हरियाणा/बिड़हर/ पूर्वी उत्तर प्रदेश/बिरहोर-एक मुंडा उपजाति/ यहां की संपर्क भाषा में इनके तत्वों का समावेश नितांत स्वाभाविक था। वैदिक बोलने वाले तुर्की में दूसरी सहस्राब्दी से कुछ पहले पहुंच चुके थे। दूसरी सहस्राब्दी के मध्य तक उनकी भाषा उस क्षेत्र की भाषाओं से इतनी प्रभावित हो चुकी थी कि इसकी पहचान कुछ शब्दों और देवनामों से ही संभव थी। इसके लूवियन, इलीरियन और हत्ती, तीन रूप बन गए थे। यही इसमें सामी के तत्व मिल सकते थे। आगे जाकर यूरोप के पुराने भाषाक्षेत्रों में पहुंचने पर इसके और भी कई रूप होने ही थे। इससे हम यह भी समझ सकते हैं कि बोलियां किसी भाषा के विघटन या विशाखन से पैदा नहीं होती हैं। ये किसी प्रधान भाषा के दूसरे भाषा क्षेत्रों में फैलने से उन भाषाओं के अवशिष्ट तत्वों की अतिजीविता से पैदा होती हैं।

एक शाखा की जो उपशाखाएं गिनाई जाती हैं उनकी निकटता का ठीक क्या कारण है, यह तक किसी को नहीं मालूम। 'परिवार की सीमाओं के बारे में या इसे किन मुख्य समूहों में बांटा जा सकता है, इसे लेकर अब कोई बहस नहीं है, पर इन समूहों के अंत: संबंध को लेकर आज भी मतभेद बने रह गए हैं। इसका कारण यह है कि तुलनात्मक भाषाविज्ञान की क्लासिकी पद्धति इस मामले में कोई निर्णायक उत्तर देने की स्थिति में नहीं है। देखना यह है कि क्या नई पद्धतियां इसमें सफल हो पाती हैं या नहीं (ग्लीसन)।' फिर उससे पीछे की अवस्था के विषय में, जैसा कि हमने देखा, वंशवृक्ष की मान्यता तो और भी हास्यास्पद हो जाती है।

र्य आक्रमण

भारोपीय भाषा भारत में आर्य आक्रमण से पहुंची थी, यह धारणा औपनिवेशिक सत्ता को जायज ठहराने के लिए रोपित की गई थी। यह यहीं तक सीमित नहीं था, जितने और भाषाएं – कोल या मुंडारी, द्रविड़ आदि – भारत पाई जाती हैं उनका व्यवहार करनेवाले एक दूसरे पर क्रमण करते हुए ही आए थे। रोचक बात यह कि ये सभी रोप के ही किसी न किसी कोने से ही चली थीं। आक्रमण बात केवल विशेष रूप से भारत के ही संदर्भ में की जाती यूरोप के ही इतर क्षेत्रों पर आक्रमण नहीं हुआ था। वहां हीं कहीं आक्रमण की धुंध सी तैयार की गई है, जैसे ग्रीस बारे में, जो व्याख्या के बाद गलत सिद्ध होती है। आज रातत्व, नृतत्व/हेंफिल, केनेडी, लूकाक्स/ आदि से यह सिद्ध हो चुका है कि भारत पर ऐसा कोई आक्रमण न तो द्रविड़ों का हुआ, न आर्यों का। कम से कम 4500 ई.पू. से भारतीय मानव समुदाय की धारा पहली सहस्राब्दी ई. पू. के मध्य तक अव्याहत चलती रही। इसके बाद, दूसरी शताब्दी से पहले कभी, सिंधु के पार के क्षेत्र/सराय खोला/में पहली बार नए तत्वों का प्रमाण मिलता है।

इस तरह हम पाते हैं कि भारोपीय के विषय में समस्त मान्यताएं यूरोप की वर्चस्ववादी जरूरतों से तैयार की गई थीं और इसलिए बाद में इनकी विसंगतियों को लक्ष्य करने के बाद भी इनको पूरी तरह नकारा नहीं गया, पर ये कभी विश्वसनीय न बन पाईं। इस घालमेल ने तुलनात्मक भाषाविज्ञान या 'साइंस आफ लैंग्वेज' (मैक्समूलर) को भाषाविज्ञान के षडयंत्र में बदल दिया और इसके लिए फिर फिलोलोजी या भाषाशास्त्र शब्द अधिक उपयुक्त पाया जाने लगा।

भाषा परिवार के लिए भाषा समुदाय और उपसमुदाय का प्रयोग अधिक समीचीन है। कारण, भाषा एक सामाजिक उत्पाद है। सामाजिक उत्पादों और संस्थाओं का चरित्र जैव प्रजनन के विपरीत होता है। जैव प्रजनन में एक अनेक में विभाजित होता चलता है। सामाजिक संस्थाओं और विकासों में अनेक जुड़ कर एक होते हुए अपने से बृहत्तर रूप लेते जाते हैं और अपनी जैव सीमाओं को अतिक्रांत करते हैं। भाषाओं का विकास, विस्तार यहां, तक कि ह्रास और लोप तो होता है, प्रजनन और वंशवृद्धि नहीं।

एक ही भाषा अनेकानेक भाषाक्षेत्रों में व्यवहार में आने लगती है तो उसमें इतनी भिन्नता आ जाती है कि एक क्षेत्र का व्यक्ति दूसरे क्षेत्र में उसी भाषा में कही बात को समझ नहीं पाता। इसका अच्छा उदाहरण अंग्रेजी है। शिथिलता से काम लें तो विश्व में फैली अंग्रेजी के सभी रूपों को अंग्रेजी परिवार में रखते हुए इसकी भी शाखाएं और उपशाखाएं नाई जा सकती हैं। यदि इनमें अंग्रेजी के ही उच्चारण में युक्त ध्वनियों की तुलना करते हुए अंग्रेजी की ध्वनिमाला तैयार की जाए तो वह भी अंग्रेजी की ध्वनिमाला से उतनी ही विचित्र और विशद होगी जितनी संस्कृत से भारोपीय की कल्पित ध्वनिमाला है। उदाहरण के लिए 'वी' के बंगाली उच्चारण के आधार पर इसमें 'भ' और मराठी उच्चारण के आधार पर 'व्ह', और हिन्दी उच्चारण के आधार पर 'व' की तीन ध्वनियां तो एक ध्वनि से ही बन जाएंगी। अंग्रेजी के ये सभी अवांतर रूप अंग्रेजी की संतान नहीं, अपितु अंग्रेजी ही हैं।

अब हम इस पूरी समस्या पर नए ढंग से विचार करते हुए यह देख सकते हैं कि यूरोप तक फैलने वाली यह भाषा किन परिस्थितियों में विकसित हुई थी? इसका नाभिकीय क्षेत्र क्या था? इसके विस्तार के चरण क्या थे? इसमें किन-किन चरणों पर किन नए तत्वों का समावेश होता गया? इसने उस पूरे भूभाग पर एकाधिकार कर लिया या वहां की विविध भाषाओं को इस सीमा तक प्रभावित किया कि एक बार तो यह भ्रम पैदा हो जाए कि ये सभी उसी की संतान हैं जब कि उनका प्राचीन भेदक चरित्र आज तक बना रह गया है?

वैदिक भाषा

ऋग्वेद से जिस भाषा का परिचय मिलता है वह संस्कृत से कम समृद्ध या कम ओजस्वी भाषा नहीं है। यह इतनी विकसित भाषा है कि इसमें सूक्ष्मतम अमूर्त संकल्पनाओं को व्यक्त करनेवाली समृद्ध और भेदक शब्दावली थी। कोई भाषा इतनी उन्नत अवस्था में तभी पहुंच पाती है जब वास्तविक जीवन में वैसी ही समृद्धि और सूक्ष्मदृष्टि आ सकी हो। इसके विकास के लिए जिस सांस्कृतिक परिवेश की आवश्यकता है वह पूरे भारोपीय जगत में उस काल में हड़प्पा सभ्यता से बाहर नहीं मिलता। भारत में कोई भाषा नहीं है जिसमें हड़प्पा के विकासों के अनुरूप तकनीक शब्दावली हो। तथाकथित आर्य भाषाओं के अतिरिक्त द्रविड़ अकेली है जो ईस्वी सन से कुछ शताब्दी पहले से उन्नत संस्कृति की भाषा बनी थी, परंतु उसकी भी तकनीकी शब्दावली का 40 प्रतिशत संस्कृत से लिया गया है (काल्डवेल)। ऐसी स्थिति में हम पाते हैं कि हड़प्पा की व्यावहारिक भाषा वैदिक थी। इसका प्रसार आर्थिक और सांस्कृतिक कारणों से, हड़प्पा सभ्यता के प्रसार के साथ हुआ और इसके सीधे संपर्क से पहले वहां के वे लोग आए जो इन गतिविधियों से जुड़े हुए थे और फिर इसका प्रसार, मुख्यतः उनके माध्यम से शेष स्थानीय जनता के बीच हुआ। तुर्की इसका अच्छा उदाहरण है। वहां से प्राप्त अभिलेख चौदहवीं शताब्दी के हैं, परंतु यह माना जाता है कि इस क्षेत्र में आर्य 2000 ई.पू. के लगभग, या कहें, परिपक्व हड़प्पा की अंतिम शताब्दियों में ही पहुंच गए थे, क्योंकि इस काल के आसपास असीरियाई व्यापारियों के अक्कादी भाषा और कीलक लिपि में लिखे अभिलेखों में आर्य भाषा के कुछ शब्द मिलने लगते हैं। किसी अन्य भाषा-भाषी के अभिलेखों में दूसरी भाषा के शब्द तत्काल नहीं आ जाते। अक्सर इसमें शताब्दियां लग जाती हैं। इसलिए इस प्रसार को परिपक्व हड़प्पा काल में रखा जा सकता है। उस क्षेत्र में इन्होंने असीरियाई व्यापारियों से क्रमशः उनका व्यापारिक एकाधिकार [illegible] लिया था। आगे चल कर इन्होंने राजनीतिक और स[illegible] भी पा लिया था और उस क्षेत्र के युद्धों में [illegible] भाग भी लेने लगे थे [illegible] आभास द्वितीय पक्ष में बार[illegible] भागीदारी में मिलता

थे। प्राचीन असीरियाई अभिलेखों में इन्हें पूरब के रणबांकुरे, माइटी मेन आफ दि ईस्ट, कहकर याद किया गया है।

हड़प्पा सभ्यता आकाश से टपकी नहीं थी, हजारों साल के दौरान इसका विकास हुआ था। यह किसी एक क्षेत्र से, जिसके विषय में अभी पुरातत्वविदों के बीच कुछ अनिश्चय है, विकसित होकर, क्रमशः उस विशाल क्षेत्र में फैली थी जो जम्मू से लेकर उत्तरी महाराष्ट्र तक और गंगाघाटी से लेकर बलूचिस्तान तक के भूभाग को समेटे हुआ है। यह अपने समय की सबसे विशाल व उन्नत सभ्यता थी। इसकी भाषा अपने समय की सबसे उन्नत भाषा थी। इसकी ध्वनिमाला अपने ही नहीं, बाद के समयों की भी सबसे विशद ध्वनिमाला थी। भाषा की शुद्धता पर इसका जोर होने के बाद भी इसमें क्षेत्रीय प्रयोग मिलते हैं जो इस बात को प्रकट करते है कि यह अनेक भाषा क्षेत्रों में फैली थी, जो इसकी बोलियां बनती चली गई थीं। परंतु अपने मूल रूप में न तो यह इतनी समृद्ध थी, न इसकी ध्वनिमाला इतनी विशद। यह कुछ तो दूसरे क्षेत्रों की भाषिक संपदा और ध्वनिमालाओं को आत्मसात् करने से पैदा हुई समृद्धि थी, कुछ सांस्कृतिक विकास के परिणाम स्वरूप। कुछ ध्वनियां अन्य भाषा भाषियों की अपनी सीमाओं के कारण भी पैदा हो सकती है। अतत कुछ ध्वनिया वैयाकरणों द्वारा कल्पित और कुछ शब्दावली कवियों और विद्वानों द्वारा भाषिक इजीनियरी से गढ़ी हुई।

सांस्कृतिक उन्नयन

हड़प्पा सभ्यता के आद्य रूप जब से मिलने लगते है ..स बहुत पहले से एक विशाल क्षेत्र मे जिसका केंद ..मप्रदेश को माना जा सकता है नवपाषाणी संस्कृति 'पशुपालन और कृषि तथा इनके साथ तकनीकी प्रयोगशीलता देखने मे आता है। इस विशाल क्षेत्र मे बहुत से गणो के लोग बसे हुए थे। इनमे से जो नाम ऋग्वेद मे आए है, ये है अनु द्रुह्यु, शिग्रु अज यदु तुर्वश भृगु तृत्सु, पूरु कुरु चेदि भरत, कुशिक, शिव विषाणी पक्थ भलान अलि पणि कीकट आदि। कुछ गणनामो को जैसे अज- बकरा अलि- भ्रमर, कौशिक–उल्लू विषाणी सीग लगाने वाले, टोटम से निकले गणनाम माने गए है (कोसबी)। कुछ के नाम कभी व्यक्ति के लिए आए है। कभी बहुवचन मे गण या दल के लिए। कुछ को दस्युओं या असुरो का पर्याय माना गया है पर ये भी ऐसे गणों के सूचक हो सकते है जिनकी भाषा संस्कृति और जीविका के साधन भिन्न थे और जिनसे उनके टकराव होते रहते थे। कुछ व्यक्ति नाम ऐसे हैं जिनका अर्थ मनुष्य होता है, और इस अर्थ मे प्रयोग मे भी आए है जैसे नहुष, मनु। ये उन जनों की याद दिलाते है जिनका शाब्दिक अर्थ मनुष्य है जैसे मुंडा, नग, मग, अत ये उन जनों के सूचक हो सकते हैं, जिनकी अलग भाषा थी, पर जो कृषि तंत्र से उभरने वाली नई समाज–व्यवस्था में खपकर अपनी पुरानी पहचान खोते चले गए। इनमें मनु गण वह मुख्य गण हो सकता है जिसके नाभिकीय क्षेत्र मे बसे उस गण और भाषा से संबंध हो जिसमें भारोपीय का आद्यरूप प्रचलित था।

इससे यह प्रकट होता है कि अनेकानेक भाषाएं बोलने वाले जन जो आहारसंच से पशुपालन और कृषि की ओर अग्रसर हुए थे, इस क्षेत्र में बसे हुए थे, परंतु बीच बीच में जंगलों और पहाड़ों में ऐसे लोग भी थे जो अभी निम्न स्तर पर जीवन यापन कर रहे थे, जिन्हें वृक, अहि, वनर्गू, अराध और अकर्मा कहा गया है। यदि आर्य द्रविड़ या कोल भाषा के रूप में इनको समझने चलें तो उसी तरह इनको समझ न पाएंगे जैसे वर्णो में बांट कर इनके गणों को समझना चाहें तो उसमें कठिनाई होगी। आज भी इस देश में पांच सौ से अधिक भाषाएं बोली जाती हैं और एक–एक बोली क्षेत्र में ऐसी विशिष्टओ वाली उपबोलियां मिलती हैं जो इतनी लंबी रगड के बाद भी अपनी पहचान पूरी तरह नहीं मिटा पाई है। इनसे इस बात का कुछ अनुमान हो सकता है कि कितनी भाषाओ के क्रमिक अंतर्मिलन से उस भाषा का प्रौढ़ रूप विकसित हुआ था जिसका आगे चल कर दूरतम देशों तक विस्तार हुआ था। इस विस्तार क्रम में भी इसने नए तत्वों को ग्रहण, पुराने तत्वो का परिहार किया और इसका ध्वनितंत्र और शब्दभंडार भी बदला और बढ़ा।

इसी कारण अपनी शुद्धता बनाए रखने के प्रयास के बाद भी वैदिक मे अवांतर प्रयोगों का बाहुल्य है जो परिवेशीय भाषाओ के दबाव को प्रकट करता है। लिखित भाषा में भी गम/ग्म/जम/यम/याम, ज्म/क्षम/क्ष्म; स्कभ/स्कंभ/स्तभ/स्तंभ धा/दा हर/भर जैसे प्रयोगों का वैविध्य मिलता है। यह वैविध्य बोलचाल में अधिक रहा होगा। इसलिए जिन बोलियो का प्रमाण भारोपीय में मिलता है उनको अंत तक भिन्न बनी रह गई भाषाओं में नहीं, संपर्क भाषा में रच पच जाने के बाद भी अपनी पहचान बनाए रखने वाली भाषा प्रवृत्तियों मे तलाशना होगा।

ऋग्वेद मे यह उल्लेख है कि सरस्वती दृषद्वती और आपया का क्षेत्र संसार मे सर्वश्रेष्ठ है। इस संकेत के आधार पर हम वर्तमान हरियाणा, उत्तर राजस्थान और पंजाब को वह नाभिकीय क्षेत्र मान सकते है जहां वह संस्कृति विकसित हुई, जिसकी भाषा का विकास भारोपीय या आद्य वैदिक के रूप मे हुआ।

सांस्कृतिक उन्नयन के क्रम में आद्य–वैदिक या आद्य–भारोपीय मे अनगिनत आर्येतर भाषाओं की शब्दावली है जिसका सही निर्धारण आज करना कठिन है (रामविलास शर्मा)। यह अपनी मूल ध्वनियों के साथ आद्यवैदिक में व्यवहार मे आने लगा। इस तरह आद्यवैदिक की ध्वनिमाला का भी विस्तार हुआ।

माना जाता है कि आद्य भारोपीय में घोष–महाप्राण ध्वनिया थीं। पर स्थिति यह है कि इनका विकास या तो बाद म हुआ या ये किसी अन्य भाषा के प्रभाव से आईं। संभवतः नाभिकीय क्षेत्र की ध्वनिमाला में घोष–महाप्राण ध्वनियां नहीं थी। ये ध्वनिया पंजाबी, कश्मीरी, पश्तो आदि में नहीं पाई जातीं। पंजाबी भाषी आज भी घोष–महाप्राण ध्वनियों से आरंभ होने वाले शब्दों का ठीक उच्चारण नहीं कर पाते है। संस्कृत मे भी घोष ध्वनियों का प्रयोग बहुत विरल है। केवल ध और भ इसके अपवाद हैं। परंतु वैदिक में इन ध्वनियों के बीच जहां–तहां बिन अर्थभेद के अघोष का व्यवहार होता रहता है। अतः संभावना यह लगती है कि सघोष ध्वनियां किसी अन्य भाषा से ग्रहण की गई जो इस भाषा में खप तो

गइ पर इतनी प्रभावशली थी, कि इसकी छाया संस्कृत से अधिक वोलियों में वनी रह गई है।

कुछ वोलियों में घोप–महाप्राण ध्वनियों के लिए आग्रह सा है। संस्कृत में जहां अघोप–महाप्राण, या घोप–अल्पप्राण ध्वनियां पाई जाती हैं वहां वोलियों में घोप–महाप्राण – जटा – झोंटा, जूट–झूंटा, जल/गल झलका/गलका, पाठ–पढ़ाई, पीठ–पीढ़ा, आदि। वोलियों में वहुत से ऐसे शव्द हैं जिनका कोई तत्सम रूप नहीं मिलेगा या खींच तानकर गढ़ा हुआ मिलेगा जैसे घाघ, घिघिआना, घुसना, घुडुकना, घोड़ा, घुघुची, झझरी, झंझट, झिझिया, झोंझ, झुंझलाना, ढाढ़ी, ढोंढ़ी, ढिमिलाना, ढेंकी, ढंढ, धुंधुका, धिंडरा, धौंक, लद्धड़, धोंधा, भेभना, भचकना, भड़कना, भउरी, अभुआना, डभका, भांटा, भटनी, भड्डा, गव्भा आदि। जहां संस्कृत ने घोष–महाप्राण ध्वनि वाले शव्दों का तत्समीकरण किया है वहां उसका प्रयत्न उनका अघोपीकरण करने का रहता है – घूंघट–अवगुंठन, भिल्म–विल्म। जिस भाषा या जिन भाषाओं में घोंष–महाप्राण ध्वनियों के लिए विशेष आग्रह था, उन्हीं के प्रभाव से नाभिकीय क्षेत्र की भाषा में भी इनका प्रवेश हुआ लगता है। यह कितनी प्रभावशाली थी इसका अनुमान इस बात से ही लग सकता है कि संस्कृतेत्तर घोप–महाप्राण ध्वनियों वाले शव्द वहुत वड़े क्षेत्र में व्याप्त हैं।

ऋग्वेद के संहितापाठ में जहां मूर्धन्य ध्वनियां है वहां पदापाठ में दंत्य ध्वनियां: णु–नु, ण–न, ष्टवाम–स्तवाम, विष्टार–विस्तार, 'सु–षोम–ा'–सोम। हड़प्पा सभ्यता या वैदिक के सघन अंतर्किया वाले क्षेत्र – पंजावी, हरियाणवी, गुजराती, सिंधी आदि–में भी 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग होता है – रानी–राणी, राना/राणा, पानी–पाणी, घना–घणा, घणो, मन–मण, काना–काणा। मूर्धन्य ध्वनियां मूर्धन्य ध्वनियों के साथ या स्वतंत्र रूप में कुछ विरल मामलों में – गणित, ज्योतिष, संकट, पीठ, में वची रह गई हैं। अन्यथा या तो इन्हें वदल दिया गया है या इनके स्थान पर दूसरे रूप प्रचलित हो गए हैं। शिष्/शिष्ट–शिक्षा/शिक्षित/शिष्य, राट–राज, कुण्वन–कुर्वन्, तष्टा–तक्षक, पृण–पूरय, पाणम्–पानम्, निष्टप्त–निस्तप्त, पदीष्ट–पदस्य, प्राष्ट–प्राप्त, यष्टा–याजक, द्रष्टा–दर्शी, विष्टभ–विस्तंभ, विष्टप–पिस्तप, दिष्टी–देशक, सुष्टर–सुस्तर, दंष्ट्र–दंत, धरुण–धारक/धरन आदि। यह प्रभाव नाभिकीय क्षेत्र के पूर्व की ओर से आ सकता है।

स्थिर एवं मानव रूप

विकास के वाद इसने जव एक स्थिर और मानक रूप से लिया तव इस वात की ओर भी ध्यान गया कि भिन्न भाषा–क्षेत्रों के लोग जव इस भाषा का प्रयोग करते हैं तो भी उनकी वात पूरी समझ में नहीं आती, इसलिए वे शुद्ध उच्चारण पर वल देने और अशुद्ध वोलने वालों की भर्त्सना करने लगे। यह शुद्धता और अशुद्धता भी इस भाषा के मूल क्षेत्र और देशांतर में इसके प्रसार के काल का निर्धारण करने में सहायक है।

मूर्धन्य ध्वनियों का दंत्य के रूप में प्रयोग करनेवाले 'र' का उच्चारण 'ल' के रूप में करते थे। इन्हें भाषाविदों ने वैदिक क्षेत्र से पूर्व की भाषा की विशेषता माना है जिसमें राजा का लाजा, वार का वाल और अरि का अलि हो जाता है। सं.मूर्धन्य को दंत्य वनाने की यह प्रवत्ति यूरोपीय भाषाओं में भी गई है– रज्जु–लिगामेंट, राजा–रायल/लायल, पुर–पोलिस, स्त्र–स्नो/स्लो। कहें, सुदूर देशों में इसके प्रसार से पहले पूर्वी प्रभाव आ चुका था।

नाभिकीय क्षेत्र में मूर्धन्य अर्धस्वर, र, का स्वर, ऋ, ॠ भी था। मूर्धन्य के दंत्य में वदलने के साथ, दंत्य अर्धस्वर, ल, के अनुरूप दंत्य स्वर, लृ, कल्पित किया गया जो किसी शव्द में किसी भी स्थिति में प्रयोग में नहीं आता सिवाय धातु रूपों के।

ऋग्वेद में सिंधु–सारस्वत क्षेत्र या भारोपीय के इस नीमिकीय क्षेत्र के पश्चिमी सीमांत के जनों–पक्थ, भलान, शिव, विषाणी और अलि–का उल्लेख आया है जिन्हें वधिवाच कहा गया है। वधिवाच का शाव्दिक अर्थ होगा वे जो भाषा का भ्रष्ट उच्चारण करते थे। इनके उच्चारण में कुछ स्वरों आदि का लोप हो जाया करता था, जैसे भाषा का वधियाकरण कर दिया गया हो। कहें, इससे ठीक पश्चिम के क्षेत्र में नाभिकीय क्षेत्र की भाषा का प्रसार हो चुका था, परंतु वहां की भाषाओं के प्रभाव के कारण उच्चारण दोषपूर्ण था। इसी तरह विश्वास और रीतिविधान के मामले में एक वड़े क्षेत्र में वैदिक मत का प्रसार हो चुका था, फिर भी यदुओं और तृत्सुओं को, जिनका निवास संभवत: कच्छ और गुजरात में था, और पुरुओं को, जिनको एक ऋचा में स्वात के तट का निवासी माना गया है, 'अस्नाता' आदि कह कर याद किया गया है। कच्छ और गुजरात के निवासियों को वे, म्लेच्छ, स्पष्ट उच्चारण करने वाला, कहते थे। नौचालन में इनकी अग्रता के कारण इनका खाड़ी क्षेत्र के देशों से संपर्क था, जहां इनके लिए मेलुख्ख शव्द का प्रयोग होता था। इस तरह इन तीन सीमांतों से घिरे और चौथी और पर्वतीय श्रृखला से मर्यादित उस नाभिकीय क्षेत्र की पुष्टि होती है, जहां भारोपीय का शुद्ध उच्चारण होता था। पर साथ ही यह भी कि इसका व्यवहार वहुत वड़े क्षेत्र में हो रहा था।

शतपथ व्राह्मण में एक कथा आती है जिससे यह प्रकट होता है कि अफगानिस्तान में, गंधर्वों के वीच या गांधार में, इस भाषा का प्रसार सोम व्यापार के क्रम में हुआ था। पहले वे इस भाषा से अपरिचित थे। फिर इसको अपनाया और इस पर इतना अधिकार कर लिया कि वे वेदों का भी शुद्ध पाठ कर सकते थे।

मैक्समूलर ने वहुत वल देकर कहा था कि ईरान के लोग भारत से ही गए थे। दूसरे विद्वान जो आर्यो को यूरोप की सीमा से भारत की ओर वढ़ने का समर्थन करते रहे हैं वे भी मानते हैं कि ईरानी उत्तरी अफगानिस्तान से ईरान की ओर गए थे। जेंद अवेस्ता मे इस वात के हवाले आते हैं कि वहां धार्मिक प्रचार के लिए लोग, वाहर से आया करते थे। अवेस्था में उन्हीं नेताओं का नाम आता है जिनको भारत से वाहर नये और पुराने मार्गों का ज्ञाता कहा गया है। जाहिर है कि अवेस्ता की भाषा आर्यभाषा की पृथक शाखा नहीं है। यह ईरानी ध्वनिसीमा में वोली जानेवाली वैदिक या भारतीय आर्यभाषा ही है। दोनों में उससे भी कम अंतर है जितना प्राचीन आर्यभाषा और मध्यकालीन आर्यभाषा में। यही कारण

है कि एक शब्द बदले बिना भी अवेस्ता के अनेक छंदों का संस्कृत में अनुवाद हो सकता है। मैक्समूलर ने ऐसे साढ शब्दों की एक तालिका बनाई थी जो भारोपीय में ईरान पहुंचने पर आए थे। ये शब्द उससे आगे की भारोपीय शाखाओं में मिलते हैं पर संस्कृत में नहीं।

मध्येशिया से कोई प्राचीन अभिलेख नहीं मिला है जो भाषा के निर्धारण में सहायक हो, पर वहां के जिन स्थलों से भारतीय आर्यों को जोड़कर देखा जाता रहा है वे सभी किलाबंद या सुरक्षा प्राचीर से घिरी बस्तियां हैं (मैसन)। ये हड़प्पा सभ्यता के संपर्क क्षेत्र के भीतर हैं।

इससे आगे जाने पर, जैसा कि हम उल्लेख कर आए हैं, तुर्की में भारतीय जीवनपद्धति और देवसमाज में विश्वास करनेवालों और उनकी भाषा के अस्तित्व का प्रमाण चौदहवीं शताब्दी में भी मिलता है। पर वहां उनका प्रवेश दो हजार ई.पू. से पहले हो गया था। इस दौरान उनकी भाषा में इतना विकार आ चुका था कि इसके तीन प्रभेद हो चुके थे। यही बात ईराक से प्राप्त व्यक्तिनामों से सिद्ध होती है जिन्हें किसी बाद के काल में लिखा गया है, जब वे उस क्षेत्र में प्रभावशाली हो गए थे।

भूमध्यसागर में, क्रीट में, हड़प्पा संस्कृति के कम से कम परोक्ष संपर्क की बात पुरातत्वविद स्वीकार करते है। क्रीट से ही लीनियर बी के प्रमाण मिलते है। इसकी भाषा ग्रीक है। कुछ समय बाद ग्रीस के प्रायद्वीप मे इसका प्रवेश होता दिखाई देता है। प्राचीन ग्रीस उस क्षेत्र के प्रभाव में रहा है और उसी की प्रेरणा से सभ्यता की ओर बढा था जिसे यूरोपीय नीयर ईस्ट या निकट पूर्व कहते रहे है। यह वही क्षेत्र है जहा आर्य भाषा और संस्कृति के प्रमाण मिलते है। होमर ने जिस ग्रीक मे अपना महाकाव्य लिखा था वह लघु एशिया मे प्रयाग मे आती थी, इसलिए ग्रीक का आर्य भाषा से सीधा सबध अकारण नहीं है। हम पहले देख आए है कि यूरोपीया के निकट पूर्व की आर्य भाषाओ के कुछ शब्द उससे आगे की भाषाओ मे पाए जाते है पर उससे पीछे नहीं मिलते।

क्रमबद्ध विवरण

इस तरह हमें भारत से लेकर यूरोप के प्रवेश द्वार तक की यात्रा का एक कमबद्ध विवरण मिल जाता है। परतु यह एकमात्र प्रवेश मार्ग नहीं था। तुर्की तक की यात्रा जलमार्ग और स्थलमार्ग दोनों से संभव थी। मध्येशिया से आगे बढ़त यह प्रभाव उस दिशा में भी बढ़ा था जिसे अश्वपालन का प्राचीनतम क्षेत्र बताया जाता है। घोड़ों का पालन जिन भी लोगों ने किया हो, किया संभवतः मांस के लिए था। उस क्षेत्र से जब आर्य व्यापारियों का परिचय हुआ तो वे इसे बहुत अच्छी कोटि का गधा समझकर इसके लिए भी उन्हीं शब्दों का प्रयोग करने लगे जिनका प्रयोग गधे के लिए करते थे। अश्व का प्राचीन अर्थ गधा था। इसका प्राकृत रूप अस्स और अंग्रेजी ऐस, लातिन ऐसिनो आदि उसी अश्व से निकले हैं। उन्होंने परिवहन के लिए अधिक उपयोगी पाकर सुदूर यात्राओं में इसका उपयोग और व्यापार दोनों आरंभ कर दिया। पश्चिम एशिया में भी उन्होंने इसे पहाड़ी गधे के रूप में ही बेचना आरंभ किया था। वे रथों से पहले छकड़ा या गधा-गाड़ी से माल ढोया करते थे। पहिए के आविष्कार, गधों, बैलों, ऊंटों और घोड़ों को भारवाही जानवर के रूप में उपयोग में लाने में आर्यों की अग्रणी भूमिका थी, इसलिए मध्येशिया, ईरान, तुर्की, ईराक, यूरोप सर्वत्र पहिए, गधे, घोड़े और अश्वपालन से संबंधित शब्द यदि अभारोपीय भाषाओं में भी बचे मिलते हैं, तो भी, वे भारतीय आर्यभाषा के ही हैं।

महत्वपूर्ण बात यह है कि यह प्रसार आक्रमण या आव्रजन के माध्यम से नहीं अपितु व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से हुआ। यह हड़प्पा सभ्यता के निर्माणकाल में ही आरंभ हो गया था, परंतु परिपक्व चरण में इसमें तेजी आई थी। इस भाषा का प्रसार किसी एक केंद्र से नहीं हुआ था। हड़प्पा के पूरे प्रसार क्षेत्र में अलग-अलग क्षेत्रों और केंद्रों के व्यापारियों का विदेशों में अलग-अलग क्षेत्रों और केंद्रों से अधिक कारोबार चलता था। ये मोटे तौर पर संपर्क भाषा का ही व्यवहार करते थे पर आपस में अपनी आर्य और आर्येतर बोलियां बोलते थे, और इसका इसी रूप में भारत से बाहर भी प्रभाव देखने में आता है। जैसे फिनो-उग्रिक क्षेत्र में मुंडा और द्रविड़ भाषाओं से निकटता रखने वाली बोलियां बोलने में अधिक सक्रिय थे। पशुपालन में इन्ही की अग्रता थी और घोड़े के प्रशिक्षण आदि में भी इनकी पहल अधिक रही लगती है। एलाम में द्रविड़ से निकटता रखनेवाले क्षेत्र का प्रभाव अधिक गहरा था।

भगवान सिंह

इतिहास की प्रमुख घटनाएं

भारत में आर्यों का आगमन **1500** ई पू में आरंभ हुआ। आर्य पंजाब में बस गए। वैदिक युग की सबसे प्रमुख बात ऋग्वेद की रचना थी।

ई. पू. 1000: आर्य गंगा की घाटी में फैल गए। ब्राह्मणों की रचना।

900: महाभारत युद्ध।

800: आर्य बंगाल तक पहुंच गए। महाभारत की रचना। रामायण का प्रथम रूप। महाकाव्य युग का आरंभ।

550: उपनिषदों की रचना।

544 (?): अनुश्रुति के अनुसार बुद्ध के निर्वाण की तिथि।

527 (?): फारस में डेरियस प्रथम का राज्यारोहण: डेरियस ने साइलैक्स को सिंधु अभियान पर भेजा: उत्तर-पश्चिमी भारत पर फारस की विजय।

500: आर्य दक्षिण भारत और श्रीलंका तक पहुंच गए।

326: भारत पर सिकन्दर का आक्रमण।

323: सिकन्दर की मृत्यु।

321: चन्द्रगुप्त पाटलीपुत्र में नंद वंश को उखाड़ फेंकता है और मौर्य वंश की नींव डालता है। चन्द्रगुप्त का प्रधान मंत्री कौटिल्य अर्थशास्त्र की रचना करता है।

272–232: अशोक का शासन काल।

185: मौर्य सेनापति ने अन्तिम मौर्य शासक वृहदथ को अपदस्थ करके शुंग वंश की नींव डाली।

145: चोल शासक इराट ने श्रीलंका को जीता। खारवेल ने कलिंग साम्राज्य का गठन किया।

58: कृत मालवा–विक्रम संवत्।

30: दक्षिण भारत में सातवाहन वंश। सुदूर दक्षिण में पांड्य साम्राज्य।

26: पांड्य शासक ने अपना राजदूत रोम भेजा। केरल में चेर शासक।

ईसवी 40: सिंधु घाटी और पश्चिमी भारत में शक अथवा सीथियन सत्ता की स्थापना।

52: उत्तर–पश्चिमी भारत में पार्थियन शासक गण्डोफरनीज। भारत में सेंट थामस ने अपना धर्मप्रचार आरंभ किया।

78: शक संवत् आरंभ।

98–117: सीथियन शासक कनिष्क।

320: चन्द्रगुप्त प्रथम ने गुप्त वंश की नींव रखी – गुप्त काल का आरंभ।

360: समुद्रगुप्त ने सारे उत्तरी भारत और अधिकांश दक्षिण भारत को जीत लिया।

380–413: चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य। गुप्त साम्राज्य का स्वर्ण युग–साहित्यिक पुनर्जीवन–कालिदास और अन्य कवि। हिन्दू धर्म का पुनरुद्धार।

606: हर्षवर्धन का राज्यारोहण।

609: चालुक्य वंश का उदय।

622: हिजरी संवत् का आरंभ।

711: मुहम्मद–बिन–कासिम का सिंध आक्रमण।

753: राष्ट्रकूट साम्राज्य का उदय।

892: पूर्वी चालुक्यों का उदय।

985: चोल राजवंश –राजराजा महान।

1026: महमूद गजनी द्वारा सोमनाथ की लूट।

1191: दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान ने मोहम्मद गोरी को हराया – तराइन का पहला युद्ध।

1192: मोहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज को हराया – तराइन का दूसरा युद्ध।

1206: कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में गुलाम वंश के शासन की स्थापना की।

1221: चंगेज़ खां के नेतृत्व में मंगोल आक्रमण।

1232: कुतुबमीनार की नींव रखी गई।

1298: मार्कोपोलो की भारत यात्रा।

1290: जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने दिल्ली में खिलजी वंश का शासन स्थापित किया।

1320: गयासुद्दीन तुगलक ने दिल्ली में तुगलक वंश का शासन स्थापित किया।

1333: इब्नबतूता का भारत भ्रमण।

1336: विजयनगर (दक्षिण भारत) राज्य की स्थापना

1398: भारत पर तैमूर का आक्रमण।

1424: बहमनी वंश (दक्षिण भारत) का उत्थान।

1451: लोदी वंश बहलोल लोदी दिल्ली के सिंहासन पर बैठा।

1489: बीजापुर में आदिल शाह राजवंश।

1490: अहमदनगर में निजाम शाही राजवंश।

1498: वास्कोडिगामा कालीकट में उतरा।

1510: पुर्तगालियों ने गोवा पर कब्जा कर लिया–अल्बुकर्क गवर्नर।

1518: गोलकुंडा में कुतुब शाही राजवंश।

1526: पानीपत का पहला युद्ध – बाबर ने लोदियों को हराया – मुगल राजवंश की स्थापना।

1530: बाबर के बाद हुमायूं गद्दी पर बैठा।

1538: गुरु नानक की मृत्यु।

1539: शेरशाह ने हुमायूं को हरा दिया और दिल्ली का शासक बन गया।

1555: हुमायूं ने इस्लाम शाह को हराकर दिल्ली की गद्दी पुन: प्राप्त कर ली।

1556: हुमायूं की मृत्यु अकबर का राज्यारोहण – अकबर ने पानीपत के दूसरे युद्ध में हेमू को हराया।

1564: अकबर ने जजिया या हिन्दुओं पर लगे तीर्थ यात्रा कर को समाप्त कर दिया।

1565: तालीकोट का युद्ध - दक्षिण के मुस्लिम राज्यों के संयुक्त मोर्चे ने विजयनगर साम्राज्य को हराकर नष्ट कर दिया।

1571: अकबर ने फतेहपुर सीकरी नगर बसाया।

1576: हल्दी घाटी का युद्ध – अकबर ने मेवाड़ के शासक राणा प्रताप सिंह को हराया।

1582: अकबर ने हिन्दू धर्म और इस्लाम के बीच समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से दीने–इलाही धर्म की घोषणा की।

1597: राणा प्रताप की मृत्यु।

1600: अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना।

1605: अकबर की मृत्यु और जहांगीर का राज्यारोहण।

1609: हालैंड की कंपनी ने पुलीकाट में फैक्टरी स्थापित की।

1611: अंग्रेजों की कंपनी ने मसूली पटनम में फैक्टरी स्थापित की।

1627: जहांगीर की मृत्यु–शाहजहां गद्दी पर बैठा–शिवाजी का जन्म।

1631: शाहजहां की पत्नी मुमताज [illegible] ताजमहल का निर्माण।

1639: अंग्रेजों की कंपनी ने [illegible] की नींव डाली।

1658: औरंगजेब दिल्ली [illegible]

1664: शिवाजी ने [illegible]

1679: औरंगजेब ने [illegible]

1707: औरंगजेब [illegible]

1720: [illegible]

1739: [illegible] कब्जा कर लिया।

1742: मराठों ने बंगाल पर आक्रमण किया – डूप्ले पांडिचेरी का फ्रांसीसी गवर्नर बना ।

1748: प्रथम अंग्रेज–फ्रांसीसी युद्ध ।

1757: प्लासी का युद्ध – अंग्रेजों ने सिराजुदौला, मीर जाफर और बंगाल के नवाब को हराया ।

1760: वन्दीवाश का युद्ध–अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को हराया।

1761: पानीपत का तीसरा युद्ध – अफगानिस्तान के शासक अहमद शाह अब्दाली ने मराठों को हराया – मराठा साम्राज्यवाद का विस्तार रुका ।

1764: बक्सर का युद्ध–अंग्रेजों ने मीर कासिम को हराया।

1765: अंग्रेजों को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी मिली – क्लाइव बंगाल का गवर्नर बना ।

1766: अंग्रेजों को कर्नाटक में उत्तरी सरकार पर अधिकार प्राप्त हो गया ।

1767–79: प्रथम मैसूर युद्ध–अंग्रेजों को मैसूर के हैदर अली के साथ अपमानजनक शर्तों पर सन्धि करनी पड़ी।

1772: वारेन हेस्टिंग्ज बंगाल का गवर्नर ।

1773: ब्रिटिश संसद ने रेग्युलेटिंग ऐक्ट पास किया ।

1775–82: प्रथम अंग्रेज–मराठा युद्ध । सालबाई की सन्धि ।

1780–84: दूसरा मैसूर युद्ध । अंग्रेजों ने हैदर अली को हराया ।

1784: पिट्स का इंडिया ऐक्ट ।

1790–92: अंग्रेजों और टीपू के बीच तीसरा मैसूर युद्ध – अनिर्णायक युद्ध जो श्रीरंगपट्नम की सन्धि के साथ समाप्त हो गया ।

1793: बंगाल का स्थायी बंदोबस्त ।

1798: वेलेजली भारत का गवर्नर–जनरल बना ।

1799: चौथा मैसूर युद्ध–अंग्रेजों ने टीपू को हराया–टीपू की मृत्यु – मैसूर का विभाजन ।

1810: अंग्रेजों ने कर्नाटक को अपने राज्य में मिला लिया।

1803–05: दूसरा अंग्रेज–मराठा युद्ध । अंग्रेजों ने आर्थर वेलेजली के नेतृत्व में असई नामक स्थान पर मराठों को बुरी तरह हराया ।

1817–19: अंग्रेजों ने मराठों को अन्तिम रूप से कुचल दिया ।

1828: लार्ड विलियम बैंटिक गवर्नर–जनरल बना–सामाजिक सुधारों का काल–सती निषेध (1829), ठगों का दमन (1837) ।

1881: रणजीत सिंह के नेतृत्व में सिक्खों का उत्थान।

1845–46: प्रथम अंग्रेज–सिक्ख युद्ध–सिक्खों की हार।

1848: लार्ड डलहौज़ी गवर्नर जनरल बना ।

1848–49: द्वितीय अंग्रेज–सिक्ख युद्ध–सिक्ख युद्ध में हार गए ।

1848: अंग्रेजों ने पंजाब को अपने राज्य में मिला लिया।

1853: भारत में बम्बई से थाने के बीच पहली रेल चली।

1857–58: स्वाधीनता की पहली लड़ाई ।

1858: ब्रिटिश सम्राट ने भारत में अंग्रेजी राज्य को अपने हाथ में ले लिया–महारानी विक्टोरिया की घोषणा।

1861: इंडियन कौंसिल्स ऐक्ट, इंडियन हाईकोर्ट्स ऐक्ट, इंडियन पीनल कोड ।

1868: अम्बाला से दिल्ली तक रेल चली ।

1877: दिल्ली दरबार–इंग्लैंड की महारानी को भारत की सम्राज्ञी घोषित किया गया ।

1878: वर्नाक्यूलर प्रेस ऐक्ट ।

1881: फैक्टरी ऐक्ट–मैसूर राज्य उसके असली शासक को सौंप दिया गया ।

1885: इंडियन नेशनल कांग्रेस का पहला अधिवेशन ।

1892: भारत के प्रशासक को विनियमित करने हेतु इंडियन कौंसिल ऐक्ट ।

1899: लार्ड कर्ज़न गवर्नर जनरल और वायसराय बना।

1905: बंगाल का प्रथम विभाजन ।

1906: मुस्लिम लीग की स्थापना ।

1908: न्यूजपेपर्स ऐक्ट ।

1909: मिण्टो–मार्ले सुधार ।

1911: दिल्ली में सम्राट जार्ज पंचम और सम्राज्ञी मेरी का दरबार । बंगाल विभाजन रद्द और बंगाल प्रेसीडेन्सी का निर्माण। देश की राजधानी कलकत्ता से हटाकर दिल्ली लाई गई ।

1914: प्रथम विश्वयुद्ध आरंभ हुआ ।

1915: डिफेन्स आफ इंडिया ऐक्ट ।

1918: विश्व युद्ध समाप्त ।

1919: विश्व युद्ध के दौरान सरकार को जो असाधारण अधिकार प्राप्त थे, उन्हें स्थायी बनाने के उद्देश्य से लाए गए रोलेट ऐक्ट के विरुद्ध देशव्यापी विरोध । जलियांवाला बाग का हत्याकांड । अली बन्धुओं और मौलाना अबुल कलाम आजाद ने गांधीजी के समर्थन से खिलाफत आन्दोलन (टर्की के खलीफा के पद की पुन: स्थापना के लिए) हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच पूर्ण सद्भाव । माण्टेग्यु–चेम्सफोर्ड सुधारों के द्वारा भारतीयों को सीमित प्रान्तीय स्वायत्तता प्रदान की गई।

1920: कांग्रेस ने असहयोग आन्दोलन की स्वीकृति प्रदान की । विद्यार्थियों ने कालेज छोड़ दिए और वकीलों ने वकालत छोड़ दी । सुधारों के प्रति जन–असंतोष प्रदर्शित करने हेतु ब्रिटिश कपड़ों आदि की होली जलाई गई ।

1921: मलाबार में मोपला विद्रोह । प्रिंस आफ वेल्स की भारत यात्रा । राष्ट्रव्यापी हड़ताल । भारत में जनगणना ।

1922: नागरिक अवज्ञा आन्दोलन । कांग्रेस ने गांधीजी को बारडोली सत्याग्रह का एक मात्र नेता बनाया । चौरी–चौरा में हिंसा । इसी कारण गांधीजी ने आन्दोलन स्थगित कर दिया।

1923: चितरंजनदास और मोतीलाल नेहरू ने स्वराज्य पार्टी बनाई। स्वराज्य पार्टी वालों का विचार कौंसिलों में जाकर अन्दर से सरकार को तोड़ने का था। खिलाफत आन्दोलन समाप्त हो गया, क्योंकि कमाल पाशा ने टर्की को धर्म–निरपेक्ष राज्य घोषित कर दिया । हिन्दू–मुस्लिम दंगे ।

1925: चिरतरंजनदास की मृत्यु ।

1926: कृषि सम्बन्धी रायल कमीशन । फैक्टरीज ऐक्ट।

1927 : इंडियन नेवी ऐक्ट। साइमन कमीशन की नियुक्ति।

1928 : साइमन कमीशन भारत आया। सभी दलों ने कमीशन का बहिष्कार किया। सर्वदलीय सम्मेलन। मुसलमान नेताओं द्वारा सम्मेलन का त्याग।

1929 : भारत के वायसराय लार्ड इर्विन ने भारत के लिए औपनिवेशक स्वराज्य की घोषणा की। कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में आजादी की मांग की गई। 31 दिसम्बर की आधी रात को कांग्रेस अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लाहौर में राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

1930 : 26 जनवरी को सारे देश में स्वाधीनता दिवस मनाया गया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ रहा। गांधी जी द्वारा दांडी मार्च–नमक सत्याग्रह। सरकार ने दमन चक्र चलाया। प्रथम गोल मेज सम्मेलन।

1931 : गांधी–इर्विन समझौता। दूसरा गोल मेज सम्मेलन। भारत में जनगणना।

1932 : कांग्रेस आन्दोलन को कुचलने का प्रयास। तीसरा गोल मेज़ सम्मेलन। साम्प्रदायिक निर्णय। पूना समझौता।

1933 : भारतीय सुधारों के सम्बन्ध में श्वेत पत्र।

1934 : सविनय अवज्ञा आन्दोलन वापस लिया गया।

1935 : गवर्नमेंट आफ इंडिया ऐक्ट।

1936 : सम्राट जार्ज पंचम की मृत्यु। एडवर्ड आठवें का राज्यारोहण और गद्दी त्याग। जार्ज छठें का गद्दी पर बैठना।

1937 : प्रान्तीय स्वायत्तता का उद्घाटन। बहुसंख्य प्रान्तों में कांग्रेस की सरकारें बनीं।

1939 : दूसरा विश्व युद्ध आरंभ हुआ। कांग्रेस सरकारों द्वारा त्यागपत्र। भारत में राजनैतिक गतिरोध।

1941 : विश्व युद्ध में जापान का प्रवेश। पर्ल हार्बर पर आक्रमण।

1942 : जापान के समक्ष सिंगापुर का पतन। जापान ने रंगून पर कब्जा कर लिया। ब्रिटेन ने बर्मा छोड़ा। भारत में क्रिप्स मिशन का दौरा। कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने क्रिप्स मिशन के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। कांग्रेस ने भारत छोड़ो प्रस्ताव पास किया (8 अगस्त)। कांग्रेस के नेता गिरफ्तार और कांग्रेस को गैर–कानूनी संगठन घोषित कर दिया गया (9 अगस्त)। सुभाष चन्द्र बोस ने जापानियों की सहायता से मलाया में आजाद हिन्द फौज की स्थापना की। उन्होंने सिंगापुर में स्वतंत्र भारत की सरकार की स्थापना की।

1943 : लार्ड वेवेल भारत के वायसराय और गवर्नर जनरल। समझौते के लिए वेवेल के प्रस्ताव निष्फल, क्योंकि कांग्रेस और मुस्लिम लीग उनके प्रस्ताव से सहमत नहीं थे।

1945 : जापान की पराजय के बाद सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज ने अंग्रेजों के सामने हथियार डाल दिए। भारत में आजाद हिन्द फौज के सैनिकों पर मुकदमा।

1946 : 500 रु. और इससे अधिक मूल्य के करेन्सी नोटों का विमुद्रीकरण (12 जनवरी)। आजाद हिन्द फौज के सैनिकों पर मुकदमा चलाए जाने के खिलाफ प्रदर्शन। रायल इंडियन नेवी के सैनिकों द्वारा खुला विद्रोह (18 फरवरी)। केबिनेट मिशन का भारत दौरा (19 आगस्त)। केबिनेट मिशन ने अन्तरिम सरकार बनाने और संविधान सभा गठित करने के प्रस्ताव की घोषणा की। अन्तरिम सरकार का निर्माण वायसराय की कार्यकारी परिषद का पुनगर्ठन करके किया जाना था। कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने प्रस्ताव नामंजूर कर दिया। बाद में कांग्रेस ने प्रस्ताव को मंजूर कर लिया। अतः अन्तरिम सरकार बनी, जिसमें सिर्फ कांग्रेस के प्रतिनिधि रखे गए। मुस्लिम लीग ने नाराज होकर सीधी कार्यवाही शुरू कर दी। मुस्लिम लीग ने कलकत्ता में हिन्दुओं पर हमले किए। शेष बंगाल में हिन्दुओं ने इसका बदला लिया। दंगे आरंभ हो गए। वायसराय ने मुस्लिम लीग के सहयोग की प्रार्थना की किन्तु लीग ने कहा कि जब तक उसकी पृथक् राज्य पाकिस्तान की मांग मानी नहीं जाती, वह संविधान सभा में सम्मिलित नहीं होगी।

स्वाधीनता और उसके बाद

ब्रिटिश सरकार ने 20 फरवरी 1947 को अपने इस इरादे की घोषणा की कि वे जून 1948 तक भारत छोड़ देंगे। लार्ड माउन्टबेटन को सत्ता के हस्तांतरण का प्रबन्ध करने के लिए नामित किया गया। उन्होंने 24 मार्च को अपना पदभार सम्हाला और भारत के विभाजन की अपनी योजना पर रेडियो प्रसारण कर दिया। घटनाओं का तिथिवार वर्णन इस प्रकार है:

1947 : ब्रिटिश संसद ने भारतीय स्वाधीनता अधिनियम पारित किया (1 जुलाई) और सत्ता के हस्तांतरण के लिए 15 अगस्त की तिथि निश्चित कर दी। भारत और पाकिस्तान के रूप में भारत का विभाजन। भारत और पाकिस्तान को सत्ता हस्तांतरित। लार्ड माउन्टबेटन भारत के तथा एम. ए. जिन्ना पाकिस्तान के गवर्नर जनरल बने। पं. जवाहर लाल नेहरु ने प्रधानमंत्री पद से पहली बार आकाशवाणी नयी दिल्ली से राष्ट्र को संबोधित किया (15 अगस्त)।

भोपाल के नवाब ने भोपाल स्टेट को भारत में सम्मिलित करने की घोषणा की (26)। पाकिस्तान के बलूचियों ने पाकिस्तान की सहायता से कश्मीर पर आक्रमण किया (अक्टूबर 22)। राज्य को आक्रमणकारियों से बचाने के लिये कश्मीर सरकार ने भारत सरकार से सैनिक सहायता मांगी (24)। कश्मीर के महाराजा ने भारत सरकार से तुरंत कश्मीर को भारत में सम्मिलित करने का प्रस्ताव रखा (26)

1948 : महात्मा गांधी की हत्या (30 जनवरी)। ब्रिटिश सेना की अंतिम टुकड़ी की भारत से विदायी (फ[illegible]री 28)। रक्षामंत्री ने टैरिटोरियल आर्मी के गठन की [illegible] 8)। लार्ड माउंटबेटन इंगलैंड वाप[illegible]

श्री राजगोपालाचारी ने भारत के गवर्नर जनरल पद का शपथ ली (21)। एम. ए. जिन्ना की मृत्यु (11 सितम्बर) । भारत सरकार द्वारा निजाम की हैदरावाद रियासत पर कब्जा ।

1949: ले. जनरल के.एम. करियप्पा थल सेनाध्यक्ष बने (जनवरी 15)। महात्मा गांधी हत्याकांड पर निर्णय, नाथुराम विनायक गोडसे और नारायण आपटे को अम्बाला जेल में फांसी दी गयी (नवंबर 15)। संविधान सभा द्वारा भारत के संविधान की मंजूरी (26) ।

1950: डा. राजेन्द्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति निर्वाचित (जनवरी 24)। भारत का संविधान लागू (26) । सरदार पटेल की मृत्यु (दिसम्बर 15) ।

1951: भारत में पहले आम चुनाव ।संविधान का पहला संशोधन ।पहली स्वदेशी रेलवे प्रणाली। दक्षिण रेलवे जोन का रेल एवं परिवहन मंत्री द्वारा उद्घाटन (अप्रैल 4)। नयी राष्ट्रीय पार्टी भारतीय जनसंघ की स्थापना। एस.पी. मुखर्जी पार्टी के अध्यक्ष बने (नवम्बर 21)

1952: डा. राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति (राज्याध्यक्ष) चुने गए ।

1954: चीन और भारत में पचशील समझौता। प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने टाटा इंस्टीट्यूट आफ फंडामेंटल रिसर्च की आधारशिला रखी (जनवरी 1)। 6। वर्षीय विचारक एम.एन.राय का देहरादून में निधन (25)। प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय मानक संस्थान (आई एस आई) की स्थापना की ([illegible])

1955: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा अवादी अधिवेशन में भारत के लिए समाजवादी ढांचे के समाज की मंजूरी ।

1956 जीवन बीमा का राष्ट्रीयकरण । राज्य पुनर्गठन ऐक्ट । प्रजा [illegible] पार्टी के सभापति राज्य सभा के सदस्य [illegible] शिक्षा शास्त्री आचार्य नरेंद्र देव का निधन (फरवरी [illegible]) महात्मा गांधी के पुत्र मणि लाल गांधी का [illegible] में निधन (अप्रैल [illegible]) भारतीय जीवन बीमा निगम का उद्घाटन (सितम्बर [illegible])

1957 दूसरे आम चुनाव राजेन्द्र प्रसाद दूसरी अवधि के लिए पुन राष्ट्रपति चुने गए ।

1958: माप और तौल की मीट्रिक प्रणाली का प्रारम्भ। मौलाना अबुल कलाम आजाद का निधन (फरवरी 22)।

1959: स्वतंत्र पार्टी बनी पाइलट केन्द्र की स्थापना के साथ भारत में दूरदर्शन की शुरूवात (सितम्बर 5)। श्रीमती आरती शाह ने सफलतापूर्वक इंग्लिश चैनल पार किया (30)। विख्यात खिलाड़ी दलीप सिंह जी का निधन (दिसम्बर 5)।

1960: बम्बई का विभाजन करके महाराष्ट्र और गुजरात राज्यों का बनना; विख्यात विद्वान प. राहुल सांस्कृतायन का दार्जीलिंग में निधन (अप्रैल 14)।

1961: गोवा, दमन और दियू की पुर्तगाली बस्तियों पर भारत का कब्जा ।

1962: भारत में तीसरे आम चुनाव, डा राधाकृष्णन राष्ट्रपति निर्वाचित ।नेहरू द्वारा तीसरे मंत्रिमंडल का गठन। उत्तरी सीमा पर चीन द्वारा भारत पर आक्रमण (सितम्बर 19)।

1963: स्वर्ण नियंत्रण आदेश ।राजेन्द्र प्रसाद की मृत्यु (28 फरवरी) ।नागालैंड भारत संघ का एक राज्य बना ।

1964: भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का विभाजन, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी एवं भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी दलों का गठन (अप्रैल 11)। जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु (27 मई) ।लाल बहादुर शास्त्री प्रधान मंत्री बने । भारत की कम्युनिस्ट पार्टी दो दलों में विभाजित।

1965: कच्छ के रन में भारत-पाक युद्ध ।युद्ध विराम (30 जून) ।

1966: प्रख्यात फिल्म निदेशक विमल राय का निधन (जनवरी 8)। लाल बहादुर शास्त्री और अयूब खां के बीच ताशकंद बैठक । समझौता हो गया ।ताशकंद में शास्त्रीजी की मृत्यु (11) । वायू सेना प्रमुख पद मार्शल को एयर चीफ मार्शल का दर्जा दिया गया (15) श्रीमती इंदिरा गांधी कांग्रेस संसदीय दल की नेता चुनी गई (19) । चुनाव में मोरार जी भाई देसाई को 169 मत प्राप्त हुए और श्रीमती इंदिरा गांधी को 355 मत मिले (19)। विमान दुर्घटना में डा. होमी जे. भाभा की मृत्यु ।हरियाणा और पंजाब राज्य अस्तित्व में आए।

1967: चौथे आम चुनाव। इंदिरा गांधी प्रधान मंत्री चुनी गई। डा जाकिर हुसेन राष्ट्रपति निर्वाचित ।

1969: मद्रास राज्य ने अपना नाम बदल कर तमिलनाडु कर लिया (जनवरी 14)। महात्मा गांधी के अंतिम जीवित पुत्र राम दास गांधी का निधन (अप्रैल 14)। डा. जाकिर हुसेन की मृत्यु (मई 3) । वी. वी. गिरी कार्यकारी राष्ट्रपति बने। वन्य जीवन बोर्ड ने शेर को राष्ट्रीय पशु चुना (जुलाई 4)। 14 बडे बैंकों का राष्ट्रपति के अध्यादेश द्वारा राष्ट्रीयकरण (19) । गिरि राष्ट्रपति निर्वाचित (20 अगस्त)। जी.एस पाठक उप-राष्ट्रपति । कांग्रेस पार्टी का विभाजन ।इंदिरा गांधी द्वारा जगजीवनराम की अध्यक्षता में अपनी कांग्रेस का बनाना ।

1970: सर्वोच्च न्यायालय ने बैंकों के राष्ट्रीयकरण को अवैध करार दे दिया ।राष्ट्रपति के अध्यादेश ने राष्ट्रीयकरण को पुन मंजूरी दे दी (जनवरी 14) ।मेघालय राज्य अस्तित्व में आया (अप्रैल 2) । भूतपूर्व देशी रियासतों के नरेशों को दिये जाने वाली प्रिवी पर्स तथा अन्य विशेषाधिकार समाप्त । डा सी वी रमन का निधन (नवम्बर 21)।

1971: हिमाचल प्रदेश एक राज्य बना (25 जनवरी)। के एम मुंशी की मृत्यु (फरवरी 8) । लोकसभा के मध्यावधि चुनावों में इंदिरा कांग्रेस विजयी । इंदिरा गांधी प्रधान मंत्री बनी । साधारण बीमा का राष्ट्रीयकरण (मई 13) । भारत-पाक युद्ध प्रारंभ । पाकिस्तान द्वारा पश्चिम में भारत पर हमला (दिसम्बर 3) । भारत द्वारा बंगलादेश को मान्यता। भारतीय सेना का बंगलादेश में प्रवेश और बंगलादेश की मुक्तिवाहिनी का साथ देना । बंगलादेश में पाकिस्तानी सेना द्वारा भारतीय कमाण्डर के समक्ष आत्मसमर्पण । भारत-पाक युद्ध समाप्त (17) ।

1972: मणिपुर, मेघालय और त्रिपुरा भारत संघ के राज्य बने । अरुणाचल प्रदेश और मिजोरम केन्द्र शासित क्षेत्र बने (जनवरी 20) । 'अमर जवान' राष्ट्रीय स्मृति को इंडिया गेट पर स्थापित किया गया (26)। भारत सरकार के आदेश के अनुसार राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, पूर्व राष्ट्रपति [illegible]

राज्यपाल के अतिरिक्त किसी भी मृत्यु पर राष्ट्रीय शोक नहीं होगा (फरवरी 20)। विख्यात अभिनेत्री मीना कुमारी का निधन (मार्च 31)। भारत एवं पाकिस्तान के मध्य ऐतिहासिक शिमला समझौता (जुलाई 2)। भारत सरकार द्वारा मजदूरों के न्यूनतम बोनस को 4 प्रतिशत से बढाकर 8.33 प्रतिशत करने की घोषणा (सितम्बर 17)। सी. राजगोपालाचार्य की मृत्यु (दिसम्बर 28)।

1973: तीन वरिष्ठतम न्यायाधीशों की वरिष्ठता का अतिक्रमण करके जस्टिस अजीत नाथ राय को सर्वोच्च न्यायालय का मुख्य-न्यायाधीश बनाना। न्यायाधीश शेलाट, हेगड़े और ग्रोवर का विरोध में त्यागपत्र। मैसूर ने नाम बदलकर कर्नाटक कर लिया (नवम्बर 1) द्रविड़ कपगम के संस्थापक ई. वी. रामास्वामी नायकर की मृत्यु (24)

1974: प्रशासन ईमानदार और साफ सुथरा बनाने तथा प्रजातंत्र को शक्तिशाली बनाने के लिए जयप्रकाश नारायण ने 'प्रजातंत्र के लिए नागरिक' (सिटीजन्स फार डेमोक्रेसी) आन्दोलन का प्रारम्भ। राजस्थान में पोखरन नामक स्थान पर भूमिगत परमाणु विस्फोट का परीक्षण (18 मई)। फखरुद्दीन अली अहमद राष्ट्रपति निर्वाचित (अगस्त 20)। सुचेता कृपलानी की मृत्यु (दिसम्बर 1)।

1975: समस्तीपुर रेलवे स्टेशन पर हुए बम विस्फोट में एल. एन. मिश्र, रेल मंत्री तथा 22 अन्य घायल। एल. एन. मिश्र की मृत्यु (जनवरी 2)। फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन को भारत की मान्यता (10)। भूतपूर्व राष्ट्रपति डा. राधाकृष्णन की मृत्यु (अप्रैल 17)। भारत का अंतरिक्ष युग में प्रवेश: उपग्रह 'आर्यभट्ट' सोवियत रूस के कासमोड्रोम से अंतरिक्ष में भेजा गया (19)। सिक्किम भारत का 22 वां राज्य बना (16 मई)। फरक्का बांध राष्ट्र को समर्पित (21)। श्रीमती इंदिरा गांधी का चुनाव इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा रद्द घोषित। राष्ट्रपति ने आपात स्थिति घोषित कर दी। जे. पी. तथा अनेक विरोधी नेता और असंतुष्ट कांग्रेसी गिरफ्तार (26)। संसद द्वारा राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा लोकसभा के स्पीकर के चुनाव को न्यायिक जांच से अलग रखने से सम्बन्धित संविधान (39वां संशोधन) बिल 1975 स्वीकृत। राज्यसभा ने प्रधान मंत्री को किसी प्रकार के फौजदारी या दीवानी मुकदमे से संरक्षण के लिए संविधान (41 वां संशोधन) बिल पास किया। के कामराज की मृत्यु (अक्तूबर 2)। प्रख्यात संगीत निदेशक सचिन देव बर्मन का निधन (31) सुप्रीम कोर्ट द्वारा प्रधान मंत्री के चुनाव की पुष्टि (नवम्बर 7)।

1976: अनुच्छेद 19 में वर्णित स्वाधीनताओं पर राष्ट्रपति द्वारा रोक (जनवरी 8) बर्मा शेल का राष्ट्रीयकरण और अब इसका नाम भारत रिफाइनरीज़ लिमिटेड हो गया (24)।

1977: राष्ट्रपति द्वारा लोकसभा भंग (जनवरी 18)। चार पार्टियां – कांग्रेस (ओ.) जनसंघ, भारतीय लोकदल तथा समाजवादी दल मिलकर जनता पार्टी के नाम से एक दल के रूप में काम करने को सहमत। राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद की नई दिल्ली में मृत्यु। मोरारजी देसाई ने प्रधान मंत्री के पद की शपथ ली (24)। संजीव रेड्डी लोकसभा के स्पीकर चुने गए। (मई 5)। जनता पार्टी द्वारा

15 अगस्त, 1947 को संसद भवन में श्री जवाहर लाल नेहरु 'नियति से मिलन' ऐतिहासिक भाषण देते हुए।

स्वाधीन भारत का पहला मंत्रिमंडल

पं. जवाहर लाल नेहरू	: प्रधानमंत्री, विदेश, कामनवेल्थ संबंध और वैज्ञानिक शोध
सरदार वल्लभ भाई पटेल	: गृह, सूचना एवं प्रसारण और राज्य
डा. राजेन्द्र प्रसाद	: खाद्य एवं कृषि
मौ. अबुल कलाम आजाद	: शिक्षा
डा. जान मथाई	: रेलवे एवं परिवहन
सरदार बलदेव सिंह	: रक्षा
जगजीवन राम	: श्रम
सी. एच. भाभा	: वाणिज्य
रफी अहमद किदवई	: संचार
राजकुमारी अमृत कौर	: स्वास्थ्य
डा. बी.आर.अम्बेदकर	: विधि
आर. के शनमुख चेट्टी	: वित्त
डा.श्यामा प्रसाद मुखर्जी	: उद्योग एवं आपूर्ति
एन. वी. गाडगिल	: कार्य खदान एवं उर्जा

सरदार वल्लभ भाई पटेल उप प्रधानमंत्री बनाये गये (अगस्त 23)

हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार और राजस्थान की विधानसभाओं और दिल्ली महानगर परिषद में स्पष्ट बहुमत प्राप्त। पंजाब में अकाली-जनता और कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के गठबंधन द्वारा स्पष्ट बहुमत प्राप्त। तमिलनाडु में अखिल भारतीय अन्ना डी. एम. के. को स्पष्ट बहुमत प्राप्त। पांडिचेरी में किसी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। (जुलाई 10)। संजीव रेड्डी भारत के राष्ट्रपति निर्वाचित। विदेश मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा सबसे पहली बार संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिन्दी में भाषण (दिसम्बर 8)।

1978: 1000, 5000 तथा 10,000 रुपये के करेन्सी नोटों का चलन समाप्त (ज[illegible]। समाचार विभाजन और इसके चार अंग-[illegible] समाचार भारती और हिन्दुस्तान [illegible] काम करना प्रारंभ (अप्रैल 14

समिति द्वारा 1975 में मारुति के संबंध में उठाए गए प्रश्न के बारे में सरकारी अधिकारियों द्वारा सूचना एकत्र करने में रुकावट डालने के लिए इंदिरा गांधी को लोकसभा की मान–हानि करने और विशेषाधिकारों के हनन का दोषी पाना (अगस्त 21) सुप्रीम कोर्ट ने घोषित किया कि संसद को आपातकाल के दौरान किए गए अपराधों के मामले में विशेष अदालतें कायम करने का वैधानिक अधिकार है (दिसम्बर 1) लोकसभा ने भूतपूर्व प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी को सदन से निष्कासित कर दिया और इसके सत्रावसान तक की अवधि के लिए कारावास की सजा (19)। इंदिरा गांधी जेल से रिहा (26)।

1979: थुम्बा से 'रोहिणी 200' नामक पहला मानसून प्रयोगात्मक राकेट छोड़ा गया (जनवरी 6)। अण्डमान और निकोबार का सेल्यूलर जेल राष्ट्रीय स्मारक घोषित (फरवरी 11) रूसियों द्वारा भारत के दूसरे उपग्रह 'भास्कर' का छोड़ना (जून 3) मोरारजी देसाई का प्रधान मंत्री पद से त्याग–पत्र (15) जनता (एस) और कांग्रेस के संयुक्त प्रधान के रूप में चरणसिंह प्रधान मंत्री (17) बांध के टूटने से गुजरात के मोरवी और लीलापुर में बाढ़। 1000 से अधिक लोगों की मृत्यु (अगस्त 12)। श्रीमती गांधी ने चरणसिंह की सरकार को समर्थन देना समाप्त किया (20)। राष्ट्रपति द्वारा संसद भंग, वर्ष के अंत तक आम–चुनाव का आदेश (21) एम. हिदायतुल्ला भारत के उपराष्ट्रपति चुने गए (31) निजाम के जवाहरात राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित (सितम्बर 21)। श्वेत (दुग्ध) क्रांति का दूसरा चरण प्रारंभ (अक्टूबर 2) जयप्रकाश नारायण का निधन (8)। बोलिविया में सेना ने सत्ता हथियाई (नवंबर 1)

अस्सी का दशक

जनवरी 14, 1980: केन्द्र में श्रीमती इंदिरा गांधी के नए मंत्रिमंडल द्वारा शपथ ग्रहण। **फरवरी 17** तमिलनाडु महाराष्ट्र, उत्तर–प्रदेश बिहार उड़ीसा मध्य प्रदेश राजस्थान पंजाब और गुजरात की राज्य विधान सभाएं भंग मंत्रिमंडल बरखास्त और राष्ट्रपति शासन लागू प्रकाश पादुकोन आल इंग्लैण्ड बैडमिंटन चैम्पियनशिप जीतनेवाले पहले भारतीय (23)। **मार्च 6** [illegible] की अध्यक्षता में भारतीय [illegible] (5) निजी क्षेत्र के छः अन्य बैंकों का राष्ट्रीयकरण **मई 7** सुप्रीम कोर्ट का निर्णय कि संसद को संविधान संशोधन का असीमित अधिकार नहीं है कोर्ट ने [illegible] की वैधता भी स्वीकार की (20) बहुगुणा द्वारा कांग्रेस (आई) से और लोकसभा से त्यागपत्र। **जून 1** ए.आई.ए.डी.एम.के. तमिलनाडु विधान सभा के चुनाव में विजयी, उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश गुजरात राजस्थान पंजाब महाराष्ट्र और उड़ीसा में कांग्रेस (आई) विजयी। (23) नई दिल्ली में एक हवाई दुर्घटना में संजय गांधी की मृत्यु। **जुलाई 18:** भारत के एस.एल.वी.-3 राकेट ने रोहिणी उपग्रह को कक्षा में स्थापित किया। **अक्तूबर 14** केन्द्र ने मारुति कम्पनी का राष्ट्रीयकरण किया। **दिसम्बर 8:** सोवियत राष्ट्रपति लियोनिद ब्रेझनेव का दिल्ली आगमन (23)।

1981: जनवरी 17 केन्द्रीय सरकार द्वारा मिजोरम को पूरे राज्य का दर्जा। (26) तीसरी पूरक एयर लाइन सेवा वायुदूत का उद्‌घाटन। **मई 26** वाई. बी. चव्हाण द्वारा कांग्रेस (यू.) से त्यागपत्र। **जून 24:** एस. एल. वी. -3 द्वारा श्रीहरिकोटा से रोहिणी को कक्षा में स्थापित किया गया। प्रथम भूस्थिर प्रयोगात्मक दूर संचार उपग्रह 'एपल' कक्षा में स्थापित। **जुलाई 16:** भारत का पहला त्रि–अक्षीय स्थिरीकृत प्रयोगात्मक संचार उपग्रह (एपल) अपनी कक्षा में स्थापित। (22) एपल के माध्यम से दूरदर्शन कार्यक्रम सफलतापूर्वक रिले किए गए। **सितम्बर 7:** बीस वर्षों के बाद। 8 सदस्यों का पहला तीर्थ यात्री दल तिब्बत में कैलाश और मानसरोवर के लिए रवाना। वयोवृद्ध पत्रकार एवं स्वतंत्रता सेनानी लाला जगतनारायण की लुधियाना में गोली मार कर हत्या। **नवम्बर 20** लाला जगतनारायण की हत्या के सिलसिले में संत जरनैलसिंह भिण्डरावाले की गिरफ्तारी। **दिसम्बर 5:** दिल्ली की कुतुब मीनार में भगदड़ से दब कर 45 व्यक्तियों की मृत्यु जिनमें से अधिकांश बच्चे।

1982: जनवरी 11: भारतीय टीम का दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचना। उद्योगपति जी.डी. बिड़ला का निधन। (31) मुख्यमंत्री ए. आर. अंतुले पर लगाए गए आरोप बंबई उच्चतम न्यायालय ने उचित पाये। अंतुले का इस्तीफा। चोपड़ा बच्चों की हत्या के लिए बिल्ला और रंगा को फांसी दी गई। **मार्च 19** आचार्य जे बी कृपलानी (94) का निधन। (24) आं प्रदेश में फिल्मी कलाकार एन. टी. रामाराव द्वारा नई पा तेलगु देशम का गठन। **अप्रैल 10:** भारत का उपग्रह इन्सैट 1 ए कक्षा में स्थापित। (21) इन्सैट–1 ए पार्किंग स्लाट प्रविष्ट। **जून 6:** कर्नाटक के पूर्व मुख्य मंत्री डी. देवराज अ का निधन। **जुलाई 8:** गांधीजी की निकट सहयोगी औ सरला बेन के नाम से विख्यात केथेरिन मेरी हेलमे (82) का निधन। (25) जैलसिंह को राष्ट्रपति पद व शपथ। **अगस्त 7:** जम्मू–कश्मीर के मुख्य मंत्री शे अब्दुल्ला (77) का निधन। **सितंबर 15:** इन्सेट–1 माध्यम से दिल्ली मद्रास, पोर्ट ब्लेयर, आइजाल और ले के भू- केंद्र चालू। **अक्टूबर 15:** भारतीय नागरिक विमान जनक जे आर डी टाटा ने 50 वर्ष बाद एक बार फि कराची से बंबई तक डि हेवीलैण्ड लियोपार्ड माथ' से उड़ा भरी (27) गांधीजी के निजी सचिव प्यारेलाल की मृत् **नवम्बर 15** आचार्य विनोबा भावे (88) का निधन। **दिसम्ब 23:** भारत और पाकिस्तान मंत्री–स्तर के संयुक्त आये बनाने पर सहमत। 114 वर्ष पुराने अंग्रेजी समाचार प 'मद्रास मेल' का प्रकाशन बंद।

1983: फरवरी 23: आंध्र प्रदेश में तेलगू देशम पा

बहुमत से सत्ता में; कर्नाटक में जनता पार्टी त्रिपुरा में सी.पी. आई. (एम) के नेतृत्व में वामपंथी मोर्चे को पूर्ण बहुमत प्राप्त। कांग्रेस (आई) ने असम में सत्ता प्राप्त की। **मार्च 21:** हितेश्वर सैकिया नए असम कांग्रेस मंत्रिमंडल के प्रधान। (24) केन्द्र–राज्य संबंधों पर विचार करने के लिए न्यायमूर्ति आर. एस. सरकारिया की अध्यक्षता में एक–सदस्यीय आयोग की नियुक्ति। **अप्रैल 12.** फिल्म 'गांधी' ने आठ आस्कर पुरस्कार जीते। (17) एस. एल. वी.–3 छोड़ा गया रोहिणी कक्षा में स्थापित। (23) बंबई के टाटा मेमोरियल अस्पताल में भारत का पहला बोन–मेरो आरोपण। **मई 31:** मथुरा तेल शोधक कारखाने का उद्घाटन। **जून 11:** भारतीय उद्योग के वयोवृद्ध नेता जी. डी. बिड़ला का निधन। डा. फारुख अब्दुल्ला जम्मू–कश्मीर के मुख्यमंत्री बने। **सितंबर 12:** अंटार्टिका संधि में भारत को सलाहकार सदस्यता प्रदान। **अक्टूबर 6:** भारतीय वायुसेना के स्क्वाड्रन लीडर राकेश शर्मा को अंतरिक्ष में भेजने के लिए चुना गया। **नवंबर 9:** राजाजी की सबसे छोटी पुत्री और गांधीजी की पुत्र–वधू लक्ष्मी देवदास गांधी (71) का निधन। **दिसंबर 10:** भारतीय नौसेना द्वारा पूरे तौर से तैयार डिजाइन तथा मैजगांव में निर्मित पहला छोटा जंगी जहाज आई.एन.एस. गोदावरी बंबई में समुद्र में उतारा गया।

1984: फरवरी 4: बर्मिंघम में भारत के सहायक हाई कमिश्नर श्री आर. एच. महात्रे का 'कश्मीर मुक्ति सेना' द्वारा अपहरण और बाद में हत्या। (26) प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने इन्सैट–1 सिस्टम राष्ट्र को समर्पित किया। **अप्रैल 5:** स्क्वार्डन लीडर राकेश शर्मा दो सोवियत अंतरिक्ष यात्रियों के साथ सोयूज टी–11 अंतरिक्ष यान में सवार होकर भारत के प्रथम अंतरिक्ष यात्री बने। (13) केरल सरकार द्वारा साइलेन्ट वेली परियोजना के समापन का निर्णय; समूचा क्षेत्र राष्ट्रीय उद्यान घोषित। **मई 9:** बिना आक्सीजन के फू डोरजी द्वारा एवरेस्ट विजय। (23) हिंद समाचार ग्रुप के समाचार पत्रों के मुख्य संपादक रमेश चंद्र चोपडा की आतंकवादियों द्वारा पंजाब में गोली मार कर हत्या। कुमारी बचेंद्री पाल एवरेस्ट चोटी पर विजय करने वाली प्रथम भारतीय महिला बनीं। **जून 2:** आतंकवादी हिंसा को रोकने के लिए पंजाब में सेना का नियंत्रण। (6) स्वर्ण मंदिर तथा अन्य धार्मिक स्थानों से सेना ने आपरेशन ब्लू स्टार के अधीन आतंकवादियों को जबरदस्ती बाहर निकाला। **अगस्त 22:** आर. वेंकटरमण भारत के आठवें उपराष्ट्रपति चुने गए। **अक्टूबर 31:** दिल्ली में अपने निवास पर अपने ही सुरक्षा गार्डों द्वारा इंदिरा गांधी की हत्या। राजीव गांधी को प्रधान मंत्री पद की शपथ दिलाई गई। **नवंबर 2:** श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या के बाद हुई हिंसा में बहुत से लोग मरे। (12) श्रीमती गांधी का पार्थिव शरीर अग्नि को भेंट; राजीव गांधी कांग्रेस (आई) के अध्यक्ष निर्वाचित। **दिसंबर 3:** भोपाल के एक कीटनाशक कारखाने यूनियन कार्बाइड से निकली जहरीली गैस में सांस लेने से 2500 व्यक्तियों की मृत्यु और 2000 बुरी तरह प्रभावित। (7) यूनियन कार्बाइड के अध्यक्ष वारेन एन्डरसन भोपाल में गिरफ्तार और बाद में रिहाई।

1985: जनवरी 1: दूरदर्शन द्वारा त्रिवेंद्रम से मलयालम में प्रसारण प्रारंभ। (30) लोकसभा ने दल–बदल विरोधी बिल पास किया। **फरवरी 1:** (14) डा. नगेंद्रसिंह विश्व न्यायालय के प्रधान चुने गए। **मार्च 12:** मेलबोर्न में बेंसन तथा हेजेज़ विश्व चैम्पियनशिप क्रिकेट प्रतियोगिता में भारत ने पाकिस्तान को 9 विकटों से फाइनल में हराया। (29) सीमित ओवरों के क्रिकेट में चैम्पियनशिप कायम रखते हुए, राथमैन्स टूर्नामेंट के फाइनल में भारत ने आस्ट्रेलिया को शारजाह में 3 विकेट से हराया। **मई 10:** ट्रांजिस्टर जैसे दिखने वाले बम दिल्ली और उसके आसपास फटे, जिनसे 80 से अधिक व्यक्ति मरे। **जून 20:** वाशिंगटन में राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने मदर टेरेसा को अमरीका के सर्वोच्च नागरिक अलंकरण स्वाधीनता पदक (मेडल आफ फ्रीडम) प्रदान किया। **जुलाई 29:** प्रधान मंत्री राजीव गांधी और अकाली दल के अध्यक्ष संत हरचंदसिंह लोंगोवाल का एक समझौते पर हस्ताक्षर। **अगस्त 20.** संगरुर के निकट अकाली दल के अध्यक्ष संत हरचंदसिंह लोंगोवाल की गोली मार कर हत्या। **सितंबर 29.** प्रधान मंत्री राजीव गांधी की थिम्पू में सम्राट जिगमे सिंग्ये वांचुक से भेंट और इंदिरा गांधी को मरणोपरांत दिए भूटान के सर्वोच्च सम्मान ड्रुक वांगियाल पुरस्कार का ग्रहण करना। **नवम्बर 6:** अभिनेता संजीव कुमार का निधन। (11) भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र का ध्रुव रिसर्च रिएक्टर राजीव गांधी द्वारा राष्ट्र को समर्पित। **दिसंबर 7:** केरल उच्च न्यायालय द्वारा निर्णय कि सभी इसाई स्कूलों के विद्यार्थियों को राष्ट्र–गान गाना पड़ेगा। (26) बंबई में कांग्रेस (आई) ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की शताब्दी मनाई।

1986: जनवरी 1: भारत की पहली चल टेलीफोन तथा रेडियो पेजिंग सेवा का नई दिल्ली में शुभारंभ। (14) भारतीय सेना के पहले कमांडर–इन–चीफ जनरल के. एम. करियप्पा फील्ड मार्शल बनाए गए। (22) 31 अक्टूबर 1984 को भूतपूर्व प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के आरोप में दिल्ली के अतिरिक्त जिला और सत्र न्यायाधीश महेशचंद ने सतवंतसिंह, बलबीरसिंह और केहरसिंह को फांसी की सजा दी (22)। **फरवरी 2.** फैजाबाद के जिला और सत्र न्यायाधीश ने निर्बाध पूजा के लिए रामजन्मभूमि खोलने के आदेश। (8) केरल के कोट्टयम में हुए एक समारोह में पोप जान पाल द्वितीय ने दो भारतीयों – स्व. फादर [illegible] कुरियाकोज एलियास और स्व. सिस्टर एलफोन्सा [illegible] 'ब्लेसेड रैंक' प्रदान किया। (17) विख्यात दार्शनिक [illegible] कृष्णमूर्ति (90) का निधन। (21) सुप्रीम कोर्ट [illegible] कि भूतपूर्व ट्रावनकोर–कोचीन राज्य की [illegible] अपने मा–बाप की सम्पत्ति में बराबर का [illegible] है. कलाक्षेत्र, मद्रास की संस्थापक [illegible] अरुन्डेल का निधन। **मार्च 8:** एल. [illegible] जनता पार्टी के अध्यक्ष निर्वाचित। [illegible] भोपाल पीड़ित के लिए यूनियन [illegible] डालर का हरजाना देने का [illegible] सभा में विरोधी पक्ष के [illegible] महिला विधेयक पास। [illegible] साथ एवरेस्ट चोटी [illegible]

नोर्वे (72) का दार्जिलिंग में निधन। जुलाई 6: जगजीवनराम (78) का निधन। अगस्त 7: मिजोरम को राज्य का दर्जा प्रदान करने वाला संविधान का 53 वां संशोधन विधेयक लोकसभा द्वारा पास; बंबई के के.ई.एम. अस्पताल में 23 वर्षीय श्रीमती श्यामजी चावड़ा ने प्रथम पूर्ण भारतीय परखनली शिशु को जन्म दिया। (10) 'आपरेशन ब्लू स्टार' के समय सेनाध्यक्ष जनरल ए.एस. वैद्य की पुणे में गोली मार कर हत्या। (17) सुप्रीम कोर्ट ने केरल के ईसाई स्कूलों की अपील पर निर्णय दिया कि राष्ट्रीय गान का गाना अनिवार्य नहीं है; सार्क का सचिवालय काठमांडू में बनाने का निर्णय। सितंबर 3: डा. वर्गिस कुरियन ने 1986 का कार्नेगी शांति पुरस्कार जीता। (10) प्रधान मंत्री राजीव गांधी ने निकारगुआ के सर्वोच्च पुरस्कार 'दि कार्स्टो सीज़र सैन्डिनो आर्डर' वहां के राष्ट्पति डेनियल ओर्टोगा से नई दिल्ली में ग्रहण किया। नवम्बर 8: देश का पहला राष्ट्रीय सांस्कृतिक समारोह 'अपना उत्सव' नई दिल्ली में प्रारंभ। दिसंबर 3. दिल्ली उच्चतम न्यायालय ने इंदिरा के हत्यारों - सतवंतसिंह बलबीरसिंह और केहरसिंह को दी गई फासी की सजा की पुष्टि कर दी। (14) अरुणाचल प्रदेश को पूरे राज्य का दर्जा प्रदान करने वाला संविधान का 55 वा संशोधन विधेयक लोक सभा द्वारा पास किया गया फिल्म अभिनेत्री स्मिता पाटील (39) का मस्तिष्क रक्तस्राव से निधन (14)।

1987: जनवरी 6 संगीत निर्देशक जयदेव का निधन। (10) भारतीय नौका तृष्णा भारतीय सेना के ले. कर्नल के एम. राव के नेतृत्व में 30,000 समुद्री मील की विश्व के चारो ओर की यात्रा पूरी करके बंबई पहुंची। (26) जनरल ए एस वैद्य को मरणोपरांत पदम विभूषण सम्मान नीरजा मिश्र को मरणोपरांत अशोक चक्र सम्मान। फरवरी 4: केरल के स्कूलों में राष्ट्रीय गीत के गायन को अनिवार्य बनाया गया। (16) भारत में सर्वाधिक प्रसार वाले दैनिक पत्र 'मलयाला मनोरमा' ने त्रिवेंद्रम संस्करण का प्रारंभ किया। (20) अरुणाचल प्रदेश भारत का 24 वा राज्य बना। मार्च 7: सुनील गावस्कर ने अहमदाबाद में अपने टेस्ट जीवन मे 10,000 रन पूरे कर विश्व के पहले खिलाड़ी बने। अप्रैल 2: भारतीय मानक संस्थान भारतीय मानक अधिनियम के तहत वैधानिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर भारतीय मानक ब्यूरो बना। (7) सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने केरल की सायरा बानो के मुकदमे में फैसला दिया कि सारी पत्नियां जिनमें मुस्लिम महिलायें भी शामिल हैं अगर उनके पति उन्हें छोड देते हैं या दूसरा विवाह कर लेते हैं तो जीवन यापन का मुआवजा लेने का अधिकार रखती है। (23) वी पी सिंह ने रक्षा मंत्री पद से त्यागपत्र दिया। सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में 1956 के हिंदू उत्तराधिकारी अधिनियम के अंतर्गत हिंदू विधवा को संपत्ति का एकमात्र अधिकार दिया। मई 11: लोक सभा ने गोवा को राज्य का दर्जा दिये जाने के प्रस्ताव पारित किया। (29) भूतपूर्व प्रधान मंत्री चौ. चरण सिंह (85) का निधन। (30) गोवा भारत का 25 वा राज्य बना, दमन और दिउ संघ शासित प्रदेश बने रहे। जून 4: स्वीडिश जांच से पता चला कि बोफोर्स ने हथियार सौदे को प्राप्त करने के लिये दलाली दी थी। जुलाई 17: कांग्रेस अध्यक्ष राजीव गांधी ने वी.सी. शुक्ला, आरिफ मोहम्मद खां और अरुण नेहरू को पार्टी विरोधी गतिविधियों के आरोप में कांग्रेस से निष्कासित किया। भूतपूर्व वित्त मंत्री वी. पी. सिंह ने कांग्रेस पार्टी से त्यागपत्र दिया। राष्ट्रपति चुनाव में आर. वेंकटारमन निर्वाचित। अगस्त 2: विश्वनाथन आनंद विश्व जूनियर शतरंज चैंपियनशिप जीतने वाले पहले एशियाई बने। (21) शंकर दयाल शर्मा उपराष्ट्रपति पद के लिये निर्वाचित। (27) लोक सभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ ने बोफोर्स सौदे की जांच के लिये शंकरानंद को संसदीय समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया। अक्टूबर 2. वी. पी. सिंह ने अपने साथियों के साथ 'जन मोर्चा' की स्थापना की। (27) भूतपूर्व टेस्ट क्रिकेट खिलाडी विजय मर्चेंट (77) का दिल का निधन। दिसंबर 15: कम्युनिस्ट नेता पी. राममूर्ति (80) का निधन। (17) भोपाल ने यूनियन कार्बाइड को 1984 गैस पीड़ितों के लिये अंतरिम सहायता के रूप में 350 करोड़ रु. देने का आदेश दिया। (24) तमिलनाडु के मुख्य मंत्री एम. जी. रामचंदन (70) का निधन।

1988: जनवरी 16: तमिलनाडु के राज्यपाल ने श्रीमती जानकी रामचन्दन को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया। प्रख्यात अर्थशास्त्री के. झा की मृत्यु। (20) सीमांत गाधी खान अब्दुल गफ्फार खान का निधन। फरवरी 17: बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर का निधन। मार्च 23: मलयाला मनोरमा ने इतिहास के जागरूक प्रत्यक्षदर्शी के रूप में अपने 100 वर्ष पूरे किए। जून 2: फिल्म अभिनेता-निर्देशक राजकपूर (64) का निधन। (18) वी. [illegible] इलाहाबाद संसदीय उपचुनाव में निर्वाचित। जुल[illegible] इन्सेट-आई सी का प्रक्षेपण कोरोऊ आइसलैंड (फ्रें[illegible] से यूरोपियन स्पेस एजेन्सी के एरियन राकेट द्वारा दि[illegible] (28) राष्ट्रीय बैडमिंटन खिलाड़ी सैय्यद मोदी की [illegible] अगस्त 3: श्रीमती इंदिरा गांधी हत्याकांड के दो [illegible] केहर सिंह और सतवंत सिंह के मृत्युदंड [illegible] न्यायालय ने बहाल रखा और तीसरे अभियुक्त [illegible] को षड़यन्त्रकारी के आरोप से रिहा कर दिया [illegible] जनता पार्टी, लोकदल और जनमोर्चा की स[illegible] नई राष्ट्रीय केन्द्रीय पार्टी-जनता दल-की [illegible] वी पी सिंह अध्यक्ष निर्वाचित। दिसंबर [illegible] कोर्ट आफ जस्टिस के अध्यक्ष डा. नगे[illegible] निधन। (18) प्रधान मंत्री राजीव गांधी [illegible] यात्रा के लिए गए वे पिछले 34 वर्षों [illegible] जाने वाले पहले प्रधान मंत्री हैं। (21) [illegible] अभियान दल अन्टार्कटिका पहुंचा [illegible] लेखक जैनेन्द्र कुमार (83) का नि[illegible]

1989: जनवरी 6: इंदिरा [illegible] और केहर सिंह को नई दिल्ली [illegible] फासी। (16) मलयालम फि[illegible] निधन (16)। फरवरी 2: रा[illegible] के सर्वोच्च नागरिक पुरस्क[illegible] निदेशक सत्यजीत राय को [illegible] न्यायालय ने अमरीकी कंपन[illegible] गैस त्रासदी के लिये [illegible]

डालर (715 करोड़ रु) का भुगतान करने का आदेश दिया। **मार्च 12:** भू. पू. केन्द्रीय मंत्री एवं लोकदल – यी के अध्यक्ष हेमवतीनंदन बहुगुणा का निधन।(18) मलयाला मनोरमा के शताब्दी वर्ष के समापन समारोह प्रधान मंत्री राजीव गांधी ने मनोरमा इयर बुक के हिंदी संस्करण को जारी किया गया। **अप्रैल 1:** प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एस.एम. जोशी का निधन। **मई 5:** उद्योगपति नवल. एच. टाटा का निधन। (22) आइ.आर.बी.एम. तकनीक की अग्नि मिसाइल का उड़ीसा के चांदीपुर समुद्र तट से सफल प्रक्षेपण। **जून 1:** विख्यात उद्‍घोषक कमेंट्रेटर, मेलविल डी. मेलो का निधन । **जुलाई 16:** प्रधान मंत्री राजीव गांधी पाकिस्तान यात्रा पर गये। **सितंबर 20:** भारतीय शांति सेना ने लिट्टे के विरुद्ध सभी सैन्य कार्यवाहियां रोकीं ।(21) श्रृंगेरी शारदा मठ के आध्यात्मिक प्रमुख जगतगुरु अभिनव विद्या तीर्थ स्वामी का निधन।(27) भारत की सतह से सतह मारक मिसाइल "पृथ्वी" का दूसरा सफल परीक्षण; विख्यात गायक हेमंत कुमार का निधन।

अक्तूबर 5: केरल उच्च न्यायालय की भू. पू. न्यायधीश एम. फातिमा बीवी सर्वोच्च न्यायालय की प्रथम महिला न्यायधीश नियुक्त। (12) प्रसिद्ध लेखक, मातृभूमि के मुख्य संपादक डा. एन. वी. कृष्ण वारियर का निधन। **नवंबर 5:** जनरल ए. एस. वैद्य के हत्यारे सुखदेव सिंह और हरमिंदर सिंह जिंदा को फांसी की सजा। । **दिसंबर 21:** प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने लोकसभा में विश्वास मत प्राप्त किया।(26) भारत ने बोफोर्स कं. से किसी भी प्रकार के सौदे पर प्रतिबंध लगा दिया ;कार्टूनिस्ट केशव शंकर पिल्ले का निधन।

'ओशो' रजनीश का निधन

जनवरी 12,1990 भोपाल में गैस पीड़ितों के लिए एकमुश्त अंतरिम राहत की घोषणा। देविका रानी को "सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार । ओशो' रजनीश" का पुणे में निधन।

फरवरी 1: जयपुर घराने के प्रसिद्ध कत्थक नृत्यकार दुर्गालाल का लखनऊ में देहांत। (4) बंगला उपन्यासकार मैत्रे‍यी देवी का निधन।(16) कुलदीप नैयर ब्रिटेन के नए राजदूत।(18) "एयर बस–320" की उड़ानों पर रोक। (21) कथाशिल्पी अमृतलाल नागर का निधन ।

मार्च 2: महाराष्ट्र में कांग्रेस फिर सत्ता में। (3) अरुणाचल में कांग्रेस को बहुमत। (5) सी.बी.आई. द्वारा पनडुब्बी सौदे के संबंध में प्राथमिकी दायर,भटनागर व हिन्दुजा समेत कई को अभियुक्त बनाया। भोपाल गैस पीड़ितों को 3600 करोड़ रुपए की राशि । प्रत्येक पीड़ित को 200 रुपए महीना मिलना तय।(26) गोवा में राणे मंत्रिमंडल का त्यागपत्र।

अप्रैल 4: स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर को "दादा फाल्के पुरस्कार"।

मई 1: नागा नेशनलिस्ट कौंसिल के अध्यक्ष फीजो का लंदन में देहांत।(30) अनुसूचित जाति एवं जनजाति आयोग को संवैधानिक दर्जा देने और भूमि सुधार विधेयक पारित।(31) दिल्ली को राज्य दर्जा देने का बिल पेश।

जून 12. "इनसेट–1 डी" का सफल प्रक्षेपण। (19) "कोंकण रेल निगम" समझौते पर हस्ताक्षर। (23) कवि, चरित्र अभिनेता हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय का निधन।

जुलाई 1: योजना आयोग से हेगडे का त्यागपत्र; मिजोरम के मुख्यमंत्री लालडेंगा का लंदन में निधन। (20) लंदन में गांधीजी के पत्र 27 हजार पौंड में बिके। (30) प्रसिद्ध उद्योगपति एम. पी. बिड़ला का निधन । कपिल देव ने लार्ड्स टेस्ट में लगातार चार चौके लगा कर विश्व रिकार्ड बनाया।

अगस्त 1: वी.पी. सिंह ने देवीलाल को मंत्रिमंडल से बर्खास्त किया।(15) प्रक्षेपास्त्र "आकाश" का सफल प्रक्षेपण।

सितंबर 5: "प्रसार भारती" बिल राज्यसभा में पास। मुख्य न्यायाधीश सव्यसाची मुखर्जी का लंदन में देहांत। प. बंगाल के भूतपूर्व मुख्यमंत्री प्रफुल्ल सेन का कलकत्ता में

अक्टूबर 1: आरक्षण विरोधी आंदोलन लीं । सुप्रीम कोर्ट द्वारा मंडल रिपोर्ट स्थगन मिश्र नए मुख्य न्यायाधीश बने। (6) पं. क का निधन। (16) नेल्सन मंडेला को (27) फिल्म निर्माता वी. शांताराम का नि

नवंबर 1: गुजरात में चिमनभाई पटे मत। इंका द्वारा समर्थन।(2) अयोध्या म 18 मरे।(7) जनता दल विभाजित ।।प गिरने से विश्वनाथ प्रताप सिंह सरकार पराजित।(10) चंद्रशेखर नए प्रधानमंत्री प

दिसंबर 1: श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित का निधन।(3) ए–300 एयरबसों की घरेलू उड़ानें (31) विख्यात लेखक रघुवीर सहाय का निधन।

जनवरी 1, 1991: कर्नाटक के गवर्नर वी. पी. का त्यागपत्र । खुर्शीद आलम खान नए गव (4) न्यायाधीश जे. सी. शाह का बंबई में निधन। (5) राघवन रेड्डी प. बंगाल के राज्यपाल बने। (7) डा. मुर मनोहर जोशी भाजपा के नए अध्यक्ष। (17) खाड़ी के लि एयर इंडिया की सभी उड़ानें बंद। (25) भूतपूर्व प्रधानमं मोरारजी देसाई को भारतरत्न की घोषणा ।

फरवरी 7: उच्च न्यायालय ने राजीव गांधी के चुनाव को वैध ठहराया। (11) पृथ्वी की टेस्ट फ्लाइट सफल। (18) गोवा के मुख्यमंत्री को विश्वास मत मिला। (21) अभिनेत्री नूतन का बंबई में निधन। (25) पी.एस.एल.वी. के चौथे चरण का सफल परीक्षण।

नार्वे (72) का दार्जिलिंग में निधन। जुलाई 6: जगजीवनराम (78) का निधन। अगस्त 7: मिजोरम को राज्य का दर्जा प्रदान करने वाला संविधान का 53 वां संशोधन विधेयक लोकसभा द्वारा पास; बंबई के के.ई.एम. अस्पताल में 23 वर्षीय श्रीमती श्यामजी चावड़ा ने प्रथम पूर्ण भारतीय परखनली शिशु को जन्म दिया।(10) 'आपरेशन ब्लू स्टार' के समय सेनाध्यक्ष जनरल ए.एस. वैद्य की पुणे में गोली मार कर हत्या। (17) सुप्रीम कोर्ट ने केरल के ईसाई स्कूलों की अपील पर निर्णय दिया कि राष्ट्रीय गान का गाना अनिवार्य नहीं है; सार्क का सचिवालय काठमांडू में बनाने का निर्णय। सितंबर 3: डा. वर्गीस कुरियन ने 1986 का कार्नेगी शांति पुरस्कार जीता। (10) प्रधान मंत्री राजीव गांधी ने निकारगुआ के सर्वोच्च पुरस्कार 'दि कस्टो सीज़र सैन्डिनो आर्डर' वहां के राष्ट्रपति डेनियल ओर्टेगा से नई दिल्ली में ग्रहण किया। नवम्बर 8: देश का पहला राष्ट्रीय सास्कृतिक समारोह 'अपना उत्सव' नई दिल्ली में प्रारंभ। दिसंबर 3. दिल्ली उच्चतम न्यायालय ने इंदिरा के हत्यारों – सतवंतसिंह, बलवीरसिंह और केहरसिंह को दी गई फांसी की सजा की पुष्टि कर दी।(14) अरुणाचल प्रदेश को पूरे राज्य का दर्जा प्रदान करने वाला संविधान का 55 वां संशोधन विधेयक लोक सभा द्वारा पास किया गया; फिल्म अभिनेत्री स्मिता पाटील (39) का मस्तिष्क रक्तस्राव से निधन (14)।

1987: जनवरी 6: संगीत निर्देशक जयदेव का निधन। (10) भारतीय नौका 'तृष्णा' भारतीय सेना के ले. कर्नल के एम. राव के नेतृत्व में 30,000 समुद्री मील की 'विश्व के चारो ओर' की यात्रा पूरी करके बंबई पहुंची।(26) जनरल ए.एस. वैद्य को मरणोपरांत 'पदम विभूषण' सम्मान; नीरजा मिश्रा को मरणोपरांत 'अशोक चक्र' सम्मान। फरवरी 4: केरल के स्कूलों में राष्ट्रीय गीत के गायन को अनिवार्य बनाया। (16) भारत में सर्वाधिक प्रसार वाले दैनिक पत्र मनोरमा' ने त्रिवेंद्रम संस्करण का प्रारंभ किया। (20) अरुणाचल प्रदेश भारत का 24 वां राज्य बना। मार्च 7: सुनील गावस्कर ने अहमदाबाद में अपने टेस्ट जीवन में 10,000 रन पूरे कर विश्व के पहले खिलाड़ी बने। अप्रैल 2: भारतीय मानक संस्थान, भारतीय मानक अधिनियम के तहत वैधानिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर भारतीय मानक ब्यूरो बना। (7) सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने केरल की सायरा बानो के मुकदमे में फैसला दिया कि सारी पत्नियां जिनमें मुस्लिम महिलायें भी शामिल हैं, अगर उनके पति उन्हें छोड़ देते हैं या दूसरा विवाह कर लेते हैं तो जीवन यापन का मुआवजा लेने का अधिकार रखती है। (23) वी.पी. सिंह ने रक्षा मंत्री पद से त्यागपत्र दिया। सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में 1956 के हिंदू उत्तराधिकारी अधिनियम के अंतर्गत हिंदू विधवा को संपत्ति का एकमात्र अधिकार दिया। मई 11: लोक सभा ने गोवा को राज्य का दर्जा दिये जाने के प्रस्ताव पारित किया।(29) भूतपूर्व प्रधान मंत्री चौ. चरण सिंह (85) का निधन।(30) गोवा भारत का 25 वां राज्य बना, दमन और दियु संघ शासित प्रदेश बने रहे। जून 4: स्वीडिश जांच से पता चला कि बोफोर्स ने हथियार सौदे को प्राप्त करने के लिये दलाली दी थी। जुलाई 17: कांग्रेस अध्यक्ष राजीव गांधी ने वी. सी. शुक्ला, आरिफ मोहम्मद और अरुण नेहरू को पार्टी विरोधी गतिविधियों के आरो कांग्रेस से निष्कासित किया। भूतपूर्व वित्त मंत्री वी. पी. ने कांग्रेस पार्टी से त्यागपत्र दिया। राष्ट्रपति चुनाव में उ वेंकटारमन निर्वाचित। अगस्त 2: विश्वनाथन आनंद वि जूनियर शतरंज चैंपियनशिप जीतने वाले पहले एशियाई (21) शंकर दयाल शर्मा उपराष्ट्रपति पद के लिये निर्वाचि (27) लोक सभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ ने बोफोर्स सौदे जांच के लिये शंकरानंद को संसदीय समिति का अध नियुक्त किया। अक्टूबर 2 वी. पी. सिंह ने अपने साथियों साथ 'जन मोर्चा' की स्थापना की।(27) भूतपूर्व टेस्ट क्रि खिलाड़ी विजय मर्चेंट (77) का दिल का निधन। दिसं 15: कम्युनिस्ट नेता पी. राममूर्ति (80) का निध (17) भोपाल ने यूनियन कार्बाइड को 1984 गैस पीड़ि के लिये अंतरिम सहायता के रूप में 350 करोड़ रु. का आदेश दिया।(24) तमिलनाडु के मुख्य मंत्री एम. रामचंद्रन (70) का निधन।

1988: जनवरी 16: तमिलनाडु के राज्यपाल ने श्री जानकी रामचन्द्रन को सरकार बनाने के लिए आमं किया। प्रख्यात अर्थशास्त्री के. झा की मृत्यु।(20) सी गांधी खान अब्दुल गफ्फार खान का निधन। फरवरी 1 बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर का निधन। मार्च 2 मलयाला मनोरमा ने इतिहास के जागरुक प्रत्यक्षदर्शी के में अपने 100 वर्ष पूरे किए। जून 2: फिल्म अभिने निर्देशक राजकपूर (64) का निधन। (18) वी. पी. इलाहाबाद संसदीय उपचुनाव में निर्वाचित। जुलाई इन्सेट-आई सी का प्रक्षेपण कोरोऊ आइसलैंड (फ्रेंच गुया से यूरोपियन स्पेस एजेन्सी के एरियन राकेट द्वारा किया ग (28) राष्ट्रीय बैडमिंटन खिलाड़ी सैय्यद मोदी की हत्य अगस्त 3: श्रीमती इंदिरा गांधी हत्याकांड के दो अभियु केहर सिंह और सतवंत सिंह के मृत्युदंड को सर्वो न्यायालय ने बहाल रखा और तीसरे अभियुक्त बलवीर को षड़यंत्रकारी के आरोप से रिहा कर दिया। अक्टूबर 1 जनता पार्टी, लोकदल और जनमोर्चा की सदस्यता के स नई राष्ट्रीय केन्द्रीय पार्टी–जनता दल–की स्थापना की वी. पी. सिंह अध्यक्ष निर्वाचित। दिसंबर 11: इंटरनेशन कोर्ट आफ जस्टिस के अध्यक्ष डा. नगेन्द्र सिंह (74) निधन। (18) प्रधान मंत्री राजीव गांधी चीन की राजक यात्रा के लिए गए वे पिछले 34 वर्षों में चीन की यात्रा जाने वाले पहले प्रधान मंत्री हैं।(21) आठवां भारतीय विज्ञ अभियान दल अन्टार्कटिका पहुंचा। (24) प्रसिद्ध हि लेखक जैनेन्द्र कुमार (83) का निधन।

1989: जनवरी 6: इंदिरा गांधी के हत्यारे संतवंत सि और केहर सिंह को नई दिल्ली में तिहाड़ केंद्रीय कारागृह फांसी। (16) मलयालम फिल्म अभिनेता प्रेम नज़ीर निधन (16)। फरवरी 2: राष्ट्रपति फ्रांसिस मित्तरां ने फ्रां के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार लीजन डी. आनर फिल निदेशक सत्यजीत राय को सम्मानित किया।(14) सर्वो न्यायालय ने अमरीकी कंपनी यूनियन कार्बाइड को "भोपा गैस त्रासदी" के लिये पूर्ण एवं अंतिम रूप से 470 मिलिय

डालर (715 करोड़ रु) का भुगतान करने का आदेश दिया। मार्च 12: भू. पू. केन्द्रीय मंत्री एवं लोकदल – वी के अध्यक्ष हेमवतीनंदन वहुगुणा का निधन। (18) मलयाला मनोरमा के शताव्दी वर्ष के समापन समारोह प्रधान मंत्री राजीव गांधी ने मनोरमा इयर वुक के हिंदी संस्करण को जारी किया गया। अप्रैल 1: प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एस.एम. जोशी का निधन। मई 5: उद्योगपति नवल. एच. टाटा का निधन। (22) आइ.आर.वी.एम. तकनीक की अग्नि मिसाइल का उड़ीसा के चांदीपुर समुद्र तट से सफल प्रक्षेपण। जून 1: विख्यात उद्घोषक कमेंट्रेटर, मेलविल डी. मेलो का निधन। जुलाई 16: प्रधान मंत्री राजीव गांधी पाकिस्तान यात्रा पर गये। सितंवर 20: भारतीय शांति सेना ने लिट्टे के विरुद्ध सभी सैन्य कार्यवाहियां रोकीं। (21) श्रृंगेरी शारदा मठ के आध्यात्मिक प्रमुख जगतगुरु अभिनव विद्या तीर्थ स्वामी का निधन। (27) भारत की सतह से सतह मारक मिसाइल "पृथ्वी" का दूसरा सफल परीक्षण; विख्यात गायक हेमंत कुमार का निधन।

अक्टूवर 5: केरल उच्च न्यायालय की भू. पू. न्यायधीश एम. फातिमा बीवी सर्वोच्च न्यायालय की प्रथम महिला न्यायधीश नियुक्त। (12) प्रसिद्ध लेखक, मातृभूमि के मुख्य संपादक डा. एन. वी. कृष्ण वारियर का निधन। नवंवर 5: जनरल ए. एस. वैद्य के हत्यारे सुखदेव सिंह और हरमिंदर सिंह जिंदा को फांसी की सजा।। दिसंवर 21: प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने लोकसभा में विश्वास मत प्राप्त किया। (26) भारत ने वोफोर्स कं. से किसी भी प्रकार के सौदे पर प्रतिवंध लगा दिया ;कार्टूनिस्ट केशव शंकर पिल्ले का निधन।

'ओशो' रजनीश का निधन

जनवरी 12,1990 भोपाल में गैस पीड़ितों के लिए एकमुश्त अंतरिम राहत की घोषणा। देविका रानी को "सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार। ओशो' रजनीश" का पुणे में निधन।

फरवरी 1: जयपुर घराने के प्रसिद्ध कत्थक नृत्यकार दुर्गालाल का लखनऊ में देहांत। (4) वंगला उपन्यासकार मैत्रेयी देवी का निधन। (16) कुलदीप नैयर व्रिटेन के नए राजदूत। (18) "एयर वस–320" की उड़ानों पर रोक। (21) कथाशिल्पी अमृतलाल नागर का निधन।

मार्च 2: महाराष्ट्र में कांग्रेस फिर सत्ता में। (3) अरुणाचल में कांग्रेस को वहुमत। (5) सी.वी.आई. द्वारा पनडुव्वी सौदे के संवंध में प्राथमिकी दायर, भटनागर व हिन्दुजा समेत कई को अभियुक्त वनाया। भोपाल गैस पीड़ितों को 3600 करोड़ रुपए की राशि। प्रत्येक पीड़ित को 200 रुपए महीना मिलना तय। (26) गोवा में राणे मंत्रिमंडल का त्यागपत्र।

अप्रैल 4: स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर को "दादा फाल्के पुरस्कार"।

मई 1: नागा नेशनलिस्ट कौंसिल के अध्यक्ष फीजो का लंदन में देहांत। (30) अनुसूचित जाति एवं जनजाति आयोग को संवैधानिक दर्जा देने और भूमि सुधार विधेयक पारित। (31) दिल्ली को राज्य दर्जा देने का विल पेश।

जून 12. "इनसेट–1 डी" का सफल प्रक्षेपण। (19) "कोंकण रेल निगम" समझौते पर हस्ताक्षर। (23) कवि, चरित्र अभिनेता हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय का निधन।

जुलाई 1: योजना आयोग से हेगडे का त्यागपत्र; मिजोरम के मुख्यमंत्री लालडेंगा का लंदन में निधन। (20) लंदन में गांधीजी के पत्र 27 हजार पौंड में विके। (30) प्रसिद्ध उद्योगपति एम. पी. विड़ला का निधन। कपिल देव ने लार्ड टेस्ट में लगातार चार चौके लगा कर विश्व रिकार्ड वनाया।

अगस्त 1: वी. पी. सिंह ने देवीलाल को मंत्रिमंडल से वर्खास्त किया। (15) प्रक्षेपास्त्र "आकाश" का सफल प्रक्षेपण।

सितंवर 5: "प्रसार भारती" विल राज्यसभा में पास। मुख्य नायाधीश सव्यसाची मुखर्जी का लंदन में देहांत। प. वंगाल के भूतपूर्व मुख्यमंत्री प्रफुल्ल सेन का कलकत्ता में निधन।

अक्टूवर 1: आरक्षण विरोधी आंदोलन ने 9 और जानें लीं। सुप्रीम कोर्ट द्वारा मंडल रिपोर्ट स्थगन आदेश। रंगनाथ मिश्र नए मुख्य न्यायाधीश वने। (6) पं. कमलापति त्रिपाठी का निधन। (16) नेल्सन मंडेला को "भारतरत्न"। (27) फिल्म निर्माता वी. शांतराम का निधन।

नवंवर 1: गुजरात में चिमनभाई पटेल को विश्वास मत। इंका द्वारा समर्थन। (2) अयोध्या में गोलीवारी में 18 मरे। (7) जनता दल विभाजित। विश्वास प्रस्ताव गिरने से विश्वनाथ प्रताप सिंह सरकार लोकसभा में पराजित। (10) चंद्रशेखर नए प्रधानमंत्री वने।

दिसंवर 1: श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित का देहरादून में निधन। (3) ए–300 एयरवसों की घरेलू उडानें फिर शुरू। (31) विख्यात लेखक रघुवीर सहाय का निधन।

जनवरी 1, 1991: कर्नाटक के गवर्नर वी. पी. सिंह का त्यागपत्र। खुर्शीद आलम खान नए गवर्नर। (4) न्यायाधीश जे. सी. शाह का वंवई में निधन। (5) वी. राघवन रेड्डी प. वंगाल के राज्यपाल वने। (7) डा. मुरली मनोहर जोशी भाजपा के नए अध्यक्ष। (17) खाड़ी के लिए एयर इंडिया की सभी उड़ानें वंद। (25) भूतपूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई को भारतरत्न की घोषणा।

फरवरी 7: उच्च न्यायालय ने राजीव गांधी के चुनाव को वैध ठहराया। (11) पृथ्वी की टेस्ट फ्लाइट सफल। (18) गोवा के मुख्यमंत्री को विश्वास मत मिला। (21) अभिनेत्री नूतन का वंवई में निधन। (25) पी.एस.एल.वी. के चौथे चरण का सफल परीक्षण।

मार्च 4: पांडिचेरी विधानसभा भंग। (6) प्रधानमंत्री चंद्रशेखर का त्यागपत्र । (13) लोकसभा भंग। (15) भानु प्रकाश गोवा के नए गवर्नर (15) । 1991 की जनगणना के आधार पर जनसंख्या 84 करोड़ 39 लाख।

अप्रैल 3: प.बंगाल विधानसभा भंग।(5) केरल विधानसभा भंग। असम गण परिषद् विभाजित।(13) आरिफ, अरुण नेहरू और सतपाल ने जद पार्टी पद छोड़े। (17) केरल ने 100 प्रतिशत साक्षरता का लक्ष्य पूरा किया।

मई 21. तमिलनाडु के चुनावी दौरे में श्री-पेरम्बुदुर में मानव बम विस्फोट में राजीव गांधी की मृत्यु । 14 अन्य भी मरे। (22) कम्युनिस्ट नेता श्रीपद अमृत डांगे का निधन। (29) पी. वी. नरसिंह राव इंका अध्यक्ष चुने गए।

जून 5: भारत ने 400 करोड़ का सोना बेचा।(9) फिल्म निर्देशक राज खोसला का बंबई में निधन। (13) राजीव हत्याकांड में नलिनी तथा मुरुगुन गिरफ्तार। (20) दसवीं लोकसभा गठित । पी. वी. नरसिंह राव कांग्रेस पार्टी के नेता चुने गए। (28) भारतीय तेल निगम के अफसर के. दोराईस्वामी का श्रीनगर में अपहरण। (30) असम में सैकिया मंत्रिमंडल द्वारा शपथ।

जुलाई 1: असम में उच्च अधिकारियों सहित 14 का अपहरण।(3) रुपए का फिर से भारी अवमूल्यन।(4) 'पृथ्वी' प्रक्षेपास्त्र का सफल परीक्षण। (11) भारत ने बीस करोड़ डालर ऋण के लिए सोना गिरवी रखा ।(12) सरदार पटेल मरणोपरांत 'भारत रत्न' से सम्मानित (17) रिजर्व बैंक ने 12 टन सोना निर्यात किया।(18) 40 करोड़ डालर ऋण के लिए 46.9 टन सोना गिरवी रखा गया। (24) नई औद्योगिक नीति की घोषणा।

अगस्त 3: गोवा के स्वर्णभूषण पुर्तगाल से वापस आए। (5) सुरेंद्रनाथ पंजाब के नए गवर्नर बने।(7) पृथ्वी-3 सफलता पूर्वक छोड़ा गया। (13) मल्लिकार्जुन लोकसभा के उपाध्यक्ष बने। राजीव हत्याकांड के प्रमुख अभियुक्त शिवरासन तथा शुभा द्वारा आत्महत्या । कश्मीर में पांच उग्रवादियों की एवज में दोराईस्वामी रिहा। (24) मोरारजी देसाई को भारत रत्न।

सितंबर 5. प्रसिद्ध लेखक शरद जोशी का बंबई में निधन। (9) लियेण्डर पेस ने जूनियर अमेरिकी ओपन जीता। (22) अभिनेत्री दुर्गा खोटे का निधन।

अक्टूबर 5: इंडियन एक्सप्रेस ग्रुप प्रकाशन के चेयरमैन रामनाथ गोयनका का निधन। (9) रोमानिया के राजदूत रादू का दिल्ली में अपहरण। (10) उ.प्र सरकार द्वारा मंदिर के लिए जमीन का अधिग्रहण। (24) नरोरा परमाणु संयत्र की दूसरी यूनिट चालू । लेखिका इस्मत चुगताई का निधन।

नवंबर 1: अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने 220 करोड़ डालर का ऋण जारी किया। (3) उ.प्र. सरकार ने अयोध्या की विवादग्रस्त भूमि का अधिग्रहण किया । प्रक्षेपास्त्र 'त्रिशूल' का परीक्षण। (14) के. एन. सिंह सुप्रीम कोर्ट के नए मुख्य न्यायाधीश। (22) कावेरी पानी पर कर्नाटक विधेयक को सुप्रीम कोर्ट ने असंवैधानिक ठहराया ।

दिसंबर 1: लोकसभा कार्यवाही का दूरदर्शन पर प्रसारण आरंभ। (5) दिल्ली को विधानसभा और मंत्रिपरिषद देने की घोषणा । संघीय क्षेत्र का दर्जा बरकरार रहेगा। (14) फिल्मकार सत्यजित राय को विशेष आस्कर पुरस्कार। (23) भारत द्वारा पूर्व सोवियत संघ के 12 गणराज्यों को राजनयिक मान्यता, अजित सिंह जनता दल से निष्कासित ।

जनवरी 1, 1992: सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायधीश के.एन. सिंह विधि आयोग के अध्यक्ष नियुक्त। (12) शास्त्रीय संगीत के गायक कुमार गंधर्व का निधन। (15) कला निर्देशक के. नागेश्वर का निधन । (22) सुभाष चंद बोस और मौलाना अबदुल कलाम आजाद को 'भारत रत्न । (25) जे.आर.डी. टाटा को 'भारत रत्न'।

फरवरी 1: अभिनेता मोहन चोटी का निधन।(3) 400 विकेट लेकर कपिल विश्व के दूसरे गेंदबाज। (5) दल बदल कानून: निर्णय मानने पर सहमति।(6) टाटा को संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या पुरस्कार। (21) जे. के. एल. एफ. पर प्रतिबंध। सजपा, लोकदल तथा इंडियन कांग्रेस एस. दलों की मान्यता रद्द।(25) बेअंत सिंह पंजाब के मुख्यमंत्री ।

मार्च 3 : भारतीय रिजर्व बैंक ने मध्यस्थ मुद्रा का दर्जा अब पौंड स्टर्लिंग के बजाय अमरीकी डालर को। (5) अभिनेता सुंदर का निधन । (15) लेखक राही मासूम रजा का निधन।

अप्रैल 2: फिल्म अभिनेता आगा खां का निधन। (16) खेल प्रशासक राजा भालेंद्र सिंह का निधन। (23) सत्यजीत राय का निधन। (30) यूनियन कार्बाइड की संपत्ति कुर्क करने का आदेश।

मई 2: पृथ्वी मिसाइल का सफल परीक्षण।(9) प्रतिभूति घोटाले में नेशनल हाउसिंग बोर्ड तथा यूको बैंक के प्रमुखों का त्यागपत्र। (13) राष्ट्रीय स्वयं सेवक के भाऊराव देवरस का निधन । संवर्धित प्रक्षेपण यान ए.एस.एल.वी. डी-3 द्वारा 'रोहिणी' कक्षा में स्थापित ।(29) 'अग्नि' का दूसरा प्रक्षेपण।

जून 2: बैंकों से 3078 करोड़ रुपये का घोटाला। (4) हर्षद मेहता तथा बैंक अधिकारी गिरफ्तार।

जुलाई 1: टेलीफोन कहीं भी हस्तांतरित हो सकने की घोषणा । (7) डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम रक्षा मंत्रालय के नए सलाहकार। (9) इनसेट-2 सफलतापूर्वक प्रक्षेपित। (16) शंकर दयाल शर्मा भारत के नवें राष्ट्रपति बने । (18) अभिनेत्री कानन देवी का निधन। (27) अभिनेता अमजद खान का निधन।

अगस्त 5: अयोध्या में निर्माण की व्यापक जांच होगी । सुप्रीम कोर्ट ने तीन सदस्यीय आयोग बनाया। (19) के. आर. नारायण उपराष्ट्रपति चुने गये।

सितंबर 2: सूरत के पास ककरापारा परमाणु रिएक्टर चालू ।(12) हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विद्वान पंडित मल्लिकार्जुन मंसूर का निधन।(18) पूर्व उपराष्ट्रपति व पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति एम. हिदायतुल्ला का निधन।

अक्टूबर 7.के. वी. बी. रेड्डी आंध्र के नये मुख्यमंत्री । (8) जिंदा, सुक्खा की फांसी पर रोक की याचिका खारिज।

नवंबर 6.ललित मोहन शर्मा मुख्य न्यायाधीश बने। (10) एटॉर्नी जनरल जी. रामास्वामी का त्यागपत्र । त्रिपुरा में पुलिस विद्रोह, सेना सतर्क।

दिसंवर 5: उच्चतम न्यायालय के ऐतिहासिक फैसले में पिछड़ों के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण मंजूर, आर्थिक आधार पर 10 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान रद्द। (6) अयोध्या में कार सेवकों द्वारा विवादित ढांचा तहस–नहस । उ. प्र. में राष्ट्रपति शासन, विधानसभा भंग, गुम्बद ढहने से चार मरे, कल्याण सिंह का त्यागपत्र। (7) देशव्यापी हिंसा में 200 से अधिक मरे, विपक्ष नेता पद से अडवाणी का त्यागपत्र। (10) आर.एस.एस, वजरंग दल, विहिप, जमायत–ए–इस्लामी और सेवक संघ पर प्रतिवंध ।(15) राजस्थान, म. प्र. तथा हिमाचल की भाजपा सरकारें वर्खास्त। (16) अयोध्या में हुई घटनाओं की जांच पंजाव उच्च न्यायालय के न्यायधीश मनमोहन सिंह लिवेंरहा करेंगे। (27) केंद्र सरकार ने अयोध्या के विवादस्पद स्थल के निकट सभी भूखण्डो के अधिग्रहण का फैसला किया। (28) विवादित परिसर में रामलला की मूर्तियों के दर्शन और पूजा की अनुमति दी गयी। (31) अयोध्या में विवादित परिसर में नमाज पढ़ने के वावरी मस्जिद एक्शन कमेटी की स्थानीय शाखा के आह्वान पर जमा भीड़ पर लाठी चार्ज ।

जनवरी 4, 1993: यूको वैंक के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रवंध निदेशक मार्ग वंधु गिरफ्तार। (7) अयोध्या में भूमि अधिग्रहण के लिए अध्यादेश (8) वम्वई में हिंसा भड़की। अहमदावाद में 15 मरे। पी.सी. एलेक्जेंडर महाराष्ट्र के राज्यपाल वने। (9) दिल्ली में विमान दुर्घटना की वजह से माधव राव सिंधिया का त्यागपत्र, 165 यात्री वाल वाल वचे।

फरवरी 7: 'पृथ्वी' प्रक्षेपास्त्र का दसवां सफल परीक्षण। (12) कपिल देव ने 5000 रन और 400 से ऊपर विकेट लेने का कीर्तिमान स्थापित किया । वेंकटचलैया ने प्रधान न्यायाधीश के पद की शपथ ली। (19) मराक, मेघालय के मुख्यमंत्री वने। (20) त्रिपक्षीय समझौते के साथ वोडो आंदोलन समाप्त हो गया ।(25) पद्म भूषण से सम्मानित पत्रकार अक्षय कुमार जैन का दिल्ली में निधन ।(27) त्रिपुरा के मुख्यमंत्री एस. आर. वर्मन का इस्तीफा।

मार्च 1: यशपाल कपूर का वम्वई में निधन । भारत में विकसित विश्व के आधुनिकतम मुख्य युद्धक टैंक 'अर्जुन' का परीक्षण। (3) रक्षा मंत्री शरद पवार महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री वने । जनरल (अवकाश प्राप्त) के. वी. कृष्णा राव कश्मीर के राज्यपाल नियुक्त। (12) मुम्वई में वम विस्फोट की घटनाओं में 250 व्यक्ति मारे गये ।(14) विस्फोटों के प्रमुख अभियुक्त मेमन वंधु देश से भाग निकले।(16) मेमन परिवार के दो सहायक वम्वई में गिरफ्तार ।

अप्रैल 2: मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने पटवा सरकार की वर्खास्तगी रद्द की । (6) त्रिपुरा वि. सभा चुनावों में [illegible] मोर्चे को वहुमत मिला । पूर्व प्रधानमंत्री स्व. लाल वहादुर शास्त्री की पत्नी ललिता शास्त्री का निधन। (15 [illegible] एक अक्टूवर से 'अरक' की विक्री पर प्रतिवंध [illegible] अभिनेता संजय दत्त 'टाडा' में गिरफ्तार । (20 [illegible] श्री हरिकोटा से रोहिणी–560 राकेट का [illegible]

मई 1: सोशलिस्ट नेता एन.जी. [illegible] (9) पत्रकार एस. मुलगांवकर का निधन [illegible]

यादव द्वारा एवरेस्ट पर चढ़ीं । (14) सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश रामास्वामी का त्यागपत्र । (15) फील्ड मार्शल करिअप्पा का निधन। (16) चार और भारतीय महिलाएं एवरेस्ट पर चढ़ी । 25 महिला इंजीनियर वायुसेना में शामिल। (17) विल्फ्रेड डिसूजा गोवा प्रदेश कांग्रेस दल के नेता वने । (19) वायुदूत, इंडियन एयर लाइंस में विलय (31) आर.एस.एस. पर प्रतिवंध स्थगन को सुप्रीम कोर्ट ने नही माना।

जून 1: जद (अ) को मान्यता । (3) लाल कृष्ण आडवाणी भाजपा के अध्यक्ष वने । (12) 'पृथ्वी' का प्रक्षेपण। (16) हर्षद मेहता ने प्रधानमंत्री को एक करोड़ देने की वात कही। (19) सरकार ने प्रधानमंत्री और हर्षद की नवम्वर '91' की भेंट से इनकार किया । (23) जयललिता अन्नाद्रमुक की अध्यक्ष वनीं । (24) कर्नाटक में सजपा तथा जद का विलय।

जुलाई 4: सभी राज्य पंचायती संस्थाओं के गठन पर सहमत हो गये । (12) प. वंगाल के गवर्नर नुरूल हसन का निधन ।(16) ख्याल और तराना गायक उस्ताद निसार हुसैन खान का निधन। (19) पत्रकार गिरिलाल जैन का निधन।(23) इनसेट–2–वी' का प्रक्षेपण। (24) अटलविहारी वाजपेयी भाजपा संसदीय दल के नेता वने।

अगस्त 19. अभिनेता, निर्देशक उत्पल दत्त का निधन। (22) कर्नाटक के पूर्व मुख्यमत्री गुंडुराव निधन। (24) भारतीय क्रिकेट के पितामह प्रोफेसर दिनकर वलवंत देवधर का 101 वर्ष की आयु में निधन।

सितंवर 2: वी. एस शेखावत नये नौसेनाध्यक्ष चुने गये। (4) न्यू वैंक आफ इंडिया का पंजाव नेशनल वैंक में विलय। (7) भारत–चीन में नियत्रण रेखा का पालन करने को लेकर ऐतिहासिक समझौता ।(8) सरकार ने पिछड़े वर्गो के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण लागू किया । (12) गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री हितेन्द देसाई का निधन।(17) सुप्रीम कोर्ट ने गंगा प्रदूषण के लिए जिम्मेदार 190 फर्मो को वंद करवाया । (30) महाराष्ट्र के भूकम्प में 15000 व्यक्ति मरे।

अक्टूवर 1: चुनाव आयोग वहु–सदस्यीय [illegible] (16) सेना ने उग्रवादियों को वाहर करने के लिए श्रीनगर में हजरतवल दरगाह की घेरावंदी की ।

नवंवर 1: उग्रवादियों को कर्ण सिंह की [illegible] [illegible] दादरा व ठुमरी गायिका नैना देवी का निधन [illegible] पूर्व वित्त मत्री यशवंत सिन्हा [illegible] हजरतवल में तीन उग्रवादियों द्वारा [illegible] सुप्रीम कोर्ट ने [illegible] [illegible] उद्योगपति जे. आर. डी. टाटा का निधन

दिसंवर 7. अयोध्या [illegible] [illegible] गिरफ्तार । (23 [illegible] [illegible] (28) [illegible]

1994: जनवरी [illegible]

इस्तेमाल को प्रतिबंधित करने के आदेश दिये। (3) दार्जिलिंग गोरखा हिल कौंसिल में गोरखा नेशनल लिबरेशन फ्रंट की विजय। (4) संगीत निदेशक राहुल देव बर्मन का निधन। (8) कांची कामाकोटी मठ के परमाचार्य श्री चन्द्र शेखरेंद्र सरस्वती (99) का निधन। (10) कवि गिरिजा कुमार माथुर का निधन। (21) भारत और म्यानमार ने सीमा व्यापार शुरू किया। (29) राष्ट्रपति के अध्यादेश पर एयर इंडिया और इंडियन एयरलाइंस कंपनी के रूप में परिवर्तित।

फरवरी 4: भारत यू.एन.डी.पी., यू.एन. पापुलेशन और युनिसेफ के एक्जीक्यूटिव बोर्ड में निर्वाचित। (15) रूपर्ट मुडरोक ने नयी दिल्ली में स्टार टी.वी. पर हिंदी का पे चैनेल शुरू करने की घोषणा की। गुजरात के मुख्य मंत्री चिमन भाई पटेल (65) का निधन। (18) कथक नृतक गोपी कृष्ण (61) का निधन।

मार्च 1. निर्माता-निर्देशक मनमोहन देसाई का निधन। (9) भारतीय सिनेमा की प्रथम अभिनेत्री देविका रानी का 87 वर्ष की आयु में निधन। (17) जम्मू-कश्मीर के पूर्व-स्पीकर वली मुहम्मद इट्टू की आंतकवादियों द्वारा हत्या। (18) उच्चतम न्यायालय ने केंन्द्र द्वारा जमायते-इस्लामी हिन्द पर लगाये गये प्रतिबन्ध को अवैध ठहराया; माकपा की निष्कासित नेता के.आर. गौरी और उनके समर्थकों ने नया राजनीतिक दल जे.एस.एस. की स्थापना की; (20) पाकिस्तान ने बम्बई में अपने उच्चायोग को बंद किया। (28) नयी दिल्ली में जी-15 सम्मेलन की शुरूआत।

अप्रैल 1: लेफ्टिनेंट जनरल सतीश नम्बियार की आर्मी स्टाफ के उप प्रमुख पद पर नियुक्ति। (2) गोवा में राज्यपाल भानु प्रताप सिंह ने विल्फ्रेड डीसूजा सरकार को भंग किया। रवि नायक नये मुख्यमंत्री बने। (3) गोवा के राज्यपाल भानु प्रताप सिंह का त्यागपत्र, केरल के राज्यपाल बी. रचैया गोवा का कार्यभार देखेंगे। (4) गोवा के मुख्यमंत्री रवि नायक का इस्तीफा। (8) डा. विल्फ्रेड डीसूज़ा गोवा के पुनः मुख्यमंत्री। (9) माकपा के पूर्व महासचिव सी. राजेश्वर राव का 80 वर्ष की आयु में निधन। (24) उद्योगपति एस. एन. किर्लोस्कर का 91 वर्ष की आयु निधन। (27) उच्चतम न्यायालय ने भारतीय दंड संहिता की धारा 309 (आत्महत्या दंडनीय अपराध) को निरस्त किया।

मई 1: छह प्रमुख अकाली दलों ने संयुक्त होकर एक नये दल शिरोमणि अकाली दल अमृतसर का गठन किया। (4) श्रीहरिकोटा से ए.एस.एल.वी - के प्रक्षेपण से सी-2 उपग्रह कक्षा में स्थापित। (5) सिक्किम में संचामन लिंदू नये नेता निर्वाचित। (7) कपड़ा उद्योगपति सुनिल खटाऊ (55 वर्ष) की गोली मारकर हत्या; ध्रुपद के महान गायक नसीर जहीरुद्दीन डागर का 62 वर्ष की आयु में निधन। (17) संचामन लिंदू नये मुख्यमंत्री; यमन के बंदर गाह शहर अदन में गृहयुद्ध में फंसे दो हजार भारतीय नागरिकों को भारतीय जल सेना ने छुड़ाया; प्रमुख कांग्रेसी नेता के ब्रह्मानंद रेड्डी का 83 वर्ष की आयु में निधन।

जून 4: सेना ने सतह से सतह पर प्रहार करने वाली मिसाइल पृथ्वी का परीक्षण किया। (9) विवादित योगी धीरेन्द्र ब्रह्मचारी का वायु-दुर्घटना में निधन। (21) जनता दल में एक और विघटन, उसके लोकसभा में 39 सदस्यों में से 14 ने अलग गुट बनाया। (25) बंबई के पूर्व अंडरवर्ल्ड डॉन हाजी मस्तान का निधन।

जुलाई 4: अभिनेता संजय दत्त बम्बई बम विस्फोट के मुकदमे के पूरे होने तक न्यायिक हिरासत में। (5) लेखक वाइकम मुहम्मद बशीर (86) का निधन। (9) पंजाब के राज्यपाल सुरेन्द्रनाथ और उनके परिवार के 9 सदस्यों की कुल्लू घाटी में हवाई दुर्घटना में मृत्यु। (11) पुलिस अधिकारी किरण बेदी मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित (18) चीन के उपराष्ट्रपति एवं विदेश मंत्री क्यान कविचेन ने भारत के साथ कर संधि पर हस्ताक्षर किये (21) उच्चतम न्यायालय ने घोषणा की कि अनुसूचित जाति व जनजातियों द्वारा दूसरे राज्यों में पलायन करने पर आरक्षण नहीं मिलेगा। (26) प्रतिभूति घोटाले पर सरकार ने संयुक्त संसदीय समिति की रिपोर्ट को अस्वीकार किया।

अगस्त 1: विपक्ष ने जे.पी.सी रिपोर्ट को अस्वीकार करने पर संसद के सभी पैनलों को छोड़ने का निर्णय लिया; रेलवे यात्री सुरक्षा बीमा योजना की शुरूआत।

सितम्बर 3: सरकार ने आई.टी.आई., आई.ओ.सी. और आई.टी.जी.सी समेत 21 सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में अपने हिस्से को अनिवेश करने का निर्णय लिया (14) केंद्रीय मंत्रिमंडल ने औषधि-मूल्य नियन्त्रण को 73% से 50% तक लाने के लिये औषधि नीति को सहमति दी। (21) उद्योगपति रामकृष्ण बजाज (72) का निधन

अक्टूबर 1: महात्मा गांधी की 125 वीं वर्ष गांठ पर जम्मू कश्मीर में 376 संदिग्ध आतंकवादियों की रिहाई (2) मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) के समीप उत्तराखंड आंदोलनकारियों व पुलिस के बीच जबरदस्त संघर्ष व फायरिंग में 10 आंदोलनकारी मारे गये और लगभग 250 घायल हुए। (10) मदुरै में हिन्दू मुन्नानी के अध्यक्ष प राजगोपालन की दो अज्ञात हमलावरों ने छुरा मार कर हत्या की। राष्ट्रपति ने न्यायालय से राय मांगी थी कि विवादित स्थल पर मंदिर था या मस्जिद, सर्वोच्च न्यायालय ने अधिग्रहण कानून को उचित बताते हुए उसके कुछ हिस्सों को अवैध ठहराया तथा कल्याण सिंह को दो हजार रुपये का जुर्माना व एक दिन कारावास की सजा दी। (25) न्यायमूर्ति ए.एम. अहमदी ने भारत के मुख्य न्यायाधीश का पद संभाला। (27) उ.प्र के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह को अयोध्या मामले पर न्यायालय की अवमानना के कारण जेल भेजा गया।

नवम्बर 1: राष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा ने जम्मू-कश्मीर के मामलों को प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंहाराव की निगरानी में रखने संबंधी प्रस्ताव पर औपचारिक स्वीकृति दी। (17) चुनाव आयोग ने दो केन्द्रीय मंत्रियों सीताराम केसरी और कल्पनाथ राय को चुनाव की आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन का दोषी ठहराया। (18) थल सेनाध्यक्ष जनरल बी.सी. जोशी का निधन। (21) शंकरराव चौधरी भारतीय थल सेना अध्यक्ष नियुक्त किये गये। (22) तिरुअनन्तपुरम स्थित विक्रम साराभाई अंतरिक्ष

केन्द्र से अति महत्वपूर्ण दस्तावेजों के लीक होने के सिलसिले में दो मालदीवी महिला जासूस गिरफ्तार की गयी। (23) जासूसी के आरोप में इसरों के वरिष्ठ वैज्ञानिक डी. शशिकुमार गिरफ्तार । नागपुर में आदिवासियों की एक विशाल भीड़ में मची भगदड़ के कारण कम से कम 120 लोग कुचलकर मारे गये तथा सैकड़ो घायल हो गये। (24) नागपुर कांड पर महाराष्ट्र के जनजाति विकास मंत्री मधुकर राव पिचाड़ ने इस्तीफा दिया ।

दिसंबर 1. आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में विधानसभा चुनाव संपन्न । (5) विहार के मुजफ्फरपुर जिले में गोपालगंज के जिलाधिकारी जी. कृष्णैया, की उग्र भीड ने हत्या की, इस सिलसिले में सासद लवली आनंद मोहन को हिरासत में लिया गया । (6) सर्वोच्च न्यायालय ने हवाला कांड की जांच सी.वी. आई निदेशक को सुपुर्द की; पूर्व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने लोकसभा की सदस्यता से इस्तीफा दिया; (15) खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री ए.के. एंटनी ने चीनी घोटाले पर ज्ञान प्रकाश समिति की रिपोर्ट में उनके विरुद्ध की गयी टिप्पणी के चलते इस्तीफा दिया। (25) पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानीजैल सिंह का निधन।

जनवरी 1, 1995: एन.टी. रामाराव ने समुचित मूल्य की दुकानों से 2 रु. किलो चावल योजना की शुरुवात की; (8) समाजवादी नेता मधु लिमये का निधन। (13) 14वें इंडियन साइंसटिफिक एक्सपेडिशन टू अंटार्कटा के लिये डा. एस.डी. शर्मा के नेतृत्व में 62 सदस्यीय दल अंटार्कटा पहुंचा (17) विख्यात गांधीवादी नेता जी. रामचंद्रन का मदुराई में निधन। प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हाराव ने गुटनिरपेक्ष देशों के श्रम मंत्रियों का नयी दिल्ली के विज्ञान भवन में 5 दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन किया। (20) उच्चतम न्यायालय ने उत्तर प्रदेश में आगरा में ताजमहल के निकट 84 उद्योगों को पर्यावरण की दृष्टि से वंद करने के आदेश दिये। (24) कांग्रेस–इ ने अर्जुन सिंह को दल से निष्कासित किया।

फरवरी 1. पत्रकार और राजनीतिज्ञ चंदूलाल चंद्राकर का निधन। (3) मानव अंग प्रत्यारोपण विल राष्ट्रपति की मंजूरी के 7 माह के वाद सूची में अंकित व लागू। (8) उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह सरकार को विश्वास मत मिला। (9) लेखक गुलशेर खान शानी का निधन। (22) पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री राम कृष्ण का निधन। (25) मणिपुर में रिशांग कीशिंग ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली।

मार्च 1. अभिनेता इफ्तिखार की मृत्यु। (17) केरल के मुख्यमंत्री के. करुणाकरन ने त्यागपत्र दिया। (19) श्री गेगाग अपंग लगातार चौथी वार अरुणाचल प्रदेश के मुख्य मंत्री बने (21) ए.के.एंटोनी केरल के नये मुख्यमंत्री बने (24) उच्चतम न्यायालय ने केंद्रीय प्रदूषण वोर्ड को निर्देश देकर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अंतर्गत 9 हजार उद्योगों को हटाने के लिये कहा।

अप्रैल 4. आर्च विशप मार अब्राहम कुटुमोन का निधन (10) वंबई के जसलोक अस्पताल में पूर्व प्रधानमंत्री व गांधीवादी नेता मोरारजी भाई देसाई का निधन।

मई 1. सार्क राष्ट्रों ने साप्टा के रास्ते में [illegible] को दूर किया; उच्चतम न्यायालय ने [illegible] की अनुमति के बिना किसी अभियुक्त को हथकड़ी नहीं [illegible] जायेंगी। (2) आठवीं सार्क बैठक नई दिल्ली भारत [illegible] में प्रारंभ। (6) मुम्बई नगर निगम के उपायुक्त जी.आर. खैरनार को सेवा से वरखास्त किया गया। (8) अंग्रेजी दैनिक ट्रिब्यून के पूर्व मुख्य संपादक प्रेम भाटिया का निधन (9) स्वतंत्रता सेनानी और गांधी जी की निकट आभा गांधी (70) का निधन (11) आतंकवादियों ने प्रसिद्ध सूफी संत शेख नूरुद्दीन वली की मजार चरार–ए–शरीफ को आग लगाकर नष्ट कर दिया। (14) चराए–ए–शरीफ में उग्रवादियों का सफाया करने के वाद सेना ने अपना नियंत्रण स्थापित किया। (18) राजस्थान के पूर्व राज्यपाल और उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष सुखदेव प्रसाद (75) का निधन। (26) पत्रकार रमेश गौड़ का (58) निधन।

जून 1. वहुजन समाज पार्टी ने मुलायम सिंह यादव सरकार से समर्थन वापस ले लिया। भारतीय जनता पार्टी के सहयोग से सरकार वनाने का दावा। (3) व.स.पा. नेता मायावती उत्तर प्रदेश की नई मुख्यमंत्री। (8) वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी प्रो. एन.जी. रंगा का निधन। (13) भारत व फ्रांस के वीच निवेश संरक्षण समझौते पर वातचीत पूरी। (16) भारतीय वायु सेना के पायलट कैप्टेन आरुण कंदीकार ने 12 हजार 9 सौ घंटे विमान उड़ाकर नया कीर्तिमान स्थापित किया। (17) उत्तर प्रदेश में राज्यपाल मोतीलाल वोहरा ने अपने अधिकारों का इस्तेमाल करते हुए संविधान की धारा 175(2) के तहत विधान सभा को लिखित आदेश देकर अभूतपूर्व कदम उठाया। (19) उत्तर प्रदेश की विधानसभा में संसदीय इतिहास रचा। स्पीकर धनीराम [illegible] ने कार्यवाही शुरु होते ही स्थागित की। सदन ने श्री [illegible] को पीठासीन अधिकारी बनाया। (20) उत्तर प्रदेश में मायावती सरकार को विश्वास मत प्राप्त। (27) [illegible] श्री नरसिंहा राव द्वारा टिहरी परियोजना की [illegible] के लिए दिये आश्वासन के वाद पर्यावरणविद् सुंदर लाल बहुगुणा ने अनशन तोड़ा।

जुलाई 3. दिल्ली के कनिष्का होटल [illegible] रेस्तरां के तंदूर में एक महिला की हत्या के [illegible] जलाने की कोशिश नाकाम। दिल्ली प्रदेश [illegible] सचिव [illegible] कुमार गिरफ्तार। प्रमुख [illegible] विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के [illegible] [illegible] विज्ञान अनुसंधान [illegible] का निधन। (4) प्रमुख [illegible] (7) प्रमुख उद्योग[illegible] [illegible] वाले राजन [illegible] (9) अखिल भारतीय [illegible] प्रत्यारोपण [illegible] तंदूर कांड [illegible] (12) [illegible] (22) [illegible]

द्विपक्षीय मसलों पर विचार के लिये इस मंच का इस्तेमाल न करने की सहमति के साथ समाप्त।

अगस्त 3. महाराष्ट्र सरकार ने डाभोल में प्रस्तावित और बहुचर्चित एनरान बिजली परियोजना को रद्द कर दिया। (12) पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने रसोई गैस के सिलिंडर व रेग्यूलेटर की एवज में जमाराशी दुगनी कर दी। (13) जम्मू काश्मीर में उग्रवादी संगठन अल-फरहान ने अपहृत पांच विदेशी पर्यटकों में से नार्वे के पर्यटक क्रिश्चियन ओस्ट्रो की निर्मम हत्या कर दी। (22) भारतीय मूल के अमरीका निवासी नोबेल पुरस्कार विजेता विख्यात वैज्ञानिक डा. सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर का 84 वर्ष की आयु में निधन। (25) आंध्र प्रदेश में तेलगू देशम पार्टी में विभाजन। असंतुष्ट नेता और मुख्यमंत्री के दामाद एन. चंद्रबाबू नायडु ने सरकार बनाने का दावा किया। (29) आंध्र प्रदेश में विधानसभा अध्यक्ष ने एन. चंद्रबाबु नायडु को तेलगु देशम विधायक दल के नेता के रूप में मान्यता दी। (30) तेलगू देशम के बागी गुट ने नायडु को दल का अध्यक्ष चुना। (31) पंजाब के मुख्यमंत्री श्री बेअंत सिंह की बम विस्फोट में हत्या।

सितंबर 18. कवि काका हाथरसी (प्रभुलाल गर्ग) का निधन। (21) उच्चतम न्यायलाय के आदेश के अनुसार कोई भी अपने भवन में राष्ट्रीय झंडा फहरा सकता है। गुजरात में असंतुष्ट नेता व सांसद शकरसिंह वघेला ने सरकार बनाने का दावा किया

अक्टूबर 1. विख्यात उद्योगपति आदित्य विक्रम बिडला का निधन। (6) गुजरात भाजपा में सुलह। केशुभाई को हटाने की वघेला की शर्त मानी गयी। (21) सुरेशचद्र रूप शंकर मेहता गुजरात के 15 वें मुख्यमंत्री।

नवंबर 4. (4) केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने जम्मू काश्मीर में चुनाव कराने के संबंध में अंतिम फैसला किया। (8) नेशनल कांफ्रेंस समेत कई दलों ने कश्मीर में प्रस्तावित चुनावों का आयोग से विरोध किया। (10) चुनाव आयोग ने आम राय से जम्मू काश्मीर में चुनाव न कराने का फैसला किया। (13) उच्चतम न्यायालय ने जनहित की दृष्टि से अपने फैसले में चिकित्सा सेवा को उपभोक्ता कानून के तहत लाने को कहा। (19) भारत की के. मल्लेश्वरी ने चीन में चल रही विश्व भारोत्तोलन चैंपियन शिप में नया कीर्तिमान स्थापित किया। (30) केंद्रीय मंत्री श्री दिनेश सिंह (70) का निधन।

दिसंबर 7. (7) फ्रेंच गयाना के कौरू प्रक्षेपण स्थल के भारत का दूसरी श्रृंखला का बहुउद्देशीय इन्सेट- 2 सी उपग्रह का प्रक्षेपण। (11) उच्चतम न्यायालय ने 1987 में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री मनोहर जोशी के चुनाव को अवैध ठहराये जाने के निर्णय को उलट कर उनके निर्वाचन का वैध ठहराया। (15) सुप्रीम कोर्ट ने भारत रत्न व दूसरे अलकरणों को वैध ठहराया। (18) पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले में आनंदमार्ग मुख्यालय के निकट हथियारों का जखीरा विमान से गिराया गया। (22) पुरुलिया में हथियार गिराने वाले विदेशी विमान को मुम्बई में जबरन उतारा गया। (28) आई.आर.एस-1 सी का सफल प्रक्षेपण।

जनवरी 3. 1996. कर्नाटक कावेरी नदी का पानी छोड़ने के लिये तैयार। 8. महाराष्ट्र सरकार ने एनरान परियोजना के मंजूरी दी। 9. अभिनेत्री नाडिया का निधन। 16. हवाला घोटाले में केंद्रीय जांच ब्यूरो ने लाल कृष्ण अडवाणी, देवीलाल, अर्जुन सिंह, कल्पनाथ राय, यशवंत सिन्हा, आरिफ मोहम्मद खान व प्रदीप सिंह पर चार्जशीट। तीन मंत्री विद्याचरण शुक्ल, बलराम जाखड़ व माधवराव सिंधिया के विरुद्ध सबूत. लाल कृष्ण अड़वाणी ने लोकसभा से इस्तीफा दिया। 17. बलराम जाखड़, वी.सी. शुक्ल व माधव राव सिंधिया ने त्यागपत्र दिया। 18. राष्ट्रीय मोर्चे के अध्यक्ष व आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्य मंत्री एन.टी. रामराव का निधन।

फरवरी 4. समाजशास्त्री डा. श्यामाचरण दुबे का निधन। 10. कलकत्ता के इडेन गार्डेन में विश्व कप क्रिकेट टूर्नामेंट का उद्घाटन। 12. पूर्व केंद्रीय मंत्री कल्पनाथ राय गिरफ्तार व जेल भेजे गये। 19. हवाला कांड के तहत केंद्रीय मंत्री कमलनाथ ने त्यागपत्र दिया। 20. हवाला कांड में बूटा सिंह व अरविंद नेताम ने त्यागपत्र दिया। 21. केंद्रीय मंत्री आर. के धवन ने हवाला काड के तहत त्यागपत्र दिया। पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रकाश चंद सेठी का निधन 22. दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री खुराना ने त्यागपत्र दिया। 24. दिल्ली भाजपा विधायक दल ने साहिब सिंह वर्मा को नया नेता चुना।

मार्च 1. अधिकांश नेताओं को अग्रिम जमानत। 4. पूर्व केंद्रीय मंत्री हरकिशन लाल भगत 1984 में दंगा भड़काने के एक और मामले में आरोपित। 11. पटना उच्च न्यायालय ने बिहार में अरबों रुपये के पशुपालन घोटाले की केंद्रीय जांच ब्यूरो से जांच कराने का आदेश दिया। 13. अभिनेता शफी इनामदार का निधन। 17. श्रीलंका ने आस्ट्रेलिया को पराजित कर विश्व कप क्रिकेट जीता। 18 नेताजी सुभाष चंद्र बोस की पत्नी श्रीमती एमिल शेकल बोस की जर्मनी में अंत्येष्टि। 19 देश में लोकसभा चुनाव कराने का ऐलान। 21 भारतीय अंतरिक्ष अभियान पी एस एल.वी. 3 के सफल प्रक्षेपण के साथ उन्नत देशों की कतार में पहुंचा। 24. शायर नजीर बनारसी का निधन। अमृत बाजार पत्रिका के अध्यक्ष तरुण कांति घोष का निधन। 31. तमिलनाडु में जी.के. मूपनार के नेतृत्व में प्रदेश कांग्रेस के एक गुट द्वारा द्रमुक से गठबंधन।

अप्रैल 8. जी.के. मूपनार, माधव राव सिंधिया, नटवर व चिदंबरम समेत अनेक नेता कांग्रेस पार्टी से निष्कासित। 14. केंद्रीय जांच ब्यूरो ने आवास घोटाले में तत्कालीन शहरी विकास मंत्री श्रीमती शीला कौल के दो सचिवों सहित 10 लोगों को अभियुक्त बनाया। 22. असम के मुख्य मंत्री श्री हितेश्वर सैकिया का निधन।

मई 1. हवाला कांड में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल मोतीलाल वोहरा एवं केरल के राज्यपाल शिवशंकर ने त्यागपत्र दिया। 9 प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हाराव का त्यागपत्र कोई भी दल सरकार बनाने की स्थिति में नहीं, हरियाणा में हविपा, भाजपा, गठबंधन आगे। 11. भाजपा ने सरकार बनाने का दावा किया। 13. तीसरे मोर्चे में प्रधानमंत्री पद के लिए श्री ज्योति बसु के नाम पर सहमति।

14.रामो–वामो द्वारा कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री एच.डी.देवगौड़ा के नेतृत्व में सरकार बनाने का दावा। 15.अटल बिहारी वाजपेई देश के नये प्रधानमंत्री, 31 मई तक बहुमत साबित करने को कहा गया। 16.श्री अटल विहारी वाजपेयी व उनके मंत्रिमंडल ने शपथ ली। 17.ई.के नयनार केरल के मुख्यमंत्री। 22.श्री पी.ए. संगमा लोकसभा के अध्यक्ष निर्वाचित। 28. 13 दिन पुरानी भाजपा सरकार द्वारा त्यागपत्र।

जून 1. भूतपूर्व राष्ट्रपति संजीव रेड्डी का निधन; एच.डी. देवगोड़ा द्वारा प्रधानमंत्री पद के लिए शपथ ग्रहण । 3.नयी दुनिया के पूर्व संपादक राहुल बारपुते का निधन। 6. पूर्व प्रधानमंत्री श्री राव के पुत्र पी.वी. प्रभाकर राव पर यूरिया घोटाले का आरोप । 17.राष्ट्रीय संघ सेवक के पूर्व सरसंघ चालक बालासाहेब देवरस का निधन। 21.मद्रास के प्रधान सत्र न्यायधीश ने तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री सुश्री जयललिता की संपत्ति जांच का निर्देश दिया।

जुलाई 3. अभिनेता राजकुमार का निधन। 4.उड़ीसा के पूर्व राज्यपाल यज्ञदत्त शर्मा का निधन। 8. उच्चत्तम न्यायालय ने दिल्ली से 168 खतरनाक उद्योगों को 30 नवंबर तक हटाने का आदेश दिया;। 11. बीसवीं शताब्दी के अंतिम ओलंपिक खेल प्रारंभ। 29. वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्रीमती अरुणा आसफ अली का देहावसान।

अगस्त 1. श्री मधु दंडवते योजना आयोग के उपाध्यक्ष। 3.भारत के लियेंडर पेइस ने ओलंपिक खेलों में टेनिस प्रतिस्पर्धा में कांस्य पदक जीता। 14.लेखक अमृत राय का देहावसान। 16.पूर्व संचार मंत्री सुखराम के घर पर सी.बी.आई. के छापे में 3 करोड़ 65 लाख की नगद राशि मिली। 20 गुजरात में भा.ज.पा.से निष्कासित नेता शंकर सिंह वाघेला ने राष्ट्रीय जनता पार्टी का गठन किया। ।

सितंबर 1.क्रेडिट स्विस मास्टर्स रेपिड शतरंज चैम्पियनशिप भारत के ग्रैंडमास्टर विश्वनाथ आनंद ने विश्व चैम्पियन गैरी कास्परोव को हराकर जीती । 7. श्री अजीत सिंह ने भारतीय किसान कामगार पार्टी का गठन किया। 10.संस्कृति कर्मी सोमनाथ जुत्शी का निधन। 23.सीताराम केसरी कांग्रेस के अंतरिम अध्यक्ष चुने गये। 28.पूर्व संचार मंत्री सुखराम जेल भेजे गये।

अक्टूबर 1. जम्मू–काश्मीर में सम्पन्न हुए चुनावों में नेशनल कांफ्रेंस को शानदार विजय। । 10. जम्मू काश्मीर में फारूख अब्दुल्ला के नेतृत्व में सरकार का गठन। 30. झारखंड मुक्ति मोर्चे के मामले में सी.बी.आई. ने श्री नरसिम्हाराव, कैप्टन सतीश शर्मा, बूटा सिंह समेत 7 लोगों के विरुद्ध आरोपपत्र अदालत में दिया

नवंबर 1. भारतीय खिलाड़ी पी.हरीकृष्ण ने मेनोरका (स्पेन) में विश्व जूनियर शतरंज खिताब जीत लिया। 4. उच्चतम न्यायालय ने पूर्व मंत्री श्री सतीश शर्मा पर असंवैधानिक व मनमाने तरीके से पेट्रोल पंप आवंटित करने के कारण 50 लाख रुपये का जुर्माना किया। 7. पूर्व मंत्री श्रीमती शीला कौल गैरकानूनी ढंग से दुकानें आवंटित करने के कारण अदालत ने 60 लाख रुपये का जुर्माना किया। 13. दिल्ली में सऊदी एयरलाइन्स और कज्जाक एयरवेज के विमानों की आकाश में टक्कर, चालक समेत एक भी यात्री नहीं बचा। 22.राजिंदर कौर भट्ठल पंजाब की पहली महिला मुख्यमंत्री बनीं। 28. चीन के राष्ट्रपति जियांग जेमिन का भारत आगमन। 29.भारत व चीन के बीच अनाक्रमण समझौता।

दिसंबर 1. कलकत्ता में मदर टेरेसा की हालत गंभीर। 2. तमिलनाडु के राज्यपाल डा.एम. चन्ना रेड्डी का निधन 7. तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री जयललिता टी.बी. खरीद घोटाले में गिरफ्तार; अहमदाबाद हवाई अड्डे का नाम बदल कर सरदार पटेल अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा कर दिया गया। 8. भारतीय क्रिकेट कप्तान सचिन तेंदुलकर ने विश्व में टेस्ट क्रिकेट में सबसे कमउम्र में तीन हजार रन बनाने का विश्व कीर्तिमान बनाया। 9.तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री जयललिता के यहां 58 करोड़ की संपत्ति मिली 12. भारत व बंगला देश के बीच गंगा के पानी के बंटवारे को लेकर समझौता हो गया; डा. एम.एस. गिल नये मुख्य चुनाव आयुक्त; 29. त्रिशूल प्रक्षेपास्त्र का सफल प्रक्षेपण; इजराइल के राष्ट्रपति इजर विजमैन भारत की यात्रा पर आये।

सोनिया कांग्रेस की सदस्य बनीं

जनवरी 1,1997 भारत और बंगला देश के बीच गंगा जल समझौता प्रारंभ। 9. नारायण दत्त तिवारी और अर्जुन सिंह दुबारा कांग्रेस में शामिले।।0. प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारी शिव वर्मा का 94 वर्ष की आयु में निधन। 16.श्रमिक नेता दत्ता सामंत की चार अज्ञात बंदूकधारियों ने गोली मार कर हत्या कर दी। 21.बोफोर्स तोप सौदा दलाली से जुड़े स्विट्जरलैंड के गोपनीय बैंक दस्तावेज भारत को सौंपे गये; कम दूरी की मार की नयी मिसाइल 'पिनाक' का सफल परीक्षण। 28. ट्रिनिडाड के प्रधानमंत्री बासुदेव पांडे अपने पूर्वजों के वंशजों से मिलने आजमगढ़ के गांव लखमनपुर पहुंचे।

फरवरी 10. अकाली–भा.ज.पा. गठबंधन को तीन चौथाई बहुमत; राशन की चीनी की कीमत में वृद्धि। 12. प्रकाश सिंह बादल पंजाब के नये मुख्यमंत्री। 28.संयुक्त मोर्चे की सरकार का दूसरा आम बजट, आयकर में कटौती, इलेक्ट्रानिक उपकरण सस्ते, डाक सामग्री की दर बढ़ी; गीतकार इंदीवर का निधन।

मार्च 1. भारत में रूस के सहयोग से निर्मित विश्व के सबसे तेज गति से चलने वाले पोत [illegible] का जलावतरण । देश के वैज्ञानिकों ने स्वदेशी [illegible] एटमी भट्टी ठी[illegible] करके दुनिया के एटमी इति[illegible] अध्याय जो[illegible] 3. माइक्रोसाफ्ट कंपनी के [illegible]

[illegible]बिल गेटस नयी दिल्ली पहुंचे। चित्रकार करुणानिधान मुखर्जी का निधन। 16 लोकसभा अध्यक्ष संगमा ने पूर्वी दिल्ली के सांसद प्रेम कुमार का त्यागपत्र स्वीकार किया। 9. उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल गोपाल रेड्डी का निधन। 13. मदर टेरेसा के स्थान पर सिस्टर निर्मला मिशनरीज आफ चैरिटीज की नयी सुपीरियर जनरल निर्वाचित। 14. कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री वीरेंद्र पाटिल का निधन।। 7. पूर्व केंद्रीय मंत्री कल्पनाथ राय को टाडा मामले में 10 वर्ष की कैद व 10 लाख रुपये जुर्माने की सजा। 9. उत्तर प्रदेश में भा.ज.पा. व ब.स.पा. साझा सरकार बनाने के राजी। छह–छह महीने के क्रम से मायावती व कल्याण सिंह मुख्यमंत्री होंगे। 21 मायावती उत्तर प्रदेश की मुख्य मंत्री बनीं; 25. न्यायमूर्ति जे.एस. वर्मा नये मुख्य न्यायधीश बने; भारतीय क्रिकेट बोर्ड के महासचिव जगमोहन डालमिया आई.सी.सी. के अध्यक्ष होंगे। 28 दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला भारत यात्रा पर। 29. संस्कृतकर्मी पुपल जयकर का 82 वर्ष की आयु में निधन। 30 कांग्रेस पार्टी ने संयुक्त मोर्चे की सरकार के पक्ष का समर्थन वापस लिया।

अप्रैल 1. पांडिचेरी प्रशासन ने पांडिचेरी का नया नाम पदुचेरी रखने का निश्चय किया। [illegible] भा.क.पा. नेता [illegible] सेनगुप्ता का निधन। 6 [illegible] का निधन। 8 हवाला मामले में [illegible] भा.ज.पा. के नेता लालकृष्ण आडवाणी और कांग्रेस नेता विद्याचरण शुक्ल को दिल्ली उच्च न्यायालय ने आरोपमुक्त किया। [illegible] उच्चतम न्यायालय ने विशेष टाडा अदालत [illegible] के खिलाफ पूर्व केंद्रीय मंत्री कल्पनाथ राय [illegible] पर रिहा करने के आदेश के साथ [illegible] टिप्पणी की कि उनके अपराधिक [illegible] समझ नहीं है। [illegible] जनता दल के [illegible] का निधन। 19 इंद्र कुमार गुजराल [illegible] राष्ट्रपति के समक्ष [illegible] श्री इंद्र कुमार गुजराल ने 34 मंत्रियों के साथ शपथ ली। 24 उत्तर प्रदेश विधानसभा में उत्तराखंड [illegible] प्रस्ताव पारित।

मई 8 राजीव गांधी [illegible] के 6 वर्ष के बाद उनकी पत्नी श्रीमती सोनिया गांधी ने कांग्रेस दल की प्रारंभिक सदस्यता ली। 13 मुक्त व्यापार [illegible] के लिए दक्षेस देश ज्यादा सक्रिय होंगे, साफ्टा सन 2005 के बजाय 2001 तक होगा। 14. केंद्रीय जांच ब्यूरो ने बोफोर्स तोप सौदे में दलाली की जांच रिपोर्ट सौंपी पूर्व विदेश मंत्री माधव सिंह सोलंकी पूर्व रक्षा सचिव एस.के. भटनागर स्व. राजीव गांधी के कार्यालय में सचिव गोपी अरोरा इतालवी व्यापारी क्वात्रोची और उनकी पत्नी मारिया विन घडा और उनके पुत्र हर्ष आदि आरोपी है। 15. भारतीय जनता पार्टी के नेता मदन लाल खुराना को विशेष अदालत ने हवाला कांड से आरोपमुक्त कर दिया। 19. श्री के. रघुनाथ भारत के नये विदेश सचिव नाट्यकर्मी शंभु मित्रा का 81 वर्ष की आयु में निधन। 28. चर्चित हवाला कांड में अदालत ने अर्जुन सिंह, माधवराव सिंधिया, आर.के. धवन और नारायण दत्त तिवारी को आरोपमुक्त किया।

जून 4. सेंट किट्स कांड में श्री नरसिम्हाराव और के. के. तिवारी को अदालत ने बरी कर दिया। 6. संगीतकार श्री मोहन उप्रेती का निधन। 9. राष्ट्रपति चुनाव के लिये अधिघोषणा जारी। 12. कांग्रेस पार्टी अध्यक्ष पद चुनाव में सीताराम केसरी भारी बहुमत से विजयी; हवाला मामले में पूर्व केंद्रीय मंत्री बूटा सिंह व कमलनाथ को अदालत नें आरोपमुक्त किया।। 3. नयी दिल्ली के उपहार सिनेमा में भीषण आग से 60 मरे व अनेक घायल। 16 उपराष्ट्रपति के आर. नारायणन को कांग्रेस व संयुक्त मोर्चे ने राष्ट्रपति पद के लिये साझा उम्मीदवार बनाया। 17 पूर्व केंद्रीय मंत्री और स्व लाल बहादुर शास्त्री के ज्येष्ठ पुत्र हरिकृष्ण शास्त्री का 59 वर्ष की आयु में निधन। 20. फिल्म निर्माता निर्देशक बासु भट्टाचार्य का निधन।। 23. चारा घोटाले में लालू प्रसाद यादव व अन्य 55 व्यक्तियों के खिलाफ चार्जशीट इस्लामाबाद में भारत व पाकिस्तान के मध्य विदेश सचिवों की बैठक में आठ कार्यदलों के गठन पर सहमति। 24 ओडिसी नृत्यागना संयुक्ता पाणिग्रही का निधन। 27 पत्रकार और लोकप्रिय टीवी. कार्यक्रम 'आजतक' के कार्यकारी निर्माता व प्रस्तुतकर्ता एस.पी. सिंह का निधन। 28 फिल्म समीक्षक सपतलाल पुरोहित का निधन।

जुलाई 6 शरद यादव जनता दल के अध्यक्ष चुने गये; फिल्म निर्माता व निदेशक चेतन आनंद का निधन। 15 बिहार विधान सभा में भारी हंगामे के बीच लालू यादव सरकार को विश्वास मत मिला। 17. के. आर. नारायण राष्ट्रपति पद के चुनावो मे विजयी। 18. केंद्र सरकार नें पांचवे वेतन आयोग की सिफारिशों को स्वीकृत दी। 24. पूर्व प्रधानमंत्री गुलजारी लाल नंदा और स्वतंत्रता सेनानी स्व. अरुणा आसफ अली को भारत रत्न; बंगला लेखिका महाश्वेता देवी को मैगसायसाय; मिस्र के राष्ट्रपति होस्नी मुबारक को अंतर्राष्ट्रीय सदभाव के लिये जवाहर लाल नेहरू पुरस्कार। 25 बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने पद से त्यागपत्र दिया उनके स्थान पर उनकी पत्नी राबड़ी देवी नयी मुख्यमंत्री के आर. नारायणन ने देश के 11वें राष्ट्रपति पद की शपथ ली। 28 केरल उच्च न्यायालय ने हड़ताल व बंद को गैरकानूनी व असंवैधानिक करार दिया। 30 बिहार के पूर्व मुख्य मंत्री लालू प्रसाद यादव को चारा घोटाले में गिरफ्तार कर बेउर रोड जेल भेजा गया।

अगस्त 4. केंद्र सरकार ने पांचवे वेतन आयोग की सिफारिशों पर अमल पर रोक लगाने का फैसला किया। 8 भा.ज.पा. नेता मदन लाल खुराना ने राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद से त्यागपत्र दिया। 9 बागी कांग्रेस नेता ममता बनर्जी नें समानांतर कांग्रेस की घोषणा की, इसका नाम तृणमूल कांग्रेस रखा गया है। भारतीय आडियो कैसेट के बादशाह और फिल्म निर्माता गुलशन कुमार की मुबंई में दिनदहाड़े हत्या। 16 श्री कृष्णकांत उपराष्ट्रपति निर्वाचित। 20. लता मंगेश्कर को राजीव गांधी सदभावना पुरस्कार। 21. आंध्र प्रदेश के पूर्व राज्यपाल कृष्णकांत ने उप राष्ट्रपति पद की शपथ ली. हृदय शल्य चिकित्सक डा. धनराज महाजन का निधन। 23 अमरीका में हल्दी के पेटेंट को रद्द कराने की लड़ाई में भारत की जीत। 29. दिल्ली उच्च न्यायालय ने पूर्व केंद्रीय मंत्री कैप्टेन सतीश शर्मा के विवेकाधीन कोटे से आवंटित सत्तर पेट्रोल पंप आवंटनों को रद्द किया गया।

सितंबर 1. मुंबई पुलिस के अनुसार फिल्म निर्माता गुलशन कुमार की हत्या में संगीतकार नदीम का हाथ। 3. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता एम. फारुकी का निधन। 4. लेखक धर्मवीर भारती का निधन; गीतकार अंजान का निधन। 5. नोबल शांति पुरस्कार से सम्मानित मदर टेरेसा का निधन। फिल्म निदेशक मुकुल आनंद का निधन। 10. पूर्व केंद्रीय मंत्री सतीश चंद्र अग्रवाल का निधन। 11. पांचवे वेतन आयोग की सिफारिशों पर सरकार व कर्मचारियों के बीच समझौता। 13. राजकीय सम्मान के साथ मदर टेरेसा की अंतिम अंत्येष्टि। 17. संगीतकार नदीम को लंदन पुलिस ने हिरासत में लिया। 20. समझौते का पालन करते हुए उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री मायावती ने अपने पद से त्यागपत्र देते हुए राज्यपाल से भा.ज.पा.–ब.स.पा. गठबंधन की सरकार बनाने के लिये कल्याण सिंह को आमंत्रित करने का अनुरोध किया; अभिनेता व अशोक कुमार व किशोर कुमार के भाई अनूप कुमार का निधन। 24. सुरक्षा परिषद की सदस्यता के लिये भारत ने अपना दावा पेश किया; समाजवादी नेता लाडली मोहन निगम का 70 वर्ष की आयु में निधन। 25. करोड़ों रुपये के सांसद रिश्वत कांड में अदालत ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हाराव सहित 20 अन्य व्यक्तियों पर आरोप निर्धारित करने से मुकदमा चलाने का रास्ता साफ किया। 29. ध्रुवीय उपग्रह यान पी.एस.एल.वी– सी 1 का सफल प्रक्षेपण।

अक्टूबर 1. जनरल मलिक नये सेना अध्यक्ष; दुनिया का सबसे नाटा व्यक्ति गुल मोहम्मद की मृत्यु। 3. पांचवे वेतन आयोग की संशोधित सिफारिशें मंजूर; यूरिया घोटाले मामले में तुर्की कंपनी करसन लिमिटेड के दो अधिकारी गिरफ्तार। 5. फारवर्ड ब्लाक के महासचिव चित्त बसु का निधन। 15. भारत की अरुंधती राय को अपने पहले ही उपन्यास द गाड आफ स्माल थिंग्ज पर ब्रिटेन का सबसे प्रतिष्ठित बुकर पुरस्कार दिये जाने की घोषणा। 19. उत्तर प्रदेश में ब.स.पा. ने साझा सरकार से अलग होने की घोषणा की। 20. उत्तर प्रदेश में कांग्रेस विधायकों में फूट, 22 विधायकों ने अलग गुट बनाया, जनता दल भी टूटा। 21. उत्तर प्रदेश में कल्याण सिंह सरकार को बहुमत प्राप्त, लेकिन केंद्र सरकार ने कल्याण सिंह सरकार को बर्खास्त करने का फैसला किया। 22. राष्ट्रपति द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार को बर्खास्त करने के मंत्रिमंडल के निर्णय को पुनर्विचार करने के लिये वापस भेजने के बाद केंद्रीय मंत्रिमंडल ने अपना निर्णय वापस लिया। 28. गुजरात में रा.ज.पा. के नेता दिलीप पारिख के नेतृत्व में नयी सरकार बनी।

नवंबर 6. उच्चतम न्यायालय ने पूर्व केंद्रीय मंत्री कल्पनाथ राय सहित छह अन्य व्यक्तियों को रिहा किया। 8. राष्ट्रपति ने निरंकारी बाबा गुरबचन सिंह हत्याकांड में उम्र कैद की सजा भुगत रहे जत्थेदार भाई रंजीत सिंह की सजा माफ करदी। 12. उच्चतम न्यायालय ने केरल उच्च न्यायालय के बंद को असंवैधानिक घोषित करने के फैसले की पुष्टि की। 14. रक्षा राज्य मंत्री एन.बी.एन. सोमू और तीन अन्य सैनिक अधिकारियों की अरुणाचल प्रदेश में हेलिकाप्टर दुर्घटना में मृत्यु। 18. दिल्ली में स्कूल के बच्चों से खचाखच भरी बस यमुना नदी के पुल की रेलिंग को तोड़ते हुए नदी में गिरी, 28 बच्चों की मृत्यु अनेक घायल। 20. भारतीय मूल की कल्पना चावला और चालक दल के अन्य पांच सदस्य अंतरिक्ष मे पहुंचे। 26. भारतीय मिसाइल कार्यक्रम के प्रणेता ए.पी.जे. अबुल कलाम को भारत रत्न सम्मान। 28. कांग्रेस द्वारा मोर्चा सरकार से समर्थन वापस लिये जाने पर गुजराल सरकार का इस्तीफा।

दिसंबर 3. केंद्रीय मंत्रिपरिषद ने लोक सभा को भंग कर नये चुनाव कराने की सिफारिश की। 4. राष्ट्रपति ने लोक सभा को भंग कियां। 9. ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित लेखक शिवराम कारंत का निधन। 10. पूर्व विदेश सचिव सल्मान हैदर ब्रिटेन में भारत के उच्चायुक्त; मलयाला मनोरमा, केरल द्वारा प्रकाशित महिलाओं की मासिक पत्रिका *वनिता के हिन्दी संस्करण का राज्य सभा की उपाध्यक्ष नजमा* हेपतुल्ला द्वारा लोकार्पण। 25. राज्यपाल ने गुजरात विधान सभा को भंग किया।

केरल में राजधानी ट्रेन सेवा प्रारंभ

जनवरी. 1998 3. 3. आय की स्वैच्छिक घोषणा योजना में 100 अरब रुपये के टैक्स के जमा होने से लक्ष्य से दुगनी सफलता। 13. उत्तर प्रदेश में विधान परिषद चुनावों में भा.ज.पा. को भारी जीत मिली; मणिपुर में निपामाचा सिंह की सरकार को विश्वासमत मिला। 14. कर्नाटक संगीत की हस्ताक्षर एम.एस. सुब्बालक्ष्मी को भारत रत्न। 15. पूर्व प्रधानमंत्री और वयोवृद्ध गांधीवादी नेता गुलजारी लाल नंदा का निधन। 25. गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति ने केरल से प्रकाशित मलयाला मनोरमा के मुख्य संपादक के.एम. मात्यु सहित 18 विभूतियों को पदम भूषण से सम्मानित।

फरवरी 11. असम में चुनावी हिंसा, भा.क.पा. (माले) के राज्य सचिव व डिब्रुगढ़ लोकसभा के उम्मीदवार अनिल कुमार बरुआ की उल्फा उग्रवादियों ने गोली मारकर हत्या कर दी।। 14. तमिलनाडु के कोयंबत्तूर शहर में अनेक स्थलों पर बम विस्फोटों से 33 मरे, 200 से अधिक घायल, तीन बम भा.ज.पा. नेता अडवाणी के चुनाव सभा के निकट फटे। 21. उत्तर प्रदेश में राज्यपाल रोमेश भंडारी ने कल्याण सिंह की सरकार को बर्खास्त करते हुए लोकतांत्रिक कांग्रेस के जगदम्बिका पाल को मुख्यमंत्री की शपथ दिलाई; अभिनेता ओमप्रकाश का निधन। 23. जगदम्बिका पाल ने उच्चतम न्यायालय मे अपील की पूर्व टेस्ट क्रिकेट खिलाड़ी रा[illegible] का निधन। 24. उच्चतम न्यायालय ने आ[illegible] सिंह

व जगदम्बिका पाल दोनों ही विधान सभा में अपना बहुमत सिद्ध करें; भंग लोक सभा के अध्यक्ष पी.ए. संगमा लोक सभा के लिये निर्वाचित; मेघालय में त्रिशंकु विधानसभा। 26. उत्तर प्रदेश में कल्याण सिंह को विश्वास मत मिला।

मार्च1. फिल्म निदेशक सत्यजीत राय (मरणोपरांत), अरुणा आसफ अली (मरणोपरांत), पूर्व प्रधानमंत्री गुलजारी लाल नंदा (मरणोपरांत), ए.पी.जे अब्दुल कलाम, एम.एस सुब्बालक्ष्मी भारत रत्न से सम्मानित। 3. भा.ज.पा. गठबंधन को 250 सीटें मिलीं लेकिन स्पष्ट बहुमत से पीछे। 7.श्री अटल बिहारी वाजपेई भारतीय जनता पार्टी के संसदीय दल के नेता निर्वाचित। 10. केंद्र में सरकार बनाने के लिये अटल बिहारी वाजपेई ने दावा किया। 14. कांग्रेस कार्य समिति ने सीता राम केसरी को कांग्रेस अध्यक्ष पद से हटाया, श्रीमती सोनिया गांधी कांग्रेस अध्यक्ष बनीं; अन्नाद्रमुक ने भा.ज.पा. को समर्थन देने का पत्र राष्ट्रपति को दिया अभिनेता व निर्माता निदेशक दादा कोंडके का निधन। 15. केंद्र मे भा.ज.पा. गठबंधन को सरकार बनाने का निमंत्रण 16 उत्तर प्रदेश के राज्यपाल रोमेश भंडारी ने त्यागपत्र दिया; श्रीमती सोनिया गांधी कांग्रेस संसदीय दल की नेता निर्वाचित। 19. अटल बिहारी वाजपेई ने 42 मंत्रियों के साथ शपथ ली, वामपंथी आंदोलन के शिखर पुरुष, ई.एम.एस नम्बूदिरीपाद का 88 वर्ष की आयु मे निधन। 21. जसवंत सिंह योजना आयोग के नये उपाध्यक्ष नियुक्त। 24. तेलगू देशम के अमलापुरम संसदीय क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य मोहन चंद बालयोगी लोकसभा के अध्यक्ष निर्वाचित। 25 बंगाल व उडीसा मे तूफान से मरने वालों की संख्या 200 तक पहुंची सैकडों लापता। 28 भा ज पा की वाजपेई सरकार को लोकसभा मे विश्वास मत मिला। 31 त्रिपुरा के स्वास्थ्य मंत्री विमल सिन्हा और उनके छोटे भाई की उग्रवादियों ने गोली मारकर हत्या

अप्रैल1 हरियाणा मे शराबबंदी समाप्त। 2 प्रधानमंत्री वाजपेई ने द्रमुक सरकार की बर्खास्तगी से इंकार किया कोंकण रेल मार्ग से हजरत निजामुद्दीन से तिरुवनंतपुरम तक राजधानी एक्सप्रेस की शुरुवात। 3. तेलगू देशम के प्रमुख सी.के. नायडू ने कहा कि उनकी पार्टी सरकार मे शामिल हुए बिना समर्थन देती रहेगी। 7. सोली सोराबजी नये एटार्नी जनरल पद पर नियुक्त। 11 पत्रकार गणेश मंत्री का निधन। 14 कुश भाऊ ठाकरे भा ज पा के नये अध्यक्ष निर्वाचित। 20 प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने संचार मंत्री बूटा सिंह को मंत्री पद से हटाया कवि और भारत में मैक्सिको के पूर्व राजनयिक आक्टोवियो पाज का निधन। 22. श्री सुंदर सिंह भंडारी, विहार के, गिरीश चंद सक्सेना जम्मू व काश्मीर के, ए.आर किदवई पश्चिम बंगाल व दरबारा सिंह राजस्थान के राज्यपाल नियुक्त किये गये। 30. हिमाचल प्रदेश के उपमुख्यमंत्री सुखराम त्यागपत्र देने को राजी।

मई1. बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने विख्यात चित्रकार एम.एफ. हुसैन के घर पर हमला कर तोड़फोड़ की। 8. पूर्वोत्तर विकास परिषद में सिक्किम को शामिल किया गया, पूर्वोत्तर राज्यों को पड़ौसी देशों से व्यापार की सुविधा। 9. गायक तलत महमूद का 75 वर्ष की आयु में निधन 11. भारत ने राजस्थान के पोखरण में हाइड्रोजन बम समेत तीन परमाणु परीक्षण करके आणविक क्षेत्र में महाशक्ति बनने की तरफ कदम बढ़ाया। 12. भारत ने परमाणु हथियारों के उन्मूलन के लिये प्रतिबद्धता प्रकट की; परीक्षणों का देश भर में व्यापक स्वागत; केंद्रीय कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति की आयु 58 वर्ष से 60 वर्ष तक बढायी गयी; बिहार में राज्यपाल सुंदर लाल भंडारी ने पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव, तीन मंत्रियों व अनेक प्रशासनिक अधिकारियों के विरुद्ध मुकदमा चलाने की सी.बी.आई. को अनुमति दी। 13 अंतर्राष्ट्रीय दबाव के समक्ष न झुकते हुए भारत ने दो और परमाणु विस्फोट किये; परीक्षण अब प्रयोगशाला में संभव, अमरीका ने भारत पर आर्थिक प्रतिबंध लगाये। 19 चीन स्थित भारतीय राजदूत विजय नाम्बियार को परामर्श के लिये दिल्ली बुलाया गया। 20. डा. आर. चिदम्बरम के अनुसार भारत अपना ताप नाभिकीय प्रौद्योगिकी की मदद से 200 किलोटन के परमाणु बम बना सकता है। 24 राजस्थान के राज्यपाल दरबारा सिंह का निधन। 25 प्रसिद्ध संगीतकार लक्ष्मीकांत का 61 वर्ष की आयु मे निधन। 26. पूर्व केंद्रीय मंत्री कृष्ण कुमार फेरा के कथित उल्लंघन के मामले में प्रवर्तन निदेशालय ने हिरासत में लिया। 31 इस्लामाबाद में एक निजी सुरक्षा कर्मी ने भारतीय राजनयिक की बुरी तरह से पिटायी की।

जून3. प्रधानमंत्री वाजपेयी ने इरान के विदेशमंत्री से बातचीत मे स्पष्ट किया कि भारत को काश्मीर पर तीसरे पक्ष की मध्यस्थता नामंजूर है। 5. नाट्यकर्मी बी.एम. शाह का लखनऊ में अचानक निधन; उर्दू के शायर अली सरदार जाफरी को प्रधानमंत्री ने ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया। 10. अरब सागर मे उठे भीषण चक्रवाती तूफान से गुजरात मे मरने वालो की संख्या 400 से अधिक हुई, हजारों घायल व सैकडों लापता। 13 बिहार के पूर्वमंत्री ब्रज बिहारी प्रसाद की पटना मे अज्ञात हमलावरो ने हत्या कर दी। 14. बिहार के पूर्णिया मे विधायक व मा क पा के नेता अजित सरकार की हमलावरो ने हत्या की। 16 बंगला देश की प्रधानमंत्री शेख हसीना वाजेद दिल्ली की यात्रा पर। 24. समाजवादी पार्टी और राष्ट्रीय जनता दल ने मिलकर लोकतांत्रिक मोर्चे का गठन किया। 27 पत्रकार निखिल चक्रवती का निधन। 29 केंद्रीय मंत्रिमंडल में उत्तरांचल, वनांचल और छत्तीसगढ को नये राज्य के रूप मे गठन और दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की सहमति।

जुलाई 5. जम्मू काश्मीर में उग्रवाद के खिलाफ होने वाले खर्च को केंद्र सरकार द्वारा वहन करने की घोषणा। 9. नजमा हेपतुल्ला लगातार चौथी बार राज्यसभा की उपाध्यक्ष चुनी गयी। 15. भारत के साथ बातचीत के लिये अमरीका के विदेश उपमंत्री स्ट्रोब टोलबोट दिल्ली आये। 22. अमरीका ने सात भारतीय वैज्ञानिको को देश छोड़ने के आदेश दिये। 29. गुजरात में कांग्रेस सरकार अल्पमत में आ जाने के बाद बर्खास्त, दल से अलग हुए नेता डा. विल्फ्रेड डिसूजा नये

मुख्यमंत्री बने; भारत व पाकिस्तान सचिव स्तर की बातचीत के लिये सहमत।

अगस्त 1. कावेरी नदी जल विवाद पर पंचाट की अंतरिम योजना में केंद्र के संशोधन को कर्नाटक ने नामंजूर किया।7. कावेरी जल विवाद को सुलझाने के लिये कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल व संघीय क्षेत्र पांडिचेरी के मुख्यमंत्रियों के मध्य समझौता।11. केंद्र ने कावेरी जल ट्रिब्यूनल के अंतरिम आदेश को लागू करने की अधिसूचना जारी की। 12.भारतीय सिनेमा संगीत की अमर गायिका शमशाद बेगम का निधन।15. स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर भारत के 11वें प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने लाल किले के परकोटे से राष्ट्र को संबोधित किया।16. उच्चतम न्यायालय ने कावेरी जल विवाद न्यायाधिकरण के अंतरिम आदेश लागू कराने के केंद्र सरकार की योजना को मंजूरी दी।18. उत्तर प्रदेश के पिथौरागढ़ जिले में तेज वर्षा के कारण गांव में ठहरे मानसरोवर की तीर्थ यात्रा पर जाने वाले साठ सदस्यों के 12वें दल के भी वह जाने की आशंका, इस दल में विख्यात नृत्यांगना प्रोतिमा बेदी के भी निधन की आशंका। 24. गृहमंत्री अडवाणी के अनुसार राजीव हत्याकांड में कार्रवाई रिपोर्ट में तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि का नाम गलती से शामिल हुआ।28. दिल्ली में सरसों के मिलावटी तेल से दो और व्यक्ति मरे, दिल्ली, बिहार और पश्चिम बंगाल के बाद पांच और राज्यों उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उड़ीसा, हरियाणा और मध्य प्रदेश में सरसों के तेल की बिक्री पर रोक लगा दी गया।

सितंबर 1. मध्य प्रदेश विधानसभा में छत्तीस गढ़ को राज्य का दर्जा देने का प्रस्ताव मंजूर किया गया। 3. प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति मंडेला के काश्मीर मसले पर तीसरे देश की मध्यस्थता के सुझाव को नकारा। 15. कांग्रेस पार्टी ने झारखंड राज्य बनाने पर अपना समर्थन दिया।16. चरित्र अभिनेता मजहर खान का निधन।17. नये वनांचल राज्य के गठन का पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने कड़ा विरोध किया, बिहार सरकार ने झारखंड स्वायत्तशासी क्षेत्र परिषद को भंग किया। 19. बिहार के राजनीतिक घटनाक्रम में नाटकीय मोड़, राबड़ी देवी सरकार ने विश्वास मत की पहल की; राजधानी क्षेत्र में सरसों के तेल की बिक्री पर लगा प्रतिबंध समाप्त। 21. बिहार विधानसभा ने वनांचल राज्य के गठन संबंधित बिहार पुनर्गठन विधेयक नामंजूर किया। 22. केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बिहार में राष्ट्रपति शासन लगाये जाने की सिफारिश की। 25. राष्ट्रपति ने बिहार की राबड़ी देवी सरकार को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन लगाने की मंत्रिमंडल की सिफारिश को पुनर्विचार के लिये वापस लौटाया।।26. केंद्रीय मंत्रिमंडल राबड़ी देवी सरकार की बर्खास्तगी के लिये राष्ट्रपति को भेजी गयी सिफारिश को पुनर्विचार के लिये नहीं भेजेगी; दिल्ली राजस्थान और मध्य प्रदेश में विधान सभा के चुनाव 25 नवंबर को; सचिन तेंदुलकर ने जिम्बाबवे के विरुद्ध शतक लगाकर विश्व कीर्तिमान बनाया।30. फ्रांस और भारत दीर्घकालिक रक्षा सहयोग पर सहमत; अमरीका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने अपनी भारत यात्रा स्थगित की।

अक्टूबर 3. पत्रकार गुरु कृपाल सिन्हा का नयी दिल्ली में निधन। 7. ऊधम सिंह नगर विवाद को सुलझाने के लिये एक समिति का गठन का मामला उच्चतम न्यायालय ने संविधान पीठ को सौंपा।10. कम्युनिस्ट क्रांतिकारी और भा.क.पा. (माले) के पोलित ब्यूरो के सदस्य नागभूषण पटनायक का निधन; भा.ज.पा. ने केंद्रीय मंत्री सुषमा स्वराज को दिल्ली की नयी मुख्यमंत्री बनाने की घोषणा की। 13. दुलर्भ हिरणों के शिकार के आरोप में फंसे अभिनेता सलमान खान को अदालत ने रिमांड पर भेजा।14. भारत के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो. अमर्त्य सेन को अर्थशास्त्र के क्षेत्र में नोबल पुरस्कार के लिये चुना गया। 22. दिल्ली में आयातित प्याज की कीमत 10 रुपये प्रति किलो। 26. केंद्र सरकार ने प्याज, आलू और दालों के निर्यात पर रोक लगाइ। 28. बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव व जगन्नाथ मिश्रा न्यायिक हिरासत में भेजे गये; उच्चतम न्यायालय के फैसले के अनुसार सर्वोच्च न्यायालय में जजों की नियुक्ति व उच्च न्यायालय के जजों के तबादले के लिये मुख्य न्यायधीश को अपने चार वरिष्ठ साथियों से सलाह करनी होगी।

नवंबर 5. कवि और बाबा नागार्जुन का निधन। 6. भारतीय कप्तान मोहम्मद अजहरुद्दीन ने 94 रन बना कर एक दिवसीय क्रिकेट मैच में विश्व में सर्वाधिक रन बनाने का कीर्तिमान बनाया; वयोवृद्ध अकाली नेता जत्थेदार जीवन सिंह उमरानंगल का निधन। 11. नांगलोई से समता पार्टी के उम्मीदवार वेदसिंह की हत्या। 13. भारत पाकिस्तान असैनिक बंदियो व मछुआरों को रिहा करने पर राजी। 14. संयुक्त राष्ट्र संघ में भारतीय परमाणु मुद्दे के पारित हो जाने से बड़ी कूटनीतिक सफलता। 23. दिल्ली समेत चार राज्यों में विधान सभा के चुनावों के लिये प्रचार समाप्त; केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बीमा क्षेत्र को विदेशी कंपनियों के लिये खोलने के प्रस्ताव को स्वीकृति दी।24. बीमा क्षेत्र में विदेशी निवेश के फैसले का कड़ा विरोध; साहित्यकार डा. विजयेंद्र स्नातक का निधन।

दिसंबर 1. मध्य प्रदेश में दिग्विजय सिंह दुबारा मुख्यमंत्री बने 3. शीला दीक्षित ने दिल्ली की मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। 4. केंद्रीय मंत्रिमंडल के विस्तार में जसवंत सिंह, जगमोहन और प्रमोद महाजन शामिल। 6. सदी के अंतिम एशियाई खेल बैंकाक में प्रारंभ। 7. सरकार ने एयर इंडिया व इंडियन एयर लाइंस की सर्वोच्च स्वामित्व कंपनी बनाने का निर्णय लिया। 10. 'ए मेरे वतन के लोगों' गीत के रचयिता कवि प्रदीप का निधन। 15. बीमा बिल लोकसभा में पेश किया गया पर भारी विरोध के कारण प्रवर समिति को भेजा गया।16. उद्योग मंत्री सिकंदर बख्त ने राज्य सभा में पेटेंट बिल रखा; नये राज्यों के गठन को मंत्रिमंडल की मंजूरी। 18. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) के नेता विनोद मिश्र का निधन। 19. बैंकाक में आयोजित सदी के अंतिम एशिया[illegible] में 20 वर्ष के बाद भारत को हाकी में स्वर्ण प[illegible]

23. लोकनायक जय प्रकाश नारायण को मर्णोपरांत 'भारत रत्न'; प्रणव मुखर्जी और जसपाल रेड्डी को सर्वश्रेष्ठ सासंद सम्मान; वनांचल विधेयक लोकसभा में नारी हंगामे के बीच पेश; प्रधानमंत्री ने सासंद कोष की राशि 2 करोड़ रूपये की; नये वनांचल पदेश में 82 विधानसभा सीटें होंगी। 24. प्रशासनिक सेवा परीक्षा के आयु सीमा 30 वर्ष तक बढ़ाई गई 26. स्वतंत्रता सेनानी मामा बालेश्वर दयाल का इंदौर में निधन। 27. श्रीलंका की राष्ट्रपति चंद्रिका कुमारतुंगे की भारत यात्रा प्रारंभ। 28. भारत और श्रीलंका में मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर। 30. केंद्रीय मंत्रिमंडल के आदेश की अवहेलना करने के आरोप में नौसेना अध्यक्ष एडमिरल विष्णु भागवत को सरकार ने बर्खास्त कर दिया।

लाहौर यात्रा और कारगिल

जनवरी 1999 5. केंद्रीय मंत्रिमंडल ने पेटेंट कानून में संशोधन विषयक अध्यादेश, और केंद्रीय सतर्कता आयोग अध्यादेश को फिर से जारी करने की मंजूरी दी। 7. भारत – पाक सरकारों ने दौरा रद्द न करने के संकल्प को दोहराया। 8. भारत व पाकिस्तान के बीच शुरु हुई बस सेवा के तहत लाहौर पंहुची पहली बस का जोरदार स्वागत; जमानत के बाद लालू प्रसाद यादव जेल से रिहा। 9 नौवीं पंचवर्षीय योजना के मसौदे को मंत्रिमंडल ने अंतिम मंजूरी दी। 15. फिल्मकार बर्तोलुसी को सिनेमा के क्षेत्र में योगदान के लिये भारत सरकार ने सम्मानित किया। 17. प्रधानमंत्री ने धर्मांतरण रोकने के लिये कानून बनाने से इंकार कियाभारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता जेड.ए. अहमद का 91 वर्ष की आयु मे लखनऊ मे निधन। 18. नोबेल पुरस्कार से सम्मानित प्रख्यात अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन को भारत रत्न सम्मान दिये जाने की घोषणा। 19. भारतीय क्रिकेट बोर्ड के मुख्यालय को मुंबई से कलकत्ता स्थानांतरित किया गया। 20. विख्यात रंगकर्मी व नाट्य लेखक गिरीश कर्नाड को वर्ष 1998 का ज्ञानपीठ पुरस्कार। 21 पाकिस्तान की क्रिकेट टीम का दिल्ली में स्वागत। 22 अंतर्राज्यीय परिषद ने संविधान के अनुच्छेद 356 के स्वरूप पर आम सहमति के प्रयास एव राज्यों के विधेयक पर निर्धारित समय मे निर्णय लेने सरकारिया आयोग की सिफारिशों को स्वीकार कर लिया। 23. उड़ीसा के क्योंझार जिले में अपनी कार मे सो रहे आस्ट्रेलियाई मूल के इसाई मिशनरी ग्राहम स्टीवार्ट स्टेंस और उनके दो पुत्रों को जिंदा जलाकर मार डाला गया। 25. स्वर कोकिला लता मंगेशकर, शास्त्रीय गायक पं भीमसेन जोशी, श्वेत क्रांति के प्रणेता वर्गीस कुरियन, सचिन तेंदुलकर समेत अनेक विभूतिया राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित। 28. सरकार ने सार्वजनिक प्रणाली के अंतर्गत बिकने वाले राशन के गेंहूं, चावल और चीनी के दामों में बढ़ोतरी की। 29. भारत और अमरीका के मध्य आठवें दौर की बातचीत में भारत ने स्पष्ट किया कि न्यूनतम परमाणु क्षमता पर को समझौता नहीं होगा। 30. प्रसिद्ध सितार वादक पं. रविशंकर और असम के दिवंगत नेता गोपीनाथ बोरदोलोई को भारत रत्न।

फरवरी 2. सरकार ने गरीबी रेखा से नीचे रहने वालों के लिये अनाज की बढ़ी कीमतों पर छूट दी 3. भारत पाक के आपसी संबधों को सुधारने की पहल करते हुए प्रधानमंत्री वाजपेई दिल्ली लाहौर बस सेवा के उद्घाटन यात्रा में लाहौर जायेंगे। 4. के.सी. पंत योजना आयोग के नये उपाध्यक्ष। 7. नई दिल्ली में फिरोजशाह कोटला मैदान में पाकिस्तान के विरुद्ध दूसरे टेस्ट मैच में पाकिस्तान की दूसरी पारी को अनिल कुंबले ने सारे के सारे दस विकेट लेकर 43 वर्ष पूर्व जिम लेकर के बाद पूरी पारी समेटने वाले दूसरे गेंदबाज बने। 8. पूर्व थलसेना अध्यक्ष जनरल सुंदरजी का निधन। 10. शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अकाल तख्त के जत्थेदार भाई रणजीत सिंह को पद से निलंबित कर दिया। 12. बिहार में राबड़ी देवी की सरकार को बर्खास्त करके राष्ट्रपति शासन लागू; उड़ीसा के मुख्यमंत्री ने त्यागपत्र दिया। 15. ज्ञानी पूरन सिंह अकाल तख्त के नये कार्यकारी जत्थेदार बन; गिरिधर गोमांगों उड़ीसा के नये मुख्यमंत्री बनेगें। 16. हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला ने वाजपेई सरकार से अपना समर्थन वापस लिया। 17. बिहार के राज्यपाल सुंदर सिंह भंडारी का पद से इस्तीफा देने का निश्चय। 18. सुप्रीम कोर्ट ने नर्मदा बांध का निर्माण कार्य फिर से शुरु करवाने की इजाजत दी। 20. श्री वाजपेई का लाहौर में भव्य स्वागत, श्री शरीफ ने सभी मुद्दों पर बातचीत की इच्छा जताइ। 21. भारत व पाक ने आतंकवाद की निंदा की, दोनों देश परमाणु संयम बरतने पर राजी। 26. बिहार में राष्ट्रपति शासन की लोकसभा में मंजूरी दी। 28. छह राज्य, जम्मू एवं काश्मीर, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली और राजस्थान समान बिक्रीकर पर सहमत।

मार्च 1. भा.ज.पा. का बिहार पर प्रस्ताव न लाने का इरादा। 5. स्वदेशी तकनीक से बने राकेट लांचर पिनाका का परीक्षण। 7. दिल्ली में पालम के पास वायु सेना का विमान दुर्घटनाग्रस्त। चालक दल समेत वायु सेना के 19 अधिकारियो के साथ गिरने के दौरान दो बच्चों समेत सभी का निधन। 8. सरकार ने बिहार में राष्ट्रपति शासन वापस लिया। 9. भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) ने फोन काल दरों में बढ़ोत्तरी की। 10. सरकार ने टेलीफोन की नई दरों को स्थगित किया; लोकसभा में विवादास्पद पेटेंट बिल पारित; ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित मराठी के साहित्यकार कुसुमाग्रज का निधन। 13. पेटेंट बिल को राज्यसभा की मंजूरी मिली; बिहार के

राज्यपाल सुंदर सिंह भंडारी गुजरात के राज्यपाल नियुक्त; गुमशुदा कार्टूनिस्ट इरफान का शव झाड़ियों में मिला। 15. जत्थेदार गुरचरण सिंह टोहड़ा ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से त्यागपत्र दिया। 16. भारत पाक वस सेवा योजना के अंतर्गत लाहौर से पहली वस दिल्ली पंहुची; पंजाव की पर्यटन मंत्री वीवी जागीर कौर शिरोमणि कमेटी की अध्यक्ष निर्वाचित। 18. दूरदर्शन के नये खेल चैनेल की शुरुवात। 22. भारत और पाकिस्तान ने 57 कैदियों की अदला-वदली की। 26. विख्यात संगीतकार आनंद शंकर का निधन। 27. रंगकर्मी व लेखक गिरीश कर्नाड को ज्ञानपीठ पुरस्कार।

अप्रैल 1. अन्नाद्रमुक ने भा.ज.पा. सरकार से समर्थन वापस न लेने की घोषणा की। 3. इनसैट दो-ई का सफल प्रक्षेपण के साथ भारत उपग्रह के वैश्विक वजार में आ गया 6. अन्नाद्रमुक के दो मंत्रियो का केंद्रीय मंत्रिपरिषद से इस्तीफा। 8. खालसा पंथ के त्रिशती समारोहों की शुरुवात। 9. अन्नाद्रमुक भा.ज.पा. नेतृत्व वाली साझा सरकार की समन्वय समिति से अलग हुई। 10. साहित्यकार तकषी शिवशंकर पिल्लै का निधन। 11. उड़ीसा के वालासोर समुद्र तट पर मध्यम दूरी की वैलिस्टिक मिजाइल अग्नि - 2 का सफल परीक्षण। 14. अन्ना द्रुमुक के समर्थन वापस लेने के वाद राष्ट्रपति ने सरकार को सदन में वहुमत सिद्ध करने को कहा। 15. अन्ना द्रुमुक के असहयोग के वाद भा.ज.पा. नये मित्रों की तलाश में द्रुमुक ने वाजपेई सरकार का समर्थन करने का संकेत दिये। 16. द्रुमुक व चौटाला के समर्थन देने व व.स.पा. के अनुपस्थित रहने के फैसले से भा.ज.पा. वहुमत पाने पर आश्वस्त। 17. एक मत से विश्वास मत हारने के वाद वाजपेई सरकार ने त्यागपत्र दिया; नई सरकार वनाने के लिये राजनीतिक दलों में जोड़-तोड़ जोरों पर। 20. राष्ट्रपति ने वैकल्पित सरकार के लिये विचार विमर्श करने के लिये सोनिया गांधी को वुलाया। 21. वैकल्पिक सरकार की राह में नई अड़चनें, कांग्रेस ने कहा कि वाहरी समथर्न से ही सरकार वनायेगी। 23. वहुमत जुटा पाने में नाकामयावी के वाद सोनिया गांधी ने राष्ट्रपति से दो दिन का और समय मांगा; समाजवादी पार्टी के नेता मुलायमसिंह यादव तीसरे मोर्चे के प्रधानमंत्री का समर्थन करेंगे। 25. विपक्ष व कांग्रेस सरकार वनाने में असमर्थ। 26. केंद्रीय मंत्रिमंडल की सिफारिश पर 12वीं लोकसभा भंग की। 29. प्रसिद्ध फिल्म निर्मार्ता-निदेशक केदार शर्मा का 90 वर्ष की आयु में निधन; मिस्टर योगी धारावाहिक के साथ टेलिविजन की दुनिया में उभरे रंगमंच कलाकार मोहन गोखले का निधन। 30 पूर्व सांसद चंद्रेश कुमारी महिला कांग्रेस की अध्यक्ष वनीं।

मई. 1. द्रमुक ने तमिल मनीला कांग्रेस, मा.क.पा., मा.क.पा. व अपने सहयोगी दलो से नाता तोड़ते हुए भा.ज.पा. से गठजोड़ करने का फैसला किया। 3. आगामी लोकसभा चुनावों के लिये भा.ज.पा. व द्रमुक में गठवंधन के लिये वातचीत। 4. राष्ट्रपति ने पूर्व केंद्रीय मंत्री माधवसिंह सोलंकी पर वोफोर्स घोटाले के संवध में मुकदमा चलाने की अनुमति दी। 10. पूर्व केंद्रीय मंत्री कल्पनाथ राय की कांग्रेस में वापसी; इंडियन एयर लांइस को पूंजी वाजार में जाने की अनुमति मिली। 11. उच्चतम न्यायालय ने राजीव गांधी हत्याकांड के 19 अभियुक्तों को रिहा किया, संतन, मुरुगन, अरिवु व नलिनी को मृत्युदंड व अन्य तीन की मृत्युदंड की सजा को आजीवन कारावास में वदला। 12. प्रसिद्ध मोहिनी अट्टम नृत्यांगना कल्याणी कुट्टी अम्मा का निधन। 13. सुप्रीम कोर्ट ने वाहन नियमों में यूरो मानक अपनाने की समय सीमा में फेरवदल करने से इंकार किया। 14. उच्चतम न्यायालय ने विशेष अदालतो के विरुद्ध जयललिता की याचिका निरस्त की; शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व अध्यक्ष गुरुचरण सिंह टोहड़ा को शिरोमणि अकाली दल से 6 वर्ष के लिये निष्कासित किया गया। 15. भा.ज.पा. और साझा दलों राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठवंधन नामक औपचारिक मोर्चा वनाया। 16. लोकसभा में विपक्ष के नेता शरद पवार, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष पी.ए. संगमा और सांसद तारिक अनवर ने कांग्रेस अध्यक्ष को पत्र लिख कर श्रीमती सोनिया गांधी को भावी प्रधानमंत्री के रूप में पेश न करने के लिखा क्योंकि वे भारतीय मूल की नहीं है। 17. कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी ने पद से त्यागपत्र दिया। 18 श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा अपना त्यागपत्र वापस लिये जाने के लिये कांग्रेस में अनेक पदाधिकारियों ने इस्तीफे दिया। 19. मराठी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर और विख्यात क्रिकेट खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर के पिता रमेश तेंदुलकर का दिल का दौरा पड़ने से निधन। 20. शरद पवार, पी.ए. संगमा और तारिक अनवर को कांग्रेस से निष्कासित। 21. कांग्रेस से निष्कासित नेता शरद पवार, पी.संगमा और तारिक अनवर ने नये मोर्चे के गठन का संकल्प लिया। 22. राज्य सभा सदस्य सुरेश कलमाडी कांग्रेस में लौटे; महाराष्ट्र कांग्रेस में टूट। 23. विश्व कप क्रिकेट प्रतियोगिता में भारत के सचिन ने केन्या के विरुद्ध पहला शतक लगाया। 24. अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त व पदमश्री से सम्मानित कुश्ती के प्रतीक गुरु हनुमान का मेरठ के पास सड़क दुर्घटना में निधन; श्रीमती सोनिया गांधी ने अपना त्यागपत्र वापस लिया। 27. घुसपैठियों के खिलाफ हवाई हमलें में भारत के दो विमान गिरे, एक विमान यांत्रिक खरावी से गिरा, दूसरा पाकिस्तानी मिसाइल से गिरा। एक पायलट को पाकिस्तानी सेना ने मार डाला और दूसरे को युद्धवंदी वना लिया। कांग्रेस से निष्कासित नेता शरद पवार, पी.ए. संगमा और तारिक अनवर ने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी का गठन किया। 28. कारगिल में घुसे घुटपैठियों ने स्टिंगर मिसाइल से एक भारतीय हेलिकाप्टर मार गिराया, सेना ने अनेक क्षेत्रों में से घुसपैठियों का सफाया किया, पाकिस्तानी टी.वी. ने भारतीय पायलट नचिकेता को दिखाया। 29. भारतीय सेना ने घुसपैठियों को पीछे धकेला, द्रास में सेना नियंत्रण रेखा तक पंहुची। 30. मारे गये घुसपैठियों में 125 पाकिस्तानी सैनिक; इंगलैंड पर शानदार विजय के साथ भारत विश्व कप क्रिकेट श्रृंखला के सुपर सिक्स में पंहुच गया।

जून 2. प्रधानमंत्री ने युद्धपोत आई.एन.एस. मैसूर को राष्ट्र को समर्पित किया। 3. पाकिस्तान ने भारतीय पायलट फ्लाइट ले. के. नचिकेता को छोड़ा; कारगिल में घमासान

जंग जारी।4. भारतीय पायलट फ्लाइट ले. के. नचिकेता दिल्ली पहुंचा। 6. भारत ने पाकिस्तान से युद्ध की आशंका से इंकार किया, कारगिल में घुसपैठियों पर हवाई हमले फिर से शुरु; गोवा विधानसभा चुनावों में कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत मिला, भा.ज.पा. दस सीटें जीत कर प्रमुख विपक्षी पार्टी बना; भारत के लियेंडर पेस व महेश भूपति की जोड़ी ने फ्रेंच ओपेन युगल खिताब जीता। 9. भारत ने कहा कि घुसपैठियों की वापसी से कम पर कोई सौदा नहीं होगा; भारतीय सेना का दो और ठिकानों पर कब्जा। 10. ले. सौरभ कालिया समेत पांच अन्य सैनिकों के क्षतविक्षत शव पाकिस्तानी सैनिकों ने सेना को सौंपे। 11. रक्षा मंत्री के अनुसार पोस्टमार्टम रिपोर्ट से साबित हो गया है कि भारतीय सैनिकों को पाकिस्तान ने प्रताड़ित करके उनकी हत्या की, विदेश मंत्री जसवंत सिंह ने दोषी पाकिस्तानी सैनिकों के विरुद्ध कार्यवाई की मांग की विदेश मंत्री जसवंत सिंह ने पाकिस्तानी जनरलों के बीच हुई फोन की बातचीत का टेप जारी किया इससे सिद्ध होता है कि कारगिल में पाकिस्तानी सैनिक शामिल है बटालिक टॉप पर भारतीय सेना ने कब्जा किया। 12 पाकिस्तानी विदेश मंत्री सरताज अजीज के नियन्त्रण रेखा के पुर्निधारण पर अड़े रहने के कारण भारत पाक वार्ता विफल। 13. प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई की कारगिल यात्रा के दौरान पाकिस्तानियों द्वारा भारी गोलाबारी तोलोलिंग पहाड़ी पर भारतीय सेना का कब्जा। 14 भारतीय विदेश मंत्री जसवंत सिंह चीन यात्रा पर। [illegible] भारतीय वायु सेना की भारी गोलाबारी से कारगिल के [illegible] क्षेत्र में घुसपैठियों के सभी अड्डे [illegible] नष्ट हुए। 18 भारतीय सेना ने कारगिल द्रास और बटालिक क्षेत्रों में घुसपैठियों को [illegible] पर हमला करने से पाकिस्तान [illegible] मेजर सहित पांच सैनिक मारे। 19 [illegible] से ढाका की बस यात्रा प्रारंभ पहली बस [illegible] विजय में घुसपैठियों के चार अड्डे नष्ट। [illegible] आस्ट्रेलिया ने पाकिस्तान को 8 विकेटों से पराजित [illegible] विश्व कप जीता कारगिल में पाकिस्तानी घुसपैठियों [illegible] तोलोलिंग क्षेत्र की सबसे ऊंची चोटी [illegible] घुसपैठियों से छुड़ाया गया। 21. भारतीय सेना ने टाइगर हिल्स के रसद मार्ग बंद कर दिये। 22. हरियाणा में भारतीय जनता पार्टी ने बंसीलाल सरकार से समर्थन वापस लिया। 23 छह चोटियों और प्वाइंट-5203 पर भारत का कब्जा अनेक घुसपैठिये मारे गये। 28 सियाचिन में एक सैनिक कार्रवाई में 15 पाकिस्तानी सैनिक मारे गये। 29 काश्मीर में सत्रह मुसलमानों की उग्रवादियों ने हत्या करदी टाइगर हिल्स की मुक्ति का अंतिम अभियान प्रारंभ 45 घुसपैठिये मारे गये। 30 कारगिल में जारी कार्रवाई में भारतीय सेना ने छह नई चोटियों पर कब्जा किया।

जुलाई 1. टाइगर हिल्स पर लेजर बमों से वायु सेना ने जोरदार हमले किये, पाक के 30 सैनिक मरे। 2. बटालिक में कई ठिकानों में घनघोर लड़ाई जारी। 3. टाइगर हिल्स पर तोपों से भारी गोलाबारी जारी, इस अभियान में 23 भारतीय सैनिक शहीद हुए। 4. टाइगर हिल्स पर एक बार फिर से भारतीय तिरंगा लहराया, 10 पाक सैनिक मारे गये एक को युद्धबंदी बनाया गया; पेस-भूपति की जोड़ी ने विम्बल्डन युगल प्रतियोगिता जीता; प्रधानमंत्री वाजपेई ने बिल क्लिंटन के निमंत्रण को अस्वीकार किया। 5. पाकिस्तान कारगिल क्षेत्र में भारतीय सीमा से अपनी सेना और मुजाहिदीनों को बुलाने को तैयार। 6. सेना ने चार प्रमुख चोटियों पर फिर से कब्जा किया, द्रास व बटालिक क्षेत्र में 55 पाक सैनिक मारे गये। 7. प्रधानमंत्री वाजपेई ने कहा कि घुसपैठियों को खदेड़ने तक लड़ाई जारी रहेगी, भारतीय सेना ने जुबार चोटी को घुसपैठियों से मुक्त कराया; पूर्व टेस्ट खिलाड़ी एम एल जयसिम्हा का 60 वर्ष की आयु में निधन। 8 बटालिक व द्रास में आर-पार की लड़ाई प्रारंभ 48 घंटों में 92 पाक सैनिक मारे गये, 38 भारतीय सैनिक शहीद हुए। 9. बटालिक पर भारत का कब्जा, मशकोह के बाद काकसर घाटी में घमासान युद्ध जारी। 11 कारगिल से पाकिस्तानी सेनाओं की वापसी प्रारंभ, सेना स्थिति पर निगाह रखेगी; 13वीं लोकसभा के लिये चुनाव कार्यक्रम की घोषणा। 19. आठ दिन की शांति के बाद मश्कोह घाटी में सेना और घुसपैठियों के बीच गोलीबारी। 21 समता पार्टी व लोकशक्ति का जनता दल में विलय टूटी पार्टी के दूसरे गुट ने देवगौड़ा को अपना नेता चुना हरियाणा में बंसीलाल सरकार ने त्यागपत्र दिया। 22 कर्नाटक में विधानसभा भंग। 23. ओम प्रकाश चौटाला हरियाणा के नये मुख्यमंत्री बनेंगे। 24. कारगिल संकट की जांच के लिये समिति की घोषणा, रपट तीन महीनें में। 25 द्रास व बटालिक क्षेत्रों में लड़ाई जारी, 62 पाक घुसपैठिये मारे गये 21 भारतीय जवान शहीद हुए। 26 भारतीय सेना ने कारगिल में सभी चोटियां मुक्त कराया। 27 हरियाणा के मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला को विश्वास मत प्राप्त। 28. निर्वाचन आयोग ने शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे को 6 वर्ष के लिये चुनाव लड़ने और मतदान करने के हक से वंचित किया। 30. पूर्व केंद्रीय मंत्री बलराम जाखड़ हवाला कांड में भ्रष्टाचार के आरोप से मुक्त।

अगस्त 2 पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे के गैसल स्टेशन पर अवध असम एक्सप्रेस और ब्रह्मपुत्र मेल के बीच आमने-सामने की भीषण टक्कर में 400 से अधिक यात्रियों के मरने व 750 के घायल होने की आशंका। 3. रेलमंत्री का त्यागपत्र नामंजूर।4. तमिलनाडु में भा.ज.पा. व द्रमुक में समझौता।5 रेलमंत्री नीतीश कुमार का त्यागपत्र मंजूर। 6 पूर्व केंद्रीय मंत्री कल्पनाथ राय का 58 वर्ष की आयु में निधन; पूर्व केंद्रीय मंत्री डा. कर्ण सिंह की कांग्रेस में वापसी; वधवा आयोग की रिपोर्ट में मिशनरी ग्राहम स्टेंस और उनके पुत्र की हत्या का दोषी दारा सिंह को ठहराते हुए हिंदू संगठनों को आरोप मुक्त किया। 7. चुनाव आयोग ने अविभाजित जनता दल के चुनाव चिन्ह चक्र पर रोक लगाते हुए विभाजित दोनों गुटों को अस्थाई मान्यता दी। 10. भारतीय वायु सेना ने गुजरात में घुस आये एक पाकिस्तानी टोही विमान को गिरा दिया। 12. सुप्रीम कोर्ट के फैसले के अनुसार विशेष दक्षता वाले पाठ्यक्रमों में चयन

केवल योग्यता के आधार पर। 14. स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर देश को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने देश को अचानक आक्रमण का सामना करने के लिये तैयार रहने को कहा।.15. देश की आजादी की 52वीं वर्षगांठ पर प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने लालकिले की प्राचीर से देश को संबोधित करते हुए कहा कि पाकिस्तान के साथ बातचीत तभी संभव जब वह उग्रवादियों की मदद करना बंद करे; दूरदर्शन का समाचार चैनेल प्रारंभ। 16. राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के चुनाव घोषणापत्र में लोकसभा अवधि को पांच वर्ष के लिये सुनिश्चित करने व विदेशी मूल के लोगों को उच्च पदों पर रोक पर बल। 18. कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने कर्नाटक के बेल्लारी में नामांकन पत्र भरा, भा.ज.पा. की सुषमा स्वराज उनका मुकाबला करने के लिये उतरीं। 20. निर्वाचन आयोग ने सभी राजनीतिक दलों, उम्मीदवारों या फिर उनके समर्थित संगठनों व संस्थाओं पर इलेक्ट्रानिक संचार माध्यमों के जरिये चुनावी विज्ञापन देने पर रोक लगाई। 24. समता पार्टी के वरिष्ठ नेता अब्दुल गफूर ने पार्टी से त्यागपत्र देते हुए रा.ज.दा. में शामिल हुए। 26. हरियाणा पुलिस ने पाकिस्तानी गुप्तचर संस्था आई.एस.आई. द्वारा मानव बमों द्वारा अटल बिहारी वाजपेई, सोनिया गांधी और लालकृष्ण अडवाणी की हत्या की साजिश का भंडाफोड़ किया। 27.भारत ने पाकिस्तान के 8 युद्धबंदियों को रिहा किया। 31. लोकसभा चुनावें के दौरान विस्फोट द्वारा दिल्ली में दहशत फैलाने आये दो उग्रवादी गिरफ्तार।

सितंबर 1. जम्मू काश्मीर के सोपोर जिले में उग्रवादियों ने एक सेना के शिविर पर हमला किया जिससे राष्ट्रीय रायफल्स के दो जवानों की मृत्यु हो गइ। 2. उड़ीसा के मयूरगंज जिले के जामबाणी गांव अज्ञात हमलवरों ने एक रोमन कैथोलिक पादरी की हत्या कर दी।3. तेरहवीं लोकसभा के चुनाव के लिये दस राज्यों, पांच केंद्रशासित क्षेत्रों व राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की 145 सीटों के लिये चुनाव प्रचार समाप्त। 4. श्रीनगर के चुनाव कार्यालय में उग्रवादियों द्वारा बंदी बनाये गये दो खुफिया अधिकारियों और चार सुरक्षाकर्मियों को भारतीय सेना के कमांडों ने मुक्त कराया। कार्रवाई में तीनों उग्रवादी मारे गये। 7. जम्मू काश्मीर के अनंतनाग में भा.ज.पा. प्रत्याशी गुलाम हैदर नूरानी और उनके तीन और अन्य साथियों की उग्रवादियों ने बारूदी सुरंग द्वारा हत्या की। 14. उच्चतम न्यायालय द्वारा चुनाव आयोग द्वारा चुनाव सर्वेक्षण पर रोक लगाने को अनुचित बताने पर आयोग ने अपने दिशा-निर्देश वापस लिये। 15. आंध्र प्रदेश अदिलाबाद जिले के सिरपुर कस्बे में नक्सलवादियों ने सत्तारूढ़ तेलगु देशम के एक विधायक व उनके तीन सुरक्षाकर्मियों की हत्या कर दी। 16. पाकिस्तान नें 17 दिनों की हिरासत में रखे दो भारतीय सैनिकों को रिहा किया। 17. पाकिस्तान से रिहा दोनो भारतीय सैनिक देश वापस लौटे; जाने माने गीतकार हसरत जयपुरी का निधन। 22. प्रधानमंत्री ने कावेरी विवाद को सुलझाने के लिये कावेरी नदी प्राधिकरण की निगरानी समिति की बैठक 24 सितंबर को बुलाई। 24. कर्नाटक ने कावेरी नदी प्राधिकरण की निगरानी समिति द्वारा तमिलनाडु को पानी देने के आग्रह को ठुकराया। 28. करोड़ो रुपये के प्रतिभूति घोटाले के आरोपी चर्चित दलाल हर्षद मेहता को 5 वर्ष का सश्रम कारावास। 29. देश में निर्मित चालक रहित विमान निशांत का सफल परीक्षण।

अक्टूबर 5. सरकार ने विश्व बाजार में तेजी के कारण डीजल के दामों में 35% की वृद्धि। 7. कर्नाटक में कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत प्राप्त; बिहार में मधेपुरा निर्वचन क्षेत्र से शरद यादव ने लालू यादव को हराया। 8. तेलगु देशम पार्टी के नेता चंद्रबाबु नायडु ने रा.ज.दा के समर्थन में राष्ट्रपति को पत्र भेजा; कांग्रेस पार्टी ने महाराष्ट्र में सरकार बनाने का दावा किया; अरुणाचल प्रदेश में कांग्रेस सत्ता में। 9. महाराष्ट्र में सरकार बनाने के लिये शरद पवार के नेतृत्व वाली रा कां पा कांग्रेस से बातचीत करने के लिये राजी। 10. चुनाव आयोग द्वारा राष्ट्रपति को निर्वाचित प्रतिनिधियों की सूची सौंपे जाने के साथ ही तेरहवीं लोक सभा के गठन की औपचारिकता पूरी हुई; भा.ज.पा. सांसदों ने और फिर उसके बाद राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सांसदों ने सर्वसम्मति से अटल बिहारी वाजपेई को अपना नेता चुना। 11. राष्ट्रपति के.आर. नारायण ने अटल बिहारी वाजपेई को सरकार बनाने के लिये आमंत्रित किया। 13. प्रधानमंत्री ने 70 सदस्यीय मंत्रिमंडल का गठन किया, महत्वपूर्ण विभागों में कोई फेरबदल नहीं। 17. महाराष्ट्र में नई सरकार के गठन की बाधायें दूर। 19. श्रीमती सोनिया गांधी ने बेल्हारी संसदीय सीट छोड़ी; उड़ीसा, आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल में 17 की रात को आये तूफान से 79 मरे। 21. डीजल के दामों में बढ़ोत्तरी के विरोध मे आल इंडिया मोटर ट्रांस्पोर्ट कांग्रेस ने हडताल की शुरुवात की; प्रसिद्ध फिल्म निर्माता व निदेशक बी.आर. चोपड़ा को दादा साहेब फाल्के सम्मान माधव राव सिंधिया को लोकसभा में कांग्रेस का उप नेता बनाया गया।22. बोफोर्स कांड में केंद्रीय जाच ब्यूरो ने पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव [illegible] सहित पूर्व रक्षा सचिव एस.के. भटनागर, इट[illegible] आक्टोवियो क्वात्रोची, मैस.ए.बी. बोफोर्स के पूर्व [illegible] मार्टिन आर्डबो और विन चड्ढा के विरुद्ध [illegible] विशेष अदालत में आरोप पत्र दाखिल किये; [illegible] के गति मोहनचंद बालयोगी तेरहवीं लोक[illegible] निर्विरोध चुने गये।25. बोफोर्स मामले [illegible] आरोपपत्र में स्व. राजीव गांधी के [illegible] कांग्रेसी सासंद उत्तेजित।27. [illegible] जनजाति के लोगों के लिये [illegible] बढ़ाने का विधेयक पारित; [illegible] का निधन। 28. पोखरण [illegible] अमरीकी प्रतिबंध हटा[illegible] नें प्रस्तुत किया ग[illegible] सबसे भीषण तूफा[illegible]

भयंकर तबाही, करोड़ो लोग प्रभावित; उड़ीसा का देश भर से संपर्क टूटा, राहत कार्य में बाधायें, केंद्र ने राष्ट्रीय आपदा घोषित की, 300 करोड़ रुपये की मदद।

नवंबर 1. उड़ीसा में महाचक्रवात के तांडव के चौथे दिन सेना सर्वाधिक प्रभावित स्थानों पर पंहुचने में सफल। 3. जम्मू कश्मीर में बादामी बाग छावनी क्षेत्र में 15वीं कोर बटालियन के मुख्यालय में उग्रवादियों द्वारा गोलाबारी में सेना के जनसंपर्क अधिकारी मेजर पुरषोत्तम सहित 6 सुरक्षाकर्मी मारे गया। 4. बोफोर्स मामले में इटली के ओटावियो क्वात्रोची के खिलाफ वारंट; सूचना प्रौद्योगिकी विधेयक को मंत्रिमंडल की मंजूरी। 5. धर्म गुरु पोप जान पाल द्वितीय की भारत यात्रा प्रारंभ। 9. उत्तर प्रदेश में मुख्य मंत्री पद के लिये रामप्रकाश गुप्त कल्याण सिंह के उत्तराधिकारी चुने गये। 11. उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने त्यागपत्र दिया, श्री राम प्रकाश गुप्ता को सर्वसम्मति से भा.ज.पा. विधानमंडल का नेता चुना गया। 12. बिहार में कांग्रेस ने राबड़ी सरकार से समर्थन वापस लिया। 13. राष्ट्रकुल सम्मेलन में वाजपेई ने कहा कि पाकिस्तान में लोकतंत्र की बहाली दक्षिण एशिया के हित में। 15. राष्ट्रकुल के देशों ने पाकिस्तान में सैनिक शासन की आलोचना करते हुए नवाज शरीफ को प्रधानमंत्री माना। 16. भारतीय नौसेना और तटरक्षकों ने जापानी जहाज के लुटेरों को पकड़ा; बिहार के कम उम्र मंत्री राकेश कुमार को राज्यपाल ने बर्खास्त कर उन पर धोखा धड़ी का मुकदमा चलाने को कहा। 17. चेन्नई की सेंट्रल जेल में दंगे में डिप्टी जेलर समेत 11 व्यक्ति मरे। 18. राजीव हत्याकाड की अभियुक्त नलिनी को मृत्युदंड न दिये जाने की सोनिया गांधी की राष्ट्रपति से अपील। 21. गोवा में भा.ज.पा. नई सरकार में शामिल होगी; जी.पी. गोयनका फिक्की के नये अध्यक्ष बने; प्रसार भारती से लेखक राजेंद्र यादव व रोमिला थापर को हटाने का फैसला। 23. गोवा में कांग्रेसी बागी विधायकों मुख्यमंत्री को बदलने की शर्त पूरी होने पर समर्थन वापसी के फैसले को छोडने पर तैयार। 24. गोवा में लुईजिन्हो फलेरो के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार का पतन, बागी विधायकों के नेता फ्रांसिस्को सरदेन्हा नये मुख्यमंत्री बने।25. मद्रास उच्च न्यायालय ने राजीव गांधी हत्याकांड के अभियुक्तों की राज्यपाल द्वारा क्षमादान की अपील को ठुकराने को नामंजूर करते हुए राज्यपाल के अधिकारों की व्याख्या की; ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को भारत सरकार का प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार बनाकर उन्हें कैबिनेट स्तर के मंत्री का दर्जा दिया गया; बाबा आम्टे को गांधी शांति पुरस्कार।27. उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह द्वारा केंद्रीय नेतृत्व की आलोचना करने पर भारतीय जनता पार्टी से निलंबित कर दिया गया; केरल के राज्यपाल ने पूर्व मुख्यमंत्री करुणाकरण और पूर्व नागरिक आपूर्ति मंत्री टी.एच. मुस्तफा के विरुद्ध पामोलीन तेल के आयात के मामले में मुकदमा चलाने की अनुमति देदी। 28. सरकार ने आरोप पत्र से राजीव गांधी का नाम हटाने से इंकार किया। 30. लोकसभा में वामपंथी दलों के विरोध के बावजूद बीमा विधेयक पर बातचीत प्रारंभ; गोवा के मुख्यमंत्री फ्रांसिस्को सरदिन्हा को विश्वास मत प्राप्त; विख्यात समाज शास्त्री एम.एन. श्रीनिवास का निधन।

दिसंबर 1. हांगकांग से प्रकाशित प्रतिष्ठित पत्रिका एशिया वीक ने महात्मा गांधी को शताब्दि का एशियाई चुना; बी.बी.सी. द्वारा कराये गये एक सर्वेक्षण में श्रीमती इंदिरा गांधी को सहस्त्राब्दि की महिला चुना गया। 2. सरकार द्वारा बीमा विधेयक में कांग्रेस के संशोधनों के मान लेने के बाद लोकसभा में वामपंथियो के भारी विरोध के बावजूद पारित। 5. उड़ीसा कांग्रेस विधायक दल ने हेमानंद बिस्वाल को अपना नेता चुना; भारत की बीस वर्षीय युक्ता मुखी सहस्त्राब्दि की अंतिम मिस वर्ल्ड बनीं। 7. कांग्रेस के समर्थन से बीमा विधेयक राज्य सभा में पारित; श्री नरेश्वर दयाल ब्रिटेन में भारत के नये उच्चायुक्त। 10. भा.ज.पा. से निष्कासित उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने नई पार्टी बनाने का दावा किया। भा.ज.पा. अध्यक्ष ने उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह को पार्टी से छह वर्ष के लिये निष्कासित किया; मुंबई उच्च न्यायालय ने एडमिरल विष्णु भागवत की पद पर बहाली के लिये याचिका अस्वीकार कर दी। 12. स्टेट्समैन के पूर्व संपादक सच्चिदानंद सहाय का निधन। 13. इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर लिफ्ट और सीढ़ियों के स्थान में फंस कर एक आठ वर्षीय बच्ची की मृत्यु; रेल मंत्री ममता बनर्जी ने सहस्त्राब्दि के अवसर पर पांच नई सहस्त्राब्दि ट्रेनें चलाने के साथ स्कूली बच्चों के निःशुल्क ट्रेन यात्रा और गरीबों को 15 रुपये मासिक पास पर यात्रा करने की घोषणा की।। 16. मध्य प्रदेश के परिवहन मंत्री लिखी राम कांवरे की संदिग्ध नक्सलवादियों ने हत्या कर दी। 17. पोखरण परीक्षण के बाद अमरीकी प्रतिबंध में छूट, 51 भारतीय उद्यमों से प्रतिबंध हटा; उच्चतम न्यायालय ने आदेश दिया कि भविष्यनिधि उपभोक्ता संरक्षण कानून के दायरे में; भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष कृष्णलाल शर्मा का निधन; कल्याण सिंह ने राष्ट्रीय क्रांति पार्टी बनाई। 20. लोकसभा ने उपराष्ट्रपति की पेंशन बढ़ाये जाने का विधेयक पारित कर दिया। 21. दिल्ली सरकार के कार्यालय सप्ताह में 6 दिन खोलने का फैसला। 22. गुजरात के हालमोड़ी में राम मंदिर का शिलान्यास शांतिपूर्वक हुआ।23. लोकसभा में महिला आरक्षण विधेयक । 24. काठमांडू से आ रहे इंडियन एयर लाइंस के विमान का अपहरण, अपहृत विमान दुबई की ओर रवाना। 25. अपहर्ताओं ने कट्टरपंथी उग्रवादी को छोड़ने की मांग को लेकर विमान को उड़ाने की धमकी दी। 26. पूर्व राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा का निधन; संयुक्त राष्ट्र की टीम कंधार से वापस लौटी। 27. कंधार पंहुचे भारतीय दल ने अपहर्ताओं से बातचीत शुरु की। 31. भारत सरकार द्वारा मसूद के साथ दो और आतंकवादियों को छोड़ने की मांग को मान लेने के बाद सभी बंधक यात्री रिहा। तालियान ने अपहरणकर्ताओं को दस घंटे के अंदर देश छोड़ कर जाने को कहा।

संविधान

भारत का संविधान 26 जनवरी, 1950 से लागू हुआ। इसका निर्माण एक संविधान सभा ने किया था जिसकी पहली बैठक 9 दिसंबर 1946 को हुई थी। संविधान सभा ने 26 नवंबर 1949 को संविधान को अंगीकार कर लिया था।

संविधान सभा की पहली बैठक अविभाजित भारत के लिए बुलाई गई थी। जून 1947 में भारत का विभाजन हो जाने के फलस्वरूप पाकिस्तान में गए क्षेत्रों से चुने गए प्रतिनिधि संविधान सभा के सदस्य नहीं रह गए। 14 अगस्त 1947 को संविधान की बैठक पुन: हुई और उसके अध्यक्ष सच्चिदानंद सिन्हा थे। सिन्हा के निधन के बाद डा. राजेंद्र प्रसाद संविधान सभा के अध्यक्ष बने। फरवरी 1948 में संविधान का मसौदा प्रकाशित हुआ। 26 नवंबर 1949 को संविधान अंतिम रूप में स्वीकृत हो गया और 26 जनवरी 1950 से लागू हुआ।

भारत का संविधान ब्रिटेन की संसदीय प्रणाली के नमूने पर है, किंतु एक विषय में यह उससे भिन्न है, ब्रिटेन में संसद सर्वोच्च है। वहां ब्रिटिश संसद द्वारा पास किये गए किसी कानून की वैधता को किसी न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती। भारत में संसद नहीं; बल्कि संविधान सर्वोच्च है। अत: भारत में न्यायालयों को भारत की संसद द्वारा पास किए गए कानून की संवैधानिकता पर फैसला करने का अधिकार प्राप्त है।

अभी तक उपरोक्त तीन तथ्यों को संविधान का मूल ढांचा बताया गया है। यदि संविधान के मूल तत्व कुछ और भी हैं, तो अभी उनका निर्देश नहीं किया गया है।

संविधान में (1) प्रस्तावना है, (2) भाग 1 से भाग 22 तक जिसमें 1 से 395 तक धाराएं हैं, (3) 1 से 10* तक अनुसूचियां हैं और (4) एक परिशिष्ट** है।

भाग 1. संघ और इसके क्षेत्र: संविधान की प्रस्तावना में भारत को एक सर्वप्रभुत्व संपन्न समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्रीय गणराज्य घोषित किया गया है। प्रस्तावना में संविधान के मुख्य उद्देश्यों – अर्थात् सभी नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक न्याय दिलाना, विचारों की अभिव्यक्ति, धर्म, विश्वास एवं पूजा-पाठ की स्वाधीनता प्रदान करना; पद और अवसर की समानता प्रदान करना और व्यक्ति की गरिमा व अखंडता सुरक्षित रखने का वर्णन है।

प्रस्तावना में "समाजवादी धर्मनिरपेक्ष" और "राष्ट्र की एकता और अखंडता" शब्द 42 वें संशोधन द्वारा जोड़े गये।

ढांचा: भारत राज्यों का संघ होगा (धारा 1)। इसके राज्यों तथा केंद्रशासित प्रदेशों का उल्लेख प्रथम अनुसूची में होगा (धारा 2)।

---

* 10वीं अनुसूची को 36वें संशोधन द्वारा निकाल दिया गया था किंतु बाद में 52वें संशोधन द्वारा उसे पुन: सम्मिलित कर लिया गया।

** परिशिष्ट में वह आदेश है, जिसके द्वारा संविधान को जम्मू और काश्मीर पर लागू किया गया है।

अधिकार का विभाजन: संघ सरकार को सातवीं अनुसूची की पहली सूची (संघ सूची) में वर्णित सभी विषयों पर कानून बनाने का एकाधिकार प्राप्त है। तीसरी सूची (समवर्ती सूची) में वर्णित विषयों पर कानून बनाने का अधिकार संघ सरकार और राज्यों दोनों को प्राप्त है (धारा 246)।

अवशिष्ट शक्तियां: जिन विषयों का वर्णन समवर्ती सूची या राज्य सूची में नहीं है, उन पर कानून बनाने का अधिकार केवल संघ सरकार को प्राप्त है।

अधिभावी शक्तियां: संघ सरकार द्वारा बनाये गए और राज्यों द्वारा बनाये गए कानूनों में कोई टकराव होने पर संघ सरकार द्वारा बनाये गये कानूनों को मान्यता दी जायेगी (धारा 254)।

नागरिकता: नागरिकता का अधिकार ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को प्रदान किया गया है, जो भारत में जन्मा हो या जो संविधान लागू होने के 5 वर्ष पहले से भारत में रह रहा हो।

भारत का संविधान 26 जनवरी, 1950 से लागू हुआ।

संविधान के भाग-2 में धारा 12 से 35 के अधीन नागरिकों को सात मूल अधिकार प्रदान किए गए हैं। ये अधिकार हैं – 1. समानता का अधिकार, 2. स्वाधीनता का अधिकार, 3. शोषण से रक्षा का अधिकार, 4. धर्म की स्वाधीनता का अधिकार, 5. सांस्कृतिक एवं शिक्षा संबंधी अधिकार, 6. संपत्ति का अधिकार और 7. संवैधानिक उपचार का अधिकार अर्थात हर नागरिक को अपने मूल अधिकारों की रक्षा के लिए सर्वोच्च न्यायालय या उच्च न्यायालय में कार्यवाही करने का अधिकार है।

संविधान के 16 वें और 24 वें संशोधनों ने मूल अधिकारों के प्रयोग पर काफी बंधन लगा दिए हैं। दो अधिकार विशेषतया (स्वाधीनता का अधिकार और संपत्ति का अधिकार) पहले, चौथे और चौबीसवें संशोधनों द्वारा बिल्कुल नगण्य बना दिये गए हैं। राज्य को अधिकार दे दिया गया है कि वह नागरिकों के इन दोनों अधिकारों के प्रयोग पर वाजिब रोक लगा सके।

राज्य के नीति निर्देश तत्व: ये संविधान के भाग-4 में धारा 36 से 51 में दिये हुए हैं। इनमें 19 लक्ष्यों का वर्णन हैं, जिनके अधीन बहुत-से विषय आते हैं। राज्य इन्हें पूरा करने का प्रयास करेगा। इनको मूल अधिकारों की भांति न्यायालय की सहायता से लागू नहीं कराया जा सकता, फिर भी इन्हें देश के शासन में आधारभूत घोषित किया गया है।

25 वें संशोधन के बाद के संशोधनों द्वारा निर्देशक तत्वों को मूल अधिकारों से श्रेष्ठ स्थान प्रदान करने का प्रयत्न किया गया। 25 वें संशोधन ने इस श्रेष्ठता को [illegible] उद्देश्यों (धारा 39 के खंड (ख) और (ग) में वर्णित [illegible] कार दिया। इन दोनों का संबंध भौतिक संसाधन [illegible] और कुछ थोड़े से लोगों के हाथों में संपत्ति [illegible]

है । वस्तुत: मूल अधिकारों में संशोधन के माध्यम से पहले ही इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति हो गई थी । मूल अधिकारों में संशोधन करके यह व्यवस्था कर दी गई थी कि राज्य संपत्ति के अधिकार पर वाजिब रोक लगा सकता है । 42 वें संशोधन द्वारा निर्देशक तत्वों में वर्णित सभी उद्देश्यों को वरीयता देने का प्रयास किया गया । सर्वोच्च न्यायालय ने इस प्रावधान को रद्द कर दिया ।

भारत का एक राष्ट्रपति (धारा 52) होगा, जो देश का कार्यकारिणी प्रधान होगा (धारा 53) (2) । राष्ट्रपति का चुनाव एक निर्वाचक मंडल द्वारा होगा जिसमें (क) संसद की दोनों सभाओं के निर्वाचित सदस्य और (ख) राज्यों की विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्य सम्मिलित होंगे (धारा 54) । राष्ट्रपति पांच वर्ष की अवधि के लिए चुना जायेगा (धारा 56 (1) और दोबारा भी चुना जा सकेगा (धारा 57) ।

उप-राष्ट्रपति का चुनाव एक निर्वाचक मंडल करेगा जिसमें संसद की दोनों सभाओं के सदस्य सम्मिलित होंगे (धारा 66 (1)) । उपराष्ट्रपति पांच वर्ष की अवधि के लिए चुना जायेगा (धारा 67) और वह राज्य सभा का पदेन सभापति होगा (धारा 64) ।

राष्ट्रपति को उसके कार्यों के निष्पादन में सहायता व परामर्श देने के लिए एक मंत्री परिषद होगी जिसका सर्वोच्च

मूल कर्तव्य

42वें संविधान संशोधन अधिनियम (1976) में मूल कर्तव्यों का एक नया अध्याय जोड़ा गया था । इस प्रकार भारतीय नागरिक के निम्न मूल कर्तव्य हैं ।

(1) संविधान के प्रति निष्ठा और इसके आदर्श, संस्थान, राष्ट्रीय ध्वज एवं राष्ट्रीय गीत के प्रति सम्मान ।
(2) उत्कृष्ट विचार जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को प्रेरणा दी का पालन एवं पोषण करना ।
(3) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को बनाये रखना ।
(4) आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्र सेवा के लिये तैयार रहना ।
(5) समस्त भारतीयों में भाईचारा एवं स्नेह को बढ़ावा देना और महिलाओं की गरिमा को बनाये रखना।
(6) अनेकता में एकता की समृद्धि संस्कृति को संरक्षण देना ।
(7) प्राकृतिक पर्यावरण जिसमें वन, झीलें और वन जीवन शामिल है को संरक्षण एवं बढ़ावा देना । जीवित प्राणियों के प्रति स्नेहभाव रखना ।
(8) वैज्ञानिक सोच, मानवता और जानने एवं सुधार की चेतना का विकास करना ।
(9) सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना और हिंसा का त्याग करना ।
(10) व्यक्ति विशेष या समूह कार्यों में उत्कृष्टता लाने का प्रयास करना जिससे राष्ट्र निरंतर उन्नति एवं सफलता की ओर बढ़ता रहे ।

प्रधानमंत्री होगा (धारा 74 (1)। प्रधानमंत्री की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जायेगी (धारा 75 (1)) । मंत्री तब तक अपने पद पर रहेंगे जब तक राष्ट्रपति चाहे (धारा 75 (2))। मंत्री परिषद में (जिस रूप में इस समय है) प्रधानमंत्री और (1) ऐसे मंत्री जो मंत्रिमंडल के सदस्य हैं, (2) राज्य मंत्री (संघ सरकार में) जो मंत्रिमंडल के सदस्य नहीं हैं, और (3) उपमंत्री सम्मिलित हैं ।

मंत्रालय का प्रशासकीय प्रधान एक सचिव (भारत सरकार का सचिव) होता है । वह मंत्री का प्रमुख सलाहकार होता है। यदि किसी मंत्रालय में काम की मात्रा सीमा से अधिक हो जाती है, तो संयुक्त सचिव के अधीन एक या एक से अधिक भाग बना दिये जाते हैं । मंत्रालय डिवीजनों, ब्रांचों और सेक्शनों में बंटा होता है, जो क्रमश: उप-सचिव, अवर सचिव और सेक्शन अफसर के अधीन काम करते हैं ।

संविधान की धारा 79 में कहा गया है कि संघ की एक संसद होगी जिसमें राष्ट्रपति और संसद की दोनों सभाएं – राज्य सभा और लोक सभा सम्मिलित होंगे । राज्य सभा में राज्यों और संघ शासित प्रदेशों का प्रतिनिधित्व करने वाले अधिक से अधिक 238 सदस्य और राष्ट्रपति द्वारा नामजद 12 सदस्य होंगे (धारा 80) । लोक सभा में राज्यों के प्रादेशिक चुनाव क्षेत्रों से प्रत्यक्ष चुनाव द्वारा निर्वाचित अधिक से अधिक 500 सदस्य और संघ शासित प्रदेशों का प्रतिनिधित्व करने वाले अधिक से अधिक 25 सदस्य होंगे (धारा 81) ।

राज्य सभा को भंग नहीं किया जा सकेगा किन्तु इसके लगभग एक-तिहाई सदस्य हर दूसरे साल सेवानिवृत्त होते रहेंगे। लोक सभा अपनी प्रथम बैठक से पांच वर्ष की अवधि तक (यदि पहले ही उसे भंग न कर दिया गया हो) ही चलेगी, उससे आगे नहीं; और इस अवधि की पूर्ति के बाद वह अपने आप भंग हो जायेगी (धारा 83) । यदि देश में आपातकालीन स्थिति हो, तो लोक सभा का कार्यकाल एक वर्ष बढ़ाया जा सकता है ।

संसद के विचार-विमर्श में सहायता देने के लिए निम्नलिखित समितियां नियुक्त की जाती हैं: 1. लोक लेखा समिति, 2. प्राक्कलन समिति, 3. लोक उपक्रम समिति, 4. सरकारी आश्वासनों संबंधी समिति ।

अमरीका जैसी अध्यक्षीय शासन प्रणाली में शासन के तीनों अंग – विधान मंडल, कार्यपालिका और न्यायपालिका – एक दूसरे से स्वतंत्र संगठन के रूप में कार्य करते हैं । किंतु भारत जैसी संसदीय शासन प्रणाली में कार्यपालिका विधान मंडल के अधीन होती है । केवल न्यायपालिका ही एक स्वतंत्र संगठन के रूप में कार्य करती हैं ।

संविधान के खंड 4, अध्याय 4 में न्यायपालिका का वर्णन है । धारा 124 (1) में कहा गया है कि भारत का एक सर्वोच्च न्यायालय होगा जिसमें भारत का मुख्य न्यायाधीश और कुछ अन्य न्यायाधीश होंगे । संसद को न्यायाधीशों की संख्या बढ़ाने का अधिकार है ।

राष्ट्रपति सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के परामर्श से सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति करते हैं । इस प्रकार नियुक्त न्यायाधीश पैंसठ वर्ष की आयु

तक अपने पद पर रह सकेगा और राष्ट्रपति ही उसे तभी पदच्युत कर सकेगा जब संसद की दोनों सभाएं अपने उपस्थित व मतदान करने वाले सदस्यों के दो-तिहाई बहुमत से इस प्रकार की मांग का प्रस्ताव पास कर दें ।

सर्वोच्च न्यायालय को मूल और अपीलीय दोनों क्षेत्राधिकार प्राप्त हैं । मूल क्षेत्राधिकार के अधीन भारत सरकार और राज्यों के बीच के विवाद या राज्यों के बीच के पारस्परिक विवाद या ऐसे विवाद आते हैं, जिनमें वैध अधिकार के अस्तित्व या उसकी सीमा का विषय अंतर्ग्रस्त हो (धारा 131)। अपीलीय क्षेत्राधिकार भारत के सभी उच्च न्यायालयों पर लागू होता है (धारा 132)।

महान्यायवादी: राष्ट्रपति ऐसे व्यक्ति को महान्यायवादी नियुक्त करेगा जिसमें सर्वोच्च न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त होने के लिए अपेक्षित सभी योग्यताएं हों । वह कानूनी मामलों में भारत सरकार को परामर्श देगा (धारा 76) । उसे संसद की दोनों सभाओं में भाषण देने और उनकी कार्यवाही में भाग लेने का अधिकार होगा और वह किसी भी संसदीय समिति का सदस्य भी बन सकेगा, किन्तु उसे संसद में या संसदीय समिति में वोट देने का अधिकार नहीं होगा (धारा 88)।

संविधान की धारा 148 (1) में कहा गया है कि भारत का एक नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक होगा, जिसकी नियुक्ति राष्ट्रपति करेगा । उसे उसी प्रकार और उन्हीं कारणों से पद से हटाया जा सकेगा जैसे और जिन कारणों से सर्वोच्च न्यायालय के किसी न्यायाधीश को हटाने का प्रावधान है । नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक संघ सरकार और राज्य सरकार के हिसाब-किताब की सामान्य जांच करता है (धारा 149) । अपने पद से निवृत होने के बाद वह संघ सरकार या राज्य सरकारों के अधीन कोई पद धारण नहीं कर सकता (धारा 148 (4)) ।

निर्वाचन आयोग: धारा 324 में कहा गया है कि निर्वाचन आयोग संसद और राज्य विधान सभाओं के सदस्यों के निर्वाचन तथा राष्ट्रपति व उपराष्ट्रपति पद के निर्वाचन करायेगा तथा इन निर्वाचनों से संबंधित सभी विषयों की देखरेख करेगा । निर्वाचन आयोग में मुख्य निर्वाचन आयुक्त और समय-समय पर राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त अन्य निर्वाचन आयुक्त हो सकते हैं । मुख्य निर्वाचन आयुक्त उसी प्रकार और उन्हीं कारणों से पद से हटाया जा सकेगा जैसे और जिन कारणों से सर्वोच्च न्यायालय के किसी न्यायाधीश को हटाने का प्रावधान है (धारा 324) ।

राज्यों की शासन व्यवस्था लगभग वैसी ही है जैसी संघ सरकार की । 'राज्य' शब्द की सीमा में जम्मू व काश्मीर को तब सम्मिलित नहीं माना जायेगा जब तक कि इस राज्य का स्पष्ट उल्लेख न हो (धारा 152) ।

धारा 155 और 156 में कहा गया है कि राज्य का राज्यपाल राज्य का कार्यपालिका प्रमुख है । धारा 163 में कहा गया है कि राज्यपाल की सहायता के लिए एक मंत्रि परिषद होगी, जिसका सर्वोच्च अंग मुख्यमंत्री होगा । मुख्यमंत्री की नियुक्ति राज्यपाल करेगा और अन्य मंत्रियों की नियुक्ति मुख्यमंत्री की सलाह पर की जायेगी ।

संविधान की धारा 168 में व्यवस्था है कि राज्य के

निपटाये व विननिपटाये मुकदमें

उच्च न्यायालय	निपटाये मुकदमे	विननिपटाये मुकदमें
इलाहाबाद	अ.उ.	865,455
आंध्र प्रदेश	142,099	133,211
मुंबई	88,252	237,618
कलकत्ता	63,127	282,209
दिल्ली	44,618	163,430
गोहाटी	18,077	34,165
गुजरात	47,711	119,383
हिमाचल	13,665	13,352
जम्मू एवं काश्मीर	20,753	98,645
कर्नाटक	85,059	135,389
केरल	76,075	250,261
मध्य प्रदेश	79,094	83,131
मद्रास	110,761	326,619
उड़ीसा	33,557	84,897
पटना	93,306	84,666
पंजाब व हरियाणा	119,037	170,761
राजस्थान	56,684	98,416
सिक्किम	227	95
कुल	1,082,102	3,181,613

विधानमंडल में राज्य का राज्यपाल और यथास्थिति विधानमंडल की एक या दोनों सभायें सम्मिलित होंगी । निम्नलिखित राज्यों के विधानमंडल में दो सभायें विधान परिषद और विधानसभा, हैं । बिहार, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश। किसी राज्य की विधान सभा में सदस्यों की संख्या न 60 से कम होगी और न 500 से अधिक होगी (धारा 170) । यदि किसी राज्य में विधान परिषद हो, तो उसके सदस्यों की संख्या विधान सभा के सदस्यों की कुल संख्या के एक-तिहाई से अधिक नहीं होगी (धारा 171) ।

धारा 214 और 216 के अनुसार प्रत्येक राज्य में एक उच्च न्यायालय होगा जिसमें एक मुख्य न्यायाधीश और उतने न्यायाधीश होंगे, जितने राष्ट्रपति नियुक्त करे । धारा 217 में कहा गया है कि राष्ट्रपति उच्च न्यायालय के किसी न्यायाधीश को उसी विधि से उसके पद से हटा सकता है, जिस विधि से सर्वोच्च न्यायालय के किसी न्यायाधीश को । उच्च न्यायालयों को लेखों जैसे मामलों में मूल क्षेत्राधिकार और अपने क्षेत्राधिकार के सभी अधीनस्थ न्यायालयों पर अपीलीय क्षेत्राधिकार प्राप्त हैं।

धारा 165 में कहा गया है कि कानूनी विषयों पर सरकार को परामर्श देने के लिए प्रत्येक राज्य में एक महाधिवक्ता होगा ।

संघ शासित प्रदेशों में सामान्यतया न तो [illegible] पद होती है और न ही विधान मंडल होता है । [illegible] बनाकर किसी भी संघ शासित प्रदेश के [illegible] अथवा अंशतः निर्वाचित व अंशतः नामज़द [illegible]

कर सकती है जो उस प्रदेश के लिए विधान मंडल के रूप में काम करे या मंत्रि परिषद के रूप में काम करे या दोनों कार्य करे (धारा 239 क)।

संविधान की धारा 343 में कहा गया है कि संघ की राजभाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी होगी और भारतीय अंकों के स्थान पर अरबी अंकों का प्रयोग होगा। अंग्रेजी, जिसे मूलतः 26 जनवरी, 1965 तक राजभाषा के रूप में चलना था, अब राजभाषा अधिनियम, 1963 के अधीन उक्त तिथि के बाद भी हिंदी के साथ-साथ चलती रहेगी।

संविधान की धारा 368 संविधान के संशोधन के संबंध में है। संविधान में संशोधन करने वाला विधेयक संसद की दोनों सभाओं में प्रत्येक सभा के कुल सदस्यों के कम-से-कम दो- तिहाई बहुमत से पास होना चाहिए।

किंतु संविधान के कुछ भागों के संशोधन के लिए कम-

संसद भवन

संसद भवन की परिकल्पना सर एडविन लुटिन्स और सर हर्बर्ट बेकर ने की थी। इसके निर्माण में 83 लाख रुपये लगे थे। इसका उद्घाटन लार्ड इरविन ने 18 जनवरी 1927 को किया था। संसद भवन एक गोल भवन है और केन्द्र में केन्द्रीय कक्ष है। तीन कक्ष – लोक सभा, राज्य सभा और लाइब्रेरी हाल केन्द्र के तीन ओर है। यह तीन कक्ष और बाग के चारों ओर चार मंजिला गोल भवन हैं जिसमें मंत्रियों, संसदीय समितियों, दलीय कार्यालय और प्रेस के लिये कमरे हैं। केंद्रीय कक्ष महान ऐतिहासिक घटनाओं का साक्ष्य रहा है। इसी कक्ष में 9 दिसंबर 1946 से 24 जनवरी 1950 तक संविधान का निर्माण किया गया था। उस समय इसे संविधान सभा हाल कहा जाता था। इसी कक्ष में 15 अगस्त 1947 को भारत को सत्ता के स्थानांतरण की घोषणा की गई थी। भारत में पहले चुनाव के बाद राष्ट्रपति ने लोकसभा को इसी कक्ष से संबोधित किया था। दोनो सदनों की संयुक्त सभा और विदेशी मेहमानों का स्वागत इसी कक्ष में किया जाता है।

लोकसभा कक्ष 550 संसद सदस्यों की क्षमता वाला अंग्रेजी के यू आकार का है। सत्ताधारी पार्टी अध्यक्ष के दायीं ओर और विपक्षी दल बायीं ओर बैठते है। अध्यक्ष की कुर्सी के नीचे लोक सभा के सेक्रेटरी जनरल की मेज होती है, और उनकी मेज के ठीक आगे एक विशाल मेज होती है जिसके किनारे वरिष्ठ अधिकारी बैठते हैं। इसे 'टेबल आफ दी हाउस' भी कहा जाता है जिस पर समस्त दस्तावेज रखे जाते हैं। इसके चारों ओर खाली स्थान को 'वेल आफ दी हाउस' कहा जाता है। पहली मंजिल पर अध्यक्ष के मेहमान, प्रेस, राज्य सभा के सदस्यों के बैठने के लिये विशेष स्थान सुरक्षित किया जाता है। अध्यक्ष के बायीं ओर पहली मंजिल पर राष्ट्रपति के मेहमानों, राज्यपालों और विदेशी विशिष्ट मेहमानों के लिये जगह आरक्षित रहती है।

से-कम आधे राज्यों के विधानमंडलों द्वारा पास किये गये प्रस्तावों द्वारा अनुसमर्थन होना आवश्यक होता है।

संविधान में 10 अनुसूचियां हैं। नवीं अनुसूची संविधान में प्रथम संशोधन द्वारा 1951 में जोड़ी गई थी और दसवीं अनूसूची 52 वें संशोधन द्वारा 1985 में जोड़ी गई।

प्रथम अनुसूची में (धारा 1 और 4 के अधीन) संघ में सम्मिलित राज्यों और संघ शासित प्रदेशों की सूची दी गई है।

राज्यः 1. आंध्र प्रदेश, 2. असम, 3. बिहार, 4. गुजरात, 5. केरल, 6. मध्य प्रदेश, 7. तमिलनाडु, 8. महाराष्ट्र, 9. कर्नाटक, 10. उड़ीसा, 11. पंजाब, 12. राजस्थान, 13. उत्तर प्रदेश, 14. पश्चिम बंगाल, 15. जम्मू व काश्मीर, 16. नागालैंड, 17. हरियाणा, 18. हिमाचल प्रदेश, 19. मणिपुर, 20. त्रिपुरा, 21. मेघालय, 22. सिक्किम, 23, अरुणाचल प्रदेश, 24. मिजोरम 25. गोवा।

संघ शासित प्रदेशः 1. दिल्ली, 2. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, 3. लक्षद्वीप, मिनिकाय और अमीनदिवि द्वीपसमूह, 4. दादरा और नगर हवेली, 5. दमन और दिव, 6. पांडिचेरी, 7. चंडीगढ़।

दूसरी अनुसूची में (धारा 59 (3), 65 (3), 75 (6), 97, 125, 148 (3) और 158 (3) के अधीन) पांच भाग – क से ङ तक हैं।

भाग क में राष्ट्रपति और राज्यपालों के वेतन और परिलब्धियों का निर्धारण है। राष्ट्रपति को प्रति माह 50,000 रु. वेतन दिया जायेगा। राज्यपालों को प्रति माह 36,000 रु वेतन दिया जायेगा। राष्ट्रपति और राज्यों के राज्यपालों को उतने भत्ते दिये जायेंगे, जितने इस संविधान में लागू होने से ठीक पहले भारत के गवर्नर जनरल और प्रांतों के गवर्नरों को दिये जाते थे। भाग ख को 1956 के संविधान (सातवें संशोधन) अधिनियम द्वारा निकाल दिया गया है। भाग ग में लोक सभा के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष और राज्य सभा के सभापति और उप-सभापति, विधान सभा के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष और विधान परिषद के सभापति और उप-सभापति के वेतन और भत्तों के बारे में प्रावधान हैं। भाग घ में सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों के वेतन व भत्तों संबंधी प्रावधान हैं। सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को प्रतिमास 10,000 रु. वेतन। सर्वोच्च न्यायालय के अन्य न्यायाधीशों को प्रतिमास 9,000 रु. वेतन दिया जायेगा। उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को प्रतिमास 9,000 रु. वेतन तथा अन्य न्यायाधीशों को प्रतिमास 8,500 रु. वेतन दिया जायेगा (नये वेतनमान के लिये संशोधन किये गये हैं, देखें बाक्स)। भाग ङ में भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के वेतन के बारे में प्रावधान है।

तीसरी अनुसूची में (धारा 75 (4), 99, 124 (6), 148 (2), 163 (3), 188 और 219 के अधीन) शपथ और प्रतिज्ञान के प्रपत्र हैं।

चौथी अनुसूची में (धारा 4 (1) और 80 (20) के अधीन) प्रत्येक राज्य और संघ शासित प्रदेश के लिए राज्य सभा में सीटों का निर्धारण है।

पांचवीं अनुसूची में (धारा 244 (1) के अधीन)

अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन एवं नियंत्रण संबंधी प्रावधान हैं। इस अनुसूची में संसद के साधारण बहुमत से संशोधन की व्यवस्था है और ऐसे संशोधन को धारा 368 (संविधान में संशोधन) के अधीन संशोधन नहीं माना जायेगा ।

छठी अनुसूची में (धारा 214(2) और 275(1) के अधीन) असम, मेघालय और मिज़ोरम के जनजाति क्षेत्रों के प्रशासन संबंधी प्रावधान हैं । यह अनुसूची बड़ी लंबी है और इसमें जनजाति क्षेत्रों के प्रशासन के ब्योरे दिये हुए हैं। इस अनुसूची में संसद साधारण बहुमत से संशोधन कर सकती है ।

सातवीं अनुसूची में (धारा 246 के अधीन) तीन सूचियां दी हुई हैं । 1. संघ सूची में 97 विषय हैं, जिन पर सरकार का एकाधिकार है, 2. राज्य सूची में 66 विषय हैं, जिन पर राज्य सरकारों का एकाधिकार है, 3. समवर्ती सूची में, 4. विषय हैं, जिन पर संघ सरकार और राज्य सरकार दोनों का अधिकार है ।

आठवीं अनुसूची में (धारा 344(1) और 35(1) संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त 18 भाषाओं की सूची हैं : 1 असमिया, 2. बंगाली, 3. गुजराती, 4. हिंदी, 5. कन्नड़, 6. काश्मीरी, 7. मलयालम, 8. मराठी, 9. उड़िया, 10. पंजाबी, 11. संस्कृत, 12. सिंधी, 13. तमिल, 14. तेलुगु, 15. उर्दू, 16. मणिपुरी, 17. कोंकणी, 18. नेपाली।

नवीं अनुसूची में (धारा 31 (ख) के अधीन) 1951 के संविधान (प्रथम संशोधन) अधिनियम द्वारा जोड़ी गई थी । इसमें भूमि पट्टा, माल गुजारी, रेलवे, उद्योगों आदि के बारे में राज्य सरकारों और संघ सरकार द्वारा पास किये गये अधिनियम और आदेश हैं, जो न्यायालयों के क्षेत्राधिकार के बाहर हैं ।

तत्संबंधी धारा 31 में इस प्रकार व्यवस्था है : "नवीं अनुसूची में उल्लिखित कोई भी अधिनियम और विनियम और उनका कोई भी प्रावधान इस आधार पर न प्रभावशून्य माना जायेगा और न कभी प्रभावशून्य होगा कि वह अधिनियम, विनियम या प्रावधान इस भाग द्वारा प्रदत्त किसी अधिकार को छीनता है, या उसे कम करता है, और किसी न्यायालय या न्यायाधिकरण के किसी प्रतिकूल फैसले, आज्ञप्ति या आदेश के होते हुए भी ऐसा प्रत्येक अधिनियम और/या विनियम लागू रहेगा – केवल सक्षम विधानमंडल को ही इसमें संशोधन करने का अधिकार होगा ।"

दसवीं अनुसूची (धारा 101, 102, 191 और 192 के अधीन) 1985 में संविधान (52 वें संशोधन) अधिनियम द्वारा जोड़ी गई थी। इसमें दल-बदल रोक विधेयक का वर्णन है ।

ग्यारहवीं अनुसूची (धारा 243 जी के अधीन) 1992 में तिहत्तरवें (73) संविधान संशोधन अधिनियम के अंतर्गत प्रत्येक पंचायत में आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय के लिये आवश्यक योजनाओं को लागू करने के लिये कार्यकारी क्षेत्रों का उल्लेख किया गया है ।

बारहवीं सूची इसमें तीन प्रकार की नगरपालिका समितियों के बारे में कहा गया है। छोटे शहरों के लिये नगर पंचायत, शहरों के लिये नगरपरिषद और और बड़े शहरों के लिये नगर निगम होंगे।

वेतन एवं भत्ते

राष्ट्रपति	: 50,000 रु.
राष्ट्रपति पेंशन	: 30,000 रु.
उपराष्ट्रपति	: 40,000 रु.
राज्यपाल	: 36,000 रु.
मुख्य न्यायधीश (सर्वोच्च न्यायालय)	: 33,000 रु.
अन्य न्यायधीश	: 26,000 रु.
मुख्य न्यायधीश (उच्च न्यायालय)	: 30,000 रु.

सुविधाएं : मुफ्त आवास, यात्रा, चिकित्सा, फोन आदि।
भत्ते : भत्तों में निर्वाचन क्षेत्र, आकस्मिक खर्च, अन्य खर्चे एवं डी.ए. आदि दिया जाता है ।

भारतीय विधि आयोग । 5वां विधि आयोग का कार्यकाल 31 अगस्त 2000 में पूरा हो जायेगा (इसका पुनर्गठन 1 सितंबर 1947 में किया गया था) विधि आयोग में अध्यक्ष न्यायमूर्ति बी.पी. जीवन रेड्डी (सेवा निवृत्ति), सदस्य–सचिव (भारतीय सरकार के विधि, न्याय और कंपनी मामले के मंत्रालय के सचिव के समकक्ष) डा एस.सी. जैन, सदस्य– न्यायमूर्ति सुश्री लीला सेठ (सेवा निवृत्ति), डा. एन.एम. घटाटे, और अंशकालीन सदस्य– डा. एन. आर. माधवन मेनन।

विचारार्थ विषय – अप्रचलित कतानूनों का पुन: निरीक्षण या निरस्त करना, विधि एवं निर्धनता, न्याययिक प्रशासन को उत्तरदाया बनाने के लिये इसकी प्रणाली का पुन:निरीक्षण करना, राज्य नीति के अनुसार निदेशक सिद्धांत के अंतर्गत वर्तमान कानूनों का परीक्षण करना ताकि निदेशक सिद्धांत और प्रस्तावना के उद्देश्यों में सुधार लाया जा सके, सामान्य महत्व रे केंद्रीय अधिनियमों को संशोधित करना, सरकार को अप्रचलित कानूनों और प्रावधान के वे भाग जो अप्रभावी हो गये हैं को को निरस्त करने के समुचित तरीके बताना।

विधि न्याय और कंपनी मामले का केंद्रीय सरकार का मंत्रालय (न्यायसम्मत मामले का विभाग, वैधायिक विभाग और न्याय विभाग) सि संविदान में निर्दारित उद्देश्यों के यर्थाथीकरण में अपने विभागों द्वारा समुचित बदलाव लाने के लिये सहायक का कार्य करना है।

वैधानिक मामलों का विभाग का काम भारत सरकार के अनेक मंत्रालयों व विभागों को वैधानिक मामलों में सलाह देना होता है। इसे उनके कार्यों की सत्यता की परख और उनके आधार पर भारत सरकार के मुकदमों के लिये उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालय, ट्रिब्यूनल और निचली अदालतों में क्रियान्वित करना होता है। केंद्र सरकार के इस नागरिक विधि आधिकारिक कार्यालय को राष्ट्रपति की ओर से ठेके या संपत्ति के आश्वास[illegible]रा करना होता है और यह सरकार के पक्ष में या[illegible]ये गये मुकदमों लिखित वक्तव्य या अर्जी[illegible] करने के लि[illegible] अधिकारियों को नियुक्त क[illegible]क यह [illegible] अधिकारी जैसे एटार्नी ज[illegible]

अतिरिक्त सोलिसिटर जनरल की नियुक्ति के लिये भी परामर्श देती है।

यह विभाग एडवोकेट ऐक्ट – 1961 नोटरी ऐक्ट – 1952 और लीगल सर्विसेज अथार्टीज ऐक्ट – 1987 को निर्देशित करता है। यह विभाग फारेन एक्सचेंज रेगुलेशन अपीलेट बोर्ड, इन्कम टैक्स अपीलेट ट्रिब्यूनल, इंडियन लीगल सर्विस और भारत के विधि आयोग का प्रशासनिक प्रभारी है।

विधायिका विभाग मुख्य तौर पर सरकार के विधेयकों का मसौदा और विभिन्न केंद्रीय मंत्रालयों के विधानो को तैयार करता है। यह राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्य विधायक व संसद के चुनावों के लिये चुनाव आयोग के लिये प्रशासनिक उत्तरदायित्व है।

विधि विभाग के कार्यों में न्याय प्रशासन और उच्चतम न्यायालय व उच्च न्यायालयों के लिये न्यायधीशों की नियुक्ति के लिये संसाधन जुटाना है

नेशनल लीगल सर्विसेज अथारिटीज के अनुसार 31 दिसंबर 1998 तक देश के विभिन्न स्थानों पर 25,000 लोक अदालतें हुई है और लगभग 80.38 लाख मुकदमों का निपटारा किया गया है। लगभग 4.16 लाख गाड़ी दुर्घटनाओं मे 1591 करोड रुपये का मुवायजा दिलवाया जा चुका है।

संशोधन

पहला (संविधान) संशोधन अधिनियम 1951 में पास हुआ था। तब से 1995 तक 76 संशोधन जिनमें से कुछ अपनाये जाने की प्रक्रिया में हैं कुछ पास हो चुके है।

1. इस संशोधन में कहा गया है कि अन्य देशों के साथ मैत्री संबंधों अथवा सार्वजनिक व्यवस्था के हितों के लिए भाषण देने और विचार अभिव्यक्ति की स्वाधीनता के अधिकार के प्रयोग पर वाजिब रोक लगाई जा सकती है।

2 (1952) द्वारा संविधान की धारा 81 का सशोधन करके लोक सभा मे राज्यों के प्रतिनिधित्व के स्तर मे समायोजन किया गया। 1951 की जनगणना हो जाने के बाद ऐसा करना आवश्यक हो गया था।

3 (1954) द्वारा सातवी अनुसूची की समवर्ती सूची की प्रविष्टि 33 को हटा कर उसके स्थान पर नई प्रविष्टि रखी गई जिसमे खाद्य सामग्री चारा कपास और जूट जैसी अतिरिक्त मदों को भी सम्मिलित किया गया जिनके उत्पादन और वितरण पर लोक हित मे आवश्यकता पड़ने पर केंद्र सरकार द्वारा नियंत्रण रखा जा सके।

4 (1955) मे व्यवस्था की गई कि यदि राज्य किसी सरकारी प्रयोजन हेतु व्यक्तिगत जायदाद का अनिवार्य अधिग्रहण करे तो तत्संबंधी कानून मे मुआवजे के लिए निर्धारित राशि की मात्रा को किसी न्यायालय मे चुनौती नही दी जा सकती।

5. (1955) द्वारा राष्ट्रपति को एकाधिकार दिया गया कि वह राज्य विधान मंडलों द्वारा उन प्रस्तावित कानूनों के बारे में अपने विचार प्रकट करने हेतु समय-सीमा निर्धारित कर सकें, जिनका उनके क्षेत्र और सीमाओं आदि पर प्रभाव पड़ता हो।

6. (1956) द्वारा अंतर्राज्यीय सौदों के दौरान वस्तुओं की बिक्री और खरीद पर करों के बारे में सातवीं अनुसूची की संघ सूची में एक नई प्रविष्टि सम्मिलित की गई।

7. राज्यों के पुनर्गठन के लिए पारित किया गया था। इसके अधीन नए राज्यों की स्थापना और राज्यों की सीमाओं में फेरबदल ही नहीं किया जाना था बल्कि इससे पूर्व राज्यों के जो तीन वर्ग थे, उन्हें भी समाप्त करना और कुछ क्षेत्रों को संघ शासित प्रदेशों की श्रेणी में सम्मिलित करना था।

8 (1960) द्वारा लोक सभा और राज्यों की विधान सभाओं मे अनुसुचित जातियों के लिए सीटों को, और आंग्ल भारतीयों के प्रतिनिधित्व संबंधी विशेष संवैधानिक प्रावधान को 26 जनवरी 1960 से आगे 10 वर्ष के लिए बढ़ाया गया।

9 (1960) द्वारा संविधान की प्रथम अनुसूची में संशोधन किया गया। इसकी आवश्यकता इसलिए पड़ी कि सितंबर 1958 में भारत सरकार और पाकिस्तान सरकार के बीच हुए समझौते के अनुसरण में भारत का कुछ क्षेत्र पाकिस्तान को दिया जाना था।

10 (1961) भूतपूर्व पुर्तगाली बस्तियों दादरा और नागर हवेली को भारत में शामिल किया गया और राष्ट्रपति के अधीन इन बस्तियों के शासन का प्रावधान किया गया।

11 (1961) में यह व्यवस्था की गई कि उप-राष्ट्रपति के निर्वाचन के लिए निर्वाचक मंडल बनाने हेतु संसद की दोनों सभाओं की संयुक्त बैठक आवश्यक नहीं है। इस संशोधन अधिनियम द्वारा धारा 71 में संशोधन करके यह प्रावधान किया गया कि राष्ट्रपति या उप-राष्ट्रपति के निर्वाचन को इस आधार पर चुनौती नहीं दी जा सकेगी कि निर्वाचक मंडल में किसी कारण से कोई स्थान रिक्त था।

12 (1962) बारहवा संशोधन गोवा, दमन और दिवु के इलाकों को एक संघ शासित प्रदेश के रूप में संविधान की प्रथम अनुसूची में सम्मिलित करने और इन इलाकों की शांति समृद्धि और इनके सुशासन हेतु राष्ट्रपति को अधिनियम जारी करने का अधिकार प्रदान करने हेतु किया गया।

13 (1962) इस संशोधन के द्वारा भारत संघ में सोलहवें राज्य नागालैंड का निर्माण किया गया।

14 (1962) इस संशोधन द्वारा संसद को संघ शासित

प्रदेशों के लिए विधान मंडल और मंत्रि परिषद बनाने हेतु कानून पास करने का अधिकार प्रदान किया गया । इसके साथ ही भूतपूर्व फ्रांसीसी इलाके पांडिचेरी, कारैकल, माही और यनम को संविधान में एक संघ शासित प्रदेश के रूप में स्थान दिया गया

15. (1963) यह एक साधारण-सा संशोधन था । इसके द्वारा भारत के राष्ट्रपति को अधिकार दिया गया कि वह भारत के मुख्य न्यायाधीश की सलाह से उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की आयु से संबंधित विवाद के बारे में अंतिम निर्णय करें । इसके द्वारा राज्य कर्मचारियों के विरुद्ध अनुशासन की कार्यवाही की प्रक्रिया को भी कम अवधि का बनाया गया ।

16. (1963), इस संशोधन द्वारा राज्य को अधिकार दिया गया कि वह देश की एकता और अखंडता की रक्षा के लिए नागरिकों के मूल अधिकारों के प्रयोग पर उचित प्रतिबंध लगाये ।

17. (1964), इस संशोधन द्वारा यह प्रावधान किया गया कि यदि राज्य किसी ऐसी भूमि का अधिग्रहण करता है, जो उसके स्वामी की कृषि के अधीन हो और भूमि की अधिकतम सीमा के भीतर आती हो, तो उस संपत्ति के बाजार मूल्य के आधार पर मुआवजा देना होगा ।

18. (1966) इस अधिनियम के द्वारा पंजाब का पुनर्गठन किया गया – पंजाबी भाषी प्रदेश में पंजाब और हिंदी भाषी प्रदेश में हरियाणा राज्य का गठन किया गया ।

इस संशोधन के द्वारा यह भी प्रावधान किया गया कि धारा 3 के खंड (क से ड) में प्रयुक्त 'राज्य' शब्द में संघ शासित प्रदेश भी सम्मिलित है । इसमें यह बात भी स्पष्ट कर दी गई कि संसद को किसी राज्य या संघ शासित प्रदेश के किसी भाग को किसी अन्य राज्य या संघ शासित प्रदेश के किसी भाग के साथ मिला कर किसी नए राज्य या संघ शासित प्रदेश का निर्माण करने का अधिकार है ।

19. (1966) निर्वाचन आयोग के कर्तव्यों को स्पष्ट किया गया ।

20. (1966) इस संशोधन द्वारा कुछ ऐसे जिला न्यायाधीशों की नियुक्तियों को मान्यता प्रदान की गई, जिनकी नियुक्तियां विधिवत नहीं की गई थीं ।

21. (1967) इस संशोधन द्वारा संविधान की आठवीं अनुसूची में सिंधी भाषा को सम्मिलित किया गया ।

22. (1969) इस संशोधन ने संसद को अधिकार दिया कि वह असम राज्य के भीतर से एक नया राज्य मेघालय बनाये ।

23. (1969) इस संशोधन द्वारा अनुसूचित जातियों व जनजातियों के लिए सीटों के संरक्षण और आंग्ल भारतीय समुदाय के सदस्यों की नामजदगी के प्रावधान को आगे 10 वर्ष तक बढ़ाने की व्यवस्था की गई ।

24. (1971) इस संशोधन द्वारा संसद के इस अधिकार की पुष्टि की गई कि वह संशोधन के किसी भी भाग में, यहां तक कि मूल अधिकारों में भी, संशोधन कर सकती है । इसके लिए संविधान की धारा 368 और 13 में संशोधन किया गया । इस प्रकार गोलक नाथ के मुकदमे में न्यायालय के फैसले को निष्प्रभावी बनाया गया ।

इस संशोधन में एक विशेष बात यह थी कि ऐसा प्रावधान किया गया कि संशोधन अधिनियम जब राष्ट्रपति के समक्ष आयेगा उन्हें उसकी स्वीकृति देनी ही पड़ेगी । इस प्रकार राष्ट्रपति की स्वीकृति स्वयं सुलभ हो गई ।

25. (1971) इस संशोधन द्वारा सरकार द्वारा अधिग्रहण किये जाने पर दिए गए मुआवजे की राशि की पर्याप्तता संबंधी विवाद को न्यायालय में ले जाने का मार्ग बंद कर दिया गया । साथ ही अधिग्रहण के बदले में 'मुआवज़ा' शब्द हटा कर उसके स्थान पर 'राशि' शब्द रख दिया गया।

26. (1971) इस संशोधन में भूतपूर्व रियासतों के शासकों को दी गई मान्यता वापस ले ली और उनको दिया जाने वाला प्रिवी पर्स का भी उन्मूलन कर दिया ।

27. (1971) इस संशोधन द्वारा दो नए संघ शासित प्रदेशों – मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश का निर्माण किया गया ।

28. (1972), इस संशोधन द्वारा संविधान की धारा 314 को निकाल दिया गया । यह धारा आई. सी. एस. अफसरों की सेवा-शर्तों और विशेषाधिकारों को संरक्षण प्रदान करने वाली थी ।

29. (1972) इस संशोधन ने केरल भूमि सुधार (संशोधन) अधिनियम 1969 और केरल भूमि सुधार (संशोधन) अधिनियम 1971 को संविधान की नवीं अनुसूची में शामिल कर लिया ताकि उन्हें न्यायालय में चुनौती न दी जा सके ।

30. (1972), इस संशोधन ने सर्वोच्च न्यायालय में अपीलों की संख्या कम कर दी । इसके पूर्व सर्वोच्च न्यायालय में अपीलें ले जाने का निर्णय उस मामले में अंतर्ग्रस्त धन राशि के आधार पर किया जाता था । इस संशोधन ने प्रावधान किया कि केवल उन्हीं मामलों में सर्वोच्च न्यायालय में अपील की जा सकेगी, जिनमें विधि का कोई महत्वपूर्ण प्रश्न विचाराधीन हो ।

31. (1973) इस संशोधन द्वारा लोकसभा में चुनी जाने वाली सीटों की संख्या 525 से बढ़ाकर 545 कर दी गई।

32. (1973) इसके द्वारा आंध्र प्रदेश के लिए 6-सूत्री कार्यक्रम लागू किया गया ।

33. (1974) इस संशोधन द्वारा यह व्यवस्था की गई कि राज्य विधान मंडलों और संसद के सदस्यों के ऐसे त्यागपत्रों की स्वीकृति रद्द कर दी जायेगी, जो दबाव में आकर या परवशता की स्थिति में दिये गए हों या जो इच्छा के विपरीत दिये गए हों ।

34. (1974) इस संशोधन द्वारा विभिन्न राज्यों द्वारा पास किये गए 20 भूमि सुधार कानूनों को संविधान की नवीं अनुसूची में सम्मिलित करके उन्हें संरक्षण प्रदान किया गया।

35. (1974) इस संशोधन ने सिक्किम को सह-राज्य का दर्जा प्रदान किया ।

36. (1975) इस संशोधन ने सिक्किम को भारत का 22 वां राज्य बना दिया ।

संसदीय अधिनियम

1998

1. आयकर (संशोधन) अधिनियम, 1998; 2. विनियोग (रेलवे) संख्या 2 अधिनियम, 1998; 3. मर्चेंट शिपिंग (संशोधन) अधिनियम, 1998; 4. कर्मचारियों के प्रोविडेंट फंड और अनेक व्यवस्थायें (संशोधन)अधिनियम, 1998; 5. ग्रेच्युटी भुगतान (संशोधन) अधिनियम, 1998; 6. जनता के प्रतिनिधित्व (संशोधन) अधिनियम, 1998; 7. नेशनल इंस्टीटयूट आफ फर्माक्यूटिकल एजुकेशन एंड रिसर्च अधिनियम, 1998; 8. दी इलेक्ट्रिसिटी रेगुलेशन कमीशन (संशोधन) अधिनियम, 1998; 9. विनियोग (संख्या – 2) अधिनियम, 1998; 10. वित्तीय (संशोधन) अधिनियम, 1998; 11. लाटरी (रेगुलेशन) अधिनियम, 1998; 12. उच्च न्यायालय व सर्वोच्च न्यायालय नयायधीश (सेवा स्थिति) सशोधन अधिनियम, 1998; 13. विनियोग रेलवे (सख्या–3) अधिनियम, 1998; 14. विनियोग (सख्या – 3) अधिनियम, 1998; 15. वित्त (संख्या – 2) अधिनियम 1998; 16. विद्युत नियम (सशोधन) अधिनियम, 1998; 17. लघु स्तर व सहायक उद्योग उपक्रमो को देर से किये भुगतान पर ब्याज (सशोधन) अधिनियम 1998; 18 बीड़ी श्रमिको के कल्याण (सशोधन) अधिनियम, 1998 19 राष्ट्रपति के परिलाभ व पेंशन (संशोधन) अधिनियम 1998 20 ससद के अधिकारियों के वेतन व भत्ते (सशोधन) अधिनियम, 1998 21 संसद सदस्यों के वेतन व भत्ते (सशोधन) अधिनियम, 1998 22 तेल खदानो (नियन्त्रण व विकास) सशोधन अधिनियम 1998

1999

1. भारतीय निर्यात- आयात बैंक (सशोधन) अधिनियम, 1998; 2 कपास के बिनाई व धागे बनाने वाले कारखाने (संशोधन) अधिनियम 1998; 3 दी हाई डिनामिनेशन बैंक नोट्स (सशोधन) अधिनियम 1998; 4. रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल (संशोधन) अधिनियम, 1998; 5. संसद में मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के नेता और मुख्य व्हिप (सुविधा) अधिनियम, 1998; 6. दिल्ली विकास प्राधिकरण (विविन्याव अनुशासन शक्तियां) अधिनियम, 1998; 7. उच्च न्यायालय व सर्वोच्च न्यायालय न्यायधीश (वेतन व सेवा स्थिति) संशोधन अधिनियम, 1998; कस्टम (संशोधन) अधिनियम, 1998; 9. विनियोग रेलवे (संख्या – 4) अधिनियम, 1998; 10. विनियोग (संख्या – 4) अधिनियम, 1998; 11. आयकर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 1998;

संसदीय अध्यादेश, 1998–99

1. दी नेशनल इंस्टीट्यूट आफ फर्माक्यूटिकल एजुकेशन एड रिसर्च (दूसरा) अध्यादेश, 1998; 2. ग्रेच्युटी (सशोधन) अध्यादेश, 1998; 3. उच्च न्यायालय व सर्वोच्च न्यायालय के न्यायधीशों (सेवा स्थिति) संशोधन अध्यादेश, 1998; 4. जन प्रतिनिधित्व संशोधन अध्यादेश, 1998; 5. आवश्यक वस्तु संशोधन अध्यादेश, 1998; 6. विद्युत नियामक आयोग संशोधन अध्यादेश, 1998; 7 केंद्रीय सतर्कता आयोग संशोधन अध्यादेश, 1998; 8. प्रसार भारती (भारतीय प्रसारण निगम) संशोधन अध्यादेश, 1998; 9. तेल खदान (विनियमन व विकास) संशोधन अध्यादेश, 1998; 10. केंद्रीय सतर्कता आयोग संशोधन अध्यादेश, 1998; 11. कंपनीज संशोधन अध्यादेश, 1998; 12. वित्त (संख्या – 2) संशोधन अध्यादेश, 1998; 13. कंपनीज सशोधन अध्यादेश, 1999; 14. प्रसार भारती (भारतीय प्रसारण निगम) संशोधन अध्यादेश, 1999; 15. दी पेटेंट संशोधन अध्यादेश, 1999; 16. केंद्रीय सतर्कता आयोग संशोधन अध्यादेश, 1999; 17. शहरी भूमि (विनियमन व सीलिंग) संशोधन अध्यादेश, 1999; 18. संसद सदस्यों के वेतन, भत्ते और पेंशन संशोधन अध्यादेश, 1999.

---

37. (1975) – इस सशोधन ने सघ शासित प्रदेश अरुणाचल प्रदेश के लिए विधान सभा और मंत्रि परिषद की व्यवस्था की ।

38. (1975) इनसे राष्ट्रपति द्वारा आपातकाल की घोषणा और राष्ट्रपति, राज्यपालों और सघ शासित प्रदेशों के शासकीय प्रमुखों द्वारा जारी किये गए अध्यादेशों को वाद–योग्य (न्यायपालिका के क्षेत्राधिकार से बाहर) बना दिया ।

39. (1975) इस सशोधन में सविधान की धारा 71 और 329 में और नवीं अनुसूची में सशोधन किया । इसने राष्ट्रपति, उप–राष्ट्रपति, प्रधानमत्री और अध्यक्ष के निर्वाचन को न्यायिक जांच के क्षेत्र से बाहर कर दिया ।

40. (1976) इस संशोधन ने धारा 297 का सशोधन करके यह घोषणा की कि "भारत के प्रादेशिक समुद्र या महाद्वीपीय जलमार्ग भूमि या अन्य आर्थिक क्षेत्र के भीतर सागर में सब भूमि खनिज और अन्य मूल्यवान वस्तुएं संघ सरकार के स्वामित्व में होंगी और संघ के प्रयोजनों के लिए इस्तेमाल होंगी ।"

41 (1976) इस संशोधन के द्वारा राज्य के लोक सेवा आयोग के सदस्यों की सेवानिवृत्ति की आयु 60 वर्ष से बढा कर 62 वर्ष कर दी गई । संघ लोक सेवा आयोग के सदस्यों पर जो 65 वर्ष की आयु पर सेवा निवृत होते हैं, इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

42 (1976) इस संशोधक अधिनियम की प्रमुख बातें नीचे सक्षेप में दी जा रही हैं :

1 सविधान की प्रस्तावना में 'प्रभुत्व संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य' शब्दों के स्थान पर 'प्रभुत्व संपन्न समाजवादी,

र्मनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य' शब्द और 'राष्ट्र की कता' शब्दों के स्थान पर राष्ट्र की एकता और अखंडता' ब्द रखे गए ।

2. यदि संविधान के निर्देशक तत्वों और मूल अधिकारों के बीच कभी टकराव हो, तो निर्देशक तत्वों को मूल अधिकारों के ऊपर वरीयता दी जायेगी ।

3. इसी प्रकार राष्ट्र विरोधी गतिविधियों पर रोक या उनके निषेध को मूल अधिकारों के ऊपर वरीयता दी जायेगी।

4. सभी नागरिकों के पालन के लिए कुछ मूल कर्तव्य निर्धारित कर दिये गए हैं । इन कर्तव्यों का पालन न करना या इनके पालन से इंकार करना दंडनीय अपराध है । ऐसी कार्यवाही की वैधता को कोई न्यायालय चुनौती नहीं देगा ।

5. जनसंख्या के आधार पर लोक सभा और राज्यों की विधान सभाओं में इस समय जितनी सीटें हैं, वे सीटें 1971 की जनगणना पर आधारित हैं, उतनी ही सीटें 2001 ई. तक रहेंगी, अर्थात् दस-दस वर्ष बाद दो बार जनगणना होने से इन सीटों की संख्या में कोई अंतर नहीं आयेगा ।

6. लोक सभा और राज्यों की विधान सभाओं का कार्यकाल 5 वर्ष से बढ़ाकर 6 वर्ष कर दिया गया ।

7. लोक सभा और राज्यों की विधान सभाओं की बैठकों के लिए संविधान में निर्धारित गणपूर्ति (कोरम) का प्रावधान हटा दिया गया । इसका अर्थ यह है कि अब कोरम कोई संवैधानिक अपेक्षा नहीं रही ।

8. संसद ही इस बात का निर्णय करेगी कि कौन-से पद सरकार के अधीन लाभप्रद हैं । संसद ही निर्णय करेगी कि विधान मंडल की किसी सभा के निर्वाचित सदस्य को अनर्हित करने के लिए भ्रष्ट आचरण क्या है ।

9. विधान मंडल के सदस्यों और समितियों के अधिकारों और विशेषाधिकारों का निर्धारण संबंधित सभाएं ही समय-समय पर करेंगी ।

10. आपात काल की घोषणा सारे देश पर लागू करने के बजाय देश के किसी एक भाग पर लागू की जा सकती है । इसी प्रकार, आपातकाल की घोषणा देश के किसी भाग में समाप्त की जा सकती है जबकि देश के अन्य भागों में लागू रहेगी ।

11. किसी राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू करने हेतु राष्ट्रपति की उद्घोषणा की अवधि 6 महीने से बढ़ा कर एक साल कर दी गई ।

12. संघ सरकार को किसी राज्य में सशस्त्र सेनाओं को तैनात करने का अधिकार है । संघ सरकार राज्यों के कन्टोन्मेंट क्षेत्रों की सीमा का पुनर्निर्धारण कर सकती है । राज्य सरकार को दखल देने का कोई अधिकार नहीं होगा। इन्हीं कैन्टोन्मेंट क्षेत्रों के प्रशासन के संबंध में भी कोई अधिकार नहीं होगा ।

13. संविधान में किसी प्रकार से संशोधन करने के संसद के अधिकार को कोई न्यायालय चुनौती नहीं दे सकता ।

14. केंद्रीय कानून की वैधता के बारे में निर्णय करने का अधिकार केवल सर्वोच्च न्यायालय को है । उच्च न्यायालय राज्य के कानूनों की वैधता के बारे में निर्णय दे सकते हैं । यदि किसी राज्य के कानून की वैधता केंद्र के किसी कानून की वैधता पर निर्भर हो, तो सर्वोच्च न्यायालय उस पर निर्णय दे सकता है । किन्तु संवैधानिक अवैधता संबंधी कोई भी निर्णय पीठ के न्यायाधीशों के दो-तिहाई बहुमत से होना चाहिए - यदि न्यायाधीशों की संख्या 5 से कम हो, तो उनका निर्णय सर्वसम्मति से होना चाहिए । यह भी प्रावधान किया गया है कि उच्च न्यायालयों को ऐसा कोई अस्थायी आदेश जारी करने का अधिकार नहीं है, जिससे सरकार द्वारा की जा रही किसी जांच या कार्यवाही में रुकावट या बाधा पैदा हो ।

15. यह भी प्रावधान किया गया कि राष्ट्रपति मंत्रि परिषद की सलाह को अवश्य मानेगा ।

43. (1977). इस संशोधन पर राष्ट्रपति की स्वीकृति 3 अप्रैल, 1978 को प्राप्त हुई । इसने (1) बयालीसवें संशोधन द्वारा जोड़ी गई कुछ धाराओं को निकाल दिया, और (2) कुछ अन्य धाराओं में परिवर्तन किया ।

इनका उद्देश्य सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों की शक्ति को पुर्नस्थापित करना था ।

44. (1978) विधि के प्राधिकार के बिना किसी व्यक्ति को उसकी संपत्ति से वंचित नहीं किया जायगा । आपातकाल अब आंतरिक उपद्रव के आधार पर नहीं बल्कि सशस्त्र विद्रोह के आधार पर ही लगाया जा सकेगा ।

45. (1980) संसद और राज्य विधान मंडलों में अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए सीटों का आरक्षण और आंग्ल-भारतीयों के लिए नामजदगी की सुविधा 10 वर्ष के लिए बढ़ा दी गयी ।

46. (1982) इस संशोधन द्वारा धारा 269 में संशोधन किया गया क्योंकि अंतर्राज्यीय व्यापार या वाणिज्य में प्रेषित माल पर लगाया कर राज्यों को दिया जाना था ।

47. (1984) इस संशोधन द्वारा भूमि सुधार कानूनों को सविधान की नवीं अनुसूची में शामिल कर दिया गया ।

48. (1984) यह संशोधन संविधान की धारा 356 के खंड 5 (घ) में किया गया ताकि पंजाब में राष्ट्रपति शासन एक साल और जारी रखा जा सके ।

49. (1984) त्रिपुरा राज्य में जिला परिषदों को स्वायत्त बनाने में संवैधानिक सुरक्षा दी गयी ।

50. (1984) (1) राज्य के कब्जे वाली या राज्य की संपत्ति की रक्षा के लिए उत्तरदायी बलों के सदस्य; अथवा।

(2) आसूचना या प्रति-आसूचना के प्रयोजनार्थ किसी राज्य द्वारा स्थापित किसी ब्यूरो या संगठन के सदस्य; अथवा

(3) किसी बल, ब्यूरो या संगठन के प्रयोजनार्थ निर्मित दूर संचार प्रणाली में या उससे संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को धारा 33 के अंतर्गत लाया जायेगा ।

51. (1985) इस संशोधन के द्वारा संविधान की धारा 330 और 332 में "आसाम, नागालैंड, मेघालय अरुणाचल प्रदेश के जनजाति क्षेत्रों को छोड़कर अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों "से संबंधित प्रावधान के स्थान पर" असम के स्वायत्तशासी जिले में अनुसूचित जनजातियों को छोड़कर अनुसूचित जनजातियों" रखा गया ।

52. (1985) दल-बदल रोक बिल के नाम से [illegible] बिल का उद्देश्य दल-बदल को रोकने के लिए [illegible] था । इस अधिनियम की प्रमुख विशेषताएं [illegible]

पंचायती राज

संविधान (73वां संशोधन) अधिनियम 24 अप्रैल, 1993 से लागू हुआ के अंतर्गत समस्त राज्यों और केंद्रशासित क्षेत्रों में तीन टियर प्रणाली शुरु हुई है। यह प्रणाली उन क्षेत्रों में लागू नहीं की जायेगी जहां आबादी 20 लाख से कम होगी।

भाग 9 पंचायत

अनुच्छेद 243. व्याख्यायें।
अनुच्छेद 243 ए. ग्राम सभा
अनुच्छेद 243 बी. पंचायत का संविधान
अनुच्छेद 243 सी. पंचायत की संरचना
अनुच्छेद 243 डी. सदस्यता का आरक्षण
अनुच्छेद 243 ई. पंचायत आदि की अवधि
अनुच्छेद 243 एफ. सदस्यों की अयोग्यता
अनुच्छेद 243 जी. शक्ति, अधिकार और पंचायतों की जिम्मेदारियां
अनुच्छेद 243 एच. पंचायत द्वारा कर लगाने की शक्ति और कोष
अनुच्छेद 243 आई. वित्तीय स्थिति की समीक्षा करने के लिये वित्त आयोग का संविधान
अनुच्छेद 243 जे. पंचायत खाते की आडिट
अनुच्छेद 243 के. पंचायतों का निर्वाचन
अनुच्छेद 243 एल. केंद्र शासित क्षेत्रों की स्थिति
अनुच्छेद 243 एम. भाग जो विशेष क्षेत्रों में लागू नहीं होगा।

1. अनुच्छेद 244 में अनुसूचित क्षेत्र भाग 1 में और जनजाति क्षेत्र भाग दो में दिये गये हैं।

2. नागालैंड, मिजोरम, मणिपुर (जहां जिला परिषद का अस्तित्व वहां पर लागू विधि के अंतर्गत है) दार्जिलिंग गोर्खा हिल काउंसिल आदि।

अनुच्छेद 243 निर्वाचन मामलों में अदालत का हस्तक्षेप निषेध। अनुच्छेद 280 में 11वें अनुच्छेद को जोड़ा जाना।

11वां अनुच्छेद (243 जी)

(ए) कृषि विस्तार सहित। (बी) भूमि सुधार, भूमि सुधारों को लागू करना, भूमि कंसोलिडेशन और भूमि कंजर्वेशन। (सी) लघु सिंचाई, जल प्रबंधन और वाटरशेड विकास।(डी) पशुपालन, दुग्ध और मुर्गीपालन। (ई) मत्स्य। (एफ) समाद वानिकी और फार्म वानिकी। (जी) लघु वानिकी उत्पादन। (एच) लघु स्तर उद्योग खाद्य संस्करण के साथ। (आई) खादी, ग्रामीण और हस्तकरघा उद्योग। (जे) ग्रामीण आवास। (के) पीने योग्य पानी। (एल) ईंधन और चारा। (एम) सड़क, कल्वर्ट्स, पुल, फेरीज, जलमार्ग और संचार के अन्य साधन। (एन) ग्रामीण विद्युतीकरण और गैरपरंपरागत ऊर्जा स्रोत। (ओ) गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम। (पी) शिक्षा, वयस्क नान फार्मल शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण और वोकेशनल प्रशिक्षण। (क्यू) पुस्तकालय और सांस्कृतिक गतिविधियां। (आर) बाजार और मेले। (एस) स्वास्थ्य और सैनिटेशन। (टी) परिवार नियोजन, महिला और बाल कल्याण। (यू) समाज कल्याण विकलांगों सहित। (वी) कमजोर तबके का कल्याण (डब्ल्यू) पी.डी.एस.। (एक्स) समुदाय संपत्ति की रक्षा।

(1) संसद या राज्य विधान मंडल में किसी राजनैतिक दल का सदस्य उस सभा का सदस्य बनने के लिए अयोग्य हो जायेगा:

(क) यदि उसने स्वेच्छा से उस राजनैतिक दल की सदस्यता त्याग दी हो, या

(ख) यदि वह उस सभा में जिस राजनैतिक दल का वह सदस्य है उस राजनैतिक दल या उसकी ओर से इस कार्य के लिए प्राधिकृत किसी व्यक्ति या प्राधिकरण की पूर्व अनुमति प्राप्त किये बिना उसके निर्देश के विपरीत मतदान करता है या मतदान करता ही नहीं, और ऐसे मतदान या मतदान न करने की तिथि से 15 दिन के भीतर उस राजनैतिक दल या प्राधिकृत व्यक्ति या प्राधिकरण द्वारा उसे मतदान करने या न करने के लिए माफ नहीं कर दिया जाता।

(2) किसी सभा का कोई निर्वाचित सदस्य, जो किसी राजनैतिक दल द्वारा उम्मीदवार के रूप में खड़ा नहीं किया गया था, उस सभा का सदस्य होने के लिये अयोग्य हो जायेगा यदि वह निर्वाचित होने के बाद किसी राजनैतिक दल का सदस्य बन जाता है।

(3) किसी सभा का कोई नामजद सदस्य उस सभा का सदस्य होने के लिए अर्ह होगा यदि वह यथास्थिति धारा 99 या 188 की अपेक्षाओं की पूर्ति के बाद जिस तिथि को वह सभा में अपना स्थान ग्रहण करता है उसके बाद 6 महीने की अवधि व्यतीत होने के बाद किसी राजनैतिक दल का सदस्य बनता है।

53. (1986) संशोधन ने एक नई धारा 371-छ जोड़कर मिज़ोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा प्रदान किया।

54. (1986) इस संशोधन ने दूसरी अनुसूची के भाग 6 में सशोधन करके सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीश और अन्य न्यायाधीशों के वेतन में वृद्धि का प्रावधान किया। धारा 125 और 221 में इस बात का प्रावधान विद्यमान है कि भविष्य में संसद कानून बनाकर न्यायाधीशों का वेतन बढा सकती है।

55. (1986) इस अधिनियम ने अरुणाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा प्रदान किया।

56. (1987) इस अधिनियम द्वारा गोवा को राज्य का दर्जा देने के लिए विशेष प्रावधान किया गया। इसके परिणामस्वरूप भूतपूर्व संघ शासित प्रदेशों में से दमन और दियू को अलग कर लिया गया।

57. (1987) इस अधिनियम द्वारा संविधान की धारा 332 में संशोधन करके 2000 ई. के बाद होने वाली [illegible]

जनगणना के आधार पर सीटों के पुर्नसमायोजन होने तक के समय के लिए पूर्वोत्तर के राज्यों अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मिजोरम और मेघालय में अनुसूचित जन–जातियों के लिए सीटों के आरक्षण के बारे में विशेष व्यवस्था का प्रावधान किया गया है ।

58.(1987) इस अधिनियम द्वारा संविधान के हिन्दी अनुवाद का प्रावधान किया गया ।

59.(1988) इस संशोधन के द्वारा सरकार को आंतरिक खलबलियों से देश की एकता और अखंडता को चुनौती दिये जाने के आधार पर पंजाब में आपातकाल लगाने का अधिकार दिया गया ।

60.(1988) राज्य सरकारों को इस अधिनियम के तहत अधिकार दिया गया है कि वे व्यावसायिक कर की दर 250 रु. से 2500 रु. प्रति वर्ष तक बढ़ा सकते हैं ।

61.(1988) मतदान करने की आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष कर दी गयी ।

62.(1989) संसद एवं राज्य विधान सभाओं में अनुसूचित जाति एवं जनजाति और आंग्ल – भारतीय लोगों के लिये 10 वर्ष के लिये आरक्षण बढ़ा दिया गया ।

63.(1989) पंजाब में सरकार द्वारा आपातकाल लगाने के वर्ष 59 के संशोधन को निरस्त कर दिया गया ।

64.(1990) पंजाब में राष्ट्रपति शासन 6 महीने और बढ़ाया गया ।

65.(1990) अनुसुचित जातियों एवं जन जातियों के लिये राष्ट्रीय आयोग की स्थापना ।

66.(1990) भूमि सुधार को नवीं अनुसूची में लाया गया ।

67.(1990) पंजाब में राष्ट्रपति शासन अवधि बढ़ाने के लिये ।

68.(1991) पंजाब में राष्ट्रपति अवधि बढ़ाने के लिये।

69.(1991) दिल्ली को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र बनाया गया ।

70.(1992) संशोधन 69 में कुछ परिवर्तन ।

71.(1992) कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली को संविधान के आठवें अनुच्छेद में सम्मिलित किया गया ।

72.(1992) पंचायतों में अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों का जनसंख्या में अनुपात के आधार पर प्रत्यक्ष चुनाव और महिलाओं के लिये एक तिहाई स्थान की संपुष्टि के लिये।

73.(1992) शहरी स्थानीय संस्थानों में नयी भूमिका।

74.(1992) त्रिपुरा में जनजातियों के लिये विधान सभा में 20 स्थानों का आरक्षण ।

75.(1992) प्रांतीय स्तर पर रेंट ट्रिब्यूनल की स्थापना।

76.(1994) इस अधिनियम का उद्देश्य जन सेवा और शिक्षण संस्थानों में पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिये आरक्षण की व्यवस्था करनी थी। उच्चतम न्यायालय ने 16 नवंबर 1992 में अपने आदेश में कहा कि अनुच्छेद 16 (4) के अंतर्गत आरक्षण 50% से अधिक नहीं होना चाहिये।

77.(1995) धारा 16 (4ए) इस अधिनियम के अंतर्गत अनुसूचित एवं जनजाति की प्रोन्नति के लिये आरक्षण को बढ़ाना है।

78. नवें अनुच्छेद में पहले से ही समाहित संशोधन जिन्हें वैधानिक चुनौती नहीं मिली, अनेक संशोधित अधिनियम व आधारीय अधिनियम को नवीं सूची में जोड़ा गया है यह सुनिश्चित करने के लिये कि इन पर वैधानिक चुनौतियों का प्रतिकूल असर न पड़े।

1998–99 के दौरान 34 विधेयक अधिनियमित किये गये।

भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला

इतिहास की अविच्छिन्नता के सम्बन्ध में हमारी जानकारी में कुछ अन्तराल होने के बावजूद भारतीय चित्रकला का आरंभ आदिमकालीन मनुष्य की उस कला से माना जाता है, जो होशंगाबाद, मिर्जापुर और भीमबेटका जैसे स्थानों पर कन्दराओं और गुफाओं में सुरक्षित रही है ।

मैग्डेली काल (ई. पू. 15000 वर्ष) की पाषाणकालीन चित्रकला का इतिहास इतना पुराना नहीं लगता । किन्तु [illegible] बात सभी लोग स्वीकार करते हैं कि यदि समुदाय एक दूसरे से पृथक रहते हों तो आदिमकालीन प्रक्षाराति एव [illegible] काफी लम्बी अवधि तक जीवित रहती हैं । इन [illegible] में उस आदिमकालीन कला की जीवन्त [illegible] होता है, जो स्पेन में अल्तामीरन और फ्रांस के [illegible] अनेक स्थानो पर प्राप्त हुई है । [illegible] सुअर का खुला मुंह जो [illegible]

है, इनके छाया–चित्र आयानाट्य का दृश्य [illegible]

सिंधु घाटी सभ्यता काल (ई. पू. [illegible] एक परिष्कृत शहरी सभ्यता का [illegible] समय के [illegible] आदि शेष नहीं हैं [illegible] मिल [illegible] लेकिन प्राचीन [illegible] और मिट्टी के [illegible] मिलती है । [illegible]

हीनयान या प्रारम्भिक बौद्ध धर्म ने शायद उस भावना को सही रूप में नहीं समझा था, क्योंकि उसने केवल क्षणभंगुर वस्तुओं और पीड़ा की सर्वव्यापकता को ही देखा। जब सिद्धार्थ ने महल छोड़ा तो वह अपने शिशु पुत्र को भी अपने साथ ले जाना चाहते थे, किन्तु वह उसे नहीं ले जा सके, क्योंकि बच्चे की मां ने नींद में भी अपने पुत्र के ऊपर रक्षा का हाथ रखा था। ज्ञान प्राप्ति के बाद भी उन्हें यह बात याद रही और उन्होंने सब लोगों से सब जीवों की रक्षा की बात कही। उन्होंने निर्वाण स्वीकार नहीं किया, बल्कि पीड़ा से त्रस्त मानवता की सहायता के लिए केवल मनुष्य के रूप में ही नहीं, बल्कि हिरण, हाथी और हंस के रूप में जन्म लिया।

जातक कथाओं में इन अवतारों (जन्म धारण) के जीवन के उतार–चढ़ाव का विशद वर्णन है और अजंता के कलाकारों ने लहरदार रेखाओं और सूक्ष्मग्राही रंगों में इनका चित्रण किया। इन भित्ति चित्रों में शहर, देहात, वन, हर प्रकार के पुरुषों, स्त्रियों, जीव जंतुओं और वनस्पति का चित्रण है।

जब बौद्ध धर्म एशिया के शेष भाग में फैला, तो शान्ति के संदेश के साथ तूलिका और छेनी भी गए। अजंता अपनी शैली की स्पष्ट छाप के साथ एशियाई चित्रकला और भित्ति चित्रकारी का स्रोत बन गया। श्रीलंका में सिगिरिया में अफगानिस्तान में बामियान में, चीन में प्राचीन रेशमी मार्ग पर स्थित अनेक स्थानों में, कोरिया में और जापान में होरियु [illegible] में इसे देखा जा सकता है।

भित्ति चित्रकारी भारत में प्रचलित रही [illegible] बादामी (छठी शताब्दी) पल्लवों का पनमले [illegible] पांड्यों की सित्तन्नावसल (नवीं शताब्दी [illegible] [illegible] बारहवीं शताब्दी) विजयनगर की लेपाक्षी (सोलहवीं शताब्दी) [illegible] उन्नीसवीं शताब्दी। मध्य तक विभिन्न शताब्दियों में [illegible] किन्तु [illegible] [illegible]

इसी बीच [illegible] चित्रकारी ने पाडुलिपियों [illegible] लघु चित्र [illegible] शुरू में ताड़ के पत्रों पर बाद में [illegible] बंगाल के पाल शासकों के काल (दसवीं और [illegible] शताब्दी) की लघु चित्रकारी में अजंता की [illegible] अनुरक्षित है, किन्तु उसके बाद द्रुत पराभव आया और [illegible] और औपचारिक हो गई।

यही शैली पश्चिमी भारत में फैली और बारहवीं से पन्द्रहवीं शताब्दी की अवधि में बहुत सी प्रदीप्त पाडुलिपियों में देखी जा सकती है। इनमें से अधिकांशतः पाडुलिपियां जैन धर्म ग्रंथों की हैं। लेकिन पन्द्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और सोलहवीं शताब्दी के प्रथम चतुर्थांश में परिवर्तन की हवा चलने लगी।

बसन्त विलास, बिल्हण की और पचाशिका और लौर चन्दा जैसी कविताओं की गीतमयता की अनुक्रिया के परिणामस्वरूप यह लीक पुनः नमनीय हो गई और रंग चमकदार हो गए। मुगलों के आगमन से पहले ही भारतीय लघु–चित्रकारी की एक उत्तम चित्रमय शैली स्थापित हो चुकी थी।

यद्यपि अकबर के दरबार में फारस के कलाकारों का प्राधान्य था, किन्तु मुगल चित्रकला फारसी चित्रकला की एक प्रान्तीय शैली नहीं कही जा सकती। फारसी चित्रकला रोमांस के स्वर्गीय लोक की ओर अभिमुख है जबकि अकबर की रुचि समसामयिकता में दीखती है। कलाकक्ष (स्टूडियो) और उसकी कार्यशैली की व्यवस्था ने विदेशी शैली के द्रुत देशीकरण को जन्म दिया।

अकबर ने बहुत–से भारतीय कलाकारों को सेवा में रखा था। हर चित्रकारी प्रायः भारतीय और फारसी कलाकारों के सहकारी प्रयास का परिणाम थी – एक कलाकार रेखांकन करता था, दूसरा उसमें रंग भरता था और तीसरा तफसील तैयार करता था। देशीकरण को उस समय और भी गति मिली जब अकबर ने रामायण और महाभारत के अनुवाद तैयार करने और उसे चित्रकारी से सजाने का आदेश दिया।

राजपूत राजाओं के दरबारों में जो चित्रकार थे, वे प्रायः मुगल शिल्पकला में प्रशिक्षण प्राप्त कलाकार थे। लेकिन, जहां मुगल चित्रकारी सभ्रान्त कुलीनों की चित्रकारी थी, जिसमें शाही तड़क–भड़क और समारोह का अंकन होता था, वहां राजपूत चित्रकारी में देश की महान कथाओं और आख्यानों राम और कृष्ण की कथाओं और भागवत व गीतगोविन्द के आख्यानों का अंकन रेखा और रंग के संयोग से किया गया। मैदानी इलाकों या राजस्थान की अनेक रियासतों में [illegible] का विशेष उल्लेख करना जरूरी है।

चित्रकारी की [illegible] शैली में डुआनियर रूसो जैसे यूरोपीय चित्रकारों की आदिम संकल्पना और ओजस्विता को उनसे लगभग अस्सी साल पहले निरूपित किया गया। किशनगढ़ की चित्रकारी की शैली में राधा–कृष्ण कथा–काव्य का पूर्ण चित्रांकन मिलता है।

मैदानी इलाकों के अनेक बहादुर राजपूत योद्धाओं द्वारा स्थापित हिमालय की घाटियों के छोटे राज्यों में चित्रकारी के कई केन्द्र अस्तित्व में आए जिनमें बसोहली की चित्रकारी शैली में अभिव्यक्ति की तीव्रता, कुलू शैली में लोक शैली से उसकी निकटता और कांगड़ा शैली में रोमांसवाद और चित्रों की बहुलता आदि विशेषताएं विकसित हुईं।

राजपूतों के काल के बाद इसमें रुकावट पैदा हुई। ब्रिटिश काल में पाश्चात्य प्रभाव की प्रमुखता रही, पाश्चात्य सैद्धान्तिक शिक्षावाद की लोकप्रियता बढ़ी रवि वर्मा जैसे अग्रणी चित्रकारों ने स्वयं इसका अभ्यास किया, किन्तु अन्य बहुत से लोगों ने प्रशिक्षण संस्थाओं में शिक्षा प्राप्त की। रवीन्द्र नाथ टैगोर की अगुवाई में विकसित पुनर्जागरणवादी शैली के पीछे राष्ट्रवादी प्रेरणा थी।

भारत में आधुनिक चित्रकारी के चार अग्रगामी ये हैं – गगनेन्द्रनाथ टैगोर, जिन्होंने प्रत्यक्ष टेक्नीक और शैली में प्रयास किया; अमृता शेरगिल, जिन्होंने पश्चिम की चित्रात्मक शैली और भारतीय कल्पना के बीच सामंजस्य स्थापित किया; जैमिनी राय, जिन्होंने लोक शैली की ऊर्जस्विता को उजागर किया और उसे कई प्रतिरूपों में निरूपित किया; और रवीन्द्रनाथ टैगोर, जिन्होंने चित्रकारी के लिए संगीत की स्वायत्तता की हिमायत की और उसे यथार्थता के शिकंजे से मुक्त करने का अध्यवसाय किया और प्राकृतवाद, अमूर्तीकरण और अभिव्यक्तिवाद मुक्त के रूपों को मान्यता प्रदान [illegible]

मूर्ति कला

भारतीय मूर्ति कला की कहानी सिंधु घाटी सभ्यता के काल से आरंभ होती है और उस समय भी वह आश्चर्यजनक

परिपक्वता की स्थिति में थी। वहां की खुदाई में नृत्य करती हुई लड़की की जो लघु मूर्ति हमें मिली हैं, उससे पता लगता है कि उस समय भी लोगों को कांसे की मूर्तियां वनाने का अच्छा ज्ञान था; उससे स्त्री के चिरन्तन सौन्दर्य के वोध और भारतीय परम्परा में मूर्ति कला और नृत्य के वीच निकट सम्वन्ध का संकेत मिलता है।

मिट्टी की मूर्तियां उन वस्तुओं का माध्यम है, जो धार्मिक संस्कारों में प्रयोग में आती थीं, जैसे मातृ देवी की मूर्ति या जो मनोरंजन का साधन जैसे तरह-तरह के खिलौने। छोटा आकार होने के वावजूद पत्थर की मूर्ति-कला आश्चर्यजनक है और सेलखड़ी की छोटी सीलों पर सांड जैसे पशुओं की आकृतियों में जीवन्त यथार्थ हैं।

ईसा पूर्व चौथी शताव्दी में यूनानियों ने जव एकामेनिड साम्राज्य को रौंद डाला तो फारस के दस्तकार इधर-उधर फैल गए और हो सकता है कि उनके योगदान से अशोक स्तम्भ में शेरों की मूर्ति वनाने की विलक्षण शैली विकसित हुई। किन्तु मौर्यकाल में रामपुरवा स्तम्भ पर सांड की मूर्ति में अपेक्षाकृत अधिक सौम्य शैली विकसित दीखती है और भारतीय मूर्ति कला में समग्रत: पशुओं के अंकन में सदयता के दर्शन होते हैं। पहले यक्षों, यक्षियों की मूर्तियां सुघड़ नहीं थी, किन्तु कुछ समय वाद ही स्त्री मूर्तियां ऐन्द्रिक दृष्टि से शालीन वनने लगीं दीदारगंज में यक्षी की मूर्ति ऐसी ही है।

ईसा पूर्व दूसरी शताव्दी में मौर्यों के स्थान पर शुंग आ गए, जिनके जमाने में यक्षी की मूर्ति को वस्त्र और आभूषण से सुसज्जित करके अधिक सुघड़ वना दिया गया। इस समय प्रजननशक्ति के माध्यम से वृक्ष एवं महिला के वीच संवंध जोड़ा गया और इस प्रतीकवाद के सहारे हल्के या गहरे उभार वाली वल्लरियों को अंकित किया गया।

सातवाहनों ने (ईसा पूर्व दूसरी शताव्दी) इन शैलियों को आगे विकसित किया। सांची की वन देवियों में इस शैली की सवसे सुनम्य अभिव्यक्ति है। अमरावती की वर्णनात्मक शिल्पकला ने मेडल में भद्दे आकार की संरचना की समस्या को शानदार ढंग से हल कर दिया।

देश के उत्तर-पश्चिमी भाग में, जो अव भारत का भाग नहीं है, इंदो-यूनानी राज्यों में, जो सिकन्दर के आक्रमण के वाद अस्तित्व में आए थे, प्राचीन यूरोप के अभिघटन संकल्पना और वौद्ध आध्यात्मिकता के सम्मिश्रण से गान्धार कला का उदय हुआ। यह क्षेत्र कनिष्क के उस विशाल कुषाण साम्राज्य का अंग (ईसा की दूसरी शताव्दी) था, जो आक्सन नदी से गंगा नदी तक फैला हुआ था। किन्तु कुषाणों के क्रियाकलाप का मुख्य केन्द्र मथुरा था।

किन्तु यह युग अत्यधिक शहरीकृत एवं विश्रान्त लोकाचार का था। यक्षी का वनों से सम्वन्ध समाप्त हो गया और वह नगर की आत्मचेतना विमोहक किशोरी वन गई। उस समय की मूर्तिकला में मदिरा के मुक्त प्रयोग से भरपूर रंगरेलियों के दृश्य उपस्थित किए गए। स्त्रियों के वस्त्रों की उभयवृतिता का परिष्कृत रूप आरंभ हुआ, जिसमें गोपन के प्रयास की आड़ में प्रदर्शन की ललक थी। मथुरा में अप्सरा की मूर्ति ऐसा पारदर्शी वस्त्र पहने हुए है, जैसे वह निर्वस्त्र हो।

गुप्त शासकों के काल (300-600 ई) में वुद्ध की प्रतिमाएं – खड़े, वैठे हुए और हाथों की अनेक प्रतीक मुद्राओं सहित वनाने में उत्कृष्ट मानदंड स्थापित हुआ। शुंग और कुषाण काल में रेलिंगों को सजाने वाले गोल फलक ने वुद्ध के चित्र के इर्दगिर्द प्रभामंडल का रूप धारण कर लिया। कुषाण काल के पारदर्शी वस्त्र में ऐसी सुन्दर तहों अर्थात सलवटों का आविर्भाव हुआ, जो तालवद्ध संगीत की लहरों जैसे थे। सुकुमार और शालीन ढलाई से मंडित मुखमंडल पर आत्मविस्मृति की शान्ति का दर्शन होता है।

गुप्तकाल में वुद्ध की उत्कृष्ट प्रतिमाओं का निर्माण एशिया के कलाक्षेत्र की एक विशिष्ट उपलव्धि थी, क्योंकि अजंता की पद्मपाणि की ही भांति इसका प्रकाश दूर देशों तक फैला। इस काल में हिन्दू धर्म के विषयों पर सुन्दर प्रतिमाएं वनीं, जैसे देवगढ़ में पांचवीं शताव्दी के उत्तरार्द्ध में वने मन्दिर में विष्णु अवतार और उदयगिरि में वराह अवतार की मूर्ति।

दक्षिण के वाकाटक शासक गुप्त शासकों के समकालीन थे और उनके संरक्षण में सुन्दर मूर्तिकला की उन्नति हुई, विशेषतया अजंता में वौद्ध मूर्तियों की और एलोरा में हिन्दू मूर्तियों की। इस काल की कला में वड़ी विविधता है। एक ओर हल्की प्रतिमाएं हैं, तो दूसरी ओर औरंगावाद के नृत्य समूह की शानदार कृति में लयात्मक सन्तुलन है और एलीफेंटा में महेश की मूर्ति में प्रतीकात्मक भाव की भव्यता है।

पश्चिमी चालुक्यों के अधीन ये शैलियां प्रचलित रहीं। तिरती हुई आकृतियां और वदामी, ऐहोल व पट्टादक्कल में नृत्य करते हुए शिव की मूर्तियां वनीं। पूर्वी चालुक्यों ने भी विजयवाड़ा क्षेत्र के मन्दिरों में नृत्य मुद्रा की कुछ सुन्दर मूर्तियां वनवाईं।

आठवीं शताव्दी में राष्ट्रकूट शासकों ने एलोरा में पहाड़ी की चट्टानों को मन्दिर का आकार प्रदान करें शिवजी के जीवन से सम्वन्धित घटनाओं को प्रतिमाओं में अंकित किया। राष्ट्रकूटों के समकालीन गुर्जरों-प्रतिहारों ने विष्णु के व्रह्माण्डीय रूप को अंकित करके संवेदनशील मूर्तियों का सृजन किया जैसे शिव और पार्वती का विवाह और इस प्रकार भारतीय मूर्ति कला की परम्परा में सुन्दरतम पौराणिक मूर्ति कला का योगदान किया।

गहड़वालों ने इस परम्परा को आगे वढाया और वारहवीं शताव्दी में राजोरगढ़ से प्राप्त शीर्ष शिल्प भारतीय मूर्ति कला में स्त्री केशविन्यास शैली का सर्वोत्कृष्ट नमूना है। स्त्रियों की अतिसंवेदनशील प्रतिमाएं वनाने की शैली चन्देलों के काल में उन्नति की चरमसीमा पर पहुंच गई (दसवीं से वारहवीं शताव्दी) खजुराहो की मूर्ति कला में अभिव्यक्त उन्मुक्त रत्यात्मकता की ओर सारे संसार का ध्यान गया है। स्त्री की उत्कंठा, प्रतीक्षा, दिवास्वप्न जैसी मनः स्थितियों की अभिव्यक्ति वड़े ही संवेदनात्मक एवं कल्पनाशील शैली में की गई है। पूर्वी गंग शासकों (तेरहवीं शताव्दी) के काल में कोणार्क एवं भुवनेश्वर की मूर्ति कला में भी रत्यात्मकता मिलती है।

पल्लवों के काल (आठवीं शताव्दी) में अपेक्षाकृत दक्षिण की ओर सवसे वड़ी उपलव्धि महावलीपुरम [illegible] विशाल

सजीव दृश्य है, जहां एक पूरी चट्टान को काटकर गंगा अवतरण की झांकी प्रस्तुत की गई है और उसके तट पर अनगिनत पशु और मनुष्य दिखाए गए हैं ।

चोल मूर्ति कला (ग्यारहवीं और बारहवीं शताब्दी) में शिव का प्राधान्य है । कांस्य के अतिरिक्त पत्थर की भी शिव की मूर्तियां बनीं । लेकिन नटराज अर्थात् नृत्य करते हुए शिव की कांस्य मूर्ति ही विशेष रूप से विश्व विख्यात है। गंभीर संकल्पना और पूर्ण रूपविधान से मंडित यह महान मूर्ति सुनियंत्रित ढंग से विश्व के सतत परिवर्तन, परमाणु से लेकर ब्रह्मांड तक सबके परिभ कि यह मंगलकारी व्यवस्था है ।

होयसाल शासकों के काल (बारहवीं शताब्दी) में कर्नाटक क्षेत्र में जिस मूर्ति कला का विकास हुआ उसमें नरम क्लोरिरिटिक पर्तदार पत्थर का प्रयोग हुआ और इसलिए उसमें बारीकी से चित्रण तथा सज्जा का बाहुल्य है । सोलहवीं शताब्दी में विजय नगर में विकसित मूर्ति कला में शाही शानशौकत वाले हाथियों की शोभा यात्रा, अश्वारोहियों की शोभा यात्रा और सैनिकों की शोभा यात्रा का अंकन है ।

पल्लवों से प्रभावित प्रस्तर मूर्तियों, चोलों से प्रभावित कांस्य मूर्तियों का निर्माण केरल में भी हुआ, किन्तु केरल की सबसे बड़ी उपलब्धि काष्ठ मूर्ति कला है ।

सम्पूर्ण संसार की प्रेरणाओं से उद्भावित भारतीय मूर्ति कला में आज सभी शैलियों में प्रयोग हो रहे हैं, जिनमें इस्पात और अल्युमीनियम, फाइबर ग्लास और यहां तक कि फाइबर का भी इस्तेमाल किया जा रहा है ।

किन्तु सबसे महत्वपूर्ण रुझान प्रतिमा की उत्कृष्टता को पुनर्जीवित करने की है, विस्मय और पूजनीयता के मनः आवेग को अनुप्राणित करने की है जो कि भारतीय मूर्ति कला की दाय क्षमता का सर्वाधिक मूल्यवान गुण है ।

भारतीय साहित्य

बहुत भाषाओं में लिखे जाने पर भी भारतीय साहित्य एक है – यह साहित्य अकादमी का अपने जन्मकाल से ही नारा रहा। भारत में 18 स्वीकृत राजकीय भाषाएं हैं और प्रत्येक में समृद्ध और जीवन्त साहित्य है। भारतीय संविधान में भाषाओं की साहित्यिक व्यावहारिक राजनैतिक और सांस्कृतिक महत्ता का विचार कर 15 भाषाओं को राजकीय स्तर पर मान्य माना गया। लेकिन 1961 की जनगणना के अनुसार मातृ भाषाओं की संख्या 1652 है। यह आश्चर्यजनक संख्या उन बोलियों की भी गणना करके मिली है जिनको बोलनेवाले केवल पांच ही लोग हैं। 1971 की जनगणना ने यह संख्या यथार्थपरक 700 की है जिसमें उन बोलियों को ही गिना गया है जिनके बोलने वाले 1000 लोग या इससे अधिक हैं।

ये भाषाएं चार प्रमुख भाषा परिवार की हैं - आर्य, द्रविड चीनी-तिब्बतीय, अथवा (मंगोलिया) और आस्ट्रिक। किन्तु प्रमुख भाषाएं भारोपीय परिवार (11) और द्रविड़ परिवार (4) में आती हैं, ये साहित्यिक भाषायें भी हैं। साहित्य अकादमी (साहित्य की राष्ट्रीय अकादमी) ने इन 15 भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी और 6 अन्य भारतीय भाषाओं (डोगरी कोंकणी, मणिपुरी, मैथिली नेपाली और राजस्थानी) को भी अपने कार्यकलापों के लिए स्वीकृत किया है।

इन छह भाषाओं का योग विशेषज्ञ समितियों द्वारा संभव हुआ जिनकी नियुक्ति 1960 से अकादमी द्वारा की गई थी। इस तरह भारतीय साहित्य कम से कम 22 भाषाओं में निर्मित होता है। दूसरे शब्दों में, 22 भारतीय साहित्य हैं, जिसे साहित्य अकादमी मान्यता देती है।

ये 22 भाषाएं अपने विकास और राष्ट्रीय अथवा राज्य सहायता के स्तर पर समान नहीं हैं। निःसन्देह सभी क्षेत्रीय भाषाओं को आज़ादी के बाद विशेष प्रोत्साहन मिला है। विदेशी भाषा होने के बावजूद अंग्रेजी आज भी सहायक राजकीय भाषा तथा बहुत अधिक प्रभावी सम्पर्क भाषा के रूप में भारत के बाहर और अन्दर दोनों क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। भारतीयों ने भी सृजनात्मक लेखन और बौद्धिक अनुचिंतन के क्षेत्र में अंग्रेजी द्वारा अपना योगदान दिया है। इसीलिए साहित्य अकादमी ने अपने कार्यक्रमों मे स्वीकृत 15 भाषाओं के ऐतिहासिक विकास, प्रकार्यात्मक महत्व तथा पृष्ठभूमियों में इसके महत्व को स्वीकारा है। संस्कृत भाषा और इसके साहित्य का हमारी सभ्यता में अपना ही स्थान है। यह प्राचीनतम क्लासिक भाषा है और भारतीय इतिहास के आदिकाल से ही अत्यधिक प्रभावपूर्ण रूप विधायत कारक और एकसूत्र में आबद्ध करनेवाली शक्ति के रूप में सक्रिय रही है।

बोली जानेवाली संस्कृत भाषा ही (इसे चाहे कोई भी नाम दिया गया हो) भारतीय आर्यभाषाओं की मूल रूप से उद्गम स्थली है उनके शब्दकोष का प्रमुख भाग और रूपात्मक व्यवस्था इसी स्रोत से ली गई है। यहां तक कि द्रविड़ भाषाएं जिनकी भिन्न रूपगत व्यवस्था है, तमिल को अंशतः छोड़कर अपनी ध्वनि व्यवस्था और शब्दावली में संस्कृत की ऋणी है। सच तो यह है कि भारत की कोई भी महत्वपूर्ण भाषा या साहित्य ऐसा नहीं है जो संस्कृत और उसके महान साहित्य से प्रभावित न हो। संस्कृत की सहायता के बिना पारम्परिक भारतीय संस्कृति का बोध असम्भव है। प्राच्यवादियों ने इसे भली-भांति स्वीकार किया है किन्तु तमिल भाषा और साहित्य ने विशेषकर द्रविड भाषा और साहित्य के क्षेत्र में जो पूरक भूमिका निभाई है उसका सम्यक् आंकलन नहीं किया गया है।

साहित्य की प्राचीनता की दृष्टि से संस्कृत के बाद तमिल का नाम आता है। दक्षिण में तमिल और उत्तर में उर्दू को छोड़कर शेष सभी भारतीय भाषाओं का जन्म भारतीय इतिहास के लगभग एक ही समय में हुआ है। उर्दू की केवल पांच सौ वर्ष पुरानी वंश परम्परा है।

राज्य-संरक्षण की दृष्टि से भी बहुत अधिक अन्तर है। छह राज्यों और केन्द्र की राजकीय भाषा के रूप में हिन्दी का

सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान है। कश्मीरी और सिंधी तो राजकीय भाषा के रूप में अलग हैं: असमिया (असम), उड़िया (उड़ीसा) उर्दू (जम्मू एवं कश्मीर), कन्नड़ (कर्नाटक), गुजराती (गुजरात), मलयालम (केरल), तमिल (तमिलनाडु), तेलुगु (आंध्रप्रदेश)। बाईस भाषाओं के साहित्य का संक्षिप्त परिचय यहां दिया जा रहा है।

असमिया

यह भारतीय आर्यभाषा परिवार की भाषा है। इसका उद्भव प्राच्य मगधी अपभ्रंश से हुआ। प्रभाव इस पर तिब्बती और बर्मन भाषाओं का भी है। असम प्रदेश के मूल निवासियों की भाषा खासिया, बड़ो, आहोम, संथाली के भी कुछ शब्द इसमें मिल गए। असमिया ब्रज की तरह कोमल भाषा है। असमिया का विकास सातवीं शताब्दी के पश्चात एक बोली के रूप में प्रारंभ हुआ। दसवीं शताब्दी के अंतिम चरण तक इसका निर्माण पूरी तरह से हो चुका था। आठवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक इसका साहित्यक विकास का पहला चरण माना जाता है। दूसरा चरण 1201 से 1650 तक और तीसरा 1651 से 1850 तक। 1851 से आज तक आधुनिक काल माना जाता है।

पहले चरण को आदिकाल कहते हैं। इस दौरान लोक गीत, लोक कथाएं, लोकोक्तियां, सूक्तियां और डाक के वचन हैं जिन्हें साहित्यक विकास की प्रारंभिक सीढ़ी कहा जा सकता है। 'बुद्धगान ओ दोहा, महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री द्वारा प्रकाशित एक उल्लेखनीय ग्रंथ है। कहते हैं इसे तांत्रिक बौद्धों नें आठवीं से बारहवीं शताब्दी के मध्य रचा। दूसरा चरण मध्यकाल का पूर्वार्द्ध कहलाता है। बारहवीं शाताब्दी के अंत तक असम के प्राचीन हिन्दू राज्य का अंत हो गया। कामता राजवंश प्रारंभ हुआ। हेम सरस्वती और हरिहर विप्र इस राज्य में प्रमुख दरबारी कवि थे। दुर्लभ नारायण ने तो राज्य से सम्मानित होकर 'प्रहलाद चरित', 'लवकुश युद्ध' और 'बभ्रुवाहन युद्ध' की रचना की। कवि सरस्वती ने 'जयद्रथ बध' की रचना की । चौदहवीं शताब्दी के श्रेष्ठ कवि माने गए माधव कंदलि। इन्होंने वाल्मीकि रामायण के पांच कांडों का असम भाषा में पद्यानुवाद किया। असमिया में यह अनूदित रामायण तुलसी की मानस की तरह लोकप्रिय है। इस कवि की दूसरी उल्लेखनीय रचना है – 'देवजित'। यह कृष्ण से संबंधित रचना है। दुर्गावर और पीतांबर भी इस काल के प्रमुख कवियों में से है। इनकी रचनाएं क्रमशः 'गीति रामायण' और 'उषा परिणय' उल्लेखनीय हैं।

पंद्रहवीं–सोलहवीं शताब्दी के आसम कवियों में शंकरदेव प्रमुख हैं। वह धर्मप्रचारक साहित्यकार थे। 'कीर्तन घोषा' इनका सर्वप्रमुख ग्रंथ है। कतिपय संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद भी इन्होंने किया। भागवती धर्म के प्रचारक के रूप में इनका अलग महत्व है। पारिजात हरण, रूक्मणी हरण, कालिय दमन, रामविजय, पत्नी प्रसाद शीर्षक से नाटक भी रचे। इनकी रचनाओं में बर गीतों का महत्व आधिक हैं। शंकरदेव के बाद वैष्णव कवि माधवदेव आते हैं। इनकी रचना 'घोषा' में सूर शैली में 1000 पद संग्रहीत है। 'घोषा' के अतिरिक्त 14 और ग्रंथ इन्होंने लिखे। राम सरस्वती और श्रीधर कंदलि अन्य प्रमुख कवियों में से हैं।

तीसरे चरण में मुख्यतः 'बुरंजी' अथवा ऐतिहासिक साहित्य रचा गया। कविराज चक्रवर्ती के अनुवाद और राजेश्वर सिंह द्वारा लिखित नाटक 'कीचक बध' कवि शेखर भट्टाचार्य ने 'हरिवंश' की रचना की। कामरूप बुरंजी, जयंतीया बुरंजी, बेलिमार बुरंजी आदि इस समय की रचनाओं में प्रमुख ऐतिहासिक ग्रंथ हैं।

इस साहित्य का आधुनिक काल इंग्लैंड और अमरीका के मिशनरियों द्वारा ईसाई धर्म के प्रचार के साथ प्रारंभ होता है। अंग्रेजों का पूर्णाधिकार असम पर 1854 के आसपास हुआ। रेवरेंड ब्राउन और टी. कोटट द्वारा प्रकाशित बच्चों के लिए पहली पुस्तक, 'अरुणोदय' पत्रिका ही नहीं, अंग्रेजी से अनुवाद भी उल्लेखनीय हैं। इन्होंने 1848 में ही 'द पिलिग्रिम्स प्रोग्रेस' का असमिया अनुवाद 'जात्रीकार र जात्रा ' का दिखाया। राजा राम मोहन राय के समकालीन आनंदराम फुकन की काव्य रचनाओं ने नये युग का सूत्रपात किया। 'जोनाकी' साहित्यिक पत्रिका के जरिए लक्ष्मीनाथ बेजबरूआ, चंद्रकुमार अग्रवाल, हेमचंद्र गोस्वामी और पद्मनाथ बरुआ ने नये युग का सूत्रपात किया।

आधुनिक असमिया साहित्य के जन्मदाता लक्ष्मीनाथ बेजबरूआ ही माने जाते हैं। इनकी सबसे लोकप्रिय हास्य रचना है–कृपाबर बरबरूआ काकतर रोपोलो। इनकी कविताएं प्रेम, प्रकृति, देशभक्ति की विविधता लिए हैं। निबंध, कहानी, नाटक और लोकशैली की इनकी अन्य रचनाएं भी महत्वपूर्ण हैं। इसी काल के चन्द्रकुमार अग्रवाल प्रेम, प्रकृति व सौंदर्य के गायक थे। राष्ट्रीय काव्य रचनाओं के लिए कमलाकांत भट्टाचार्य और दार्शनिक काव्य रचनाओं के लिए दुर्गेश्वर शर्मा व नीलमणि फुकन उल्लेखनीय हैं। हेमचन्द्र गोस्वामी ने असम का इतिहास लिखने में एडवर्ड गेट की सहायता ही नहीं की। अनेक मूल्यवान पांडुलिपियों का सुरक्षित भी कराया। प्राचीन साहित्य की खोज, संकलन व संपादन की दृष्टि से यह स्मरणीय हैं।

अंबिकागिरि चौधरी पत्रकार, क्रांतिकारी कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। 1915 में प्रकाशित 'तुमि' इनका पहला प्रतीकवादी काव्य संग्रह माना जाता है। रघुनाथ चौधरी, नलिनी बाला। यतींद्रनाथ दुवरा, हितेश्वर बरबरूआ, देवकांत बरुआ आदि इस युग के प्रमुख कवि रचनाकार है। धमश्वरी देवी की रचनाएं भक्तिप्रधान हैं। अमूल्य बरूआ, अब्दुल मालिक, नवकांत बरुआ, तिलकदास, हेमकांत बरूआ आदि की गणना प्रगतिवादी रचनाकारों में होती हैं। नाटकों की भी असमिया में अच्छी परंपरा रही है लेकिन उपन्यास प्रारंभ हुए बीसवीं शताब्दी में। आधुनिक उपन्यास के प्रारंभ का श्रेय असमिया में रजनीकांत बारदोलाई को ही है। दंडीनाथ कलिता, दवेचंद्र तालुकदार के बाद बीणा बरुआ, नवकांत बरूआ, हितेश डेका, योगेश चंद्र दास, राधिका मोहन गोस्वामी, बीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य आदि आते हैं। कहानी की दृष्टि से नगेंद्र नारायण चौधरी, त्रैलोक्यनाथ गोस्वामी और लक्ष्मी शर्मा के बाद दीनानाथ शर्मा, हली[illegible]का, छगनलाल जैन आते हैं। प्रगतिवादी कहानी [illegible] दत्त, प्रीति भट्टाचार्य, अब्दुल मलिक से गति [illegible] की तरह निबन्ध लेखन भी प्रारंभिक [illegible] लेकिन सत्यनाथ बरा के निबंधों से [illegible]

पहचान मिली। वाणीकांत काकती, विरांचिकुमार बरुआ के बाद इस विधा को आगे बढ़ाया–प्रफुल्ल दत्त गोस्वामी, हरिनारायण दत्त: कालिराम मेधी और उपेन्द लेखारू ने। बीरेन्द्रकुमार भट्टाचार्य आधुनिक असमिया साहित्य के प्रमुख रचनाकारों में से थे जिन्हें भारतीय ज्ञानपीठ का पुरस्कार भी प्रदान किया गया। आज असीमया साहित्य आत्मकथा लेखन तक आ पहुंचा है। इंदिरा गोस्वामी का आत्मकथा इस दृष्टि से उल्लेखनीय कृति है। कथाकारों मे शैलेंद्रकुमार भट्टाचार्य, कैलाश शर्मा, लक्ष्मीनंदन बारा, अपूर्वशर्मा तो कवियों में नीलमणि फुकन, हरेकृष्ण डेका, रफीकुल हुसैन, अनीस उज्ज़मान व रवींद सरकार राष्ट्रीय पहचान बना चुके हैं।

उड़िया

यह पूर्वी मागधी अपभ्रंश से प्रसूत भाषा है। अपभ्रंशों को साहित्यक प्रतिष्ठा क्या मिली, वे जन–सामान्य से दूर होने लगीं। जो जन भाषा उत्कल प्रदेश में तब बोली के रूप में थी उसमें स्थानीय और सम्पर्कित भाषा के शब्द थे। जैन–बौद्ध प्रचारकों के प्रभाव में होने की वजह से पालि और प्राकृत के शब्द भी थे। मराठों की शासन काल में इसमे मराठी के शब्दों के मेल से एक नई भाषा का विकास ही हो गया। इसके अधिकांश शब्द संस्कृत से उद्भूत है।

उड़िया विकास के आदिकाल का समय दसवीं से चौदहवीं शताब्दी तक माना गया है। मध्यकाल पन्द्रहवीं से अठारहवीं शताब्दी तक और आधुनिक काल उन्नीसवीं शताब्दी से प्रारंभ होता है। 'बौद्ध गान और दोहा' मे चार पद ऐसे है जिनपर तत्कालीन उड़िया प्रभाव है। बौद्धों के बाद कलिंग मे शैव प्रभाव रहा। इससे सबंधित महालिंगेश्वर भुखलिंगेश्वर और भुवनेश्वर नरसिंह देव के शिलालेख क्रमश 990 ई, 1036 ई और 1249 ई के है। तेरहवीं शताब्दी की 'कलसा चउतिशा' नामक काव्य मे शिव–पार्वती विवाह का वर्णन मिलता है। चौदहवीं शताब्दी मे 'रुद्र सुधानिधि' ग्रंथ नारायणानद अवधूत स्वामी रचित मिलता है। यह रचना गद्य के उपन्यास के ढंग की है।

सरलादास का 'महाभारत', जो वस्तुत 'महाभारत' का अनुवाद ही नहीं है, एक पदमय रचना है। इसी कवि की 'बिलंका रामायण', 'चंडी पुराण' जैसी कृतियां भी उल्लेखनीय हैं। चौदहवीं शताब्दी के अन्य कविपंचक प्रख्यात हुए–बलराम दास, जगन्नाथ दास, अनंत दास, यशवंत दास अच्युतानंद दास। बलराम दास ने उड़िया में पहली रामायण लिखी।

मध्यकाल में वैष्णव काव्य की अलग ही धारा है। जयदेव के 'गीत गोविन्द' का प्रभाव तो यहां नजर आता ही है, उड़िया समाज का दावा है कि जयदेव मूलत: ओड़िया ही थे। इस प्रभाव में वैष्णव भक्ति काव्य सत्रहवीं शताब्दी तक लिखा जाता रहा। शिशुशंकर दास, कपिलेश्वर दास, लक्ष्मण महान्ति, हरिहर नायक, कार्तिक दास, ताप राय, मधुसूदन, रामचन्द्र पट्टनायक आदि अनेक उत्कृष्ट कवि हुए। सत्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में रामचन्द्र पट्टनायक ने 'हारावती' नामक एक प्रबंध काव्य की रचना की। वृन्दावनदास ने 'गीत गोविन्द' का अनुवाद, मधुसूदन ने 'नल चरित्र' और सदाशिव राव ने 'हरिवंश पुराण' का उड़िया में अनुवाद प्रस्तुत किया। सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के कवियों में श्रीधरदास, विष्णुदास, रघुनाथ, धनंजय भंज, कान्हूदास और दीनकृष्ण प्रमुख हैं। इस काल में उपेंद्रभंज को अद्भुत काव्य प्रतिभा का धनी बताया गया है। रानी निशंक राय इस काल की अकेली कवियत्री है। कवि गोपाल कृष्ण उड़िया काव्य के मधुर गायक के रूप में स्मरणीय हैं।

इस काल में पुराणों पर आधारित रचना करने वाले कई कवि हुए। इनमें गौरांगदास, पीतांबरदास, जयसिंह, रामदास, गंगापाणि, बलभद्र भंगराज आदि उल्लेखनीय हैं। धर्मप्रचारकों की दृष्टि से आरक्षित दास और भीमाभाई प्रमुख हैं। हिन्दु मुस्लिम ऐक्य को आधार बनाकर ऐसे ग्रंथों की रचना भी इस काल में हुई जो 'पाला' के नाम से जानी गई। सत्यनारायण और सत्यपीट पूजा का इनमें समन्वय है। उड़िया में 16 पालाओ की रचना हुई।

सन् 1803 में अंग्रेजों ने मराठों से उड़ीसा राज्याधिकार ले तो लिया, लेकिन स्थिति इतनी विषम थी कि वे तुरंत इस पर अन्य राज्यों की तरह छा न सके। उड़िया के मध्यकालीन साहित्य का प्रभाव अधिक देर तक इसलिए भी बना रहा कि रूढिवादी होने की वजह से जन सामान्य आसानी से परिवर्तन के लिए तैयार नहीं था। 1857 की राज्य क्रांति के बाद उड़ीसा में भी ईसाई धर्मप्रचारक आ गए और अंग्रेजी शिक्षा की शुरुआत भी हो गई। लगभग इसी वक्त फकीर मोहन सेनापति का आगमन हुआ। समाज सुधारक तो वह थे ही, प्राचीन साहित्य के प्रेमी होने के साथ–साथ पाश्चात्य साहित्य के विरोधी भी नहीं थे। दोनों साहित्यों के सूक्ष्म अध्ययन के बाद उन्होंने एक नवीन शैली को जन्म दिया। वह आधुनिक उड़िया साहित्य के जन्मदाता माने जाते हैं। 'बुद्धावतार' जैसा काव्यग्रंथ, संपूर्ण रामायण और महाभारत का अनुवाद तो उन्होंने दिया ही उत्कल भ्रमण, पुष्पमाला उपहार, लछमा, आत्मजीवन चरित जैसी कालजयी कृतियां भी दीं। उनके बाद यह प्रवृत्ति विकास पाती है—राधानाथ राय में। मधुसूदन राव और राधानाथ की रचनाओं के प्रकाशन ने उड़िया साहित्य में बहुत कुछ नया जोड़ा। अंग्रेजी, संस्कृत रचनाओं के अनुवाद भी इस काल में मधुसूदन राव की कुछ रचनाओं की प्रशंसा तो गुरुदेव रवींद्रनाथ ने भी की है। 'निशीथ चिंता', उत्कल पिंड, आभोय गिरि, हेममाला, हिमाचल उदया–उत्सव, उत्कलगाथा, संगीत माला आदि उनकी प्रमुख कृतियां है। वह खण्डकाव्य, भावगीत, सानेट, नीतिकाव्य, लघुकथा और निबंध भी लिखते थे। बाद के अन्य कवियों में गंगाधर मेहेर, चिन्तामणि महान्ति, नदकिशोर बल भी उल्लेखनीय हैं।

1930 के बाद उड़िया के प्रारंभिक रचनाकारों का प्रभाव कुछ कम हुआ। अब गोपबंधु दास, गोदावरी मिश्र, कुन्तलाकुमारी देवी, लक्ष्मीकांत महापात्र, चंद्रमणि दास, शचि राउत राय, अनन्त पटनायक, कालिंदी पाणिग्रही, राधामोहन गणनायक आदि प्रमुख हो गए। गोपबंधु राष्ट्रीय आंदोलन में बाकायदा सक्रिय थे। यह गद्यकार व पत्रकार थे। असहयोग आंदोलन में बंदी बनाए गए तो 'बन्दी ए–आत्मकथा' लिख डाली। 'भारत माता' कविता भी खूब लोकप्रिय हुई। रविबाबू के 'सावूज' की तर्ज पर 'युगवीणा' का प्रकाशन उड़िया के रचनाकारों में प्रारंभ किया। बंगला अनुकरण में नव्य रचनाएं

उड़िया में आई। सवुजदल के वाद आए प्रभातवादी। नए विचार को लेकर शचि राउत राय, मनमोहन मिश्र व अनंत पटनायक सरीखे प्रगतिवादी कवि सामने आए। विद्युत प्रभा देवी इस काल की उल्लेखनीय कवियत्री हैं।

उड़िया में नाट्य साहित्य मुख्यतः वर्तमान काल में आया। इससे पूर्व इस विधा पर गंभीर काम नहीं हुआ। वैष्णव पाणि व वालकृष्ण महान्ति ने सर्वप्रथम नाट्य रचनाएं कीं। *'इंग्रेज कार्तिक कटक विजय'* भिखारी चरण का ऐसा नाटक आया जिसमें पूर्व और पश्चिम की नाट्य शैलियों को लिया गया है। नाटककार पद्मनाभ नारायण देव, नाटक व उपन्यासकार कामपाल मिश्र ने प्रारंभिक दौर में महत्वपूर्ण रचनाएं दीं। वाद में रामशंकर राय, लाला जगमोहन, अश्विनी कुमार, कुमार घोष ने उल्लेखनीय काम कर उड़िया नाट्य परंपरा को समृद्ध किया। वाद में भंजह किशोर पट्टनायक, रामचन्द्र मिश्र, मनोरंजन दास, नरसिंह महापात्र व गोपाल क्षत्राई उल्लेखनीय नाटककार रहे।

वीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ही फकीरमोहन सेनापति उपन्यास विधा को सजग कर चुके थे लेकिन फिर लंवे समय तक इस विधा को उल्लेखनीय रचनाकार नहीं मिला। 'माटीर *माणिप (कालिंदी चरण पाणिग्रही)* से पहले सवुजदल के लेखकों का संयुक्त प्रयास ही हो पाया। वाद में गोपीनाथ महान्ती कुंतलाकुमारी देवी, नंदकिशोर आदि ने उपन्यास लेखन किया। उड़िया के प्रबंध लेखकों व समालोचकों में नीलकंठ दास मधुसूदन, चिंतामणि, रत्नाकर पति, विश्वनाथ, मृत्युंजय रथ, शशिभुषण राय सरीखे उल्लेखनीय कई साहित्यकर्मी हैं। गोपीनाथ महान्ती व स. राउतराय को तो ज्ञानपीठ सम्मान से सम्मानित किया गया। चंद्रशेखर रथ, रवि पटनायक, जगदीश महान्ती, वसंत कुमार शतपथी जैसे कथाकार व रमाकांत रथ, जगन्नाथ प्रसाद दास, सीताकांत महापात्र, सौभाग्य कुमार मिश्र, राजेन्द्र किशोर पांडा जैसे आधुनिक कवि उड़िया साहित्य को नई दिशा दे रहे हैं।

उर्दू

उर्दू विदेशी भाषा नहीं है। यह शौरसेनी अपभ्रंश से जन्मी हिन्दी के वाद। जव पंजाव से दिल्ली–कन्नौज तक मुसलमान किसी न किसी रूप में प्रभावी हो गए तो वोलचाल की भाषा में अरवी–फारसी के अनेक शब्द प्रवेश कर गए। वदलती भाषा के इस वक्त ही सूफी संतों का आगमन हुआ। वह अपनी भाषा में वोलचाल की प्रचलित भाषा को घुलाते–मिलाते रहे। सच कहे, तो गुलाम वंश के पहले सुल्तान कुतुवुद्दीन ऐवक के समय से उर्दू का यह रूप अंकुरित होने लगा था, लेकिन विकास सुल्तान वलवन के समय और नामकरण हुआ शाहजहां के समय। उर्दू को 'जवाने सेना' भी कहा जाता था क्योंकि इसका अर्थ था 'सेना' केवल सेना द्वारा ही प्रयोग न किए जाने की वजह से यह आम भाषा हो गई। खुसरो को भी संभवतः प्रारंभ में इसके प्रयोग में कुछ संकोच हुआ हो क्योंकि विद्वान इसे 'रखेता' कहते थे। रेखत[illegible] का अर्थ होता था 'गिरी हुई भाषा' उर्दू भाषा–साहित्य का वि[illegible] चार खंडों में समझा जाता है–मुगल पूर्व काल, मुगल [illegible] कालीन, मुगल साम्राज्य के पतन के वाद और दौलत[illegible] से आज तक।

पहला चरण मुगल पूर्वकाल उर्दू भाषा का निर्माणकाल था। दिल्ली और आसपास की स्थानीय भाषा में अरवी फारसी के शव्द घुल–मिल रहे थे। कुछ नए शव्द भी वन रहे थे। सूफी संतों की तरह कवीर, नामदेव, नानक की भाषा से भी उर्दू के विकास को वल मिला। इनकी निगाह में न जवान में भेद था न इंसान में। पहले पहल कासिम के सिंध से ही लौट जाने के कारण सिन्ध में भाषाई असर नजर आया लेकिन वाद में जव आठवीं शताव्दी में अरवों ने ईरान पर आक्रमण कर दिया और वहां इस्लाम के प्रचार की कोशिश तलवार के वल पर की तो ईरानी परिवार भागकर गुजरात और वंवई प्रदेश में आ वसे। यह वही परिवार थे जिनके वंशज आज फारसी कहलाते हैं। इनके साथ फारसी भाषा भारत में आई। अल्लाउद्दीन खिलजी दक्षिण में प्रवेश करनेवाला पहला मुस्लिम शासक था। इसके कर्मचारियों के माध्यम से फारसी दक्षिण पहुंची। मिली–जुली जो भाषा जहां जफर खां और गंगू ने वनाई वह हिन्दवीं कहलाई। इसे 'दक्खिनी' भी कहते हैं। सूफी संत ख्वाजा गंसूदराज (इनका समय 1320 से 1422 के वीच का) ने उर्दू में काव्य रचना की थी। 'मिराजुल आशकीन' के अतिरिक्त तीन अन्य ग्रंथ भी इनके हैं। मीरांजी *और उनके वेटे वुरहानुद्दीन जानम भी अच्छे शायर हुए।* अव्दुल हुसैनी ने इसी काल में शेख अव्दुल कादरी के 'निशातुल कुशशाकं' का तो निज़ामी ने 'किदम राव और पदम' का उर्दू में अनुवाद किया।

दूसरा चरण मुगलकालीन विकास का है जिसका समय है – 1500 से 1800 के वीच का। वावर फारसी का अच्छा विद्वान था। आत्मकथा के अतिरिक्त भी उसने स्फुट काव्य रचना की थी। फारसी मे होते हुए भी वावर की रचनाओं में देहलवी का असर है। हुमायूं के समय भी दिल्ली की भाष[illegible] में रचना के प्रमाण मौजूद हैं। उल्लेखनीय विकास उर्दू [illegible] हुआ अकवर के समय। राजा टोडरमल को इसका श्रेय [illegible] जाता है। राजधानी वदलकर आगरा आ जाने से उर्दू में [illegible] का मिश्रण भी होने लगा। रहीम वैताल और गंग [illegible] समय के वड़े कवि हैं। जहांगीर के वक्त उर्दू के [illegible] हुए कुतुवशाह। शाहजहां ने राजधानी फिर दिल्ली [illegible] उसने राजधानी को [illegible]हानावाद' और [illegible] नाम दिया। दरवारी [illegible] (विरहन[illegible]) [illegible] उल्लेखनीय है [illegible] के समय में [illegible] आदिलशाह [illegible] रचनाएं की [illegible] चापलूसी [illegible]

वाद में [illegible] वली [illegible] देने [illegible] वली [illegible] रचनाकार [illegible]

[illegible]

मानव विकास

मानव विकास की दृष्टि से भारत चार सीढ़ी ऊपर खिसका है। यह बताता है कि देश में स्थितियां बदल रही हैं।

वर्ष 2000 के लिए जारी संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम यूएनडीपी की मानव विकास रिपोर्ट में भारत का स्थान ऊपर खिसक कर 128 वां हो गया है। यह रिपोर्ट नागरिकों की औसत आयु, स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता, शिक्षा और नागरिकों की अपनी बुनियादी जरूरत की चीजें खरीद सकने की आर्थिक क्षमता जैसे पैमानों के आधार पर तैयार की जाती है।

मानव विकास सूचकांक की सन् 2000 की यह रिपोर्ट राजधानी दिल्ली में यूएनडीपी की स्थानीय प्रतिनिधि डा. ब्रेंडा गेल मैकस्वीनी ने राज्यसभा की उपाध्यक्ष डा. नजमा हेपतुल्ला और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति एम एन वेंकटचलैया को समर्पित की।

इस रिपोर्ट में कुल 174 देशों के नागरिक विकास की स्थितियां दर्ज की गई हैं। मानव विकास सूचकांक की दृष्टि से इन 174 देशों के बीच भारत का स्थान 128वां है। इसकी तुलना में दक्षेस के दूसरे पड़ोसी देशों का स्थान भारत से नीचे ही है। इस सूची में बांग्लादेश का स्थान 146वां, भूटान का 142वां और नेपाल का 144वां है जबकि पाकिस्तान 135वें नंबर पर है। आश्चर्यजनक रूप से निरंतर गृहयुद्ध में फंसे होने के बावजूद श्रीलंका का स्थान इस रिपोर्ट में 84 वां है। चीन 99वें नंबर पर है।

मानव विकास रिपोर्ट में कनाडा लगातार सातवें वर्ष भी अव्वल रहा है। जिन दूसरे देशों में मानव विकास की स्थितियां अच्छी हैं, उनमें अमरीका और नार्वे हैं। सिएरा लियोन और नाइजीरिया जैसे देश इस सूची में सबसे नीचे हैं।

सहस्राब्दी वर्ष में जारी हुई मानव विकास की यह रिपोर्ट यूएनडीपी की ग्यारहवीं सालाना रिपोर्ट है। सकलराष्ट्रीय उत्पाद और प्रति व्यक्ति आय के किताबी पैमाने से अलग किसी देश में वहां के नागरिकों के जीवन में आए वास्तविक बदलाव को नापने के लिए मानव विकास सूचकांक की उसकी अवधारणा पाकिस्तानी अर्थशास्त्री डा. महबूब उल हक ने तैयार की थी।

यूएनडीपी की इस ताजा रिपोर्ट में भारत की कई मामलों में प्रशंसा की गई है। रिपोर्ट के पहले ही पन्ने पर इंगित किया गया है कि यहां का सुप्रीम कोर्ट शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को नागरिकों के बुनियादी अधिकारों के रूप में निरूपित करता है। रिपोर्ट में लिखा गया है कि जनहित याचिकाओं ने दबे-कुचले लोगों की आवाज सुनाने में और प्रशासकीय संवेदनहीनता तोड़ने में यहां महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

रिपोर्ट में भारत में स्त्री-पुरुष समानता के मामले में हुई प्रगति को भी सराहा गया है। जेंडर इक्वलिटी की सूची में भारत का स्थान 108वां है।

इस बार की मानव विकास रिपोर्ट का केंद्र बिंदु मानवाधिकार है। रिपोर्ट में पहली बार इस बात को स्वीकार किया गया है कि मानव विकास, मानवाधिकारों से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। रिपोर्ट में यह स्वीकार किया गया है कि दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। रिपोर्ट के अनुसार किसी देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था का बरकरार रहना बताता है कि वहां नागरिकों के विकास की स्थितियां मौजूद हैं। मानव विकास को सिर्फ आर्थिक या भौतिक उपकरणों से नहीं नापा जा सकता।

रिपोर्ट में विश्वस्तर पर बढ़ती असमानता और संसाधनों के असमान वितरण का मुद्दा भी उठाया गया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि विश्व में आज भी 10 करोड़ बच्चे सड़कों पर जीवन बसर कर रहे हैं और दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में 50 लाख लोग ऐसे हैं जो अपने ही देशों में शरणार्थियों जैसा जीवन बिता रहे हैं।

आबरू, मजमून मकरम सौदा साज जुरअत और मसहफी। सौदा का असल नाम था मिर्जा मुहम्मद रफी।

तीसरा चरण उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ उर्दू का विकास है। इतिहास की दृष्टि से यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण काम है। काव्य ने तो विकास किया ही गद्य की दिशा में भी उल्लेखनीय काम हुआ। कहानी, उपन्यास आलोचना पत्रकारिता की शुरूआत हुई। इस शताब्दी के बड़े शायर नजीर अकबराबादी नसीम नसीर, जौक, गालिब, मोमिन, दाग, अमीर हाली नजर और अकबर इलाहाबादी आदि हैं। गालिब का शायरी में ही नहीं गद्य साहित्य में भी बड़ा योगदान है। नासिख ने तो उर्दू व्याकरण पर भी किताब लिखी। हाली को उर्दू साहित्य में राष्ट्रीयता के लिए याद किया जाता रहेगा। 13वीं शताब्दी से प्रारंभ हुए उर्दू गद्य को सही विकास मिला कलकत्ता के फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना के बाद। फारसी व संस्कृत के प्रमुख ग्रंथों का उर्दू में अनुवाद हुआ।

सर सैयद अहमद ने 1857 के बाद साइंटिफिक सोसाइटी स्थापित की और न केवल स्वयं बल्कि दूसरों से भी उर्दू में विविध प्रकार की किताबें लिखाई। मुहम्मद हुसैन आजाद ने आबे हयात, हाली ने 'मुकद्दस' और 'यादगारे गालिब' की रचना की। पत्रिका 'तहजीबुल अखलाक' के शुरू होने से पूरा माहौल गुनगुना उठा। 1948 में 'अवध अखबार' का प्रकाशन शुरू हुआ तो मुहम्मद हादी ने 'अजीजुल लुगात' नाम से उर्दू के शब्दकोश तैयार किए सरशार के उपन्यासों ने इसी समय धूम मचा दी थी।

उर्दू साहित्य के साथ भाषा के विकास का चौथा-चरण बीसवीं शताब्दी में प्रारंभ होता है। इस काल की राजनैतिक स्थिति और विश्व परिदृश्य का व्यापक प्रभाव उर्दू के विकास पर भी पड़ा। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में उर्दू काव्य को हाली और इकबाल मिले। मौलाना हसरत मोहानी आधुनिक काल के प्रमुख कवि हैं। 1951 में हसरत मोहानी नहीं रहे। लेकिन उससे काफी पहले शायरों की एक बार पूरी पंक्ति खड़ी की- असगर, फैज, जिगर दाग, रजा। पं. ब्रज नारायण चकबस्त

की राष्ट्रीय रचनाएं उर्दू साहित्य की धरोहर हैं। जोश मलीहाबादी तो 'शायरे इन्कलाब' ही कहलाए। अल्लामा कैफी, रोशन देहलवी, अकबर इलाहाबादी, मौलाना मुहम्मद इस्माइल आदि से होते हुए उर्दू काव्य को हफीज़ होशियार पूरी, हफीज़ जालंधरी, अख्तरशीरानी, मकबूल और अकबर इलाहाबादी ने पुख्ता किया।

सन् 1935 के आसपास प्रगतिवादी रुझान का दौर आया और फिराक गोरखपुरी, मजाज, फैज, मखदूम आदि की रचनाएं खिल उठीं। उर्दू गद्य के विकास और प्रचार का काम सर सैयद अहमद के बाद नवाब मुहसिनुल मुल्क ने किया। हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय व जामिया मिलिया ने भी इस दिशा में उल्लेखनीय काम किया। प्रारंभिक आधुनिक उर्दू गद्यकारों में अब्दुल मज़ीद दरियाबादी, सैयद सुलेमान नदवी, ख्वाजा हसन निजामी, अब्दुल कलाम आज़ाद आदि आते हैं। अली सरदार जाफरी, कैफी आज़मी साहिर, गुलाम रब्बानी तांबा और मजरूह सुल्तानपुरी के बाद आज फिर एक नई पीढी तैयार हो रही है।

उर्दू का पहला नाटक 'इन्दरसभा' वाज़िद अलीशाह के वक्त ही खेला जा चुका था। लेकिन इस विधा की असल शुरूआत हुई आगाहश्र कश्मीरी से। इनके अतिरिक्त प्रमुख नाटककार हुए–इस्तियाक हुसैन कुरैशी, मुहम्मद अहसन, नारायण प्रसाद बेताब, शौकत थानवी और उपेन्द्र नाथ अश्क आदि। आजादी के बाद हबीब तनवीर का 'आगरा बाज़ार' एक यादगार नाटक है। उर्दू उपन्यास की शुरूआत में नज़ीर अहमद, रतननाथ सरशार, अब्दुल हलीम शरर आए तो बाद में सज्जाद हुसैन, रुसवा और राशिद उल्खैवी। नया युग प्रेमचन्द से शुरू हुआ जो उर्दू में धनपत राय के नाम से लिखते थे। 'मैदान अमल' से इन्होंने नई शुरुआत की। 'गोदान' भी पहले उर्दू में आ चुका था। आधुनिक उपन्यासकारों में इस्मत चुगताई, कुर्रतुल एन हैदर, इंतजार हुसैन, ख्वाजा अहमद अब्बास उल्लेखनीय है। इनके बाद की पीढ़ी भी आज सक्रिय है।

कहानीकारों में नियाज रल्दरूस के बाद धनपतराय, सुदर्शन, पं. बद्रीनाथ और फिर सआदत हसन मंटो, राजेन्द्र बेदी, कृशन चंदर, मुमताज़ मुफ्ती, चुगताई, अब्बास, अश्क, हसन असकरी आदि सामने आए। बाद में खदीजा मस्तूर, कासकी, हाजरा मसूर, इंतजार हुसैन ने एक नई रवायत ही बना दी। आज भी कई कहानीकार नये आकाश नाप रहे हैं। आलोचना, पत्र-पत्रिकाओं और इतिहास परक लेखन ने भी उर्दू के विकास में नया योगदान किया।

कन्नड़

दक्षिण भारतीय द्रविड़ परिवार की प्रमुख भाषा है कन्नड़। इसका उद्गम मूल द्राविड़ी से हुआ। कन्नड़ भाषी प्रदेश की ज्यादातर भूमि काली है, इसीलिए 'कन्नड़े करनाडु' कहा जाता है। भाषाई विकास की दृष्टि से इसकी तीन अवस्थाएं हैं–आदिकालीन, प्राचीन और वर्तमान कन्नड़। आरंभ से सातवीं शताब्दी तक आदिकालीन, आठवीं से चौदहवीं शताब्दी तक प्राचीन और बाद का समय वर्तमान कन्नड़ का माना जाता है। लेकिन कन्नड़ साहित्य का आदिकाल नवीं शताब्दी तक, मध्यकाल का पूर्वार्द्ध दसवीं से बारहवीं शताब्दी तक और उत्तरार्ध तेरहवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक व बाद का समय आधुनिक काल कहलाता है।

इस भाषा में मिला पहला शिलालेख मैसूर के बेल्लूर के पास हलमिदी नामक गांव में है। कुछ विद्वान इसे ईसा की दूसरी शताब्दी का शिलालेख भी कहते हैं। दूसरा शिलालेख बीजापुर के बादामी से मिला। यह लगभग 700 ई. का है। संस्कृत का साहित्यिक प्रभाव इन पर प्रतीत होता है। 'कविराज मार्ग' कन्नड़ का एक प्राचीन रीतिग्रंथ है। इसके रचयिता राजा नृपतुंग को माना जाता है। इनका समय नवीं या दसवीं शताब्दी के आसपास का है। इस ग्रंथ में कई पूर्ववर्ती कवियों का उल्लेख भी है। नृपतुंग के परवर्ती कवियों ने अपने से पहले के कवियों की प्रशंसा भी की है। समन्त भद्र, कवि परमैष्ठी, पूज्यवाद, गुणवर्मा आदि इसी तरह के कवि हैं।

मध्यकाल के पूर्वार्द्ध में हुए महाकवि पम्प कन्नड़ के पहले बड़े कवि माने जाते हैं। इनके काव्य का प्रभाव ढाई सौ वर्षों तक कन्नड़ पर बना रहा। तीन शताब्दियां 'पम्प युग' के नाम से जानी जाती हैं। 'आदि पुराण' व 'समस्त भारत' इनके प्रमुख ग्रंथ हैं। पम्प के समकालीनों में पोन्ना और रन्न प्रमुख हैं। कन्नड़ का प्रथम गद्य ग्रंथ 'चातुण्डराय पुराण' है जो चातुण्डराय ने इसी काल में लिखा था। ग्यारहवीं शताब्दी के प्रमुख कवि हैं: नागवर्मा, नागचन्द्र। इनके ग्रंथ 'छंदोम्बुधि' और 'कन्नड़ कादम्बरी' व 'मल्लिनाथ पुराण' और 'रामायण' हैं। बारहवीं शताब्दी में प्रमुख कवि हुए जन्न। इनकी प्रमुख कृति 'यशोधरा चरित्र' है। इसी काल में कई कवियित्रियों का उद्भव भी हुआ। इनमें कान्ति प्रमुख है। द्वितीय नागवर्मा ने संस्कृत रहित कन्नड़ का रूप निर्धारित करने का प्रयत्न किया। इन्होंने एक व्याकरण ग्रंथ भी तैयार किया।

मध्यकाल का उत्तरार्ध तेरहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी के बीच तक रहा। बारहवीं शताब्दी के 'वीरशैव आंदोलन' का व्यापक प्रभाव रहा और कन्नड़ का क्षेत्र तो व्यापक हुआ ही, उसका आधुनिक रूप भी तय हुआ। जहां काव्य की विविध शैलियों का जन्म हुआ, वहीं गद्य का विकास भी। रचनाकार संस्कृतशैली की कविता से मुक्त हुए और 'वचन साहित्य' का प्रणयन हुआ। बस्वेश्वर इसके जन्मदाता कहे जाते हैं। नैतिक शिक्षा इनका उद्देश्य था। हरिहर ने भी उल्लेखनीय रचना कर्म किया। चंपूशैली में इनकी रचना 'गिरिजा कल्याण' और रघवांक की रचना 'हरिशचंद्र काव्य' व 'हरिहर महत्व' महत्वपूर्ण हैं। दूसरी धारा' वैष्णव काव्य' की है। कुमार व्यास का 'महाभारत' इसी धारा की रचना है। कवि लक्ष्मीश का 'जेमिनी महाभारत' भी इसकी उल्लेखनीय रचना रही। ये दोनों चौदहवीं शताब्दी की रचनाएं हैं। पन्द्रहवीं शताब्दी के कवियों में रत्नाकर वर्णी का नाम विशेष रूप से [illegible] है। इनका 'भारत वैभव' और सौलहवीं [illegible] पुरन्दरदास के पद साहित्य और भक्ति का [illegible] कहे जा सकते हैं। मैसूर के शासक [illegible] अच्छे कवि थे। 'गीतगोविंद' और '[illegible] इनके समकालीन चिकुपोध्याय ने [illegible]

सत्रहवीं शताब्दी के प्रमुख [illegible] भट्टालक, दसप्प, सर्वज्ञ। [illegible] मुंप्पडि कृष्णाराव (मैसूर नरेश) [illegible]

का 'रागाश्वमेघ' प्रमुख ग्रंथ हैं। ऊपरी तौर पर कन्नड़ के मध्यकालीन तीन श्रेणियों में रखे जा सकते हैं–जैन कवि, वीर शैव कवि और ब्राह्मण कवि। एक हजार वर्ष की अवधि में कन्नड़ भाषा और उसके साहित्य ने तेजी से विकास किया। फिर उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यकाल से कन्नड़ साहित्य का वर्तमानकाल प्रारंभ हुआ। इसका पहला चरण 1851 से 1900 ई. तक, दूसरा चरण 1900 से 1920 तक, तीसरा 1921 से 1938 तक और चौथा चरण 1939 से आज तक माना जाता है।

अठारहवीं शताब्दी में कन्नड़ भाषी धरती के कई खंडों में विभाजित हो जाने के कारण कन्नड़ साहित्य का विकास अवरुद्ध जरूर हुआ लेकिन रुका नहीं। इसी दौर में ईसाई धर्मप्रचारकों ने अपना प्रभाव स्थापित करने के लिए कन्नड़ भाषा और साहित्य का गंभीर अध्ययन किया। रेवरेंड किटल ने 'कन्नड़–अंग्रेजी शब्दकोश' तैयार किया। डॉ. कांडवेल ने द्रविड़ भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण लिखा। अंग्रेजी उपन्यास, कहानी, नाटक निबंध आदि का कन्नड़ अनुवाद प्रारं [illegible] ने 'मुद्रमंजूषा' जैसे ग्रंथ भी [illegible] कहानी, नाटक, निबंध लिखे जाने लगे। कैलासम, गोकाक, आच. पी. सदाशिवराव इस काल के युवा साहित्यकार थे। 1865 में 'कर्नाटक प्रकाशिका' प्रारंभ हुआ। यह कन्नड़ भाषा के आधुनिक विकास की तैयारी कही जा सकती है। 1914 में 'कन्नड़ साहित्य परिषद' की स्थापना हुई।

दूसरे चरण के प्रमुख रचनाकार हैं–एस.कट्टी, बी.एम.तट्टी, शांत, काव्यानंद, आलूट, वी. रामाराव, मगेश राव, नरसिंहाचार्य। तीसरा चरण स्वर्ण युग कहलाता है। 'तालिरु', 'गेलेयर गुम्पु' और 'मगठीर' मंडल का काम सुयोग्य हाथों में जा पहुंचा। नरसिंहाचार्य, के.वी. पुट्टप्प, राजरत्न, मधुरचेन्न और कर्डेगोण्डलु इस काल के महत्वपूर्ण रचनाकार हैं।

उपन्यास लेखन में जहां वेंटगिरि कस्तूरी, कारंत, मास्ति, वी.के.गोकाक, के.वी.पुट्टप्प आदि प्रमुख रहे तो कहानी लेखन में मास्ति की दार्शनिक कहानियां पहले आईं। अन्य प्रमुख कहानीकार रहे–वेंटगिरी, कृष्णकुमार, आनंद, गरुड़, गोपालकृष्णराव, गौरम्मा देवी। कन्नड़ नाट्य साहित्य में पूर्णनाटक, एकांकी और गीति नाट्य इस काल में पाए जाते हैं। दूसरी विधाओं में भी सक्रिय कई रचनाकारों के अतिरिक्त जो नाटककार सक्रिय थे वे हैं–रंग, कृष्णराव, के. वी. राघवाचार्य, डी.वी.जी. आदि। निबंध लेखन की दृष्टि से यह उल्लेखनीय समय रहा। एन.एन. मूर्तिराव, नारायण भट्ट, एन.के. कुलकर्णी, टी.एन.श्रीकंठय्य, कृष्णराव, पुट्टप्प और गोकाक के निबंधों में विविधता नज़र आती है। इस दौर में चरित्र, साहित्य, रेखाचित्र, आत्मकथा, रिपोर्ताज, यात्रा साहित्य, आलोचना आदि भी आने शुरू हो गए।

चौथे चरण में कतिपय रचनाकार और नये जुड़ गए। काव्य साहित्य में नई ऊर्जा से रचनाएं आईं। पुट्टप्प ने अनुकांत 'रामायण' की रचना की। चौसर की तर्ज पर मास्ति ने 'नवरात्रि' की रचना की। येंद्रे ने 'सखी गीता' लिखी तो गुण्टप्प ने 'कग्गा'। नरसिंह पाम अडिग, श्रीधर, विनायक आदि के अतिरिक्त गोविन्द पै, हेमन्त और सीतारामय्य आदि प्रमुख कवि रहे।

इस काल में राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण काव्य में नया उन्मे[illegible] तो था ही, अभिव्यंजना और पौराणिक पात्रों का मानवीकर[illegible] भी खूब हुआ। नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि के क्षे[illegible] में नए रचनाकार आए। इनमें एल.जे. येंद्रे, पर्वतवा[illegible] इनामदार, कट्टीयनी, के.टी.पुराणिक, अनंतमूर्ति, नाडिग अ[illegible] याडधि प्रमुख हैं। आज कन्नड़ साहित्य में विविध वैचारि[illegible] लेखन तो हो ही रहा है, लेकिन प्रमुखतः पारंपरिक [illegible] प्रगतिशील यथार्थवादी रचनाकार हैं। आज सिद्धलिंगय्[illegible] लक्ष्मीनारायण भट्ट, एच.एस. शिवप्रकाश, के.एस. नरसि[illegible] स्वामी, गोपालकृष्ण आडिग, शांतिनाथ देशाई, बोलुव[illegible] मुहम्मद कुंई, यशवंत चित्ताल तो सक्रिय हैं ही, यू.आर[illegible] अनंतमूर्ति जैसे रचनाकारों ने कन्नड़ साहित्य को नई पहचा[illegible] दिलाई है। पुट्टप्प, द. रा. बेंद्रे, शिवराम कारंत और मास्ति वेंकटेश अय्यंगार सरीखे रचनाकार तो पहले से ही राष्ट्री[illegible] स्तर पर उल्लेखनीय रहे हैं।

कश्मीरी

यह भारोपीय भाषा–समूह के 'दरद' परिवार की ए[illegible] प्रमुख भाषा है। इसका जन्म 'पैशाची अपभ्रंश' से माना गया है। इस पर फारसी और संस्कृत का प्रभाव है। तेरहवीं शताब्दी के पूर्व का कोई कश्मीरी साहित्य उपलब्ध नहीं है लेकिन तेरहवीं शताब्दी की प्रौढ़ कृति को देख कर यह अनुमान लगाया गया कि इससे पूर्व भी रचना होती रही होगी। कश्मीरी साहित्य का अध्ययन दो कालखंडों में किया जा सकता है–तेरहवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक प्राचीन साहित्य व उसके बाद आज तक आधुनिक साहित्य।

कश्मीर में आरंभ से ही संस्कृत सम्मानित भाषा रही है। राजभाषा बदल जाने पर फारसी ने ध्यान आकर्षित किया। संस्कृत के प्रभाव की कश्मीरी भाषा अलग पहचान में [illegible] और फारसी के प्रभाववाली एकदम अलग नजर आई। कश्मीरी में उपलब्ध पहला ग्रंथ शितिकंठ नामक कवि ने 'महानय प्रकाश' लिखा। यह जयरथ के शिष्य थे। इसके बाद शैव दर्शन पर आधारित ग्रंथ मिलता है–'महाअर्थ मंजरी' जो महेश्वरानंद द्वारा रचित है। इसके बाद चौदहवीं शताब्दी में मिलता है 'ललवराण्य' जो विशुद्ध कश्मीरी में मिलता है। यह ललधद या ललेश्वरी की उल्लेखनीय कृति है।

शेख नूरुद्दीन काश्मीर में सूफी मत का प्रचार करने[illegible] प्रथम सूफी साधक थे। कश्मीरी में रचित इनकी कृति[illegible] धरोहर हैं। 'बाणासुर वध' पन्द्रहवीं शताब्दी की रचना है। [illegible] कश्मीरी का पहला महाकाव्य है। इसकी रचना [illegible] की थी। यह हरिवंश पुराण पर आधारित है। इस पर संस्कृत का प्रभाव मौजूद है। सुल्तान जैनुलाबिदीन [illegible] फारसी–कश्मीरी साहित्य के प्रति पर्याप्त प्रेम था। श्रीवर [illegible] के दरबारी कवि थे। इन्होंने, कहते हैं बिल्हण की 'राजतरं[illegible]' का कश्मीरी में पद्यानुवाद किया था। सुल्तान के दरबा[illegible] महमोरा और योध भी थे जिन्होंने क्रमशः 'जैन चरित्र' [illegible] 'जैन विलास' की रचना की।

हब्बा खातून सोलहवीं शताब्दी की सर्वश्रेष्ठ कवि[illegible] कश्मीरी काव्य में गीतिकाव्य आरंभ करने का श्रेय इ[illegible]

है। फारसी की बहरों के आधार पर कश्मीरी में छन्द विधान किया और विरह के अद्‌भुत अनुभवों को अभिव्यक्ति दी। कहते हैं हव्वा खातून ने ही 'कश्मीरी मौसीकी' नामक ग्रंथ का संपादन भी किया था। अठारहवीं शताब्दी में अरणिमाल गीति-काव्य रचने में हव्वा खातून के बाद प्रमुख रचनाकर्मी हुई। रूपभवानी की रचनाओं में ललेश्वरी का अनुगमन नज़र आता है। करम बुलंदखान, स्वच्छक्राल, शाह गफूर आदि रहस्यवादी रचनाकार भी अठारहवीं शताब्दी में हुए। महमूद गामी ने फारसी कवि मिजामी के 'पंजगंज' का कश्मीरी रूपांतर किया। रसूल मीर, वहाबखार व परमानंद उन्नीसवीं शताब्दी के कवि हुए। हसन सूफी, रहमान डार, मकबुल शाह, शमस फकीर और दरवेश भी इसी समय के रहस्यवादी कवि हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में एक तरफ सूफी कवि अध्यात्म-रचनाकर रहे थे तो दूसरी तरफ कश्मीरी रचनाकार कृष्ण-काव्य व राम-काव्य में रमे हुए थे। साहिब कौल का 'कृष्णावतार' सत्रहवीं शताब्दी में रचा गया था और उसके बाद परमानंद का 'सुदामाचरित्र' आता है। इन्होंने 'शिवलगन' भी लिखा। अठारहवीं शती में ही दिवाकर प्रकाश रचित 'रामावतार चरित' फारसी काव्य शैली का प्रभाव लिए है। उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वाध में 'शंकर रामायण' प्रमुख कृति आई। इसी के आसपास कश्मीरी में प्रेम काव्य भी खूब रचा गया। महमूद गामी की 'यूसुफ जुलेख' 'शीरी-खुसरो' व 'लैला-मजनू' जैसी फारसी असर की रचनाएं उल्लेखनीय हैं। इस दौरान फारसी अंदाज के कुछ शाहनामें भी लिखे गए।

1851 के आसपास कश्मीरी का आधुनिक युग प्रारंभ होता है। इसके पहले चरण में परमानंद के निधन के बाद उल्लेखनीय रचनाकार रहे- अजीजुल्लाहा हक्कानी, कलंदरशाह, अब्दुल अहमद नजीम, मोहियुद्दीन, ख्वाजा अकरम, रहमान दर। कृष्ण राजदान और नाजिम ने उल्लेखनीय काम यह किया कि लोक साहित्य की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया।

दूसरा चरण मकबूल करलावारी की यथार्थवादी कविताओं से प्रारंभ होता है। परिजादा गुलाम अहमद महजूर उन कवियों में प्रमुख थे जो राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत रचनाएं कर रहे थे। इनकी 'ग्रीस्तिकूर' (किसान की बेटी) और 'काशिर जनान' (कश्मीरी औरत) प्रमुख रचनाएं हैं। इनके बाद जो कवि सामने आए, उनमें अब्दुल अच्छे आज़ाद, पं. दयाराम, जिन्दा कौल, मिर्जा गुलाम हसन बेग आदि प्रमुख हैं। इस काल में पाश्चात्य साहित्य के असर में भी कुछ रचनाएं की गई। अम्यार दार और फाजिल ने रचना में रोमांस लाने का शुरुआती काम किया। कश्मीरी गद्य की शुरुआत अनुवाद से हुई। रेवरेंड टी.आर.वाड़े ने कश्मीरी में 'बाइबिल' का अनुवाद किया। 'तफसीलए कुरान' और 'मिसल' की रचना भी इसी दौर में हुई। ईश्वर कौल ने कश्मीरी व्याकरण 'कश्मीरी शब्दामृत' तैयार किया।

नया दौर तीसरे चरण में शुरू हो गया। अब्दुल अहद आज़ाद ने 'शिकवए इबलीस' में समाज को बदलने का आह्वान किया। फानी, काफूर और नाज भी राष्ट्रीयता के सुर में गाने लगे। आरीफ ने 'मगर कारवां सौन' लिखा।

चौथे चरण में दबी हुई राष्ट्रीयता की भावना फिर उभार पर आई और दीनानाथ नादिम जैसे रचनाकारों ने लिखा- 'मेरी जवानी ताजी है।' उनका 'वम्युर यम्यर जल' उल्लेखनीय गीति नाट्य है। रोशन, प्रेमी, कामिल, अलमस्त मजबूर इस दौर के अन्य प्रमुख रचनाकार हैं। कामिल कश्मीरी के प्रयोगवादी कवि हुए। 'साकीनामा' इनका स्मरणीय ग्रंथ है। गज़ल से बाहर निकल कश्मीरी कविता विविध छन्दों और रूपों में सामने आई। नये छन्द तो आए ही मुक्त छन्द भी रचना का माध्यम बने। नाट्य लेखन परंपरा का सूत्रपात नंदलाल कौल ने किया। कश्मीरी का पहला मासिक 'कुगपोश' क्या शुरू हुआ, लघुकथाएं, निबंध, एकांकी सभी प्रकाशित होने लगे। 'गुलरेज' पत्र के प्रकाशन से भी कश्मीरी साहित्य का खूब विकास हुआ। सोमनाथ जुत्शी, रोशन, मजबूर आदि ने कहानियां लिखनी शुरू कर दीं। कहानी ने लंबी छलांग लगाई 1955 में प्रकाशित अख्तर मुहीउद्दीन के संग्रह 'सात शिखर' से। अख्तर ने बाद में भी खूब प्रयोग किए। सोफी गुलाम मुहम्मद, अली मुहम्मद लोन, बंसी निर्दोष, अवतार कृष्ण रहबर, डा. शंकर रैणा आदि से होती हुई कहानी आज एक भरी-पूरी पीढ़ी लेकर खड़ी है। फारूख मसूदी और हरिकृष्ण कौल सरीखे कथाकार आज भी सक्रिय हैं।

1923 में श्रीकंठ तोपरवानी ने उपन्यास लीला लिखा था। फिर उल्लेखनीय उपन्यास आया-'दुख दर्द' अख्तर मुहीउद्दीन का यह उपन्यास 1957 में प्रकाशित हुआ। अमीन कामिल, अली मुहम्मद लोन के बाद फिर आए गुलाम नबी गौहर। इनके उपन्यास 'गुजरिम', 'मेल' और पुण्य और पाप' तो उल्लेखनीय रहे ही, बंसी निर्दोष का उपन्यास 'एक दौर' और अमर मालमोही का 'तृषा और तर्पण' भी चर्चित रहा।

मोतीलाल क्यूम और अलीमुहम्मद लोन के नाटकों के बाद भी कई नाटककार सक्रिय हैं। आधुनिक नाटकों में 'मैं लैला प्रेम दीवानी', 'छाया' (क्यूम), 'रोशनी के मंद होने तक', 'आदम, हव्वा और इबलीस' (लोन), 'तकदीर' और रंगोत्सव' (मुहम्मद सुभान भगत) और 'रुपयों की बारिश' (राजूद सैलानी) प्रमुख हैं।

कश्मीरी आलोचना रहमान राही, पृथ्वीनाथ पुष्प, अमीन कामिल, नूर मुहम्मद बट और अख्तर मुहीउद्दीन के जरिए विकास कर रही है। निबंध में बहुत अधिक काम कश्मीरी में नहीं हुआ, लेकिन मुहीउद्दीन हाजनी, मुहम्मद जमान आजुर्दा जैसे निबंधकारों ने अपनी पहचान बनाई है।

कोंकणी

आज कोंकणी की स्थिति समृद्ध भाषा की है, लेकिन अतीत में इसकी काफी धरोहर नष्ट हो चुकी है। पुर्तगालियों की विजय से अरसा पहले कोंकणी भाषा में समृद्ध व विकसित साहित्य था। इस में कोंकणी रचनाकारों ने मराठी भक्तिमूलक रचनाओं को आधार बनाकर अधिकांश रचनाकर्म किया था। रामायण व महाभारत की कथाएं तो रोमन में सुरक्षित भी हैं। मराठी मूल से सोलहवीं शताब्दी में कृष्णदास द्वारा किया अनुवाद इस दृष्टि से उल्लेखनीय है।

कोंकणी की स्वाभाविक लिपि देवनागरी है। लेकिन यह कन्नड़, मलयालम व रोमन में भी लिखी जाती रही है। 'रिग्लो

अंग्रेजी में भारतीय रचना

इंडो एंग्लियन साहित्य और भाषा के विकास को अध्ययन की सुविधा के लिए विद्वानों ने पांच भागों में विभाजित किया है। प्रारंभिक लेखन 1820 से 1870 तक। दूसरा चरण 1870 से 1900 तक का है जिसमें धार्मिक व साहित्यक जागरण प्रमुख रहा। तीसरा चरण 'वंदेमातरम्' और 'होमरूल' की चेतना का रहा जिसका समय 1900 से 1920 तक का माना गया है। 1920 से 1947 तक का समय चौथा चरण माना जाता है जिस दौर में गांधीवादी क्रांति संपन्न हुई। पांचवां चरण 1947 के बाद का है जो स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती तक चला आता है।

स्वभावतः अंग्रेजी लेखन की शुरुआत गद्य से हुई। पहले लेखक ही राजाराम मोहनराय थे जो सचमुच अग्रदूत की चेतना लेकर आए थे। 1820 में उनकी पुस्तकें आ गई थीं। हेनरी दरोजियो पहले अंग्रेजी कवि थे। 'द फाकीर आफ झंगीरा' उनकी उल्लेखनीय कृति है। आधे भारतीय और आधे पुर्तगाली थे देरोजियो। कासी प्रसाद घोष भी इस समय के दूसरे कवि हैं। 1857 में मुंबई, चेन्नई और कलकत्ता में विश्वविद्यालयों की स्थापना के साथ ही एक पूरी नई पीढ़ी अंग्रेजी लेखन में उतर आई। विलियम जोन्स की लिखी 'ओड टु नारायण' को भी कुछ लोग पहली रचना मानते हैं। बाद में माइकेल मधुसूदन दत्त को शिखर का कवि माना गया।

1870 से 1900 के मध्य अंग्रेजी के रोमांटिक लेखन ने भारतीय रचनाकारों को भी प्रभावित किया। यह वह समय था जब रामकृष्ण परमहंस ने भारतीयों को सचेत कर दिया था। विवेकानंद आकार ले चुके थे। अरु दत्त और तरु दत्त के माध्यम से अंग्रेजी कविता का परिपक्व रूप देखने को मिला। गिरीशचंद्र दत्त का लेखन भी इसी समय आया। रोमेश चंद्र दत्त की विविध रंगी पुस्तकों के अतिरिक्त उनके कवि का रूप भी सामने आया। रामकृष्ण पिल्लै, बेहरामजी मालाबारी, नगेश विश्वनाथ पै की काव्य रचनाओं ने भी ध्यान आकर्षित किया। रामकृष्ण पिल्लै ने तो दो उपन्यास भी लिखे 'पद्मिनी' और 'द डान्स आफ डेथ'।

1900 से 1920 तक का समय इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि रवींद्रनाथ टैगोर और श्री अरविन्दो सरीखी बड़ी हस्तियों की महत्वपूर्ण पहचान स्थापित हुई। श्री अरविन्दो ने 'नारायण दर्शन' दिया तो तिलक ने 'गीता रहस्य'। 'द चाइल्ड' ही नहीं रवींद्रनाथ के गद्य लेखन में भी उल्लेखनीय कृतियां आईं– 'साधना', 'नेशनलिज्म', 'पर्सनेलिटी' और 'द रिलिजन ऑफ मैन' मूलतः अंग्रेजी में ही लिखी गईं। कवि, कथाकार, उपन्यासकार, दार्शनिक व शिक्षाशास्त्री के रूप में उन्हें विश्वभर में ख्याति प्राप्त हुई। अरविन्दो घोष और मनमोहन घोष का महत्व भी सभी ने स्वीकार किया। ऑस्कर वाइल्ड भी मनमोहन घोष की कविताओं से प्रभावित हुए थे। श्री अरविन्दो घोष के 'कलेक्टेड पोयम्स एंड प्लेस' आज भी स्थाई महत्व के माने जाते हैं। उनका गद्य-पद्य अंग्रेजी साहित्य में अलग ही स्थान रखता है। 'द लाइफ डिवाइन', 'एसेंस ऑन गीता', 'सिंथेसिस ऑफ योगा', 'द सोशल साइकल', 'द आइडियल ऑफ ह्युमन यूनिटी, द फ्यूचर पोएट्री' सरीखे ग्रंथ भारतीय साहित्य की धरोहर हैं। अरविन्दो की तरह सरोजिनी नायडू ने भी प्रारंभ कविता-लेखन से ही किया। 1905 में इनका पहला संग्रह आया, 'द वर्ड ऑफ टाइम' (1912) और 'द ब्रोकन विंग' (1917) कुछ अंतराल के बाद आए उनके संग्रह हैं।

1920 से 1947 के बीच का समय भारतीय समाज के लिए विशेष महत्व का था। के.एस. वेंकटरमानी 'पेपर बोट्स' से अपनी अलग पहचान बना गए। यह गद्य लेखक व्यंग्यकार तो थे ही इनकी गद्य कविताएं भी आकर्षक थीं। 'मुरुगन' से 'ए डे विद शंभू' और 'द नैक्स्ट रंग' और फिर गांधीवाद से प्रभावित उनकी रचनाओं में समय के साथ चलता लेखक नज़र आता है। शंकर राम की कहानियों और उपन्यास धरती से जुड़े लेखन का प्रतीक हैं। इनके बाद मुल्कराज आनंद का समय आता है। 'टू लीव्स एंड ए बड', 'द कुली' 'द अनटचेबल' और 'द विलेज' इनकी प्रमुख रचनाएं हैं। आर.के.नारायण का लेखन भी अपनी तरह का अनूठा है।

हुमायूं कबीर, कुमार गुरु, अहमद अली, ए.एस.पी.अय्यर, के.नागराजन आदि इस समय के अन्य उपन्यासकार हैं। कवियों में हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, पी.शेषाद्रि, जी.के.चेतूर, वी.एन.भूषण, हुमायूं कबीर, उमा महेश्वर और एन.वी. काडानी प्रमुख हैं।

जेसु मौलान्तम् फादर जेकिमद मिराडा ने लिखा। यीशू के पुनर्जीवन पर आधारित अर्चना-गीत है यह। इसका समय अठारहवीं शताब्दी है। इससे एक शताब्दी पूर्व कोंकणी मे ईसाई साहित्य खूब प्रचलन मे था।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध मे कोंकणी ने आधुनिकता की सांस लेनी प्रारंभ कर दी। शोणाय गोयम्बाव 1877 में जन्मे और 1946 में दिवंगत हुए। इनकी प्रेरणा से कोंकणी ने कई रचनाकार पैदा किए।

बी.बोरकर, आर.वी.पंडित व एम.सरदेसाई कोंकणी के स्वातंत्र्योत्तर पीढ़ी के प्रमुख आधुनिक कवि हैं। कोंकणी नाटकों में लोकनाट्य का प्रभाव है किंतु कथा साहित्य मे नव्यतम रचनाए हो रही है। कोंकणी का गद्य भी पनप रहा है। कुछ रचनाकार कोंकणी व मराठी दोनों में रहते हैं।

रवींद केलकर सरीखे निबंधकारों ने कोंकणी गद्य को नई दिशा दी है। इन्होंने कोंकणी पाक्षिक 'मिर्ग' और साप्ताहिक गोमात भारती भी निकाला। 'हिमालयांत' उनकी प्रमुख कृति है। यह हिमालय यात्रा का वृतान्त है। डी.के. सुखथानकर ने पेशे से डाक्टर होते हुए भी कोंकणी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण काम किया। उनके निबंधों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है।

महाबलेश्वर सैल की कहानियां कोंकणी कथा जगत के लिए नई भावभूमि लेकर आई। 'तरंगा' शीर्षक उनका कहा

जोसेफ फर्तादो, अरमांडे मेनेजेस, मेनुअल सी. रोड्रिग्स आदि ने भी अपनी तरह की कविताओं से पहचान बनाई। शाहिद सुहरावर्दी की 'ऐसेस इन वर्स' का उल्लेख भी जरूरी है। अंग्रेजी में नाटक भी लिखे गए, लेकिन मंचन की संभावनाएं अधिक नहीं थीं। वी.वी.श्रीनिवास अयंगर, ए.एस.पी.अय्यर, भारती साराभाई, मृणालिनी साराभाई, जे.एम. लोबो प्रभु, टी.पी. कैलासम आदि की रचनाओं ने साहित्य को समृद्ध किया। जीवनी लेखन के क्षेत्र में होमी मोदी, सर रुस्तम मसानी, वी.एस.श्रीनिवास शास्त्री, पी.सी.राय, जदुनाथ सरकार आदि ने उल्लेखनीय काम किया। आत्मकथा लेखन में महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू तो हैं ही, नीरद सी.चौधरी लिखित 'एन ऑटो बायोग्राफी ऑफ एन अननोन इंडियन' ने विशेष ख्याति एवं महत्व अर्जित किया। भारतीय अंग्रेजी लेखन में एम.एन. राय का नाम कई कारणों से महत्वपूर्ण है। डा.एस. राधाकृष्णन और पी.एन. श्रीनिवासाचारी के बाद भी कई महत्वपूर्ण लेखकों ने अपनी जगह बनाई। सी. राजगोपालाचारी ने भी अंग्रेजी साहित्य को समृद्ध किया।

आजादी के बाद के अंग्रेजी साहित्य को लेकर इस वर्ष अमरीकी पत्रिका 'न्यूर्याकर' में सलमान रुश्दी ने जो विवादास्पद लेख लिखा है उसे लेकर जबर्दस्त बहस फिलहाल हवा में है। रुश्दी ने क्या कहा है, इस पर बाद में, पहले यह देख लें कि आज की अंग्रेजी कविता की शुरुआत कहां से होती है? 1952 में प्रकाशित 'ए टाइप टु ए चेंज' (निस्सीम एजेकिएल) संग्रह से आधुनिक अंग्रेजी कविता की शुरुआत मानी गई है। बाद में जी.एस. शरतचंद, केकी दारुवाला, कमलादास, आदिल जस्सावाला, अरुण कालेटकर, जयंत महापात्र, अरविंद कृष्ण मेहरोत्रा, आर. पार्थसारथी, गीव पटेल और ए.के रामानुजन की गणना प्रमुखतः की जाती है।

आइए, अब रुश्दी की बात सुनें: ''कुल मिलाकर निष्कर्ष यह है कि इन पचास बरसों में अंग्रेजी में लिखने वाले भारतीयों का गद्य लेखन (चाहे वह कथा साहित्य हो या गैर कथा साहित्य) ज्यादा सशक्त और महत्वपूर्ण हैं। उनकी तुलना में भारत की मान्यता प्राप्त भाषाओं का लेखन कहीं नहीं ठहरता। आजादी के बाद की आधी सदी का वास्तविक भारतीय साहित्य उस भाषा में लिखा गया है जिसे अंग्रेज अपने पीछे छोड़ गए थे''

रुश्दी को 'अंग्रेजी भाषा' के समान स्तर पर भारतीय साहित्य में महज सआदत हसन मंटो नजर आते हैं। बहरहाल यह एक बेहद विचारोत्तेजक आलेख रहा जिस पर जमकर प्रतिक्रियाएं भी दुनिया भर के अखबारों में प्रकाशित हुईं। लेकिन भारत की एक प्रमुख कथापत्रिका 'कथादेश' में एक विदेशी अनुवादक रॉबर्ट ए.हक्स्टेड का लेख भी रुश्दी के जवाब में प्रकाशित हुआ जिसने रुश्दी के अज्ञान की कलई खोलकर रख दी। जो भी हो स्वातंत्र्योत्तर अंग्रेजी साहित्य में स्वयं सलमान रुश्दी, विक्रम सेठ और अपने पहले ही उपन्यास से विश्वभर में चर्चित अरुंधति राय की एक अलग जगह बन गई है। अरुंधति राय को इस उपन्यास को लिए बुकर प्राइज़ मिल चुका है। इससे पहले विक्रम सेठ का 'सुटेबुल ब्वाय' और सलमान रुश्दी का 'सेटेनिक वर्सेस' विश्वभर में चर्चा का विषय बन चुके हैं। 'अलन सीली (दी ट्राटरनामा) शशि तरूर (शो बिजनेस, ग्रेट इंडियन । विल) अमितव घोष (सर्किल आफ रीजन, शैडो लाइन) उपामनयु चटर्जी (इंग्लिश अगस्त) विक्रम चंद्रा (रेड अर्थ एंड पाउरिंग रेन) शोभा डे, दीपक चोपड़ा, गिनु कमानी और रोहिन्टन मिस्त्री ने भी पहचान बनाई है। एक सवाल यह भी उभरता है कि रस्किन बॉड के लेखन को हम क्यों अलग–थलग किए रहते हैं। लंबे समय से रचनारत रस्किन ने अपनी अलग ही शैली विकसित की है। और फिर खुशवंत सिंह अपने पहले झटके में अच्छा लेखन दे ही चुके हैं। दीगर बात है कि उनके लेखन में हर स्तर की चीजें मौजूद रहती हैं। बहरहाल, सच जो भी हो, हिन्दी के सुपरिचित कवि आलोचक विष्णु खरे की इस टिप्पणी का अंग्रेजी कविता के पास शायद ही कोई जवाब हो कि 'यह त्रासद होगा कि भारत में अंग्रेजी कविता के लगभग डेढ़ सौ वर्षों के इतिहास में एक ही उल्लेखनीय पीढ़ी हो और वही अंतिम पीढ़ी भी सिद्ध हो।

मंजुला पद्मनाभन (ओनासिस पुरस्कार, 2,50,000 डालर) और अरुंधति राय (दी गाड आफ स्माल थिंग्ज पर बुकर पुरस्कार) ने भारतीय लेखन को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति दिलाई है।

अनिता देसाई की बेटी किरण देसाई ने वर्ष 1998 में अपने उपन्यास 'हुलुबुलु इन ए गुआ आर्कार्ड' द्वारा विश्व साहित्य का अपनी ओर ध्यान खिचवाया। रुचिरा मुखर्जी का भी उपन्यास 'टोड इन माई गार्डेन को दुनिया के आलोचकों ने सराहना दी।

संग्रह साहित्य अकादमी से पुरस्कृत तो हुआ ही, अपनी शैली और भाषा के लिए प्रशंसित भी हुआ। प्रो. ओल्विन्हो गोम्स व सी.एफ. डीकोस्टा, मनोहरराई सरदेसाइ, चंद्रकात केनी अरविन्द माम्बरो, एस.एस.कृष्णाराव, फेलीसियो कार्दोसो व रजनी ए. मैम्बरे कोंकणी के सुपरिचित हस्ताक्षर है।

गुजराती

गुजराती का जन्म अपभ्रंश से ही हुआ। चौदहवीं शताब्दी के अंत तक गुजराती में अपभ्रंश में ही रचनाएं होती रही है। 'भारतेश्वर बाहुबली रासा' गुजराती का प्रथम ग्रंथ कहलाता है। शालिभद्र सूरी ने इसकी रचना 1185 के आसपास की थी। यह साहित्यिक गुजराती का ग्रंथ है, इसीलिए [illegible] है कि इससे लगभग तीन शताब्दी पूर्व गुजराती [illegible] में आ चुकी होगी। गुजराती की लिपि में देव[illegible] शिरोरेखा नहीं होती।

इस भाषा के साहित्यिक विकास [illegible] जा सकता है। आदिकाल 1185 से [illegible] गया है। शालिभद्र सूरी के ग्रंथ के [illegible] ग्रंथ भी इस काल में मिलते हैं, [illegible] मुग्धावबोध (1594), [illegible] गुणरत्न सूरी द्वारा र[illegible] आते हैं। इस काल

स्थान है। महेन्द्र रचित 'नम्यूस्वामी चरित्र' (1210), और विजय सेन रचित 'देवन्तगिरी रास' (1231), 'नेमिनाथ चतुष्पादिका' (1269), 'प्रतिक्रमण यालाक्कोण' (1355) प्रमुख ग्रंथ हैं। 'आराधना' व 'मुग्धयोध' गुजराती के इस काल के दो अन्य उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। आरंभ में रास अथवा गरया गीतों में प्रेमाख्यान या कृष्णलीला ही होती थी, लेकिन फिर ऐतिहासिक गाथाएं भी इनका विषय बन गई। गरबा गीतों को गाने का समय अश्विन शुक्ल प्रतिप्रदा से विजयादशमी तक माना जाता है, लेकिन फाग फाल्गुन मास में ही गाए जाते हैं। इस तरह की काव्य रचना में भी रास की तरह जैन कवियों का अधिक योग रहा। 'स्थूलीभद्रफागा' जिनफर सूदी द्वारा 1324ई. में रचा गया। 'रंगसार नेमिनाथ फाग' और 'नेमिनाथ चतुष्पादिका' और 'वसंत विलास' इसी काल की रचनाएं हैं।

गुजराती का गद्य साहित्य भी उतना ही प्राचीन है। यह भी जैन धर्माचार्यों द्वारा प्रारंभ हुआ। सोमसुंदर की 'उपदेशमाला' और माणिक्यचंद्ररचित 'पृथ्वीचंद्र चरित्र' (1422) ऐसी ही रचनाएं हैं। 'प्रयन्ध चिंतामणि' इस काल की सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है।

गुजराती साहित्य का मध्यकाल 1441 से 1600 ई. तक माना जाता है। इसके पौराणिक काल का प्रारंभ 'रणमलछंदा' (1401) से होता है। कवि श्रीधर की इस रचना के बाद अन्य उल्लेखनीय कृतियां हैं–'कान्हड़दे प्रबंध', विद्याविलास, 'सदयवत्स कथा'। 1416 में नरसिंह मुनि ने 'विष्णुभक्ति चंद्रोदय' की रचना से गुजरात में रामानंदी विचार–प्रचार किया। मालण, केशवहृदेराम, भीम, नकारा आदि अन्य महत्वपूर्ण रचनाकार हुए। सोलहवीं शताब्दी को गुजराती का भक्तिकाल कहा जाता है। नरसिंह मेहता और ...के प्रादुर्भाव का युग। कृष्ण काव्य की दृष्टि से गुजराती में मीरा का उल्लेखनीय स्थान है। पुष्टिमार्गी भक्त मे नरसिंह मेहता के अतिरिक्त मालण, नाकर और ... भी आते हैं।

...राती में प्रारंभ में ललित साहित्य संस्कृत के अनुवाद ...ही आया। लेकिन लघुराज ने 29 ग्रंथों की रचना की। इनका 'विमल रास' महत्वपूर्ण है। अरखा ...प्रेमानंद, कृष्णदास आदि सोलहवीं ...और सत्रहवीं शताब्दी के रेखांकित किए ...हैं। अठारहवीं शताब्दी में आध्यात्मिक ...पर सुंदर रचनाएं करने वालों में सहजानंद, ..., धीरो, भोजो; निष्कुलानंद व वल्लभ भट्ट आदि को ...जाता है। उत्कर्ष के अमर कलाकार हैं दयाराम। ...के पुष्टिमार्ग से संबंधित रचनाओं से इन्होंने गुजराती ...को समृद्ध बनाया। 'रुक्मणी हरण' लिखनेवाले देवीदास, 'सुरेखा हरण' के रचयिता शिवदास, 'सीता विरह' के लेखक हरिदास आदि इस काल के अन्य प्रमुख कवि हैं।

गुजराती का आधुनिक काल 1851 से प्रारंभ माना जाता है। 1914 तक इसका पहला चरण और फिर 1915 से दूसरा चरण प्रारंभ होता है। पहले चरण में 'गुजराती ज्ञान प्रसारक मंडल' ने बड़ा काम किया। तरुणों ने 'बुद्धि वर्धक सभा' गठित की। रणछोड़दास, दुर्गादास मेहता, महिपतराम रुप राम, नानाभाई सहित कई विद्वान लेखकों ने विविध रंगी पुस्तकें लिखीं। अंग्रेज न्यायधीश फोर्वस ने 'गुजरात वर्नाक्युलर सोसाइटी' तो बनाई ही प्राचीन गुजराती पांडुलिपियों व साहित्य–संकलन का काम आरंभ किया। 'बुद्धिप्रकाश' पाक्षिक वा 'सूरत समाचार' पत्र ने भी बड़ा काम किया। दलपत राय डाढ़भाई, नर्मदा शंकरलाल शंकर, हरगोविंद दास, भोलानाथ साराभाई, आदि इस चरण के प्रमुख रचनाकर्मी हैं। 1885 में राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस के समय गुजराती साहित्य नई करवट लेता है। पूर्व और पश्चिम का अद्भुत समन्वय इस काल में नजर आता है। गोवर्धन राम माधव त्रिपाठी, मन्नीलाल नभूभाई द्विवेदी, नरसिंहराव भोलानाथ दीपतिया प्रमुख तीन लेखक प्रारंभ में आए। जीवन चरित्र और काव्य रचना तो इन्होंने की ही लेकिन नरसिंहराव के निबंध और अंग्रेजी में गुजराती भाषा व साहित्य का इतिहास एक बड़ा काम था। इस समय उपन्यास, नाटक, निबंध, कहानी, आलोचना के साथ ही इतिहास लेखन व पत्रकारिता मे भी उल्लेखनीय विकास हुआ।

1914 से गुजराती साहित्य का 'गांधी युग' प्रारंभ होता है। दामोदरदास खुशालदास; केशव सेठ, चंद्रवदन चिमनलाल, रामचन्द्र शुक्ल, मनसुखलाल झवेरी, उमाशंकर जोशी आदि इसके प्रथम उत्थान के प्रमुख रचनाकार है। जोशीजी की 'गंगोत्री' का प्रकाशन 1934 में हुआ था। बाद में बालमुकुंद दवे, राजेन्द्रशाह, वेणीभाई पुरोहित, निरंजनभगत आदि रचनाकारों ने प्रमुख लेखन किया। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद कविता में खास तरह का बदलाव नजर आता है। गुलाम मुहम्मद शेख, सुरेश जोशी, सीतांशु यशचंद, रघुवीर चौधरी, चंद्रकांत शेठ की रचनाएं आधुनिक गुजराती साहित्य की महत्वपूर्ण निधि हैं। गुजराती में गज़ल की भी अच्छी परंपरा है। नये दौर के कवियों में भरत त्रिवेदी, चतुर पटेल, नलिन पंड्या, जगदीश व्यास, रामप्रसाद दवे, दलपत चौहण, वकुलेश देसाई, चंदु मेहरिया नए स्वर लेकर उपस्थित हुए हैं।

कहानी में गुजराती में 1900 के अंत तक विविध प्रयोग होते रहे। अंबालाल देसाई की 'शांतिदास' को संपूर्ण कहानी कहा जाता है। 'सुंदरी सुबोध' में प्रकाशित कहानियों में महिला लेखन की प्रस्तुति अधिक रही। सुमति, उर्मिला, विजया त्रिवेदी, अरविंदा आदि इनमें चर्चित रहीं। 'टूंकी कहानियां (1904 में प्रकाशित संग्रह) के बाद 1923 तक गुजराती कहानी में तेजी से विकास हुआ। धनसुखलाल मेहता, कन्हैयालाल मुंशी, मलयानिल, आदि ने नए तरह का लेखन कर कहानी को आगे बढ़ाया। धूमकेतु, द्विरेफ, रमणलाल देसाई, पन्नालाल पटेल, गुलाबदास ब्रोकर, सुरेश जोशी, रघुवीर चौधरी की कहानियों से तैयार हुई है आधुनिक गुजराती कहानी की ज़मीन।

गुजराती नाटक की दिशा में दूसरा चरण महत्वपूर्ण है। कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी और चंद्रवदन मेहता ने विशेष योगदान इस दिशा में किया। अन्य नाटककारों ने रमणलाल देसाई, उमाशंकर जोशी, दीपिका बाई और हंसा मेहता आदि ने उल्लेखनीय काम किया। उपन्यास लेखन में लघुकथाकारों में प्रमुख लोग पहले चरण में थे ही, बाद में पन्नालाल पटेल, दर्शक की पीढ़ी के बाद आए मनुभाई पंचोली 'दर्शक'।

गुजराती साहित्य को गांधीजी ने विशेष रुप से प्रभावित

किया। उनके गद्य लेखन ने गुजराती लेखन पर विशेष छाप छोड़ी। गांधी की आत्मकथा गुजराती की श्रेष्ठ कृति है। 'दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास' हो या 'नवजीवन' के लेख, आध्यात्मिक साहित्य हो या गांधी के पत्र, उनके निबंध हों या संभाषण, इस कला का विकास काका कालेलकर में मिलता है। 'कालेलकरना लेखो' और 'हिमालयनो प्रवास' उनकी उल्लेखनीय कृतियां हैं।

रेखाचित्र हों या रिपोर्ताज, आत्मकथा हो या इतिहास, उपन्यास हो या कहानी व्यंग्य हो या शास्त्रीय साहित्य, नाटक हो या आलोचना, आज गुजराती साहित्य आधुनिक रूप में विकास करते हुए भी मूल रूप से अलग नहीं हुआ है।

डोगरी

डोगरी में तकरी की जगह अब देवनागरी लिपि का प्रयोग होता है। आराधना शैली में 'भेटां' डोगरी में खूब लिखी गई हैं। कहते हैं डोगरी काव्य सोलहवीं शताब्दी से प्रारंभ हुआ। मानचंद इस काल के प्रमुख कवि हैं। इसके साथ ही पहेलियों, कहावतों का दौर चलता रहा। सत्रहवीं शताब्दी में गंभीर राय तो अठारहवीं सदी में देवी दित्त और अगली शताब्दी में गंगाराम आदि उल्लेखनीय रचनाकार रहे। कहते हैं डोगरी में मूल रचना से पूर्व फारसी से अनुवाद का काम हुआ। डोगरी में प्रकाशित पहली गद्य पुस्तक है न्यू टेस्टामेंट का अनुवाद। यह 1818 में प्रकाशित हुआ।

बीसवीं शताब्दी के शुरुआती दौर में हरिदत्त शास्त्री, दीनीभाई पंत और बाद में कुंवर वियोगी जैसे रचनाकार सक्रिय रहे। राजनैतिक कारणों से डोगरी को अभी तक न्यायोचित दर्जा नहीं मिल पाया है। लोककथाओं के प्रभाव से शुरु हुई डोगरी कहानी ने धीरे-धीरे विकास किया है। चालीस के दशक में पहला संग्रह प्रकाशित हुआ 'पहला फुल्ल' 'उच्चियां धारां, बहुत बाद में आया। 'सुई तागा' के काफी बाद जब साठ का दशक आया तब कहीं डोगरी कथा ने जमीन हासिल की। 'खीरला मानु', 'कोले दियां लीकरां' और 'काले हत्थ' 1959 के आसपास प्रकाशित कहानी संग्रह हैं। मदन मोहन, नरेंद्र खजूरिया, वेद राही की अच्छी शुरुआत के बाद डोगरी कहानी परवान चढ़ती शुरू हुई। ओ.पी. शर्मा, ओम गोस्वामी, देशबंधु डोगरा 'नूतन' , बन्धु शर्मा, छत्रपाल, अश्विनी मगोत्रा, ललित मगोत्रा, कृष्णा प्रेम, चमन अरोड़ा आदि ने डोगरी की कहानी को राष्ट्रीय स्तर पर परिचित करा दिया है।

नैहतें पोटे, हाशिए दे नोट्स, नहेरे दा समुन्दर, टापू दा आदमी, खीरली यून्द, परशामें, सुर ते ताल आदि इस दौर के उल्लेखनीय कहानी संग्रह हैं।

1969 में डोगरी मे सिर्फ तीन शुरुवाती उपन्यास मौजूद थे। कुछ अनुवाद भी थे। लेकिन 'फुल्ल बिना डाली' पहला उल्लेखनीय उपन्यास आया। नरसिंह देव जम्वाल ने 1976 में उपन्यास प्रकाशित कराया 'सांझी धरती बखले माहण'। ओ.पी. शर्मा सारथी ने चार लघु उपन्यासों से एक नई प्रतीक शैली परिचित करा दी। देश बंधु डोगरा 'नूतन' ने कैदी, प्योके भेजो, जंगली लोक जैसी रचनाओं से डोगरी साहित्य को समृद्ध किया। डोगरी में नाटक बहुत अधिक नहीं लिखे गए, लेकिन रामनाथ शास्त्री का नाटक 'बाबा जित्तो', दीनू भाई पंत का 'अयोध्या' भी चर्चित रहे। नरसिंह देव जम्वाल ने 'मंडलीक' व 'अल्हड़ गोली वीर सिपाही' सरीखे नाटक लिखकर नये प्रयोग किए हैं। जितेंद्र शर्मा का 'कुंजाशादी' उल्लेखनीय नाटक है। नुक्कड़ नाटकों में मोहनसिंह ने अच्छे प्रयोग किए हैं।

हास्य लेखन में लक्ष्मी नारायण, रेखा चित्रों में चम्पा शर्मा ने उल्लेखनीय काम किया है। 'डुग्गर का सांस्कृतिक इतिहास' और 'डोगरी साहित्य दा इतिहास' ऐसी कृतियां हैं जिन्होंने इतिहास लेखन के नए दरवाजे खोले हैं। 'शीराज़ा', 'साडा साहित्य', 'जोत' और 'नमीं चेतना' जैसी पत्रिकाएं भी आज इस भाषा के साहित्य के विकास के अवसर जुटा रही हैं। पदा सचदेव डोगरी की सुपरिचित कवियत्री है। 'मेरी कविता मेरे गीत' के लिये इन्हें 1971 में साहित्य अकादमी सम्मान भी मिल चुका है। यह जब-तब डोगरी से हिन्दी में अनुवाद भी करती हैं। सच पूछें तो हिन्दी और डोगरी के बीच एक पुल हैं! पदमा सचदेव। इन्होंने कविताएं, कहानियां, यात्रावृन्त और साक्षात्कारों की विधा का भी अपने अंदाज में विकास किया है। डोगरी में 'तवी ने झन्हां, न्हैरियां गलियां, 'पोटा पोटा निम्बल' और 'उत्तर बहनी' जैसे काव्य संग्रह तो दिए ही 'नौशीन' और 'अब न बनेगी देहरी' जैसे उपन्यास भी लिखे। डोगरी को उसका हक दिलाने के लिए उनकी सक्रियता देखते ही बनती है।

तमिल

द्रविड़ परिवार की भाषाओं में तमिल का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस भाषा का साहित्यिक रुप 'शेंतमिल ' और लोक रूप 'कोडुंतमिल' कहा जाता है। इसमें बहुत पहले से ही दो लिपियां प्रचलित हैं। 'वट्टएपतु' और 'ग्रन्थम'। इस भाषा में किसी भी शब्द का आरंभ संयुक्ताक्षर से नहीं होता। तमिल साहित्य के विकास को कई खंडों में देखा जाता है-संघपूर्व काल, संघकाल, संघोत्तर काल, भक्ति काल, कम्बनकाल, मध्य काल और आधुनिक काल।

तमिल साहित्य का प्रारंभ ईसा की पांच-छह शताब्दी पूर्व हुआ। पांड्यराजाओं ने इस भाषा की सुरक्षा और विकास में पूरा ध्यान दिया। उन्होंने संघ स्थापित किए और उनके विद्वानों द्वारा भाषा को समृद्ध कराया। पहले संघ के किसी एक सदस्य ने 'अगत्तियम' की रचना की। यह व्याकरण ग्रंथ था। यह भी मान्यता है कि यह ग्रंथ अगस्तमुनि ने रचा। पहले संघ का ग्रंथ अनुपलब्ध है, इसलिए दूसरे संघ काल को ही प्रमाणिक माना जाना चाहिए। इस काल का ग्रंथ 'तोलकाप्पियम' ईसा से तीन सौ वर्ष पूर्व रचा गया। 1278 सूत्रों में यह ग्रंथ 'अगत्तियम' के आधार पर ही रचा गया। संघ पूर्व काल के बाद संघ काल आता है। तृतीय संघ की स्थापना सन् 150 ई. के आसपास हुई थी। विलुप्त प्राय इस काल के ग्रंथ महामहोपाध्याय डा. स्वामीनाथ अय्यर ने खोज निकाले। इन में एट्टुतोगै, पत्तुप्पाट्टु और पतिनेणकीष्कणक्कु तीन महान ग्रंथ हैं। इस काल में 18 नीतिग्रंथों की रचा हुई। इनमें छह प्रेम प्रधान और शेष पुरम् काव्य है। 'तिरुक्कुरल' तिरुवल्लुवर रचित ग्रंथ इसी काल के हैं। भाषिक मितव्ययता इस काल की विशेषता है। इस काल के प्रमुख कवि हैं – अव्वैयार, कपिलर, नक्कीरर, परणर, कम्बिनन।

संघोत्तर काल तक संस्कृत व अन्य भाषाओं के संपर्क से तमिल का पर्याप्त विकास हो गया था। इस काल में रचित पांच महाकाव्य विशेष हैं। चिलप्पधिकारम्, मणिमेखले, जीवक चिंतामणि, वलयापति, कुण्डलकेशि। नीलकेशी, चूड़ामणि, यशोधर काव्यम्, नागकुमार काव्यम् उदयणन कदे आदि इस काल के प्रमुख खंड काव्य हैं। इनकी रचना जैन कवियों ने की।

भक्ति काल का समय 600 से 900 ई. तक माना गया है। जैन व बौद्ध प्रभाव दक्षिण भारत में प्रारंभ हो चुका था। इसी समय शैव और वैष्णव कवियों का आविर्भाव भी हुआ। अधिकांश रचनाएं संत कवियों ने कीं। शैव संतों की रचनाएं 'तिरुमुर्के' और वैष्णव संतों की रचनाएं 'तिरुवायमोलि' कहलाईं। शैव काव्य रचना का प्रारंभ कारक्काल अम्मैयार ने किया। यह एक विरक्त महिला थीं। 'कइलैतिरुवन्दादि' इनकी प्रसिद्ध रचना है। माणिक्कवाचकर, तिरुज्ञानसम्बदर, सुंदरमूर्ति आदि इस काल के प्रमुख शैव कवि है। तिरुमंदिरम में संग्रहीत तीन हजार आध्यात्मिक रचनाओं के रचयिता तिरुमूलर भी इसी समय के हैं। वैष्णव भक्त 'आण्डवर' कहलाए। वैष्णव धर्माचार्यों के जीवन चरित्र 'गुरुपरम्परा' ग्रंथ में संग्रहीत है। आण्डवर संतों के चार हजार पद संगहीत हैं– 'नालायिर दिव्य प्रबन्धम' में। पेरियालवार के 416 पद स्मरणीय माने जाते हैं। आण्डाल को इस की श्रेष्ठ कवियत्री माना जाता है। तिरुमलिसै इस काल के दार्शनिक कवि थे। 'तिरुमालै' तिरुप्पाण आण्डवर की इस काल की प्रमुख कृतियां हैं। अन्य प्रमुख कवि हैं–नाम्मळवार, तिरुमंगै आण्डवर, कुलशेखराळ्वार आदि।

महाकवि कम्बन की रचना 'कम्बरामायण' एक अमर कृति है। इसी कारण दसवीं से चौदहवीं शताब्दी के बीच का समय 'कम्बन काल' कहलाता है। 'कम्बरामायण' की रचना 12 हजार 'विरुत्तम' छन्दों में है। संभवतः यह पहला रामकाव्य है। इस काल के अन्य प्रमुख कवि हैं–ओट्टक्कूत्तर, पुगलेंदि, पट्टिनत्तार, शेक्किलार और कच्चियप्पर शिवाचारियार। इस काल मे रचित शास्त्रीय ग्रंथों में व्याकरण व रीति ग्रंथ उल्लेखनीय हैं। 'तोलकाप्पियम', 'अहप्पोरुल', 'नन्नूल', 'नेमिनादम' (गुणवीर पंडिर) 'याप्पेरुंगलम' व 'याप्पेरुंगल-मक्कारिकै' (क्रमशः गुणसेखरम व अमृतशेखर) तो रचे ही गए अन्य कई महत्वपूर्ण संस्कृत अनुवाद भी हुए।

पंद्रहवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी तक मध्यकाल आता है। इस की पहली दो शताब्दियों में टीकाएं आदि हुईं। इनसे गद्य लेखन की शुरुआत मानी जा सकती है। बाद में कवि इरट्टयार, मधुर कवि अन्ठकिय देशिकर, अतिवीर राम पाण्डियर, वरतुंगपांडियर, परजोति आदि प्रमुख कवि हुए। ग्यारहवीं से तेरहवीं शताब्दी तक तमिल में वीर रस की रचनाएं भी हुईं। चौदहवीं शताब्दी के अंतिम चरण में कवि पट्टिनत्तार ने जो रचनाएं दीं उनमें तत्कालीन जीवन की निराशा साफ नजर आती है। अन्य संत कवियों की रचनाएं 'तिरुप्पुगळ' में संकलित हैं। सिद्धों की दक्षिण में भी एक परंपरा रही है। तायुमानवर स्वामि रचित 'सिद्धर गणम' ऐसी ही कृति हैं। सत्रहवीं शताब्दी के शिवज्ञान बोधम', कैवल्यनवनीतम' आदि के अतिरिक्त आनंद रंग पिल्लै का रोजनामचा अठारहवीं शताब्दी की प्रमुख धरोहर है।

उन्नीसवीं शताब्दी के तमिल साहित्य में रामलिंगर, सुंदरम पिल्लै, वेदनायकम, गोपालकृष्ण भारती और तिरिकूडराजप्प कविरायर का प्रमुख स्थान है। काव्य और गद्य रचनाएं, उपन्यास भी इस युग में लिखे गए। गोपाल कृष्ण भारती ने युग प्रवर्तक कवि की भूमिका निभाई। इनका 'नन्दनार चरित्रम' स्मरणीय ग्रंथ हैं।

बीसवीं शताब्दी पुनर्जागरण की शताब्दी है। सुब्रमण्यम भारती के आगमन ने नया प्रकाश फैला दिया। पद्य–गद्य दोनों पर समान अधिकार वाले वह राष्ट्रीय रचनाकार हुए। 'पांचालि शपदम, कुइलपाट्टु और ज्ञानरथम' उल्लेखनीय भारतीकृत रचनाएं हैं। उनका 'चंदिकै कथै' उपन्यास अधूरा ही रह गया। गांधी आंदोलन पर उनकी प्रभावपूर्ण रचनाएं हैं। तविनायकम अडिकल, भारती दासन भी इस काल के प्रमुख रचनाकार हैं।

तमिल में नाट्य परंपरा पी. संबन्द मुदलियार से सही अर्थों में प्रारंभ हुई। वी.के. सूर्यनारायण, एफ.जी.नटेश अय्यर, पार्थसारथी प्रमुख नाटककार हुए। राजम अय्यर के बाद उपन्यासकारों में माधवय्या प्रमुख हैं। पद्मावतीचरित्रम और विजय मार्तण्डम इनके प्रमुख उपन्यास हैं। 'जटा वल्लाभर' नरेश शास्त्री का मूल उपन्यास है। इन्होंने उल्लेखनीय अनुवाद भी किए। रंगराजू वडुवूर दुरैसामी अयंगर और आर.के. नारायण ने भी प्रभावशाली उपन्यास लिखे। नये उपन्यास का वातावरण कल्कि ने बनाया। देवन, स्वर्णम्याल्ल सुब्रमण्यम, लक्ष्मी, कुमुदनी अनुत्तमा आदि के उपन्यासों ने भी अपनी पहचान बनाई।

वी.वी.अय्यर और वेंकटमणि ने कहानी की जिस परंपरा का सूत्रपात किया वह धीरे धीरे विकास करती रही। राजगोपालाचार्य, पुदुमैप्पित्तन, कु.प.राजगोपालन, अखिलन, जगन्नाथन, वी.वी.एस.अय्यर आदि बीसवीं शताब्दी के महत्वपूर्ण कथाकार हैं। व.वे.सुब्रमण्य अय्यर ने आलोचना का प्रारंभिक काम किया। टी.वी. कल्याण सुंदरम तमिल गद्य के जनक ही कहे जाते हैं। निबंधकारों में कल्याण सुंदरम, राजगोपालाचार्य, सन्तानम, अविनाशलिंगम और वेंकटाचारी ने उल्लेखनीय काम किया। बाद में पूरी एक पीढ़ी और निबंधकारों की आई जो सक्रिय है। लोक साहित्य, चरित्र साहित्य और विविध अधुवातन विषयों के लेखन से भी तमिल भाषा का विकास हो रहा है। पत्र–पत्रिकाओं में 'स्वदेश मित्रन' ने जो सफर शुरु किया था उसके बाद ''इन्दिया', 'तमिलनाडु''दिनमणि', 'भारतदेवी', 'चिन्तामणि', 'नवशक्ति' आदि ने उसे आगे बढ़ाया। 'मणिक्कोडि' तमिल का प्रमुख पाक्षिक माना गया। पत्र–पत्रिकाओं से आधुनिक तमिल भाषा को नित नया रूप मिल रहा है।

तेलुगु

द्रविड़ परिवार की प्रमुख भाषा है तेलुगु। संस्कृत व प्राकृत से सर्वाधिक प्रभावित इस भाषा में सहज माधुर्य है। कहते हैं– 'तेलुगु' शब्द की उत्पत्ति 'तेनुगु' से हुई जिसका सबसे पहले प्रयोग आदि कवि नन्नय भट्ट ने किया। तेलुगु साहित्य का विकास बाह्य आक्रमणों से अप्रभावित रहकर ही हुआ। इसका आदिकाल सन् 600 ई. से 1000 ई. तक माना जाता है। नन्नय भट्ट

की रचना, इस भाषा की आदि कृति 1020 ई. के आसपास की है। इसकी समृद्ध भाषा देखकर यह अनुमान लगता है कि पहले से साहित्य रचना होती रही होगी। इसका पहला व्याकरण संस्कृत में लिखा मिलता है। सन् 600 ई. के एक शिलालेख में अंकित पद्यमय पंक्तियों के बाद सन् 844, 889, 927 और 934 ई. के शिलालेख भी देखे गए। नन्नय पूर्व का तेलुगु साहित्य देशी और मार्गी, दो ही रुपों में मिलता है।

तेलुगु साहित्य का पौराणिक काल 1000 से 1500 ई. तक माना जाता है। इस काल का अधिकांश रामायण व महाभारत पर आधारित है। प्रारंभ में नन्नय भट्ट ही एक अनुवादक के रुप में सामने आए। 'महाभारत' का तेलुगु में पद्यबद्ध अनुवाद इन्होंने प्रारंभ किया जिसे बाद में यरंन्ना ने पूरा किया। आंध्रशब्द चिंतामणि, चामुण्डिका विलासमु, इन्द्रसेन विजयमु नन्नय भट्ट के अन्य प्रमुख ग्रंथ हैं। नन्नय के समकालीन कवि थे नारायण भट्ट। तिकन्न सोमयाग्वी सन् 1220 में जन्मे नियोगी ब्राह्मण थे। 'निर्वचनोत्तर रामायण' इनकी पहली कृति है। तिकन्न के बाद यर्रन्न महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। 'हरिवंश पुराण' का तेलुगु में अनुवाद तो किया ही, इन्होंने 'लक्ष्मी नरसिंह पुराण' भी लिखा। पवालुरी मल्लन्ना, इलंगती पेदन्ना, भीम कवि, अर्थवर्णाचार्य, भद्रभूपति, नन्नेकोड, सोमनाथ आदि बाद के महत्वपूर्ण कवि हैं।

कवि भास्कर तेरहवीं शताब्दी में हुए। इनकी रामायण तेलुगु में सर्वाधिक लोकप्रिय हुई। 'उत्तरहरिवंशम्' और 'वसंत विलासम्' इनकी प्रमुख कृतियां हैं। इस काल के अन्य प्रमुख कवि हुए। गौरन्ना, जगन्ना, पोतना, पेछन्ना आदि। सन् 1400 से 1625 तक का काल प्रवन्ध ग्रंथों की रचना के कारण 'प्रवन्ध काल' कहलाता है। यह इस भाषा के साहित्य का स्वर्णकाल कहा जाता है। विजय नगर के राजा कृष्णदेवराय के शासन से पूर्व यह काल प्रारंभ हो गया था। 'आमुक्त माल्यद' इनका प्रमुख तेलुगु काव्य है। इनके कुछ दरबारी कवियों ने भी प्रवंध काव्य लिखे। विनक्कोडवल्लभरायलु पन्द्रहवीं शताब्दी के पहले चरण के प्रमुख कवि हुए। इस शताब्दी के उत्तरार्ध में अनेक कवि हुए। इनमें ताल्लपाक्क अन्नमाचार्य, सिंगय्या वेमन्न उल्लेखनीय हैं। सोलहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में श्रीकृष्ण देवरायलु, पेदना तिम्मन्न, मलन्न, धूर्जरि और नृसिंह प्रमुख माने जाते हैं तो उत्तरार्ध के कवियों में तल्लयाक, चिन्नन, तेनालि रामकृष्णुडु, मल्लारेड्डि, शंकर आदि उल्लेखनीय हैं। इस काल में भक्तिपरक और श्रृंगारपरक साहित्य की रचना प्रमुख रूप से हुई।

सन् 1625 से 1850 तक ह्रास काल कहलाता है। इस काल के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का सर्वथा अभाव रहा। दक्षिण में अंग्रेजों के प्रवेश से स्थिति काफी बदल गई थी। राजनैतिक स्थिति का तेलुगु साहित्य व भाषा के विकास का विपरीत प्रभाव पड़ा। सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के कवियों में कामेश्वर सर्वप्रमुख हैं। 'सत्यभामा सान्तवनु' इनका उल्लेखनीय ग्रंथ है। अठारहवीं शताब्दी के कवियों में शेषमु वेंकटपति, जग्गकवि, लक्ष्मण कवि, कनकेति पापराजु, तिम्मन्न रंगकवि, अय्यलराजु नारायण, लिंगमूर्ति और सोमशेखर उल्लेखनीय हैं। अधिकांश कवि दरबारी थे। उन्नीसवीं शताब्दी के कवियों में कृष्णमूर्ति शास्त्री, जगन्नाथ कवि, पार्वतीश्वर, वेंकटाचार्य की गणना होती है। इस काल में सीतारामाचार्यलु को तेलुगु का प्रामाणिक शब्द कोश तैयार करने का श्रेय मिला। 'जैमिनीभारतुमु' जैसे ग्रंथ से तेलुगु में गद्य की प्रतिष्ठा प्रारंभ हुई। मुस्लिम शासकों ने भी तेलुगु रचना में उत्साह दिखाया। इनकी प्रेरणा से अमीरुलशाह ने तेलुगु में काव्य रचना की। ईसाई कवियों में भी दो सत्रहवीं शताब्दी में तेलुगु में रचना कर चुके थे।

उन्नीसवीं शताब्दी संपन्न होते-होते पाश्चात्य साहित्य व शिक्षा का प्रभाव जिस तरह समूचे भारत पर पड़ता नजर आ रहा था, ठीक वैसे ही तेलुगु भाषी समाज की स्थिति भी थी। इस दृष्टि से तेलुगु साहित्य वा भाषा को समृद्ध करने की सार्थक भूमिका वीरेश लिंगम ने निभाई। वह पुरानी रुढ़ियों के विरोधी थे और समाज को नई दिशा देना चाहते थे। उनके नाटक, उपन्यास, निबन्ध, पत्रकारिता संबन्धी लेखन ने महत्वपूर्ण प्रभाव पैदा किया। इन्होंने सबसे पहले नारी शिक्षा व विधवा-विवाह के समर्थन में माहौल बनाया। जीवनी व आत्मकथा जैसी विधाओं में भी वीरेश लिंगम का महत्वपूर्ण काम है। वड्डादि सुब्बाराव, जयन्ति रामय्या, सुब्बाराव वासुदेव, काशी भट्ट आदि इस काल के प्रमुख कवि माने जाते हैं। शेषाद्रि शर्माकृत अनुवाद कार्य भी इसी काल में हुआ।

विश्वनाथ सत्यनारायण को जो ख्याति बाद में मिली वह कम ही कवियों को मिल पाती है। श्रृंगार वीथि, आंध्रप्रशस्ति, शशिदूतम, किन्नेर सानियाटलु जैसी कृतियों ने इन्हें पर्याप्त सम्मान दिलवाया। रामप्रोलु सुब्बाराव स्वच्छन्द धारा के कवि हुए। आधुनिक कवियों में पिंगलि लक्ष्मी कान्तमु और वेंकटेश्वर राव प्रमुख हैं। सीताराम मूर्ति चौधरी तेलुगु के राष्ट्रीय कवि तो माने ही गए इन्होंने महात्मा गांधी की आत्मकथा का पद्यानुवाद भी किया।

तेलुगु साहित्य में प्रगतिवाद की झलक सन् 1940 के आसपास दिखनी प्रारंभ होती है। इस दृष्टि से श्रीरंगम श्रीनिवास राव शुरुआती कवि हैं। चदलुवाड पिच्चय्य की कोशिशों से 'आंध्रप्रगतिशील लेखक संघ, की स्थापना सन् 1940 में हुई। तेलंगाना आंदोलन के दौर में दाशरथि की कविताएं खूब सराही गई। नवीन उन्मेष के कवियों में श्रीराम शास्त्री, विश्वम, रामुलु रेड्डी, नारायण रेड्डी और दाशरथि उल्लेखनीय हैं। वीरेश लिंगम की दिखाई राह पर नाट्य साहित्य भी आगे बढ़ा। इनके बाद धर्मवरम कृष्णमाचार्य, वेदं वेंकटराय शास्त्री, कोलाचलम श्रीनिवास राव आदि बीसवीं शताब्दी के पहले चरण के प्रमुख नाटककार हैं। बाद में नाटककारों की एक पूरी पीढ़ी तैयार हुई। आधुनिक नाटककारों में आत्रेय, बाला त्रिपुर सुंदरी, मल्लादि विश्वनाथ शर्मा और अवधानी उल्लेखनीय माने जा रहे हैं।

उपन्यास, कहानी, आलोचना, निबन्ध व शास्त्रीय लेखन के विकास की भी तेलुगु में सहज यात्रा है। पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ ही यह गतिवान होती चली गई। 'विवेकवर्धिनी' से प्रारंभ होकर क्रमशः 'भारती', 'जयंती', 'संस्कृति' 'किन्नरी', 'कृष्णा', 'आंध्रपत्रिका', आंध्र... आदि के माध्यम से तेलुगु भाषा नया विका...

वी. राजाराममोहन राय, दादा हयात, ... रेड्डी, के.ए.वाई.पतंजलि, एम.एस.एन.शास्...

टी.नारायण रेड्डी, येर्द्द भीमन्ना जैसे कथाकार और कवि तो राष्ट्रीय स्तर पर पढ़े और जाने जाते हैं।

नेपाली

प्राकृत से निकली नेपाली भारतीय आर्य परिवार की ऐसी भाषा है जो यथोचित विकास कई कारणों से नहीं कर पाई। इस साहित्य में रचना का आरंभ काव्य से हुआ। सुवनन्द दास पहले उल्लेखनीय कवि माने गए। संस्कृत से अनुवाद के माध्यम से काव्य रचना का आरंभ हुआ। अच्छी बात यह है कि नेपाली का प्राचीन गद्य साहित्य भी साथ-साथ चला। भानुभक्त ने 'अध्यात्म रामायण' का अनुवाद किया तो भानु दत्त ने 'हितोपदेश मित्रलाभ'। 'महाभारत' का अनुवाद भी आगे के कवियों के लिए प्रेरक रहा। 'कृष्णचरित्र' नेपाली का पहला खंडकाव्य माना जाता है। इसके रचयिता हैं – वसंतशर्मा।

'पंचतंत्र' के नेपाली अनुवाद को नेपालीकथा के लिए एक टर्निंग प्वाइंट माना जाता है। नारायण भट्ट रचित 'हितोपदेश', कहते हैं पंचतंत्र और जातक कथा के आधार पर रचा गया। शक्ति वल्लभ आर्याल कृत 'हास्य कदंब' (1798) और सुन्दरानन्द बाड़ा कृत 'त्रिरत्न सौंदर्य गाथा' (1832) संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य के आख्यान से ही प्रेरित हैं।

प्रेमनिधि पंत, दीर्घमान, मोतीराम भट्ट, पुष्पनाथ लोहनी, देवीप्रसाद सापकोटा आदि की रचनाएं पुराणों और महाकाव्यों से प्रेरित हैं। सन् 1821 में नेपाली में 'स्वस्थानी व्रत कथा' की रचना ने नेपाली जागरण में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। नेपाली कथा को प्रारंभिक प्रेरणा ऐय्यार-कथाओं से मिली। 'वीट सिक्का', 'लाल हीरा', अचम्मका बच्चा को कथा' 'हातिमताई की कथा' और गुलबकावली' आदि बहुत लोकप्रिय हुईं। नेपाली कथा के विकास में दन्त्य कथा, बालुन और सवाई की महत्वपूर्ण भूमिका है। 'सुनके स्त्रीरानी को कथा' (1920), 'पिनास को कथा, 'जैमिनी बालुन', 'पंचक प्रपंच' दशावतार को बालुन' 'तीज को कथा,' 'भोटको लड़ाई को सवाई' भतालु छोटी को वर्णन' और 'श्री मच्छिन्द्रनाथ को कथा' आदि इस दृष्टि से धरोहर हैं।

आधुनिक नेपाली कथा तो सन् 1934 के बाद ही सामने आई। बनारस से प्रकाशित 'गोर्खा भारत जीवन', 'उपन्यास तरंगिनी', उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध की दो महत्वपूर्ण पत्रिकाएं हैं। इसके बाद 'सुधा सागर' मासिक का समय प्रारंभ हुआ। बाद में तो 'गोर्खा पत्र, काठमांडू से और 'खबर कागत' दार्जिलिंग से प्रारंभ हुआ। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान बनारस के प्रकाशकों ने गोरखा फौजियों के कैम्प में बिकने वाली पुस्तकें खूब छापीं। 1918 में 'रतन सिंह गुसंग को आउटपोस्ट को कथा' अंग्रेजी से नेपाली में अनूदित हुई। दार्जिलिंग से पत्रिका 'चंद्रिका' प्रारंभ हुई। 1926 के आसपास तो देहरादून से प्रकाशित 'गोर्खा संसार' में मौलिक कहानियां प्रकाशित होने लगीं। रुपनारायण सिंह की कहानी अन्नपूर्णा 1927 में प्रकाशित हुई। लाहुरे की कहानी 'देवी को बलि' ने नये सफर की शुरुवात कर दी। इसी बीच रुद्रराज पांडे का उपन्यास 'रुपमती' प्रकाशित हुआ तो एक लहर ही आ गई। लेकिन रुपनारायण सिंह के उपन्यास 'भ्रमर' ने नये संस्कार भी दिए। 1934 के आसपास प्रकाशित पहले उपन्यास के बाद फिर क्रमशः नेपाली कथा जगत में विकास ने गति पकड़ ली। शिवकुमार राई, असीत राई, लीला बहादुर क्षेत्री, भवानी भिक्षु, गोविंद गोठाले, विजय मल्ल, पारिजात, विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला, मत्स्येंद्र प्रधान और ध्रुव चन्द्र गौतम ने नेपाली उपन्यास को नए क्षितिज दिए हैं। आंचलिक कथाकारों में शंकर कोइराला, दौलत विक्रम विष्ट और सुवास घिसिंग के नाम उल्लेखनीय हैं।

नासो (1935) और 'पराईघर' 'सपना को संझना (1936) और 'धनमती को सिनेमा को स्वप्न' ने नेपाली कहानी की जमीन तैयार की। 'कथाकुसुम' पहला मौलिक संग्रह 1938 में प्रकाशित हुआ जिसमें बालकृष्ण सम गुरुप्रसाद मैनाली और पुष्कर शमशेर की कहानियां हैं। स्वतंत्रता के पूर्व तीन कहानी संग्रह नेपाली के प्रकाशित हुए लेकिन नेपाली कथा साहित्य का सही विकास स्वातंत्र्योत्तर काल में ही हुआ। 1960 के बाद की नेपाली कहानी अलग ही ढंग की है।

प्रेम प्रधान, सांत गुरुंग, शंकर सुब्बा फागो, गोपीचन्द प्रधान, आई.के. सिंह, माधव घुड़थोकी आदि 1980 के पूर्व के महत्वपूर्ण कथाकार हैं। इन्द्रबहादुर राई ने बाद में और नए कथा-प्रयोग किए हैं। इस दृष्टि से ईश्वर वल्लभ, परशुराम रोका, इन्द्र सुन्दास, रमेश विकल और पोषण पांडे ने भी सराहनीय काम किया है।

साहित्यलोचना की दृष्टि से इन्द्र बहादुर राई, लहरवी देवी सुन्दास और डा. कुमार प्रधान के बाद विर्ख खड़की डुवर्सेली, घनश्याम नेपाल आदि ने उल्लेखनीय काम किया है।

पंजाबी

भारतीय आर्य भाषाओं की तरह पंजाबी का उद्गम भी प्राकृत के अन्तिम रुप अपभ्रंश से हुआ। जिस अपभ्रंश से पंजाबी का विकास हुआ उसे टक्क अपभ्रंश कहा जाता है। सिंधी के बाद पंजाबी ही ऐसी भाषा है जिसमें मध्यकालीन भाषा के अधिकांश रुप सुरक्षित हैं। पंजाबी में कई शब्द ऐसे हैं जो बौद्ध और जैन ग्रंथों में भी विद्यमान हैं। पंजाबी तीन लिपियों में लिखी जाती है-देवनागरी, फारसी और गुरुमुखी। इसकी असल लिपि गुरुमुखी ही है।

पंजाबी साहित्य के विकास का प्रस्थान बिंदु फरीद शकरगंज से मानते हैं। इससे कुछ शताब्दी पहले पंजाबी एक बोली के रूप में मौजूद थी। पंजाबी का आदिकाल 1177 से 1450 तक माना जाता है। मध्यकाल सन् 1451 से 1850 तक का और आधुनिक काल 1851 से वर्तमान तक है।

फरीद की रचनाओं में आदर्श पंजाबी, हिन्दवी और मुलतानी, तीनों रुप नजर आते हैं। उनकी भक्ति भावना और सोच का गहरा असर पंजाब पर पड़ा। फरीद के बाद गुरुनानक का साहित्य उल्लेखनीय है। इनमें दो सौ वर्षों का अंतराल आता है। इस बीच युसुफ-जुलेखा, शीरीं फरहाद सरीखी रचनाएं हैं जो लौकिक प्रेम पर आधारित हैं।

पंजाबी के मध्यकाल को गुरुनानक काल, नानकोत्तर काल और रणजीत सिंह काल में विभाजित करना ठीक होगा। गुरुनानक ने सिक्ख पंथ की स्थापना की और ज्ञान, भक्ति व कर्म के साथ सहज योग को सामने रखा। भक्ति और प्रद

के लिए उन्होंने काव्य को माध्यम बनाया। नानक साहित्य को दो मार्गों में देखा जा सकता है – 'आदि ग्रंथ' में , संग्रहीत व गद्य–पद्य ग्रंथों में उद्धरित। फारसी, पंजाबी, हिन्दी छन्दों में गुरु नानक ने करीयन 16 अन्य ग्रथों का प्रणयन किया। नानक काल के अन्य कवियों में गुरुअंगद देव, अमर दास, रामदास, अर्जुन देव, हर गोविन्द, तेग वहादुर और गुरु गोविन्द सिंह उल्लेखनीय हैं।

नानकोत्तर काल 1708 से 1800 तक माना जाता है। इस काल में प्राचीन साहित्य का संकलन ही था। गुरुओं का ऐतिहासिक विवरण, क्रमवद्ध करना, प्रेमगाथाओं की रचना, संस्कृत और व्रज भाषा के साहित्य का अनुवाद व भक्तिपूर्ण रचना इस काल में किया गया प्रमुख काम है। इतिहास पुरुषों से संवंधित गाथाएं भी लिखी गई। अद्रन शाह, अहमद, अली हैदर, अमरदास, सुंदरदास, अरुरसिंह, गुरुदास सिंह इत्यादि सौ में भी अधिक कवि हुए। हीर की प्रेमकथा को हमीद ने सर्वोत्कृष्ट रुप में प्रस्तुत किया। केसर सिंह और सेवा सिंह के योगदान को भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

रणजीत सिंह काल 1800 से 1850 तक माना जाता है। इस काल में पंजावी लेखकों ने फारसी छन्दों में पर्याप्त रचनाएं कीं। ऐतिहासिक आख्यान उर्दू–पंजावी में लिखे गए। उर्दू–पंजावी में कृष्णकाव्य भी रचा गया। नसीर इन कवियों में प्रमुख रहे।

अब्दुल हकीम, अहमद यार, अलक्खशाह, वालमुकुंद, वसनासिंह, दयालसिंह, हाशम, इलाही वरुश, संतोष सिंह, तेजभान आदि अनेक प्रमुख कवि हुए। काव्य के अतिरिक्त नूर हुसैन ने 'भगवत गीता', प्रताप सिंह ने 'राधा गीत संगीत' और संतोष सिंह ने भी कई ग्रंथ गद्य में दिए। पंजावी में विपुल अनुवाद इस काल में हुआ।

गुरुगोविंद सिंह के वाद प्रेम काव्य की धारा वहने लगी। धीरे–धीरे 'प्रेम भक्ति' से भक्ति का भी लोप हो गया। लेकिन कुछ कवियों ने लौकिक प्रेम पर अध्यात्म का रंग चढ़ाए रखा। इनमें वुल्लेशाह महत्वपूर्ण हैं। इनके वाद इश्क मिज़ाजी एक स्वभाव ही वन गया साहित्य का। दामोदर, वारिस शाह, हाशिम, शाह मुहम्मद परीखे उल्लेखनीय रचनाकारों ने पंजावी साहित्य का नया मार्ग प्रशस्त किया।

पंजावी के गद्य के वारे में स्पष्ट है कि इसका प्रारंभ तो धार्मिक आवश्यकता के चलते ही हुआ। उत्तर मध्यकाल के गद्य में संत वचन, गद्यानुवाद, जीवन चरित्र, संवाद वाणीविश्लेषण, हिन्दू ग्रंथों का अनुवाद, सिद्धांत विवेचन, गुरुनानक की जन्म साखी, वार्ताएं, हाजिरनाम आदि प्रमुख हैं। सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है–मेहरवान सिंह द्वारा लिखित गुरु नानक का जीवन चरित्र।

आधुनिक काल का आरंभ होता है 1851 से। इस काल में पंजावी गद्य का विकास राष्ट्रीय आंदोलन के साथ–साथ हुआ। विशुद्ध पंजावी में गद्य रचनाएं होने लगीं। व्रजभाषा के असर से मुक्ति ले ली गई। भाई वीरसिंह आधुनिक पद्य के और भाई मोहन सिंह आधुनिक गद्य के जनक माने जाते हैं। भाई वीर सिंह के समकालीनों में काहन सिंह, चरण सिंह, पूरण सिंह, धनीराम चात्रिक प्रमुख हैं।

आधुनिक कवियों में फिरोजदीन शरफ, विधानसिंह, गुरुमुखसिंह मुसाफिर, प्रीतम सिंह आदि उल्लेखनीय हैं। वर्तमानकाल के डा.मोहनसिंह और अमृता प्रीतम को सबसे उंचा दर्जा हासिल है। मोहन सिंह, 'माहिर' नाम से काव्य रचना करते हैं। अमृता का 'वारिसशाह के प्रति' कविता ने उन्हें विशेष सम्मान दिलाया। अमृता कथा साहित्य में भी समान रुप से सम्मानित हैं।

'सुभद्रा' पंजावी का पहला नाटक माना जाता है। इसके रचनाकार थे प्रो. ईश्वर चन्द्र नंदा। इनके वाद वलवंत गार्गी ने सर्वाधिक महत्वपूर्ण नाटक दिए हैं। प्रारंभिक उपन्यासों में वीर सिंह के 'सुन्दरी', 'विजय सिंह' और 'सतवन्त कौर' की गणना होती है। नानक सिंह आधुनिक काल के प्रमुख उपन्यासकार है। इनका 'मतरेई मा' 1928 में प्रकाशित हुआ था। इसके वाद जो उपन्यासकार उल्लेखनीय काम कर सके, उनमें कर्तार सिंह दुग्गाल, सुंदर सिंह नरुला, मास्टर तारा सिंह और जसवंत सिंह की गणना होती है। 'पूरणमासी' को जसवन्त सिंह की उत्कृष्ट रचना माना गया।

पंजावी कहानी की स्थिति अन्य विधाओं की अपेक्षा वहुत सुखकर है। 1935 के आसपास पंजावी कहानी ने जड़ें जमाना प्रारंभ कर दिया था जव संत सिंह सेखों जैसे कथाकार आए। कर्तार सिहं दुग्गाल, कुलवंत सिंह विर्क की कहानियों ने तो राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान वनाई। 'लिखारी' के प्रकाशन से कहानियों को एक मंच मिला। सुजान सिंह व अमृता प्रीतम की कहानियों की भी अपना विशिष्ट स्थान स्वीकार किया गया। आज तो तीन–चार कथा पीढ़ियां पंजावी में सक्रिय हैं। 'नागमणि' के माध्यम से भी रचनाएं आ रही हैं।

वीरसिंह और मोहन सिंह के वाद पजावी साहित्य के लिए विविध रंगी विकास का काम किया गुरुवख्श सिंह ने । 'प्रीत लड़ी' के प्रकाशन से रचनाकारों को एक नया मंच तो मिला ही गुरुवख्श सिंह के निवन्धों ने पजावी में नई राह खोल दी आधुनिक गद्य साहित्य में काहन सिंह, तेजासिंह, गंडा सिंह जैसे विद्वानों ने जो काम रचनात्मक शोध और प्रस्तुति के रुप में किया उससे पंजावी साहित्य नई सीड़ियां चढ़ गया।

कथाकारों में आज वूटा सिंह चंदन नेगी, [illegible], जसवंद सिंह विरदी प्रमुख हैं तो लाल सिंह दिल, [illegible] हलवारवी, अवतार [illegible] टिवाणा सरीखे [illegible] भरी पूरी जमात [illegible] है। सुरजीत पातर व [illegible] सरना जैसे [illegible] ने तो पजावी साहित्य [illegible] ही दी है। [illegible] डायरी, स्केच, रिपोर्ताज [illegible] विधाओं में [illegible] साहित्य रचा जा रहा है।

वंगला

[illegible] 45 [illegible] व्यवहार [illegible] है [illegible] हैं। [illegible] 1200 [illegible] 1840 के वाद [illegible]

[illegible]

अभिनंदन और संध्याकर हैं। जयदेव का समय बारहवीं शती के अंतिम चरण में राजा लक्ष्मण सेन के शासन का है। बंगला की पहली रचना मानी जाती है – 'रचना चर्यापद'। इसकी खोज महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री ने की और बाद में इसे 'हजार बछरेर पुराण बंगला भाषाय बौद्धगान ओ दोहा' नाम से प्रकाशित कराया। इसी काल में बंगला में कुछ पूजागीत, गाथा, लोकगीत, व्रत कथाएं आदि भी आईं। बंगला साहित्य के इतिहास में इसे 'हिन्दू बौद्ध काल' कहा जाता है। 'शून्य पुराण' के बाद आदिकाल का एक उल्लेखनीय ग्रंथ है–'अनिलपुराण'। खेलाराम का 'धर्म मंगल काव्य', 'गोरक्ष विजय' के अतिरिक्त कुछ पोथियां भी मिलती हैं। 'माणिक चांदेरगान' को डा. ग्रियर्सन ने 11 वीं शताब्दी का बताया है। प्राचीन बंगला साहित्य में गोपीचंद और भरतरी की रचनाएं भी मिलती हैं। डाक और खना के वचन भी प्राचीन माने जाते हैं।

बंगला साहित्य का मध्यकाल तीन हिस्सों में समझा जा सकता है–पूर्व मध्यकाल, उत्तर मध्यकाल और संधिकाल। पूर्वमध्यकाल 1200 से 1600 के बीच का है। जयदेव के बाद का समय उनके प्रभाव में रहा। कृतिवास ओझा की 'रामायण' इसी काल की है। मालाधर वसु की 'कृष्णलीला काव्य' और 'श्रीकृष्ण विजय' आज भी पढ़ी जाती है। हुसैन शाह के समय 'मनसा मंगल' की रचना विजय गुप्त ने 1495 ई. में की। यशोराज खां कृत 'कृष्ण मंगल', श्रीधर कृत 'विद्यासुंदर' तो उल्लेखनीय है ही लेकिन चंडीदास कृत 'श्रीकृष्ण कीरति' और उनसे एक शताब्दी पहले हुए विद्यापति का प्रभाव भी बंगला में लंबे समय तक बना रहा। बंगला साहित्य में पन्द्रहवीं शताब्दी से कृष्ण काथा की सुस्पष्ट परंपरा मिलती है। नरहरि सरकार, वंशीवदन, वासुदेव घोष, गोविन्द माधव, वासुदेव गुप्त, गोविंदाचार्य और माधवाचार्य आदि प्रमुख वैष्णव बंगला कवि इसी काल के हैं। चैतन्य महाप्रभु की जीवनी से संबंधित साहित्य, कृष्णमंगल काव्य और चंडीमंगल काव्य भी रचे गए।

उत्तर मध्यकाल में वैष्णव काव्य छाया रहा। सत्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में नरोत्तम की पदावली बंगला साहित्य को समृद्ध करती है तो श्रीनिवास और नरोत्तम के शिष्य कवियों ने भी अच्छी रचनाएं कीं। जीवनी काव्य, अनुवाद और स्वतंत्र पद खूब रचे गए। कविराज वल्लभ का 'वंशी विलास' और गोपीवल्लभ दास कृत 'रसिक मंगल ग्रंथ' इसी समय के हैं।

सत्रहवीं शताब्दी में 'श्रीकृष्ण विलाप', 'भक्तिमान प्रदीप' 'दुर्गामंगल', 'रायमंगल' जैसे ग्रंथ और अलाओल जैसे रचनाकार प्रमुख हैं। शेखचाद कृत 'रसूल विजय' और शाह मुहम्मद सगीर कृत 'यूसुफ जुलेखा' भी उल्लेखनीय हैं। धर्म पूजा काव्य की दृष्टि से श्याम पंडित, रामदास कृत रचनाएं प्रमुख हैं।

अठारहवीं शताब्दी के बंगला साहित्य की कुछ विशेषताएं उल्लेखनीय हैं। मुद्रण और गद्यलेखन का आरंभ इसी काल में हुआ। 'बंगाल पोर्तगीज' शब्दकोश तैयार कराया गया। इस काल में वैष्णव कथा रचना तो होती ही रही, संस्कृत से अनुवाद भी जारी रहा। 'गीत कल्पतरु' या 'पद कल्पतरु' इस काल का सर्वाधिक काव्यग्रंथ है जिसमें डेढ़ सौ के करीब कवियों के तीन हजार पद संकलित हैं। मंगल काव्य परंपरा का विकास तो हुआ ही 'विधा सुंदर काव्य' की रचना भी हुई। बलराम, भारतचन्द्र राय, रामप्रसाद सेन, राधाकांत मिश्र, प्राणराम चक्रवर्ती आदि इसके प्रमुख कवि हैं। ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन काल में प्रारंभ हुए अनुवाद कार्य से बंगला गद्य के शुरुआती दौर में काफी सहायता मिली। विलकिन्स ने बंगला का टाइप तैयार कराया और मुद्रण प्रारंभ हुआ।

वैसे संधिकाल, जो 1801 से 1850 तक चला, बंगला गद्य के विकास का उल्लेखनीय समय है। फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना 1800 ई. में क्या हुई, भाषा–विभाग ने अपना काम शुरू कर दिया। विलियम केरी ने व्याकरण, कोश और कुछ संकलन तैयार किए। 'प्रतापादित्य चरित्र' और 'हितोपदेश' के प्रकाशन से बंगला गद्य को दिशा मिली। रामराम वसु पहले गद्यकार माने गए। राममोहन राय, राधाकान्त देव, कालीकृष्ण देव ने उल्लेखनीय काम किया। दिक्कत यही थी कि प्रारंभिक गद्य ग्रंथों को 'किरस्तानी' मान लिया गया और बड़ा समुदाय उनसे न जुड़ा। 'दिग्दर्शन', 'समाचार दर्पण' और 'बंगला गजट' से तो नया माहौल ही तैयार होने लगा।

बंगला का आधुनिक काल 1851 से प्रारंभ होता है। इसका पहला चरण 1851 से 1900 तक माना जाता है। ईश्वर चंद विद्यासागर आधुनिक बंगला साहित्य के भीष्म हैं। इनके अनुवाद 'बेताल पंचविंशति' के बाद बंगाल का इतिहास, जीवन चरित, बोधोदय, शकुंतला, चरितावली आदि के अतिरिक्त 'व्याकरण कौमुदी' की प्रस्तुति ने उल्लेखनीय योगदान किया। तत्वबोधिनी' पत्रिका का सम्पादन तो अक्षयकुमार दत्त ने किया ही 1852 में प्रकाशित उनका निबंध संग्रह प्रमुख घटना माना जाता है। भुदेव मुखोपाध्याय और राजनारायण वसु ने भी इस काल में रचना और अनुवाद का कार्य किया।

रंगलाल बंद्योपाध्याय इस काल के प्रमुख कवि हैं। अपने कविता शुरू ईश्वरचंद गुप्त की शैली का विकास ही इन्होंने किया। कृष्णचंद मजुमदार ने धर्म और नीतिपरक रचनाएं कीं। इसी समय युगप्रवर्तक कवि मधुसूदन दत्त आए। कई भाषाओं के ज्ञाता तो यह थे ही, अंग्रेजी में लेखन के बाद यह बंगला में भी लिखने लगे। इनका महाकाव्य 'मेघनाधवध' अमित्राक्षर छन्द में है। यह छन्द इन्हीं का बनाया है।

महाकवि रवीन्द्रनाथ का आगमन बंगाल साहित्य के लिए वरदान साबित हुआ। इनकी पहली काव्यकृति 'ज्ञानांकुर' में प्रकाशित होने के बाद 1879 में पुस्तकाकार छपी। 'संध्या संगीत', 'चित्रांगदा', 'सोनारतरी' से होते हुए रवींद्रनाथ चित्रा, चैताली और कल्पना तक पहुंचे। सन् 1900 तक रवींद्रनाथ में एक बदलाव नज़र आता है जहां वह 'क्षणिका' लिखते हैं। 'गीतांजलि' से तो समूचा भारतीय साहित्य ही गौरवान्वित हुआ। इस काल में बंगला में नाट्य साहित्य, की समृद्ध परंपरा रही ही, 'कादंबरी', से ताराशंकर तर्करत्न ने उपन्यास की पगडंडी खोल दी। लेकिन बंगला उपन्यास को सही दिशा और सामर्थ्य देने वाले पहले रचनाकार बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय। इनकी प्रेरणा से इन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय आदि ने भी उपन्यास लेखन किया लेकिन आधुनिक काल के पहले बड़े उपन्यासकार हुए रवींद्रनाथ। कहानी, निबंध–लेखन, पत्र–पत्रिकाओं के जरिए बंगला साहित्य भारतीय साहित्य

विशेष स्थिति बनाता चला गया। रवींद्रनाथ ने बाल साहित्य की दिशा में भी उल्लेखनीय प्रारंभिक योगदान किया। बंगला साहित्य के आधुनिक काल का दूसरा चरण 1901 से प्रारंभ होता है। 1906 में रवींद्रनाथ की कृति 'रवेया' और 1910 में 'गीतांजलि' के प्रकाशन ने एक नए युग का सूत्रपात किया। 1913 में रवींद्रनाथ को 'गीतांजलि' के लिए नोबेल पुरस्कार मिला। वह विश्वकवि हो गए। बंगला गद्यकाव्य के जनक भी रवींद्रनाथ हैं। उनके समकालीनों में देवेन्द्रनाथ सेन, द्विजेन्द्रलाल राय, करुणानिधान बनर्जी आदि प्रमुख थे।

इस काल में कवि काज़ी नजरुल इस्लाम का प्रमुख स्थान है। 1919 में यह बंगला साहित्य में कथाकार बतौर आए थे। राष्ट्रकवि नजरुल ने जन जागृति का साहित्य दिया तो प्रगतिवादी युग में बुद्धदेव वसु, गोकुल नाग, जीवनानंददास प्रमुख रचनाकार रहे। सुकांत भट्टाचार्य, सुभाष मुखोपाध्याय की कविताओं ने नया ही स्वर दिया। नाट्य साहित्य में रवींद्रनाथ ने प्रमुख शुरुआत की और फिर द्विजेंद्रलाल राय न गिरीष घोष सरीखे रचनाकार इस विधा में आए।

आंधुनिक काल के दूसरे चरण में बंगला उपन्यास को रवींद्रनाथ व शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय सरीखे लेखक मिले। 'चोखेद बालि' (आंख की किरकिरी) 'नौका डूबी', 'गोरा', 'जीवनस्मृति' व 'घरे बाहिरे' रवींद्र के प्रमुख उपन्यास हैं। शरत युग ने तो बंगाल साहित्य को बड़ा पाठक पर्ग दिया। उनका पहला उपन्यास 'बड़ी दीदी' 1908 में प्रकाशित हुआ था। इनके बाद शैलजानंद मुखर्जी, प्रेमेन्द्र मित्र, ताराशंकर बंद्योपाध्याय, आशापूर्णा देवी, नरेन्द्र मित्र, समरेश वसु और माणिक बंद्योपाध्याय प्रमुख हैं। कथालेखन में भी यही रचनाकार प्रमुख रहे। भारतीय पाठकों में सर्वाधिक पढ़े गए बाद के दो उपन्यासकारों में विमल मित्र और महाश्वेता देवी प्रमुख हैं। महाश्वेता को तो भारतीय ज्ञानपीठ सम्मान भी प्रदान किया गया।

बंगला निबंध में रवीन्द्रनाथ से प्रारंभ परंपरा क्रमश: प्रमथ चौधरी, धूर्जरीप्रसाद मुखोपाध्याय, विपिन चन्द्र पाल, गोपाल हालदार, पमथनाथविशि से होती हुई आज की पीढ़ी तक आ गी है। इस दिशा में महाश्वेता देवी का लेखन महत्वपूर्ण है।

णिपुरी

यह तिब्बती-बर्मी भाषा कहलाती है। कई जातियों द्वारा बोली ने वाली भाषा का मिलाजुला रुप है मणिपुरी। इसकी सुदीर्घ हित्यक परंपरा को आदिकाल, मध्यकाल व आधुनिककाल वेकसित होते हुए देखा जाता है। 17 वीं सदी के अंत तक दिकाल और उसके बाद 19 वीं सदी के मध्य तक मध्यकाल ा इसके बाद आधुनिक काल माना जाता है।

33 वीं ई. में परखंबा के गद्दी पर बैठते ही कुछ अभिलेख ार हुए। प्रारंभ में लोक साहित्य की समृद्ध परंपरा रही। गिरा काव्य' और 'नेकोनितन खोत फंयल काव' का समय लहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध का बताया गया है। 'लेत्वक ओल' व 'पंतोईबि खोंगुड' सत्रहवीं शताब्दी से हैं। मणिपुरी गद्य लेखन प्रारंभिक काल में ही प्रारंभ हो गया था।

कतिपय भारतीय कृतियों के उत्कृष्ट अनुवाद भी मणिपुरी हैं। 'हिजाहिराओ' को इस दृष्टि से श्रेष्ठ माना जाता है। अठारहवीं शताब्दी में प्रमुख कवि हुए लवंग सिंह। 'राम नो गवा' उनकी प्रमुख कृति मानी जाती है।

आधुनिक मणिपुरी कथा साहित्य की समृद्ध परंपरा को प्रारंभिक (1933 से 1948), विकास काल (1948 से 1965), स्वर्ण काल (1965 से 1980 तक) और वर्तमान काल (1980 से अब तक) के रुप में विभक्त किया गया है। डा. लमाबम कमल सिंह लिखित 'बृजेंद्रगी लुहोङ्बा' को पहली मणिपुरी कहानी माना गया है। यह पत्रिका ललित मंजरी में सन् 1933 में प्रकाशित हुई थी। आधुनिक मणिपुरी साहित्य के इतिहास में वर्ष 1946 महत्वपूर्ण है। राजकुमार शीतल जीत सिंह के दो कहानी संग्रह इस वर्ष आए 'लैकोनुइन्दा' और 'लैनुडस'।

विकास काल में आंचलिक कथाओं का दौर रहा। नैतिक शिक्षा व आदर्श साहित्य के केंद्र में रहे। एलाङ्बम रजनीकांत के दो संग्रह 'चिङ्या तमया' और गुमगी मां' 1950 के बाद प्रकाशित हुए। 1965 के आसपास तो मणिपुरी कथाकारों में उत्साह देखते ही बनता है। महाराज कुमारी विनोदनी देवी, तोङ्बोनबम कुंजमोहनसिंह, खमनथेम प्रकाशसिंह, हिजम गुण सिंह, शिजगुरुबयुम नीलबीर शास्त्री, श्री बीरेन, चित्रेश्वर शर्मा आदि ने नए किस्म की कहानियां लिखनी प्रारंभ की। 'कृतनुंगाई रंकत चंद्रमुखी (1965), इलिसा अमगी महओ (1973), इचेगी शम (1965), फिजङ गरुमदा (1969), शन्नबुब्दा (1978), ङशिहि लाकूले (1980) इस काल के प्रमुख कथा संग्रह हैं।

1980 के बाद की मणिपुरी कहानी में प्रयोग प्रारंभ हो जाते हैं। अकहानी की मार स्वच्छंदता, कुंठा वा सत्रास लेकर आती है। इस समय के प्रमुख कहानीकारों में एलाङ्बम दीनमणि सिंह, तोङ्बोनबम बीरेन, लमाबम बीरमणि सिंह, धुमलेमनम इबोमचासिह, किशोर चांद, प्रियकुमार, शरतचंद्र, एलाङ्बम सोनमणि सिह आते है। इन सभी के कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। समकालीन मणिपुरी कविता की शुरुआत 1949 मे एलाङ्बम नीलकांत सिंह से मानी जाती है। इनकी कविता 'मणिपुरी' इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। इनसे पूर्व हिजम इरावत की कविताओं ने नएपन की अलख जगानी प्रारंभ कर दी थी। इनका संग्रह डा. देवराज के अनुसार प्रकाशित हुआ 1987 में 'इमागी पूजा शीर्षक से । दुर्भाग्य से यह रचनाकार के निधन के 36 वर्ष बाद प्रकाशित हुआ।

'मणिपुरी साहित्य परिषद व 'मणिपुर हिन्दी परिषद' सरीखी सस्थाओ से रचनात्मक माहौल बना। कोङ्जम इबोपिशप, एन जोतिरिन्द्र लवाङ ओर पे. कोकडाङ सिंह जैसे कवियों की रचनाओ में नयी हवा विचार और यथार्थ के दर्शन होते हैं। को हेमचन्द, रजीत डबल्यू, यू. मंगीचंद, यु. [illegible] सिंह, ए नीलकान्त सिह, एबेमपिशक देवी, सनरुप [illegible] रतन थिमस, श्रीबीरेन आदि की कविताएं मणिपुरी [illegible] राष्ट्रीय स्तर के आधुनिक बोध से जोड़ने में [illegible] मरुप' आदोलन अधिक भले ही न फैल [illegible] 1930 में ही इसने अपनी जड़ें जमा [illegible] 1960 में जाकर फूटे। यद्यपि यह है, लेकिन इसका प्रभाव रचनाओं [illegible]

मधुवीर की कविताएं इस आलोक में देखी जा सकती हैं। लाइश्रम समरेन्द्र का व्यंग्यात्मक लहजा अलग ही प्रभाव रखता है।

आज हिजम इरावत सिंह, मेमचौबी, माखोनमनि मोड शाया, दिलीप मयेङबम, एस. लनचनेबा मीतै, दोनेश्वर कोन्सम, के. कुलध्वज, वीरेन्द्रजीत नाओरेम, वरकन्या देवी, कुंजरानी लोङजम चनु सरीखे कई कवि सक्रिय हैं। मणिपुरी साहित्य विकास की ओर निरन्तर उन्मुख है।

मराठी

मराठी का जन्म महाराष्ट्री अपभ्रंश से हुआ। मराठी में संस्कृत के तत्सम शब्द खूब मिलते हैं। पाली के भी कुछ शब्द यहां हैं। पैशाची, मागधी और अर्धमागधी का प्रभाव भी है लेकिन अपभ्रंशों में महाराष्ट्री में ही रचना अधिक हुई। इसकी अनेक विशेषताएं मराठी ने ग्रहण की हैं। स्वामी मुकुंदराज कृत 'विवेक सिंधु' मराठी का पहला ग्रंथ माना जाता है। इसकी रचना सन् 1188 में हुई थी। एक शताब्दी बाद संत ज्ञानेश्वर की 'ज्ञानेश्वरी' सामने आई। इस काल तक मराठी पर्याप्त विकास कर गई थी। अनुमान है कि मराठी का उद्भव ईसा की आठवीं शताब्दी के पूर्व हुआ होगा। 'पचतंत्र' का मराठी रुपांतर भी प्रारंभिक ग्रंथों में है। उपलब्ध सामग्री को आधार बनाएं तो इस भाषा के क्रमिक विकास पर बारहवीं शताब्दी से ही विचार किया जा सकता है। ज्ञानेश्वर हुए राजा रामदेव के काल में। इसी समय नामदेव, नरहरि, मुक्ताबाई, परसा भगत या अन्य कई भक्त कवि रचनाएं कर रहे थे।

मराठी का यादव काल 1188 से 1240 तक माना जाता है। इस समय यह फारसी के प्रभाव से एकदम मुक्त रही। लेकिन इस काल के बाद मराठी की स्थिति बिगड़ने लगी। नरसिंह सरस्वती व जनार्दन स्वामी ने इसे संभाला और सही दिशा दी। एकनाथ स्वामी ने 'ज्ञानेश्वरी' का भाषा-संस्कार कर उसे घर-घर तक पहुंचाया। इन्हीं के समय के दासोपंत ने भी विपुल साहित्य रचना की। यादव कालीन मराठी बहमनी काल में ज्यादा संस्कृत निष्ठ हो गई। मुस्लिम संपर्क से फारसी शब्दों का प्रवेश भी होने लगा। शिवाजी काल में प्रयत्न यह रहा कि फारसी के शब्दों को निकाल दिया जाए लेकिन यह सरल न था। इस काम में तीन सौ वर्ष लग गए। शिवाजी काल मे तुकाराम व समर्थ गुरु रामदास हुए। शुद्ध मराठी में रचना का उत्साह बढ़ा।

पेशवाकाल 1700 से 1800 तक माना जाता है। इस समय मराठी फिर फारसी आकर्षण मे बंधने लगी। 1801 के बाद अंग्रेजों का समय आता है। अंग्रेज शिक्षाशास्त्रियों ने पं. विद्यानाथ की मदद से एक कोश प्रकाशित कराया। सदाशिव काशीनाथ इस युग के महत्वपूर्ण रचनाकार हैं। बालगंगाधर शास्त्री, जनार्दन, अप्पाजी गाडगिल व हरिशंकर ने मराठी साहित्य के विकास मे योगदान किया। संस्कृत नाटकों का मराठी में अनुवाद इसी समय हुआ। विनायक राव कीर्तने के नाटक ऐतिहासिक थे।

इसके बाद आधुनिक काल प्रारंभ होता है। 25 जुलाई 1905 को लार्ड कर्जन ने बंगाल के दो टुकड़े करवा दिए तो आंदोलन ही प्रारंभ हो गया। महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक ने नेतृत्व संभाला। पहले दौर में यदि हरिभाऊ आपटे, वामन राव जोशी व गड़करी ने साहित्यिक रचनाएं कीं तो दूसरे दौर में तिलक, सावरकर, परांजपे और भोपटकर सामने आये इनसे पूर्व कतिपय अंग्रेजी अनुवाद और महादेव गोविंद कोल्हटकर की पुस्तक 'प्राकृत कविते ची पुस्तक' ही प्रकाशित हुई थी।

1921 के बाद के कवियों में राजकवि तांबे, चंद्रशेखर, नामदेव, गोखले, देशपांडे, साने गुरुजी, कुसुमाग्रज आदि प्रमुख हैं। कवियत्रियों में संजीवनी मराठे, इन्दिराबाई प्रमुख है। बाद के दो दशकों में छायावादी व प्रयोगवादी प्रकृति के कवि हुए जिनमें य.द.भावे, मनमोहन, मुक्तिबोध और करंदीकर चर्चित रहे। केशव मेश्राम, द.भा.धामणस्कर, नारायण कुलकर्णी कावठेकर इधर राष्ट्रीय पहचान के कवि हैं।

संस्कृत अनुवाद से प्रारंभ मराठी का नाट्य साहित्य क्रमश: विकास करता रहा। किर्लोस्कर के बाद गो.ब.देवल, खाडिलकर, कोल्हटकर, गड़करी, दरेरकर, मामा वरेरकर, वामनराव जोशी, अत्रे आदि ने मराठी नाटक को विकसित किया। आज तो मराठी नाटक की भारतीय नाट्य जगत में विशेष स्थिति है। रांगणेकर, भोले, फड़के, बड़ेकर, शिखड़कर, देशपांडे आदि के बाद भी कई पीढ़िया सक्रिय हैं नाटक के क्षेत्र में।

मराठी उपन्यास 1875 के बाद गति पा सका। इससे पूर्व कुछ जासूसी उपन्यास ही लिखे गए थे। इसके बाद 'शिरस्तेदार', 'नारायणराव' व 'स्त्री चरित्र' जैसे उपन्यास आए तो सुधार प्रारंभ हुआ। हरिनारायण आपटे ने सामाजिक व ऐतिहासिक उपन्यासों का सिलसिला चलाया। हरि आपटे, नाथ माधव, वामन मल्हार जोशी के उपन्यास तो इस युग में आए ही। अनुवाद रूप में भी बहुत से उपन्यास पाठकों को मिले। 1920 के बाद फड़के, खांडेकर, साने गुरुजी, जोशी आदि प्रमुख उपन्यासकार रहे। बाद में महिला उपन्यासकारों ने भी मराठी को समृद्ध उपन्यास दिए। 1940 के बाद दलित उभार की रचनाओं से मराठी साहित्य को नई दिशा मिली। उपन्यास भी अछूता न रहा। 'मजूर', 'माहित्यांचि मंजु[illegible]' 'जंगलांतील छाया' व 'उघड़या जगत' सरीखे उपन्[illegible] इसकी शुरुआती कड़ी हैं।

मराठी के प्राय: सभी उपन्यासकारों ने कहानी-लेखन किया। मराठी में कहानी लेखन 1920 के बाद आरंभ हु[illegible] 1923 मे दिवाकर कृष्ण का कहानी संग्रह 'समाधि आ[illegible] सहा इतर गोष्ठी' प्रकाशित हुआ। यह पहला उल्लेखनीय प्रयास था। इनके बाद वि.स.खांडेकर, ना.सी.फड़के, यश[illegible] गोपाल जोशी आदि की पीढ़ी की रचनाएं आई। महि[illegible] कथाकारों मे पिरोज आनंदकर, शशिकला, [illegible] कमलाबाई, कुसुमावती देशपांडे, मालती बाई दांडेकर [illegible] की एक पूरी पीढ़ी सामने आई।

बाद के कहानीकारों में अरविंद गोखले, पु.ल.भावे, [illegible] खेर और ल. रा. पटवर्धन की पीढ़ी के साथ दो कथा पीढ़ि[illegible] और सक्रिय हैं। आनंद यादव, ह. मो. मराठे, भारत सा[illegible] और आशा बगे इधर राष्ट्रीय स्तर पर पहचान रखते हैं।

मराठी में शास्त्रीय व लघु निबंधों की स्वस्थ परंपरा है। चिपलूणकर, तिलक और आगरकर से प्रारंभ निबंध परं[illegible] क्रमश: वि.ल.भावे, रा. मि. जोशी, मिड़े, देशपांडे, सबों [illegible] विकसित होती हुई साहित्य की आलोचना तक जा पहुं[illegible] प्रबंधकारों ने निबंध भी लिखे। बाद में तो कई पीढ़ि[illegible]

नेबंधकारों की आई जिन्होंने मराठी निबंध को समृद्ध किया। आलोचना व चरित्र साहित्य की भी मराठी में समृद्ध परंपरा है। बीसवीं शताब्दी के पहले मराठी साहित्य केवल काव्य की सीमा में आबद्ध था, लेकिन बाद में मराठी गद्य और उसकी विविध विधाओं ने पर्याप्त विकास किया। इस कार्य में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान भी कम नहीं है।

पहले चरण में मराठी की 'दर्शनचिंतनिका' (1876) से प्रारंभ होकर 'नाट्यकार्णव', 'काव्यनाटकादर्श', 'संगीत दर्पण', 'विबुध प्रिया', 'हिन्दू धर्म विवेचक', 'निबंध चंद्रिका' सरीखी महत्वपूर्ण पत्रिकाएं आई तो 'दर्पण' और 'मुंबई समाचार' और 'ज्ञान प्रकाश' जैसे समाचार पत्र भी। बाद में 1920 तक यह परंपरा आगे ही बढ़ी। 1920 के बाद तो मराठी में हर क्षेत्र में पत्र पत्रिकाओं का श्रीगणेश हुआ और एक नया माहौल बन गया।

मलयालम

'मलयालम' शब्द मलै-आलम' से निकला माना जाता है। मलै का अर्थ है पर्वत और आलम का अर्थ है समुद्र। यानी यह पर्वत और समुद्र का देश हुआ। पश्चिम में अरब सागर के होने से यह अर्थ सही भी प्रतीत होता है। कतिपय विद्वान मलयालम का उद्गम मूल द्राविड़ी उद्भूत तमिल से मानते हैं, लेकिन कुछ का कहना है कि मलयालम मूल द्राविड़ी की एक स्वतंत्र भाषा है। चौदहवीं शताब्दी के एक ग्रंथ 'लीला तिलकम' में तमिल और मलयालम का अंतर दिखाया गया है। अतः यह तय है कि इस काल तक मलयालम की स्वतंत्र सत्य स्वीकृत थी। मलयालम का वर्तमान शब्द कोष संस्कृत व तमिल शब्दों से युक्त भी है। इस भाषा के एक रूप में संस्कृत बहुलता और दूसरे में तमिल प्रचुर है।

मलयालम के साहित्यक विकास को हम तीन स्थितियों में वर्गीकृत कर सकते हैं। आदिकाल सोलहवीं शताब्दी के मध्य तक, मध्यकाल इसके बाद उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक और आधुनिककाल 1850 से अब तक।

आदिकाल का प्रारंभ कुछ विद्वान 'रामचरितम्' से तो कुछ ण्णीयादि चरितम्' से मानते हैं। इन दोनों ग्रंथों की भाषा मिश्रित रूप में है। ग्यारहवीं शताब्दी से मलयालम का हित्यक विकास प्रारंभ माना जाना चाहिए। इनके बाद ण्णी नील संदेशम' मिलता है। जो मलयालम का पहला देश-काव्य है 'मेघदूत' शैली में। यह चौदहवीं शताब्दी का ना जता है। इसी शताब्दी में 'लीला तिलकम' ग्रंथ द्रविड़ षाओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसी समय गवद् गीता', 'रामायण' और 'महाभारत' का मलयालम में नुवाद भी हुआ।

गद्य लेखन की दृष्टि से मलयालम चौदहवीं शताब्दी में ही क्रिय हो गई थी। 'कौटिल्य' इस दृष्टि से उल्लेखनीय प्रथम ति है जिसमें अर्थशास्त्र पर आलोचनात्मक दृष्टि से पहली र किसी भारतीय भाषा में विचार किया गया है। नंबूतिरि. प पणिक्कर मलयालम के बहुपठित रचनाकार हैं। लयालम की शब्द संपदा में तमिल का अधिक मेल होने के रण इसके प्राचीन गद्य को 'तमिल' ही कह दिया गया। ते हैं मलयालम के गद्य को केरल के मंदिरों में जन्म मिला। 'पाठकम' की कथा इसका पहला सूत्र है। इस काल के ग्रंथों की रचना संस्कृत-प्रचुर है।

लगभग साढ़े तीन सौ वर्ष का मध्यकाल, मलयालम साहित्य के विकास को दिशा देने वाला महत्वपूर्ण समय है। इस काल के साहित्य की शुरूआत संस्कृत प्रचुर मलयालम में हुई। पुनम नंबूतिरि सोलहवीं शताब्दी के पहले कवि हैं। 'रामायण चंपू' इनकी श्रेष्ठ कृति है। तुंचत्तु रामानुजाचार्य सत्रहवीं शताब्दी के श्रेष्ठतम कवि माने गए हैं। 'रामायणम' इनकी उल्लेखनीय कृति है। इसी काल में मलयालम अपना नया रूप धारण करने लगी थी।

सत्रहवीं शताब्दी के बीच से उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक का समय 'कथकलि-साहित्य काल' कहा जाता है। कृष्णनाट्टम व रामनाट्टम कथकलि के पूर्वरूप कहे जा सकते है। 'कथकलि' का तात्पर्य है कथा का खेल। इसमें नृत्य व अभिनय दोनों की जगह है। इसका कथा भाग 'आट्टक्कथा' कहा जाता है। आट्टक्कथाएं प्राचीन लोक गाथाओं से अलग हैं। कृष्णनाट्टम व रामनाट्टम में एक-एक प्रसंग का अभिनय एक-एक दिन में होता है। कोट्टयमत्तु तंपुरान-रचित, बकवधं, कल्याण सौगंधिक आदि प्रसिद्ध प्राचीन आट्टक्कथाएं हैं। 1758 ई. में राज्यासीन हुए रामवर्मा को कथकलि साहित्य रचयिता के रूप में ससम्मान स्मरण किया जाता है। सुभद्राहरण, राजसूयम, पांचाली स्वयंवरम, गंधर्व विजयम् आदि इनकी उल्लेखनीय कृतियां हैं।' अश्वती, उण्णायिवारियर आदि अन्य प्रमुख कथकलि साहित्यकार हैं। अठारहवीं शताब्दी के कुंचन नंबियार प्रमुख कवि हैं। 'तुल्लल पाट्टु' लोक प्रचलित भाषा की कृति हैं। इन्हें मलयालम का पहला जनकवि माना जाता है। रामपुरत्तु वारियर दूसरे इस काल के बड़े कवि हुए। 'कुचेलावृत्तम' नामक गीतों के लिए इन्हें स्मरण किया जाता है।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यकाल तक कथकलि साहित्य की भांति ही वीरगाथा साहित्य की रचना भी अनेक रचनाकार करते रहे। अब तक विकसित होते मलयाली साहित्य में चित्र-काव्य, कथा-काव्य, नाट्य काव्य, महाकाव्य, संदेश काव्य, चंपू इत्यादि लिखे जाते रहे। रामायण चपू की तर्ज पर करीबन 200 चंपू काव्य लिखे गए।

आधुनिक मलयालम साहित्य पर मध्यकाल के तीन प्रमुख कवियों चेरुश्शेरी, रामानुजन और कुंचन नंबियार का प्रभाव स्वाभाविक रूप में मौजूद है। मलयाली जन-जीवन से संबद्ध साहित्य भी इस दौर में लिखा गया जो पाट्टु साहित्य कहलाता है। यह वस्तुत गीत शैली है। कीर्तन साहित्य की भी [illegible] निधि मलयाली साहित्य में प्रचुर मात्रा में है। मलयालम [illegible] का आधुनिक विकास दो चरणों में देखा जाता है। [illegible] 1850 से 19'5 के बीच का है।

केरल वर्मा संस्कृत के अच्छे जानकार [illegible] उनकी भाषा संस्कृत प्रचुर मलयालम है। [illegible] काव्य व आट्टक्कथा आदि तो लिखे ही, [illegible] का सुंदर अनुवाद किया। रामवर्मा [illegible] में प्रमुख माने जाते हैं। चन्दु मेनन [illegible] मलयालम का पहला उपन्यास है [illegible] साहित्य के विकास में ए.आर.राज [illegible] है। वैयाकरण, कवि और [illegible]

का श्रेष्ठ अनुवाद भी इन्होंने किया। इस काल के पचास वर्षों में अनुवाद कार्य प्रमुखतः हुआ। मुक्तछंद में के.सी. केशव पिल्लै, महाकाव्यकारों में पद्मनाभ कुरुप, उपन्यासकारों में सी.वी. रामन पिल्लै और नाटककारों में मावेलिक्करा कोच्चीपन आदि प्रमुख हैं। कुंचिरामन नायनार के हास्य निबंध भी इस काल की उपलब्धि हैं।

दूसरा चरण प्रारंभ होता है सन् 1915 में। इस दौर में पाश्चात्य साहित्य के प्रकाश में मलयालम के साहित्य ने अद्भुत विकास किया। कुमारन आशान, के.सी.केशव पिल्लै वल्लतोल के साहित्य ने नया प्रकाश दिया। आशान की 'नलिनी' इस दृष्टि से पहली कृति है। उनकी दूसरी काव्यकृति 'लीला' भी खूब सराही गई। उल्लूर परमेश्वर अय्यर की काव्य रचनाएं भी अलग पहचान रखती हैं। आधुनिक काल की काव्य रचनाओं का आरंभ भी महाकाव्यों से ही हुआ। 'चित्रयोगम्' जैसे महाकाव्यों ने प्राचीन साहित्य और पाश्चात्य का सफल मेल प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय भावना से आपूरित वल्लतोल तो इस दौर के महत्वपूर्ण रचनाकार माने जाते हैं। सुब्रमण्यन पोट्टि, बालकृष्ण पणिक्कर, के.एम.पणिक्कर, कुंचिकुट्टन तंबुरान, जी शंकर कुरुप, वडक्कमकूर राजराज वर्मा आदि इस काल के अन्य प्रमुख कवि हैं। नालप्पाट्टु बालामणियम्मा, ललितांबिका, मेरी जोन तोट्टम, पार्वती प्रमुख महिला कवयित्रियां हैं। वर्तमान में के अय्यप्प पणिक्कर, सुगताकुमारी और विष्णुनारायण नबूतिरी को प्रतिनिधि माना जाता है। 1936 के समय प्रगतिवाद रुझान मलयालम मे भी प्रारंभ हुआ। इसे 'पुरोगमनवादम' कहते हैं। एन वी कृष्ण वारियर ओलप्पमण्णा अक्कित्तम, अनुजन पी भास्करन ओ एन वी कुरुप आदि इस धारा के प्रमुख कवि है। इसके साथ ही प्राचीन काव्य धारा भी चलती रही। मलयालम गद्य का उन्नीसवीं शताब्दी मे उल्लेखनीय विकास हुआ। इस दृष्टि से ईसाई पादरियों का आगमन एक महत्वपूर्ण घटना कही जा सकती है। 'बाइबिल' का अनुवाद सामने आया तो फिर मलयालम का शब्द कोश भी 1860 में प्रकाशित हुआ। नाटक उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना की शाखाएं भी समृद्ध होने लगीं।

सरदार के एम पणिक्कर ने 'मन्दोदरी', 'भीष्म' 'ध्रुवस्वामिनी' तो सी वी रमन पिल्लै ने 'कुरुपिल्ला कलरि' और ई.वी. कृष्ण पिल्लै ने 'राजा केशव दासन वेलुतंपि' 'सीता' व 'लक्ष्मी' सरीखे नाटक लिखे। टी.एन गोपीनाथन नायर, एन.पी. चेल्लप्पन नायर, के.टी मुहम्मद ने इस विधा को और आगे बढ़ाया। दूसरे उत्थान मे सी वी रामन को पहला प्रमुख उपन्यासकार माना जाता है। के एम पणिक्कर, अप्पन तंबुरान ने क्रमशः राजसिंहम, नीलोत्पल प्रणय प्रतिकार ने अपनी-अपनी तरह से उपन्यास साहित्य को समृद्ध किया। तकषि के उपन्यासों ने तो मलयालम के उपन्यासों को भारतीय साहित्य में प्रमुख स्थान ही दिलाया। 'चेम्मीन' को व्यापक स्तर पर प्रशंसा मिली है। एस.के.पोट्टकाट्ट, बशीर, पी केशवदेव सरीखे उपन्यासकारों के बाद आज दो पीढ़ियां और प्रमुख रूप से उपन्यास-रचना में लगी है।

मलयालम में कहानीकारों की समृद्ध परंपरा रही है। तकषि श्रेष्ठ कथाकार माने जाते हैं। इनके पूर्व ओडुविल कुंञ्जुकृष्ण मेनन के कुछ संग्रह प्रकाशित हो चुके थे। पी.सी. कुट्टीकृष्णन, एस.के. पोट्टेकाट्ट, के.टी. मुहम्मद, पुत्तूर, सरस्वती अम्मा, ललितांबिका अन्तर्जनम आदि ने तो महत्वपूर्ण कहानी लेखन किया ही, आज कई अन्य कथा पीढ़ियां भी मलयालम कहानी को समृद्ध कर रही हैं।

आत्मकथा, आलोचना, चरित्र साहित्य, इतिहास लेखन, प्रवास साहित्य, शास्त्रीय साहित्य आदि की भी मलयालम में समृद्ध परंपरा है। 'केरल साहित्य' का प्रकाशन 1879 में प्रारंभ हुआ। 'मलयाला मनोरमा' ने इस भाषा के साहित्यिक विकास में महत्वपूर्ण योग दिया है। इसका प्रकाशन कंटतिल वर्गीस माप्पिलै ने इस शताब्दी के प्रारंभ में किया था। 'भाषा पोषिणी सभा' इसी पत्रिका के कारण संभव हुई। यह सभा एक सुंदर पत्रिका निकालती है। 'रसिकरंजिनी', 'आत्मपोषिणी', 'मंगलोदयम', 'कौमुदी' जैसी पत्रिकाएं इस भाषा के साहित्य को विकसित करने में उल्लेखनीय मानी जाती हैं। दैनिक पत्रों मे तो एक पूरी श्रृंखला ही है।

मैथिली

मैथिली साहित्य की समृद्ध परंपरा का विकास तो ज्योतिरीश्वर के समय में हुआ, लेकिन कहते हैं आठवीं से ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य पहली उल्लेखनीय रचना 'चर्यापद' आई। यह बौद्ध सिद्धों के गीतों का संकलन है। तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी के बीच ज्योतिरीश्वर के साहित्य ने नई दिशा दी। नाटक, काव्य व गद्य साहित्य में उनका महत्वपूर्ण योग है। विद्यापति तो ऐसे अमर रचनाकार हुए कि आज भी सर्वाधिक स्मरण किए जाते हैं। लेकिन फिर बाद का समय कृष्ण काव्य परंपरा और राम काव्य परंपरा की लीक से हटने और मनबोध, चंदा झा की काव्य प्रतिभा से आए बदलाव को समझने में अधिक लगा। बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' व काशीकांत मिश्र 'मधुप' के रचना-जगत में विकास की पहचान की जा सकती हैं। सच पूछें, तो 1941 के आसपास यात्री की कविता को बदलाव का बड़ा संकेत माना गया। देव शंकर नवीन के मुताबिक: 'यात्री की रचना' कविक स्वप्न' घने अंधकार को काटती हुई आई। यह एक प्रस्थान बिंदु है। इससे पूर्व क्रमबद्धता सिरे से नदारद थी। यात्री के दो सं 'चित्रा' और 'पत्रहीन नग्न गाछ' इस दृष्टि से महत्वपूर्ण 'चित्रा' का प्रकाशन 1949 में हुआ। यात्री बहुरंगी रचनाकार है। कहानी, उपन्यास, निबंध, और समीक्षात्मक लेखन इन्होंने किया। बलचनमा, पारो और नवतुरआ जैसे मैथि उपन्यास राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित रहे हैं।

दूसरे बड़े रचनाकार राजकमल चौधरी हुए। राजनीति विकृति, व्यवस्थाजन्य विसंगति व आदमी की तकलीफ राजकमल ने नई ही भाषा दी। उनका संग्रह 'स्वरगंधा' न शिल्प और संवेदन लेकर उपस्थित हुआ। जीवन और रच में कोई भेद न करके चलने वाले राजकमल चौधरी बहुमु रचनाकार रहे। सुरेंद झा 'सुमन', काशीकांत मिश्र 'मधु काशीनाथ झा 'किरण' और तंत्रनाथ झा अन्य महत्व रचनाकार रहे। आरसी प्रसाद सिंह, उपेंद ठाकुर 'मो उपेंद्रनाथ झा 'व्यास', ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' सरी कवियों ने अलग ही संसार सृजित किया।

रामकृष्ण झा 'किसुन' यात्री और चौधरी के बीच के महत्वपूर्ण रचनाकार हुए। इन तीनों के बाद जो रचनाशीलता मैथिली में नजर आती है उसे दो वर्गों में विभाजित किया जाता है। पहले वर्ग में मायानंद मिश्र, धूमकेतु, सोमदेव, रामानंद रेणु, धीरेन्द, हंसराज, रामदेव झा, गंगेश गुंजन, कीर्ति नारायण मिश्र, मधुकर गंगाधर आदि की गणना प्रमुख रुप से की जाती है। मायानंद मिश्र इनमें कथाकार के रुप में तो बहुचर्चित हैं ही, संपादक के रुप में भी 'आभिव्यंजना' के जरिए आपने बड़ा काम किया। गीतकार के रुप में इनकी विशिष्ट छवि है।

इसके दो दशक बाद जो पीढ़ी आती है, उसमें प्रमुख हैं– उदय चंद झा 'विनोद', महाप्रकाश, कुलानंद मिश्र, सुकांत सोम, भीमनाथ झा, नचिकेता, केदार कानन, अग्निपुष्प, हरेकृष्ण झा और देव शंकर नवीन। मैथिली में गजल लिखने की परंपरा भी है। आर.सी. प्रसाद सिंह, रवींद्र, डा. महेन्द्र सियाराम सरस, रमेश आदि ने इस विधा में नए प्रयोग किए हैं।

मैथिली साहित्य का आदि गद्य–ग्रंथ है ज्योतीश्वर ठाकुर का 'वर्णरत्नाकर'। कविश्वर चंदा झा आधुनिक मैथिली गद्य साहित्य के प्रमुख रचनाकार माने जाते हैं। मैथिली गद्य साहित्य के प्रमुख रचनाकार माने जाते हैं। मैथिली गल्प के शुरुआती रचनाकार भुवन, कुमान गंगानंद सिंह, हरिमोहन झा, किरणजी, सुधांशु शेखर चौधरी, यात्री, उपेद्रनाथ झा, व्यास, नगेन्द्र कुमार, योगानंद झा, सुमनजी से होते हुए गद्य ने अपनी अगली पीढ़ी को संभाला। गोविंद झा, शैलेन्द्र मोहन झा, कुलानंद नंदन ने इसे नया ही रूप दिया है।

सोमदेव, मायानंद, बलराम, धीरेन्द्र और हंसराज आदि का कथा लेखन यथार्थवादी धारा का है तो राजनैतिक मोहभंग को विषय बनाया है–राजकमल चौधरी, किरणजी, मणिपद्म, ललित, गुंजन, रामदेव झा, प्रभासकुमार चौधरी और राजमोहन झा आदि। इस पीढ़ी के बाद भी एक कथा पीढ़ी मैथिली में सक्रिय है।

अच्छी बात है कि मैथिली गद्य में गल्प और उपन्यास के अलावा, जीवनी, संस्मरण नाटक, निबंध आदि भी लिखे जा रहे हैं लेकिन खेद इस बाद का है कि 'मिथिला मिहिर' के बाद कोई भी पत्र–पत्रिका नहीं जो रचनाकारों को सार्थक मंच दे सके। पुस्तक प्रकाशन की स्थिति तो और भी दयनीय है।

राजस्थानी

वैदिक संस्कृत और शौरसेनी प्राकृत से जुड़ी भारतीय आर्यभाषा है–राजस्थानी। देवनागरी लिपि में राजस्थानी का विपुल साहित्य सुरक्षित है। राजस्थानी साहित्य का प्रारंभिक काल 1050 से 1450 ई. तक माना जाता है। 1450 से 1850 तक मध्य काल और फिर आधुनिक काल।

प्रारंभिक काल में जैन–रचनाएं बाहुल्य में हैं। कविता व गद्य साहित्य मध्यकाल में विकसित हुआ। पद्मनाभ, आलुज और बिठुसूजो प्रमुख राजस्थानी गीतकार माने गए। भक्तिमूलक, युद्ध और पौराणिक पृष्ठभूमि का साहित्य इस काल में अधिक आया। दूहा और गीत का समय था यह। आधुनिक काल का प्रारंभ बादली चन्द्रसिंह से माना जाता है।

आज राजस्थानी कविता जिस धरती पर खड़ी है उसे एन.आर.संस्कर्ता, एन.एस.भट्टी, जी. एल. व्यास और आर कल्पित ने पुख्ता किया था। आज तो राजस्थानी कविता की कई पीढ़ियां सक्रिय हैं। भगवती लाल व्यास, चंद्रप्रकाश देवल, हरीश भादानी, तेजसिंह जोधा, कन्हैया लाल सेठिया, सत्यप्रकाश जोशी, प्रेमजी प्रेम, पुरुषोत्तम छंगाणी, अर्जुनसिंह शेखावत आदि के साथ ही नीरज दइया, भरत ओला, कृष्ण बृहस्पति, सुधीर राखेचा, अतुलकनक, मालचंद तिवाड़ी, सांवर दइया, कुंदन माली आदि भी सक्रिय है।

आधुनिक राजस्थानी साहित्य की नींव में विजयदान देथा और रेवतान चरण जैसे महारथी भी मौजूद हैं। देथा तो आज भी सक्रिय हैं। लोकतत्व को वह साहित्य के लिए मूल आधार मानते हैं। 'बात' के रुप में उनकी कहानियां राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित हो चुकी हैं। 'उलझन', 'अलेखू हिटलर', 'बातां री फुलवारी' आधुनिक राजस्थानी साहित्य की उनकी प्रमुख कृतियां हैं। मणि मधुकर, जनकराज पारीख, रामपाल सिंह पुरोहित, ब्रजलाल भापावत, भालचन्द तिवाड़ी, कमल भादानी, रामेश्वर दयाल श्रीमाली, सांवर दइया, मीठेश निर्मोही, चैन सिंह परिहार, मदन सैनी आदि ने भी कहानी-लेखन में अपनी प्रमुख पहचान बनाई है।

देथा सीताराम जी लालस का नाम का उल्लेख बड़े आदर के साथ करते हैं। उन्हें वह गुरु मानते हैं। वह कहते हैं: "मैंने राजस्थान की कदीमी 'बातों'–जिन्हें हिन्दी में लोक कथाएं कहते हैं–को जस का तक लिपियद्ध नहीं किया है। कथाओं के अभिप्राय का जैसा बीज हाथ लगा: उसे उसी तरह विकसित किया।" यही उनकी कामयाबी का राज है। अण्णा राम सुदामा, यादवेंद्र शर्मा 'चन्द्र' सरीखे रचनाकारों ने राजस्थानी साहित्य को दूसरी ऊंचाइयां दी हैं।

नाटक, उपन्यास, संस्मरण और निबंध साहित्य भी राजस्थानी में क्रमशः विकास पा रहा है। गजलें भी लिखी जा रही हैं और आधुनिकतम शैली में कविताए भी। आलोचना भी आकार ले रही है। इतिहास लेखन की ओर अभी नजर नहीं गई है, लेकिन लेख इत्यादि प्रकाशित हुए हैं। राजस्थानी साहित्य तेजी से विकास की ओर उन्मुख है।

संस्कृत

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा मानी जाती है। वैदिक संस्कृत मे रचित ऋगवेद को विश्व की सबसे पुराने [illegible] माना जाता है। विश्व का समस्त आर्य भाषाओं का [illegible] यह है ही ग्रीक लेटिन, अग्रेजी, जर्मन व रुसी [illegible] जननी भी कतिपय विद्वान इसे मानते हैं। ऋगवेद [illegible] काल ईसा से चार हजार वर्ष पूर्व का माना [illegible] कि वैदिक संस्कृत का जन्म और पहले [illegible] पाद्धकाल तक संस्कृत का उपयोग [illegible] होता रहा।

आर्यों की उपासना–विधि, [illegible] विकास के साथ वैदिक भाषा के [illegible] रहा। वैदिक साहित्य में [illegible] पतन उत्थान में विकास के साथ संस्कृत के जन्म

के बाद दूसरा उत्थान प्रारंभ हुआ। इसमें रामायण, महाभारत और पुराणों की रचना हुई।

पाणिनि के बाद उनके निर्धारित भाषा रूप में भी परिवर्तन होता रहा। पतंजलि के महाभाष्य से वर्तमान संस्कृत प्रारंभ होती है। प्रारंभ से ही इसकी लिपि देवनागरी रही है।

संस्कृत साहित्य का विकास पाणिनी काल से तीन वर्गों में समझा जा सकता है–आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल। आदिकाल में पाणिनि की 'अष्टाध्यायी' सहित 'जांबवती विजय' और 'पाताल विजय' प्रमुख ग्रंथ माने जाते हैं। वररुचि के 'कंठाभरण' का संदर्भ तो मिलता ही है कालिदास ने भी अपने पूर्ववर्ती भास, रामिल, सौमिल आदि रचनाकारों का स्मरण किया है। विक्रम पूर्व दो शताब्दी के शिलालेख भी मिले हैं। भास के 13 नाटकों में 'स्वप्नवासवदत्ता' व शूद्रक का 'मृच्छकटिकम्' उल्लेखनीय हैं। धीरे–धीरे जन–भाषा का रुप 'पाली' कहलाया। बुद्ध और महावीर ने इसे ही अपने उपदेशों के लिए चुना। इससे संस्कृत के विकास का काम अवरुद्ध हुआ।

विक्रम काल से उन्नीसवीं शताब्दी तक के साहित्यक विकास को दो वर्गों मे देखा जा सकता है–पूर्व मध्य काल और मध्यकाल। पूर्वमध्यकाल में ग्यारहवीं शताब्दी तक का समय है। संस्कृत के अधिकांश दीर्घकालीन महत्व के ग्रंथ इसी काल में लिखे गए। यह सस्कृत का स्वर्ण काल है। 'पचतंत्र' की रचना सन् 300 ई. के आसपास हुई। इसके एक शताब्दी बाद वात्स्यायन ने 'कामसूत्र' की रचना की। भामह के अलंकार ग्रंथ भी इसी शताब्दी के अतिम चरण मे आए।

इस काल में सर्वश्रेष्ठ है–नाट्य साहित्य। भास कालिदास, अश्वघोष और भारवि उल्लेखनीय है। भास के नाटक 'प्रतिभा' उरुभग स्वप्नवासवदत्ता प्रतिज्ञायौगधरायण', [illegible] चारुदत्त कालिदास के अभिज्ञान शाकुतलम, 'मालविकाग्निमित्र' (नाटक) और रघुवश, कुमारसभव' व [illegible]दूत सरीख काव्य सस्कृत साहित्य की अमूल्य निधि है। अश्वघोष का बुद्धचरित भारवि का किरातार्जुनीयम', (महाकाव्य), माघ का शिशुपाल वध तो प्रमुख है ही, भौमिक, अमरु, शिवस्वामी, क्षेमेन्द्र, हर्ष विल्हण हेमचन्द्र, भर्तृहरि का भी महत्वपूर्ण स्थान है।

शूद्रक, हर्ष, विशाखदत्त, भट्टनारायण राजशेखर, भवभूति आदि के नाटक आज भी विश्व साहित्य के गौरव है। सस्कृत का गद्य भी लगभग उतनी ही पुरानी परपरा लिए है। कृष्ण यजुर्वेद, ब्राह्मणग्रंथ और उपनिषद गद्य मे ही रचे गए। पतंजलि का महाभाष्य तो एक श्रेष्ठ उदाहरण ही है। दण्डी, सुबन्धु, बाणभट्ट मध्यकाल के प्रमुख गद्यकार है। 'कादंबरी' (बाण) पहला उत्कृष्ट गद्य कथा ग्रथ माना जाता है।

संस्कृत में चंपू काव्य की भी अनूठी परपरा है। गद्य–पद्य यहां समान रुप से मिले रहते थे। इस काल में कुछ कहानियां नीतिपरक और कुछ मनोरंजन प्रधान हैं। पंचतंत्र के बाद दूसरी प्रमुख रचना 'हितोपदेश' है। बृहत्कथा, बृहत्कथा–मजरी, कथासरित्सागर का महत्व सभी मानते हैं। विविध अन्य शास्त्रों पर आधारित गद्य–ग्रंथ भी इस काल में लिखे गए।

उत्तर मध्यकाल में ऐतिहासिक कारणों से संस्कृत में साहित्यिक विकास की गति में अवरोध आया। बारह सौ ईसवी के आसपास जयानक ने 'पृथ्वीराज विजय' और जयदेव ने गीतगोविंद लिखा'। सन् 1700 के आसपास रामचन्द्र दीक्षित ने 'जानकीपरिणय' नाटक लिखा। 'सिद्धान्त कौमुदी' व 'वृत्त रत्नाकर' आदि इस काल के प्रमुख ग्रंथ हैं।

आधुनिक काल में प्राचीन ढंग के संस्कृतज्ञों को परिवर्तन से हतोत्साहित होना पड़ा। 1905 में सी.एम.राय शास्त्री ने 'सीता–रावण संवाद भारी' की रचना की। 'जयपुर वैभव', भी बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ की रचना है। अंग्रेज शासकों की प्रशंसा में भी संस्कृत रचनाएं हुई। 'राजांग्ल महोद्यान' ऐसी ही रचना है। 'यदुवृद्धसौहार्द' ए. गोपाल अय्यंगर ने लिखा। 1938 में 'जयरुर राजवंशावली' चालुक्य चरित 1951 में 'अहिल्याबाई', 'दयानंद दिग्विजय', 1950 में 'साधना साम्राज्य' जैसी रचनाओं से आधुनिक संस्कृत काव्य को गति मिली। विविध अंग्रेजी ग्रंथों के अनुवाद तो हुए ही पुराकवियों की रचनाओं के ढंग पर पुनर्रचनाएं भी हुई।

भारतीय राष्ट्रीय नेताओं की प्रशंसा में भी रचनाएं लिखी गई। नागार्जुन ने 'लेनिन शतकम' लिखा तो संस्कृत में अलग ही किस्म की धारा को जन्म दिया। नारायण शास्त्री ने सर्वाधिक (96) नाटक लिखे। सी. व्यंकट रमैया ने तो 'जीव संजीवनी' शीर्षक नाटक आयुर्वेद के महत्व पर लिखा। वाई.महालिंगम शास्त्री कृत 'प्रतिराजसूयम' प्रशंसित नाटक रहा। कुछ प्रसिद्ध अंग्रेजी नाटकों का अनुवाद भी हुआ। ए.के. रामनाथ शास्त्री, सुरेन्द्र मोहन, के. आर नायर, सुरेन्द शर्मा आदि ने प्रहसन लिखे।

उपन्यास का प्रारंभ संस्कृत में इस युग में अनुवाद से हुआ। बंकिम चंद्र की 'लावण्यमयी' का अनुवाद श्री अप्पा शास्त्री ने किया। राजगोपाल चक्रवर्ती, उपेन्द्रनाथ सेन, गोपाल शास्त्री, परशुराम शर्मा, मेधाव्रत आदि उपन्यासकारों के उपन्यास सामने आए। संस्कृत में कहानियों का अनुकरण बंगला कहानियों का हुआ। प्रारंभ में लोककथाओं का संस्कृतीकरण हुआ फिर गद्य काव्यनुमा रचनाएं आई। सन् 1920 के बाद मौलिक कहानी लेखन प्रारंभ हुआ। भवभूति विद्यारत्न की 'लीला'; तारणिकां चक्रवर्ती की 'पुष्पांजलि' और शंकर नारायण शास्त्री की 'ऐंद्रजालिक' सरीखी रचनाएं उल्लेखनीय है। क्षमाराव की कहानियां तो प्रशंसित हुई हीं।

सस्कृत में आलोचना, निबंध और शास्त्रीय साहित्य का विपुल भंडार है। अनुसंधान की दृष्टि से इस भाषा का विशेष महत्व सदैव बना रहेगा। अत्याधुनिक संस्कृत में पी.वी. काने, गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, वी.एन.के. शर्मा, गोपीनाथ कविराज, वी.राघवन, रामरुप पाठक, सत्यव्रत शास्त्री, वी.सुब्रमण्य शास्त्री, माधव श्रीहरि अनेय, श्रीधर भास्कर वर्णेकर, शांति भिक्षु शास्त्री आदि तो राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित रहे हैं।

सिंधी

सिधी संस्कृत मूल की भाषा है। उत्तर भारत की दूसरी भाषाओं के मुकाबले यह विदेशी तत्वों से ज्यादा मुक्त है। सिंधी पुरानी प्राकृत के अधिक निकट है। अरबी–फारसी के संपर्क में आकर यह अधिक समृद्ध हुई है। भाषा सामर्थ्य का अनुमान लगाना हो तो एक उदाहरण पर्याप्त होगा–'उंट' के लिए पंद्रह शब्द सिंधी में हैं।

अधिकांश सिंधी साहित्य का मूल स्रोत धर्म या प्रचलित

लोक–कथाएं है। सिंध में वरुण देवता यानी दरियाशाह की पूजा सबसे ज्यादा होती है। यह लोककथा का मूल कथ्य है। दोदो चनेसर की कथा वर्णित करती पुरानी कविताएं सिंधी साहित्य की थाती हैं। सिंधी साहित्य सोलहवीं शताब्दी की तीसरी दशाब्दी से प्रारंभ माना जाता है। इससे पूर्व लोक साहित्य प्रचलित था। इसके दो सौ वर्ष बाद शाह अब्दुल लतीफ के काव्य में यह परिपक्व स्थिति तक पहुंचा। इस बात के स्पष्ट प्रमाण मौजूद हैं कि सिंध में सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में साहित्यिक हलचल बहुत तेज थी। सिंधियों ने फारसी में भी उल्लेखनीय रचनाएं कीं। तारीख मौसमी, तारीख ताहिरी, बेगलारनामा, चचनामा आदि ऐसी रचनाएं हैं। भारतीय कविता और सिंधी कविता का मेल गिनान कविताओं में नजर आता है। यह आध्यात्मिक हैं।

देवचन्द्र, स्वामी प्राणनाथ, वीर मुहम्मद लखवी, मखदूम नोह, शाह अब्दुल करीम, अबू–अल्–हसन, मियांशाह आदि ने जो जमीन तैयार की, उस पर सिंधी साहित्य का महल खड़ा होता चला गया। शाह अब्दुल लतीफ भिटाई कवियों के राजा कहलाते हैं। सत्रहवीं–अठारहवीं शताब्दी के सबसे महान कवि के रुप में इनकी प्रतिष्ठा है। 'रिसालो' सिंधी का महानतम ग्रंथ माना जाता है।

सिंध में मुगल शासन के पतन और अंग्रेजो द्वारा सिंध विजय के बीच का समय भी साहित्य हलचल से भरा–पूरा समय था। सचल और सामी इस काल के बड़े कवि हैं। कुछ कवियों ने नये काव्य रुपों की शुरुआत की 'मदाह' यानी प्रशस्ति, 'मौलूद' यानी पैगंबर–स्तुति, 'मरसिया' यानी प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु पर गाया जाने वाला गीत; 'मसनवी' यानी संबंद्ध कथावृत्त। वेदान्त से प्रेरणा लेता सिंधी साहित्य 1843 तक समृद्ध हो चुका था। सामी इस धारा के महानतम कवि थे। इसी समय सिंधी गद्य का भी प्रारंभ हुआ। मखदूम अब्दुल रौफ भरी को कुछ विद्वानों ने सिंधी का पहला कवि बताया है। इनका और शाह लतीफ का निधन करीबन एक ही बरस (1752) में हुआ।

सचल सरमस्त को शाह साहब ने अपना आध्यात्मिक उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। शाह ने जो बात कथात्मक कविताओं में संकेत में कही है। सचल ने वहीं साफ और विस्फोटक अंदाज में कही है। सचल की 'काफियां' लासानी हैं। चैनराय बचूमल दत्तारामाणी बाद में 'सामी' नाम से विख्यात हुए। उनके श्लोकों में आत्मा को पहचानने की उत्कट अभिलाषा झलकती है। वेदान्त में यकीन करने वाले सामी कहते थे कि अज्ञान के कारण ही जीव इस संसार को सत्य मानता है। पांच बुराइयों ने मनुष्य को फांस रखा है, इसलिए वह स्वयं को परम तत्व से पृथक मानता है।

1843 में अंग्रेजों ने सिंध पर विजय पा ली। साहित्य में फारसी का महत्व कुछ कम हुआ। सिंधी को उसका सहज स्थान मिल गया। 1887 में 'दयाराम जेठमल सिंध कालेज' की स्थापना एक महत्वपूर्ण घटना मानी गई। इस समय तक अनुवाद जोरशोर से होता रहा। सिंधी कविता पर अंग्रेजों के आने और अरबी सिंधी लिपि के अपनाए जाने का जबर्दस्त असर पड़ा। 1843 से 1907 का समय गद्य में प्रयोग व अनुवाद का रहा। दीवानों, मुसद्दसों और रुबाइयों का समय। खलीफा गुल मुहम्मद 'गुल' ने सिंधी में फारसी ढंग की रचनाएं प्रारंभ की। 1855 में इनका गज़ल संग्रह लीथो पर मुंबई से छपकर आया। इनकी गजलें बहुत लोकप्रिय हुईं। आंखूद मुहम्मद कासिम, फाज़िल, हाफिज हामिद दिखड़, शम्स–अल–दीन (बुलबुल), मौलवी अब्दुल गफूर हुमायुनी, अयोझो, सांगी, सैयद हाजी गुलाम शाह और बेकस आदि इस काल के उल्लेखनीय कवि हैं।

1907 से 1947 के बीच का समय कविता की जगह गद्य का रहा। कवि किशनचंद खुद को 'अजीज' कहते थे। उनके 'कुलियात' के एक भाग में गजलें और दूसरे में मसनमियां थी। विभाजन के बाद अजीज में खासा बदलाव आया। हैदर–बख्श जतोई, परसराम हीरानंद जिया, सोभराज निर्मल दास, मुहम्मद वासिघ, गुलाम अलीबख्श मसरुर इस काल के प्रमुख रचनाकार हैं। दयाराम गिदूमल को छन्दमुक्त कविता का जनक माना जा सकता है। देवन दास किरनाणी 'आजाद' कृत ग्रंथ 'पूरब संदेश' एक उल्लेखनीय कृति है जो 1937 में प्रकाशित हुई। नई काव्य धारा का सूत्रपात किया 'बेबस' ने। यह नये विषय लेकर आए नई अनुभूतियों के साथ। भेरुमल मेहरचंद ने भी इसी तरह के प्रयास किए। हुंदराज दुखायल, हरिदिलगीर, तोलाराम मेघराज बालाणी आदि इनके बाद के प्रमुख रचनाकार हुए।

1852 में सिंधी की वर्तमान लिपि (सिंधी–अरबी) अस्तित्व में आई। गास्पल का सिंधी अनुवाद देवनागरी में प्रकाशित हुआ। सिंधी गद्य के शुरुआती काम उन युरोपियनों ने किया जिन्होंने शब्दकोश और व्याकरण तैयार किए। 'वोकेबुलरी आफ सिंधी लैंग्वेज स्पोकन इन कन्ट्रीज वेस्ट आफ इन्डस' इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। सिंधी पाठावली 1858 में मि. ट्रंप ने तैयार करने की कोशिश की जो एक जर्मन थे। उन्होंने सिंधी व्याकरण भी तैयार किया। नंदीराम मीराणी और उधाराम थांवट दास ने महत्वपूर्ण सिंधी संकलन तैयार किए। शब्दकोश, सहायक पुस्तकें और अनुवाद इस काल में बहुत हुए। 1857 से 1907 तक के सिंधी गद्य या नाटकों में मौलिकता नज़र नहीं आती। लुत्फ अल्लाह अखूंद द्वारा लिखित 'गुलखंदा' पद्य मिश्रित गद्य की अद्‌भुत पुस्तक है। 'अजय भेंट' व 'सभा–जो–सींगार' भी उल्लेखनीय कृतियां हैं।

सिंध मदरसा की पत्रिका, 'सिंध सुधार' और 'सरस्वती' ने सिंधी गद्य को गति प्रदान की। 'जोत', 'गिरोलनी' और डी.जे. सिंध कालेज की भूमिका भी उल्लेखनीय रही। प्रो.बी.डी. पादशाह ने डी.जे. सिंध कालेज ड्रामेटिक सोसाइटी' की स्थापना की। इस मंडली ने 1894 से 1914 के बीच 15 नाटक न सिर्फ खेले, प्रकाशित भी किए। मास्टर जेठानंद का 'नल दमयन्ती', लीलाराम सिंह का 'हरिश्चन्द्र' शुरुआती नाटक थे।

सिंधी गद्य के प्रवर्तक माने जाते है–कौड़ोमल चन्दनमल खिलनाणी। 'पकोपह' उनकी प्रथम मौलिक सिंधी कृति है। उनका काम विविधता लिए हैं। निबंधों के लिए तो उन्होंने पूरा रास्ता ही तैयार कर दिया। मिर्जा कलीच बेग ने काव्य, गद्य वा नाटक तीनों पर, स्मरणीय काम किया। सिंधी का पहला मौलिक उपन्यास 'ज़ीनत' उन्हीं का लिखा है।

दयाराम गिदूमल और परमानंद मेयाराम अन्य उल्लेखनीय रचनाकार हैं। 1908 के करीब हकीम फतेह मुहम्मद सेव्हाणी और निर्मलदास फतेह चन्द प्रमुख सिंधी गद्यकार हुए। इन्होंने जीवनी, कहानी व विविध साहित्य रचा। एच.एन. गुरुबखशाणी, जेठमल परसराम भेरुमल मेहरचंद, लालचंद अमरडिनोमल चार प्रमुख सिंध गद्यकारों को इस युग में ख्याति मिली। 1925 में शेवक भोजराज ने बालकनजी बारी' की स्थापना की। अब तो यह अंतरराष्ट्रीय शिशु संस्था के रूप में जानी जाती है। सिंधी गद्य साहित्य में इसके संस्थापक का महत्वपूर्ण योगदान है।

बीसवीं शताब्दी के पहले दो दशकों में सिंधी में मुसलमान लेखक नहीं हुए लेकिन बाद के दो दशकों में 'सिंध मुस्लिम अदबी सोसाइटी' की वजह से यह कमी न रही। क्रमश: यह एक भरी पूरी परंपरा ही बन गई।

अब्दुर्रजाक मेमण का उपन्यास 'जहांआरा', अल्लाह बचायो की कृति 'सैर कोहिस्तान' नादिर बेग मिर्जा की कहानियां और दाउदपोटा का संगठन महत्वपूर्ण रहा।

1907 से 47 के बीच हिन्दू गद्यकारों की भी अच्छी तादाद रही। 1932 में मूलचंद राजपाल की अध्यक्षता में 'सिंधु' पत्रिका एक बड़ा मंच बनी। आशानन्द ममतारा का उपन्यास 'शायर', 1940 में प्रकाशित संकलन विचार से पहले जो लेखक महत्वपूर्ण कार्य कर चुके थे वे हैं-लालाराम मेघराज वालाणी, प्रीतम दास थराणी, टी.के. शाहणी। चौथे-पांचवे दशक में एन आर मल्काणी, लाल सिंह झारी सिंह अजवाणी, बधूमल गंगाराम, गोविन्द भाटिया, नारायण दास मम्माणी, शामदास दुलाणी, जेठमल परसराम, अमरलाल हिंगोराणी आदि ने सिंधी साहित्य को समृद्ध किया। सिंधी नाटकों के क्षेत्र में [illegible] एम [illegible] दरयाणी और एम यू मलकाणी ने महत्वपूर्ण काम किया।

[illegible] आधुनिक सिंधी साहित्यकारों में तीर्थ बसंत, रामपंजवाणी, [illegible] अजीज, कल्याणदास अडवाणी, [illegible] मीरचंदाणी आदि उल्लेखनीय हैं।

हिन्दी

जो प्राणधारा नाना अनुकूल व प्रतिकूल अवस्थाओं से बहती हुई हमारे भीतर प्रवाहित हो रही है उसको समझने के लिए ही हम साहित्य का इतिहास पढ़ते हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का यह कथन अनायास स्वीकृत पा गया सच नहीं है।

हिन्दी साहित्य का प्रथम प्रामाणिक इतिहास लिखने वाले आचार्य रामचंद्र शुक्ल स्वयं यह स्वीकार करते हैं कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य-परंपरा के साथ उसका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है।

संभवत: इसीलिए हिन्दी साहित्य के इतिहास को चार काल खंडों में विभाजित किया गया है।

1. संवत् 1050 से 1375 तक: आदिकाल या वीरगाथा काल
2. संवत् 1375 से 1700 तक: पूर्व मध्य काल या भक्तिकाल
3. संवत् 1700 से 1900 तक: उत्तर मध्य काल या रीतिकाल
4. संवत् 1900 से वर्तमान तक: आधुनिक काल या गद्य का विकास

आदिकाल

इस कालखंड के प्रारंभिक 150 वर्ष सामान्य रचना के रहे किंतु बाद में मुगलों के आक्रमण के साथ ही एक प्रवृत्ति उभर कर सामने आयी। नीति व श्रृंगार प्रधान रचनाएं सुनाने वाले चरण कवि अपने राजाओं की शौर्य गाथाओं का वर्णन खूब किया करते थे। वीर गाथा काल' कहने का कारण यही है।

रासो नामक प्रबंध-परंपरा इसका मूल आधार अवश्य है किंतु यहां अपभ्रंश या प्राकृताभास हिंदी में भी कुछ रचनाएं मिलती हैं। इस एक ही कालखंड में पुरानी भाषा परंपरा और बोलचाल की भाषा का साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। प्राकृत बोलचाल की भाषा न रही और अपभ्रंश-साहित्य का आविर्भाव हुआ। धर्म विषयक रचनाओं को छोड़ सामान्य तौर पर साहित्यिक रचनाओं के रचनाकारों और संग्रहकर्ताओं के सांकेतिक उल्लेख-क्रम में विद्वानों ने प्राय: हेमचंद, सोमप्रभ सूरि, जैनाचार्य मेरूतुंग विद्याधर और शाङर्गधर का उल्लेख किया है।

भारत के इतिहास में मुगलों के आक्रमण विशेष महत्व रखते हैं। इन आक्रमणों से पश्चिम प्रांत के निवासी सर्वाधिक प्रभावित होते रहे। यही हिन्दी साहित्य का अभ्युदय काल है। इसे विद्वानों ने 'वीरता के गौरव का समय' कहा है। यह वीर गाथाएं दो रूपों में पायी गयी हैं। प्रबंध काव्य के साहित्यिक रूप में और वीरगीतों के रूप में, वीरगाथा काल के ग्रंथ 'रासो' कहलाते हैं। 'खुमानरासो', 'बीसलदेवरासो', 'पृथ्वीराज रासो' सरीखी रचनाएं और चंदबरदाई, भट्ट केदार, मधुकर कवि, जगनिक व श्रीधर नामक कवि प्रमुख माने जाते हैं। साथ ही विशेष रूप से उल्लेखनीय है पश्चिम की बोली और मौखिक परंपरा में जीवित पद्य के संवाहक खुसरो व ठीक इसी रूप में पूरब से विद्यापति इनका प्रारंभिक रचना समय वीर-गाथा काल के समाप्त होते-होते माना गया है।

सभी विद्वान प्राय: यह स्वीकार करते हैं कि 'वीर गाथा काल' को महाराज हम्मीर के समय तक ही माना जाना चाहिए। मुगलों का साम्राज्य इसके बाद क्रमश: दृढ़ होता चला गया। हिंदू राजाओं में इसके उपरांत न तो परस्पर युद्धों का उत्साह बना रहा न वे मुगलों से ही लड़े। यह सही है कि इसके बाद भी वीर-काव्य लिखे अवश्य गये पर सोच की मुख्य धारा का बहाव वह न रहा। यह बदलाव ही साहित्य के दूसरे चरण का सूत्रधार बना।

पूर्वमध्यकाल

यह काल भक्तिकाल भी कहलाता है। यहां निर्गुण और सगुण भक्ति के आधार पर दो स्पष्ट धाराएं विद्यमान हैं। 'निर्गुण धारा' में ज्ञानमार्गी और प्रेममार्गी दो उप-धाराएं हैं। ज्ञानमार्गी कवियों में कबीर सर्वप्रमुख हैं। रैदास, गुरुनानक, धर्मदास, दादू दयाल, सुंदरदास, मलूकदास, अक्षर अनन्य आदि अन्य प्रमुख रचनाकार थे। प्रेम मार्गी निर्गुण उपासक सूफी कवियों में कुतबन, मझन, उसमान, शेख नबी, कासिम शाह, नूर मुहम्मद की चर्चा

विशेष रूप से की जाती है पर सर्वप्रमुख हैं मलिक मुहम्मद जायसी। पद्मावत' इनका सर्वाधिक चर्चित व प्रसिद्ध ग्रंथ है ।

'सगुण धारा' में भी रामभक्ति व कृष्ण भक्ति नामक दो स्पष्ट शाखाएं विद्यमान हैं ।रामानंद की शिष्य परंपरा में राम की महिमा का बखान करने वाले कवि 'राम भक्ति शाखा' के कवि कहलाए

इस शाखा के प्रमुख कवि हैं गोस्वामी तुलसीदास ।'रामचरित मानस' इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रंथ है । गोस्वामी तुलसीदास को हिन्दी के मर्मज्ञ आलोचकों ने सर्वांगपूर्ण काव्यकुशलता संपन्न कवि स्वीकार किया है। स्वामी अग्रदास, नाभादास, प्राणचंद चौहान, हृदयराम आदि इस शाखा के अन्य प्रमुख कवि हैं ।

संपूर्ण राष्ट्र में धर्म – आंदोलन के प्रमुख प्रवर्तकों में श्री वल्लभाचार्य का नाम भी आता है । ये 'कृष्ण भक्ति शाखा' के दार्शनिक आचार्य के रूप में सर्वमान्य हैं ।इस शाखा के प्रमुख कवि सूरदास हैं ।'सूरसागर' इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रंथ है ।कृष्णदास परमानंददास, कुंभनदास, चतुर्भुज दास, छीतस्वामी, गोविंदस्वामी, हितहरिवंश, गदाधर भट्ट, मीरा बाई, हरिदास, रसखान, आदि अन्य प्रमुख कवि हैं ।

उत्तर मध्यकाल

इस काल को 'रीतिकाल' भी कहते हैं । यहां तक आते-आते हिंदी काव्य प्रौढ़ता के सभी चरण पार कर चुका था। रस-निरूपण प्रारंभ हो चुका था । श्रृंगार व अलंकार ग्रंथ लिखे जा चुके थे ।

इस काल के सर्वप्रमुख कवि केशवदास ने काव्य के सभी अंगों का शास्त्रीय पद्धति से निरूपण किया।काव्य में प्रधान स्थान अलंकारों को प्रदान करने वाले चमत्कारी कवि केशव का योगदान काव्यांग निरूपण की उस पुरानी दशा से परिचय कराना भी था जो भामह और उद्भट के समय विद्यमान थी। यहां यह स्पष्ट कर देना भी आवश्यक है कि रीति ग्रंथों की परंपरा का निरंतर प्रवाह बना चिंतामणि त्रिपाठी के 'काव्य विवेक' से ।

बेनी, जसवंत सिंह, बिहारी लाल, मंडन, मतिराम, भूषण, कुलपति मिश्र, नेवाज, देव, भिखारीदास, रसलीन, पद्माकर घनानंद, गिरिधर ठाकुर, गिरिधर दास (भारतेंदु के पिता) आदि इस काल के प्रमुख कवि हैं ।

आधुनिक काल

आधुनिक काल में हिन्दी साहित्य गद्य के विकास का उत्साह लेकर आगे बढ़ा । संवत् 400 के आसपास ब्रज भाषा का गद्य इसका आधार अवश्य कहा जा सकता है पर उसका स्वरूप नितांत अपरिमार्जित था । व्यवस्थित भाषा की दृष्टि से संवत् 1760 के बाद 'नासिकेतोपाख्यान' प्रारंभिक उल्लेखनीय कृति मानी गयी है । यहां यह निर्विवाद सत्य है कि गद्य लेखन की निर्बल परंपरा के चलते ब्रजभाषा का गद्य कदमताल ही करता रह गया । संभवतः यही कारण था कि खड़ी बोली के सहज स्वीकार ने हिन्दी गद्य साहित्य को एक नयी दिशा ही प्रदान कर दी । इस सहज स्वीकार के पीछे खुसरो, कबीर और गंगा की प्रारंभिक परंपरा अवश्य प्रभावी रही होगी । भाषा का समय-सत्य यह था कि रीति काल के समापन के साथ-साथ, भारत में शासन की बागडोर संभालने वाले अंग्रेजों के सामने दो तरह की भाषाएं खड़ी थी ।

1. सामान्य देशी खड़ी बोली और 2. मुस्लिमों द्वारा दिया गया दरबारी रूप – उर्दू ।

'रानी केतकी की कहानी' के इस समय में (संवत् 1965 के लगभग) इंशा अल्ला खां ही नहीं मुंशी सदासुख लाल, लल्लू लाल और सदल मिश्र भी प्रमुख रचनाकार थे। इसाई धर्म प्रचारकों ने जन सामान्य को प्रभावित करने के लिए हिन्दी का ही सहारा लिया ।

उधर ब्रह्म समाज की स्थापना करने वाले राममोहन राय भी चुप न बैठे । उन्होंने संवत् 1886 के लगभग 'बंगदूत' नामक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ कर दिया। इससे कुछ वर्ष पहले ही 'उदंत मार्तंड' का प्रकाशन प्रारंभ हो चुका था । इसके बाद का समय राजा लक्ष्मण सिंह और राजा शिव प्रसाद सिंह का रहा। इनके समय में गद्य के भावी स्वरूप का आभास तो होने लगा था पर साथ ही ऐसे रचनाकारों की कमी भी खल रही थी जो भाषा और रचना के दोहरे मोर्चे पर समान रूप से लड़ सकें । ऐसे कठिन समय में भारतेंदु ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।इस समय के अन्य उल्लेखनीय रचनाकारों में प्रताप नारायण मिश्र व बालकृष्ण भट्ट प्रमुख हैं। भारतेंदु के प्रभाव से निबंधों व नाटकों की ओर विशेष ध्यान आकर्षित हुआ ।कुछ नाटककार तो स्वयं अभिनय कुशल भी थे ।

लाला श्रीनिवास दास ने 'परीक्षागुरु' के साथ ही मौलिक हिन्दी उपन्यासों की परंपरा का सूत्रपात किया ।इस समय पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भी खूब हुआ । बदरी नारायण चौधरी, श्रीनिवास दास, ठाकुर जगमोहन सिंह, राधाचरण गोस्वामी, अंबिकादत्त व्यास, काशीनाथ खत्री, राधाकृष्णदास, कार्तिक प्रसाद खत्री, आदि का योगदान भी इस समय में उल्लेखनीय रहा ।

कवि भारतेंदु ने 'वैदिकी हिंसा न भवति' 'चंद्रावली' 'भारत दुर्दशा', 'अंधेर नगरी' सरीखे नाटक तो रचे ही बहुतेरे नाटकों का हिन्दी अनुवाद भी किया ।

राजनैतिक फेर-बदल व धार्मिक और सांस्कृतिक आंदोलनों के प्रारंभ के कारण भारतेंदु का समय नये परिवर्तन का समय कहा जा सकता है । राष्ट्रीय चेतना का प्रस्फुटन भी इस समय हुआ ।ऐसे में यदि नवजागरण का संदेश इस समय की रचना में प्रस्तुत हुआ तो यह स्वाभाविक ही था ।

उल्लेखनीय यहां केवल यह है कि खड़ी बोली में काव्यरचना अधिकांश रचनाकार इस समय इसलिए नहीं कर पाये कि उनके संस्कार ब्रजभाषा में कहीं गहरे में जुड़े थे । भारतेंदु और प्रेमघन की कुछ काव्य-रचनाएं जरूर खड़ी बोली में हैं। सन् 1850 से 1900 तक का यह समय वस्तुतः आधुनिक हिन्दी साहित्य का आधार समय है ।

आधुनिक काल का दूसरा चरण 'सरस्वती' पत्रिका के साथ प्रारंभ हुआ । व्याकरण और भाषा संबंधी सुधार की दृष्टि से 'सरस्वती' के संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान भुलाया नहीं जा सकता ।

नाटकों के क्षेत्र में यह रचना-समय अनुवाद की दृष्टि से भी महत्व का रहा पर राम देवी प्रसाद पूर्ण, अयोध्या सिंह उपाध्याय और ज्वाला प्रसाद मिश्र मौलिक नाट्य लेखन की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं

कथा-लेखन में उपन्यासकारों की दृ[illegible] समय

देवकीनंदन खत्री, किशोरी लाल गोस्वामी, अयोध्यासिंह उपाध्याय और लज्जाराम मेहता का रहा । 'चंद्रकांता' और 'चंद्रकांता संतति' ने तो पाठकों को हिंदी सीखने पर ही विवश कर दिया। इन उपन्यासों के जरिये तिलिस्म और ऐयारी का ऐसा रास्ता खुला कि आज भी पाठक उसकी गिरफ्त से चाहकर भी नहीं छूट पाता ।

कहानीकारों में किशोरी लाल गोस्वामी, मास्टर भगवानदास, रामचंद्र शुक्ल, गिरिजादत्त वाजपेई, बंग महिला के बाद जयशंकर प्रसाद, जी.पी. श्रीवास्तव, विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक, राधिकारमण प्रसाद सिंह, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, चतुरसेन शास्त्री प्रमुख रहे। प्रख्यात कथाकार प्रेमचंद की प्रारंभिक कहानियां इस समय की महत्वपूर्ण उपलब्धि रहीं क्योंकि आगे चलकर आधुनिक हिंदी कहानी की पुख्ता जमीन प्रेमचंद ने ही तैयार की।

भाषा के विकास की दृष्टि से इस समय के निबंधकारों ने विशेष महत्व का काम किया । महावीर प्रसाद द्विवेदी, माधव प्रसाद मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, बाबू श्याम सुंदर दास और चंद्रधर शर्मा गुलेरी इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं ।

दूसरे चरण की कविता का प्रारंभिक कवि श्रीधर पाठक को माना जाता है । प्रकृति वर्णन को पाठक जी ने अपनी कविता की प्रमुख 'वस्तु' के रूप में चुना । इस समय के अन्य प्रमुख कवि हैं हरिऔध, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त और राम नरेश त्रिपाठी । यह समय इस दृष्टि से भी उल्लेखनीय है कि अंग्रेजी शिक्षा का क्रमशः प्रचार हो जाने से प्रबुद्ध वर्ग अंग्रेजी साहित्यिक ग्रंथ पढ़कर अपने ज्ञान-जगत का विस्तार कर रहा था । ऐसे में स्वाभाविक ही था कि मानव जीवन और अनुभूतियों को इस रचना-समय में प्रमुखता से स्थान मिलता।

तीसरे चरण में नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना और काव्य-रचना आदि सभी विधाओं में उल्लेखनीय 'रचनाएं' सामने आयीं । प्रेमचंद, प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक, उग्र, प्रताप नारायण श्रीवास्तव, भगवतीचरण वर्मा, जैनेंद्र कुमार, वृंदावन लाल वर्मा सरीखे उपन्यासकारों ने उपन्यास का नया इतिहास बनाया । 'गबन', 'रंगभूमि', 'गढ़कुंडार', 'चित्रलेखा', 'मां', 'हृदय की प्यास', 'कंकाल', 'तितली', 'तपोभूमि', 'सुनीता' और 'पुष्पा की बेटी' जैसे उपन्यास इस रचना समय की धरोहर हैं ।

कहानी की संवेदना और वस्तु विन्यास की दृष्टि से यह समय विविधतापूर्ण रहा । भगवती प्रसाद वाजपेई, चंडीप्रसाद 'हृदयेश', प्रेमचंद, प्रसाद, विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक, ज्वालादत्त शर्मा, जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज', उग्र, सुदर्शन, जैनेंद्र कुमार, विनोद शंकर व्यास और जी.पी. श्रीवास्तव जैसे कहानीकारों की विविधरंगी कहानियों ने कहानी-साहित्य को समृद्ध किया ।

नाटक के क्षेत्र में प्रसाद और हरिकृष्ण प्रेमी के अतिरिक्त सेठ गोविंद दास, गोविंद वल्लभ पंत, लक्ष्मी नारायण मिश्र, उदय शंकर भट्ट, उपेन्द्र नाथ अश्क सरीखे समर्थ रचनाकार सामने आये । रूपक और एकांकी भी इस रचना समय में खूब आये। सुदर्शन, रामकुमार वर्मा, भुवनेश्वर, अश्क, भगवती चरण वर्मा आदि के एकांकियों का तो एक संयुक्त संग्रह ही प्रकाशित हुआ।

आधुनिक हिन्दी काव्य की एक विशेष प्रवृति के रूप में 'छायावाद' सामने आया । यहां राष्ट्रीय भावना और क्रांति को जगाने के अतिरिक्त वैयक्तिक प्रेम भावना और सौंदर्य चित्रण के लिए भी कवि प्रयत्नशील रहे । रहस्य भावना या आध्यात्मिक प्रेम भी यहां प्रमुख विषय के रूप में बना रहा । प्रसाद, निराला, महादेवी और पंत के अतिरिक्त इस समय के प्रमुख कवि माखन लाल चतुर्वेदी, बच्चन, नवीन, सोहनलाल द्विवेदी, रामकुमार वर्मा, दिनकर और अंचल माने जाते हैं ।

इस महत्वपूर्ण रचना समय के बाद क्रमशः 'प्रयोगवाद' व नई कविता का युग प्रारंभ हुआ ।

सन् 1950 के बाद की कविता को 'नई कविता' के रूप में मान्यता मिली । अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक' का प्रकाशन इस दृष्टि से एक महत्वपूर्ण प्रस्थान बिंदु साबित हुआ । नई कविता के पहले चरण में अज्ञेय, गिरिजाकुमार माथुर, भारत भूषण अग्रवाल, मुक्तिबोध, प्रभाकर माचवे, रामविलास शर्मा, नेमिचंद जैन के समानांतर कुछ प्रमुख प्रगतिवादी कवि हैं – (स्व.) शमशेर, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन शास्त्री, शील, बालकृष्ण राव, ठाकुर प्रसाद सिंह और शिवमंगल सिंह सुमन । बाद के महत्वपूर्ण कवियों में (स्व.) धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, सर्वेश्वर, रघुवीर सहाय, जगदीश गुप्त, कुंवर नारायण व लक्ष्मीकांत वर्मा को मान्यता मिली । विकास की आस्था को साथ लिए समय संघर्ष में आगे बढ़ते हुए नई कविता ने इधर जो रास्ता तय किया उसमें धूमिल, दुष्यंत कुमार, केदार नाथ सिंह, विपिन कुमार अग्रवाल, अशोक वाजपेई, जगदीश चतुर्वेदी, विजेंद्र, विष्णु खरे, लीलाधर जगूड़ी, चंद्रकांत देवताले, गिरधर राठी, प्रयाग शुक्ल, सोमदत्त और शलभ श्रीराम सिंह सरीखे कवियों के साथ ही मंगलेश डबराल, इब्बार रब्बी, उदय प्रकाश, कुबेरदत्त, राजेश जोशी, विनोद दास व अन्य सक्रिय कवियों की समर्थ पंक्ति संबद्ध रही । चार पीढ़ियों की सक्रियता के बावजूद इधर छंदों की ओर रुझान कुछ कम हुआ है । इस दृष्टि से नीरज, रमेश रंजक, नईम, नचिकेता, कुंवर बेचैन के बाद रामकुमार कृषक, पुरुषोत्तम प्रतीक, आनंद शर्मा, प्रताप अनम, सुरेंद्र श्लेष और ब्रजमोहन ही उल्लेखनीय कहे जा सकते हैं । इस कमजोरी के चलते हिन्दी कविता ने बहुत कुछ खोया है । इधर युवा कवियों में देवी प्रसाद मिश्र, विमल कुमार और बद्रीनारायण, कात्यायनी, संजय चतुर्वेदी, रामलखन यादव और निर्मला गर्ग ने अपनी अलग ही पहचान बनाई है ।

नाटक के क्षेत्र में प्रसाद के 'ध्रुवस्वामिनी' के बाद लंबे समय तक कोई सशक्त कृति सामने नहीं आई । सन् 1951 में जगदीशचंद्र माथुर रचित 'कोणार्क' और इसके भी सात वर्ष पश्चात आया मोहन राकेश का नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' । अन्य नाटककारों में (स्व.) धर्मवीर भारती, विष्णु प्रभाकर, लक्ष्मीनारायण लाल और नरेश मेहता प्रमुख हैं । मंचन की दृष्टि से यह समय उत्साहवर्धक रहा । 'अंधायुग' इस दृष्टि से सफलतम नाटक कहा जा सकता है । बाद के नाटककारों में सत्येंद्र शरत, रेवतीशरण शर्मा, सुरेंद्र वर्मा, मुद्राराक्षस, मणि मधुकर, शरद जोशी, रमेश बक्षी, नरेंद्र कोहली, कुसुम कुमार और किरन चंद्र शर्मा आदि प्रमुख हैं । बावजूद इसके, सच यह है कि प्रायः नाटकों के निर्देशक यह कहते पाये जाते हैं कि हिन्दी में अच्छे मौलिक नाटक बहुत कम लिखे जा रहे हैं ।

साहित्य पर क्रमशः समकालीन यथार्थ की पकड़ इतनी मजबूत होती जा रही थी कि ऐतिहासिक उपन्यासों के प्रति इतना आग्रह न देखा गया । चतुर सेन शास्त्री (वैशाली की नगर वधू),

यशपाल (अमिता और दिव्या) और वृंदावन लाल वर्मा (मृगनयनी) अपवाद कहे जा सकते हैं। परिवेश और परिस्थितियों के अनुरूप क्रमश: अपना स्वरूप बदलते हुए उपन्यास विधा ने जिन प्रमुख रचनाकारों को आकृष्ट किया वे हैं जैनेंद्र, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी, उदयशंकर भट्ट, विष्णु प्रभाकर, अमृतलाल नागर, यशपाल, भगवती चरण वर्मा, रांगेय राघव, राहुल सांकृत्यायन, नागार्जुन, फणीश्वर नाथ रेणु, उपेंद्रनाथ अश्क, अमृतराय, भीष्म साहनी, राजेंद्र यादव, प्रभाकर माचवे, धर्मवीर भारती, डा. देवराज, नरेश मेहता और भैरव प्रसाद गुप्त बाद के चर्चित उपन्यासकार हैं – शिवप्रसाद सिंह, शैलेश मटियानी, लक्ष्मीनारायण लाल, शिवानी, श्रीलाल शुक्ल, कृष्ण चंद्र शर्मा भिक्खु, मन्नू भंडारी, विवेक राय, रामदरश मिश्र, रवींद्र कालिया, नरेंद्र कोहली, धर्मेंद्र गुप्त, मुद्राराक्षस, योगेश गुप्त, रमेश बक्षी, रमाकांत, मृदुला गर्ग, हिमांशु जोशी व रवींद्र वर्मा आदि। इधर के उपन्यासकारों में मनोहर श्याम जोशी, ध्रुव शुक्ल, पंकज विष्ट, नासिरा शर्मा, सुरेंद्र वर्मा, चंद्रकांता, वीरेंद्र जैन और क्षितिज शर्मा उल्लेखनीय हैं।

कथानक, भाषा, शिल्प व प्रस्तुति की विविधता की दृष्टि से इधर के उपन्यास में बहुतेरे परिवर्तन देखने में आये।

इस दृष्टि से 'झूठा सच' (यशपाल), मैला आंचल (रेणु), बूंद और समुद्र (नागर), निशिकांत (विष्णु प्रभाकर), बलचनमा (नागार्जुन) और उखड़े हुए लोग (राजेंद्र यादव) की परंपरा में 'कुरु–कुरु स्वाहा' और 'कसप' (मनोहर श्याम जोशी) 'जुलूस वाला आदमी', 'छोटे–छोटे महायुद्ध' और 'तीसरा देश' (रमाकांत), 'लेकिन दरवाजा' और 'उस चिड़िया का नाम' (पंकज विष्ट), 'सूखा बरगद' (मंजूर एहतेशाम), 'डूब' (वीरेंद्र जैन) तथा 'अन्वेषण' (अखिलेश), अनवेषी (नरेंद्र नामदेव) और 'उकाव' (क्षितिज शर्मा) उल्लेखनीय उपन्यास हैं।

प्रेमचंद के बाद कहानी में एक ओर सामाजिक संघर्ष का अर्थबोध हुआ तो दूसरी ओर व्यक्ति के मनोविज्ञान से आगे मनोविश्लेषण की प्रवृति देखने में आई। 'नई कहानी' के विकास के साथ साथ कुछ महत्वपूर्ण कहानीकार उभर कर आये – मोहन राकेश, निर्मल वर्मा, कमलेश्वर, कृष्णा सोबती, शिव प्रसाद सिंह, मार्कंडेय, अमरकांत, राजेंद्र यादव, धर्मवीर भारती, रेणु, उषा प्रियंवदा, शेखर जोशी और मन्नू भंडारी। 'दोपहर का भोजन' (अमरकांत), 'मिस पाल' (मोहन राकेश), 'परिंदे' (निर्मल वर्मा), 'टूटना' (राजेंद्र यादव) 'यही सच है' (मन्नु भंडारी), 'कोसी का घटवार' (शेखर जोशी), 'मारे गये गुलफाम' (रेणु) और 'वापसी' (उषा प्रियंवदा) सरीखी कहानियों की धारा के साथ ही प्राचीन परंपरा की जो कहानी अपनी सृजन लीक नये अनुभव समेट रही थी उसमें विष्णु प्रभाकर (धरती अब भी घूम रही है), रांगेय राघव (गदल), निर्गुण, शैलेश मटियानी, हृदयेश, कामतानाथ, हिमांशु जोशी आदि प्रमुख रचनाकारों ने उल्लेखनीय रचनाएं दीं।

समय के विकास के साथ–साथ अकहानी, सहज कहानी, समांतर कहानी, सचेतन कहानी, सक्रिय कहानी और जनवादी कहानी के आंदोलनों को पार करते हुए आज हिंदी कहानी एक लंबी यात्रा तय कर चुकी है। कविता की ही तरह कहानी के क्षेत्र में भी इस समय कई पीढ़ियां एक साथ सक्रिय हैं। मूल्यवान योगदान के लिए हरिशंकर परसाई, भीष्म साहनी, अमृत राय, ज्ञान रंजन, दूधनाथ सिंह, रामनारायण शुक्ल, रमाकांत, रमेश बक्षी, काशीनाथ सिंह, विजय मोहन सिंह, गिरिराज किशोर, मृदुला गर्ग, रमेश उपाध्याय, गोविंद मिश्र आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। इधर जिन कहानीकारों ने अपनी विशेष जगह बनायी है, वे हैं, स्वयं प्रकाश, पंकज विष्ट, सुरेश उनियाल, चित्रा मुद्गल, संजीव, उदय प्रकाश, शिवमूर्ति, राजी सेठ, अरुण प्रकाश, धीरेंद्र अस्थाना, नमिता सिंह, असगर वजाहत, नासिरा शर्मा, बलराम, महेश दर्पण, प्रियंवद, चंद्रकिशोर जयासवाल, अखिलेश, अब्दुल बिस्मिल्लाह और संजय।

लघु कथा धीरे–धीरे एक विधा के तौर पर स्थापित होती जा रही है। आधुनिक संवेदना और भाषा की दृष्टि से राजेंद्र यादव, असगर वजाहत, रमेश बत्तरा, कमलेश भारतीय, उदय प्रकाश, संजय, पृथ्वीराज अरोड़ा, चित्रा मुद्गल, विष्णु नागर, महेश दर्पण, अवधेश कुमार और महावीर प्रसाद जैन की रचनाएं उल्लेखनीय हैं।

हिंदी आलोचना में डा. रामविलास शर्मा ऐतिहासिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं किंतु इधर के साहित्य पर उनकी नजर कम ही टिकी है। लंबे समय के बाद संस्मरणों का नया सिलसिला चल निकला है। हरिशकर परसाई 'हम इक उम्र से वाकिफ हैं' के जरिए तो कमलेश्वर 'याददहानी' की श्रृंखला में सबसे चर्चित रहे। कमलेश्वर की ही तर्ज पर रवींद्र कालिया के संस्मरण भी आये लेकिन उनमें काशीनाथ सिंह के उन संस्मरणों का मजा नहीं है। काशीनाथ सिंह का कहानीकार संस्मरण लिखते समय पूरी तन्मयता से सक्रिय रहता है। रामनारायण शुक्ल पर रमाकांत का संस्मरण भी उल्लेखनीय रहा।

साक्षात्कारों का स्तर 'बातों बातों में (मनोहर श्याम [illegible]), 'बीसवी शताब्दी के अंधेरे में [illegible]कांत वर्मा) और '[illegible]' (सुरेंद्र तिवारी) व 'कथन [illegible]' (महेश दर्पण) से [illegible] बढ़ा है। 'दीवानखाना [illegible] मितवाघर' से [illegible] कुछ आगे ले गई तो [illegible] सिंह से किए [illegible] साक्षात्कार 'कहना [illegible] से छपे हैं।

यात्रा वृतांत [illegible] कही जा सकती है [illegible] देश तिब्बत के [illegible] पुस्तकें ऐसी [illegible] लेखक [illegible] क्षेत्र घूमकर [illegible] शक्ति की [illegible] इस दृष्टि से [illegible]

एक–[illegible] साहित्य पत्रिका[illegible] वहीं, [illegible] और 'कहानी [illegible] से [illegible] हुआ है [illegible] सरीखी [illegible] जाने [illegible] वर्तमान साहित्य [illegible] उत्साह [illegible] आया था, [illegible] अंकों के [illegible] रहा।

कुल [illegible] लघु पत्रिका[illegible] के [illegible] की भूमिका [illegible] [illegible] राजेंद्र यादव, [illegible] दुब, [illegible] किशोर और [illegible] तब [illegible] [illegible] रहा है।

बीसवीं सदी का बालसाहित्य

हिन्दी साहित्य में बच्चों के लिए लिखने की परंपरा यद्यपि १३वीं शताब्दी में खुसरो की मुकरियों से मानी जाती है तथापि बच्चों के बौद्धिक विकास को ध्यान में रखते हुए 20वीं शताब्दी में बालसाहित्य की शुरुआत का विशेष महत्व है। यह बात सुविदित है आजादी से पूर्व बालकों के लिए लिखा जानेवाला साहित्य राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत था और ऐसा साहित्य रचा जा रहा था जो राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में सहायक हो किंतु अधिकांश रचनाकार स्वयं को बाल साहित्यकार कहलाने से डरते थे। आजादी के बाद इसमें क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ।

उपलब्ध जानकारी के अनुसार बच्चों के विधिवत बाल साहित्य का सृजनकाल 19वीं सदी का मध्य माना जाता है। संयुक्त प्रान्त के स्कूलों के निरीक्षक राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ने बच्चों के लिए अनेक पुस्तकें लिखीं। इन में 'बच्चों की कहानी' (1867) और 'लड़कों की कहानी' (1876 ई.) काफी चर्चित रहीं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने बच्चों के लिए हास्य व्यग्य रचनाए लिखीं जिनमें 'अंधेर नगरी' महत्वपूर्ण माना जाता है। लालूजी लाल कृत 'राजनीति' हितोपदेश का हिन्दी रूपान्तर था जो बच्चों को ध्यान में रखकर लिखा गया। पंडित बदरी लाल ने भी 1851 ई में हितोपदेश की कथाओं का हिन्दी अनुवाद किया। इसी प्रकार स्वामी दयानन्द, अम्बिका दत्त व्यास, मुंशी देवी प्रसाद मुसिफ तथा लक्ष्मी नाथ शर्मा ने क्रमशः 'व्यावहार भानु' (1879 ई.) 'कथा कुसुम कलिका' (1885 ई.), 'विद्यार्थी विनोद' (1896 ई.) और 'श्री मनोरजन' (1896 ई.) बच्चों के लिए कृतिया लिखीं।

इस काल में जहां बालकृतिया बच्चों के मानसिक विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थीं वहीं 1882 ई में इलाहाबाद से प्रकाशित 'बालदर्पण' नामक बच्चों की पत्रिका ने एक नए युग का सूत्रपात कर दिया। यह पत्रिका भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के विशेष प्रयत्नों से प्रकाशित हुई थी इसलिए इसे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र युग की विशेष देन कहा जाता है। इसके पश्चात 1891 ई में लखनऊ से 'बालहितकर', 1906 ई. में अलीगढ़ से 'छात्र हितैषी', 1906 ई में ही बनारस से 'बाल प्रभाकर' 1910 ई. में प्रयाग से 'विद्यार्थी' तथा सन 1912 ई. में नरसिंहपुर से प्रकाशित 'मानीटर' का योगदान विशेष रूप से सराहनीय रहा। इसके पश्चात बाल पत्रिकाओं की बाढ़ से आ गई। जैसे – 'शिशु' 1916 (संपादक – पंडित सुदर्शनाचार्य), 'बाल सखा', 'छात्र सहोदर' (1920 ई.) जबलपुर, 'वीर बालक' (सं. माधवजी) 1924 ई दिल्ली 'बालक' 1924 ई. (सं. आचार्य रामलोचन–पटना) 'खिलौना' 1927 ई. प्रयाग (सं. पं. रामजीलाल शर्मा), 'चमचम' 1930, प्रयाग (सं. विश्वप्रकाश), 'वानर' 1931 ई. प्रयाग (स प रामनरेश त्रिपाठी), 'कुमार' 1932, कालाकांकर (प्रतापगढ़) (स. ठा. दिनेश सिंह), 'अक्षय भैया' 1934 इलाहाबाद (स. रामकिशोर अग्रवाल 'मनोज'), 'बाल विनोद' 1936 मुरादाबाद (स. रामशंकर जेतली) 'किशोर' 1938, 'चन्दामामा' (चेन्नई) 1942 ई. पटना (सं. रामदहिन मिश्र), 'होनहार' 1944 ई. लखनऊ (सं प्रेमनारायण टडन), 'तितली' 1946 ई. प्रयाग (सं. व्यथित हृदय), 'बालबोध' 1947, प्रयाग (सं. ठा. श्रीनाथ सिंह) आदि हैं।

स्वतंत्रा प्राप्ति के बाद जैसे ही राष्ट्रीय लक्ष्य में परिवर्तन हुआ वैसे ही बच्चों के बहुमुखी विकास के लिए बाल पत्रिकाओं ने अपनी जिम्मेदारी को समझा और अनेक बाल पत्रिकाएं नए युग और नए मूल्यों के साथ अवतरित हुई।:–'बालभारती' 1948 ई. (प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली), 'प्रकाश' 1949 ई. (पंजाब), 'मनमोहन' 1949 (इलाहाबाद), 'नन्ही दुनिया' 1951 (देहरादून), 'कलियां' 1955 (लखनऊ), 'बालमित्र' 1955 (दिल्ली), 'जीवन शिक्षा' 1957, 'स्वतंत्र भारत' 1957 (दिल्ली), 'पराग' 1958 (दिल्ली), 'राजा बेटा' 1958 वाराणसी, 'बालबंधु' 1958 (मुरादाबाद), 'मीनू–टीनू' 1958 चक्रधरपुर (बिहार), 'राजाभैया' 1959 (दिल्ली), 'बाल फुलवारी' 1958 (अमृतसर), 'बालजीवन' 1960 (करनाल), 'हमारा शिशु' 1960 (कानपुर), 'विश्व बाल कल्याण' 1960 आजमगढ़, 'बेसिक बाल शिक्षा' 1961 ई. (सं प्रेमनारायण भार्गव), 'बाल लोक' 1961 ई. (सं. बंशीलाल), 'फुलवारी' 1961 (सं. कुंवरजी अग्रवाल), 'बाल दुनिया' 1962 (सं. प्रदीप कुमार अरोड़ा), 'बाल वाटिका', 1962 (सं. पी एन. पाडेय), 'रानी बिटिया' 1963 (सं. पं. शिवनारायण उपाध्याय), 'शेरखां' 1964 (सं. शम्भू प्रसाद श्रीवास्तव), 'नंदन' 1964 (दिल्ली), 'मिलिंद' 1965 (सं. रत्न प्रकाश शील), 'जंगल' 1965 (सं. आनन्द कमल), 'चमकते सितारे' 1966 (सं. ब्रजेश्वर मलिक), 'बाल प्रभात' 1966 (सं श्रीप्रकाश जैन), 'शिशु बन्धु' 1966 (सं. सरोजनी कुलश्रेष्ठ), 'बाल जगत' 1967 (सं. उषा तिवारी), 'बच्चों का अखबार' 1967 (सं. महेन्द्र जोशी), 'नटखट' 1967 (सं. अशोक कुमार विश्वकर्मा), 'बालकुंज' 1968 (सं. रमेश कुमार बाल रतन) 'चम्पक' 1968 (सं. विश्वनाथ), 'लोटपोट' 1969 (स. ए.पी बजाज), 'चन्द्र खिलौना' 1969 (सं. मुरली पसाद सिंह) 'बाल रगभूमि' 1970 (सं. सत्येन गुप्ता), 'मुन्ना' 1970 (स प्रखर बुद्धि कपूर), 'गोलगप्पा' 1970 (महेन्द्र प्रताप गर्ग), हिन्दी कामिक्स 1971 (सं. नजीर सईद) 'महाबली कामिक्स' 1971 (सं. सुरेन्द्र सुमन), 'नगमा' 1972 (स. प्रदीप कुमार मिश्र), 'बच्चे और हम' 1972 (सं. मस्तराम कपूर 'उर्मिल'), 'चमाचम' 1972 (सं. धनश्याम रजन) 'गुरुचेला' 1973 (सं. श्रीमती उषा कुमारी), 'हंसती दुनिया' 1973 (स. पी.एल. बजाज एवं निर्मल जोशी), 'गुड़िया' 1973 (स श्रीमती विजया), 'किशोर मिलिन्द' 1973 (सं. शशिप्रभा अग्रवाल), 'बाल बन्धु' 1973 (सं. मुश्ताक परदेसी) 'शांतिपुत्र प्यारा बुलबुल' 1974 (सं. ए.ए. अनंत), 'लल्लू पंजू' 1975 (अतिथि सं. के. पी. सक्सेना), 'शावक' 1975 (सं.

सरोजिनी प्रीतमा एवं अंजु बजाज), 'बालेश' 1975 (सं. विश्वदीप), 'बालरुचि' 1975 (सं. रवीन्द्रश्रीवास्तव), 'देवछाया' 1975 (सं. मनमोहन सहगल), 'बाल दर्शन' 1975 (सं. नरेश सक्सेना, 'शिशुरंग' 1977 (सं. करुणेश), 'कलख' 1977 (सं. रमेश कुमार राणा), 'आदर्श बाल सखा' 1977 (सं. रामप्रवेश चौबे), 'ओराजा' 1977 (सं. त्रिलोक सिंह खानुजा), 'बाल साहित्य समीक्षा' 1977 (सं. डा. राष्ट्र बन्धु), 'बालपताका' 1978 (सं. जयव्रत चटर्जी), 'मुस्कराते फूल' 1978 (सं. श्याम बिहारी भटनागर), 'बाल कल्पना' 1979 (सं. कु.सीमा), 'मेला' 1979 (सं. योगेन्द्र कुमार लल्ला), 'देवपुत्र' 1979 (सं. विश्वनाथ मित्तल, 'राकेट' 1980 (सं राजकुमार राजन), 'बालमन' 1980 (सं. सूर्यनारायण सक्सेना) 'बालरत्न' 1980 (सं. नरेन्द्रकुमार), 'कुटकुट' 1981 (सं. रमेशगुप्ता चातक), 'नन्हें तारे' 1981 (सं. पुष्प कुमार सिंह), 'नन्हीं मुसकान' 1981 (सं. श्याम निगम), 'नन्हें मुन्नों का अखबार' 1981 (सं. प्रदीप सौरभ एवं अजामिल), 'दि चिल्ड्रेन टाइम्स' 1981 (सं. नरेन्द्र निर्मल एवं प्रेमेन्द्र श्रीवास्तव), 'आनंददीप' 1982 (सं. डा. दयानंद शर्मा मधुर), 'बालनगर' 1982 (सं. शील एम.ए. एवं कुणाल श्रीवास्तव), 'चंदन' 1982 (सं. अजीजुल्लाह खान), 'लल्लू जगधर' 1982 (सं. प्रेमचन्द्र गुप्त विशाल), 'सुगन सौरभ' 1983 (सं. विश्वनाथ), 'किलकारी' 1984 (सं. भूपेन्द्र गांधी), 'उपवन' 1984 (सं. सलीम खान 'फरीद'), 'चकमक' 1985 (सं. विनोद रैना), 'बाल कविता 1985 (सं. विनोद चन्द्र पांडेय 'विनोद'), 'अच्छे भैया' 1986(सं. सतीश चन्द्र अग्रवाल), 'नए फूल धरती के' 1986(सं. जयव्रत चटर्जी) बालहंस, 1986 (सं. अनंत कुशवाहा) बाल मंच, 1987 (सं. चित्रगर्ग), नन्हे सम्राट, 1988 (सं. आनन्द दीवान), 'किशोर लेखनी' 1988 (सं. देवेन्द्र कुमार देवेश') 'बालमेला' 1989 (सं. राधेश्याम प्रगल्भ), 'रामझ झरोखा' 1989 (सं. मनोहर आशी) आदि।

हिन्दी बाल साहित्य में बाल पत्रिकाओं के अतिरिक्त गद्य के क्षेत्र में बाल सहित्यकारों ने काफी योगदान दिया। प्रेमचन्द ने 'जंगल की कहानियां' और 'कुत्ते की कहानी' पुस्तकें बच्चों के लिए विशेष रूप से लिखीं। इसी प्रकार शिशुओं के लिए लिखे गए गीत 'नीलम' शारदा मिश्र तथा 'मसहरी की देवी' निरंकार देव सेवक द्वारा रचित कृतियां उत्तर प्रदेश सरकार ने उत्तम प्रस्तुतीकरण के लिए पुरस्कृत किया। इसी प्रकार 'अनिता सर्कस गई' बालबन्धु तथा 'तीन टिकट महाविकट', 'नथकटी रिन्छू' और 'इल और बिल' नर्मदा प्रसाद मिश्रा उल्लेखनीय कृतियां थीं जो 1930 से 1938 ई. के बीच बच्चों में बहुत लोकप्रिय हुईं। पांच से छह वर्ष के बीच के शिशुओं के लिए लिखने वाले रचनाकारों में सुखराम चौबे 'गुनकर', विद्याभुषण विभु, स्वर्ण सहोदर, श्रीनाथ सिंह, रामनरेश त्रिपाठी, सुभद्रा कुमारी चौहान, सुमित्रा कुमारी सिंहा, रामेश्वर गुरु, सरस्वती कुमार दीपक तथा रुद्रदत्त मिश्र उल्लेखनीय है।

हमारे देश के बाल-साहित्य का लगभग पचास प्रतिशत साहित्य आठ से बारह वर्ष के बच्चों के लिए लिखा जाता है। इस आयु वर्ग के बच्चों के लिए सोहनलाल द्विवेदी, स्वर्ण सहोदर, सुखराम चौबे 'गुनकर' तथा विद्याभूषण विभु ने काफी अच्छी बाल कविताएं लिखीं। इसी परंपरा में सुमित्रा कुमारी सिंह (दादी का मटका), शिवमंगल सिंह सुमन (प्रभाती), रघुवीर शरण त[...] भारत भूषण अग्रवाल (अंत्याक्षरी), कुमार हृदय (अभिनयगीत[...] गया प्रसाद सुरेले (ग्रह मंडल की रानी) सुषा वर्मा (शिशु औ[...] चांद), कुसुमवती देशपांडेय (वर्षा की बूंद), निरंकार देव सेव[...] (चाचा नेहरु के गीत) आदि ने लोकप्रिय बालगीत लिखे।

रामधारी सिंह दिनकर ने 'मिर्च का मजा' सात बाल कहानि[...] का संग्रह लिखा। उपाध्याय सिंह हरिऔध की 'खेल तमाश[...] सोहनलाल द्विवेदी की 'यह मेरा हिन्दुस्तान है' तथा 'बालभारत[...] सरस्वती कुमार दीपक की 'गुड़ियों का देश' हरिकृष्ण देवस[...] 'चांद सितारे और पानी के गीत' तथा सत्यमान की 'बाजे-ग[...] बांसुरी' लोकप्रिय बाल कविताएं हैं। इसी समय कन्हैया ला[...] 'मत्त' तथा शकुंतला सिरोठिया ने लोरी गीतों की अनुपम रच[...] की जो बाल साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं।

बाल नाटकों में अनिल कुमार का 'आओ बच्चों नाटक खे[...] (तीन भाग), 'पैसों का पेड़' (कमलेश्वर), 'पांच एकांकी (चन्द्रप्रका[...] सिंह), 'नटखट नंदू' (दयाशंकर मिश्रा 'दद्दा'), 'लाडले [...] बलिदान' और नवयुग (प्रशांत), 'ऋतुओं की सभा' (प्रभु दया[...] अग्निहोत्री), 'राह अनेक मंजिल एक' (राधेश्याम 'प्रगल्भ'), 'चू[...] राजा' रामकृष्ण शर्मा, 'जाड़ की गाय' तथा 'दादा की कचहर[...] (शांता संत), 'अनिल और अंजलि' और 'परीक्षा' (श्रीकृष्ण[...] 'निरिक्षण' (हरिकृष्ण दास गुप्त), 'विश्वमित्र' के.एम. मुंश[...] 'कमलेश्वर के चुने हुए बालनाटक' (कमलेश्वर), 'बच्चों [...] अदालत में (कृष्ण किशोर), चुन्नू, मुन्नू और पुष्पा (चरनजीत[...] तथा 'चुने हुए बाल एकांकी' दो भाग (सं. रोहिताश्व अस्थाना[...] 'चांद पर चहल पहल' (जयप्रकाश भारती), 'लाख की नाक' औ[...] 'भौं-मौं-खौं-खौं-(सर्वेश्वर दयाल सक्सेना), 'चाचा छक्क[...] के ड्रामे' (कुदेसिया जैदी) 'हड़ताल' (विष्णु प्रभाकर), बिल्ली [...] खेल', (लक्ष्मी नारायण लाल) 'झगड़ालू लड़का' तथा 'हिरण[...] कश्यप वध' श्रीकृष्ण आदि स्तरीय नाटक लिखे गए।

हिन्दी बाल साहित्य में लोक कथाओं का अपना महत्वपू[...] योगदान रहा है। 'फूलवती' और 'सोहराब और रुस्तम', 'सुदर्शन[...] 'मौत की मौत तथा 'सोने की सन्दूकची' (कृष्ण चन्दर) 'छोटी[...] बडी लहरें' (राजेन्द्र अवस्थी), 'आल्हा ऊदल' (देवीदया[...] चतुर्वेदी) 'शिकार की कहानियां' (बालकृष्ण), 'दुनिया [...] आश्चर्य' (धर्मपाल शास्त्री) 'अलिफ लैला' (विश्वमित्र शर्मा) औ[...] 'हाथियों की खोज में', (विराज) आदि लोकप्रिय लोककथाओ[...] के संग्रह रहे हैं।

जीवन चरित्र पर आधारित हिन्दी जगत में बच्चों के लि[...] अनेक पुस्तकें लिखी गईं। प्रकाशन विभाग, भारत सरकार [...] 'भारत के गौरव' शीर्षक से अनेक भागों में पुस्तकें प्रकाशित कीं। 'सुदर्शन' की 'गांधी बाबा', 'कृष्ण छती सिंह' की 'बापू [...] कहानियां बच्चों में काफी लोकप्रिय हुईं। 'मोतीलाल नेहरू' औ[...] 'पुरुषोत्तम दास टंडन' (जगपति चतुर्वेदी), 'दुर्गादास' और 'राज[...] हरदौल' (मुंशी प्रेमचन्द), 'शिवाजी' और 'विद्यार्थी' (रामा[...] वेनी पुरी), 'हमारे युग नेता' (भगवत शरण उपाध्याय), 'शेर सिं[...] और माइकेल मधुसूदन दत्त' (रामनाथ सुमन) 'हमारे गौरव [...] प्रतीक' (जयप्रकाश भारती) आदि [illegible] हैं। इसके अतिरिक्त धार्मिक एवं राष्ट्रीय [illegible] की जीवनियां बाल साहित्यकार [illegible] (नागार्जुन), राहुल सांकृत्या[illegible]

त्रिपाठी 'निराला' (रामविलास शर्मा), 'मिर्जा गालिब' (रजिया सज्जाद ज़हीर), महाकवि कालीदास (रामपति शुक्ला), 'शरदचन्द्र (विष्णु प्रभाकर), 'रवीन्द्रनाथ टैगोर (सुमाष रस्तोगी), गैलीलियो और न्यूटन' (ओमप्रकाश आर्य), 'मादाम क्यूरी' (गीता बंधोपाध्याय-अनु. त्रिभुवन नाथ), 'आर्कमिडीज और पास्कल' गुणाकर मुले), 'विश्वेश्वैया' (मनोहर जुनेजा), 'अलवर्ट आईंसटीन' (युगजीत नवलपुरी), 'रामानुजम' (वजीर हसन आवदी), 'एक था नाना,' 'खूब लड़ी मरदानी' और 'जयभवानी' (मनहर चौहान), 'भारतीय वैज्ञानिकों की कहानियां' (श्यामलाल मधुप), 'विश्व प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक' (हरिकृष्ण), 'भारत के महान वैज्ञानिक' (हरीश अग्रवाल), 'विश्व के प्रसिद्ध वैज्ञानिक (हिमाशु श्रीवास्तव), 'विश्व की महान माताएं' (जयप्रकाश भारती) आदि वीसवीं शताब्दी की उल्लेखनीय कृतियां हैं।

हिन्दी वालसाहित्य में कहानी, उपन्यास, जीवन चरित्र, नाटक, कविता, गीत आदि की तुलना मे यायावरी साहित्य का सृजन कम हुआ है। इस दिशा में डा. श्यामसिह शशि का देश-देश में रोमा वच्चे', 'वनवासी वच्चे कितने सच्चे जगल में मोर नावा', जय प्रकाश भारती का 'सपनों का देश' हीरालाल वाछोतिया का 'रुकती नहीं है नदी', कौशलेन्द्र पाडेय का 'निर्झर और नदियां', शमशेर अहमद खान का 'गाजियावाद से जम्मू तवी' तथा 'शिमला से वदरीनाथ', चक्रधर नलिन का 'भारत दर्शन' उल्लेखनीय कृतियां है। इसके अतिरिक्त विष्णु प्रभाकर, राधेश्याम प्रगल्भ, राजेन्द अवस्थी सिजु सगमेश विनोदचन्द्र पांडेय 'विनोद', शशिप्रभा शास्त्री शकुतला सिराठिया हरिकृष्ण देवसरे, हीरालाल वाछोतिया जयपालतरग दिविक रमेश आदि यालसाहित्यकारो ने यात्रा-वालसाहित्य मे अपनी रचनाओं द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाइ है।

[illegible] वाल कविता के क्षेत्र मे आजादी के वाद कई महत्पवूर्ण पड़ाव [illegible] किन्तु इन पडावो म जिन वाल कवियों ने अपना योगदान [illegible] वे है - सुभद्रा कुमारी चौहान सोहनलाल द्विवेदी, [illegible] सवक कन्हैयालाल मन्त द्वारिका पसाद माहेश्वरी [illegible]कुंतला सिरोठिया, चन्द्रदत्त इदु, डा राष्ट्र वन्धु, डा शेर जग [illegible], राधेश्याम प्रगल्भ दामोदर अग्रवाल शाति अग्रवाल, [illegible] सिहल, डा शकुतला कालदा रमेश कौशिक, [illegible] शर्मा, मधुपन्त प्रकाश मनु कौशलेन्द्र पाडेय दिविक रमेश, विनोद चन्द्र पाडेय विनोद चद्रपाल सिह यादव 'मयक', अहद प्रकाश, रमेश तैलग, डा राजयुद्धिराजा डा उषा यादव, रामवचन सिंह आनंद, वानो सरताज वालक राम नागर, भैरु लाल गर्ग आदि उल्लेखनीय हैं।

इसी प्रकार स्वतंत्रा प्राप्ति के पश्चात के वाल कहानिकारों में मस्तराम कपूर, वालशौरी रेड्डी, जयप्रकाश भारती, क्षमा शर्मा, रत्न प्रकाश शील, मनोहर वर्मा, शंकर सुल्तानपुरी, अनत पै, डा राष्ट्रबंधु, प्रकाश मनु, आविद सुरती, शकुंतला वर्मा, उमा पंत, डा. रेखा रस्तोगी, विनय मालवीय, डा. राजयुद्धिराजा, शमशेर अहमद खान, उषा महाजन, शांता ग्रोवर, विनय मालवीय सलमा जैदी, कुसुम गोयनका, चक्रधर नलिन, डा. ओमप्रकाश सिंहल, मधुमालती जैन, हरिकृष्ण देवसरे, विनोद वसरे, हरिकृष्ण तैलंग, नीलिमा सिंह, देवेन्द्र कुमार, जाकिर अली, रजनीश, सुरेन्द्र विक्रम, नरेन्द्र निर्मल, मनोरमा जफा, मृदुला गुप्त, शकुंतला सिरोठिया, अमर गोस्वामी, मनहर चौहान, योगेन्द्र कुमार लल्ला, मनमोहन सरल, कमल सौगानी, कमला चमोला, खुशहाल जैदी, अमरनाथ शुक्ल, आदि हैं।

हिन्दी वालसाहित्य में कथा साहित्य के अतिरिक्त सूचनापरक साहित्य लिखा गया जो वच्चों के लिए काफी जानकारी पूर्ण था। इस साहित्य में जानकारी परक पुस्तकें लिखी गईं जैसे - 'समाचार पत्र की कहानी, (कैलाश कौर), 'संसार के सात महान आश्चर्य की कहानी' (जितेन्द्र कुमार मित्तल), 'मैं बंगला देश हूं (नर्मदा प्रसाद खरे), 'सोना बंगला' (श्रवण कुमार), किलों की कहानी, किलों की जवानी' (श्रीकृष्ण), 'स्वराज्य की कहानी' (विष्णु प्रभाकर), 'सपनों का संसार' (शुकदेव दूबे), 'भारत की कहानी', 'यह सोने का देश' (भगवत शरण उपाध्याय), 'मनुष्य की कहानी' (दिनकर) 'गढ़ आया पर सिंह गया' (व्यथित हृदय), 'सम्राट अशोक और हर्षवर्धन' (प्रेमचन्द महेश), 'तथागत' (यादवेन्द्र जैन), 'चिकित्सा की प्रगति' (भानुशंकर मेहता), 'भाप का इजन कैसे वना' (जगपति चतुर्वेदी), 'घड़ी कैसे वनी' और 'हमारा पड़ोसी चांद' (रमेशचन्द्र वर्मा), 'धान की कहानी' (रमेश दत्त शर्मा), 'अणुशक्ति की कहानी' (विश्वमित्र शर्मा), 'ग्रामीण जीवन में विज्ञान', 'अनजान से पहचान' (जयप्रकाश भारती), पर्यावरण एवं पक्षी' और 'पर्यावरण क्विज' (शमशेर अहमद खान), 'हिन्दी की सौ श्रेष्ठ पुस्तकें' (जय प्रकाश भारती) 'चंदा मामा के देश में' (संतोष कुमार नौटियाल), 'हवा की वातें', 'आग की कहानी', 'आवाज' और 'पानी' (केशव सागर), 'धातुओं की कहानी', 'नवयुवकों के लिए हवाई जहाज' (श्रीराम वाजपेयी), आविष्कार और आविष्कारक' (रामवृक्ष वेनीपुरी), 'प्रकाश की वातें' (ब्रहमानंद एवं नरेश वेदी), 'समुद्र के जीवजन्तु', 'पक्षियों की दुनिया' और 'कीड़े मकोड़े' (सुरेश सिंह), 'पौधों की दुनिया' और 'सूरज चांद सितारे' (संत राम वत्स) 'देश के चिड़ियाघर' (डा. अशोक कुमार मल्होत्रा तथा श्याम सुन्दर शर्मा) आदि महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाश में आई। इसके अतिरिक्त भारत सरकार के प्रकाशन विभाग, नेशनल वुक ट्रस्ट ने विविध विषयों पर अनेक पुस्तके प्रकाशित कीं। सूचना एवं प्रौद्योगिकी को ध्यान में रखकर सरकारी प्रकाशन क्षेत्र द्वारा तकनीकी ज्ञान करानेवाली पुस्तकें प्रकाशित हुई। देश के विभिन्न भागों को स्थित निजी प्रकाशकों ने भी ऐसी पुस्तके प्रचुर मात्रा में प्रकाशित कीं।

जिस समय देश आजाद हुआ, उस समय हमारे पास श्रेष्ठ वाल साहित्य नहीं था। चूहा-विल्ली, त्यौहार या देशभक्ति की कविताएं थीं। कुछ पौराणिक कहानियां थीं या अंग्रेजी से अनुदित कथाए थीं। स्वाधीनता के वाद पच्चीस वर्षों में वच्चों के लिए इतनी पुस्तकें लिखी गई और नई-नई पत्रिकाएं आईं-जैसा कि इससे पूर्व कभी नहीं हुआ था।

स्वस्थ लोकतंत्र के लिए ज्ञान का प्रचार प्रसार आवश्यक है। उसकी शुरुआत तो वाल साहित्य से ही हो सकती है। आज वाल साहित्य का नया सूर्य उग आया है। हिन्दी में प्रकाशित एक हजार नई पुस्तके प्रतिवर्ष वाल-साहित्य के भंडार को समृद्ध कर रही हैं। आज वाल-साहित्य के इतिहास को लेकर अनेक पुस्तकें लिखी गई है। विभिन्न विश्वविद्यालयों से अब शोधकार्य भी वाल साहित्य पर होने लगा है। अनेक विद्वानों ने वाल-साहित्य में शोधकार्य करके पी.एच.डी. उपाधियां भी प्राप्त कर ली हैं।

शमशेर अहमद खान

भारतीय संगीत व नृत्य

संगीत और नृत्य के सम्बन्ध में भारत अपने अतीत पर गर्व कर सकता है और ऐसा करना न्यायोचित होगा। भारतीय संगीत और नृत्य की परम्परा का आरंभ वेदों के समय से माना जा सकता है

अब इस तथ्य को एक हद तक मान्यता मिल चुकी है कि भारतीय संगीत का आरंभ वेदों से हुआ और वेदों में ही इसकी जड़ें हैं। बाद की शताब्दियों में इस कला ने एक सुव्यवस्थित संहिताबद्ध रूप धारण कर लिया। संगीत का विकास क्षेत्रीय प्रतिभा के अनुरूप लोक-शैली में हुआ और धीरे-धीरे उसने शास्त्रीय रूप धारण कर लिया। यद्यपि शास्त्रीय संगीत भारत के अलग-अलग भागों में भिन्न-भिन्न है, किन्तु उन सब के पीछे एकता की एक धारा अवस्थित है।

भारत में संगीत की दो शैलियाँ हैं – कर्नाटक और हिन्दुस्तानी। दोनों शैलियां नियम सम्मत हैं। इनके अतिरिक्त लोक संगीत, भजन और कीर्तन की भी परम्परा है।

राग एक सुरात्मक कथ्य होता है, जो कुछ परम्परागत नियमों के अनुरूप होता है और उसे स्वरों की मर्यादा में भिन्न-भिन्न तरीकों से प्रस्तुत किया जाता है। प्रत्येक राग के कुछ नियम होते हैं। ये नियम प्रत्येक राग के स्वर संयोजन, उसके क्रम और अनिवार्य तत्व का निर्धारण करते हैं, जिनके संयोग से उसके विन्यास को एक विशेष तर्ज मिलती है। मेलकर्त्ता, जिसमें 72 राग होते हैं, कर्नाटक शैली का नियमन करता है। इस संरचना के आधार पर अनगिनत अन्य रागों का विकास हुआ है। हर राग के व्यक्तित्व के लिए कम से कम चार स्वरों का होना जरूरी है। अपने विकास के आरम्भिक वर्षों में हिन्दुस्तानी संगीत में मेलकर्त्ता शैली नहीं थी। बाद में श्री भातखण्डे के प्रयास से इसे सुव्यवस्थित किया गया।

भारतीय संगीत की मूल विशेषता स्वर का महत्व है। स्वर का अर्थ है – एक समय पर एक ध्वनिगुण का संचालन, अतः यह स्वभावतः एक रैखिक शैली में ध्वनि प्रतिमान का आरोह-अवरोह बन जाता है। चूंकि राग मूलतः एक आरम्भिक सुरात्मक धारणा है, अतः इसके कलात्मक सामर्थ्य को प्रकट करने हेतु इसका विस्तार अनिवार्य हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप ये आकार-परक संरचनाएं या तो लयबद्ध होती हैं या मुक्त होती हैं। इसके साथ ही संगीतज्ञ की प्रतिभा के अनुसार इसकी प्रस्तुति भी थोड़ी भिन्न हो जाती है।

संगीत अनुसंधानकर्ताओं का कहना है कि राग, एक धारणा और परिपाटी के रूप में ईसा की पांचवीं शताब्दी में पूरी तरह से विकसित हुआ। यदि भूतकाल का अनुशीलन किया जाए, तो पता चलता है कि राग के बीज सामवेद में थे क्योंकि इसे सात स्वरों के अवरोह में गाया जाता था।

हिन्दुस्तानी संगीत और कर्नाटक संगीत शैली में रागों की संरचना सम्बन्धी दृष्टिकोण में कुछ अन्तर है। हिन्दुस्तानी शैली की विशेषता यह है कि इसमें राग में वादी और समवादी स्वरों पर जोर दिया जाता है। यानी दूसरे शब्दों में, राग संरचना में वादी और समवादी दो मौलिक स्वर हैं, जैसे अश्व की बागडोर। इसका परिणाम यह है कि इन्हीं स्वरों में थोड़ी फेर-बदल करके अनेक राग बनाए जा सकते हैं। दूसरी ओर कर्नाटक शैली में राग में ध्वनिगुण के महत्व को घटाने-बढ़ाने की परिपाटी है, जिससे संगीतज्ञ को प्रतिमान निर्माण में अधिक स्वाधीनता रहती है। साथ ही गमक भी दोनों शैलियों में भिन्न है।

हिन्दुस्तानी शैली का प्रयास और विसर्पण व्यापक है जबकि कर्नाटक शैली में कुंडली तकनीक है और दोनों के बीच अन्तिम अन्तर यह है कि हिन्दुस्तानी संगीत 'समय' सिद्धान्त पर आधारित है। प्रातः दोपहर, गोधूलि, रात्रि और मध्य रात्रि व उषा काल सबके लिए पृथक-पृथक राग हैं। कर्नाटक संगीत में इस सम्बन्ध में उनका कठोरता से पालन नहीं किया जाता। दक्षिण के अन्य रागों की ही भांति हिन्दुस्तानी शैली में रागिनियां हैं [illegible] हिन्दुस्तानी संगीत में लिंग तत्व भी है- रागिनियां स्त्री लिंग और राग पुलिंग।

लयात्मक चक्र को ताल कहते हैं। तालों में सार्वभौमिक एकत्व है जैसे 2+2 चार होते हैं। भारतीय संगीत में तालों की संरचना में बड़ी जटिल विविधता है। कर्नाटक संगीत में यहां तक कि रेलगाड़ी की घड़घड़ाहट में भी, एक लय है। मूल स्थान से पुनरावृत्ति क[illegible] होता है। ताल पुनरावृत्यात्मक[illegible] के दिन-सोमवार से रविवार [illegible] सोमवार आता है।

भारतीय लयात्मक संरचना की [illegible] चार (चतुरु), पंच (खण्ड), सात [illegible] ध्यान से देखने पर पता लगेगा कि [illegible] चार और चार – पंच का मिश्रण मात्र [illegible] कला-विशेषज्ञों पर छोड़ सकते हैं। [illegible] साधारण गणित का मामला है अतः इससे [illegible] पैदा नहीं होता। लेकिन जहां हिन्दुस्तानी [illegible] चरण से द्रुत चरण तक पहुंचने में कोई [illegible] है, वहां कर्नाटक संगीत में काल निर्दिष्ट है [illegible] मध्य और मध्य से द्रुत द्रुत।

संगीत रचना

तालपाक्कम में अन्नमचार्य से पहले, [illegible] कृति शैली पल्लवी अनुपल्लवी और चरण का [illegible] कर्नाटक संगीत में अपनी अलग शैली थी। [illegible] अन्नमाचार्य, त्यागराज, मुत्तु स्वामी दीक्षितर, श्यामा शास्त्री [illegible]

भारतीय संगीत व नृत्य

संगीत और नृत्य के सम्बन्ध में भारत अपने अतीत पर गर्व कर सकता है और ऐसा करना न्यायोचित होगा। भारतीय संगीत और नृत्य की परम्परा का आरंभ वेदों के समय से माना जा सकता है

अब इस तथ्य को एक हद तक मान्यता मिल चुकी है कि भारतीय संगीत का आरंभ वेदों से हुआ और वेदों में ही इसकी जड़ें हैं। बाद की शताब्दियों में इस कला ने एक सुव्यवस्थित संहिताबद्ध रूप धारण कर लिया। संगीत का विकास क्षेत्रीय प्रतिभा के अनुरूप लोक–शैली में हुआ और धीरे–धीरे उसने शास्त्रीय रूप धारण कर लिया। यद्यपि शास्त्रीय संगीत भारत के अलग–अलग भागों में भिन्न–भिन्न है, किन्तु उन सब के पीछे एकता की एक धारा अवस्थित है।

भारत में संगीत की दो शैलियाँ हैं – कर्नाटक और हिन्दुस्तानी। दोनों शैलियां नियम सम्मत हैं। इनके अतिरिक्त लोक संगीत, भजन और कीर्तन की भी परम्परा है।

राग एक सुरात्मक कथ्य होता है, जो कुछ परम्पागत नियमों के अनुरूप होता है और उसे स्वरों की मर्यादा में भिन्न–भिन्न तरीकों से प्रस्तुत किया जाता है। प्रत्येक राग के कुछ नियम होते हैं। ये नियम प्रत्येक राग के स्वर सोपान, उसके क्रम और अनिवार्य तत्व का निर्धारण करते हैं, जिनके संयोग से उसके विन्यास को एक विशेष तर्ज मिलती है। मेलकर्त्ता, जिसमें 72 राग होते हैं, कर्नाटक शैली का नियमन करता है। इस संरचना के आधार पर अनगिनत अन्य रागों का विकास हुआ है। हर राग के व्यक्तित्व के लिए कम से कम चार स्वरों का होना जरूरी है। अपने विकास के आरम्भिक वर्षों में हिन्दुस्तानी संगीत में मेलकर्त्ता शैली नहीं थी। बाद में श्री भातखण्डे के प्रयास से इसे सुव्यवस्थित किया गया।

भारतीय संगीत की मूल विशेषता स्वर का महत्व है। स्वर का अर्थ है – एक समय पर एक ध्वनिगुण का संचालन, अतः यह स्वभावतः एक रेखिक शैली में ध्वनि प्रतिमान का आरोह–अवरोह बन जाता है। चूंकि राग मूलतः एक आरम्भिक सुरात्मक धारणा है, अतः इसके कलात्मक सामर्थ्य को प्रकट करने हेतु इसका विस्तार अनिवार्य हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप ये आकार–परक संरचनाएं या तो लयबद्ध होती हैं या मुक्त होती हैं। इसके साथ ही संगीतज्ञ की प्रतिभा के अनुसार इसकी प्रस्तुति भी थोड़ी भिन्न हो जाती है।

संगीत अनुसंधानकर्ताओं का कहना है कि राग, एक धारणा और परिपाटी के रूप में ईसा की पांचवी शताब्दी में पूरी तरह से विकसित हुए। यदि भूतकाल का अनुशीलन किया जाए, तो पता चलता है कि राग के बीज सामवेद में थे क्योंकि इसे सप्त स्वरों में अवरोह में गाया जाता था।

हिन्दुस्तानी संगीत और कर्नाटक संगीत शैली में रागों की संरचना सम्बन्धी दृष्टिकोण में कुछ अन्तर है। हिन्दुस्तानी शैली की विशेषता यह है कि इसमें राग में वादी और समवादी स्वरों पर जोर दिया जाता है। सभी दूसरे शब्दों में, राग संरचना में वादी और समवादी दो मौलिक स्वर हैं, जैसे अश्व की बागडोर। इसका परिणाम यह है कि इन्हीं स्वरों में थोड़ी फेर–बदल करके अनेक राग बनाए जा सकते हैं। दूसरी ओर कर्नाटक शैली में राग में ध्वनिगुण के महत्व को घटाने–बढ़ाने की परिपाटी है, जिससे संगीतज्ञ को प्रतिमान निर्माण में अधिक स्वाधीनता रहती है। साथ ही गमक भी दोनों शैलियों में भिन्न हैं।

हिन्दुस्तानी शैली का प्रसार और विसर्पणन व्यापक है जबकि कर्नाटक शैली में कुंडली तकनीक है और दोनों के बीच अन्तिम अन्तर यह है कि हिन्दुस्तानी संगीत 'समय' सिद्धान्त पर आधारित है। प्रातः दोपहर, गोधूलि, रात्रि और मध्य रात्रि व उषा काल सबके लिए पृथक–पृथक राग हैं। कर्नाटक संगीत में इस सम्बन्ध में उनका कठोरता से पालन नहीं किया जाता। दक्षिण के अन्य रागों की ही भांति हिन्दुस्तानी शैली में रागिनियां हैं। हिन्दुस्तानी संगीत में लिंग तत्व भी है: रागिनियां स्त्री लिंग और राग पुलिंग।

लयात्मक चक्र को ताल कहते हैं। तालों में सार्वभौमिक एकत्व है, जैसे 2+2 चार होते हैं। भारतीय संगीत में तालों की संचरना में बड़ी जटिल विविधता है। कर्नाटक संगीत में यहां तक कि रेलगाड़ी की धड़धड़ाहट में भी, एक लय है। मूल स्थान से पुनरावृत्ति करने से लय को स्वरूप प्राप्त होता है। ताल पुनरावृत्यात्मक या चक्रिक है जैसे सप्ताह के दिन–सोमवार से रविवार तक और उसके बाद पुनः सोमवार आता है।

भारतीय लयात्मक संरचना की मौलिक इकाइयां तीन (तिश्र), चार (चतुस्र), पांच (खण्ड), सात (मिश्र) और नौ (संकीर्ण) हैं। ध्यान से देखने पर पता लगेगा कि इनमें से अन्तिम दो, तीन + चार और चार + पांच का मिश्रण मात्र हैं। भिन्नों की बात हम कला–विशेषज्ञों पर छोड़ सकते हैं। चूंकि तालों का मामला साधारण गणित का मामला है, अतः इनमें अन्तर आने का प्रश्न पैदा नहीं होता। लेकिन जहां हिन्दुस्तानी संगीत में विलम्बित चरण से द्रुत चरण तक पहुंचने में कोई कालिक अनुपात नहीं है, वहां कर्नाटक संगीत में काल निर्दिष्ट हैं – विलम्ब से दूना मध्य और मध्य से दूना द्रुत।

संगीत रचना

तालपाक्कम में अन्नमाचार्य से पहले, जिन्होंने वर्तमान कृति शैलीपल्लवी अनुपल्लवी और चरण का विकास किया, कर्नाटक संगीत में अपनी अलग शैली थी। तमिलनाडु में अरुणगिरि नाथर, मुत्तु ताण्डवर, मारिमुत्तु पिल्लै और

...गानन्दर जैसे संत संगीतकारों ने भक्ति के गीत जैसे तिरुप्पुगल, तेवारम और कीर्तन गाए। चूंकि उस समय कोई स्वरांकन पद्धति नहीं थी, वे गीत सुनकर अभ्यास द्वारा सीखे जाते थे।

कर्नाटक के पुरन्दरदास ने कृति शैली को पूर्णता प्रदान करके कर्नाटक संगीत को स्वरूप ही प्रदान नहीं किया बल्कि सरलि जण्टै और गीतम के रूप में अनेक संगीत–अभ्यास भी तैयार किए। इससे कर्नाटक संगीत का स्वरूप प्राप्त हुआ। इसलिए यह कहा जा सकता है कि पुरन्दरदास ने त्यागराज, श्यामाशास्त्री और मुत्तुस्वामी दीक्षितर के लिए भक्ति भाव को संगीत का जामा पहनाने हेतु आधार भूमि तैयार कर दी थी। यह त्रिमूर्ति कर्नाटक संगीत की समृद्धि में सबसे अधिक योगदान करने वाली सिद्ध हुई। त्यागराज ने तेलुगु में अपने इष्ट देवता राम के यश का गान किया। चूंकि उनके शिष्य बहुत थे, अतः भजन जल्दी ही लोकप्रिय हो गए।

उनके गीतों की विलक्षणता यह है कि प्रत्येक गीत अन्तःप्रेरणा का परिणाम है और उसके पीछे वैयक्तिक अनुभव या कोई घटना है। उन्होंने लगभग सभी रागों का प्रयोग किया और उससे भी बड़ी बात यह है कि अपने गीतों में उन्होंने हर राग को लगभग इतनी अधिक विधियों से इस्तेमाल किया कि बाद के संगीतकारों के लिए अधिक गुंजाइश रही ही नहीं। शायद इसी कारण से दीक्षितर ने पदों की गति को दूना करने के लिए ध्रुपद को अपनाया ताकि उनके गीतों में नयापन दिखाई दे। श्यामाशास्त्री ने कांचीपुरम की अधिष्ठात्री कामाक्षी की प्रशंसा के गीत गाए। उनके गीतों ने कर्नाटक संगीत में उनके तकनीकी उत्कर्ष को उद्घाटित किया। जहां त्यागराज के गीत सुनकर सीखे जा सकते हैं, वहां श्यामाशास्त्री और मुत्तुस्वामी दीक्षितर के गीतों को गुरु से ही सीखा जा सकता है।

[illegible] पक्ष में प्रथम आलाप और कार्यों हिन्दु का नाम लिए जा सकता है। इनमें से प्रथम दो हिन्दुस्तानी शैली ठुमरी के समरूप हैं। [illegible] हैं और उन्हें भावुक [illegible] माना जाता है।

हिन्दुस्तानी संगीत में ध्रुपद प्राचीनतम संगीत रचना है। इसका विकास स्वामी हरिदास और तानसेन ने किया। स्वामी हरिदास पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त में हुए थे। वे आध्यात्मिक संत निम्बार्क की दार्शनिक परम्पराओं में सन्यासी बन गए। उनके गीतों का सार भक्ति था। अनुश्रुतियों के अनुसार बैजू बावरा और तानसेन उनके शिष्य थे। तानसेन सोलहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुए थे। एक अनुश्रुति के अनुसार वह मकरंद पाण्डे नामक व्यक्ति के पुत्र थे और उनका नाम राम तनु था; बाद में उनका नाम तन्नू मिश्र पड़ गया। वह अकबर के दरबारी थे। मियां की मल्हार, दरबारी, कान्हड़ा और मियां की तोड़ी जैसे नए रागों के निर्माण का श्रेय उन्हें ही है। यह शैली काफी समय पहले ही लुप्त हो चुकी थी, किन्तु डागर परिवार के प्रयासों से अब यह पुनः प्रकाश में आ गई है और अपनी शक्ति के कारण पश्चिम के देशों में भी लोकप्रिय हो चुकी है।

'खयाल' का स्रोत फारसी है और इस शब्द का अर्थ है 'कल्पना'। हालांकि इसका जनक अमीर खुसरो को माना जाता है, किन्तु आम राय यह है कि 15 वीं शताब्दी में सुल्तान मोहम्मद शर्की की कोशिशों से इसको प्रसिद्धि मिली और सदानंद नियामत खां (18 वीं शताब्दी) के समय में इसे शास्त्रीय रूप में मान्यता प्राप्त हुई। यह (खयाल), ध्रुपद के विपरीत, अधिक नाजुक और रोमांचक है। इसका कारण यह है कि विन्यास और इसकी तकनीक की दृष्टि से इसमें कुछ ऐसी छूट है, जो ध्रुपद में नहीं है।

ध्रुपद की शुरुआत 'आलाप' से होती है, किन्तु ख्याल का आलाप से शुरू होना जरूरी नहीं है। यह गायक की प्रतिभा पर निर्भर है कि वह हर स्वर को उचित पर्यावरण, गमकों और वांछित लय प्रदान कर उसके सौन्दर्य की श्रीवृद्धि करे। इस दृष्टि से अनेक विख्यात नाम हैं जैसे बालकृष्ण बुआ (ग्वालियर घराना), रहमत खां (ग्वालियर घराना), नत्थन खां (आगरा घराना), फय्याज खां (आगरा रंगीला घराना); अल्लादिया खां (जयपुर घराना), भास्कर बुआ (आगरा, ग्वालियर, जयपुर घराना), अब्दुल करीम खां (किराना घराना), अब्दुल वाहिद खां (किराना घराना)।

स्वरूप की दृष्टि से ठुमरी हल्की और प्रायः विषयासक्त है। इसका सम्बन्ध संभवतः राधा–कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय से रहा है और कथक ने इसे संवारा। 19 वीं शताब्दी में वाजिद अली शाह के जमाने में जो अत्यधिक रसिक थे, ठुमरी बहुत लोकप्रिय हुई। वाजिद अली शाह उदार शासक थे और उनके दरबार में अनेक सुविख्यात नर्तक एवं गायक थे। तराना के लिए सार्थक शब्दावली की आवश्यकता नहीं होती। इसकी संगीतिका में कुछ अक्षर–ध्वनियां हैं– जैसे अधोबिन्दु, टोम, तराना और यलालि, जो तबला और सितार के स्पंद का स्मृत्याधार है। कर्नाटक शैली में 'तिल्लाना' इसके समतुल्य है।

गजल इस समय बहुत लोकप्रिय है। गज़लें विषयासक्त होने के कारण अधिक लोकप्रिय हैं।

मिर्जा गालिब को गजलों का जनक कहा जा सकता है और उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में इसके प्रयोजन का वर्णन किया है। अब इसने अर्धक्षम व्यवसाय का रूप धारण कर लिया है और हिन्दुस्तानी संगीत की अन्य सभी पद्धतियों में सर्वाधिक लोकप्रिय है।

उपर्युक्त विवरण भारतीय संगीत की दो प्रमुख शैलियों के केवल मोटे एवं मौलिक पहलुओं को स्पर्श करता है।

नृत्य

भारत में प्रचलित नृत्य शैलियां ये हैं – भरतनाट्यम, चाक्यार कूत्तु, कत्थक, कथकली, कृष्णनआट्टम, कुचिपुडी, मणिपुरी, मोहिनीआट्टम, ओडिसी, ओट्टनतुल्लल और यक्षगान। इनके अलावा विभिन्न प्रदेशों और संस्कृतियों के अपने–अपने लोक नृत्य हैं।

भरतनाट्यम: गतिमय काव्य है। इसका स्रोत भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में है। यह नृत्य अति परम्पराबद्ध तथा शैलीनिष्ठ है। भरत द्वारा निर्धारित टेकनीक ढांचे में विकसित इस नृत्य शैली में नए फैशन के उद्भवों की गुंजाइश नहीं है। इतिहास के दुर्बोध युग में उद्भूत

(नाट्यशास्त्र 4000 वर्ष ई. पू. पुराना बताया जाता है) भरतनाट्यम सुविख्यात नर्तकों की शालीनता और प्रवीण वास्तुकारों की निपुण उंगलियों के प्रश्रय में पीढ़ी दर पीढ़ी अगरता प्राप्त करता रहा । वास्तुकारों ने भरत की टेकनिक को मन्दिरों की वास्तुकला में रेखांकित किया।

भरतनाट्यम के वर्तमान रूप को तंजौर चतुष्टय अर्थात पोन्नैया पिल्लै और बन्धुओं ने विकसित किया । इससे पूर्व इसे 'आट्टम' और 'सदिर' नाम से जाना जाता था और दक्षिण भारत के मन्दिरों की देवदासियां यह नृत्य करती थीं । आर्थिक एवं सामाजिक कारणों से इस नृत्य की प्रतिष्ठा समाप्त हो गई और बाद में रुक्मिणी देवी ने इसे नए जीवन एव सम्मान से प्रतिष्ठित किया। इसके प्ररूप हैं – अलारिप्पु (वदना), जति स्वरम् (स्वर सम्मिश्रण), शब्दम् (स्वर एवं गीत), वर्णम् (शुद्ध नृत्य एवं अभिनय का सामजस्य), हल्की शैलियां जैसे पदम और जावलियां (श्रृंगारिक) और अन्तिम तिल्लाना (शुद्ध नृत्य)। रुक्मिणी देवी के ही समान प्रतिष्ठित स्थान बाल सरस्वती का है ।

चाक्यारकुत्तु: विश्वास किया जाता है कि केरल में आरम्भ में आए आर्यों से इस शैली को शुरु किया गया था और केवल चाक्यार जाति के लोग यह नृत्य करते हैं । यह मनोरंजन की एक परम्परागत शैली का नृत्य है । इसे केवल मन्दिर में किया जाता था और केवल सवर्ण हिन्दू ही इसे देख सकते थे । नृत्यागार को कूत्तम्बलम कहते हैं । स्वर के साथ कथापाठ किया जाता है, जिसके अनुरूप चेहरे और हाथों से भावों की अभिव्यक्ति की जाती है । साथ में केवल झांझ और तांबे का बना व चमड़े से मढ़ा ढोल जैसा एक वाद्य यंत्र होता है ।

भारत के अलग–अलग क्षेत्रों के अलग–अलग लोक नृत्य हैं, जिनके कोई निर्धारित नियम नहीं हैं । वे हर क्षेत्र के त्योहारों के अनुरूप हैं ।

कत्थक: इसका आधार कथा है । उत्तर भारत के मन्दिरों में महाकाव्यों की कहानियां कहने वाले होते थे । बाद में कथा कहने के साथ स्वांग और हाव–भाव प्रदर्शन भी जुड़ गए । कत्थक के विकास में दूसरा चरण 15 वीं और 16 वीं शताब्दी में आया, जब राधा–कृष्ण उपाख्यानों को लोकप्रियता मिली । मुसलमानों के आने के बाद कत्थक ने मन्दिरों से निकल कर दरबार में प्रवेश किया । जयपुर, लखनऊ और बनारस इसके केन्द्र थे । जहां जयपुर में लय पर जोर देते हुए शुद्ध नृत्य को प्रधानता मिली, वहां लखनऊ में इसमें श्रृंगारिकता को प्रश्रय मिला । बनारस में भी शुद्ध नृत्य की ही प्रधानता रही, किन्तु इसमें राधा–कृष्ण उपाख्यानों के प्रासंगिक वृतान्तों का निरूपण करने के परिणामस्वरूप ऐन्द्रिकता आ गई । लखनऊ शैली के सबसे बड़े पोषक वाजिद अली शाह थे जो कला पर जी खोलकर धन खर्च करते थे । कथक नृत्य का एक नियमबद्ध पाठ्य है और इसमें मुख्य जोर लयात्मकता पर है, जिन्हें तत्कार, पलटा, तोड़ा, आमद और परन कहा जाता है ।

इस विधा के कुछ विख्यात कलाकारों के नाम हैं -- बिन्दादीन महाराज, कालकादीन, अच्छन महाराज, गोपीकृष्ण और बिरजू महाराज ।

कथकली: कथकली केरल का सबसे परिष्कृत, सर्वाधिक वैज्ञानिक और विस्तृत नियमावली वाली नृत्य शैली है। जिस रूप में आज यह है, वह रूप 300 वर्षों से अधिक पुराना नहीं है, किन्तु इसका स्रोत अतीत में ढूंढा जा सकता है । यह बड़ा उत्तेजक नृत्य है, जिसमें कलाकार के शरीर के लगभग प्रत्येक अंग पर पूरे नियंत्रण की ही नहीं, बल्कि भावों की गहरी संवेदनशीलता की भी आवश्यकता होती है । आट्टकथा के लिए कथाएं, महाकाव्यों और पुराणों से ली जाती हैं और उन्हें क्लिष्ट संस्कृतनिष्ठ पद्य में मलयालम में लिखा जाता है । अभिनय करने वाला बोलता नहीं बल्कि एक जटिल और वैज्ञानिक ढंग से निर्दिष्ट मुद्राओं और पद संचालन द्वारा भावों की अभिव्यक्ति नेपथ्य में गाए जा रहे पाठ के साथ तालमेल बैठाते हुए करता है ।

कथकली की कथाओं के पात्र महामानव, देव व दानव और पशु होते हैं, जिन्हें मानव आकार से बड़ा दिखाया जाता है । दर्शक को सर्वप्रथम और सर्वाधिक आकृष्ट करती है नर्तक की वेशभूषा उसके आभूषण और उसकी मुख–सज्जा: इनसे नर्तक एक व्यक्ति नहीं रह जाता, बल्कि एक वर्ग का प्रतिनिधि बन जाता है। कौन–सा पात्र किस वर्ग का है इसकी पहचान उसके रंग से की जाती है। हरे रंग की मुखसज्जा कुलीनता, सम्मान, वीरता और उच्च गुणों का प्रतीक है ।

पौराणिक नायकों जैसे पांडवों, राजा नल और कृष्ण व इन्द्र जैसे देवताओं की मुख–सज्जा हरे रंग से की

जाती है। काली मुख-सज्जा वाले पात्रों में हरे रंग के बीच न लाल रंग के मूछों के गोले जैसे बने होते हैं। यह मुख-सज्जा कुलीन खलनायकों की होती है, जैसे दुर्योधन और रावण आदि।

पात्रों का एक अन्य वर्गीकरण 'ताड़ी' (दाढ़ी) कहलाता है। इसके अन्तर्गत पात्रों की लाल, सफेद और काली दाढ़ी होती है। लाल दाढ़ी दुशासन, बकासुर जैसे कुमार्गी खलनायकों की, सफेद दाढ़ी सदाचारी हनुमान की और काली दाढ़ी आदिवासियों और वनवासियों जैसे पात्रों की होती है। 'करी' (काली) श्रेणी के अन्तर्गत ऐसे पात्र आते हैं जैसे सूर्पणखा और हिडिम्बा जैसी राक्षसियां और उनके मुंह पर काला रंग लगाया जाता है। इसके बिल्कुल विपरीत 'मिनिक्कु' श्रेणी होती है। इस श्रेणी के पात्रों की मुख-सज्जा पीले व लाल पाउडर को मिलाकर हल्के सौम्य चर्म रंग में की जाती है, जैसे कुलीन महिलाएं, रानियां, राजकुमारियां और दमयन्ती, सीता जैसे अधिकांश आदर्श नारी पात्र।

नर्तक केवल हस्तमुद्राओं, चेहरे के हाव-भावों एवं नृत्य द्वारा अभिव्यक्त करता है। पाद-संचालन की ध्वनि, जटिल अभिनय और ढोल जैसे वाद्य-यंत्रों के साथ कथकली नृत्य दर्शक को देवताओं, दानवों और मानव प्राणियों के पारलौकिक वातावरण में पहुंचा देता है।

कलाकार बनने में वर्षों लग जाते है -सुविज्ञ गुरु की देखरेख में कम से कम सात वर्षों तक अभ्यास जरूरी होता है। किन्तु निपुण अभिनेता (सर्वतोमुखी प्रतिभा सम्पन्न) बनने में इससे भी कहीं अधिक समय लग जाता है।

कथकली का जन्म केरल के राज दरबारों में हुआ। इसे अति-सश्लिष्ट कला शैली माना जाता है, जिसमें कृष्णन आट्टम और रामन आट्टम जैसी प्राचीन शैलियों के मूल तत्वों सहित अति वैज्ञानिक नृत्य नाटिका का समावेश है। यह लोकनृत्य नहीं वरन् अत्यधिक शास्त्रीय नृत्य है।

अधिकांश आट्टकथाएं पिछली शताब्दी में लिखी गई, किन्तु समान स्तर की आट्टकथाएं अभी भी लिखी जा रही हैं। अनेक नवोन्मेष हो रहे हैं, किन्तु मौलिक रूप के अन्तर्गत ही। एक नवोन्मेष यह है कि गोथे के उत्कृष्ट जर्मन काव्य फॉस्ट को आट्टकथा में तैयार किया गया है।

आज की कथकली का प्रेरणा स्रोत कवि वल्लतोल को माना जा सकता है। उन्होंने अनेक पाण्डुलिपियों का सृजन किया। भारतपुषा के तट पर केरल कलामण्डलम इस कला की सर्वश्रेष्ठ संस्था है।

कूडियाट्टम: लम्बी चलने वाली नृत्य नाटिका है, जिसमें कुछ दिनों से लेकर कई सप्ताह का समय लग जाता है। यह मनोरंजक के साथ उपदेशात्मक भी होता है। इसमें विदूषक सर्वेसर्वा होता है। वह नैतिक उपदेश देता है और कभी-कभी उसके व्यंग्यों की नाट्यकथा के विषय के साथ कोई संगति नहीं होती।

कृष्णनाट्टम: इसका विधान लगातार आठ रातों में कृष्ण भगवान के सम्पूर्ण चरित्र के चित्रण का होता है। इसकी शैली कथकली की शैली से मिलती-जुलती है।

कुचिपुडी: यह आंध्र प्रदेश की नृत्य नाटिका है। यह तमिलनाडु के भागवत मेला नाटक शैली की प्रतिकृति है। इसके नियम नाट्यशास्त्र के अनुरूप है और इसमें अनुचालन पर जोर दिया जाता है - अन्य दृष्टियों से यह भरतनाट्यम के समान है।

इस शैली का विकास तीर्थ नारायण और सिद्धेन्द्र योगी ने किया। आंध्र प्रदेश में कुचेलपुरम इस शैली का जन्मस्थान था और इसीलिए इसका नाम कुचिपुडी पड़ा। यह पुरुषों का नृत्य है। हाल के वर्षों में स्त्रियों ने भी इस नृत्य में प्रवेश किया है, किन्तु वे प्रायः एकल नृत्य ही करती हैं। यह भी कथकली की ही भांति सप्ताह भर चलने वाला नृत्य हुआ करता था। इस शैली के अग्रणी कलाकार वेदान्तम सत्यनारायणन है और उन्होंने दर्पी सुन्दर और मिथ्याभिमानी सत्यभामा की भूमिका अदा करने में अपने लिए एक विशेष स्थान बना लिया है। आज सबसे लोकप्रिय गुरु वेम्पट्टि चिन्नसत्यम हैं।

मणिपुरी: 15 वीं से 18 वीं शताब्दी में मणिपुर में वैष्णव धर्म का प्रचलन हुआ और इसके परिणामस्वरूप इस शैली के विकास में एक नए युग का श्रीगणेश हुआ। नृत्य मणिपुर के लोगों के जीवन का अभिन्न अंग रहा है। नृत्य शैली प्रायः आनुष्ठानिक है। इसमें अभी भी वह नृत्य नाटिका टेक्नीक सुरक्षित है, जिसे मुख्यतः अनुश्रुतियों और पौराणिक कथाओं से प्रेरणा मिली है। इसमें वस्त्र रंग-बिरंगे होते हैं और संगीत में एक अनूठा पुरातन आकर्षण है। लाई हराओबा और रासलीला का अभिनय होता है। लाई हराओबा में सृष्टि के सृजन का और रासलीला में कृष्ण की लीलाओं का निरूपण होता है।

ढोल एक महत्वपूर्ण वाद्य यंत्र है और प्रत्येक प्रदर्शन में पूनंग चोलोम अनिवार्य होता है। झांझ के साथ करतार चोलोम एक अन्य प्रेरक अभिनय है।

मोहिनीआट्टम: भरतनाट्यम, कुचिपुडी और ओड़िसी की ही भांति मोहिनीआट्टम भी देवदासी नृत्य परम्परा की विरासत है। 'मोहिनी' शब्द का अर्थ उस युवती से है, जो इच्छाओं को प्रेरित करती है या दर्शकों का हृदय जीत लेती है। एक विख्यात कथा है कि विष्णु भगवान ने शिव को आकृष्ट करने हेतु 'मोहिनी' का रूप धारण किया था - क्षीर-सागर मंथन और भस्मासुर वध दोनों प्रसंगों में। इसलिए ख्याल है कि वैष्णव भक्तों ने इस नृत्य शैली को मोहिनीआट्टम नाम दिया।

प्रारूप में यह भरतनाट्यम जैसा ही है। गति ओड़िसी की ही भांति शालीन पर वेशभूषा सादी और आकर्षक होती है। यह मूलतः एकल नृत्य है। मोहिनीआट्टम का सर्वप्रथम उल्लेख 16 वीं शताब्दी के मषमंगलम नारायणन नम्बूदिरी द्वारा विरचित 'व्यवहारमाला' में मिलता है।

19 वीं शताब्दी में भूतपूर्व त्रावणकोर के शासक स्वाति तिरुनाल ने इस नृत्य शैली को प्रोत्साहित करने और इसे स्थिर रूप प्रदान करने की बड़ी कोशिश की। कवि वल्लतोल ने ही इसका पुनरुद्धार किया और आधुनिक युग में 1930 में स्थापित केरल कलामंडलम के माध्यम से इसे प्रतिष्ठापूर्ण स्थान दिलाया। कलामंडलम की प्रथम नृत्य अध्यापिका कलामंडलम कल्याणिकुट्टी अम्मा ने इस प्राचीन नृत्य शैली में नए प्राण फूंके। यह नृत्य धीरे-धीरे अपने लिए विशिष्ट स्थान बना रहा है और शास्त्रीय नृत्य की गरिमा अर्जित कर रहा है।

ओड़िसी: यह नृत्य भी नाट्यशास्त्र पर आधारित है और

उड़ीसा में नृत्य के अस्तित्व का पहला प्रमाण ईसा पूर्व की दूसरी शताब्दी में मिलता है। उस समय जैन राजा खारवेल का शासन था। वे स्वयं एक कुशल नर्तक एवं संगीतज्ञ थे और उन्होंने तांडव और अभिनय के आयोजन किए।

17 वीं शताब्दी के आरंभ में कुछ बच्चों का एक समूह अस्तित्व में आया, जिन्हें 'गोतिपुआ' कहा जाता था। उन्होंने नाचने वाली लड़कियों की वेशभूषा पहन कर मन्दिरों में नृत्य करना शुरू किया। यह नृत्य बड़ा शालीन है और भंगी व करण इसके प्रमुख तत्व हैं। मूल मुद्राओं को भंगी कहा जाता है और नृत्य की मूल इकाई को करण कहा जाता है।

इसके प्रारूप में भूमि-प्रणाम, बातु, पल्लवी और अष्टपदी जैसी हल्की मदें सम्मिलित हैं। अष्टपदी का समापन दक्षिण भारत के तिल्लाना की भांति मोक्ष में होता है। आज यह बहुत लोकप्रिय हो चुका है और श्रीमती संयुक्ता पाणिग्रही के प्रयासों ने इसे विश्वविख्यात बना दिया है। केलुचरन महापात्र इसके सुविख्यात गुरु हैं।

ओट्टनतुल्लल्: यह एकाकी नृत्य है और इसे गरीबों की कथकली कहा जाता है, क्योंकि आम जनता में यह बहुत लोकप्रिय है। कुंजन नम्बियार ने इस शैली का विकास किया और इसके माध्यम से अपने समय की सामाजिक अवस्था, वर्ग-विभेद और धनी व बड़े लोगों की दुर्बलताओं और मनमौजीपन को निरूपित किया। चूंकि इसमें वार्तालाप सरल मलयालम में होता है, अतः आम जनता इससे बहुत आकृष्ट होती है।

यक्षगान: यह कर्नाटक का नृत्य है और इसका स्रोत ग्रामीण है। इसमें नृत्य और नाट्य का मिश्रण है। इसकी आत्मा 'गान' अर्थात् संगीत है। यह 400 वर्षों से प्रचलित है। भाषा कन्नड़ है और विषय हिन्दू महाकाव्यों पर आधारित हैं। इसमें वेशभूषा लगभग वैसी ही होती है, जैसी कथकली में और लगता है कि कथकली से ही इसे प्रेरणा भी मिली है। नाट्यशस्त्र के वर्णनानुसार इसमें सूत्रधार और विदूषक होते हैं।

बंगला के उत्साही रंगकर्मी गोलोकनाथ दास द्वारा प्रस्तुत अंग्रेजी के दो हास्य-प्रधान नाटकों ''डिसगाइज'' तथा ''लव इज द बेस्ट डॉक्टर'' के बंगला प्रस्तुतीकरण के रूप में ही हो गया था । परन्तु इसकी वास्तविक परम्परा 1831 में प्रसन्न कुमार ठाकुर के 'हिन्दू रंगमंच' के बाद नवीनचन्द्र बसु, योगेन्द्रचन्द्र गुप्त, ताराचरण, तर्करत्न तथा दीनबंधु मित्र (नील दर्पण) के नाटकों से आरंभ होकर गिरीश चन्द्र घोष के सामाजिक-व्यावसायिक नाटकों तथा डी. एल. राय के ऐतिहासिक और रवीन्द्रनाथ टाकुर के काव्यात्मक प्रतीत-नाटकों से होती हुई द्वितीय विश्व युद्ध एवं बंगाल के कुख्यात अकाल जैसी मूल्यहंता भयावह परिस्थितियों से उत्पन्न 'इप्टा' के प्रासंगिक एवं सरोकार यथार्थवादी नाटकों तक आ पहुंचती है । अकाल की पृष्ठभूमि पर आधारित बिजन भट्टाचार्य के नाटक ''नवान्न'' ने तहलका मचा दिया। कालान्तर में ''इप्टा'' से अलग होकर लगातार समर्पित एव प्रतिबद्ध रंगकर्म करने वालों में उत्पल दत्त और शम्भू मित्र के नाम विशेष उल्लेखनीय है । स्व. उत्पल दत्त ने पहले 'लिटिल थियेटर ग्रुप' और बाद में 'पीपल्स लिटिल थियेटर' के माध्यम से अपने प्रतिश्रुत विचारों एवं सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुँचाया। इसके दूसरे सीमान्त पर इब्सन और रवीन्द्रनाथ टाकुर के सौंदर्य-बोधयुक्त नाटकों के कलात्मक मंचन से शम्भु मित्र और उनके नाट्य-दल 'बहुरूपी' ने बंगला रंगमंच को अपरिमित समृद्धि और अपूर्व प्रसिद्धि प्रदान की । स्वतंत्रता के बाद हमारे जीवन दृष्टिकोण और साहित्य-कला में एक नया मोड़ आया । मोहभंग, समकालीन जीवन की अर्थहीनता और व्यक्ति के साथ उसके परिवेश के तनावपूर्ण अन्तःसम्बन्धों के माध्यम से मानव-अस्तित्व के मूलभूत प्रश्नों के गम्भीर विश्लेषण और मौलिक एव प्रभावपूर्ण रंगशिल्प में उसके जीवन्त प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से बादल सरकार ने 'एवं इन्द्रजित', 'बाकी इतिहास', 'पगला घोड़ा' जैसे गम्भीर रंगकारी नाटकों से शुरू करके 'भोमा', 'जूलूस', 'स्पार्टाकस', 'बासी खबर', 'प्रस्ताव' जैसे सामाजिक सरोकारों के उत्तेजक मंचयुक्त नाटकों तक एक लम्बी यात्रा तय की है। इनकी मनोशारीरिक रंग-शैली ने कमोबेश सम्पूर्ण समकालीन भारतीय रंगकर्म को किसी न किसी रूप में प्रभावित किया है। मोहित चटर्जी के 'गिनीपिग' 'अदृश्यन' और 'चारा मर्नि', अरुण मुखर्जी के 'मारीच-सम्वाद', मनोज मित्र के 'कमिया पर्दाफाश दी', 'राजदर्शन' और जगन्नाथ' सावली मित्र के 'नाथवती अनाथवत' तथा शिशिर कुमार दास के 'मदर' और 'अकबर बीरबल' जैसे नाटकों और स्व. अजितेश बनर्जी, रुद्र प्रसाद सेन गुप्त, अमर गांगुली तरुण राय, प्रबीर गुहा, कुमार राय तथा विभास चक्रवर्ती इत्यादि के महत्वपूर्ण श्रेष्ठ प्रदर्शनों ने बंगला रंगमंच की गरिमा और प्रतिष्ठा को बनाए रखने में प्रमुख भूमिका निभाई है । कलकत्ता में उषा गांगुली (रंगकर्मी) ने अपने श्रेष्ठ हिन्दी रंगकर्म से अपनी खास और अलग जगह बनाई है।

बंगला नाटक एवं रंगमंच के इस विकास-क्रम के समानान्तर अथवा कुछ वर्षों के अन्तराल से मराठी, कन्नड़, गुजराती, उड़िया, हिन्दी आदि भाषाओं के रंगमंच का भी विकास हुआ ।

महाराष्ट्र के सुदूर दक्षिण में सांगली के राजा के निमंत्रण पर विष्णु दास भावे ने 1843 में 'सीता स्वयंवर' नामक मराठी का पहला आधुनिक नाटक लिखने और करने का श्रेय प्राप्त किया । महाराष्ट्र में अण्णा साहेब किर्लोस्कर की 'किर्लोस्कर नाटक मंडली' प्रथम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यावसायिक नाट्य-मंडली थी । 31 अक्तूबर, 1880 को इसने 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' के मराठी रूपांतर का अभिमंचन करके नियमित रंगकर्म की शुरुआत की । परन्तु मराठी नाटक और रंगमंच के नवोत्थान से पूर्व के दस-बारह वर्षों तक वहां प्रयोगधर्मी या व्यावसायिक थियेटर के बजाय केवल फिल्मों का साम्राज्य था । उसे नई चेतना से जोड़कर पुनर्जीवित करने का ऐतिहासिक कार्य विजय तेंदुलकर ने किया । 'खामोश, अदालत जारी है', 'गिद्ध', 'सखाराम बाइंडर', 'घासीराम कोतवाल', 'कमला', 'जात ही पूछो साधु की', 'कन्यादान' जैसे आक्रामक, विवादास्पद किन्तु श्रेष्ठ नाटकों के द्वारा तेंदुलकर ने मराठी के पयोगधर्मी रंगमंच का कायाकल्प ही कर दिया । विजय तेंदुलकर के इस काम को अपने-अपने ढंग से आगे बढ़ाने वालों में चिंत्रयं खानोलकर (एक शून्य बाजीराव), वी. वी. शिरवाडकर (नट सम्राट), अच्युत वझे (चल मेरे कद्दू ठुम्मक ठुम), सतीश आलेकर (महानिर्वाण, शनिवार-रविवार), जयवंत दलवी (बैरिस्टर, संध्याछाया), महेश एल्कुंचवार (होली, रक्त पुष्प, वाड़ा चिरेबंदी/विरासत, आत्मकथा, प्रतिबिम्ब) तथा गोविन्द देशपांडे (उध्वस्त धर्मशाला, आंधर यात्रा/चक्रव्यूह, सत्यशोधक,/ रास्तो) जैसे नाटककारों और विजया मेहता, जब्बार पटेल, (स्व.) अरविन्द देशपांडे, श्रीराम लागू, कमलाकर सारंग, अमोल पालेकर, सत्यदेव दुबे, पुरुषोत्तम बेर्डे, जयदेव हट्टंगड़ी, वामन केन्द्रे जैसे पुरानी-नई पीढ़ी के अनेक निर्देशकों- अभिनेताओं का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है । व्यावसायिक रंगमंच के क्षेत्र में पु. ल. देशपांडे तथा वसंत कानेटकर के नाटकों ने भी महत्वपूर्ण कार्य किया है ।

कन्नड़ नाटक और रंगमंच की स्थिति भी भिन्न नहीं रही है। 1878 से 1884 के बीच कर्नाटक में 'हालासगी नाटक कंपनी', 'तांतुपुरास्था थियट्रीकल कम्पनी', 'श्री चमराजेन्द्र कर्नाटक सभा', 'दि मैट्रोपोलिटन थियेट्रिकल कम्पनी' तथा 'गुब्बी चेनाबासवेश्वर क्रिपापोशिता नाटक संघ' जैसी व्यावसायिक नाट्य-संस्थाएं अस्तित्व में आ चुकी थी। इनमें से गुब्बी कम्पनी अब भी सक्रिय है । परन्तु इन परम्परागत दलों और इनके नाटकों से भिन्न आधुनिक समाज और उसकी समस्याओं से प्रभावित कन्नड़ में नये नाटक की शुरुआत करने का श्रेय 1918 में प्रकाशित टी.पी. केलाराम के नाटक को दिया जाता है । बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में पद्य और गीति नाटकों की दृष्टि से के. एस कारंत तथा सामाजिक समस्याओं के चित्रण की दृष्टि से ए.एन. कृष्णराव के अतिरिक्त श्रीकण्ठय्य, गोविन्द पाई तथा के. वी. पुटप्पा के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं । सुप्रसिद्ध रचनाकार के. शिवराम कारंत अपने संगीत एवं नृत्य नाटकों के कारण चर्चा का विषय बने । बहुविध प्रयोगधर्मी श्रेष्ठ नाटकों के रचयिता आद्य रंगाचार्य के नाटकों का भी विशेष योगदान है । आजादी के बाद उभरने वाली नई पीढ़ी के

नाटककारों में गिरीश कर्नाड ('ययाति', 'तुगलक', 'हयवदन', 'नाग मंडल' और 'रक्त कल्याण/तलेदण्ड') लंकेश ('क्रांति', 'परतें' और 'संक्रान्ति') तथा चन्द्रशेखर कम्बार (जो कुमार स्वामी', 'ऋषिश्रंगा' तथा 'श्री सम्पिगे') और नाट्य-निर्देशकों में ब.व. कारंत, के.वी. सुबण्णा, प्रसन्ना, नागेश, स्व. शंकर नाग और अक्षर इत्यादि के नाम प्रमुख हैं ।

उड़िया नाटक और रंगमंच रमाशंकर राय (1860-1910) के नाटकों से होता हुआ मनोरंजन दास (अरण्य फसल, वनहंसी, श्वेतपद्मा, काठ का घोड़ा), जगन्नाथ प्रसाद दास (सूर्यास्त, सबसे नीचे का आदमी, असंगत नाटक, सुंदरदास), बसंत कुमार महापात्र (श्रृंगार शतक) विजय मिश्र (तट निरंजना) तथा गोपाल छे के रंगकर्म तक आ पहुंचा है।

गुजराती रंगमंच पर अनुवादों-रूपांतरों के व्यावसायिक नाटकों का ही आधिपत्य रहा है । मधुराय (कुमार की छत पर, किसी एक फूल का नाम लो), विनायक पुरोहित (स्टील फ्रेम) शिव कुमार जोशी (सापउतारा, कहत कबीरा), (स्व.) प्रवीण जोशी, सरिता जोशी, भरत दवे, महेन्द्र जोशी और निमेष देसाई जैसे जागरुक रंगकर्मियों ने इसे नई धारा से जोड़ने का सार्थक प्रयास किया।

मलयालम और मणिपुरी रंगकर्म को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में स्थापित करने की दृष्टि से क्रमशः लेखक-निर्देशक - कावालम् नारायण पणिक्कर और रतन थियम का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है ।मणिपुर के पारम्परिक लोक-नाट्य और आधुनिक रंग-तकनीक से अपनी नई रंग-शैली तलाश करने वाले रतन थियम के चर्चित प्रदर्शनों में 'उचेग लेंग्मीशेंग', 'इम्फाल इम्फाल', 'लैंग्शोनी', 'उरुभंगम्', 'चक्रव्यूह' तथा 'कर्णभारम' का विशिष्ट स्थान है । इनके अलावा कन्हाईलाल, लोकेन्द्र अरम्बम, सानाख्या इबोतोम्बी इत्यादि ने भी इस दिशा में सराहनीय काम किया है ।

केरल की पारम्परिक रंग-रूढ़ियों के मौलिक रचनात्मक प्रयोग से अपनी अनूठी रंग-शैली उपलब्ध करके पणिक्कर ने 'मध्यम व्यायोग', 'दैवतार', 'अवनवन कटम्पा', 'करीम कुट्टी', 'दूतवाक्यम', 'उरुभंगम', 'मत्तविलासम्' और 'शाकुंतलम्' जैसे संस्कृत-मलयालम के श्रेष्ठ प्रदर्शनों से भारतीय रंगमंच में अपनी खास पहचान और जगह बनाई है। मलयालम और तमिल के अन्य जागरूक एवं चर्चित रंगकर्मियों में एस. रामानुजम, जी. शंकर पिल्लई, केरलम् नारायण तथा जी. अरविन्दन के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।

पंजाबी-उर्दू रंगमंच में क्षेत्रीयता और भाषाई सीमाओं को तोड़कर बाहर निकलने वालों में शीला भाटिया, गुरशरण सिंह, बलवंत गार्गी, परितोष गार्गी, कर्तार सिंह दुग्गल, सन्तो खराना, नीलम मानसिंह चौधरी, हरचरण सिंह कंवल विद्रोही और नाटककार - निर्देशक सी. डी. सिन्द्धू का रंगकर्म इन दिनों काफी चर्चित हुआ है ।

पिछली सदी के मध्य में जब हम एक ओर [illegible] के सम्पर्क से नये के प्रति आकर्षित हो रहे थे और दूसरी [illegible] हम में राष्ट्रीय चेतना तथा अपने प्राचीन [illegible] गौरव की भावना तीव्र हो रही थी, बम्बई में [illegible] आसपास अपने समय के [illegible]

रंगमंच "पारसी थियेटर" की शुरुआत हुई जो देखते ही देखते देश भर में पूरी तरह छा गयी और दूसरी ओर काशी में अव्यावसायिक रंगकर्म की दृष्टि से प्रथम आधुनिक भारतीय नाटककार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का उदय हुआ जिन्होंने रंगमंच को एक नया मिशन दिया । भारतेन्दु ने 'अंधेर नगरी', 'सत्य हरिश्चन्द्र', 'नील देवी', 'भारत दुर्दशा', 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' इत्यादि के माध्यम से व्यक्त अपनी बहुरूपी रंग-परिकल्पना से हिन्दी रंगकर्म को एक नई चेतना प्रदान की, जिसे कालांतर में जयशंकर प्रसाद ने अपने 'स्कन्दगुप्त', 'चन्द्रगुप्त' और 'ध्रुवस्वामिनी' जैसे सांस्कृतिक पुनरुत्थान के श्रेष्ठ-गम्भीर नाटकों से साहित्यिक उत्कर्ष प्रदान किया । आजादी के बाद धर्मवीर भारती (अंधायुग), जगदीश चन्द्र माथुर (कोणार्क, शारदीया, पहला राजा) मोहन राकेश (आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस 'आधे-अधूरे) सुरेन्द्र वर्मा (सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, आठवां सर्ग, कैद-ए-हयात) और नंद किशोर आचार्य (देहांतर, हस्तिनीपुर) ने अपनी रंग-धर्मिता को प्रसाद की इसी परम्परा से जोड़ा ।

कथा और चरित्रांकन, वस्तु और संरचना, अंक और दृश्य, प्रवेश और प्रस्थान, रंगरूढ़ियों और संरचना, अभिनय और दृश्यत्व, भाषा और संवाद, गीत-संगीत और नृत्य - सभी दृष्टियों से 'पारसी थियेटर' के नाटकों का रंगशिल्प इतना जनरुचिप्रधान, विशिष्ट और सुनिश्चित था कि उसका प्रभाव हम आज की अधिकांश बम्बईया (फार्मूला) फिल्मों पर ही नहीं बल्कि किसी न किसी रूप में समकालीन रंगकर्म पर भी देख सकते हैं ।

इस व्यावसायिक 'पारसी थियेटर' के मुकाबले 1943 में जन्मा अव्यावसायिक 'इप्टा-रंगमंच विषयवस्तु, रंगशिल्प और उद्देश्य - सभी दृष्टियों से एक भिन्न स्तर का रंगमंच था। देश के सभी भागों में इप्टा [illegible] शाखाएं खुली और उन्होंने समसामयिक [illegible] एवं कटु यथार्थपरक धरातल पर प्रस्तुत [illegible] -चेतना तथा व्यापक जन-जागृति [illegible] प्रयास किया।

व्यावसायिक पारसी [illegible] रंजनापूर्ण अभिनय-शैली तथा समर्पित [illegible] की [illegible] समस्याओं का [illegible] करने की [illegible] प्रदर्शन-शैली [illegible] जनवरी 1944 [illegible] व्यावसायिक [illegible] हुआ [illegible]

[illegible]

चेतना तथा तकनीक समृद्ध गम्भीर रंगकर्म के उदय की दृष्टि से निर्णायक एवं बुनियादी मोड़ कही जा सकती है ।

इस संदर्भ में यह तथ्य उल्लेखनीय है कि 'राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय' के उदय तक कलकत्ता में अनामिका (1955), बम्बई में थियेटर यूनिट (1954) तथा दिल्ली में थ्री आर्ट्स क्लब (1948), लिटिल थियेटर ग्रुप (1948), दिल्ली आर्ट थियेटर (1951), इन्द्रप्रस्थ थियेटर और यांत्रिक (1959) जैसी नाट्य-संस्थाएं अपना रंगकार्य आरंभ कर चुकी थीं। इनके अतिरिक्त लखनऊ में, राष्ट्रीय नाट्य परिषद् (1949-50) तथा लखनऊ रंगमंच (1953), प्रयाग में इलाहाबाद आर्टिस्ट एसोसियेशन (1955) तथा नाट्य-केन्द्र, वाराणसी में श्रीनाट्यम और कानपुर में भारतीय कला मन्दिर, काशी-नाट्य भारती एवं परफॉर्मर्स (1959) जैसी नाट्य-संस्थाएं भी पर्याप्त सक्रिय थीं। अतः स्वतंत्रता-प्राप्ति से लेकर छठे दशक के आरंभ तक के ये बिखरे हुए छोटे-बड़े प्रयास और परम्परा के सार्थक समन्वय से आधुनिक रंग-शैली की तलाश और उत्साही रंगकर्मियों के अथक परिश्रम एवं मूक समर्पण का ऐसा इतिहास प्रस्तुत करते हैं, जिसके बिना हिन्दी के नये रंगान्दोलन की कल्पना ही नहीं की जा सकती ।

छठे दशक के आरम्भ में आधुनिक भारतीय रंग-दृष्टि को उपलब्ध और विकसित करने के उद्देश्य से संस्कृत, मध्यकालीन एवं लोक-नाट्य तथा पश्चिमी रंगमंच के सार्थक और प्रासंगिक रंग-तत्वों के रचनात्मक उपयोग से, नये परिप्रेक्ष्य में उनके संतुलन और समन्वय द्वारा, सृजन के प्रत्येक स्तर पर बहुरूपी एवं बहुरंगी नाट्य-प्रयोग हुए। रंगमंच को मूल्यवान, सार्थक और जीवन्त, अनुभव को मूर्त करने के साथ-साथ किसी कलात्मक-सृजनात्मक उपलब्धि के सशक्त साधन एवं प्रभावशाली माध्यम के रूप में विकसित करने का प्रयत्न भी किया गया ।

बंगला, मराठी और कन्नड़ जैसी रंग-परम्परा से समृद्ध भाषाओं में ही नहीं बल्कि, तथाकथित रंग-संस्कार और परम्परा से रहित, हिन्दी रंगमंच के क्षेत्र में भी आधुनिक रंग-चेतना एवं नई संवेदनशीलता से युक्त निष्ठावान, उत्साही तथा कल्पनाशील रंगकर्मियों की एक पूरी पीढ़ी मानो एक साथ सक्रिय हो उठी । नाट्य-लेखन के स्तर पर बादल सरकार, विजय तेंदुलकर, आद्य रंगाचार्य, गिरीश कर्नाड, मोहन राकेश, धर्मवीर भारती इत्यादि के कृतित्व ने प्रादेशिकता की सीमाएं तोड़कर राष्ट्रीय स्तर प्राप्त किया ।

पिछले तीस-पैंतीस वर्षों के भारतीय रंगकर्म पर सामान्यतः और हिन्दी रंगकर्म पर विशेषतः 'राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय' तथा इसके आरम्भिक एवं बहुचर्चित प्रतिभावान निदेशक/इब्राहिम अल्काजी का व्यापक और गहरा प्रभाव पड़ा। उनके 'आषाढ़ का एक दिन', 'अंधायुग', 'तुगलक', 'लुक बैक इन ऐंगर', 'कंजूस' इत्यादि अनेक मौलिक एवं अनूदित श्रेष्ठ नाटकों के भव्य और प्रभावशाली प्रस्तुतीकरणों ने प्रदर्शनीयता एवं उत्कृष्टता के नए आयाम उद्घाटित किए। यह अलग बात है कि रंगकर्म से चौदह साल के सन्यास के बाद रा. ना. वि. रंगमंडल की रजत जयन्ती के उपलक्ष्य में प्रदर्शित इनके रक्त कल्याण (गिरीश कर्नाड), जूलियस सीज़र (शेक्सपियर) और दिन के अंधेरे (लोर्का) के प्रस्तुतीकरणों ने एक हद तक काफी दर्शकों को निराश भी किया । इसके बावजूद, आधुनिक भारतीय हिन्दी रंगकर्म को रूपाकार देने की दृष्टि से इब्राहिम अल्काज़ी और उनके बहुभाषी प्रतिभावान शिष्यों के बहुआयामी योगदान को नकारा नहीं जा सकता। और उनके 'लिविंग थियेटर' की शुरुआत ने निश्चय ही नई आशा का संचार किया है।

दिल्ली में स्व. ओम शिवपुरी, मोहन महर्षि, ब. व. कारंत, बृज मोहन शाह, राम गोपाल बजाज और विश्व मोहन बडोला इत्यादि की नाट्य-संस्था 'दिशांतर' द्वारा प्रस्तुत 'आधे अधूरे', 'एवं इन्द्रजित', 'खामोश अदालत जारी है' तथा 'त्रिशंकु' जैसे प्रदर्शन आज भी याद किए जाते हैं । राजिन्दर नाथ द्वारा टी.पी.जैन और शाम अरोड़ा इत्यादि के रचनात्मक सहयोग से स्थापित नाट्य-संस्था 'अभियान' के 'पगला घोड़ा', 'गिनी पिग', 'घासीराम कोतवाल', 'पंछी ऐसे आते हैं'', 'जात ही पूछो साधु की' तथा 'ताम्रपत्र' जैसे प्रस्तुतीकरणों का भी ऐतिहासिक महत्व है । हबीब तनवीर के छत्तीसगढ़ी कलाकारों के रंगमंडल 'नया थियेटर' के 'आगरा बाजार', 'चरनदास चोर', 'मिट्टी की गाड़ी' और 'देख रहे हैं नैन' जैसे प्रदर्शनों ने न केवल एक नई रंग-शैली को जन्म दिया, बल्कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रतिष्ठा प्राप्त की । राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय और श्रीराम सेंटर के व्यावसायिक रंगमंडलों के अलावा दिल्ली में उल्लेखनीय रंगकर्म करने वाली बहुसंख्य नाट्य-संस्थाओं में से 'प्रयोग' (एम.के. रैना), 'स्टूडियो-1' (अमाल अल्लाना), 'अग्रदूत' (स्व. दीना नाथ), 'रुचिका' (फैज़ल अल्काजी एवं अरुण कुकरेजा), 'नॉन ग्रुप' (रवि बासवानी एवं रमेश मनचंदा), 'संभव' (देवेन्द्र राज), 'अंकुर', 'साक्षी' (कृष्णकांत) और 'एक्टवन' (एन. के. शर्मा), 'अस्मिता' (अरविंद गौड़) का प्रमुख स्थान है । विभिन्न संस्थाओं के लिए लगातार अच्छे और लोकप्रिय नाटक निर्देशित करने वाले स्वतंत्र-निर्देशक के रूप में रंजीत कपूर, के अतिरिक्त अपने प्रयोगधर्मी रंगकर्म से अनुराधा कपूर, अनामिका हक्सर तथा त्रिपुरारी शर्मा ने अपनी खास पहचान और जगह बनाई है । भानु भारती (उदयपुर) बंसी कौल (भोपाल), सतीश आनन्द (पटना), उर्मिल कुमार थपलियाल (लखनऊ), स्व. सत्यव्रत सिन्हा (इलाहाबाद), स्व. प्रो. सत्यमूर्ति (कानपुर), गिरीश रस्तोगी (गोरखपुर), वीरेन्द्र मेंहदीरत्ता (चण्डीगढ़) दिनेश ठाकुर और नादिरा ज़हीर बब्बर (बम्बई), बलवंत ठाकुर (जम्मू), के अतिरिक्त नए हिन्दी रंगान्दोलन के आरम्भ से अब तक निरन्तर सक्रिय रहकर राष्ट्रीय स्तर पर स्वयं को प्रतिष्ठित करने वाले वरिष्ठ निर्देशकों में सत्यदेव दुबे (थियेटर यूनिट, बम्बई), एम. एस. सथ्यू (इप्टा बम्बई) तथा श्यामानंद जालान (अनामिका और पदातिक, कलकत्ता) और संस्था के रूप में म.प्र. रंगमण्डल और उसके भूतपूर्व निर्देशक ब. व. कारंत (भोपाल) का विशिष्ट स्थान है । मोहन राकेश, शंकर शेष, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, जगदीशचन्द्र माथुर, लक्ष्मीनारायण लाल, शरद जोशी और रमेश बख्शी के निधन ने हिन्दी के मौलिक नाट्य-लेखन को काफी बड़ा आघात दिया । परन्तु इस क्षेत्र में सतत सक्रिय भीष्म साहनी, सुरेन्द्र वर्मा, असगर वजाहत, मृणाल

पाण्डे, गिरिराज किशोर, नंद किशोर आचार्य, कुसुम कुमार, दूधनाथ सिंह, रामेश्वर प्रेम, प्रभाकर श्रोत्रिय, दया प्रकाश सिन्हा, ललित थपलियाल, नाग बोडस, अविनाश चंद्र मिश्र और स्वदेश दीपक जैसे पुरानी–नई पीढ़ी के अनेक रचनाकार मौलिक हिन्दी नाट्य–लेखन को समृद्ध कर रहे हैं। देशी–विदेशी भाषाओं से अनुवादित या रूपांतरित नाटकों का आधिपत्य हिन्दी रंगमंच पर आरम्भ से ही बना रहा है। उपन्यासों और कहानियों के ही नहीं बल्कि लम्बी कविताओं तक के अभिमंचनों ने भी उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। इसी बीच 'बाल रंगमंच' 'नुक्कड़ नाटक' और 'कहानियों का रंगमंच' के क्षेत्र में भी नई सक्रियता दिखाई दे रही है, जो निश्चय ही उत्साहवर्द्धक है।

स्पष्ट है कि बहुरूपी–बहुरंगी भारतीय रंगमंच की जड़ें बहुत गहरी और फैली हुई हैं। पश्चिमी प्रभावों (यथार्थवाद, एब्सर्ड, ब्रेख्तियन, मनोशारीरिक इत्यादि) को पचाकर, पिछले तीस–पैंतीस वर्षों में, इसने अपनी जमीन से जुड़ने और आधुनिक भारतीय रंगमंच की निजी एवं मौलिक शैली की कलात्मक तलाश का रचनात्मक एवं सार्थक प्रयास किया है। अपने को पहचानने और विकसित करने का यह व्यापक रंग–अनुष्ठान कई रूपों और दिशाओं में एक साथ जारी है। आधुनिक भारतीय रंगकर्म की अनेक प्रस्तुतियां सृजनात्मक कल्पनाशीलता और प्रभाव की दृष्टि से अपने आप में नए कीर्तिमान बनाने के साथ–साथ नए रास्ते सुझाने में भी समर्थ हैं। बंगला के शंभु मित्रा तथा कन्नड़ के के.वी. सुब्बण्णा को दिये गये मैग्सायसाय पुरस्कार और हबीब तनवीर, रतनथियम एवं नीलम मानसिंह चौधरी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर मिली प्रशंसा और प्रतिष्ठा समकालीन भारतीय रंगकर्म की सार्थकता, श्रेष्ठता और महत्ता का प्रमाण है। यह सच है कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्राणघातक आक्रमण के सामने, पिछले कुछ वर्षों से, हमारा रंगमंच लड़खड़ाता सा प्रतीत होता है। परन्तु इस जीवन्त माध्यम की अपरिमित जीवनी–शक्ति, सदियों पुराने पारम्परिक रंगमंच की ऊर्जा और हमारे बहुसंख्य निष्ठावान–समर्पित रंगकर्मियों की आस्था–हमें यह मानने का पर्याप्त आधार देती है कि भारतीय रंगमंच इन विपरीत परिस्थितियों के बावजूद न केवल जीवित ही रहेगा बल्कि अपने निजी रंग–रूप को उपलब्ध कर निरन्तर विकसित और समृद्ध भी होता रहेगा।

डॉ. जयदेव तनेजा

भारतीय सिनेमा

सिनेमा एक अनोखी कला विधा है। साहित्य, रंगमंच, संगीत, चित्रकला, स्थापत्य आदि से लगभग सभी कला माध्यमों से उसका गहरा संबंध है। पर यह विधा विज्ञान और यंत्रविधि (टेक्नोलोजी) पर सबसे अधिक निर्भर है। विज्ञान ने ही सिनेमा को जन्म दिया था। 'मूविंग पिक्चर' का जादुई अनुभव जब उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में जन्म ले रहा था, तो इस खोज को एक वैज्ञानिक पद्धति के रूप में ही जाना जाता था। पहले वास्तविक फिल्म अनुभव के जन्मदाता फ्रांसीसी फिल्मकार लुई लूमिएर का कहना था कि 'मेरे काम की दिशा वैज्ञानिक शोध की ओर है। जिसे फिल्म प्रोडक्शन कहा जाता है उसमें मेरी दिलचस्पी नहीं रही है।

विज्ञान एवं सिनेमा

बुनियादी रूप से यह सही है कि विज्ञान ने सिनेमा को जन्म दिया और यंत्रविधि के नये आविष्कारों ने उसे समय–समय पर नई ताकत और संभावनाएं प्रदान की। जब–जब सिनेमा की लोकप्रियता को कोई बड़ा खतरा महसूस हुआ तब–तब यंत्रविधि ने नये रास्ते खोजे। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पचास के दशक में जब टेलीविजन के प्रसार के कारण सिनेमा के दर्शक कम होने लगे तो हालीवुड ने तकनीकी चमत्कारों का सही–गलत सब तरह का सहारा लिया। अस्सी के दशक में वीडियो और सेटेलाइट यंत्रविधि ने सिनेमा को एक बार फिर चुनौती दी। नतीजा यह हुआ कि डिजिटल यंत्रविधि ने पर्दे के जादू को ऐसा बना दिया कि सिनेमा घर में बैठकर ही उसका आनंद लिया जा सकता था। पिछले तीन दशकों में 'स्पेशल एफेक्ट्स' की तकनीक फिल्म मनोरंजन पर हावी हो गई है। हालीवुड ने इस तकनीक को असाधारण [illegible] प्रदान किये हैं। जार्ज लूकस, स्टीवन स्पीलबर्ग [illegible] कैमेरन जैसे फिल्मकारों ने 'स्पेशल एफेक्ट्स' [illegible] अभूतपूर्व इस्तेमाल करते हुए साइंस फिक्शन और [illegible] फिल्मों को रिकार्ड तोड़ बाक्स आफिस सफल[illegible] है

हालीवुड के [illegible] और हर दृष्टि से शक्तिशाली फिल्म [illegible] ने दुनिया भर के सिनेमा को प्रभावित और [illegible] है [illegible] फ्रांस जैसे सिनेमा [illegible] और स्वाभिमानी [illegible] में भी हालीवुड की फिल्में ही [illegible] साबित हुई हैं [illegible] 1993 में जब अपनी [illegible] फिल्म जुरासिक [illegible] तो इस फिल्म को [illegible] यंत्रविधि [illegible] प्रस्तुत किय[illegible] मात्सुशिता [illegible] अद्वितीय और सचमुच का [illegible] पैदा [illegible] बनाये गये। यह फिल्म [illegible] हर शहर में [illegible] हुई [illegible] दिलचस्प बात यह है कि [illegible] बीस सालों [illegible] हालीवुड की सबसे लोकप्रिय [illegible] रहे [illegible] लेकिन [illegible] फिल्म निर्देशक के [illegible] में भी [illegible] बहुदियों पर नाज़ियों द्वारा [illegible] को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करने वाली [illegible] से ही मिली [illegible] यह फिल्म [illegible] हुई थी [illegible] लेकिन दुनिया भर के [illegible] [illegible] जुरासिक पार्क जैसी फिल्मों [illegible]

फिल्में स्पेशल एफेक्ट्स, कंप्यूटर ग्राफिक्स, साउंड सिस्टम के नये आविष्कारों पर आश्रित थीं।

हालीवुड फिल्में भारत में

भारतीय फिल्म उद्योग वैसे तो हालीवुड की फिल्मों के हमले का मुकाबला अच्छी तरह से करता रहा है। मुंबई, चेन्नई, कलकत्ता, हैदराबाद, तिरुवनंतपुरम आदि फिल्म केंद्रों के अपने-अपने हालीवुड रहे है। एक साल में इस देश में 800 से भी अधिक फिल्में बनती और चलती रही है। 'जुरासिक पार्क' को जब भारतीय भाषाओं में 'डब' किया गया, तो शुरू में भारतीय फिल्म उद्योग को खतरा महसूस हुआ कि अब हमारा क्या होगा। लेकिन जुरासिक पार्क या एनाकोंडा (जिसमें एक विकराल सर्प की उछलकूद है) जैसी फिल्मों की लोकप्रियता ने भारतीय फिल्म उद्योग के गणित पर कोई खास असर नहीं डाला। हमारे फिल्मकार हालीवुड से प्रेरणा जरूर लेते है पर भारतीय दर्शकों के एक बड़े वर्ग के लिए सिनेमा एक शक्तिशाली और काफी हद तक [illegible] मनोरंजन है। तकनीकी चतुराई और कुशलता हमारे यहां अपेक्षाकृत सजग-समझदार दर्शक वर्ग को ही प्रभावित करती है। मुंबइया फिल्म उद्योग खराब और औसत तकनीक के बावजूद भावुक अपील पर सफल रहा है। पिछले डेढ़-दो दशकों में दक्षिण भारतीय सिनेमा-खास तौर पर तमिल सिनेमा ने विज्ञान और यंत्रविधि का अधिक लाभ उठाया है। स्पेशल एफेक्ट्स की दुनिया चेन्नई के फिल्मकारों को अधिक आकर्षित करती रही है। मुंबई के फिल्म उद्योग को तो [illegible] विज्ञान और यंत्रविधि चाहिए। कैमरे, साउंड आदि क्षेत्रों के विकास को तो यहां आसानी से अपना लिया गया है पर स्पेशल एफेक्ट्स की चुनौतियां या तकनीकी बारीकियां यश चोपड़ा, सुभाष घई या सूरज बड़जात्या को कोई विशेष प्रभावित नहीं कर पाई है। कैमरे की दुनिया में भी मुंबइया फिल्मकार दक्षिण की प्रतिभाओं पर आश्रित रहे है। संतोष सिवन जैसे कल्पनाशील कैमरामैन या अत्याधुनिक तकनीक का खुलकर इस्तेमाल करनेवाले संगीतकार ए.आर.रहमान आज मुंबइया फिल्म उद्योग की भी जरूरतों को पूरा कर रहे हैं। फोर ट्रैक से शुरू होकर डिजिटल साउंड का सहारा उत्तर-दक्षिण सभी जगहों की फिल्मों ने लिया है।

भारतीय सिनेमा पर विज्ञान व यंत्रविधि के अध्ययन को संपूर्णता में समझने के लिए यह जरूरी है कि हालीवुड में इस क्षेत्र में हुए काम की संक्षिप्त चर्चा की जाये। 1932 में अमरीका में आर्थिक मंदी के दौर में 'किंगकांग' की सफलता को एक मील का पत्थर माना जा सकता है। एक राक्षसनुमा गोरिल्ला बंदर ऊंची और आधुनिक इमारतों वाले शहर को रौंदना शुरू कर देता है। एक सुंदरी को अपनी बांहों में लेकर किंगकांग पूरे शहर को हिला देता है। फिल्म का क्लाइमेक्स एंपायर स्टेट बिल्डिंग के ऊपर फिल्माया गया जहां अमरीकी फौज इस 'राक्षस' को मशीनगनों से भूनने के लिए तैयार खड़ी है। इस फिल्म का 'राक्षस' सिनेमाई भ्रम की तकनीक के सहारे खड़ा किया गया था। फिल्म के निर्देशक दो थे, मरियन सी. कूपर और अर्न्स्ट बी. शोएडसैक। पर फिल्म की सफलता का श्रेय विलिस एच. ओब्रायन के स्पेशल एफेक्ट्स को जाता है। पर्दे पर जो प्राणी दानव दीखता है वह वास्तव में 18 इंच का माडल था। इस तरह के छह माडलों का इस्तेमाल किया गया था। इन माडलों का धातु का ढांचा था, स्पोंज-रबर की मांसपेशियां थीं और ऊपर खरगोश की खाल का इस्तेमाल किया गया था। क्लोज-अप दृश्यों के लिये भीतर से तीन आदमियों के सहारे चलनेवाली एक विशाल 'दस्ट' का सहारा लिया गया था। कहा जा सकता है कि 'किंगकांग' में फिल्म फंतासी का श्रेष्ठतम रूप इस्तेमाल किया गया था। ट्रिक फोटोग्राफी का जमकर इस्तेमाल किया गया था।

1976 में 'किंगकांग' की पर्दे पर दुबारा वापसी हुई थी। हालीवुड ने नई तकनीकी प्रगति का पुराने हिट फार्मूले पर इस्तेमाल करना चाहा। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद दानव प्रधान फिल्मों में जापान की गोडजिला फिल्मों का बोलबाला हो गया था। 'किंगकांग' के नये अवतार को यह कहकर प्रचारित किया गया कि आधुनिक यंत्रविधि के चमत्कार के रूप में 40 फुट के रोबोट का इस्तेमाल किया गया है। लेकिन कुछ शाट्स को छोड़कर एक आदमी गोरिल्ला सूट में अभिनय करता रहा। मेकअप मैन रिक बेकर को अपनी कुशलता का प्रदर्शन करना पड़ा। नया किंगकांग वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर अपना तांडव प्रदर्शित करता है। लेकिन चार दशकों के बाद फिल्म प्रेमियों को विज्ञान कथा की फैंटेसी या सुपर एक्शन फिल्में अधिक प्रभावित कर रही थी। 'किंगकांग' को पुरानी सफलता नहीं मिल पाई।

थी-डी का आगमन

1950 के दशक के प्रारंभिक वर्षों में हालीवुड में तकनीक कलाबाजियों व चमत्कारों का काफी इस्तेमाल किया गया था। टेलीविजन का प्रभाव बढ़ता ही जा रहा था इसलिए दर्शकों को यह बताना जरूरी था कि सिनेमा का पर्दा बड़ा और श्रेष्ठ है। नतीजा यह हुआ कि वाइडस्क्रीन और टेक्निकल गिमिक्स का लगभग एक आंदोलन सा पैदा हो

गया। 1952 और 53 में सिनेरामा, थ्री-डी, सिनेमास्कोप, विस्टाविजन, पैनाविजन, टांड-एओ जैसे आविष्कारों ने दर्शकों को लुभाने की कोशिशें की। व्यावसायिक स्तर पर सिनेरामा का इस्तेमाल सवसे पहले हुआ हालांकि इसका आविष्कार 1935 में ही हो गया था। दर्शकों को इस तकनीक से यह महसूस होता था कि वे 'एक्शन' के वीच में वैठे हैं। सिनेरामा में थ्री-इमेज प्रोजेक्टर, घुमावदार पर्दे और स्टीरियोफोनिक साउंड का चतुर इस्तेमाल किया गया था।

'थ्री-डी' के चमत्कार ने भी उन्हीं दिनों जन्म लिया। 'हाउस आफ वैक्स' जैसी थ्री-डी फिल्में दर्शकों में लोकप्रिय भी हुई थी। इन फिल्मों को देखने के लिए विशेष चश्मे पहनने पड़ते थे। वाद में यह महसूस किया गया कि इस तरह के चश्मे दर्शक को परेशान ही नहीं करते हैं वल्कि उसे 'मूर्ख छवि' भी प्रदान करते हैं। 1953 में लगभग 6-7 थ्री-डी फिल्में वनी। वाद में निर्माताओं तथा दर्शकों दोनों का उत्साह ठंडा पड़ गया।

वाइड स्क्रीन की लोकप्रियता

पचास के दशक में वाइड स्क्रीन की तकनीक ने सवसे अधिक लोकप्रियता हासिल की। इस तकनीक के कई व्यावसायिक नाम थे-सिनेमास्को, सुपरस्कोप, पैनाविजन। इस तकनीक में थ्री-डी जैसा चतुर इंद्रजाल नहीं था वल्कि कम खर्च पर स्कीन को वढ़ाया जा सकता था। इससे फिल्म की कलात्मक संभावनाएं भी वढ़ जाती थीं एनामोर्फिक लैंस पद्धति की सहायता से इस तकनीक ने जन्म लिया था। 1953 में 'द रोव' फिल्म में वाइविल के कथानक की 'एपिक' गुणवत्ता वढ़े हुए पर्दे पर उभारने के लिए सिनेमास्कोप का सफल इस्तेमाल किया गया। उल्लेखनीय है कि गुरुदत्त ने 1959 में अपनी महत्वाकांक्षी फिल्म 'कागज के फूल' में भारत में पहली वार सिनेमा स्कोप का इस्तेमाल किया था। व्यावसायिक स्तर पर यह फिल्म असफल रही पर कैमरामैन वी.के. मूर्ति ने स्पेस का अद्‌भुत और स्मरणीय इस्तेमाल किया था।

सिनेमाघर में वड़े पर्दे के अपने आकर्षण थे। टेलीविजन के छोटे पर्दे को पराजित करना भी एक लक्ष्य था। फिल्म के वास्तविक आकार को वढ़ाने की कोशिशें हुईं। 'अराउंड द वर्ल्ड इन 80 डेज' जैसी फिल्मों में 65 एम एम के आकार का इस्तेमाल एक वड़ा आकर्षण सावित हुआ। साठ के दशक के प्रारंभ में आते-आते 70 एम एम का आकार पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त कर चुका था। पर्दे पर कथानकों को भव्य रूप देने की संभावनाएं वढ़ गईं। सिनेमाघर को इन फिल्मों के प्रदर्शन के लिए नये प्रोजेक्शन सिस्टम लगाने पड़े। शुरु-शुरु में यह एक वाधा थी। हर नई और महंगी तकनीक के साथ शुरु शुरु में ऐसा ही होता है।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखें, तो पचास के दशक में फिल्म तकनीक की दिशा में तीन क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। ये परिवर्तन थे- पर्दे का वड़ा आकार, फिल्मों का रंगीन होना और ध्वनि का नया सौंदर्यशास्त्रीय रूप। एक अध्ययन के अनुसार 1951 में हालीवुड में रंगीन फिल्मों का प्रतिशत 25 था लेकिन अगले तीन सालों में ही यह प्रतिशत लगभग 60 हो गया। जैसा कि हम इस लेख में आगे देखेंगे भारत में भी तकनीक की इन नई संभावनाओं की लोकप्रियता वढ़ी। पर उन दिनों हमारे यहां नई तकनीक अपनाने में काफी समय लग जाता था। कुछ साहसी और प्रयोगधर्मी निर्माता निर्देशक नई तकनीक का इक्का दुक्का इस्तेमाल करते रहे। पर हमारे यहां फिल्में साठ के दशक के मध्य में जाकर सच्चे अर्थों में रंगीन हुईं। 'जंगली', 'संगम' जैसी फिल्मों ने कश्मीर और स्विटजरलैंड के लुभावने लैंडस्केप को रंगीन सिनेमा का मुख्य आकर्षण वना दिया। नव्वे के दशक में सिनेमा में जव डिजिटल तकनीक वड़ा आकर्षण वन गई, तो भारत में इसका अनुकरण वहुत तेजी से हुआ। पहले हम हालीवुड से दस साल पिछड़े होते थे। अव एक-दो साल में ही हम तकनीक का अनुकरण करने लग पड़े हैं।

संगीतमय फिल्में

हालीवुड हो या वालीवुड-सभी जगह पर महसूस किया गया कि मात्र तकनीक से हम दर्शकों को चमत्कृत नहीं कर सकते हैं। अच्छी, कहानी, पटकथा, अभिनय, लोकेशन का चुनाव, संगीत भी चाहिए। धीरे-धीरे संगीत में तकनीकी विकास का अच्छा और कल्पनाशील इस्तेमाल होने लगा। भारतीय फिल्मों में संगीत और गानों की खास जगह थी। 'मैंने प्यार किया' (निर्देशक सूरज वड़जात्या) 1989 में जव रिलीज हुई थी, तो उसके संगीत की असाधारण लोकप्रियता में ध्वनि की नई तकनीक का भी हाथ था। शुरू में फोर ट्रेक लोकप्रिय हुआ, फिर डोल्वी, फिर डी.टी.एस। सिनेमा के पर्दे की छवि निखरती चली गई और ध्वनि सुधरती चली गई। विश्व प्रसिद्ध फिल्मकार रोमन पोलांस्की ने 1980 में कहा था कि भविष्य के सिनेमाघरों में देखने-सुनने की श्रेष्ठता या भव्यता से ही नहीं काम चलेगा। वह दिन दूर नहीं जव आप सिनेमाघर में वैठकर पर्दे की चीजों को सूंघ भी सकेंगे। आज आधुनिक डिजिटल तकनीक ने एक और पर्दे पर विनाशलीला के चीत्कार को सचमुच का दहला देने वाला अनुभव वना दिया है। तो दूसरी ओर पर्दे पर एक कांच के गिलास की हल्की सी ध्वनि को भी दर्शक अच्छी तरह से सुन सकता है।

सत्तर के दशक से हम हालीवुड में साइंस फिक्शन फिल्मों 'डिजास्टर' फिल्मों और 'हारर' फिल्मों का एक नया तकनीकी विकास देखते हैं। दुनिया के किसी भी देश के पास इन फिल्मों का मुकावला करने की तकनीकी सुविधाएं नहीं थीं। अग्निकांड, भूचाल, भूत लीलाएं, दूसरे ग्रहों की कहानियां इन फिल्मों का कथानक थीं। स्पेशल एफेक्ट्स विभाग इन सभी शैलियों में सवसे अधिक सक्रिय था। द पोसेडन एडविंचर (1972), द टोवरिंग इन्फर्नो (1975), द एग्जोर्सिस्ट (1973), जोज (1975), द ओमेन (1976) जैसी फिल्मों ने दुनिया भर के दर्शकों को दहला दिया। पानी के भीतर भयावह शार्क मछली का उत्पात हो, मनुष्य के शरीर में भूत का प्रवेश हो या किसी ऊंची इमारत में आग लग जाने की दुर्घटना हो-विज्ञान और तकनीक का इन फिल्मों में महत्व वढ़ गया।

विशेप तकनीकी फिल्में

दरअसल सवसे अधिक नि[illegible] ...ी थ्री-
विज्ञान कथा। जाहिर है कि इस शै[illegible]

केंद्र में थी। 1968 में स्टेनले क्युब्रिक के निर्देशन में बनी कालजयी फिल्म '2001: ए स्पेस ओडिसी' इस क्षेत्र में एक मील का पत्थर है। आर्थर सी.क्लार्क की विज्ञान कथा के सहारे क्युब्रिक ने 'स्पेस' और भविष्य की अद्भुत सिनेमाई यात्रा को पर्दे पर उतारा। तकनीक और कल्पनाशक्ति के सम्मिश्रण की दृष्टि से यह फिल्म बेमिसाल है। इस फिल्म की शूटिंग हालीवुड में नहीं बल्कि इंग्लैंड में हुई थी। निर्देशक ने साउंडट्रैक पर पश्चिमी शास्त्रीय संगीत की अद्भुत धुनों (ब्ल्यू डैन्यूब, दस स्पोक जरा....आदि) का इस्तेमाल किया और कहानी को एक स्मरणीय 'जंप कट' की मदद से प्राचीन संसार से एक भविष्य के स्पेसक्राफ्ट में पहुंचा दिया। इस संसार में बोलने वाला कंप्यूटर था और लगभग 'स्पेस' में तैरने वाले पात्र थे। इस अकेली फिल्म ने हालीवुड की सैकड़ों विज्ञानकथा फिल्मों के लिए रास्ता बनाया। स्पीलबर्ग की 'क्लोज एनकाउंटर्स आफ द थर्ड काइंड', 'ईटी' जैसी फिल्में '2001: ए स्पेस ओडिसी' के बिना संभव नहीं थी।

दरअसल जोर्ज लूकस या स्पीलबर्ग के पास क्युब्रिक जैसा 'विजन' नहीं था पर उनके पास आर्थिक और तकनीकी सुविधाएं बहुत थीं। 1977 में जोर्ज लूकस की 'स्टार वार' ने वैज्ञानिक और तकनीकी मनोरंजन का एक नया शास्त्र बनाया। इस फिल्म में बहुत दूर की, बहुत पुरानी गैलेक्सी' की कल्पना की गई। 33 साल के फिल्मकार जोर्ज लूकस की 'स्टार वार' की योजना को युनिवर्सल और युनाईटेड आर्टिस्ट्स जैसे बड़े स्टूडियो ने अस्वीकार कर दिया। अंत में ट्वेंटिएथ सेंचुरी फोक्स ने इस योजना को स्वीकार कर लिया। लूकस ने अपेक्षाकृत कम बजट में काम किया पर फिल्म के निर्माण पर उनका पूरा नियंत्रण था। फिल्म का आधा बजट सेटस और स्पेशल एफेक्ट्स पर खर्च किया गया। बाद में 'द एम्पायर स्ट्राइक्स बैक' (1980) जैसी फिल्मों ने सफलता का एक सिलसिला सा बना दिया। 'स्टार वार' की शानदार सफलता को इंग्लैंड में ही निखरने का मौका मिला था। पर बाक्स आफिस पर उसकी अद्वितीय सफलता ने लूकस को स्पेशल एफेक्ट्स की अपनी कार्यशाला (इंडस्ट्रियल लाइट एंड मैजिक कंपनी) बनाने का मौका दिया इस कंपनी ने सिनेमा के पर्दे पर विज्ञान और तकनीक की अत्याधुनिक सुविधाओं का रास्ता बना दिया। सिनेमा का जादू इस तरह से पर्दे पर पहले कभी नहीं आया था।

लोकप्रिय कथानकों की जब तलाश शुरू हुई, तो कामिक्स की बारी आई। सुपरमैन, बैटमैन सभी को नई तकनीक से और भी भव्य और विलक्षण बनाया जा सकता था। 1978 में 'सुपरमैन' में स्पेशल एफेक्ट्स का इस्तेमाल करते हुए यह नारा दिया गया कि 'आपको विश्वास हो जायेगा कि आदमी सचमुच उड़ सकता है।' 1989 में 'बैटमैन' श्रृंखला की शुरुआत हुई। नई तकनीक ने इन कामिक्स बुक नायकों को नया सिनेमाई अवतार दे दिया।

विज्ञान कथा और 'थ्रिलर' शैली के चतुर मिश्रण को 1984 में 'द टर्मिनेटर' फिल्म में देखा गया। जेम्स कैमेरन के निर्देशन में टर्मिनेटर श्रृंखला में स्पेशल एफेक्ट्स का विशेष जादू पर्दे पर सामने आया। 'टर्मिनेटर 2: जजमेंट डे'(1991) में तकनीकी चमत्कार पर्दे पर अभूतपूर्व ढंग से प्रस्तुत हुए। इन फिल्मों के एक्शन हीरो आस्ट्रियाई मूल के अभिनेता आर्नल्ड श्वार्त्सनेगर थे। लेकिन 'टरनिमनेटर-2' में असली एक्शन हीरो की तलाश स्पेशल एफेक्ट्स में की जा सकती थी। तरल धातु के अद्भुत रूपांतरण इस फिल्म में देखे गया। 'कंप्यूटर जनरेटेड इमेजरी' अब अपने संपूर्ण निखार पर थी।

1932 में 'किंगकांग' से शुरू हो कर 1993 में 'जुरासिक पार्क' तक के 60 वर्ष सिनेमाई तकनीकी विकास की दिलचस्प कहानी हमें बताते हैं। 60 साल पहले 'ट्रिक फोटोग्राफी' का सहारा लेना पड़ता था। 1993 में कंप्यूटर ग्राफिक्स का युग आ गया। पर्दे का एक्शन और स्पेशल एफेक्ट्स अपने सर्वोत्तम मनोरंजक और चकित कर देने वाले रूप में पर्दे पर आ गये। सिनेमाघरों में प्रोजेक्शन और साउंड सिस्टम डिजिटल ढंग से तराशा जा चुका था। अब किसी भी तरह के महामानव, दानव, राक्षस, प्राचीन प्राणी, भविष्य के प्राणी, दूसरे दूर के ग्रहों के रहस्यमय प्राणी, किसी भी तरह की विनाशलीला की सिनेमाई कल्पना संभव थी। हालीवुड ने इस क्षेत्र में लगभग अपना कब्जा कर लिया था। दुनिया भर के फिल्म उद्योग इस 'मनोरंजन की महाशक्ति' के सामने घुटने टेकने के लिए मजबूर थे। पर जैसा कि हम देखेंगे भारतीय फिल्म उद्योग के अपने मसाले और फार्मूले रहे हैं। हालीवुड से प्रेरणा बराबर ली गई पर मुंबई और चेन्नई के पास मनोरंजन की अपनी शक्ति और असंख्य दर्शकों की अंधभक्ति थी।

पहली भारतीय फिल्म

दादा साहब फालके ने 1913 में पहली भारतीय मूक फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' बनाई थी। 1911 में ईस्टर के दिन उन्होंने 'लाइफ आफ क्राइस्ट' देखी, तो उन्हें महसूस हुआ कि हम ऐसी फिल्में क्यों नहीं बना सकते? 'पर्दे पर ईसा मसीह को देखते समय मैं ईसा मसीह के स्थान पर भगवान श्रीकृष्ण, भगवान श्री रामचंद्र और उनकी नगरी गोकुल तथा अयोध्या की कल्पना कर रहा था।' दरअसल पौराणिक फिल्मों को बनाने का एक अर्थ यह भी है कि निर्देशक को फिल्म तकनीक की अच्छी समझ होनी चाहिए। फालके बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनकी गहरी दिलचस्पी ट्रिक फोटोग्राफी में भी थी। उन्होंने बाकायदा जादूगरी (मैजिक) भी सीखी थी। 1917 में उन्होंने अपनी पहली सफल फिल्म 'लंका दहन' में तकनीक पर असाधारण अधिकार दिखाया था 1919 में 'कालिया मर्दन' जैसी फिल्मों से उन्होंने यह साबित कर दिया कि पौराणिक कथानकों को अच्छी तरह से फिल्माने के लिए कला और तकनीक दोनों ही दृष्टियों से फिल्मकार को सजग होना चाहिए। 1928 में सिनेमेटोग्राफ इनक्वायरी कमेटी के सामने एक बयान में फालके ने महत्वपूर्ण बात कही थी कि 'भारत में लगभग सभी फिल्में तकनीक और कलात्मक कौशल में बहुत कमजोर हैं। ....खासकर फोटोग्राफी एकदम बेकार है'

भारतीय फिल्म उद्योग के प्रारंभिक वर्षों में फिल्मकारों को तकनीक श्रेष्ठता हासिल करने के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ा था। बाबूराव पेंटर का नाम भी ऐसे गिनेचुने लोगों में लिया जा सकता है जिन्होंने कला निर्देशन और शूटिंग तकनीक की गुणवत्ता के लिए महत्वपूर्ण काम किया। फिल्म पर धूसर रंग का सही शेड पाने के लिए उन्होंने लाल और पीली 'सैक्लोप' का इस्तेमाल किया, 'फेड' और खास तरह के फिल्टरों का

इस्तेमाल किया। दामले ने बाबूराव पेंटर के सहायक के रूप में ही काम शुरू किया था। विष्णु गोविंद दामले और सैयद फतेह लाल की जोड़ी ने मराठी सिनेमा में एक नया अध्याय शुरू किया। 'संत तुकाराम' (1936) और 'संत ज्ञानेश्वर' (1940) उनकी दो ऐसी फिल्में हैं जो कालजयी है और अपने समय से बहुत आगे हैं। 'संत ज्ञानेश्वर' को न्यूयार्क के कार्नेगी हाल में दिखाया गया था। हालीवुड के फ्रैंक कैप्रा जैसे प्रसिद्ध फिल्मकार ने इस फिल्म की तकनीक श्रेष्ठता की प्रशंसा की थी। दादा साहब फालके ने जब 'कमजोर तकनीक' और 'बेकार फोटोग्राफी' की बात की थी, तो हमारा फिल्म उद्योग वास्तव में आदिम किस्म के औजारों के साथ काम कर रहा था। बाद में धीरे-धीरे कुछ फिल्मकारों की निजी कोशिशों से फिल्म निर्माण के तकनीकी पक्ष को महत्व मिलने लगा।

भारतीय फिल्मों में पौराणिक कथानकों और 'अरेबियन नाइट्स' से प्रभावित कथाफिल्मों का बोलबाला था। इन फिल्मों में चमत्कारों और फंतासी का केंद्रीय स्थान था। इंद्रसभा (1932), हातिमताई (1933), हातिम ताई की बेटी (1940), अरेबियन नाइट्स (1946), पाताल भैरवी (1951), नागिन (1954) जैसी फिल्मों में फंतासी का चित्रण फिल्मकर्मियों से उच्च तकनीकी ज्ञान की उम्मीद करता था। भले ही इन फिल्मों ने हमेशा अपने लक्ष्य में उल्लेखनीय सफलता नहीं हासिल की पर इनके ऐतिहासिक योगदान की उपेक्षा नहीं की जा सकती। एन.टी. रामराव 'पाताल भैरवी' में गरीब माली के बेटे बने थे। यह फिल्म तेलुगू, तमिल और हिन्दी में रिलीज हुई थी। जादू टोने की इन फिल्मों में ट्रिक फोटोग्राफी और तकनीकी श्रेष्ठता की खास जरूरत होती थी।

फिल्मकार महेश भट्ट के पिता नानाभाई एन. भट्ट फंतासी फिल्मों के कुशल जानकार थे। उन्होंने पौराणिक फिल्में भी बनाई और 'अरेबियन नाइट्स' से प्रभावित फंतासी फिल्में भी। बगदाद, बगदाद की रातें, अरेबियन नाइट्स जैसी उनकी फिल्में तकनीकी दक्षता का अपने ढंग का विनम्र प्रमाण है। 'सिंदबाद द सेलर' (1952) में उन्होंने दो अदृश्य व्यक्तियों के बीच तलवार बाजी का प्रसिद्ध स्पेशल एफेक्ट्स प्रसंग फिल्माया था।

कला एवं तकनीक का संगम

सिनेमा तकनीक के विकास का यह अर्थ नहीं है कि केवल पौराणिक या फतांसी फिल्मों में ही इस प्रकार की कल्पना और दक्षता चाहिए। महबूब, राजकपूर, गुरुदत्त, विमलराय जैसा कोई भी फिल्मकार केवल कलात्मक श्रेष्ठता से ही संतुष्ट नहीं हो सकता था। इन्हें तकनीकी श्रेष्ठता की भी जरूरत रहती थी। पर फिल्म बनाने की कुछ शैलियां और कथाएं ऐसी हैं जो स्पेशल एफेक्ट्स के बड़े बजट की मांग करती है। आखिर 'स्टार वार्स' जैसी फिल्में में 50 प्रतिशत बजट अगर सेटों और स्पेशल इफेक्ट्स पर खर्च हुआ। तो इसके परिणाम भी शानदार और ऐतिहासिक थे। दुर्भाग्यवश भारतीय फिल्म उद्योग में स्टार सिस्टम का अधिक दबदबा रहा है। तकनीकी श्रेष्ठता दिखाने के लिए बेहतर बजट की गुंजाइश बहुत कम रहती है।

हालीवुड में जो भी तकनीकी प्रयोग हुए उनकी नकल कभी न कभी हमारे यहां जरूर हुई। मिसाल के लिए थ्री-डी फिल्में बनाने की कोशिशें भी हमारे यहां हुई। लेकिन नब्बे के दशक में ही हम दिशा के हम उल्लेखनीय सफलताओं को देखते हैं। हालीवुड की फिल्म 'फोरेस्ट गंप' (1994) में अगर नायक टोम हैंक्स कंप्यूटर इमेजरी की मदद से राष्ट्रपति जान एफ. कैनेडी से हाथ मिलाने का चमत्कार पैदा कर सकता है, तो तमिल फिल्म 'इंडियन' में कमल हासन भी सुभाषचंद्र बोस से इतिहास में जाकर मिल आता है। स्पेशल एफेक्ट्स के शक्तिशाली जादूगार आज मधुबाला के साथ आमिर खान के प्रेम प्रसंग को भी फिल्माने की कल्पना भी कर सकते हैं।

दक्षिण भारतीय फिल्मों की ऊंची उड़ान

धीरे-धीरे हमारे देश में भी स्पेशल एफेक्ट्स के जादूगरों को अलग से पहचाना जाने लगा है। अपूर्व, सागोतरागल, अंजली, कादलन, रंगीला, जैंटलमैन जैसी फिल्मों में वैंकी संबामूर्ति के स्पैशल एफेक्ट्स को अनेक फिल्म प्रेमियों द्वारा सराहा गया है। वैंकी वैसे तो चेन्नई कला महाविद्यालय की उपज हैं। 14-15 सालों से वह एनीमेशन, ओप्टिकल और कंप्यूटर ग्राफिक्स के क्षेत्र में काम कर रहे हैं।

शंकर के निर्देशन में बनी 'इंडियन' में कमल हासन ने बूढ़े बाप और उसके जवान बेटे की दो भूमिकाएं पर्याप्त कुशलता से निभाई थीं। बूढ़े स्वतंत्रता सेनानी के मेकअप पर भी काफी खर्च किया गया था। एक जमाने में इस तरह के खर्च निर्माता निदेशक को बोझ की तरह लगते थे। पर अब इन खर्चों का व्यवसायिक महत्व समझा जाने लगा है।

शंकर के निर्देशन में बनी तमिल फिल्म 'कादलन' (1995) में स्पेशल एफेक्ट्स में वैंकी के साथ सी. मुरुगेश का भी सहयोग था। मुरुगेश 600 से भी अधिक दक्षिण भारतीय फिल्मों में काम कर चुके हैं। 'कादलन' के केंद्र में प्रभुदेवा की माइकल जैक्सन छवि थी। उनके द्वारा प्रस्तुत नाच-गानों को कंप्यूटर ग्राफिक्स के द्वारा दिलचस्प और अलग बनाना जरूरी थी। शंकर लगभग अपनी हर फिल्म में इस तरह का चमत्कार आवश्यक समझते हैं। उनकी बाद की तमिल फिल्म 'जींस' (1998) के एक गाने में भी स्पेशल

कल और आज

साठ के दशक के नायकों को 21वीं सदी की कमसिन नायिकाओं के साथ फिल्मी पर्दे पर रोमांस करते हुए देख सकते हैं। डिजिटल एमिनेशन और थ्री डी ग्राफिक्स के सहारे यह चमत्कार अब संभव है। आर्लैंड की थ्री मीडिया नामक कंपनी एवं सिलिकन वैली मिलकर 10 मिनट की एक फिल्म बना रहे हैं।
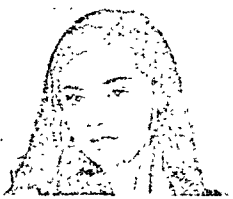
इसमें दक्षिण के साठ के दशक के सुपर स्टार एम.जी.आर. की नायिका सिमिरन हैं। वैसे तो राजकपूर को भी इस फिल्म में लेने की संभावना है। इस फिल्म को इंटरनेट पर रिलीज किया जायेगा।

एफेक्ट्स को हावी होने दिया गया है। कभी-कभी इस तरह के चमत्कार चौंकाने वाले और बचकाने भी लगते हैं। फिल्म की समग्रता में उनका कोई विशेष महत्व भी नहीं होता है। पर अधिसंख्य दर्शक इन विशेष प्रभावों को एक विशेष मनोरंजन के रूप में ही देखते हैं। हाल में मुंबइया फिल्म 'हैलो ब्रदर' में भी स्पेशल एफेक्ट्स का बचकाना इस्तेमाल हुआ है।

शंकर जैसे फिल्मकारों ने स्पेशल एफेक्ट्स का इस्तेमाल नवीनता और मनोरंजन को ध्यान में रखकर ही किया है। लेकिन मणिरत्नम् जैसे कुछ अधिक कुशल फिल्मकार कलात्मक श्रेष्ठता को हासिल करने के लिए भी इस तरह के प्रयोग करते रहे हैं। तमिल फिल्म 'तिरुडा तिरुडा' (1993) में उन्होंने सेतु के स्पेशल एफेक्ट्स का इसी तरह का अच्छा इस्तेमाल किया है। सेतु की इस फिल्म में पेशेवर पकड़ है।

यह गौर करने की बात है कि राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों की सूची में स्पेशल एफेक्ट्स के क्षेत्र में तमिल फिल्मों का ही बोलबाला है। 1992 का पुरस्कार के. शशिलाल नायर को 'अंगार' में उन्होंने 'मिनियेचर वर्क' में उल्लेखनीय सफलता हासिल की थी। वर्तमान स्थितियों को देखकर ऐसा लगता है कि भविष्य में इस क्षेत्र में कल्पनाशीलता, दक्षता और प्रतियोगिता बढ़ेगी।

भारतीय फिल्म उद्योग विज्ञान कथाफिल्म के क्षेत्र में उदासीन रहा है। शेखर कपूर (जिन्होंने 'मिस्टर इंडिया' में एक अदृश्य व्यक्ति के कमाल दिखाने की कोशिश की थी), केतन मेहता जैसे कुछ फिल्मकार इस तरह की फिल्में बनाने की सोचते रहे हैं। लेकिन वास्तव में इस दिशा में उजाड़ ही नजर आता है। यहां इस दिलचस्प और महत्वपूर्ण तथ्य का उल्लेख भी आवश्यक है कि महान भारतीय फिल्मकार सत्यजित राय एक समय में एक विज्ञान/कथा फिल्म की योजना बना रहे थे। साठ के दशक के अंत में सत्यजित राय ने 'द एलियन' नाम से एक विज्ञान कथा फिल्म की योजना बनाई थी। मूल रूप से यह बच्चों की कहानी थी जिसमें एक [illegible] के 'एडवेंचर' फिल्माये जाने थे। यह [illegible] मिजाज की मानसिकता में हैं। अचानक पृथ्वी पर एक स्पेसशिप आ जाता है। इस स्पेसशिप में जो दूसरे ग्रह का प्राणी है उसके पास एक ऐसा शीशा है जिसमें अनोखे चमत्कार देखे जा सकते हैं।

1967 के प्रारंभ में एक युवा अंतरराष्ट्रीय निर्माता ने राय के इस प्रोजेक्ट में दिलचस्पी दिखाई। राय जानते थे कि इस प्रोजेक्ट को ऊंची तकनीक और बड़ा बजट चाहिए। उनकी पटकथा ने हालीवुड के चक्कर लगाये। राय ने 1967 में दूसरे ग्रह के प्राणी के जो जो रेखांकन बनाये थे उन्हें देखकर लगता है कि 'द एलियन' को अगर अंतरराष्ट्रीय धन मिल जाता, तो शायद राय 'ई.टी.' से बहुत पहले ही एक श्रेष्ठ विज्ञान/कथा फिल्म बना चुके होते। लेकिन इतिहास के पन्नों में अब इस प्रोजेक्ट के रेखांकन और रूपरेखा ही मौजूद है – फिल्म नहीं।

हमारे यहां दो बड़े कारणों से निर्माता निर्देशक विज्ञान कथा फिल्म के किसी प्रोजेक्ट से दूर रहना चाहते हैं। एक तो हालीवुड की तुलना में इस क्षेत्र में वे अपने को बौना महसूस करते हैं। लेकिन ही विकसित तकनीक ने और भी दिक्कतें पैदा कर दी हैं। दूसरी बात यह है कि ऐसी फिल्मों को बहुत बड़ा बजट चाहिए। और बाक्स ओफिस इस क्षेत्र में बहुत अच्छी तस्वीर हमारे सामने नहीं लाता। दरअसल भारत में विनाशलीला प्रधान या विज्ञान कथा फिल्मों के लिए अनुकूल वातावरण नहीं दीख रहा। पर आज भी धार्मिक और पौराणिक फिल्मों को कोई साहसी व कल्पनाशील फिल्मकार बड़े पर्दे पर नई डिजिटल तकनीक से फिल्मा सकता है। यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि 1975 में 'शोले' ही नहीं 'जय संतोषी मां' भी हिट हुई थी। पर बाद में रंगीन टेलीविजन के जबरदस्त आकर्षण की मदद से निर्माताओं ने रामायण और महाभारत की लोकप्रियता को बड़े स्तर पर भुना लिया। लेकिन आज की नई तकनीकी सुविधाएं इन कथानकों को एक नया 'एपिक' विस्तार दे सकती हैं। जापान में कुछ साल पहले 'रामायण' पर एक अच्छी एनीमेशन फिल्म बनी थी। हालीवुड ने नई तकनीकी सुविधाओं से लैस होकर एनीमेशन फिल्मों को भी नया ग्लैमर प्रदान किया है। इन फिल्मों के पात्रों को बड़े-बड़े फिल्मी सितारे अपनी आवाजें देते हैं।

आज 1999 में सिनेमा की शताब्दी के अंतिम चरण में विज्ञान और यंत्रविधि की अत्याधुनिक सुवधिाएं एक आश्चर्य लोक की तरह हैं। 'स्टार वार्स' के नये डिजिटल रूप में प्रस्तुत करने के बाद जोर्ज लूकस 2002 में एक बहुत महंगा 'डिजिटल आर्ट्स सेंटर' बनाने की योजना को अंतिम रूप दे चुके हैं। सैन फ्रांसिस्कों की 23 एकड़ जमीन में इंडस्ट्रियल लाइट एंड मैजिक सहित अनेक संस्थान एक जगह पर काम करेंगे। आज 'द मैट्रिक्स' जैसी नई विज्ञान कथा फिल्में स्पेशल इफेक्ट्स के संसार को एक नया अर्थ दे रही हैं। इस फिल्म में एक नई तकनीक 'बुलेट टाइम फोटोग्राफी' की मदद से एक्शन को सामान्य 'स्लो मोशन' से भी धीमा कर दिया गया है। कुंग फू एक्शन मुद्राओं को इस तकनीक से आश्चर्यजनक सिनेमाई विस्तार मिल गया है। बाइसवीं शताब्दी के नगर को कला निर्देशन और स्पेशल एफेक्ट्स के मेल से अद्‌भुत रूप दे दिया गया है। भविष्य की इस फंतासी में कंप्यूटर पूरी तरह से लोगों को नियंत्रित कर रहे हैं।

दादा साहब फालके ने 60 साल पहले जो कहा था वह आज भी प्रासंगिक है। 'हम आपके हैं कौन' जैसी सफल फिल्म के कैमरामैन राजन किनागी का कहना है कि भारत में विज्ञापन फिल्म उद्योग को कहीं अधिक नई और महंगी यंत्रविधि उपलब्ध है। राजन 'हम आपके हैं कौन' के लिए नये 'हाक लैंस' चाहते थे पर उन्हें 18 साल पुराने 'कोवा लैंस' से काम चलाना पड़ा। मणिरत्नम् या विधु विनोद चोपड़ा जैसे नाम तो इन नई सुविधाओं के प्रति सजग हैं। पर आम तौर पर बड़े फिल्म निर्माता इस बारे में कोई खास परवाह नहीं करते। आज 'हाई स्पीड स्टाक' और 'फास्टर लैंसों' ने बहुत कम प्रकाश में भी शूटिंग की सुविधाएं उपलब्ध करा दी हैं। पर इन सबकी चिंता करता है कौन?

डिजिटल वर्सटाइल डिस्क, डोलबी डिजिटल सराउंड ई एक्स डिजिटल थियेटर सिस्टम्स आदि के नये युग में पर्दे पर चाक्षुप अनुभव और ध्वनि को एक अद्वितीय पहचान मिल चुकी है। विज्ञान और यंत्रविधि के प्रति भारतीय फिल्म उद्योग और अधिक देर तक उदासीन क्या रह पायेगा?

विनोद भारद्वाज

मध्य प्रदेश विशेष
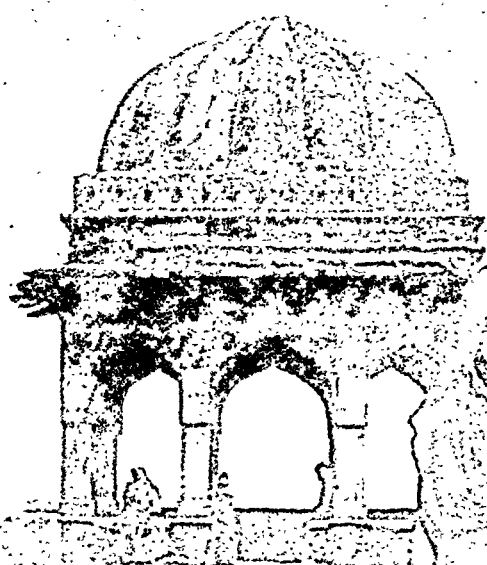
मध्य प्रदेश

क्षेत्रफल: 443,446 वर्ग कि.मी.; राजधानी: भोपाल; भाषा: हिन्दी; जिला : 61; जनसंख्या: 66,181,170; पुरुष: 34,232,048; महिलाएं: 31,903,814; जनसंख्या में वृद्धि (1981-91): 13,957,018; वृद्धि दर प्रतिशत (1981-91): 26.75; जनसंख्या घनत्व: 149; शहरी जनसंख्या: 23.18%; लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष): 932; साक्षरता: 43.45%; पुरुष: 57.43; महिलाएं: 23.39; प्रतिव्यक्ति आय (89-90): 2878 रु.; 1991 की जनगणना पर अंतिम जनसंख्या : 66,181,170

संभाग एवं जिले

चंबल संभाग: श्योपुर, मुरैना, भिंड।

ग्वालियर संभाग: ग्वालियर, शिवपुरी, गुना, दतिया,

उज्जैन संभाग: देवास, रतलाम, शाजापुर, मंदसौर, नीमच, उज्जैन।

इंदौर संभाग: इंदौर, धार, झाबुआ, खरगोन, बड़वानी, खण्डवा।

भोपाल संभाग: भोपाल, सीहोर, रायसेन, राजगढ़, विदिशा, बैतूल।

होशंगाबाद संभाग: होशंगाबाद, हरदा, सागर, दमोह, पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़।

जबलपुर संभाग: जबलपुर, कटनी, नरसिंहपुर, छिन्दवाड़ा, सिवनी, मण्डला, डिण्डोरी, बालाघाट।

रीवा संभाग: रीवा, शहडोल, उमरिया, सीधी, सतना।

बिलासपुर संभाग: बिलासपुर, जांजगीर-चांपा, कोरबा, रायगढ़, जशपुर, सरगुजा, कोरिया।

रायपुर संभाग: रायपुर, महासमुंद, धमतरी, दुर्ग, राजानंदगांव, कवर्धा।

बस्तर संभाग: बस्तर, दन्तेवाड़ा, कांकेर।

राज्यपाल: डा. भाई महावीर

मुख्य मंत्री: दिग्विजय सिंह (कांग्रेस-ई)

राज्य वृक्ष: बरगद वृक्ष (वट वृक्ष या बड़ वृक्ष)

राज्य पशु: बारहसिंगा

राज्य पक्षी: दूधराज
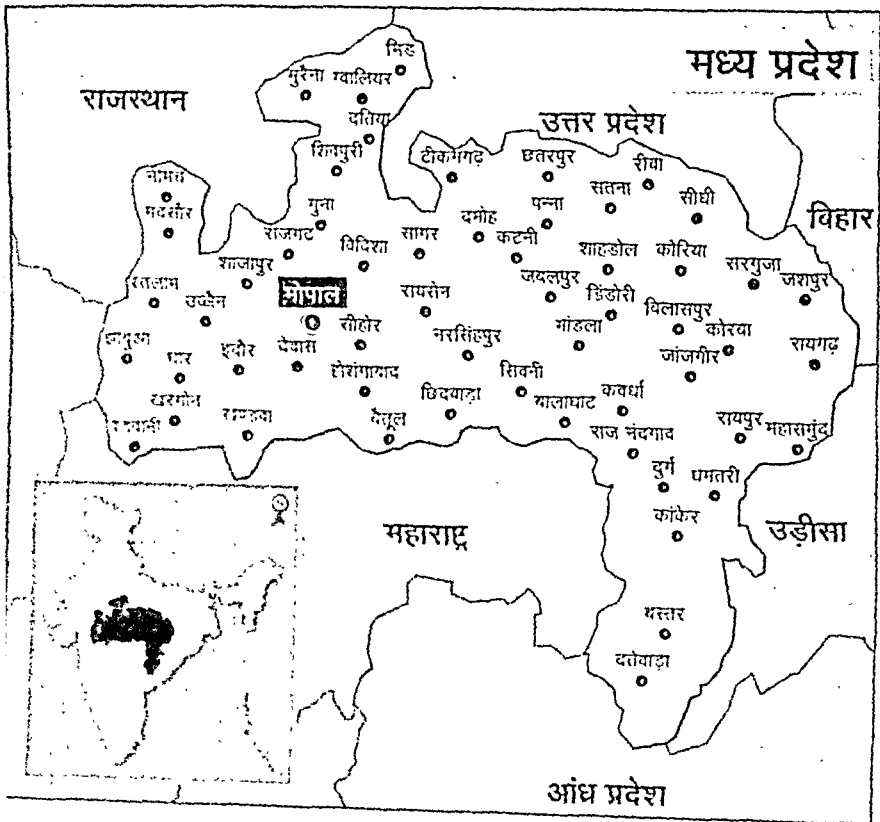
मध्य प्रदेश का इतिहास

भारत के मध्यभाग में स्थित मध्यप्रदेश विशाल भूभाग में फैला हुआ है और यह भूभाग स्वयं में अनेक भौगोलिक विविधताएं समेटे हैं। यदि यहां मालवा और छत्तीसगढ़ के मैदान हैं तो विंध्याचल और सतपुड़ा की विस्तीर्ण पर्वत श्रेणियां और उनकी वनाच्छादित उपत्यकाएं भी हैं। कितनी ही नदियों ने यहां सभ्यता का पोषण किया है। इस भौगोलिक विविधता ने इतिहास को भी कालान्तर में अनेक रंग दिए। कभी कोई इलाका इतिहास की किसी मुख्य धारा से जुड़ा तो कोई क्षेत्र अपनी दुर्गमता के कारण मुख्य धारा से कटा रहा।

प्रागैतिहासिक काल

मध्यप्रदेश को आदिमानव की क्रीड़ास्थली होने का गौरव प्राप्त है। प्रदेश के विभिन्न भागों में समय-समय पर जो उत्खनन हुए हैं, उनमें प्रागैतिहासिक काल की सभ्यता के प्रमाण मिलते हैं। प्रागौतिहासिक काल के चार चरण माने जाते हैं – पूर्व पाषाण काल, मध्यपाषाण काल, उत्तर पाषाण काल और ताम्रपाषाण काल।

पूर्व पाषाणकाल में मानव पत्थर के साधारण और भद्दे औजारों का उपयोग करता था और शिकार तथा कंदमूल से पेट भरता था। हिंसक पशुओं से अपनी रक्षा करने के लिए उसमें मिल जुलकर रहने की भावना थी। यह युग 25000 ई.पू. तक रहा। उसके बाद 5000 ई.पू. तक मानव मध्यपाषण युग में रहा जब उसके औजार बेहतर हुए और उसका मुख्य पेशा शिकार करना था। वह मिट्टी के बर्तन भी बनाने लगा। उत्तर पाषाण काल में उसके द्वारा पत्थर के औजार नुकीले और चमकीले बनाए जाने लगे। उसने कृषि और पशुपालन शुरू कर दिया। आग और पहिए का प्रयोग होने लगा और वह घर भी बनाने लगा था।

मध्यप्रदेश में पाषाण युग के इन तीनों चरणों के अवशेष मिले हैं। पूर्वी और पश्चिमी निमाड़ के छनेरा, नेमावर, भोजाबाड़ी, देहगांव, बोरखेड़ा, हंडिया के अतिरिक्त सिंघनपुर, आदमगढ़, पंचमढ़ी, होशंगाबाद, मंदसौर, सागर आदि स्थानों पर प्रागैतिहासिक मानव के रहने के प्रमाण मिले हैं। होशंगाबाद के पास आदमगढ़, भोपाल के पास भीमबैठका तथा सागर के पास की पहाड़ियों में, नरसिंहगढ़, पन्ना, रीवा, रायसेन, रायगढ़ और अम्बिकापुर की गुफाओं में इस काल के शैलचित्र मिले हैं। इन शैलचित्रों में शिकार, नृत्य के अलावा और भी चिन्ह हैं।

ताम्रपाषाण युग में मध्यप्रदेश नर्मदा, चम्बल और बेतवा नदियों के तट के कुछ स्थानों में मोहे-जोदड़ो और हड़प्पा की समकालीन सभ्यता विकसित हुई। इसके अवशेष महेश्वर, डंगवाड़ा, नवडाटोली, कायथा, बरखेड़ा, एरण और नागदा की खुदाई में मिले हैं। उत्खनन में मिट्टी के पात्र, तांबे के औजार और बर्तन मिले हैं। पर लोहे की जानकारी तब नहीं थी। ईसा पूर्व 2000 से 800 ई.पू. तक विद्यमान इस सभ्यता में मानव का जीवन स्थायी होने लगा था। मुख्य व्यवसाय कृषि हो गया था और कृषि के उपकरण धातु के बनने लगे थे। वस्त्रों, आभूषणों, पक्की ईंटों का प्रयोग होने लगा था और मवेशियों, ज़ानवर पाले जाते थे तथा धार्मिक विश्वासों का प्रचलन हो गया था।

वैदिक काल

ऋग्वैदिककाल (1500 ई.पू–1000 ई.पू) में जब आर्यों का उत्तर भारत में प्रसार हो रहा था तब मध्यप्रदेश के सभी हिस्सों में विभिन्न अनार्य जातियों के समुदाय थे। पर ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि उत्तर वैदिक काल (ई.पू. 1000–500 ई.) में आर्यों का प्रवेश दक्षिण भारत तक हो गया। पुराणों में जो इतिहास वर्णित है उससे इस काल की कड़ियां जोड़ने में सहायता मिलती है। हालांकि पुराणों की रचना गुप्त काल के पहले की नहीं है पर उनमें वर्णित इतिहास 2000 ई.पू. तक जाता है। रामायण और महाभारत की कथाएं भी पुराणों की कथाओं से कहीं न कहीं जुड़ती हैं। इन ग्रंथों में अगस्त्य, परशुराम और रामचंद्र के दक्षिण प्रवास को आर्यों के प्रसार से जोड़ा जा सकता है। इन सबकी दक्षिण यात्राएं मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से होकर हुई।

महाजनपद काल

ईसा पूर्व छठवीं सदी से हमें मध्यप्रदेश के इतिहास के बारे में सुनिश्चित जानकारी मिलने लगती है। ईसापूर्व छठी सदी की हमें तीन विशेषताएं दिखती हैं – व्यापार की प्रगति, सिक्कों का प्रचलन और नगरों का उत्थान। इस काल में जिन सोलह महाजनपदों का उल्लेख मिलता है उनमें से दो चेदि और अवन्ति जनपद मध्यप्रदेश में थे। मध्यप्रदेश का बुंदेलखंड का इलाका चेदि जनपद के अंतर्गत और मालवा का इलाका अवन्ति महाजनपद के अंतर्गत आता था। अवंति जनपद के

शैल चित्र, भीमबै

दो भाग थे: उत्तरी अवंति जिसकी राजधानी उज्जैन थी और दक्षिणी अवंति जिसका प्रमुख नगर माहिष्मति (आज का महेश्वर) था। वर्द्धमान महावीर और गौतमबुद्ध के समय महाराज चंड प्रद्योत अवंति का राजा था। अनेक बौद्ध श्रमण यहां बौद्ध. धर्म का पालन और प्रचार करने में रत थे। उसने वत्स, मगध और कोसल महाजनपदों के साथ युद्ध किया। पुराणों के अनुसार चंड प्रद्योत ने 23 साल शासन किया। उसके बाद उसके चार उत्तराधिकारियों ने करीब 115 वर्ष शासन किया। उसके अंतिम शासक को शिशुनाग ने परास्त करके मगध साम्राज्य में मिला लिया था। संभवतः चेदि महाजनपद, जिसकी राजधानी शुक्तिमती थी, मगध साम्राज्य का हिस्सा हो गया। शिशुनाग वंश 430 ई.पू. से 364 ई.पू. तक यानी 66 वर्ष रहा। बड़वानी में मिली नंदों की मुद्राएं इसका सबूत है।

मौर्यकाल

नंदों के बाद मध्यप्रदेश पर मौर्यों के शासन के काफी प्रमाण मिलते हैं। अवन्ति मौर्य साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण प्रान्त था और मौर्य सम्राट बिन्दुसार ने अपने पुत्र अशोक को यहां का राज्यपाल नियुक्त किया था। युवराज अशोक ने विदिशा के एक श्रेष्ठी की कन्या से विवाह किया और उज्जयिनी और कसरावद (निमाड़) में स्तूपों का निर्माण कराया। जब अशोक सम्राट बना तब उसने सांची और भरहुत के स्तूप बनवाए। उसके समय के शिलालेख रूपनाथ (जबलपुर) पवाया (पद्मावती ग्वालियर), गुजर्रा (दतिया), एरण (सागर) में मिले हैं। पूरे मध्यप्रदेश में [illegible] मौर्यकाल के सिक्के मिले हैं।

शुंग, सातवाहन और कुषाण काल

मौर्यों के बाद शुंगवंश का अधिकार मध्यप्रदेश के कुछ हिस्सों पर हुआ। इस वंश का संस्थापक पुष्यमित्र शुंग था। उसका पुत्र अग्निमित्र जो कालिदास के नाटक मालविकाग्निमित्र का नायक था, अपने पिता के शासनकाल में विदिशा का राज्यपाल था। भरहुत में इस काल के शिलालेख मिले हैं। लेकिन पश्चिमी अवन्ति पर सातवाहनों की सत्ता थी। साथ ही दक्षिण कोसल यानी छत्तीसगढ़ पर भी उनका अधिकार हो गया था। इस इलाके में सातवाहनों के समय के कई प्रमाण मिले हैं। सातवाहनों के समय के रोम के सोने के सिक्के मिलने से सिद्ध होता है कि सातवाहनों के समय इस इलाके का समुद्री व्यापार रोम से होता था। गौतमीपुत्र [illegible] की मुद्राएं होशंगाबाद, जबलपुर और सागर में मिली हैं। सातवाहन ईसा पूर्व दूसरी सदी से लेकर ईसा की पहली सदी तक विद्यमान रहे।

इस बात की संभावना है कि शुंगों के बाद मध्यप्रदेश के उत्तरी भाग पर कुषाणों का शासन कुछ समय के लिए रहा। ईसा सन् शकों के आक्रमण होने लगे और ईसा की दूसरी सदी में शक क्षत्रप रुद्रदामन ने सातवाहनों से पश्चिमी मध्यप्रदेश छीन लिया। इस इलाके पर शकों का शासन लगभग तीन सदियों तक यानी करीब 400 ईसवी तक अर्थात चंद्रगुप्त द्वितीय के यहां आने तक रहा। शकों के समय उज्जयिनी के गौरव की पुनर्स्थापना हुई। यह उल्लेखनीय है कि विदेशी मूल के ये शक शीघ्र ही अपनी भारतीय प्रजा के धर्म, संस्कृति और परंपराओं से परिचित हो गए। खुद उनका भारतीयकरण भी हुआ और वे भारतीय संस्कृति के संरक्षक बन गये। उन्होंने शक संवत चलाया।

उधर मध्यप्रदेश के उत्तरी भाग में यानी ग्वालियर क्षेत्र में कुषाणों के अंत के साथ-साथ नागों का अभ्युदय हुआ। उनकी राजधानी पद्मावती (वर्तमान पवाया) थी। तीसरी और चौथी सदी में उनकी सत्ता इस इलाके में रही इसके प्रमाण शिलालेखों, मुद्राओं और साहित्यिक स्रोतों से मिलते हैं। पद्मावती के नाग शासक भारशिव थे और शिव उनके उपास्य देव थे।

वाकाटक गुप्त काल

गुप्त शासकों के उत्कर्ष के पहले यानी चौथी सदी के पहले वाकाटक शासक विंध्यशक्ति ने मध्यप्रदेश के कुछ भागों पर शासन किया। बैतूल, बालाघाट और छिंदवाड़ा में उसके ताम्रपत्र मिले हैं उससे लगता है कि उसकी सत्ता नर्मदा के उत्तर में नहीं पहुंची थी। किंतु उसके पुत्र प्रवरसेन (280-340 ई.) के समय वाकाटकों ने बुंदेलखंड तक अपनी विजय पताका फहरायी यह बात बुंदेलखंड में प्राप्त कुछ शिलालेखों से स्पष्ट होती है।

यद्यपि गुप्त शासकों का उदय तीसरी सदी के अंत में हो चुका था, पर उनका वास्तविक उत्थान चंद्रगुप्त प्रथम के समय से हुआ। मध्यप्रदेश में उनकी सत्ता महान विजेता समुद्रगुप्त के समय स्थापित हुई। समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उसने ग्वालियर के पास के पद्मावती के गणपति नागसेन को परास्त करके उसके इलाके को अपने साम्राज्य में शामिल कर लिया और विंध्यप्रदेश के परिव्राजक शासकों को अधीन किया। परिव्राजक प्रदेश के पास ही एक समकालीन राजवंश का शासन था जिसकी राजधानी उच्छकल्प था जो आज का उंचेहरा है। यह भी गुप्तों के अधीन हो गया। जबलपुर के पास के आटविक राज्यों को परास्त करके उन्हें अपना आधिपत्य स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। इसी प्रकार उसने दक्षिण कौशल यानी छत्तीसगढ़ के शासक राजा महेन्द्र को भी परास्त किया। बाद में चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने शकों को परास्त करके पश्चिमी मध्यप्रदेश पर भी अधिकार कर लिया।

परवर्ती गुप्त शासकों के समय जब गुप्त साम्राज्य कमजोर हुआ तो मध्यप्रदेश के विभिन्न इलाके गुप्तों के हाथ से निकल गये। वाकाटक शासक हरिसेन (480-575) ने कोसल और अवन्ति का प्रदेश अधिकृत कर लिया। पांचवीं सदी में यानी परवर्ती गुप्तों और वाकाटकों के समय दक्षिण कोसल में राजर्षितुल्य नामक राजवंश के शासन का उल्लेख मिलता है। इन्हें सूर शासक भी कहा गया है। संभव है ये समुद्रगुप्त के समय के महेन्द्र के वंशज हों।

5वीं सदी के अंत में जबलपुर के आसपास का इलाका परिव्राजक महाराजाओं के अधीन था। उनकी राजधानी नागौद के पास कहीं थी। इस राजवंश से संबंधित 6 दानपत्र प्रकाश में आए हैं। यह राजवंश स्वयं को गुप्तों के अधीन बताता है। परिव्राजक राज्य के पास विजयराघोगढ़ के पास

एक अन्य राज्य था जिसकी राजधानी उच्छकल्प थी। इनके सात ताम्रपत्र मिले हैं। ऐसा लगता है कि वे गुप्तों के अधीन नहीं थे।

गुप्तों के वाद

वाकाटक और गुप्तों के पतन के समय और उसके उपरांत मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक राज्य स्थापित हुए। पांचवीं सदी के अंत में कालिंजर में उदयन नाम का पांडुवंशी राजा शासन कर रहा था। उसका प्रपौत्र तीवरदेव वाद में दक्षिण कोसल का प्रसिद्ध राजा हुआ। एक अन्य पांडुवंशी राजा का ताम्रपत्र अनुदान रीवा में ही मिला है। इसमें चार शासकों का उल्लेख है जो 5वीं सदी में हुए। मालवा में वाकाटक हरिसेन की मृत्यु के उपरान्त यशोधर्मन के अधिकार का उल्लेख मिलता है। वह 530 ई. के लगभग मालवा का शासक वना। उसने हूणों और वाकाटकों के आक्रमणों से व्याप्त अराजकता से मालवा को मुक्ति दी। उसने हूण शासक मिहिरकुल को परास्त करके पीछे हटाया। दुर्भाग्य से तेरह साल के शासन के वाद ही उसकी मृत्यु हो गयी।

दक्षिण कोसल में छठवीं सदी के पूर्वार्द्ध में शरभपुरीय वंश का उदय हुआ जिसका संस्थापक शरभ था और राजधानी शरभपुर या श्रीपुर थी। शरभपुरियों के वाद दक्षिण कोसल में पांडु वंश का वर्चस्व स्थापित हुआ जिनकी राजधानी सिरपुर थी। वे अपने को सोमवंशी पांटु कहते थे। मैकल क्षेत्र में इस राजवंश को पांडु वंश और दक्षिण कोसल में सोमवंशी कहा गया है। इस वंश का प्रमुख शासक तीवर था जिसने संपूर्ण कोसल को अपने अधिकार में कर लिया था। उसका उत्तराधिकारी चंद्रगुप्त दक्षिण कोसल का अधिपति वना। चंदगुप्त के उत्तराधिकारी हर्षगुप्त का राज्य संभवतः दक्षिण कोसल से लेकर पूर्वी समुद्री किनारे तक था। उसका विवाह मौखरिवंश के राजा सूर्यवर्मा की कन्या से हुआ था। उसके द्वारा वनवाया गया सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर आज भी विद्यमान है। उसके वेटे वालार्जुन ने 60 वर्ष राज्य किया। उसका शासनकाल छत्तीसगढ़ का स्वर्णकाल कहा जाता है। उसके पुत्र वालार्जुन को वातापी के चालुक्य पुलकेशिन द्वितीय ने 634 के पूर्व पराजित किया था। वाद में नल राजाओं ने सोमवंशी सत्ता को 8 वीं सदी में खत्म कर दिया। सिरपु के पांडुवंश के शासन के समय छत्तीसगढ़ के दक्षिणी मा पर नलवंश की सत्ता थी। नल शासक–विलासतुंग पांडुवं महाशिवगत वालार्जुन का समकीन था। उसने सिरपुर व लक्ष्मण मंदिर के अनुकरण पर राजिम में राजीवलोच मंदिर का निर्माण कराया। अभिलेखों से पता चलता है वि नलों का अस्तित्व महाकान्तार और उसके आसपास नौव सदी तक था। दसवीं सदी के प्रारंभ में रतनपुर के कलचु शासकों से पराजित होने पर नल सत्ताविहीन हो गये। फि वस्तर के इलाके में कुछ समय तक छिंदक नागवंशी शासव रहे।

सिरपुर के पांडु वंशीय शासकों के वाद दसवीं सदी व लगभग दक्षिण कोसल पर सोमवंशी शासकों का राज्य थ इस वंशा के शासक जनमेजय महावप्र ने कलिंग को जीतक त्रिकलिंगाधिपति की पदवी धारण की। इस वंश के शासव ने चोल, और गौड़ शासकों से संघर्ष किया। 12वीं सदी व प्रारंभ में दक्षिण कोसल की सत्ता तुम्मान के कुलचुरी राजवं के हाथ में आ गई।

सातवीं सदी के प्रारंभ में मध्यप्रदेश के विभिन्न हिस्सों कई छोटे वड़े राज्यों के अस्तित्व का उल्लेख मिलता है 602 ई. में देवगुप्त को मालवा शक्ति को पुर्नस्थापित कर का श्रेय जाता है। मालवा पर अधिकार करने के लि समकालीन शासकों में निरंतर संघर्ष होता रहा। उल्लेर मिलता है कि सातवीं सदी के पूर्वार्द्ध में मालवा के एक भा पर, संभवतः पश्चिमी, वल्लभी के शीलादित्यप्रदम औ ध्रुवसेन द्वितीय का शासन रहा। मालवा के वाकी भाग पर इ अवधि में चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय का शासन था य ऐहोल शिलालेख से पता चलता है।

लेकिन मध्यप्रेदश के उत्तरी भाग पर पहले मौखरि शासकों का और फिर वाद में हर्षवर्द्धन का अधिकार रहा उल्लेख मिलता है कि 6वीं सदी के अंत से वुंदेलखंड प मौखरिवंश का राज्य था। जव मौखरि शासक गृहवर्मा क पराजय गुप्त शासक देवगुप्त के द्वारा हुई और जव ग्रहवम मारा गया तो गृहवर्मा के साले हर्षवर्द्धन ने उसके राज्य क अपने राज्य में शामिल कर लिया। वर्द्धनवंश के महान शासव हर्षवर्द्धन ने 606 ई. में राजसत्ता सम्हाली और पूरे उत्त

गान्डवाना की चट्टाने (इन्हे संसार की सवसे पुरानी चट्टानों की श्रृंखला मानते है)

भारत को उसने अपने अधिकार में कर लिया। हर्ष की टक्कर दक्षिण भारत के चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय से हुई और नर्मदा को दोनों के साम्राज्यों की सीमारेखा मान लिया गया। फलतः नर्मदा नदी के उत्तर का मध्यप्रदेश हर्ष के साम्राज्य का हिस्सा बन गया और नर्मदा के दक्षिण के मध्यप्रदेश का एक बड़ा भाग चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के अधीन हो गया।

राजपूत काल

647 ई. में हर्षवर्द्धन की मृत्यु के बाद नर्मदा के उत्तरी तट का मध्यप्रदेश कई छोटे बड़े राज्यों में बंट गया। सातवीं सदी के उत्तरार्द्ध में गुर्जर प्रतिहारों की एक शाखा ने मालवा में इस राजवंश की स्थापना की और उज्जयिनी को अपनी राजधानी बनाया। इसका प्रथम महत्वपूर्ण शासक था नागभट्ट प्रथम। नागभट्ट ने संभवतः 730-756 के मध्य राज्य किया। लगभग इसी समय शक्तिशाली चालुक्य राजवंश दन्तिदुर्ग के नेतृत्व में मालवा के दक्षिण में उठ खड़ा हुआ। उसने गुर्जर प्रतिहार नागभट्ट प्रथम को बुरी तरह पराजित किया। पर यह दन्तिदुर्ग की स्थायी विजय नहीं थी। प्रतिहार वंश के शासक वत्सराज के दौरान 778 ई. से उत्तरी भारत के साम्राज्य के लिए गुर्जर प्रतिहारों, बंगाल के पालों और दक्षिण के राष्ट्रकूट वंश में लंबा त्रिपक्षीय संघर्ष शुरू हुआ जो करीब पौने दो सौ साल तक याने दसवीं सदी के मध्य तक चला। मध्यप्रदेश का अधिकांश भाग इस संघर्ष और उथल पुथल का साक्षी रहा। इस दौरान मालवा में गुर्जर प्रतीहारों के सामंत शासन सम्भालते रहे। कई चरणों में चले इस त्रिपक्षीय संघर्ष का अंत गुर्जर प्रतीहारों की अंतिम विजय से हुआ। लेकिन यह भी सच है कि दसवीं सदी के प्रारंभ से इन तीनों ही शक्तियों का पतन शुरू हो गया था और क्षेत्रीय ताकतें उत्तर भारत में स्थापित होने लगी थीं। इनमें प्रमुख थे मालवा के परमार, जैजाकभुक्ति के चन्देल और चेदि के कलचुरि।

मालवा के परमार

मालवा के परमारों ने गुर्जर प्रतीहारों के सामंत के रूप में काफी समय शासन किया पर गुर्जर प्रतिहारों की कमजोरी का लाभ उठाते हुए हर्षसिंह परमार ने (949-973) ने अपनी शक्ति का विस्तार किया और मालवा के परमारों के उत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त कर दिया। इस वंश के वाक्पति मुंज (973-998) और राजा भोज (1011-1055) के नाम इतिहास में प्रख्यात हैं। दोनों विद्वान थे और विद्वानों के आश्रयदाता थे। अपनी व्यापक उपलब्धियों के कारण भोज उस काल का महानतम शासक माना जाता है। उसने उज्जैन के स्थान पर अपनी राजधानी धारानगरी (धार) को बनाया। 1135 के लगभग गुजरात के सिद्धराज चालुक्य ने मालवा पर बीस साल तक अधिकार रखा पर बाद में मालवा पर फिर से परमार शासन स्थापित हो गया। इस बीच उत्तर भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना हो गई थी और उनके धावे मध्यप्रदेश में भी होने लगे थे। 1234 में सुल्तान इल्तुतमिश ने विदिशा पर अधिकार कर लिया था और उसने उज्जैन को भी लूटा। परमार वंश का शासन 1305 तक चला।

जैजाकभुक्ति के चंदेल प्रतिहारों के निर्बल होने पर चंदेलों ने दसवीं सदी के मध्य में जैजाकभुक्ति याने बुंदेलखंड में स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली। चंदेल प्रारंभ में प्रतिहारों के सामंत थे पर बाद में वे ताकतवर होकर स्वतंत्र हो गए। धंग (954-1002) इस वंश का सबसे महान शासक हुआ। उसके समय खजुराहो में कई मंदिर बने। इस वंश के अंतिम शासक परिमार्दिदेव को कुतुबुद्दीन ऐबक ने परास्त किया और चंदेल सत्ता समाप्त हो गई। हालांकि आगे एक सौ साल तक इस वंश के शासक बुंदेलखंड के कुछ भागों पर शासन करते रहे।

चेदि (त्रिपुरी) के कलचुरि

चेदि (त्रिपुरी) के कलचुरि हैहयवंशी क्षत्रिय थे और ये माहिष्मती के कलचुरियों की ही शाखा थे। माहिष्मती के कलचुरियों का एक वंशज वामराजा चेदि मंडल में आठवीं सदी में एक राज्य स्थापित करने में सफल हुआ जिसमें जबलपुर के आसपास का इलाका शामिल था, जो डाहल प्रदेश के नाम से भी जाना जाता था। इस वंश के कोकल्ल प्रथम (845-885) अपने समय का महानतम सेनानायक था। उसने भोज प्रथम परमार राष्ट्रकूट शासक कृष्ण द्वितीय, मेवाड़ के गुहिल वंश के हर्षराज और शाकंभरी के चौहान शासक को परास्त किया और पूर्वी बंगाल तक आक्रमण किये। राष्ट्रकूट वंश और चंदेलवंश से उसने वैवाहिक संबंध स्थापित किए। उसके अठारह पुत्रों में से एक को दक्षिण कोसल (छत्तीसगढ़) का मंडलेश्वर बनाया गया। उसने तुम्माण को अपनी राजधानी बनाया।

कलचुरि शासक युवराज प्रथम (915-945) शैव था। उसने भेड़ाघाट (जबलपुर) में चौसठ योगिनी का मंदिर बनवाया जो गोलकी मठ के नाम से प्रख्यात हुआ। महाकवि राजशेखर युवराज प्रथम के दरबार में था। गांगेयदेव (1019-1040) ने और उसके पुत्र लक्ष्मीकर्ण (1042-1072) ने बनारस, भागलपुर और पश्चिम बंगाल तक राज्य विस्तार किया। विजय सिंह के शासनकाल में चंदेल शासक त्रैलोक्यवर्मन ने डाहल प्रदेश पर अधिकार कर लिया।

रतनपुर के कलचुरि

यह बताया जा चुका है कि 9वीं सदी में त्रिपुरी के कलचुरियों के एक मंडलेश्वर ने दक्षिण कोसल में तुम्मान को अपना मुख्यालय बनाया था। इस मंडलेश्वर का वंश सवा सौ साल चला। फिर दूसरे मंडलेश्वर का शासन शुरू हुआ। 1045 में रत्नराज कलचुरि ने तुम्मान को त्यागकर रतनपुर को दक्षिण कोसल के अपने राज्य की राजधानी बनाया। जाजल्लदेव प्रथम इस वंश का प्रतापी शासक हुआ। उसने त्रिपुरी से संबंध तो नहीं तोड़ा पर यह वास्तव में स्वतंत्र हो गया। उसने बस्तर के नागवंशी शासक सोमेश्वर को भी पराजित किया। इस प्रतापी राजा का शासन उत्तर में अमरकंटक से दक्षिण में गोदावरी तक तथा पश्चिम में बरार से पूर्व में उड़ीसा तक फैल गया। रत्नदेव द्वितीय, पृथ्वीदेव द्वितीय और जाजल्लदेव द्वितीय के समय तक रतनपुर के कलचुरि शासकों की धमक कायम रही पर उसके बाद उनका

सिटीजन चार्टर आपके लिए खोलता है
हर दफ्तर के दरवाज़े
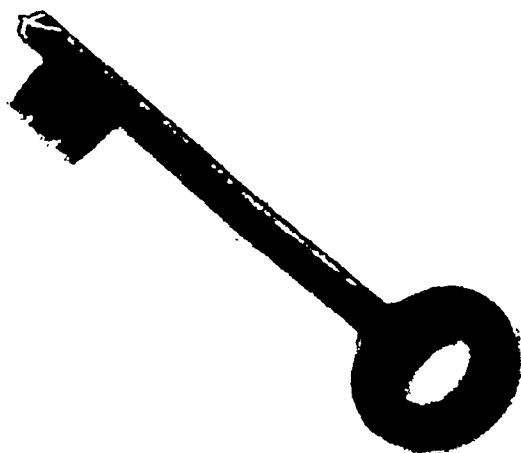
परेशान होने की जरूरत नहीं आपको। जब भी आपका कोई काम हो किसी सरकारी दफ्तर में तो सोच-विचार में मत पड़िये।

अब ऐसे सभी दफ्तरों में सिटीजन चार्टर लागू कर दिया गया है जहां आम जनता को काम पड़ता है।

सिटीजन चार्टर का मतलब है कि आपका काम तेजी से, सही वक्त पर और बगैर परेशानी के हो।

हर दफ्तर के बाहर ही एक बोर्ड पर साफ तौर पर लिख दिया गया है कि वहां आपके कौन-कौन से काम हो सकते हैं और उनके लिए दरख्वास्त किसे देना है।

दरख्वास्त की रसीद के साथ ही आपको यह भी बता दिया जाता है कि आपके मामले में फैसला कौन करेगा और कब तक करेगा। आपको सिर्फ बताये गये दिन पर ही आना है- बार-बार आने की परेशानी नहीं।

यही है सिटीजन चार्टर नाम की वह चाबी जो खोलती है हर दफ्तर के दरवाजे आपके लिए। आपके काम से।

अपना अधिकार अपनी सरकार

मध्यप्रदेश सरकार

प्रभाव संकुचित होता गया। 1200 ई. के बाद रतनपुर के कलचुरि शासकों के लेख नहीं मिलते किन्तु उनकी वंशावली मिलती है।

यह उल्लेखनीय है कि 15वीं सदी के प्रारंभ में रतनपुर के कलचुरियों की एक शाखा खल्लारी में स्वतंत्र हो गयी। बाद में इन्होंने रायपुर को अपनी राजधानी बनाया। रतनपुर और रायपुर के कलचुरी वंश मराठों के आने याने 18वीं सदी तक बने रहे।

दिल्ली के सुल्तान

तेरहवीं सदी प्रारंभ होते-होते दिल्ली सल्तनत का विस्तार मध्यप्रदेश के उत्तरी हिस्से में होने लगा। सबसे पहले मुहम्मद गौरी ने मध्यप्रदेश के उत्तरी भाग में स्थित ग्वालियर के हिन्दू शासक सोलंगदेव को हराकर ग्वालियर अधिकृत करके इल्तुतमिश को किले का अधिकारी नियुक्त किया था। 1210 में कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद 1230 तक तो हिन्दुओं का अधिकार रहा पर 1231 में फिर से उस पर इल्तुतमिश ने अधिकार कर लिया। इल्तुतमिश ग्वालियर क्षेत्र से आगे भी गया और 1234 में उसने विदिशा पर अधिकार किया और फिर उज्जैन को लूटकर दिल्ली लौट गया। सुल्तान इल्तुतमिश के बाद बलबन ने मालवा पर आक्रमण किया और बाद में 1258 में ग्वालियर अधिकृत कर लिया। 1305 में सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के सेनानायक ऐनुलमुल्क मुल्तानी ने मालवा पर आक्रमण करके मालवा के परमार शासक महलकदेव को पराजित किया और उज्जैन, माण्डू, धार और चंदेरी पर दिल्ली सल्तनत की सत्ता स्थापित कर दी। इस प्रकार दिल्ली सल्तनत का विस्तार अलाउद्दीन खिलजी के समय सतपुड़ा पर्वत के उत्तर के कुछ इलाकों पर तो हो गया था पर बघेलखंड, छत्तीसगढ़ और सतपुड़ा की उपत्यका का इलाका अभी उसके अधीन नहीं था। छत्तीसगढ़ में स्थित रतनपुर और रायपुर के कलचुरि राजवंश तो दिल्ली सल्तनत के अधीन कभी नहीं रहे।

14वीं सदी खत्म होते-होते दिल्ली सल्तनत कमजोर होने लगी और विभिन्न इलाके उससे क्रमशः स्वतंत्र होने लगे। मध्यप्रदेश में स्वतंत्र होनेवाले इलाके थे खानदेश और मालवा।

खानदेश का फारुकी वंश

मध्यप्रदेश में निमाड़ का इलाका तब खानदेश का हिस्सा था और यहां दिल्ली के सुल्तान फिरोजशाह तुगलक का सिपहसालार मलिक राजा फारुकी था। उसने दिल्ली सल्तनत की कमजोरी का फायदा उठाते हुए 1370 में खुद को स्वतंत्र घोषित कर दिया और इस प्रकार उसने खानदेश की फारुकी सल्तनत की स्थापना की। उसके बेटे मलिक नासिर ने असीरगढ़ के प्रसिद्ध और दुर्गम किले को छल से अधिकृत किया और 1407 में ताप्ती नदी के तट पर बुरहानपुर शहर की नींव रखी और उसे अपनी राजधानी बनाया। खानदेश को आसपास के बहमनी सुल्तानों मालवा के गोरी सुल्तानों और गुजरात के सुल्तानों से लगातार युद्ध करना पड़ा। अपनी कमजोर स्थिति के कारण फारुकी सुल्तानों ने अपने हितों की रक्षा करने के लिए तीनों से समय-समय पर विवाह संबंध कायम किये और समय-समय पर पक्षपरिवर्तन भी करते रहे। इस प्रकार वे करीब दो सौ साल तक अपना अस्तित्व बनाने में सफल हुए।

इस वंश के शासक आदिलखान द्वितीय के समय खानदेश की प्रतिष्ठा में बहुत वृद्धि हुई। उसने गोंडवाना के शासक को कर देने के लिए मजबूर किया और झारखंड तक धावे किये। इस वंश के राजा अली खान ने 16वीं सदी के अंतिम भाग में मुगल बादशाह अकबर की अधीनता स्वीकार की। उसने असीरगढ़ की जामा मस्जिद और बुरहानपुर की जामा मस्जिद का निर्माण भी कराया। बाद में बहादुरशाह फारुकी के समय अकबर ने 1601 में 6 माह के घेरे के बाद असीरगढ़ के किले को अधिकृत कर लिया। इस प्रकार 1601 में फारुकी सुल्तान समाप्त हो गये। खानदेश मुगल साम्राज्य में शामिल कर लिया गया और मध्यप्रदेश का निमाड़ क्षेत्र मुगल साम्राज्य के सूबा खानदेश का हिस्सा हो गया। इस इलाके में स्थित असीरगढ़ का किला और बुरहानपुर शहर मुगल काल में भी बहुत महत्वपूर्ण रहे।

खेरला का राज्य

14वीं सदी के प्रारंभ मे बैतूल जिले के खेरला में नरसिंगराय नाम राजपूत शासक ने एक राज्य की स्थापना की। चौदहवीं सदी के अंत में खेरला के नरसिंगराय ने अपनी शक्ति का इतना विस्तार किया कि उसके राज्य की सीमा कुछ ही सालों में पश्चिम में फारुकी सल्तनत से, दक्षिण में बहमनी सल्तनत से और उत्तर में मालवा की सल्तनत को छूकर लगी थी। आगामी तीन दशकों तक नरसिंह राय कभी मालवा और कभी बहमनी के सुल्तानों से जूझता रहा और सुविधानुसार उनमें से किसी की अधीनता स्वीकार करता रहा। अंततः 1433 में मालवा के गोरी सुल्तान होशंगशाह ने उसे पराजित करके मार डाला और खेरला मालवा के अधीन हो गया।

मालवा के सुल्तान

पन्द्रहवीं सदी प्रारंभ होते ही भारत के मध्य भाग में मालवा की स्वतंत्र सल्तनत की स्थापना एक महत्वपूर्ण घटना थी। इस सल्तनत की स्थापना दिलावर खान गोरी था जिसने तैमूर के आघात से निर्बल हुई दिल्ली सल्तनत से 1401 में स्वयं को स्वतंत्र कर लिया था। दिलावर खान गोरी के बेटे होशंगशाह के समय इस सल्तनत की प्रतिष्ठा में बहुत वृद्धि हुई। उसने धार के स्थान पर मांडू को अपनी राजधानी बनाया जहां उसने कई भव्य इमारतें बनवायीं। होशंगशाह ने हाथियों के लिए पूर्व की ओर सघन वनों में दूर तक अभियान किये और अपने राज्य का विस्तार नर्मदा नदी के दक्षिण तक किया।

होशंगशाह के बाद उसका बेटा मुहम्मद सत्तारूढ़ हुआ। मुहम्मद के बाद उसके वजीर ने सल्तनत हड़प ली और इस प्रकार मालवा के खिलजीवंश की शुरुआत हुई। इस वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक था महमूद खिलजी, जो महमूद बेगढ़ा के नाम से भी जाना जाता था। महमूद खिलजी ने मेवाड़ के महाराणा कुंभा से युद्ध किया था और दोनों स्वयं को विजयी बताते रहे। महमूद खिलजी के उत्तराधिकारियों के समय मालवा की सल्तनत का वजीर मेदनीराय अत्यंत प्रभावशाली

ो गया। बाद में मेदिनीराय ने चित्तौड़ के राणा सांगा की हायता से मालवा के एक भाग पर कब्जा कर लिया और दिनीराय के भाई सिलहदी सारंगपुर से रायसेन तक के लाके का स्वतंत्र शासक हो गया। मांडू पर महमूद खिलजी ारंगपुर से रायसेन तक के इलाके का स्वतंत्र शासक हो ाया। मांडू पर महमूद खिलजी द्वितीय का शासन बना रहा। 1530 में गुजरात के शासक बहादुर शाह ने मांडू के जीतकर मांडू के खिलजी राजवंश का अंतकर दिया और फेर उसने 1532 में रायसेन के किले को सिलहदी से छीन लेया।

करीब तेरह दशकों तक मालवा के गोरी और खिलजी सुल्तानों के समय मांडू एक वैभवपूर्ण नगर रहा। इसके विशाल और सुरक्षित किले के भीतर सैकड़ों इमारतों के ध्वंसावशेष इसकी वैभवगाथा सुनाते हैं। होशंगशाह का मकबरा, जामा मस्जिद, जहाज महल, हिंडोला महल, चंपा बावड़ी आज भी अच्छी हालत में विद्यमान हैं।

रीवा राज्य

चंदेलों के पतन के बाद बघेलखंड में काफी समय तक राजनीतिक शून्य रहा। फिर हम पन्द्रहवीं सदी के अंत में बघेल शासक भैदचंद्र का नाम सुनते हैं। भैदचंद्र (1470-95) दिल्ली के लोदी शासकों बहलोल लोदी और उसके बेटे सिकंदर लोदी का समकालीन था।

भैदचंद्र के पूर्वजों के बारे में जो जानकारी मिलती है, उसके अनुसार जब 14वीं सदी के शुरू में गुजरात पर अलाउद्दीन खिलजी का आक्रमण हुआ जब गुजरात के राजा कर्ण बघेल का एक वंशज कालिंजर आया। उसने पास में एक छोटा राज्य बना लिया जो भैदचंद्र के समय तक पर्याप्त बड़ा हो गया। भैदचंद्र को सिकंदर लोदी के आक्रमणों का सामना करना पड़ा। 1495 में भैदचंद्र की मृत्यु के बाद उसका पुत्र शालिवाहन शासक बना। शालिवाहन पर भी सिकंदर लोदी ने आक्रमण किया क्योंकि शालिवाहन ने उससे अपनी बेटी का विवाह करने से इंकार कर दिया था। शालिवाहन के बाद उसका बेटा वीरसिंह देव बांधवगढ़ के सिंहासन पर बैठा। मुगल बादशाह बाबर के संस्मरण बाबरनामा में उसका उल्लेख है। वीरसिंह एक महान विजेता था और काल तथा साहित्य का आश्रयदाता भी था। उसने 1540 तक राज्य किया। उसका पुत्र वीरभान उसका उत्तराधिकारी हुआ। वह मुगल बादशाह हुमायुं का मित्र था। संस्कृत ग्रंथों और वीरभानुदयकाव्यम और कथासरित्सागर में उसके शासन का विवरण मिलता है।

सन् 1555 में वीरभान की मृत्यु हो गई और उसका बेटा रामचंद्र उसका उत्तराधिकारी बना। रामचंद्र ने मुगल बादशाह की अधीनता स्वीकार कर ली। उसकी मृत्यु 1592 में हुई। कला और साहित्य की दृष्टि से उसका शासनकाल उल्लेखनीय है। उसका राज्य प्रयाग से अमरकंटक तक और कालिंजर से चुनार तक फैला हुआ था।

गढ़ा का गोंड राज्य

पन्द्रहवीं सदी के अंत में जबलपुर के आसपास के इलाके में गोंडों का एक राज्य उभर चुका था जो गढ़ा राज्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसकी राजधानी पहले गढ़ा थी पर संग्रामशाह के समय चौरागढ़ (नरसिंहपुर जिला) को राजधानी बनाया गया। 15वीं सदी खत्म होने के बाद जब इस राज्य की बागडोर आम्हणदास या संग्रामशाह के हाथ में पहुंची तो यह अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया। यह स्थिति 1564 तक बनी रही। इस राज्य की सीमा उत्तर में पन्ना से लेकर दक्षिण में सतपुड़ा पर्वत के पार तक और पश्चिम में इसकी सीमा रायसेन को छूती थी। तब भारत के हृदयस्थल में इससे बड़ा कोई राज्य नहीं था। संग्राम शाह के समय के बावन गढ़ों की सूची से राज्य के विस्तार का पता चलता है। संग्राम शाह पराक्रमी योद्धा होने के साथ ही संस्कृत का विद्वान था और विद्वानों का आश्रयदाता भी। उसने 1531 में रायसेन के घेरे के समय गुजरात के शासक बहादुरशाह को सहायता दी थी। कहा जाता है कि बहादुरशाह ने ही आम्हणदास को संग्रामशाह की पदवी दी थी। रीवा के बघेल शासकों से उसके आत्मीय संबंध थे।

संग्रामशाह ने 1541 तक राज्य किया और फिर उसका पुत्र दलदपतशाह सत्तारुढ़ हुआ। दलपत की पत्नी चंदेलवंश की कन्या दुर्गावती थी। दलपतशाह की मृत्यु 1549 में हो गयी। तब उसके अल्पायु पुत्र वीरनारायण को दुर्गावती के संरक्षण में शासक बनाया गया। दुर्गावती एक कुशल और लोकप्रिय प्रशासिका थी और बहादुर सैनिक भी थी। उसने मियाना अफगानों को और मालवा के शासक बाजबहादुर को परास्त किया था।

1564 में कड़ा मानिकपुर के मुगल सूबेदार आसफ खां ने गढ़ा राज्य पर आक्रमण किया और रानी दुर्गावती परास्त हुई और रणस्थल में ही शहीद हो गई। वीरनारायण भी चौरागढ़ की लड़ाई में वीरगति को प्राप्त हुआ। इसके बाद गढ़ा राज्य को मुगल साम्राज्य में शामिल करके मालवा सूबे की गढ़ा सरकार के रूप में रख दिया गया। कुछ साल तो मुगल अधिकारी यहां पदस्थ रहे पर बाद में दुर्गावती के वंशजों को मुगल साम्राज्य के अधिनस्थ रख दिया गया। यह राजवंश आगे 18 वीं सदी तक अस्तित्व में रहा।

देवगढ़ का गोंड राज्य

जिस समय गढ़ा राज्य का उदय हो रहा था तभी सतपुड़ा पर्वत की उपत्यकाओं में देवगढ़ (छिंदवाड़ा) में तुलोया ने एक राज्य कायम किया जो जाटबा के समय पर्याप्त शक्तिशाली हो गया। गढ़ा के शासक संग्रामशाह और दुर्गावती के समय तो यह उनकी अधीनता में रहा पर 1564 में गढा राज्य के पराभव के बाद यह स्वतंत्र हो गया। मुगल साम्राज्य की गढ़ा सरकार की सीमा से इस राज्य की सीमा लगी हुई थी पर दुर्गमता के कारण काफी समय तक मुगल इस पर प्रभावी नियंत्रण नहीं रख सके। कोकशाह प्रथम, केसरीशाह (जाटबा द्वितीय) और गोरखशाह (कोकशाह द्वितीय) के समय तक इसका विस्तार मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा, सिवनी, होशंगाबाद और बैतूल जिले में हो गया। शाहजहां और औरंगजेब के शासनकाल में देवगढ के शासक मुगल साम्राज्य के अधीन रहे पर औरंगजेब के समय देवगढ़ के

शासक बख्तबुलंद ने अपने राज्य की सुदूर स्थिति का लाभ उठाकर विद्रोह कर दिया जिसके कारण उसे सिंहासन खोना पड़ा। बाद में उसने समर्पण कर दिया। बख्तबुलंद की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारियों के समय देवगढ़ मराठों के अधीन हो गया और 1741 में नागपुर के भोंसला शासक रघुजी ने उसका अंत कर दिया।

मुगल आधिपत्य

इस समय तक उत्तर भारत में 1526 में बाबर द्वारा मुगल साम्राज्य की स्थापना हो चुकी थी। जल्दी ही मध्यप्रदेश का उत्तरी भाग मुगल साम्राज्य का हिस्सा हो गया। 1528 में बाबर स्वयं ग्वालियर आया था। उसके उत्तराधिकारी हुमायूं ने आगे बढ़कर 1532 में मालवा तक धावा करके गुजरात के बहादुरशाह को वहां से खदेड़ा और मालवा भी मुगल साम्राज्य के अंतर्गत हो गया। पर मालवा पर मुगलों का यह आधिपत्य 1537 में खत्म हो गया और वहां कादिरशाह स्थापित हो गया। 1545 में शेरशाह सूरी के हाथों हुमायूं के पराभव के बाद मध्यप्रदेश के ग्वालियर क्षेत्र पर शेरशाह सूरी का अधिकार हो गया। कुछ समय बाद शेरशाह ने मालवा पर भी अधिकार कर लिया और शुजात खां को उसने मालवा का सूबेदार नियुक्त कर दिया। शेरशाह के उत्तराधिकारियों के समय भी मालवा और मध्यप्रदेश का उत्तरी भाग दिल्ली के अधीन रहा। पर फिर शुजात खां मालवा में स्वतंत्र हो गया। जब 1556 में हुमायूं का बेटा अकबर मुगल साम्राज्य के सिंहासन पर बैठा तब मालवा में शुजात खां का बेटा बाजबहादुर स्थापित था। यदि उन दिनों कोई मध्यप्रदेश पर नजर डाली जाय तो मालूम होता है कि बुंदेलखंड में बुंदेले शासक स्वतंत्र रूप से राज्य कर रहे थे। बघेलखंड में रीवा का राज्य भी स्वतंत्र था और सतपुड़ा पर्वत की उपत्यकाओं में गढ़ा राज्य पर रानी दुर्गावती का शासन था। मध्यप्रदेश का पश्चिमी भाग निमाड़ फारुकी वंश के पास था और छत्तीसगढ़ के इलाके में तब रतनपुर के और रायपुर के कलचुरी शासक स्वतंत्र थे।

अकबर के समय मध्यप्रदेश क्रमशः मुगल साम्राज्य के छत्र के नीचे आता गया। उत्तरी मध्यप्रदेश पर तो पहले से मुगलों का अधिकार था। फिर सबसे पहले 1562 में बाजबहादुर को परास्त करके अकबर ने मालवा पर अधिकार किया। इसके बाद 1564 में कड़ा मानिकपुर के मुगल सूबेदार आसफ खां ने गढ़ा राज्य को विजित कर लिया और गढ़ा राज्य भी मुगल साम्राज्य में शामिल कर लिया गया। ओरछा के शासक मधुकरशाह ने और रीवा के राजा ने भी अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली। खानदेश के शासक राजा अली खान ने भी अकबर की अधीनता स्वीकार की पर बाद में उसके उत्तराधिकारियों से नाराज होकर अकबर ने 1601 में असीरगढ़ के प्रसिद्ध किले को जीतकर खानदेश को भी अधिकृत कर लिया और निमाड़ पर भी मुगल सत्ता स्थापित हो गई। इस प्रकार अकबर के समय छत्तीसगढ़ के इलाके और देवगढ़ के इलाके को छोड़कर लगभग पूरा मध्यप्रदेश मुगल साम्राज्य के अधीन हो गया।

ये इलाके काफी दुर्गम थे इसलिए इनपर जल्दी मुगलों का अधिकार नहीं हो पाया।

देवगढ़ के गोंड राज्य ने भी मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली। छत्तीसगढ़ सम्भवतः मुगलों की पकड़ से तब बाहर ही रहा। इस प्रकार छत्तीसगढ़ छोड़कर लगभग पूरा मध्यप्रदेश मुगलों की सत्ता के अंतर्गत आ गया। शाहजहां के समय ओरछा के शासक जुझारसिंह ने मुगलों के खिलाफ विद्रोह किया जिससे उसे परास्त करने के बाद ओरछा को भी मुगल साम्राज्य में शामिल कर लिया गया। पर बुन्देलखंड के कुछ स्थानीय शासकों ने मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं थी और इसके बाद बुंदेलखंड में मुगलों के विरुद्ध एक लंबा विद्रोह शुरू हो गया। बुन्देला शासक चंपतराय और बाद में छत्रसाल ने जिस वीरता का प्रदर्शन किया वह बुन्देलखड के इतिहास की अमिट गौरवगाथा है।

चंपतराय बुंदेला ने शाहजहां के विरुद्ध शस्त्र उठाए। उसने 1639 में तो सिरोंज, भिलसा और धामोनी तक लूटमार की। मुगल उत्तराधिकार युद्ध में चंपतराय ने औरंगजेब का पक्ष लिया, पर बाद में उसने औरंगजेब के विरुद्ध फिर संघर्ष छेड़ दिया। अंत में 1661 में यह रणबांकुरा मारा गया। पर बुंदेलखंड में मुगलों के खिलाफ बुन्देलों का संघर्ष थमा नहीं। संघर्ष की पताका अब चंपतराय के पुत्र छत्रसाल ने थाम ली। आगामी पचास साल तक छत्रसाल बुंदेला बुंदेलखंड में मुगलों के विरुद्ध युद्ध करता रहा। एक लंबे संघर्ष के बाद 1706 में छत्रसाल ने औरंगजेब की सेवा करना स्वीकार किया और वह मंसबदार हो गया। आगामी 18 साल याने 1724 तक उसके संबंध परवर्ती मुगल शासकों से अच्छे बने रहे।

मराठों के अधीन

1699 के बाद मध्यप्रदेश के पश्चिमी भाग में स्थित मालवा और निमाड़ पर मराठों के धावे लगातार होने लगे। नीमाजी सिंधिया, कान्होजी भोंसले और खांडेराव दाभाड़े आदि ने धावे किये और मालवा के मुगल अधिकारी परेशान होते रहे। 1719 में छत्रपति शाहू ने पेशवा बाजीराव को मालवा में चौथ वसूल करने का अधिकार दिया यद्यपि तब मालवा मुगल साम्राज्य का हिस्सा था। छत्रपति शाहू द्वारा अनुमति मिलने पर पेशवा बाजीराव के धावे बढ़ गए और उसने मालवा में चौथ वसूलने के लिए अपने अधिकारी नियुक्त कर दिए। 1725 में मालवा का सूबेदार नियुक्त होते ही गिरधर बहादुर ने मालवा से मराठा अधिकारियों को निकाल बाहर किया। पर गिरधर बहादुर अधिक समय तक निश्चित न रह सका। 1728 में अजमेरा की लड़ाई में बाजीराव ने गिरिधर बहादुर को पराजित किया और युद्ध में गिरधर बहादुर मारा गया। अब मराठों ने सारे मालवा से खूब धन वसूला और लूटमार की। मालवा में अब उन्हें रोकने वाली कोई ताकत नहीं थी। 1730 में पेशवा बाजीराव ने मल्हारराव होल्कर को मालवा का प्रभारी बनाया और राणोजी सिंधिया को भी मालवा के मामलों की देखरेख के लिए रख लिया। बाद में 1732 में पेशवा बाजीराव ने मालवा के तीन हिस्सों को क्रमशः मल्हारराव [illegible]

सबसे बड़े प्रदेश के लिए नहीं थी काफी एक राजधानी इसलिए

हमने बनायीं 61 राजधानियाँ

दूसरे प्रदेशों में तो एक ही राजधानी होती है जहां होते हैं बड़े-बड़े फैसले। लेकिन हम मध्यप्रदेश के लोगों के लिए हर जिले की अपनी है अलग राजधानी। यकीन मानिये, मध्यप्रदेश के पूरे 61 जिलों में - हम ही करते हैं बड़े-बड़े फैसले अपने-अपने जिले के लिए।

मध्यप्रदेश में जिला सरकार ने पूरा किया है अपना पहला साल। ये एक साल रहा है जिम्मेदार, भरोसेमंद और सजग ढंग से सरकार चलाने का। ये एक साल रहा है सरकार चलाने में हमारी पूरी भागीदारी का।

मध्यप्रदेश

61 राजधानियों वाला प्रदेश

सिंधिया और उदाजी पवार के जिम्मे कर दिया जिससे वे वहां चौथ वसूली कर सकें।

इसी बीच एक महत्वपूर्ण घटना बुंदेलखंड में घटी। इलाहाबाद के मुगल सूबेदार मुहम्मद बंगाश ने 1729 में पन्ना के राजा छत्रसाल पर आक्रमण कर दिया। छत्रसाल ने बंगाश के विरुद्ध पेशवा बाजीराव से सहायता मांगी। बंगाश पराजित हुआ और इस सहायता के बदले छत्रसाल ने बाजीराव को अपना तीसरा बेटा मानकर अपने राज्य का एक तिहाई भाग देने का वादा किया। 1731 में छत्रसाल की मृत्यु के बाद पेशवा बाजीराव को कालपी, सागर, सिरोंज, इटा, गढ़ाकोटा और हृदयनगर के इलाके मिले और पहली बार मध्यप्रदेश में, या कहें, उत्तर भारत में मराठों का राज्य कायम हुआ।

आगामी दस वर्षों में मराठों ने मालवा और पास के इलाकों पर इतने धावे किये कि मुगल बादशाह को उन्हें खदेड़ने के लिए बड़ा कदम उठाना पड़ा। उसने आसफजाह निजामुल्मुल्क को यह काम सौंपा। दिसंबर 1737 में भोपाल में निजाम और पेशवा बाजीराव की सेनाओं में मुकाबला हुआ। निजाम की हार हुई और 7 जनवरी 1738 को दोराहा सराय की संधि में चंबल के दक्षिण के इलाके पर मुगलों ने मराठों की प्रभुसत्ता मान ली और पेशवा को इस क्षेत्र के राजाओं से कर वसूल करने का अधिकार मिल गया।

इसके बाद रघुजी भोंसला ने कुछ ही वर्षों में देवगढ़ के गोंड राजा पर और रतनपुर राज्य पर अधिकार कर लिया और 1742 में गढ़ा मंडला के गोंड राजा को अपना करद बना लिया। फिर उसने 1750 में रायपुर के कलचुरियों को परास्त कर सारे छत्तीसगढ़ पर अधिकार कर लिया। [illegible] साल तो रायपुर और रतनपुर के कलचुरि शासक भोंसला के अधीनस्थ रहे पर 1757-58 में इनके राज्यों पर भोंसला का प्रत्यक्ष शासन स्थापित हो गया। गढ़ा मंडला पर भी 1784 में पेशवा के सागर स्थित प्रतिनिधि का अधिकार हो गया। फिर 1798 में छत्रपति के कहने पर गढ़ा-मंडला का इलाका पेशवा से लेकर भोंसला को दे दिया गया। तात्पर्य यह कि 1784 तक बुंदेलखंड के कुछ भाग और बघेलखंड को छोड़कर संपूर्ण मध्यप्रदेश पर मराठों की सत्ता स्थापित हो गयी। कुछ साल बाद बघेलखंड के रीवा राज्य को भी मराठों के आगे झुकना पड़ा।

मराठा सरदारों में होल्कर और सिंधिया अत्यंत ताकतवर और प्रभावशाली थे। मराठा राजनीति में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की और मध्यप्रदेश में अपने राज्यों को उन्होंने विस्तार दिया और मजबूती दी। मल्हारराव होल्कर की मृत्यु 1766 में हुई। मल्हारराव की मृत्यु के बाद उसकी पुत्रवधू अहिल्याबाई ने होल्कर राज्य का शासन सम्भाला। वह [illegible] प्रशासिका और अत्यंत धार्मिक महिला थी। उसे लोगों ने देवी जैसा सम्मान दिया। अहिल्याबाई की मृत्यु के बाद होल्कर राज्य की सत्ता जसवंतराव के हाथों में आ गयी। सिंधिया ने उज्जैन को अपना केन्द्र बनाया था। पानीपत के तीसरे युद्ध के बाद महादजी सिंधिया ने मराठा शक्ति का [illegible] करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 1765 में उसने जाटों से ग्वालियर का किला छीन लिया फिर उसने दिल्ली के मुगल दरबार की राजनीति में भी हस्तक्षेप किया। दिल्ली में मुगल सम्राट शाहआलम को गुलाम कादिर के कठोर नियंत्रण और अत्याचार से महादजी ने मुक्ति दिलाई जिसके बदले मुगल सम्राट ने महादजी को अपना वकील (प्रधानमंत्री) बनाया। इस तरह महादजी के अंतर्गत मराठा शक्ति ने पुनः प्रखरता हासिल की। 1794 में महादजी की मृत्यु हो गयी। मराठा संघ के लिए यह दुर्भाग्य की बात थी कि कुछ सालों के अन्तर पर मराठों के प्रभावशाली और योग्य नेता स्वर्गवासी हो गये। नाना फड़नवीस, महादजी सिंधिया और अहिल्याबाई के अवसान से मराठों के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लग गया। इन तीनों की अनुपस्थिति में नागपुर के भोंसला शासक का महत्व बढ़ गया। भोंसला का इलाका सभी मराठा सरदारों की तुलना में विशाल था। भोंसला की सेनाओं ने उड़ीसा और बंगाल तक धावे किये थे। मध्यप्रदेश का विशाल इलाका तब उसके पास था, जिसमें छत्तीसगढ़ और देवगढ़ राज्यों से लिए गए इलाके थे। इनमें बालाघाट, मंडला, नरसिंहपुर, जबलपुर, दमोह, सागर, होशंगाबाद, छिंदवाड़ा, सिवनी और बैतूल जिलों वाला क्षेत्र आता था। याने करीब आधे से ज्यादा मध्यप्रदेश तब भोंसला के अधीन था।

ब्रिटिश आधिपत्य

सन् 1800 ई. के बाद मध्यप्रदेश में अंग्रेजों का प्रभाव तेजी से बढ़ा। इस समय नर्मदा नदी के दक्षिण का प्रदेश (निमाड़ छोड़कर) भोंसला के अधीन था। रीवा और बुंदेलखंड की रियासतों को छोड़कर उत्तरी मध्यप्रदेश का शेष भाग क्रमशः होल्कर, पवार और सिंधिया के अधीन था। इधर भोपाल के आसपास का इलाका भोपाल के नवाब के अधीन था। लार्ड वेलेजली के समय की गई सहायक संधियों से ये सभी राज्य अंग्रेजों के संरक्षण में चले गये और इनकी सेनाएं भंग कर दी गईं।

मराठा सेनाओं के भंग होने के कारण बेकार हुए सैनिकों ने लूटमार के लिए गिरोह बना लिये और करीब 15 साल तक मध्यप्रदेश में पिंडारी और पठान लुटेरों का आतंक रहा।

लार्ड हेस्टिंग्ज के समय पिंडारियों के विनाश के लिए अंग्रेजों ने मराठों का भी सहयोग लिया किंतु अंततः मराठों से अंग्रेजों की निर्णायक लड़ाई हुई जो तीसरे मराठा युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। तीसरे मराठा युद्ध में पेशवा, भोंसला, होल्कर और सिंधिया सभी को मुंहकी खानी पड़ी। अप्पा साहब भोंसला भाग खड़ा हुआ और नर्मदा के उत्तर का उसका सारा इलाका अंग्रेजों ने अपने साम्राज्य में शामिल कर लिया। सिर्फ बरार और छत्तीसगढ़ का इलाका उसके पास बना रहा। पेशवा की हार के बाद मध्यप्रदेश में जो उसका इलाका था वह अंग्रेजों के हाथ में चला गया। छत्तीसगढ़ 1818 से 1830 तक ब्रिटिश संरक्षण में रहा और फिर पुनः भोंसला को वापस कर दिया गया। अंग्रेजों से सिंधिया ने बुरहानपुर और छत्तीसगढ़ छोड़कर पूर्वी निमाड़ और हरदा तथा टिमरनी ले लिए। होल्कर का राज्य सीमित कर दिया गया। मध्यभारत के जो छोटे-छोटे राजा

मराठों के सामंत थे उन्हें अंग्रेजों ने राजा मान लिया और उनके साथ संधियां कर लीं। बुंदेलखंड के राजाओं को भी उन्होंने मान्यता दे दी। मालवा में भी जो छोटे-छोटे राजा होल्कर और सिंधिया के अधीन थे उन्हें राजा मान लिया गया और उनसे अलग से संधियां की गई। भोपाल और बघेलखंड के शासकों से भी संधि की गई और वे ब्रिटिश संरक्षण में आ गए। इन रियासतों पर नियंत्रण रखने के लिए कई स्थानों पर ब्रिटिश सैनिक छावनियां रखी गई।

1818 के बाद की स्थिति पर नजर डालें तो पता चलता है कि मध्यप्रदेश के वर्तमान नीचे लिखे जिले तब अंग्रेजों के सीधे अधिकार में थे-पूर्वी निमाड़, होशंगाबाद, हरदा, बैतूल छिंदवाड़ा, बालाघाट, सिवनी, मंडला, डिंडोरी, नरसिंहपुर, जबलपुर, कटनी, दमोह और सागर। बाकी इलाका अधीनस्थ देशी रियासतों को पास रहा। 1856 में लार्ड डलहौजी के समय जब नागपुर राज्य को अंग्रेजों ने हड़प लिया तो उसका इलाका भी अंग्रेजी राज्य के अधीन हो गया। इसमें से छत्तीसगढ़ की कुछ रियासतें जो भोंसला के अधीन थीं उनसे संधियां करके उन्हें राजा मान लिया गया और बाकी छत्तीसगढ़ सीधे ब्रिटिश नियंत्रण में ले लिया गया। इस प्रकार 1856 तक मध्यप्रदेश का कुछ भाग याने महाकोशल का हिस्सा अंग्रेजों के सीधे नियंत्रण में था और बाकी इलाका अंग्रेजों का संरक्षण स्वीकार कर चुकी अधीनस्थ रियासतों के अंतर्गत था। याने पूरा का पूरा मध्यप्रदेश ब्रिटिश आधिपत्य में था।

1857 का विप्लव

मध्यप्रदेश पर ब्रिटिश आधिपत्य होने के बाद ही ब्रिटिशों के विरुद्ध असंतोष की आग सुलगने लगी। इसका पहला संकेत 1842 के बुंदेला विद्रोह में मिलता है, जो नर्मदा घाटी में बड़े व्यापक रूप में फैला। दुर्भाग्य से विद्रोहियों में आपसी तालमेल न होने के कारण यह विद्रोह दबा दिया गया।

इसके बाद 1857 के विप्लव की आग से मध्यप्रदेश प्रभावित हुआ। अनेक स्थानों पर स्थानीय राजाओं, जागीरदारों ने विद्रोह किया। 1857 को नीमच छावनी की सैनिक टुकड़ियों ने विद्रोह कर दिया। पर किले पर कर्नल सी.बी. सोवर्स ने आकर अधिकार कर लिया। महीदपुर और मन्दसौर के क्रान्तिकारी भी नीमच पर आक्रमण करते रहे पर सफल न हुए। 14 जून 1857 को मुरार छावनी में विद्रोह हो गया और कुछ समय के लिए उन्होंने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। 20 जून को शिवपुरी में विद्रोह हो गया। 1 जुलाई की सुबह शहादत खां पठान तथा भागीरथ सिलावट ने विद्रोह करके अंग्रेजी सैन्य टुकड़ी को हराया। होल्कर शासक ने भी इन विद्रोहियों की परोक्ष सहायता की। आतंकित अंग्रेज सैन्याधिकारी अपनी रक्षा के लिए सीहोर चले गए जो अंग्रेजों की अनन्य समर्थक भोपाल की नवाब सिकंदर बेगम की रियासत में था। भोपाल के बेगम की सहायता से अंग्रेजों ने इंदौर का विद्रोह दबा दिया।

महू के सैनिकों ने भी 1 जुलाई को विद्रोह कर दिया। अगले दिन धार, अमझेरा सरदारपुर तथा भोपावर में भी अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह हो गया। इसी समय विद्रोहियों ने मंदसौर में स्वतंत्र राज्य की स्थापना कर ली। मंडलेश्वर [illegible] सेना ने विद्रोह करके सेंट्रल जेल पर धावा किया औ[illegible] खजाना लूट लिया। करीब दो साल तक मंडलेश्वर प[illegible] विद्रोहियों का कब्जा रहा। 1857 में उन्हें हराकर अंग्रेज[illegible] द्वारा सामूहिक फांसी दे दी गई। पश्चिमी निमाड़ में सेंधव[illegible] ने आदिवासियों के नेता भीमा नायक के नेतृत्व में विद्रोह क[illegible] दिया जो बाद में दबा दिया गया।

उन्हीं दिनों बिठूर में स्थित नाना साहब पेशवा ने औ[illegible] तात्या टोपे ने भी अंग्रेजों के विरुद्ध शस्त्र उठा लिये जिसस[illegible] मध्यप्रदेश के सैनिक विद्रोह को बल मिला। झांसी की रान[illegible] लक्ष्मीबाई ने भी विद्रोह कर दिया और तात्या टोपे के साथ 22 मई 1858 को सर ह्यूरोज की सेना से लोहा लिय[illegible] किंतु उन्हें पराजय मिली। तात्या टोपे भाग खड़े हुए। कह[illegible] जाता है कि वे नर्मदा पार करके बैतूल के इलाके में गये और फिर वहां से पश्चिम भारत चले गये। अंग्रेजी विवरण बताते हैं कि वे पकड़ लिये गये और उन्हें शिवपुरी में फांसी दे दी गयी। रानी लक्ष्मीबाई भी अंग्रेजी सेना से लड़ते-लड़ते 28 जून 1858 को शहीद हो गई।

छत्तीसगढ़ का इलाका उत्तर भारत से दूर और उससे कटा होने पर भी विद्रोह से अछूता न रहा। सोनाखान के शासक नारायण सिंह ने अंग्रेजों की सेना से टक्कर ली लेकिन वे पराजित हुए और उन्हें 19 दिसंबर 1957 को तोप से उड़ा दिया गया। विवादास्पद है संबलपुर के क्रान्तिकारी सुरेन्द्रसाय को बंदी बनाकर मृत्युपर्यन्त दुर्गम असीरगढ़ के किले में रख दिया गया।

महाकोशल के इलाके में शेख रमजान के नेतृत्व में सागर में विद्रोह हुआ। जबलपुर में रानी दुर्गावती के वंशज शंकरशाह और रघुनाथ शाह को विद्रोहात्मक प्रवृतियों के कारण खुले आम तोप से उड़ा दिया गया। राघवगढ़ के राजा सरजूप्रसाद ने भी विद्रोह किया और उन्हें आजीवन कारावास की सजा देकर बनारस में कैद रखा गया। उधर मंडला के रामगढ़ की रानी अवंतीबाई ने विद्रोह किया और पूरा मंडला जिला विद्रोह की आग में सुलग उठा। वहां के कलेक्टर केप्टिन वेडिंग्टन को मंडला छोड़कर सिवनी भागना पड़ा। रानी के सहयोगी शहपुरा और सोहागपुर के ठाकुर थे। बाद में रीवा राज्य की सेना की मदद से रानी और उसके सहयोगियों को पराजित कर दिया गया। रानी अवंतीबाई ने पराजय के अपमान से बचने के लिए आत्महत्या कर ली और इस प्रकार सतपुडा के सुदूर इलाके की यह वीरांगना शहीद हो गई। रामगढ का राज्य अंग्रेजों ने जप्त कर लिया और सोहागपुर का इलाका पुरस्कार के रूप में रीवा के राजा को दे दिया गया और बाकी भाग रानी के विरुद्ध लड़ने वाले दो ब्राह्मण सैनिकों को जमींदारी के रूप में दे दिए गए।

प्रदेश के अन्य स्थानो पर भी स्थानीय मालगुजारों और तालुकदारो ने बगावत की। इस प्रकार मध्यप्रदेश के अधिकाश भाग ने 1857 के विप्लव में हिस्सा लिया। यह मानना भूल है कि नर्मदा नदी के [illegible] में विद्रोह नही हुआ। मंडला और छत्तीसगढ़ [illegible] इसकी प्रमाण हैं।

पौराणिक गाथा

मध्य भारत का क्षेत्र ऐतिहासिक महत्व की दृष्टि से अद्धितीय है। 1 नवंबर 1956 में गठित मध्य भारत का क्षेत्र मध्य प्रदेश वना। इतिहासकारों के अनुसार महाकौशल का भाग रामायण काल के दंडकारण्य का अंग था। यमुना से गोदावरी का यह विस्तृत भू-भाग राजनीतिक दृष्टि से 'अयोध्या' के आधीन था।

जवलपुर जिले की सिहोर तहसील में स्थित रूपनाथ ग्राम की चट्टान पर अंकित 326-184 इ.पू. अशोक का शिलालेख महान सम्राट अशोक की स्मृति दिलाता है। महान राजा अशोक का उत्थान उज्जैन से हुआ था।

मध्य प्रदेश का एक विशाल भाग गुप्त साम्राज्य (30-550 इ.पू.) का हिस्सा था। काडफिसिस प्रथम के नेतृत्व में मध्य एशिया के युशई कुशानों ने कावुल के अंतिम-भारतीय यूनानी राजा हदमेआस की सत्ता समाप्त कर दी। सम्राट कनिष्क जिन्होंने वौद्ध मत स्वीकार कर लिया था इस वंश के सवसे प्रतापी और विख्यात सम्राट थे। इस वंश के अंतिम सम्राट रूद्रसेन को गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय ने 388 ई. में वधकर दिया और राज्य को गुप्त साम्राज्य में मिला दिया। गुप्त साम्राज्य के विघटन के वाद तोरमान के नेतृत्व में श्वेत हूणों ने इस क्षेत्र पर 500 ई. में अपना अधिकार जमा लिया। कालक्रम में मगध सम्राट वालादित्य और मध्य भारत के राजा यशोवर्धन ने 528 इ. में हूणों को पराजित कर दिया।

पौराणिक गाथाओं के अनुसार चंद्रवंशीय राजा ययाति ने सन्यास ग्रहण, करते समय शरमणवली (चंवल) और शुखीमति (फिन) नदियों के वीच का भूभाग अपने पुत्र यदु को सौंप दिया था। यदु यादवों और हैहयों के आद्यपुरुष माने जाते हैं।

मध्य युग में वघेले राजपूत वघेलखंड और वुंदेले वुदेलखंड के शासक थे। भारत के सांस्कृतिक इतिहास में कला और ज्ञान के संरक्षकों तथा संवर्धकों के रूप में इनका नाम सुरक्षित है।

11वीं शताव्दी में मुस्लिम आक्रमणकारी, पहले महमूद गज़नी और फिर मुहम्मद गौरी मध्य भारत में आये और इसका कुछ हिस्सा दिल्ली सल्तनत में मिल गया।

वाद में यह मुगल साम्राज्य का भाग वना। मराठों के उत्थान के वाद यहां के वड़े क्षेत्र पर मराठों का प्रभुत्व रहा और वाद में यह छोटी-छोटी रियासतों में वंट गया। मध्यकालीन इतिहास में मध्य प्रदेश की अनेक महिला शासकों ने भी यश प्राप्त किया। इसमें प्रमुख थी रानी अहिल्यावाई, इंदौर की होल्कर, गोंड महारानी कमला देवी और रानी दुर्गावती।

अंग्रेजों के दमनीय शासन की परिणति 1857 में पहले स्वाधीनता संग्राम से हुई। मध्य प्रदेश के महाकौशल क्षेत्र में 18 जून 1857 को एक सिपाही ने अंग्रेजी सेना के एक अधिकारी पर घातक हमला दिया। फलस्वरूप उसे फांसी की सजा हुई। जुलाई को शेख समझान के नेतृत्व में एक घुड़सवार सैनिक टुकड़ी ने सागर में विद्रोह कर दिया। विजयाराघवगढ़ के अल्पायु राजा ठाकुर सरजूप्रसाद ने भी अंग्रेजों से टक्कर ली पर 1865 ई. में उन्हें पकड़कर वनारस में आजीवन कारावास में डाल दिया गया जहां उन्होंने वीरगति प्राप्त की। मंडला के श्री वहादुर और देवी सिंह तथा रायपुर के जमींदार नारायणसिंह भी अंग्रेजों द्वारा फांसी पर लटका कर शहीद कर दिये गये।

महू में देशी सैनिकों ने मई के दूसरे सप्ताह में इन्दौर छावनी पर आक्रमण करने का निश्चय किया और होल्कर सेना से गुप्त वातचीत प्रारंभ कर दी। अंग्रेजी सरकार सतर्क थी अत: कुमुक आ जाने से उक्त योजना पर अमल नहीं हो सका। लेकिन 3 जून को नीमच में पैदल सेना तथा घुड़सवार टुकड़ियों ने रात 9 वजे विद्रोह का झंडा वुलंद कर दिया। उन्होंने नीमच छावनी के वैरकों में आग लगा दी और किले पर अधिकार करने का प्रयास किया। लेकिन उदयपुर के कर्नल सी.एन. शावर्स ने राजपूत सैनिकों को साथ लेकर नीमच के किले पर अधिकार कर लिया।

इसी प्रकार 14 जून 1857 को रात्रि 9 वजे ग्वालियर के निकट मुरार छावनी में सैनिक विद्रोह हुआ। सैनिकों ने ग्वालियर शिवपुरी के वीच तार की लाईनें काट दी और वंवई आगरा मार्ग की मुख्यसंचार व्यवस्था को खतरा उत्पन्न हो गया।

20 जून को शिवपुरी में विद्रोह हुआ जिसके कारण वहां से अंग्रेज अधिकारियों को गुना जाना पडा। इस वीच वुन्देलखड के स्थानीय सिपाहियों ने भी विद्रोह कर दिया कर्नल डयूरेंड की सतर्कता और कर्नस स्टाकले, कर्नल ट्रवर्न, कप्तान लुडलो एवं कप्तान कोव के इन्दौर रहने के वावजूद 1 जुलाई 1857 को प्राप्त सादत खा और भागीरथ के नेतृत्व में होल्कर ने सेना को अपने नियत्रण से वाहर वतकर अप्रत्यक्ष: देशभक्तों को सहायता दी। परिणामत: होकर की सेना तथा अग्रेजों के वीच कोठी के सामने युद्ध हुआ। इसमे 20 अगेज अधिकारी मारे गये और लगभग 13 लाख रु का माल देशभक्तों के हाथ लगा। कर्नल डयूरेंड वचते हुए अपने साथियों, महिलाओं तथा वच्चों को लेकर सीहोर चला गया जहा भोपाल की वेगम सिकन्दर ने उनकी सहायता की और सीहोर में विद्रोह को दवा दिया। कर्नल डयूरेंड फिर होशगावाद होकर अगस्त में महू छावनी लौट ग[illegible]

इन्दौर की भाति महू में भी सैनिक विद्रोह [illegible] सैनिकों ने तीन अधिकारियों को मार डाला [illegible] गये। महाराज होल्कर ने उन्हें शस्त्र दिये और [illegible] की सराहना की। [illegible] इन्दौर [illegible]

समाचार तेजी से चारों ओर फैल गया और 2-3 जुलाई को धार, अमझेरा, सरदारपुर तथा भोपावर में भी अंग्रेज शासन के विरुद्ध सैनिक उठ खड़े हुए।

तात्याटोपे, जिन्होंने नानासाहव पेशावा के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध छेड़ा था, 6 दिसंबर को सर कोलिन केम्पवेल द्वारा पराजित हुए, तथापि उन्होंने उत्तरी मध्य भारत में अंग्रेज विरोधी अभियान जारी रखा। जनवरी 1958 में सर ह्यरोज ने सागर तथा वुन्देलखंड में विद्रोह को सफलता पुर्वक दवा दिया।

झांसी की रानी लक्ष्मीवाई 4 अप्रैल को कालपी पहुंची जहां तात्याटोपे की सेना तैयार थी। इन दोनों की सेनाएं 22 मई को कालपी में ह्यूरोज की शक्तिशाली सेनाओं से हार गईं। तव रानी लक्ष्मीभाई और तात्याटोपे ग्वालियर की ओर वढ़े, जहां उन्होंने महाराजा सिंधिया को परास्त कर ग्वालियर के किले पर अधिकार जमा लिया। महाराजा सिंधिया आगरा चले गए। किन्तु ह्यूरोज ने पीछा नहीं छोडा। उसने ग्वालियरं पर आक्रमण कर दिया। दोनों सेनाओं में जमकर संघर्ष हुआ। रानी लक्ष्मीवाई ने पुरुष वेश में लड़ते हुए अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये। तथपि वे वुरी तरह घायल हो गई और 28 जून 1858 को उनकी मृत्यु गई। 1919 में सेठ गोविन्ददास मध्य प्रदेश (सी.पी.एंड वरार) में स्वतंत्रता संग्राम का नवमंत्र लेकर आए। उनके साथी सर्वश्री केशव रामचन्द्र खांडेकर, प. माखनलाल चतुर्वेदी, प. रविशंकर शुक्ल, नाथुराम मोदी, घनश्याम सिंह गुप्त आदि कर्मवीरों ने इस संघर्ष को और तीव्र किया। सेठजी द्वारा महाकोशल में स्वराज पार्टी के गठन में प. द्वारकाप्रसाद मिश्र का योगदान उल्लेखनीय रहा। 1930 में जवलपुर, कटनी, सिहोरा, मंडला, दमोह, रायपुर आदि सव जगह नमक का काला कानून भंग किया गया। वेतूल में जंगल सत्याग्रह में निरीह गोंड अंग्रेजों की वर्वरता के शिकार हुए। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में चोटी के सभी नेता वन्दी वनाए गए। सन् 1942 की क्रांति में प्रदेश के 5,000 कार्यकर्ता शामिल हुए। घोड़ाडोंगरी, नाडिया, पट्टण, चिमूर और आष्टा में अंग्रेजों ने सत्याग्रहियों पर गोलियां वरसाई। दमोह के प्रेमचन्द, मानेगांव के ठाकुर रुद्रप्रतापसिंह, चिचली के मशाराम आदि वीरों के वलिदान से स्वाधीनता संग्राम का इतिहास भरा पड़ा है। इनके अलावा अन्य कई अज्ञात वीरों के त्याग और वलिदान से देश ने स्वाधीनता की खुली हवा में सांस ली।

भौगोलिक संरचना

भारत के मध्य में स्थित मध्य प्रदेश की भौगोलिक स्थिति 18° - 26°.30 उ. अक्षांश और 74° - 84°.30 उ. पू. देशांतर के मध्य है। देश के 7 राज्यों उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा और विहार से इसकी सीमा मिली हुई है।

सन् 1956 के राज्य पुनर्गठन के वाद मध्य प्रदेश का क्षेत्रफल 443.24 हजार हेक्टयर है। इसमें कुल 45 जिले हैं जो वस्तर, भोपाल, विलासपुर, चंवल, ग्वालियर, इंदौर, जवलपुर, रीवा, होशंगावाद, रायपुर, सागर और उज्जैन संभागों में विभाजित हैं।

मध्य प्रदेश की भौगोलिक स्थिति का दर्शन भारत की पृष्ठभूमि में करना आवश्यक है। भौगोलिक दृष्टि से भारत को तीन मुख्य भागों में वांटा जा सकता है। पहला भाग होगा हिमालय का पहाड़ी प्रदेश, जो लगभग 6000 मील लंवा और 150 से 200 मील तक चौड़ा है। भारत के उत्तर-पश्चिम और उत्तर-पूर्व में हिमालय है। हिमालय की तराई के इस प्रदेश को उत्तर का पहाड़ी प्रदेश कहा जा सकता है। दूसरा भाग है उत्तर का मैदान। इस मैदान को हिमालय से निकलने वाली नदियां और उनकी सहायक नदियों सींचती है। इन नदियों का वहाव पूर्व और पश्चिम की ओर है। पूर्व की ओर की नदियां गंगा और व्रह्मपुत्र में गिरती हैं। पश्चिम की नदियां सिन्ध और उसकी सहायक नदियों में मिलती हैं। सिन्ध नदी का पानी अरव-सागर में गिरता है। इसी मैदानी भाग में विंध्य पर्वतमाला से निकलकर उत्तर की ओर गंगा और यमुना से मिलनेवाली नदियों का क्षेत्र आता है। देश के तीसरा भाग होगा विंध्य पर्वतमाला से घिरा दक्षिण का समस्त भाग – पूर्व, पश्चिम और दक्षिण में भारत विशाल समुद्रों से घिरा हुआ है। इन भागों का अनन्तर विभाजन किया जा सकता है। उत्तर के मैदान के चार भाग हैं – गंगा और यमुना का मैदान, व्रह्मपुत्र का मैदान, सिन्ध का मैदान तथा विन्ध्य पर्वत से निकलकर उत्तर की ओर गंगा और यमुना में मिलनेवाली उनकी सहायक नदियों-चंवल, सिन्ध, वेतवा, धमान, केन और सोन का मैदान। इसी प्रकार देश की दक्षिणी भाग को भी पूर्वीघाट, पश्चिमी घाट, दक्षिण का पठार और विन्ध्य एवं सतपुड़ा के वीच का क्षेत्र, ऐसे चार भागों में वांटा जा सकता है।

हिमालय की तुलना में इस पठारी राज्य में उच्चावन वहुत कम है। साधारणत: ऊंचे पठार, नीचे पठार और नदियों के मैदान ही प्रमुख स्थलकृतियां है। अधिकतम ऊंचाई सतपुड़ा की क्षेणी (1350 मी.) में पाई जाती है। वघेलखंड के पठार में भी 1152 मी. ऊंचे भाग मिलते हैं। विन्धयाचल श्रेणी में अधिकतम ऊचाई मह के दक्षिण में 881 मी. मिलती है। इसके विपरीत मध्य प्रदेश की सीमा के अन्दर महानदी की घाटी में 200 मी. नर्मदा और चंवल की घाटी में 150 मी. नीचे तक भाग मिलते हैं।

भूसंरचना की दृष्टि से मध्य प्रदेश को स्पष्ट भागों में विभाजित किया जा सकता है। चंवल-सोन अक्ष के उत्तर में मध्य उच्च प्रदेश है जो दकन ट्रैप विन्ध्य शैलसमूह तथा ग्रेनाइटनीस का वना है। इसके दक्षिणी और दक्षिणी पूर्वी किनारे प्रपाती कगार है जो पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमश:

विंध्याचल भंडेर कैमूर की श्रेणियों के नाम से पुकारे जाते हैं।

नर्मदा–सोन अक्ष के दक्षिण में सतपुड़ा की श्रेणी है जो ग्रेनाइट–नीस, गोंडवाना शैलसमूह तथा दकन ट्रेप से वनी है। इसका पूर्वी किनारे मेकल पर्वत के नाम से पुकारा जाता है। यह अत्यधिक कटाफटा तथा वनों से आवृत प्रदेश है।

इन दोनों के पूर्व के पूर्वी पठार है, जिसका उत्तरी भाग वघेलखंड का पठार मध्य का भाग छत्तीसगढ़ का मैदान तथा दक्षिणी भाग दंडकारण्य के नाम से पुकारा जाता है। प्रथम प्रदेश गोंडवाना शैलसमूह तथा प्रीकैम्ब्रियन ग्रेनाइट का वना है। छत्तीसगढ़ का मैदना कड़प्पा शैल समूह में से काटकर वना है और दंडकारण्य में पुनः प्रीकैम्ब्रियन ग्रेनाइट तथा धारवाड़ शैलसमूह मिलते है तथा वघेलखंड अत्यधिक कटाफटा है और नदियों ने पठारों से पर्याप्त नीची घाटियां तथा मैदान वना दिये हैं।

मध्य प्रदेश की जलवायु मानसूनी है। देश के मध्य में स्थित के कारण महा द्वीप प्रभाव, विशेष रूप से उत्तरी भाग में दृष्टिगत होने लगता है। यह प्रवृत्ति तापान्तर और वर्षा की मात्रा दोनों में ही मिलती है। मई में उत्तरी–पश्चिमी भागों का औसत मासिक तापमान 45° सें. के ऊपर पहुंच जाता है तो दक्षिण में केवल 37° से. रहता है। इसी प्रकार अधिकतम वर्षा पूर्वी भागों में 160 से. मी. से होती है किन्तु उत्तरी भाग में 60 से. मी. से भी कम होती है।

पश्चिमी मध्य प्रदेश काली मिट्टी का प्रदेश है। पठारों की तुलना में नदियों और घाटियों में इसकी मोटाई अधिक है। कटे–फटे और पथरीले भागों में मिट्टी छिछली और कंकरीली होती जाती है। काली मिट्टी का प्रदेश ऊर्वर कृषि प्रदेश है। पूर्वी मध्य प्रदेश लाल और पीली मिट्टी का प्रदेश है जो कडप्पा, धारवाड़ और गोंडवाना चट्टानों से उत्पन हुई हैं। यह वलुई दोमट मिट्टी अपेक्षाकृत कम उर्वरा है।

मध्य प्रदेश के भूमि उपयोग की अपनी विशेषताएं है। राज्य का लगभग 31.7 प्रतिशत क्षेत्र वनाच्छादित है, अन्य 11.8 प्रतिशत भूमि चरागाहों के तथा वंजर के अन्तर्गत है। इसके विपरीत 43.3 प्रतिशत भाग निरा वोया गया क्षेत्र है। इसके अतिरिक्त 3.8 प्रतिशत परती भूमि हैं। स्वाभाविक है कि मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था में वन्य उत्पादन और वनों पर आधारित उद्योग विशेष महत्व रखते हैं।

भारत के अन्य भागों के समान कृषि यहां का मुख्य आर्थिक कार्य है, 76.3 प्रतिशत कार्यरत जनसंख्या इस पर निर्भर है। कृषि भूमि उपयोग में स्पष्ट प्रादेशिक भिन्नता मिलती है जो मुख्यता जलवायु तथा मिट्टी की प्रकृति के कारण है। पूर्वी मध्य प्रदेश चावल के उत्पादन का मुख्य क्षेत्र है तो पश्चिम के काली मिट्टी के प्रदेश में गेंहू की कृषि का केन्द्रीकरण हुआ है। धुर पश्चिम में अपेक्षया सूखे भागों में ज्वार महत्वपूर्ण फसल हो जाती है। कपास, दालों, मक्का, तिलहन अन्य उल्लेखनीय फसलें हैं।

मध्य प्रदेश खनिज संपत्ति की दृष्टि से विशेष धनी है। लगभग 25 प्रकार के खनिज गोण्डवाना और धारवाड़ शैलसमूहों में मिलते हैं। इनमें से कोयले का उत्खनन व्रिटिश–काल में ही प्रारंभ हो गया था किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात् जव अधिक विकास पर वल दिया गया तो उन कोयला क्षेत्रों में भी उत्खनन होने लगा जो पहले संचित भंडार के रूप में थे। वघेलखंड और छत्तीसगढ़ में औद्योगिक विकास का आधार कोयला ही है। इसके अतिरिक्त लोहा, मैंगनीज, वोक्साइट, हीरा, फायर क्ले, चाइना क्ले, सिलिका सैंड, इमारती पत्थर इत्यादि अन्य उल्लेखनीय खनिज हैं जिन पर आधारित अनेक उद्योग विकसित हो गये हैं।

सांस्कृतिक विरासत

भौगोलिक दृष्टि से मध्यप्रदेश भारत के हृदय स्थली में वसा हुआ है। यहां लाखों वर्ष से लेकर आज तक का सांस्कृतिक वैभव एवं विरासत पुष्पित एवं पल्लवित होती रही। प्रागैतिहासिक काल से जव मानव पर्वतों की कन्दराओं में रहकर जंगली जानवर, जंगली फल– मूल खाकर जीवन यापन करता था उस समय की प्रागैतिहासिक सभ्यताएं मध्यप्रदेश के कई जिलों में पुरातत्ववेत्ताओं एवं विद्वानों द्वारा प्रकाश में लाई गई हैं। जिसमें भीमवैठका, आदमगढ, रामछज्जा, एरावेल्ट, के अतिरिक्त रायसेन, भोपाल होशंगावाद राजगढ़, विदिशा, रीवा, मुरैना, ग्वालियर, वस्तर, सरगुजा सीधी इत्यादि जिलों से समय–समय पर प्रकाश मे लाये गये है। इन प्रागैतिहासिक मानव के विकास कम में अध्ययन करने पर पूर्व पाषाण काल, मध्य पाषाण काल, उत्तर पाषाण काल एवं मैसोलैथिक, चालकोलैथिक के वडे और छोटे पाषाण उपकरण प्राप्त हुए हैं। इन सभ्यता की पुष्टि के लिए डक्कन कालेज पूना, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, सागर विश्वविद्यालय, ग्वालियर विश्वविद्यालय द्वारा पुरातत्वीय उत्खनन भी कराये गये थे। इन आदिमानवों तथा वाद के सभ्यताओ मे वसने वाले मानवो द्वारा समय–समय पर शैलाश्रयों मे शैल चित्र वनाये गये है। इन शैलचित्रों के रंग, वनावट एव सुपरइपोजिशन तथा कार्वन डेटिंग के आधार पर इन्हे मैसोलेथिक (आज से 10 हजार साल पूर्व) चालकोलैथिक (आज से 4000 साल पूर्व) ऐतिहासिक काल (आज से 2500 साल पूर्व) तथा मध्यकाल 13वीं शताब्दि तक के शैल चित्र जो गेरुए हरे, पीले, सफेद इत्यादि रंग [illegible] आकृति युद्ध मानव समूह, मधु संचय इत्यादि [illegible] प्रकाश मे लाये गये है।

प्रागैतिहासिक मानव सभ्यता के वढ़ते [illegible] इलाको म आना शुरू कर दिये थे [illegible] सामुदायिक जीवन, खेती, वर्तन [illegible] मकान वनाकर रहना प्रारंभ कर [illegible] सभ्यता को हम पाषाण काल के

स्पष्ट रूप से इसका प्रमाण मध्यप्रदेश के कुछ स्थानों पर ही नव पाषाण हस्तकुठार के मिलने से इसकी प्रमाणिकता सिद्ध होती है। नव पाषाण काल के बाद ताम्राश्म काल की सभ्यता मध्यप्रदेश की नदियों के किनारे बसी और विकसित हुई है इनमें महेश्वर नवदा टोली, कयथा, दंगवाड़ा बेसनगर आजादनगर, रुनीजा, अटटखास एवं पिपलिया लोरका के ताम्राश्मयी स्थल उल्लेखनीय हैं। इन स्थानों में म.प्र. पुरातत्व विभाग एवं विश्वविद्यालयों द्वारा किये गये उत्खनन से इस काल के प्रमाण पर्याप्त रूप से मिलते हैं।

ऐतिहासिक काल के प्रमाण मध्यप्रदेश में सांची, बेसनगर, गुर्जरा, पानगुढ़रिया आदि स्थानों से मौर्य कालीन अभिलेख मिले हैं एवं कई जगहों से उत्तरकृष्ण मार्जित भांड (एन.बी.पी) आहत मुद्राये, मनके प्राप्त हुए हैं। इन्हें मौर्य काल से जाना जाता है। मौर्य काल के बाद शुंग, सातवाहन, राजाओं ने मध्यप्रदेश पर राज्य किया जिनके समय में आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में काल उन्नति हुई। हेलियो डोरस एवं सांची स्तूप शुंग काल के प्रमाण है तथा सांची स्तूप के चारों तरफ तोरण द्वारों पर बने विभिन्न चित्रों में सातवाहन काल के प्रमाण देखे जा सकते हैं। गुप्त काल के जो अवशेष, मंदिर, मूर्तियां इस क्षेत्र से मिलती हैं वे वास्तव में गुप्त काल को स्वर्ण युग के नाम से जानने के लिए बाध्य करती हैं। गुप्तकालीन राजाओं द्वारा समय-समय पर यह जारी किया जाता है। गुप्त कालीन राजाओं द्वारा समय-समय पर जारी किये गये सोने के सिक्के, चांदी के सिक्के, तांबे के सिक्के, गुप्त कालीन मूर्तियां एवं मंदिर सांची, उदयगिरी, बाघ की गफाएं, एरण, देवगढ़, नचना, भूमरा, आदि जगहों से प्रकाश में लाये गये हैं। गुप्त काल के बाद म.प्र. में प्रतिहार काल के मंदिर ग्यारसपुर (विदिश तेली का मंदिर) जगहों से प्रकाश में आये हैं।

9 से 13 वीं शती के बीच म.प्र. में कई राजवंशों ने अपने-अपने क्षेत्र में शासन किया जिसमें खजुराहो एवं उसके आस पास क्षेत्र में चंदेल शासक मालवा तथा इन्दौर, उज्जैन, भोपाल, विदिशा के परमार शासक ग्वालियर क्षेत्र के कच्छपघात राजाओं ने तथा जबलपुर एवं महाकौशल में कलचुरी राजवंध के राजाओं ने शासन किया। म.प्र. में जो प्रमुख मंदिर समूह मिलते हैं उनमें खजुराहो के मंदिर, उनके मंदिर समूह चौसठ योगनी भेड़ा घांट उदयपुर, भोजपुर, महाकलेश्वर, मैतावली बडावली नरेश बडेश्वर आदि के मंदिर प्रमुख रूप से प्रसिद्धि प्राप्त है। बाद के समय में जो महल एवं किले मिलते हैं उनमें ओरछा, माण्डू, इस्लामनगर, चंदेरी, ग्वालियर के किले आदि प्रसिद्ध हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि म.प्र. से प्राप्त होनेवाली पुरासम्पदा का यह समूह जिनका संरक्षण संवर्धन पुरातत्व संचालनालय द्वारा किया जाता है।

प्रदेश में बिखरी पुरासंपदा को संग्रहित कर एक संग्रहालय में शोधार्थियों, पर्यटकों के अध्ययन के लए प्रदर्शित किया जाता है जो केंदीय शासन द्वारा सांची एवं खजुराहो में संग्रहीत है। तथा म.प्र. शासन द्वारा गुजरी महल संग्रहालय ग्वालियर, महन्त घासीदास स्मारक एवं संग्रहालय रायपुर, रानी दुर्गावती संग्रहालय जबलपुर, पुरातत्व संगहालय धुबेला, पुरातत्व संग्रहालय विदिशा एवं जिला स्तर पर जो संग्रहालय है उनमें शिवपुरी, रामवन धार, राजगढ़ आदि के संग्रहालय प्रमुख है।

म.प्र. के संग्रहालय का इतिहास 1875 से जाना जाता है जब नन्दगांव के महाराजा महन्त घासीदास द्वारा रायपुर में संग्रहालय की स्थापना की गई। जिसमें छत्तीसगढ़ क्षेत्र तथा आसपास के देशी राज्यों से प्राप्त ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, प्राकृतिक तथा जन जीवन के विभिन्न अंगों पर प्रकाश डालने वाली सामग्री को एकत्रित किया गया था। इस संग्रहालय का उदघाटन 21 मार्च में 1953 तत्कालीन राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा किया गया व जनसाधारण के लिए खोला गया।

1872 में तत्कालीन महाराजा आनन्दराव तृतीय ने धार स्टेट में पुरातात्विक सामग्री की खोज विषयक कार्यवाही प्रारंभ कर दी और धार में एक संग्रहालय की स्थापना की गई। 1887 में भोपाल रियासत द्वारा भोपाल में संग्रहालय की स्थापना की गई। भोपाल रियासत के भूतपूर्व शासक नवाब सुल्तान जहां बेगम ने गोहर-ए-इकबाल में किंग ऐडवर्ड संग्रहालय के संबंध में लिखा है कि संग्रहालय की स्थापना 1909 को किंग ऐडवर्ड की स्मृति में की गई थी। लाल बलुआ प्रस्तर से बनी इस भव्य इमारत में सुन्दर कलात्मक एवं बहुमूल्य कलाकृतियों को एकत्रित किया गया था। 1912 में लार्ड टार्टिंग के द्वारा इसका उदघाटन किया गया। वर्तमान में यह संग्रहालय राज्य संग्रहालय के नाम से भोपाल में जाना जाता है।

किंग एडवर्ड म्यूजियम की स्थापना के एक वर्ष पश्चात 1910 में खजुराहो एवं ग्वालियर संग्रहालयों की स्थापना हुई। बुन्देलखंड के पोलटिक एजेन्ट जार्डिन के नाम पर खजुराहो के प्राचीन मंदिरों के अवशेषों का एकत्रिकरण किया गया था। यह संग्रहालय केन्द्रीय पुरातत्व विभाग के अधीनस्थ है। 1922 में प्रिंस आफ वेल्स म्युजियम के ग्वालियर आगमन पर महाराजा माधवराव सिंधिया द्वारा इस संग्रहालय की स्थापना की गई। इन्दौर रियासत द्वारा 1923 में नवरत्न मंदिर नामक एक संस्था की स्थापना की गई और 1931 में यहां संग्रहालय बनाया गया। रीवा में रीवा के महाराजा गुलाब सिंह जूदेव ने 1937 में व्यंकटेश सदन संग्रहालय की स्थापना की गई। इसमें विंध्य प्रदेश के आसपास की कलाकृतियों को एकत्रित किया गया। 1930 में जिला संग्रहालय शिवपुरी की स्थापना की गई। जिसमें जैन प्रतिमाओं को एकत्र कर इस संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया। 1940 में विदिशा संग्रहालय की स्थापना वहां के जन साधारण की जागरूकता का प्रतीक है। यहां एकत्रित कलाकृतियों में दूसरी सदी ई. की कुबेर यक्ष प्रमुख है। इस प्रकार 19वीं सदी के उत्तरार्ध में बोया गया बीज फल फूल रहा है और आज भी अबाध गति से चल रहा है।

मध्यप्रदेश के पुरातत्व संग्रहालय

केन्द्र शासन द्वारा संचालित संग्रहालय पुरातत्व संग्रहालय सांची : भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा स्थापित इस संग्रहालय में स्थानीय इतिहास से संबंधित महत्वपूर्ण पुरावशेष जिनमे प्रमुख रूप से सांची के मुख्य स्तूप अन्य स्तूप, स्मारकों एवं

हां किये गये उत्खननों से प्राप्त किया गया। यह पुरावशेष तीय शती ई. से 12वीं शती ई. के हैं।

केन्द्रीय पुरातत्व संग्रहालय खजुराहो

इस में स्थानीय स्मारकों से प्राप्त पुरावशेषों को संरक्षित किया गया हैं। सभी प्रतिमाएं चंदेल कला का प्रतिनिधित्व करते हुए 10, 12 की शती ई. की हैं।

म.प्र. शासन द्वारा संचालित संग्रहालय

गुजरी महल संग्रहालय ग्वालियर : ग्वालियर किले में स्थित गुजरी महल में ऐतिहासिक स्मारक के कारण संग्रहालय का अपना महत्व है। इसमें प्रदर्शित पुरावशेष निम्नानुसार है।

1. उत्खनन तथा सर्वेक्षण में प्राप्त सामग्री।
2. पाषाण अभिलेख।
3. पाषाण प्रतिमाएं।
4. धातु प्रतिमाएं.
5. सिक्के।
6. चित्रकला कृतियां।

केन्द्रीय संग्रहालय इन्दौर: संग्रहालय में प्रदर्शित पुरावशेष निम्नानुसार है।

1. प्रागैतिहासिक उपकरण।
2. उत्खनित सामग्री।
3. पाषाण प्रतिमाएं।
4. धातु प्रतिमाएं।
5. मुद्राएं
6. ताम्र-पत्र
7. अभिलेख, अस्त्र-शस्त्र, ललित कला

महन्त घासी दास स्मारक संग्रहालय, रायपुर: संग्रहालय में प्रदर्शित पुरावशेष निम्नानुसार हैं।

1. प्रागैतिहासिक वस्तुएं।
2. अभिलेख
3. पाषाण प्रतिमायें
4. धातु प्रतिमायें
5. सिक्के

राजकीय संग्रहालय भोपाल: राजकीय संग्रहालय भोपाल में प्रदर्शित पुरावशेष निम्नानुसार हैं।

1. प्रागैतिहासिक संग्रह
2. उत्खनन सामग्री।
3. प्रतिमायें।
4. चित्रकलाकृतियां
5. रियासती संग्रह

रानी दुर्गावती संग्रहालय जबलपुर: संग्रहालय के संग्रह में 1354 कलाकृतियां हैं।

पुरातत्व संग्रहालय धुबेला, छतरपुर: छत्रसाल द्वारा निर्मित राजमहल में ही इस संग्रहालय की स्थापना की गई है।

जिला पुरातत्व संग्रहालय विदिशा: वैष्णव, शक्ति एवं शैव संप्रदायों से संबंधित प्रतिमाओं के अतिरिक्त जैन तीर्थंकर की प्रतिमायें प्रदर्शित हैं।

जिला संग्रहालय शिवपुरी:-संग्रहालय में 600 प्रतिमाएं हैं।

जिला संग्रहालय धार: यहां पाषाण प्रतिमाओं, अभिलेख, सिक्के एवं कुछ प्रागैतिहासिक सामग्री का संग्रह है।

स्थानीय संग्रहालय मानपुरा: परमार कालीन कलाकृतियों का संग्रह है।

तुलसी संग्रहालय रामवन सतना: यह संग्रहालय प्राचीन प्रतिमाओं एवं हस्तलिखित ग्रन्थों के लिए प्रसिद्ध हैं।

जिला पुरातत्व संग्रहालय राजगढ़: सन 1976-77 में म.प्र.शासन के पुरातत्व विभाग द्वारा जिला पुरातत्व संघ, राजगढ़ के सहयोग से जिला संग्रहालय राजगढ़ की स्थापना की गई है।

उपरोक्त संग्रहालयों के अतिरिक्त म.प्र. शासन के पुरातत्व विभाग द्वारा स्थानीय संग्रहालय महेश्वर, आशापुरी (रायसेन), गन्धर्वपुरी देवास संग्रहालय उल्लेखनीय हैं।

विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित संग्रहालय

गौर पुरातत्व संग्रहालय (सागर विश्वविद्यालय, सागर):-

1. प्रागैतिहासिक तथा आद्यैतिहासिक अवशेष
2. अभिलेख व पाषाण प्रतिमाएं प्रदर्शित हैं।

विक्रम कीर्ति मंदिर उज्जैन: संग्रहालय में मालवा के पुरातत्व से संबंधित सामग्री प्रदर्शित हैं।

स्थानीय संस्थाओं द्वारा संचालित संग्रहालय

1. बिड़ला संग्रहालय, भोपाल: यह संग्रहालय हिन्दुस्तान चैरेटी ट्रस्ट द्वारा संचालित है।
2. सिंधिया संग्रहालय, ग्वालियर:- जय विलास पैलेस में संग्रहालय की स्थापना की गई है।
3. जयसिंह पुरा जैन मंदिर संग्रहालय उज्जैन: संग्रहालय में जैन प्रतिमाओं को प्रदर्शित किया गया है।

कृषि

मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। जनसंख्या का 80 प्रतिशत भाग ग्रामीण है और 43.77 प्रतिशत भूभाग पर खेती होती है। लगभग 193 लाख हेक्टयर कृषि-भूमि है और लगभग 32 लाख हेक्टयर कृषि-भूमि मे दोहरी फसल उगायी जाती है। मध्य प्रदेश में देश में खाद्यान्न उत्पादन का 9 प्रतिशत उत्पादन होता है। और इसका स्थान तीसरा है। लगभग 3[illegible] हेक्टयर [illegible] भूमि जो कि कुल कृषि भूमि का 9 प्[illegible] सिंचाई साधन उपलब्ध हैं। प्रांत के मालवा क्षे[illegible] और यहां पर कपास की खेती बड़े पै[illegible]

बोया गया क्षेत्रफल: वर्ष 1998-99 में समस्त फसलों के अंतर्गत कुल बोया क्षेत्रफल 261.26 लाख हेक्टयर था, जो गत वर्ष बोये गये कुल क्षेत्रफल 260.70 लाख हेक्टयर से 0.2 प्रतिशत अधिक है। इसी अवधि में शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल में नाममात्र 0.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई एवं क्षेत्रफल बढ़कर वर्ष 1998-99 में 199.54 लाख हेक्टयर हो गया। वर्ष 1998-99 में द्विफसली क्षेत्रफल 61.72 लाख हेक्टयर रहा, जो कुल बोये गये क्षेत्रफल का 23.6 प्रतिशत था।

वर्ष 1998-99 में कुल बोये गये क्षेत्रफल के 71.3 प्रतिशत भाग पर खाद्य फसलें बोई गई। इसी अवधि में खाद्य फसलों के अंतर्गत बोया गया क्षेत्रफल 186.31 लाख हेक्टयर रहा, जो गत वर्ष से 0.5 प्रतिशत अधिक है, जबकि अखाद्य फसलों के अंतर्गत 74.95 लाख हेक्टयर क्षेत्र बोया गया, जो गत वर्ष से 0.5 प्रतिशत कम है।

वर्ष 1998-99 में प्रमुख खाद्य फसलों में धान, गेंहू, समस्त धान्य, समस्त दालें एंव गन्ना के अंतर्गत बोये गये क्षेत्रफल में गत वर्ष से क्रमशः 1.0, 1.6, 0.2, 1.2 एवं 4.3 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई, वहीं ज्वार के क्षेत्रफल में सर्वाधिक 9.5 प्रतिशत की कमी हुई। वर्ष 1998-99 में धान, गेहूं, ज्वार, समस्त दालें एवं गन्ने के अंतर्गत बोया गया क्षेत्रफल क्रमशः 54.80, 46.62, 7.64, 50.83 एवं 0.73 लाख हेक्टयर रहा। वर्ष 1998-99 में अखाद्य फसलों के अंतर्गत सोयाबीन एवं समस्त तिलहन के बोये गये क्षेत्र में गतवर्ष से क्रमशः 2.7 एवं 0.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई और इन फसलों के अंतर्गत बोया गया क्षेत्रफल क्रमाशः 45.89 तथा 62.39 लाख हेक्टयर रहा। वर्ष 1998-99 में कुल रेशा एवं अन्य अखाद्य फसलों के अंतर्गत बोया गये क्षेत्रफल में गत वर्ष से 3.6 एवं 2.9 प्रतिशत की कमी आई और इन फसलों का बोया गया क्षेत्रफल 5.11 एवं 7.45 लाख हेक्टयर रहा।

कृषि उत्पादन: वर्ष 1998-99 में सभी प्रमुख फसलों के उत्पादन में वृद्धि आंकी गई। वर्ष 1998-99 में खाद्यान्न उत्पादन गत वर्ष के 173.62 लाख मीटरिक टन से 14.0 प्रतिशत बढ़कर 197.98 लाख मीटरिक टन होना अनुमानित है। इसी अवधि में खाद्यानों के अंतर्गत चावल, गेंहू, ज्वार एवं समस्त दालों के उत्पादन मे गतवर्ष से क्रमशः 18.7, 15.6, 9.6 एवं 8.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई और वर्ष 1998-99 मे इन फसलों का उत्पादन क्रमशः 53.74, 83.44, 7.88 एवं 35.73 लाख मीटरिक टन अनुमानित है।

वाणिज्यिक फसलों के अंतर्गत गत वर्ष की तुलना में गन्ना (गुड़ के रूप में) को छोड़कर सभी प्रमुख फसलों के उत्पादन में कमी परिलक्षित हुई है। वर्ष 1998-99 में गन्ना (गुड़ के रूप में) के उत्पादन में गत वर्ष से 20.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई और उत्पादन 1.97 लाख मीटरिक टन होना अनुमानित है। इसी अवधि में सोयाबीन, समस्त तिलहन एवं कपास के उत्पादन में गत वर्ष की तुलना में क्रमशः 7.7, 1.3 एवं 16.3 प्रतिशत की कमी हुई और इनका उत्पादन क्रमशः 44.73 एवं 56.15 लाख मीटरिक टन तथा 4.26 लाख गांठे अनुमानित है।

प्रमुख फसलों का औसत उत्पदान: वर्ष 1998-99 में गत वर्ष की अपेक्षा प्रमुख फसलों – यथा; चावल, गेंहू, ज्वार, मक्का, तुअर तथा गन्ना (गुड़ के रूप में) के औसत उत्पादन मं क्रमशः 189, 231, 124, 71, 150 एवं 66 किलोग्राम प्रति हेक्टयर की वृद्धि हुई और इन फसलों का औसत उत्पादन क्रमशः1066, 1872, 975, 1402, 866 एवं 3927 किलोग्राम प्रति हेक्टयर रहा, वहीं इस अवधि में चना, कपास एवं सोयाबीन के उत्पादन में 21, 72 एवं 72 किलोग्राम प्रति हेक्टयर की कमी पायी गई और इनका औसत उत्पादन क्रमशः 925, 429 एवं 1012 किलोग्राम प्रति हेक्टयर आंका गया।

कृषि उत्पादन के सूचकांक: समस्त कृषि फसलों का उत्पादन सूचकांक वर्ष 1997-98 में 203.7 था, जो 20.6 अंकों से बढ़कर वर्ष 1998-99 में 224.3 होना अनुमानित है। इसी अवधि में कुल खाद्यान्न उत्पादन के सूचकांक में 23.6 अंकों की वृद्धि हुई और सूचकांक वर्ष 1997-98 के 160.3 से बढ़कर वर्ष 1998-99 में 183.9 हो गया। इसी प्रकार, अखाद्यान्न फसलों के उत्पादन सूचकांक में गत वर्ष से 4.3 अंकों की वृद्धि हुई और सूचकांक वर्ष 1997-98 के 412.3 से बढ़कर वर्ष 1998-99 में 416.6 हो गया।

वर्ष 1999-2000 में कृषि उत्पादन का लक्ष्य: प्रमुख फसलों के अंतर्गत वर्ष 1999-2000 के लिए निर्धारित लक्ष्य निम्नानुसार हैं:

(लाख मीटरिक टन)

फसलों	1999-2000(लक्ष्य)
चावल	68.00
ज्वार	9.00
मक्का	13.00
बाजरा	1.70
गेंहू	90.00
अन्य अनाज	3.40
कुल अनाज	185.10
दालें	40.70
कुल खाद्यान्न	225.80
सोयाबीन	50.00
अन्य तिलहन (सोयाबीन को छोड़कर)	12.80
योग तिलहन	62.80
गन्ना (गुड़)	2.52
कपास (लाख गाठें)*	5.61

* प्रत्येक गांठ 170 किलोग्राम की।

कृषि विकास कार्यक्रम: कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि करने के उद्देश्य से कृषि विकास कार्यक्रमों; यथा-प्रमाणित बीजों का प्रदाय, कृषि यंत्र एवं रासायनिक उर्वरकों का वितरण, पौध संरक्षण हेतु कीट नाशक दवाओं का प्रदाय, प्राकृतिक विपदाओं से होनेवाली हानि की क्षतिपूर्ति हेतु कृपकों के लिए फसल बीमा योजना, इत्यादि क्रियान्वित किये जा रहे हैं।

विपुल उत्पादन कार्यक्रम: वर्ष 1998-99 में 76.60 लाख हेक्टयर क्षेत्र विपुल उत्पादन कार्यक्रम के अंतर्गत लाया

गया। विभिन्न फसलों के अंतर्गत विपुल उत्पादन कार्यक्रम की विगत वर्षों की उपलब्धियां तथा वर्ष 1999-2000 के लिए निर्धारित लक्ष्य का विवरण निम्नानुसार है:

(लाख हेक्टयर में)

वर्ष	धान	ज्वार	मक्का	बाजरा	गेंहू	कुल क्षेत्र
1996-97	33.79	7.88	4.97	0.34	27.28	74.26
1997-98	35.92	6.41	5.23	0.93	34.85	83.34
1998-99	29.19	5.33	5.95	0.71	35.42	76.60
1999-20 (लक्ष्य)	42.76	8.47	9.16	1.17	36.11	97.67

प्रमाणित बीज वितरण: 1998-99 में अनाज, दलहन, तिलहन एवं कपास की फसलों के 6.24 लाख क्विंटल प्रमाणित बीज कृषकों को वितरित किये गये। वर्ष 1999-2000 में 7.18 लाख क्विंटल प्रमाणित बीज वितरण के लक्ष्य के विरुद्ध अगस्त, 1999 तक 3.18 लाख क्विंटल प्रमाणित बीज कृषकों को वितरित किये जा चुके हैं।

राष्ट्रीय दलहन एवं तिलहन उत्पादन कार्यक्रम: 1998-99 में राष्ट्रीय दलहन विकास परियोजना के अंतर्गत 34.5 हजार बीज मिनिकिट वितरित किये गये एवं 3.6 हजार हेक्टयर क्षेत्र में प्रदर्शन आयोजित किए गये। वर्ष 1999-2000 में 61.1 हजार बीज मिनिकिट वितरण एवं 3.5 हजार हेक्टयर क्षेत्र में प्रदर्शन के लक्ष्य के विरुद्ध अगस्त, 1999 तक 2.8 हजार बीज मिनिकिट वितरित किये गये।

रासायनिक उर्वरक वितरण: विगत चार वर्षों में उर्वरक वितरण की स्थिति निम्नानुसार है:

(लाख मीटरिक टन)

वर्ष	नत्रजन (एन)	फास्फेटिक (पी)	पोटाशिक (के)	रासायनिक उर्वरक कुल (एन.पी.के)
1996-97	6.41	3.25	0.45	10.11
1997-98	7.48	4.25	0.56	12.29
1998-99	7.38	4.48	0.39	12.25
1999-20 (लक्ष्य)	8.32	5.34	0.71	14.37
अगस्त, 1999 तक उपलब्धि	2.41	1.66	0.27	4.34

पौध संरक्षण: इस कार्यक्रम के अंतर्गत वर्ष 1998-99 की उपलब्धियां, वर्ष 1999-2000 के लक्ष्य तथा अगस्त, 1999 तक हुई उपलब्धियों की जानकारी निम्नानुसार है:

(लाख हेक्टयर में)

कार्यक्रम	1998-99 उपलब्धियां	1999-2000 लक्ष्य	1999-2000 उपलब्धियां (अगस्त, 1999 तक)
बीजोपचार	34.93	31.00	10.50
फसल उपचार	25.66	31.00	9.35
चूहा नियंत्रण	11.21	14.00	1.87
नींदा उन्मूलन	10.08	10.00	0.93
योग	81.88	86.00	22.65

भूमि संरक्षण कार्यक्रम/राष्ट्रीय जल ग्रहण क्षेत्र विकास कार्यक्रम: प्रदेश का लगभग 70 प्रतिशत कृषि क्षेत्र अभीभी वर्षा पर निर्भर है। इसी परिप्रेक्ष्य में बारानी क्षेत्रों के समन्वित विकास हेतु शत-प्रतिशत केन्द्रीय सहायता से राष्ट्रीय जल ग्रहण क्षेत्र विकास कार्यक्रम वर्ष 1990-91 से प्रारंभ किया गया है। 1998-99 में 90.2 हजार हेक्टयर क्षेत्र में उपचार किया गया। वर्ष 1999-2000 में 100.0 हजार हेक्टयर क्षेत्र में उपचार कार्य किये जाने के लक्ष्य के विरुद्ध अगस्त, 1999 तक 27.4 हजार हेक्टयर क्षेत्र में उपचार कार्य किया गया है।

वृहद फसल बीमा योजना: वर्षा की अनिश्चितता और प्राकृतिक प्रकोपों से किसानों को सुरक्षा और राहत प्रदान करने के लिए वृहद फसल बीमा योजना राज्य के चुने हुए जिलों और तहसीलों में लागू की गई है। इसके अंतर्गत धान, ज्वार, मक्का, बाजरा, कोदों, कुटकी, तुअर, तिल, मूंगफली, सोयाबीन, गेंहू, चना, राई और सरसों एवं अलसी की फसलों का बीमा कार्यक्रम समस्त जिलों की 318 तहसीलों में लागू है।

कृषि विपणन

कृषि उपज मंडियां: प्रदेश में कृषि उत्पादन के सुनियोजित विपणन में कृषि उपज मंडियों के महत्वपूर्ण योगदान को ध्यान में रखते हुए वर्ष 1980-81 में राज्य शासन द्वारा स्वतंत्र रूप से मंडी संचालनालय की स्थापना की गई है। प्रदेश में वर्तमान में 300 मंडियां एवं 314 उप मंडियां कार्यरत हैं।

रासायनिक खाद वितरण: 1998-99 में 93.55 हजार मीटरिक टन एवं वर्ष 1999-2000 के अगस्त, 1999 तक 23.49 हजार मीटरिक टन खाद का विक्रय किया गया है।

मध्य प्रदेश राज्य भंडार गृह निगम

वर्ष 1998-99 में प्रदेश में निगम की कुल 318 भंडारगृह शाखाएं संचालित रही, जिनकी कुल भंडारण क्षमता 14.67 लाख मीटरिक टन (स्वनिर्मित क्षमता 11.91 लाख मीटरिक टन, केप स्टोरेज 0.01 लाख मीटरिक टन एवं किराये की क्षमता 2.75 लाख मीटरिक टन) थी। वर्ष 1999-2000 में, अगस्त, 1999 तक, भंडारगृहों की संख्या बढ़कर 320 एवं कुल भंडारण क्षमता बढ़कर 17.18 लाख मीटरिक टन हो गई। वर्ष 1999-2000
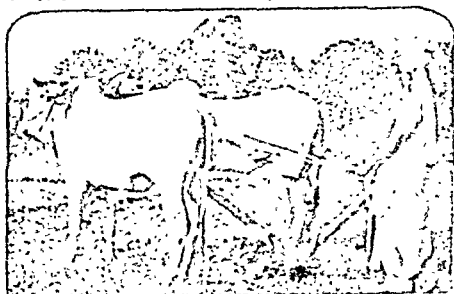
में 70 हजार मीटरिक टन अतिरिक्त क्षमता के गोदाम निर्माण का लक्ष्य रखा गया है।

उद्यानिकी एवं प्रक्षेप वानिकी

वर्ष.1997–98 में उद्यानिकी फसलों के अंतर्गत कुल 628.9 हजार हेक्टयर क्षेत्र अच्छादित था, जिसमें फलों, सब्जियों, मसालों, औषधिय फसलों एवं फूलों के अंतर्गत क्रमशः 60.1, 212.7, 331.0, 23.3 तथा 1.8 हजार हेक्टयर क्षेत्र आता है। इस प्रकार, उद्यानिकी की विभिन्न फसलों के अंतर्गत कुल बोये गये क्षेत्रफल का लगभग 2.4 प्रतिशत रकबा है।

मसाला विकास: मसाले वाली फसलों के क्षेत्र एवं उत्पादन के बढ़ावा देने के उद्देश्य से मसाला मिनीकिट की योजना चालू की गई है। योजनान्तर्गत धनिया एवं मिर्च के लिएय 100 रुपये, लहसुन के लिए 200 रुपये, अदरक के लिए 350 रुपये तथा हल्दी के लिए 250 रुपये मूल्य के उन्नत–शील बीजों के मिनीकिट वितरित किये जाते हैं। वर्ष 1998–99 में 37.9 हजार हेक्टयर क्षेत्र में 2.9 हजार मिनीकिट वितरित किये गये। वर्ष 1999–2000 में 25.0 हजार हेक्टयर क्षेत्र में 3.0 हजार मिनीकिट वितरण के लक्ष्य के वरिुद्ध अगस्त, 1999 तक 1.3 हजार हेक्टयर क्षेत्र में 100 मिनीकिट वितरित किये गये।

मध्य प्रदेश राज्य कृषि उद्योग विकास निगम

मध्य प्रदेस राज्य कृषि उद्योग विकास निगम की स्थापना केन्द्र शासन एवं राज्य शासन की बराबरी की हिस्सेदारी से कंपनी अधिनियम, 1956 के अंतर्गत मार्च, 1969 में हुई। वर्तमान में निगम की अधिकृत अंशपूंजी 500.00 लाख रुपये एवं प्रदत्त अंशपूंजी 329.49 लाख रुपये है।

कृषि यंत्रों का निर्माण एवं वितरण: निगम द्वारा वर्ष 1998–99 में 1.30 लाख कृषि यंत्रों के लक्ष्य के विरुद्ध लगभग 99 0 हजार कृषि यंत्रों का वितरण किया गया। वर्ष 1999–2000 में 1.00 लाख कृषि यंत्रों के लक्ष्य के विरुद्ध सितंबर, 1999 तक 31.7 हजार कृषि यंत्रों का वितरण किया जा चुका है।

खरीफ फसल

धान: धान फसल प्रदेश की प्रमुख फसल है एवं लगभग 53 लाख हेक्टयर में बोई जाती है। इस वर्ष इस फसल का उत्पादन लगभग 64 लाख टन (चावल) होने का अनुमान है। इसके अतिरिक्त लगभग 3 लाख टन चावल ग्रीष्मकाल में पैदा होता है। इस प्रकार इस वर्ष कुल उत्पादन 67 लाख टन होना अनुमानित है, जो गत वर्ष के 53.74 लाख टन से लगभग 13 लाख टन अधिक है एवं अब तक का सर्वाधिक उत्पादन होगा।

अरहर: अरहर फसल खरीफ दलहनों में प्रमुख है। इस वर्ष अरहर की बुआई सामान्य रही। अनुमान है कि इस वर्ष 4.50 लाख टन उत्पादन होगा। यह भी अब तक का रेकार्ड उत्पादन होगा।

मक्का: मक्का फसल प्रदेश के आदिवासी क्षेत्र की प्रमुख फसल है, प्रमुखतः झाबुआ जिले में यह बहुलता से बोई जाती है। झाबुआ के जिन क्षेत्रों में सफेद मक्का (एन.एल.डी) बोई गई, वहां सूखे के बावजूद 50 से 60 क्विंटल प्रति हेक्टयर तक उत्पादन प्राप्त हुआ है।

रबी: रबी 1999–2000 में वर्ष 98–99 के 97.80 लाख हेक्टयर की तुलना में लगभग 100 लाख हेक्टयर में रबी फसलें बोने का कार्यक्रम बनाया गया था, जिसके विरुद्ध लगभग 101 लाख हेक्टयर में बुआई के प्रतिवेदन आ चुके हैं।

सरसों: गत वर्ष की तुलना में लगभग 1 लाख हेक्टयर की वृद्धि हुई है। गत वर्ष 6.90 लाख हेक्टयर के विरुद्ध इस वर्ष 7.75 लाख हेक्टयर अनुमानित है। उत्पादन भी 7.00 टन के लक्ष्य से अधिक होने की संभावना है।

गेंहू: गेंहू फसल का क्षेत्र गत वर्ष के बराबर ही रहने का अनुमान है। अभी तक लगभग 46 लाख हेक्टयर में बुआई हो चुकी है। उत्पादन 90 लाख टन तक होना अनुमानित है, जबकि गत वर्ष 84 लाख टन ही गेंहू पैदा हुआ था।

चना: इस वर्ष लगभग 1 लाख हेक्टयर की वृद्धि अनुमानित है।(26.65 लाख हेक्टयर एवं इस वर्ष 27.15 लाख हेक्टयर) इसमें भी उत्पादन वृद्धि की संभावना है।

सूर्यमुखी: गत वर्ष यह फसल रबी में मात्र 2 हजार हेक्टयर में बोई गई थी। इस वर्ष लगभग 10 हजार हेक्टयर में बोई जाना अनुमानित है।

सिंचाई

मध्यप्रदेश में औसत वार्षिक वर्षा 75–125 से.मी. होती है। वर्षा का हर साल एक रूप न होने से यहां कृषि को काफी नुकसान पहुंचता है। वर्षा काल में परिवर्तन भी सूखे की स्थिति ला देता है।

राज्य की 12 प्रमुख नदियों में वार्षिक औसतन 11.50 करोड़ एकड़ फीट सतही जल उपलब्ध है, जिसमें से लगभग 70 प्रतिशत भाग का उपयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार, 3.90 करोड़ एकड़ फीट भू–जल उपलब्ध है,
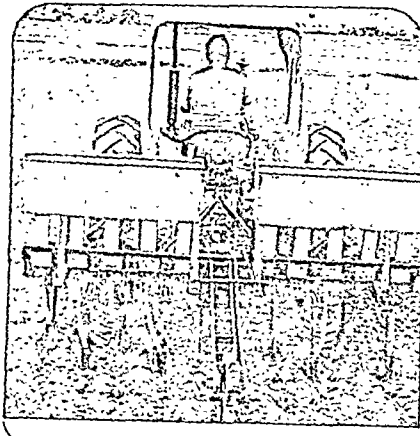
जिसमें से लगभग 50 प्रतिशत भाग के पानी का उपयोग किया जा सकता है।

सिंचित क्षेत्र: राज्य में वर्ष 1997-98 में समस्त शासकीय एवं निजी स्त्रोतों से शुद्ध सिंचित क्षेत्र 6303.7 हजार हेक्टर था, जो शुद्ध बोये गये क्षेत्र का 31.7 प्रतिशत था। वर्ष 1998-99 में राज्य के समस्त सिंचाई स्त्रोतों से 256.8 हजार हेक्टर क्षेत्रफल अधिक सिंचित किया गया।

वर्ष 1997-98 में फसलों के अंतर्गत कुल सिंचित क्षेत्र 6527.0 हजार हेक्टर था, जो 287.0 हजार हेक्टर बढ़कर वर्ष 1998-99 में 6814.0 हजार हेक्टर हो गया है। इस प्रकार, वर्षावधि में समस्त फसलों के अंतर्गत सिंचित क्षेत्रफल में 4.4 प्रतिशत की वृद्धि परिलक्षित हुई है।

विभिन्न स्त्रोतों से सिंचित क्षेत्र: राज्य में सिंचाई के समस्त शासकीय एवं निजी स्रोतों में कुएं अभी भी सिंचाई के प्रमुख स्त्रोत हैं। शासकीय नहरों का स्थान द्वितीय है। वर्ष 1998-99 में शुद्ध सिंचित क्षेत्र का 56.4 प्रतिशत कुओं, 26.7 प्रतिशत शासकीय नहरों एवं 3.1 प्रतिशत क्षेत्र तालाबों से सिंचित किया गया।

जल संसाधन विभाग द्वारा वृहद, मध्यम एवं लघु सिंचाई योजनाओं के माध्यम से वर्ष 1997-98 के अंत तक लगभग 33.40 लाख हेक्टर सिंचाई क्षमता निर्मित की गई, जिसमें 20.70 लाख हेक्टर सिंचाई क्षमता का उपयोग किया गया।

भू-जल विकास योजनाएं: वर्ष 1997-98 में 10 शासकीय नलकूपों का खनन तथा 18 शासकीय नलकूपों का विद्युतीकरण किया गया। वर्ष 1998-99 में 16 शासकीय नलकूपों का खनन किया गया। तथा 13 शासकीय नलकूपों का विद्युतीकरण किया गया।

वर्ष 1998-99 में 4.6 हजार कुएं तथा 5.4 हजार नलकूपों का खनन किया गया। वर्ष 1999-2000 में 7.0 हजार नलकूपों के खनन के लक्ष्य के विरुद्ध अगस्त, 1999 तक 1.5 हजार नलकूपों का खनन किया गया। वर्ष 1999-2000 में 200 तालाब/परकोलेशन टैंक/वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर के निर्माण के लक्ष्य के विरुद्ध अगस्त, 1999 तक 75 तालाब/परकोलेशन टैंक/वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर निर्मित किये गये हैं।

भू-जल संवर्धन की पहल

अगली सदी में जल सबसे महत्वपूर्ण वस्तु होगी और जल संसाधनों का होना शक्ति संपन्नता का प्रतीक होगा। किसी समय अपार जल संपदा से परिपूर्ण मध्यप्रदेश में आज भू-जल लगातार गिर रहा है। मालवा अंचल में नदियां सूख रही हैं और भू-जल की समस्या लगातार बढ़ रही है। राज्य सरकार ने भू-जल संरक्षण के लिए विभिन्न स्तरों पर रणनीतियां बनाई हैं। राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र विकास मिशन की गतिविधियों के संचालन से आज झाबुआ जिले में हरियाली है। एक समय यहां रेगिस्तान निर्मित होने की आशंका व्यक्त की गई थी।

जल के अंधाधुंध दोहन से भू-जल स्तर नीचे चला गया है। जितना जल जमीन से निकाला जाता है उसकी क्षतिपूर्ति करना आवश्यक है। यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है जो राज्य सरकार अकेले पूरा नहीं कर सकती। आम जन का सहयोग लेने के लिए राज्य सरकार ने जन भागीदारी पर आधारित कार्यक्रम लागू करने की रणनीति अपनाई है। पांच वर्ष पूर्व लागू किये गये राजीव गांधी जलग्रहण विकास मिशन का यही उद्देश्य था जो न केवल सफल रहा है बल्कि पूरे देश में इसकी सराहना हुई है। प्रदेश में हजारों तालाब हैं जो उथले हो गये हैं। अब जन सहयोग से तालाबों के जीर्णोद्धार का कार्यक्रम पूरे प्रदेश में चलाया जा रहा है। इस अभियान से भू-जल स्तर बढ़ाने में मदद मिलेगी और तालाबों की प्राण-प्रतिष्ठा की पुनः स्थापित होगी।

विकेन्द्रित प्रशासनिक व्यवस्था के अंतर्गत मिशन पद्धति से भूजल स्तर बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है। देवास जिला सरकार ने भू-जल संवर्धन मिशन प्रारंभ किया है। इंदौर जिला योजना समिति की बैठक में एक-एक तालाब गोद लेने का निर्णय लिया गया है। राजोदा गांव के 74 वर्ष पुराने तालाब को अब गहरा किया जा रहा है। इंदौर जिला सरकार ने 295 तालाबों के जीर्णोद्धार की महत्वाकांक्षी योजना बनाई है।

पंचायतों से कहा गया है कि वे केन्द्र की ग्राम समृद्धि योजना की राशि का उपयोग तालाबों को गहरा करने, कुएं, बावड़ियों की सफाई करने में करें ताकि उनमें पर्याप्त जल रहे और गिरते भू-जल को रोका जा सके और गांव का पानी गांव में और खेत का पानी खेत में ही रहे। बरसात के पानी का उपयोग करने के लिए भी नई, सस्ती और विभिन्न क्षेत्रों के लिए उपयुक्त वैज्ञानिक विधियों पर विचार किया जा रहा है।

अब पूरे प्रदेश में नदियों, तालाबों जल स्रोतों की सफाई का अभियान जोर पकड़ रहा है। शहडोल जिले के सभी विकास खंडों में 10 से 15 तालाबों की साफ सफाई का अभियान चलाया गया है। मंदसौर में रेवा और शिवना नदी का सफाई अभियान चल रहा है। रायपुर में एक हजार से ज्यादा आबादी वाले गांवों में तालाबों में साफ सफाई की जा रही है। नीमच जिले की जावद तहसील के फूलपुरा और नीमच तहसील के लेबाड़ा तालाब की जीर्णोद्धार किया जा रहा है। जल संरक्षण की गतिविधियां जन आंदोलन का रूप ले रही है। राजीव गांधी जल ग्रहण विकास मिशन की गतिविधियां आज 8100 गांवों में चल रही है। इस मिशन के संचालन का कार्यभार पूरी तरह से समुदाय के हाथों मे सौंपा गया है। जगह-जगह नये हैंडपंप खोदने के बजाय लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, जल संसाधन, पंचायत, वन, आदिम जाति कल्याण विभागों और राजीव गांधी जल ग्रहण विकास मिशन के समन्वित प्रयासों से जल संरक्षण के लिए एक समग्र योजना बनाने पर विचार किया जा रहा है। वर्षा के जल को रोकने के लिए छोटी संरचनाओं जैसे मिट्टी के रोक बांध, बोल्डर बांध, छोटी दीवारों का निर्माण, नाली खुदाई, कन्टूर नालियों का निर्माण रिसन तालाबों के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जायेगा।

मालवा क्षेत्र में भू-जल संरक्षण के

वित्तीय सहायत्ता प्राप्त करने के लिए प्रस्ताव तैयार किये गये हैं। मालवा क्षेत्र में भू-जल स्तर को बढ़ाने के लिए हाल ही में मालवा जल सम्मेलन में विभिन्न उपायों पर विचार विमर्श किया गया। बस्तर जिले में पिछले कुछ सालों से इन्द्रावती नदी के जल के प्रवाह में आ रही कमी की समस्या का संयुक्त सर्वेक्षण करने के लिए मध्यप्रदेश और उड़ीसा सहमत हो गये हैं।

नहरें

नदियों पर बने बांध या किसी स्थान पर इकट्ठे जल को दूर तक फैले खेतों में नहरें काटकर पहुंचाते हैं। मध्य प्रदेश के छत्तीसगढ़ के मैदान और चंबल घाटी क्षेत्र में नहरों द्वारा सिंचाई होती है। बुंदेलखंड क्षेत्र के टीकमगढ़ और छतरपुर जिले में भी नहरों द्वारा सिंचाई की जाती है। राज्य में नहरों द्वारा 42.7% सिंचित क्षेत्र है। प्रदेश में अनेक नदियों पर बांध बनाये गये हैं जिनमें सिंचाई होने लगी है।

तालाब

प्रदेश के मैदानी भागों में छोटे-छोटे तालाब बनाकर सिंचाई की जाती है। छत्तीसगढ़ के मैदानों में बड़े तालाब हैं, अत: उनसे अधिक क्षेत्र में सिंचाई होती है। तालाबों से नहरें निकाल कर सिंचाई की जाती है। राज्य के कुल सिंचित क्षेत्र के 6.5 प्रतिशत भाग में तालाबों द्वारा सिंचाई की जाती है।

कुएं

प्रदेश के अनेक जिलों में कुएं खोदने पर कम गहराई में ही अधिक मात्रा में पानी निकल आता है। कुओं से पानी निकालने के लिए डीजल पंपों या रहट का प्रयोग किया जाता है।

नलकूप

प्रदेश के कई जिलों में नलकूप, खोदकर कम खर्च से अधिक क्षेत्र में सिंचाई की जाती है। मुरैना, भिण्ड, दतिया, छत्तरपुर, टीकमगढ़ आदि जिलों में इस प्रकार की सिंचाई की जाती है। म.प्र. में सर्वाधिक सिंचाई 443 प्रतिशत निजी कुओं से की जाती है।

प्रदेश की अधिकांश आबादी कृषि से संबंधित है। इसलिए आठवीं पंचवर्षीय योजना में कृषि में सिंचाई हेतु 3,590 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया है।

कुल सिंचाई क्षमता

मध्यप्रदेश राज्य की अर्थ व्यवस्था कृषि प्रधान है जिसमें सिंचाई का महत्वपूर्ण स्थान है। राज्य में 12 प्रमुख नदियों यथा नर्मदा, चंबल, बेतवा, सोन, बानगंगा, इंद्रावती, माही ताप्ती, सबरी, केन, पंच तथा महानदी हैं। इन नदियों में वार्षिक औसतन 11.50 करोड़ एकड़ फीट सतही जल उपलब्ध है, जिसमें से लगभग 70 % भाग का उपयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार उनमें 3.90 करोड़ एकड़ फीट भू-जल उपलब्ध है, जिसमें से लगभग 53 प्रतिशत भाग का उपयोग किया जा सकता है। केंद्रीय जल आयोग के अनुमान के अनुसार उक्त उपलब्ध जल से 102 लाख हेक्टेयर सिंचाई क्षमता निर्मित की जा सकती है। इसमें से लगभग 72 लाख हेक्टेयर सतही जल से तथा 30 लाख हेक्टेयर भू-जल से संभव हो सकेगी।

सिंचित क्षेत्र

राज्य में वर्ष 1994-95 में समस्त शासकीय एवं निजी स्रोतों से शुद्ध सिंचति क्षेत्र 58, 224 हजार हेक्टेयर था जो शुद्ध बोए गए क्षेत्र का 29.4% था। वर्ष 1995-96 में राज्य में सभी स्रोतों द्वारा गत वर्ष की अपेक्षा 105.[illegible] हजार हेक्टेयर क्षेत्र अधिक सिंचित किया गया जिससे शुद्ध सिंचित क्षेत्र बढ़कर 5,228 हजार हेक्टेयर हो गया, जो शुद्ध बोए गए क्षेत्र का 29.8 प्रतिशत है।

फसलों के अंतर्गत सिंचित क्षेत्रफल

वर्ष 1994-95 में फसलों के अंतर्गत कुल सिंचित क्षेत्रफल 6,071 हजार हेक्टेयर था, जो वर्ष 1995-96 में बढ़कर 6,718 हजार हेक्टेयर क्षेत्र अधिक सिंचित किया गया जिससे शुद्ध सिंचित क्षेत्र बढ़क 5,228 हजार हेक्टेयर हो गया, जो शुद्ध बोए गए क्षेत्र का 29.8 प्रतिशत है।

शिक्षा

मध्यप्रदेश जैसे विशाल राज्य में शिक्षा का समुचित प्रबंध करना कठिन कार्य है। शिक्षा संबंधी नीति और कार्यक्रमों का क्रियान्वयन राज्य स्तर पर लोक शिक्षण संचालनालय करता हैं। इसकी मदद के लिए राज्य के कुल 13 शैक्षणिक संभागों में संयुक्त संचालक हैं। 32 जिलों में उप-संचालक शिक्षा नियुक्त हैं। जिलों में विकास शिक्षा अधिकारी की व्यवस्था हैं।

राज्य शैक्षिक प्रशिक्षण परिषद के अन्तर्गत सभी शिक्षकक प्रशिक्षक संस्थाएं आती हैं। माध्यमिक शिक्षा मंडल हाईस्कूल तथा हायर सेकेंडरी स्कूल के लिए नियामक की भूमिका रखता हैं। अच्छे स्तर के पाठ्यक्रम निर्धारण, नियमित, स[illegible] विश्वसनीय परीक्षा के लिए यह उत्तरदायी है तथा ओप[illegible] स्कूल और पत्राचार पाठ्यक्रम के लिए मदद करता है।

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपा[illegible]

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय की स्थापना उ[illegible] शिक्षा के क्षेत्र में मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में दूरस्थ शि[illegible] पद्धति के संवर्धन के लिए की गई है। विश्वविद्यालय अक्टूबर 1992 से कार्य प्रारंभ किया है। इस वर्ष समू[illegible] प्रदेश में वि.वि. द्वारा 740 अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से उ[illegible]

शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों में 92000 विद्यार्थियों को पंजीकृत किया गया है।

1. क्षेत्रीय केन्द्रों की संख्या–08 (भोपाल, इन्दौर, ग्वालियर, जबलपुर, बिलासपुर, रायपुर, जगदलपुर, रीवा)।

2. उपक्षेत्रीय केन्द्रों की सख्या–02 (दुर्ग, उज्जैन)

3. राजीव गांधी बहुमाध्यमीय अध्ययन केन्द्रों की संख्या–139 (33 आदिमजाति बहुल क्षेत्रों में स्थापित)

4. स्वाध्यायी छात्रों हेतु अध्ययन केन्द्र–98

5. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अनुदान से कंप्यूटर पाठ्यक्रम हेतु केन्द्रों की संख्या–489 (क्लास परियोजना–394, क्लेप परियोजना–95)।

6. भारत सरकार के अणुशक्ति विभाग एवं अंतरिक्ष विभाग के सहयोग से राष्ट्रीय केन्द्र–01

7. मातृत्व एवं शिशु स्वास्थय संबंधी प्रशिक्षण हेतु भारत सरकार के स्वास्थय एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के सहयोग से संचालित केन्द्रों की संख्या–10।

8. बी.एस–सी. नर्सिंग पाठ्यक्रम केन्द्रों की संख्या–02

9. भोपाल गैस पीड़ित परिवारों के आर्थिक उन्नयन हेतु केन्द्र–01

उपर्युक्त सभी केन्द्र विश्वविद्यालय के सीधे नियंत्रण में संचालित होते हैं तथा सभी शासकीय संस्थाओं एवं अन्य विश्वविद्यालयों, शासकीय चिकित्सा महाविद्यालयों तथा शासकीय महाविद्यालयों आदि में स्थापित हैं।

महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट

इस विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 1991 में एक अधिनियम के अन्तर्गत राज्य के ग्रामीण जीवन के विकास संबंधी शिक्षा और अनुसंधान के उद्देश्य से की गयी है। इसके मुख्य कार्य ग्रामीण विकास संबंधी विभिन्न शाखाओं की प्रौद्योगिकी का लाभ गांव तक पहुंचाने की दृष्टि से अनुसंधानों की व्यवस्था और विस्तार करना है।

राष्ट्रीय विधि संस्थान विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रदेश में विधि की उत्कृष्ट अध्यापन व्यवस्था स्थापित करने की दृष्टि से 1997 में राष्ट्रीय विधि संस्थान की स्थापना की गई है। इस संस्थान ने शैक्षणिक सत्र 1998–1999 से कार्य प्रारंभ कर दिया है। वर्ष 1999 में इस संस्थान को विश्वधिालय का स्तर प्राप्त हो गया है। प्रथम वर्ष में व्यावसायकि परीक्षा मंडल, भोपाल के माध्यम से आयोजित प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण सर्वोत्कृष्ट 30 छात्रों को संस्था में प्रवेश दिया गया है। इनमें से 15 छात्र विभिन्न राज्यों के तथा 15 छात्र प्रदेश के हैं। संस्थान इससे पूर्व बेंगलौर एवं पुणे में स्थापित की गई थी, उसी तर्ज पर भोपाल में इस संस्था को संचालित किया जा रहा है। संस्था में 10+2 के बाद विधि के 5 वर्षीय पाठ्यक्रम की व्यवस्था है।

इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़

इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ की स्थापना 14 अक्टूबर 1956 को हुई तथा दिनांक 23.02.98 से यह विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा विभाग के अधीन आया। इस विश्वविद्यालय से 40 महाविद्यालय संबंध हैं। वर्तमान विश्वविद्यालय में 23 पाठ्यक्रम संचालित हैं, जिनमें डिप्लो स्तर पर 134, स्नातक स्तर पर 247 तथा स्नातकोत्त स्तर पर 136 कुल 517 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। इस अतिरिक्त विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न विषयों में पी–एच.डी म्यूजिक तथा डी.लिट की उपाधियों के लिए छात्रों क पंजीकृति किया जाता है।

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी की स्थापना 1969 में हु थी। उच्च शिक्षा में माध्यम परिवर्तन के उद्देश्य से स्थापित इ संस्था का कार्य हिन्दी में विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम के लिए पाठ एवं संदर्भ सामग्री उपलब्ध कराना है। अकादमी ने अब त विभिन्न 27 विषयों में 1250 पुस्तकें प्रकाशित की है। विशे रूप से उल्लेखनीय है कि कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरी विष में हिन्दी में स्तरीय, प्रमाणिक पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। पिछ तीन शिक्षा सत्रों से यह अकादमी उच्च शिक्षा विभाग के जर्न के रूप में द्विमासिक पत्रिका रचना का नियमित प्रकाशन क रही है। इस वर्ष अकादमी ने 100 से अधिक पुस्तकें प्रकाशि की है, जिनमें 21 पुस्तकें प्रथम संस्करण की हैं। अकादमी राज्य सेवा प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए कम मूल्य प स्तरीय सामग्री का प्रकाशन मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभा

16 हजार रुपए में स्कूल गोद लीजिए

दीजिए 16 हजार रुपए या 400 अमरीकी डालर और मध्य प्रदेश के दूरदराज इलाके में स्थित एक प्राथमिक स्कूल हो जाएगा एक बरस के लिए आपके नाम। इस स्कूल में पढ़नेवाले बच्चों की देखरेख होगी आपके पैसे से और मध्य प्रदेश की सरकार आपको भेजेगी हर पखवाड़े एक रपट कि आपके गोद लिए स्कूल में कौन–कौन सा बच्चा कैसी पढ़ाई में कैसी प्रगति कर रहा है।

मध्य प्रदेश सरकार की इस नई योजना का नाम है 'फंड ए स्कूल' और कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने इस योजना की इंटरनेट पर वेबसाइट कंप्यूटर के माउस का बटन दबाकर शुरु की। सरकार की इस योजना को पैसे मिलने की शुरूआत हो भी गई है और फिलहाल अमरीकी के चन्द अनिवासियों ने बस्तर जिले के चन्द स्कूलों को एक–एक बरस के लिए गोद लिया है।

अब से छह बरस पहले उन्होंने मध्य प्रदेश में शिक्षा गारंटी योजना शुरु की थी और इस योजना के तहत अब तक कुल 26 हजार स्कूल खोले जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि पूरे प्रदेश में किसी भी बेबसाइट के एक किलोमीटर के भीतर स्थानीय निवासियों की मांग पर इस योजना के तहत फौरन स्कूल खोल दिया जाता है और हालांकि स्कूल को खोलने से लेकर बाकी इंतजाम करने का काम सरकार करती है, मगर स्कूल में गुरु जी नियुक्ति से लेकर स्कूल खोलने की जगह तय करने का काम स्थानीय समुदाय ही करता है।

के सहयोग से किया है। अन्य शासकीय संस्थाओं यथा राज भवन, भाषा एवं संस्कृति संचानालय एवं मध्यप्रदेश साहित्य परिषद् के प्रकाशनों की विक्री के कार्य में अकादमी सहयोग कर रही है।

उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल

राज्य के प्रतिभावान छात्रों के लिए उच्च शिक्षा की उत्कृष्ट व्यवस्था को सुनिश्चित करने की दृष्टि से भोपाल में उच्च शिक्षा की गयी हैं। इनमें छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार करने की व्यवस्था भी निहित है। इस संस्था में स्नातक स्तर पर एक बैच के छात्र उत्तीर्ण होकर निकले हैं और इन सभी छात्रों ने उच्च अध्ययन के लिए प्रतिष्ठित संस्था में प्रवेश प्राप्त किया है। इस संस्था की उपयोगिता मध्यप्रेदश के छात्रों के संदर्भ में और अधिक बढ़ाई जाने पर विचार विमर्श चल रहा है।

शालेय शिक्षा

300 तथा इससे अधिक आबादी वाले लगभग सभी गावों में प्राथमिक शालाएं, 200 से 300 के बीच की जनसंख्या वाले गांवों में शिक्षा गारंटी योजनान्तर्गत शिक्षा केन्द तथा 200 से कम जनसंख्या के गावों में गैर-औपचारिक शिक्षा केन्द्र की सुविधा उपलब्ध कराने के प्रयास किये जा रहे हैं।

वर्ष 1998-99 मे सितंबर, 1998 की स्थितिनुसार राज्य में पूर्व-प्राथमिक एवं प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षण सस्थाओं की संख्या क्रमशः 86.8 हजार, 21 1 हजार तथा 8 3 हजार थी, जिनमें कुल छत्रो की संख्या 107.72 लाख, 34.76 लाख तथा 21.11 लाख थी। इन वर्गों में से छात्राओं का प्रतिशत क्रमशः 43 2, 36.7 तथा 32.2 है।

प्रौढ़ शिक्षा

यह योजना सर्व प्रथम 1990 में पहल की गई, जिसमें राष्ट्रीय मिशन की अवधारण के अनुरूप 15 से 35 वर्ष के आयु समूह के प्रौढ़ निरक्षरों को साक्षर करने का सुनियोजित कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। इसे जिला स्तर पर कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला साक्षरता समिति कार्य करती है।

संपूर्ण साक्षरता अभियान के अन्तर्गत वर्ष 1998-99 में, दिसंबर, 1998 तक, 6.62 लाख व्यक्तियों को साक्षर किया गया एवं 23.03 लाख प्रौढ़ पठन-पाठनरत रहे। उत्तर साक्षरता कार्यक्रम के अन्तर्गत 0.64 लाख नवसाक्षरों द्वारा उत्तर साक्षरता प्रवेशिका पूर्ण कर ली है एवं 6.49 लाख नवसाक्षर अध्ययनरत थे।

उच्च शिक्षा

वर्ष 1998-99 में सामान्य एवं आदिवासी उपयोजना क्षेत्र में संचालित कुल 415 शासकीय महाविद्यालयों में से 315 स्नातक स्तर के तथा 100 स्नातकोत्तर स्तर के महाविद्यालय है। इनमें 69 कन्या महाविद्यालय भी सम्मिलित हैं। कुल 415 शासकीय महाविद्यालयों में से 132 कला संकाय युक्त, 10 संस्कृत के, 13 विज्ञान संकाय युक्त, तीन वाणिज्यिक संकाय युक्त, दो विधि संकाय युक्त तथा 255 दो या दो से अधिक संकाय युक्त महाविद्यालय हैं। इन महाविद्यालयों के माध्यम से वर्ष 1998-99 में 2.88 लाख छात्र-छात्राओं को उच्च शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराई गई, जिनमें से 1.11 लाख छात्राएं है।

तकनीकी शिक्षा

वर्तमान में राज्य में एक क्षेत्रीय (रीजनल) इंजीनियरिंग

विभाग के अन्तर्गत आनेवाले विश्वविद्यालय/महाविद्यालय/उपक्रम/संस्थाओं का विवरण

उच्च शिक्षा विभाग में म. प्र. विश्वविद्यालय अधिनियम 1973 के अन्तर्गत 9 विश्वविद्यालय, 415 शासकीय महाविद्यालय, 91 अनुदान प्राप्त अशासकीय महाविद्यालय, 240 अनुदान अप्राप्त अशाससकीय महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित 03 महाविद्यालय कार्यरत है।

विश्वविद्यालय का नाम	शासकीय महाविद्यालय	विश्वविद्यालय द्वारा संचालित महाविद्यालय	अशासकीय महाविद्यालय अनुदान प्राप्त	अशासकीय महाविद्यालय अनुदान अप्रास	कुल
1. रानी दुर्गावाती वि.वि., जवलपुर	38	–	15	35	88
2. डा. हरीसिंह गौर वि.वि., सागर	48	01	07	14	70
3. देवी अहिल्या वि.वि., इन्दौर	38	–	14	41	93
4. विक्रम वि.वि., उज्जैन	37	02	05	15	59
5. पं. रविशंकर वि.वि., रायपुर	70	–	08	29	107
6. गुरु घासीदास वि.वि., विलासपुर	46	–	07	18	71
7. बरकतउल्ला वि.वि., भोपाल	55	–	13	50	118
8. अवधेश प्रतापसिंह वि.वि., रीवा	39	–	08	16	63
9. जीवाजी वि.वि., ग्वालियर	44	–	14	30	88
योग	415	03	91	248	757
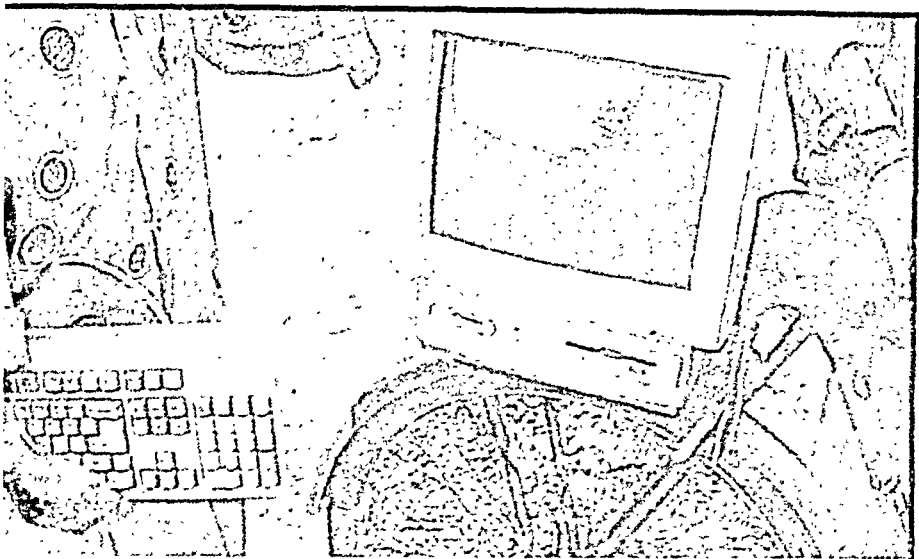
हमने मोड़ा है इनफरमेशन हाईवे का रुख
अपने गांव की तरफ

कोई ज़रूरी तो नहीं कि कम्प्यूटरों का इस्तेमाल सिर्फ उद्योग-धंधों या व्यापार में ही हो।

हमने कम्प्यूटरों का रुख मोड़ा है अपने गाँव की तरफ — जहाँ हम रहते हैं।

इसकी कामयाब शुरूआत हुई धार जिले से ज्ञानदूत योजना के जरिए। यहां अब हर गांव के नुक्कड़-चौराहे पर कम्प्यूटर केंद्र हैं जिन्हें हम सूचनालय कहते हैं। इन सूचनालयों में मिलती है हर तरह की जानकारी - सरकार और सरकारी काम-काज के बारे में। इन कम्प्यूटरों से हम गांव में ही बैठकर कहीं भी अपनी दरख्वास्तें लगा सकते हैं और उनके जवाब भी पा सकते हैं। अलावा इसके, दुनियाभर की जानकारी के लिए हर केंद्र पर इंटरनेट तो मौजूद है ही।

हमारे गांवों के नक्शों और खसरा-खतौनी का हिसाब भी जल्द ही मिलने लगेगा। इन कम्प्यूटरों पर हर गांव के जंगल, नदी, तालाब, खेत सबकी जानकारी अब बस उंगलियों के पोरों पर।

और अब हम शुरू कर रहे हैं- ई-गवरनेंस। जल्दी ही पूरे प्रदेश में 7800 आई.टी. कियॉस्क लग रहे हैं प्राइवेट सेक्टर के सहयोग से। इस मामले में भी हमारा नंबर पहला है पूरे देश में।

मध्यप्रदेश में साढ़े सात हजार जनशिक्षा केंद्र चुने गये हैं— प्राइमरी और मिडिल स्कूलों में कम्प्यूटर शिक्षा के लिए।

कम्प्यूटर के जरिये कॉलेज की पढ़ाई के लिए हमने खोली है एक यूनिवर्सिटी जिसमें आप घर बैठे दाखिला ले सकते हैं।

हमने शुरू किया है हिंदी में सॉफ्टवेयर बनाना। हमारा उत्कृष्टता केंद्र ईजाद करता है बेहतरीन तकनीकें— कम्प्यूटर को आम लोगों से जोड़ने की।

मध्यप्रदेश, पूरे देश में पहला राज्य है इनफरमेशन हाइवे का रुख गांव-देहात की तरफ मोड़ने वाला। क्योंकि हमारे लिए कम्प्यूटर और इंटरनेट का मतलब है- आम आदमी की ताकत और हिस्सेदारी बढ़ाना प्रदेश को आगे बढ़ाने में।

तरक्की के हाइवे पर सबसे .... आगे

अपना मध्यप्रदेश

महाविद्यालय एवं निजी क्षेत्र के 18 इंजीनियरिंग महाविद्यालयों को मिलाकर कुल 36 इंजीनियरिंग महाविद्यालय, पांच आर्किटेक्चर संस्थान, 25 मैनेजमेंट संस्थान, 24 एम.सी.ए. प्रशिक्षण केन्द्र, दो होटल मैनेजमेंट संस्थान, 53 पोलीटेकनिक तथा एक उच्चतर माध्यमिक तकनीकी विद्यालय हैं।

पाठ्यक्रम	पाठ्यक्रम की अवधि	प्रवेश क्षमता (संख्या)
1. इंजीनियरिंग में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम	1 1/2 वर्ष	295
2. व्यावहारिक गणित/भौतिक शास्त्र/भू- विज्ञान में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम	2 वर्ष	152
3. प्रबंधन शिक्षा के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम	2 वर्ष	1510
4. कंप्यूटर एप्लीकेशन में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम	3 वर्ष	79
5. इंजीनियरिंग में स्नातक पाठ्यक्रम (आर्किटेक्चर एवं फार्मेसी सहित)	4 वर्ष	574
6. इंजीनियरिंग में पोस्ट-डिप्लोमा पाठ्यक्रम(कंप्यूटर एप्लीकेशन्स सहित)	1 1/2 वर्ष	12
7. इंजीनियरिंग में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (आर्किटेक्चर, फार्मेसी, माडर्न आफिस मैनेजमेंट एवं अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रमों सहित)	3 वर्ष	772
8. उच्चतर माध्यमिक तकनीकी प्रमाणपत्र (पाठ्यक्रम (कक्षा 11 एवं 12)	2 वर्ष	80
9. पूर्व-व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र (कक्षा 6, 7 एवं 8)	3 वर्ष	495

उद्योग

चुने हुए उद्योगों का उत्पादन: राज्य में वृहद एवं मध्यम उद्योगों के अंतर्गत चुने हुए प्रमुख उद्योगों के उत्पादन में वर्ष 1998-99 में मिश्रित प्रवृत्ति परिलक्षित हुई है।

प्रमुख उद्योग

भिलाई इस्पात संयंत्र: इस संयंत्र ने लगातार छठवें वर्ष में भी मापित क्षमता से अधिक उत्पादन करने की परंपरा को कायम रखा। इस संयंत्र द्वारा वर्ष 1998-99 में 43.8 लाख मीटरिक टन होट मेटल (गलित लौह) तथा 41.5 लाख मीटरिक टन क्रूड इस्पात का उत्पादन किया, जो मापित क्षमता का 107.3 एवं 105.7 प्रतिशत है। इसी प्रकार, संयंत्र ने वर्ष 1998-99 में 33.5 लाख मीटरिक टन विक्रय योग्य इस्पात का उत्पादन किया।

कोरबा थर्मल पावर स्टेशन

संयंत्र ने वर्ष 1998-99 में विदेशी बाजार में लगभग 4.07 लाख मीटरिक इस्पात उत्पादों का निर्यात किया। साथ ही, इस वर्ष 79.0 हजार मीटरिक टन पिग आयरन का भी निर्यात किया गया।

भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड

यह संस्थान विगत 40 वर्षों से देश की विद्युत आवश्यकताओं की पूर्ति में अपना निरंतर योगदान देता आ रहा है। इस संस्थान में निर्मित किए जाने वाले उत्पादों में सभी प्रकार एवं क्षमता के जल टर्बाइन एवं जनरेटर, पावर ट्रांसफार्मर, स्विचगियर, कन्ट्रोलगियर, औद्योगिक रेक्टीफायर, पावर केपेसिटर, रेल इंजनों हेतु संकर्षण-मोटरें एवं कंट्रोल उपकरण, डीजल जनरेटिंग सेट, इंडस्ट्रियल टर्बाइन एवं जनरेटर तथा विभिन्न उद्योगों हेतु उच्च क्षमता वाली विद्युत मोटरें प्रमुख हैं। वर्ष 1998-99 में 1125.00 करोड़ रुपये के वार्षिक उत्पादन लक्ष्य की तुलना में 1158.00 करोड़ रुपये का कुल उत्पादन किया। वर्ष 1998-99 में कर पूर्व लाभ 90.93 करोड़ रुपये का रहा।

वर्ष 1999-2000 से भेल, भोपाल ने अपने सभी प्रमुख उत्पादों को विश्व स्तरीय स्वरूप देने हेतु उत्पादन संयंत्र के आधुनिकीकरण की महती योजनाएं प्रारंभ कर दी हैं, जो दो वर्षों में पूर्ण कर ली जाएगी। इस वर्ष के लिए भेल, भोपाल ने 1201.00 करोड़ रुपए का लक्ष्य रखा है तथा सितंबर, 1999 तक 421.00 करोड़ रुपए मूल्य का उत्पादन पूर्ण किया जा चुका है।

वर्ष 1998-99 में 55.5 हजार मीटरिक टन अखबारी कागज (अधिकांश 44 जी.एस.एम) का उत्पादन हुआ, जो निर्धारित लक्ष्य 65.8 हजार मीटरिक टन का 84.3 प्रतिशत तथा गत वर्ष उत्पादित कागज से 48.0 प्रतिशत अधिक रहा। वर्ष 1999-2000 में अगस्त,

1999 तक 29.9 हजार मीटरिक टन (अधिकांश 44 जी.एस.एम) अखबारी कागज़ का उत्पादन किया गया।

औद्योगीकरण की प्रोत्साहन: राज्य में औद्योगीकरण की प्रबल संभावनाओं को देखते हुए तीव्र गति से औद्योगीकरण के प्रयास किए जा रहे हैं। फलस्वरूप अधिक पूंजी निवेश को आकर्षित करने, क्षेत्रीय विकास में संतुलन तथा आम जनता के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए रोजगार के अतिरिक्त अवसर उपलब्ध कराने तथा राज्य को औद्योगिक रूप से अग्रणी प्रदेश के समकक्ष लाने का लक्ष्य रखा गया है।

वृहद एवं मध्यम उद्योग की स्थापना: वर्ष 1998-99 तक प्रदेश में आठ वृहद एवं मध्यम श्रेणी की औद्योगिक इकाईयां स्थापित हुई, जिसमें लगभग 253.95 करोड़ रुपए का पूंजीनिवेश हुआ और लगभग 1.2 हजार व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराया गया है।

लघु उद्योगों की स्थापना: राज्य में लघु उद्योगों की स्थापना के तहत वर्ष 1998-99 के दौरान 19.4 हजार लघु उद्योग इकाइयां स्थापित हुई, जिसमें 146.59 करोड़ रुपये का पूंजी निवेश हुआ तथा लगभग 46.2 हजार व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराया गया।

प्रधानमंत्री रोजगार योजना: शिक्षित बेरोजगारों को स्वरोजगार के माध्यम से आजीविका के साधन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से केन्द्र सरकार ने वर्ष 1993-94 से प्रधानमंत्री रोजगार योजना प्रारंभ की है। इस योजना के अंतर्गत पात्र शिक्षित बेरोजगारो को एक लाख रुपये तक का ऋण बैंकों द्वारा बिना किसी गारंटी के स्वयं का उद्यम (उद्योग, सेवा या व्यवसाय) प्रारंभ करने के लिए दिया जाता है।

मध्य प्रदेश राज्य उद्योग निगम मर्यादित

मध्य प्रदेश राज्य उद्योग निगम की स्थापना राज्य शासन द्वारा वर्ष 1961 में की गई थी।

निगम की अधिकृत पूंजी 25.00 करोड़ रुपए तथा प्रदत्त पूंजी 15.12 करोड़ रुपए है। निगम द्वारा वर्ष 1998-99 में 26.47 करोड़ रुपए का विक्रय किया गया। निगम के सार्वजनिक क्षेत्र में 19 उद्योग है।

मध्य प्रदेश स्टेट इंडस्ट्रीयल डेव्हलपमेंट कारपोरेशन

मध्य प्रदेश में सितंबर, 1965 में मध्य प्रदेश औद्योगिक विकास निगम (अब मध्य प्रदेश स्टेट इंडस्ट्रीयल डेव्हलपमेंट कारपोरेशन लि.) का गठन किया गया था।

निगम की सहायक कंपनियों के अधीन भारत सरकार एवं राज्य शासन की विभिन्न योजनाओं के तहत 23 विकास केन्द्रों में अधोसंरचना विकसित करने का कार्य प्रगति पर है। मार्च, 1999 के अंत तक इन विकास केन्द्रों में 10.0 हजार हेक्टर से अधिक भूमि अधिग्रहित की गई।

मध्य प्रदेश निर्यात निगम मार्यदित

मध्य प्रदेश निर्यात निगम की स्थापना 1977 में कंपनी अधिनियम, 1956 के अंतर्गत एक शासकीय उपक्रम के रूप में की गई थी। निगम की अधिकृत पूंजी 2.00 करोड़ रुपए एव वर्तमान में प्रदत्त पूंजी 80.25 लाख रुपए है।

निगम द्वारा वर्ष 1997-98 मे 58 77 करोड़ रुपए का व्यापार कर 55 60 लाख रुपए का लाभ अर्जित किया गया। वर्ष 1998-99 मे निगम ने 116.87 करोड़ रुपयों के व्यापार से 150 70 लाख रुपये की राशि लाभ (कर पूर्व) के रूप में अर्जित की। वर्ष 1999-2000 में 80.00 करोड रुपए का व्यापार होने की संभावना है।

मध्य प्रदेश लघु उद्योग निगम मर्यादित: राज्य शासन द्वारा कपनी अधिनियम के अतर्गत वर्ष 1961 में 20.00 लाख रुपए की अश पूजी से मध्य प्रदेश लघु उद्योग निगम की स्थापना की गई थी। वर्तमान में निगम की अधिकृत अंशपूंजी 500 00 लाख रुपए एवं प्रदत्त अंश पूंजी 267.75 लाख रुपए है।

निगम द्वारा वर्ष 1998-99 हेतु 250.00 करोड़ रुपए के व्यवसाय के निर्धारित लक्ष्य के विरुद्ध [illegible] करोड रुपए का व्यवसाय किया गया।

रेशम उद्योग: वर्ष 1998-99 में [illegible] कोया एवं 880.00 लाख नग टसर [illegible] 42.0 हजार हितग्राहियों का [illegible] विरुद्ध वर्षावधि में 0.77 लाख [illegible] लाख नग टसर कोया का

35.7 हजार हितग्राही लाभान्वित हुए, जिसमें 9.5 हजार महिला हितग्राही शामिल हैं।

मध्य प्रदेश हस्तशिल्प विकास निगम: मध्य प्रदेश हस्तशिल्प विकास निगम की स्थापना मध्य प्रदेश शासन के एक उपक्रम के रुप में वर्ष 1981 में हुई थी। वर्तमान में निगम की अधिकृत पूंजी 2.00 करोड़ रुपए हैं, जिसमें से 95.16 लाख रुपए की प्रदत्त पूंजी है।

बड़े तथा मध्यम उद्योग

1950-51 में प्रदेश में 50 बड़े व मध्यम श्रेणी के उद्योग थे। 1961-66 के मध्य में 29 नये उद्योगों की स्थापना हुई। 1974 से 1980 तक प्रदेश में 50 नई इकाइयों की स्थापना हुई। सन् 1980 से 1986-87 तक 216 बड़े एवं मध्यम दर्जे के उद्योग राज्य में खोले गये।

श्रम एवं रोजगार

श्रम: ग्रामीण श्रमिकों के लिए न्यूनतम मजदूरी: कृषि श्रमिकों के लिए पुनरीक्षित वेतन दिनांक 14 सितंवर, 1989 से प्रभावशील किया गया है, जिसके अनुसार अकुशल श्रमिकों को 411.00 रूपये प्रतिमाह, अथवा 13.70 रूपये प्रति दिन देय है।

इन्दिरा कृषि श्रमिक दुर्घटना क्षतिपूर्ति योजना: इस योजना के अंतर्गत कृषि श्रमिकों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने की दृष्टि से दुर्घटना होने पर क्षतिपूर्ति देने के प्रावधान है।योजनान्तर्गत वर्ष 1998-99 में 100 हितग्राहियों के लक्ष्य के विरुद्ध 52 कृषि श्रमिकों को 4.88 लाख रुपये की राशि क्षतिपूर्ति के रूप में वितरित की गई।

रोजगार: प्रदेश के रोजगार कार्यालयों में वर्ष 1997 में 5.57 लाख व्यक्तियों का पंजीयन किया गया, जिनकी संख्या वढ़कर वर्ष 1998 में 5.80 लाख हो गई।रोजगार कार्यालयों की चालू पंजी पर दर्ज कुल वेरोजगारों की संख्या वर्ष 1997 के अंत में 23.77 लाख से बढ़कर वर्ष 1998 के अंत में 25.50 लाख हो गई।

शिक्षित वेरोजगार: शिक्षित वेरोजगारों की संख्या वर्ष 1997 में 18.56 लाख ती, जो वढ़कर वर्ष 1998 में 20.24 लाख हो गई।

रोजगार की स्थिति और रोजगार के प्रयास: वर्ष 1998 में रोजगार कार्यालयों के माध्यम से 6.0 हजार व्यक्तियों को रोजगार दिलाया गया।

सार्वजनिक क्षेत्र में रोजगार: वर्ष 1996-97 में राज्य के सार्वजनिक क्षेत्र में 14.19 लाख व्यक्ति कार्यरत थे, जिसमें 1.58 लाख महिलाएं थी।

वर्ष 1998-99 में सार्वजनिक क्षेत्र में कुल 13.76 लाख व्यक्ति कार्यरत पाये गये, जिसमें महिलाओं की संख्या 1.63 लाख थी।

कारखानों में रोजगार: वर्ष 1998 के अंत तक राज्य में कुल पंजीकृत कारखानों की संख्या 10389 थी।

वर्ष 1999 के अगस्त माह तक चालू पंजीकृत कारखानों की संख्या वढ़कर 10671 हो गई।

मार्च, 1990 तक मध्यप्रदेश में 518 बड़े व मध्यम उद्योग कार्यरत हैं जिनमें 4,14,50,000 लाख रुपये की पूंजी लगी हुई है।इन उद्योगों में 2,79,000 श्रमिक कार्य करते हैं। आठवीं पंचवर्षीय योजना के प्रथम वर्ष 1990-91 के दौरान नवंबर, 1990 तक मध्यप्रदेश में 16 वृहद् एवं मध्यम उद्योगों की स्थापना हुई जिनमें 54.65 करोड़ रुपये का पूंजी निवेश हुआ तथा लगभग 1683 व्यक्तियों को रोजगार मिला। साथ ही नवीन वृहद एवं मध्यम उद्योगों की स्थापना के लिए वर्ष 1990-91 में जुलाई, 1990 तक भारत शासन द्वारा प्रदेश हेतु 93 आशय-पत्र/मवजीश्य-पत्र भी जारी किए गये। संयुक्त क्षेत्र में भी 7 उद्योगों की स्थापना हो रही है जिनमें रीवा में 13 करोड़ रुपये की लागत से स्थापित उच्च तकनीक युक्त जैली फिल्ड् टेलीफोन केबिल्स भी सम्मिलित है। राज्य में सोयावीन उत्पादों पर आधारित उद्योगों के क्षेत्र में तो प्रदेश का प्रथम स्थान है। पिछले दशक में यहां सोयाबीन की कृषि का तेजी से विकास हुआ है जिसने यहां के कृषकों को मुख्य धारा में लाकर सालवेन्दट एक्सट्क्शन प्लाट के विकास में तीव्र गति से प्रगति की है। और प्रदेश को आज साल्वेट संयंत्रों की संख्या की दृष्टि से देश में अग्रणी स्थान प्राप्त हुआ है।इसी प्रकार सीमेण्ट उद्योग में भी राज्य देश में अग्रणी है। मध्य प्रदेश में 1970 के दशक में प्रतिवर्ष 7-8 उद्योग लगाए गये थे। 1980 के दशक में यह आंकड़ा बढ़कर 25 उद्योग प्रतिवर्ष हो गया। 1985-86 में 46 उद्योगों की स्थापना हुई, और सातवीं पंचवर्षीय योजना में यह संख्या 50 उद्योग प्रतिवर्ष हो गई।

प्रदेश में स्थापित् कुछ उद्योग

कृषि पर आधारित उद्योग

1. चीनी उद्योग: भोपाल शुगर मिल्स, सीहोर, डवरा शुगर मिल्स लिमिटेड, डवरा, जिवाजीराव शुगर कंपनी लि., दालौदा, जिला मंदसौर, सेठ गोविन्ददास शुगर मिल्स, महिदपुर रोड, जावरा शुगर मिल्स लि., जावरा एवं सारंगपुर, वरलाई और आलोट में भी प्रदेश के प्रमुख चीनी उत्पादन कारखाने हैं। प्रदेश में कुल 11 चीनी मिलें कार्यरत हैं।

2. वनस्पति घी: प्रदेश में गंजवासौदा, जवलपुर, खंडवा, ग्वालियर व इन्दौर सहित कुल 10 वनस्पति घी के कारखाने हैं।

3. सूती कपड़ा उद्योग: सूती कपड़ा उत्पादन की दृष्टि से मध्यप्रदेश का स्थान देश में तीसरा है। प्रदेश में 513 कारखाने सूती कपड़े के कार्यरत् हैं। इन्दौर राज्य का सबसे बड़ा कपड़ा उत्पादक केन्द्र है। मध्यप्रदेश की वर्धा व पूर्णा नदी की घाटियों में कपास की खेती की जाती है। प्रदेश में सस्ते श्रमिक भी प्राप्त हो जाते हैं। इस उद्योग के विकास के लिए वरोरा की खानों से कोयला व चंवल योजना से सस्ती विद्युत प्राप्त ही जाती है। प्रदेश के सूती कपड़े के ज्यादातर कारखाने पश्चिमी भाग में केन्द्रित हैं जिनमें इन्दौर, ग्वालियर व उज्जैन प्रमुख हैं।

4. कृत्रिम रेशे के कपड़े के उद्योग: कृत्रिम रेशे से कपड़ा वनाने के कारखाने इन्दौर, ग्वालियर, नागदा, उज्जैन व देवास में हैं। प्रदेश के लिए यह नया उद्योग है।

5. जूट उद्योगः जूट से रस्सियां, सुतली तथा अन्य सामान बनाया जाता है। राज्य में जूट की एकमात्र मिल रायगढ़ में हैं।

कृषि उद्योग विकास निगम द्वारा संचालित उद्योग

1. फल सब्जी संरक्षण एवं प्रक्रिया इकाई, भोपालः इस फ्रूट प्रोसेसिंग केन्द्र में 100 टन फलों का संरक्षण किया जा सकता है। इस इकाई में मेग्फा के नाम से मैंगों, मैंगो जाम, टमाटो केचप, ऑरेन्ज तथा लेमन स्क्वैश आदि तैयार किये जाते हैं।

2. जीवाणु खाद संयंत्र, भोपालः इस बायो फर्टिलाइजर केन्द्र में जीवाणु खाद तौयार की जाती है। महंगी रासायनिक खादों के स्थान पर इसका प्रयोग कर ज्वार, चावल, मक्का, बाजरा आदि फसलों के उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है।

3. दानेदार मिश्रित खाद संयंत्र, होशंगाबादः होशंगाबाद के रेसलपुर ग्राम में एम.पी. एग्रो मोरारजी फर्टिलाइजर कारखाने की स्थापना संयुक्त क्षेत्र में की गई है। इस कारखाने की वार्षिक उत्पादन क्षमता 60 हजार टन है।

4. कीटनाशक संयंत्र बीनाः बीना के इस संयंत्र में 10 हजार टन पाउडर एवं 1 लाख लीटर तरल कीटनाशक औषधियों का निर्माण किया जाता है। वर्तमान में यह संयंत्र 10% बी.एच.सी, 5% डी.डी.टी, 10% एवं 50% डब्ल्यू.डी.पी, मेलथियन, 50 ई.सी. का उत्पादन करता है।

5. आइल मिल, मुरैनाः यहां सरसों का तेल निकालने का एक कारखाना स्थापित किया जा रहा है जिसकी क्षमता 25 लाख टन सरसों प्रतिदिन पिराई की है।

6. स्ट्रा-बोर्ड कारखाना, रायगढ़ः 25 टन प्रतिदिन क्षमता एवं 50 लाख रुपये की लागत का कारखाना संयुक्त क्षेत्र में स्थापित किया जा रहा है।

खनिज सम्पदा पर आधारित उद्योग

1. चीनी मिट्टी उद्योगः मुख्य रूप से ग्वालियर, जबलपुर व रतलाम में चीनी मिट्टी के बर्तन बनाये जाते हैं। चीनी मिट्टी के साथ ही प्रदेश में फायर क्ले भी प्राप्त होता है जिससे ईंटे, पाइप तथा बेसिन आदि जबलपुर व कटनी आदि में बनाये जाते हैं।

2. एल्यूमीनियम उद्योगः देश का 44 प्रतिशत बाक्साइट प्रदेश में प्राप्त होता है जो कि एल्युमीनियम उत्पादन का मुख्य घटक है। भारत सरकार ने कोरबा में भारत एल्युमीनियम कंपनी लि. नाम से एक बड़े उद्योग की स्थापना की थी जिसमें 1973 से उत्पादन शुरू हो गया था। इसकी उत्पादन क्षमता एक लाख टन की है एवं लागत लगभग 220 करोड़ रुपये हैं। वर्ष 1989-90 में इस संयंत्र में 416 करोड़ रुपये मूल्य की 90.3 हजार मीट्रिक टन विक्रय योग्य एल्युमीनियम धातु का उत्पादन किया गया।

3. भारी विद्युत उपकरणः सन् 1960 में ब्रिटेन की मदद से मध्यपदेश की राजधानी भोपाल में बिजली का भारी सामान बनाने का कारखाना स्थापित किया गया। यह कारखाना भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स के नाम से जाना जाता है। यहां स्विचगियर, ट्रान्सफार्मर, केपेसिटर, इलेक्ट्रिक ट्रेक्शन, इक्विमेंट एवं इंडस्ट्रियल मोटर जैसे भारी उपकरण बनाये जाते हैं।

4. भिलाई इस्पात संयंत्रः रायपुर शहर से 21 किलोमीटर दूरी पर सोवियत रूस से सहयोग से 1955 में लगभग 1310 मिलियन रुपये की लागत से यह बहुत बड़ा कारखाना स्थापित किया गया। इस कारखाने ने फरवरी, 1959 में उत्पादन शुरू किया। यहां पर 3 ओवन भट्टियां, 3 लपट वाली भट्टियां, 6 खुली भट्टियां तथा 4 रोलिंग मिलें कार्यरत हैं। इसमें रेलें, छड़ें, शहतीरें, स्लीपर, कतरनें आदि के साथ ही अमोनिया सल्फेट, बेंजोल, जिलोन, नेफ्था, कारबोलिक एसिड, नैफ्थलीन तेल आदि तैयार करने की व्यवस्था है। इस कारखाने के लिए कच्चा लोहा राजहरा की पहाड़ियों से, कोकिंग कोयला झारिया व कोरबा की खानों से तथा धुला हुआ कोयला करगाली, पाथरडीह और दुगधा शोधन शालाओं से प्राप्त किया जाता है। कोरबा ताप विद्युत शक्ति गृह से 90,000 किलोवाट बिजली का उत्पादन था। तन्दुला ओर गोंदी नहरों से शुद्ध जल की प्राप्ति होती है। आवश्यक चूना दुर्ग, रायपुर और बिलासपुर से डोलोमाइट, मानेवर, कसौंदी, पारसोदा, खरिया, रामतोला और हरदी से उपलब्ध हो जाता है। वर्ष 1990-91 में 25.85 लाख टन गलित लौह, 25.49 लाख टन क्रूड स्टील तथा 19.88 लाख टन विक्रय योग्य इस्पात उत्पादित किया गया। 1987 में इस कारखाने में 63,291 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त था।

सीमेण्ट उद्योग

1. बानमोर फैक्ट्रीः यह फैक्ट्री 1922 में मुरैना जिले के बानमोर नामक स्थान में एसोसियेट सीमेण्ट कंपनी के स्वामित्व में स्थापित हुई। इसकी उत्पादन क्षमता 60,000 मी. टन पोर्टलेंड सीमेण्ड है। यहां लगभग 800 लोगों को रोजगार प्राप्त है।

2. कैमोर फैक्ट्रीः एसोसियेट सीमेण्ट कंपनी ने कटनी के पास कैमूर में सन् 1923 में पोर्टलेंड एवं पोत्सलाना सीमेण्ट का कारखाना स्थापित किया। यहां एस्बेस्टस की चादरें बनाने का भी कारखाना है। यहां लगभग 2600 लोग कार्यरत है।

3. सतना सीमेण्ट वर्क्सः यह पोर्टलेंड सीमेण्ट का कारखाना है। इसकी स्थापना बिड़ला जूट मैनुफेक्चरिंग कंपनी ने 1959 में की थी। इसकी उत्पादन क्षमता 6 लाख मी.टन है। यहां लगभग 1100 लोग कार्यरत हैं।

4. जामुल सीमेण्ट संयंत्रः एसोसियेट सीमेण्ट कंपनी ने 1965 में दुर्ग में इस कारखाने की स्थापना की। यह कारखाना आधुनिक शुष्क विधि से पोर्टलेंड तथा भट्टी स्लैग सीमेण्ट का उत्पादन करता है। यहां लगभग 1.1 टन सीमेण्ट बनता है और 1800 लोग कार्यरत है।

5. तिल्दा सीमेण्ट फैक्ट्रीः रायपुर से 25 किलोमीटर दूर तिल्दा में 1976 में सेन्चुरी मिल्स बिड़ला ने इस कारखाने की स्थापना की। यह कारखाना सीमेण्ट उत्पादन के लिए आधुनिक शुष्क विधि का उपयोग कर रहा है। इसमें

उत्पादन क्षमता 6 लाख मी. टन और रोजगार 1500 लोगों को प्राप्त है।

6. मैहर फैक्ट्री: 1980-81 में स्थापित इस फैक्ट्री की उत्पादन क्षमता 75000 मी. टन है तथा लगभग 1500 लोगों को रोजगार प्राप्त है।

7. नीमच फैक्ट्री: इस फैक्ट्री की स्थापना भी 1980-81 में हुई थी। इसकी उत्पादन क्षमता 4 लाख मी. टन है। यहां 900 श्रमिक कार्यरत हैं।

8. मांधार फैक्ट्री: सार्वजनिक क्षेत्र का यह कारखाना सीमेण्ट कोर्पेरेशन आफ इंडिया के स्वामित्व का है। इसकी स्थापना 1970 में रायपुर से 15 किलोमीटर दूर मांधार में की गई। इसमें आर्द्र विधि से साधारण पोर्टलेंड तथा वात्या भट्टी स्लेव सीमेण्ट का उत्पादन होता है।

वनों पर आधारित उद्योग

प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 35% भाग वनों से आच्छादित है। वनों पर आधारित निम्न उद्योग यहां कार्यरत हैं।

1. कागज उद्योग: कागज बनाने के लिए मुख्य रूप से बांस, लकड़ी, घास, कोयला, कास्टिक सोडा, राल, चूना, क्लोरीन, चट्टानी नमक, गन्धक, फिटकरी, ब्लीचिंग पाउडर आदि प्रयुक्त होता है। कागज बनाने में सलाई की लकड़ी एवं अन्य भारी कच्चे माल का उपयोग होने के कारण यह कारखाने वहीं लगाने में सुविधाजनक होते हैं, जहां कि कच्चा माल सहज उपलब्ध हो। सन् 1948-49 में 'नेशनल न्यूज प्रिन्ट एण्ट पेपर मिल' नेपानगर एवं ओरियेन्ट पेपर मिल, शहडोल स्थापित किए गए। नेपानगर कारखाने की वार्षिक क्षमता 67.5 हजार मी. टन है। वर्ष 1989-90 59.68 करोड़ रुपये मूल्य के 51.6 हजार मी. टन अखबारी कागज का उत्पादन किया गया। इस कारखाने की स्थापना के पूर्व हमें अखबारी कागज विदेश से आयात करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त छोटे-छोटे कारखाने ग्वालियर, भोपाल, रतलाम तथा बिलासपुर में भी हैं। अमलाई के कारखाने में 90 प्रतिशत पुस्तक छपने योग्य व लिखाई योग्य कागज बनता है। इस कारखाने को रीवा, सीधी, मंडला, बालाघाट, बिलासपुर, सरगुजा तथा रायगढ़ से बांस प्राप्त होता है। केवल शहडोल वन मंडल से ही सलाई की लकड़ी प्राप्त होती है। बुढ़ार खदान से कोयला प्राप्त हो जाता है। इस कारखाने के द्वारा वनोपज का समुचित उपयोग हो रहा है।

2. बीड़ी उद्योग: प्रदेश में तेंदूपत्ता बहुतायत से प्राप्त होता है। मजदूर अपने फुरसत के समय में बीड़ियां बनाते हैं। कारखानों में उन्हें एकत्र कर उनके पैकिट तैयार किये जाते हैं। प्रदेश में बीड़ी बनाने के 260 कारखाने हैं। इस उद्योग का महत्वपूर्ण केन्द्र जबलपुर है।

3. लकड़ी चीरने का उद्योग: प्रदेश में लकड़ी चीरने के 113 कारखाने हैं। यहां पर इमारती लकड़ी के बड़े-बड़े लट्ठे लाये जाते हं और उन्हें उपयुक्त आकार में चीरा जाता है। इनका मुख्य केन्द्र जबलपुर है लेकिन कुछ कारखाने रायपुर, दुर्ग बिलासपुर, छिंदवाड़ा तथा मंडला में भी हैं।

4. अन्य उद्योग

1. प्राचीनकाल में खैरवार जनजाति के द्वारा कत्था बनाने का कार्य उनका पारम्परिक व्यवसाय था। यह विशेषत: पूर्वी मध्यप्रदेश में किया जाता था। खैर वृक्ष की लकड़ी से कत्था बनाने का कारखाना शिवपुरी तथा बानमोर में स्थापित है।

2. कच्चे लाख से सीड लाख तथा शैलाख बनाने के कारखाने धमतरी, मनेन्द्रगढ़, पेंड्रा, करगीरोड, चांपा व सक्ती में हैं। उमरिया में शैलाख बनाने का एक शासकीय कारखाना है। यह लाख, चमड़ा, वार्निश, प्लास्टिक आदि बनाने के काम आता है। राज्य के विन्ध्य क्षेत्र का यह प्रमुख काम था।

3. प्रदेश में हर्रा निकालने के कारखाने हैं। कुछ का उपयोग स्याही बनाने व चमड़ा साफ करने के काम आता है। ये कारखाने धमतरी, रायपुर आदि स्थानों में हैं। शेष हर्रा अन्य प्रदेशों को भेज दिया जाता है।

4. इटारसी में चिप-बोर्ड पार्टिकल बोर्ड बनाने का कारखाना है।

5. ग्वालियर में दियासलाई के डिब्बे बनाने का एक कारखाना है।

खनिज

मध्य प्रदेश राष्ट्र के खनिज उत्पादक प्रदेशों में वर्ष 1995-96 से लगातार प्रथम स्थान बनाये हुए है। वर्ष 1998-99 में 5574.51 करोड़ रुपये मूल्य के मुख्य खनिजों का उत्पादन हुआ, जो देश में उत्पादित सकल उत्पादन मूल्य (पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस को छोड़कर) का 24.46 प्रतिशत है।

प्रदेश में वर्ष 1998-99 में 23 प्रकार के मुख्य खनिजों का उत्पादन हुआ है। हीरा, टिन अयस्क एवं स्लेट के उत्पादन में इस प्रदेश का एकाधिकार है। इसके अतिरिक्त, कोयला, चूना-पत्थर, लौह अयस्क, ताम्र अयस्क एवं पायरोफिलाइट के उत्पादन में प्रदेश का प्रथम स्थान तथा डोलोमाइट, मेंगनीज अयस्क, रोकफास्फेट, कोरण्डम एवं डायस्पोर के उत्पादन में द्वितीय स्थान है।

प्रदेश में उत्पादित हो रहे खनिजों के उत्पादन में निरंतर वृद्धि हो रही है। वर्ष 1998-99 में उत्पादित समस्त प्रकार के खनिजों (मुख्य एवं गौण) का सकल मूल्य 5635.75 करोड़ रुपए है, जो गत वर्ष की तुलना में 524.16 करोड़ रुपये अधिक है।

प्रदेश में वर्ष 1998-99 में प्रमुख खनिजों के अंतर्गत कोयला, बाक्साइट, ताम्र अयस्क, राकफास्फेट एवं चीनी मिट्टी का उत्पादन क्रमश: 85767, 736, 2228, 191 एवं 26 हजार मीटरिक टन हुआ, जो गत वर्ष के

त्पादन से क्रमशः 1.6, 13.1, 7.0, 29.9 एवं 8.3 तिशत अधिक है। इसी अवधि में हीरे का उत्पदान 34.6 जार केरेट हुआ, जो गत वर्ष से 11.7 प्रतिशत अधिक । वर्षावधि में लौह अयस्क, मेगनीज अयस्क, डोलोमाइट, ग्निमृतिका, चूना-पत्थर एवं गेरू के उत्पादन में कमी रिलक्षित हुई एवं उत्पादन गत वर्ष की तुलना में क्रमशः .2, 16.5 17.9, 30.3, 2.4 एवं 60.5 प्रतिशत म होकर वर्ष 1998-99 में उत्पादन क्रमशः 16567, 23,877,46,26937 एवं 15 हजार मीटरिक टन हा।

खनिज नीति एवं खनिज प्रशासन: खनिजों के अवैध त्खनन/परिवहन की रोकथाम तथा उस पर सतत् निगरानी खने हेतु शासन ने राजस्व/पुलिस/वन विभाग तथा खनिज भाग के अधिकारियों का जिला स्तर पर संयुक्त दल गठित किया है। वर्ष 1997-98 में 408 प्रकरण अवैध उत्खनन के पकड़े जाकर उन पर 539.05 लाख रुपये का अर्थदंड स्तावित कर, अवैध परिवहन के 1926 प्रकरणों पर 8.43 लाख रुपए की राशि वसूल की गई। इसी प्रकार, र्ष 1998-99 में अवैध उत्खनन के 490 प्रकरणों पर 781.48 लाख रुपए का अर्थदंड प्रस्तावित कर अवैध रिवहन के 2.8 हजार प्रकरणों पर 52.93 लाख रुपए की राशि वसूल की गई है।

खनिज अन्वेषण: वर्ष 1998-99 में खनिज अन्वेषण के अंतर्गत 14.0 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में भौमिकी र्वेक्षण/मानचित्रण हेतु निर्धारित लक्ष्य से ज्यादा 24.4 जार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र का भौमिकी सर्वेक्षण/मानचित्रण किया गया, जो निर्धारित लक्ष्य से 74.3 प्रतिशत अधिक है। सी अवधि में 301 घनमीटर में गढ्ढाकरण एवं नालीकरण का कार्य किया गया। खनिज नमूनों के विश्लेषण हेतु निर्धारित लक्ष्य 40.0 हजार मूलकों के विरुद्ध 50.9 हजार मूलकों का विश्लेषण किया गया, जो निर्धारित लक्ष्य से 27.3 तिशत अधिक है।

खनिज आधारित उद्योग: लघु उद्योग के रूप में मार्बल वं सोपस्टोन के खिलौने बनाने तथा पत्थरों से घरेलू उपयोग की वस्तुएं बनाने का कार्य भी कुशलता से होता है। जहां प्रदेश में भिलाई इस्पात संयंत्र तथा कोरबा में एल्युमीनियम संयंत्र का विशिष्ट स्थान है, वहीं सीमेंट के उत्पादन में राष्ट्र में प्रदेश का प्रथम स्थान है।

मध्यप्रदेश राज्य खनिज निगम: निगम की अधिकृत पूंजी 500.00 लाख रुपये एवं वर्तमान में प्रदत्त पूंजी 219.59 लाख रुपए हैं। निगम द्वारा वर्ष 1998-99 में 3.67 लाख मीटरिक टन मुख्य खनिज एवं 22.25 लाख मीटरिक टन गौण खनिज, इस प्रकार कुल 25.92 लाख मीटरिक टन खनिज विक्रय किया, जो गत वर्ष के 24.71 लाख मीटरिक टन से 4.9 प्रतिशत अधिक है। इस प्रकार, वर्ष 1998-99 में निगम का कुल व्यवसाय 2972.80 लाख रुपए रहा, जो गत वर्ष से लगभग 29.0 प्रतिशत अधिक है। वर्ष 1999-2000 में, जून, 1999 तक, निगम ने 8.23 लाख मीटरिक टन खनिजों का विक्रय कर 911.22 लाख रुपए का व्यवसाय किया। इससे निगम को 119.40 लाख रुपए का लाभ हुआ।

प्रमुख खनिज

1. लौह अयस्क: म.प्र. में लौह अयस्क प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। देश में बिहार, उड़ीसा के बाद म.प्र. का ही स्थान है। म.प्र. में लौह कैम्ब्रियनपूर्व युग की चट्टानों के नीचे पाया जाता है। इसमें पाये जाने वाले लौह अयस्क की उत्तमता कोटि 68% से भी अधिक होती है। म.प्र. में लौह अयस्क के प्रमुख क्षेत्र हैं दुर्ग, बस्तर, रायगढ़, रौघाट, सरगुजा, बिलासपुर, मंडला, बालाघाट एवं धौली पहाड़ी क्षेत्र।

2. मैंगनीज: म.प्र. में देश का 50 प्रतिशत के आसपास मैगनीज निकाला जाता है जो मुख्य रूप से दो प्रमुख क्षेत्रों -बालाघाट छिंदवाड़ा में निकाला जाता है। पूरे प्रदेश में मैगनीज का भंडार 196.2 लख टन है जिसमें से बालाघाट में मैगनीज का कुल संचित 181 लाख टन है जिसमें से 65 लाख टन उत्तम प्रकार का है जो 41.50 प्रतिशत के धात्विक रूप के साथ यहां के इन 21 क्षेत्रों में हैं- कटेझिरिया, उकवा, भटवेली, नेगा, कांटगझिरी, येरोझिरी, कोचेवाही, रामरस, संलवा, चिकपारा, हरेडा, सुकली, सीतापथार, रिरपुर, बलाबुदा, साओरनी, रोकवा।

3. बाक्साइट: पूरे देश के कुल बाक्साइट उत्पादन का 44% म.प्र. में होता है। प्रदेश में बाक्साइट के 20-30
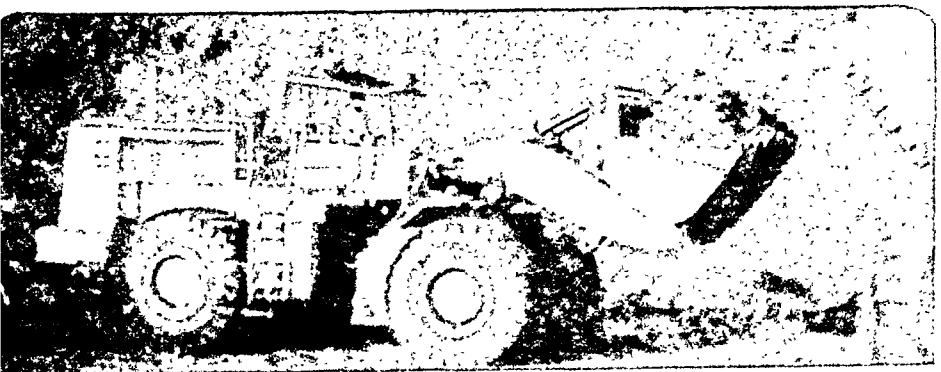
हीरे की कटाई एवं पालिशिंग

लाख टन के करीब निक्षेप होने की सभावना है। प्रदेश में बाक्साइट का प्रमुख स्रोत विध्यन युग की बालू शैलिका एवं क्वार्टजाइट है। म. प्र. में बाक्साइट का संकेद्रण पश्चिम एवं दक्षिण के जिलों में प्रमुखता के साथ है। किन्तु उत्खनन का कार्य बिलासपुर, जबलपुर, मंडला, शहडोल, सतना में ही हो रहा है जबकि अन्य क्षेत्र जहां बाक्साइट पाया गया है वह बस्तर एवं रीवा है किन्तु यहां उत्खनन प्रारंभ नहीं हो पाया है।

विशेष: बिलासपुर में पाये जाने वाले बाक्साइट का उपयोग एल्युमीनियम बनाने हेतु कोरबा कारखाने में किया जाता है जबकि अमरकंटक का बाक्साइट उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर के रेरूकूट एल्यूमीनियम कारखाने में भेजा जाता है।

4. चीनी मिट्टी एवं अग्नि मिट्टी: प्रदेश के आधात्विक खनिज वर्ग में शामिल उक्त खनिजो के प्रमुख क्षेत्र है दुर्ग जिले में हिया पहाड़, जुंगेरा, कलान, भंडारी टीला, ग्वालियर में नामुक पहाड़ी आंतरी, साथ ही नेवाज नदी की घाटी, लम्हेरा घाट जबलुपर, शहडोल, सतना सीधी, बैतूल इन सभी स्थानों पर चीनी मिट्टी प्राप्त होती है जो बर्तन, पाईन, बेसिन, खपरे आदि चीजें बनाने के लिए प्रमुख रूप से प्रयुक्त होती है।

5. चूना पत्थर: म.प्र. में सीमेण्ट संयत्रों की अधिकता का प्रमुख कारण यहां पाये जाने वाले विशाल चूने के पत्थर के निक्षेपों में संचित है। प्रदेश में पाया जाने वाला चूना पत्थर उत्तम श्रेणी का है जिसमें 40-50 प्रतिशत तक चूना पाया जाता है। चूने के पत्थर के प्रमुख क्षेत्र है - छत्तीसगढ़ क्षेत्र कडप्पा युग के निक्षेपों में विस्तृत रूप से चूने का पत्थर पाया जाता है जो बिलासपुर में दर्रा भाटा, अकलतरा, पिंहरी, समेरा, मोहगारा दुर्ग में नंदगांव में खुलवा से अर्जुनी तक 48 कि.मी. की पट्टी में कटनी, मुडवारा, बढ़यारा, गांव, खलवारा, कैसूर में संचित है।

6. तांबा: यह धातु मुख्य रूप से आग्नेय या कायांतरित नों में प्राप्त होती है जो प्रदेश में मुख्य रूप से बालाघाट मलाजखंड में स्थित है यहां तांबे की 170 मी. लंबी 20 मी. चौड़ी पट्टी में 29.22 करोड़ टन तांबे के क का भंडारण है।

7. हीरा: म.प्र. भारत में हीरे का एकमात्र उत्पादक है यहां हीरा मुख्य रूप से पन्ना जिले की मझगवां के कोटरिय सतना तक गई एक आग्नेय चट्टानों की किम्बरलाइट शैल में पाया जाता है। यहां हीरे का कुल अनुमानित भंडार 1001 हजार करेट का है।

8. अभ्रक: म.प्र. में इस खनिज के प्रमुख क्षेत्र हैं - ग्वालियर के निकट ही कडप्पा शैलें एवं रायगढ़ की जशपुर, रमोला, जगराना, कयोन, उणरघाट, घनपानी, बारतली एवं बस्तर में गोलापल्ली, जीरम, बोरेनार। जुगानी यहां 10-12 से.मी. अकार के अभ्रक के टुकड़े प्राप्त होते हैं।

9. टिन: इसके उत्पादन में भारत में म.प्र. का प्रथम स्थान है। यह कैसेटेराइट खनिज से प्राप्त होता है जो म.प्र. में बस्तर के दक्षिण पूर्वी भाग सुकमा, चिंतननाला, गोविंदपाल, मुंडपाल में ही प्राप्त होता है।

10. टंगस्टन: यह खनिज प्रमुख रूप से वूलपाम नामक खनिज से पाया जाता है जो म.प्र. में होशांगाबाद जिले के आगरगांव नामक स्थान से प्राप्त होता है। इसका प्रमुख उपयोग बिजली के बल्ब के फिलामेंट बनाने में किया जाता है।

11. कोरण्डम: कठोरता की दृष्टि से हीरे के उपरांत इसका ही स्थान है।

12. बेराइच: म.प्र. में इस धातु की अच्छी प्राप्ति है। प्रदेश में यह देवास, धार, झाबुआ, नरसिंहपुर, जबलपुर, सीधी, शिवपुरी, टीकमगढ़ एवं रीवा जिलों में प्राप्त होती है।

13. फेल्सपार: प्रदेश में यह धातु जबलपुर (लम्हेरा घाट) एवं शहडोल में पाई जाती है साथ ही यह छिंदवाडा में भी पाई जाती है।

14. डोलोमाइट: प्रमुख रूप से रायपुर, बिलासपुर, बस्तर, झाबुआ, जबलपुर, सीधी, इंदौर, ग्वालियर में इस खनिज की खदानें हैं।

15. रोक फास्फेट: प्रमुख रूप से झाबुआ जिले में इसकी खदानें हैं।

16. यूरेनियम: प्रदेश के गोंडवाना, सरगुजा एवं दुर्ग में प्राप्ति की संभावना है। अभी उत्खनन नहीं हो रहा है।

17. ग्रेपगोट: प्रमुख रूप से बैतूल जिले में पाया जाता है।

18. सीसा: प्रमुख रूप से दुर्ग जिले में कुछ अन्य स्थानों मे दतिया, बजलपुर, होशंगाबाद, रायपुर, शिवपुरी एवं झाबुआ में भी सीसा प्राप्त होता है।

19. सेलखड़ी: नर्मदा घाटी में प्रमुख रूप से प्राप्त होती है। जबलपुर में भेडाघाट एवं कपौड़ प्रमुख प्राप्ति स्थान हैं।

20. सिलीमेनाइट: प्रमुख रूप से रीवा एवं सीधी जिलों में प्राप्त होता है।

21. एन्डेलुसाइट: यह खनिज नीस, शिष्ट एवं स्लेट शैलों में प्राप्त होता है। प्रमुख रूप से प्राप्ति स्थान बस्तर जिला है।

कोयला: शक्ति के साधनों में प्रमुख स्थान रखने वाला कोयला मध्यप्रदेश में उत्पादन की दृष्टि से सारे देश में द्वितीय स्थान रखता है। देश के कुल कोयला भंडार का 35 प्रतिशत भाग प्रदेश में है।

महिलाओं का सार्थक विकास

मध्यप्रदेश सरकार ने महिलाओं के समग्र और सार्थक विकास के लिए बहुआयामी महिला नीति बनाकर उसे लागू किया। मध्यप्रदेश की महिला नीति का उद्देश्य नारी जीवन का अस्तित्व और उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करना और समाज में नारियों की सहभागिता बढ़ाकर उन्हें पूर्ण सामाजिक प्रतिष्ठा दिलाना रहा है। इतना ही नहीं, सभी क्षेत्रों में हो रहे विकास का भरपूर लाभ और उनकी आर्थिक उन्नति के साधनों को भी विकसित कर यह भी सुनिश्चित किया गया कि उन्हें न्याय मिले। इसी के साथ बच्चों का भी उत्थान हो।

मध्य प्रदेश में भूमि, संपत्ति और सामूहिक संसाधनों पर महिलाओं के नियंत्रण को बढ़ाने के कारगर उपाय किये हैं। सामाजिक क्षेत्रों में उनकी भागीदारी सुनिश्चित कर उन्हें नौकरी और रोजगार के अवसर जुटाये हैं। असहाय महिलाओं की सहायता का इंतजाम भी किया है।

लोकतंत्र में भागीदारी

1. पंचायतों में 1,84,000 महिलाएं पंच। 45 जिला पंचायतों में 19 और जनपद पंचायतों में 177 अध्यक्ष पद पर महिलाएं।

2. सहकारी संस्थाओं में 50 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी। पुरानी संस्थाओं में महिलाओं की संख्या बढ़ाने के लिए अभियान का सिलसिला। अब तक ऐसी 1740 संस्थाएं गठित।

3. गांव की हैंड पंप समितियों में महिला प्रतिनिधि जरूरी।

नौकरी और रोज़गार

1. सरकारी, अर्ध-सरकारी, पंचायत, स्थानीय और सहकारी संस्थाओं की नौकरियों में 30 प्रतिशत स्थान आरक्षित।

2. सरकारी नौकरियों में अधिकतम आयु सीमा में छू[illegible] सामान्य श्रेणी की महिलाओं के लिए 45 वर्ष, अनुसूचि[illegible] जाति, जनजाति और पिछड़ा वर्ग के लिएय 50 वर्ष, साामा[illegible] श्रेणी की विधवा, परित्यकता, तलाकशुदा महिलाओं के लि[illegible] 50 वर्ष और आरक्षित वर्ग की विधवा, परित्यक्ता, तलाकशु[illegible] महिला आवेदकों के लिए अधिकतम आयु सीमा 55 व[illegible] निर्धारित।

3. छोटे-छोटे काम धन्धों में लगी महलिाओं को सरल[illegible] से ऋण दिलाने के लिए हरेक जिले में महिला नागरि[illegible] सहकारी बैंकों के गठन का काम जारी। वर्तमान में 11 महिल[illegible] बैंक संचालित।

4. स्वीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में शेष भारत में 4[illegible] प्रतिशत, किन्तु मध्यप्रेदश में 50 प्रतिशत सहायता महिला[illegible] को देना अनिवार्य।

5. ग्रामोद्योग विभाग की योजनाओं में शेष भारत में 3[illegible] प्रतिशत, किन्तु मध्यप्रदेश में 50 प्रतिशत सहायता महलिा[illegible] के देना अनिवार्य।

6. असंगठित क्षेत्र की महिलाओं को पुरुषों के बराब[illegible] मजदूरी दिलाने के लिए सघन निगरानी व्यवस्था लागू।

7. महिलाओं और बच्चों की समूह योजना-'ड्वाकर[illegible] सभी जिलों में लागू। पांच जिलों बिलासपुर, रायगढ़, सरगुजा[illegible] बालाघाट और शिवपुरी में लागू रेशम परियोजना में 1[illegible] हजार महिलाओं को रोजगार।

न्याय

1. राज्य महिला आयोग का गठन। सरकार के स[illegible] कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी पर निगरानी।

2. महिलाओं को मुफ्त कानूनी सहायता। आय का बन्ध[illegible] समाप्त। उत्पीड़न के मामलों में महिला जजों द्वारा सुनवाई[illegible]

3. पारिवारिक विवादों को निबटाने के लिए 9 अतिरिक्त जिला न्यायाधीशों के न्यायालय स्थापित। प्रदेश के सभी 12 महिला थानों में पारिवारिक सलाह केन्द्रों की स्थापना। पुलिस मुख्यालय में राज्य–स्तरीय महिला प्रकोष्ठ स्थापित।

4. सरकारी वकीलों के पैनल में महिला वकीलों को शामिल करना जरूरी।

5. जमीन–जायदाद के नामांतरण के समय पुरुषों के अलावा पुत्रियों को भी सूचना–पत्र।

6. राजीव गांधी आश्रय योजना के पट्टों सहित सरकारी जमीन के सभी तरह के पट्टे पति–पत्नी के संयुक्त नाम से।

7. किसी क्षेत्र की 50 प्रतिशत महिलाओं की मांग पर वहां से शराब दुकान बन्द करने/हटाने का प्रावधान लागू।

8. महिला बंदियो के बच्चों को कारागरों में शिक्षा सुविधा।

तकनीकी प्रशिक्षण

1. महिलाओं के लिए आई.टी.आई. और पोलिटेक्निक संस्थाओं में 30 प्रतिशत स्थान सुरक्षित। उनके लिए 11 पोलिटेक्निक।

2. नये आई.टी.आई. सिर्फ महिलाओं के लिए।

3. कृषक महिलाओं के प्रशिक्षण की परियोजना।

4. हैंड पंप मैकेनिकों के प्रशिक्षण में 50 प्रतिशत महिलाएं। ढाई हजार महिलाओं को प्रशिक्षण और टूल किट का प्रदाय।

5. उसी गांव को साक्षर माना जाएगा जहां 85 प्रतिशत महिलाएं साक्षर हो जाएंगी।

मां के साथ बच्चों का भी ख्याल

1. नई 62 आई.सी.डी.एस. योजनाएं मंजूर। अब प्रदेश के सभी विकास खंड लाभान्वित।

2. महिलाओं–बच्चों के लिए पोषण आहार की दर 50 पैसे से बढ़ाकर एक रुपये प्रति हितग्राही।

3. राष्ट्रीय मातृत्व कल्याण योजना में गरीब परिवार की महिला को प्रसव के 12 से 8 हफ्ते पहले 500 रुपये एक मुश्त देने की योजना। वर्ष 98–99 में 1,66,000 महिलाएं लाभान्वित।

4. बाल संजीवन और सुरक्षित मातृत्व कार्यक्रम लागू। 71 हजार गांवों में 31 हजार परंपरागत दाइयों को प्रशिक्षण। 30 हजार दाइयों का प्रशिक्षण जारी।

5. 1993–94 में 230 समेकित बाल विकास परियोजनाओं के 20,048 आंगन वाड़ी केन्द्र, 1998–99 में बढ़कर 488 परियोजनाएं और 67000 केन्द्र।

6. वर्तमान में 38 लाख हितग्राहियों को प्रतिदिन पोषण आहार का प्रदाय।

7. अब नियमित महिला कर्मचारियों की तरह आकस्मिकता, कार्यभारित और दैनिक दर पर काम करने वाली महिलाओं को भी 90 दिन के प्रसूति अवकाश की पात्रता।

8. कल–कारखानों और कार्य स्थलों पर छोटे बच्चों की देखभाल के लिए शिशु घर बनाना अनिवार्य। शौचालय और भोजन स्थान का निर्माण भी।

9. अनुसूचित जाति, जनजाति कल्याण विभाग द्वारा खोली जानेवाली संस्थाओं में से दो–तिहाई शिक्षण संस्थाएं विशुद्ध रूप में बालिकाओं के लिए।

10. आयुष्मति योजना के तहत ग्रमीण गरीब भूमिहीन परिवार की महिलाओं को जिला अस्पताल में मुफ्त इलाज की सुविधा।

11. वात्सल्य योजना में संस्थागत प्रसव कराने पर ग्रामीण महिला हितग्राही को 500/– की सहायता राशि। वर्ष 98–99 में 16000 हितग्राही लाभान्वित।

12. बालिका समृद्धि योजना में गरीब भूमिहीन परिवार में दो बालिकाओं तक के जन्म पर प्रत्येक के लिए रु. 500– का अनुदान। वर्ष 98–99 में 79,000 महिलाएं लाभान्वित।

13. इंदिरा महिला योजना धार और ग्वालियर जिले के 14 विकासखंडों में प्रारंभ। अब तक 658 महिला समूहों में 11044 महिलाएं सदस्य।

14. प्रदेश के छः जिलों में महिला सशक्तीकरण की परियोजना विश्व बैंक की सहायता से प्रारंभ। लागत 29 करोड़ रुपये।

15. दूरवर्ती शिक्षा प्रणाली से सभी 459 विकासखंडों में प्रशिक्षण की व्यवस्था। सैटेलाइट टर्मिनल्स की स्थापना।

सहायता

1. निराश्रित पेंशन के लिए 50 वर्ष या ज्यादा की विधवा, परित्यकता महिलाएं पात्र घोषित। 50 वर्ष से अधिक आयु की पात्र विधवा महिला को 150 रुपये की मासिक पेंशन।

2. अब विधवा महिलाओं के लिए भवन और भू–खंडों में आरक्षण।

वानिकी

वन सम्पदा की दृष्टि से मध्यप्रदेश समृद्ध राज्य है। प्रदेश का 155414 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र याने लगभग 35 प्रतिशत भाग वनों के अन्तर्गत आता है। बस्तर, रायपुर, बालाघाट, राजनांदगांव, खंडवा, बैतूल, सरगुजा, मंडला और होशंगाबाद जिलों में तो अच्छे घने वन हैं, जबकि उत्तरी और पश्चिमी क्षेत्रों में साधारण वन हैं। उपर्युक्त संपूर्ण वनक्षेत्र वन विभाग के अंतर्गत हैं। शासकीय प्रबंधन की दृष्टि से इन्हें तीन वर्गों में रखा गया है – आरक्षित वन, संरक्षित वन और अवर्गीकृत वन। आरक्षित वन 80,976 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में, संरक्षित वन 69,103 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में और अवर्गीकृत वन 5336 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले हैं। सामान्यत: ये वन उष्ण कटिबंधीय हैं और इन्हे भौगोलिक रूप में तीन वर्गों में बांटा जा सकता है उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन, उष्णकटिबंधीय अर्द्ध पर्णपाती वन और उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन।

मध्यप्रदेश में कुल वनक्षेत्र का 17.88 प्रतिशत भाग सागौन के वनों का, 16.54 प्रतिशत भाग साल के वनों का और 55.73 प्रतिशत भाग मिश्रित वनों का है।

प्रदेश की अर्थव्यवस्था में वनों का स्थान महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रदेश के कुल राजस्व का लगभग 10 प्रतिशत भाग वनों से मिलता है। वनों से होने वाली मुख्य आय सागौन, साल और बांस से होती है जबकि गौण आय लघु वनोपज याने लाख, तेंदुपत्ता, कत्था, हर्रा, गोंद दवाओं के पौधों और कई प्रकार की घास से होती है।

1952 की राष्ट्रीय वननीति में घोषित किया गया था कि ग्रामीण समुदाय को किसी भी स्थिति में राष्ट्रीय हितों की कीमत पर वनों का उपयोग नहीं करने दिया जाएगा। इससे उन लाखों लोगों को नुकसान हुआ जो मिश्रित वनों से अपनी आजीविका की सामग्री पाते थे। लेकिन इसका एक सकारात्मक पक्ष यह है कि इससे वनों में मानवीय हस्तक्षेप कम होने लगा और वनों पर दबाव कम करने में सहायता मिली।

वनोपजों का राष्ट्रीयकरण

वनोपजों का उचित और संतुलित दोहन करके राज्य की आय बढ़ाने के उद्देश्य से 1971 में मध्यप्रदेश में वनोपजों

वन वृत्तों का क्षेत्रफल, (वर्ग कि.मी.)

वनवृत्त	भौगोलिक क्षेत्रफल	कुल वन क्षेत्र	आरक्षित वन	संरक्षित वन	अवर्गीकृत वन	कुल भौगोलिक क्षेत्र का प्रतिशत
1. जगदलपुर	20500	11666	6060	4457	1149	58.33
2. कांकेर	18560	9975	3781	4251	1943	53.74
3. दुर्ग	16804	4695	1983	2762	–	27.94
4. रायपुर	24117	7232	3750	3261	222	29.99
5. बिलासपुर	34883	14084	4267	8919	898	40.36
6. बालाघाट	9245	4055	1944	2111	–	43.36
7. सरगुजा	20966	12092	3998	8094	–	59.08
8. शहडोल	13331	5530	3860	1670	–	41.48
9. रीवा	31464	11701	3970	7731	–	37.19
10. जबलपुर (केन्द्रीय वृत्त)	23421	8858	6365	2493	–	39.44
11. सिवनी	13890	4082	2687	1273	121	29.39
12. छिन्दवाड़ा	11824	4338	1708	2616	14	36.69
13. बैतूल	10061	3959	2561	1398	–	39.35
14. सागर	31284	8592	4773	3373	445	27.46
15. भोपाल	37207	7008	4019	2704	285	18.83
16. होशंगाबाद	10016	3413	2278	1135	–	34.07
17. इन्दौर	46520	10265	6532	3734	–	22.06
18. खंडवा	24146	9706	8988	459	259	40.20
19. ग्वालियर	44602	14162	7523	6659	–	[illegible]
कुल	442841	155414	80976	69103	5336	

राष्ट्रीय उद्यान

क्रम. संख्या	नाम	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी.में	जिला	मुख्य वन्य…
1.	बांधवगढ़	448.85	शहडोल	बाघ, तेंदुआ, चीतल, सांभर, …
2.	फोसिल पार्क	0.27	मंडला	वनस्पति जीवा…
3.	इन्द्रावती	1258.37	बस्तर	बाघ, तेंदुआ, बारहसिंगा, जंगली भैं…
4.	कान्हा	940	मंडला	बाघ, तेंदुआ, बारहसिंगा, गौर, सांभर, चीत…
5.	कांगेर	200	बस्तर	बाघ, तेंदुआ, सांभर, चीत…
6.	माधव	375.22	शिवपुरी	तेंदुआ, सांभर, चीत…
7.	पन्ना	543.67	पन्ना	बाघ, तेंदुआ, सांभर, चीतल, चिंकार…
8.	पेंच	293.85	सिवनी/छिंदवाड़ा	बाघ, तेंदुआ, सांभर, चीतल, गौर
9.	संजय	1938.01	सीधी/सरगुजा	बाघ, तेंदुआ, चीतल
10.	सतपुड़ा	585.17	होशंगाबाद	बाघ, तेंदुआ, गौर, चीतल, सांभर
11.	वनविहार	4.45	भोपाल	मध्यप्रदेश के वन्य प्राणी

अभयारण्य

क्रम. संख्या	नाम	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी.में	जिला	मुख्य वन्य…
1.	अचानकमार	551.55	बिलासपुर	बाघ, तेंदुआ, चीतल, सांभर, गौर
2.	बोरी	518	होशंगाबाद	,,
3.	बादलखोल	104.45	जशपुर	,,
4.	भैरमगढ़	138.95	दन्तेवाड़ा	बाघ, तेंदुआ, वन भैंसा, सांभर
5.	बारनवापरा	244.66	रायपुर	बाघ, तेंदुआ, चीतल, गौर
6.	बगदारा	478 9	सीधी	तेंदुआ, कृष्णमृग, चिंकारा
7.	फेन	110 74	मंडला	बाघ, तेंदुआ, चीतल, सांभर
8.	गांधीसागर	368.62	मंदसौर	तेंदुआ, नीलगाय
9.	घाटीगांव	512.33	ग्वालियर	सोनचिड़िया
10.	गोमरधा	277.98	रायगढ़	तेंदुआ, गौर, सांभर
11.	करेरा	202.21	शिवपुरी	सोनचिड़िया
12.	केन घडियाल	45.20	छतरपुर/पन्ना	घड़ियाल, मगर
13.	खेवनी	122.70	देवास/सीहोर	तेंदुआ, चीतल, सांभर
14.	नरसिंहगढ़	57.18	राजगढ़	,,
15.	राष्ट्रीय चंबल घडियाल	435	मुरैना	घड़ियाल, मगर
16.	नौरादेही	1194.67	सागर	सांभर, नीलगाय, कृष्णमृग, चीतल
17.	पचमढ़ी	417 78	होशंगाबाद	बाघ, तेंदुआ, सांभर, चीतल
18.	पनपठा	245.84	शहडोल	,,
19.	पालपुर (कूनो)	344.68	मुरैना	,,
20.	पेंच	118.47	सिवनी/छिंदवाड़ा	,,
21.	पामेड	262.12	दन्तेवाड़ा	वनभैंसा
22.	रातापानी	823 84	रायसेन	बाघ, तेंदुआ, सांभर, चीतल
23.	संजय (डुबरी)	364.59	सीधी	,,
24.	समरसोत	430.35	सरगुजा	,,
25.	सिंघोरी	287.91	रायसेन	,,
26.	सीतानदी	553.36	रायपुर	,,
27.	सोन घड़ियाल	83.60	सीधी/शहडोल	घड़ियाल, मगर
28.	सरदारपुर	348.12	धार	खरमोर
29.	सैलाना	12.96	रतलाम	,,
30.	तमोरपिंगला	608.51	सरगुजा	बाघ, तेंदुआ, सांभर, चीतल
31.	उदयंती	247.60	रायपुर	बाघ, तेंदुआ, जंगली भैंसा, चीतल
32.	गंगऊ	68.14	ग्वालियर	बाघ, तेंदुआ, सांभर, चीतल, चिंकारा
33.	ओरछा	44.91	टीकमगढ़	तेंदुआ, जंगली सुअर, सांभर, चीतल, नीलगाय, चिंकारा
34.	रालामंडल	2.34	इन्दौर	बाघ, तेंदुआ, चीतल, सांभर, गौर, माल…
35.	वीरांगना दुर्गावती	23.97	दमोह	सांभर, नीलगाय, कृष्णमृग, चीतल

का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। इससे वन विभाग स्वयं वन की लकड़ी काटकर उसकी नीलामी करता है। इसके बाद तेंदूपत्ता के व्यापार का राष्ट्रीयकरण किया गया जिससे शासन की आय में बढ़ोत्तरी हुई और तेंदूपत्ता तोड़ने वाले मजदूरों को भी उचित मजदूरी मिलने लगी। तदनंतर लघु वनोपजों याने गोंद, सालबीज, हर्रा, कत्था आदि के व्यापार को भी सरकार ने अपने हाथ में ले लिया।

सामाजिक वानिकी

आबादी और मवेशियों के दबाव के कारण प्राकृतिक वनों पर विपरीत असर पड़ा। इस दबाव को कम करने के लिए राष्ट्रीय कृषि आयोग की सिफारिश के अनुसार 1981–82 में प्रदेश में सामाजिक वानिकी परियोजना शुरू की गई, जिसमें निजी जमीन के मालिकों को अपने उपयोग की लकड़ी देने वाले पेड़ बांस और चारा उगाने के लिए प्रोत्साहित किया गया पर सामाजिक वानिकी की यह योजना अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाई।

वनविकास निगम

मिश्रित विरले वनों के स्थान पर व्यापारिक और औद्योगिक महत्व के पेड़ व्यापक रूप से लगाने के लिए मध्यप्रदेश शासन ने 1975 में वन विकास निगम की स्थापना की। इसके लिए शासन को विश्व बैंक से करोड़ों रुपयों का अनुदान मिला और इससे सागौन, बांस, यूकिलिप्टिस और कागज की लुगदी के काम आने वाली प्रजातियों का बड़े पैमाने पर रोपण किया। इसमें सन्देह नहीं कि व्यावसायिक वनीकरण से वन विभाग की आय में बढ़ोत्तरी हुई है पर एक ही प्रजाति के वन लगाने की आलोचना भी हुई है और कहा गया है कि ऐसे वन पर्यावरण की दृष्टि से विविधता नहीं रखते एवं वन की सीमा पर बसे गरीबों को ईंधन, पत्तियों और अन्य गौण वनोपजों से वंचित रखते हैं। यह भी आलोचना की जाती है कि व्यावसायिक रूप से वन लगाकर सरकार द्वारा उद्योग–पतियों को सस्ती दर पर तथा वनवासियों और गरीबों को महंगी दर पर बांस दिया जाता है।

आगे आनेवाले वर्षों में वनों के प्रबंधन और दोहन के बारे में सरकार का नजरिया बदला और ऐसा महसूस किया गया कि वनों का संरक्षण केवल सरकार की आय बढ़ाने के लिए नहीं होना चाहिए बल्कि वनों के संरक्षण में पर्यावरण का ज्यादा ध्यान रखा जाना चाहिए। 1988 में घोषित नई वननीति में आय की अपेक्षा पर्यावरणीय स्थायित्व को प्राथमिकता दी गई और एक प्रजाति के वनों की तुलना में मिश्रित वनों को महत्व दिया गया। वनों के संरक्षण की दिशा में यह एक नया और उपयोगी सोच था।

वन अनुसंधान संस्थान और वन विद्यालय

मध्यप्रदेश में वन संबंधी अनुसंधान और प्रशिक्षण हेतु कई संस्थान हैं –

1. भारतीय वन प्रबंध संस्थान, भोपाल
2. वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर
3. वन महाविद्यालय, बालाघाट
5. वन विद्यालय, शिवपुरी, अमरकंटक, गोविंदगढ़, जगदलपुर और लखनादौन

वन्य जीव संरक्षण

मध्यप्रदेश अपनी वन संपदा के साथ वन्य जीवों की दृष्टि से भी संपन्न रहा है। इस सदी के पूर्वार्द्ध तक प्रदेश में वन्य प्राणियों की बहुलता थी क्योंकि तब जनसंख्या और मवेशियों की संख्या इतनी ज्यादा नहीं थी कि उनका कुप्रभाव वनों पर पड़े। पर इस सदी के उत्तरार्द्ध में जनसंख्या के दबाव, मवेशियों की बढ़ती संख्या, औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण वनों पर दबाव पड़ा। फलस्वरूप वन्यजीवों की संख्या तेजी से कम होने लगी। अवैध शिकार ने स्थिति और भी खराब कर दी।

वन्यजीवों के संरक्षण की दिशा में मध्यप्रदेश ने 1971 में एक सराहनीय कदम यह उठाया कि शासन ने पूरे राज्य में शिकार पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया। इसके बाद तो वन्यजीवन संरक्षण के लिए क्रमश: कई प्रभावी कदम उठाए गए। भारत सरकार द्वारा पारित वन्यजीवन (संरक्षण) अधिनियम 1972 के अंतर्गत मध्यप्रदेश सरकार ने 1974 में वन्यजीवन (संरक्षण) नियम बनाए और वन्य जीवन के संरक्षण के लिए जरूर कदम उठाये।

1972–73 तक प्रदेश में सिर्फ 3 राष्ट्रीय उद्यान और 12 अभयारण्य थे लेकिन अब प्रदेश में 11 राष्ट्रीय उद्यान तथा 35 अभयारण्य हैं। इनका कुल क्षेत्रफल 17205 वर्ग किलोमीटर है जो प्रदेश के कुल वनक्षेत्र का लगभग 11 प्रतिशत है और प्रदेश के कुल भौगालिक क्षेत्र का 3.89 प्रतिशत है। राष्ट्रीय उद्यानों और अभयारण्यों के नाम, उनका क्षेत्रफल और उनमें पाए जाने वाले मुख्य वन्यजीवों का विवरण नीचे दिया गया है –

भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून के अनुसार देश में कम से कम 5 प्रतिशत क्षेत्र का संरक्षित क्षेत्र भौगोलिक क्षेत्र का कम से कम [illegible] होना चाहिए। इस तरह प्रदेश में अभी भी संरक्षित क्षेत्रों के विस्तार की गुंजाइश है। इसे ध्यान में रखकर जैव विविधता की दृष्टि से महत्वपूर्ण 18 नए क्षेत्र भी चुने गए हैं। इसके अलावा राष्ट्रीय उद्यानों और अभयारण्यों के विकास के लिए कुछ महत्वपूर्ण योजनाएं भी चल रही हैं। जिनका विवरण नीचे है

प्रोजेक्ट टाइगर योजना

भारत शासन के द्वारा बाघों के संरक्षण के लिए 1973 में प्रारंभ की गई प्रोजेक्ट टाइगर योजना मध्यप्रदेश में सबसे पहले कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में शुरू की गई थी। अब [illegible] राष्ट्रीय उद्यानों में यह योजना चल रही है – कान्हा, बांधवगढ़, पेंच, पन्ना और इन्द्रावती। हाल ही में पचमढ़ी के [illegible] क्षेत्रों में भी प्रोजेक्ट टाइगर योजना को [illegible] वर्तमान में मध्यप्रदेश में बाघों की अनुमानित [illegible] जिनमें से [illegible] बाघ प्रोजेक्ट टाइगर [illegible]

सिंह पुनर्वास योजना

देश में विलुप्त प्राय सिंहों [illegible]

है। यहां गुजरात के राष्ट्रीय उद्यान से सिंहों को लाकर बसाया जाएगा। इससे सिंह की प्रजाति के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा।

टाइगर सैल

अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बाघ के शरीर के अंगों की बहुत ज्यादा कीमत है जिससे बाघ के अवैध शिकार और उसके शरीर के अंगों की तस्करी एकाएक बढ़ी है। इस पर अंकुश लगाने के लिए मध्यप्रदेश शासन ने पुलिस तथा वन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में अक्टूबर 1994 में टाइगर सैल (बाघ प्रकोष्ठ) का गठन किया। इसके द्वारा बाघ के अवैध शिकार की रोकथाम की कोशिश हो रही है।

कुछ विशेष प्रयास

वन्यप्राणी संरक्षण के उपर्युक्त प्रयासों और योजनाओं के अतिरिक्त मध्यप्रदेश में कुछ वन्यप्राणियों के संरक्षण के लिए विशेष प्रयास किये जा रहे हैं। उदाहरण के लिए पामेड तथा भैरमगढ़ अभयारण्य वन भैंसा के संरक्षण के लिए, करेरा एवं घाटीगांव अभयारण्य सोनचिड़िया के संरक्षण के लिए, सैलाना और सरदारपुर अभयारण्य खरमोर चिड़िया के संरक्षण के लिए और केन, सोन तथा राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य घड़ियालों के संरक्षण के लिए विशेष तौर से बनाए गए हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि कान्हा नेशनल पार्क में ब्रेंडेरी उपजाति के बारासिंगा नामक हरिण को लुप्त होने से बचाने में अद्भुत सफलता मिली है जिसकी पूरे विश्व में प्रशंसा हुई है। इस किस्म का बारसिंगा संसार में सिर्फ कान्हा में ही पाया जाता है। दुर्लभ प्रजाति के इस बारासिंगा की संख्या 60 के दशक में कान्हा में घटते-घटते सिर्फ 70 रह गई थी पर उसके संरक्षण के लिए किए गए प्रयासों से अब कान्हा में 300 से ज्यादा बारासिंगा हैं।

बारासिंगा के मध्यप्रदेश का राज्य पशु घोषित किया गया है और प्रदेश का राज्य पक्षी दूधराज है जिसे अंग्रेजी में पैराडाइज फ्लाईकैचर कहा जाता है।

—डा. सुरेश मिश्र

परिवहन

मध्य प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है। परन्तु यहां परिवहन के प्रमुख साधनों का अभाव है।

प्रदेश में कुल रेलमार्गों व सड़कों की लंबाई अन्य राज्यों की तुलना में बहुत कम है। प्रदेश का बहुत बड़ा भाग ऐसा है जहां पक्की सड़कों तथा रेलमार्गों का नितान्त अभाव है।

मध्य प्रदेश में परिवहन के निम्नलिखित तीन प्रमुख साधन हैं: (1) सड़क मार्ग (2) रेल मार्ग (3) वायु मार्ग

सड़क मार्ग

मध्यप्रदेश में सड़कों की कुल लंबाई 1,16,213 किमी है जिसमें 60,874 किसी लंबी पक्की सड़कें और 55,339 किमी लंबी कच्ची सड़के है। राज्य की 2755 किमी लंबी सड़कें राष्ट्रीय राजमार्ग में शामिल हैं। राज्य के प्रत्येक गांव को मुख्य सडक के साथ जोड़ने की योजना है जिसकी जनसंख्या 1000 से अधिक है। प्रदेश में पक्की सड़कों का घनत्व 0.60 किमी प्रति 100 वर्ग किमी है जबकि देश का औसत घनत्व 0.92 किमी पक्की सड़क है।

मध्यप्रदेश में राज्य परिवहन निगम यातायात के सुगम बनाने का प्रयास करता है। इन्दौर तथा ग्वालियर में मध्यप्रदेश परिवहन निगम के वर्कशापों में मोटर बोडी बनाने की व्यवस्था है। शीघ्र ही माल परिवहन की व्यवस्था भी शुरू होने जा रही है।

राज्य के बड़े-बड़े नगरों को जोड़ने वाली सड़कों को 'प्रान्तीय मार्ग' कहते हैं। यहां इन मार्गों की लंबाई 2755 किमी है। देश के बड़े-बड़े नगरों को मिलाने के लिए 'राष्ट्रीय राजमार्ग' हैं। इनकी देखभाल केन्द्र सरकार करती है। मध्यप्रदेश से राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 3 (आगरा-ग्वालियर विश्वपुरी-इन्दौर-धुले-नासिक-मुम्बई), राजमार्ग नं. 6 (धुले-नागपुर-रायपुर-सम्बलपुर-बहमगोरा-कलकत्ता), राजमार्ग नं.7 (वारणासी-मंगावाना-रीवा-जबलपुर-लखनादोन-नागपुर-हैदराबाद-सेलम-मदुरै-कन्या कुमारी), राजमार्ग नं. 1 (जबलपुर-भोपाल-राजगढ़-झालावाड-कोटा-टोंक-जयपुर), राजमार्ग नं. 16 (निजामाबाद-मानचरेल-जगदलपुर), राजमार्ग नं. 25 (लखनऊ-कानपुर-झांसी-शिवपुरी), राजमार्ग नं. 26 (झांसी-लखनादोन) राजमार्ग नं.27 (इलाहाबाद-मंगवान), राजमार्ग नं.43 (रायपुर-विजयनगरम), राजमार्ग क्र.69 (भोपाल-नागपुर) आदि गुजरते हैं।

वर्ष 1997-98 के अंत में राज्य में कुल पंजीकृत मोटरयानों की संख्या 28.17 लाख थी, जो वर्ष 1998-99 के अंत में बढ़कर 31.24 लाख हो गई।

विभिन्न प्रकार के वाहनों में 31 मार्च, 1999 में गत वर्ष की तुलना में, कारों एवं जीपों की संख्या में 6.1 प्रतिशत, टेक्सी एवं थ्री-व्हीलर में 9.3 प्रतिशत, यात्री वाहनों में 13.0 प्रतिशत, मालयान में 3.3 प्रतिशत, द्वि-पहिया वाहनों में 11.2 प्रतिशत तथा अन्य प्रकार के वाहनों में 13.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। उल्लेखनीय है कि कुल पंजीकृत वाहनों में द्वि-पहिया वाहनों की संख्या लगभग तीन-चौथाई है।

मध्यप्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम

निगम की स्थापना सड़क परिवन निगम अधिनियम, 1950 के अधीन वर्ष 1962 में की गई थी।

मध्य प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम की नवीं पंचवर्षीय योजना (वर्ष 1997-2002) 47.28 करोड़ रुपये की है। वर्ष 1997-98 में यात्री सुविधाओं, वाहनों के

नवीनीकरण, आदि हेतु 5.71 करोड़ रुपए की वार्षिक योजना स्वीकृत की गई थी, जिसके विरुद्ध निगम ने 5.78 करोड़ रुपये व्यय किये।

हेतु

वर्ष 1998–99 में 563 किलोमीटर सड़कों एवं 30 वृहद पुलों के निर्माण तथा विभिन्न जनसंख्या वाले 120 ग्रामों को मुख्य मार्गों से जोड़ने के लक्ष्य के विरुद्ध 400 किलोमीटर सड़कों एवं 13 वृहद पुलों का निर्माण किया गया तथा 59 ग्रामों को मुख्य मार्गों से जोड़ा गया है।

रेल मार्ग

मध्यप्रदेश के रेल मार्गों की लंबाई देश के अन्य राज्यों की तुलना में बहुत कम है। यहां देश के रेलमार्गों की कुल लंबाई का 7.54 प्रतिशत भाग आता है। मध्यप्रदेश में सर्वप्रथम 1865 से 1878 के दौरान रेल मार्ग का निर्माण हुआ जो बम्बई–दिल्ली रेल मार्ग को पूरा करने हेतु निर्मित किया गया था। इलाहाबाद–जबलपुर रेल मार्ग 1867 में भोपाल–उज्जैन रेल मार्ग तथा बीना–कोटा रेल मार्ग 1895 ई. में तथा बीना–कटनी रेल मार्ग 1889–1899 में बन गये थे। झांसी–मानिकपुर रेल मार्ग 1889 ई. में बन गया था।

मध्यप्रदेश में रेल मार्गों की लंबाई 5739 किलोमीटर है। यहां तीन रेल मार्गों (पश्चिम रेलवे, मध्य रेलवे और दक्षिण–पूर्वी रेलवे) की शाखा व उपशाखाएं हैं।

वायु मार्ग

मध्यप्रदेश के छह नगरों (इन्दौर, भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, रायपुर व खजुराहो) में इंडियन एयर लाइन्स एवं वायुदूत की नियमित सेवाओं से जुड़े हवाई अड्डे हैं। इनके अतिरिक्त 8 अन्य नगरों (बिलासपुर, सतना, पन्ना, रतलाम, सीतागढ़, नीमच, पंचमढ़ी और अम्बिकापुर) में हवाई अड्डे हैं। इस प्रकार मध्यप्रदेश में कुल 14 हवाई अड्डे हैं।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण

मध्य प्रदेश शासन ने सन् 2000 तक सबको स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराने के लक्ष्य को सामने रखते हुए तथा इस कार्य को अपना सर्वोपरि दायित्व समझते हुए विभिन्न स्वास्थ्य कार्यक्रमों को लागू किया है। राज्य की जनसंख्या से आदिवासी तथा अनुसूचित जाति का प्रतिशत क्रमशः 22.97 तथा 14.10 है। नागरिकों के लिए उत्तम स्वस्थ स्तर का विकास करना एक [illegible] कर्तव्य है।

आदिवासी अंचलों में [illegible] के तहत 46 चलते–फिरते औषधालयों की स्थापना [illegible] है।

इस योजना के अन्तर्गत [illegible] अलग–अलग स्थानों पर [illegible] आदिवासी खरीद के लिए [illegible] जायेगा। इन क्षेत्रों में 12 [illegible] का प्रयास है। इसके [illegible] वाली गन्दी बस्तियों में [illegible] रही है। 1988–89 में [illegible] उपलब्ध कराने हेतु 1000 [illegible] सिविल डिस्पेंसरी [illegible] परिवर्तित करने तथा 32 [illegible] केन्द्रों की [illegible]

में 5000 की जनसंख्या पर एक उप–स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित करने का मापदंड रखा गया है। [illegible]

[illegible]

प्रत्येक में एक प्रशिक्षित दाई नियुक्त किये जाने का प्रावधान है। परिवार नियोजन के क्षेत्र में चल रही योजनाओं के अन्तर्गत एस.डी.पी. 1988 तक 281 केन्द्र थे। एम.टी.पी. प्रशिक्षण केन्द्र आठ है। जिनमें 6 मेडिकल कालेज में हैं।

लेप्रोस्कोप ट्रेनिंग: यह ट्रेनिंग नसबंदी आपरेशनों के लिए पुरुष एवं महिला चिकित्सकों को दी जाती हैं।

ग्रीन कार्ड एवं अग्रिम वेतन वृद्धि लाभ: भारत सरकार ने 26 जनवरी 1985 से ग्रीन कार्ड योजना लागू की थी। यह कार्ड उन दंपतियों को दिया जाता है जो एक या दो जीवित बच्चों के रहते स्वेच्छा से नसबंदी आपरेशन करा लेते हैं। कार्ड में सूचित सात सुविधाएं कार्डधारी परिवार को मिलती हैं।

अग्रिम वेतन वृद्धि लाभ उन सरकारी कर्मचारियो को प्राप्त होता जो दो या एक जीवित बच्चो के बाद (पति या पत्नी) नसबंदी करवा लेते हैं। उन्हे आपरेशन के दिन से दो अग्रिम वेतन वृद्धि एवं तीन बच्चो के बाद आपरेशन करवा लेने पर एक अग्रिम वेतन वृद्धि दी जाती है।

सरकारी सेवा (महिला या पुरुष) दपति दो बच्चो के बाद आपरेशन करवा लेता है उसे गृह निर्माण एव स्कूटर क्रय अग्रिम में प्राथमिकता दी जाती है।

इसके अतिरिक्त इस सबध मे जनशिक्षा दृश्य ध्वनि हेतु उपकरण प्रदान करना प्रचार स्वास्थ्य कार्यकर्ताओ को शैक्षणिक-सामग्री महिलाओ मे जनसख्या शिक्षा का पचार कार्यक्रम चलाये जात है।

दिशा दर्शन शिविर युवको मे बाद विवाद प्रतियोगिता

परिवार कल्याण तथा मातृ एवं शिशु कल्याण कार्यक्रम

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत निर्धारित उद्देश्य एवं वर्तमान स्थिति इस प्रकार है।

क्रम	राष्ट्रीय उद्देश्य जो वर्ष 2000 तक प्राप्त किया जाना है।	म.प्र. की स्थिति
1. जन्मदर (प्रति हजार)	21	36 2
2. मृत्यु दर (प्रति हजार)	9	13.1
3. शिशु मृत्यु दर (प्रति हजार)	60	119
4. लक्ष्य-दंपति (प्रतिरक्षण दर)	60	36.6

परिवार कल्याण कार्यक्रम की उपलब्धिया (1988-89 म नसबन्दी 66.7, लूपनिवेशन 117 9 सी सी यूजर्स 102 9 ओ पी यूजर्स 143.9 आनुपातिक लक्ष्य पतिशत था।

द्वारा जागरण प्रचार माध्यमों में समन्वय शैक्षिक संस्थाओं का सहयोग, फिल्म प्रदर्शन, अभियान, सूचना शिक्षा एवं संचार योजना, आदि कार्यक्रम भी चलाये जाते हैं।

राज्य में स्वास्थ्य संबंधी अन्य कार्यक्रमों में राष्ट्रीय अंधत्व निवारण कार्यक्रम, राष्ट्रीय क्षय नियंत्रण कार्यक्रम केमोथेडेपी का सक्षिप्त पाठ्यक्रम राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम, प्लाज्मोडियम फैलसीपैरम नियत्रण, मलेरिया क्लीनिक, राष्ट्रीय नारू उन्मूलन कार्यक्रम, घेंघा नियत्रण कार्यक्रम, स्वास्थ्य परीक्षण आदि कार्यक्रम लागू हैं।

औषधि एव सौदर्य प्रसाधन अधिनियम-1940 के अन्तर्गत मुख्यत. एलोपथी, होम्योपैथी, एवं आयुर्वेदिक औषधियो के निर्माण हेतु विज्ञप्तियां जारी की जाती हैं। औषधियो की गुणवत्ता पर नियंत्रण रखा जाता हैं। एक औषधि प्रयोगशाला राज्य स्तरीय में नमूनों की जांच की जाती है। खाद्य अपमिश्रण-निवारण अधिनियम 1954 के अन्तर्गत खाद्य पदार्थों के नमूनों के परीक्षण किये जाते है। भोपाल मे एक खाद्य प्रयोगशाला है।

औषधि निर्माण इकाइया - 1988 तक एलोपैथी 421, आयुर्वेदिक 224, प्रसाधन सामग्री 98, होम्योपैथी निर्माण ईकाईया राज्य मे कार्यरत थी।

भारतीय चिकित्सा पद्धति एव होम्योपैथी के विकास एवं समृद्धि के लिए एक स्वतंत्र संचालनालय स्थापित किया गया है। राज्य मे सात महाविद्यालय है जो स्नातक स्तर की शिक्षा प्रदान करती है। ग्वालियर तथा रायपुर के आयुर्वेदिक महाविद्यालयो मे स्नातकोत्तर महाविद्यालयों में अध्ययन एवं थीसिस का प्रबध है, वनस्पति विज्ञान एव साहित्यिक अनुसंधान की योजनाए भी अमल मे है। शासकीय आयुर्वेद औषधालय 1933, शासकीय युनानी औषधालय 52, शा. होम्योपैथी औषधालय 116, शा आयुर्वेद चिकित्सालय 32, शा. हाम्योपैथी सैनीटोरियम 1, कुल शस्य सख्या 1130 हैं।

चिकित्सा शिक्षा

राज्य सरकार द्वारा सचालनालय चिकित्सा शिक्षा (विभागाध्यक्ष) की स्थापना वर्ष 1981 मे प्रदेश के द. चिकित्सा महविद्यालयों, उनसे सबद्ध सात चिकत्सिालयों, तीन केसर चिकित्सालयो एक दन्त चिकित्सा महाविद्यालय एक कालेज आफ मेडिसिन एव अन्य संबन्धित सस्थाओ के पशासनिक एव वित्तीय निरीक्षण के लिए की गयी थी। इसके अतिरिक्त राज्य सरकार ने रायपुर रीवा, ग्वालियर तथा भोपाल में चिकित्सा सुविधा सुदृढ करने के लिए शैय्याओं के वृद्धि करने हेतु बहुमजिले चिकित्सालय भवनों को निर्माण के पस्ताव रखा है। आदिवासी अपयोजना के तहत आदिवासी विकास के लिए सातवी पच वर्षीय योजना मे 1985-90 म 6282 00 लाख रुपय रख गय है।

विभिन्न बीमारिया के उपचार और सामान्य बीमारियों की रोकथाम क साथ -साथ लोगा का स्वास्थ्य शिक्षा के माध्यम स रोगो के लक्षण तथा उनके कारण एव बचाव की जानकारी प्रदान की जा रही है। ताकि आदिवासी परिवार कुपोषण और अस्वास्थ्य रहन-सहन के खतरों में सावधान रह सकें।

सिर्फ़ खेलने कूदने की ही नहीं समझने-बूझने की भी उम्र

किशोर अवस्था यानी 12 से 19 साल के बीच की उम्र, मस्तियों, उमंगों, सपनों के दिन।
क्या बस इतना ही काफी है? ये समझ बढ़ने, पकने का वक्त भी है। आज हमारे देश की
आबादी में बीस करोड़ लोगों की उम्र किशोरवय की है। उनकी भी ज़रूरतें हैं, दिक्कतें हैं।
उन्हें भी ज़रूरत है सेहत और परिवार कल्याण की जानकारियों की।

आज भी हमारे प्रदेश में 50 फीसदी लड़कियों की शादियां 16 साल से पहले हो जाती हैं।

आज भी 15 से 19 साल की लड़कियों की प्रजनन दर प्रति हज़ार पर 116 है।

आज भी हमारे यहां पैदा होने वाले बच्चों में 23 फीसदी 15 से 19 साल की माओं के होते हैं।

इन किशोरों को दुनिया की जानकारी के साथ अपने जीवन में आने वाले बदलावों,
उनके दबावों की जानकारी भी चाहिये। दोस्तों की सलाह और नीम हकीमों की राय से
कुछ ज्यादा। यौन व्यवहार की जानकारियां भी इनकी ज़रूरत हैं।

कल के लिए आज

जनसंख्या स्थिरीकरण वर्ष
2000-2001

हिचकें नहीं
समझें

साहित्य, कला, संस्कृति

मध्य प्रदेश की विशेष भौगोलिक स्थिति ने इसकी कला–संस्कृति, साहित्य एवं इतिहास पर विशेष प्रभाव छोड़ा है। संपूर्ण भारत की एकात्म भावना एवं विविधता का प्रतीक है यह राज्य।

मध्य प्रदेश ने साहित्य एवं ललित कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है।

भारत भवन: भोपाल

स्थापना: 13 फरवरी 1982।

उद्देश्य: सृजनात्मक कलाओं के राष्ट्रीय विकास, परिरक्षण, अन्वेषण, प्रसार प्रचार प्रोत्साहन हेतु भारत भवन न्यास अधिनियम 82 (के अन्तर्गत स्थापित)।

गतिविधियां: नागर लोक एवं आदिवासी काल के दो बड़े संग्रहालय, व्यावसायिक रंगमंच 'रंगमंडल' भारतीय भाषाओं का कविता पुस्तकालय और संग्रहालय 'वागर्थ' शास्त्रीय ... आदिवासी संगीत संग्रहालय 'अनहद'। अन्तःप्रसार रंगशालाएं अंतरंग और बहिरंग। लेखकों के लिए ..। अभिलेख एवं विविध–विषयों पर पुस्तक संग्रहालय, ...या कविता केन्द्र संलग्न शासन द्वारा स्थापित निराला सृजनपीठ। प्रकाशन: साहित्य कला समालोचना है मासिक 'पूर्वग्रह' तथा ललित कलाओ की अंग्रेजी अनियत कालीन पत्रिका 'बहुवचन' पुरस्कार: रजा पुरस्कार।

मध्यप्रदेश कला परिषद, भोपाल

स्थापना: 1952

गतिविधियां: परिषद राज्य की संगीत, नृत्य, नाटक और ललित कलाओं की राज्य अकादमी के रूप में कार्यरत है।

प्रदेशिक स्तर पर मध्य प्रदेश संगीत समारोह, मध्य प्रदेश नाट्य समारोह, मध्य प्रदेश कला प्रदर्शनी, राजा पुरस्कार प्रदर्शनी, दिवसीय जिला सांस्कृतिक कार्यक्रम अखिल भारतीय खजुराहो नृत्य समारोह, भोपाल उत्सव संभागीय तीन दिवसीय उत्सव। प्रकाशन: 'कलावार्ता' (मासिक) और काल संबंधी 'मोनोग्राफ'।

मध्यप्रदेश साहित्य परिषद भोपाल

स्थापना: 1954

गतिविधियां: प्रदेश में हिन्दी साहित्य के प्रोत्साहन संरक्षण हेतु नये रचनात्मक एवं आलोचनात्मक साहित्य का प्रकाशन, साहित्य सम्मेलन, परिचर्चा गोष्ठियां,

पाठकमंच, **प्रकाशन:** साक्षात्कार (मासिक), **पुरस्कार:** प्रतिवर्ष श्रेष्ठ कृतियों पर पुरस्कार।

मध्य प्रदेश उर्दू अकादमी

स्थापना: 1976

गतिविधियां: मध्य प्रदेश में उर्दू साहित्य के प्रोत्साहन एवं संरक्षण, हेतु अदीबों और शायरों, मुशायरा कराने वाली साहित्यिक संस्थाओं किताबों की छपाई, उर्दू लाइब्रेरियों आदि को आर्थिक साहायता। प्रतिवर्ष नाट्य शिविर में तैयार दो उर्दू नाटकों का मंचन। तीन दिवसीय 'यादे रफतंगा' मुशायरा, सेमिनार एवं शबे गजल का आयोजन। प्रकाशन: समय–समय पर आयोजन पुस्तकाएं। पुरस्कार: विशिष्ट कार्यों के लिए सम्मान एवं पुरस्कार।

कालिदास अकादमी, उज्जैन

स्थापना: 1977

गतिविधियां: काल एवं लोकप्रिय व्याख्यान, शोध संगोष्ठियां, नृत्य तथा संगीत प्राशिक्षण हेतु शास्त्र विचार परिषद एवं वेद विधि सम्मेलन, कला प्रदर्शानियां, पारम्परिक नाटक, प्रदर्शन मूलक लोक कलाएं, संगीत, नृत्यशोध, अनुशीलन तथा प्रकाशन कार्य आदि। मौखिक

भारत भवन, भोपाल
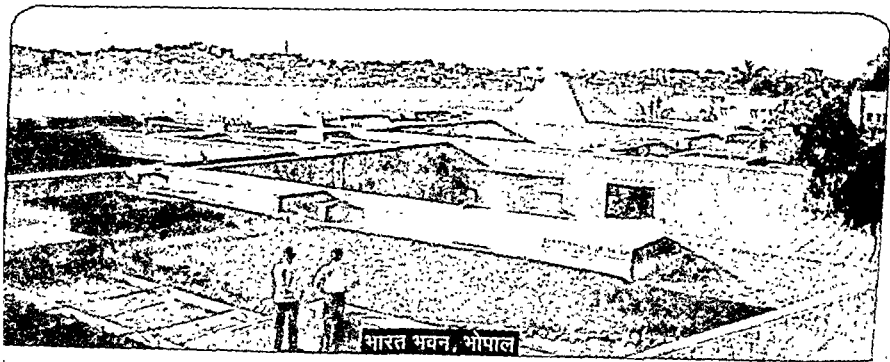
परंपरा संरक्षण एवं आचार्य कुल की स्थापना। कालिदास साहित्य में वर्णित पेड़ पौधें फूलों और लताओं पर आधारित उद्यान का निर्माण आदि।

प्रकाशन: अकादमी महाकवि कालिदास की रचनाओं के संपादन एवं अनुवाद के प्रकाशन के साथ ही अन्य प्राचीन साहित्य के प्रकाशन की दिशा में भी गतिशील है। कालिदास शोध पत्रिका 'कालिदास साहित्य में वनस्पति (साइकलेस्टाडल) ऋतुसंहार (बलोपयोगी) कुमार संभव 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' मेघसन्देश आदि का हिन्दी रूपान्तर एवं अनुवाद) भारतीय दर्शनेषु कर्मवाद, ऋतुसंहार की संस्कृत टीकाएं शिव महिम्न स्तोत्र टीका तथा उपमन्यु कृति शिव स्तोत्र।

उस्ताद अल्लाउद्दीन खां संगीत अकादमी

गतिविधियां: उस्ताद अल्लाउद्दीन खां की अक्षय कीर्ति को संस्था का रूप देते हुए और उनके उपलब्धियों आदि को सामने रखते हुए विभिन्न आयोजन। अल्लाउद्दीन खां व्याख्यान माला, 'दुर्लभ वाद्यविनोद' चक्रधर समारोह रायगढ़ ध्रुपद ध्रुपद समारोह, कथक प्रसंग, अल्लाउद्दीन खां स्मृति संगीत समारोह (मेहर) अमीर खां समारोह (इंदौर) आदि कार्यक्रमों का आयोजन।

प्रकाशन: समय समय पर प्रकाशित स्मारिकाएं, मेरी कथा (उस्ताद अल्लाउद्दीन खां रजब अली खां (अमीक हनफली) कुमार गंधर्व (अशोक वाजपेयी रायगढ़ में कथक कथक कार्तिकराम) एट द सेंटर हिन्दी अनुवाद (मोहन नाटकर्णी) मध्यवर्ती (सुशील त्रिवेदी) पुरस्कार: उल्लेखनीय उपब्धियों के लिए संगीत–विद्वानों कलाकारों आदि का सम्मान।

मध्य प्रदेश लोक कला परिषद भोपाल

गतिविधियों: जनजातीय लोक संस्कृति–कला परंपरा सर्वेक्षण दस्तावेजीकरण। (आयोजन: लोकरंग भोपाल, 'जगर' उत्सव रायपुर, लोकरंजन खजुराहो प्रति वर्ष रहस समारोह बिलासपुर, पण्डवाजी प्रसंग' छत्तीसगढ़, सम्पदा।

प्रकाशन: चौमास (चैमासिक पत्रिका) मोनोग्राफ, सर्वेक्षण रिपोर्ट।

मध्यप्रदेश फिल्म विकास निगम लि. भोपाल

गितिविधयां: फिल्मोत्सवों का आयोजन फिल्म क्लब विडियो क्लब, फिल्म रसास्वाद पाठ्यक्रम, सिनेमागृहों का निर्माण, फीचर फिल्म और डाक्यूमेंन्ट्री फिल्म निर्माण, पुनरावलोकी फिल्म समारोह, विदेशी भाषा फिल्म समारोह, प्रकाशन: 'पटकथा' (त्रै मासिक) ताम्रकर (मोनोग्राफ) गुरुदत्त (तीन अंकीय मोनोग्राफ) अरूप खोपकर शतरंज के खिलाड़ी (डा. सुरेन्द्र तिवारी)।

मध्यप्रदेश सिन्धी साहित्य अकादमी, भोपाल

स्थापना: 1983

गतिविधियां: परिचर्चा, विचार गोष्ठी, व्याख्यानमाला, कविता, कहानीपाठ, सिन्धी नाट्यप्रस्तुति, लोकगीत, अनुदान, सिन्धी प्रतिनिधि का प्रकाशन, मोनोग्राफ, अनुवाद कर्मशालाएं।

अल्लामा इकबाल अदबी मरकज़, भोपाल

स्थापना: 1984

गतिविधियां: उर्दू भाषा, साहित्य शिक्षा शोध, अल्लामा इकबाल संबंधी सूचनाओं का संग्रहण रचनाओं का अनुवाद। प्रकाशन: अनुवादित एवं सेमिनार की पुस्तकें का प्रकाशन।

मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी, भोपाल

स्थापना: 1985

गतिविधियां: रेवागोष्ठी, रामगढ़ सर्वेक्षण यात्रा शाहलभंजिक (रामशेखर नाटयम) छन्दम (संस्कृत गीत नृत्योपरसत्त: संबंध) प्रकाशन: दूर्वा (त्रै मासिक)।

मध्यप्रदेश तुलसी अकादमी, भोपाल

स्थापना: 1987

गतिविधियां: संस्कार अभियान, मंगालचरण, लोकमंगल, जनरंजन, लोकयात्रा, तुलसी उत्सव तुलसी शोध संस्थान, शोध सर्वे और पाण्डुलिपि संग्रह।

प्रकाशन: डा. विद्यानिवास मिश्र और श्री विष्णुकान्त शास्त्री के व्याख्यानों का प्रकाशन, 'समाधान' शोधपत्रिका। रामनारयण उपाध्याय के तुलसी के राम का प्रकाशन पुरातत्व पर आधारित श्रीराम की वनयात्रा की पथ रेख और प्रतिमाओं का प्रामाणिक एलबम।

मध्य प्रदेश सरकार सम्मान

कालीदास सम्मान: (स्थापना वर्ष, 1980) प्रदर्शनकारी और रुपंकर कलाओं में राष्ट्रीय पुरस्कार।

लता मंगेशकर सम्मान: (स्थापना वर्ष 1984) सुगम संगीत: राष्ट्रीय पुरस्कार।

कबीर सम्मान: (स्था पना वर्ष 1986) भारतीय कविता पर राष्ट्रीय पुररस्कार।

इकबाल सम्मान: (स्थापना वर्ष 1986): सृजनात्मक उर्दू साहित्य, राष्ट्रीय सम्मान।

मैथिलिशरण गुप्त सम्मान: (स्थापना वर्ष 1983) लोक तथा पारम्परिक कला, राष्ट्रीय पुरस्कार।

तानसेन सम्मान: (स्थापना वर्ष 1980)

शिखर सम्मान: (स्थापना वर्ष 1980) प्रदर्शनकारी, रुपंकरकला राज्य स्तरीय पुरस्कार।

सृजनात्मक कार्य हेतु 1000 रु. प्रतिमास फेलोशिप

संस्कृति विभाग मध्य प्रदेश के अन्तर्गत स्थापित सृजनपीठ निराला सृजनपीठ, भोपाल मुक्तिबोध सृजनपीठ, सागर प्रेमचन्द सृजनपीठ, उज्जैन उस्ताद [illegible] सृजनपीठ

दर्शनीय स्थल

भारत के मध्य में स्थित सात राज्यों विहार, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र, राजस्थान और आंध्र प्रदेश से घिरा, देश का सबसे बड़ा राज्य मध्य प्रदेश पर्यटन एवं पुरातत्विक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है।

यहां संभवतः कोई जिला ऐसा नहीं होगा जहां कोई दर्शनीय या पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल नहीं हो।

उत्तर में विंध्य पर्वत श्रृंखलाएं तथा पूर्व में छत्तीसगढ़ के पठारों को छूती सतपुड़ा की मैकल श्रृंखलाएं कई नदियों का उद्भव स्थल है। पूर्व से पश्चिम की ओर बहनेवाली नर्मदा, ताप्ती और पश्चिम से पूर्व की तरफ बहनेवाली चम्बल, सोन, बेतवा, महानदी और इन्द्रावती का यहीं जन्म होता है।

क्षिप्रा जैसी पवित्र नदियों झीलों, वनों से आच्छादित पर्वतों पठारों से यह प्रदेश भरा पड़ा है। शैलचित्रों तथा पुरातत्व के महत्वपूर्ण स्थानों से यह क्षेत्र समृद्ध है। नक्काशी वाले प्राचीन मन्दिर, स्तूप, किले, महल आदि अतीत के उस रहस्यमय वातावरण में हमें खींच ले जाते है जहां कवि, गायक, संत, विचारक कलाकार अपनी कला धरोहर के साथ आज भी जीवित है। इस्लाम और उससे भी पहले के बौद्ध जैन शैव आदि मतों के अनुरूप कला और संस्कृति के अवशेष आज की यहां सर्वत्र विखरे हुए हैं।

वन और वन्य जीवन की दृष्टि से भी यह राज्य हमें, प्रकृति की एक भेंट है। शेर, चीता सांभर नीलगाय तथा रंगारंग पक्षियों का यह प्रमुख विचरण स्थल है। वन संपदा से आच्छादित यह प्रदेश वनवासियों के लिए भी प्रसिद्ध है। वस्तर के हलवां, मुड़िया, गोंड भील, मगौरिया आदिवासियों की लोककला और संस्कृति भी अनमोल है। वस्तर का दशहरा, चित्रकूट की रामनवमी उज्जैन का सिंहस्थ तथा झाबुआ की होली रंगारंग होती है।

राज्य में वायुसेवा रेल सेवा के अलावा वस सेवा का भी अच्छा प्रबंध है। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, खजुराहो, जबलपुर, और रायपुर के विमान तलों का विकास किया गया है। जहाँ इंडियन एयर लाइन्स की सुविधा नहीं है वहां वायुदूत की सेवाएं उपलब्ध है।

खजुराहो: भारत के प्रमुख पर्यटन केन्द्रों में से तीसरा स्थान खजुराहो का है (निर्माण: चन्देल राजा 950–1050 ई. मध्य) इन मन्दिरों में मैथुन एवं रतिक्रीड़ाएं इतनी सजीव एवं निष्कपट सजी जान पड़ती है कि मूर्तिकला पर सहज श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है।

खजुराहो के लिए दिल्ली–आगरा–वाराणासी और भुवनेश्वर से सीधी विमान सेवा।

आसपास के दर्शनीय स्थल: बेनीसागर बांध 7 कि.मी. दूर। रेनेह जल प्रपात (20 कि.मी. दूर केन नदी पर) तथा पन्ना मार्ग 30 कि.मी. दूर पांडव जल प्रपात। 25 कि.मी. दूर रंकवान पिकनिक स्थल एवं इतनी की दूरी पर राजगढ़ महल है गंगाऊ अभयारण्य में चीतल, रीछ, और अन्य वन्यजीव हैं। धुबेला संग्रहालय (64 कि.मी.) हैं। पन्ना हीरे की खाने (44 कि.मी.), गोविन्द गढ़ (30 कि.मी.), रीवा महाराज के निजी संग्रहालय वाधवगढ़ अभयारण्य (सफेद शेर पाये जाते हैं), पन्ना उद्यान (32 कि.मी.) चचई प्रपात (20 कि.मी.) वीहड़ नदी पर 130 मीटर ऊंचा जलप्रपात, वयोरी और वाहुरी जल प्रपात।

सतना: बम्बई, हावड़ा रेल मार्ग पर औद्योगिक नगर है। दर्शनीय सांस्कृतिक स्थल।

मैहर: कटनी–इलाहबाद रेल मार्ग, मध्यकालीन योद्धाओं आल्हा–ऊदल प्रख्यात संगीतकार उस्ताद उल्लाउद्दीन खां की आराध्य देवी मां शारदा का मन्दिर।

चित्रकूट: ब्रह्मा, विष्णु और महेश के बाल अवतार की कथा, वनवास के दौरान श्रीराम महर्षि अत्रि सती अनुसूया के अतिथि, यहीं से भरतजी चरणपादुका लेकर लौटे।

ग्वालियर का किला

खजुराहो
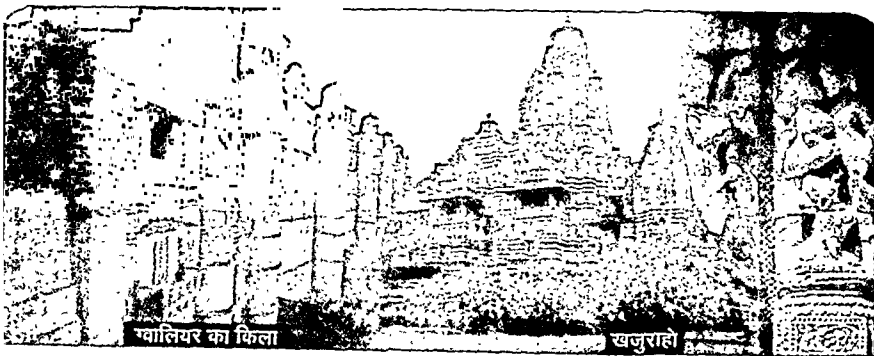
अकबर के नवरत्नों में से एक अब्दुल रहीम खानखाना हुये थे पवित्र मन्दाकिनी नदी के तट पर प्राकृतिक सुषमा से भरी हुई भूमि आसपास कामदगिरी भरतमिलाप रामघाट, जानकीकुण्ड, स्फटिक शिला, अनुसूया आश्रम भरतकूट तथा हनुमानधारा।

ग्वालियर: भारत के सभी दुर्गों में जड़ित मणि के समान पूर्व का जिब्राल्टर कहलाने वाला ग्वालियर दुर्ग (ऊंचाई 300 फुट) राजा सूरजमल द्वार निर्मित है। विशेषः सूर्य मन्दिर शिलालेख और सूरजकुण्ड, मानमन्दिर तथा गूजरी महल (निर्माण राजा मानसिंह तोमर) पुरातत्व संग्रहालय, सास बहू का मन्दिर, तेली मन्दिर है।

छठें सिख गुरू हरगोविन्दजी को ग्वालियर दुर्ग में जहांगीर ने कैद किया था।

सूफी संत मुहम्मद गौस का मकबरा, संगीत सम्राट तानसेन तथा रानी लक्ष्मीबाई की समाधियां, महाराजा सिंधिया का संग्रहालय, चिड़ियाघर यहां है। यह एक प्रमुख औद्योगिक शहर है। दिल्ली–भोपाल, इंदौर, बम्बई वायुसेवा तथा बस और रेल मार्ग द्वारा प्रमुख नगरों से जुड़ा है।

नरवर: ग्वालियर से 128 कि.मी. दूर बम्बई– अगरा मार्ग पर राजा नल की प्राचीन राजधानी।

ओरछा: झांसी से 19 तथा ग्वालियर से 130 कि.मी. दूर बेतवा के तट पर बुन्देला राजपूतों का स्थान। चर्तुभुज मन्दिर और जहांगीरी महल प्रसिद्ध। क्रांतिवीर चन्द्रशेखर आजाद की साधना स्थली। अन्य स्थलः 18 कि.मी. दूर तिगरा बांध।

पवाया: ग्वालियर 68 कि.मी. दूर।

सिंध और पार्वती नदियों के संगम पर स्थित नागा राजाओं की प्राचीन राजधानी। पूर्व नाम–पद्मावती।

मणिभद्र यक्ष प्रतिमा (पहली शताब्दी) मध्यकालीन पुरावशेष, 3 कि.मी. दूर धूमेश्वर महादेव मंदिर (बुंदेल स्थापत्य)

दतिया: दिल्ली–मद्रास रेल मार्ग पर ग्वालियर से 70 कि.मी. दूर। पूर्व नाम महाभारत कालीन दैत्यवक (बीरसिंह देव निर्मित सात मंजिला महल, अन्य मुगलकालीन महल।

चंदेरी: गुना जिले में स्थित, 200 मीटर ऊंचे किले और खूनी दरवाजे, चंदेरी साड़ियों; चारों ओर बनी बावड़ियां तथा सरोवर, बुन्देला राजाओं मालवा के सुल्तानों द्वारा निर्मित अनेक भवन। 3 कि.मी. दूर बूढी चंदेरी और 15 कि.मी. दूर थोवन में अनेक जैन मंदिर।

राहतगढ़: सागर में 40 कि.मी. दूर, पुराना किला बादल महल तथा 50 फुट ऊंचा जल प्रपात।

रायसेन: भोपाल से 35 कि.मी. दूर गोंड राजाओं द्वारा निर्मित पहाड़ी किला।

नोहटा: दमोह 21 कि.मी. दूर, चंदेल राजाओं की राजधानी (12 वी. शताब्दी)।

विदिशा: भोपाल से 54 कि.मी. दूर बम्बई, दिल्ली रेल मार्ग। भारतीय इतिहास में उल्लेखनीय प्राचीन नगर (5 कि.मी. दूर) तक्षशिला के ग्रीक राजा अंतिलसिदार के प्रतिनिधि वैष्णव धर्म ग्रहण करने वाले हेलीयोडोरस निर्मित गरुडध्वज के अवशेष (ईसा पूर्व पहली शती)।

प्राचीन बौद्ध और जैन धर्मों का केन्द्र सम्राट अशोक द्वारा निर्मित अनेक मन्दिर एवं बौद्ध विहार। 7 कि.मी. दूर उदयगिरी हिन्दु जैन धर्मों की प्रतीक 20 गुफाएं महावाराह की विशाल प्रतिमा, पुरातत्व स्मारक बीज मण्डल रामघट चरणतीर्थ (तीर्थस्थल)।
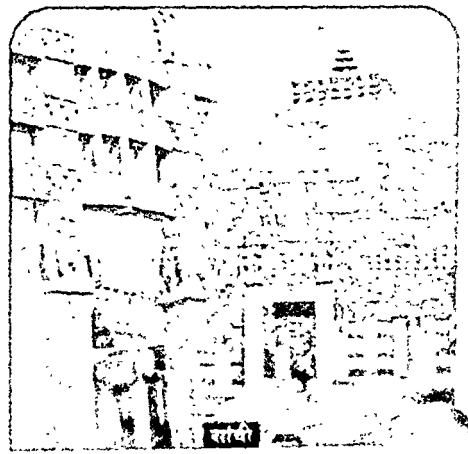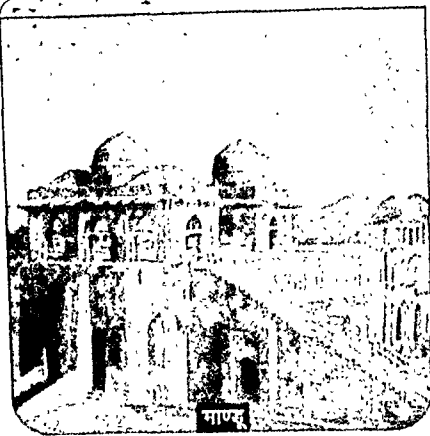
33 कि.मी. बौद्ध तीर्थ ग्यारसपुर मालादेवी मन्दिर (मध्यकालीन) और अंकवंवड़। 8 कि.मी. उदयपुर नीलकंठेश्वर महादेव (परमार कालीन) मन्दिर।

60 कि.मी. पठारी बड़ोह, गरुड़भल्ल मन्दिर अवशेष पहाड़ी झील एवं पुरावशेष।

सांची: प्राचीन विश्वविख्यात बौद्ध तीर्थ, सांची स्तूप (निर्माण: ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी) सम्राट अशोक।

तोरण द्वार: बुद्ध जीवन अंकन, जातक कथा अंकित प्रस्तर द्वारा बुद्ध के शिष्य द्वव सारिपुत एवं मोगलयन के अस्थि अवशेष कांच मंजुषा में। श्रीलंका के भिक्षुओं का निवास दिल्ली मार्ग पर पर्याप्त बस सेवा।

भोपाल: मध्य प्रदेश की हृदय स्थली एवं राजधानी, पुराना नाम भोजपाल भूपाल नगर निर्माण परमार वंशी राजा भोज (10 वीं शती) गोंडवंश के पराभव के बाद सरदार शेख मोहम्मद का शासन (200 वर्ष पूर्व) दो प्रख्यात झीलें, भारत हेवी इलेक्ट्रीक्लस लि. कारखाना आकर्षक पहाड़ी से घिरे सुन्दर नगर, नया भोपाल (तात्या टोपे नगर) शामलाहिल्स अथवा लक्ष्मीनारायण गिरि से रात्रि का दृश्य नयनाभिराम होता है।

पुराना भोपाल मस्जिदों का शहर कहलाता है। विशेष दर्शनीय विशाल ताज–उल मस्जिद लक्ष्मीनारायण मन्दिर, गुफा मन्दिर, प्राचीन शिवमन्दिर नेवरी वल्लभ सम्प्रदाय फीजी मन्दिर, बड़वाले महादेव एवं जैन मन्दिर लालघाटी मन्दिर, नवनिर्मित भारत भवन तथा वन विहार। यहां प्रगैतिहासिक काल के गुफा चित्र भी है।

भजेपुर: 28 कि.मी. विशाल शिव मंदिर (निर्माण राजा भोज) विशाल 350 वर्ग कि.मी. के प्राचीन बांध के निकट ही जैन मन्दिर।

अन्य स्थल: थकलौद, आशापुरी, देलावाडी एवं इस्लामपुरी। दिल्ली–बम्बई विमान सेवा मार्ग दिल्ली–बम्बई तथा दिल्ली–मद्रास रेल मार्ग।

आसपास के दर्शनीय स्थल: आदर्श मत्सया खेड़ा नौकविहार (10 कि.मी.) केटवाबांध–भदभद पिकनिक स्थल।

भीमबैठका: ओबेदुल्ला गंज की ओर 40 कि.मी. प्राचीन बेतवा–विंध्यांचल उत्तर श्रृंखलाओं के मध्य, घने वन एवं विशाल चट्टानों में 600 पाषाणयुगीन भिति चित्र।

मांडू: हिन्दू–मुस्लिम शासकों का कर्मस्थल। यह प्रदेश का प्रमुख ऐतिहासिक स्थल है। कल–कल करते नाले प्राकृतिक सुषमा से घिरे पुराने भग्नावशेष मालवा के अन्तिम सुल्तान बाज बहादुर– रानी रुपवती प्रणय की गाथाओं से गूंजते खंडहर, जहाजमहल हिंडोला महल, चम्पा बावड़ी, होशंगशाह का मकबरा, जामा मस्जिद अशर्फी महल, रानी रूपमती का झुरोखा एवं नीलकंठ मन्दिर दर्शनीय है।

आसपास: बाघ गुफाएं 15 कि.मी. महेश्वर 155 कि.मी.।

धार: इंदौर से 60 कि.मी. परमार राजाओं की प्राचीन राजधानी, भोजराज की नगरी भोजशाला और लाट मस्जिद प्रसिद्ध।

इंदौर: मालवा की प्रतिष्ठा, प्रमख औद्योगिक स्थल धार मांडू और ओंकारेश्वर–महेश्वर का प्रवेशद्वार, रानी अहिल्याबाई (होल कर वंश) द्वारा बसाया गया। कांच मन्दिर (जैन मन्दिर) गीता भवन, अन्नपूर्ण मन्दिर और पुरातत्व संग्रहालय। आसपास: उज्जैन 53 कि.मी.।

बाघ गुफाएं: इंदौर से 158 कि.मी. शैलचित्र (अजन्ता एलोरा के समकक्ष) आज गुफाओं में से कुछ ही सही स्थिति में हैं।

पंचमढ़ी: भोपाल से 210 कि.मी. पिपरिया से 50 कि.मी.। 20 जलाशय, 5 जल प्रपात तथा 70 दर्शनीय स्थल। ग्रीष्म काल में शीतल पर्यटन स्थल। स्वास्थयवर्धक जलवायु नैसर्गिक सौन्दर्य। धूपगढ़ पौरगढ़ एवं महादेव चोटियों से सूर्यास्त एवं सूर्योदय के दृश्य अभूतपूर्व होते हैं। पांडव गुफा के खड्डी में हांडी खो और जम्बू द्वीप तथा प्रपातों में रजत प्रपात एवं जलावतरण मनोहर एवं दर्शनीय हैं। यहां गोल्फ कोर्स भी है।

भेड़ाघाट: दूरी जबलपुर से 13 कि.मी. संगमरमर चट्टानों के बीच तीव्र प्रवाह से बहती नर्मदा 60 फुट की ऊंचाई से नीचे गिरती है। धुआंधार और बन्दर कूदनी पूर्णिमा रात्रि का नौका–विहार, आदि प्रमुख आकर्षण है। निकट स्थित चौंसठ योगिनी का गोल मन्दिर जिसमें 81 मूर्तियां हैं। (कलचुरी कालीन) गौरीशंकर विख्यात मंदिर में शिव–पार्वती, नंदी पर सवाल (प्राचीन प्रतिमा) एवं प्राचीन शिलालेख।

जबलपुर: विशाल गोंड साम्राज्य का प्रतीक मदन महल, संग्राम सागर, बाजना मठ तथा अन्य स्मारक, त्रिपुरी (कलचुरी राजवंश) पिसनहारी मढ़िया में जैन मन्दिर प्रमुख हैं।

अमरकण्टक: जबलपुर से 245 कि.मी. नर्मदा एवं सोन नदी का उद्भव स्थल तीर्थस्थल, प्राचीन एवं नवीन 24 मन्दिर। अयोध्या आदि के कई राजाओं का कर्मस्थल नर्मदाकुण्ड, नर्मदा माई मंदिर, नर्मदा नदी का 6 कि.मी. का तेज प्रवाह बनकर गिरना (कपिल धारा प्रपात) 80 कि.मी. दुग्ध धारा प्रपात मैकल पर्वत श्रृंखला औषधीय गुण की जड़ी बूटियां वनों में प्रचुर है।

उज्जैन: प्राचीन नाम: अवन्तिका, एक अन्य नाम देवगिरि यह सात पवित्र पुरियों में से एक भारत का प्रमुख तीर्थस्थल है। वेद, पुराण रामायण, महाभारत तथा संस्कृत साहित्य में इसका प्रचुर सन्दर्भ है। प्रसिद्ध बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक लिंग महाकालेश्वर मन्दिर मे स्थित। बारह वर्ष में विशाल कुंभ का मेला 'सिंहस्थ' यहां लगता है। यहां के सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का काल 'भारत का स्वर्ण युग' कहलाता है। महाकवि कालिदास, ज्योतिषाचार्य वाराहमिहिर, गणितज्ञ बाणभट्ट आदि चन्द्रगुप्त दरबार के नवरत्न थे। प्रमुख दर्शनीय स्थल: संदीपनी आश्रम (श्रीकृष्ण-सुदामा शिक्षा स्थल) मध्यकालीन वेधशाला, कालियादह महल, भरतरी गुफा, कालभैरव मन्दिर, गोपाल मन्दिर, क्षिप्रातट।

आसपास: 36 कि.मी. देवास औद्योगिक नगर। चामुंडा पहाड़ी स्थित देवी मन्दिर, 48 कि.मी. मकसी जैन मन्दिर, 53 कि.मी. नागदा, बिरला उद्योग नगर, लाल पत्थरों से बना भगवान विष्णु का नवीन मन्दिर। पूर्व नाम 'नागदह'।

अन्य दर्शनीय स्थल

ओंकारेश्वर: सुप्रसिद्ध बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक आदि शंकराचार्य की गुफा।

भद्रेश्वर: प्राचीन नाम महिष्मती' हैह वंश की प्राचीन राजधानी। होलकर वंश की महारानी अहिल्याबाई की राजधानी। अहिल्या संग्रहालय राजेश्वर मन्दिर सेवाघाट होलकर परिवार की छपियों तथा साड़ियों के लिए भी यह स्थान प्रसिद्ध है।

बवनगजा: प्रसिद्ध जैन तीर्थ, 72 फीट ऊंची जैन मूर्ति (15 वीं शती) यहां है।

मंदसौर: पशुपतिनाथ मंदिर। गांधी सागर बांध चंबल नदी पर बना यह बांध मध्य प्रदेश-राजस्थान की सीमा पर है। भोरमदेव: (छत्तीसगढ़ का खजुराहो) राजिम: राजीवलोचन भगवान विष्णु मंदरी। सिरपुर: (त्रिपुर) प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ, शरभपुर राजवंश की प्राचीन राजधानी चीनी यात्री ह्वेन सांग ने यहां की यात्रा (7 वीं सदी) में की थी। भिलाई: सोवियत सहयोग से बना विशाल इस्पात कारखाना यहां है।

श्योरी नारायण: महानदी के किनारे प्रतिवर्ष माघी पूर्णिमा का मेला लगता है।

पाली: कलचुरी राजाओं द्वारा 12 वीं सदी के पूर्वार्ध में [illegible]
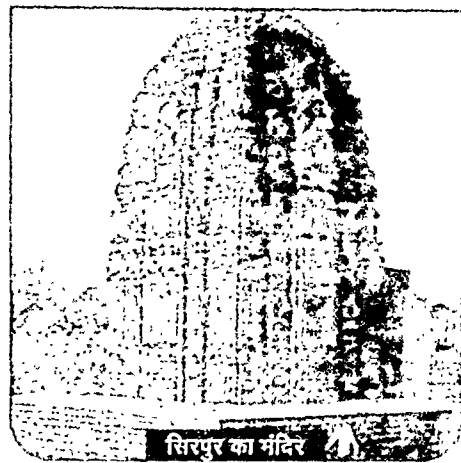
सिरपुर का मंदिर

बस्तर: यह प्रदेश का सबसे बड़ा जिला है, यह खनिज और वन संपदा से भरपूर है।

बरसूर नागवंशी चक्रकूटों की प्राचीन राजधानी। सुन्दर शिव मंदिर, जनजातियों की आराध्य दंतेश्वरी देवी के प्रख्यात मंदिर स्थल दन्तेवाड़ा में प्रतिवर्ष दशहरे पर मेला लगता है। श्री गणेश की विशाल प्रतिमाएं, मामा-भांजे का मंदिर आदि प्रसिद्ध हैं।

कुतुमसर: स्टीलासाइट और स्टेललामाइट चूने की गुफाएं।

चित्रकूट जलप्रपात: दो जल प्रपात आसीरगढ़: प्राचीन दुर्ग। मुक्तागिरी: 52 जैन मंदिर, वार्षिक कार्तिक मेला। सोहापुर: हैहय कालीन शिव मन्दिर।

मध्य प्रदेश मे उद्यान एव अभ्यारण्यों ने प्रदेश के वन क्षेत्र का 11.16 प्रतिशत क्षेत्र घेर रखा है। कुल 17.308 वर्ग कि.मी. में फैले इन संरक्षित वनों में विशेष है। कान्हा, जो जबलपुर से 175 कि.मी. दूर है। राष्ट्रीय बाघ परियोजना के प्रयास के तहत कान्हा में शेरों की संख्या 89 से अधिक है। भारत के मध्य क्षेत्र के लगभग सभी वन्यप्राणी यहां है।

1953 में अभयवन तथा 1955 में राष्ट्रीय उद्यान की श्रेणी मे आये इस विशाल पार्क का विस्तार 940 कि.मी. है। 1959 से सामान्य वन कार्य पर यहां प्रतिबंध लगा दिया गया।

बांधवगढ़: 1968 से राष्ट्रीय उद्यान बना यह क्षेत्र जबलपुर से 210 कि.मी. दूर है। सफेद शेरों के लिए यह राष्ट्रीय उद्यान प्रसिद्ध है।

पुराणों और महाकाव्यों में वर्णित यह क्षेत्र 550 वनस्पति प्रजातियों और जड़ी-बूटियों से भरा है। इस 105 वर्ग कि.मी. वाले क्षेत्र में लगभग प्रति 8 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में एक शेर पाया जाता है जो देश की शेर आबादी का सबसे [illegible]

शिवपुरी: इसे 1958 में राष्ट्रीय उद्यान [illegible] शिवपुरी नगर से निकट है तथा झांसी से 97 कि.मी. दूर है। [illegible]

21 वीं सदी का प्रदेश:
स्वप्न या यथार्थ!

पिछले एक अरसे से मध्यप्रदेश की ख्याति '21 वीं सदी का प्रदेश' के रूप में उभरी है। लेकिन, इतिहास ने इसके साथ कम निर्मम मजाक नहीं किया है; विडंबना देखिए कि नई सदी के आरंभ के साथ ही इसका विभाजन हो गया, और जब तक यह आलेख आपके हाथों में पहुंचेगा तब तक इसकी कोख से 'छत्तीसगढ़' के रूप में एक नया प्रदेश जन्म ले चुका होगा। दूसरे शब्दों में मध्यप्रदेश की आंतरिक ऊर्जा और अस्मिता को नये संदर्भों में परिभाषित करना होगा। उन सभावनाओ की पहचान करनी होगी जिनके बल पर इस करीब 7 करोड वाले राज्य को '21 वीं सदी का प्रदेश' के उपनाम से नवाजा गया था।

अविभाजित मध्यप्रदेश को भारत का हृदय स्थल भी कहा जाता है। देश के सात राज्यो (राजस्थान गुजरात, महाराष्ट्र, आध्रप्रदेश उडीसा बिहार और उत्तरप्रदेश) से घिरा यह प्रदेश सामाजिक--राजनीतिक सैलावो की दृष्टि से प्राय अमैन-चैन का द्वीप ही रहा है बिहार की भाति सामाजिक न्याय का जलजला नर्मदा व महानदी मे नही उठा उत्तरप्रदेश की तरह साप्रदायिकता व जातिवादिता का विस्फोट नही हुआ हिंसात्मक अल्पसख्यक-बहुसख्यक अन्तर्विरोधी एव कट्टरवादी राज्य चरित्र के मामले मे इसने अपने पडोसी गुजरात व महाराष्ट्र को चिढाया है उडीसा एव आध्रप्रदेश की तरह क्षत्रीयतावादी दलो से यह बचा रहा और राजनीतिक स्थायित्व के मामले मे राजस्थान का सहयात्री सिद्ध हुआ। पर अचरज भरा सयोग देखिए कि इसके दो प्रमुख पडोसी-बिहार और उत्तरप्रदेश भी इसकी नियति से नहीं बच सके इन दोनो पडोसियो का विभाजन भी साथ साथ ही हुआ। नई सदी के प्रवेश काल मे तीनो पडोसियो की नियति एकसी निकली। गौरतलब है कि करीब एक दशक पहले इन तीनों राज्यों को बीमारू प्रदेश की श्रेणी मे रखा गया था। इसकी वजह थी इनकी गतिहीनता। पश्चिम और दक्षिण राज्यों की तुलना मे इन तीनो राज्यो की गतिशीलता बहुत कम रही, जीवन के ज्यादातर क्षेत्र थम रहे। बेशक उडीसा की सेहत भी इन तीनों से बेहतर नही रही है। लेकिन दुखद स्थिति यह है कि '21 वीं सदी का प्रदेश' की उपाधि से सुशोभित होकर भी यह बीमारु प्रदेश की श्रेणी से मुक्त नही हो सका है। आखिर इसकी वजह है क्या?

मध्यप्रदेश बीमार है, मध्यप्रदेशवासी और सस्कृतिकर्मी के लिए यह सुनना काफी पीडादायक है। है इसकी ठोस वजह? अविभाजित मध्यप्रदेश की राजधानी-भोपाल को देश की 'सांस्कृतिक राजधानी' की उपाधि से भी विभूषित किया जा चुका है। सास्कृतिक गतिविधियों की दृष्टि से मध्यप्रदेश ने नवे दशक मे राष्ट्र का नेतृत्व किया है, संभवत यह प्रदेश साहित्य व संस्कृति के सबसे अधिक राष्ट्रीय पुरस्कार देश में देता है। नवे और दसवें दशक मे इस राज्य ने देश को राष्ट्रीय स्तर के कई नेता भी दिये है, जिन्होंने अपने अपने ढग से राष्ट्र की राजनीति को प्रभावित भी किया है। राष्ट्र-स्तर के नेताओ के मामले में यह राजस्थान से अधिक समृद्ध रहा है। साहित्य और पत्रकारिता की दृष्टि से भी मध्यप्रदेश अपने पडोसी राजस्थान को चिढ़ा सकता है। पिछले चार दशको की स्तरीय हिन्दी पत्रकारिता के पर्याय के रूप में राहुल बारपुते, राजेन्द्र माथुर, प्रभाष जोशी जैसे नामों को याद किया जा सकता है। तमाम विवादों और किन्तु-परन्तुओ के बावजूद, भोपाल को 'सांस्कृतिक राजधानी' का दर्जा दिलाने मे अशोक वाजपेयी की भूमिका को याद करना ही पडेगा। नि सदेह, राजनीतिक शासक यानि तत्कालीन मुख्यमत्री अर्जुन सिंह के बहुस्तरीय सहयोग के बगैर पशासक साहित्यकार वाजपेयी के लिए वह भूमिका निभाना कठिन हो जाता।

पिछले दशको मे मध्यप्रदेश ने एक नहीं कई कीर्तिमान स्थापित किये है; दुर्दान्त दस्युओं का आत्मसमर्पण, शहरी सर्वहाराओ के जीवन मे गुणात्मक बदलाव, वंचित एवं आदिवासी मानवता को 'स्वामित्व' के बोध से लैस करना, जिला सरकार की अवधारणा को साकार करना, ग्राम सरकार की ओर उन्मुखता, साक्षरता क्रांति, देश में प्रथम मानव विकास रपट का प्रकाशन, सूचना तकनीकी के सर्वव्यापीकरण की पहले, देश के प्रथम पत्रकारिता विश्वविद्यालय (माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय) की स्थापना जैसी प्रक्रियाओं ने इस बेमेल-बेडौल प्रदेश के आधुनिकीकरण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस राज्य को बेमेल-बेडौल इसलिए कहा गया है कि इसे भौगोलिक सास्कृतिक-राजनीतिक अजनबीपन के मिश्रण से बनाया गया था। मध्यभारत और छत्तीसगढ़ के बीच कोई सास्कृतिक सवाद नही था। इसी तरह मालवा और विंध्याचल के बीच राजनीतिक एकात्मकता नहीं थी। यही बात महाकौशल और निमाड क्षेत्र के संबंध में कही जा सकती है। और इस परस्पर अजनबी रंगों के बीच नवाबी भोपाल की पहचान सबसे न्यारी थी। ऐसे में बस्तर के हलबा व मुरिया का झाबुआ के भील और ग्वालियर क्षेत्र सहरिया आदिवासियों के साथ क्या सबध हो सकता है? सिवाए यह कि ये सभी आदिवासी क्षेत्र है, लेकिन भौगोलिक और सामाजिक-सास्कृतिक--आर्थिक-राजनीतिक अजनबी रंगों के बीच क्या इन आदिवासियो की निर्मल महुवाई अस्मिता भी सुरक्षित रह सकती थी? क्या मालवा, विंध्याचल, महाकौशल, छत्तीसगढ़ आदि क्षेत्रों के वचितो को नीति निर्णय प्रक्रिया में निर्णायक

हैसियत प्राप्त हो सकी? साबुत और खंडित मध्यप्रदेश इन सवालों से भाग नहीं सकता।

ये सवाल इसलिए मौजूं हैं कि छत्तीसगढ़ का जन्म हो चुका है। संक्षेप एवं स्पष्ट शब्दों में, जन्म का मूल उद्देश्य है मध्यप्रदेश में व्याप्त विकास की विसंगतियों को दूर करना, मंदसौर और दंतेवाड़ा के निवासियों का समानतापूर्ण विकास। इन दोनों स्थानों के बीच करीब डेढ़ हजार किलोमीटर का फासला है। मंदसौर महाजनी व नकदी कृषि अर्थव्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि दंतेवाड़ा ठेठ आदिवासी - अर्थव्यवस्था का प्रतिनिधि है। विकास की कसौटियों की दृष्टि से दोनों के बीच गहरी खाई है जिसे आसानी से नहीं पाटा जा सकता। यह स्थिति इंदौर और सरगुजा जिलों के बीच है। यहां मध्यप्रदेश में इंदौर 'मिनी मुम्बई' के रूप में चर्चित है, वहीं सरगजा 'भूख, शोषण, उत्पीड़न और बंद दुनिया' के रूप में कुख्यात है।

1992 में इसी जिले में भूख से हुई मौतों ने पूरे देश को हिला दिया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिंह राव को दिल्ली से दौड़कर त्रासदी स्थल पर पहुंचना पड़ा था। 1977 में सरगुजा के सामरीपाट के पांच-छह गांवों में 'पेट फूलन' बीमारी के कारण ढाई-तीन सौ आदिवासी मौत के पेट में समा गये थे। विषाक्त झुनझुनिया पौधे के खाने से व्यक्ति का पेट फूल जाया करता था, और चंद दिनों में ही उसकी मृत्यु हो जाया करती थी। इस पौधे को मजबूरी में खाना पड़ता था। यह संपूर्ण क्षेत्र अभाव एवं अकाल की चपेट में था। विकास की दृष्टि से 19 वीं सदी में सांसे ले रहा था। तब मैंने इस क्षेत्र की यात्रा की थी। उन गांवों में गया था जहां पेट फूलन बीमारी की त्रासदी घटी थी। लेकिन, विकास-यात्रा की सबसे बड़ी दुर्घटना यह है कि 1977 से लेकर 1992 के बीच इस जिले की भौतिक परिस्थितियों में गुणात्मक बदलाव नहीं दिखाई दिये। जब नरसिंह राव ने भूख ग्रस्त क्षेत्रवासियों को संबोधित किया था तब भी मैं उनकी सभा में मौजूद था। देहधारी के नाम पर कोरे 'मजाक' बने हुए थे वे आदिवासी। 1978 में जिला मुख्यालय अंबिकापुर से कुछ किलोमीटर के फासले पर 'बंधक श्रमिक शिविर' लगाया गया था। सामंती उत्पीड़न के कारण मुझे सैकड़ों खेतिहर श्रमिक आदिवासी 'बंधुआ श्रमिक प्रथा' के शिकार मिले। शिविर में पहुंचे प्रत्येक आदिवासी के बेअंत उत्पीड़न गाथा सुनने को मिली।

यह कहानी केवल सरगुजा की ही रही हो, ऐसा भी नहीं है। आज के सालवनों पर 'नक्सली खतरा' मंडरा रहा है, यह बस्तर एक आकस्मिक परिघटना नहीं है, इसके पीछे छिपी हुई है वंचना, लूट-खसोट, उपेक्षा और तिरस्कार की संस्कृति। 1971 से मैं बकौल शानी 'सालवनों के द्वीप' यानि बस्तर के संपर्क में हूं। यह वह जिला है जहां औपनिवेशिक काल में 'भ्रूणावस्था' से ही आदिवासी की गुलामी की यात्रा शुरू हो जाया करती थी। कबारी प्रथा के रूप में कुख्यात इस प्रथा के तहत कर्ज-भार से दबा आदिवासी अपने बच्चे को सेठ-साहूकारों-जमींदारों के यहां तभी गिरवी या गुलाम रख दिया करता था जब वह पेट में हुआ करता था। कोख से चिता तक वह गुलाम रहता। आजादी के बाद बस्तर के अरण्यवासियों को शोषणमुक्त जीवन गणतांत्रिक भारत से मिलेगा, यह उम्मीद नाउम्मीदी की कोख में ही अजन्मी मिली; प्रशासनिक प्रतिनिधियों व ठेकेदारों ने इस क्षेत्र का अन्तहीन शोषण किया, वन लुटाई हुई, आदिवासियों को वनसंपदा व भूसंपदा से बेदखल किया गया, हजारों एकड़ भूमि गैर-आदिवासियों के कब्जे में पहुंची, दक्षिण बस्तर के बैलाडीला क्षेत्र में औद्योगिक गतिविधियों के विस्फोट में आदिवासी युवतियां झुलसी, संस्कृति व नदियां प्रदूषित हुईं, खेती तबाह हुई, भूमिहीनता के कारण आदिविासियों ने आत्महत्याएं कीं, और आज नक्सलवाद के उदय में जीवितों और मृतकों की आत्माओं की 'सांझी मुक्ति पुकार' गूंज रही है। दक्षिण बस्तर और अबूझमाड़ नक्सलवाद की गिरफ्त में है, और शासन की मौजूदगी बरायेनाम है। लोगों का कहना है कि 1910 के विद्रोह 'भूमकाल' का नया रूप जन्म ले चुका है, और इसका नायक गुंडाधुर सालवनों के द्वीप में नक्सलियों के रूप में घूम रहा है।

मध्यप्रदेश की बुनियादी समस्या रही है स्वातंत्र्योत्तर कालीन राज्य में संस्थानिक कायांतरण की। राज्य के रियासती इलाकों की जिन्दगी और गैररियासती इलाकों की जिन्दगी के बीच गहरा अन्तर रहा है। गुणात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया का रियासती क्षेत्रों में विकास व चेतना की गति अत्यंत धीमी रही है, वंचना की संस्कृति का रूप आक्रामक रहा है। रियासती मध्यप्रदेश के ग्रामीण समाज को 'बंद समाज' से परिभाषित किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में एक ऐसा समाज जिसे 'निजी संपत्ति' के रूप में रखा जाता है, और उसे बाहरी दुनिया से काटकर रखा जाता है। बदलाव की हवा इसे स्पर्श भी न कर सके, इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है। छत्तीसगढ़, विंध्याचल और मध्यभारत के अधिकांश रियासती ग्रामीण क्षेत्रों को इस श्रेणी में रखा जा सकता है। यही वजह है कि 'बंद समाज' के लोगों की लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी 'बदलावोन्मुख' नहीं रही, केवल वोट देने तक सीमित रही है। फलस्वरूप, इस समाज के सांस्कृतिक-आर्थिक-राजनीतिक समीकरण यथावत रहे। लोकतंत्र की धारा जड़ों तक नहीं पहुंच सकी। इसका एहसास मुझे उस समय हुआ जब कुछ पूर्व रियासती गांवों में मैंने सर्वेक्षण किया। 1977 में केन्द्र में जनता पार्टी के सत्ता में आने के पश्चात आदिवासी-हरिजनों पर अत्याचार का सिलसिला शुरू हो गया था। मालवा क्षेत्र के रतलाम जिले की आलोट तहसील के एक गांव में सवर्णों ने कुछ हरिजनों को जिंदा जला दिया था। उनका केवल यह अपराध था कि वे नई आत्मनिर्भरता व मुक्ति की चेतना से लैस होने लगे थे। वे गांव में ऊंची जातियों से समानता की मांग करने लगे थे। लेकिन, गांव के परंपरागत स्वामियों अर्थात् सवर्णों को दलितों का यह स्वाधीन रूप बिलकुल अस्वीकार था। दलितों को अपनी स्वाधीनता का मूल्य अपने प्राणों के उत्सर्ग से चुकाना पड़ा। जब मैंने इस गांव का सर्वेक्षण किया तब ऊंची जातियों ने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की थी कि वे दलितों को ऊंचा [illegible] ने देंगे। उन्हें अपने बराबर नहीं आने देंगे। उन्हें [illegible] पीढ़ियों से रहते आए हैं।

इस दृष्टि से कोई आश्चर्य [illegible]
नहीं होता। इसी वर्ष मध्यप्रदेश में [illegible]

परिवार ने अपना पुश्तैनी व्यवसाय छोड़कर दूध बेचने का धंधा शुरू करने की कोशिश की। इसके लिए परिवार मुखिया ने कुछ भैंसे खरीदीं और दूध की सप्लाई शुरु कर दी। लेकिन, गैर-दलितों को उसका यह व्यवसाय-परिवर्तन रास नहीं आया। क्योंकि इस परिवर्तन से दलितों की एक नई हैसियत उभरने की आशंका दिखाई देने लगी थी। गांव के लोग सोचने लगे कि अगर दलित का नया धंधा चल निकला तो परंपरागत जातिगत समीकरणों को खतरा पैदा हो जाएगा। दलितों को सम्मान मिलने लगेगा। अत: गैर-दलितों ने उक्त दलित परिवार के खिलाफ विरोध तेजकर दिया। उसकी नाकेबंदी कर दी गई। गांव के आखिरी छोर पर उसका रहना दूभर हो गा। इस विरोध का परिणाम यह रहा कि उक्त दलित परिवार को वापस अपने पुश्तैनी धंधे में लौटना पड़ा। उसकी परिवर्तन की ललक भ्रूणावस्था में ही मर गई। उसकी यात्रा यहां से शुरु हुई थी वहीं उसी 'बंद समाज' में उसका अंत हुआ।

इस बंद समाज के नारकीय जीवन की कई डरावनी शक्लें हैं। 1978 व 79 में रियासती संस्कृति के गढ़ रीवा के कुछ गांवों में मैंने विषाक्त खेसरी दाल के प्रभावों का सर्वेक्षण किया था। खेसरी दाल जिसे तिवड़ा या मटरा दाल भी कहा जाता है, बे निरन्तर खाने से व्यक्ति धीरे धीरे विकलांग होने लगता है। उसके पैर मुड़ने लगते हैं। एक समय ऐसा भी आता है जब वह घिसटने लगता है। छत्तीसगढ़ और विंध्याचल के क्षेत्रों में इस दाल का सेवन गरीब लोग काफी करते हैं। जब मैंने रीवा जिले की त्यौंधर तहसील के तीन गांवों – पनासी, झोंटिया और मनिका – का सर्वेक्षण किया तब पाया कि विकलांगता का शिकार होनेवाले बंधक श्रमिकों मे करीब 84 प्रतिशत व्यक्ति दलित, मैदानी आदिवासी और पिछड़े वर्ग के परिवारों से संबंधित हैं। उस समय इन गांवों के करीब 90 प्रतिशत खेतिहर श्रमिक बंधक श्रमिक प्रथा की गिरफ्त में थे। जाहिर है, इस बंधक श्रमिक मानवता का संबंध दलित-आदिवासी-पिछड़ा वर्ग संसार से था। यह सर्वेक्षण गांधी शांति प्रतिष्टान के तत्वावधान में किया गया था। उस समय छत्तीसगढ़ में इस समस्या का रूप और भी भयावह था।

इस तरह की घटनाओं के उल्लेख का उद्देश्य रियासती मध्यप्रदेश के यथार्थ से साक्षात्कार कराना है। बगैर इस साक्षात्कार के मध्यप्रदेश की सही तस्वीर को समझना मुश्किल है। क्योंकि, यह वही यथार्थ है जिसके बल पर खड़ा किया जाता है प्रदेश का सत्ता दुर्ग। मध्यप्रदेश की आबादी में दलित, आदिवासी और पिछड़ों की संयुक्त उपस्थिति 85-90 प्रतिशत के बीच मानी जाती है। लेकिन, सत्ता शिखर में इसका प्रतिशत नगण्य है। 1956 से लेकर अब तक इस प्रदेश के 21 मुख्यमंत्री हो चुके है। इन मुख्यमंत्रियों में ऐसे नेता भी शामिल हैं जो दो-दो व तीन-तीन दफे मुख्यमंत्री बने। पर दुखद यथार्थ यह है कि मुख्यमंत्रियों की फेहरिस्त में केवल एक जगह ही आदिवासी मुख्यमंत्री दिखाई देता है। हास्यास्पद स्थिति यह है कि आदिवासी मुख्यमंत्री राजा नरेशचन्द्र सिंह अपने पद पर पन्द्रह दिन भी नहीं रह सके। चौदहवें दिन उनके स्थान पर श्यामाचरण शुक्ल ने शपथ ली। वैसे नरेशचन्द्र सिंह कुलीन आदिवासी थे। राजपरिवार से उनका संबंध था। एक प्रकार से पारंपरिक शासक वर्ग का वे हिस्सा था। जहां तक सामान्य आदिवासी समाज का संबंध है, इसके एक भी सदस्य को शिखर तक पहुंचने का गौरव प्राप्त नहीं हो सका है। दूसरा कष्टकर तथ्य यह भी है कि प.रविशंकर शुक्ल से लेकर वर्तमान मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह तक दलित या पिछड़े वर्ग के प्रतिनिधि को एक बार भी इस प्रदेश का नेतृत्व करने का अवसर प्राप्त नहीं हो सका। अलबत्ता, इस वर्ग के व्यक्ति उपमुख्यमंत्री जरूर बने हैं। लेकिन, राज्य के सत्ता तंत्र पर ब्राह्मण, ठाकुर और जैन मुख्यमंत्रियों का ही दबदबा रहा है। क्या सेहतमंद लोकतंत्र के लिए इसे सुखद स्थिति कहा जा सकता है?

मेरे मत में यह सवर्णवादी सत्ता परिदृश्य एक निरापद व निरोग्य लोकतंत्र को प्राण व ऊर्जा प्रदान करने की सामर्थ्य नहीं रखता है। बल्कि, यह लोकतंत्र के जीवट तत्वों को तो डकार जाता है या उन्हें सुन्न बना डालता है। छत्तीसगढ़ को ही लीजिए। इस क्षेत्र में आदिवासी, दलित और पिछड़ों का बाहुल्य है। इसके प्रमुख जिले – बस्तर, दंतेवाड़ा, दुर्ग, बिलासपुर, सरगुजा और रायगढ़ और रायपुर में अनुसूचित जनजातियों की खासी उपस्थिति है। लेकिन, इस क्षेत्र पर हमेशा से गैर छत्तीसगढ़ ब्राह्मणों का वर्चस्व रहा है। इसी तरह इस क्षेत्र की आर्थिक नकेल मारवाडियों और हरियाणवियों की मुट्ठियों में रही है। छत्तीसगढ़ की नीतिनिर्णय प्रक्रिया में भूमिपुत्रों की भूमिका सदैव हाशिये पर ही रही है। मालवा और निमाड़ क्षेत्रों की स्थिति भी इससे बेहतर नहीं कही जा सकती। इंदौर, रतलाम, झाबुआ, धार, उज्जैन, मंदसौर, खरगौन, खंडवा जैसे जिलों के वंचित वर्ग अपनी सम्मानजनक हैसियत पाने के लिए संघर्षरत हैं। जब भी ये अपनी थोड़ी-बहुत हैसियत बनाते हैं तो उन्हें इससे बेदखल कर दिया जाता है। इस क्षेत्र की आर्थिक नब्ज तो सवर्णो के हाथों में है ही। वैसे मालवा को नगदी व पूंजीगत कृषि का इलाका माना जाता है। जिस तरह छत्तीसगढ़ को 'धान का कटोरा' कहा जाता है उसी तरह मालवा के कुछ जिले 'अफीस के द्वीप' हैं। समृद्धि की बरसात दिखाई देती है। पर मूल प्रश्न यह है कि क्या कृषि उपलब्धियों की सरिता समाज के सभी मुहानों तक पहुंची है?

आज मध्यप्रदेश में 'सरकार आपके द्वारे' का नारा गुंजित हुआ है। 'सत्ता का विकेन्द्रीकरण' और 'जनता का सशक्तिकरण' का अभियान शुरू हुआ है। नि:संदेह, सतात की अनुभूति एक सामान्य, ग्रामीणजन को हो इस दिशा में मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने कुछ ऐतिहासिक कदम उठाए हैं। जिला सरकारों और पंचायतों की मारफत वंचित तबकों एवं उपेक्षित इलाकों को नीति निर्णय प्रक्रिया से लैस करने की बहुआयामी शुरुआत की गई है? यह भी सच है कि इन नये प्रयोगों ने विसंगतियों व विकृतियों को जन्म भी दिया है; मध्यप्रदेश में कहा जा रहा है कि सत्ता का नहीं, भ्रष्टाचार का विकेन्द्रीकरण किया गया है, आज ग्रामी पंचायतें, भष्टाचार के अड्डे बन गई हैं। इन आरोपों में दम भी हो सकता है, लेकिन कोई भी नया कदम खतरों व किन्तु-परन्तु से मुक्त नहीं हो सकता। कोई भी निर्णय निरापद नहीं हो सकता। पर असल मुद्दा यह है कि किस भावना व कैसी नीयत से संदर्भित कदम उठाया गया है? यदि तात्कालिक राजनीतिक उपलब्धियों, विशेषत: सत्ता-निरन्तरता,

भोपाल की बात हुई पुरानी बना हर जिला अब राजधानी

हम ही जनता हम ही सरकार - हर जिले में जिला सरकार

मध्यप्रदेश में अब जिला सरकारें चला रही हैं जिले का राज-काज। अब हमारे यहां जिले के फैसलों का रुख वापस जिले की तरफ मुड़ा है।

इंतज़ार खत्म हुआ है फैसलों का।

जिले के फैसले होते हैं जिले में ही। जनता की जरूरतों को बेहतर ढंग से समझती है जिला सरकार और उसी के मुताबिक करती है फैसले। जिले की जनता अब भागीदारी है फैसले लेने में और उन्हें लागू करने में। इसीलिए अब मध्यप्रदेश 61 राजधानियों वाला प्रदेश बन गया है।

मध्यप्रदेश

61 राजधानियों वाला प्रदेश

के लिए सत्ता का विकेन्द्रीकरण किया जाता है तो इसके परिणाम भी तात्कालिक व सतही रहेंगे। लेकिन, समाज में आधारभूत परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में विकेन्द्रीकरण किया जाता है तो निश्चित ही इसके दूरगामी, टिकाऊ और गहरे प्रभाववाले परिणाम निकलेंगे। राज्य के प्रत्येक गांव और जिला मुख्यालय को राजधानी भोपाल की शक्ति से तभी संपन्न किया जा सकता है जब समाज के आधारभूत ढांचे में भी परिवर्तन का बीड़ा उठाया जाए। सत्ता विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया की तुलना में सामाजिक ढांचे में 'रेडिकल बदलाव' की प्रक्रिया कहीं अधिक दुष्कर, जटिल और चुनौतीपूर्ण है। मेरा इशारा ग्रामीण मध्यप्रदेश में सामंती-महाजनी संस्कृति का उन्मूलन है। यद्यपि, संस्था के रूप में सामंतवाद और महाजनी व्यवस्था का लोप हो चुका है, लेकिन आचार-विचार-व्यवहार के धरातलों पर ये व्यवस्था आज भी परोक्ष रूप से जीवित हैं। दिल्ली और भोपाल से उदगीमत सत्ता सरिताएं पूर्व सामंतों, जमींदारों, पुरोहितों और दूसरे शक्तिशाली ठिकानों के यहां 'बंधक' बनती रही हैं। जब तक सत्ता के परंपरागत ठिकानेदारों को समाप्त नहीं किया जाता तब तक सत्ता-सरिता 'हर गांव-हर द्वार' तक नहीं पहुंच पाएगी। सूचना के अधिकार का लाभ भी सीमित वर्ग को ही मिलेगा। अगले वर्ष मध्यप्रदेश की दूसरी मानव विकास रपट को जारी किया जाएगा। इस रपट में इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि समाज के विभिन्न वर्गों के बीच मानव विकास की दर कैसी रही है? आमतौर पर विकास दर का सामान्यीकरण कर दिया जाता है। रपट में यह नहीं दर्शाया जाता कि दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों और ऊंची जातियों के मध्य विकास-विषमता की क्या स्थिति रही है। समाज के इन समूहों के बीच विकास दर समानता-मूलक नहीं हो सकती। अतः स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, उपभोग, स्थिति, आय, आवागमन, संपत्ति अर्जन, रोजगार प्राप्ति, जागरुकता-धरातल जैसी कसौटियों को ध्यान में रखकर समूहगत विकास-दर का पता लगाया जाना चाहिए। जब तक दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों और सवर्णों के साथ साथ बहुसंख्यक और अल्पसंख्यकों के बीच 'जीवन गुणवत्ता' की समान स्थितियां पैदा नहीं होती हैं तब तक मानव विकास अर्थहीन ही माना जाएगा। निःसंदेह इस संदर्भ में स्त्री की स्थिति का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए।

और अन्त में। मध्यप्रदेश को '21वीं सदी का प्रदेश' में रूपांतरित करने की पहली शर्त है समाज की मूल उत्पादक शक्तियों को 'हस्तक्षेप शक्ति' लैस करना। जड़तावादी परिवेश में हस्तक्षेप से ही गतिशीलता पैदा होगी, जनभागीदारी का विस्तार होगा और उत्पादन के लाभों का विषमताहीन वितरण होगा। प्रदेश के प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि के साथ साथ यह भी जरूरी है कि जनता के जीवन में गुणात्मक परिवर्तन आए। और इस परिवर्तन के लिए 'राज्य' अपनी जिम्मेदारी से मुकर नहीं सकता। उसे आवश्यकतानुसार हस्तक्षेप करने के लिए तैयार रहना ही पड़ेगा। वरना, 'नव ठिकानेदार' अस्तित्व में आने-लगेंगे और प्रदेश के जीवट तत्वों को डकारना शुरू कर देंगे। इसलिए स्वप्न को यथार्थ में बदलने के लिए खबरदार रहने की जरूरत नहीं है?

-रामशरण जोशी

जिला सरकार: मध्य प्रदेश में

द्विस्तरीय प्रशासन तंत्र व्यवस्था

प्रशासन विकेन्द्रीकृत लोकोन्मुखी एवं संवेदनशील हो, लोगों के प्रति जवाबदेह कार्यप्रणाली द्वारा आम जनता की समस्याओं का निराकरण स्थानीय स्तर पर हो तथा निर्णय में उनकी भागीदारी भी हो, इसी उद्देश्य से मध्यप्रदेश मे जिला सरकार की कल्पना की गई।

जिला सरकार के पीछे मुख्य अवधारण यह है कि जिला स्तर पर शासन के ऐसे कृत्य, दायित्व एवं अधिकार विकेन्द्रीकृत किये जायें जिससे क्षेत्रीय विकास के कार्यों तथा आम जनता एवं कर्मचारियों की छोटी-मोटी शिकायतों का जिला स्तर पर ही निराकरण हो जाये तथा उन्हें प्रदेश की राजधानी तक बार-बार आने की आवश्यकता न हो। संविधान के 73 वें एवं 74 वें संशोधन के पश्चात् जिले के नगरीय क्षेत्रों में नगरीय निकाय तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लिए त्रिस्तरीय पंचायती राज संस्थाएं पूर्व से ही कायम है। जिला योजना समिति में 3 चौथाई सदस्य इन्हीं संस्थाओं से चुनकर आते हैं। ये संस्थाएं ग्रामीण क्षेत्र की पृथक-पृथक हैं तथा इनकी योजनाओं का अनुमोदन पूर्व से ही जिला योजना समिति करती आ रही है।

म.प्र. सरकार द्वारा जिला स्तर पर जो कृत्य, दायित्व एवं अधिकार विकेन्द्रीकृत किये गये उसमें योजना एवं विकास से जुड़े अधिकांश कृत्य जिला योजना समिति को सौंपे गये हैं। राज्य शासन के कुछ कृत्य जिला योजना समिति के अध्यक्ष को जो प्रदेश के मंत्री या राज्यमंत्री भी हैं उन्हें सौंपे गये हैं। जिला स्तर के अधिकार जिला कलेक्टर एवं अन्य अधिकारियों को सौंपे गये हैं। अधिकारों के विकेन्द्रीकरण में इस बात का ध्यान रखा गया है कि पंचायत राज संस्थाएं एवं अन्य नगरीय निकायों को जो अधिकार एवं कृत्य राज्य शासन द्वारा पूर्व से सौंपे गये हैं, वे यथावत् रहें तथा उन्हें यथासंभव और अधिक दायित्व सौंपे जाएं। इसी प्रकार जिले के अन्य प्राधिकारियों के अधिकार एवं दायित्व भी यथावत् रखे गये

है। अधिकारो के विकेन्द्रीकरण में जिला स्तर पर अधिकांश अधिकार एवं दायित्व राज्य शासन या विभागाध्यक्ष स्तर के सौंपे गये हैं। चूंकि राज्य सरकार के कृत्य जिला स्तर पर संपादित करने की व्यवस्था की गई है इसलिए इस नवीन व्यवस्था को जिला सरकार का नाम दिया गया है।

प्रशासन तंत्र में दो से अधिक स्तर होने पर निर्णय लेने में देरी होती है। वर्तमान मे जिले के ऊपर संभाग/क्षेत्रीय कार्यालय, विभागध्यक्ष एवं राज्य शासन स्तर हैं। इस प्रकार जिले के पश्चात् भी निर्णय लेने के लिए 3 से 4 स्तर रहते हैं। राज्य सरकार ने यह भी निर्णय लिया है कि इन स्तरों को कम किया जाये तथा यथासंभव द्विस्तरीय प्रशासन तंत्र राज्य और जिला स्तर की व्यवस्था रखी जाये। इसी उद्देश्य से म.प्र. सरकार ने आगामी एक जुलाई से विभिन्न विभागों के संभागीय कार्यालयों की व्यवस्था समाप्त करने का निर्णय लिया है। इन कार्यालयों को समाप्त करने पर जो अधिकारी/कर्मचारी अतिशेष होंगे उन्हें जिले के भीतर रिक्त स्थानों पर अथवा नये गठित जिलों में जहां आवश्यकता है वहां उनका उपयोग किया जायेगा। म.प्र. सरकार ने प्रदेश के विस्तृत आकार को देखते हुए बड़े जिलों को विभाजित कर 16 नये जिले गठित किये थे। इन जिलों में एक जुलाई 99 से उन सभी विभागों के जिला कार्यालय खोले जा रहे हैं। जिनके कार्यालय खोलना आवश्यक है। इस प्रकार म.प्र. सरकार ने पिछले 2–3 वर्षों में यह प्रयास किया है कि प्रदेश के भारी भरकम अमले में कमी आये तथा प्रदेश में उपलब्ध अमले का अधिकतम उपयोग किया जा सके।

जिला सरकार के अधिकार

मध्यप्रदेश सरकार ने प्रशासनिक विकेन्द्रीकरण के लिए जिला सरकार का जो नया स्वरूप गढ़ा है उसकी विशेषता यह है कि त्रिस्तरीय पंचायतों और नगरीय निकायों को दिये गये अधिकारों के अलावा शासन के सभी विभागों द्वारा जिला स्तर पर संचालित विभागीय योजनाओं और गतिविधियों की समीक्षा के साथ देखरेख और निगरानी की पूरी जिम्मेदारी सौंपी जा रही है।

जिला सरकार में जिले के भीतर द्वितीय श्रेणी के अधिकारियों के तबादलों के सब अधिकार जिला योजना समिति के अध्यक्ष को है। जिन विभागों में जिला अधिकारियों, जिला पंचायतों और नगरीय निकायों को इस संबंध में जो अधिकार पहले से ही दिये गये है, वे ज्यों के त्यों रहे है। तीसरी और चौथी श्रेणी के ग्रामीण और नगरीय कर्मचारियों के तबादलों का अधिकार भी जिला योजना समितियों को है।

राज्य शासन के विभिन्न द्वारा अनेक संस्थाओं को जो अनुदान स्वीकृत किया गया है उसे जारी रखने की स्वीकृति का अधिकार भी अब जिला योजना समितियों को है। अनुदान की शर्तों के उल्लंघन पर जांच करवाने और दोष सिद्ध होने पर अनुदान रोकने का अधिकार भी योजना समितियों को है। मंत्रियों की स्वीकृति पर स्वेच्छा अनुदान आदेश और चैक जारी करने के अधिकार जिला कलेक्टरों को सौंपे गये है। शासन की नीति के अनुरूप संवेदनशीलता संगम सेनानियों को आर्थिक सहायता और जलाशयों, भवनो तथा सड़कों का नाम महापुरुषों के नाम पर रखने का काम भी योजना समितियां करती हैं।

जिले के यातायात मे सुधार और उस पर नियंत्रण, सिनेमागृहों के निर्माण में सहायता अनुदान, पेड़ लगाने की योजनाओं का मूल्यांकन, तेन्दूपत्ता संग्रह, भुगतान, संग्राहकों के लिए सामूहिक बीमा योजना के अमल की समीक्षा, लघु वन उपज की रक्षा, जंगली जानवरों द्वारा जन और जनहानि के मामलों के क्षतिपूर्ति की स्वीकृति और भुगतान, वनों की अवैध कटाई को रोकने का काम और खाद्य कार्यक्रमों के तहत विकास कार्यक्रमों की मानीटरिंग के अधिकार जिला योजना समितियों को हैं। भूमि और शेड आवंटन के साथ ही औद्योगिक क्षेत्र विकास केन्द्रों में करोड़ रुपये तक के औद्योगिक क्षेत्र विकास केन्द्रों में करोड़ रुपये तक के विकास के कामों की वित्तीय और प्रशासकीय स्वीकृति के अधिकार भी जिला योजना समितियों को हैं।

श्रम कानूनों के तह निरीक्षण और अभियोजना की समीक्षा, महामारी की रोकथाम, चलित औषधालय, लोक स्वास्थ्य बीमा, जन्म–मृत्यु पंजीयन, परिवार कल्याण और स्वास्थ्य कार्यक्रमों की निगरानी भी जिला योजना समिति ही करती हैं।

नगरीय निकायों को सौंपे गये अधिकारों के अलावा नगरीय निकायों की सीमाओं में बदलाव, वार्डों की सीमा नये सिरे से तय करने और भूमि अर्जन के काम भी जिला योजना समिति के अधिकार में हैं। लोक निर्माण के अन्तर्गत कार्यों की समीक्षा के साथ ही योजना समितियां वित्तीय स्वीकृति प्रदान करती हैं। जल संसाधनों की जानकारी और बनाने का दायित्व निभाते हुए वे लघु सिंचाई योजना के रखाव का काम भी देखती है।

जिला योजना समितियों को मूल्य नियंत्रण, कालाबाजारी की रोकथाम और सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अन्तर्गत दूकान–गोदाम की स्वीकृति के अधिकार भी है। नागरिक सहकारी बैंकों और महिला समितियों को सहायता की स्वीकृति, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति सदस्यों को सहकारी समितियों और बैंकों के शेयर के लिए अनुदान और कर्ज देने की स्वीकृति, गोदाम समितियों को दिये जानेवाले कर्ज, अंशदान और अनुदान स्वीकृति के साथ सहकारी आवास समितियों की आधारभूत सुविधाओं के विस्तार का अधिकार भी जिला योजना समितियों को है।

प्राकृतिक आपदाओ से नुकसान के लिए 15 हजार से अधिक के मामले, भारत सरकार और राज्य सरकार विभागों, सार्वजनिक उपक्रमो और स्थानीय निकायों नजूल भूमि का आवंटन, नजूल की जमीन का पट्टे पर देने के लिए अनुमोदन, पांच साल तक अस्थायी लीज, और वाणिज्यिक उपयोग के लिए भूमि का पट्टा देने और लाख से कम आबादी वाले शहरों में पेट्रोल पम्प के लिए की जमीन का स्थायी पट्टा देने का अधिकार समितियों को है। ये समितियां [illegible] उसके लिए अन्य भूमि का अधिग्रहण [illegible]

के नुकसान पर भू–राजस्व की माफी और निलंबन के अधिकार भी उन्हें हैं।

राज्य सरकार द्वारा सहेजे जा रहे स्मारकों और संग्रहालयों की निगरानी भी अब योजना समितियां करती हैं। नगर वाहन सेवा के लिए मार्गों की पहचान, स्थायी परमिटों का अनुमोदन और परमिट स्वीकृत करने के अधिकार भी उन्हें हैं। जिले में कैदियों के उपयोग की खाद्य सामग्री के टेण्डर के पूर्ण अधिकार भी उन्हें हैं। शासन द्वारा संधारित मंदिरों के जीर्णोद्धार का काम भी उन्हीं के जिम्मे हैं।

नोटरी की नियुक्ति और उनके खिलाफ शिकायतों की जांच, शासकीय और अतिरिक्त शासकीय अभिभाषको की नियुक्ति के अधिकार भी योजना समितियों को हैं।

समाज कल्याण, स्कूल शिक्षा, आदिवासी कल्याण और महिला–बाल विकास की जिला स्तर की सभी गतिविधियों की निगरानी का जिम्मा भी जिला योजना समितियों का है।

जिला योजना समितियों को जो अधिकार दिये गये हैं, वे पंचायतों और नगरीय निकायों के पास नहीं है। इन अधिकारों का प्रयोग कभी राज्य सचिवालय, तो कभी संचालनालय और संभागीय कार्यालयों द्वारा किया जाता रहा है। इसके कारण बहुत से जनहितकारी कामों को निपटाने में अनावश्यक समय और जनशक्ति खर्च होती रही है।

जिला सरकार की स्थापना का मुख्य उद्देश्य यही है कि सरकार, विभागाध्यक्ष और संभागीय अधिकारियों के अधिकारों को अधिक से अधिक जिला स्तर पर सौंपा जाये जिससे के विकेन्द्रीकरण का पूरा और सही लाभ समय पर नागरिकों को मिल सके। स्थानीय आवश्यकताओं और उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप जिले की विकास योजनाएं बनें और उनका जनता और जनप्रतिनिधियों की देखरेख में उचित अमल हो।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह जिला सरकार को काई अबूझ पहेली नही मानते। उनका सीधा और सरल विचार यह है कि सरकार स्थानीय समस्याओं को पहचान कर लोगों को विकास के अधिक से अधिक नजदीक ले जाये। समस्याओं को हल करने में चुने हुए प्रतिनिधि भागीदार बनें। जिला सरकार की योजनाएं और उसकी प्राथमिकताएं स्थानीय लोगों की मदद से ही तय हों और उनके अमल की जिम्मेदारी भी उन्हीं लोगों की हो। मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप जिला सरकारों ने पिछले एक साल में अपने–अपने क्षेत्र मे जो कार्य किये हैं उनमें इस व्यवस्था की सफलता को देखा जा सकता है। आने वाले सालों में जिला सरकार व्यवस्था मध्यप्रदेश के लोगों के सुख–दुख और विकास के कामों की सबसे ज्यादा जिम्मेदार और सफल प्रशासनिक इकाई के रूप में उभरेगी, इसमें कोई शक नहीं है।

मध्यप्रदेश में सत्ता के विकेन्द्रीकरण के इस दूसरे पड़ाव पर अब राज्य के धन का वितरण इस तरह होगा कि सब समान रूप से विकास में भागीदार बनें। जिला सरकारों का अब अपना बजट है और अपने–अपने क्षेत्र के अनुभवी लोगों से सलाह–मशविरा कर अपने मार्ग पर वे खुद आगे बढ़ रही है। जन प्रतिनिधियों और लोक सेवकों के बीच व्यावहारिक तालमेल से अब अधिक जिम्मेदारी और जागरूकता से कार्य हो रहा है। अब वे निष्कवच होकर लोगों के समाने हैं।

मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियां

वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार प्रदेश की कुल जनसंख्या 6,61,81,170 है जिसमें से 1,53,99,034 अनुसूचित जनजाति की है अर्थात् प्रदेश की 23.27 प्रतिशत जनसंख्या आदिवासी है।

मध्यप्रदेश शासन द्वारा निर्धारित 10 जिलों की कुछ तहसीलों में रहनेवाली विशिष्ट जातियो को अनुसूचित जनजाति माना जाता है। ये क्षेत्र निम्नलिखित हैं–

(1) बालाघाट जिले की बैहर तहसील।

(2) बस्तर जिले की भानुप्रतापपुर, बीजापुर, दंतेवाड़ा, जगदलपुर, कांकेर, कोंडा गांव, कटा और नारायणपुर तहसीलें।

(3) बैतूल जिले की बैतूल और भैंसदेही तहसीलें।

(4) बिलासपुर जिले की कटघोरा तहसील।

(5) छिन्दवाड़ा जिले के अमरवाड़ा, छिन्दवाड़ा और लखनादौन तहसीलें।

(6) दुर्ग जिले की संजोरी बालोद तहसील।

(7) मंडला जिले की मंडला, निवास और रामगढ़ (डिंडोरी) तहसीलें।

(8) राजगढ़ जिले की धर्म जयगढ़, घरघोड़ा, जशपुरनगर और खरसिया तहसीलें।

(9) सरगुजा जिले की अंबिकापुर, बैकुण्ठपुर, भरतपुर, जनकपुर, मनेन्द्रगढ़ पाल, समरी और सीतापुर तहसीलें।

आदिवासी जनजातियों में मध्यप्रदेश की सबसे बड़ी जनजाति गोंड है। 1981 के अनुसार मध्यप्रदेश में इनकी संख्या 53,49,883 थी और सबसे छोटी प्रमुख जनजाति कमार है, जोकि गोड़ों की ही एक उपजाति है। यह रायपुर जिले तथा निकटवर्ती भागों में मिलती है।

प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों को चार भागों में विभक्त किया गया है। ये क्षेत्र हैं–मध्य क्षेत्र, पूर्वी क्षेत्र, पश्चिमी क्षेत्र और दक्षिणी क्षेत्र।

मध्य क्षेत्र– इस क्षेत्र में मुख्य रूप से गोंड, कोल, कोरकू और बैगा नामक जनजातियां सबसे अधिक है।

(2) पूर्वी क्षेत्र–इस क्षेत्र में सरगुजा आदिवासी बहुल जिला आता है। यहां उरांव जाति के लोग रहते हैं।

(3) पश्चिमी क्षेत्र –इस क्षेत्र में झाबुआ जिला आता है जिसमें भील जनजाति के लोग रहते हैं।

(4) दक्षिणी क्षेत्र – इस क्षेत्र में मण्डला, शहडोल आदि
ादिवासी बाहुल्य वाले जिले आते हैं। बस्तर जिला इसमें
ुख है। इसमें झरिया, माडिया, हल्बा और भतरा जाति के
ग रहते हैं।

मध्यप्रदेश में विभिन्न अनसूचित जनजातियों में गोंड
ाड़िया और मुरिया इसी में शामिल हैं।) जनजातियों के लोग
बसे अधिक है।

ोंड

मध्यप्रदेश के आधे से अधिक भाग में आदिवासी निवास
रते हैं, इनमें गोंड सबसे अधिक हैं। मध्यप्रदेश के उत्तरी
ाग को छोड़कर, बैतूल होशंगाबाद, छिन्दवाड़ा, बालाघाट,
हडोल, मंडला, सागर, दमोह, छत्तीसगढ़, सरगुजा और
स्तर में गोंड प्रमुखता से बसे हैं। गोंड़ अपने रीति–रिवाजों
ौर परंपराओं से बंधा हुआ है। युगों से प्रचलित रीति–रिवाजों
ौर परंपराओं से गोंड बेहद प्यार करता है। उनसे तनिक
। अलग नहीं होना चाहता। इस तरह गोंड समाज जन्म से
ेकर मृत्यु तक कई परंपराओं का निर्वाह करता है। गोंड़ों
समगोत्री विवाह नहीं होते।

गोंड समाज में पर्व–त्योहार अपार खुशियों और उनकी
स्कृति के पोषक है। गोंड सात पर्व–त्योहार आदि परंपरा
 अनुसार मनाते चले आ रहे हैं। (1) बिदरी, (2) बकपंथी,
3) हर डिली, (4) नवाखानी, (5) जवारा, (6) मडई,
7) छेरता।

गोंड के कई नृत्य हैं, इसमें प्रमुख हैं:–

1. करमा, 2. सैला, 3. भडौनी, 4 बिरहा, 5. कहरवा,
. सजनी, 7. सुआ, 8. दीवानी नृत्य आदि।

ण्डामी माड़िया

दण्डामी माड़ियाओं के घर प्रायः घास फूस, लकड़ी, मिट्टी
 बने होते है, जिनका आकार लघु रूप में होता है, जिसे
ोपड़ी कहा जाता है। झोपड़ी में एक ही द्वार होता है। आसपास
ी मिट्टी की दीवारें भी बहुत ऊंची नहीं होती है। झोपड़ी के
न्दर एक दीवार खड़ी करके उसे दो भागों में बांट दिया
ाता है। एक में रसोई पकाई जाती है, दूसरे में सोने, बैठने
ी व्यवस्था होती है। दण्डामी माड़िया मूल रूप से खेती करते
। पहले ये लोग बेवर खेती करते थे, लेकिन आजकल इनके
ेत निश्चित हो गये हैं।

दण्डामी माड़िया उत्सव प्रिय जनजाति है। शायद की कोई
िन अथवा माह होता जब माड़िया जन किसी प्रकार का उत्सव
 मनाते हों। पर्व त्यौहार माड़िया जीवन का अटूट हिस्सा है।
ार्मिक, सामाजिक और प्रकृति से संबंधित पर्वों में माड़िया लोग
ूर्ण उत्साह और निष्ठा से भाग लेते है। नवाखानी फसल बोवाई–
टाई, बिदरी, मड़ई आदि माड़ियाओं के खास त्योहार है।

ुरिया

मुरिया बस्तर की एक प्रमुख जनजाति है जिसका मूल
ोई और सामुदाय में माना जाता है। मुरिया मैदानी भागों में
िवास करते है। मुरिया बस्तर में निवास करनेवाली अन्य
नजातियों से भौतिक और मानसिक रूप से अधिक

विकसित हैं। मुरिया एक संस्कृति संपन्न जनजाति है। आमतौर पर मुरिया जनजाति बस्तर के नारायणपुर और कोंडा गांव के जंगलों में रहती हैं।

मुरिया जनजाति के कई पर्व त्यौहार हैं जिन्हें मुरिया जन बड़े उत्साह से मनाते हैं। नवाखानी, जात्रा, चाड़ सेवा, मुरियाओं के प्रमुख त्योहार हैं। ग्रीष्मकाल में मुरिया अपने कुल और ग्राम देवता के पूजन का उत्सव मनाते हैं। उत्सव की तिथि गांव के या परगना के मुखिया बैठकर आपस में तय कर लेते है। उत्सवों की श्रृंखला का नाम ककसार है और इस अवसर पर किये जाने वाले पारंपरिक नृत्य का नाम ककसार नृत्य है। ककसार आदिम नृत्यों का समूह है, जिसमें हुलकी, कोलांग, मांदमी, मजीरा, तुड़तुड़ी एवं घाटी नृत्य शामिल है।

भील

भील देश की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है। भील का निवास मध्यप्रदेश के पश्चिम हिस्से धार, झाबुआ और पश्चिमी

निमाड़ जिले में हैं, जो प्रदेश का सबसे बड़ा जनजाति परिक्षेत्र हैं। भील जनजाति की मुख्य चार उपशाखाएं होती हैं। भील, भीलाला, बरेला और पटलिया। भील जनजाति की जनसंख्या सन् 1971 की जनगणना के अनुसार 16,10,789 है।

भील जनजाति भारत की सबसे प्राचीन जनजातियों में से एक है। भील शब्द संस्कृत भाषा के भिल्ल शब्द से बना है। पौराणिक आख्यानों में भीलों का जिक्र मिलता है। भील शब्द द्रविड़ भाषा के विल या विलसे से आया जिसका अर्थ तीर होता है। तीर धनुष भीलों के जीवन का अभिन्न अंग है। तीर धनुष भीलों की पहचान है। तीर धनुष चलाने में भील लोग पारंपरिक रूप से दक्ष होते हैं। अंधेरे में भी ये अचूक निशाना लगा देते हैं। तीर धनुष भीलों का जातीय प्रतीक बन गया है।

भीलों का निवास झाबुआ की नगी पहाडियों पर होना है। भील लोग अलग-अलग दूरियों पर अपना घर बनाना पसद करते हैं। एक से दूसरे घर की दूरी एक दो किलोमीटर भी हो सकती है इसका कारण झाबुआ के जगला में पड़ा का समाप्त होना है। झाबुआ का धरातल काफी ऊबड़-खाबड और बेतरतीब है। भीलो के घर लड़की बास मिट्टी और खपरैल के होते है। भीलों के घर आकार म बड़े और खुले खुले होते हैं। बास का उपयाग बाड़ा के निर्माण म अधिक दिखाई देता है। सपन्न भीलो क घरा के लकड़ी के दरवाजे कलात्मक और काफी बड़े हात है। भील जहा रहत है उस जगह को फाल्या कहत ह।

भगोरिया नृत्य भीलो का पारपरिक और हार्दिक उमग का नृत्य है। अन्य अवसरा पर डोहा बड़वा आदि नृत्य भी भीलो म प्रचलित है। भीलो म दीवारो पर पिथारा मिथकथा चित्र बनान की प्रथा है जिसके लिए पारपरिक कलाकार हात है। जिन्हे पिथोरा लिखने के लिए सम्मान के साथ आमन्त्रित किया जाता है पिथोरा भीलो का विश्व प्रसिद्ध चित्र है और श्री पमा फत्या उसके श्रेष्ठ कलाकार है।

कोरकू

मध्यप्रदेश के कोरकू जनजाति सतपुडा के वनीय अचला

में छिंदवाड़ा, बैतूल जिले की भेंसदेही और चिचोली तहसील में, होशंगाबाद जिले की हरदा, टिमरनी और खिड़किया तहसील मे, पूर्व निमाड जिला खण्डवा की हरसूद और बुरहानपुर तहसील के गावो मे निवास करने वाली प्रमुख जनजाति है।

मध्यप्रदेश के अलावा महाराष्ट्र में अकोला, मेलघाट तथा गोशीता लुक्के मे भी कोरकू निवास करते हैं।

कोरकू जनजाति चार समूहो मे पायी जाती है: रूमा, पोतडिया दुलारय और बोवई या बोन्डई।

कोरकू लोगो का मुख्य भोजन कृषि कृत पदार्थ, जंगली फल-फूल और अनेक पकार का मास है। कृषि कृत पदार्थों मे मुख्य म रूप स कोदो कुटकी, सावा, बाजरा, मक्का, ज्वार गहू, तुवर, तिवडा तिल्ली आदि हैं। साग सब्जियों में अमाडी चने का पला, गिलकी, तोरया, कद्दू, ककड़ी, लौकी आदि पहाडी क्षेत्रो मे रहनेवाले कोरकू भाजी पाला ही अधिक खाते है।

कोरकू आदिवासियो म विवाह की चार प्रथाएं प्रचलित हैं।
1 लमझना प्रथा या घर दामाद, 2. चिथोड़ा प्रथा, 3 राजी-बाजी प्रथा 4 तलाक और विधवा विवाह।

पर्व-त्यौहरो मे कोरकू मुख्यत चैत्र वैशाख में गुड़ी पड़वा, अक्खाती तीज और देव दशहरा, ज्येष्ठ में डोडवली, श्रावण म जिराती भादो मे पोला, कुवार में देव दशहरा, कार्तिक में दीवाली माघ दशहरा और फाल्गुन मे होली मनाते हैं।

उरांव

उराव जनजाति का निवास रायगढ़ जिले की जशपुर तहसील तथा सरगुजा जिले में है। उरांवो की उत्पत्ति द्रविड़ो स मानी जाती है। दक्षिण भारत से उरांव उत्तर भारत से आकर बसे खासकर छोटा नागपुर के रांची, और हजारी बाग क्षेत्र मे उराव आबादी का घनत्व अधिक था, मध्यप्रदेश म भी उसी समय से उराव बसे है। उरांव शहर से दूर जंगलों मे निवास करना पसद करते है। उरांव सदैव समूह में रहते है। पूरा गाव उरावो का हो सकता है। स्वभाव से उरांव परिश्रमी, साहसी और निडर होते है। उरांव कभी शासक भी रहे है।

उरावो का मूल पारपरिक कार्य खेती-मजदूरी है। वनोपज एकत्रित करना, जगली पशुओं का शिकार, मुर्गी पालन उरावो का मुख्य शौक है। महिलाएं घर को कामकाज के साथ तेंदूपत्ता, सरइबीज, महुआ और चिरोंजी आदि सकलित करने का कार्य करती है। उरांव समाज में स्त्री पुरुष के बराबरी का स्थान रखती है। उरांव कुड़ख भाषा बोलते है।

उरावो के प्रमुख त्योहार और अनुष्ठान सरना पूजा, कुलदेव पूजा करमा पूजा हैं। उरावों का जीवन प्रकृति पर निर्भर है। इसलिए हर अनुष्ठान मे प्रकृति की पूजा का भाव विद्यमान रहता है। सरना पूजा मुख्य रूप से सरईवृक्ष में बसे देवता की पूजा का पर्व है। उरांव इसी समय सरहुल नृत्य करते है जिसमे स्त्री पुरुष सभी हिस्सा लेते हैं। करमा त्योहार में करम वृक्ष की डार की पूजा की जाती है और करमा नृत्य किया जाता है। सभी नृत्य मादर झांझ और ढोलक केन्द्रित

होते हैं। शराब उरांव जीवन पद्धति का अन्य आदिवासियों की तरह एक अनिवार्य हिस्सा है।

कमार

कमार मध्यप्रदेश की एक पिछड़ी अनुसूचित जनजाति है। ये मुख्य रूप से दक्षिण छत्तीसगढ़ के मैदानी हिस्सों में निवास करते है। विशेषकर रायपुर संभाग में सबसे अधिक हैं साथ ही नवागढ़, नगरी, सिहावा, मैनपुर, बिन्द्रावनगढ़ आदि में कमार बसे हैं। कमार बस्ती से दूर जंगल में किसी नदी किनारे बसाते हैं। कमारों के मकान झोपड़ीनुमा होते है, जिसे वे स्वयं ही निर्मित कर लेते हैं। जंगल से लकड़ी बांस, घास लाते हैं और दो चार दिन में पति पत्नी मिलकर अपना मकान बना लेते हैं। घर में किसी की मृत्यु होने पर पुराना घर तोड़कर नया घर बना लेते हैं। घर के पीछे बाड़ा होती है।

कमारों की शरीर रचना सुगठित होती हैं। पुरुष लंबे इकहरे बदन के मोटे होंठ और चपटी नाक वाले होते हैं। पुरुष सिर के बाल लंबे रखते है। स्त्रियां मध्यम कद काठी की होती है। पुरुष तीर-धनुष अथवा कुल्हाड़ी रखते हैं। पुरुष शरीर पर बहुत कम कपड़ा पहनते हैं, लंगोटी अथवा 'पटुका' ही कमार पुरुष के लिए पर्याप्त है, अधिक हुआ तो 'फतुही' पहनते हैं। कमार स्त्रियां कोष्टाई लुंगड़ा लपेटती है। कमार महिलाएं प्रायः चोली नहीं पहनती।

कमार जनजाति में विवाह आदि शुभ अवसर पर नृत्य, संगीत का आयोजन किया जाता है। कमारों का मुख्य वाद्य मांदर होता है। नृत्य में स्त्री पुरुष दोनों हिस्सा लेते है। कमार नृत्यों की कोई विशेष वेशभूषा नहीं होती, रोजमर्रा के कपड़े पहनकर कमार लोग हाथ में तीर कमान, कुल्हाड़ी आदि लेकर नाचते हैं।

कमारों में मृत्यु होने पर शव को मिट्टी में दफनाया जाता है। तिजनहावन पर शुद्धिकरण होता है। पुनर्जन्म में कमार लोगों का विश्वास है।

बैगा

बैगा मुख्य रूप से मंडला, बालाघाट, डिण्डोरी, बालाघाट, सरगुजा, बिलासपुर, अमरकंटक के पहाड़ी अंचलों में निवास करते हैं।

अधिसंख्य बैगाओं का निवास मंडला में है, जहां बैगाओं के अस्सी के ऊपर गांव हैं। इसमें बैगाचक प्रमुख है। यह क्षेत्र लगभग 60 किलोमीटर चौड़ा है, 300 किलोमीटर लंबा है। यह पूरी सतपुड़ा और मैकल पर्वत की उपत्यकाओं में फैला है। पूरा क्षेत्र गहन साल वृक्षों से आच्छादित है। बैगाचक में आवागमन के साधन उपलब्ध नहीं है। सारे बैगा घने जंगलों में नदी, नालों पुलों के किनारे बसे हैं।

बैगा समाज में छः विवाह पद्धति प्रचलित है। 1. मंगनी विवाह या चढ़ विवाह, 2. उढ़वा विवाह, 3. चोर विवाह, 4. पैठूल विवाह, 5. लमसेना, 6. उधरिया।

बैगा जनजाति अपने शरीर पर बहुत कम वस्त्र पहनती है। पुरुष प्रायः पटका (लंगोटी) पहने रहते है। उनके बदन [illegible] है। स्त्रियां शरीर पर केवल एक साड़ी लपेटती है। बच्चे [illegible] अवस्था में रहते है। परन्तु अवसर विशेष पर या

आजकल सभी युवा बैगा सलोका (कमीज) धोती, जाकिट सिर पर सोलह हाथ का फेंटा लपेटते हैं।

बैगाओं का रहन-सहन अत्यन्त सादा है। बैगा अपनी अल्प आवश्यकताओं की पूर्ति से ही संतुष्ट रहते हैं। पीने के लिए मद और पेट भरने के लिए किसी प्रकार का भोजन मिल गया, बस पर्याप्त है। पहनने के लिए एक लंगोटी और ओढ़ने के लिए कमरी बहुत है। घर, बाड़ी, खेत में थोड़ी मेहनत और पर्व त्योहारों, विवाह में थोड़ा नाच-गाना, बस यही जिन्दगी एक बैगा की है। बैगा समाज पुरुष प्रधान है। समाज में पुरुष के बनाये गये नियम विधान लागू होते है। सामाजिक रीति रिवाजों के परिपालन में पुरुषों की इच्छा सर्वोपरि होती है। बैगा पंचायत में पांच पंच होते है। 1 मुकद्दम, 2 दिवान, 3 समरथ, 4 कोटवार, 5 दवार।

बैगाओं का आर्थिक आधार खेती बारी, घरेलू धन्धे पशुपालन और जंगल की मजदूरी है।

सहरिया

सहरिया मध्यप्रदेश की उन जनजातियों में से एक है जो विकास की दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ी और अपनी अस्मिता की अन्तिम पहचान की स्थिति में है।

सहरिया कोलेरियन परिवार की संपूर्ण पहचान रखनेवाली जाति थी, यह बात इसलिए भी मानना जरूर हो गया है कि सहरिया आज भी समूह की आदिम भावना और जंगल जीवन पर निर्भर करते है।

सहरियाओं के परंपरागत धंधे कृषि, मजदूरी और वनोत्पादन संग्रह करना है। परंपरागत शिल्प और शिकार भी सहरियाओं के साथ अस्थायी अर्जित रोजगार रहे है। अधिकतर सहरिया कृषि और मजदूरी करते है। [illegible] के साथ का [illegible] सहरियाओं में परम्परागत है। [illegible] बूटियों को पहचानने में पारंगत होते है, [illegible] करते है और उन्हें बेचकर आर्थिक लाभ [illegible] है।

सहरिया समूह [illegible] और संस्कृति से संपन्न है। इनकी [illegible] परंपरा और [illegible] बहुत समृद्ध है। सहरिया [illegible]

के गीत, कथाएं, पहेलियां और कहावतें उनकी लोक संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं। गोठलीला, रामजन्म, जानकी विवाह, पाड़वों की कथा, लगुरिया, फाग रसिया, गारी, रामायणी, रागिनी, बाजनागीत, ख्याल, चकिया, गीत, कन्हैया, राया, सगड़ावत–बगड़ावत की लोक कथाएं आदि सहरियाओं की वाचिक परंपरा के जीवित प्रमाण हैं। कथात्मक पहेलियां जितनी अधिक सहरियाओं में प्रचलित है उतनी किसी भी जनजाति में नहीं पाई जातीं।

भारिया

भारिया जनजाति का अस्तित्व मध्यप्रदेश में मुख्यतः जबलपुर, छिन्दवाड़ा और बिलासपुर में हैं। इन तीनों अंचलों में भारियाओं की जनसख्या लगभग दो लाख से ऊपर है। सबसे अधिक भारिया जन जबलपुर में है। छिन्दवाडा के तामिया विकास खंड के पातालकोट के भारिया ऊपर के लोगों के लिए सदैव आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। भारिया जंगलों में एकान्त और ऊंची जगहों मे रहना पसंद करते हैं। भारिया जहां बसे होते हैं। उसे ढाना कहते हैं।

भारिया प्रारंभ में ढहिया खेती करते थे, आजकल स्थायी कृषि करने लगे हैं। भारिया समाज संगठन रूढ़ियों में बंधा है। मुखिया पटेल कहलाना हैं। भुमका, पडिहार और कोटयार समाज के मुख्य घटक होते हैं। स्त्री–पुरुष का दर्जा बराबर का होता है। लघु वनोपज एवं जड़ी बूटियों का संग्रह भारियाओं का पारंपरिक आर्थिक स्रोत हैं। बांस की बनी सामग्री और छिन्द पत्तियों तथा देव बहारी घास से झाड़ू बनाना और लकड़ी के दरवाजों पर खुदाई करना भारिया लोगों के परंपरागत शिल्प हैं।

भारयाि अपने आपको हिन्दुओं से प्रभावित मानते हैं, लेकिन उनका मूल आदिम जगत ही है। वे कुछ देवता बूढ़ादेव, दूल्हादेव, बरुआ और नागदेव की पूजा करते हैं। बड़ा देव, मछेश्वर, मुठवा, भमिसेन देवता आदि भारियाओं के जातीय देव हैं। बिदरी पूजा, नवाखानी, जवारा, दीवाली, होली भारियाओं के प्रिय त्यौहार हैं।

भारिया गोत्र समाज है। समगोत्री विवाह नहीं होते हैं मामा–फूआ के लड़के लड़कियों के विवाह शुभ माने जाते हैं। भारियाओं की चार विवाह पद्धतियां हैं – (1) मंगनी विवाह का बारात विवाह (2) लमसेना (3) राजी बाजी विवाह (4) विधवा विवाह। भारियाओं में चूडी प्रथा है। भारियाओं में शव दफनाये जाते हैं। गमीरोटी की रस्म की जाती है, मृत्युगीत गाये जाते हैं।

भारिया एक कला संपन्न जनजाति है। उनकी बोली भरनोटी है, जो बुन्देली से प्रभावित है। महिलाएं घर की दीवारों पर अलंकरण साज सज्जा कई तरह से करती हैं। विवाहादि में भारिया कई प्रकार के नृत्य करते हैं। भडम्, सैतम, करमा, सैला इनके प्रमुख नृत्य है।

बंजारा

मध्यप्रदेश में बंजारा एक घुमन्तू जनजाति के रूप में जानी जाती है लेकिन प्रदेश के कुछ हिस्सों–विशेषकर निमाड़, मालवा, मण्डला, बस्तर आदि में बनजारा जनजाति के लोग गांव बसाकर रहने लगे हैं, जिसे टांडा कहा जाता है। बनजारा भारत की बहुत पुरानी यायावर जनजाति हैं। प्रारंभ में बंजारा जीवनोपयोगी सामग्री बैलों पर लादकर गांव–गांव ले जाकर बेचते थे, जिसे 'बालद' लाना कहते हैं।

बनजारों का मूल उद्गम और निवास राजस्थान माना जाता है। बनजारे अपने आपको राजपूतों का वंशज मानते हैं। राजपूत राजाओं के समय में बनजारे विविध सामग्रियों के साथ राजाओं की प्रशंसा में गीत नृत्य भी किया करते थे। आवश्यकता पड़ने पर युद्ध में भी हिस्सा लेते थे और राजाओं के संदेश आदि भी ले जाते थे।

बनजारे सिख धर्म से प्रभावित हैं। गुरु नानक देव और गुरु ग्रन्थ साहब पर बनजारे अटू आस्था रखते हैं। विवाहदि में मुखिया 'उदासी' अरदास पढ़ते हैं। राजस्थान मूल के होने के कारण बनजारे बाबा रामदेव के साथ राम, कृष्ण, दुर्गा, शिव आदि देवी–देवताओं को मानते हैं। दशहरा, दीपावली, होली आदि पर्व भी बनजारा समाज में मनाये जाते हैं।

बनजारों के प्रमुख पारंपरिक नृत्यों में तलवार नृत्य तथा डडा बेली नृत्य हैं। भारत में बनजारा जनजाति की अपनी विशिष्ट पहचान उनका पहनावा है।

कोल

मध्यप्रदेश के रीवा, सीधी, सतना, शहडोल और जबलपुर में कोल जनजाति का निवास है। कोल, मुण्डा–समूह की एक प्रमुख जनजाति है। कोल जनजाति का पूर्व मूल निवास रीवा के बरदीराजा क्षेत्र के 'कुराली' को माना जाता है। यहीं से कोल सभी जगह फैले। कोल मध्यप्रदेश के अलावा पड़ौसी राज्य उत्तरप्रदेश, उड़ीसा और महाराष्ट्र में भी निवास करते हैं।

कोल शब्द, जो जाति का परिचायक है, को ओस्ट्रिक परिवार या मुंडा–समूह के लिए मैक्समूलर ने कोल या 'कोलारियन' नाम दिया। कहने का तात्पर्य यह है कि कोल शब्द जातायता के साथ–साथ मंडा–समूह के लिए भी प्रयुक्त है। जहां तक कोल शब्द के मूल का संबंध है, कतिपय जन

के अनुसार इसका उद्भव संस्कृत शब्द 'कोला' से हुआ है। तथापि पूरी संभावना है कि इस शब्द का उद्भव मुण्डारी 'हो' 'होर' या 'होरो' से हुआ हो जिसका अर्थ है 'मानव' जो कालान्तर में 'कोरो', कोलों या कोल रूप धारणा कर गया। कोल अत्यंत प्राचीन जनजाति है। ऋग्वेद, मत्स्य पुराण, अग्नि पुराण, विष्णु पुराण, हरिवंश पुराण, महाभारत, रामायण में 'कोल' जनजाति का उल्लेख किया गया है। ऋग्वेद में श्वपच, चाण्डाल, वृक्कल, कोल्हटि, बुरुड आदि कई जनजातियों के नाम आये हैं। संभवतः 'कोल्होट' नाम कोलो के लिए ही प्रयुक्त हुआ हो, जो बाद मे कोल्हटि से 'कोल्ह' या 'कोल' हो गया।

कोल जनजाति के होली, नवदुर्गा, रामनवमी, तीज और दशहरा प्रिय त्योहार हैं। जन्म, विवाह संस्कार हिन्दू रीति-रिवाजों की ही तरह संपन्न होते हैं। बीमारी से मरने पर दाह और सामान्य रूप से मरने पर दफनाने का रिवाज है।

कोल मुख्यतः कृषि मजदूरी कर अपना जीवन यापन करते हैं। कई कोल शासकीय-अशासकीय विभागों मे कार्यरत हैं। कोल जनजाति में पढ़ने-लिखने के प्रति रुचि जागृत हुई है, वे इस दिशा मे आगे भी आ रहे हैं।

कोल नृत्य गीत प्रिय जनजाति है कोल जनजाति का कोल दहका नृत्य अपनी नृत्य-मुद्राओं, और हस्त चालन के लिए विशेष लोकप्रिय है।

परजा

परजा मध्यप्रदेश की एक खास जनजाति है। इसका निवास बस्तर में है। सन् 1971 में परजाओं की जनसंख्या 8,350 गिनी गई लेकिन परजा अपनी जनजातीय विशेषताओं के कारण अपनी पहचान बिलकुल अलग रखते है। परजा मूलतः गोंड जनजाति की प्रशाखा है। गोंड जनजाति से भिन्नता रखने के कारण यह विभेद हुआ। परजा जनों की शारीरिक संरचना बहुत कुछ गोंडों से मिलती है, लेकिन स्वभाव सर्वथा भिन्न है। इसलिए गोंड़ों से अलग हुए समुदाय ने अपना नाम 'परजा' रख लिया।

परजा जनजाति चार समूहों में बंटी है - बड़ा परजा, सोडिया परजा, बरंग, जोड़िया परजा, खोंड परजा। परजा शारीरिक रूप से हृष्ट पुष्ट और परिश्रमी होते हैं। महिलाओं की बनावट सुडौल और सुन्दर होती है, गांव में परजा अलग टोला बनाकर रहते है। घर घास-बांस-लकड़ी, मिट्टी और खपरैल से बने होते है, घर आमने-सामने कतारबद्ध होते हैं सामने पशुओं के बांधने की जगह, पीछे साग सब्जी के लिए बगीचा होता है।

पुरुष धोती बड़ी पहनते है, परजा स्त्रियां साड़ी घुटने के ऊपर से लपटती है। परजा महिलाएं श्रृंगार प्रिय है। गुदने और गहने दोनों धारण करती है।

सगगोत्री विवाह परजाओं मे अन्य आदिवासियों की तरह नहीं होता। मामा, फुफेरे लड़के-लड़कियों मे विवाह होता है। इसी बोल विवाह परजाओं है, इसी प्रकार पत्नी के मर जाने पर साली के साथ विवाह वैधानिक माना जाता है। तलाक प्रथा भी है। मृत्यु के बाद शवों को दफनाया जाता है।

परजा कलाप्रिय जनजाति है। पर्व त्योहारों, विवाह आदि मे नृत्य, गीत-संगीत का आयोजन करते है। स्त्री पुरुष अलग अलग और सम्मिलित रूप से नृत्य करते हैं। नृत्य में पुरुष पशु-पक्षियों के समान गतियों की मुद्राएं बनाकर नृत्य करते हैं। नृत्य का मुख्य वाद्य ढोल होता है।

परजा लोगों का जीवन कृषि पर निर्भर है। परजा बेड़ा-डाड़ा, डोंगर कृषि करते हैं। परजा पशु पालक जनजाति है। चावल परजाओं का मुख्य भोजन है। शराब का हर कार्य में चलन है। मांस मछली भी खाते है गुडाखू करना इनकी आदत है।

पहाड़ी कोरवा

मध्य प्रदेश की आदिम जातियों में कोरवा जनजाति अपनी जातीय विशेषताओं के लिए अलग पहचान रखती है। कोरवा प्रमुख रूप से प्रशाखाओं में विभक्त है। एक पहाड़ी कोरवा और दूसरे डिहरी कोरवा। पहाड़ी कोरवा पहाड़ों पर रहते हैं और डिहरिया कोरवा मैदानों के गांव में रहते हैं।

पहाड़ी करोवा मध्यप्रदेश के पूर्वी अंचल के वन्य क्षेत्र रायगढ़, सरगुजा और बिलासपुर जिले की जशपुर, अंबिकापुर और सामरी पाट तथा कोरवा तहसीलों में बसे है। कोरवाओं के ऐतिहासिक प्रमाणों से ज्ञात होता है कि कोरवा जनजाति के लोग पुरानी कुडिया जमींदारी में सन्ना और बगीचा के बीच छोटा नागपुर की ओर से आकर बसे है।

पहाड़ी कोरवा अत्यन्त पिछड़ी जनजाति है, परन्तु संस्कृति विहीन नहीं है। इनके अपने रीति रिवाज, अपनी बोली, अपने नृत्य, गीत, वाद्य और अपना मौलिक जीवन है।

पुरुष नाचते समय पैरों मे पैंजन, घुंघरु, मजूका पहनते हैं। सिर पर पगड़ी बांधते हैं। पगड़ी में मोरपंख लगाकर नाचते हैं। महिलाएं परंपरागत कपड़े पहनकर समूह में नाचती हैं।

'सिंगरी' कोरवाओं का एक प्रमुख त्योहार है। यह पांच साल में मनाया जाता है। जिसमें गांव के सभी लोग सम्मिलित होते हैं। सिंगरी में दीवार पर परंपरागत भित्ति चित्र उकेरते है, जिन्हें नक्शा बनाना कहते हैं। आदमी, घोड़े पर आदमी, हिरन कोठरी का आदिम अंकन होता है। इस चित्र की पूजा होती है। पूजा बैगा करता है। नये घड़े पर नया सूप रखकर रस्सी से बंधे धनुष को रखकर

महिलाओं द्वारा अजीब ध्वनि निकाली जाती है और इस ध्वनि के साथ महलिाएं गीत गाती हैं। बैगा नाचता है और उपस्थित लोग पूजा में सम्मिलित होते हैं।

भुंजिया

भुंजिया छत्तीसगढ़ी बोलते हैं, जिसमें हिन्दी के शब्द अधिक होते हैं। भुंजिया जनजाति के पारंपरिक गीत, कथाएं, गाथाएं, कहावतें छत्तीसगढ़ी बोली से प्रभावित है।

पुरुष धोती, कुरता बनियान और गमछा पहनते हैं। भुंजिया स्त्रियों केवल लुंगड़ा पहनती है। महिलाओं के वक्ष प्रायः खुले रहते हैं। भुंजिया लोग परंपरा से जमीन पर ही सोते हैं। खटिया अथवा पलंग पर सोना निषिद्ध है। भुंजिया कृषि पर निर्भर हैं। मुख्य भोजन चावल है। भुंजिया शराब पीते हैं। भुंजिया समाज में पुजेरी, पाती दीवान प्रमुख होते हैं। भुंजिया स्वभाव से ईमानदार होते हैं।

भुंजिया समूह में नेताम और मरकाम गोत्रों मे विवाह होते हैं। समगोत्री विवाह नहीं होते। बाण विवाह भुजिया लोगों का लोकप्रिय विवाह है जिसमें बाण को मौढ बांधकर विवाह कर लिया जाता है। प्रायः रजस्वला होने के पहले हर पिता अपनी लड़की का विवाह कर देना अपना कर्तव्य समझता है।

भुंजिया समूह में शव जमीन में गाडे जाते है। पुरुष दाडी मूंछ तथा सिर के बाल मुण्डवाते है। भुजिया जादू-टोना, झाड़-फूंक में अधिक विश्वास करते हैं। भुंजिया समाज कछुए को बहुत महत्व और सम्मान देता है। भुंजिया का विश्वास है कि कछुए की पीठ पर पृथ्वी टिकी है।

हलबा

हलबा छत्तीसगढ़ अचल की एक महत्वपूर्ण जनजाति है। हलबा जनजाति का मुख्य निवास दुर्ग, राजनांदगांव क्षेत्र में है। बस्तर में हलबा लोग कोंकर, भानुप्रतापपुर की ओर बसे है। हलबा पारपरिक रूप से किसान हैं, जिन्हें खेती किसानी की दक्षता विरासत में मिली है। इसलिए हलबा जनजाति की सपन्न किसानों मे गिनती की जाती है। हलबा अपने आपको स्वय महादेव पार्वती द्वारा बनाये गये मानते हैं।

हलबा गोत्र व्यवस्था से बधे हैं। एक ही गोत्र में विवाह प्रतिबधित है। विवाह रीति अनुसार करते हैं। विवाह निश्चित हो गया हो और घर में मृत्यु हो गई हो तो विवाह किसी 'महुआ' अथाव अचार वृक्ष के साथ करते है।

हलबा हलबी बोली बोलते है जो प्रायः समस्त छत्तीसगढ़ के बस्तर मे व्यापक रूप से बोली जाती है। हलबी बोली का हलबा जाति से आर्विभाव हुआ है। हलबा सामाजिक, सास्कृतिक रूप से सुदृढ़ जनजाति है। आर्थिक रूप से समृद्ध हलबाओं में शिक्षा का प्रतिशत अन्य जनजातियों से अधिक है। हल चलाने से हलबा संज्ञा का अभिज्ञान होता है।

आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा सुविधाएं

मध्यप्रदेश की स्थापना के वक्त (वर्ष 1956) पूरे प्रदेश में शिक्षा का दायित्व शिक्षा विभाग पर था। वर्ष 1964 से आदिम जाति कल्याण विभाग को आदिवासी क्षेत्रों की शालेय शिक्षा का दायित्व सौंपा गया। वर्तमान में प्रदेश के 174 विकास खंडों में आदिम जाति कल्याण विभाग स्कूल शिक्षा के प्रति उत्तरदायी है। प्रदेश में कुल 16 हजार 796 प्राथमिक शालाएं, 1921 कनिष्ठ प्राथमिक विद्यालय, 4 हजार 65 माध्यमिक शालाएं, 671 हाईस्कूल, 684 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय 25 खेल परिसर, 6 कन्या शिक्षा परिसर, 14 आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय और एक गुरुकुल विद्यालय का संचालन किया जा रहा है।

प्रदेश में पोस्ट मैट्रिक छात्रावासों की संख्या 76, प्री मैट्रिक छात्रावासों की संख्या 1664, आश्रम शालाओं की संख्या 782 है। वर्ष 1999-2000 में पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति का लाभ 59 हजार 271 विद्यार्थियों को मिला। इन विद्यार्थियों को नौ करोड़ 78 लाख 37 हजार रुपये की राशि प्रदान की गई। यह छात्रवृत्ति कक्षा ग्यारहवीं और बारहवीं के विद्यार्थियों को दी जाती है। इस वर्ष 80 हजार विद्यार्थियों को यह छात्रवृत्ति दी जाएगी। राज्य छात्रवृति का लाभ 10 लाख 35 हजार 593 विद्यार्थियों को 29 करोड़ 56 लाख 21 हजार रुपए का भुगतान कर किया गया। इस वर्ष राज्य छात्रवृत्ति का लाभ लगभग ग्यारह लाख विद्यार्थियों को देने का लक्ष्य है। छात्रावासों और आश्रमों में रहनेवाले लगभग एक लाख विद्यार्थि शिष्यवृत्ति, प्राप्त करते हैं, प्रदेश में गत वर्ष 49 हजार 563 विद्यार्थियों को 13 करोड़ 35 लाख रुपए की छात्रावास शिष्यवृत्ति दी गई है। इसी तरह 13 करोड़ 19 लाख रुपए की आश्रम शिष्यवृत्ति का भुगतान 48 हजार 452 विद्यार्थियों को किया गया। शिक्षा गारंटी योजना में भी प्रदेश के लगभग छह लाख आदिवासी विद्यार्थियों को प्राथमिक शिक्षा दी जा रही है। आदिम जाति कल्याण विभाग द्वारा संचालित विद्यालयों में शिक्षा सत्र 1999-2000 के परीक्षा परिणाम प्रदेश के औसत से अच्छे रहे हैं। हायर सेकेण्डरी परीक्षा में सफलता का प्रतिशत जहां राज्यस्तर पर 79.94 रहा वहीं आदिम जाति कल्याण विभाग की शालाओं का सफलता प्रतिशत 80 रहा। इसी तरह हाईस्कूल में राज्य स्तर सफलता प्रतिशत/44.26 की तुलना में आदिम जाति कल्याण विभाग की शालाओं का स्तर (सफलता प्रतिशत) 44.90 रहा। आदिवासी बहुल क्षेत्रों में शिक्षा के विकास में स्वैच्छिक संस्थाओं का सहयोग भी लिया जा रहा है। गत वर्ष 72 अशासकीय संस्थाओं को शैक्षिणिक गतिविधियों के लिए 1342 लाख रुपए का अनुदान दिया गया। प्रदेश में 16 औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाएं आदिवासी युवाओं को तकनीकी क्षेत्रों में प्रशिक्षण दे रही हैं। भोपाल में इस वर्ष इंडो-जर्मन सहयोग से संचालित क्रिस्प संस्था द्वारा चयनितर 25 आदिवासी छात्र-छात्राओं को विशेष कंप्यूटर प्रशिक्षण भी दिया गया।

माह जून 2000 से प्रदेश में प्रमुख आदिवासी बोलियों में मासिक बुलेटिन का प्रकाशन भी शुरू किया गया है।

उच्च–शिक्षा

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में यथोचित विस्तार तथा गुणात्मक विकास के लिए मध्य प्रदेश शासन दृढ़ संकल्प है। उच्च शिक्षा से तात्पर्य महाविद्यालयीन शिक्षा (चिकित्सा, पशु चिकित्सा, इंजीनियरिंग तथा कृषि महाविद्यालयों को छोड़कर) से है।

2. उच्च शिक्षा विभाग में म.प्र. विश्वविद्यालय अधिनियम, 1973 के अंतर्गत 09 विश्वविद्यालय, (जबलपुर, सागर, भोपाल, ग्वालियर, रायपुर, रीवा, इन्दौर, उज्जैन, बिलासपुर) 415 शासकीय महाविद्यालय, 91 अनुदान प्राप्त अशासकीय महाविद्यालय, 240 अनुदान अप्राप्त अशासकीय महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित तीन महाविद्यालय कार्यरत हैं। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित विशिष्ट विश्वविद्यालय/विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त संस्थान हैः–

विश्वविद्यालय/संस्था का नाम	स्थापना	स्थापना का उद्देश्य
मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल	1992	दूरस्थ शिक्षा पद्धति के संवर्धन हेतु
महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट	1991	राज्य के ग्रामीण जीवन के विकास संबंधी शिक्षा और अनुसंधान की व्यवस्था एवं विस्तार।
राष्ट्रीय विधि संस्थान विश्वविद्यालय, भोपाल	1997	विधि शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए विधि के पांच वर्षीय पाठ्यक्रम की व्यवस्था।
इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (फरवरी, 98 से उच्च शिक्षा विभाग के आधीन)	1956	संगीत शिक्षा का प्रोत्साहन एवं संवर्धन।
उच्च शिक्षा, उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल	1994	प्रतिभावान छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए उच्च शिक्षा की उत्कृष्ट व्यवस्था को सुनिश्चित करना।

3. प्रदेश के समस्त महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र संख्या की जानकारी निम्नानुसार हैः

छात्र संख्या विश्लेषण 1999–2000

	संवर्ग	छात्र	छात्राएं	योग
(क)	स्नातक स्तरीय छात्रसंख्या	1,65,274	95,892	2,61,166
	स्नातकोत्तर छात्र संख्या	20,801	20,307	41,108
	योग	1,86,075	1,16,199	3,02,274
(ख)	सामान्य	87,971	71,434	1 59,405
	अनुसूचित जाति	23,817	9,972	33,789
	अनुसूचित जनजाति	18,324	7,120	25,444
	अन्य पिछड़ा वर्ग	55,963	27,673	83,636
	योग	1,86,075	1,16,199	3,02,274

4. हिन्दी में विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम के लिए स्तरीय प्रामाणिक पुस्तकें प्रकाशित करने तथा पाठ्य एवं संदर्भ सामग्री उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी की स्थापना 1969 में की गई थी। अकादमी द्वारा अब तक लगभग 27 विभिन्न विषयों में लगभग 1250 पुस्तकें प्रकाशित की गई है।

5. विभाग द्वारा संचालित कुछ प्रमुख योजनाएं: (1) जन–भागीदारी योजना–राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत महाविद्यालयों के प्रबंधन में जनभागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सत्र 1996–97 से जनभागीदारी योजना प्रारंभ की गई। जिसके अंतर्गत महाविद्यालयों में जनप्रतिनिधि की अध्यक्षता में समिति का गठन किया जाता है। समिति के माध्यम से संसाधन एकत्रित कर उनका उपयोग महाविद्यालयों में विकास कार्य के लिए किया जाता है। (2) राष्ट्रीय सेवा योजना. वर्ष 1969 से प्रारंभ इस योजना के माध्यम से प्रदेश में विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना और दायित्व बोध के साथ–साथ अनुशासन की भावना का विकास तथा श्रम के प्रति आदर भाव पैदा किया जाता है। (3) महाविद्यालयों में स्वशासी योजना – विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मार्गदर्शी सिद्धान्तों के अनुरूप प्रदेश के 34 शासकीय एवं 07 अशासकीय महाविद्यालय स्वशासी योजना के [illegible] कार्यरत है। (4) निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था एवं पुस्तक [illegible] का प्रदान–महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए [illegible] छात्राओं को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। [illegible] व जनजाति के छात्र/छात्राओं को निःशुल्क [illegible] प्रदान की जाती है।

इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों के [illegible] विकास के लिए खेलकूद [illegible] सांस्कृतिक प्रतिभा को उभारने [illegible] जिला, संभाग एवं राज्य स्तर [illegible] का आयोजन प्रतिवर्ष [illegible]

मध्यप्रदेश में सूचना तकनीक

मध्यप्रदेश सरकार की सूचना प्रौद्योगिकी नीति की मुख्य बातें इस प्रकार हैं: • सरकार सभी नागरिकों की क्षमता को ध्यान में रखकर सूचनाओं तक उनकी पहुंच बढ़ाएगी। इस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए 2003 तक सभी हाईस्कूलों और कालेजों में तथा 2008 तक सभी विद्यालयों में सूचना तकनीक की पढ़ाई की कारगर व्यवस्था की जाएगी। • आनेवाले आठ वर्षों के भीतर मध्यप्रदेश में सूचना तकनीक के माध्यम से चार लाख से लेकर दस लाख लोगों के लिए रोजगार के अवसर मिलेंगे। • 2008 तक हर सौ लोगों के बीच एक इंटरनेट और प्रत्येक वेबसाइट तक सूचना तकनीक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। यह व्यवस्था सिर्फ शहरों में ही नहीं, गांवों तक फैलेगी। • अगले तीन सालों में जिला सरकार, जिला पंचायतें, कलेक्टर कार्यालय और दूसरे बड़े कार्यालय आपस में सूचना के लेनदेन के लिए अपनी कार्य प्रणाली स्थापित कर लेंगे। • खासतौर पर प्रदेश की मण्डियों में जिन्सों की आवक और भावों के उतार–चढ़ाव की जानकारी के लिए कृषि बाजार सूचना प्रणाली की रूपरेखा तैयार की जा रही है। • प्रदेश की 31126 ग्राम पंचायतों तक कंप्यूटर की पहुंच बढ़ाने के लिए सरकार की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत आर्थिक सहायता दी जाएगी। इस सहायता से शिक्षित युवा बेरोजगार और पंचायतों के सेवक गांवों में कंप्यूटर इकाई स्थापित कर सकेंगे। गांव के लोग थोडा–सा मूल्य चुकाकर इस सूचना गुमटी से अपने लिए जरूरी जानकारी हासिल कर सकेंगे। • 2003 तक जिला सरकारों और जिलों में जमीनी स्तर के कार्यालयों के अभिलेखों को कंप्यूटर के जरिए उपलब्ध करने की कार्ययोजना तैयार की जाएगी। खासतौर पर तहसील कार्यालयो मे यह व्यवस्था की जाएगी जिससे कि भू–अभिलेख, राजस्व कानून, लगान, उपकर की वसूली, भू–अर्जन, राहत कार्य और राजस्व न्यायालय से जुड़े मामलों की सूचीबद्ध जानकारी रखी जा सके। इससे गांव वालों के कामों में आनेवाली रुकावटें दूर होगी। यह व्यवस्था हो जाने से जिला सरकारों और

तकनीकी शिक्षा

वर्तमान में राज्य में एक क्षेत्रीय (रीजनल) इंजीनियरिंग महाविद्यालय आठ शासन द्वारा स्वायत्त घोषित इंजीनियरिंग महावधियालय, तीन अनुदान प्राप्त आशासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय एवं निजी क्षेत्र के 29 इंजीनियरिंग महाविद्यालय को मिलाकर कुल 41 इंजीनियरिंग महाविद्यालय, 5 आर्किटेक्चर संस्थायें, 25 मैनेजमेंट संस्थान 28 एम.सी.ए. पाठ्यक्रम संचालित करनेवाले संस्थान, दो होटल मैनेजमेंट संस्थान, 51 पोलीटेक्निक तथा एक उच्चतर माध्यमिक तकनीकी विद्यालय है। विगत सात वर्षों के इंजीनियरिंग महाविद्यालयों की संख्या भी बढ़कर 41 हो गई है।

राज्य शासन द्वारा तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार एवं शिक्षा–दीक्षा के कार्यकलापों में एकरूपता के ध्येय से राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने अपना कार्य शुरु कर दिया है। विश्वविद्यालय से प्रदेश के सभी पोलीटेक्निकों एवं इंजीनियरिंग महाविद्यालयों को संबद्ध किया गया है। इसके फलस्वरूप अब विश्वविद्यालय प्रदेश के सभी पोलीटेकनिकों एंव इंजीनियरिंग महाविद्यालयों की विभिन्न स्तरों की परीक्षायें आयोजित करेगा।

प्रदेश में संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों की अवधि एवं उनकी प्रवेश क्षमता निम्नानुसार हैं:–

पाठ्यक्रम	पाठ्यक्रम की अवधि	प्रवेश क्षमता (संख्या)
1. इंजिनियरिंग में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम	11/2वर्ष	295
2. व्यावहारिक गणित/भौतिक शास्त्र/भू–विज्ञान में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम	2 वर्ष	152
3. प्रबंधन शिक्षा के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम	2 वर्ष	1570
4. कंप्यूटर एप्लीकेशन में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम	3 वर्ष	1400
5. इंजीनियरिंग में स्नातक पाठ्यक्रम (आर्किटेक्चर एवं फार्मेसी सहित)	4 वर्ष	8421
6. इंजीनियरिंग में पोस्ट–डिप्लोमा पाठ्यक्रम (कंप्यूटर एप्लीकेशन सहित	11/2वर्ष	122
7. इंजीनियरिंग में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (आर्किटेक्चर, फार्मेसी, मार्डन आफिस मैनेजमेंट एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों सहित)	3 वर्ष	....
8. उच्चतर माध्यमिक तकनीकी प्रबंधन (पाठ्यक्रम (कक्षा 11 एवं 12)	2 वर्ष	80

शासन की सूचना प्रौद्योगिकी नीति के अनुरूप विभाग ने सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षा के विकास प्रचार एवं प्रचार के कारगर कदम उठायें हैं, जिसके अंतर्गत सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित विषयों, जैसे कि इलेक्ट्रिकल, कंप्यूटर इंजीनियरिंग, एम.सी.ए. तथा इनफारमेशन टेक्नालोजी के स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के स्तर के पाठ्यक्रमों की 2100 सीटों की वृद्धि की गई है। इसी प्रकार से डिप्लोमा स्तर के पाठ्यक्रमों की 300 सीटें बढ़ाई गई है। इस प्रकार अब सूचना प्रौद्योगिकी और उससे संबंद्ध विषयों में कुल स्थान उपलब्ध हैं। कुल लगभग दस हजार स्थान प्रौद्योगिकी विषयों में हैं।

कुमार गंधर्व सम्मान, 1999-2000,(51,000-रुपये): सुश्री ई. गायत्री।

शरद जोशी सम्मान, 1999-2000(51,000/-रुपये): श्री कृष्णकुमार।

शिखर सम्मान (मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग-31हजार रुपये) 1999-2000: साहित्य: इकबाल मजीद। रुपंकर कलाएं: दवाहिय खत्री। प्रदर्शनकारी कलाएं: प्रभाकर चिंचोरे।

सामान्य जानकारी मध्यप्रदेश

कुल आवादी	(1951):	26,071,637
	(1961):	32,372,408
	(1971):	41,654,119
	(1981):	52,178,844
	(1991):	66,181,170
ग्रामीण	योग	5.08
	पुरुष	2.61
	महिला	2.47
शहरी	योग	1.53
	पुरुष	0.81
	महिला	0,72
अनुसूचित जाति		0.96
अनुसूचित जनजाति		1.54
जनसंख्या वृद्धिदर (1981-91) योग		26.75
	पुरुष	22.11
	महिला	44.98
साक्षरता दर	योग	43.45
	पुरुष	57.43
	महिला	28.39
अनुसूचित जाति	योग	37.41
	पुरुष	49.91
	महिला	23.76

अनुसूचित जनजाति योग		29.6
	पुरुष	40.65
	महिला	18.19
1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या योग		932
	ग्रामीण	944
	शहरी	893
क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर)		443446
उपयोजन क्षेत्र (वर्ग किलोमीटर)		177132
संभाग राजस्व		12
जिला राजस्व		61
शिक्षा जिले		65
शहर-कस्बे		465
नगर निगम		17
नगर पालिका		357
अधिसूचित क्षेत्र		8
छावनी		5
जनगणना कस्बे		78
विकाश खंड		459
आदिवासी विकास खंड		174
विधानसभा सीटें		320
लोकसभा सीटें		40
जनसंख्या का घनत्व		149
शहरी आवादी प्रतिशत		23.21

शिक्षण संस्थाएं और दर्ज संख्या:1999-2000

क्रम	संस्थाएं	संख्या	संस्थाओं में दर्ज विद्यार्थियों की संख्या		
			लड़के	लड़कियां	कुल
1.	उच्चतर माध्यमिक स्कूल	4692	1248633	671853	1920488
2.	हाई स्कूल	4585	634259	400906	1035165
3.	माध्यमिक स्कूल	23340	2368613	1441590	3810203
4.	प्राथमिक स्कूल	91733	5845668	4501689	10347357
5.	पूर्व प्राथमिक स्कूरल	1917	84061	65585	149646
	महायोग	126267	10181234	7081623	17262857

शिक्षक 1999-2000

क्रम	संस्था	शिक्षक			प्रशिक्षित शिक्षक	शिक्षक विद्यार्थी
		पुरुष	महिला	योग	प्रतिशत	अनुपात
1.	उच्चतर माध्यमिक स्कूल	47375	20383	67758	76	1:28
2.	हाई स्कूल	21053	8635	29688	68	1:35

3.	माध्यमिक स्कूल	77532	33311	110843	67	1:34
4.	प्राथमिक स्कूल	169163	66655	235818	66	1:44
5.	पूर्व प्राथमिक स्कूल	1477	2119	3596	60	1:42
	महायोग	**316600**	**131103**	**447703**	**67**	**1:39**

कक्षा के अनुसार दर्ज संख्या:1999–2000

कक्षा	कुल दर्ज संख्या		
	लड़के	लड़कियां	योग
पूर्व प्राथमिक	89202	66445	155647
1	1578967	1253070	2832037
2	1374180	1108194	2482374
3	1280821	1011436	2292257
4	1117247	847466	1964713
5	1107957	776597	1884554
योग(1–5)	**6459172**	**4996763**	**11455935**
6	855709	511129	1366838
7	691514	419701	1111215
8	711905	410263	1122168
योग (6–8)	**2259128**	**1341093**	**3600221**
9	430676	212935	643611
10	431038	206771	637809
योग (9–10)	**861714**	**419706**	**1281420**
11	259829	132490	392319
12	252189	125126	377315
योग(11–12)	**512018**	**257616**	**769634**
महायोग	**10181234**	**7081623**	**17262857**

कक्षा के अनुसार दर्ज संख्या–अनुसूचित जाति: 1999–2000

कक्षा	अनुसूचित जाति की दर्ज संख्या		
	लड़के	लड़कियां	योग
पूर्व प्राथमिक	9051	6840	15891
1	261319	200189	461508
2	213049	171396	384445
3	210784	164645	375429
4	188258	136447	324705
5	184204	126759	310963
योग(1–5)	**1057614**	**799436**	**1857050**
6	138186	77071	215257
7	110579	58923	169502
8	113224	55419	168643
योग (6–8)	**361989**	**191413**	**553402**
9	57872	24879	82751
10	58425	22697	81122
योग (9–10)	**116297**	**47576**	**163873**
11	31930	13050	44980
12	30334	11731	[illegible]
योग(11–12)	**62264**	**24781**	[illegible]
महायोग	**1598166**	**1063209**	

कक्षा के अनुसार दर्ज संख्या–अनुसूचित जनजाति: 1999–2000

कक्षा	कुल दर्ज संख्या		
	लड़के	लड़कियां	योग
पूर्व प्राथमिक	6899	4927	11826
1	367959	295555	663514
2	313608	240537	554145
3	279958	209838	489796
4	219409	159587	378996
5	190118	135689	325807
योग(1–5)	1371052	1041206	2412258
6	132518	76164	208682
7	108954	59599	168553
8	102048	55778	157826
योग (6–8)	343520	191541	535061
9	54832	25640	80472
10	51716	23906	75622
योग (9–10)	106548	49546	156094
11	29615	13604	43219
12	27276	11312	38588
योग(11–12)	56891	24916	81807
महायोग	1884910	1312136	3197046

दिशात्मक परिवर्तन के नए प्रयोग

सामाजिक–आर्थिक विकास की समस्याएं कोई नई नहीं हैं। विकास के प्रयासों से सफलताएं भी हाथ लगीं लेकिन इनसे अनेक कठिनाइयां और विषमताएं भी उपजी हैं। प्रजातांत्रिक सरकार के बावजूद राज्य नियंत्रणवाद हावी होता चला गया, शासकीय तंत्र आकार में बढ़ता गया और उद्देश्यों की पूर्ति का जरिया न बनकर अपने आप में लक्ष्य बन गया, आम आदमी छोटी से छोटी समस्या के लिए जरूरत पड़ने लगी। इन परिस्थितियों में समस्याओं का वास्तविक निदान संभव नहीं था।

वास्तविक विकास के लिए जरूरी थी एक नई सोच, दृढ़ इच्छा शक्ति और राजनैतिक खतरे उठाने की क्षमता। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने जनता को अधिकार संपन्न बनाने, विकास कार्यों का नियंत्रण समुदाय को सौंपने, लोगों को स्वयं अपनी समस्याएं से निपटने के लिए प्रेरित करने और राज्य को प्रोत्साहक की भूमिका में सीमित करने के लिए बुनियादी परिवर्तन किये हैं। विभिन्न क्षेत्रों में किये गए प्रयासों से मिली सफलताओं ने आम आदमी को राहत दी है, प्रदेश में प्रजातांत्रिक मूल्यों को गहरा किया है और सबसे पिछड़े व्यक्तियों के कल्याण के लिए नए विकल्प प्रस्तुत किये हैं। इन विकल्पों में से अनेक विभिन्न राज्यों द्वारा अपनाएं भी गए हैं।

पंचायत राज और नगरीय स्वशासन: मध्यप्रदेश में संवैधानिक व्यवस्था के तहत पिछले सात वर्षों में पंचायतों और नगरीय संस्थाओं के दो बार चुनाव संपन्न कराए जा चुके हैं। मध्यप्रदेश में ग्राम सभा को पंचायत राज व्यवस्था में सर्वोच्च स्थान दिया गया है। जनता को सरपंच और नगरीय निकायों के महापौर, अध्यक्ष को वापिस बुलाने के अधिकार (राइट टू रिकाल) देने के अलावा पांचवी अनुसूची में शामिल आदिवासी क्षेत्रों में भी पंचायत राज लागू किया गया है। आगामी गणतंत्र दिवस से ग्राम राज की व्यवस्था कायम करने के लिए तैयारी की जा रहा है। पंचायत राज और नगरीय स्वशासन ने महिलाओं, दलितों, आदिवासियों और पिछड़े वर्ग के लोगों को बड़ी संख्या में सार्वजनिक जीवन में प्रवेश का अवसर दिया है। आज करीब एक लाख 70 हजार महिलाएं जनप्रतिनिध के रूप में अपने गांवों, मुहल्लों, शहरों और कस्बों का नेतृत्व कर रही हैं। इतनी अधिक संख्या में महिलाओं द्वारा जिम्मेदारी संभालना व्यवस्था के आमूल–चूल बदलाव का सूचक है।

प्रदेश में पंचायतों को शिक्षा, स्वास्थय, ग्रामीण विकास, सामाजिक सुरक्षा पेंशन, राजस्व के अविवादित नामान्तरण और बंटवारे के अधिकार दिये गये हैं। विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के हितग्राहियों का चयन ग्राम सभा करती है। इसी प्रकार गरीबों की सूची भी ग्राम सभा के अनुमोदन से ही स्वीकार्य होती है। इनसे कल्याणकारी कार्यक्रमों में पारदर्शिता और जवाबदेही संभव हुई है।

जिला सरकार: शासन के शीर्ष स्तर पर केन्द्रित अधिकारों को जिला स्तर पर अंतरित करने का सफल प्रयोग जिला सरकार के जरिये संपन्न किया गया है। जिला योजना समिति को विभागाध्यक्ष, मंत्रालय और संभाग स्तर के विभिन्न विभागों के अधिकार प्रत्यायोजित कर फैसले करने की गति को तेज किया गया है। साथ ही स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप निर्णय संभव हुए हैं। इसने स्थानीय प्रशासन की बेहतर जवाबदेही भी सुनिश्चित की है। मंत्रालय में आंगुतकों की घटती संख्या जिला सरकार की सफलता का परिचायक है। जिला सरकारों को पंचायतराज संस्थाओं और नगरीय निकायों के अधिकार नहीं सौंपे गये हैं।

पिछले बीस माह में जिला सरकारों ने अनेक ऐसे फैसले किए जिन्हें मंत्रालय स्तर परं करने में बहुत देरी होती तथा वे शायद स्थानीय जरूरतों के अनुरूप न होते। फर्जी अनुदान प्राप्त कर रही संस्थाओं की पहचान जिला सरकार की प्रमुख उपलब्धि है। इसके अलावा तालाब योजना, धार जिले में ज्ञानदूत परियोजना, दुर्ग संवर्धन मिशन, शहडोल जिले में अपना तालाब योजना, धार जिले में ज्ञानदूत परियोजना, दुर्ग जिले में दीदी बैंक जैसे अनेक अभिनव कार्यक्रम जिला स्तर पर निर्णय लेने के अधिकार परियोजना, दुर्ग जिले में दीदी बैंक जैसे अनेक अभिनव कार्यक्रम जिला स्तर पर निर्णय लेने के अधिकार विकेन्द्रित करने से प्रारंभ हो सके।

अगले वर्ष से मध्यप्रदेश में जिलों की आयोजनाओं का निर्माण किया जाएगा। इनके आधार पर राज्य आयोजना को अंतिम रूप दिया जाएगा। जिला सरकार एक ऐसा संस्थागत साधन है जिससे राज्य सरकार बहुध्रुवीय रूप से कार्य करती है। इससे निर्णय लेने की प्रक्रिया में स्थानीय परिस्थितियों का विशेष ध्यान रख पाना संभव होता है।

राजीव गांधी मिशन: विकास के प्राथमिकता के मुद्दों को एक निश्चित समय में पूरा करने के लिए मिशन प्रणाली अपनाई गई है। राजीव गांधी शिक्षा मिशन ने शिक्षा गारंटी योजना के मार्फत पूरे प्रदेश में प्राथमिक शिक्षा का लोकव्यापीकरण करने में सफलता हासिल की है। समुदाय की मांग और सहायता से 26 हजार शिक्षा गारंटी स्कूल स्थापित किए गए है। अब प्रदेश की हर बसाहट में प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध है। इन स्कूलों में 12 लाख बच्चे पढ़ रहे हैं। फंड–ए–स्कूल कार्यक्रम समुदाय से समुदाय की भागीदारी शिक्षा के लिए हासिल करने का प्रयास है। डब्ल्यू डब्ल्यू डब्लूयू डाट फंटएस्कूल डाट ओआरजी बेबसाइट से कोई भी व्यक्ति 16 हजार रूपए की सहायता आनलाइन अपनी पसंद के शिक्षा गारंटी स्कूल को दे सकता है। मध्यप्रदेश आठवीं कक्षा तक की शिक्षा को मिशनी जामा पहनाने वाला पहला राज्य है। प्रदेश में प्रत्येक बसाहट से तीन किलोमीटर दूरी के अंदर मिडल स्कूल को दे सकता है। मध्यप्रदेश आठवीं कक्षा तक की शिक्षा को मिशनी जामा पहनाने वाला पहला राज्य है। प्रदेश में प्रत्येक बसाहट से तीन किलोमीटर दूरी के अंदर मिडल स्कूल प्रारंभ करने का कार्यक्रम बनाया गया है। इसी तारतम्य में चालू वर्ष में 3500 मिडल स्कूल प्रारंभ किए जा रहे हैं। शिक्षा मिशन के तहत साक्षरता का कार्यक्रम पढ़ना बढ़ना आंदोलन चलाया जा रहा है। इसका उद्देश्य प्रदेश में इस वर्ष के अंत तक साक्षरता का स्तर 70 प्रतिशत तक पहुंचाना है। करीब दो लाख पढ़ना–बढ़ना समितियों में लाखों निरक्षर लिखना–पढ़ना सीख रहे हैं।

रोजगार, पर्यावरण संरक्षण, मिट्टी और पानी के संरक्षण और गरीबों को शक्ति संपन्न बनाने का एक अनूठा कार्यक्रम राजीव गांधी मिशन जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन कारगर तरीके से लागू किया जा रहा है। इसमें 36 लाख हेक्टेयर में जलग्रहण क्षेत्र के विकास के कार्य किए जा रहे हैं। पन्द्रह लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उपचार कार्य पूरे किए जा चुके हैं। 4680 गांवों को जल सुनिश्चित हुई है। प्रदेश के 8318 गांवों में संचालित इस कार्यक्रम को गांव स्तरीय जलग्रहण समितियां क्रियान्वित करती है। ग्राम और नगर संपर्क अभियान:– प्रतिवर्ष ग्राम संपर्क और नगर संपर्क अभियान अलग–अलग संचालित किए जाते हैं। इनके दौरान प्रत्येक गांव और मोहल्ले में शासकीय अधिकारी के नेतृत्व में दल पहुंचता है। नागरिकों से सीधे चर्चा कर विकास योजनाओं और कार्यक्रमों का आकलन किया जाता है। इस दौरान लोगों की समस्याओं और शिकायतों को जानना, ग्रमीण संसाधनों की जानकारी का संकलन और लोगों को शासकीय कार्यक्रमों की जानकारी दी जाती है। ग्रामसंपर्क अभियान के दौरान मुख्यमंत्री 40–45 गांवों में अचानक पहुंचकर सीधे ग्रामीणों से चर्चा करते हैं।

सिटीजन चार्टर और सूचना का अधिकार: शासकीय कामकाज में पारदर्शिता लाने और नागरिकों के कार्यों का समयबद्ध तरीके से संपादन करने के उद्देश्य से सूचना का अधिकार और सिटीजन चार्टर व्यवस्था लागू की गई है। सूचना के अधिकार के तहत विभिन्न कार्यालयों से कोई भी व्यक्ति शासकीय दस्तावेजों की प्रति प्राप्त कर सकता है अथवा उनका अवलोकन कर सकता है। इसी प्रकार अलग–अलग विभागों के सिटीजन चार्टर में विभिन्न नागरिक सेवाओं को प्राप्त करने का तरीका, समय–सीमा और जिम्मेदार अधिकारियों की जानकारी सार्वजनिक की गई है।

संयुक्त वन प्रबंधन: संयुक्त वन प्रबंधन के तहत बिगड़े वन क्षेत्रों को सुधारने और घने वन क्षेत्रों की सुरक्षा स्थानीय ग्रामवासियों के सहयोग से करने के अच्छे नतीजे मिले हैं। प्रदेश की लगभग 60 हजार हेक्टेयर वन क्षेत्र की जिम्मेदारी का निर्वहन 12 हजार ग्राम वन समितियों और वन सुरक्षा समितियां कर रही। इन समितियों द्वारा संरक्षित और विकसित वन क्षेत्र की उपज में से इनके स्वयं के उपयोग के लिए हिस्सेदारी दी गई है। प्रदेश में समस्त गैर काष्ठीय वन उत्पादों का संग्रहण वनवासियों की सहकारी समितियों के जरिए किया जा रहा है। इनके विक्रय से प्राप्त समस्त आय समितियों के जरिए किया जा रहा है। इनके विक्रय से प्राप्त समस्त आय समितियों को दी जाती है। शासन ने लोक संरक्षित क्षेत्र का एक नया कार्यक्रम प्रारंभ किया है। तेंदुपत्ता बिक्री से हुई आय का एक भाग इस कार्यक्रम में निवेशित किया जाएगा।

रोगी कल्याण समिति: समस्त शासकीय अस्पतालों और स्वास्थ्य संस्थाओं में सुविधाओं का विस्तार करने के लिए प्रत्येक संस्था स्तर पर रोगी कल्याण समिति गठित की गई है। ये समितियां अस्पतालों में उपलब्ध सेवाओं पर नाममात्र का शुल्क लगाकर, जनसामान्य से दान प्राप्त कर और अस्पताल परिसर की रिक्त भूमि का व्यवसायिक उपयोग कर वित्तीय संसाधन

जुटाती हैं। इन संसाधनों का इस्तेमाल मेडीकल उपकरण, दवाइयां, फर्नीचर खरीदने और अस्पताल भवनों के रख रखाव और विस्तार में किया गया है। लगभग 37 करोड़ रुपए की राशि रोगी कल्याण समितियों ने एकत्र की है।

मध्यप्रदेश में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग आम आदमी के हित में करने के लिए सुविचारित प्रयास किए जा रहे हैं। ई-शासन स्थापित करने की दिशा में प्रदेश आगे बढ़ रहा है। इसके अलावा पूरे प्रदेश में सूचना गुमठियों की स्थापना की जाएगी जहां से कोई भी नागरिक अपने आवेदन प्रेषित कर सकेगा या उपयोगी जानकारियां प्राप्त कर सकेगा। इस प्रकार की 30 गुमटियां धार जिले में ज्ञानदूत परियोजना के तहत स्थापित भी हो चुकी है। सूचना प्रौद्योगिकी में रोजगार की व्यापक संभावनाओं के मद्देनजर, प्रदेश में विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ किए गए हैं। इन सब गतिविधियों में निजी क्षेत्र की भूमिका को प्रोत्साहित किया गया है। सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग सूचना के अभाव से उत्पन्न विषमताओं को दूर करने में किया जा सके, ऐसे प्रयास मध्यप्रदेश में किए जा रहे हैं।

मध्यप्रदेश में दिग्विजय सिंह के नेतृत्व में पिछले सात सालों में की गई बहु-आयामी कोशिशों की एक ही दिशा रही है। यह दिशा है जनसामान्य को शासकीय विकास कार्यक्रमों में भागीदार बना उन्हें बेहतर और कारगर बनाने की। प्रदेश को सफलता मिली है विकास का एक क्रियाशील जन भागीदारी आधारित मोडल तैयार करने में। जनता से जुडे मुद्दों पर कार्यवाही अब अफसरशाही की मनमर्जी से नहीं बल्कि समुदाय की जरुरतों के अनुसार होती है। यह विकास में दिशात्मक परिवर्तन का संकेत है।

मध्य प्रदेश विधानसभा सदस्यों का सूची

निर्वाचन क्षेत्र का नाम	सदस्य	दल
श्योपुर		
श्योपुर	बृजराज सिंह चौहान	निर्दलीय
विजयपुर	बाबूलाल मेवरा	भा.ज.पा.
मुरैना		
सबलगढ़	बूंदीलाल रावत	ब.स.पा.
जौरा	सोनेराम कुशवाह	ब.स.पा.
सुमावली	ऐदलसिंह कंसाना	ब.स.पा
मुरैना	सेवाराम गुप्ता	भा.ज.पा.
दिमनी (अ.जा)	मुंशीलाल	भा.ज.पा.
अम्बाह (अ.जा)	बंशीलाल जाटव	भा.ज.पा.
भिण्ड		
गोहद (अ.जा)	लालसिंह आर्य	भा.ज.पा.
मेहगांव	राकेश शुक्ला	भा.ज.पा.
अटेर	मुन्ना सिंह भदौरिया	भा.ज.पा.
भिण्ड	राकेश सिंह	भा.रा.कां.
रौन	रसाल सिंह	स.पा.
लहार	गोविन्द सिंह	भा.रा.कां.
ग्वालियर		
ग्वालियर	नरेन्द्र सिंह तोमर	भा.ज.पा.
लश्कर पूर्व	रमेश अग्रवाल	भा.रा.कां.
लश्कर पश्चिम	अनूप मिश्रा	भा.ज.पा.
मुरार	ध्यानेन्द्र सिंह	भा.ज.पा.
गिर्द	लाखनसिंह यादव	ब.स.पा
डबरा	नरोत्तम मिश्रा	भा.ज.पा.
दतिया		
भाण्डेर (अ.जा.)	फूलसिंह बरैया	ब.स.पा.
सेवढ़ा (अ.जा.)	महेन्द्र बौद्ध	भा.रा.कां.
दतिया	राजेन्द्र भारती	स.पा.
शिवपुरी		
करैरा	रणवीर सिंह रावत	भा.ज.पा.
पोहरी	नरेन्द्र बिरथरे	भा.ज.पा.
शिवपुरी	यशोधरा राजे सिंधिया	भा.ज.पा.
पिछोर	के.पी. सिंह 'कक्का जू'	भा.रा.कां.
कोलारस (अ.जा.)	पूरन सिंह बेड़िया	भा.रा.कां.
गुना		
गुना	कैलाश नारायण शर्मा	भा.रा.कां.
चाचौड़ा	शिवनारायण मीना	भा.रा.कां.
राघोगढ़	दिग्विजय सिंह	भा.रा.कां.
शाडोरा (अ.जा.)	गोपीलाल जाटव	भा.ज.पा.
अशोकनगर	बलवीर सिंह कुशवाह	ब.स.पा.
मुंगावली	राव देशराज सिंह यादव	भा.ज.पा.
सागर		
बीना	सुधाकर राव बापट	भा.ज.पा.
खुरई	धरमू राय	भा.ज.पा.
बण्डा	हरनाम सिंह राठौर	भा.ज.पा.
नरयावली	सुरेन्द चौधरी	भा.रा.कां.
सागर	सुधा जैन	भा.ज.पा.
सुरखी	भूपेन्द्र सिंह	भा.ज.पा.
रहेली	गोपाल भार्गव	भा.ज.पा.
देवरी	बृजबिहारी पटैरिया	भा.रा.कां.
टीकमगढ़		
निवाड़ी	बृजेन्द्रसिंह राठौर	निर्दलीय
जतारा	सुनील नायक	भा.ज.पा.
खरगापुर (अ.जा.)	अहिरवार पर्वतलाल	भा.ज.पा.
टीकमगढ़	मगनलाल गोइल	भा.ज.पा.
छतरपुर		
मलेहरा	स्वामी प्रसाद	भा.ज.पा.
बिजावर	मानवेन्द्र सिंह	भा.रा.कां.
छतरपुर	उमेश शुक्ला	भा.ज.पा.

महाराजपुर(अ.जा.)	रामदायल अहिरवार	भा.ज.पा.
चन्दला	कुंवर विजयबहादुर सिंह बुन्देला	स.पा.

दमोह

नोहटा	रत्नेश सोलोमन	भा.रा.कां.
दमोह	जयंत कुमार मलैया	भा.ज.पा.
पथरिया (अ.जा.)	गनेश राम खटीक	भा.ज.पा.
हटा	राजा पटैरिया	भा.रा.कां.

पन्ना

पन्ना	कुसुम सिंह मेहदेले	भा.ज.पा.
अमानगंज(अ.जा.)	गोरेलाल आहिरवार	भा.ज.पा.
पवई	अशोक वीर विक्रम सिंह	स.पा.

सतना

मैहर	वृन्दावन बड़गइयां	भा.रा.कां.
नागौद	रामप्रताप सिंह	निर्दलीय
रैगांव (अ.जा.)	जुगुल किशोर बागरी	भा.ज.पा.
चित्रकूट	प्रेमसिंह	भा.रा.कां.
सतना	सईद अहमद	भा.रा.कां.
रामपुर बघेलान	प्रभाकर सिंह	भा.ज.पा.
अमरपाटन	शिवमोहन सिंह	भा.रा.कां.

रीवा

रीवा	पुष्पराज सिंह	निर्दलीय
गुढ़	विद्यावती पटेल	ब.स.पा.
मनगवां	श्रीनिवास तिवारी	भा.रा.कां.
सिरमौर	राजमणि पटेल	भा.रा.कां.
त्योंथर	रमाकांत तिवारी	भा.ज.पा.
देवतालाब (अ.जा)	पन्चूलाल प्रजापति	भा.ज.पा.
मऊगंज	आई.एम.पी.वर्मा	ब.स.पा.

सीधी

चुरहट	अजय सिंह 'राहुल'	भा.रा.कां.
सीधी	इन्द्रजीत कुमार पटेल	भा.रा.कां.
गोपदबनास	केदार नाथ शुक्ल	भा.ज.पा.
धौहनी(अ.ज.जा.)	पंजाब सिंह	भा.रा.कां.
देवसर(अ.ज.जा.)	मानिक सिंह	भा.रा.कां.
सिंगरौली	रामचरित्र	भा.ज.पा.

शहडोल

ब्यौहारी	लवकेश सिंह	भा.ज.पा.
जयसिंह नगर (अ.ज.जा)	राम प्रसाद सिंह	भा.रा.कां.
कोतमा (अ.ज.जा)	जयसिंह मरावी	भा.ज.पा.
अनूपपुर(अ.ज.जा)	बिसाहूलाल सिंह	भा.रा.कां.
सोहागपुर	–	–
पुष्पराजगढ़	शिवप्रसाद सिंह	भा.रा.कां.

उमरिया

उमरिया	नरेन्द्र प्रताप सिंह	भा.रा.कां.
नौरोजाबाद	शकुन्तला प्रधान	भा.रा.कां.

कोरिया

मनेन्द्रगढ़(अ.ज.जा)	गुलाब सिंह	भा.रा.कां.
बैकुन्ठपुर	रामचन्द्र सिंहदेव	भा.रा.कां.

सरगुजा

प्रेमनगर (अ.ज.जा)	तुलेश्वर सिंह	भा.रा.कां.
सूरजपुर (अ.ज.जा)	भानु प्रताप सिंह	भा.रा.कां.
पाल (अ.ज.जा.)	रामविचार नेताम	भा.ज.पा.
सामरी (अ.ज.जा)	सोहनलाल	भा.ज.पा.
लुण्ड्रा (अ.ज.जा)	रामदेव राम	भा.रा.कां.
पिलखा (अ.ज.जा)	प्रेमसाय सिंह	भा.रा.कां.
अम्बिकापुर(अ.ज.जा)	मदनगोपल सिंह	भा.रा.कां.
सीतापुर (अ.ज.जा)	गोपाल राम	निर्दलीय

जशपुर

बगीचा	गणेशराम भगत	भा.ज.पा.
जशपुर	विक्रम भगत	भा.ज.पा.
तपकरा (अ.ज.जा)	नंदकुमार साय	भा.ज.पा.
पत्थलगांव(अ.ज.जा)	रामपुकार सिंह	भा.रा.कां.

रायगढ़

धरमजयगढ़(अ.ज.जा)	चनेशराम राठिया	भा.रा.कां.
लैलूंग (अ.ज.जा)	प्रेमसिंह सिदार	भा.ज.पा.
रायगढ़	कृष्ण कुमार गुप्ता	भा.रा.कां.
खरसिया	नन्द कुमार पटेल	भा.रा.कां.
सरिया	शक्राजीत नायक	भा.ज.पा.
सारंगढ़ (अ.जा.)	छबिलाल रात्रे	ब.स.पा.

कोरबा

रामपुर (अ.ज.जा)	ननकीराम कंवर	भा.ज.पा.
कटघोरा	बनवारीलाल अग्रवाल	भा.ज.पा.
तानाखार (अ.ज.जा)	हीरासिंह मरकाम	गो.ग.पा

बिलासपुर

मरवाही (अ.ज.जा.)	रामदयाल उइके	भा.ज.पा.
कोटा	राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल	भा.रा.कां.
लोरमी	धर्मजीत सिंह	भा.रा.कां.
मुंगेली (अ.जा.)	विक्रम मोहले	भा.ज.पा.
जरहागांव (अ.जा.	चोवादास खाण्डेकर	भा.ज.पा
तखतपुर	जगजीतसिंह मक्कड़	भा.ज.पा.
बिलासपुर	अमर अग्रवाल	भा.ज.पा.
बिल्हा	धरम कौशिक	भा.ज.पा.
मस्तूरी (अ.जा.)	मदन सिंह डहरिया	भा.ज.पा.
सीपत	रामेश्वर खरे	ब.स.पा.

जांजगीर–चांपा

अकलतरा	छतराम देवांगन	
पामगढ़	दाऊराम रत्नाकर	
चांपा	नारायण प्रसाद [illegible]	
सक्ती	मेघाराम [illegible]	

मालखरौदा (अ.जा)	चैनसिंह सामले	भा.रा.कां.
चन्द्रपुर	रानी रत्नमाला देवी	भा.ज.पा.

रायपुर

रायपुर नगर	बृजमोहन अग्रवाल	भा.ज.पा.
रायपुर ग्रामीण	तरुण प्रसाद चटर्जी	भा.ज.पा.
अभनपुर	धनेन्द्र साहू	भा.रा.कां.
मंदिर हसौद	सत्यनारायण शर्मा	भा.रा.कां.
आरंग (अ.जा.)	गंगूराम बघेल	भा.ज.पा.
धरसींवा	विधान मिश्रा	भा.रा.कां.
भाटापारा	शिवरतन शर्मा	भा.ज.पा.
बलौदा बाजार	गणेश शंकर बाजपेयी	भा.रा.कां.
पलारी (अ.जा.)	रामलाल भारद्वाज	भा.रा.कां.
कसडोल	गौरीशंकर अग्रवाल	भा.ज.पा.
भटगावं (अ.जा.)	हरिदास भारद्वाज	भा.ज.पा.

महासमुन्द

सरायपाली	देवेन्द्र बहादुर सिंह	भा.रा.कां.
बसना	महेन्द्र बहादुर सिंह	भा.रा.कां.
खल्लारी	परेश बागबाहरा	भा.ज.पा
महासमुन्द	अग्नि चन्द्राकर	भा.रा.कां.

रायपुर

राजिम	–	–
बिन्द्रानवागढ़ (अ.ज.जा)	चरणसिंह मांझी	भा.ज.पा.

धमतरी

सिहावा (अ.ज.जा.)	माधव सिंह ध्रुव	भा.रा.कां.
कुरूद	अजय चन्द्राकर	भा.ज.पा.
धमतरी	हर्षद मेहता	भा.रा.कां.

कांकेर

भानुप्रतापपुर (अ.ज.जा)	मनोज सिंह मंडावी	भा.रा.कां.
कांकेर (अ.ज.जा.)	श्यामा ध्रुवा	भा.ज.पा

बस्तर

केशकाल (अ.ज.जा)	फूलोदेवी नेताम	भा.रा.कां.
कोंडागांव (अ.ज.जा)	शंकर सोढ़ी	भा.रा.कां.
भानपुरी(अ.ज.जा)	अन्तुराम कश्यप	भा.रा.कां.
जगदपुर (अ.ज.जा)	क्षितरूराम बघेल	भा.रा.कां.
केशलूर (अ.ज.जा)	भुरसूराम नाग	भा.रा.कां.
चित्रकोट (अ.ज.जा)	प्रतिभा शाह	भा.रा.कां.

दन्तेवाड़ा

दन्तेवाड़ा (अ.ज.जा)	महेन्द्र कर्मा	भा.रा.कां.
कोंटा (अ.ज.जा)	लखमा	भा.रा.कां.
बीजापुर (अ.ज.जा)	राजेन्द्र पामभोई	भा.रा.कां.

कांकेर

नारायणपुर (अ.ज.जा)	मन्तुराम पवार	भा.रा.कां.

दुर्ग

मारो (अ.जा)	डेरहू प्रसाद धृतलहरे	निर्दली
बेमेतरा	महेश तिवारी	भा.ज.पा
साजा	रविन्द्र चौबे	भा.रा.कां
धमधा	ताम्रध्वज साहू	भा.रा.कां
दुर्ग	हेमचन्द यादव	भा.ज.पा
भिलाई	बदरुद्दीन कुरैशी	भा.रा.कां
पाटन	भूपेश बघेल	भा.रा.कां
गुण्डरदेही	घनाराम साहू	भा.रा.कां
खेरथा	प्रतिमा चन्द्राकर	भा.रा.कां
बालौद	लोकेन्द्र यादव	भा.ज.पा
डोंडीलोहारा (अ.ज.जा)	डोमेन्द्र भेडिया	भा.रा.कां

राजनांदगांव

चौकी (अ.ज.जा)	संजीव शाह	भा.ज.पा
खुज्जी	रजिन्दरपाल सिंह भाटिया	भा.ज.पा
डोंगरगांव	गीतादेवी सिंह	भा.रा.कां
राजनांदगांव	लीलाराम भोजवानी	भा.ज.पा
डोंगरगढ़(अ.जा)	धनेश पटिला	भा.रा.कां
खैरागढ़	देवव्रत सिंह	भा.रा.कां

कवर्धा

वीरेन्द्र नगर	मोहम्मद अकबर	भा.रा.कां
कवर्धा	योगेश्वर राज सिंह	भा.रा.कां

बालाघाट

बैहर	गनपत सिंह उइके	भा.रा.कां
लांजी	भागवत भाऊ नागपुरे	भा.रा.कां
किरनापुर	लिखीराम कावरे	भा.रा.कां
वारासिवनी	प्रदीव अमृतलाल जायसवाल	भा.रा.कां
खैरलांजी	डोमनसिंह नगपुरे उर्फ बाबा पटेल	आर.पी.आ
कटंगी	टामलाल रघुजी सहारे	जायसवा
बालाघाट	अशोक सिंह सरस्वार	भा.रा.कां
परसवाड़ा	कंकर मुंजारे	जनता पार्टी

मण्डला

नैनपुर(अ.ज.जा)	देवसिंह सैयाम	भा.ज.पा
मण्डला (अ.ज.जा)	देवेन्द्र तेकाम	भा.रा.कां

डिण्डोरी

बिछिया (अ.ज.जा)	तुलसीराम धूमकेती	भा.रा.कां
बजाग (अ.ज.जा)	ओमप्रकाश धुर्वे	भा.ज.पा
डिण्डोरी (अ.ज.जा)	जेहरसिंह मरावी	भा.ज.पा
शहपुरा (अ.ज.जा)	गंगाबाई उरैती	भा.रा.कां
निवास (अ.ज.जा)	सुरता सिंह मरावी	भा.रा.कां

जबलपुर

बरगी (अ.ज.जा)	फूलसिंह उइके	भा.ज.पा
पनागर (अ.ज.जा.)	कौशल्या गोंटिया	भा.रा.कां

वलपुर कॉंटोनमेंट	ईश्वरदास रोहाणी	भा.ज.पा.
वलपुर पूर्व(अ.जा)	अंचल सोनकर	भा.ज.पा.
वलपुर केन्द्रीय	–	–
वलपुर पश्चिम	हरिन्दर जीत सिंह	भा.ज.पा.
टन	सोवरन सिंह वावूजी	जनता दल
झोली	अजय विश्नोई	भा.ज.पा.
ग्होरा	नित्यनिरंजन खम्परिया	भा.रा.कां.

कटनी

होरीवंद	श्रवण कुमार पटेल	भा.रा.कां.
ड़वारा	अवधेश प्रताप सिंह	भा.रा.कां.
ड़वारा	हाजी गुलाम सिप्तैन	भा.रा.कां.
वेजय-राघवगढ़	सत्येन्द्र पाठक	भा.रा.कां.

नरसिंहपुर

गाडरवारा	साधना स्थापक	भा.रा.कां.
गोहानी	दीवान चन्द्रमान सिंह	भा.रा.कां.
नरसिंहपुर	अजय मुशरान	भा.रा.कां.
गोटेगांव (अ.जा.)	शेखर चौधरी	भा.रा.कां.

सिवनी

लखनादौन (अ.ज.जा)	रणधीर सिंह	भा.रा.कां.
घंसौर (अ.ज.जा)	उर्मिला सिंह	भा.रा.कां.
केवलारी	हरवंश सिंह	भा.रा.कां.
वरघाट	ढालसिंह विसेन	भा.ज.पा.
सिवनी	नरेश दिवाकर	भ.ज.पा.

छिन्दवाड़ा

जामई (अ.ज.जा)	तेजीलाल सरयाम	भा.रा.कां.
छिन्दवाड़ा	दीवक सक्सेना	भा.रा.कां.
परासिया (अ.जा.)	लीलाधर पुरिया	भा.रा.कां.
दमुआ (अ.ज.जा)	हरिशंकर उइके	भा.रा.कां.
अमरवाड़ा	प्रेमनारायण ठाकुर	भा.रा.कां.
चौरई	चौधरी गंभीर सिंह	भा.रा.कां.
सौंसर	अजय रेवनाथ चौरे	भा.रा.कां.
पान्दुर्णा	सुरेश झलके	भा.रा.कां.

होशंगावाद

पिपरिया	हरिशंकर जायसवाल	भा.ज.पा.
होशंगावाद	सविता दीवान	भा.रा.कां.
इटारसी	सीतासरन शर्मा	भा.ज.पा.
सिवनी मालवा	हजारीलाल नन्हूसिंह रघुवंशी	भा.रा.कां.

हरदा

टिमरनी (अ.जा)	उत्तम सिंह जगन्नाथ प्रसाद सोनकिया	भा.रा.कां.
हरदा	कमल पटेल	भा.ज.पा.

वैतूल

मुलताई	सुनील उर्फ चंद्रशेखर देशमुख	निर्दलीय
मासौद		भा.ज.पा.
भैंसदेही (अ.ज.जा)	महेन्द्र सिंह केशर सिंह चौहान	भा.ज.पा.
वैतूल	विनोद डाग	भा.रा.कां.
घोड़ाडोंगरी(अ.ज.जा)	प्रताप सिंह उइके	भा.रा.कां.
आमला (अ.जा)	हीराचंद चंदेलकर	भा.ज.पा.

सीहोर

बुधनी	देवकुमार पटेल	भा.रा.कां.
इछावर	करणसिंह वर्मा	भा.ज.पा.
आष्टा (अ.जा)	रणजीत सिंह गुणवान	भा.ज.पा.
सीहोर	रमेश सक्सेना	भा.ज.पा.

भोपाल

वावूलाल गौर	गोविन्दपुरा	भा.ज.पा.
भोपाल दक्षिण	पी.सी. शर्मा	भा.रा.कां.
भोपाल उत्तर	आरिफ अकील	भा.रा.कां.
वैरसिया	जोधाराम गुर्जर	भा.रा.कां.

रायसेन

सांची (अ.जा)	गौरीशंकर शेजवार	भा.ज.पा.
उदयपुरा	रामपाल सिंह	भा.ज.पा.
वरेली	भगवत सिंह पटेल	भा.ज.पा.
भोजपुर	–	–

विदिशा

कुरवाई (अ.जा)	रघुवीर सिंह	भा.रा.कां.
वासौदा	वीरसिंह रघुवंशी	भा.रा.कां.
विदिशा	सुशील देवी ठाकुर	भा.ज.पा.
शमशावाद	रुद्रप्रताप सिंह	अ.भा.पा.
सिरोंज	लक्ष्मीकांत शर्मा	भा.ज.पा

राजगढ़

व्यावरा	वलराम सिंह गूजर	भा.रा.कां.
नरसिंह गढ़	धूलसिंह यादव	भा.रा.कां.
सारंगपुर (अ.जा.)	कृष्णमोहन मालवीय	भा.रा.कां.
राजगढ़	प्रतापसिंह मंडलोई	भा.रा.कां.
खिलचीपुर	हजारीलाल दांगी	भा.रा.कां.

शाजापुर

शुजालपुर	केदार सिंह मंडलोई	भा.रा.कां.
गुलाना	कुंवर मनोहर सिंह	भा.रा.कां.
शाजापुर	हुकुमसिंह कराड़ा	भा.रा.कां.
आगर (अ.जा)	रामलाल मालवीय	भा.रा.कां.
सुसनेर	वल्लभ भाई अम्बावतिया	भा.रा.कां.

उज्जैन

तराना (अ.जा)	वावूलाल मालवीय	भा.रा.कां.
महिदपुर	कल्पना परूलेकर	भा.रा.कां.
खाचरोद	लालसिंह राणावत	भा.ज.पा
वड़नगर	वीरेन्द्र सिंह सिसो[illegible]	[illegible]रा.कां.
घट्टिया (अ.जा)	रामलाल मालवी[illegible]	[illegible]कां.
उज्जैन उत्तर	राजेन्द्र भारती	[illegible]

उज्जैन दक्षिण	प्रीति भार्गव	भा.रा.कां.

इन्दौर

देपालपुर	जगदीश पटेल	भा.रा.कां.
महू	अंतरसिंह दरबार	भा.रा.कां.
इन्दौर–1	रामलाल यादव	भा.रा.कां.
इन्दौर–2	कैलाश विजयवर्गीय	भा.ज.पा.
इन्दौर–3	अश्विन जोशी	भा.रा.कां.
इन्दौर–4	लक्ष्मण सिंह गौड़	भा.ज.पा.
इन्दौर–5	सत्यनारायण पटेल	भा.रा.कां.
सांवेर (अ.जा)	प्रेमचंद	भा.रा.कां.

देवास

देवास	युवराज तुकोजीराव पवार	भा.ज.पा.
सोनकच्छ (अ.जा)	सज्जनसिंह वर्मा	भा.रा.कां.
हाटपिपल्या	तेजसिंह सेंधव	भा.ज.पा.
बागली	श्याम लाल होलानी	भा.रा.कां.
खातेगांव	बृजमोहन बद्रीनारायण	भा.ज.पा.

खण्डवा

हरसूद (अ.ज.जा)	कुंवर विजय शाह	भा.ज.पा.
निमाड़खेड़ी	राजनारायण सिंह पुरनी	भा.रा.कां.
पंधाना (अ.जा)	हीरालाल सिलावट	भा.रा.कां.
खण्डवा	हुकुमचन्द दुर्गाप्रसाद यादव	भा.ज.पा.
नेपानगर	रघुनाथ	भा.रा.कां.
शाहपुर	संयोगिता देवी देशमुख	भा.रा.कां.
बुरहानपुर	मंजुश्री ठाकुर	भा.रा.कां.

खरगोन

भीकनगांव(अ.ज.जा)	लालसिंह डोंगर सिंह पटेल	भा.ज.पा.
बड़वाह	जगदीश मोराणीया	भा.रा.कां.
महेश्वर (अ.जा.)	विजयलक्ष्मी साधो	भा.रा.कां.
कसरावद	सुभाष यादव	भा.रा.कां.
खरगोन	परसराम बाबूलाल डंडीर	भा.रा.कां.
धूलकोट (अ.ज.जा)	चिड़ाभाई डावर	भा.रा.कां.

बड़वानी

संधवा (अ.ज.जा)	ग्यारसीलाल रावन	भा.रा.कां.
अंजड़ (अ.ज.जा)	देवीसिंह छीतू पटेल	भ.ज.पा.
राजपुर (अ.ज.जा)	बाला बच्चन	भा.रा.कां.
बड़वानी (अ.ज.जा	प्रेमसिंह पटेल	भा.ज.पा.

धार

मनावर(अ.ज.जा)	बलवन्तसिंह मण्डलोई	भा.रा.कां.
धरमपुरी (अ.ज.जा)	जगदीश मुवेल	भा.ज.पा.
धार	करनसिंह पवार	भा.रा.कां.
बदनावर	खमराज पाटीदार	भा.ज.पा.
सरदारपु (अ.ज.जा.)	गणपत सिंह पटेल	भा.रा.कां.
कुक्षी (अ.ज.जा)	जमुनादेवी	भा.रा.कां.

झाबुआ

अलीराजपु (अ.ज.जा)	वेस्ता पटेल	भा.रा.कां.
जोबट (अ.ज.जा)	सुलोचना रावत	भा.रा.कां.
झाबुआ (अ.ज.जा	स्वरूप बाई भाबर	भा.रा.कां.
पेटलावद (अ.ज.जा)	निर्मल भूरिया	भा.ज.पा.
थांदला (अ.ज.जा)	रतन सिंह भाबर	भा.रा.कां.

रतलाम

रतलाम नगर	हिम्मत कोठारी	भा.ज.पा.
रतलाम ग्रामीण	मोतीलाल दवे	भा.रा.कां.
सैलाना (अ.ज.जा)	प्रभुदयाल गोहलोत	निर्दलीय
जावरा	महेन्द्र सिंह	भा.रा.कां.
आलोट (अ.जा)	मनोहर ऊंटवाल	भा.ज.पा.

नीमच

मनासा	नरेन्द्र भंवरलाल नाहटा	भा.रा.कां.
नीमच	नदकिशोर पटेल	भा.रा.कां.
जावद	घनश्याम पाटीदार	भा.रा.कां.
–	जून चौधरी	नामनिर्दिष्ट

मन्दसौर

गरोठ	सुभाष कुमार सोजतिया	भा.रा.कां.
सुवासरा (अ.जा)	पुष्पा भारतीय	भा.रा.कां.
सीतामऊ	भारत सिंह जावरा	भा.रा.कां.
मन्दसौर	नवकृष्ण पाटिल	भा.रा.कां.

संभाग और जिले

मानव विकास के संबंधित जानकारी वर्ष 1971 की जनगणना पर आधारित है। पिछले दस वर्षों में प्रदेश में जन–जीवन बेहतर करने की दिशा में तरह तरह की पहल और नवाचार किए गए हैं। इनके परिणाम वर्ष 2001 में प्राप्त होनेवाली जनगणना के आंकड़ों से मिलेंगे। कुछ प्रयासों को नीचे लिखे आलेख में रेखांकित किया गया है।

मध्यप्रदेश में अब 61 जिले हैं लेकिन नीचे 45 जिलों की जानकारी दी जा रही है। यह जानकारी जनसंख्या, मानव विकास, कृषि के उपयोग आदि से संबंधित है जो वर्ष 1991 की जनगणना में की गई है। नए 16 जिलों की जानकारी इन पुराने जिलों में समहित है जिनसे वे अलग हुए है।

इंदौर संभाग

इंदौर

इंदौर मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा नगर है। यह इंदौर रियासत की राजधानी और मध्य भारत में भारत के गवर्नर जनरल के राजनैतिक दूत का निवास स्थान था। इंदौर को सन् 1770

में रानी अहिल्या बाई ने बसाया था। वर्तमान में इंदौर मध्य प्रदेश में सूती कपड़े के उद्योग का महत्वपूर्ण केंद्र है। इंदौर में जाना पाव, तिन्हाफाल गड़िया, रवो फाल, हटियार, रवो पिपल्या पाला, परावंत सागर तो लव पाललपानी फाल कालांकुंड मेहंदी, कुंड, बेरछा तालाव, शीश महल, नेहरू केंद्र मेघदूत भवन, सिरपुर तालाव, राजवाड़ा आदि दर्शनीय स्थल हैं।

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली: 24.4%, साफ पेयजल: 11%, शौचालय: 51.6%, उपरोक्त तीनों: 2.6%.झुग्गी बस्तियों में आवादी: 13.05%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 78%, स्त्री: 53.3%, अ.जा: 49%, अ.ज.जा: 26%, बस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 36.1, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 10.2.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की–61.9: 61.9, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 69, कन्या बाल मृत्यु दर: 97, कुल प्रजनन दर 3.8, जेन्डर अनुपात (कुल): 906, ग्रामीण: 919, शहरी: 900, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 919, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 910, कामगारों में महिलाएं(%): 16.0.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 148.0, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 29.5, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 102.9, औसत जोत का आकार (हे.): 3.7, सिंचित रकया (हे.): 152.5, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 68.8, खेती की सघनता: 142, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (हे).: 0.050.

आवादी (1991): जनसंख्या: 2649962, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 4%, शहरी: 45.5%, अनुसूचि जाति: 12.8%, अनुसूचित जनजाति: 17.9%, जनसंख्या घनत्व: 261, दशक वृद्धि दर: 20.5%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 101, औसत आयु: 57.8, जन्म दर (1984–90): 36.5. प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996). प्रति उप स्वास्थय केन्द्र आवादी, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996) बाल मृत्यु दर।

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 37.0%, ग्रामीण: 44.0%, शहरी: 28.0%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 56.2%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 18.6%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 25.2%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 1.74%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 55.4%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 17.2%, खेतिहर मजदूर: 24.7%, अनिश्चित रोजगार: 31.7%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 152.27, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 47.26, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 3.88, प्रति व्यक्ति (1994/95) (किलोग्राम)।

धार

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली: 40.8%, साफ पेयजल: 27%, शौचालय: 85.6%, उपरोक्त तीनों: 15.3%।

मध्यप्रदेश–जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्गकि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
बालाघाट	9,229	13,62,731	बालाघाट
बस्तर	39,114	22,70,472	जगदलपुर
बेतूल	10,043	11,80,527	बेतूल
भिंड	4,459	12,14,480	भिंड
भोपाल	2772	13,50,302	भोपाल
बिलासपुर	19897	37,96,553	बिलासपुर
छतरपुर	8687	11,58,853	छतरपुर
छिंदवाड़ा	11,815	15,63,332	छिंदवाड़ा
दमोह	7,306	8,97,544	दमोह
दतिया	2,038	3,97,743	दतिया
देवास	7,020	10,32,522	देवास
धार	8,153	13,66,626	धार
दुर्ग	8,537	23,98,497	दुर्ग
पूर्वी नीमाड़	10,779	14,32,855	खंडवा
गुना	11,065	13,09,451	गुना
ग्वालियर	5,214	14,14,948	ग्वालियर
इंदौर	3898	18,30,870	इंदौर
होशंगाबाद	10037	13,65,970	होसंगाबाद
जबलपुर	10,160	26,45,970	जबलपुर
झबुआ	6,782	11,29,356	झबुआ
मांडला	12,269	12,91,313	मांडला
मंदसौर	9,791	15,55,481	मंदसौर
मुरैना	11,594	17,07,619	मुरैना
नरसिंहपुर	5,133	7,84,523	नरसिंहपुर
पन्ना	7,135	6,84,721	पन्ना
रायगढ़	12,924	17,24,420	रायगढ़
रायपुर	21,258	39,02,609	रायपुर
रायसेन	8,466	8,77,369	रायसेन
राजगढ़	6,154	9,92,315	राजगढ़
राजनंद गांव	11,127	14,39,524	राजनंद गांव
रतलाम	4,861	9,71,309	रतलाम
रीवा	6,134	15,50,140	रीवा
सागर	10,252	16,46,198	सागर
सतना	7,502	16,46,198	सतना
सेहोर	6,578	8,40,427	सेहोर
सिवनी	8,758	9,99,762	सिवनी
शहडोल	14,028	17,43,068	शहडोल
शाजापुर	6,196	10,32,520	शाजापुर
शिवपुरी	10,278	11,31,933	शिवपुरी
सिधी	10,226	13,71,935	सिधी
सरगुजा	22,337	20,82,930	अंबिकापुर
टीकमगढ़	5,048	9,40,609	टीकमगढ़
उज्जैन	6,091	13,86,465	उज्जैन
विदिशा	7,371	9,71,079	विदिशा
पश्चिमी नीमाड़	13,450	20,26,317	खरगोन

मध्य प्रदेश में 16 नये जिले बनाने की [illegible]सूचना जारी की गयी है। यह जिले है – श्योपुर, कटनी, [illegible] (गुरनाराम– बैकुण्ठपुर), जशपुर, जांजगीर चांपा, [illegible], नीमच, उमरिया, महासमुंद, धमतरी, हरदा, [illegible]

इन आंकड़ों में नये बने छत्तीस[illegible]

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 47.6%, स्त्री: 20.7%, अ.जा: 32.3%, अ.ज.जा: 16.2%, बस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आबादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 23.7, प्रति लाख आबादी पर हाई स्कूल (1996): 7.5.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की–60.8, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 102, कन्या बाल मृत्यु दर: 127, कुल प्रजनन दर 5, जेन्डर अनुपात (कुल): 951, ग्रामीण: 960, शहरी: 892, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 940, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 977, कामगारों में महिलाएं(%): 40%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 237.5, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 37.7, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 114.5, औसत जोत का आकार (हे.): 3.7, सिंचित रकवा ('000 हे.): 147.3, असिंचित रकबा ('000 हे.) उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 53.4, खेती की सघनता: 129, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि. मी.).: 0.100.

आबादी (1991): जनसंख्या: 1431662, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 2.16%, शहरी: 27.5%, अनुसूचि जाति: 11.4%, अनुसूचित जनजाति: 26.8%, जनसंख्या घनत्व: 133, दशक वृद्धि दर: 24.1%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 100, औसत आयु: 58.1, जन्म दर (1984–90) 38.9. प्रति एक लाख ग्रामीण आबादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996). 3.9, प्रति उप केन्द्र आबादी: 4259, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 100%, बाल मृत्यु दर 151

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 43 7%, ग्रामीण 49%, शहरी 29%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा. 76.7%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 9.8%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा 13 5%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.18%, खेती क्षेत्र मे कुल रोजगार. 76.6%, गैर–कृषि क्षेत्र मे ग्रामीण रोजगार 8.8%, खेतिहर मजदूर. 33.3%, अनिश्चित रोजगार: 34.5%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 164.70, प्रति लाख आबादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 28 53, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 5.81, प्रति व्यक्ति (1994/95) (किलोग्राम)।

झाबुआ

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली: 67.1%, साफ पेयजल: 35.8%, शौचालय: 91.2%, उपरोक्त तीनों: 28.2%, झुग्गी बस्तियों में आबादी: 0 0%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 26.3%, स्त्री: 11.5%, अ.जा: 23.6%, अ.ज.जा: 10.9%, बस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आबादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 18, प्रति लाख आबादी पर हाई स्कूल (1996): 5.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की–48.4, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 96, कन्या बाल मृत्यु दर: 179, कुल प्रजनन दर 5.7, जेन्डर अनुपात (कुल): 977, ग्रामीण: 983, शहरी: 920, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 954, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 986, कामगारों में महिलाएं(%): 52%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 207, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 44.3, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 21.2, औसत जोत का आकार (हे.): 2.6, सिंचित रकबा (हे.): 35.4, असिंचित रकबा (हे.): 323, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 19.5, खेती की सघनता: 140, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (हे).: 0.170.

आबादी (1991): जनसंख्या: 1291263, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 1.95%, शहरी: 7.7%, अनुसूचि जाति: 5.2%, अनुसूचित जनजाति: 60.8%, जनसंख्या घनत्व: 97, दशक वृद्धि दर: 24.5%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 88, औसत आयु: 60.9, जन्म दर (1984–90): 34. प्रति एक लाख ग्रामीण आबादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 4.5, प्रति उप केन्द्र आबादी: 3526, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 99.5%, बाल मृत्यु दर: 132

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 51.2%, ग्रामीण: 53%, शहरी: 30%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 90.4%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 2.8%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 6.9%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991) 1.53%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 90.3%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 6.6%, खेतिहर मजदूर: 24.3%, अनिश्चित रोजगार: 27.5%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 236.44, प्रति लाख आबादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 34.70, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 8 09, प्रति व्यक्ति (1994/95) (किलोग्राम)।

खरगोन (पश्चिम निमाड़)

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली: 46 5%, साफ पेयजल: 33.1%, शौचालय: 88.5%, उपरोक्त तीनों: 20 5%, झुग्गी बस्तियों में आबादी: 10.62%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 48%, स्त्री: 23.2%, अ.जा: 32.4%, अ.ज.जा: 14.1%, बस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आबादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 20.1, प्रति लाख आबादी पर हाई स्कूल (1996): 5.9.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की:56.2, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 124, कन्या बाल मृत्यु दर: 156, कुल प्रजनन दर 5.1, जेन्डर अनुपात (कुल): 950, ग्रामीण: 956, शहरी: 917, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 941, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 973, कामगारों में महिलाएं(%): 39%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 190.5, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 17.1, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 19.9, औसत जोत का आकार (हे.): 3.7, सिंचित रकबा ('000 हे.): 164.4, असिंचित रकबा ('000 हे.): 464.2, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर

क.ग्रा.) 54.3, खेती की सघनता: 110, प्रति व्यक्ति वन त्र (वर्ग कि.मी.).: 0.240.

आवादी (1991): जनसंख्या: 1181501, म.प्र.कि नसंख्या का भाग: 1.79%, शहरी: 18.6%, अनुसूचि ाति: 10.8%, अनुसूचित जनजाति: 37.5%, जनसंख्या नत्व: 118, दशक वृद्धि दर: 27.7%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 128, औसत आयु: 1.9, जन्म दर (1984–90): 38. प्रति एक लाख ामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 3.2, ति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 4420, पेयजल एवं सुविधा क्त गाव (1996): 99.7%, वाल मृत्यु दर: 180.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 6.7%, ग्रामीण: 51%, शहरी: 27%, प्राथमिक क्षेत्र का स्सा: 84.8%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 4.7%, तृतीयक त्र का हिस्सा: 10.5%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 991): 2.20%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 82.5%, र–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 9%, खेतिहर मजदूर: 4.2%, अनिश्चित रोजगार: 28.4%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) कलोग्राम: 193.57, प्रति लाख आवादी पर ओचत मूल्य ी दुकान (1996): 38.68, सार्वजनिक वितरण प्रणाली खरीदी: 13.66, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

खण्डवा (पूर्व निमाड़)

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–विजली: 0%, साफ पेयजल: 31.1%, शौचालय: 82.1%, परोक्त तीनों: 15%, झुग्गी वस्तियों में आवादी: 7.58%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 58.5%, स्त्री: 31.5%, अ.जा: 35%, अ.ज.जा: 16.4%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 8.3, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 5.7.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की:58.6, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 131, कन्या वाल मृत्यु दर: 153, कुल प्रजनन दर: 5.2, जेन्डर अनुपात (कुल): 938, ग्रामीण: 940, शहरी: 931, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 919, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 963, कामगारों में महिलाएं(%): 34%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 142.1, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 22.6, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 16.1, औसत जोत का आकार (हे.): 3.8, सिंचित रकवा ('000 हे.): 92, असिंचित रकवा ('000 हे.): 356.7, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 56.1, खेती की सघनता: 110, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.).: 0.330.

आवादी (1991): जनसंख्या: 1310317, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 1.98%, शहरी: 19.5%, अनुसूचित जाति: 18.1%, अनुसूचित जनजाति: 12%, जनसंख्या घनत्व: 118, दशक वृद्धि दर: 30.8%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 130, औसत आयु: 51.5, जन्म दर (1984–90): 40.5. प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 2.2, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 5145, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 100%, वाल मृत्यु दर: 195.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 37%, ग्रामीण: 39%, शहरी: 28%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 79.1%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 6.8%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 14.1%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.35%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 79%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 8.6%, खेतिहर मजदूर: 18.8%, अनिश्चित रोजगार: 21.3%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 312.98, प्रति लाख आवादी पर ओचत मूल्य की दुकान (1996): 16.61, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 0.59छ प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

उज्जैन संभाग

मालवा का एक अन्य प्राचीन नगर है जिसका उल्लेख वौद्ध साहित्य में मिलता है। मौर्य काल में अशोक ने इसे अपने राज्य में सम्मिलित किया तथा सातवीं शताब्दी में हर्षवर्धन ने भी उज्जैन पर आधिपत्य रखा। तेरहवीं शताब्दी में मुगल आक्रमणकारियों ने इस हिन्दू नगर को नष्ट किया था। उसके पश्चात् वह मुस्लिम राज्य का अंग रहा। सन् 1750 में यह सिंधिया के हाथ में आ गया। मालवा के समतल पठार के मध्य में क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित यह नगर अपनी समृद्धि के लिए सदा महत्वपूर्ण रहा है। कालिदास की रचनाओं ने उज्जैन को संस्कृत–साहित्य में अमर कर दिया है। उज्जैन के महाकाल के मन्दिर का ज्योर्तिलिंग भारत के शिव मंदिरों में विशेष महत्व का हैं। यहां प्रति वारह वर्ष पश्चात् कुम्भ का मेला लगता हैं।

देवास

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–विजली: 35%, साफ पेयजल: 34.9%, शौचालय: 79.7%, उपरोक्त तीनों: 15.3%, झुग्गी वस्तियों में आवादी: 28.63%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 61.1%, स्त्री: 25.6%, अ.जा: 30.3%, अ.ज.जा: 15.5%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 20.9, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 6.7.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की:58.8, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 102, कन्या वाल मृत्यु दर: 139, कुल प्रजनन दर: 4.9, जेन्डर अनुपात (कुल): 924, ग्रामीण: 933, शहरी: 899, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 921, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 962, कामगारों में महिलाएं(%): 30%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 236.5, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 50.3, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 145.5, [illegible] जोत का आकार (हे.): 4.6, सिंचित रकवा ('0[illegible]6.5, असिंचित रकवा ('000 हे.): 264.[illegible]

(कि.ग्रा.) 42.4, खेती की सघनता: 122, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.).: 0.240.

आवादी (1991): जनसंख्या: 1367412, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 2.07%, शहरी: 13.1%, अनुसूचित जाति: 6.9%, अनुसूचित जनजाति: 53.5%, जनसंख्या घनत्व: 168, दशक वृद्धि दर: 29.3%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 84, औसत आयु: 61.7, जन्म दर (1984-90): 37.4, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 3.9, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 4443, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 100%, बाल मृत्यु दर: 122.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 46.7%, ग्रामीण: 49%, शहरी: 33%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 84.1%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 5.9%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 10%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.51%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 84.1%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 9.4%, खेतिहर मजदूर: 24.1%, अनिश्चित रोजगार: 25.9%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 275.26, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 29.52, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 5.13, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

रतलाम

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली 39.6%, साफ पेयजल 16.9% शौचालय 74 5%, उपरोक्त तीनों 9.4%, झुग्गी बस्तियो मे आवादी 5 35%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष 58.4%, स्त्री 29.1% अ.जा 32 2% अ.ज.जा 12.7%, बस्तियां जिनमे स्कूल है 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996) 29, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996) 10

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियो की 59 2, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर 132, कन्या बाल मृत्यु दर: 151 कुल प्रजनन दर 4 7, जेन्डर अनुपात (कुल): 948, ग्रामीण 956, शहरी 932, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात. 941, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 972, कामगारो मे महिलाएं(%) 37%

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 208.3, प्रति व्यक्ति दाले (कि ग्रा) 73 5, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 83.5, औसत जोत का आकार (हे.): 3, सिंचित रकवा ('000 हे.) 84 5, असिंचित रकवा ('000 हे.): 232.4, उर्वरक खपत पति हेक्टर (कि.ग्रा.) 59.8, खेती की सघनता: 149, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.).: 0.130.

आवादी (1991): जनसंख्या: 1554987, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 2.35%, शहरी: 15.2%, अनुसूचित जाति: 14.8%, अनुसूचित जमजाति: 12.4%, जनसंख्या घनत्व: 246, दशक वृद्धि दर: 28.8%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 128, औसत आयु: 51.9, जन्म दर (1984-90): 39.2, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 2.4, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 5470, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 97.6%, बाल मृत्यु दर: 196.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 37.78%, ग्रामीण: 39%, शहरी: 30%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 79.7%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 6.9%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 13.4%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 1.97%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 79.5%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 13.9%, खेतिहर मजदूर: 36.9%, अनिश्चित रोजगार: 41.2%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 260.97, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 36.21, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 0.82, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

शाजापुर

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली: 45.2%, साफ पेयजल: 37.9%, शौचालय: 87.3%, उपरोक्त तीनों: 19.8%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 57%, स्त्री: 19.8%, अ.जा: 22.9%, अ.ज.जा: 24.9%, बस्तियां जिनमें स्कूल हैं. 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996) 26 5, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 7.7.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की:57.7, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 118, कन्या बाल मृत्यु दर: 184, कुल प्रजनन दर: 5, जेन्डर अनुपात (कुल) 918, ग्रामीण: 920, शहरी: 910, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात 913, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात 889, कामगारों में महिलाएं(%): 35%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि ग्रा.): 309, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 82.8, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा). 156.3, औसत जोत का आकार (हे.) 3.7, सिंचित रकवा ('000 हे.): 118.8, असिंचित रकवा ('000 हे.) 312.3, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि ग्रा.) 43.8, खेती की सघनता: 130, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि मी.).: 0.006.

आवादी (1991): जनसंख्या: 1132977, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 1.71%, शहरी: 15.2%, अनुसूचित जाति 19.4%, अनुसूचित जनजाति: 11.3%, जनसंख्या घनत्व 110, दशक वृद्धि दर: 30.8%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 164, औसत आयु: 44 5, जन्म दर (1984-90): 35.7, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 1.4, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 5448, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 99.8%, बाल मृत्यु दर: 200.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 42.5%, ग्रामीण: 45%, शहरी: 28%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा 84.6%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 3.8%, तृतीयक

क्षेत्र का हिस्सा: 11.6%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 3.16%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 83.5%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 8.3%, खेतिहर मजदूर: 12.3%, अनिश्चित रोजगार: 14.4%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 325.43, प्रति लाख आबादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 20.49, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 0.75, छ प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

मंदसौर

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली: 38.5%, साफ पेयजल: 50%, शौचालय: 86.6%, उपरोक्त तीनों: 25.2%, झुग्गी बस्तियों में आबादी: 14.13%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 67.9%, स्त्री: 28.3%, अ.जा: 35.1%, अ.ज.जा: 16.3%, बस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आबादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 28.2, प्रति लाख आबादी पर हाई स्कूल (1996): 8.1.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 56.8, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 112, कन्या बाल मृत्यु दर: 153, कुल प्रजनन दर: 4.1, जेन्डर अनुपात (कुल): 945, ग्रामीण: 951, शहरी: 928, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 944, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 927, कामगारों में महिलाएं(%): 38%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 322.7, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 75, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 64.6, औसत जोत का आकार (हे.): 2.8, सिंचित रकबा ('000 हे.): 189.1, असिंचित रकबा ('000 हे.): 346.6, उर्वरक खपत पति हेक्टर (कि.ग्रा.) 65.9, खेती की सघनता: 150, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.).: 0.150.

आबादी (1991): जनसंख्या: 687945, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 1.04%, शहरी: 13%, अनुसूचित जाति: 20.4%, अनुसूचित जनजाति: 14.9%, जनसंख्या घनत्व: 96, दशक वृद्धि दर: 27.4%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 133, औसत आयु: 50.3, जन्म दर (1984–90): 39.4, प्रति एक लाख ग्रामीण आबादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 2.6, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द आबादी: 4969, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 98.2%, बाल मृत्यु दर: 204.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 41.6%, ग्रामीण: 43%, शहरी: 31%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 86.3%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 4.4%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 9.3%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.24%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 84.5%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 10.1%, खेतिहर मजदूर: 27%, अनिश्चित रोजगार: 31.3%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 278.80, प्रति लाख आबादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 40.68, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 0.42, छ प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

उज्जैन

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली: 36.7%, साफ पेयजल: 18.2%, शौचालय: 68.3%, उपरोक्त तीनों: 9%, झुग्गी बस्तियों में आबादी: 17.06%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 64.3%, स्त्री: 32.6%, अ.जा: 29.6%, अ.ज.जा: 25.7%, बस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आबादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 30.4, प्रति लाख आबादी पर हाई स्कूल (1996): 8.7.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 56.6, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 74, कन्या बाल मृत्यु दर: 156, कुल प्रजनन दर: 4.2, जेन्डर अनुपात (कुल): 929, ग्रामीण: 936, शहरी: 918, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 930, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 915, कामगारों में महिलाएं(%): 26%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 296.7, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 83.7, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 207, औसत जोत का आकार (हे.): 4.3, सिंचित रकबा ('000 हे.): 147.2, असिंचित रकबा ('000 हे.): 317.5, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 54.2, खेती की सघनता: 143, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.).: 0.002.

आबादी (1991): जनसंख्या: 940829, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 1.42%, शहरी: 16.9%, अनुसूचित जाति: 22.8%, अनुसूचित जनजाति: 4.112%, जनसंख्या घनत्व: 186, दशक वृद्धि दर: 27.7%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 132, औसत आयु: 51, जन्म दर (1984–90): 43.2, प्रति एक लाख ग्रामीण आबादी पर पी.एच.सी. की सख्या (1996): 2.3, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द आबादी: 5507, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 98.7%. बाल मृत्यु दर: 187.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 42.8%, ग्रामीण: 45%, शहरी: 31%, पाथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 86.4%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा 4.6%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 9%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.56%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 86.3%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 8%, खेतिहर मजदूर: 11.7%, अनिश्चित रोजगार: 15.1%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 379.77, प्रति लाख आबादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 40.61, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 1.26, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

ग्वालियर संभाग

ग्वालियर

मध्य प्रदेश का एक महत्वपूर्ण औद्योगिक और ऐतिहासिक नगर ग्वालियर चंबल के उप [illegible] में है। सूती [illegible] कृत्रिम रेशम के कपड़े बनाने [illegible] मिट्टी के बर्तन [illegible] चमड़े का सामान हैंडलू [illegible]

दर्शनीय स्थलों में ग्वालियर का किला विशेष उल्लेखनीय है।

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली: 30.4%, साफ पेयजल: 33.6%, शौचालय: 59.5%, उपरोक्त तीनों: 15.8%, झुग्गी बस्तियों में आबादी: 11.09%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 70.8%, स्त्री: 41.7%, अ.जा: 44.2%, अ.ज.जा: 19.4%, बस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आबादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 48, प्रति लाख आबादी पर हाई स्कूल (1996): 20.9.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की:63.9, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 103, कन्या बाल मृत्यु दर: 126, कुल प्रजनन दर: 4.9, जेन्डर अनुपात (कुल): 833, ग्रामीण: 818, शहरी: 843, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 820, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 892, कामगारों में महिलाएं(%): 11%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 167.6, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 33.2, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 50, औसत जोत का आकार (हे.): 2.7, सिंचित रकबा ('000 हे.): 100.9, असिंचित रकबा ('000 हे.): 164.8, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 70.9, खेती की सघनता: 108, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.).: 0.100.

आबादी (1991): जनसंख्या: 1267211, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 1.91%, शहरी 27.3%, अनुसूचित जाति: 16.3%, अनुसूचित जनजाति 17 4%, जनसंख्या घनत्व: 126, दशक वृद्धि दर 26 2%

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर 109, औसत आयु 56, जन्म दर (1984–90) 33 8, प्रति एक लाख ग्रामीण आबादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996) 2.5, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आबादी 4994, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996) 99.4%, बाल मृत्यु दर 179.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त 37.5%, ग्रामीण 41%, शहरी 27%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 71.4%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा 9.2%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा 19 3%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.16%, खेती क्षेत्र मे कुल रोजगार 71 3%, गैर–कृषि क्षेत्र मे ग्रामीण रोजगार 12.8%, खेतिहर मजदूर: 32.7%, अनिश्चित रोजगार 39 8%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 338.93, प्रति लाख आबादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 30.94, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 4.23, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

शिवपुरी

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली. 55.9%, साफ पेयजल: 44.9%, शौचालय 90.1%, उपरोक्त तीनों: 29.2%, झुग्गी बस्तियों में आबादी: 11.16%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 47.5%, स्त्री: 15.6%, अ.जा: 23.8%, अ.ज.जा: 6.6%, बस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आबादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 23.8, प्रति लाख आबादी पर हाई स्कूल (1996): 8.1.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 41.4, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 139, कन्या बाल मृत्यु दर: 234, कुल प्रजनन दर: 5.4, जेन्डर अनुपात (कुल): 849, ग्रामीण: 848, शहरी: 853, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 840, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 950, कामगारों में महिलाएं(%): 30%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 272.6, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 52.8, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 61.4, औसत जोत का आकार (हे.): 3, सिंचित रकबा ('000 हे.): 106.6, असिंचित रकबा ('000 हे.): 290.3, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 18.6, खेती की सघनता: 118, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.).: 0.290.

आबादी (1991): जनसंख्या: 1373434, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 2.08%, शहरी: 6.5%, अनुसूचित जाति: 11.4%, अनुसूचित जनजाति: 30.4%, जनसंख्या घनत्व: 130, दशक वृद्धि दर: 38.7%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर 105, औसत आयु: 56.8, जन्म दर (1984–90): 42.6, प्रति एक लाख ग्रामीण आबादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 2.8, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आबादी 5149, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 98.9%, बाल मृत्यु दर: 165.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 43%, ग्रामीण: 44%, शहरी: 31%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा 87 5%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 4.3%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 8.2%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.26%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 85.3%, गैर–कृषि क्षेत्र मे ग्रामीण रोजगार: 10.8%, खेतिहर मजदूर 24.1%, अनिश्चित रोजगार: 28.1%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम 196.01, प्रति लाख आबादी पर उचत मूल्य की दुकान (1996): 42.18, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 7 57, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

गुना

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली: 56.6%, साफ पेयजल: 46%, शौचालय: 88.2%, उपरोक्त तीनों 29.1%, झुग्गी बस्तियों में आबादी: 43.15%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 48.9%, स्त्री: 18%, अ.जा 23%, अ.ज.जा: 6.8%, बस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आबादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 20.4, प्रति लाख आबादी पर हाई स्कूल (1996): 5.3.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 48.7, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 144, कन्या बाल मृत्यु दर: 198, कुल प्रजनन दर: 5.9, जेन्डर अनुपात (कुल): 875, ग्रामीण: 875, शहरी: 876, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 874, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 928, कामगारों में महिलाएं(%): 21%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 215.3, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 97.7, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 47.3, औसत जोत का आकार (हे.): 3.4, सिंचित रकया ('000 हे.): 74.5, असिंचित रकबा ('000 हे.): 549, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 12.1, खेती की सघनता: 111, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.).: 0.320.

आवादी (1991): जनसंख्या: 1412610, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 2.13%, शहरी: 58.8%, अनुसूचित जाति: 20.4%, अनुसूचित जनजाति: 2.9%, जनसंख्या घनत्व: 271, दशक वृद्धि दर: 27.5%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 70, औसत आयु: 64.9, जन्म दर (1984–90): 34.7, प्रति एक लाख ग्रामीण आयादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 2.9, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 5074, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 99.4%, वाल मृत्यु दर: 119.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 30.9%, ग्रामीण: 36%, शहरी: 27%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 47.2%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 16.7%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 36.1%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.24%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 46.6%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 11.8%, खेतिहर मजदूर: 10.2%, अनिश्चित रोजगार: 24.1%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 200.83, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 25.52, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 0.47, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

दतिया

प्राचीन व ऐतिहासिक नगर है। प्राचीन इमारतें यहां के वैभव की कहानी कहती हैं। यहां का सातखंड महल वीरसिंह जू द्वारा वनवाया गया था। बुंदेलखंड का अत्यंत प्राचीन नगर नंदेरी राजा शिशुपाल की राजधानी थी।

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–विजली: 47.8%, साफ पेयजल: 42.9%, शौचालय: 83.6%, उपरोक्त तीनों: 24.2%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 60.2%, स्त्री: 23.7%, अ.जा: 33.1%, अ.ज.जा: 13.1%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 32.7, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 11.2.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की:52.5, जीवन प्रत्याशा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 141, कन्या वाल मृत्यु दर: 213, कुल प्रजनन दर: 5.1, जेन्डर अनुपात (कुल): 847, ग्रामीण: 840, शहरी: 873, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 837, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 869, कामगारों में महिलाएं(%): 20.2%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 233.9, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 106, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 18.2, औसत जोत का आकार (हे.): 2.8, सिंचित रकया ('000 हे.): 42.2, असिंचित रकया ('000 हे.): 91.2, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 32.5, खेती की सघनता: 106, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.).: 0.070.

आवादी (1991): जनसंख्या: 1033807, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 1.56%, शहरी: 25.9%, अनुसूचित जाति: 18.2%, अनुसूचित जनजाति: 15%, जनसंख्या घनत्व: 35.9, दशक वृद्धि दर: 30%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 90, औसत आयु: 60.2, जन्म दर (1984–90): 35.9, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 3.2, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द आवादी: 4633, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 100%, वाल मृत्यु दर: 129.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 41%, ग्रामीण: 45%, शहरी: 31%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 76.6%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 10.3%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 13.2%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.53%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 76.5%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 10.4%, खेतिहर मजदूर: 31.8%, अनिश्चित रोजगार: 34.8%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 286.80, प्रति–लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 30.68, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 1.45, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

चम्बल संभाग

मुरैना

मुरैना मध्य प्रदेश में चंवल के निचले वेसिन क्षेत्र में हैं। चंवल घाटी योजना के कार्यान्वित होने के पश्चात इस क्षेत्र का महत्व काफी गया है। इस क्षेत्र में जल विद्युत उत्पादन से ग्रामों के विद्युत और प्रदेश के औद्योगिकीकरण में सहायता हुई है।

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–विजली: 51%, साफ पेयजल: 56.4%, शौचालय: 88.9%, उपरोक्त तीनों: 32.3%, झुग्गी वस्तियों में आवादी: 18.03%।

शिक्षा(1991): साक्षरता–पुरुष: 58%, स्त्री: 20.8%, अ.जा: 32%, अ.ज.जा: 7%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 24.9, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 16.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 55.5, जीवन प्रत्याशा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 116, कन्या वाल मृत्यु दर: 163, कुल प्रजनन दर: 6.6, जेन्डर अनुपात (कुल): 826, ग्रामीण: 826, शहरी: 826, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 813, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 926, कामगारों में महिलाएं(%): 12%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 205.7, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 24.1, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 162.1, औसत जोत का आकार (हे.): 1.9, सिंचित रकया ('000 हे.): 22[illegible] [illegible]सिंचित

रकया ('000 हे.): 194, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 87.7, खेती की सघनता: 111, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.): 0.290.

आवादी (1991): जनसंख्या: 1555208, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 2.35%, शहरी: 23.1%, अनुसूचित जाति: 15.9%, अनुसूचित जनजाति: 4.8%, जनसंख्या घनत्व: 159, दशक वृद्धि दर: 23.1%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 104, औसत आयु: 57.1, जन्म दर (1984–90): 32, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 3.6, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 4862, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 100%, वाल मृत्यु दर: 150.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 46.6%, ग्रामीण: 51%, शहरी: 32%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 80.3%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 6.5%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 13.2%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.56%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 80.1%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 9.3%, खेतिहर मजदूर: 19.5%, अनिश्चित रोजगार: 22.2%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 397.76, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 29.79, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 0.75, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

भिण्ड

वुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–विजली: 65.1%, साफ पेयजल: 63.1%, शौचालय: 88.4%, उपरोक्त तीनों: 45.8%, झुग्गी वस्तियों में आवादी: 28.52%।

शिक्षा(1991): साक्षरता–पुरुष: 66.2%, स्त्री: 28.2%, अ.जा: 38.6%, अ.ज.जा: 32%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 44.6, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 17.5.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 53.3, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 113, कन्या वाल मृत्यु दर: 185, कुल प्रजनन दर: 5.6, जेन्डर अनुपात (कुल): 816, ग्रामीण: 813, शहरी: 827, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 796, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 822, कामगारों में महिलाएं(%): 4%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 249.3, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 69.4, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 43.7, औसत जोत का आकार (हे.): 2.6, सिंचित रकवा ('000 हे.): 99.4, असिंचित रकया ('000 हे.): 236.9, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 37.8, खेती की सघनता: 108, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.).: 0.006.

आवादी (1991): जनसंख्या: 1158076, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 1.75%, शहरी: 19.3%, अनुसूचित जाति: 23.7%, अनुसूचित जनजाति: 3.8%, जनसंख्या घनत्व: 133, दशक वृद्धि दर: 30.6%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 150, औसत आयु: 47.3, जन्म दर (1984–90): 36.8, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 4.1, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 5801, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 100%, वाल मृत्यु दर: 199.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 41.1%, ग्रामीण: 44%, शहरी: 30%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 82.6%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 6%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 11.5%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.55%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 82.5%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 10%, खेतिहर मजदूर: 20.5%, अनिश्चित रोजगार: 25.8%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 268.64, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 45.09, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 1.36, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

रीवा संभाग

रीवा

विंध्य पठारी प्रदेश का प्रमुख शहर रीवा मध्य प्रदेश का प्रमुख गेंहू उत्पादक क्षेत्र है। रीवा में सिलिका सैंड का उत्खनन होता है जो तेली के शीशे के कारखाने को जाता है। रीवा अव एक महत्वपूर्ण प्रादेशिक शिक्षा केंद्र है। इसके निकट गोविंदगढ़ के महल और चचाई तथा केवटी के प्रपात पर्यटकों के लिए आकर्षण केंद्र है। यह एक महत्वपूर्ण शिक्षा केंद्र भी है।

वुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–विजली: 71%, साफ पेयजल: 72.5%, शौचालय: 92.4%, उपरोक्त तीनों: 53.7%, झुग्गी वस्तियों में आबादी: 19.40%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 60.7%, स्त्री: 26.9%, अ.जा: 21.8%, अ.ज.जा: 13.9%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 20.9, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 15.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 49.9, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 127, कन्या वाल मृत्यु दर: 198, कुल प्रजनन दर: 5.6, जेन्डर अनुपात (कुल): 932, ग्रामीण: 946, शहरी: 858, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 923, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 912, कामगारों में महिलाएं(%): 29%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 217.4, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 43.5, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 5, औसत जोत का आकार (हे.): 2.4, सिंचित रकवा ('000 हे.): 53.9, असिंचित रकया ('000 हे.): 312.8, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 66.1, खेती की सघनता:130, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.).: 0.070.

आवादी (1991): जनसंख्या: 1647736, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 2.49%, शहरी: 29.2%, अनुसूचित जाति: 21.1%, अनुसूचित जनजाति: 8.5%, जनसंख्या घनत्व: 161, दशक वृद्धि दर: 24.5%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 116, औसत आयु: 54.4, जन्म दर (1984–90): 39.2, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 2.6, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 5262, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 98.6%, वाल मृत्यु दर: 172.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 39.1%, ग्रामीण: 42%, शहरी: 33%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 57.4%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 25.6%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 17%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.15%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 57%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 27%, खेतिहर मजदूर: 22.7%, अनिश्चित रोजगार: 22.7%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 215.87, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 35.66, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 0.48, प्रति व्यक्ति (1994/95) (किलोग्राम)।

शहडोल

वुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–विजली: 65.6%, साफ पेयजल: 73.2%, शौचालय: 89.5%, उपरोक्त तीनों: 52.7%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 48.4%, स्त्री: 20.1%, अ.जा.: 28.4%, अ.ज.जा.: 17.6%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 29.5, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 12.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 56.8, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 111, कन्या वाल मृत्यु दर: 154, कुल प्रजनन दर: 5, जेन्डर अनुपात (कुल): 940, ग्रामीण: 961, शहरी: 868, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 936, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 977, कामगारों में महिलाएं(%): 33%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 165.3, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 14, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 11.8, औसत जोत का आकार (हे.): 2.4, सिंचित रकवा ('000 हे.): 18, असिंचित रकवा ('000 हे.): 451, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 6.8, खेती की सघनता:113, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.).: 0.320.

आवादी (1991): जनसंख्या: 1033248, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 1.56%, शहरी: 22.3%, अनुसूचित जाति: 22.3%, अनुसूचित जनजाति: 2.4%, जनसंख्या घनत्व: 167, दशक वृद्धि दर: 23%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 105, औसत आयु: 56.9, जन्म दर (1984–90): 35.9, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 2.5, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 5421, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 100%, वाल मृत्यु दर: 168.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 44.7%, ग्रामीण: 48%, शहरी: 31%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 82.9%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 5.8%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 11.3%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.62%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 82.8%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 9.6%, खेतिहर मजदूर: 30.8%, अनिश्चित रोजगार: 34.7%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 391.87, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 26.82, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 0.28, प्रति व्यक्ति (1994/95) (किलोग्राम)।

सीधी

वुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–विजली: 71.2%, साफ पेयजल: 70.6%, शौचालय: 93.1%, उपरोक्त तीनों: 56.6%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 43.2%, स्त्री: 13.6%, अ.जा.: 14.6%, अ.ज.जा.: 12.5%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 21.6, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 8.2.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 56.5, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 106, कन्या वाल मृत्यु दर: 163, कुल प्रजनन दर: 6, जेन्डर अनुपात (कुल): 922, ग्रामीण: 934, शहरी: 767, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 940, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 945, कामगारों में महिलाएं(%): 34%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 159, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 37, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 9.4, औसत जोत का आकार (हे.): 2.3, सिंचित रकवा ('000 हे.): 27.6, असिंचित रकवा ('000 हे.): 335.1, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 9.2, खेती की सघनता:125, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.).: 0.320.

आवादी (1991): जनसंख्या: 1383086, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 2.09%, शहरी: 39.5%, अनुसूचित जाति: 24.6%, अनुसूचित जनजाति: 2.1%, जनसंख्या घनत्व: 227, दशक वृद्धि दर: 23.8%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 99, औसत आयु: 58.3, जन्म दर (1984–90): 31.4, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 2.3, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 5416, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 100%, वाल मृत्यु दर: 147.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 39.8%, ग्रामीण: 47%, शहरी: 29%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 65.9%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 13.6%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 20.5%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.14%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 65.8%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 9.8%, खेतिहर मजदूर: 23.8%, अनिश्चित रोजगार: 26.8%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 380.38, प्रति लाख आवादी पर

की दुकान (1996): 34.02, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 1.49, प्रति व्यक्ति (1994/95) (किलोग्राम)।

सतना

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली: 62.5%, साफ पेयजल: 69.5%, शौचालय: 90.7%, उपरोक्त तीनों: 46.9%, झुग्गी बस्तियों में आबादी: 5.34%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 60%, स्त्री: 27.8%, अ.जा: 25.9%, अ.ज.जा: 13%, बस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आबादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 24.6, प्रति लाख आबादी पर हाई स्कूल (1996): 13.1

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 47.4, जीवन प्रत्याशा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 147, कन्या बाल मृत्यु दर: 207, कुल प्रजनन दर: 5.5, जेन्डर अनुपात (कुल): 918, ग्रामीण: 929, शहरी: 875, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 922, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 933, कामगारों में महिलाएं(%) 30%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 193.1, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा) 32.3, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा). 7.2, औसत जोत का आकार (हे.) 2. सिंचित रकबा ('000 हे) 52.4, असिंचित रकबा ('000 हे.): 311.5, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 45.7, खेती की सघनता 123 प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.): 0.150

आबादी (1991): जनसंख्या 841358, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग 1.27%, शहरी 18%, अनुसूचित जाति 20.3% अनुसूचित जनजाति 10.2%, जनसंख्या घनत्व 129, दशक वृद्धि दर 28%

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर 122, औसत आयु 53.2, जन्म दर (1984–90) 36, प्रति एक लाख ग्रामीण आबादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996) 2.4, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आबादी 5062, पेयजल एव सुविधा युक्त गाव (1996) 100% बाल मृत्यु दर: 178

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त 42%, ग्रामीण: 45%, शहरी 29%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 81.4%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा 5.9%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 12.6%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.87%, खेती क्षेत्र मे कुल रोजगार 81.4%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार 9.6% खेतिहर मजदूर 30.7%, अनिश्चित रोजगार. 33.5%

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 300.56, प्रति लाख आबादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 22.85, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 1.36, प्रति व्यक्ति (1994/95) (किलोग्राम)।

सागर संभाग

सागर

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली: 52.7%, साफ पेयजल: 56.9%, शौचालय: 84.4%, उपरोक्त तीनों: 35.1%, झुग्गी बस्तियों में आबादी: 15.27%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 67%, स्त्री: 37.8%, अ.जा: 41.1%, अ.ज.जा: 20.1%, बस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आबादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 20.5, प्रति लाख आबादी पर हाई स्कूल (1996): 7.2.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 54.7, जीवन प्रत्याशा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 132, कन्या बाल मृत्यु दर: 169, कुल प्रजनन दर: 5.5, जेन्डर अनुपात (कुल): 881, ग्रामीण: 884, शहरी: 874, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 869, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात 931, कामगारों में महिलाएं(%): 26%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 164.5, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 51.3, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा) 44.8, औसत जोत का आकार (हे.). 2.9, सिंचित रकबा ('000 हे.): 73.9, असिंचित रकबा ('000 हे.) 444.6, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 26.9, खेती की सघनता: 115, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.). 0.170.

आबादी (1991): जनसंख्या: 2082630, म.प्र.कि जनसख्या का भाग. 3.15%, शहरी: 12.1%, अनुसूचित जाति 5.5%, अनुसूचित जनजाति: 53.7%, जनसंख्या घनत्व 93, दशक वृद्धि दर: 27.5%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 76, औसत आयु: 63.6, जन्म दर (1984–90): 33.4, प्रति एक लाख ग्रामीण आबादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 4.6, पति उप स्वास्थ्य केन्द्र आबादी: 3417, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 94.9%, बाल मृत्यु दर: 113.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 47.4%, ग्रामीण: 50%, शहरी: 26%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा. 89%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 2.7%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 8.3%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991). 1.91%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 84.3%, गैर–कृषि क्षेत्र मे ग्रामीण रोजगार: 8.5%, खेतिहर मजदूर: 16.9%, अनिश्चित रोजगार: 19.3%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम 265, प्रति लाख आबादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996) 42.90, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी. 8.26, प्रति व्यक्ति (1994/95) (किलोग्राम)।

दमोह

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली: 63.9%, साफ पेयजल: 61.6%, शौचालय: 89.9%, उपरोक्त तीनों 43.7%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 60.5%, स्त्री: 30.5%, अ.जा. 32.9%, अ.ज.जा: 21.9%, बस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आबादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 19.7, प्रति लाख आबादी पर हाई स्कूल (1996) 6.4.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 53.6, जीवन प्रत्याशा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 139, कन्या

याल मृत्यु दरः 173, कुल प्रजनन दरः 5.1, जेन्डर अनुपात (कुल): 905, ग्रामीणः 908, शहरीः 895, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपातः 885, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपातः 951, कामगारों में महिलाएं(%): 28%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 175.5, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 62.7, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 17, औसत जोत का आकार (हे.): 2.4, सिंचित रकया ('000 हे.): 34.2, असिंचित रकया ('000 हे.): 251.9, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 16.1, खेती की सघनता:115, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.): 0.340.

आवादी (1991): जनसंख्याः 396317, म.प्र.कि जनसंख्या का भागः 0.60%, शहरीः 22.4%, अनुसूचित जातिः 24.7%, अनुसूचित जनजातिः 1.7%, जनसंख्या घनत्वः 194, दशक वृद्धि दरः 27.1%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दरः 115, औसत आयुः 54.7, जन्म दर (1984–90): 36, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 2.6, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादीः 5865, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 100%, याल मृत्यु दरः 178.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्तः 36.8%, ग्रामीणः 40%, शहरीः 27%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्साः 77.1%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्साः 6.4%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्साः 16.5%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.74%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगारः 77%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगारः 10.5%, खेतिहर मजदूरः 13%, अनिश्चित रोजगारः 18.8%.

खाद्यान्नः प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्रामः 339.88, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 29.94, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदीः 0.54, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

पन्ना

वुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–विजलीः 79.2%, साफ पेयजलः 72%, शौचालयः 93.8%, उपरोक्त तीनों: 59.6%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुषः 46.3%, स्त्रीः 19.4%, अ.जाः 18.6%, अ.ज.जाः 11.3%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 19.3, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 8.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों कीः 48.8, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दरः 129, कन्या याल मृत्यु दरः 207, कुल प्रजनन दरः 5.7, जेन्डर अनुपात (कुल): 897, ग्रामीणः 901, शहरीः 869, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपातः 887, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपातः 948, कामगारों में महिलाएं(%): 29%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 219.1, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 59 7, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 14.1, औसत जोत का आकार (हे.): 2.4, सिंचित रकया ('000 हे.): 23.8, असिंचित रकया ('000 हे.): 203.4, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 21.3, खेती की सघनता:113, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.).: 0.590.

आवादी (1991): जनसंख्याः 785496, म.प्र.कि जनसंख्या का भागः 1.19%, शहरीः 14.9%, अनुसूचित जातिः 16.6%, अनुसूचित जनजातिः 12.9%, जनसंख्या घनत्वः 153, दशक वृद्धि दरः 20.8%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दरः 110, औसत आयुः 55.9, जन्म दर (1984–90): 30, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 3.2, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादीः 5064, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 96.5%, याल मृत्यु दरः 148.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्तः 39.6%, ग्रामीणः 41%, शहरीः 29%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्साः 79.8%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्साः 6.7%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्साः 13.5%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 1.78%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगारः 79.7%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगारः 12%, खेतिहर मजदूरः 38.9%, अनिश्चित रोजगारः 45.6%.

खाद्यान्नः प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्रामः 399.87, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 31.61, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदीः 0.87, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

छतरपुर

वुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–विजलीः 68.3%, साफ पेयजलः 77.3%, शौचालयः 91.3%, उपरोक्त तीनों: 55.5%, झुग्गी वस्तियों में आवादीः 13.90%

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुषः 46.9%, स्त्रीः 21.3%, अ.जाः 21.3%, अ.ज.जा: 9.5%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 23.1, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 9.7.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों कीः 44.4, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर 149, कन्या याल मृत्यु दरः 227, कुल प्रजनन दर 5 6 जेन्डर अनुपात (कुल): 856, ग्रामीणः 855, शहरी. 862, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात 854 अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपातः 916, कामगारो मे महिलाए(%). 29%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति [illegible] (कि.ग्रा.). 205 9 प्रति व्यक्ति दाले (कि.ग्रा): 62.[illegible] [illegible] व्यक्ति तिलहन (कि ग्रा) 15 6, औसत जोत [illegible] (हे.) 2.6 सिंचित रकया (000 हे.): 10[illegible] [illegible] रकया (000 हे) 248.6, उर्वरक [illegible] (कि ग्रा) 22 खेती की सघनता:11[illegible] [illegible] (वर्ग कि मी) 0 170

आवादी (1991): ज[illegible] जनसंख्या का भागः 2.3[illegible] जाति [illegible]2 2%, अनुसूचि[illegible] घनत्व 133, दशक [illegible]

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 103, औसत आयु: 57.4, जन्म दर (1984-90): 37.7, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 5.1, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 4571, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 99.2%, बाल मृत्यु दर: 142.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर-समस्त: 43.5%, ग्रामीण: 48%, शहरी: 28%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 81.3%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 5.4%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 13.4%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 1.86%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 76.8%, गैर-कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 12%, खेतिहर मजदूर: 25.9%, अनिश्चित रोजगार: 33%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 320.20, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 29.93, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 5.40, प्रति व्यक्ति (1994/95) (किलोग्राम)।

टीकमगढ़

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार-विजली: 70%, साफ पेयजल: 75%, शौचालय: 93.8%, उपरोक्त तीनों: 56.2%।

शिक्षा (1991): साक्षरता-पुरुप: 47.5%, स्त्री: 20%, अ.जा: 27.8%, अ.ज.जा: 13%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 21.1, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 11.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 46.5, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)-कन्या शिशु मृत्यु दर: 153, कन्या वाल मृत्यु दर: 205, कुल प्रजनन दर: 6.2, जेन्डर अनुपात (कुल): 871, ग्रामीण: 868, शहरी: 887, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 856, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 934, कामगारों में महिलाएं(%): 33%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 334, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 45.8, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 36.2, औसत जोत का आकार (हे.): 1.9, सिंचित रकवा ('000 हे.): 122.2, असिंचित रकवा ('000 हे.): 121.8, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 39.4, खेती की सघनता: 141, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.).: 0.080.

आवादी (1991): जनसंख्या: 9703886, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 1.47%, शहरी: 20.1%, अनुसूचित जाति: 20.3%, अनुसूचित जनजाति: 4.4%, जनसंख्या घनत्व: 132, दशक वृद्धि दर: 23.9%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 124, औसत आयु: 52.7, जन्म दर (1984-90): 38.2, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 2.8, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 5920, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 99.9%, वाल मृत्यु दर: 191.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर-समस्त: 37.5%, ग्रामीण: 40%, शहरी: 28%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 79.3%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 6.2%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 14.6%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.62%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 78%, गैर-कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 10.3%, खेतिहर मजदूर: 33.3%, अनिश्चित रोजगार: 36.3%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 409.63, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 32.60, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 0.73, प्रति व्यक्ति (1994/95) (किलोग्राम)।

भोपाल संभाग

भोपाल

मध्य प्रदेश की राजधानी है तथा भोपाल रियासत की भी राजधानी रही है। इस रियासत के शासक नवाव थे अत: नगर की प्राचीन इमारतों पर मुगल भवन-निर्माण परम्परा की छाप दिखाई देती है। मालवा-पठार के मध्य वालुका-प्रस्तर की एक चोटी किन्तु ऊंची-नीची पहाड़ी पर नगर बसा है। नगर के बीच दो वड़ी झीलें हैं। बड़े ताल का वांध धार के राजा भोज के एक मंत्री द्वारा तथा छोटे ताल का वांध नवाव हयात मुहम्मद के एक मंत्री द्वारा बनवाया गया था। वड़े ताल का क्षेत्र 2¹/4 वर्ग मील तथा छोटे ताल का 3.4 वर्ग मील है। प्राचीन नगर के चारों ओर किले बन्दी थी, जिसके अब केवल अवशेष हैं। इस नहप नें अनेक मस्जिदें हैं, किन्तु जामा मस्जिद विशेष दर्शनीय है।

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार-बिजली: 21.5%, साफ पेयजल: 10.9%, शौचालय: 41.7%, उपरोक्त तीनों: 4.5%, झुग्गी वस्तियों में आवादी: 6.22%।

शिक्षा (1991): साक्षरता-पुरुष: 73.1%, स्त्री: 54.2%, अ.जा: 43.7%, अ.ज.जा: 44.4%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 35.3, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 13.5.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 65.3, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)-कन्या शिशु मृत्यु दर: 98, कन्या वाल मृत्यु दर: 107, कुल प्रजनन दर: 4.8, जेन्डर अनुपात (कुल): 889, ग्रामीण: 873, शहरी: 894, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 895, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 887, कामगारों में महिलाएं(%): 14%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 86.6, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 22.3, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 26.5, औसत जोत का आकार (हे.): 3, सिंचित रकवा ('000 हे.): 30.8, असिंचित रकवा ('000 हे.): 127.3, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 32.3, खेती की सघनता: 122, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.): 0.030.

आवादी (1991): जनसंख्या: 1219000, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 1.84%, शहरी: 20.6%, अनुसूचित जाति: 21.3%, अनुसूचित जनजाति: 1%, जनसंख्या घनत्व: 273, दशक वृद्धि दर: 25.2%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 102, औसत आयु

57.7, जन्म दर (1984–90): 37.4, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 1.9, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 5696, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 98.6%, वाल मृत्यु दर: 149.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 27.4%, ग्रामीण: 28%, शहरी: 25%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 79.9%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 4.3%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 15.8%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.14%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 79.8%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 10.8%, खेतिहर मजदूर: 12.6%, अनिश्चित रोजगार: 13.9%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 318.70, प्रति लाख आवादी पर उोचत मूल्य की दुकान (1996): 27.92, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 0.19, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

सीहोर

वुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–विजली: 46.7%, साफ पेयजल: 44.1%, शौचालय: 83.4%, उपरोक्त तीनों: 22.5%, झुग्गी वस्तियों में आवादी: 1.34%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 56.9%, स्त्री: 22%, अ.जा: 27.2%, अ.ज.जा: 16.5%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 26.6, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 7.7.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 54.9, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 117, कन्या वाल मृत्यु दर: 195, कुल प्रजनन दर: 5.2, जेन्डर अनुपात (कुल): 898, ग्रामीण: 901, शहरी: 884, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 893, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 932, कामगारों में महिलाएं(%): 32%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 288, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 102.6, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि.ग्रा): 216.7, औसत जोत का आकार (हे.): 4.1, सिंचित रकवा ('000 हे.): 89.8, असिंचित रकवा ('000 हे.): 279, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 33.8, खेती की सघनता:128, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.): 0.210.

आवादी (1991): जनसंख्या: 1000831, म.प्र कि जनसंख्या का भाग: 1.51%, शहरी: 9.5%, अनुसूचित जाति: 10.8%, अनुसूचित जनजाति: 37%, जनसंख्या घनत्व: 114, दशक वृद्धि दर: 23.6%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 98, औसत आयु: 58.5, जन्म दर (1984–90): 33.5, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 3.2, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 4495, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 99.8%, वाल मृत्यु दर: 152.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 49.2%, ग्रामीण: 51%, शहरी: 28%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 87.3%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 3.4%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 9.3%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 1.76%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 87.3%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 8.3%, खेतिहर मजदूर: 33.8%, अनिश्चित रोजगार: 37.5%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 272.67, प्रति लाख आवादी पर उोचत मूल्य की दुकान (1996): 32.57, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 5.59, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्रान)।

रायसेन

वुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–विजली: 54.6%, साफ पेयजल: 42.3%, शौचालय: 83.4%, उपरोक्त तीनों: 26.7%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 54%, स्त्री: 25.5%, अ.जा: 25.6%, अ.ज.जा: 14.9%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 33.7, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 7.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 53.7, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 159, कन्या वाल मृत्यु दर: 170, कुल प्रजनन दर: 6.1, जेन्डर अनुपात (कुल): 879, ग्रामीण: 884, शहरी: 855, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 867, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 927, कामगारों में महिलाएं(%): 22%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 286.9, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 152.7, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 103.4, औसत जोत का आकार (हे.): 4.1, सिंचित रकवा ('000 हे.): 82, असिंचित रकवा ('000 हे.): 337.3, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 28, खेती की सघनता:122, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.): 0.380.

आवादी (1991): जनसंख्या: 992764, म.प्र कि जनसंख्या का भाग: 1.50%, शहरी: 16.8%, अनुसूचित जाति: 18%, अनुसूचित जनजाति: 3.3%, जनसंख्या घनत्व: 161, दशक वृद्धि दर: 23.9%

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर 122 औसत आयु: 53.3, जन्म दर (1984–90) 37.4 प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की सख्या (1996): 3.4, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी 5657, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996) 100%, वाल मृत्यु दर 182.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर [illegible] 47%, ग्रामीण 50%, शहरी 30%, [illegible] हिस्सा 82.4%, द्वितीयक क्षेत्र [illegible] तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 1[illegible] (1981 से 1991): 2.[illegible]

रोजगार: 82.3%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 9.2%, खेतिहर मजदूर: 21.4%, अनिश्चित रोजगार: 24.3%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 282.04, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 27.84, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 0.44, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

राजगढ़

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली. 65.8%, साफ पेयजल: 43%, शौचालय: 90%, उपरोक्त तीनों: 29.9%, झुग्गी बस्तियों में आवादी: 30 93%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 46 7%, स्त्री. 15.6%, अ.जा: 20%, अ.ज.जा: 20.3%, बस्तिया जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 23.7, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 6.5.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियो की 51 4, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर 144 कन्या बाल मृत्यु दर: 198, कुल प्रजनन दर 5 2, जेन्डर अनुपात (कुल) 923, ग्रामीण 927 शहरी 906 अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात 922, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात 924 कामगारा मे महिलाए(%) 38%

भूमि उपयोग और खेती (1991): पति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा): 205 5 प्रति व्यक्ति दाल (कि ग्रा) 76 6, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि ग्रा) 95 4 औसत जोत का आकार (हे) 3 2 सिंचित रकवा (000 हे) 89 5, असिंचित रकवा (000 हे) 319 8 उर्वरक खपत पति हेक्टर (कि ग्रा) 29 8 खेती की सघनता 122 प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि मी) 0 030

आवादी (1991) जनसंख्या 1439951, म प्र कि जनसंख्या का भाग 2 18% शहरी 15 7% अनुसूचित जाति: 10.3% अनुसूचित जनजाति 25 2%, जनसख्या घनत्व: 129, दशक वृद्धि दर 23 3%

स्वास्थ्य (1991) शिशु मृत्यु दर 97 औसत आयु 58.7, जन्म दर (1984–90) 34 2 प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी एच सी की सख्या (1996) 2 4 प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी 4786, पेयजल एव सुविधा युक्त गाव (1996) 99 4%, बाल मृत्यु दर 150.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त 52.4%, ग्रामीण: 56%, शहरी 34%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 86.2%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा 5 1% तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा 8 7%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 1.89%, खेती क्षेत्र मे कुल रोजगार: 86.1%, गैर–कृषि क्षेत्र मे ग्रामीण रोजगार 7.3%, खेतिहर मजदूर: 20 3%, अनिश्चित रोजगार 21.8%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 294.52, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 31.58, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 5.24, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

विदिशा

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली: 62.4%, साफ पेयजल: 53.9%, शौचालय: 85%, उपरोक्त तीनों 38.9%, झुग्गी बस्तियों में आवादी: 5.95%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 58%, स्त्री: 27.8%, अ.जा 28%, अ.ज.जा: 13.4%, बस्तियां जिनमें स्कूल हैं 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996) 24 5, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996) 6 9

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 51.3, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 102, कन्या बाल मृत्यु दर 198, कुल प्रजनन दर: 5.6, जेन्डर अनुपात (कुल) 874, ग्रामीण: 872, शहरी: 881, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 865, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात 916, कामगारों में महिलाएं(%): 21%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि ग्रा) 264, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 145.6, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 60.1, औसत जोत का आकार (हे) 5, सिंचित रकवा ('000 हे.): 71.9, असिंचित रकवा ('000 हे) 448.8, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि ग्रा) 29.9, खेती की सघनता: 111, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.) 0.120.

आवादी (1991): जनसंख्या: 2028145, म.प्र.कि जनसख्या का भाग. 3.06%, शहरी: 15.1%, अनुसूचित जाति 9 8%, अनुसूचित जनजाति: 46.2%, जनसंख्या घनत्व 151, दशक वृद्धि दर: 24.4%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 104, औसत आयु: 57.1, जन्म दर (1984–90): 37.2, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 4.6, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 4179, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 98.4%, बाल मृत्यु दर: 158.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 45 9%, ग्रामीण 49%, शहरी: 31%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 84.8%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 4.8%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा 10.4%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2 65%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 84.8%, गैर–कृषि क्षेत्र मे ग्रामीण रोजगार: 8%, खेतिहर मजदूर: 28 8%, अनिश्चित रोजगार: 31.1%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम 207 58, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 23.92, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी 7 16, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

बैतूल

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली: 53 2%, साफ पेयजल: 40.4%, शौचालय: 86.9%, उपरोक्त तीनों. 24%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 57.4%, स्त्री: 33.9%, अ.जा: 53.3%, अ.ज.जा: 17.2%, बस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आबादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 30.6, प्रति लाख आबादी पर हाई स्कूल (1996): 11.5.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 51.7, जीवन प्रत्याशा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 141, कन्या बाल मृत्यु दर: 181, कुल प्रजनन दर: 5.3, जेन्डर अनुपात (कुल): 966, ग्रामीण: 981, शहरी: 903, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 950, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 1002, कामगारों में महिलाएं(%): 40%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 167.8, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 25.8, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 118.4, औसत जोत का आकार (हे.): 3.4, सिंचित रकबा ('000 हे.): 73.3, असिंचित रकबा ('000 हे.): 341.2, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 20.2, खेती की सघनता:119, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.): 0.340.

आबादी (1991): जनसंख्या: 2271314, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 3.43%, शहरी: 7.1%, अनुसूचित जाति: 5.9%, अनुसूचित जनजाति: 67.4%, जनसंख्या घनत्व: 58, दशक वृद्धि दर: 23.2%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 83, औसत आयु: 62.1, जन्म दर (1984–90): 35.4, प्रति एक लाख ग्रामीण आबादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 5.5, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आबादी: 3414, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 98.2%, बाल मृत्यु दर: 129.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 53.6%, ग्रामीण: 55%, शहरी: 31%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 89.5%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 3.2%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 7.2%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.08%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 89%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 7.5%, खेतिहर मजदूर: 14.7%, अनिश्चित रोजगार: 16.1%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 300.93, प्रति लाख आबादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 34.44, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 12.89, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

होशंगाबाद संभाग

होशंगाबाद

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली 46.8%, साफ पेयजल: 40.6%, शौचालय: 77%, उपरोक्त तीनों: 17.7%, झुग्गी बस्तियों में आबादी: 0 0%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 65.8%, स्त्री 37.6%, अ.जा: 42%, अ.ज.जा: 20 6%, बस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आबादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 25.1, प्रति लाख आबादी पर हाई स्कूल (1996): 8.4.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 54.5, जीवन प्रत्याशा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 139, कन्या बाल मृत्यु दर: 183, कुल प्रजनन दर: 4.7, जेन्डर अनुपात (कुल): 899, ग्रामीण: 904, शहरी: 885, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 900, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 936, कामगारों में महिलाएं(%): 23%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 234.1, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 104.8, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 113.1, औसत जोत का आकार (हे.): 4, सिंचित रकबा ('000 हे.): 238, असिंचित रकबा ('000 हे.): 217, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 87.3, खेती की सघनता:148, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.): 0.270.

आबादी (1991): जनसंख्या: 1835915, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 2.77%, शहरी: 69.4%, अनुसूचित जाति: 16.7%, अनुसूचित जनजाति: 5.5%, जनसंख्या घनत्व: 471, दशक वृद्धि दर: 30.3%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 75, औसत आयु: 63.9, जन्म दर (1984–90): 31.2, प्रति एक लाख ग्रामीण आबादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 4.4, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आबादी: 5469, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 100%, बाल मृत्यु दर: 94.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 34.3%, ग्रामीण: 44%, शहरी: 30%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 34.3%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 22.8%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 42.9%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 3%, खेती क्षेत्र मे कुल रोजगार: 34.2%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार 18 5%, खेतिहर मजदूर: 14.8%, अनिश्चित रोजगार 17 1%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 177 57, प्रति लाख आबादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 22 19 सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 1.83, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

जबलपुर संभाग

जबलपुर

मध्य प्रदेश का तीसरा बडा नगर जबलपुर [illegible] व्यापार का केंद है। यहा पर शिक्षा संस्थाओं [illegible] है। जबलपुर से कटनी तक खनिजों पर [illegible] उद्योग विकसित हो गये है। यहां पर [illegible] भी है जिनमें [illegible]000 लोग कार्यरत हैं [illegible] मील दक्षिण में पहाडी पर गोंडो के [illegible] महल है [illegible] हो चौरासी [illegible] मंदिर है

डिठवाड़ा में और काली तलाई में कलचुरि कालीन मंदिर। 4. वहोरीवंद में सिन्युरसी। 5. गढा मोहल्ला में मालादेवी की मूर्ति। 6 पान दरीवा, दीक्षितपुरा में कमानिया गेट से वड़कुल हलवाई के आगे से गली में नर्मदा मंदिर। 7. जिला होमगार्ड कार्यालय में स्लीमेन द्वारा कराये गये कार्यो के संवंध में एक पत्थर। 8. कटनी के पास झिंझरी में। 9. भेड़ाघाट में 64 योगिनी मंदिर।

सौ वर्ष से पुराने भवन: 1. कमिश्नर वंगला, 2. रावर्टसन कालेज, 3. गांधी भवन, 4. कमानिया गेट, 5. अंजुमन स्लामिया स्कूल, 6. नगर निगम भवन।

वुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–विजली: 49.6%, साफ पेयजल: 33%, शौचालय: 73.2%, उपरोक्त तीनों: 19.7%, झुग्गी वस्तियों में आवादी: 37.8%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 71.9%, स्त्री: 45%, अ.जा: 47.2%, अ.ज.जा: 26.6%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 23.5, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 11.2.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की 59.2, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर. 117, कन्या वाल मृत्यु दर: 145, कुल प्रजनन दर: 4.6, जेन्डर अनुपात (कुल): 915, ग्रामीण: 939, शहरी: 888, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 923, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 963, कामगारों मे महिलाए(%): 23%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 116 5, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा) 35.7, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि ग्रा). 6.9, औसत जोत का आकार (हे.): 1.9, सिंचित रकवा ('000 हे.): 74.5, असिंचित रकवा '000 हे). 381 2, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 53.1, खेती की सघनता 122, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.): 0.080.

आवादी (1991): जनसख्या. 1130405, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 1.71%, शहरी: 8.7%, अनुसूचित जाति: 3.1%, अनुसूचित जनजाति: 85.7%, जनसंख्या घनत्व: 167, दशक वृद्धि दर 42.2%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर. 130, औसत आयु. 51.5, जन्म दर (1984–90). 39 4, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 3.1, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 4296, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 99.6%, वाल मृत्यु दर: 169.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 54%, ग्रामीण: 56%, शहरी: 33%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 90.6%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 2.7%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 6.7%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.92%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 90.4%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 5.1%, खेतिहर मजदूर: 5.9%, अनिश्चित रोजगार: 7.2%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 251.33, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 19.66, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 11.19, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

नरसिंहपुर

वुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–विजली: 53.8%, साफ पेयजल: 15.7%, शौचालय: 85.3%, उपरोक्त तीनों: 9.6%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 68.4%, स्त्री: 41.6%, अ.जा: 44%, अ.ज.जा: 30.8%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 25.6, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 9.8.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 53.9, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 121, कन्या वाल मृत्यु दर: 159, कुल प्रजनन दर: 4, जेन्डर अनुपात (कुल) 913, ग्रामीण: 915, शहरी: 897, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 909, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात. 959, कामगारों में महिलाएं(%): 25%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.) 181.8, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 218.1, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 72.2, औसत जोत का आकार (हे.) 2.7, सिंचित रकवा ('000 हे.): 76.7, असिंचित रकवा ('000 हे.): 214.4, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 38 8, खेती की सघनता: 126, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.): 0.160.

आवादी (1991): जनसंख्या: 3908042, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 5.91%, शहरी: 19.7%, अनुसूचित जाति: 14.4%, अनुसूचित जनजाति: 18.3%, जनसंख्या घनत्व: 184, दशक वृद्धि दर: 26.9%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 91, औसत आयु: 60.1, जन्म दर (1984–90): 34.5, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 2.4, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 5238, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 100%, वाल मृत्यु दर: 137.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 47.1%, ग्रामीण: 51%, शहरी: 32%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 80.2%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 7.2%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 12.6%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991) 2%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 80%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 9.9%, खेतिहर मजदूर: 28.8%, अनिश्चित रोजगार: 30.3%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 321.18, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 27.48, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 3.33, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

छिन्दवाड़ा

वुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–विजली: 33.7%, साफ पेयजल: 43.1%, शौचालय: 85.9%, उपरोक्त तीनों: 18.4%, झुग्गी वस्तियों में आवादी: 25.52%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 56.6%, स्त्री: 32.5%, अ.जा: 50.5%, अ.ज.जा: 21.3%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक

स्कूल (1996): 23.3, प्रति लाख आबादी पर हाई स्कूल (1996): 8.3.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 56, जीवन प्रत्याशा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 116, कन्या बाल मृत्यु दर: 137, कुल प्रजनन दर: 5.2, जेन्डर अनुपात (कुल): 953, ग्रामीण: 967, शहरी: 906, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 930, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 998, कामगारों में महिलाएं(%): 34%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 260.1, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 60.1, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 106.4, औसत जोत का आकार (हे.): 3, सिंचित रकबा ('000 हे.): 72.5, असिंचित रकबा ('000 हे.): 422.2, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 23, खेती की सघनता: 114, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.): 0.280.

आबादी (1991): जनसंख्या 2397134, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 3.62%, शहरी: 35.3%, अनुसूचित जाति: 12.3%, अनुसूचित जनजाति 12.4%, जनसंख्या घनत्व: 281, दशक वृद्धि दर 26.8%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 75, औसत आयु: 63.7, जन्म दर (1984–90): 34.9, प्रति एक लाख ग्रामीण आबादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 2.8, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आबादी: 4836, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996) 100%, बाल मृत्यु दर: 122.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 43.9%, ग्रामीण: 51%, शहरी: 30%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 71.4%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 13.1%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 15.5%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 70%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 10.5%, खेतिहर मजदूर: 25%, अनिश्चित रोजगार: 28.3%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उतपादन (1991) किलोग्राम: 257.22, प्रति लाख आबादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 22.48, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 7.46, प्रति व्यक्ति (1994/95)(किलोग्राम)।

सिवनी

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–बिजली: 53.7%, साफ पेयजल: 53.5%, शौचालय: 92.3%, उपरोक्त तीनों: 30.9%, झुग्गी बस्तियों में आबादी: 8.30%।

शिक्षा (1991): साक्षरता–पुरुष: 57.5%, स्त्री: 31.1%, अ.जा: 50.3%, अ.ज.जा: 26.6%, बस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आबादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 24.5, प्रति लाख आबादी पर हाई स्कूल (1996): 6.2.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 58.3, जीवन प्रत्याशा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर 118, कन्या बाल मृत्यु दर 148, कुल प्रजनन दर 4.3, जेन्डर अनुपात (कुल): 974, ग्रामीण: 980, शहरी 920, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 949, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 1005, कामगारों में महिलाएं(%): 44%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 228.8, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 43.9, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा) 70.5, औसत जोत का आकार (हे.): 3, सिंचित रकबा ('000 हे.): 43.8, असिंचित रकबा ('000 हे.) 333.8, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 11.7, खेती की सघनता 114, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि मी.): 0.280.

आबादी (1991): जनसंख्या 1743869, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 2.63%, शहरी: 21.1%, अनुसूचित जाति: 7.7%, अनुसूचित जनजाति 46.3%, जनसंख्या घनत्व 124, दशक वृद्धि दर 29.6%

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर 110 औसत आयु: 55.9, जन्म दर (1984–90) 38.6 प्रति एक लाख

छत्तीसगढ़ बनने के बाद मध्यप्रदेश

लोकसभा मे पृथक छत्तीसगढ़ राज्य संबंधी मध्य प्रदेश पुनर्गठन विधेयक के पारित होने के साथ ही नए राज्य के रूप में छत्तीसगढ़ के अस्तित्व मे आने के बाद अब तक देश के नक्शे में सबसे बड़े राज्य के रूप मे अंकित मध्य प्रदेश अपना यह दर्जा खो देगा। देश के हृदय प्रदेश के रूप में पहचाने जाने वाले मध्य प्रदेश का वर्तमान क्षेत्रफल 443446 वर्ग किलोमीटर है, जबकि प्रस्तावित छत्तीसगढ़ राज्य का क्षेत्रफल एक लाख 35 हजार 194 वर्ग कि.मी. है। पृथक राज्य के रूप में छत्तीसगढ़ के गठन के बाद शेष म.प्र. का क्षेत्रफल 308252 वर्ग कि.मी. रह जाएगा और तब यह देश का सबसे बड़ा प्रदेश नहीं होगा।

इसी तरह मध्य प्रदेश की आबादी जो वर्तमान में 66181000 (वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार) है, घटकर 48566071 रह जाएगी। वर्तमान मध्य प्रदेश में 61 जिले और 12 संभाग हैं। प्रस्तावित राज्य के गठन के बाद 16 जिले और तीन संभाग छत्तीसगढ़ में जाने के बाद शेष म.प्र. में 45 जिले और नौ संभाग बचेंगे। इसी तरह विधानसभा, लोकसभा और राज्यसभा की सीटों का भी बंटवारा होगा।

वर्तमान 320 सदस्यीय म.प्र. विधानसभा मे शेष म.प्र. के रूप में 230 सीटें ही होंगी, क्योंकि बाकी विधानसभा क्षेत्र प्रस्तावित राज्य में चले जाएंगे। लोकसभा की 11 सीटें भी नए राज्य को मिलेंगी। इस तरह शेष म.प्र. के पास इस स्थिति मे 40 के बजाय 29 लोकसभा सीटें ही रह जाएंगी। राज्यसभा की 16 सीटों मे से पांच छत्तीसगढ़ को मिलेंगी और म.प्र. के पास 11 सीटें रहेंगी।

वर्तमान मध्यप्रदेश में लगभग 73 हजार गांव है, इनमें से 20,378 गांव छत्तीसगढ़ में है।

ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 3.8. प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 4125, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 97.8%, वाल मृत्यु दर: 160.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 43.5%, ग्रामीण: 47%, शहरी: 29%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 85%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 4.9%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 10.1%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.25%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 79.3%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 10.5%, खेतिहर मजदूर: 25.4%, अनिश्चित रोजगार: 30.1%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 179.26, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 42.59, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 9.83, प्रति व्यक्ति (1994/95) (किलोग्राम)।

मंडला

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–विजली: 69.4%, साफ पेयजल: 61.6%, शौचालय: 94.5%, उपरोक्त तीनों: 47.3%, झुग्गी वस्तियों में आवादी: 0.0%।

शिक्षा(1991): साक्षरता–पुरुष: 52.2%, स्त्री: 22.2%, अ.जा: 51.5%, अ.ज.जा: 27.2%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 30.6, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 8.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 61.5, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 104, कन्या वाल मृत्यु दर: 129, कुल प्रजनन दर: 4.1, जेन्डर अनुपात (कुल): 988, ग्रामीण: 993, शहरी: 930, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात. 942, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 1011, कामगारों में महिलाएं(%): 47%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 208.5, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 28, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 37.6, औसत जोत का आकार (हे.): 2.7, सिंचित रकवा ('000 हे.): 10 5, असिंचित रकवा ('000 हे.): 423.4, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 5.3, खेती की सघनता: 120, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.): 0.520.

आवादी (1991): जनसंख्या: 1710574, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 2.58%, शहरी: 20.5%, अनुसूचित जाति: 19.9%, अनुसूचित जनजाति: 5.6%, जनसंख्या घनत्व: 148, दशक वृद्धि दर: 31.3%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 100, औसत आयु: 58, जन्म दर (1984–90): 44.1, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 1.9, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 5245, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 99.7%, वाल मृत्यु दर: 138.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 31.5%, ग्रामीण: 33%, शहरी: 25%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 81.7%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 5%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 13.4%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.65%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 81.4%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 8%, खेतिहर मजदूर: 8.8%, अनिश्चित रोजगार: 10.4%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 229.75, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 14.59, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 0.67, प्रति व्यक्ति (1994/95) (किलोग्राम)।

वालाघाट

बुनियादी सुविधाएं (1991): वंचित परिवार–विजली: 70.7%, साफ पेयजल: 60.1%, शौचालय: 92.9%, उपरोक्त तीनों: 40.8%, झुग्गी वस्तियों में आवादी: 27.93%।

शिक्षा(1991): साक्षरता–पुरुष: 67.6%, स्त्री: 38.9%, अ.जा: 62.8%, अ.ज.जा: 35.1%, वस्तियां जिनमें स्कूल हैं: 100%, प्रति लाख आवादी पर माध्यमिक स्कूल (1996): 25.7, प्रति लाख आवादी पर हाई स्कूल (1996): 7.8.

जेन्डर (1991): जन्म के समय स्त्रियों की: 55.6, जीवन प्रत्याक्षा (वर्ष)–कन्या शिशु मृत्यु दर: 147, कन्या वाल मृत्यु दर: 172, कुल प्रजनन दर: 3.9, जेन्डर अनुपात (कुल): 1002, ग्रामीण: 1009, शहरी: 937, अनुसूचित जाति जेन्डर अनुपात: 1024, अनुसूचित जनजाति जेन्डर अनुपात: 1021, कामगारों में महिलाएं(%): 45%.

भूमि उपयोग और खेती (1991): प्रति व्यक्ति अनाज (कि.ग्रा.): 233.5, प्रति व्यक्ति दालें (कि.ग्रा): 14.6, प्रति व्यक्ति तिलहन (कि. ग्रा): 7.2, औसत जोत का आकार (हे.): 1.5, सिंचित रकवा ('000 हे.): 120.1, असिंचित रकवा ('000 हे.): 157, उर्वरक खपत प्रति हेक्टर (कि.ग्रा.) 25.5, खेती की सघनता: 128, प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र (वर्ग कि.मी.): 0.300.

आवादी (1991): जनसंख्या: 3793566, म.प्र.कि जनसंख्या का भाग: 5.73%, शहरी: 17%, अनुसूचित जाति: 18.1%, अनुसूचित जनजाति: 23%, जनसंख्या घनत्व: 191, दशक वृद्धि दर: 28.4%.

स्वास्थ्य (1991): शिशु मृत्यु दर: 87, औसत आयु: 61, जन्म दर (1984–90): 35.3, प्रति एक लाख ग्रामीण आवादी पर पी.एच.सी. की संख्या (1996): 3.1, प्रति उप स्वास्थ्य केन्द्र आवादी: 5159, पेयजल एवं सुविधा युक्त गाव (1996): 99.6%, वाल मृत्यु दर: 123.

रोजगार (1991): कामगार भागीदारी दर–समस्त: 44.7%, ग्रामीण: 48%, शहरी: 30%, प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा: 82.4%, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा: 5.8%, तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा: 11.8%, रोजगार वृद्धि दर (1981 से 1991): 2.07%, खेती क्षेत्र में कुल रोजगार: 81.1%, गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार: 10.9%, खेतिहर मजदूर: 24.6%, अनिश्चित रोजगार: 27.3%.

खाद्यान्न: प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्तपादन (1991) किलोग्राम: 59.84, प्रति लाख आवादी पर उचित मूल्य की दुकान (1996): 28.66, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खरीदी: 5, प्रति व्यक्ति (1994/95) (किलोग्राम)।

मध्यप्रदेश विशेषांक के इस अंक का प्रारूप तैयार करते समय मध्यप्रदेश राज्य में से छत्तीसगढ़ राज्य अलग नहीं हुआ था। अत. इस विशेषांक में छत्तीसगढ़ के आंकड़े भी सम्मिलित है।

–संपादक

राज्य और संघ शासित प्रदेश

भारत संघ में 25 राज्य, 7 केंद्र शासित प्रदेश और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली (प्रांत का दर्जा और विधान सभा) है । 1991 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 84 करोड़ 63 लाख है, जिसमें जम्मू एवं काश्मीर की संभावित 77.2लाख जनसंख्या शामिल है।

क्षेत्रफल की दृष्टि से मध्य प्रदेश (443,446 वर्ग कि.मी.) सबसे बड़ा राज्य है और गोवा (3,702 वर्ग किमी) सबसे छोटा राज्य है । इसका अर्थ यह हुआ कि गोवा क्षेत्रफल के अनुसार मध्य प्रदेश के क्षेत्रफल का केवल 0.8 प्रतिशत है। मध्य प्रदेश देश के क्षेत्रफल का 13.48 प्रतिशत है।

उत्तर प्रदेश की जनसंख्या (139,112,287) देश में सर्वाधिक है ।जबकि सिक्किम (406,457) जनसंख्या की दृष्टि से सबसे छोटा राज्य है ।

क्षेत्रफल की दृष्टि से प्रांतो का क्रम

1.मध्य प्रदेश	443,446 वर्ग कि.मी.
2.राजस्थान	342,239 वर्ग कि.मी.
3.महाराष्ट्र	307,690 वर्ग कि.मी.
4.उत्तर प्रदेश	294,411 वर्ग कि.मी.
5.आंध्र प्रदेश	275,068 वर्ग कि.मी.
6.जम्मू एवं काश्मीर	222,236 वर्ग कि.मी
7.गुजरात	196,024 वर्ग कि.मी
8.कर्नाटक	191,791 वर्ग कि.मी
9.बिहार	173,877 वर्ग कि मी
10.उड़ीसा	155,707 वर्ग कि मी
11.तमिलनाडु	130,058 वर्ग कि मी
12.पश्चिम बंगाल	88,752 वर्ग कि मी
13.अरुणाचल प्रदेश	83,743 वर्ग कि मी

3.पांडिचेरी	492 वर्ग कि.मी.
4.दादरा व नागर हवेली	491 वर्ग कि.मी.
5.चण्डीगढ़	114 वर्ग कि.मी.
6.दमन व दियु	112 वर्ग कि.मी.
7.लक्षद्वीप	32 वर्ग कि.मी

जनसंख्या की दृष्टि से राज्यों का क्रम

1.उत्तर प्रदेश	139,112,287
2.बिहार	86,374,465
3.महाराष्ट्र	78 937 187
4.पश्चिम बंगाल	68 077 965
5.आंध्र प्रदेश	66 508 008
6.मध्य प्रदेश	66 181 170
7.तमिलनाडु	55 858 946
8.कर्नाटक	44 977,201
9 राजस्थान	44 005,990
10 गुजरात	4[illegible] 309,58[illegible]
11 उड़ीसा	31,659,[illegible]
12 [illegible]	[illegible]
13 [illegible]	[illegible]
14 [illegible]	[illegible]

भारत संघ: आधारभूत आंकड़े

क्षेत्र	राजधानी	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)
भारत	नई दिल्ली	3,287,263*	843,930,861

* देश का कुल क्षेत्रफल उस अन्तिम भौगोलिक क्षेत्रफल को दर्शाता है, जो 31 मार्च, 1982 को था और यह भारत के सर्वेक्षण विभाग द्वारा दिया गया है। इसमें पाकिस्तान के अवैध कब्जे वाला 78,114 वर्ग कि.मी. का क्षेत्र, पाकिस्तान द्वारा गैर-कानूनी ढंग से चीन को दिया गया 8,180 वर्ग कि. मी. का क्षेत्र और चीन के अवैध कब्जे वाला 37,555 वर्ग कि.मी. का क्षेत्र सम्मिलित है।

राज्य	राजधानी	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	संपूर्ण देश की जनसंख्या प्रतिशत
1. अरुणाचल प्रदेश	ईटानगर	83,743	864,558	0.10
2 असम	दिसपुर	78,438	22,414,322	2.65
3. आंध्र प्रदेश	हैदराबाद	275,068	66,508,008	7.86
4. उड़ीसा	भुवनेश्वर	155,707	31,659,736	3.74
5. उत्तर प्रदेश*	लखनऊ	294,411	139,112,287	16.44
6. कर्नाटक	बंगलौर	191,791	44,977,201	5.31
7. केरल	तिरुअनंतपुरम	38,863	29,698,518	3.44
8. गुजरात	गांधीनगर	196,024	41,309,582	4.88
9. गोवा	पणजी	3702	1,169,793	0.14
10. जम्मू एवं काश्मीर**	श्रीनगर/जम्मू ✦	222,236	7,718,700	0.91
11. तमिलनाडु	चेन्नई	130,058	55,858,946	6.60
12. त्रिपुरा	अगरतला	10,486	2,757,205	0.33
13. नागालैंड	कोहिमा	16,579	1,209,546	0.14
14. पंजाब	चण्डीगढ़	50,362	20,281,969	2.40
15. पश्चिम बंगाल	कलकत्ता	88,752	68,077,965	8.04
16. बिहार*	पटना	173,877	86,374,465	10.21
17. मणिपुर	इम्फाल	22,327	1,837,119	0.22
18. मध्य प्रदेश*	भोपाल	443,446	66,181,170	7.82
19. महाराष्ट्र	मुम्बई	307,690	78,937,187	9.33
20. मिजोरम	ऐज़ल	21,081	689,756	0.80
21. मेघालय	शिलांग	22,429	1,774,778	0.21
22. राजस्थान	जयपुर	342,239	44,005,990	5.20
23. सिक्किम	गंगटोक	7,096	406,457	0.05
24. हरियाणा	चण्डीगढ़	44,212	16,463,618	1.94
25. हिमाचल प्रदेश	शिमला	55,673	5,170,877	0.61
संघ शासित प्रदेश / मुख्यालय				
1. अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह / पोर्ट ब्लेयर		8,249	280,661	0.03
2. चण्डीगढ़ / चण्डीगढ़		114	642,015	0.08
3. दमन व दियू / दमन		112	101,586	0.01
4. दादरा व नागर हवेली / सिलवासा		491	1,38,477	0.01
5. पांण्डिचेरी / पाण्डिचेरी		492	807,785	0.09
6. लक्षद्वीप / कवरत्ती		32	51,707	0.01
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र/मुख्यालय				
दिल्ली / दिल्ली		1,48	9,420,614	1.11

* उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश की जनसंख्या मिलाकर सारे देश की जनसंख्या का 34.0 प्रतिशत या एक तिहाई से अधिक है।
** अनुमानित ✦ श्रीनगर (ग्रीष्म कालीन राजधानी) जम्मू (शीतकालीन राजधानी)।

भारत का राष्ट्रीय चिन्ह

भारत के राष्ट्रीय प्रतीक को महान राजा अशोक की राजधानी सारनाथ से प्राप्त किया। चिन्ह जिसे सारनाथ संग्रहालय में रखा गया है, से लिया गया है। इस प्रतीक को 26 जनवरी 1950 के दिन जब भारत गणतंत्र बना था, अपनाया गया। इस प्रतीक के वास्तविक रूप में चार शेर चिन्ह के रूप दिखाई पड़ते हैं जो एक दूसरे के पीछे खड़े हैं। यह एक फलक पर निर्मित किये गये हैं जिसमें आराम की मुद्रा में हाथी, तेजी से दौड़ने की मुद्रा में घोड़ा, एक बैल और एक शेर बने हुए हैं। जिन्हें एक घंटी के रूप में कमल के ऊपर चक्रों से विलग किया गया है। यह एक चमकीली शिला पर निर्मित हैं जो धर्म चक्र से सुशोभित है।

राष्ट्रीय प्रतीक में केवल तीन शेर के रूप दिखायी पड़ते हैं – चौथा दृश्य के अंतर्गत नहीं आता है। चक्र फलक के केंद्र में है, बैल दाहिनी तरफ और घोड़ा बायीं तरफ है। अन्य चक्र दाहिनी और बायीं तरफ अंत में है। मुंडक उपनिषद के श्लोक से "सत्यमेव जयते" देवनागरी लिपि में फलक के नीचे लिखा हुआ है।

राष्ट्रीय झंडा तीन रंगों का है। ऊपर केसरी, बीच में सफेद और नीचे हरा है। झंडे की लम्बाई और चौड़ाई में 3 और 2 का अनुपात है। झंडे के बीच में नीले रंग का चक्र है जोकि प्रगति का प्रतीक है। इसकी संरचना उस प्रकार के चक्र की है जो अशोक के सारनाथ शेर के चिन्ह में है।

राष्ट्रीय झंडे की संरचना को संविधान सभा ने 1947 अपनाया था।

रवींद्र नाथ टैगोर के गीत जन गण – को संविधान सभा ने 24 जनवरी 1950 में भारत के राष्ट्रीय गान के रूप में अपनाया था। गीत के पहले पांच छंद को राष्ट्रीय गान के रूप में अपनाया गया।

राष्ट्र गान

"जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्यविधाता
पंजाब सिंधु गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंगा
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंगा
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मांगे
गाहे तव जय गाथा
जन गण मंगल दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय हे।

राष्ट्र गीत

वन्दे मातरम्!
सुजलाम, सुफलाम, मलयज शीतलाम
शस्यश्यामलाम, मातरम्!
शुभ्रज्योत्स्ना पुलकित यामिनी
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनी
सुहासिनी सुमधुर भाषिनी
सुखदाम वरदाम, मातरम्
वन्दे मातरम्!

स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने क्रिश्चियन युग के आधार पर जार्जियन कैलेंडर अपनाया। राष्ट्रीय सरकार ने कैलेंडर सुधार समिति के सुझावों को भी अपनाया कि शक युग को राष्ट्रीय कैलेंडर के आधार के रूप में अपनाया जाये।

राष्ट्रीय कैलेंडर के महीने और दिन जार्जियन कैलेंडर के महीने और दिन के साथ इस प्रकार है।

1 चैत्र 30/31	मार्च 22/21
1 वैशाख 31	अप्रैल 21
1 ज्येष्ठ 31	मई 22
1 आषाढ 31	जून 22
1 श्रावण 31	जुलाई 23
1 भाद्र 31	अगस्त 23
1 आश्विन 30	सितम्बर 23
1 कार्तिक 30	अक्टूबर 23
1 अग्रहायण 30	नवम्बर 22
1 पौष 30	दिसम्बर 22
1 माघ 30	जनवरी 21
1 फाल्गुन 30	फरवरी 20

भारत का राष्ट्रीय पशु: बाघ, राष्ट्रीय पुष्प: कमल, राष्ट्रीय पक्षी: मोर।
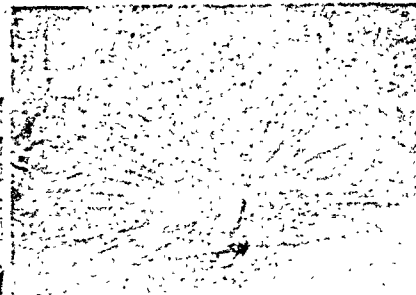
उत्तर प्रदेश

क्षेत्रफल: 2,94,411 वर्ग कि.मी.; राजधानी: लखनऊ; भाषा: हिन्दी एवं उर्दू; जिले: 83; जनसंख्या: 138,760,417; पुरुष: 73,745,994; महिलाएं: 65,014,423; जनसंख्या में वृद्धि (1981-91): 27,897,905; वृद्धि दर प्रतिशत (1981-91): 25.16; जनसंख्या घनत्व: 471; शहरी जनसंख्या: 19.84%; लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष): 882; साक्षरता: 41.71; पुरुष: 55.35; महिलाएं: 26.02; प्रतिव्यक्ति आय (89-90): 2866 रु.; 1991 की जनगणना पर अंतिम जनसंख्या: 139,112,287 ।

उत्तर प्रदेश देश में सबसे अधिक जनसंख्या का प्रांत है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह मध्य प्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र के बाद है।

प्रमुख नदियां: गंगा, यमुना, रामगंगा, गोमती और घाघरा।

फसलें: धान, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, मक्का, उर्द, मूंग, अरहर, चना ।

फल: आम, अमरुद, सेब ।

प्रमुख खनिज: चूना, पत्थर, डोलोमाइट, मैग्नेसाइट, सोपस्टोन, जिप्सम, ग्लाससैंड, संगमरमर, फासफोराइट, बाक्साइट, नानप्लास्टिक, फायरक्ले आदि ।

प्रमुख उद्योग: सीमेंट, वनस्पति, तेल, सूती कपड़ा, सूती धागा, चूड़ी व कांच उद्योग, चीनी, जूट ।

प्रमुख हस्तशिल्प: चिकन का काम, जरी का काम, लकड़ी के खिलौने व फर्नीचर, मिट्टी के खिलौने तथा पीतल का काम ।

देश का सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार

उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार बन गया है और सभी प्रमुख उपभोक्ता कंपनियों की नजर इस राज्य पर लगी है।

उत्तर प्रदेश की छवि हमेशा से गरीब और पिछड़े राज्य की रही है, जबकि असलियत में यह देश का सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार है।

राष्ट्रीय उपभोक्ता सर्वेक्षण के मुताबिक उत्तर प्रदेश में दो करोड़ 60 लाख घर हैं। इसमें से 55 लाख घर सिर्फ शहरों में है। राज्य में 700 शहरी केंद्र हैं और इनमें से 50 की जनसंख्या एक लाख से ज्यादा है। शहरी जनसंख्या में 70 फीसदी से ज्यादा पुरुष और 50 फीसदी से ज्यादा महिलाएं साक्षर हैं।

सर्वेक्षण में यह पाया गया कि प्रदेश 22 उपभोक्ता सामानों का सबसे बड़ा बाजार है। इन 22 सामानों के तहत यहां 10,022 करोड़ रुपए का कारोबार होता है। इसके बाद महाराष्ट्र का नंबर आता है। यहां उपभोक्ता सामानों का बाजार 9341 करोड़ रुपए है। इसके बाद दूसरे राज्य उपभोक्ता बाजार के मामले में काफी नीचे स्थान रखते हैं। पूरे देश के उपभोक्ता बाजार में से उत्तर प्रदेश का 15 फीसदी अंश है।

प्रमुख लोकगीत: बिरहा, चैती, ढोला, कजरी, रसिया, आल्हा, पूरनभगत, भर्तृहरि ।

प्रमुख लोकनृत्य: करमा, चांचली, छपेली, छोलिया, पांडव, वादी वादिन, लांग और भैलानृत्य ।

प्राकृतिक रूपरेखा

उत्तर प्रदेश भारत के सीमान्त प्रदेशों में से एक है । इसकी उत्तरी सीमा हिमालय पर्वत से लगी हुई तिब्बत और नेपाल की सीमाओं को छूती है, पश्चिमी और दक्षिण-पश्चिमी सीमा पर हिमालय प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली और राजस्थान हैं तथा दक्षिण में मध्य प्रदेश और पूर्वी सीमा बिहार से लगी हुई है।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्गकि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
आगरा	4,027	27,51,021	आगरा
अलीगढ़	5019	32,95,982	अलीगढ़
एटा	5,019	32,95,982	एटा
फिरोजाबाद	2,361	15,33,054	फिरोजाबाद
मैनपुरी	2,760	13,16,746	मैनपुरी
मथुरा	3,811	19,31,186	मथुरा
महामाया नगर	–	1,13,285	हाथरस
आजमगढ़	4,234	31,53,885	आजमगढ़
बलिया	2,981	22,62,273	बलिया
मऊ	1,713	14,45,782	मऊ
कौशंबी	2,015	11,57,402	कौशंबी
फतेहपुर	4,152	18,99,241	फतेहपुर
प्रतापगढ़	3,717	22,10,700	प्रतापगढ
इलाहाबाद	2,261	49,21,313	इलाहाबाद
चित्रकूट	3,513	5,95,996	चित्रकूट
बदायूं	5,168	24,48,338	बदायूं
बरेली	4,120	28,34,616	बरेली
पीलीभीत	3,499	12,83,103	पीलीभीत
शाहजहांपुर	4,575	19,87,395	शहजहांपुर
फैजाबाद	4,511	29,78,484	फैजाबाद
अम्बेदकरनगर	–	–	अकबरपुर
बहराइच	6,877	27,63,750	बहराइच
बाराबंकी	4,402	24,23,136	बाराबंकी
गोंडा	7,352	35,73,075	गोंडा
सुल्तानपुर	4,436	25,58,970	सुल्तानपुर
पौढ़ी गढ़वाल	5,438	6,82,535	पौड़ी
चमोली	9,126	4,54,871	चमोली
देहरादून	3,088	10,25,679	देहरादून
टेहरी गढ़वाल	4,421	5,80,153	नई टेहरी
उत्तरकाशी	8,016	2,39,709	उत्तरकाशी
गोरखपुर	3,325	30,66,002	गोरखपुर
देवरिया	2,613	21,43,745	देवरिया
कुशीनगर	2,832	22,96,279	पदरौना

महराजगंज	2,948	16,76,378	महराजगंज
बांदा	7,624	18,62,139	बांदा
हमीरपुर	4,098	8,98,362	हमीरपुर
जालौन	4,565	12,19,377	उरइ
ललितपुर	5,039	7,52,043	ललितपुर
महोबा	3,068	5,68,165	महोबा
झांसी	5,024	14,29,698	झांसी
कानपुर (शहरी)	1,065	24,18,487	कानपुर
कानपुर (ग्रामीण)	5,111	21,38,317	अकबरपुर
फर्रुखाबाद	4,274	24,40,266	फतेहगढ
इटावा	4,326	21,24,655	इटावा
लखनऊ	2,528	27,62,801	लखनऊ
हरदोई	5,986	27,47,082	हरदोई
लखीमपुर खेरी		7,680,24,19,234	खेरी
रायबरेली	4,609	23,22,810	रायबरेली
सीतापुर	5,743	28,57,009	सीतापुर
उन्नाव	4,558	22,00,397	उन्नाव
नैनीताल	6,794	15,40,174	नैनीताल
उधम सिंह नगर	3,358	9,14,861	रुद्रपुर
अल्मोड़ा	5,385	8,36,617	अल्मोड़ा
पिथौरागढ़	8,856	5,66,408	पिथौरागढ
बुलंदशहर	4,352	28,49,859	बुलंदशहर
मेरठ	3,911	34,47,912	मेरठ
गाजियाबाद	2,590	27,03,933	गाज़ियाबाद
गौतमबुद्ध नगर	1,501	1,46,514	नोयडा
मुरादाबाद	5,967	41,21,035	मुरादाबाद
बिजनौर	4,561	24,54,521	बिजनौर
रामपुर	2,367	15,02,141	रामपुर
ज्योतिबा फुलेनगर	2,470	13,29,554	अमरोहा

उत्तर प्रदेश
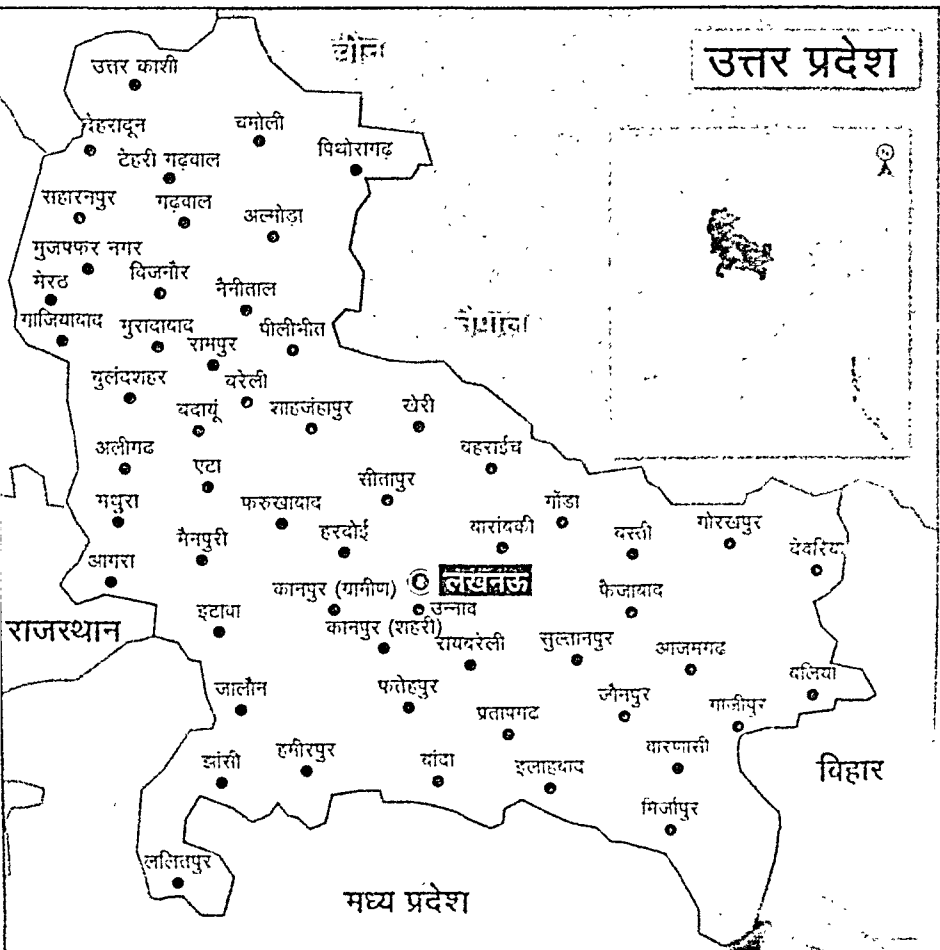
सहारनपुर	3,689	23,09,029	सहारनपुर
हरिद्वार	2,360	11,24,488	हरिद्वार
मुजफ्फरनगर	4,008	28,42,543	मुजफ्फरनगर
वाराणसी	4,036	37,82,949	वाराणसी
जौनपुर	4,038	32,14,636	जौनपुर
चंदौली	2,485	12,74,839	चंदौली
गाजीपुर	3,377	24,16,617	गाजीपुर
संतरविदासनगर	1,056	10,77,633	भदौही
मिर्जापुर	4,522	16,57,139	मिर्जापुर
सोनभद्रा	6,788	10,75,041	रावर्टसगंज
वस्ती	3,733	27,38,522	वस्ती
बलरामपुर	3,457	13,68,630	बलरामपुर
श्रावस्ती	2,186	9,23,377	श्रावस्ती
सिद्धार्थनगर	3,495	17,07,685	नवगढ
चंपावत	1,712	1,93,337	चंपावत
वागेश्वर	1,626	2,24,170	वागेश्वर
रुद्रप्रयाग	2,439	2,00,451	रुद्रप्रयाग
वागपत	1,345	10,30,399	वागपत
कन्नौज	2,058	11,55,847	कन्नौज
औरेया	2,054	10,00,035	औरेया
संत कबीरनगर	–	9,73,385	खलीलावाद

इतिहास

पुरातन काल में उत्तर प्रदेश मध्य देश का नाम से प्रसिद्ध था । ऋग्वेद के समय से कुछ संश्लिष्ट ऐतिहासिक वृतांत मिलता है । आर्यो ने सबसे पहले भारत में "सप्त-सिंधु" या सात नदियों द्वारा सिंचित प्रदेश (अविभाजित पंजाब) में वस्तियां बनायीं । वर्तमान उत्तर प्रदेश की सीमा लगभग यही है।ईसा पूर्व मगध राज्य सबसे सर्वाधिक शक्तिशाली साम्राज्य था। मगध में क्रमशः हरयांक, शिशुनाग और नन्द वंश का राज्य रहा ।नन्द वंश ने ई.पू. 343 से ई.पू. 321 तक राज्य किया ।

सिकन्दर की वापसी के साथ ही साथ भारत में एक महान क्रांति हुई, जिसके फलस्वरूप नन्द शासकों को (ईसा से 323 वर्ष पूर्व) शासन की वागडोर चन्द्रगुप्त को देनी पड़ी। चन्द्रगुप्त पिप्पलिवन के क्षत्रिकुल "मोरिया" का वंशज था । वर्तमान उत्तर प्रदेश का पूरा क्षेत्र चन्द्रगुप्त मौर्य, उसका पुत्र विन्दुसार और पोते अशोक के शासनकाल में सुख और शान्ति का अनुभव करता रहा ।

ईसा पूर्व 232 वर्ष में अशोक की मृत्यु होते ही मगध के राज्य का ह्रास प्रारम्भ हो गया ।

इसी वीच मगध में शुंग वंश के स्थान पर कण्व वंश की स्थापना हुई । कुषाण राज-वंश की स्थापना "कुजुल कदफिसेस" प्रथम ने की थी ।

ईसा वाद चौथी सदी में गुप्तवंश का प्रादुर्भाव होने पर भारत में राजनीतिक एकता फिर स्थापित हुई। त

आठवीं सदी के प्रथम चतुर्थांश में यशोवर्मन ने कन्नौज में अपना आधिपत्य जमा लिया था ।उसने लगभग पूरे भारत को जीत लिया

सन् 1206 में कुतुयुद्दीन ऐवक दिल्ली के सिंहासन पर वैठा और तभी से गुलाम वंश का प्रारम्भ हुआ। गुलाम वंश के राजाओं और उसके वाद खिलजियों तथा तुगलक वंश के वादशाहों ने धीरे-धीरे दिल्ली-वादशाहत की सीमा वढ़ायी । वर्तमान उत्तर प्रदेश का क्षेत्र लगभग प्रारम्भ से ही इन लोगों के साम्राज्य का अंग रहा ।

तैमूर की चढ़ाई ने तुगलक वंश का शासन समाप्त कर दिया।

मुगल-शासन-काल : वावर ने पानीपत की लड़ाई में सन् 1526 में लोधियों के अन्तिम वादशाह इब्राहिम लोदी को परास्त कर आगरा पर अधिकार कर लिया । वावर ने मुगल साम्राज्य की नींव रखी।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और उसके वाद : अवध के नवावों और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के वीच जैसे सम्वन्ध थे । सन् 1857 में विद्रोह में, जो राष्ट्र की आजादी के लिए लड़ा गया प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था, वर्तमान उत्तर प्रदेश के लोगों ने शानदार भूमिका अदा की । झांसी की रानी लक्ष्मीवाई, अवध की वेगम हजरत महल, वख्त खां, नाना साहव, मौलवी अहमदउल्ला शाह, राणा वेनी माधव सिंह, अजीमउल्ला खां तथा अन्य अनेक राष्ट्रभक्तों ने उक्त ऐतिहासिक संघर्ष में जिस कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया उससे वे अमर हो गया ।

दर्शनीय स्थल एवं मेले

युगों की प्राचीन परम्परा के इस देश में बहुत से ऐसे स्थान हैं, जिनका धार्मिक महत्व है। वहुत से ऐसे स्थल भी हैं, जिन्हें तीर्थ नहीं कहा जा सकता, पर ऐतिहासिक और पर्यटन की दृष्टि से उनका वड़ा महत्व है।

वदरीनाथ (जिला चमोली) – गंगाद्वार (हरिद्वार) से 384 कि.मी. की दूरी पर वदरीनाथ धाम है ।

केदारनाथ (जिला चमोली) – श्री केदारनाथ जी का मन्दिर समुद्र की सतह से लगभग 11,500 फुट की ऊंचाई पर केदारनाथ मंडल के अन्तर्गत स्थित है ।

वैजनाथ (जिला अल्मोड़ा) – अल्मोडा से 64 कि.मी. उत्तर की ओर स्थित यह स्थान वड़ा मनोहर है। मन्दिरों का एक समूह वैजनाथ सरोवर के तट पर है । मुख्य मन्दिर में पार्वती की मूर्ति स्थापित है ।

कण्वाश्रम (जिला गढ़वाल) – कण्वाश्रम को आजकल चौकीघाट कहते हैं। कण्वाश्रम से नन्दागिरि तक फैला परम पुनीत क्षेत्र सम्पूर्ण सांसारिक भोग और मोक्ष को देने वाला वदरीनाथ मण्डल कहा गया है ।

कटारमल (जिला अल्मोड़ा) – यह स्थान अल्मोड़ा से लगभग 14.4 कि.मी. पश्चिम की ओर स्थित है । अल्मोड़ा से 11.2 कि.मी. कोसी तक मोटर द्वारा जा सकते हैं । उत्तराखण्ड का प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर यहीं स्थित है । सूर्य की मूर्ति 12 वीं सदी की कृति है ।

शिव-पार्वती, लक्ष्मीनारायण और नृसिंह आदि की भी मूर्तियां हैं ।

द्वाराहाट (जिला अल्मोड़ा) – मन्दिर वहुल यह स्थान रानीखेत से 21 कि.मी. उत्तर की ओर स्थित है ।

लाखामण्डल – यह स्थान देहरादून से लगभग 128 कि.मी. दूर यमुना नदी के तट पर वसा है ।

हरिद्वार – हिन्दुओं की सबसे पवित्र नदी गंगा यहां से पर्वतीय प्रदेश छोड़कर मैदानों में प्रवेश करती है ।

कनखल (जिला सहारनपुर)– मायापुर हेडवर्क्स से लगभग डेढ़ कि.मी. की दूरी पर एक बहुत बड़े क्षेत्र में यह नगर बसा हुआ है । नगर का मुख्य मन्दिर 'दक्षेश्वर महादेव' दक्षिणी सीमा पर है । हनुमान जी का एक मन्दिर भी यहां है ।

भीमगोड़ा – हरिद्वार के आसपास के धार्मिक स्थलों में भीमगोड़ा कुण्ड भी है ।

ऋषिकेश – (जिला देहरादून) – भगवान शिव को यह सुन्दर स्थान बहुत प्रिय था, ऐसा विश्वास ऋषिकेश के बारे में लोगों में प्रचलित है ।

तपोवन (जिला टिहरी गढ़वाल) – कहा जाता है कि लक्ष्मण जी ने यहां तप किया था । लक्ष्मण झूला यहां का मुख्य आकर्षण है।

मसूरी (जिला देहरादून) – देहरादून से 35 कि.मी. दूर 6,500 फुट की ऊंचाई पर बसी मसूरी उत्तर प्रदेश की सर्वोत्तम पर्वतीय बस्ती है ।

नैनीताल – यहां के आकर्षणों में मुख्य हैं इसकी झील, जो काफी बड़ी और सुन्दर है ।

रानीखेत (जिला अल्मोड़ा) – इस पर्वतीय नगरी तक अल्मोड़ा और नैनीताल से भी आसानी से पहुंचा जा सकता है।

चकराता (जिला देहरादून) – यहां से हिम शिखरों के सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ते हैं ।

प्रयाग (वर्तमान इलाहाबाद) – प्रयाग भारत का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। प्रायः सभी धार्मिक ग्रन्थों में प्रयाग का उल्लेख मिलता है। यहां हर बारहवें वर्ष कुम्भ और छठे वर्ष अर्द्ध कुम्भ का मेला लगता है ।

अयोध्या (जिला फैजाबाद)– अयोध्या नगरी भारत की सप्तमहापुरियों में से एक है। इस नगरी को भगवान श्री राम का जन्म-स्थान होने का गौरव प्राप्त है ।

सोरों (जिला एटा) – सोरों या शूकर क्षेत्र की गणना भारत के पवित्र तीर्थों में होती है ।

वाराणसी (काशी) – यह भारत के ही नहीं, संसार के प्राचीनतम नगरों में एक है। यह नाम वरुणा और अस्सी, दो नदियों से मिलकर बना है ।

सारनाथ (जिला वाराणसी) – सारनाथ बौद्ध तीर्थों में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान रखता है ।

नन्दादेवी (जिला चमोली)– गौरीशंकर के बाद यह विश्व का सर्वोच्च शिखर है ।

देवबंद (जिला सहारनपुर) – मुजफ्फरनगर से 24 कि.मी. दूर देवबंद रेलवे स्टेशन है। यहां दुर्गाजी का मन्दिर है । मन्दिर के समीप देवीकुण्ड सरोवर है ।

शाकम्भरी देवी – यह मन्दिर सहारनपुर से 41.6 कि.मी. दूर है ।

गढ़मुक्तेश्वर (जिला गाजियाबाद) – मेरठ से 42 कि.मी. दूर गंगा के दाहिने तट पर स्थित गढ़मुक्तेश्वर प्राचीन काल में हस्तिनापुर नगर का एक मुहल्ला था ।

कौशाम्बी – यह बौद्ध तथा जैनों का प्रसिद्ध [illegible] है ।

विन्ध्याचल (जिला मिर्जापुर) – यहां विन्ध्यवासिनी देवी का प्रसिद्ध मन्दिर है ।

प्रदेश को पर्यटन में घाटा होगा

उत्तरांचल के गठन से शेष उत्तर प्रदेश को पर्यटन के लिहाज से नुकसान होगा। विभिन्न पर्यटक स्थल जो ज्यादातर उत्तरांचल क्षेत्र में ही हैं वे राज्य को खासी आमदनी कराते थे। पर उत्तरांचल के गठन के साथ ही उत्तर प्रदेश के हिस्से से ये पर्यटक स्थल निकल जाएंगे।

पहाड़ों की रानी मंसूरी, नैनीताल, बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमनोत्री, हरिद्वार और ऋषिकेश जैसे विभिन्न धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण समझे जानेवाले स्थल उत्तरांचल के ही हिस्से हैं। उत्तरांचल के ये सभी पर्यटक स्थल पर्यटकों खासकर विदेशी पर्यटकों को ज्यादा प्रिय हैं। कुल 25 से 30 फीसदी पर्यटक इन स्थानों को देखने आते हैं।

उत्तर प्रदेश के कुल 220 पर्यटक स्थलों में से 130 उत्तरांचल में चले जाएंगे। सिर्फ 90 पर्यटक स्थल ही उत्तर प्रदेश में बचेंगे।

प्रस्तावित राज्य में शामिल हरिद्वार में ही देश और विदेश के पर्यटकों का भारी संख्या में जमाव होता है। मौजूदा समय में वहां 31 लाख पर्यटक आते हैं।

उत्तर प्रदेश में पर्यटन से इस समय कुल छह हजार करोड़ रुपए की आय होती है जिसका 30 फीसदी योगदान अकेले उत्तरांचल से होता है। उत्तरांचल में फिलहाल नैनीताल, अल्मोड़ा, चंपावत, पिथौरागढ़ बागेश्वर, देहरादून, रुद्र प्रयाग, उत्तर काशी, चमोली, टेहरी गढ़वाल, पौड़ी गढ़वाल, ऊधम सिंह नगर और हरिद्वार जिले हैं। इनमें से कृषि की दृष्टि से संपन्न ऊधमसिंह नगर को छोड़कर सारे के सारे जिले पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग ने ऋषिकेश और हरिद्वार में क्रमशः योग और आयुर्वेद पर आधारित पर्यटन संबंधी गतिविधियां शुरू की हैं जो उत्तरांचल के गठन के बाद उत्तर प्रदेश के हाथ से निकल जाएंगे। नवीन पर्यटन नीति के तहत अगले दस वर्षों में विदेशी पर्यटकों की संख्या बढ़ाकर तीस फीसदी और देशी पर्यटकों की संख्या बढ़ाकर दस करोड़ वार्षिक की गई है। यह लक्ष्य उत्तरांचल के गठन के बाद पूरा हो पाना संभव नहीं।

देवीपाटन [illegible] – यहां पाटेश्वरी देवी [illegible] मन्दिर है

मगहर [illegible] – कबीरदास ने यहीं [illegible]

श्रावस्ती [illegible] बहराइच) – [illegible]

बहराइच [illegible] से लगभग 50 [illegible]

मथुरा – [illegible]

[illegible] मथुरा [illegible] ।

वृन्दावन (जिला मथुरा)

[illegible] है ।

गोवर्धन (जिला मथुरा)

[illegible] है ।

बरसाना (जिला मथुरा) – बरसाना गोवर्धन से 24 कि.मी. उत्तर कोसी (आगरा–दिल्ली सड़क पर) के 16 कि.मी. दक्षिण में स्थित है ।

चित्रकूट (जिला बांदा) – मानिकपुर रेलवे लाइन द्वारा चित्रकूट लगभग 80 कि.मी. दक्षिण पूर्व में स्थित है ।

फतेहपुर–सीकरी (जिला आगरा) – आगरा से 40 कि.मी. दूर स्थित इस स्थान में प्रसिद्ध संत शेख सलीम चिश्ती का मकबरा है ।

लखनऊ – जनश्रुति है कि इस नगर को भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण ने बसाया था और इसका प्राचीन नाम लक्ष्मणपुरी था। यहां एक पुराना टीला है, जो लक्ष्मण टीला के नाम से प्रसिद्ध है । लखनऊ को सबसे अधिक प्रसिद्धि नवाबों के समय मिली। आसफुद्दौला ने रूमी दरवाजा और इमामबाड़ा बनवाया । आसफी मस्जिद, दौलतखाना, रेजीडेंसी विबियापुर कोठी और चौक बाजार का निर्माण भी आसफुद्दौला ने ही करवाया था ।

देवा शरीफ (जिला बाराबंकी) – बाराबंकी से लगभग 24 कि.मी. दूर स्थित देवा में प्रसिद्ध सूफी सत हाजी वारिस अली शाह की मजार है ।

बहराइच – यहां सैयद सालार मसूद गाजी की दरगाह है। यह महमूद गजनवी के साथ भारत आया था ।

लैंसडाउन (जिला पौड़ी गढवाल) – कोटद्वार से 45 कि.मी. दूर स्थित इस पर्वतीय नगरी से बदरीनाथ खंड के हिम–शिखरों के दृश्य दिखलाई पड़ते हैं ।

अल्मोड़ा – यहा कश्यप पर्वत पर कौशिकी देवी का मन्दिर है। पुराणों के अनुसार शुम्भ–निशुम्भ का नाश करने के लिए पार्वती जी के शरीर से कौशिकी देवी प्रकट हुई थी ।

पिंडारी ग्लेशियर (जिला अल्मोडा) – यह सौंदर्य स्थल अल्मोडा जिले मे 3943 मीटर की ऊचाई पर स्थित है।

गंगोत्री – 3 140 मीटर की ऊचाई पर स्थित गगोत्री मन्दिर उस पावन शिला के निकट निर्मित है जहा महाप्राण राजा भागीरथ महादेव भगवान की आराधना किया करते थे तथा जहां सर्वप्रथम भागीरथी स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरित हुई थी ।

यमुनोत्री – यह स्थान बदरपूछ नामक उन्नत शिखर के पश्चिमी किनारे पर स्थित है जो समुद्र तल से 4,421 मीटर ऊंचा है। यह पर्वत शिखर हमेशा बर्फ से आच्छादित रहता है। हनुमान गंगा तथा टोंस नामक नदियों का जल निर्गम क्षेत्र यही है ।

कन्नौज – इस नगर और इस जनपद का प्राचीन नाम कान्यकुब्ज था ।

जयचन्द के किले के अवशेष – राजा जयचन्द के किले के अवशेष एक दर्शनीय स्थल है।

कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान – उत्तर प्रदेश के उत्तर में हिमालय एवं शिवालिक पर्वत श्रेणियों के अचल में प्रवाहित राम गंगा के दोनों ओर स्थित कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान अपने अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य एवं वन्य प्राणियों के बाहुल्य के लिए विश्वविख्यात है । कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना सन् 1935 में की गई ।

कृषि

कृषि के लिए भूमि एक अति आवश्यक किन्तु सीमित संसाधन है। कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोगों हेतु भूमि की निरन्तर बढ़ती मांग के कारण कृषि क्षेत्र का विस्तार किया जाना सम्भव प्रतीत नहीं होता है। वर्ष 1996–97 में प्रदेश में खाद्यान्न उत्पादन का 423 75 लाख मी टन का हुआ।

सिंचाई कृषि उद्यम का प्रमुख एव अति महत्वपूर्ण निवेश है । उत्तर प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्रफल 294.4 लाख हे. में से कृषि योग्य क्षेत्रफल 203 लाख हे है। प्रदेश का शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 173 लाख हे है, जिसमें से 84 लाख हे दो फसली है।

उद्योग

उदारीकरण की नीति कार्यान्वित होने के फलस्वरूप अगस्त, 1991 से मार्च, 1997 तक उत्तर प्रदेश के लिए कुल 1,897 इच्छापत्र तथा 53 आशयपत्र, जिनमे पूंजी निवेश रु 65 664 करोड़ प्रस्तावित है, दाखिल हो चुके है। इनमे से 591 इकाइयां कुल पूजी निवेश रु. 14,165 करोड से स्थापित हो चुकी है और 1,09,391 व्यक्तियों के लिए रोजगार की व्यवस्था हो चुकी है तथा 301 इकाइयां प्रभावी कार्यान्वयनाधीन है। इनमें पूंजी निवेश रु. 11,076 करोड प्रस्तावित है तथ 59,442 व्यक्तियों के लिए रोजगार सृजन की भी प्रस्तावना है।

विश्वविद्यालय

अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़; इलाहाबद विश्वविद्यालय, बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय, लखनऊ, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय; बुंदलखंड विश्वविद्यालय, झासी, छत्रपति साहुजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, सेट्रल इस्टीट्यूट आफ हायर तिब्बतन स्टडीज, वाराणसी, चौ. चरण सिह विश्वविद्यालय, मेरठ; चंद्रशेखर आजाद युनिवर्सिटी आफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नालोजी, कानपुर; दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा; दीन दयाल उपाध्या गोरखपुर विश्वविद्यालय; डा. भीमरा[illegible] अम्बेदकर विश्वविद्यालय, आगरा; डा. राम मनोहर लोहि[illegible] अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद; फारेस्ट रिसर्च इंस्टीट[illegible] देहरादून; गोविंद वल्लभ पत युनिवर्सिटी आफ एग्री[illegible] एड टेक्नालोजी, पतनगर; गुरुकुल कांगड़ी विश्ववि[illegible] हरिद्वार, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्व[illegible] श्रीनगर, इडियन इस्टीट्यूट आफ टेक्नालोजी, इडियन वेटिनेरी रिसर्च इंस्टीट्यूट, इज्जतनग[illegible] विश्वविद्यालय, नैनीताल; लखनऊ विश्वविद्याल[illegible] रोहिखड विश्वविद्यालय, बरेली; नरेंद्रदेव युनि[illegible] एग्रीकल्चर एड टेक्नालोजी, फैजाबाद; महात[illegible] विद्यापीठ, वाराणसी, पूर्वांचल विश्वविद्या[illegible] रुढकी विश्वविद्यालय; सपूर्णानंद संस्कृत [illegible] वाराणसी, सजय गांधी पोस्ट ग्रेजुएट [illegible] मेडिकल साइसेज, लखनऊ।

राज्यपाल : सूरज भान

मुख्य मंत्री : राम प्रकाश गुप्ता ([illegible]

बिहार

क्षेत्रफल: 173,877 वर्ग किमी; राजधानी: पटना; भाषा: हिन्दी; जिले: 55; जनसंख्या: 86,338,853; पुरुष: 45,147,280; महिलायें: 41,191,573; वृद्धि: (1981–91): 16,424,119; वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91: 23.49; जनसंख्या घनत्व: 497; शहरी जनसंख्या: 13.14%; लिंगानुपात (महिलायें प्रति हजार पुरुष) : 912; साक्षरता: 38.54; पुरुष: 52.63; महिलायें: 23.10; 1991 की जनगणना की अंतिम जनसंख्या: 86,374,465; समुद्रतल से ऊंचाई: 173 फीट (53 मीटर)।

भू–आकृति

भारत के पूर्वी भाग में स्थित बिहार देश का सबसे ज्यादा आबादी वाला दूसरा राज्य है। इसकी स्थिति उत्तर में 27° 00′ से 27° 31′ तथा पूर्व में 83° 20′ से 88° 17′ के मध्य है। यह राज्य उत्तर से दक्षिण की ओर 695 कि.मी. के क्षेत्र में फैला हुआ है जबकि पूर्व से पश्चिम की दिशा में इसकी चौड़ाई 483 कि.मी. है। उत्तर में नेपाल, पश्चिम में उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश, दक्षिण में उड़ीसा तथा पूर्व में प. बंगाल से घिरा बिहार आकृति में चतुर्भुजाकार है।

कृषि

भारत के अन्य राज्यों की भांति राज्य की लगभग तीन-चौथाई जनसंख्या कृषि एवं पशुपालन सम्बन्धी व्यवसायों पर निर्भर है।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्गकि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
अररिया	2,796.8	16,11,638	अररिया
औरंगाबाद	3,389.2	15,39,988	औरंगाबाद
बेगुसराय	1,889.1	18,14773	बेगुसराय
भागलपुर	2,501.9	32,047	भागलपुर
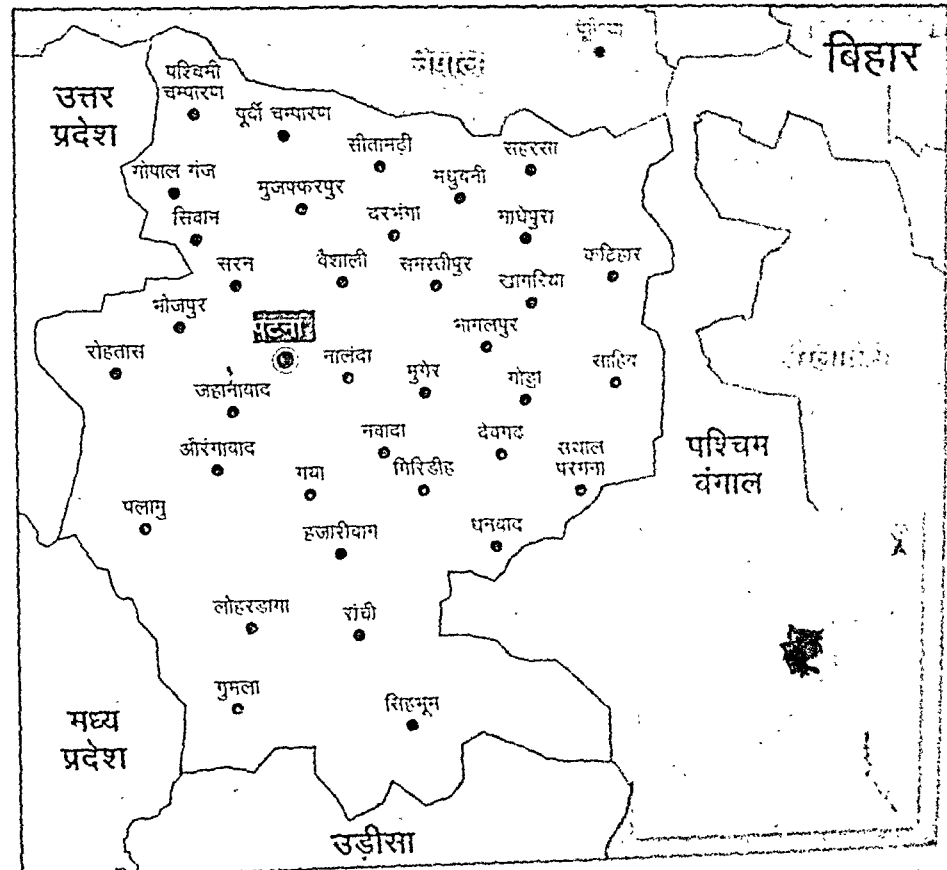
बांका	3,020.2	12,92,504	बांका
भोजपुर	2,337	28,80,447	अरराह
बक्सर	1,633.6	10,87,676	बक्सर
भाभुआ	1,840,.3	9,83,269	भाभुआ
बोकारो	2,860.9	14,54,416	बोकारो
छत्रा	3,700.2	6,12,713	छत्रा
दरभंगा	2,502	25,10,959	दरभंगा
देवघर	2,478.6	9,33,113	देवघर
धनबाद	2,074.8	26,74,652	धनबाद
दुम्का	5,518.2	14,95,709	दुम्का
पूर्वी चम्पारण	4,1154.8	30,43,061	मोतीहारी
पूर्वी सिंहभूमि	3,533.3	16,13,088	जमशेदपुर
गया	4,941	26,64,803	गया
गिरिडीह	4,887	22,25,480	गिरिदीह
गोड्डा	2,110.4	8,61,182	गोड्डा
गोपालगंज	2,009.2	17,04,310	गोपालगंज
गुमला	1,932.8	11,53,976	गुमला
गरवा	4,063.5	8,01,350	गरवा
हजारीबाघ	7,277.1	8,43,544	हजारीबाघ
जहानाबाद व अरवाल	1,569.3	11,74,9001	जहानाबाद
जामुई	2,996.5	10,51,527	जामुई
कोशी	1,195.6	2,47,525	सहरसा
कटिहार	3,009.9	18,25,380	कटिहार
खगड़िया	1,485.8	9,87,227	खगड़िया
किशनगंज	1,938.5	1,84,107	किशनगंज
कोडर्मा	2,410	6,29,264	कोडर्मा
लोहारडागा	2,835.4	2,88,886	लोहारडागा
माधेपुर	1,797.4	11,77,708	माधेपुर
मधुवनी	3,4778	28,32,024	म धुवनी
लखिसराय/ मंगेर/शेखपुरा	3,302.2	30,60,027	लखिसराय
मुजफ्फरपुर	3,122.7	29,53,903	मुजफ्फरपुर
नालंदा	2,361.7	19,97,995	विहारशरीफ
नवादा	2,497.5	13,59,694	नवादा
पालामु	7,975.8	23,51,191	डाल्टनगंज
पाकुर	1,805	5,6਼4,253	पाकुर
पटना	3,130.1	36,18,211	पटना
पूर्णिया	3,202.3	18,78,885	पूर्णिया
रांची	7,973.8	22,14,080	रांची
रोहतास	3,838.2	2,90,685	सासारा
साहबगंज	3,405.6	–	साहबगंज
समस्तिपुर	2,578.7	–	समस्तिपुर
सारण	2,624.1	25,72,980	छपरा
सीतामढ़ि/सिहोर	2,627.7	23,91,495	सीतामढ़ि
सिवान	2,213	2,17,097	सिवान
सुपौल	2,984.9	–	सुपौल
वैशाली	1,995.3	21,46,065	हाजीपुर
प. चम्पारण	4,249.9	23,33,666	वेटिया
प. सिंहभूमि	8,012	17,87,955	छैवासा

बिहार में सबसे महत्वपूर्ण खाद्यान्न फसल है। पश्चिमी बिहार में गेहूं भी मुख्य फसल है। इसके अतिरिक्त मक्का, जौ, ज्वार, बाजरा, चना, सरसों, अन्य दालें, तिलहन तथा व्यवसायिक फसलों में गन्ना, जूट यहां सबसे मुख्य फसलें है कहीं तम्बाकू, आलू, रेण्डी, अलसी, सनई, लालमिर्च, अन्य मसाले, आम, चीनी, अमरूद, टमाटर, पपीता, नारंगी, केला आदि फल एवं मौसमी सब्जियां पैदा की जाती हैं। राज्य में कुल 105.1 लाख हैक्टेयर भूमि खेती के योग्य है।

सिंचाई

राज्य में नहरों, तालाब या तालों, नलकूपों एवं सामान्य कुओं आदि साधनों से मुख्यतः सिंचाई की जाती है।

खनिज

राज्य का दक्षिणी क्षेत्र जो छोटानागपुर पठारी क्षेत्र के रूप में जाना जाता है, में खनिज सम्पदा की बहुलता है। देश में पाये जाने वाले खनिजों का 25% भंडार इस राज्य में विद्यमान है। कोयला, लौह अयस्क, ताम्र अयस्क, यूरेनियम, चुना-पत्थर, बॉक्साइट, डोलोमाट, फायरक्ले, चीनी मिट्टी, पायराइट, ग्रेफाइट, कायनाइट, अभ्रक, फेल्सपार, क्वार्टज, मैगनेटाईट, सौप स्टोन, तुफालाइम, वेन्टो-नाईट, प्लौन्ट-स्टोन, स्लेट एवं मार्वल खनिज के भण्डार उपल्यध हैं।

विश्वविद्यालय

बी.एन. मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा; बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर; बिड़ला इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालोजी, रांची; बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची; हिंदी विद्यापीठ, देवगढ़; इंडियन इंस्टीट्यूट आफ माइन्स, धनबाद; जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा; कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा; ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा; मगध विश्वविद्यालय, बोधगया; नालंदा खुला विश्वविद्यालय, पटना; पटना विश्वविद्यालय; राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय पूसा, रांची; रांची विश्वविद्यालय; सिद्धु कान्हु विश्वविद्यालय, दुमका; तिल्का मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय; वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आराह; विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग। अरबी और फारसी के विकास के लिये हाल ही में मौलाना आजाद विश्वविद्यालय का गठन किया गया है।

राज्यपाल: विनोद पांडे

मुख्य मंत्री: रावड़ी देवी (जनता दल)

अरुणाचल प्रदेश

क्षेत्रफल: 83,743 वर्ग कि.मी.; राजधानी: ईटानगर; जिले: 13; जनसंख्या: 8,64,558; पुरुष: 4,61,242; महिलाएं : 3,97,150; वृद्धि: (1981-91): 226,553; वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981-91: 35.86; जनसंख्या घनत्व: 10; शहरी जनसंख्या: 12.80%; भाषायें: मोंपा, अका, मिजी, शर्दुकमेन, निशि, अपतनी, हिल मिरि तगिन, अदी, इदु, दिगारु, मिजि, खम्पटी, सिंगफू,
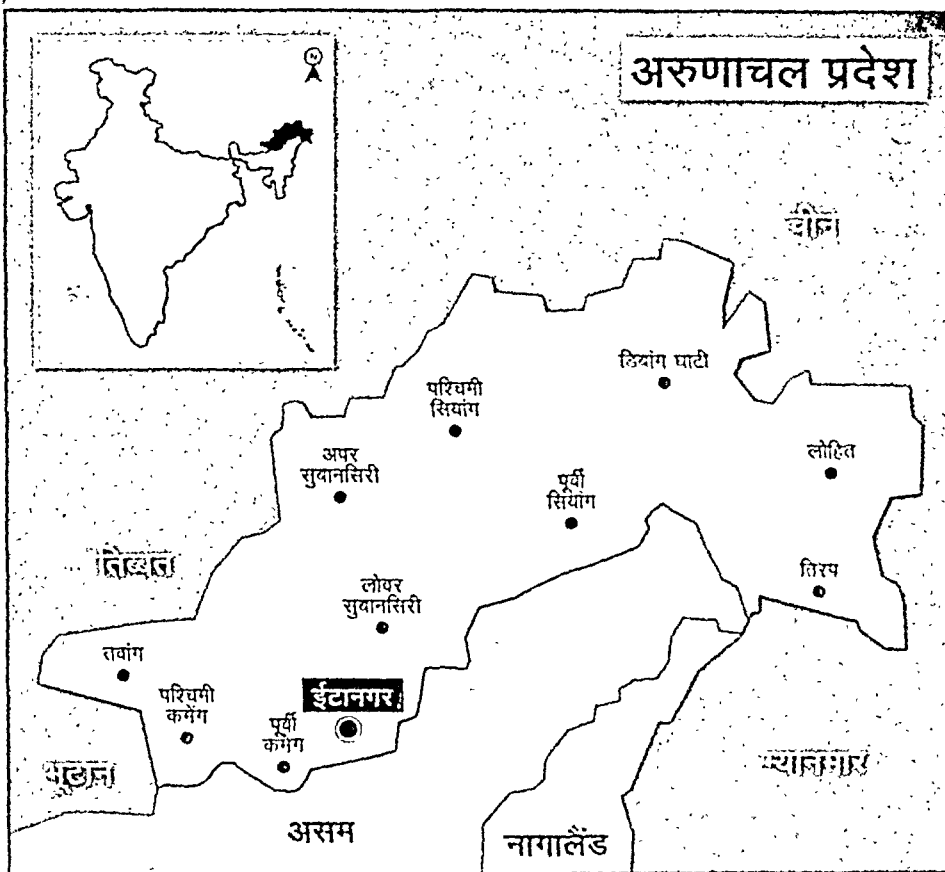
तंगसा, नोक्टे, वान्चू; लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष): 861 साक्षरता: 41.22%; पुरुष: 51.10%: महिलाएं : 29.37% ; प्रतिव्यक्ति आय: 4176; 1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या: 864,558

अरुणाचल प्रदेश (उषाकालीन प्रकाश वाले पर्वतों का देश) विरल जनसंख्या वाला पहाड़ी क्षेत्र है। इसके पश्चिम में भूटान, उत्तर में चीन, पूर्व में बर्मा और दक्षिण में असम राज्य है ।

भू–आकृति: अरुणाचल प्रदेश पूरा पहाड़ी देश है । केवल असम के निकटवर्ती भाग में समतल मैदान की एक संकरी–सी पट्टी है । इस राज्य के दो–तिहाई भाग पर घने वन हैं ।

अरुणाचल प्रदेश की जनसंख्या मुख्यतः जनजातियों की है। सभी जनजातियों के कबीले अनुसूचित जनजातियों की सूची में सम्मिलित हैं। 1981 की जनगणना के अनुसार इस राज्य की 79 प्रतिशत जनसंख्या अनुसूचित जनजातियों की है। प्रमुख कबीले हैं – अदी, निशी, अपतनी, तागिन, मिरमी, खम्पटी, नोक्टे, वान्चू, तंगसा, सिंगफू, मोंपा, शर्दुकपेन, अका आदि ।

इतिहास: पहले अरुणाचल प्रदेश को नार्थ–ईस्ट फ्रंटियर एजेन्सी (नेफा) कहा जाता था और 1948 में यह संघ सरकार के प्रशासनाधीन आया। 20 जनवरी 1972 को इसे अरुणाचल प्रदेश के नाम से एक संघ शासित प्रदेश बना दिया गया। फिरवरी 1986 में यह भारत संघ का एक राज्य बन गया ।

इस प्रांत में 13 जिले हैं । इसकी राजधानी ईटानगर है जो लोअर सुबनसिरी जिले में है ।

जिले

जिला	जनसंख्या (1991)	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	मुख्यालय
पश्चिमी कमांग	56,421	7,422	बोमडीला
पूर्वी कमांग	50,395	4,134	सेप्पा
लोअर सुबनसिरी	83,167	10,125	जीरो
अपर सुबानसिरी	50,086	7,032	दापोरिजो
पश्चिमी सियांग	89,936	8,325	एलांग
दिबांग घाटी	43,068	13,029	[illegible]
लोहित	1,09,706	11,402	[illegible]
तिरप	85,508	2,362	[illegible]

तावांग	28,287	2,172	तावांग
चांगलांग	95,530	4,662	चांगलंगा
पाउम पारे	72,811	2,875	ईटानगर
पूर्वी सियांग	4,005	71,864	पासीघाट
अपर सियांग	6188	27,779	यिंगकियोंग

प्रशासन: 15 अगस्त 1975 को अरुणाचल की प्रादेशिक परिषद को विधान सभा में परिवर्तित कर दिया गया और एक मंत्रि परिषद भी गठित कर दी गई।

अर्थव्यवस्था: विद्युतीकृत ग्राम– 50%, विद्युत उत्पादन – 27,075 किलोवाट, राष्ट्रीय राजमार्ग की लंबाई – 330 किलोमीटर, शहर – 12, प्रति फोन पर व्यक्ति – 117.5, मंदी – 10.3%.

अरुणाचल की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या का उद्यम कृषि है। कृषि की परंपरागत विधि 'झूम कृषि' कहलाती है। इस वात की जोरदार कोशिश की जा रही है कि यहां के लोग झूम कृषि की परंपरा छोड़ दें। मुख्य फसलें चावल, मक्का, मिलेट, गेहूं और सरसों हैं।

राज्य का 61,000 वर्ग कि.मी. भूमि वन हैं, जो राज्य की आय का एक महत्वपूर्ण साधन है।

इस राज्य में वन उत्पाद पर आधारित उद्योगों की वड़ी संभावनाएं हैं। मध्यम दर्जे के और छोटे पैमाने के वहुत–से उद्योग स्थापित किये गए हैं जिनमें आरा मिलें, प्लाइवुड और मुलम्मा, चावल मिलें, फल परिरक्षण और कोल्हू सम्मिलित हैं। इनके अलावा हथकरघा और दस्तकारी उद्योग भी हैं।

विश्वविद्यालय: अरुणाचल विश्वविद्यालय, इटानगर

पर्यटक केंद्र: ईटा किले के अवशेष, तवांग में प्राचीन वौद्ध मठ, मलिनितन व विस्माक नगर के पुरातत्वीय केंद्र और नन्दपा वन्य जीवन विहार प्रमुख पर्यटक केंद्र हैं।

राज्यपाल: एस. अरविंद दवे

मुख्य मंत्री: मुटकुट मिटि (भा.रा. कांग्रेस)

असम

क्षेत्रफल: 78,438 वर्ग कि.मी.; **राजधानी:** दिसपुर; **जिले:** 23; **जनसंख्या:** 22,414,322; **पुरुष:** 11,579,693; **महिलाएं:** 10,714,869, **वृद्धि दर** 1981–91: अ. उपलब्ध; **वृद्धि दर प्रतिशतता** 1971–'91: 52.44; **जन घनत्व:** 284; **भाषा:** असमिया, **लिंगानुपात** (महिलाएं प्रति पुरुष): 925, **साक्षरता:** 53.42%; **पुरुष:** 62.34%; **महिलाएं:** 43.70%; **प्रतिव्यक्ति आय** (89–90): 3179 रु.; **1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या:** 22,414,322

असम शब्द के उद्भव के वारे में विद्वान एकमत नहीं है। कुछ का कहना है कि पहाड़ों और घाटियों के कारण यहां की भूमि सम नहीं है। इसीलिए इसका नाम असम पड़ा। उन्होंने संस्कृत के 'असम' शब्द को अपने तर्क का आधार वनाया है।

भू–आकृति: भौगोलिक दृष्टि से असम अपने पूर्ववर्ती आकार से वहुत छोटा हो गया है। पिछले 20 वर्षों में इसका आकार एक–तिहाई रह गया है। 1947 में असम का क्षेत्रफल 2 लाख वर्ग कि.मी. से भी अधिक था – तत्कालीन नेफा और वर्तमान अरुणाचल प्रदेश को छोड़कर। आज असम का कुल क्षेत्रफल 78,438 वर्ग कि.मी. है।

1947 में भारत के विभाजन के समय असम का सिलहट जिला (वस करीमजंग सव–डिवीजन के अधिकांश भाग को छोड़कर) पूर्वी पाकिस्तान में (जो अव वंगलादेश है) चला गया।

जिस रूप में [illegible]

– वराक घाटी

असम में व्रह्मपुत्र की वड़ी प्रमुखता है। यह नदी अपने उद्गम से 2900 कि.मी. की यात्रा करके समुद्र तक पहुंचती है। लगभग 9,35,500 वर्ग कि.मी. क्षेत्र का जल वहकर इस नदी में आता है। इसकी 120 सहायक नदियां हैं।

असम संसार में सवसे अधिक वर्षा वाले स्थानों में से एक है। यहां 178 से.मी. से 305 से.मी. तक वर्षा होती है। सारी वर्षा जून से सितंवर तक चार महीनों में होती है।

इतिहास: असम में अनेक नस्लों के लोग अपनी पृथक सभ्यता और संस्कृति लेकर आते और वसते रहे। अनेक मार्गों से आस्ट्रो–एशियाई, नेग्रिटो, द्रविड़, अल्पाइन, इंडो–मंगोल, तिव्वती–वर्मी और आर्य नस्लों के लोग असम में आये और अपने ढंग से उन्होंने एक ऐसे मिश्रित समुदाय का निर्माण किया जिसे वाद के इतिहास में आसामी नाम दिया गया। फिर भी, असम मुख्यत: तिव्वती–वर्मी नस्ल वालों का देश रहा।

13 वीं शताब्दी में ऊपरी इरावदी घाटी में वसे शान कवीले के राजा सुकाफा के नेतृत्व में अहोमों ने असम पर अधिकार कर लिया।

अहोमों ने कामरूप पर शासन करने के लिए भरफाकन (वायसराय) नियुक्त किए और गोहाटी इन वायसरायों की राजधानी वन गया। अंतिम वायसराय का नाम वदनचंद्र था। वर्मावासियों ने अहोमों को सत्ता से हटा दिया और उनके वायसराय वदनचंद्र को पदच्युत कर दिया।

अंग्रेजों ने कई लड़ाइयों में (प्रथम अंग्रेज–वर्मा युद्ध के दौरान) वर्मा को पराजित किया। 1826 में यदावू की संधि हो गई। 1832 में कचार को असम में मिला दिया गया और 1835 में जयन्तिया पहाड़ियों को असम में सम्मिलित कर लिया गया। 1839 में अपर असम को वंगाल के साथ मिला दिया गया। 1874 में एक चीफ कमिश्नर के अधीन असम को एक अलग प्रान्त वना दिया गया, जिसकी राजधानी शिलांग थी।

1905 में वंगाल के विभाजन पर असम को एक लेफ्टीनेंट गवर्नर के अधीन वंगाल के पूर्वी जिलों के साथ मिला दिया गया। 1912 में असम को पुन: एक चीफ कमिश्नर के अधीन रखा दिया गया। वाद में 1921 से इस प्रांत के शासन के लिए गवर्नर नियुक्त होने लगा।

1951 में उत्तरी कामरूप की देवनगिरि क्षेत्र भूटान को दे दिया।

1948 में सुरक्षा की दृष्टि से नार्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेन्सी (नेफा) को असम से पृथक कर दिया गया। 1963 में असम राज्य के क्षेत्र में से ही एक नया राज्य नागालैंड वना दिया गया। 21 जनवरी 1972 को असम के इलाके लेकर मेघालय नामक नया राज्य और मिज़ोरम संघ शासित प्रदेश वनाए गये।
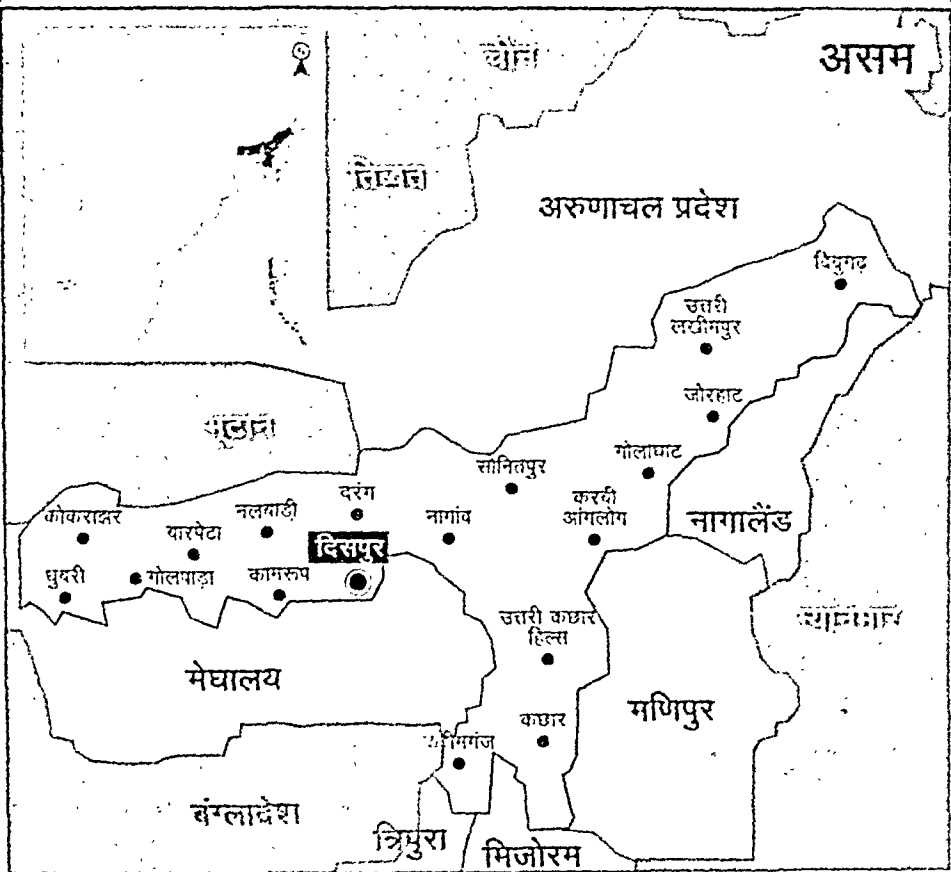
प्रशासन: इस राज्य के विधान मंडल एक सभा विधान सभा है। राज्य 23 जिलों में बंटा हुआ है।

जिले

जिला	जनसंख्या (1991)	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	मुख्यालय
बारपेटा	1,382,715	3,245	बारपेटा
बोंगाइगांव	806,472	2,510	बोंगाइगांव
कछार	1,215,952	3,786	सिलचर
दरंग	1,286,633	3,481	मंगलदोई
धेमाजी	472,183	3,237	धेमाजी
धुबरी	1,325,653	2,838	धुबरी
डिब्रूगढ़	1,038,090	3,381	डिब्रूगढ़
गोलपाड़ा	661,801	1,824	गोलपाड़ा
गोलाघाट	801,740	3,502	गोलाघाट
हैलाकांडी	448,506	1,327	हैलाकांडी
जोरहाट	6,68,445	2,851	जोरहाट
कामरूप	1,987,662	4,345	गोहाटी
करबी आंगलोंग	6,55,415	10 434	दिफू
करीमगंज	8,25,551	11 809	करीमगंज
कोकराझार	7,96,880	3 129	कोकराझार
लखीमपुर	7,49,675	2 277	लखीमपुर
मारीगांव	6,40,376	1 704	मारीगांव
नागांव	1,892,087	3 831	नागांव
उत्तरी कछार हिल्स	1,49 346	4 888	हाफलांग
नलबाड़ी	1,012 608	2,257	नलबाड़ी
शिवसागर	895 112	2,668	शिवसागर
सोनितपुर	1 418 464	5,324	तेजपुर
तिनसुकिया	963 173	3,790	तिनसुकिया

अर्थ व्यवस्था: विद्युतीकृत ग्राम – 21,845, औद्योगिक रोजगार - 1 21 लाख औद्योगिक इकाइयां – [illegible] विद्युत उत्पादन - 534 4 मेगावाट, घरेलू [illegible] प्रति फोन पर व्यक्ति 276 3, सड़क लंबाई – [illegible] किलोमीटर नदी - 9 0%

असम राज्य खनिजों की दृष्टि से [illegible] तेल के उत्पादन में इस राज्य की एक [illegible]

कृषि

कृषि आधारित उद्योगों में चाय का महत्वपूर्ण स्थान है। राज्य में लगभग 750 चाय बागन हैं। विश्व के कुल चाय उत्पादन में असम का योगदान 15.6% है।देश में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस के कुल उत्पादन में इस राज्य के पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस उत्पादों का बड़ा हिस्सा है। इस राज्य में दो तेल शोधन कारखाने हैं और पेट्रोरसायन काम्पलेक्स सहित तीसरा तेल शोधन कारखाना बना रहा है। कामरूप में सरकारी क्षेत्र का एक उर्वरक कारखाना भी है। इस राज्य के अन्य उद्योग हैं – चीनी, जूट, रेशम, कागज, प्लाईवुड, चावल और चावल मिलें। महत्वपूर्ण कुटीर उद्योगों में हथकरघा, रेशमकीट पालन, बेत और बांस की वस्तुएं वढ़गिरी, लोहारी और पीतल के बर्तन उद्योग हैं।सुआलकुची में एक निर्यात उन्मुख हथकरघा परियोजना आरंभ कर दी गई है।

पर्यटक केंद्र: पर्यटन हाल में ही आरंभ हुआ है। भारत सरकार ने इस राज्य के लिए दो यात्रा–परिपथों की मंजूरी दे दी है – 1. गौहाटी – काजीरंगा – सिवसागर, 2. गौहाटी – मानस।

विश्वविद्यालय: असम कृषि विश्वविद्यालय; असम विश्वविद्यालय, सिल्चर; दिब्रुगढ़ विश्वविद्यालय गौहाटी; विश्वविद्यालय, गौहाटी इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालोजी, तेजपुर विश्वविद्यालय तेजपुर।

राज्यपाल: ले.जनरल (अवकाश प्राप्त) एस.के. सिन्हा

मुख्य मंत्री: पी.के मंहता (ए.जी.पी.)

आंध्र प्रदेश

क्षेत्रफल: 275,068 वर्ग कि.मी.; **राजधानी:** हैदराबाद; **भाषा:** तेलुगू और उर्दू; **जिले:** 23; **जनसंख्या:** 66,508,008; **पुरुष:** 33,623,738; **महिलाएं:** 32,681,116; **वृद्धि** (1981–91): 12,755,181; **वृद्धि दर (प्रतिशत)** 1981–91: 23.82; **जनसंख्या. घनत्व:** 242; **शहरी जनसंख्या:** 26.89%; **लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष):** 972; **साक्षरता:** 45.11%; **पुरुष:** 56.24%; **महिलाएं:** 33.71%; **प्रति व्यक्ति आय:** 4507 रु.; **1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या:** 66,508,008।

भू–आकृति: आंध्र प्रदेश क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों दृष्टि से भारत का पांचवां सबसे बड़ा राज्य है। इसके उत्तर में मध्य प्रदेश और उड़ीसा, पूर्व में बंगाल की खाड़ी, दक्षिण में तमिलनाडु और कर्नाटक और पश्चिम में महाराष्ट्र है।

राज्य की प्रमुख नदियां कृष्णा और गोदावरी हैं। अन्य महत्वपूर्ण नदियां हैं: पेण्णार, वंशधारा और नागवली।

इतिहास: इस राज्य, के निवासियों और यहां की भाषा तीनों का नाम आंध्र है – हालांकि कालांतर में यहां की भाषा का नाम तेलुगू हो गया।

आंध्र प्रदेश के लोग मूलत: आर्य नस्ल के हैं। जब वे विंध्याचल के दक्षिण की ओर पहुंचे, तो उनका मिश्रण गैर–आर्य नस्ल के लोगों के साथ हो गया।

13 वीं शताब्दी में आंध्र प्रदेश पर काकतीयों का प्रभुत्व था। उनकी राजधानी वारंगल थी। 1323 में दिल्ली के तुगलक सुल्तान ने काकतीय शासक को बंदी बना लिया।

गोलकुंडा के कुतुबशाही सुल्तान ने हैदराबाद के आधुनिक शहर की नींव रखी। सम्राट औरंगजेब ने कुतुबशाही सुल्तान को हरा दिया और आसफ को दक्षिण का गवर्नर नियुक्त कर दिया। जब औरंगजेब के उत्तराधिकारियों के समय में मुगल साम्राज्य लड़खड़ाने लगा, तो आसफलशाही ने निज़ाम की उपाधि धारण कर अपने को स्वाधीन शासक घोषित कर दिया।

आंध्र प्रदेश, भारत में विशुद्ध भाषायी आधार पर बनने वाला पहला राज्य है। जब भारत स्वतंत्र हुआ, उस समय आंध्रवासी अर्थात तेलुगू भाषी लोग लगभग 21 जिलों में बंटे हुए थे। जिनमें से 9 जिले निज़ाम के राज्य में थे और 12 जिले मद्रास प्रेसीडेन्सी में थे। एक आंदोलन के आधार पर अक्टूबर 1953 को मद्रास राज्य के 11 जिलों को मिलाकर एक नया राज्य आंध्र बनाया गया जिसकी राजधानी कर्नूल थी।

राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशों के अनुसरण में 1 नवम्बर 1956 को भूतपूर्व निज़ाम के राज्य के 9 जिले आंध्र में जोड़ दिये गए और निज़ाम की भूतपूर्व राजधानी हैदराबाद को आंध्र राज्य की राजधानी बना दिया गया।

इस प्रकार आंध्र प्रदेश में तीन भिन्न प्रकार के क्षेत्र सम्मिलित हैं –

(1) तटीय क्षेत्र, इसमें आठ जिले हैं और इसे आमतौर से आंध्र कहा जाता है, (2) भीतरी क्षेत्र, इसमें चार जिले हैं और इस क्षेत्र को रायलसीमा कहा जाता है, और (3) तैलंगाना क्षेत्र, इसमें राजधानी हैदराबाद और उसके पास नौ जिले सम्मिलित हैं।

प्रशासन: आंध्र प्रदेश में एक सदनीय विधान मंडल है। विधान सभा में 295 सीटें हैं। आंध्र प्रदेश में 1 जून 1985 को विधान परिषद का उन्मूलन कर दिया गया था।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
रायलसीमा क्षेत्र			
अनंतपुर	19.1	31,83,814	अनंतपुर
चितूर	15.2	32,61,118	चितूर
कड्डपा	15.4	22,67,769	कड्डपा
आंध्र क्षेत्र			
पूर्वी गोदावरी	10.8	45,41,222	काकिनाडा
गुंटूर	11.4	41,06999	गुंटुर
कृष्णा	18.7	36,98,933	मछलीपटनम
कर्नूल	17.7	29,73,024	कर्नूल
नेल्लोर	13.1	23,92,260	नेल्लोर
प्रकाशम	17.6	27,59,166	ओंगोल
श्रीकाकुलम	5.8	23,21,126	श्रीकाकुलम

विशाखापट्नम	11.2	32,85,092	विशाखापट्नम
विजयानगरम	6.5	21,10,943	विजयनगरम
पश्चिमी गोदावरी	7.7	35,17,568	एलूरू
तेलंगाना क्षेत्र			
आदिलाबाद	16.1	20,82,479	आदिलाबाद
हैदराबाद	0.2	31,45,939	हैदराबाद
रंगा रेड्डी	7.5	25,51,966	हैदराबाद
करीमनगर	11.8	30,37,486	करीमनगर
खम्मम	16.0	22,15,809	खम्मम
महबूबनगर	18.4	30,77,050	महबूबनगर
मेडक	9.7	22,69,800	संगारेड्डी
नलगोंडा	14.2	28,52,092	नलगोंडा
निज़ामाबाद	8.0	20,37,621	निज़ामाबाद
वारंगल	12.9	28,18,832	वारंगल

अर्थ व्यवस्था: विद्युत (कुल क्षमता) : 6110 मेगावाट। औद्योगिक रोजगार: 8.5 लाख, औद्योगिक इकाइयों की संख्या: 21028, व्यक्ति प्रति टेलीफोन:117.5, घरेलू हवाई अड्डे: 4, सड़क लंबाई: 1,37,500 किलोमीटर, मंदी: 10.3%:

आंध्र प्रदेश में विविध प्रकार की खेती होती है जिनमें नकद फसलें अनेक किस्म की हैं । इस राज्य में खाद्यान्नों का उत्पादन खपत से अधिक होता है ।

तंबाकू के उत्पादन में आंध्र प्रदेश अन्य सब राज्यों से आगे है और वर्जीनिया तंबाकू में तो इस राज्य का एकाधिकार है।

औद्योगिक निवेश में राज्य का स्थान चौथा है।

आठवीं. योजना के दौरान राज्य में 1296 मेगा वाट अधिक विद्युत का उत्पादन हुआ निजी क्षेत्र से यह अपेक्षा की जा रही है कि नवीं योजना के दौरान इसका उत्पादन दुगना करेगी। भारत के प्रथम भूमिगत जल विद्युत परियोजना पर कार्य प्रगति पर है। स्रीसालम परियोजना के बाईं ओर पहाड़ियों के नीचे जगह बनाई गई है। हैदराबाद के निकट गाजुलारामाराम में पहली बार महिला उद्यमियों के लिये औद्योगिक एस्टेट बनाई जा रही है।

बेहतर प्रशासन के लिये राज्य ने सूचना तकनीक का बहुत विकास किया है। कलेक्ट्रेट व विभागों के प्रमुखों के कार्यलय

आंध्र प्रदेश

उड़ीसा
महाराष्ट्र
मध्य प्रदेश
आदिलाबाद
करीमनगर
श्रीकाकुलम
विजयनगरम
निजामाबाद
वारंगल
विशाखपट्नम
मेडक
खम्मम
पूर्वी गोदावरी
हैदराबाद
रंगारेड्डी
पश्चिमी गोदावरी
नालगोन्डा
गुंटूर
कृष्णा
महबूब नगर
पकाशम
कुरनूल
कडुपा
अनंतपुर
नेल्लूर
चित्तूर
कर्नाटक
तमिलनाडु

कंप्यूटर नेटवर्क से जुड़े हैं। मुख्य मंत्री नायडू इसे एक माडल राज्य बनाना चाहते हैं।

विश्वविद्यालय: आचार्य एन.जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय हैदराबाद; आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्नम; सेंट्रल इंस्टीटयूट आफ इंग्लिश एंड फारेन लैंग्वेज, हैदराबाद; डा. बी.आर. अम्बेद[illegible] द्रविणियन विश्वविद्यालय, [illegible] टी.आर. स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, विजयवाड़ा; ओस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद; मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद; जवाहर लाल नेहरू प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हैदराबाद; काकातिया विश्वविद्यालय, वारंगल; नागार्जुन विश्वविद्यालय गुंटूर, निजाम इंस्टूटयूट आफ मेडिकल साइंसेज, हैदराबाद; पोट्टि श्रीरामालु तेलगु विश्वविद्यालय, हैदराबाद; राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति; श्री कृष्णादेवरिया विश्वविद्यालय, अनंतपुर; श्री पदमावती महिला विश्वविद्यालयम, तिरुपति; श्री सत्य साईं इंस्टीटयूट आफ हाइयर लर्निंग, अनंतपुर; श्री वेंकटेशवर्या इंस्टीटयूट आफ मेडिकल साइंसेज, तिरुपति; श्री वेंकटेश्वर्या विश्वविद्यालय तिरुपति; स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय आंध्र प्रदेश., विजयवाड़ा।

पर्यटक केंद्र: ऐतिहासिक स्मारकों की दृष्टि से आंध्र प्रदेश बहुत समृद्ध है। यहां अनेक मंदिर हैं, जहां बहुत बड़ी संख्या में तीर्थयात्री और पर्यटक आते हैं।

चित्तूर जिले में तिरुपति का मंदिर भारत के सर्वाधिक विख्यात मंदिरों में से एक है। यह वेंकटेश्वर का मंदिर है। यह मंदिर तिरुमलै पहाड़ी की चोटी पर स्थित है और दक्षिण भारतीय स्थापत्यकला की एक उत्कृष्ट कृति है। आंध्र प्रदेश के अन्य विख्यात मंदिर ये हैं -- भद्राचलम का श्रीरामचंद्र मंदिर, श्रीशैलम का मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर, अहोबलम मंदिर और सिंहाचलम मंदिर। पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण केंद्र राज्य की राजधानी हैदराबाद है। अन्य रोचक स्थान हैं - 1591 में निर्मित चार मीनार, उस्मानिया विश्वविद्यालय, राज्य संग्रहालय और कला दीर्घा, सालारजंग संग्रहालय, स्वास्थ्य संग्रहालय नेहरू चिड़ियाघर, सार्वजनिक बगीचा और बिड़ला मंदिर।

पर्यटन का एक अन्य महत्वपूर्ण केंद्र गोलकुंडा हैदराबाद से लगभग 8 कि.मी. की दूरी पर है। गोलकुंडा 16वीं शताब्दी में कुतुबशाही सुल्तानों की राजधानी था और ऐतिहासिक इमारतों की दृष्टि से, जिनमें गोलकुंडा का प्रसिद्ध किला भी सम्मिलित है। मध्य काल में गोलकुंडा अपनी हीरों के लिए विश्वविख्यात था। सुविख्यात कोहनूर हीरा और पिट हीरा गोलकुंडा की खानों से ही निकाले गए थे।

राज्यपाल: डा. सी. रंगराजन

मुख्यमंत्री: एन. चंद्रा बाबु नायडू (तेलगु देशम)

उड़ीसा

क्षेत्रफल: 155,707 वर्ग कि.मी.; **राजधानी:** भुवनेश्वर; **भाषायें:** उड़िया; **जिले:** 30; **जनसंख्या:** 31,659,736; **पुरुष:** 15,979,904; **महिलाएं:** 15,532,166; **वृद्धि (1981–91):** 5,141,799; **वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91:** 19.50; **जनसंख्या घनत्व:** 202; **शहरी जनसंख्या:** 13.38%; **लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष):** 972; **साक्षरता:** 48.65%; **पुरुष:** 62.37%; **महिलाएं:** 34.40%; **प्रति व्यक्ति आय:** 3066 रु.; **1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या:** 31,659,736।

भू–आकृति: उड़ीसा भारत के पूर्वी तट पर है। इसके पूर्वोत्तर में पं. बंगाल, उत्तर में बिहार, दक्षिण–पूर्व में आंध्र प्रदेश, पश्चिम में मध्य प्रदेश और पूर्व में बंगाल की खाड़ी है। इस राज्य की तीन प्रमुख नदियां महानदी, ब्राह्मणी और वैतरणी हैं।

उड़ीसा में सबसे बड़ी व सबसे विख्यात चिलका झील है। आरंभ में यह बंगाल की खाड़ी का एक भाग थी, लेकिन बाद में रेत के टिब्बों के कारण यह बंगाल की खाड़ी से पृथक हो गई। यह 64 कि.मी. लंबी और 16 से 20 कि.मी. तक चौड़ी है। इस झील में दो सुंदर द्वीप हैं, जिनके नाम हैं – पारिकुंड और मलुड। दो अन्य झील हैं – अन्सुपा झील (कटक जिला) लगभग 5 कि.मी. लंबी और 1.6 कि.मी. चौड़ी और सारा झील (पुरी जिला) लगभग 5 कि.मी. लंबी और 4 कि.मी. चौड़ी।

उड़ीसा की जलवायु सम है – न बहुत गर्म और न बहुत ठंडा। लेकिन कुछ स्थानों पर जैसे बालंगीर, संबलपुर और सुंदरगढ़ के पश्चिमी जिलों में खूब गर्मी व खूब ठंडक पड़ती है। राज्य में औसत वर्षा 150 से.मी. है।

इतिहास: प्राचीन काल में इसका नाम कलिंग था। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी (ई.पू. 268) में मौर्य सम्राट अशोक ने कलिंग को जीतने के लिए एक शक्तिशाली सेना भेजी। कलिंग ने मौर्य सेना का जमकर सामना किया। कलिंग पराभूत हो गया, किंतु वहां जो नरसंहार हुआ उससे अशोक को बड़ी ग्लानि हुई। इसी घटना ने 'कठोर' अशोक को 'दयालु' अशोक बना दिया। अशोक की मृत्यु के बाद कलिंग पुनः स्वाधीन हो गया। ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में खारवेल शासक के समय में कलिंग एक शक्तिशाली राज्य बन गया। खारवेल की मृत्यु के बाद कलिंग की महत्ता समाप्त हो गई। ईसा की चौथी शताब्दी में समुद्रगुप्त मगध से दक्षिण विजय के लिए निकला। उसने अपने मार्ग में उड़ीसा पर आक्रमण किया और उड़ीसा के पांच राजाओं के विरोध को कुचल दिया। 610 ई. में उड़ीसा शशांक के प्रभाव में आ गया और शशांक की मृत्यु के बाद हर्ष ने उड़ीसा को जीत लिया।

सातवीं शताब्दी में इस राज्य में गंग वंश के स्वाधीन शासक हुए। 795 ई. में महाशिव गुप्त ययाति द्वितीय शासक बना और इसके साथ ही उड़ीसा के इतिहास का सबसे शानदार काल आरंभ हुआ। उसने कलिंग, कैनगोडा, उत्कल और कोशल को एक में मिलाया। कहा जाता है कि पुरी में विख्यात जगन्नाथ मंदिर उसी ने बनवाया था। नरसिंह देव ने कोणार्क में सूर्य मंदिर का निर्माण कराया।

14 वीं शताब्दी से लेकर 1592 तक उड़ीसा पर मुस्लिम शासक राज्य करते रहे। 1592 ई. में अकबर ने उड़ीसा को मुगल साम्राज्य से मिला लिया। मुगलों के पतन के बाद मराठों ने उड़ीसा पर कब्जा कर लिया। 1803 तक उड़ीसा पर मराठों का कब्जा रहा उसके बाद उड़ीसा अंग्रेजों के अधीन आ गया।

राज्य विलय (गवर्नर के प्रांत) आदेश 1949 के अनुसार उड़ीसा की रियासतों को 19 अगस्त, 1949 को उड़ीसा राज्य में मिला दिया गया ।

प्रशासन: इस राज्य में एक सदन वाला विधान मंडल है। विधान सभा में 147 सीटें हैं। राज्य को तीन राजस्व मंडलों में बांटा गया है यह है केंद्रीय, उत्तरी व दक्षिण। राज्य में 30 जिले हैं। 1992 तक यहां केवल 13 जिले थे। 12 नवंबर 1993 को 3 नये जिले झारसुगुडा, देवगढ़ और बौद्ध बनाये गये। पहले दो सम्बलपुर जिले से बने जबकि तीसरा आदिवासी बहुल फूलबनी जिले से बनाया गया है।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
अंगुल	6,347	9,61,037	अंगुल
बालासोर	3,706	16,96,583	बालासोर
बालांगीर	6,552	12,30,938	बालांगीर
बौद्ध	4,289	3,17,622	बौद्ध
भद्रक	2,788	11,05,834	भद्रक
बारगढ़	5,832	12,07,172	बारगढ़
कटक	3,915	19,72,739	कटक
देवगढ़	2,781	2,34,238	देवगढ़
गंजम	8,033	27,04,056	छत्रपुर
धनकनाल	4,597	9,447,870	धनकनाल
गजपति	3,056	4,54,708	पारलाखेमुंडी
जगतसिंहपुर	1,759	10,14,242	जगतसिंहपुर
जाजपुर	2,885	13,86,177	पानीकोइली
झारसुगुडा	2,202	4,46,726	झारसुगुडा
केओनझर	8,337	13,37,026	केओनझर
कालाहांडी	8,197	11,30,903	भवानीपटना
कोरापुट	8,534	10,29,986	कोरापुट
केंद्रापाड़ा	2,546	11,49,5[illegible]	केंद्रापाड़ा
खुर्दा	2,888	15,0[illegible]	भुवनेश्वर
मयूरभंज	10,410	16[illegible]	बारीपदा
मलकानगिरी	6,115	4[illegible]	[illegible]

नवरंगपुर	5,135	8,46,659	नवरंगपुर
नयागढ़	3,954	7,82,647	नयागढ़
नवापाडा	3,408	4,69,482	नवापाडा
पुरी	3,055	13,05,365	पुरी
कांधामल	6,004	5,46,281	फूलवानी
रायागाडा	7,585	7,13,984	रायागाडा
संबलपुर	6,702	8,09,017	संबलपुर
सुंदरगढ़	9,942	15,73,617	सुंदरगढ़
सोनपुर	2,284	4,76,815	सोनपुर

उड़ीसा में अनुसूचित जातियों और जनजातियों का प्रतिशत काफी अधिक है। राज्य की जनसंख्या में अनुसूचित जाति और जनजातियों की कुल संख्या 97.8 लाख है ।

राज्य के 76 प्रतिशत से अधिक लोगों का जीवन कृषि पर निर्भर है। कुल 964200 लाख हेक्टेयर भूमि में फसलें उगाई जाती हैं, जिसमें से 18.79 लाख हेक्टेयर भूमि में सिंचाई की सुविधा है। चावल, दालें, तिलहन, जूट, गन्ना, नारियल और हल्दी मुख्य फसलें हैं ।

उड़ीसा में विशाल खनिज, समुद्री संपत्ति और वन हैं। 1986 के अंत तक बड़े और मध्यम दर्जे के 170 उद्योगों में उत्पादन होने लगा था । छोटे पैमाने के 9000 से अधिक उद्योग हैं जिनमें 7,178.86 लाख रु. की पूंजी लगी हुई है और जिनमें 64798 व्यक्तियों को रोजगार दिया जा सकता है और दस्तकारी पर आधारित 5,42,000 उद्योग हैं ।

इस राज्य में केंद्रीय क्षेत्र की परियोजनाएं ये हैं: राउरकेला में इस्पात कारखाना, छत्रपुर में खाद कॉम्पलेक्स, तालचेर में भारी पानी परियोजना, मंचेश्वर में रेल डिब्बा मरम्मत वर्कशाप, कोरापुट में अल्यूमिनियम काम्पलेक्स, तालचेर में कैप्टिव बिजली घर, तालचेर में अल्युमिनियम स्मेल्टर और पारादीप में उर्वरक कारखाना।

केंद्र ने 10,000 मेगावाट ऊर्जा परियोजना की मंजूरी दे दी है। वर्ष 2008 में किस्मा में यह परियोजना पूरी हो जायेगी।

योजना आयोग के आकलन के अनुसार 48% जनता निर्धनता की सीमारेखा के नीचे रह रही है। अक्टूबर माह के पूर्वार्ध में अब तक के सबसे भयंकर समुद्री तूफान ने यहां तबाही मचा दी। हजारों के मरने की आशंका की गई सरकार ने इसे राष्ट्रीय विपदा माना।

विश्वविद्यालय: बरहामपुर विश्वविद्यालय, उड़ीसा कृषि व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, संबलपुर विश्वविद्यालय, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर।

पर्यटक केंद्र: उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर को मंदिरों का शहर कहा जाता है क्योंकि यहां बहुत-से मंदिर हैं। भुवनेश्वर के स्मारकों में कलिंग शैली के वास्तुशिल्प – आरंभ से परिपक्वता की स्थिति तक लगभग 2000 वर्षों के विकास का मूर्त रूप दिखाई पड़ता है। रोचक स्थान हैं – लिंगराज मंदिर, मुक्तेश्वर मंदिर, अनंत वासुदेव मंदिर, और राजारानी मंदिर खंडगिरि, उदयगिरि और धौली में चट्टानों को काटकर बनी जैन और बुद्ध गुफायें और अशोक के शिलालेख ।

पुरी (जगन्नाथपुरी) समुद्र तटीय शहर है और यहां समुद्र तट पर सैरगाह भी है। यह भुवनेश्वर से 62 कि.मी. दूरी पर है और भारत के चार धामों में से एक धाम है ।

कोणार्क भुवनेश्वर से 65 कि.मी. दूर और पुरी से 85 कि.मी. दूरी पर है। यह सूर्य मंदिर के लिए विख्यात है। यह एक रथ पर बना है। रथ में 24 उत्कीर्ण पहिएं हैं और सात घोड़े रथ को खींच रहे हैं। इसके अलावा महानदी पर बना हीराकुड बांध जो संसार में चौथा सबसे बड़ा बांध है और भुवनेश्वर से 328 कि.मी. की दूरी पर है, पर्यटकों के लिए एक अन्य आकर्षण है ।

राज्यपाल: एम. एम. राजेंदन

मुख्य मंत्री: नवीन पटनायक (बीजू जनता दल)

कर्नाटक

क्षेत्रफल: 1,91,791 वर्ग कि.मी.; राजधानी: बंगलौर; भाषा: कन्नड, जिले: 27, जनसंख्या: 44,977,201; पुरुष: 22,861,409; महिलाएं: 21,955,989; वृद्धि (1981–91): 7,681,584; वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91: 20.69, जनसंख्या घनत्व: 234; शहरी जनसंख्या: 30.92%, लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष): 960; साक्षरता: 55.98%; पुरुष: 67.25%; महिलाएं: 44.34%; प्रति व्यक्ति आय: 4075 रु.; 1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या: 44,977,201

क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों दृष्टि से कर्नाटक भारत का आठवां सबसे बड़ा राज्य है। पहले इसका नाम मैसूर था। मैसूर राज्य (नाम परिवर्तन) अधिनियम 1973 के अधीन 1 नवंबर, 1973 से इसका नाम बदलकर कर्नाटक कर दिया गया।

भू–आकृति: कर्नाटक दक्षिण के पठार के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। इसके उत्तर में महाराष्ट्र और गोवा है, पूर्व में आंध्र प्रदेश, दक्षिण में तमिलनाडु, केरल और पश्चिम में अरब सागर है।

प्राकृतिक दृष्टि से इस राज्य को चार क्षेत्रों में बांटा जा सकता है (1) समुद्र तटीय क्षेत्र, (2) मलनाड (3) उत्तरी मैदान (4) दक्षिणी मैदान ।

कर्नाटक की महत्वपूर्ण नदियां हैं – उत्तर में कृष्णा और उसकी सहायक नदियां (भीमा, घाटप्रभा, मालप्रभा, तुंगभद्रा और वेदवती) और दक्षिण में कावेरी और उसकी सहायक नदियां (हेमवती, शिमशा, अर्कावती, लक्ष्मण तीर्थ और कबिनी) ।

इतिहास: कर्नाटक नाम का उद्भव 'करुनाडु' से हुआ है जिसका अर्थ है भव्य उच्चभूमि ।

चौथी शताब्दी ई. पूर्व में कर्नाटक महान मौर्य साम्राज्य का एक अंग था। ईसा पूर्व 30 के लगभग एक स्थानीय राजवंश, सातवाहन सत्ता में आया। सातवाहन – साम्राज्य लगभग 300 वर्षों तक चला। सातवाहन राजवंश के पतन के बाद, उत्तर में कदंबों की और दक्षिण में गंगों की सत्ता स्थापित हो गई ।

छठी शताब्दी के आरंभ में यहां चालुक्यों ने अपना नया साम्राज्य स्थापित कर लिया। चालुक्य साम्राज्य के बाद देवगिरि के यादव शासकों और द्वारा समुद्र के होयसाल शासकों ने कर्नाटक को आपस में बांट कर अपने अधीन कर लिया।

14 वीं शताब्दी में महान विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हुई। उसका काल महानता और समृद्धि का काल था। दक्षिण के मुस्लिम सुल्तानों के महासंघ ने 1565 में (तालीकोट के युद्ध) विजयनगर साम्राज्य को नष्ट कर दिया। हासपेट के निकट हम्पी में विशाल ध्वंसावशेष विजयनगर की शान की याद दिलाते हैं।

1399 ई. छोटे मैसूर राज्य के शासक यदुराय ने वोडयार राजवंश की नींव डाली। राजा वोडयार (1578–1612) ने राज्य का विस्तार किया और श्रीरंगपटणम को अपनी राजधानी बनाया। मैसूर के साहसी मुस्लिम सेनापति हैदरअली ने वोडयारों को उखाड़ फेंका। हैदरअली के पुत्र टीपू को जब अंग्रेजों ने हराया, तो यह राज्य पुनः वोडयारों को दे दिया गया ।

1956 में राज्य पुनर्सगठन अधिनियम के अंतर्गत मैसूर रियासत में कानरा, बीजापुर, धारवाड़ जिले, गुलबर्गा में बेलगांव जिले का एक बड़ा भाग, हैदराबाद रियासत के रायचूर व बीदर जिले, पुरानी मद्रासी प्रेसिडेंसी में से साउथ कानरा जिला (कोयम्बत्तूर जिले के कासरगोड तालुका और कालेगल तालुका को छोड़कर) और कुर्ग के संपूर्ण भाग इसमें मिला दिया गया ।

प्रशासन: विधानमंडल में दो सभायें हैं – विधान सभा में 224 सदस्य और विधान परिषद में 75 सदस्य हैं ।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
बंगलौर	2,190	48,39,162	बंगलौर
बंगलौर देहात	5,815	16,73,194	बंगलौर
बेलगांव	13,415	35,84,000	बेलगांव
बेल्लारी	9,885	18,90,092	बेल्लारी
बीदर	5,448	12,56,000	बीदर
बीजापुर	17,069	29,28,000	बीजापुर
चिकमंगलूर	7,201	10,17,283	चिकमंगलूर
चित्रदुर्ग	10 852	21 80,443	चित्रदुर्ग
दक्षिणी कन्नड़	8 441	26 94 264	मंगलौर
धारवाड़	13 738	35 03 150	धारवाड
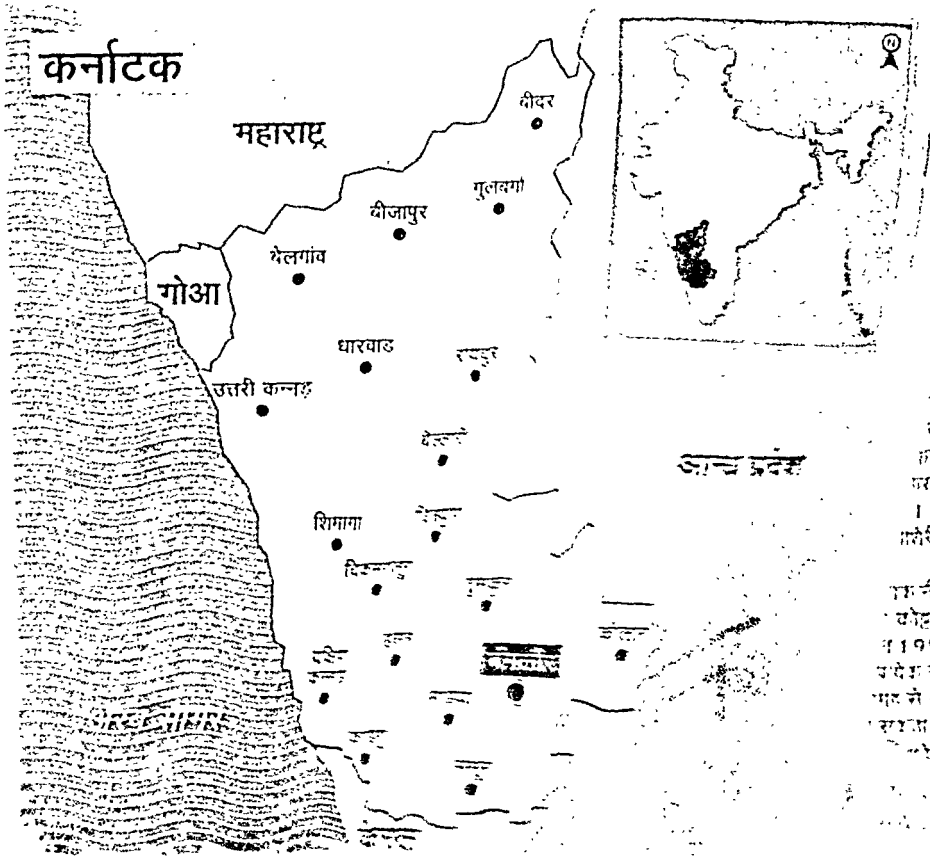
गुलबर्गा	16,224	25,82,169	गुलबर्गा
हसन	6,814	15,70,000	हसन
कोडगु	4,102	4,89,000	मडीकेरी
कोलार	8,223	22,17,000	कोलार
मांडया	4,961	16,44,374	मांडया
मैसूर	11,954	31,65,018	मैसूर
रायचुर	14,017	23,10,000	रायचुर
शिमोगा	10,553	19,10,000	शिमोगा
तुमकुर	10,598	23,06,000	तुमकुर
उत्तरी कन्नड़	10,291	12,20,260	कारवार

सात नये जिले: वागलकोट (बीजापुर जिले से), चामराजनगर (मैसूर से), दावानगेरे (चित्रागुडा से), गडग और हवेरी (दारवाड़ से), कोप्पल (रायचुर से), और उडुपी (दक्षिण कन्नड से)। यह नये जिले तीन जिला पुनर्संगठन समिति की वर्षों पुरानी संस्तुति पर बनाये गये।

मुख्यत: गांवों में बसा और कृषि प्रधान है। लगभग 76 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है खाद्यान्न की फसलों में कर्नाटक में देश में रागी के कुल उत्पादन का 47 प्रतिशत पैदा होता है। देश की अन्य फसलों के उत्पादन में इस राज्य का भाग इस प्रकार है – ज्वार 16 प्रतिशत, मिलेट 10 प्रतिशत, तुर 9 प्रतिशत, मक्का 7 प्रतिशत, चावल 5 प्रतिशत और बाजरा 5 प्रतिशत।

गैर–खाद्य फसलों में सबसे महत्वपूर्ण काफी है। देश में कुल उत्पादन में से 59 प्रतिशत काफी इसी राज्य में पैदा होती है। अन्य फसलें ये हैं – इलायची, सुपारी, कुसुम, नारियल, कपास, मूंगफली, मिर्च, अरंड, गन्ना और तंबाकू।

राज्य में कई बड़े उद्योग हैं। मशीनी औजारों, हवाई ६ , इलेक्ट्रानिक उत्पादों, घड़ियों और दूर–संचार का निर्माण होता है। इन वस्तुओं का निर्माण करनेवाले महत्वपूर्ण सरकारी उपक्रम ये हैं – हिंदुस्तान एयरोनाटिक्स, हिंदुस्तान मशीन टूल्स, भारत अर्थ मूवर्स, भारत इलेक्ट्रानिक्स, इंडियन टेलीफोन इंडस्ट्रीज और नेशनल एयरोनाटिकल लेबोरेटरी। राज्य स्वामित्व के विश्वेश्वरय्या आइरन एंड स्टील लिमिटेड, भद्रावती में विशेष इस्पात और मिश्रित इस्पात बनता है।

देश में तैयार कुल सिल्क में से 85 प्रतिशत कर्नाटक में पैदा होता है। सिल्क के अतिरिक्त कर्नाटक का चंदन का साबुन और चंदन का तेल विश्व में विख्यात है।

कर्नाटक जल विद्युत के उत्पादन में अग्रणी राज्य है। 1902 में शिवानासमुद्रम में एशिया का पहला जल विद्युत संयंत्र स्थापित किया गया था। राज्य की कुल विद्युत क्षमता 4271 मेगा वाट की है जिसमें इस वर्ष 683 मेगावाट व ़गले वर्ष 1200 मेगावाट जोड़ी जायेगी।

मुंबई को मंगलौर से जोड़ने वाली नई कोंकण रेलवे का उद्घाटन 1 मई, 1998 को हुआ था। कर्नाटक की बंगलौर में 45 करोड़ रुपये की लागत की सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान बनाने की योजना है।

विश्वविद्यालय: बंगलौर विश्वविद्यालय; गुलबर्गा विश्वविद्यालय; इंडियन इंस्टीट्यूट आफ साइंस, बंगलौर; कन्नड़ विश्वविद्यालय, कमालपुर; कर्नाटक राज्य खुला विश्वविद्यालय, मैसूर; कर्नाटक विश्वविद्यालयच धारवाड; कुवेम्पु विश्वविद्यालय, शिमोगा; मंगलौर विश्वविद्यालय; मणिपाल अकादमी आफ हाइयर एजुकेशन; मैसूर विश्वविद्यालय; नेशनल सेंटर फार मेंटल हेल्थ एंड न्यूरो साइंसेज, बंगलौर; नेशनल ला स्कूल आफ इंडिया युनिवर्सिटी, बंगलौर; राजीव गांधी युनिवर्सिटी आफ हेल्थ साइंसेज, बंगलौर; युनिवर्सिटी आफ एग्रीकल्चरल साइंसेज, बंगलौर; युनिवर्सिटी आफ एग्रीकल्चरल साइंसेज, धारवाड; विवेश्वरिया मेडिकल युनिवर्सिटी बेलगांव।

पर्यटन केंद्र: बंगलौर बागों का शहर है। मैसूर से 80 कि.मी. दक्षिण में बांदीपुर वन्य पशु विहार है। श्रवणबेलगोला जैनियों का तीर्थ है। यहां गोमतेश्वर की 18 मीटर ऊंची मूर्ति है। जरसोपा (जोग झरने) विश्व में विख्यात है।

राज्यपाल: वी.एस. रमा देवी

मुख्य मंत्री: एस.एम. कृष्णा (कांग्रेस –आई)

केरल

क्षेत्रफल: 38,863 वर्ग कि.मी.; **राजधानी:** तिरुवनंतपुरम; **भाषा:** मलयालम; **जिले:** 14; **जनसंख्या:** 29,698,518; **पुरुष:** 14,218,167; **महिलाएं:** 14,793,070; **वृद्धि (1981–91):** 3,557,557; **वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91:** 13.98; **जनसंख्या घनत्व:** 747; **शहरी जनसंख्या:** 26.31%; **लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष):** 1041; **साक्षरता:** 90.59%; **पुरुष:** 94.45%; **महिलाएं:** 86.93%; **प्रति व्यक्ति आय:** 5,065 रु.; **1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या:** 29,698,518।

केरल एक छोटा–सा राज्य है और भारत के दक्षिण–पश्चिमी कोने पर है। इसका क्षेत्रफल 38,863 वर्ग कि.मी. है, जो भारत के कुल क्षेत्रफल का केवल 1.18 प्रतिशत है। किंतु इस राज्य की जनसंख्या (1991 जनगणना) देश की जनसंख्या का 3.71 प्रतिशत है। 1991 में यहां जनसंख्या का घनत्व 747 है।

भू–आकृति: केरल को तीन भौगोलिक भागों में बांटा जा सकता है: (1) उच्च भूमि, (2) मध्य भूमि, और (3) निचली भूमि। उच्च भूमि पश्चिमी घाट के ढलान पर है। पश्चिमी घाट के औसत ऊंचाई 3000 फुट है लेकिन कुछ चोटियां 6000 फुट से भी ऊंची है। इस क्षेत्र में चाय, काफी, रबड़, इलायची और अन्य मसालों के बड़े–बड़े बागान हैं। मध्यभूमि उच्च भूमि और निचली भूमि के बीच में हैं। इसमें ऊंची–नीची पहाड़ियां और घाटियां हैं। इस क्षेत्र में भरपूर कृषि होती है। इसमें काजू, नारियल, सुपारी, टेपिओका, केला, चावल, अदरक, काली मिर्च, गन्ना और तरह–तरह की सब्जियां पैदा होती है।

निचली भूमि या समुद्र तटीय भाग में नदियों के डेल्टा, बांध द्वारा रोके गये जल के क्षेत्र और अरब सागर का तटीय भाग सम्मिलित है।

केरल नदियों और स्थल के बीच रुके जल–क्षेत्रों का देश है। यहां कुल 44 नदियां (41 पश्चिम की ओर बहती है और 3 पूर्व की ओर) और इनकी असंख्य सहायक नदियां हैं ।

केरल के सौंदर्य और उसकी अर्थ व्यवस्था में स्थलीय जलक्षेत्रों का महत्वपूर्ण स्थान है। इनमें झीलें है और समुद्र के किनारे–किनारे भूमि के अंदर घुसे जल–क्षेत्र हैं। सबसे बड़ा स्थलीय जल–क्षेत्र वेम्बनाड झील है, जिसका क्षेत्रफल लगभग 200 वर्ग किलोमीटर है। यह झील कोच्चि बंदरगाह के पास अरब सागर में मिलती है। पेरियार, मणिमला, अच्चनकोविल, मीनच्चिल और मुवाट्टुपुषा नदियां इसी झील में गिरती हैं। अन्य महत्वपूर्ण स्थानीय जल क्षेत्रों के नाम हैं – वेलि, कठिनकुलम, अंजुतेंगु, एडवा, नडयरा, परवूर, अष्टमुडी (कोल्लम), कायमकुलम, कोडुन्ङल्लूर (क्राग्ङल्लूर) और चेतुवा । नदियों के डेल्टा इन स्थलीय जल–क्षेत्रों को एक दूसरे से जोड़ते हैं और इस प्रकार केरल के निचली भूमि वाले प्रदेश में ये जल–परिवहन के उत्तम साधन हैं ।

इतिहास: जब भारत स्वाधीन हुआ, उस समय केरल में दो देशी रियासतें त्रावणकोर और कोचीन सम्मिलित थी और मलाबार सीधे ब्रिटिश शासन के अधीन था । उपरोक्त नीति के अनुसरण में त्रावणकोर और कोचीन रियासतों को मिलाकर 1 जुलाई, 1949 को त्रावणकोर, कोचीन राज्य बनाया गया। लेकिन मलाबार मद्रास प्रांत का हिस्सा बना रहा। राज्यों के पुनर्गठन की योजना के अंतर्गत त्रावणकोर–कोचीन राज्य और मलाबार को मिलाकर 1 नवंबर, 1956 को केरल राज्य बनाया गया ।

प्रशासन: इस राज्य के विधान मंडल में केवल एक सदन अर्थात् विधान सभा है, जिसमें 141 सीटें हैं ।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
आलाप्पुषा	1,417	20,01,217	आलाप्पुषा
एर्णाकुलम	2,407	28,17,236	कोच्चि
इडुक्की	5,019	10,78,006	पाईनव
कण्णूर	2,996	22,51,727	कण्णूर
कासरगोड	4,992	10,71,508	कासरगोड
कोल्लम	2,491	24,07,566	कोल्लम
कोट्टयम	2,203	18,28,271	कोट्टयम
कोझिकोड	2,345	26,19,941	कोझिकोड
मलाप्पुरम	3,550	30,96,330	मलाप्पुरम
पालक्काड	4,480	23,82,235	पालक्काड
पतनमतिट्टा	2,642	11,88,352	पतनमतिट्टा
तिरुवनंतपुरम	2,192	29,46,650	तिरुवनंतपुरम
त्रिशूर	3,032	27,37,311	त्रिशूर
वयनाड	2,132	6,72,128	कल्पट्टा
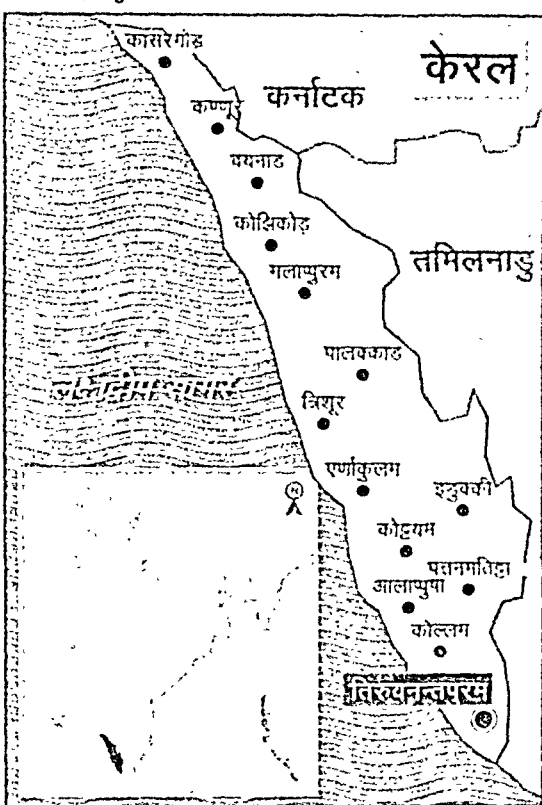
अधिक जनसंख्या के कारण केरल में खाद्यान्नों, रोजगार और मकानों की अपनी जटिल समस्यायें हैं । इस राज्य में खाद्यान्नों की 50 प्रतिशत कमी रहती है ।

केरल में भारत का 92 प्रतिशत रबड़, 70 प्रतिशत नारियल, 60 प्रतिशत टेपियोको 70 प्रतिशत इलायची, 70 प्रतिशत काली मिर्च और लगभग 100 प्रतिशत नीबूघास तेल का उत्पादन होता है। इस राज्य में चाय और काफी का इफरात में उत्पादन होता है इसके अतिरिक्त केले, अदरक जैसी फसलों के उत्पदान में यह राज्य अन्य सभी राज्यों से आगे है ।

भारत मे प्रथम निजी हवाई अड्डे को कोच्चि में नेडुम्बाशेरी में जून 99 को खोला गया।

1991 में राज्य सरकार ने नयी उदार औद्योगिक नीति की घोषणा की। भारत में पहला पूर्ण साक्षर शहर कोट्टयम और पहला पूर्ण साक्षर जिला एरणाकुलम है । अप्रैल 199 में केरल देश का पहला प्रांत हो गया जब यहां के ... में फोन की सुविधा उपलब्ध हो गयी। यहां हर ... विदेश के किसी कोने में फोन से संपर्क ...

विश्वविद्यालय: युनिवर्सिटी ...
कोचीन युनिवर्सिटी आफ साइंस
विश्वविद्यालय, कन्नूर,
केरल कृषि विश्वविद्यालय,

कोट्टयम, श्री चित्रा तिरुनाल इंस्टीट्यूट फार मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नालोजी, तिरुवनंतपुरम, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कलडी।

पर्यटक केंद्र: पर्यटन विभाग और केरल पर्यटन विकास निगम की देखरेख में केरल राज्य में अनेक स्थानों को पर्यटन केंद्रों के रूप में विकसित किया गया है ।

इस राज्य की राजधानी तिरुवनंतपुरम (त्रिवेंद्रम) शहर भारत का सबसे साफ–सुथरा शहर है ।एक अन्य आकर्षक स्थान इडुक्की जिले के तेकड़ी में पेरियार वन्य जंतु अभयारण्य है।पत्तनमतिट्टा जिले के शबरीमाला में भगवान अयप्पा का मंदिर विख्यात तीर्थ–स्थान है ।

कोचीन को 'अरब सागर की रानी' कहा जाता है । निकटवर्ती बंदरगाह के पास सुंदर विलिंगडन द्वीप एक बड़ा आकर्षण है। एरणाकुलम जिले में कालडी श्री शंकराचार्य का जन्म–स्थान है। त्रिशूर जिले के गुरुवायूर में भगवान–कृष्ण का विख्यात मंदिर हैं ।विख्यात कथकली केंद्र कलामंडलम त्रिशूर जिले में है ।कोझिकोड ज़मोरिन शासकों की राजधानी के रूप में ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है। वयनाड जिले में एडकल गुफा शताब्दियों पुरानी हैं ।

राज्यपाल: सुखदेव सिंह कांग

मुख्य मंत्री: ई.के. नयनार (मा.क.पा.)

गुजरात

क्षेत्रफल: 196,024 वर्ग कि.मी., **राजधानी:** गाधीनगर, **भाषा:** गुजराती **जिले:** 19, **जनसंख्या:** 4 13,09,582, **पुरुष:** 21,272 388, **महिलाएं:** 19,901,672, **वृद्धि (1981–91):** 7 088,261 **वृद्धि दर(प्रतिशत) 1981–91:** 20 80 **जनसंख्या घनत्व:** 210 **शहरी जनसंख्या:** 34 49% **लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष):** 936; **साक्षरता:** 60 91% **पुरुष:** 72 54%, **महिलाएं:** 48 50%; **प्रति व्यक्ति आय:** 7,600 रु , **1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या:** 41 309,582

भारत के उत्तरी–पश्चिमी कोने में स्थित गुजरात के उत्तर–पश्चिम में पाकिस्तान, उत्तर में राजस्थान, पूर्व में मध्य प्रदेश और दक्षिण व दक्षिण–पूर्व में महाराष्ट्र है ।

भू–आकृति: गुजरात भारत के पश्चिमी समुद्र तट के उत्तरी सिरे पर है ।इसमें तीन भौगोलिक क्षेत्र हैं (1) सौराष्ट्र प्रायद्वीप, जो मूलत एक पहाड़ी क्षेत्र है पर बीच–बीच में मध्यम दर्जे के पर्वत हैं। (2) कच्छ जो पूर्वोत्तर में उजाड और चट्टानी है। विख्यात कच्छ का रन इसी क्षेत्र में है। (3) मुख्य भूमि, जो कच्छ के रन और आरावली की पहाडियों से लेकर दमन गंगा तक फैली हुई है । गुजरात के मैदानी इलाके में बड़ी नदियां साबरमती, माही, नर्मदा, ताप्ती हैं व छोटी नदिया बनास, सरस्वती, दमनगंगा हैं। सुरेंदनगर और उत्तरी गुजरात के बंजर इलाकों को छोड़कर गुजरात के शेष भाग में वर्षा 65 से 127 से.मी. तक होती है ।

इतिहास: बंबई पुनर्गठन अधिनियम 1960 के फलस्वरूप बंबई राज्य के उत्तरी और पश्चिमी भागों को (जिसमें गुजराती भाषी लोगों की प्रधानता है) मिलाकर गुजरात राज्य का निर्माण 1 मई, 1960 को किया गया। गुजरात राज्य में भूतपूर्व बंबई राज्य के निम्नलिखित जिले सम्मिलित हैं – बनास कंठा, मेहसाना, सबर कंठा, अहमदाबाद, कैरा, पंच महल, बडोदरा, भडौच, सूरत, डांग्स, अमरेली, सुरेंदनगर, राजकोट, जामनगर, जुनागढ़, भावनगर, कच्छ, गांधीनगर और बलसाड़ ।

प्रशासन: गुजरात विधानमंडल में केवल विधान सभा है जिसमें 182 निर्वाचित सदस्य हैं। यह राज्य 19 जिलों में बंटा हुआ है ।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
अहमदाबाद	8,707	48,01,812	अहमदाबाद
अमरेली	6,760	12,52,589	अमरेली
बनासकंठा	12,703	21,62,578	पालनपुर
भरूच	9,038	15,46,145	भरूच
नर्मदा	–	–	राजपिपला
भावनगर	11,155	22,92,026	भावनगर
गाधीनगर	649	4,08,992	गांधीनगर
जामनगर	14,125	15,63,558	जामनगर
जूनागढ़	10,607	23,94,859	जूनागढ
पोरबंदर	–	–	पोरबंदर
कच्छ	45,652	12,62,507	भुज़
खेड़ा	7,194	34,40,897	नादियाद
आनद	–	–	आनंद
मेहसाना	9,027	29,37,870	मेहसाना
पाटन	–	–	पाटन
पंचमहल	8,866	29,56,458	गोधरा
दाहौद	–	–	दाहौद
राजकोट	11,203	25,14,122	राजकोट
सबरकंठा	7,390	17,61,086	हिम्मतनगर
सूरत	7,657	33,97,900	सूरत
सुरेंदनगर	10,489	12,08,8721	सुरेन्दनगर
वलसाद	5,244	21,73,672	वलसाद
नवासारी	–	–	नवासारी
बडोदरा	7,794	30,89,610	बड़ोदरा
डाग्स	1,764	1,44,091	अहवा

नये जिले जोकि 2 अक्टूबर 1997 में बनाये गये थे का क्षेत्रफल व जनसंख्या का निर्धारण नहीं हुआ है।

गुजरात भारत में कपास और मूंगफली का सबसे बड़ा उत्पादक है और तबाकू के उत्पादन में इसका स्थान द्वितीय है।

कपास और मूंगफली की अच्छी बिक्री है और ये वस्तुएं वस्त्र, तेल और साबुन जैसे महत्वपूर्ण उद्योगों का आधार हैं। अन्य महत्वपूर्ण नकद फसलें है – ईसबगोल, जीरा, गन्ना, आम और केले। इस राज्य की मुख्य खाद्यान्न फसलें धान, गेहू, बाजरा, ज्वार और मक्का हैं, जो अलग–अलग क्षेत्रों में होती हैं ।

1993–94 में कुल खाद्यान्न उत्पादन 3.76 लाख टन का था। मूंगफली 6.77 लाख टन और 16.23 लाख

कैल्स कपास था। प्रमुख फसलें धान, गेंहू, बाजरा, ज्वार और मक्का है। वालसाद भारत का प्रथम हार्टीकल्चर जिला हो गया है जहां से सब्जी, फल व फूलों का निर्यात होता है। गुजरात में 19.66 लाख हेक्टेयर भूमि वनक्षेत्र है।

गुजरात में वस्त्र उद्योग और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग का प्रभुत्व है। रसायनों, पेट्रोरसायनों, उर्वरकों, औषधियों और भेषजों, रंगों और इंजीनियरिंग की अनेक वस्तुओं के नए-नए उद्योग लग रहे हैं।

यह राज्य अकार्बनिक रसायनों जैसे सोडा ऐश और कास्टिक सोडा तथा रासायनिक उर्वरकों का प्रमुख उत्पादक है। देश का सबसे बड़ा पेट्रोरसायन काम्पलेक्स इसी राज्य में है। डेयरी उद्योग में भी इस राज्य ने बड़ी तरक्की की है और देश में शिशुओं के लिए जितना दूध बनता है, उसमें से लगभग 63% इसी राज्य में बनता है।

अंकलेश्वर, खम्भात और कलालेल में तेल और प्राकृतिक गैस की खोज और उत्पादन और कोयाली में तेल शोधनशाला इस राज्य की अन्य औद्योगिक उपलब्धियां हैं।

गुजरात नमक बनाने वाला एक प्रमुख राज्य है। देश में नमक के कुल उत्पादन का 60 प्रतिशत इसी राज्य में होता है।

इस समय गुजरात में छोटे पैमाने की इकाईयों की संख्या 70,000 से भी अधिक है। कारखानों की संख्या 13,000 है, जिनमें कपड़े के कारखानों की संख्या 1328 है। राज्य में लगभग 167 औद्योगिक बस्तियां हैं।

विश्वविद्यालय: भावनगर विश्वविद्यालय, डा. बाबा साहेब अम्बेदकर खुला विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात कृषि विश्वविद्यालय, दांतिवाडा, गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, महाराजा सयाजिराव युनिवर्सिटी आफ बड़ोदरा, उत्तरी गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यासागर; सौराष्ट्र विश्वविद्यालय राजकोट; दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय सूरत।

पर्यटक केंद्र: गुजरात में 4 राष्ट्रीय उद्यान और 11 पशु-पक्षी अभयारण्य हैं। गिरि पशुविहार, द्वारका, सोमनाथ और पालिताना के मंदिर, लगभग 2000 फुट ऊंची शत्रुन्जय पहाड़ी पर जैन मंदिरों का सुंदर पहाड़ी शहर, भारत में
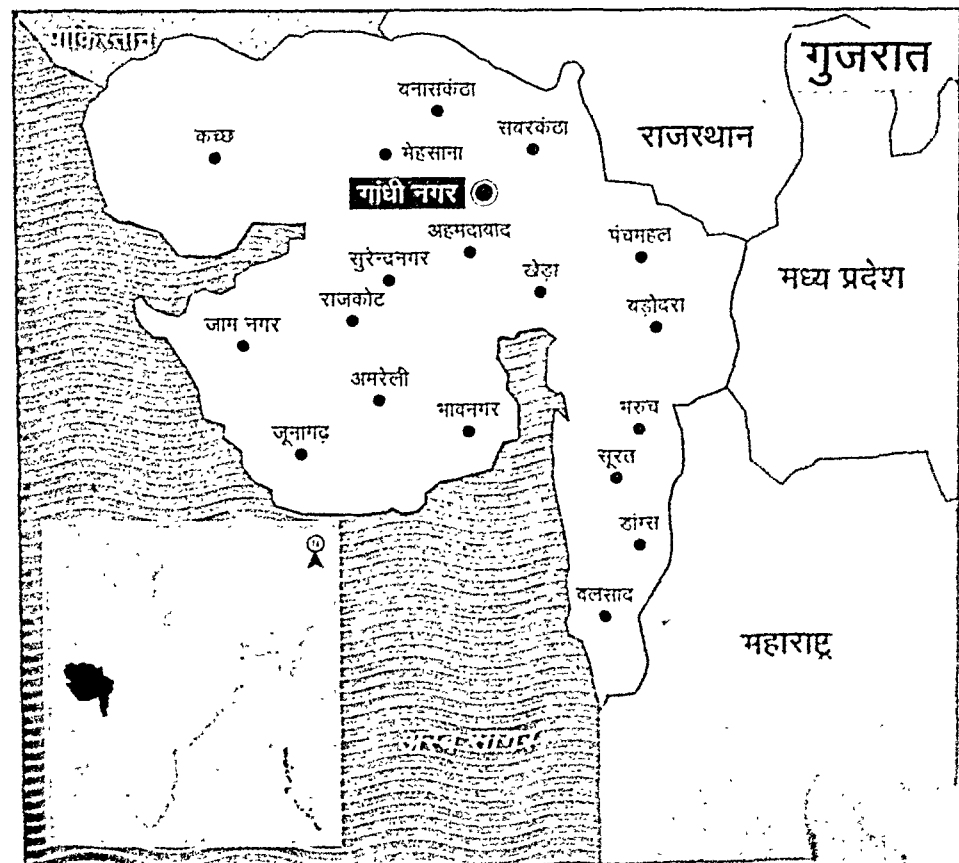
पारसियों का सबसे प्राचीन अग्निमंदिर, लोथल में 5000 वर्ष पुराने पुरातत्वीय अवशेष, मोधेरा में 11 वीं शताब्दी का सूर्य मंदिर, नल सरोवर में पक्षी विहार, अहमदाबाद में भारतीय मुस्लिम शैली के वास्तु स्मारक और अन्य स्थान, साबरमती आश्रम, अहमदाबाद में महात्मा गांधी का राष्ट्रीय मंदिर, दक्षिण गुजरात में सतपुड़ा पहाड़ियां उन अनेक स्थानों में से कुछ हैं, जिन्हें देखने हेतु पर्यटक आते हैं ।

राज्यपालः एस.एस. भंडारी

मुख्य मंत्रीः केशु भाई पटेल (भा.ज.पा.)

गोवा

क्षेत्रफलः 3,702 वर्ग कि.मी.; **राजधानीः** पणजी **भाषाः** कोंकणी और मराठी; **जिलेः**2; **जनसंख्याः** 11,69,793; **पुरुषः** 593,563; **महिलाएंः** 575,059; **वृद्धि (1981–91)**: 160,873 **वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91**: 15 96; **जनसंख्या घनत्वः** 316; **शहरी जनसंख्याः** 41%, **लिंगानुपात (महिलाए प्रति हजार पुरुष)**: 969; **साक्षरताः** 76 96% **पुरुषः** 85.48%; **महिलाएंः** 68.20%; **प्रति व्यक्ति आयः** 6939 रु.; **1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्याः** 1,169,793।

12 अगस्त, 1987 तक गोवा, संघ शासित प्रदेश गोवा, दमन और दियु का एक भाग था। 12 अगस्त, 1987 को संसद द्वारा पास किए गये एक्ट के अनुसार गोवा भारत संघ का 25 वां राज्य बन गया और दमन व दियू संघ शासित प्रदेश बने रहे। 19 दिसबर, 1961 को पुर्तगाली औपनिवेशक शासन से आजाद होने के समय से अब तक गोवा, दमन और दियू एक ही प्रशासन के अधीन रहे थे ।

भू–आकृतिः गोवा कर्नाटक और महाराष्ट्र के बीच में स्थित है। इसके उत्तर में तेरेखोल नदी है, दक्षिण व पूर्व में कर्नाटक है और पश्चिम में अरब सागर है ।

गोवा का पूर्वी भाग पहाडी है, जहां सह्यादि पर्वत की श्रृखलायें है। पश्चिम की ओर बहने वाली प्रमुख नदियां हैं – मांडोवी, जुआरी, तेरेखोल, चपोरा और बेतूल ।

गोवा का जलवायु गर्म और आर्द्र है। तापमान में अधिक उतार–चढ़ाव नहीं होता। साल में 28000 मि.मी. से 3500 मि.मी. तक वर्षा होती है ।

इतिहास : सस्कृति के सश्लेषण के लिए विख्यात गोवा का इतिहास ई पू. तीसरी शताब्दी में मौर्य साम्राज्य के समय से मिलता है। ई पू. दूसरी शताब्दी में कोंकण क्षेत्र पर सातवाहन राजवश के शासक कृष्ण शातकर्णी का प्रभुत्व था। प्राचीन काल गोवा का नाम गापकपट्टण या गोम्नत था – ये नाम महाभारत के भीष्म पर्व में आये हैं ।

1471 से लेकर 20 साल तक गोवा बहमनी शासकों के अधीन रहा लेकिन उसके बाद 1489 में बीजापुर के आदिलशाह ने इसे अपने अधीन कर लिया। पुर्तगाली साहसी राज्यपाल अल्बुकर्क ने बीजापुर के आदिलशाह से ही 25 नवबर 1510 गोवा छीन लिया। अल्बुकर्क ने उसी दिन गोवा सट केथरीन को समर्पित कर दिया ।

इसी अवधि म स्पेन का जेसुइट पादरी फ्रांसिस ज़ेवियर गोवा आया (1542 ई)। वह बडा उत्साही धर्म प्रचारक था और उसके मन मे गरीबों के प्रति बड़ी दया थी। उसे सत माना जाता था । 1552 में उसकी मृत्यु हो गई और उसके शव को शीशे के एक बक्स में सुरक्षित करके पणजी से कुछ मील दूर पुराने गोवा के 'बोम जीसस के बसिलिका' म रखा गया। इसी समय टाइप इस्तेमाल करनेवाला पहला छापाखाना यहां लगाया गया और इस छापाखाने मे छपी पहली पुस्तक फ्रासिस जेवियर द्वारा लिखित 'दोत्रिना किस्टा' थी।

यहा कई विद्रोह हुये जिनमें मुख्य थे – पिन्टो षडयंत्र (1787) और राने लोगों का विद्रोह (1823) ।

1755 से 1824 तक सातारी के राने लोगों ने 14 बार विद्रोह किया लेकिन हर बार पुर्तगालियों ने विद्रोह कुचल दिया। 1823 और 1824 में भी यही हुआ ।

राष्ट्रवादी आंदोलन : पूर्ण स्वाधीनता की मांग करने वाला प्रथम गोवा निवासी लुसी फ्रांसिसको गोमेस था । उसने 1862 में पूर्ण स्वाधीनता की मांग की थी। नगर निगम के चुनावों में गड़बड़ी के प्रयत्नों के विरोध में 21 सितंबर,
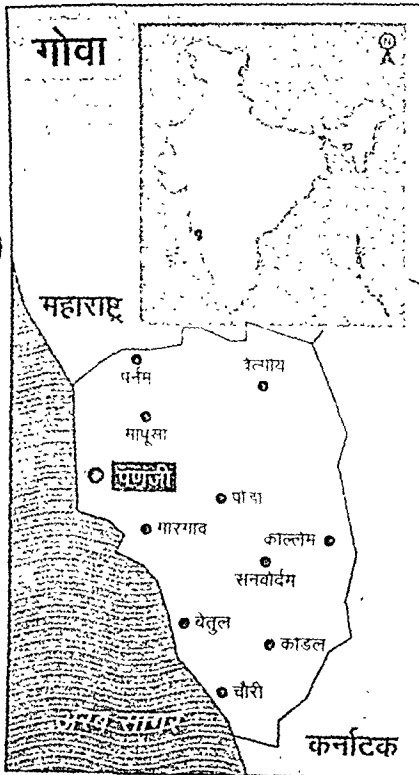
1880 को एक सार्वजनिक रैली की गई; मारगोव चर्च के सामने रैली पर गोली चली और 23 व्यक्ति मौके पर ही मर गए ।

ज्यों–ज्यों भारत में स्वाधीनता आंदोलन तेज होता गया, त्यों–त्यों गोवा में भी आजादी की लड़ाई मजबूत होती गई । इस लड़ाई में एक विख्यात व्यक्ति लुइस डे मेन्जेज ब्रेगेन्जा था, जिसने गणतंत्री शासन व्यवस्था की हिमायत की। 18 जून 1946 को स्वाधीनता संग्राम एक महत्वपूर्ण चरण में पहुंच गया जब समाजवादी नेता डा. राम मनोहर लोहिया ने मरगांव में सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू कर दिया ।

1954 में इस आंदोलन को पहली सफलता तब मिली जब दमन के निकट स्थित दादरा और नगर–हवेली को आजाद कराया गया।

आजाद गोमंतक दल ने, जो इस आंदोलन का दाहिना हाथ था, सशस्त्र लड़ाई जारी रखी। जब पुर्तगाली गवर्नर जनरल और पाकिस्तानी सेनाध्यक्ष के बीच हुई बैठक की सूचना दिल्ली पहुंची, तो भारत सरकार ने अतत: इस संबंध में कार्यवाही करने का निर्णय कर लिया। 18 दिसंबर की रात को मेजर–जनरल के. पी. कैन्डेथ के नेतृत्व में "आपरेशन विजय" की कार्यवाही आरंभ कर दी गई और अगले दिन 19 दिसंबर, 1961 को कोई बड़ी लड़ाई लड़े बिना गोवा को मुक्त करा लिया गया ।

गोवा को 30 मई 1987 में पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया। दमन और दियू केंद्र शासित क्षेत्र बने रहे ।

प्रशासन: राज्य के विधान मंडल में एक ही सदन है ।कुल सदस्यों की संख्या 40 है ।राज्य दो जिलों में विभाजित है।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
उत्तरी गोवा	1,736	6,64,804	पणजी
दक्षिणी गोवा	1,996	5,04,989	मारगांव

गोवा मुख्यत: कच्चा लोहा और मैगनीज़ का निर्यात करने वाला राज्य है और आत्मनिर्भर बनने की कोशिश में लगा हुआ है। मुख्य कृषि फसल चावल है। उसके बाद रागी, काजू और नारियल की फसलों का नंबर है । आजादी के समय गोवा में चावल का उत्पादन 52,000 टन था, जो अब बढ़ कर 1.62 लाख टन हो गया है।

इस राज्य के पास 105 कि.मी. लंबा समुद्रतट है, चार हजार हेक्टेयर नमी वाली भूमि, 12,000 हेक्टेयर धान पैदा करने वाली भूमि और 100 हेक्टेयर में मीठा पानी भरा हुआ है।

साल में लगभग 52,477 टन मछली पकड़ी जाती है। मछली पकड़ने के काम में 1551 ट्रालर और 2450 देसी नौकाएं लगी हुई हैं। इससे 40,000 व्यक्तियों को जीविका मिलती है ।

कुल 124.16 लाख टन कच्चे लोहे का निर्यात हुआ। सबसे अधिक निर्यात जापान को हुआ। 12 बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठान, 11 मध्यम दर्जे के प्रतिष्ठान और 4552 छोटे प्रतिष्ठान हैं। गोवा में विकास की वार्षिक दर अनुमानत: 6 प्रतिशत रही है ।

विश्वविद्यालय: गोवा विश्वविद्यालय।

पर्यटन: पर्यटन गोवा का एक प्रमुख उद्योग बना रहा है। औसतन 10 लाख पर्यटक (1.25 लाख विदेशी पर्यटकों सहित) गोवा हर साल आते हैं ।

इस प्रदेश के महत्वपूर्ण पर्यटक स्थान हैं – पुराना गोवा, जहां बोम जीसस का बसिलिका है, जिसमें गोवा के देवदूत सेंट फ्रांसिस जेवियर का शव सुरक्षित रखा हुआ है। अन्य विख्यात धर्म स्थान से कैथेड्रल और असिसि चर्च है। कुछ किलोमीटर दूर पर पर पोंडा है, जहां मंगेशी, शिव मंदिर, शांता दुर्गा मंदिर और नगेशी मंदिर हैं । पणजी में मांडोवी नदी पर दोना पौला, अरावेलम प्रपात, मेईम झील, दूध सागर झरना, बोंडला पशु अभयारण्य, मरमागोआ बंदरगाह और अगुआडा फोर्ट अन्य पर्यटक स्थल हैं ।

राज्यपाल: मोहम्मद फजल

मुख्य मंत्री: फ्रांसिस्को सरदिन्हा

जम्मू एवं काश्मीर

क्षेत्रफल: 22,236 वर्ग कि.मी., **राजधानी:** श्रीनगर (गर्मी), जम्मू (सर्दी); **भाषा:** उर्दू, काश्मीरी डोगरी, लद्दाखी, आदि; **जिले:** 14; **जनसंख्या:** 77,18,700*; **साक्षरता:** 26.17%; **प्रति व्यक्ति आय (88–90):** 3420 रु.; **सामुदायिक जनसंख्या (1981):** हिन्दू: 1,930,448; इस्लाम: 3,843,451, ईसाई: 8,481; सिक्ख: 133,675; बौद्ध: 69,706।

भू–आकृति: यह राज्य देश के उत्तरी कोने पर है ।इसके उत्तर में चीन, पूर्व में तिब्बत और दक्षिण में हिमाचल प्रदेश पंजाब और पाकिस्तान है । राज्य की राजभाषा उर्दू है ।

इतिहास: जम्मू और काश्मीर राज्य, जिस पर पहले हिंदू राजाओं और उसके बाद मुस्लिम सुल्तानों ने शासन किया, अकबर के शासन काल में मुगल साम्राज्य का अंग बन गया। 1756 के आरंभ में अफगान शासन के बाद 1819 में इसे पंजाब के सिक्ख राज्य में मिला लिया गया। 1846 में रणजीतसिंह ने जम्मू प्रदेश महाराजा गुलाब सिंह को दे दिया। 1846 में सोबराव के निर्णायक युद्ध के बाद अमृतसर की संधि के अधीन काश्मीर भी महाराजा गुलाब सिंह को दे दिया गया। उसके बाद 1947 में भारतीय स्वाधीनता अधिनियम [illegible] के समय तक यह राज्य ब्रिटिश प्रभुत्व के अधीन [illegible]

स्वाधीनता के बाद सभी रियासतों ने [illegible] में मिल जाने का फैसला किया, किंतु [illegible] कि वह भारत और पाकिस्तान दोनों के [illegible] रखने का करार करना चाहता है । [illegible] पाकिस्तान ने आक्रमण कर दिया [illegible] ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर करके [illegible] काश्मीर राज्य का भारत में [illegible]

महाराजा के पुत्र युवराज [illegible] (रीजेंट) बने और [illegible] अक्तूबर 1952) [illegible] दिया गई।

[illegible] की [illegible]
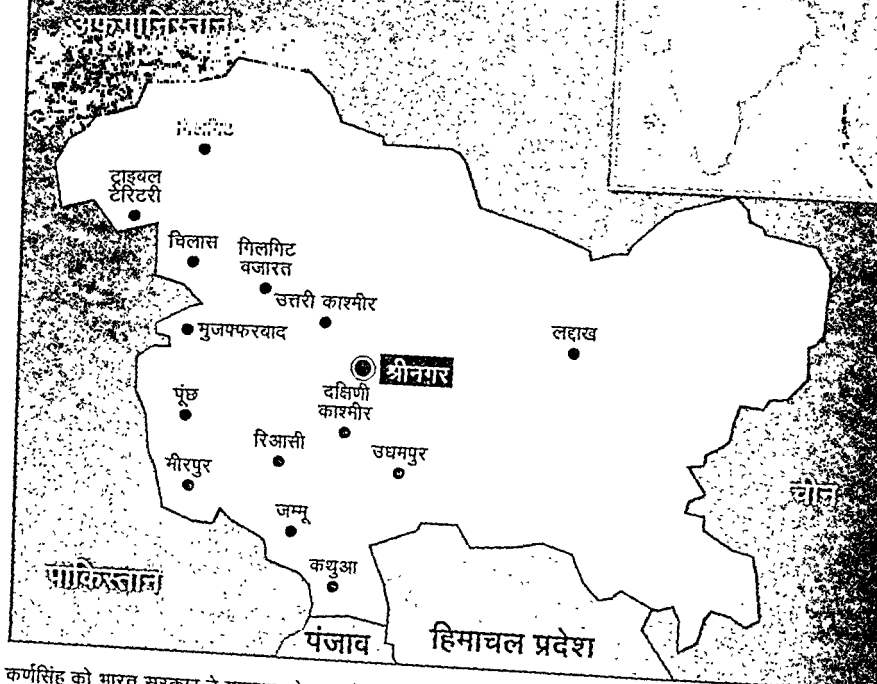
कर्णसिंह को भारत सरकार ने महाराजा के रूप में मान्यता दे दी, किंतु कर्णसिंह ने निर्णय किया कि वह महाराजा की उपाधि का इस्तेमाल नहीं करेंगे ।

प्रशासन: जम्मू और काश्मीर राज्य का संविधान 17 नवंबर, 1956 से आंशिक रूप में और 26 जनवरी, 1957 से पूरी तरह से लागू हुआ। संविधान में दो–सदनीय विधान मंडल (1) विधान सभा, (2) विधान परिषद का प्रावधान है।

इस राज्य में कुल 14 जिले हैं। इनमें से 6 जम्मू में और 6 काश्मीर में है और दो लद्दाख क्षेत्र में हैं ।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
अनन्तनाग	3,984	8,26,291	अनन्तनाग
बादगाम	1,371	4,97,346	बादगाम
बारामूला	4,588	8,61,214	बारामूला
डोडा	11,691	5,25,326	डोडा
जम्मू	3,097	12,07,996	जम्मू
कारगिल	14,036	81,067	कारगिल
कठुआ	2,651	4,92,288	कठुआ
कुपवारा	2,379	4,16,404	कुपवारा
लेह	82,665	89,974	लेह
पुलवामा	1,398	5,16,441	पुलवामा
पूंछ	1,674	2,92,207	पूंछ
राजौरी	2,630	4,17,333	राजौरी
श्रीनगर	2,228	8,92,506	श्रीनगर
उधमपुर	4,550	6,02,807	उधमपुर

चीन के अवैधानिक कब्जे में 37,555 वर्ग किलोमीटर भा सम्मिलित है।

इस राज्य की अर्थ व्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर ही निर्भर है। धा गेहूं और मक्का मुख्य फसलें हैं। कुछ क्षेत्रों में जौ, ज्वार औ बाजरा भी पैदा होता है। चना लद्दाख में पैदा होता है।

राज्य सरकार दस्तकारी और हथकरघे की तरक्की क उच्च प्राथमिकता देती है। काश्मीरी दस्तकारी सदैव अप

उत्कृष्टता के लिए विख्यात रही है। कागज़ की लुग्दी से वस्तुएं बनाने, लकड़ी पर नक्काशी, गलीचे और शाल आदि बनाने का काम कश्मीर में प्राचीन काल से होता आया है। इस क्षेत्र में लगभग 17 लाख लोगों को रोजगार मिला हुआ है। कश्मीरी दस्तकारी की वस्तुओं से, विशेषतया गलीचों से, भारत को काफी विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। 1985–86 में 40 करोड़ रुपए की दस्तकारी की वस्तुओं का निर्यात हुआ।

विश्वविद्यालय: युनिवर्सिटी आफ जम्मू; युनिवर्सिटी आफ कश्मीर; शेरे कश्मीर युनिवर्सिटी आफ एग्रिकल्चरल साइंसेज एंड टेक्नालोजी, श्रीनगर; वैष्णो देवी मंदिर बोर्ड ने जम्मू में एक संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना करने का निश्चय किया है।

पर्यटन केंद्र: कश्मीर, देश के और विदेशी सभी पर्यटकों के लिए स्वर्ग है। आकर्षण के मुख्य केंद्र श्रीनगर, पहलगाम, गुलमर्ग, सोनमर्ग आदि हैं। प्रमुख तीर्थ–स्थान अमरनाथ और वैष्णव देवी हैं।

राज्यपाल: गिरीश चंद सक्सेना

मुख्यमंत्री: फारुख अब्दुल्ला (नेशनल कांफ्रेंस)

तमिलनाडु

क्षेत्रफल: 130,058 वर्ग कि.मी.; **राजधानी:** चेन्नई (मद्रास); **भाषा:** तमिल; **जिले:** 29; **जनसंख्या:** 55,858,946; **पुरुष:** 28,217,947; **महिलाएं:** 27,420,371; **वृद्धि (1981–91):** 7,230,241; **वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91:** 14.94; **जनसंख्या घनत्व:** 428; **शहरी जनसंख्या:** 34.15%; **लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष):** 972; **साक्षरता:** 63.72%; **पुरुष:** 74.88%; **महिलाएं:** 52.29%; **प्रति व्यक्ति आय:** 4428 रु.; **1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या:** 55,858,946।

तमिलनाडु भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिणी–पूर्वी कोने में स्थित है। उसके पूर्व में बंगाल की खाड़ी, दक्षिण में हिंद महासागर, पश्चिम में अरब सागर और उत्तर में कर्नाटक व आंध्र प्रदेश है।

भू–आकृति: इस राज्य की भूमि को दो प्राकृतिक भागों में बांटा जा सकता है:

(1) पूर्वी समुद्रतटीय मैदान, और

(2) उत्तर से पश्चिम तक पहाड़ी प्रदेश।

समुद्रतटीय मैदान को साधारणतया निम्नलिखित भागों में बांटा जाता है: (1) कारोमंडल मैदान जिसमें चिंगलपेट, साउथ अर्काट और नार्थ अर्काट जिले सम्मिलित हैं; (2) तंजौर और तिरुचिरापल्ली जिले के कुछ भाग में फैला कावेरी डेल्टा का उपजाऊ मैदान; और (3) दक्षिण का सूखा मैदान जिसमें मदुरै, रामनाथपुरम, कामराज, अण्णा, कन्याकुमारी, पोन मुथुरामलिंगम और तिरुनेलवेली जिले सम्मिलित हैं।

नीलगिरी जिले के विख्यात उदगमंडलम क्षेत्र में सबसे ऊंची चोटी दोदाबेट्टा है, जो समुद्रतल से 2640 मीटर ऊंची है।

इस राज्य की नदियां पश्चिमी घाट से पूर्व की ओर बहती हैं और उनमें सिर्फ वर्षा का पानी बहता है। जिन नदियों में हर मौसम में पानी रहता है, उनके नाम हैं – पलार, चेय्यार, पोन्नार, कावेरी, मेयार, भवानी, अमरावती, वैगै, चिन्नार और ताम्रपर्णी। जिन नदियों में साल भर पानी नहीं रहता, उनके नाम हैं – वेल्लार, नोइल, सुरुलियार, गुंडार, वैपार वलपारै और वर्शली। 760 कि.मी. लंबी कावेरी इस राज्य की मुख्य नदी है।

इतिहास: तमिलनाडु का इतिहास लगभग 6000 वर्ष पुराना है। यह राज्य भारत में उस द्रविड़ सभ्यता का प्रतिनिधि है जो आर्य सभ्यता से लगभग 1000 वर्ष पहले भारत में विकसित थी। जिस द्रविड़ सभ्यता का तमिलनाडु एक अंग है, वह ई.पू. चौथी शताब्दी में चोल, पांड्य और चेर राजवंशों के समय में सुविख्यात रही। ई.पू. पहली शताब्दी में पाण्ड्य वंश के एक शासक ने रोमन सम्राट अगस्टस के यहां अपना राजदूत भेजा था।

1639 में मद्रास में ईस्ट इंडिया कंपनी के आगमन से तमिलनाडु के इतिहास में एक नया अध्याय आरंभ हुआ। धीरे–धीरे सारा तमिलनाडु और अधिकांश दक्षिण भारत अंग्रेजों के प्रभुत्व में आ गया।

जब भारत स्वाधीन हुआ, उस समय इसमें तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और केरल का कुछ भाग शामिल था। किंतु पृथक आंध्र राज्य के निर्माण के लिए हुए आंदोलन से मजबूर होकर भारत सरकार ने इस राज्य को दो राज्यों में बांट दिया – तेलुगु भाषी लोगों का आंध्र प्रदेश और तमिल भाषी लोगों का मद्रास राज्य। पुरानी राजधानी मद्रास शहर नये मद्रास राज्य में रहा।

1956 के राज्य पुनर्गठन ऐक्ट के परिणामस्वरूप मद्रास राज्य में से मलाबार जिला और दक्षिण कनारा जिले का कासरगोड तालुक नवनिर्मित केरल राज्य में मिला दिया गया और उसके बदले में केरल के त्रिवेंद्रम जिले के चार तालुके और कोइलोन जिले का शेनकोट्टा तालुक मद्रास को दिया गया। केरल राज्य के जो चार तालुके मद्रास को मिले, उन्हें मिलाकर मद्रास राज्य का कन्याकुमारी जिला बना दिया गया। नये मैसूर राज्य (कर्नाटक) में पुराने दक्षिण कनारा जिले का कुछ भाग (कासरगोड तालुक छोड़कर) और कोयम्बतूर जिले का कोल्लेगाल तालुक मिला दिया गया। अप्रैल 1960 में आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले का 405 वर्ग मील क्षेत्र मद्रास को दे दिया गया और उसके बदले में मद्रास के चेंगलपट्टु और सेलम जिले में से 326 वर्ग मील क्षेत्र आंध्र प्रदेश को दे दिया गया।

14 जनवरी, 1969 में मद्रास राज्य का नाम बदल कर तमिलनाडु रखा गया।

प्रशासन: इस राज्य के विधान मंडल में एक ही सदन अर्थात विधान सभा है। पहले विधान परिषद भी थी, किंतु 1986 में उसका उन्मूलन कर दिया गया। राज्य में 29 जिले हैं।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
चेन्नई	174	38,41,39[illegible]	[illegible]
कांचीपुरम	4,433	[illegible]4,42,179	[illegible]
तिरुवल्लूर	[illegible]	[illegible]2,11,414	[illegible]
वेल्लूर	[illegible]	30,2[illegible],432	[illegible]
तिरुवन्नामलै	[illegible]	[illegible]679	[illegible]

कुडलूर	3,999	4,22,759	कुडलूर
विल्लुप्परम	7,217	27,46,465	विल्लुप्परम
शिवगंगाई	4,050	1,074,989	शिवगंगाई
सेलम	5,220	26,62,164	सेलम
नामक्कल	3,429	12,34,218	नामक्कल
धर्मपुरी	9,622	24,28,596	धर्मपुरी
पुतुक्कोट्टाइ	4,651	13,27,148	पुतुक्कोट्टाइ
ईरोड	8,209	23,20,263	ईरोड
नीलगिरि	2,549	7,10,214	उदकमंडलम
कोयम्वतूर	7,469	3,531,078	कोयम्वतूर
तिरुचिरापल्ली	5,114	21,96,473	तिरुचिरापल्ली
करुर	2,896	8,54,162	करूर
पेरामवालूर	3,691	10,87,413	पेरामवालूर
तंजावुर	3,397	20,53,760	तजावुर
नागापट्टिनम	2,761	13,77,601	नागापट्टिनम
तिरुवरूर	2,161	11,00,096	तिरुवरूर
मदुराई	3,676	24,00,339	मदुराइ
तेनी	2,889	10,49,323	तेनी
डिंडीगुल	6,058	17,60,601	डिंडीगुल
रामनाथपुरम	4,232	11,44,040	रामनाथपुरम
शिवागंगाई	4 086	10,78,190	शिवागंगाई
विरुदनगर	4 288	15,65,037	विरुदनगर
तिरुनेलवेली	6 810	25,01,832	तिरुनेलवेली
तुतुकुडी	4 621	14,55,920	तुतुकुडी
कन्याकुमारी	1 685	16,00,349	नागरकोयल

तमिलनाडु की अर्थ व्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। यहां चावल प्रति हेक्टेयर 2.5 टन पैदा होता है, जो भारत में सबसे अधिक है।

तमिलनाडु मे गन्ने का उत्पादन 100 टन प्रति हेक्टेयर है। लगभग 3 5 लाख एकड क्षेत्र में गन्ने की खेती होती है। कपास की खेती 2.8 लाख हेक्टेयर में होती है।

चाय और काफी प्रमुख बागान फसलें हैं।

तमिलनाडु मे भारत का एक-चौथाई धागा, एक-पांचवां भाग सीमेट कास्टिक सोडा और नाइट्रोजन वाला उर्वरक पैदा होता है। देश के कुल उत्पादन का दसवां भाग चीनी,

़डलूर	3,999	4,22,759	कुडलूर
़ल्लुपरम	7,217	27,46,465	विल्लुपरम
़वगंगाई	4,050	1,074,989	शिवगंगाई
़लम	5,220	26,62,164	सेलम
़मक्कल	3,429	12,34,218	नामक्कल
़र्मपुरी	9,622	24,28,596	धर्मपुरी
़तुक्कोट्टाइ	4,651	13,27,148	पुतुक्कोट्टाइ
़रोड	8,209	23,20,263	ईरोड
़लगिरि	2,549	7,10,214	उदकमंडलम
़ोयम्बतूर	7,469	3,531,078	कौयम्बतूर
़रुचिरापल्ली	5,114	21,96,473	तिरुचिरापल्ली
़रूर	2,896	8,54,162	करूर
़रामबालूर	3,691	10,87,413	पेरामबालूर
़जावुर	3,397	20,53,760	तंजावुर
़गापट्टिनम	2,761	13,77,601	नागापट्टिनम
़रुवरूर	2,161	11,00,096	तिरुवरूर
़दुराई	3,676	24,00,339	मदुराइ
़नी	2,889	10,49,323	तेनी
डिंडीगुल	6,058	17,60,601	डिंडीगुल
रामनाथपुरम	4,232	11,44,040	रामनाथपुरम
शिवागंगाई	4,086	10,78,190	शिवागंगाई
विरुदनगर	4,288	15,65,037	विरुदनगर
तिरुनेलवेली	6,810	25,01,832	तिरुनेलवेली
तुतुकुडी	4,621	14,55,920	तुतुकुडी
कन्याकुमारी	1,685	16,00,349	नागरकोयल

तमिलनाडु की अर्थ व्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। यहां चावल प्रति हेक्टेयर 2.5 टन पैदा होता है, जो भारत में सबसे अधिक है।

तमिलनाडु में गन्ने का उत्पादन 100 टन प्रति हेक्टेयर है। लगभग 3.5 लाख एकड़ क्षेत्र में गन्ने की खेती होती है। कपास की खेती 2.8 लाख हेक्टेयर में होती है।

चाय और काफी प्रमुख बागान फसलें हैं।

तमिलनाडु में भारत का एक–चौथाई धागा, एक–पांचवां भाग सीमेंट, कास्टिक सोडा और नाइट्रोजन वाला उर्वरक पैदा होता है। देश के कुल उत्पादन का दसवां भाग चीनी,

साइकिलें और कैल्शियम कार्बाइड इसी राज्य में होता है। तमिलनाडु में देश की 60 प्रतिशत दियासलाइयां और 77 प्रतिशत तैयार चमड़े का उत्पादन होता है।

इस राज्य में बड़े मध्यम दर्जे और छोटे उद्योगों को वित्तीय सहायता और तकनीकी जानकारी प्रदान करने हेतु प्रमुख निगम हैं – तमिलनाडु औद्योगिक विकास निगम, तमिलनाडु उद्योग संवर्धन निगम और टी.आई.आई.सी.। इन निगमों की सहायता से तमिलनाडु के विभिन्न भागों – होसूर, रानीपेट, गिंडी, अम्बत्तूर, कारेकुडी, शिवगागा, परमकुडी और तिरुचिरापल्ली में विकास केंद्र और औद्योगिक बस्तियों की स्थापना की गई है।

यहां के समस्त परिवहन निगम (20) को 1997 में एकीकृत करके तमिलनाडु सरकार परिवहन निगम के अंतर्गत लाया गया था। यहां के सारे जिले 2000 मध्य तक इंटरनेट से जुड़ जायेंगे।

विश्वविद्यालय: अलागप्पा विश्वविद्यालय, काराकुडी, तमिलनाडु डा. अम्बेदकर विधि विश्वविद्यालय चेन्नई; चेन्नई (भारत की पहली) अन्ना विश्वविद्यालय चेन्नई; अन्नामलाई विश्वविद्यालय अन्नामलाईनगर; श्री अविन्सालिंगम इंस्टीट्यूट फार होम साइंस एंड हाइयर एजुकेशन फार वीमेन, कोयमबत्तूर; भरतियार विश्वविद्यालय कोयमबत्तूर; भारतिदासन विश्वविद्यालय तिरुचिरापल्ली; दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई; गांधीग्राम रूरल इंस्टीट्यूट, गांधीग्राम; इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालोजी, मद्रास; मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई; मदुरई कामराज विश्वविद्यालय, मदुरई; एम.एस. विश्वविद्यालय तिरुनलवेली; मदर टेरेसा महिला विश्वविद्यालय, कोडाईकनाल; श्री चंद्रा–सेखारेंद्र सरस्वती विश्व महा विद्यालय, कांचीपुरम; श्री रामचंद्रा मेडिकल कालेज एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, चेन्नई; तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयमबत्तूर; तमिलनाडु डा. एम.जी.आर. मेडिकल युनिवर्सिटी, चेन्नई; तमिलनाडु वेटिनेरी एंड एनिमल साइंसेज युनिवर्सिटी, चेन्नई; तमिल विश्वविद्यालय, तंजाउर।

पर्यटन केंद्र: तमिलनाडु पर्यटन विकास निगम 17 होटल, 1 समुद्रतटीय सैरगाह और 10 युवा होस्टल चलाता है।

हिल स्टेशन: उदगमंडलम (ऊटी), कोडाईकनाल और एर्काड।

धार्मिक स्थान: शुचींद्रम, रामेश्वरम, तिरुचेन्दूर, मदुरै, पलनी, तिरुचिरापल्ली, श्रीरंगम, तंजौर, कुम्बकोणम, नागोर, वेलांकण्णि, वैतीश्वरन कोइल, चिदम्बरम, तिरुवण्णामलै, कांचीपुरम, तिरुत्तणि और कन्याकुमारी।

पर्यटक केंद्र: मामल्लपुरम, पूमपुहार, पिचावरम, प्वाइंट कालिमेर, कुट्रालम, होगेनकल, अन्नामलै, पशु अभयारण्य, मुदुमलै पशु अभयारण्य, वेडन्तांगल पक्षी विहार, कालकाड और वंडलूर चिड़िया घर और मुंडातुरै पशु अभयारण्य।

चेन्नई में: फोर्ट सेंट जार्ज, फोर्ट संग्रहालय, मरीना बीच स्नेक पार्क, गिंडी पार्क, गिंडी मृग अभयारण्य एवं बच्चों का पार्क, एग्मोर संग्रहालय, वल्लुवर–कोट्टम पार्क, अलियार और वंडलूर चिड़ियाघर, मुत्तुकाडु बोट हाउस।

राज्यपाल: न्यायमूर्ति सुश्री फातिमा बीवी

मुख्य मंत्री: एम. करुणानिधि (डी एम के)

त्रिपुरा

क्षेत्रफल: 10,486 वर्ग कि.मी.; राजधानी: अगरतला; भाषा: बंगाली, कबचार्क और मणिपुरी; जिले: 3; जनसंख्या: 2,757,205; पुरुष: 1,410,545; महिलाएं: 1,334,282; वृद्धि (1981–91): 691,769; वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91: 33.69; जनसंख्या घनत्व: 262; शहरी जनसंख्या: 15.30%; लिंगानुपात (महिला प्रति हजार पुरुष): 946; साक्षरता: 60.39%; पुरुष: 70.08%, महिलाएं: 50.01%; प्रति व्यक्ति आय: 2866 रु.; 1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या: 2,757,205।

त्रिपुरा भारत में दूसरे नंबर का सबसे छोटा राज्य है।

1 नवंबर, 1957 को इसे संघ शासित प्रदेश बनाया गया था और 21 जनवरी, 1972 को इसे पूर्ण राज्य का दर्जा प्रदान कर दिया गया।

भू–आकृति: त्रिपुरा के चारों ओर बंगलादेश है – केवल पूर्वोत्तर में एक संकरी पट्टी है, जहां त्रिपुरा की सीमा असम और मिज़ोरम से मिलती है।
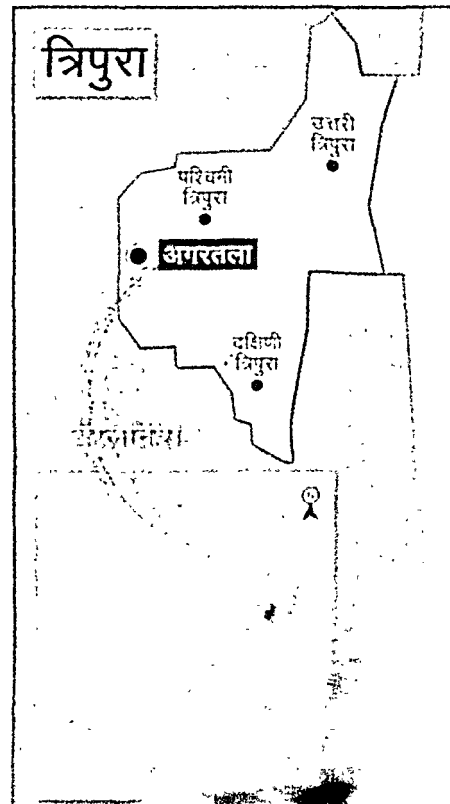
इतिहास: त्रिपुरा एक प्राचीन हिन्दु राज्य था और 15 अक्टूबर, 1949 को भारत संघ में मिलने से पहले 1300 वर्षो तक यहां महाराजा शासन करते रहे थे । राज्यों का पुनर्गठन होने पर 1 सितंबर, 1956 को त्रिपुरा संघ शासित प्रदेश बना और 21 जनवरी, 1972 को इसे पूर्ण राज्य का दर्जा प्रदान किया गया।

प्रशासन: विधान मंडल में एक सदन विधान सभा है । यह राज्य उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में आता है । इस उच्च न्यायालय की एक पीठ अगरतला में है ।

त्रिपुरा में 3 जिले, 10 प्रशासकीय प्रखंड और 127 तहसीलें व 5215 गांव हैं ।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या	मुख्यालय
उत्तरी त्रिपुरा	2,820.63	4,67,147	काइलाशहर
दक्षि. त्रिपुरा	2,151.77	7,17,100	उदयपुर
प. त्रिपुरा	2,996.82	12,93,861	अगरतला
धलाई	2,522.47	2,79,097	अम्बासा

इस राज्य में लगभग 54.5 प्रतिशत भूमि में वन है । केवल लगभग 24.3 प्रतिशत भूमि कृषि के लिए उपलब्ध है । कृषि की मुख्य फसलें है– धान, गेहूं, गन्ना, आलू और तिलहन । लगभग 2.5 लाख हेक्टेयर जमीन में कृषि होती है ।

त्रिपुरा राज्य में चाय एक प्रमुख उद्योग है । 5.527 लाख हेक्टेयर में 49 पंजीकृत चाय बागान हैं, जिनमें प्रति वर्ष 45 लाख कि.ग्रा. चाय पैदा होती है ।

सरकारी क्षेत्र में त्रिपुरा में अगरत्तला में एक जूट कारखाना स्थापित किया गया है ।

इस राज्य में छोटे पैमाने के प्रमुख उद्योग हैं – एल्युमिनियम के बर्तन बनाने का कारखाना, लकड़ी चीरने का कारखाना, इस्पात का फर्नीचर उद्योग, बढ़ईगीरी, दवायें, चावल मिल, कपड़े धोने का साबुन, आर.सी.सी. स्पन पाइप, पी.वी.सी पाइप, आटा मिल, एल्युमिनियम कंडक्टर, चमड़े की वस्तुएं, पोलीथीन पाइप, प्लाईवुड, फलों की डिब्बाबंदी, मोमबत्ती, तेल मिल आदि । हथकरघा इस राज्य का सबसे बड़ा उद्योग है। बुनाई तो वस्तुत: कबीलों का घरेलू उद्योग है। उन्नत तकनीक का प्रशिक्षण देने हेतु राज्य के विभिन्न भागों में नौ प्रायोगिक परियोजनायें चल रही हैं और इनमें बढ़िया किस्म के हथकरघे का कपड़ा बन रहा है।

इस राज्य में रेशम कीट पालन उद्योग तेजी से विकसित हो रहा है। लगभग 1200 एकड़ भूमि में शहतूत के पेड़ है और साल में लगभग 5000 कि.ग्रा. कोये तैयार होते हैं। अगरत्तला में दस्तकारी संबंधी एक डिजाईन केंद्र चल रहा है

विश्वविद्यालय: त्रिपुरा विश्वविद्यालय, अगरतला।

पर्यटक केंद्र: महत्वपूर्ण पर्यटक केंद्र हैं – नीरमहल, सिपाहीजल, डम्बूर झील, कमल सागर, जम्पुई पहाड़ी, उनाकोटि और माताहारी आदि ।

राज्यपाल: सिद्धेश्वर प्रसाद

मुख्य मंत्री: मणिक सरकार (मा.क.पा)

नागालैंड

क्षेत्रफल: 16,579 वर्ग कि.मी.; राजधानी: कोहिमा; भाषा: अंग्रेजी, आओ, कोयक, आंगामी, सेमा और लोथा; जिले: 7; जनसंख्या: 1,209,546; पुरुष: 643,273; महिलाएं: 572,300; वृद्धि (1981–91): 440,643; वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91: 56.86; जनसंख्या घनत्व: 73; शहरी जनसंख्या: 17.21%; लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष): 890; साक्षरता: 61.30%; पुरुष: 66.09%; महिलाएं: 55.72%; प्रति व्यक्ति आय: 3464 रु.; 1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या: 1,209,546।

भू–आकृति: नागालैंड राज्य असम की ब्रह्मपुत्र घाटी और बर्मा के बीच पहाड़ी इलाके की संकरी पट्टी में बसा हुआ है। इसके पूर्व में भारत और बर्मा की अंतर्राष्ट्रीय सीमा है। इसके दक्षिण में मणिपुर, उत्तर और पश्चिम में असम और पूर्वोत्तर में अरुणाचल प्रदेश है ।

तराई के कुछ भागों को छोड़कर सारा राज्य पहाड़ी है । सबसे ऊंची चोटी सारामती 3841 मीटर ऊंची है और राजधानी कोहिमा समुद्रतल से 1444 मीटर की ऊंचाई पर
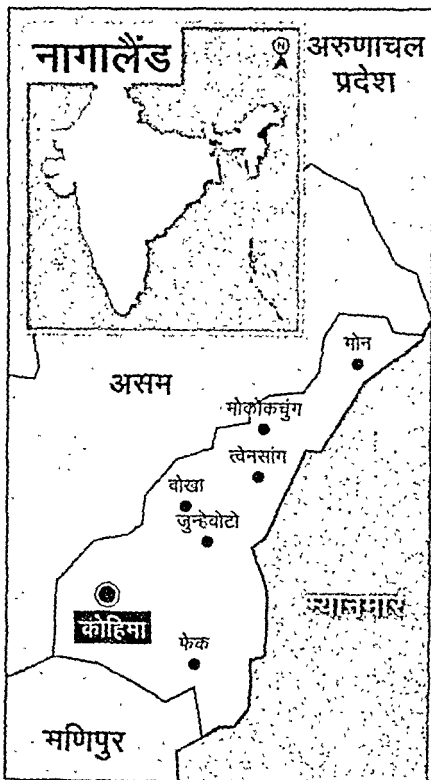
है। इस राज्य में बहने वाली मुख्य नदियां धनश्री, दोयांग, दिखु और झांजी हैं। नागालैंड की लगभग सारी जनसंख्या कबीलाई है। नागाओं के कई अलग-अलग कबीले और उप-कबीले हैं जिनकी अपनी पृथक-पृथक भाषायें और सांस्कृतिक विशेषताएं हैं।

इतिहास: नागालैंड राज्य में असम का भूतपूर्व नागा हिल्स जिला और पूर्वोत्तर सीमान्त एजेन्सी का भूतपूर्व त्वेनसांग सीमान्त डिवीजन सम्मिलित है। 1957 में इसे केंद्र शासित प्रदेश बना दिया गया, जिसका शासन राष्ट्रपति असम के राज्यपाल के माध्यम से करता था। जनवरी 1961 में भारत सरकार ने नागालैंड को राज्य का दर्जा प्रदान कर दिया। 1 दिसंबर, 1963 को नागालैंड राज्य का विधिवत् उद्घाटन हुआ।

प्रशासन: इस राज्य में एक सदन वाला विधान मंडल है अर्थात् विधान सभा है।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
कोहिमा	4,041	3,87,581	कोहिमा
फेक	2,026	1,02,156	फेक
मोकोकचुंग	1,615	1,58,374	मोकोकचुंग
जुन्हेबोटो	1,255	97,218	जुन्हेबोटो
वोखा	1,628	82,612	वोखा
त्वेनसांग	4,228	2,32,906	त्वेनसांग
मोन	1,786	1,49,699	मोन
दीमापुर	–	–	दीमापुर

यहां का मुख्य उद्यम कृषि है। चावल मुख्य खाद्यान्न है यद्यपि मुख्य उद्यम कृषि है, परंतु राज्य के कुल क्षेत्रफल में से एक-तिहाई क्षेत्र से कुछ ही अधिक क्षेत्र कृषि योग्य है।

सरकार पहाड़ों की ढाल पर सीढ़ीदार खेत बनाकर उन पर खेती को प्रोत्साहन दे रही है। इसके लिए कई कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं और लोग इसे अपना रहे हैं। झूम कृषि के अधीन 87339 हेक्टेयर भूमि और सीढ़ीदार खेती के अधीन 62091 हेक्टेयर भूमि है। नागा अनेक दस्तकारियों में बड़े सिद्धहस्त हैं।

छोटे और मध्यम दर्जे के उद्योगों में नागालैंड ने प्रशंसनीय तरक्की की है।

बड़े उद्योग लगाने की योजनायें हैं – वैसे इस समय राज्य में 1 चीनी मिल, 1 कागज मिल और 1 प्लाईवुड कारखाना है। एक सीमेंट कारखाना बन रहा है।

नए उद्योगों में प्लास्टिक की बनी हुई वस्तुएं, ह्यूम पाइप पोलीथीन की बोरियों और रबर के चप्पल बनाने के उद्योग शामिल हैं

विश्वविद्यालय: एन.ई.एच.यू.– नार्थ ईस्ट हिल युनिवर्सिटी का कैम्पस कोहिमा में है। लुमामी में केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना का विधेयक पारित हो चुका है।

राज्यपाल: ओमप्रकाश शर्मा

मुख्य मंत्री: एस. सी. जमीर (कांग्रेस-इ)

पंजाब

क्षेत्रफल: 50,362 वर्ग कि.मी.; राजधानी: चंडीगढ़; भाषा: पंजाबी; जिले: 17; जनसंख्या: 20,281,969; पुरुष: 10,695,136; महिलाएं: 9,495,695; वृद्धि (1981–91): 3,401,880; वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91: 20.26; जनसंख्या घनत्व: 401; शहरी जनसंख्या: 29.55%; लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष): 888; साक्षरता: 57.14%; पुरुष: 63.68%; महिलाएं: 49.72%; प्रति व्यक्ति आय: 7081 रु.; 1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या: 20,281,969।

भू-आकृति: पंजाब राज्य के पश्चिम में पाकिस्तान, उत्तर में जम्मू व कश्मीर, पूर्वोत्तर में हिमाचल प्रदेश और दक्षिण में हरियाणा व राजस्थान हैं। भौतिक दृष्टि से इस राज्य को दो भागों में बांटा जा सकता है – शिवालिक तराई की पट्टी और सतलज – घग्गर का मैदान।

इतिहास: पंजाब शब्द फारसी के दो शब्दों 'पंज' और 'आब' के योग से बना है। 'पंज' का अर्थ है पांच और 'आब' का अर्थ है पानी।

भारत में आर्यों के आगमन के समय से पंजाब का इतिहास मिलता है। प्रारंभिक वैदिक काल में आर्य पंजाब और उसके आस पास के क्षेत्र में बस गये। ई.पू. 522 में फारस के शासक डेरियस ने पंजाब के आस पास के इलाके को जीत लिया और उसे फारस का एक अधीनस्थ भाग बना लिया। ई.पू. 326 में सिकंदर महान ने पंजाब पर आक्रमण किया कुछ समय तक मेसीडोनिया के गवर्नरों ने पंजाब पर नियंत्रण रखा, किंतु बाद में चंद्रगुप्त मौर्य ने उन्हें हरा कर इस प्रदेश पर कब्जा कर लिया। मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद उत्तर-पश्चिमी भारत पर पहले सीथियनों ने, उसके बाद पार्थियनों ने और उसके बाद कुषाणों ने कब्जा किया।

इन सबके बाद पंजाब पर भारतीय शासकों का अधिकार रहा। दसवीं शताब्दी से भारत पर मुसलमानों के आक्रमण शुरू हो गए। इस श्रृंखला में अंतिम आक्रमण मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर का था।

मुगल साम्राज्य के पतन के बाद दो और मुस्लिम आक्रमण भारत पर हुये [illegible]'38 में नादिरशाह का आक्रमण और 1748, 1750 और 1761 में अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण [illegible]

पंजाबी भाषी पंजाब राज्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले सिक्ख धर्म का उदय 15वीं और 16वीं शताब्दी में धार्मिक पुनर्जागरण काल में हुआ।

गुरु नानक ने एक नए धर्म के रूप में सिक्ख धर्म [illegible] की। उनके बाद नौ गुरु हुए। इस समय [illegible] लिपियां प्रचलित थीं उन्हें मिलाकर गुरु [illegible] का निर्माण किया। गुरु रामदास ने [illegible] अर्जुन देव ने आदि ग्रंथ का संकलन [illegible] सिक्खों को सैनिक शिक्षा देना [illegible]

1937 में पंजाब को [illegible] गया था। भारत के विभाजन [illegible]

पंजाब
गुरुदासपुर
होशियारपुर
हिमाचल प्रदेश
अमृतसर
कपूर्थला
जलंधर
रूपनगर
लुधियाना
चंडीगढ़
पाकिस्तान
फिरोजपुर
फरीदकोट
पटियाला
संगरूर
भटिंडा
राजस्थान
हरियाणा
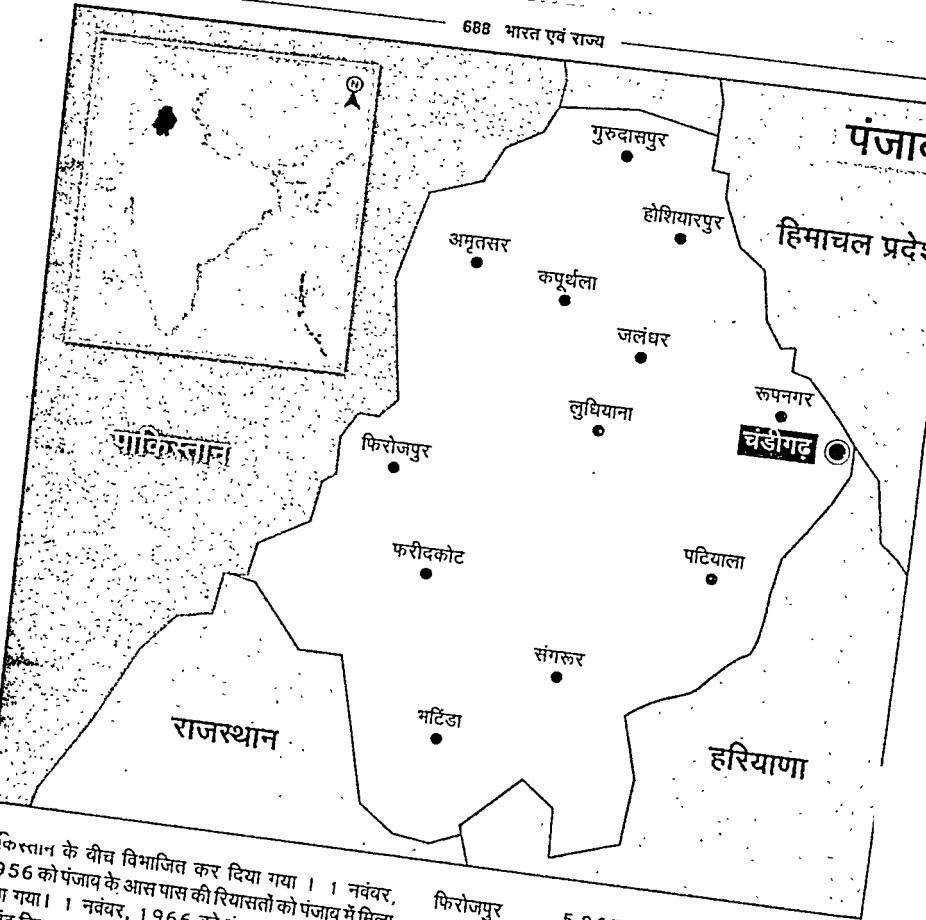
किस्तान के बीच विभाजित कर दिया गया। 1 नवंबर, 956 को पंजाब के आस पास की रियासतों को पंजाब में मिला गया। 1 नवंबर, 1966 को पंजाब को तीन इकाइयों ांट दिया गया – पंजाब, जिसमें पंजाबी भाषी इलाके शामिल हरियाणा, जिसमें हिंदी भाषी जिले और खरड तहसील लित थे और चंड़ीगढ़, जिसे राजधानी बनाया गया। पहाड़ी हिमाचल प्रदेश में मिला दिये गये।

ासन: राज्य के विधान मंडल में केवल विधान सभा ज्य 17 जिलों में विभाजित है।

	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
	5,075	25,03,165	अमृतसर
	3,377	9,79,566	भटिंडा
	1,472	4,51,406	फरीदकोट
हिब	1,180	4,62,693	फतेहगढ़ साहिब
फिरोजपुर	5,865	16,06,092	फिरोजपुर
गुरुदासपुर	3,570	17,57,808	गुरदासपुर
होशियारपुर	3,310	12,98,185	होशियारपुर
जलंधर	2,658	16,47,492	जलंधर
कपूर्थला	1,646	6,48,516	कपूर्थला
लुधियाना	3,744	24,26,883	लुधियाना
मानसा	2,174	5,80,397	मानस
मोगा	1,672	6,26,391	मोगा
मुक्तसर	2,596	6,53,079	मुक्तसर
नवांशहर	1,258	5,31,253	नवांशहर
पटियाला	3,627	15,21,330	पटियाला
संगरूर	5,021	16,85,449	संगरूर
रूपनगर	2,117	9,02,264	रूपनगर

पंजाब मुख्यत: एक कृषि प्रधान राज्य है और इस राज्य की अर्थ व्यवस्था में कृषि का सर्वाधिक महत्व है। राज्य के लगभग 70 प्रतिशत लोग कृषि के काम से जुड़े हुए हैं। इस राज्य के 85 प्रतिशत क्षेत्र में खेती होती है।

अप्रैल 1993 तक छोटे पैमाने के 1,80,000 कारखाने है। इन कारखानों में में 6,36,000 व्यक्तियों को रोजगार मिला हुआ है। 410 बड़े उद्योग भी लगे हैं जिनमें 1,62,000 लोगों को रोजगार मिला हुआ है ।

इस राज्य के प्रमुख औद्योगिक उत्पादन हैं – कपड़े, सिलाई मशीनें, खेल के सामान, चीनी, स्टार्च उर्वरक, साइकिलें, वैज्ञानिक उपकरण, बिजली के सामान, मशीनें, औजार और चीड़ का तेल ।

पंजाब में प्रति वर्ष 5133 एम.टी. दूध का उत्पादन होता है जो कि देश के कुल दूध उत्पादन का 10% है।यहां प्रति व्यक्ति दूध की खपत देश में सबसे अधिक है। पंजाब में प्रति व्यक्ति अंडो की उपलब्धता (90) भी देश में सबसे अधिक है

विश्वविद्यालय: गुरु नानक विश्वविद्यालय, अमृतसर; पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना; पंजाब टेक्निकल युनिवर्सिटी, जलंधर; पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला; थापर इंस्टीट्यूट आफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नालोजी, पटियाला।

पर्यटक केंद्र: पंजाब में अनेक पर्यटक केंद्र एवं सांस्कृतिक स्थल हैं। रोपड़ सिंधु घाटी सभ्यता का एक केंद्र है। अमृतसर में स्वर्ण मंदिर है। यह सिक्खों का तीर्थस्थल है। आनंदपुर साहिब, यहा पर गुरु गोविंद सिंह ने खालसा पंथ की शरुवात की थी। दमादमा साहेब प्रसिद्ध बैसाखी पर्व के लिये विख्यात है। भटिंडा का प्राचीन किला, कपूरथला के वास्तुकला के स्मारक, बागों का शहर पटियाला और राजधानी चंडीगढ़, जिसकी योजना फ्रांसीसी वास्तुकार ली कोर्बूज़ियर ने तैयार की थी, इस राज्य के महत्वपूर्ण पर्यटक स्थान हैं ।

राज्यपाल: ले. जनरल (अवकाश प्राप्त) जे.एफ.आर. जैकब

मुख्य मंत्री: प्रकाश सिंह बादल (शिरोमणि अकाली दल–बादल)।

पश्चिम बंगाल

क्षेत्रफल: 88,752 वर्ग कि.मी.; **राजधानी:** कलकत्ता; **भाषा:** बंगाली; **जिले:** 19; **जनसंख्या:** 68,077,965; **पुरुष:** 35,461,898; **महिलाएं:** 35,520,834; **वृद्धि (1981–91):** 13,402,085; **वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91:** 24.55; **जनसंख्या घनत्व:** 766; **शहरी जनसंख्या:** 27.48%; **लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष):** 917; **साक्षरता:** 57.72%; **पुरुष:** 67.24%; **महिलाएं:** 47.15%; **प्रति व्यक्ति आय:** 3963 रु.; **1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या:** 68,077,965

पश्चिम बंगाल भारत के पूर्व में वह संकरा प्रदेश है, जो उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में बंगाल की खाड़ी तक फैला हुआ है। इस राज्य के उत्तर में सिक्किम और भूटान, पूर्व में असम और बंगलादेश, दक्षिण में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में उड़ीसा, बिहार और नेपाल हैं ।

भू–आकृति: पश्चिम बंगाल में दो प्राकृतिक भाग हैं ।(1) उत्तरी हिमालयन भाग, जिसमें दार्जिलिंग, जलपाईगुड़ी और कूच–विहार जिले हैं और (2) उपजाऊ मैदान, जो उत्तरी हिमालयन भाग के दक्षिण में है। सबसे उत्तर में दार्जिलिंग जिला है, जिसकी ऊंचाई समुद्रतल से 3658 मीटर है। जलपाईगुड़ी और कूच–विहार के जिले अपेक्षाकृत निचले भाग में है, और इनमें तीव्रगति से वहने वाली तीस्ता, तोरसा और जलढाका नदियां हैं। दक्षिण भाग घनी जनसंख्या वाला चावल के खेतों का समतल मैदान है। यह विशाल उर्वर मैदान कई बड़ी नदियों से बना है – जिनमें मुख्य है – भागीरथी और उसकी सहायक नदियां अर्थात् मयूराक्षी, दामोदर, कांगसावाती और रूप नारायण। भागीरथी, जिसे निचले हिस्से में हुगली कहा जाता है, गंगा की एक शाखा है और कलकत्ता को समुद्र से जोड़ती है ।

संपूर्ण राज्य भारी वर्षा वाले क्षेत्र में है। दक्षिणी–पश्चिमी भाग में 1006 मिलीमीटर से लेकर उत्तरी भाग में 2933 मिलीमीटर तक वर्षा होती है। किंतु राज्य की राजधानी में सामान्य वर्षा 1605 मिलीमीटर होती है ।

इतिहास: पुराना बंगाल (पश्चिम बंगाल इसका एक भाग है) जिसे प्राचीन संस्कृत साहित्य में गौड़ या बंग कहा जाता है, महाकाव्य काल से चला आ रहा था ।

तीसरी शताब्दी में बंगाल मौर्य साम्राज्य का अंग और चौथी से छठी शताब्दी तक यह गुप्तवंशी शासक के अधीन रहा। लगभग 800 ई. तक बंगाल में पाल के स्वाधीन शासकों का राज्य था। अपने उत्कर्ष काल में पालों का राजनयिक संबंध इंडोनेशिया के शासक श्री विजय के साथ था। 11वीं शताब्दी में बंगाल में सेन वंश की स्थापना हो गई। सेन शासकों को, जिनकी राजधानी नदिया थी, दिल्ली के सुल्तान कुतुबुद्दीन ने हरा कर बंगाल से भगा दिया और इस प्रकार बंगाल दिल्ली सल्तनत का हिस्सा बन गया। अंतिम महत्वपूर्ण मुगल शासक औरंगजेब की मृत्यु के वाद बंगाल के गवर्नर सिराजुद्दौला ने अपने को स्वाधीन घोषित कर दिया । सिराजुद्दौला बंगाल का अंतिम स्वाधीन मुस्लिम शासक था और 1757 में प्लासी की लड़ाई में उसे अंग्रेजों के हाथों पराजय का सामना करना पड़ा। सात वर्षों तक बंगाल पर अंग्रेजों और सिराजुद्दौला के उत्तराधिकारियों, मीर जाफर और मीर कासिम का दोहरा नियंत्रण रहा। 1764 में बक्सर की लड़ाई में मीर कासिम की हार हो गई और अंग्रेजों ने बंगाल पर कब्जा कर लिया।

1905 में लार्ड कर्जन ने बंगाल को दो प्रांतों में विभाजित कर दिया। पुराने बंगाल में से असम एवं पूर्वी बंगाल नाम का एक प्रांत अलग बना दिया गया और उसकी राजधानी ढाका प्रांत अलग वना दी गई ।

जब 1947 में भारत स्वाधीन हुआ, तो बंगाल दो भागों में वंट गया – एक भाग भारत में रहा और दूसरा पाकिस्तान में चला गया। पाकिस्तान में जो भाग गया, उसे पूर्वी बंगाल नाम दिया गया, जो भाग भारत में रह गया, उसे पश्चिमी बंगाल नाम दिया गया ।1950 में कूच–विहार रियासत को पश्चिम बंगाल में मिला दिया गया। 2 अक्टूबर, 1954 को भूतपूर्व फ्रांसीसी वस्ती चंद्रनगर को पश्चिम बंगाल में सम्मिलित कर दिया गया ।राज्यों के पुनगर्ठन की योज[illegible] फलस्वरूप बिहार के कुछ हिस्से पश्चिम बंगाल में [illegible]ये ।

प्रशासन: इस राज्य के विधान मंड[illegible] विधान सभा है। राज्य 19 जिलों में

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
बांकुरा	6,882	28,05,065	बांकुरा
वीरभूम	4,545	25,55,664	सूरी
वर्दमान	7,024	60,50,605	वर्दमान
कलकत्ता	18,733	43,99,819	कलकत्ता
कूच विहार	3,387	21,71,145	कूच विहार
दार्जिलिंग	3,149	12,99,919	दार्जिलिंग
हुगली	3,149	43,55,230	चिनसुरा
हावड़ा	1,467	37,29,644	हावड़ा
जलपाईगुड़ी	6,227	28,00,543	जलपाईगुडी
माल्दा	3,733	26,37,032	माल्दा
मिदनापुर	14,081	83,31,914	मिदनापुर
मुर्शिदावाद	5,324	47,40,149	वरहमपुर
नदिया	3,927	38,52,097	कृष्णगौरे
पुरुलिया	6,259.	2,224,577	पुरुलिया
उत्तरी 24 परगना	14,052	72,81,881	अलीपुर
दक्षि.24 परगना	–	57,15,030	वारासाट
पुरुलिया	6,259	22,24,577	पुरुलिया
उत्तर दीनाजपुर	3,180	19,26,729	रायगंज
दक्षिण दीनाजपुर	2,183	12,00,924	वालुरघाट
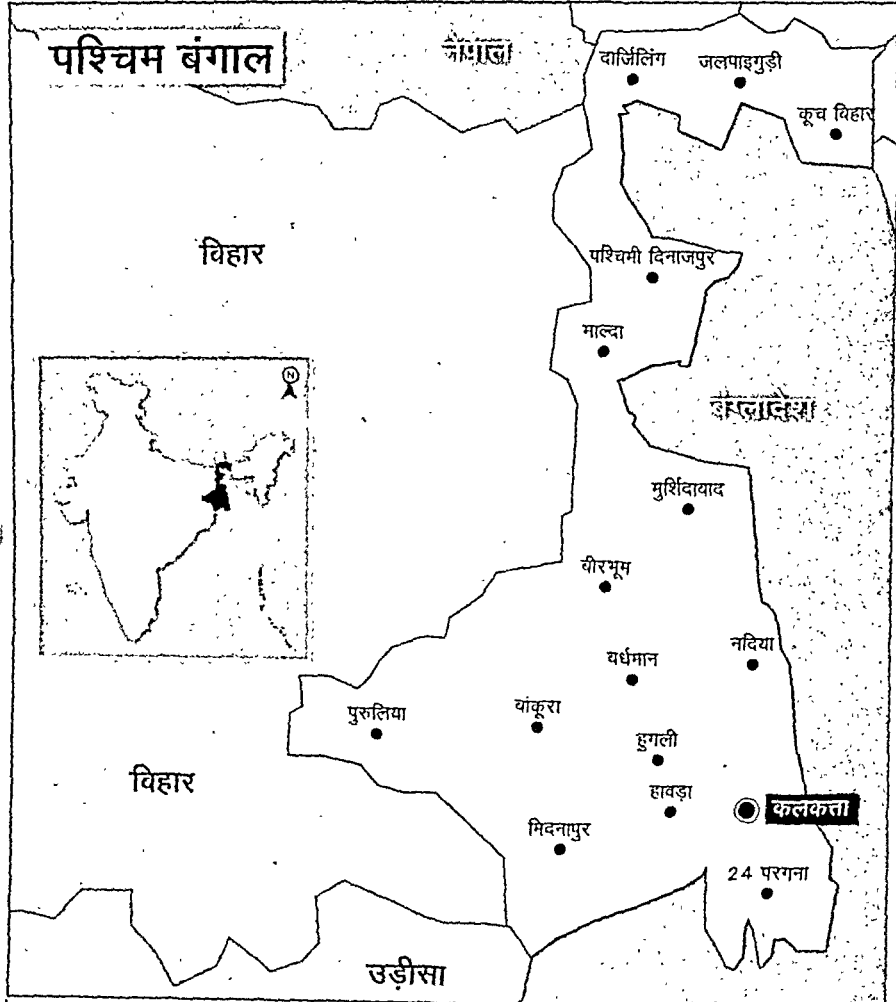
पश्चिमी बंगाल का स्थान देश में चावल के उत्पादन में दूसरा और खाद्यान्नों के उत्पादन में चौथा है । चावल इस राज्य की एक प्रमुख फसल है । 56.14 लाख हेक्टेयर (1989–90) भूमि पर चावल की खेती होती है ।1993–94 में कुल खाद्यान्न उत्पादन 131 लाख टन था।

नकदी फसलों में जूट, मेस्ट और चाय प्रमुख हैं ।पश्चिमी बंगाल में देश के कुल उत्पादन का 60.4 प्रतिशत जूट और मेस्ट, 24.2 प्रतिशत चाय और 21.5 प्रतिशत आलू पैदा होता है ।

राज्य में कोयले का उत्पादन थोड़ा बढ़ा । 1984 में 19203.0 हजार टन से बढ़कर 1985 में 19360.0 हजार टन हो गया ।

पश्चिम बंगाल भारत का प्रमुख औद्योगिक राज्य है ।यहां पर 874.6 पंजीकृत उद्योग (1989) हैं ।इसमें रक्षा उद्योग सम्मिलित नहीं हैं। मार्च 1990 तक पंजीकृत लघु उद्योगों की संख्या 3,37941 थी ।दुर्गापुर एवं बर्दमान में इस्पात संयत्र हैं ।

प्रमुख उद्योगों में इंजीनियरिंग, आटोमोवाइल, रसायन, औषधियां, एल्यूमिनियम, सिरैमिक्स, जूट, कपास, कपड़े चाय, कागज़, चमड़ा, वोनमील, साइकिल, डेयरी, पाल्ट्री एवं लकड़ी के हैं। केंद्र नियंत्रित सार्वजनिक उपक्रमों में इंजन, केवल, उर्वरक, शिपिंग और रक्षा संबधित है ।राज्य नियंत्रित सार्वजनिक उपक्रमों में, चाय, चीनी, रसायन, फायटो केमिक्लस, एग्रोटेक्सटाइल्स, शुगर वीट, फल एवं सब्जी संवधीन और इलेक्ट्रोमेडिक्ल हैं

विश्वविद्यालयः बंगाल इंजीनियरिंग कालेज, हावड़ा; विधानचंद्र कृषि विश्वविद्यालय, मोहनपुर; युनिवर्सिटी आफ वर्दवान; युनिवर्सिटी आफ कलकत्ता; इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालोजी, खड़गपुर; इंडियन स्टैस्टिकल इंस्टीट्यूट, कलकत्ता; जादवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता; युनिवर्सिटी आफ कल्याणी; नेताजी सुभाष खुला विश्वविद्यालय, कलकत्ता; युनिवर्सिटी आफ नार्थ वंगाल, दार्जिलिंग; रवींद्र भारती विश्वविद्यालय, कलकत्ता; विश्वभारती; शांतिनिकेतन; विद्यासागर विश्वविद्यालय, मिदनापुर; वेस्ट वंगाल युनिवर्सिटी आफ एनिमल एंड फिशरीज, कलकत्ता।

पर्यटक केंद्रः 1912 तक कलकत्ता भारत की राजधानी था। अब कलकत्ता भारत के पूर्वोत्तर के राज्यों की वाणिज्यिक राजधानी है। यह नगर जूट, चाय, चमड़ा व खाल, कोयला और लाख जैसे उद्योगों का महत्वपूर्ण केंद्र है। रोचक स्थान हैं – विक्टोरिया मेमोरियल (चित्र दीर्घा और संग्रहालय), भारतीय संग्रहालय, चिड़ियाघर, जैन मंदिर, कालीघाट मंदिर, वेलवेडेर हाउस (मूलतः यह कलकत्ते में ब्रिटिश वायसराय के ठहरने का स्थान था और अब इसे नेशनल लाइब्रेरी बना दिया गया है) राजभवन (राज्य के गवर्नर का निवास स्थान), मार्वल पैलेस, ईडन गार्डन, डलहौजी स्क्वायर (अब इसका नाम विनय– बादल–दिनेश बाग है), दक्षिणेश्वर मंदिर और हावड़ा पुल।

कलकत्ते की ट्यूब या मेट्रो रेलवे एशिया में अपने ढंग की पहली रेलवे है ।

दार्जिलिंग हिमालय की ढाल पर है और भारत का एक विख्यात हिल स्टेशन है। यह कलकत्ता से 592 कि.मी. उत्तर में है । रोचक स्थान हैं – गवर्नमेंट हाउस, टाउन हाल, संग्रहालय, वेधशाला पहाड़ी, वोटानिकल गार्डन, वर्ट हिल पार्क, टाइगर हिल, सेचल झील और घूम मठ–विहार ।

शांति निकेतन (जिला: बीरभूम) में, जो कलकत्ता से 145 कि.मी. दूर है, स्वर्गीय रवींद्र नाथ टैगोर द्वारा स्थापित विख्यात विश्व भारती विश्वविद्यालय है ।

सबसे अधिक लोकप्रिय समुद्रतटीय दीर्घा मिदनापुर जिले में है। यह कलकत्ते से 243 कि.मी. दूर है और सड़क से जुड़ा हुआ है ।

24 परगना जिले में सुंदर वन है, जो संसार के डेल्टाई वनों में सबसे बड़ा है ।

राज्यपालः वीरेन जे. शाह

मुख्य मंत्रीः ज्योति बसु (सी.पी.एम.)

मणिपुर

क्षेत्रफलः 22,327 वर्ग कि.मी.; **राजधानीः** इम्फाल; **भाषाः** मणिपुरी; **जिलेः** 8; **जनसंख्याः** 1,837,119; **पुरुषः** 913,511; **महिलाएंः** 895,203; **वृद्धि (1981–91):** 405,761; **वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91:** 28.56; **जनसंख्या घनत्वः** 82; **शहरी जनसंख्याः** 27.52%; **लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष):** 961; **साक्षरताः** 60.96%; **पुरुषः** 72.98%; **महिलाएंः** 48.64%; **प्रति व्यक्ति आयः** 3502 रु.; **1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्याः** 1,837,119।

मणिपुर 1956 में एक संघ शासित प्रदेश बना और 1972 में उसे पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हो गया ।

मणिपुर के उत्तर में नागालैंड, दक्षिण में मिज़ोरम, पूर्व में ऊपरी बर्मा और पश्चिम में असम का कछरा जिला है ।

इतिहासः प्राचीन काल से ही मणिपुर का इतिहास बड़ा परिवर्तनशील और गौरवपूर्ण रहा है। 1891 में मणिपुर एक रियासत के रूप में ब्रिटिश सरकार के अधीन आया। मणिपुर गठन अधिनियम 1947 के अधीन यहां एक लोकतंत्रात्मक सरकार की स्थापना हुई जिसका कार्यकारी प्रमुख महाराजा था और वयस्क मताधिकार के आधार पर निर्मित एक विधान सभा स्थापित की गई ।

उसके बाद शासन चीफ कमिश्नर के प्रांत के रूप में चलता रहा और 26 जनवरी 1950 से भारत के संविधान के अधीन इसके भाग 'ग' राज्य बना दिया गया। 1950–51 में यहां परामर्शदायी किस्म की लोकप्रिय सरकार स्थापित की गई ।1957 में उसे हटाकर इसके स्थान पर एक क्षेत्रीय परिषद बनाई गई, जिसमें 30 निर्वाचित और [illegible] नामजद सदस्य थे। उसके बाद 1963 में 30 [illegible] और 3 नामजद सदस्यों वाली एक विधान [illegible]

दिसंबर 1969 में इसे चीफ कमिश्नर के [illegible] पर लेफ्टीनेंट गवर्नर का प्रांत बना दि[illegible] 1972 को मणिपुरी को पूर्ण राज्य का दर्[illegible]

प्रशासनः 1983 में मणिपुर के [illegible] गया। जिले के नाम ही जिले के [illegible]

जिले
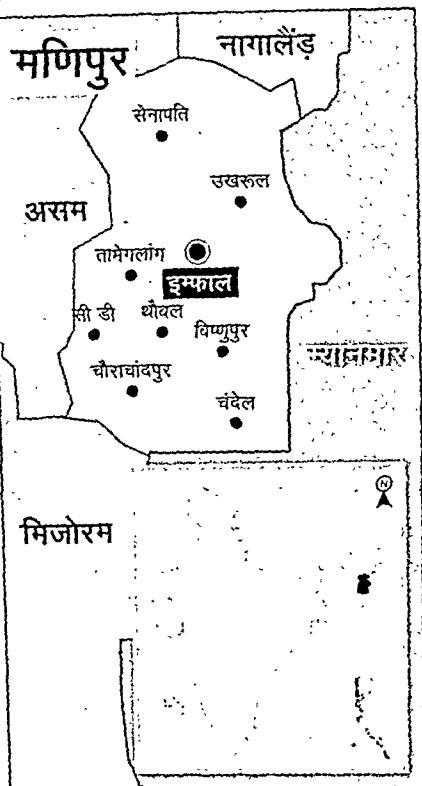
जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)
इम्फाल	1,228	7,07,184
विष्णुपुर	496	1,78,903
थौवल	514	2,90,393
ऊखरूल	4,544	1,09,952
सेनापति	3,271	2,06,933
तमेंगलांग	4,391	85,572
चौराचांदपुर	4,570	1,76,043
चंदेल	3,313	70,737

मणिपुर राज्य की मुख्य फसल धान है। तराई के इलाकों में मक्का बोई जाती है। कुल 22,327 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में से केवल लगभग 2.1 लाख हेक्टेयर में ही कृषि हो पाती है। 1.86 लाख हेक्टेयर में धान की खेती होती है जिसमें से 1.10 लाख हेक्टेयर क्षेत्र घाटी में है। मणिपुर का सबसे बड़ा उद्योग हथकरघा है। राज्य में लगभग 3 लाख तकुए हैं और इस क्षेत्र में कम-से-कम 3 लाख लोग काम करते हैं। 1974 में लगाई गई मणिपुर स्पिनिंग मिल में 16,416 तकुए हो गए हैं। वाघल में 60 टन प्रतिशत उत्पादन क्षमता वाले खंडसारी चीनी कारखाने में उत्पादन शुरू हो गया है।

टी.वी. संयोजन का एक कारखाना और साइकिल संयोजन का एक कारखाना पूरा-पूरा उत्पादन कर रहे हैं। 1987 में एक यंत्रीकृत रंगाई कारखाना भी चालू किया गया है।

राज्य में छोटे उद्योगों के 5970 कारखाने हैं जिनमें 23,800 लोग काम करते हैं।

रेशम कीट पालन: मणिपुर पहला राज्य है, जिसने ओक टसर उद्योग शुरू किया है। पहाड़ी इलाके में 75 टसर फार्म हैं। 1500 आदिवासी परिवार (या 1500 व्यक्ति) लगभग 300 लाख टसर कोरा तैयार करते हैं जिनका मूल्य 30 लाख रु. होता है। इसके अतिरिक्त घाटी क्षेत्र में 100 से अधिक अनुसूचित जाति के परिवार परंपरगत तरीके से रेशम के कीड़े पालने का काम करते हैं और चर्खी, तकली व हथकरघे का इस्तेमाल करके प्रतिवर्ष 45,000 कि.ग्राम कच्चा रेशम तैयार करते है।

विश्वविद्यालय: केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल; मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फाल।

पर्यटन केंद्र: राज्य की राजधानी और सभी सांस्कृतिक व वाणिज्यिक गतिविधियों का केंद इम्फाल गोविंदाज मंदिर, महिलाओं द्वारा चलाया जाने वाला बाजार आदि राज्य के महत्वपूर्ण केंद है। इनके अलावा, 1467 में विष्णुपुर में बना विष्णु मंदिर, पूर्वी भारत में ताजे पानी की सबसे बड़ी झील लोकटक झील, संसार का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान, कीवुल लामजाओ और खेगमपट में आर्किड उद्यान आदि भी काफी सुंदर स्थल हैं।

राज्यपाल: वेद पी. मारवाह

मुख्य मंत्री: डब्ल्यू. निपामाचा सिंह (मणिपुर स्टेट कांग्रेस)

महाराष्ट्र

क्षेत्रफल: 307,690 वर्ग कि.मी.; राजधानी: मुंबई; भाषा: मराठी; जिले: 31; जनसंख्या: 78,937,187; पुरुष: 40,652,056; महिलाएं: 38,054,663; वृद्धि (1981-91): 15,922,548; वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981-91: 25.36; जनसंख्या घनत्व: 256; शहरी जनसंख्या: 38.69%; लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष): 936; साक्षरता: 63.10%; पुरुष: 74.80%; महिलाएं: 50.50%; प्रति व्यक्ति आय: 6184 रु.; 1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या: 78,937,187

महाराष्ट्र क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों दृष्टियों से भारत का तीसरे नंबर का सबसे बड़ा राज्य है। इस राज्य के पश्चिम में अरब सागर, उत्तर-पश्चिम में गुजरात, उत्तर में मध्य प्रदेश, दक्षिण पूर्व में आंध्र प्रदेश और दक्षिण में कर्नाटक और गोवा हैं।

भू-आकृति: अरब सागर तट का तटीय मैदानी भाग कोंकण कहलाता है। यह लगभग 720 कि.मी. लंबा और अधिक-से-अधिक 80 कि.मी. चौड़ा है। इस तटीय मैदान में धान के खेत और नारियल के बाग हैं। समुद्रतट के समानांतर सह्याद्रि या पश्चिमी घाट की श्रृंखलायें कोंकण के पूर्व में हैं। सह्याद्रि के पूर्व में पठारी भाग है।

सह्याद्रि से निकल कर पठारी प्रायः द्वीप में वहने वाली प्रमुख नदियों के नाम हैं – गोदावरी, भीमा और कृष्णा । ये नदियां बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। प्रायद्वीप का यह भाग वहुत उर्वर हैं और इसमें कपास, तिलहनों और गन्ने की वढ़िया खेती होती है। इस राज्य के अलग–अलग भागों में अलग–अलग मात्रा में वर्षा होती है। सह्याद्रि के पश्चिम की ओर के क्षेत्र में, रायगढ़ और रत्नागिरि व सिंधुदुर्ग जिलों में भारी वर्षा होती है। औसत वर्षा 200 से.मी. वार्षिक।

इतिहास: ऐतिहासिक दृष्टि से महाराष्ट्र के तीन विभाग हैं – पश्चिमी महाराष्ट्र, विदर्भ और मराठवाड़ा। इनमें विदर्भ ऐतिहासिक दृष्टि से वहुत प्राचीन है। संपूर्ण महाराष्ट्र का उल्लेख मौर्यकाल में मिलता है। उस समय यह मौर्य साम्राज्य का अंग वन चुका था। मौर्यों के पतन के वाद लगभग एक हजार वर्ष तक महाराष्ट्र पर कई हिंदू राजवंशों का शासन रहा । शिवाजी के उदय के बाद महाराष्ट्र ने इतिहास के एक नए चरण में प्रवेश किया। शिवाजी ने मराठों को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में संगठित किया। शिवाजी के वाद पेशवाओं ने मराठा साम्राज्य का विस्तार उत्तर में ग्वालियर से लेकर दक्षिण में तंजौर तक किया । 1761 में पानीपत की लड़ाई में मराठा शक्ति को अफगान शासक अहमद शाह अब्दाली ने पराजित कर दिया स्वतंत्र भारत में बंवई प्रांत में महाराष्ट्र और गुजरात सम्मिलित थे। यह द्विभाषी राज्य का एक प्रयोग था – एक प्रांत में दो भाषायी इकाइयां सम्मिलित थीं। लेकिन यह प्रयोग सफल नहीं हो पाया। बंवई पुनर्गठन ऐक्ट 1960 के अधीन 1 मई, 1960 को महाराष्ट्र और गुजरात को दो पृथक राज्यों में वांट दिया गया – पुराने बंबई राज्य की राजधानी (बंबई शहर) नये महाराष्ट्र राज्य की राजधानी बन गया ।

प्रशासन: इस राज्य के विधान मंडल में दो सदन हैं – विधान सभा और विधान परिषद। राज्य में निम्नलिखित जिले हैं ।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
अहमदनगर	17,048	33,73,000	अहमदनगर
अकोला	5,429	13,52,000	अकोला
अमरावती	12,210	22,00,000	अमरावती
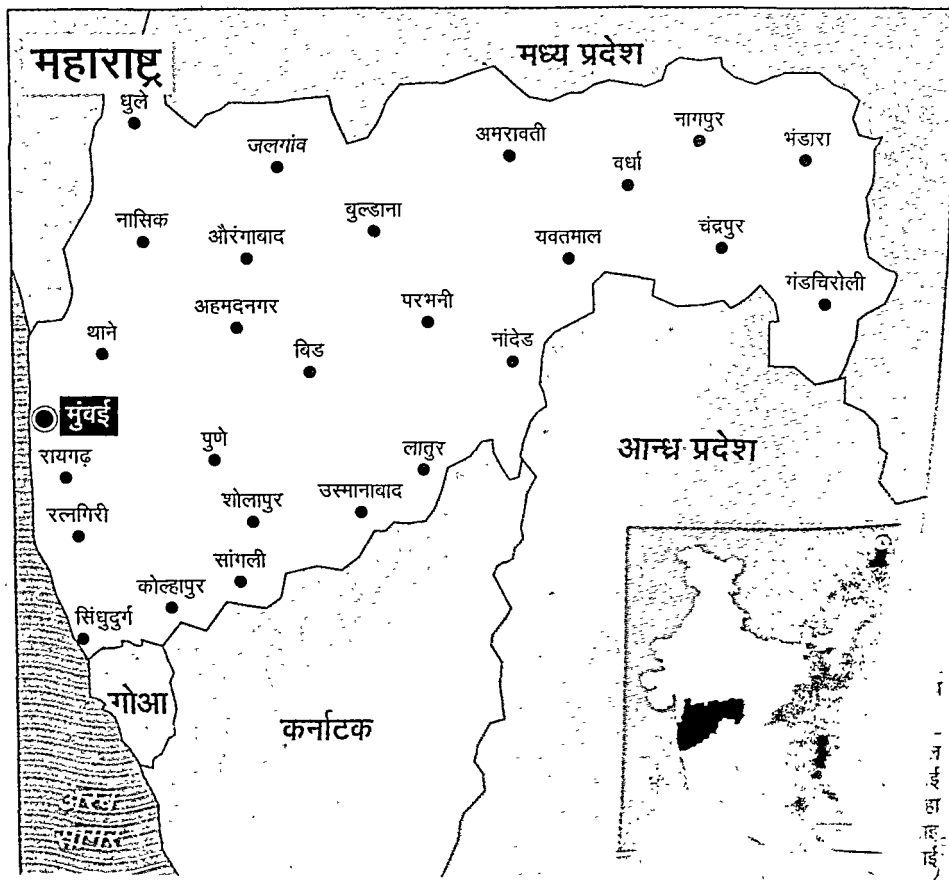
औरंगाबाद	10,107	22,14,000	औरंगाबाद
भंडारा	9,321	21,08,000	भंडारा
बिड	10,693	18,22,000	बिड
ग्रेटर मुंबई	69	31,75,000	मुंबई
मुम्बई सबर्न	534	31,75,000	बांद्रापूव
बुल्डाना	9,661	18,886,000	बुल्डाना
चंद्रपुर	11,443	17,72,000	चंद्रपुर
गंडचिरोली	14,412	7,87,000	गंडचिरोली
जलगांव	11,765	31,88,000	जलगांव
जालना	7,818	1364,000	जालना
कोल्हापुर	7,685	29,90,000	कोल्हापुर
लातुर	7,157	16,77,000	लातुर
नागपुर	9,892	32,37,000	नागपुर
नांदेड	10,528	23,30,000	नांदेड
नासिक	15,530	38,51,0007	नासिक
थाने	9,558	52,49,000	थाने
रायगढ	7,152	18,25,000	अलीबाग
रत्नगिरी	8,208	15,44,000	रत्नगिरि
सिंधुदुर्ग	5,207	8,32,000	कुदालं
नंदुरबार	5,055	10,63,000	नंदुरबार
पुणे	15,643	55,33,000	पुणे
सतारा	10,480	24,51,000	सतारा
सांगली	8,572	22,09,000	सांगली
शोलापुर	14,895	32,31,000	शोलापुर
परभनी	11,041	21,17,000	परभनी
उस्मानाबाद	7,569	12,76,000	उस्मानाबाद
यवतमाल	13,582	20,77,000	यवतमाल
वर्धा	6,309	10,67,000	वर्धा
वाशिम	5,155	8,62,000	वाशिम

मुम्बई दुनिया का सबसे सस्ता शहर

मुम्बई दुनिया के सबसे सस्ते शहरों में से एक है जबकि तोक्यो दुनिया का सबसे महंगा शहर है। स्विट्जरलैंड के प्रमुख बैंक यूबीएस के एक सर्वेक्षण के अनुसार मुम्बई, बुडापेस्ट, वारसा, मनीला, जोहानीसबर्ग और जकार्ता दुनिया के सस्ते शहरों में से हैं।

सर्वेक्षण के अनुसार तोक्यो, न्यूयार्क, ज्युरिख और स्टोकहोम जैसे शहरों से अधिक महंगा है। ओस्लो, न्यूयार्क, शिकागो, ज्युरिख और स्टोकहोम की जीवन लागत 58 चुने हुए शहरों में माल और सेवाओं की औसत लागत से 35–40 प्रतिशत अधिक है। परन्तु तोक्यो में यह लागत 90 प्रतिशत अधिक पाई गई।

इस आकलन में मकान भाड़े को शामिल नहीं किया गया। सबसे महंगे शहरों की सूची में अगला स्थान सिंगापुर, सोल, कैराकस, लन्दन, जिनीवा और कोपेनहेगन को दिया गया है।

सर्वेक्षण में दुनिया के 58 शहरों में कीमतों और वेतन की तुलना की गई है।

पेरिस 19वां सबसे महंगा शहर है, जबकि बर्लिन 32वें स्थान पर है। दूसरी ओर मुम्बई, बुडापेस्ट, वारसा, मनीला, जोहानीसबर्ग और जकार्ता को सबसे सस्ते शहरों की सूची में रखा हैं।

अध्ययन के अनुसार, 53 शहरों में 39 खाद्य वस्तुओं की औसत लागत 310 डालर है।

महाराष्ट्र में लगभग 70 प्रतिशत जनता कृषि पर निर्भर है। कुल कृषि भूमि में से लगभग 12.22 प्रतिशत भूमि में सिंचाई की व्यवस्था है। मुख्य खाद्यान्न फसलें हैं – गेहूं, चावल, ज्वार, बाजरा और दालें। महत्वपूर्ण नकदी फसलें हैं – कपास, गन्ना, मूंगफली और तंबाकू।

यद्यपि महाराष्ट्र में देश की कुल जनसंख्या की केवल 9.2 प्रतिशत जनसंख्या है किंतु इस राज्य में देश के कुल औद्योगिक कारखानों के लगभग 11 प्रतिशत कारखाने हैं, 17 प्रतिशत से भी अधिक श्रमिक काम करते हैं, देश में लगी कुल पूंजी की लगभग 16 प्रतिशत पूंजी लगी हुई है।

महाराष्ट्र के औद्योगिक उत्पादन में जो उद्योग महत्वपूर्ण योगदान करते हैं, उनके नाम हैं – रसायन और रासायनिक उत्पाद, कपड़े, बिजली की मशीनें तथा अन्य मशीनें, पेट्रोलियम और इससे जुडे हुये उत्पादन। औषधियां, इंजीनियरिंग का सामान, मशीनी औजार, लोहार और इस्पात की ढलुवां वस्तुएं और प्लास्टिक का सामान। आधुनिक इलेक्ट्रानिक उपकरणों के उत्पादन में भी यह राज्य अग्रणी है। सांताक्रुज इलेक्ट्रानिक्स एक्सपोर्टर्स प्रोसेसिंग जोन (एस.ई.ई.पी.जेड.) शत प्रतिशत निर्यात के लिए मुक्त व्यापार क्षेत्र है।

बंबई हाई में तट से दूर तेल क्षेत्रों और बसीन उत्तरी तेल के कुओं के विकास से इस राज्य के औद्योगिक विकास में बड़ी सहायता मिली है। 25 सितंबर 1995 को मुख्य मंत्री ने खडे में कोंकण रेलवे का 52 किलोमीटर खेडवीर सेक्शन का उद्‌घाटन किया।

विश्वविद्यालय: अमरावती विश्वविद्यालय, अमरावती; भारतीय विद्यापीठ, पुणे; सेंट्रल इंस्टीट्यूट आफ फिशरीज एजुकेशन, मुंबई; डेक्कन कालेज पोस्ट ग्रेजुएट एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे; डा. बाबा साहेब अम्बेदकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद; डा.बाबा साहेब अम्बेदकर टेक्नालोजी वर्सिटी, लोनेरे; डा. पंजाबराओ कृषि विद्यापीठ, अकोला; गोखले इंस्टीट्यूट आफ पालिटिक्स एंड इकोनोमी, पुणे; इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालोजी, मुंबई; इंदिरा गांधी इंस्टूट्यूट आफ डेवलपमेंट रिसर्च, मुंबई; इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट आफ पापुलेशन साइंसेज, मुंबई; कविकुल गुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक; कोंकण कृषि विद्यापीठ, दपोली; एम.जी. अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहुरी; मराठवाड़ा कृषि विद्यापीठ, पर्भानी, युनिवर्सिटी आफ बांबे, मुंबई; नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर; नार्थ महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगांव; युनिवर्सिटी आफ पुणे; शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर; एस.एन.डी.टी. वीमेन्स युनिवर्सिटी, मुंबई; स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेद; टाटा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसेज, मुंबई; तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे; यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र खुला विश्वविद्यालय, नासिक;

एशिया का पहला खेल विश्वविद्यालय का पुणे में जनवरी 96 में उद्घाटन किया गया। और इसी वर्ष मेडिकल युनिवर्सिटी को नासिक में जून महीने में शुरु किया गया।

पर्यटक केंद्र: इस राज्य में कुछ महत्वपूर्ण पर्यटक केंद्र हैं – अजंता, एलौरा, एलीफेंटा, कन्हेरी और कार्ले की गुफायें, मुख्य पर्वतीय स्थान हैं – महाबलेश्वरम माथेरान और पंचाग्नि, धार्मिक स्थान हैं – पंढरपुर, नासिक, शिरडी, औधंनागनाथ नांदेड़ और गणपति पुले ।

राज्यपाल: डा. पी. सी. अलेक्जेंडर

मुख्य मंत्री: मनोहर जोशी (शिवसेना)

मिज़ोरम

क्षेत्रफल: 21,081 वर्ग कि.मी.; **राजधानी:** एजल; **भाषायें:** मिजो और अंग्रेजी; **जिले:**3; **जनसंख्या:** 689,756; **पुरुष:** 356,672; **महिलाएं:** 329,545; **वृद्धि (1981–91):** 192,460; **वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91:** 38.98; **जनसंख्या घनत्व:** 33; **शहरी जनसंख्या:** 46.10%; **लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष):** 924; **साक्षरता:** 82.27%; **पुरुष:** 85.61%; **महिलाएं:** 78.60%; **प्रति व्यक्ति आय:** 5,910 रु.; **1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या:** 689,756

स्थानीय भाषा में 'मिज़ोरम' का अर्थ मिजो भूमि है ।मिज़ो शब्द का अर्थ है 'पहाड़ वासी' । ब्रिटिश प्रशासन में मिज़ोरम का नाम लुशाई पहाड़ी जिला था। 1954 में संसद द्वारा पास किये गये अधिनियम के आधार पर इसका नाम मिजो पहाड़ी जिला रखा गया। 1972 में जब इस प्रदेश को संघ शासित प्रदेश बनाया गया, तो इसका नाम मिज़ोरम रखा गया।

भू–आकृति: मिज़ोरम भारत के पूर्वोत्तर कोने में स्थित है। इसके उत्तर में कछार जिला (असम) और मणिपुर राज्य, पूर्व और दक्षिण में चीन पहाड़ियां और अराकान (बर्मा), और पश्चिम में बंगलादेश की चटगांव पहाड़ी पट्टी व त्रिपुरा राज्य हैं ।

केंद्र सरकार और मिजो नेशनल फ्रंट को बीच शांति समझौते के बाद तिरपनवें संविधान संशोधन अधिनियम के साथ मिजोरम 20 फरवरी 1987 को भारत संघ का 23–वां राज्य बन गया। ऊपरी क्षेत्रों में जलवायु सुखद होती है; गर्मी में ठंडक होती है और जाड़ों में अधिक सर्दी नहीं पड़ती। मई से सितंबर तक औसत वर्षा 254 से.मी. होती है ।

इतिहास: मिजो लोग मंगोलियन नस्ल के हैं। लगता है कि शुरू में मिजो लोग बर्मा में शान राज्य में बसे ।

ब्रिटिश शासन काल में मिज़ो लोग ब्रिटिश प्रदेशों, यहां तक कि सुरक्षित स्थानों पर भी, आक्रमण करते थे ।अत: ब्रिटिश सेना ने मिज़ो लोगों के खिलाफ कार्यवाही आरंभ की और उनके इलाके पर कब्जा कर लिया ।1891 में इस इलाके को ब्रिटिश भारत में मिला लिया गया ।

देश के आजाद होने पर मिजोरम असम का एक जिला बना रहा। अधिकारियों ने मिज़ोरम की उपेक्षा की है, इस आरोप पर 1966 में आंदोलन शुरू कर दिया गया ।
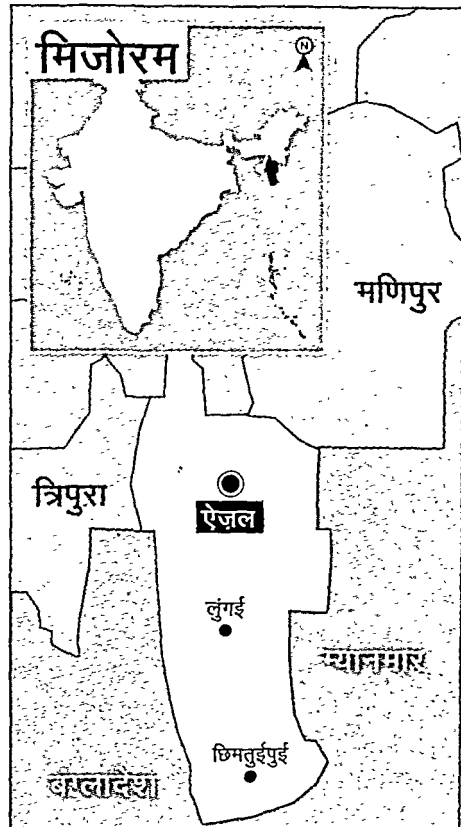
मिजोरम को अशांत क्षेत्र घोषित कर दिया गया । सशस्त्र सेनायें (विशेष शक्तियां) अधिनियम भी लागू कर दिया गया। 30 जून 1986 को भारत सरकार और मिजो नेशनल फ्रंट के बीच मिज़ोरम शांति समझौता हो गया ।

मिजो लोगों के अनेक कबीले हैं – लुशाई, पवई, पैथ, राल्ते, पैंग, हमार, कुकी, मारा, लाखे आदि । 19 वीं शताब्दी में मिज़ो लोग इसाई धर्म प्रचारकों के प्रभाव में आये और बहुत–से मिज़ो लोगों ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया ।

प्रशासन: मिजोरम में एक सदनवाला विधानमंडल है। विधान सभा में 40 सीटें हैं। चार जिले हैं 9 प्रखंड 3 हिल्स जिला परिषद, 23 शहर, 31 पुलिस स्टेशन और 681 गांव हैं।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
ऐज़ल	12,581	4,78,465	ऐज़ल
लुंगई	4536	1,11,415	लुंगई
छिमतितुपुई	3957	99,886	साइहा
लावंग्टलाई	–	–	
चमफाई	–	–	

कोलासिब	–	–	कोलासिब
मामित	–	–	मामित
सर्छिप	–	–	सर्छिप

मिजोरम में एक मात्र उद्यम कृषि है। यह राज्य अपनी बिना रेशे वाली अदरक के लिए विख्यात है। अन्य व्यापारिक फसलें जैसे सरसों, तिल, आलू आदि भी उगायी जाती है।

सबसे प्रमुख खाद्यान्न फसल धान है। दूसरे नंबर पर मक्का है। पहाड़ियों की ढाल पर इनकी खेती होती है। 1993-94 में धान की फसल का कुल क्षेत्र 62,452 हैक्टेयर था। कृषि उपज बढ़ाने के रास्ते में एक बड़ी बाधा सिंचाई सुविधाओं का अभाव है। मिजोरम में केवल 2885.30 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई होती है।

मिजोरम में कोई बड़ा उद्योग नहीं है। इस इलाके की प्रमुख औद्योगिक गतिविधियां हथकरघा और दस्तकारी हैं। एक इंजीनियरिंग कारखाने ने बिनौले अलग करने और कपास को धुनने की एक मशीन की डिजाइन तैयार की है।

चार किस्म रेशम का तैयार होता है – शहतूत के पत्तों का रेशम, एरी रेशम, टसर रेशम और मूगा रेशम।

अन्य उद्योग है – अदरक के पेय, तेल, फल परिरक्षण, हथकरघा और इनके अलावा बिस्कुट-डबल रोटी, छापाखाना, आरा मशीन, ईंटें बनाना, साबुन बनाना जैसे अन्य छोटे पैमाने के और कुटीर उद्योग हैं

विश्वविद्यालय: एन.ई.एच.यू. नार्थ ईस्ट हिल्स युनिवर्सिटी का कैम्पस आयजवाल में है।

राज्यपाल: अनंता पद्मानाभन

मुख्य मंत्री: जोराम थंगा (मिजो नेशनल फ्रंट)

मेघालय

क्षेत्रफल: 22,429 वर्ग कि.मी.; राजधानी: शिलांग; भाषायें: खासी, गारो और अंग्रेजी; जिले: 7; जनसंख्या: 1,774,778, पुरुष: 904,308; महिलाएं: 856,318; वृद्धि (1981-91): 424,810; वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981-91: 31.80; जनसंख्या घनत्व: 78; शहरी जनसंख्या: 18.60%; लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष): 947; साक्षरता: 48.26%; पुरुष: 51.57%; महिलाएं: 44.78%; प्रति व्यक्ति आय: 3250 रु.; 1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या: 1,774,778

एक स्वायत्तशासी ईकाई के रूप मे मेघालय 2 अप्रैल, 1970 को अस्तित्व में आया। 21 जनवरी 1972 को इसे भारत संघ के एक राज्य का दर्जा प्रदान किया गया।

भू-आकृति: यह एक पहाड़ी राज्य है और इसके निवासी खासी, जयंतिया और गारो हैं। इसकी राजधानी शिलांग एक ऊंचे पठार के केंद्र में स्थित है। इस राज्य की सबसे ऊंची पर्वत चोटी शिलांग चोटी 1965 फीट ऊंची है। दूसरे नंबर की सबसे ऊंची चोटी नोकरेक है, जो गारो हिल्स जिले मे है।

इस क्षेत्र की नदियां – कृष्णाई (उमरिंग), कालु (जीरा), भुगई (बुगी), निटाई (दरेंग) और सोमेश्वरी (सिमसांग) गारो हिल्स जिले में होकर बहती हैं; किंशी, खरि, उमत्रेउ, उमगांट, उमियाम, मापलंग और उमियाम ख्वान खासी हिल्स जिले में होकर और कुप्ली, गिंटडु और मिनताग जयंतिया हिल्स जिले में होकर बहती हैं। इस राज्य में वार्षिक वर्षा 1200 मिलीमीटर होती है।

प्रशासन: मेघालय पूर्वोत्तर परिषद में सम्मिलित राज्यों में से एक राज्य है। यहां एक सदन वाला विधान मंडल है। विधान सभा में 60 सदस्य हैं। 29 सदस्य खासी हिल्स, 7 जयंतिया हिल्स और 24 गारो हिल्स से निर्वाचित होते हैं।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
पूर्वी खासी हिल्स	5196	6,57,160	शिलांग
पश्चिमी खासी हिल्स	5,247	2,20,157	नांगेस्टीन
पूर्वी गारो हिल्स	2,603	1,88,830	विलियमनगर
पश्चिमी गारो हिल्स	3,714	4,03,027	तुरा
जयंतिया हिल्स	3,819	2,20,473	जोवइ
रि भोई	2,448	1,27,312	नोंगपोह
दक्षिण गारो हिल्स	1,850	77,073	बाघमारा

अधिकांश लोग अपनी जीविका के लिए भूमि पर निर्भर है। राज्य सरकार ने स्थायी खेती के लिए उपयुक्त भूमि पर लोगों को बसाने की एक योजना शुरू की है। राज्य के भू-संरक्षण विभाग की पुनर्वास योजना में, जिसे झूम नियंत्रण योजना कहते हैं, गांव के लोगों को अच्छी भूमि और साथ ही उर्वरक, बीज, सिंचाई सुविधा आदि देने का कार्यक्रम है।

इस राज्य में उद्योग अभी विकसित नहीं है। किंतु मेघालय औद्योगिक विकास निगम द्वारा या उसकी सहायता से स्थापित औद्योगिक कारखाने तेजी से बढ़ते जा रहे हैं। मेघालय प्लाईवुड लिमिटेड, एसोशियेटेड बीवरेज (प्राइवेट लि.) मेघालय एसेन्शल एंड केमिकल लि., मेघालय फाइटो केमिकल्स लि., कोमोराह लाइमस्टोन माइनिंग लि., मेघालय टावर्स एंड ट्रसेज लि. और यूनियन काल्सनेट्स लिमिटेड । चेरापूंजी में स्थापित सरकारी क्षेत्र का सीमेंट कारखाने है

विश्वविद्यालय: एन.ई.एच.यू. नार्थ ईस्र्ट हिल्स युनिवर्सिटी, शिलांग।

पर्यटन केंद्र: मेघालय पर्यटकों के स्वप्नों को साकार करने वाला प्रदेश है। इस प्रदेश के आकर्षण वड़े भव्य और विलक्षण हैं।यह भव्य सौंदर्य, ऊंची–नीची पहाड़ियों, लहरियादार घास के मैदानों, सोपानी प्रपातों, सर्पिल नदियों, सीढ़ीदार ढलानों और रोमाचंक वन्य जीवों का प्रदेश है।

कुछ महत्वपूर्ण पर्यटक केंद्र ये हैं – (1) शिलांग–गौहाटी सड़क के किनारे उनियम झील (2) शिलांग से लगभग 55 किलो मीटर पश्चिम की ओर क्यलांग राक (3) चेरापूंजी के निकट मस्मई में नोहन्स्गिथियांग झरने का, जो वंगलादेश के धुंधले नीले मैदानों के ऊपर झांकता–सा लगता है। मस्मई की गुफाय। (4) शिलांग से लगभग 90 कि.मी. की दूरी पर नरतियांग है, जहां अनेक अखंडित शिला स्तंभ हैं। इनका निर्माण 1500 ई. से 1835 ई. के वीच नरतियांग के निवासियों ने किया था।

राज्यपाल: एम.एम. जैकव

मुख्य मंत्री: बी.बी. लिंगडोह (युनाइटेड डेमोक्रेटिक पार्टी)

राजस्थान

क्षेत्रफल: 342,239 वर्ग कि.मी.; **राजधानी:** जयपुर; **भाषायें:** हिन्दी, राजस्थानी; **जिले:** 32; **जनसंख्या:** 44,005,990; **पुरुष:** 22,935,895; **महिलाएं:** 20,944,745; **वृद्धि (1981–91):** 9,618,778; **वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91:** 28.07; **जनसंख्या घनत्व:** 129; **शहरी जनसंख्या:** 22.88%; **लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष):** 913; **साक्षरता:** 38.81%; **पुरुष:** 55.07%; **महिलाएं:** 20.84%; **प्रति व्यक्ति आय:** 2923 रु.; **1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या:** 44,005,990

राजस्थान भारत का एक सीमावर्ती राज्य है। इसकी पश्चिमी और उत्तर–पश्चिमी सीमा पाकिस्तान की सीमा के साथ मिली हुई है। इसके उत्तर में पंजाब, पूर्वोत्तर और पूर्व में हरियाणा और उत्तर प्रदेश हैं; दक्षिण और दक्षिण पूर्व में मध्य प्रदेश है और दक्षिण–पश्चिम में गुजरात है ।

भू–आकृति: राजस्थान भारत के उन थोड़े से राज्यों में से एक है, जिनके विभिन्न भागों में बड़ा अंतर जलवायु–मिट्टी वनस्पति, खनिज संसाधनों आदि के संबंध में है। इस राज्य को छः खंडों में वांटा जा सकता है: (1) पश्चिम का सूखा प्रदेश (2) अर्द्ध–सूखा प्रदेश,(3) दक्षिण–पूर्वी प्रदेश, (4) चंबल की घाटी, (5) अरावली प्रदेश और (6) पूर्वी प्रदेश ।

पश्चिम के सूखे प्रदेश में जैसलमेर जिला, वीकानेर और जोधपुर का उत्तरी–पश्चिमी भाग, वीकानेर का दक्षिणी–पूर्वी भाग, चुरु का दक्षिणी–पश्चिमी भाग और नागौर का पश्चिमी भाग सम्मिलित है । इस प्रदेश में ठेठ रेगिस्तान जैसी स्थिति है। अर्द्ध–सूखा प्रदेश अरावली श्रृंखलाओं के पश्चिम में है और इसमें जालोर जिला, पाली जिला, जोधपुर का दक्षिणी–पूर्वी भाग और नागौर, सीकर, झुंझनू और चुरू का पूर्वोत्तर भाग सम्मिलित हैं इस क्षेत्र के दक्षिणी भाग में लूनी नदी बहती है जब कि उत्तरी भाग में जल का अभाव है ।

राजस्थान नहर (इंदिरा गांधी नहर) इस क्षेत्र के उत्तर–पश्चिमी भाग से होकर निकलती है, से गंगानगर जिले में और बीकानेर जिले के उत्तरी–पश्चिमी भाग में सिंचाई होती है ।

अरावली प्रदेश में लगभग संपूर्ण उदयपुर, पाली और सिरोही का दक्षिणी–पूर्वी भाग और डूंगरपुर जिले का पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

पूर्वी प्रदेश में जयपुर, अजमेर, सवाई माधोपुर, भीलवाड़ा बूंदी, अलवर, भरतपुर जिले और कोटा जिले का उत्तरी–पश्चिमी भाग सम्मिलित है। इस प्रदेश में बनास और उसकी

जैसलमेर में तेल व गैस के विशाल भंडार

राजस्थान के जैलसमेर जिले में पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस के विशाल भंडार मिले हैं।

आयल इंडिया की राजस्थान परियोजना के उपमहाप्रबंधक वी.पी. शर्मा के अनुसार जिले में तेल तथा गैस की खोज के लिए कुल 50 कुएं खोदे गए हैं, जिनमें से तनोट तथा डांडे वाला क्षेत्र के तेरह कुओं में तेल तथा गैस मिली है। आयल इंडिया वैसे जैसलमेर, वीकानेर तथा नागौर जिलों में 34 हजार वर्ग कि.मी. क्षेत्र में पिछले डेढ दशक से तेल तथा गैस की खोज कर रहा है, लेकिन ज्यादातर मामलों में तेल एवं गैस निकालने की लागत उनके मूल्यों से अधिक आने के कारण कई कुएं वंद कर दिए गए हैं। तनोट के कुएं का तेल भंडार 250 लाख टन आंका गया है, लेकिन इसमें दोहन योग्य तेल 150 लाख टन ही है।

इस कुएं की खुदाई से प्रारंभिक अवस्था में गैस के [illegible] मात्रा में भंडार के संकेत मिले हैं। उन्होंने इस कुएं [illegible] मिलने की संभावना से भी इनकार नहीं किया [illegible] है कि इस क्षेत्र में सीमा के उस पार [illegible] मात्रा में तेल एवं गैस के भंडार मिले हैं।

यहां मिली गैस की आपूर्ति [illegible] विद्युतमंडल के 35 मेगावाट के [illegible] को की जा रही है। यह आपूर्ति [illegible] प्रतिदिन है। इसे बढ़ाकर [illegible] कर दिया जाएगा ताकि इस [illegible] [illegible] तक की जा सके [illegible] ने स्वीकृति प्रदान कर दी है।

एक सर्वेक्षण के अनुसार [illegible]

सबसे बड़ा परमाणु बिजली उत्पादक राज्य

बिजली संकट से जूझते राजस्थान ने भारत का सबसे बड़ा एटमी बिजली उत्पादक राज्य होने का गौरव हासिल कर लिया है। राज्य का एकमात्र राजस्थान एटमी बिजलीघर देश का सर्वाधिक उत्पादन क्षमता वाला एटमी बिजलीघर बन गया है। 220 मेगावाट क्षमता की तीसरी इकाई के पूरी क्षमता से उत्पादन शुरू करने की स्थिति में आने के साथ ही इस बिजलीघर की कुल उत्पादन क्षमता 350 मेगावाट से बढ़कर 570 मेगावाट हो गई है। करीब 5000 करोड़ रुपए लागत वाली इतनी क्षमता की इतनी इकाइयां देश के किसी और परमाणु बिजली घर में नहीं हैं। चंबल नदी पर बने राणा प्रताप सागर बांध के किनारे फैलती जा रही राजस्थान परमाणु बिजली परियोजना ने एटमी बिजली के राष्ट्रीय नक्शे में राजस्थान को सबसे ऊपर पहुंचा दिया है।

इसकी 220 मेगावट क्षमता की चौथी इकाई का काम कुछ ही महीनों में पूरा हो जाएगा। इस इकाई के इस साल के आखिर तक उत्पादन शुरू कर देने के आसार हैं। तब आरएपीपी की चारों इकाइयों की कुल उत्पादन क्षमता 790 मेगावाट हो जाएगी और यह बिजलीघर देश के बाकी एटमी बिजलीघरों से बहुत आगे निकल जाएगा। दो नई इकाइयां कायम होने के बाद आरएपीपी भारत का ऐसा पहला परमाणु बिजलीघर बन गया है जिसमें करीब 5000 करोड़ रुपए लागत की चार इकाइयां हैं। इसके लिए केंद्र सरकार से वित्तीय मंजूरी मिलने की प्रतीक्षा है।

अभी तक देश में नरौरा (उत्तर प्रदेश) व काकरापार (गुजरात) के एटमी बिजलीघर अग्रणी थे। उनमें से हर एक में 220-220 मेगावाट क्षमता की दो-दो इकाइयां हैं। 440 मेगावाट क्षमता के ये दोनों बिजलीघर अब आरएपीपी से पिछड़ गए हैं। इसके अलावा कलपक्कम (तमिलनाडु) में कुल 340 मेगावाट क्षमता की दो इकाइयां और तारापुर (महाराष्ट्र) में कुल 330 मेगावाट क्षमता की दो इकाइयां हैं। कैगा (कर्नाटक) में 220 मेगावाट की एक इकाई को हाल में प्रधानमंत्री ने राष्ट्र को समर्पित किया है। 790 मेगावाट क्षमता की चार इकाइयों वाले आरएपीपी मे देश का प्रमुख भारी पानी संयंत्र भी है।

सहायक नदियां बहती हैं। इसमें सबसे अधिक उद्योग हैं जो मुख्यतः जयपुर, अजमेर, कोटा भीलवाडा और शाहपुरा मे स्थित हैं।

दक्षिणी-पूर्वी प्रदेश में बांसवाडा चित्तौडगढ, झालावाड और कोटा जिले सम्मिलित हैं। कोटा-झालावाड क्षेत्र में ऊची पथरीली भूमि है लेकिन कोटा में चंबल नदी और उसकी सहायक नदियों की उर्वर घाटी है।

इतिहास: राजस्थान राज्य मुख्यतः राजस्थान की पुरानी रियासतों को मिला कर बनाया गया है। वर्तमान रूप धारण करने में उस राज्य को आठ वर्ष का समय लगा। इस राज्य के निर्माण की दिशा में पहला कदम 17 मार्च 1948 को उठाया गया था। उस समय चार रियासतों – अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली को मिला कर मत्स्य संघ बनाया गया। दूसरा कदम तब उठाया गया जब 9 राज्यों – बांसवाड़ा, बूंदी, डूंगरपुर, झालावाड़, किशनगढ, कोटा, प्रतापगढ़, शाहपुरा और टोंक की रियासतों को मिला कर 25 मार्च, 1948 को राजस्थान राज्य का निर्माण हुआ। उदयपुर रियासत इस राज्य में 18 अप्रैल, 1948 को सम्मिलित हुई।

1949 में दो और महत्वपूर्ण कदम उठाये गये: पहला कदम 30 मार्च, 1949 को उठाया गया और चार बड़ी रियासतों – बीकानेर, जयपुर और जैसलमेर को राजस्थान में शामिल कर दिया गया और दूसरा कदम 25 अप्रैल, 1949 को उठाया गया जब मत्स्य संघ को इस राज्य में सम्मिलित किया गया। रियासतों के इस संघ को विशाल राजस्थान सघ नाम दिया गया। 25 जनवरी, 1950 को इस सघ में सिरोही राज्य मिला दिया गया। अंत में 1 नवंबर, 1956 को अजमेर, आबू तहसील और सुनेल टप्पा का इलाका विशाल राजस्थान में विलीन हो गया और इस राज्य का नाम राजस्थान रखा गया।

प्रशासन: इस राज्य के विधान मंडल में केवल विधान सभा है।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
अजमेर	8,481	17,29,207	अजमेर
अलवर	8,380	22,96,580	अलवर
बांसवाडा	5,037	11,55,600	बांसवाड़ा
बाड़मेर	28,387	14,35,222	बाड़मेर
भरतपुर	5,066	16,51,584	भरतपुर
भीलवाडा	10,455	15,93,128	भीलवाड़ा
बीकानेर	27 244	12,11,140	बीकानेर
बूंदी	5,550	7,70,248	बूंदी
चित्तौडगढ	10,856	14,84,190	चित्तौड़गढ़
चुरू	16,830	15,43,211	चुरू
डूंगरपुर	3,770	8,74,549	डूंगरपुर
गंगानगर	20,634	26,22,777	गंगानगर
जयपुर	14 068	47,22,551	जयपुर
जैसलमेर	38,401	3,44,517	जैसलमेर
जालोर	10,640	11,42,563	जालोर
झालावाड	6 219	9,56,971	झालावाड़
झुंझनू	5 928	15,82,421	झुंझनू
जोधपुर	22,850	21,53,483	जोधपुर
कोटा	12,436	20,30,831	कोटा
नागौर	17 718	21,44,810	नागौर
पाली	12 387	14,86,432	पाली
सवाई माधोपुर	10,527	19,63,246	सवाई माधोपुर
सीकर	7 732	18,42,914	सीकर
सिरोही	5,136	6,54,029	सिरोही
टोंक	7,194	9,75,006	टोंक
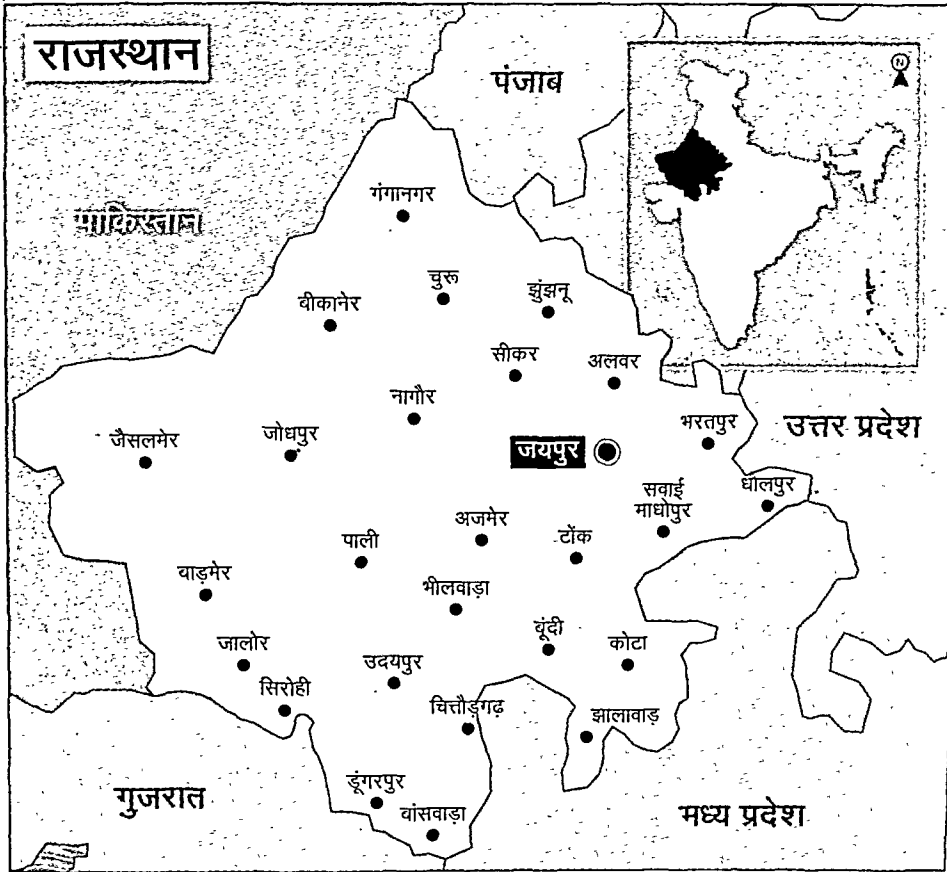
उदयपुर	17,279	28,89,301	उदयपुर
धौलपुर	3,084	7,49,479	धौलपुर
बारां	6,955	6,36,526	बारां
दौसा	2,950	9,92,253	दौसा
हनुमानगढ*	–	12,20,000	हनुमानगढ़
राजसमंद	4,684	8,21,923	राजसमंद
कैरोली	–	9,27,719	कैरोली

* नये जिले के आंकड़े गंगानगर जिले से पृथक करना है।

इस राज्य की मुख्य फसलें हैं – ज्वार, बाजरा, मक्का, गेहूं, चना, तिलहन, कपास, गन्ना और तंबाकू। इस राज्य के प्रमुख उद्योग हैं – कपड़े, कंबल और ऊनी कपड़े, चीनी, सीमेंट, शीशा, सोडियम, आक्सीजन और एसीटिलीन के कारखाने, कीटनाशक औषधियां और रंग। अन्य उपक्रम ये हैं – कास्टिक सोडा, कैल्शियम कार्बाइड, नाइलोन टायर और तांबा पिघलाने का कारखाना ।

राजस्थान की दस्तकारी की वस्तुएं सारे संसार में विख्यात हैं। महत्वपूर्ण दस्तकारी वस्तुएं हैं – संगमरमर पत्थर की वस्तुएं, ऊनी कालीन, आभूषण, कढ़ाई की वस्तुएं, चमड़े की वस्तुएं, मिट्टी के बर्तन और तांबे पर उभरी नक्काशी का काम ।

विश्वविद्यालय: बनास्थली विद्यापीठ; बिड़ला इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालोजी एंड साइंस, पिलानी; जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर; जैन विश्वभारती इंस्टीट्यूट, लादनुन; कोटा खुला विश्वविद्यालय; महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर; मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर; राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर; युनि[illegible] आफ राजस्थान, जयपुर; राजस्थान विद्यापीठ, [illegible] उत्तर भारत में अजमेर पहला पूर्ण साक्षर जिला है।

पर्यटन केंद्र: राजस्थान में पर्यटकों के [illegible] आकर्षण है, विशेषतया प्राचीन एवं मध्यका[illegible] पर्यटक स्थल हैं – माउंट आबू, अजमेर, [illegible] बीकानेर, जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, [illegible] चित्तौड़गढ़।

राज्यपाल: न्यायमूर्ति [illegible]

मुख्य मंत्री: अशोक गहलोत

सिक्किम

क्षेत्रफल: 7,096 वर्ग कि.मी.; राजधानी: गंगटोक; भाषायें: लेपचा, भोटिया, हिन्दी, नेपाली, लिंबू; जिले: 4; जनसंख्या: 406,457; पुरुष: 214,723; महिलाएं: 188,889; वृद्धि (1981–91): 87,227; वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91: 27.57; जनसंख्या घनत्व: 57; शहरी जनसंख्या: 9.10%; लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष): 880; साक्षरता: 56.53%; पुरुष: 64.34%; महिलाएं: 47.23%; प्रति व्यक्ति आय: 4396 रु.; 1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या: 406,457

भारत संघ का 22 वां राज्य सिक्किम पूर्वी हिमालय में स्थित एक छोटा–सा पहाड़ी राज्य है। उसके उत्तर में तिब्बत, पश्चिम में नेपाल, पूर्व में भूटान है और दक्षिण में पश्चिमी बंगाल है ।

सिक्किम संविधान (38 वें संशोधन) ऐक्ट 1975 के अधीन भारत संघ का एक राज्य बना । यह ऐक्ट भूतलक्षी प्रभाव से 26 अप्रैल, 1975 से जब इस संशोधन बिल को संसद की दोनों सभाओं ने पास किया था लागू हुआ ।
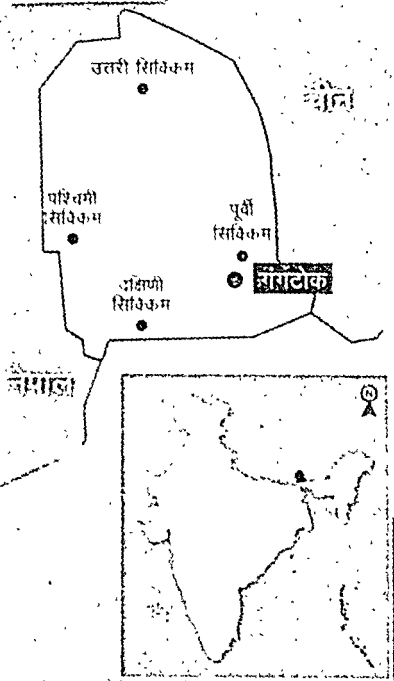
भू–आकृति: यह संपूर्ण राज्य पहाडी है। इस राज्य की एक–तिहाई भूमि पर साल, सिंयल, बांस और अन्य वृक्षों के घने वन हैं। कुछ सर्वोत्तम वन राज्य के सबसे उत्तरी भाग में लचेन लुचंग में है। इस क्षेत्र में पहाड़ 7000 मीटर से भी अधिक ऊंचे हैं। कंचनजंघा (8579) मी.) संसार के तीसरे नंबर की सबसे ऊंची चोटी, यहीं से आरंभ होती है ।

सिक्किम में औसतन 125 से.मी. वर्षा होती है। लेकिन घाटियों तराई के इलाकों और ऊंचे पहाड़ों पर वर्षा की मात्रा में बडा अंतर है। इस राज्य में तीस्ता नदी और उसकी सहायक नदिया बहती हैं ।

यहा आर्किड नस्ल के सैकडों किस्म के फूल के पौधे हैं और इसीलिए इसे वनस्पति विज्ञानशास्त्रियों का स्वर्ग कहा जाता है।

सिक्किम की जनसख्या में मुख्यत. लेपचा, भुटिया और इनसे मिलती- जुलती नस्लों के लोग और नेपाली हैं ।

प्रशासन: इस राज्य में एक सदन वाला विधान मंडल है। सिक्किम में चार जिले हैं ।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
पूर्वी	954	1,78,452	गंगटोक
उत्तरी	4,226	31,240	मंगन
दक्षिणी	750	98,604	नामची
पश्चिमी	1 166	98,161	ग्यालशिंग

इस राज्य की मुख्य फसलें हैं – मक्का, धान, ज्वार, गेहूं और जौ। संतरे और इलायची मुख्य नकदी फसलें हैं । अन्य प्रमुख फसलें हैं – आलू, सेब और बक–व्हीट । सिक्किम में बडी इलायची की पैदावार भारत में सर्वाधिक है। कृषि के विकास के लिए सरकार ने 9 क्षेत्रीय केंद्र और 7 उप–क्षेत्रीय केंद्र स्थापित किए हैं। स्थानीय जलवायु के अनुकूल अनेक अधिक उपज देने वाले बीज विकसित किये गए हैं। सिक्किम में तेमी और बयुजिग में 500 एकड में चाय के बागान हैं। यहां से चाय का निर्यात रूस और पश्चिमी जर्मनी को किया जाता है ।

प्रमुख औद्योगिक कारखाने ये हैं – सिंगतम में खाद्य परिरक्षण कारखाना, मजितर मे सिक्किम टेनरीज लिमिटेड, रंगपो मे सिक्किम डिस्टिलरी और एचएमटी का घड़ी पुर्जे–संयोजन कारखाना (सिक्किम टाइम कारपोरेशन) ।

सिक्किम टाइम कारपोरेशन ने 1982 में सर्वाधिक 3 लाख घड़ियों का संयोजन किया। यह कारपोरेशन अब एचएमटी के तकनीकी सहयोग से प्रति वर्ष 10 लाख घड़ियां बनाने की योजना तैयार कर रहा है ।

50 लाख रु की लागत से तदग में स्थापित रोलर फ्लोर मिल ने युनिसेफ द्वारा संचालित स्कूली बच्चों को अधिक पौष्टिक भोजन देने की योजना के लिए 1983 से एक उत्सर्जक खाद्य संसाधन कारखाना स्थापित कर दिया है।

विश्वविद्यालय सिक्किम मणिपाल युनिवर्सिटी आफ हेल्थ, मेडिकल एंड टेक्नालोजिकल साइंसेज, गंगटोक

पर्यटन केंद्र: सिक्किम में पर्यटन को बहुत बढ़ावा मिला है। देश के भीतर के पर्यटकों के लिये पेमायांग्टसी से युकराम

तक और युक्सम से जोन्गरी तक का मार्ग खोला गया है। विदेशियों को आंतरिक मार्ग-परमिट देने के नियमों को उदार बनाया गया है ।

राज्यपालः रणधीर सिंह

मुख्य मंत्रीः पवन कुमार चामलिंग (सिक्किम डेमो. फ्रंट)

हरियाणा

क्षेत्रफलः 44212 वर्ग कि.मी.; राजधानीः चंडीगढ़; भाषाः हिन्दी; जिलेः 19; जनसंख्याः 16,463,618; पुरुषः 8,705,379; महिलाएंः 7,612,336; वृद्धि (1981–91): 3,395,596; वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91: 26.28; जनसंख्या घनत्वः 372; शहरी जनसंख्याः 24.63%; लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष): 865; साक्षरताः 55.33%; पुरुषः 67.85%; महिलाएंः 40.94%; प्रति व्यक्ति आयः 8690 रु.; 1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्याः 16,463,618।

हरियाणा राज्य के पूर्व में उत्तर प्रदेश, पश्चिम में पंजाब, उत्तर में हिमाचल प्रदेश और दक्षिण में राजस्थान है । दिल्ली हरियाणा द्वारा तीन ओर से घिरा हुआ है ।

भू-आकृतिः हरियाणा को दो प्राकृतिक क्षेत्रों – हिमालय की और सिंधु-गंगा मैदान में बांटा जा सकता है । मैदानी क्षेत्र उपजाऊ है। इसका ढाल उत्तर से दक्षिण की ओर है और समुद्रतल से इसकी औसत ऊंचाई 700 फुट और 900 फुट के बीच है। हरियाणा का दक्षिणी-पश्चिमी भाग सूखा और रेतीला है, जिस पर खेती नहीं होती । हरियाणा में पंजाब और उत्तर प्रदेश जैसी कोई बारहमासी नदी नहीं है। यह राज्य अपने पड़ोसी राज्य राजस्थान जैसा है। यहां की एकमात्र नदी घग्गर राज्य के उत्तरी किनारे से होकर बहती है ।

हरियाणा की जलवायु निश्चित प्रकार की है – गर्मियों में खूब गर्मी रहती है और सर्दियों में कड़ी सर्दी ।

राज्य में वर्षा के दो मौसम होते हैं – (1) मानसून वर्षा जून के मध्य से सितंबर तक होती है जिसके बल पर खरीफ की फसल तैयार होती है और रबी की फसल बोई जाती है और (2) जाड़े की वर्षा दिसंबर से फरवरी तक होती है ।
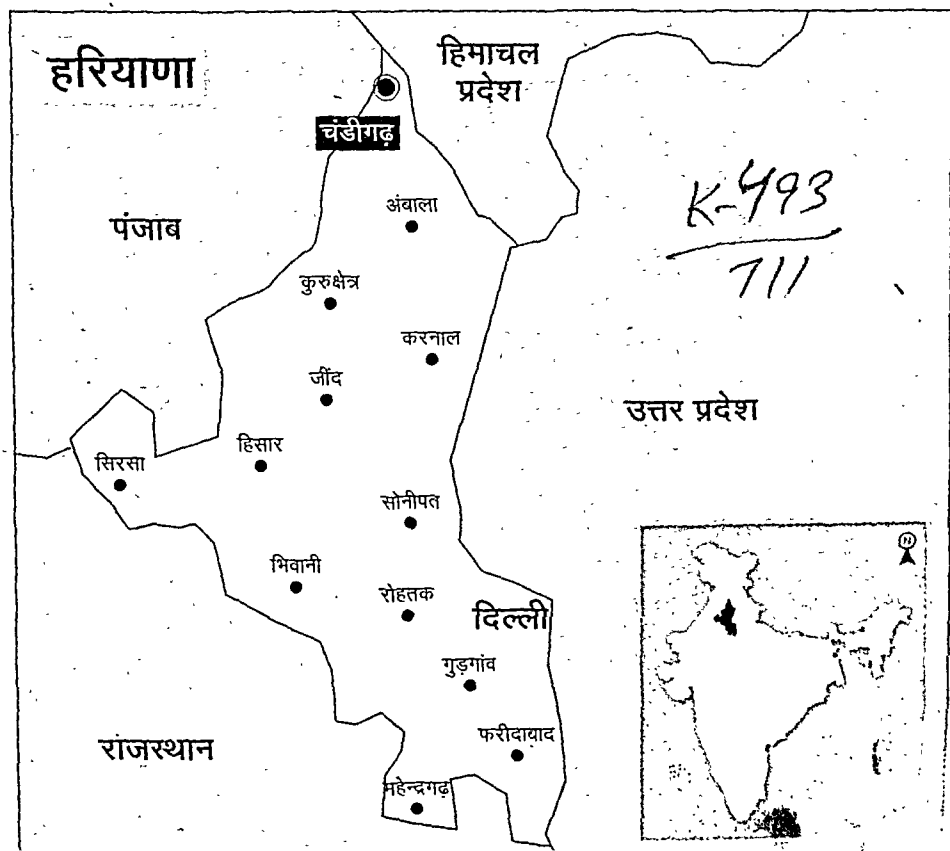
इतिहास: हरियाणा का गौरवशाली इतिहास वैदिक काल से आरंभ होता है। कौरवों और पांडवों के बीच हुई ऐतिहासिक लड़ाई कुरुक्षेत्र में हुई थी, जो हरियाणा में ही है। भारत में मुसलमानों के आगमन और दिल्ली भारत की राजधानी बनने तक इस राज्य ने भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। 1857 में इस राज्य के लोगों ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध लड़े गये प्रथम स्वाधीनता युद्ध में भारत के अन्य नेताओं के साथ मिल कर लड़ाई की।

जब अंग्रेजों ने 1857 को उपद्रव को दबा कर अपनी सत्ता पुन: स्थापित कर ली, तो उन्होंने झज्जर और बहादुर गढ़ के नवाबों, बल्लभगढ़ के राजा और रेवाड़ी के राव तुलाराम की रियासतें छीन लीं। इन रियासतों को या तो ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया अथवा पटियाला, नाभा और जिंद के शासकों को सौंप दिया गया। इस प्रकार हरियाणा पंजाब प्रांत का एक हिस्सा बन गया।

पुराने पंजाब राज्य के पुनर्गठन के परिणामस्वरूप 1 नवंबर, 1966 को आधुनिक हरियाणा राज्य अस्तित्व में आया।

प्रशासन: विधान मंडल में केवल एक सदन–विधान सभा है। विधान सभा में 90 सदस्य हैं।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या	मुख्यालय
अंबाला	1,569	7,97,480	अंबाला
कुरुक्षेत्र	1,217	6,41,943	कुरुक्षेत्र
करनाल	2,471	10,42,141	करनाल
जींद	2,736	9,63,104	जींद
सोनीपत	2 260	10,64,521	सोनीपत
पानीपत	1,250	6,77,157	पानीपत
रोहतक	1,668	7,91,887	रोहतक
पंचकुला	816	3,19,398	पंचकुला
फरीदाबाद	2,105	14,77,240	फरीदाबाद
गुड़गांव	2,760	11,46,090	गुड़गांव
महेंद्रगढ़	1,683	6,81,869	नारनौल
भिवानी	5,140	11,39,718	भिवानी
हिसार	3,788	12,06,472	हिसार
सिरसा	4,276	9,03,536	सिरसा
रेवाड़ी	1,559	6,23,301	रेवाड़ी
कैथल	2,799	8,20,685	कैथल
यमुनानगर	1,756	8,21,880	यमुना नगर
फतेहाबाद	2,491	6,38,162	फतेहाबाद
झज्जर	1,868	7,07 0644	झज्जर

1966 में राज्य की स्थापना के बाद से ही हरियाणा देश का प्रमुख खाद्यान्न उत्पादक राज्य रहा है। प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से इसका देश में तीसरा स्थान है।

हरियाणा में खाद्यान्न उत्पादन उल्लेखनीय रहा है। गेंहू, गन्ना, तिलहन और कपास के उत्पादन में यह अग्रणी है। उत्तर भारत में हरियाणा पहला प्रांत है जहां फसल बीमा योजना शुरू की गयी। यहां दुग्ध उद्योग काफी विकसित है और देश के औसत प्रति व्यक्ति 180 ग्राम दूध खपत की तुलना में यहां 579 ग्राम दूध की खपत होती है।

इस राज्य के प्रमुख उद्योग हैं – सीमेंट, चीनी, कागज़ सूती कपड़ा सीसे का सामान, पीतल का सामान, साइकिलें, ट्रैक्टर, मोटर साइकिलें, टाइम–पीस, बसों, ट्रकों के टायर व ट्यूब, सेनिटरी का सामान, टेलीविजन सेट, स्टील ट्यूब, हाथ के औजार, सूती धागा, रेफ्रीजेरटर, वनस्पति घी और कैनवास के जूते। पिंजौर में हिंदुस्तान मशीन टूल्स का एक कारखाना है, जिसमें ट्रैक्टर बनते हैं। गुड़गांव में मारुति कार का कारखाना है।

हरियाणा में इस समय कुल मिलाकर 1,20,000 से अधिक छोटे पैमाने के औद्योगिक कारखाने तथा 635 बड़े व मध्यम दर्जे के औद्योगिक कारखाने हैं। हरियाणा प्रथम प्रांत है जहां हर गांव में बिजली है।

विश्वविद्यालय: चौधरी चरण सिंह हरयाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार; गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय, हिसार; कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र; महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक; नेशनल डेयरी रिसर्च इंस्टीट्यूट, कर्नाल।

पर्यटन केंद्र: राज्य हंस, बड़कल लेक, सूरज कुंड, डाबचिक, सुल्तानपुर, बारबेट, सोहना और पिंजौर पर्यटक केंद्र है। हरियाणा में 32 पर्यटक काम्पलेक्स हैं।

राज्यपाल: महावीर प्रसाद

मुख्य मंत्री: ओमप्रकाश चौटाला (आई.एन.एल.)

हिमाचल प्रदेश

क्षेत्रफल: 55,673 वर्ग कि.मी.; राजधानी: शिमला; भाषायें: हिन्दी, पहाड़ी; जिले: 12; जनसंख्या: 5,170,877; पुरुष: 2,560,894; महिलाएं: 2,550,185; वृद्धि (1981–91): 830,261; वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91: 19.39; जनसंख्या घनत्व: 92; शहरी जनसंख्या: 8.69%; लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष): 996; साक्षरता: 63.54%; पुरुष: 74.57%; महिलाएं: 52.46%; प्रति व्यक्ति आय: 4005 रु.; 1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या: 5,170,877।

हिमाचल प्रदेश 25 जनवरी, 1971 को भारत संघ का राज्य बना। 55,673 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल वाला यह राज्य क्षेत्रफल मे पंजाब, हरियाणा और केरल से बड़ा है, किंतु इसकी जनसंख्या इन राज्यों की जनसंख्या से कम है।

भू–आकृति: हिमाचल प्रदेश हिमालय पर्वत की श्रृंखलाओं के बीच भारत के उत्तरी–पश्चिमी कोने में स्थित है। इसके उत्तर में जम्मू व काश्मीर, दक्षिण–पूर्व में उत्तर प्रदेश, दक्षिण में हरियाणा और पश्चिम में पंजाब है। पूर्व में इसकी सीमा तिब्बत की सीमा से मिली हुई है।

यह राज्य पूर्णत: पहाड़ी है; पहाड़ों की ऊंचाई समुद्रतल से 460 से 6600 मीटर तक है। इसकी स्थलाकृति गहरे कटाव वाली है; इसका भौगोलिक ढांचा जटिल है और यहां उप–उष्णकटिबंधीय किस्म की वनस्पति पाई जाती है।

भौतिक दृष्टि से इस राज्य को दो क्षेत्रों – दक्षिण और उत्तर में बांटा जा सकता है। हिमाचल प्रदेश का दक्षिणी क्षेत्र उतना ही गर्म है जितना मैदानी क्षेत्र जबकि उत्तरी क्षेत्र में गर्मी की ऋतु सुहावनी होती है और सर्दी की ऋतु में बहुत ठंडक पड़ती है व भारी बर्फ पड़ती है। शिमला और सिमौर जिलों की भूमि उर्वर है जबकि शेष 10 जिलों में जंगल हैं और उनमें पहाड़ी भूमि है। इस राज्य में सामान्य वर्षा का औसत 181.6 से.मी. है ।

हिमाचल प्रदेश में अनेक नदियां हैं, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण नदियों के नाम हैं – चिनाब, रावी, व्यास, सतलज और यमुना। इन सभी नदियों में बर्फ पिघल कर बहती है अत: ये नदियां बारहमासी हैं ।

इतिहास: 15 अगस्त, 1948 को पंजाब की लगभग 30 पहाड़ी रियासतों को मिला कर हिमाचल प्रदेश नामक एक केंद्र शासित प्रदेश बनाया गया।

1951 में इसे भाग 'ग' का राज्य बना दिया गया और इसे एक लेफ्टीनेंट गवर्नर के अधीन कर दिया गया। यहां 36 सदस्यों वाली विधान सभा और तीन मंत्रियों वाला मंत्रिमंडल बनाया गया। 1954 में भाग 'ग' के एक अन्य राज्य बिलासपुर को हिमाचल प्रदेश में मिला दिया गया और विधान सभा में सदस्यों की संख्या बढ़ाकर 41 कर दी गई।

अक्टूबर 1966 तक हिमाचल प्रदेश में केवल छ: पहाड़ी जिले थे – महासू, मंडी, चंबा, सिरमौर, बिलासपुर और किन्नौर।

नवंबर, 1966 में पंजाब का कुछ पहाड़ी क्षेत्र – शिमला, कांगड़, कुटलू, लाहौल और स्पीति जिले, अंबाला जिले की नालागढ़ तहसील और होशियारपुर व गुरदासपुर जिले के कुछ भाग हिमाचल प्रदेश में मिला दिया गया ।

हिमाचल प्रदेश को 10 जिलों में गठित किया गया और 25 जनवरी, 1971 को इसे राज्य का दर्जा प्रदान किया गया। शिमला को इसकी राजधानी घोषित किया गया। 1972–73 में राज्य के जिलों का पुनर्गठन किया गया और 12 जिले बना दिये गए ।

प्रशासन: राज्य विधान मंडल में केवल विधान परिषद है, जिसकी सदस्य संख्या 67 है ।

जिले
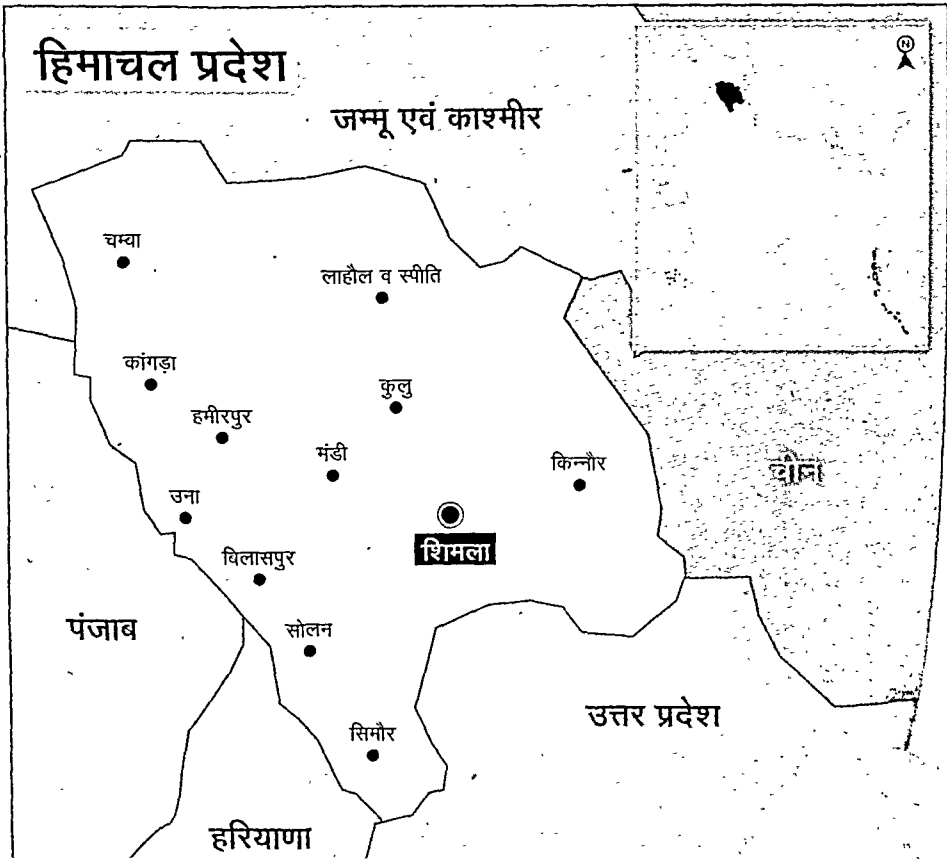
जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या	मुख्यालय
विलासपुर	1,167	2,95,387	विलासपुर
चंवा	6,528	3,93,286	चंवा
हमीरपुर	1,118	3,69,128	हमीरपुर
कांगड़ा	5,739	11,74,072	कांगड़ा
किन्नौर	6,401	71,2701	किन्नौर
कुल्लू	5,503	3,02,432	कुटलू
लाहौल व स्पीति	13,835	31,294	लाहौल व स्पीति
मंडी	3,950	7,76,372	मंडी
शिमला	5,131	6,17,404	शिमला
सिरमौर	2,825	3,79,695	सिरमौर
सोलन	1,936	3,82,268	सोलन
उना	1,540	3,78,269	उना

हिन्दी भाषियों की संख्या में निरंतर वृद्धि

1971 के पश्चात 1981 व 1991 की जनगणना की तुलना से यह स्पष्ट होता है कि देश में हिन्दी को मातृभाषा वतानेवालों के प्रतिशत में निरंतर वृद्धि हुई है जवकि मलयालम, उड़िया, सिंधी व कोंकणी आदि कुछेक भाषाएं वोलनेवालों के प्रतिशत में निरंतर कमी आई है। दो दशकों की इस अवधि में तमिल, तेलुगू, मराठी, कन्नड़, उर्दू व असमी भाषियों के प्रतिशत में भी कमी आई है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार 1971 में देश की 38.04% जनसंख्या हिन्दी भाषी (उपभाषाओं साहित) थी। 1981 व 1991 में यह वढ़कर क्रमशः 38.71 % तथा 39.85 % हो गई। हिन्दी को मातृभाषा वतानेवालों की संख्या 1991 में उपभाषाएं वोलनेवाले शामिल है इनमें 48 से अधिक उपभाषाएं राजस्थानी (1.33 करोड़), भोजपुरी (2.32करोड़), जनगणनानुसार हिन्दी के पश्चात दूसरी सर्वाधिक लोगों की मातृभाषा वंगला है। जवकि तेलुगू का स्थान तीसरा है। वंगला को 6.96 करोड़ लोगों ने तथा तेलुगू को 6.60 करोड़ लोगों ने 1991 में अपनी मातृभाषा वताया है। उल्लेखनीय है कि 1971 में तेलुगू भषियों की संख्या देश की कुल जनसंख्या का 8.16% थी जो घटकर 1991 में 7.80 % से वढ़कर 8.22% हो गई, 1971 से 1991 के दौरान गुजराती वोलने वालों की संख्या 4.72 % से वढ़कर 4.81%, पंजावी भाषियों की संख्या 2.57 से वढ़कर 2.76 % व मणिपुरी भाषियों की संख्या 0.14 % से वढ़कर 0.15 % हो गई, संस्कृत को अपनी मातृभाषा वतानेवालों के प्रतिशत में भी मामूली वृद्धि हुई है। इनके विपरित मलयालम् को मातृभाषा वताने वालों की संख्या 1971 में कुल जनसंख्या के 4% से कम होकर 1981 में 3.76 % व 1991 में 3.59% रह गई है। उड़िया भाषियों का 1991 में 3.32 % सिंधी भाषियों का 0.31 % से घटकर क्रमशः 3.30 व 0.25%, कोंकणी का 0.28 % से घटचकर क्रमशः 0.23 व 0.21 % रह गया है। 1971 से 1991 की अवधि में देश में मराठी वोलनेवालों का प्रतिशत 7.62 %, कन्नड़ 3.96 %से घटकर 3.87 % तथा असमी 1.63 % से घटकर 1.55 % रह गया है। क्षेत्रीय भाषाओं के वोलने वालों के प्रतिशत में कमी का मुख्य कारण हिन्दी भाषी क्षेत्रों में जनसंख्या में अपेक्षाकृति आधिक वृद्धि होना है।

कृषि और वागवानी हिमाचल प्रदेश की अर्थ व्यवस्था के आधार हैं। 71 प्रतिशत लोग इस क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। कुल कृषि योग्य भूमि का 21 प्रतिशत सिंचित है फिर भी इस राज्य की भौगोलिक अवस्था विभिन्न प्रकार के फलों और आलू, अदरक, सब्जियों के बीज, सेव, अप्टिफल आदि जैसी नकद व्यावसायिक फसलों को उगाने के लिए अधिक उपयुक्त है ।

यद्यपि इस राज्य में प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता है और सस्ती जल विद्युत की वहुत उपलब्धता है, फिर भी यह भौगोलिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है । 1500 मेगावाट का नायपा आकरी जल विद्युत परियोजना से उपयुक्त विद्युत आपूर्ति की व्यवस्था हो जायेगी। यहां लगभग 20,000 लघु उद्योग हैं जिसमें 75,000 लोग कार्यरत् हैं। परवाणु में 400 करोड़ रु. की लागत से फलों को संसाधित करने का एक आधुनिक व वढ़िया कारखाना लगाया गया है ।

विभिन्न रियायतों और प्रोत्साहनों के फलस्वरूप औद्योगिकरण की गति में तेजी आई और वड़े तथा मध्यम दर्जे की 58 परियोजनाओं को मंजूरी दे दी गई। जैसे नाहन फाउंडरी, नाहन; रेज़िन और टर्पिनटाइन कारखाने नाहन और विलासपुर में, मोहंन मीकिन व्रुवरीज़ सोलन; युनाइटेड डायमंड लिमिटेड, परवाणु । सभी जिलों में जिला उद्योग केंद्र काम कर रहे हैं । राज्य में इलेक्ट्रानिक्स विकास निगम स्थापित हो गया है और इलेक्ट्रानिक्स उद्योगों के केंद्र खोले जा रहे हैं ।

विश्वविद्यालय: डा. वाई.एस. परमार युनिवर्सिटी आफ हार्टीकल्चर एंड फारेस्ट्री, सोलन; हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर; हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला।

पर्यटक केंद्र: हिमाचल प्रदेश में अनेक पर्वतीय स्थल (हिल स्टेशन) हैं, जो गर्मी में तरो–ताजा कर देते हैं । वहां पर्यटक छुट्टियां मनाने जाते हैं और सुंदर दृश्यों का आनंद उठाते हैं। शिमला, डलहौज़ी, धर्मशाला, कुटलू, कसौली, सोलन, चैल और कुफ़्री कुछ मशहूर पर्वतीय स्थल हैं ।

हिमाचल प्रदेश वन्य जीवों की दृष्टि से भी वड़ा समृद्ध है। कुछ दुर्लभ किस्म के वन्य जीव हैं – कस्तूरी हिरन, लंवे सींग वाला जंगली वकरा, थार वकरी, हिमालय का भूरा भालू और साह आदि पशु और मोनल, ट्रैगोपैन, कोकियाश और स्नोकाक जैसे पक्षी। कटरेना, रोहरु और वरोत ट्राउट मछलियों के पकड़ने हेतु और मरगोया, कारगायु और दवाहू माहशीर मछलियों के पकड़ने हेतु आदर्श स्थान हैं ।

राज्यपाल: विष्णुकांत शास्त्री

मुख्य मंत्री: पी.के. धूमाल (भा.ज.पा.)

संघ शासित प्रदेश

अंडमान और निकोबार

क्षेत्रफल: 8,249 वर्ग कि.मी.; राजधानी: पोर्टब्लेयर; भाषायें: बंगाली, हिन्दी, निकोबारी, तमिल, तेलगु और मलयालम; जिले : 2; जनसंख्या: 280,661; पुरुष: 152,737; महिलाएं: 125,252; वृद्धि (1981-91): 89,248; वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981-91: 47.29; जनसंख्या घनत्व: 34; शहरी जनसंख्या: 26.91%; लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष): 820; साक्षरता: 73.74%; पुरुष: 79.68%; महिलाएं: 66.22%; प्रति व्यक्ति आय: 6751 रु.; 1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या: 280,661

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में 300 से अधिक द्वीप हैं। उनमें से अधिकांश (लगभग 265) में कोई आबादी नहीं है। यह द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में है ।

भू-आकृति: अंडमान और निकोबार द्वीप समूह महाद्वीपीय द्वीप हैं जो 6 और 14 अंश उत्तरी अक्षांश और 92 और 94 अंश पूर्वी देशांतर के बीच स्थित हैं । अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के द्वीप दो समूहों में अर्थात् अंडमान और निकोबार में बंटे हुए हैं और दोनों 10 अंश अक्षांश पर एक जलधारा द्वारा पृथक हो गए हैं ।

अंडमान द्वीप समूह में सबसे उत्तर में लैंडफाल द्वीप है जो हुगली नदी के मुहाने से लगभग 900 कि.मी. और म्यानमार (बर्मा) से लगभग 190 कि.मी. की दूरी पर है । इसके नीचे अर्थात् दक्षिण की ओर तीन मुख्य द्वीप - उत्तरी अंडमान, मध्य अंडमान और दक्षिणी अंडमान हैं । इन तीनों के बीच उथला समुद्र है, जो इन्हें एक-दूसरे से पृथक् करता है । इस क्षेत्र को विशाल अंडमान कहते हैं । इससे दक्षिण की ओर पोर्टब्लेयर से लगभग 100 कि.मी. की दूरी पर लिटिल (लघु) अंडमान द्वीप हैं ।

अंडमान से दक्षिण की ओर 60 से 100 उत्तरी अक्षांश के बीच निकोबार द्वीप समूह है । इसके सबसे उत्तर में कार निकोबार द्वीप है । यह लिटिल (लघु) अंडमान से लगभग 120 कि.मी. दक्षिण में है। इसके सबसे दक्षिणी छोर के द्वीप ग्रेट निकोबार है । दोनों समूहों के सब द्वीपों का कुल क्षेत्रफल 8249 वर्ग कि.मी. है। निकोबार द्वीप समूह के सब द्वीपों का कुल क्षेत्रफल 1953 वर्ग कि.मी. है ।

इतिहास: अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का, जिन्हें खाड़ी द्वीप समूह भी कहा जाता है, 16 वीं शताब्दी में यूरोपीय शक्तियों के भारत और पूर्वी देशों में आगमन से पहले कोई ऐतिहासिक महत्व नहीं था।

सबसे पहले पुर्तगाली आये, किंतु वे इन द्वीपों में नहीं बल्कि ईस्ट इंडीज (पूर्वी द्वीप समूह) में दिलचस्पी रखते थे। उसके बाद डच (हालैंडवासी) आये और उन्होंने पुर्तगालियों को ईस्ट इंडीज से मार भगाया और इस प्रकार खाड़ी द्वीप समूह स्वत: ही उनके प्रभुत्व में आ गए। इसी बीच अंग्रेजों ने भारत मे अपना पैर जमा लिया था और अंग्रेजों की डचों के साथ अंडमान में और उसके आस-पास टक्कर हुई। थोड़े ही समय में अंग्रेजों ने डचों को मार भगाया और इन द्वीपों पर कब्जा कर लिया । 1857 में भारत में विद्रोह हुआ। ऐसे बहुत-से विद्रोही बंदी थे, जिनके लिए उस समय भारत की जेलों में स्थान नहीं था। अंडमान उनके लिए उचित स्थान माना गया। अनुमान है कि 1858 और 1860 के बीच
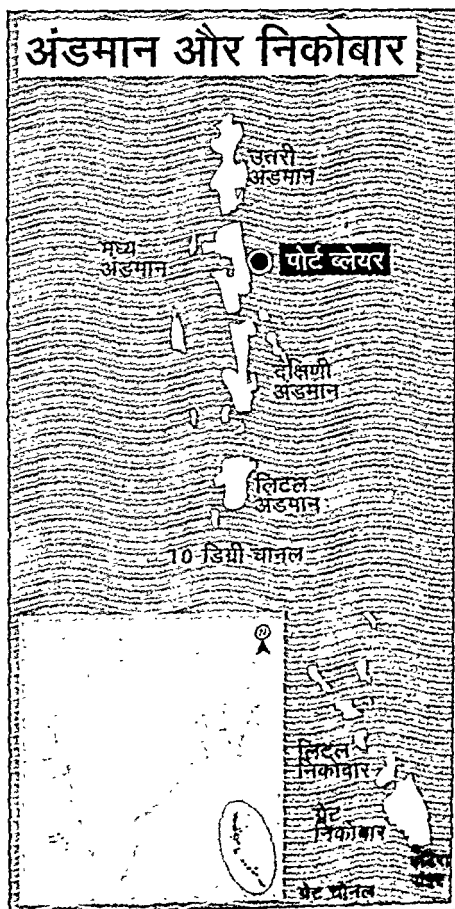
2000 से 4000 विद्रोही सिपाहियों को अंडमान भेजा गया। उनमें से अनेकों की बड़ी दर्दनाक स्थिति में मृत्यु हो गई।

सेलुलर जेल: इसी बीच अंडमान में बंदियों को रखने की व्यवस्था में भारी परिवर्तन हो गया। शुरू में बंदियों को रात में बैरकों में बंद कर दिया जाता था। उसके स्थान पर अब सेलुलर जेल बन गई।

1935 के संवैधानिक सुधारों के कारण नीति में परिवर्तन आया। 1937 में बंदियों का पहला समूह अंडमान से वापस लौटा और जनवरी, 1938 तक सभी बंदी मुक्त कर दिये गए।

दूसरे विश्व युद्ध और उसके परिणामस्वरूप 1942-1945 तक इन द्वीपों पर जापान का कब्जा हो जाने से इन द्वीपों के निवासियों को विदेशी सैनिक कब्जे का अनुभव प्राप्त हुआ। 1945 में जापानी इन द्वीपों को छोड़कर चले गये। 15 अगस्त 1947 को ये द्वीप स्वतंत्र भारत के अंग के रूप में स्वाधीन हो गए। 1 नवंबर, 1956 को अंडमान और निकोबार द्वीप समूह को एक संघ शासित प्रदेश बना दिया गया और इसके प्रशासन का अधिकार भारत के राष्ट्रपति को सौंप दिया गया। स्थानीय प्रशासन का कार्यभार नवंबर 1982 से एक लेफ्टीनेंट गवर्नर को सौंप दिया गया जिसका मुख्यालय पोर्टब्लेयर में है।

प्रशासन: संपूर्ण संघ शासित प्रदेश 4 सब-डिवीजनों और 7 तहसीलों में विभाजित है

क्षेत्रफल, सब-डिवीजन और तहसील

सब डिवीजन	सब डिवीजन में तहसीलें	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)
. मायाबंदर	1. दिग्लीपुर	884
	2. मायाबंदर	1348
	3. रांगत	1098
. दक्षिण अंडमान	1 पोर्टब्लेयर	
	2 फरारगंज	3010
. कार निकोबार	कार निकोबार	129
. ननकोवरी	ननकोवरी	1824

ला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या	मुख्यालय
अंडमान	6,408	2,41,453	पोर्ट ब्लेयर
निकोबार	1,841	39,208	कार निकोबार

अर्थव्यवस्था: कुल क्षेत्र के 7.130 वर्ग कि.मी. क्षेत्र पर वना हैं। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की मुख्य फसलें हैं – चावल, नारियल और सुपारी। अन्य फसलें हैं – गन्ना, दालें, फल और सब्जियां।

उद्योग हैं – आरा मिलें, तेल मिलें, प्लाईवुड और दियासलाई। सरकार ने अनेक प्रशिक्षण उत्पादन केंद्र खोल दिये हैं।

पर्यटन केंद्र: सेलुलर जेल (जिसे राष्ट्रीय स्मारक घोषित कर दिया गया है), मानव विज्ञानीय संग्रहालय, माउंट हैरियट।

उपराज्यपाल: ईश्वरी प्रसाद गुप्ता

चंडीगढ़

क्षेत्रफल: 114 वर्ग कि.मी.; **राजधानी:** चंडीगढ़; **भाषायें:** हिन्दी, पंजाबी; **जिला:** 1; **जनसंख्या:** 7.5 लाख; **पुरुष:** 357,411; **महिलाएं:** 283,314; **वृद्धि (1981-91):** 189,115; **वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981-91:** 41.88; **जनसंख्या घनत्व:** 5,620; **शहरी जनसंख्या:** 89.69%; **लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष):** 793; **साक्षरता:** 78.73%; **पुरुष:** 82.67%; **महिलाएं:** 73.61%; **1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या:** 642,015

चंडीगढ़ 1966 में संघ शासित प्रदेश बना। पंजाब समझौते के अनुसार इसे पंजाब का भाग बनाया जायेगा। यह पंजाब और हरियाणा दोनों की राजधानी है और यहां दोनों के लिए उच्च न्यायालय और विश्वविद्यालय हैं।

चंडीगढ़ एक सुनियोजित आधुनिक शहर है, जिसकी योजना फ्रांसीसी वास्तुविद् ले कारव्युजियर ने तैयार की थी।

अर्थव्यवस्था: इस क्षेत्र में 3,407 हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि है। जिसमें 2740 हेक्टेयर भूमि पर सिंचाई सुविधायें
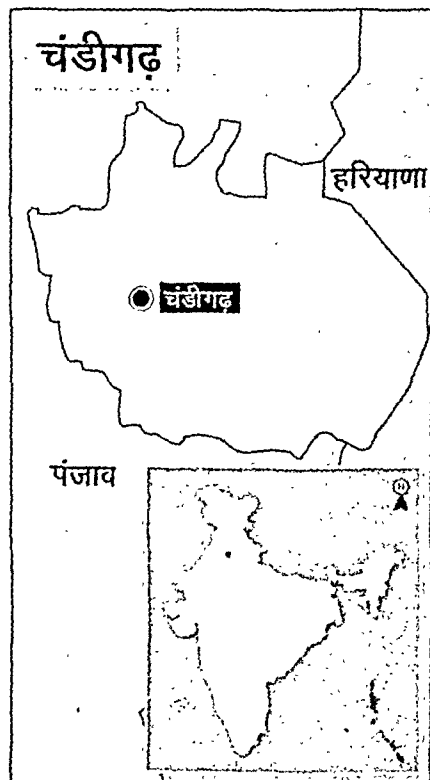
उपलब्ध है। गेंहू, मक्का और धान यहां की मुख्य फसलें हैं। 27 प्रतिशत भूमि पर वन हैं ।

यहां पर 14 बड़ी एवं मध्यम औद्योगिक इकाइयां हैं जिसमें 2 सार्वजनिक उपक्रम हैं। 2000 इकाईयां लघु उद्योग के अंतर्गत पंजीकृत हैं।

भाखड़ा काम्पलेक्स के विद्युत उत्पादन का 3.5 प्रतिशत चण्डीगढ़ को मिलता है ।

विश्वविद्यालय: पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़; पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च, चंडीगढ़।

पर्यटन स्थल: रोज गार्डेन, राक गार्डेन, शांति कुंज झील, संग्रहालय, आर्ट गैलरी, कैपिटल काम्पलेक्स, और नेशनल गैलरी आफ पोर्ट्रेट्स ।

प्रशासक: ले. जनरल जे.एफ.आर. जैकब

दमन और दियु

क्षेत्रफल: 112 वर्ग कि.मी.; **राजधानी:** दमन; **भाषायें:** गुजराती, मराठी; **जिले :** 2; **जनसंख्या:** 101,586; **पुरुष:** 51,452; **महिलाएं:** 49,987; **वृद्धि** (1981–91): 22,458; **वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91:** 28.43; **जनसंख्या घनत्व:** 906; **शहरी जनसंख्या:** 46.80%; **लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष):** 972; **साक्षरता:** 73.58%; **पुरुष:** 85.67%; **महिलाएं:** 61.38%; **1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या:** 101,586

1987 में गोवा, दमन और दियु में से गोवा को पृथक करके उसे पूर्ण राज्य का दर्जा प्रदान कर दिया गया और दमन और दियु को संघ शासित प्रदेश रहने दिया गया । 1961 में पुर्तगालियों के कब्जे से आजाद होने के बाद से 1987 तक ये तीनों क्षेत्र एक राजनैतिक इकाई अर्थात् संघ शासित प्रदेश में संगठित रहे ।

भू–आकृति: दमन गुजरात समुद्र तट पर है जबकि दियु काठियावाड़ प्रायद्वीप के दक्षिणी सिरे पर एक छोटा–सा द्वीप हैं।

इतिहास: पुर्तगालियों ने 1534 में दियु पर अधिकार किया था। 1559 में उन्होंने दमन को भी अपने अधीन कर लिया।

संविधान (बारहवां संशोधन) ऐक्ट 1962 के अधीन गोवा को भारत संघ का एक संघ शासित प्रदेश बना कर संविधान की प्रथम अनुसूची में सम्मिलित किया गया । संविधान 57 वें संशोधन द्वारा दमन और दियु को गोवा से पृथक् करके एक स्वाधीन संघ शासित प्रदेश बनाया गया।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
दमन	72.0	62,101	दमन
दियु	40.0	39,485	दियु
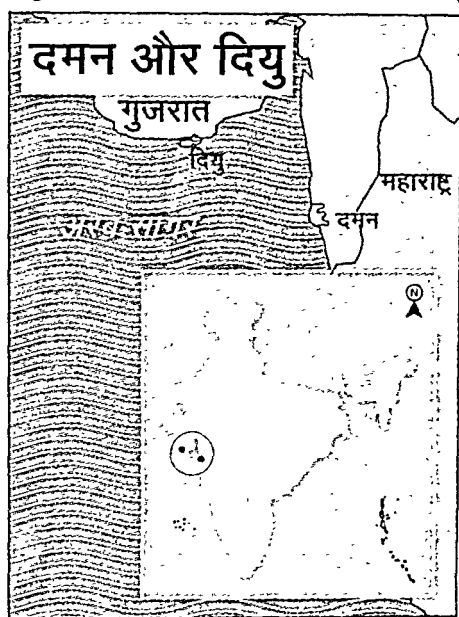
मछली मुख्य आर्थिक स्रोत है। मछली पकड़ने के लिये यंत्रीकृत नौकायें व अन्य सुविधायें उपलब्ध करायी जा रही हैं।

कृषि के लिये दोहरी फसल के क्षेत्र को सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराकर बढ़ाया जा रहा है। इस क्षेत्र में 550 औद्योगिक इकाइयां हैं। समस्त गांवों में विद्युत है।

पर्यटन: ऐतिहासिक स्थलों के अतिरिक्त दमन में देवका बीच व दियु में नगोवा बीच पर्यटकों के लिये आकर्षण का केंद्र हैं। 1992 से हवाई अड्डे को काम में लाया जा रहा है।

प्रशासक: ओ.पी. केलकर

दादरा और नागर हवेली

क्षेत्रफल: 491 वर्ग कि.मी.; **राजधानी:** सिवासा; **भाषायें:** भीली, मिलोड़ी, गुजराती और हिन्दी; **जिला:** 1; **जनसंख्या:** 138,477; **पुरुष:** 70,927; **महिलाएं:** 67,615; **वृद्धि** (1981–91): 34,866; **वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91:** 33.63; **जनसंख्या घनत्व:** 282; **शहरी जनसंख्या:** 8.47%; **लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष):** 953; **साक्षरता:** 39.46%; **पुरुष:** 52.07%; **महिलाएं:** 26.10%; **1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या:** 138,477

दादरा और नागर हवेली पश्चिमी तट के निकट और गुजरात व महाराष्ट्र राज्य द्वारा घिरे हुए हैं। ये दो पृथक् भू–क्षेत्र हैं और इनके बीच में गुजरात राज्य का प्रदेश है ।

इतिहास: 1779 में मराठा सरकार ने पुर्तगालियों से मैत्री के उपलक्ष्य में उन्हें दादरा और नागर हवेली क्षेत्र 12,000 रु. के राजस्व के बदले में दे दिये थे। 1954 में ये क्षेत्र स्वाधीन हुए। संभवतः देश का यही एक भाग है, जिसमें लगभग 8 वर्षों (1954-61) तक जनता का प्रत्यक्ष शासन था। 11 अगस्त, 1961 को इस क्षेत्र को भारत संघ में सम्मिलित कर लिया गया।

प्रशासन: यह प्रदेश एक प्रशासक के अधीन है। सबसे पहले 1968 में गांव स्तर पर समूह पंचायतों की स्थापना की गई थी और उसके बाद हर चौथे साल निर्वाचन होते रहे हैं।

अर्थ व्यवस्था: मुख्य उद्यम कृषि है। मुख्य फसलें है – धान, रागी और दालें व फल, पर इनके अलावा गेहूं, सब्जियां और गन्ने की भी खेती होती है। लगभग 22,800 हेक्टेयर भूमि पर कृषि होती है। इस क्षेत्र में कोई बड़े उद्योग नहीं है। दो औद्योगिक बस्तियां स्थापित की गई हैं – एक सरकारी आधार पर सिलवासा में और दूसरी सहकारी औद्योगिक बस्ती समाट में। खडोली में नई औद्योगिक कारखानों की संख्या 286 थी। 1986-87 में 96

दादरा और नागर हवेली

मध्यम दर्जे के उद्योग और 37 कुटीर और ग्रामोद्योग कारखाने थे।

जो वस्तुएं बनती हैं, उनमें चश्मे के फ्रेम, फर्श के टाइल, बाल्टियां, डबल रोटी व बिस्कुट, फर्नीचर, कत्था और टेनिन, स्पन पाइप, प्लास्टिक की ढाली हुई वस्तुएं, रसायन, कपड़ा धोने का पाउडर, कृत्रिम रेशमी कपड़ा, बिजली की फिटिंग के सामान, घड़ियां, मोमबत्तियां, टीनें के डिब्बे, चप्पलें, रैक्जीन का कपड़ा, फोम आदि सम्मिलित हैं।

कार्यकारी प्रशासक: रमेश नेगी

दिल्ली – राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र

क्षेत्रफल: 1,483 वर्ग कि.मी.; **राजधानी:** दिल्ली; **भाषायें:** हिन्दी, पंजाबी, उर्दू; **जनसंख्या:** 9,420,614; **पुरुष:** 5,120,733; **महिलाएं:** 4,249,742; **वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981-91:** 50.64; **जनसंख्या घनत्व:** 6139; **शहरी जनसंख्या:** 89.93%; **लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष):** 830; **साक्षरता:** 76.09%; **पुरुष:** 82.63%; **महिलाएं:** 68.01%; **प्रति व्यक्ति आय:** 5315 रु; **1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या:** 9,420,614

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली को देश की राजधानी होने का गौरव प्राप्त हैं। दिल्ली को सी ग्रेड की विधानसभा दी गयी है। आम चुनाव 6 नवम्बर को हुए। चुनाव परिणाम भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में गये।

भू-आकृति: यह प्रदेश उत्तरी भारत में हरियाणा की पूर्वी सीमा के भीतर घुसा हुआ है। अपनी स्थिति के कारण इस प्रदेश की जलवायु पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम में स्थित राजस्थान के रेगिस्तान और पूर्व में उत्तर प्रदेश के गंगा के मैदान से प्रभावित होती है। यहां के जलवायु के विशेष लक्षण हैं – बिल्कुल शुष्क, गर्मी में भीषण गर्मी और सर्दियों में खूब ठंडक पड़ती है।

इतिहास: दिल्ली शहर की स्थापना तोमर वंश के एक राजपूत राजा ने 11 वीं शताब्दी में की थी। यह शहर बाद में तोमरों के हाथ से चौहानों के हाथ में चला गया।

1191 में तराइन की पहली लड़ाई में पृथ्वीराज ने मोहम्मद गौरी के प्रथम आक्रमण को विफल कर दिया था। अगले साल गौरी ने अपनी पराजय का बदला लेने के लिए पुनः आक्रमण किया और तराइन की दूसरी लड़ाई (1192) में राजपूत सेना की हार हो गई। पृथ्वीराज को पकड़ कर मौत के घाट उतार दिया गया। इस प्रकार दिल्ली मुस्लिम शासकों के अधीन आ गई और 600 साल तक उनके अधीन रही। मुगल सम्राटों के काल में दिल्ली विश्वविख्यात शहर बन गया।

1857 में भारतीय सैनिकों के विद्रोह के फलस्वरूप अंग्रेजों ने दिल्ली के नाममात्र के सम्राट बहादुरशाह को गद्दी से पदच्युत करके दिल्ली को विधिवत् भारतीय ब्रिटिश साम्राज्य में शामिल कर लिया। 1912 में भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की राजधानी कलकत्ता से हटाकर दिल्ली लाई गई।
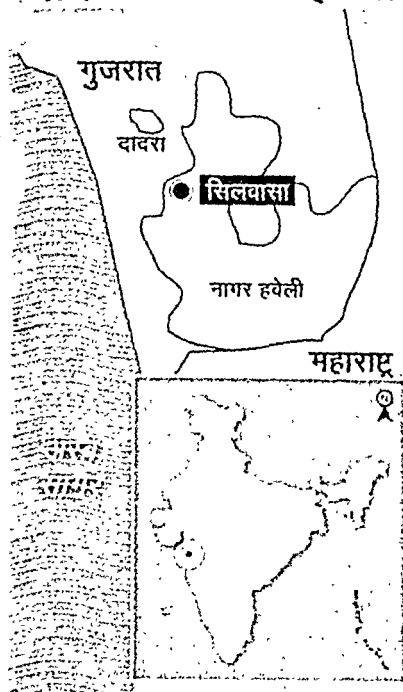
प्रशासन: दिल्ली 1 नवंबर, 1956 को संघ शासित प्रदेश बना। इस प्रदेश की जनता को विकास कार्यों में हाथ बंटाने का अधिक अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से संसद ने दिल्ली प्रशासन ऐक्ट 1966 पास किया। इस ऐक्ट के अधीन दिल्ली में एक महानगर परिषद की व्यवस्था की गई। इस परिषद में 61 सदस्य थे, जिनमें से 5 राष्ट्रपति द्वारा नामजद होते थे। दिसम्बर 1991 में संसद ने संविधान संशोधन अधिनियम (74 वां संशोधन) के अंतर्गत दिल्ली को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र माना गया और इसे 70 सदस्यीय विधानसभा दी गयी ।

दिल्ली में शहरीकरण के कारण कृषि क्षेत्र तेजी से कम होता जा रहा है। 1989 तक कृषि क्षेत्र 77,000 हैक्टेयर रह गया जो कि पहले 1,17,000 हैक्टेयर था ।

दिल्ली का कुल भूमि क्षेत्र 1,47,488 हेक्टेयर है, जिसमें से 1443 हेक्टेयर क्षेत्र में वन हैं और 70642 हेक्टेयर क्षेत्र खेती के लिए उपलब्ध नहीं है। बंजर भूमि छोड़कर कृषिविहीन अन्य भूमि क्षेत्र 4626 हेक्टेयर हैं ।

मुख्य फसलें गेहूं, ज्वार व बाजरा, गन्ना (गुड़) थीं ।

1974 के बाद से बहुत से औद्योगिक उपक्रम स्थापित हो गए हैं । इन उपक्रमों में ब्लेड, खेल के सामान; रेडियो के पुर्जे, साइकिलें, स्टेशन वैगन और प्लास्टिक व पी.वी.सी. की वस्तुएं और जूते बनाने वाले कारखाने हैं । 1985–86 में लगभग 65000 औद्योगिक इकाइयों में उत्पादन हो रहा था। इन इकाइयों में 5,95,000 श्रमिक काम करते थे, उत्पादन 3450 करोड़ रुपये का था और इनमें लगभग 1260 करोड़ रु. की पूंजी लगी हुई थी ।

विश्वविद्यालय: अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान; दिल्ली विश्वविद्यालय; इंडियन एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट; इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालोजी; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय; जामिया हमदर्द; जामिया मिलिया इस्लामिया; जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय; नेशनल म्यूजियम इंस्टीट्यूट आफ हिस्ट्री एंड आर्ट; कंजर्वेशन एंड स्यजियोलोजी; स्कूल आफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर; श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ। हाल ही में स्थापित इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय का नया नाम गुरु गोविंद सिंह विश्वविद्यालय रखा जा रहा है।

पर्यटन केंद्र: चूंकि दिल्ली शताब्दियों से भारत की राजधानी रही है, अत: यहां बहुत–सी सुंदर इमारतें हैं । दोनों दिल्लियों – शाहजहां द्वारा बसाई गई पुरानी दिल्ली में पर्यटकों को आकृष्ट करने वाले अनेक स्थान हैं ।

इन स्थानों में राष्ट्रपति भवन, मुगल गार्डन, संसद भवन, चांदनी चौक, लाल किला, जामा मस्जिद, राजघाट, शांतिवन, विजय घाट, पुराना किला (इंद्रप्रस्थ), हुमायूं का मकबरा, लोदी का मकबरा, कुतुब मीनार, हौज़ खास, सफदरजंग का मकबरा, जन्तर–मन्तर और इंडिया गेट सम्मिलित हैं ।

अन्य महत्वपूर्ण स्थान हैं – चिड़ियाघर, काश्मीरी गेट, बिड़ला मंदिर, विज्ञान भवन, राष्ट्रीय संग्रहालय, कनाट सर्कस, बुद्ध जयंती पार्क, रवींद्र रंगशाला और नेहरू मेमोरियल संग्रहालय।

उपराज्यपाल: विजय कुमार कपूर

मुख्य मंत्री: शीला दीक्षित (कांग्रेस आई.)

पांडिचेरी

क्षेत्रफल: 492 वर्ग कि.मी.; **राजधानी:** पांडिचेरी; **भाषायें:** तमिल, तेलुगू, मलयालम, अंग्रेजी और फ्रेंच; **जिले:** 4; **जनसंख्या:** 807,785; **पुरुष:** 398,324; **महिलाएं:** 391,092; **वृद्धि (1981–91):** 184,945; **वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91:** 30.60; **जनसंख्या घनत्व:** 1,605; **शहरी जनसंख्या:** 64.00%; **लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष):** 982; **साक्षरता:** 74.91%; **पुरुष:** 83.91%; **महिलाएं:** 65.79%; **प्रति व्यक्ति आय (1989–90):** 5,637 रु; **1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या:** 807,785

भू–आकृति: पांडिचेरी संघ शासित प्रदेश का क्षे... केवल 492 वर्ग कि.मी. है। साउथ आर्काट ... पांडिचेरी शहर और उसके आसपास के ... 239 वर्ग कि.मी.; तंजौर जिले से घिरा ... उसके गांवों का क्षेत्रफल 160
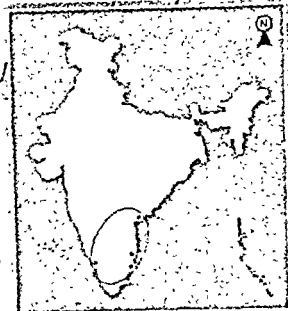
के गवर्नर के रूप में डूप्ले की नियुक्ति होने के बाद फ्रांस ने भारत की राजनीति में दखल देना शुरू कर दिया।

जब यूरोप में आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध (1742–48) शुरू हुआ, तो इंग्लैंड और फ्रांस एक दूसरे के प्रतिद्वंद्वी पक्ष में खड़े हो गए। भारत में भी अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच लड़ाई शुरू हो गई। अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों के कुछ जहाज पकड़ लिए। डूप्ले ने इस पर उग्र प्रतिक्रिया व्यक्त की। उसने 1748 में मद्रास पर कब्जा कर लिया। यूरोप में एक्स ला चेपेल की संधि से आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध समाप्त हो गया और मद्रास अंग्रेजों को वापस दे दिया गया। अंग्रेजों और फ्रांसीसियों की लड़ाइयों में पांडिचेरी कभी फ्रांसीसियों के कब्जे में आया और कभी अंग्रेजों के। 1761 में अंग्रेजों ने पांडिचेरी पर कब्जा कर लिया, 1765 में उसे फ्रांसीसियों को लौटा दिया, 1778 में पुनः उस पर कब्जा कर लिया, 1793 में तीसरी बार पुनः उस पर कब्जा कर लिया और अंत में 1814 में पांडिचेरी फ्रांस को वापस सौंप दिया।

नवंबर 1954 में फ्रांस की सरकार ने भारत में फ्रांसीसी बस्तियों का अधिकार स्वतंत्र भारत की सरकार के हाथों में सौंप दिया। इस प्रकार मिले क्षेत्र को भारत सरकार ने एक संघ शासित प्रदेश बना दिया।

द्वारा घिरा माही और उसके गांवों का क्षेत्रफल 9 वर्ग कि.मी. और आंध्र प्रदेश में ईस्ट गोदावरी जिले में यनम का क्षेत्रफल 30 वर्ग कि.मी।

पांडिचेरी और उसके आस पास की बस्तियां जिंजी नदी की घाटी में स्थित है। उर्वर कावेरी डेल्टा में स्थित कारैकल को अरसलार नदी (इस क्षेत्र में 11.97 कि.मी. बहती है), नट्टर नदी (11.2 कि.मी.), वजियार नदी (9 कि.मी.), नूलार (13.77 कि.मी.), पुरवाडयारन (5.3 कि.मी.), तिरुमलिसारायनार (5.13 कि.मी.) और नंदालर (15.15 कि.मी.) का जल मिलता है।

इतिहासः आधुनिक इतिहास में पांडिचेरी का प्रवेश 1637 में हुआ, जब फ्रांसीसी ईस्ट कंपनी ने यहां एक बस्ती बसाई। फ्रांसीसियों ने इस छोटे से गांव को समृद्ध व्यापारिक केंद्र का रूप प्रदान किया।

इसी दौरान फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी आर्थिक कठिनाइयों में फंस गई और इसलिए उसे बाध्य होकर बंटम, सूरत, और मसूलीपट्टनम में अपने व्यापारिक केंद्र छोड़ने पड़े। 1720 में इस कंपनी का 'परपेच्युल कंपनी आफ दी इंडीज' के रूप में पुनर्गठन कर दिया गया और पूर्व में फ्रांसीसियों के नए-नए प्रतिष्ठान स्थापित हो गए। 1721 में उन्होंने मारीशस पर कब्जा किया, थोड़े ही समय बाद मलाबार तट पर माही पर कब्जा किया; 1731 में उन्होंने यनम पर और 1738 में कारैक्कल पर कब्जा किया। 1742 में पांडिचेरी

प्रशासनः पांडिचेरी पर भारत का राष्ट्रपति एक लेफ्टीनेंट गवर्नर के माध्यम से शासन करता है। लेफ्टीनेंट गवर्नर को सलाह देने के लिए एक मंत्रि परिषद है, जो 33 सदस्यों वाली विधान सभा के प्रति उत्तरदायी है। मुख्यमंत्री की अधीनता में मन्त्रि परिषद सीधे प्रशासन का काम संभालती है।

जिले

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)	मुख्यालय
1. कारैक्कल	160	145,703	कारैक्कल
2 माही	9	33,447	माही
3 पांडिचेरी	293	6,08,338	पांडिचेरी
4. यनम	30	20,297	यनम

अर्थ व्यवस्थाः इस प्रदेश में लगभग 45 प्रतिशत जनसंख्या कृषि और उससे संबंधित कार्यों में लगी हुई है। कुल कृषि क्षेत्र में से 90 प्रतिशत भाग में सिंचाई की सुविधा है।

इसके अलावा छोटे पैमाने के 2619 पंजीकृत उद्योग हैं जिनमें 17,500 व्यक्तियों के लिए रोजगार की व्यवस्था है।

कागज़, कास्टिक सोडा, चीनी मिट्टी बड़े पैमाने के 18 एवं 53 मध्यम उद्योग है। कपड़ा, चीनी के बरतन

का उद्योग प्रमुख हैं। कुल 45272 व्यक्तियों को रोजगार मिला हुआ है ।

विश्वविद्यालय: पांडिचेरी विश्वविद्यालय।

पर्यटन केंद्र: पांडिचेरी भारत में फ्रांसीसी सभ्यता का सजीव स्मारक है ।

पर्यटकों की रुचि के स्थान है: सरकारी महल, समुद्र तट की सैरगाह, अरोविल, श्री अरविंद आश्रम, वहरातियर समाधि, फ्रेंच इंस्टीट्यूट, जवाहर लाल इंस्टीट्यूट आफ पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल एजुकेशन एण्ड रिसर्च, इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ इंडोलाजी, रोम्या रोला लाइब्रेरी, बोटानिकल गार्डन, ऐलिया फ्रान्कोइस, आउस्टरी लेक, जोन आफ आर्क स्कवायर, मंदिर और गिरजाघर ।

उपराज्यपाल: श्रीमती रजनी राय

मुख्य मंत्री: आर.वी. जानकीरमन (डी.एम.के.)

लक्षद्वीप

क्षेत्रफल: 32 वर्ग कि.मी.; **राजधानी:** कवरत्ती; **भाषा:** मलयालम; **जिला:** 1; **जनसंख्या:** 51,681; **पुरुष:** 26,582; **महिलाएं:** 25,099; **वृद्धि (1981–91):** 11,432; **वृद्धि दर (प्रतिशत) 1981–91:** 28.40; **जनसंख्या घनत्व:** 1615; **शहरी जनसंख्या:** 56.31%; **लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष):** 944; **साक्षरता:** 79.23%; **पुरुष:** 87.06; **महिलाएं:** 70.88%; **1991 जनगणना की अंतिम रिपोर्ट पर जनसंख्या:** 51,407

भारत का सबसे छोटा संघ शासित प्रदेश लक्षद्वीप एक द्वीप समूह है, जिसमें 12 अटल, 3 प्रवल भित्तियों और 5 जल प्लावित तट हैं। 32 वर्ग कि.मी. में समाये 36 द्वीपों में से केवल 10 द्वीपों में ही बस्ती है। इनके नाम हैं – आन्द्रोट, अमिनि, अगत्ती, बित्रा, चेटलाट, कटमत, कल्पेनी, कवरत्ती (मुख्यालय) किल्टन और मिनिक्वाय ।इनमें सबसे छोटा द्वीप बित्रा है ।

भू–आकृति: लक्षद्वीप केरल के तटीय शहर कोचीन से लगभग 200 से 440 कि.मी. की दूर पर 80 और 120° 13 उत्तरी अक्षांश और 710 और 740 पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। इसका मुख्यालय कवरत्ती है। इन द्वीपों और कोचीन के बीच पानी के जहाजों द्वारा संपर्क बना रहता है ।

यद्यपि लक्षद्वीप का भू–क्षेत्र बहुत ही कम है किंतु यदि यह इसके लैगून (समुद्रतल) क्षेत्र को, जो 4200 वर्ग कि.मी. है, 20,000 वर्ग कि.मी. में फैले प्रादेशिक समुद्र और लगभग सात लाख वर्ग कि.मी. में फैले आर्थिक प्रदेश को गणना में लाएं, तो लक्षद्वीप हमारे राष्ट्र के सबसे बड़े प्रदेशों में से एक है ।

इन द्वीपों की वनस्पति में केला, कोलोकेसिया, चोल, ब्रेडफ्रूट, जैकफ्रूट, जंगली बादाम सम्मिलित हैं ।लक्षद्वीप में आर्थिक महत्व की फसल केवल नारियल है।नारियल की कई किस्में हैं, जैसे लक्षद्वीप के साधारण नारियल, हरे बौने नारियल आदि। समुद्र तट पर दो प्रकार की समुद्री घास भी मिलती है, जिनके नाम हैं – थलेसिया हेम्प्रिचिन और साइमोडोसिया आइसोटिकोलिया। ये घास समुद्री कटाव और समुद्र तट के भराव को रोकती है।

समुद्री जीव–जगत समृद्ध है। पशु और पक्षी भी हैं। प्राय: दिखने वाले समुद्री पक्षी हैं 'थाराथासी' और 'कारीफेटु'। ये पक्षी आमतौर से पित्ती द्वीप पर पाये जाते हैं। इस द्वीप पर वस्ती नहीं है ।इस द्वीप को पक्षी विहार घोषित कर दिया गया है ।

इतिहास: लक्षद्वीप का पुराना इतिहास अभिलिखित नहीं है। स्थानीय जनश्रुतियों का कहना है कि केरल के अंतिम शासक चेरमान पेरुमाल के समय में पहली वार यहां वस्ती वसाई गई।

भारत में पुर्तगालियों के आने पर लक्षद्वीप पुनः समुद्री यात्रियों के लिए महत्वपूर्ण स्थान वन गया। समुद्री जहाजों के लिए नारियल के वारीक रेशो से बुनी चटाइयों की वड़ी मांग थी। इसलिए पुर्तगाली इन द्वीपों के जहाजों को लूटने लगे। वे जबरदस्ती अमिनि द्वीप में उतरे (16 वीं शताव्दी के आरंभ में) लेकिन कहा जाता है कि द्वीप के निवासियों ने आक्रमणकारियों को जहर देकर उनकी हत्या कर दी। इस प्रकार पुर्तगालियों का आक्रमण समाप्त हो गया। अरक्कल वंश का शासन अत्याचारपूर्ण और असहनीय था। 1783 में किसी समय अमिनि द्वीप के निवासियों ने हिम्मत करके मंगलौर के टीपू सुल्तान से भेंट की और उससे प्रार्थना की कि वह अमिनि द्वीप समूह का शासन अपने हाथ में ले ले उन दिनों टीपू सुल्तान और अरक्कल की बीवी के साथ मैत्रीपुर्ण संबंध थे और इसलिए बातचीत के माध्यम से अमिनि द्वीप समूह का शासन टीपू सुल्तान के हाथों में आ गया। इस प्रकार लक्षद्वीप समूह के द्वीपों का स्वामित्व विभाजित हो गया । पांच
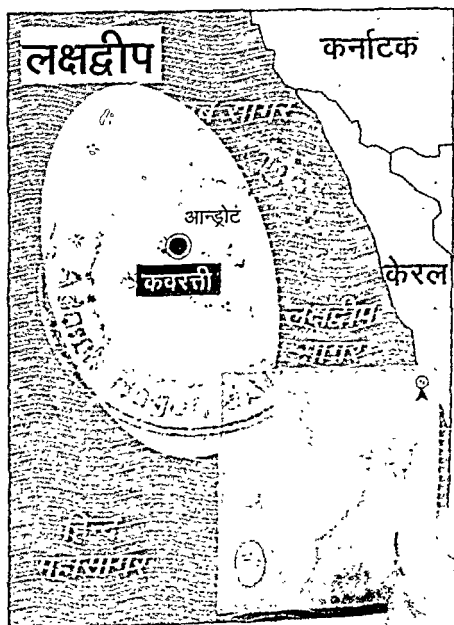
द्वीप टीपू सुल्तान की अधीनता में आ गए और शेष द्वीप अरक्कल वंश की अधीनता में रहे।

ईस्ट इंडिया कंपनी के एक अफसर ने, जिसका नाम सर डब्ल्यू. एम. राबिन्सन था, अरक्कल के राजा के साथ आन्ड्रोट द्वीप जाने की पेशकश की। आन्ड्रोट पहुंचने पर अरक्कल का राजा वहां की जनता की सब मांगें पूरी नहीं कर पाया। ऐसी स्थिति में सर विलियम ने राजा को कर्जे के रूप में सहायता देने की पेशकश की। राजा ने पेशकश स्वीकार कर ली। यह व्यवस्था चार साल तक चलती रही लेकिन जब कर्ज की रकम बढ़ गई तो अंग्रेजों ने राजा से उसे वापस करने की मांग की। पर राजा कर्जे वापस नहीं कर पाया। 1854 में शेष द्वीप भी ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन और उसके प्रशासन में आ गए। इस प्रकार इन द्वीपों पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया।

1956 में इस द्वीप समूह को संघ शासित प्रदेश बनाया गया और 1973 में इसका नाम लक्षद्वीप रखा गया।

प्रशासन: 1 नवंबर, 1956 को इन द्वीपों को संघ शासित प्रदेश बनाने के पहले ये द्वीप भूतपूर्व मद्रास राज्य का अंग थे। द्वीप समूह के सब द्वीपों को मिलाकर एक जिला माना जाता है और जिले को चार तहसीलों में बांट दिया गया है। हर तहसील एक तहसीलदार के अधीन है। लेकिन मिनिक्वाय में तहसीलदार का पद समाप्त करके 1978 में उसके स्थान पर डिप्टी कलेक्टर नियुक्त किया गया। लक्षद्वीप और मिनिक्वाय में सबसे छोटा राजस्व अधिकारी 'अमीन' कहलाता है।

जिले

द्वीप जिनमें बस्ती है	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (1991)
मिनिक्वाय	4.4	8,323
कल्पेनी	2.3	4,079
आन्ड्रोट	4.8	9,149
अगत्ती	2.7	5,667
कवरत्ती	3.6	8,684
अमिनि	2.6	6,445
कटमत	3.1	3,983
किल्टन	1.6	3,075
चेटलाट	1.0	2050
बित्रा	0.1	226
कुल जनसंख्या		51,681

अर्थ व्यवस्था: लक्षद्वीप की अर्थ व्यवस्था का आधार कृषि है। इस प्रदेश की मुख्य उपज नारियल और नारियल जटा है। नारियल मुख्य फसल है जिसकी उपज संपूर्ण कृषि योग्य क्षेत्र 2780 हेक्टेयर में होती है। नारियल के बागों में ही बीच-बीच में केला, पपीता, अमरूद और चीकू जैसे फल देने वाले पेड़, रसदार फलों वाले पेड़ और ड्रमस्टिक जैसे पेड़ बोये जाते हैं।

इन द्वीपों में नारियल की गिरी, नारियल जटा, नारियल गुड़, सिरका और मछली मुख्य उत्पाद हैं। 1988-89 के दौरान इन केंद्रों में 20.2 टन बढ़िया किस्म का नारियल जटा का पतला धागा तैयार किया गया। आन्ड्रोट, कटमत, अमिनि और कवरत्ती में नारियल के धागों को प्रसाधित करने वाले यंत्रीकृत कारखानों में 1988-89 में सूखे नारियल के छिलके से 161.5 टन बढ़िया धागा तैयार किया गया। कवरत्ती और कल्पेनी में दस्तकारी प्रशिक्षण केंद्र हैं। कवरत्ती में फर्नीचर बनाने वालों की एक औद्योगिक सहकारी समिति और एक दस्तकारी औद्योगिक सहकारी समिति भी काम कर रही हैं। अमिनि और कल्पेनी में नारियल जटा की दो सहकारी समितियां शुरू की गई हैं, जिसकी सदस्य प्रशिक्षित स्थानीय महिलायें हैं।

पर्यटन केंद्र: इस द्वीप समूह में देशी और विदेशी पर्यटन के विकास की बड़ी संभावनाएं हैं और इस क्षेत्र में काफी काम किया जा रहा है। अब भारत सरकार ने प्रतिबंधों में ढील दे दी है, जिससे देशी और विदेशी पर्यटन को बहुत बढ़ावा मिला है।

प्रशासक: चमन लाल।

नये राज्यों का गठन

संसद के दोनों सदनों ने तीन नये राज्यों के गठन के विधेयक को पारित कर दिया। राष्ट्रपति की अधिसूचना के साथ ही यह तीन राज्य अस्तित्व में आ जायेंगे।

उत्तर प्रदेश के पर्वतीय भाग को नये राज्य उत्तराखण्ड का नाम दिया गया है। मध्य प्रदेश से अलग किये गये राज्य को छत्तीसगढ़ राज्य और बिहार से विलग क्षेत्र को झारखण्ड राज्य का नाम मिला है।

इन राज्यों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है। आंकड़े अभी पूरी तरह से अद्यतित नहीं किये गये हैं

उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड अपनी भौगोलिक स्थिति, जलवायु, नैसर्गिक, प्राकृतिक दृश्यों एवं संसाधनों की प्रचुरता के कारण देश में प्रमुख स्थान रखता है।

भौगोलिक विवरण: उत्तराखण्ड हिमालय पर्वत क्षेत्र के एक बड़े भाग में स्थित है। जिसका क्षेत्रफल 51125 वर्ग किलोमीटर (इक्यावन हजार एक सौ पच्चीस वर्ग किलोमीटर) है। इस क्षेत्र की सीमायें चीन, तिब्बत एवं नेपाल की अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं को छूती हैं। उत्तर प्रदेश की सभी छोटी-बड़ी नदियों का उद्गम इसी क्षेत्र से हुआ है। उत्तराखंड क्षेत्र में छोटी-छोटी पहाड़ियों से लेकर ऊंची पर्वत श्रृंखलायें तक विद्यमान हैं। इनमें अधिकांश समय तक बर्फ से ढकी रहने वाली नन्दा देवी, त्रिशूल, केदार नाथ, नीलकंठ तथा चौखंबा पर्वत चोटियां हैं, परिस्थितिकीय विभिन्नताओं के कारण इस

क्षेत्र में भिन्न–भिन्न वनस्पतियां व जीव–जन्तु विद्यमान हैं।

जनसंख्या : उत्तराखण्ड की जनसंख्या 59.26 लाख है, जो कि उत्तर प्रदेश की पूर्ण जनसंख्या का 4.3 प्रतिशत है। उत्तराखण्ड का जनसंख्या घनत्व 116 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है। जिनमें से पुरूषों की संख्या 30.32 लाख व स्त्रियों की संख्या 28.94 लाख है। उत्तराखण्ड में निवास करने वाली अनुसूचित जातियां की संख्या 990 हजार है। जबकि अनुसूचित जन जाति (ट्राइवल्स) की संख्या 2,09,838 है।

साक्षरता : उत्तराखण्ड की कुल साक्षरता 2,891 हजार (दो हजार आठ सौ इक्यानवें हजार) की है जिनमें से 1875 हजार पुरूष व 1016 हजार स्त्रियां हैं। संपूर्ण उत्तराखण्ड का साक्षरता प्रतिशत तकरीवन 60 प्रतिशत है, जिनमें से महिलाओं की साक्षरता दर 43 प्रतिशत से मुकावले पुरूषों की साक्षरता दर 76 प्रतिशत है।

उत्तराखण्ड आन्दोलन: उत्तराखण्ड को अलग राजय की मान्यता देने को लेकर उत्तराखण्ड आन्दोलन सन् 1957 में प्रारंभ हुआ। उत्तराखण्डवासियों की मांग है कि कई राज्य ऐसे हैं जिनका क्षेत्रफल और जनसंख्या प्रस्तावित उत्तराखण्ड राज्य से काफी कम है। इसके अतिरिक्त पहाड़ों का दुर्गम जीवन और पिछड़े होने की वजह से इस क्षेत्र संपूर्ण विकास नहीं हो पा रहा है अत: उत्तराखण्ड को उत्तर प्रदेश से अलग करके उसे संपूर्ण राज्य का दर्जा मिलना चाहिए। हालांकि उत्तराखण्ड राज्य वनाये जाने के टिहरी के पूर्व नरेश मानवेन्द्र शाह के 1957 के आन्दोलन से पूर्व ही 1952 में कम्युनिस्ट नेता पी.सी. जोशी ने पर्वतीय क्षेत्र को स्वायत्ता देने की सर्वप्रथम मांग रखी थी। 1962 के चीन के साथ युद्ध के समय इस आन्दोलन को राष्ट्र हित में स्थगित कर दिया गया था, वाद में 1979 में उत्तराखण्ड क्रान्ति दल (उक्रांद) का गठन मसूरी में हुआ, 12 वर्ष के आन्दोलन के वाद 12 आगस्त 1991 को उत्तर प्रदेश की विधान सभा ने उत्तरांचल राज्य का प्रस्ताव पासकर केन्द्र सरकार की स्वीकृति के लिए भेजा गया। 24 अगस्त 1994 को उत्तरप्रदेश विधान सभा में एक वार पुन: उत्तराखण्ड राज्य का प्रस्ताव पास करके केन्द्र सरकार को मंजूरी के लिए भेजा गया।

पर्यटन: संपूर्ण उत्तराखण्ड क्षेत्र अपने नैसर्गिक, मनोरम दृश्यों और अच्छी जलवायु के चलते पर्यटन का एक प्रमुख केन्द्र है। मसूरी, अल्मोड़ा, रानीखेत, नैनीताल, कौसानी तथा फूलों की घाटी पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। वहीं वद्रीनाथ, केदारनाथ, यमुनोत्री, गंगोत्री चारों धामों की स्थापना भी इसी क्षेत्र में है। जहां प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु आते हैं। सिक्खों का तीर्थ स्थान हेमकुण्ड साहव भी इसी क्षेत्र में है।

उत्तराखंड की तुलना में पर्वतीय राज्यों का राजनीतिक प्रतिनिधित्व

राज्य	क्षेत्रफल हजार वर्ग किमी	जनसंख्या लाख में	विधायक संख्या	सांसद संख्या
मिजोरम	21.9	06.9	30	1
मणिपुर	22.5	18.4	60	2
मेघालय	22.5	17.7	60	2
अरुणाचल	83.5	08.6	30	2
नगालैंड	16.5	12.1	61	1
हिमाचलप्रदेश	55.7	51.7	68	4
उत्तराखंड	51.1	60.2	19	4

(समस्त आंकड़े 1991 की जनगणना पर आधारित)

झारखण्ड

इस क्षेत्र की भौगोलिक संस्कृति और स्वायत्तता की राजनीति की पहचान भी 'झारखंड' शब्द से जुड़ी है।

भूगोल: विहार के दक्षिणी क्षेत्र जिसे अव तक भूगोल की भापा में छोटानागपुर प्लेटों एवं संथालपरगना कहा जाता था, को अलग कर नया राज्य वना है।

राज्य का क्षेत्रफल 79 हजार 714 वर्ग कि.मी. (करीव 79.71 लाख हेक्टेयर) है। इसके उत्तर में मध्य विहार (यानी विहार) दक्षिण में उड़ीसा, पूर्व में पश्चिम वंगाल और पश्चिम में मध्य प्रदेश राज्य होगें।

इस अलग झारखंड राज्य में वर्तमान विहार के 18 जिले शामिल है। 1. दुमका (2) देवघर (3) गोड्डा (4) साहेवगंज (5) पाकुड (6) हजारीवाग (7) कोडरमा (8) चतरा (9) धनवाद (10) वोकारो (11) गरिडीह (12) रांची (13) गुमला (14) लोहरदग्गा (15) पं. सिंह भूम (*चाय वासा*) (16) पूर्वी सिंहभूम (जमशेदपुर) (17) पलामू (18) गढ़वा।

झारखंड में भूमि के विविध प्रकार

प्रकार	क्षेत्रफल (लाख हेक्टेयर)	कुल भूमि का प्रतिशत
1. कुल भूमि	79.70	100
2. वन क्षेत्र	23.12	29.02
3. गैर कृषि कार्यो में उपयोग की जमीन	11.81	14.83
4. कृषि जमीन (जिसमें रोपणी होती है)	21.84	27.41
5. कृषि योग्य परती जमीन	3.30	4.15
6. चारागाह	1.06	1.34
7. विविध पेड़ों वगीचों आदि की जमीन	0.72	0.91
8. प्रति जमीन	10.69	13.42
9. अन्य प्रकार की वंजर/परती/ खाली जमीन	8.87	11.13

श्रोत:– सांख्यिकी निदेशालय विहार सरकार पटना (1988–89)

झारखंड क्षेत्र की अर्थव्यवस्था और समाज मुख्यत: खेती और वन पर निर्भर है। कुल जमीन का चौथाई भाग परती और वंजर है।

आवादी झारखंड क्षेत्र

कुल आवादी	=	2.184 करोड़
आदिवासी आवादी	=	60.44 लाख

झारखंड क्षेत्र में आदिवासियों की आयादी कुल आवादी का सिर्फ 27.67 प्रतिशत है।

झारखंड क्षेत्र के विभिन्न जिलों में आदिवासी आयादी का प्रतिशत 9 से 70 प्रतिशत तक है।

हजारीवाग, कोडरमा, धनवाद, योकारो, देवघर, और गिरिडीह में: करीव 9 प्रतिशत।

पलामू, गढ़वा, चतरा और गोड्डा: 10 से 25 प्रतिशत

रांची, पूर्वी एवं पं. सिंहभूम, दुमका, पाकुड, साहेवगां : 30 से 50 प्रतिशत।

लोहरदग्गा : 56 प्रतिशत।

गुमला : 70 प्रतिशत।

झारखंड क्षेत्र में करीय 30 श्रेणियों के आदिवासी समुदाय वसते हैं उनमें संथाली (18.01 लाख) उरांव (8.75 लाख), मुड़ (7.32 लाख) और हो (5.50 लाख) प्रजातिया प्रमुख है। वाकी आदिवासी आवादी पिरहोर, गोंडाइत, वंजारा, पहाड़िया खोंड आदि नामों से जानी जाती है।

स्त्री पुरुष अनुपात	प्रति हजार पुरुष में स्त्री
झारखंड क्षेत्र की पूरी आवादी में	929
झारखंड क्षेत्र की आदिवासी आयादी मे	975
विहार की कुल आवादी में	911

स्त्री पुरुष अनुपात के उपरोक्त आंकड़ों का अर्थ समझने के लिए इन आंकड़ों का उल्लेख जरूरी है कि झारखड क्षेत्र मे शहरीकरण की रफ्तार 20 3 प्रतिशत है, जयकि पूरे विहार मे शहरीकरण का औसत सिर्फ 13 प्रतिशत के करीव है।

दूसरी ओर आयादी मे वृद्धि (1981-91) की दर झारखंड क्षेत्र में 21 4 प्रतिशत ही जयकि पूरे विहार में यह वृद्धि दर 23 54 प्रतिशत से अधिक है। पूरे विहार में आयादी का औसत धनत्व प्रतिवर्ग किलोमीटर मे करीव 497 है जयकि झारखड क्षेत्र यह औसत जहा गुमला जिला में सिर्फ 127 है, वहीं धनवाद मे 893 है।

झारखंड क्षेत्र मे गैर आदिवासी आयादी खनिज उत्खनन यड़े उद्योगों और विस्थापन का दयाव क्षेत्र की आदिवासी आयादी में कम पड़ती औरतों की सख्या के रूप मे पहचाना जा सकता है। झारखड क्षेत्र की आदिवासी आवादी में स्त्री पुरुष का अनुपात वरावर रहा है। पूर्व मे आदिवासी आयादी में स्त्रियों की झारखड क्षेत्र मे वड उद्योगों से उत्पन्न विस्थापन की पीड़ा–

प्रोजेक्ट का नाम	विस्थापित
(अ) विस्थापित हो चुकी आयादी टाटा	
आयरन एंड स्टील कंपनी	4 गाव
एच.ई.सी (रांची)	25 गांव (12990 परिवार)
योकारो स्टील प्लांट	46 गाव (12487 परिवार)
(य) भविष्य में विस्थापन का शिकार	
होनेवाली आयादी सुवर्ण रेखा डैम	65000 लोग
(कुछ आयादी विस्थापित हो चुकी है) कोयलकारो डैम	60000 लोग
फील्ड फायरिंग रेंज (जो पहले नेतरहाट में यनने वाला था और अव उसे पलामू शिफ्ट करने का प्रस्ताव है)	25000 लोग

श्रोत:–ए.के.सिंह (1995)

यड़ी यड़ी सिंचाई और विजली परियोजनाएं, खदान, अभयारण्य, नेशनल पार्क, उद्योग और वन विनाश के कारण विस्थापन का शिकार लोगों की संख्या के यारे में अभी तक कोई ठोस आंकलन नहीं हुआ है। फिर भी अनुमानत: झारखंड क्षेत्र में अव तक 20 से 32 प्रतिशत आयादी विस्थापन की पीड़ा झेल चुकी है। का दंश झेल रहा है।

झारखंड क्षेत्र की आर्थिक स्थिति: आजादी के पूर्व झारखंड क्षेत्र में 65 प्रतिशत जंगल थे। अव मात्र 29 प्रतिशत है।

झारखंड एक रत्नगर्भित क्षेत्र है। वन एवं खनिजों से यह क्षेत्र भरा हुआ है। पूरे भारत की करीव 26 प्रतिशत खनिज संपदा इसी क्षेत्र में है।

झारखंड में खनिज भंडार

खनिज	भारत	झारखंड	भारत में
		मिलियन टन में	झारखंड का %
ताया	325.00	110.00	33.85
कोयला	192359.00	62085.00	32.98
अर्भक	3827.00	1780.00	46.51
लोहा	12745.00	2972.00	23.32
ग्रेफाइट	3.10	0.53	17.19
काशनाइट	2715.00	113.00	4.50

श्रोत:–इंडियन ब्यूरो आफ माईंस (1992)

झारखड क्षेत्र में फिलहाल 18.25 लाख हेक्टेयर भूमि मे खेती की जाती है जो कुल क्षेत्र का 26.02 प्रतिशत है।

इस क्षेत्र में 16 वृहद और 102 मध्यम सिंचाई परियोजनाए निर्मित और निर्माणधीन है। करीव 33,310 जलाशय, सतही जल को उठाने के लिये 1,00,411 प्रणालियां और 1,28,340 आहर है। भूगर्भ जल के उपयोग के लिए करीव 211066 कुएं और 7098 शैलो ट्यूव वेल है।

वृहद एव मध्यम परियोजनाओं से करीव 6.94 लाख हैक्टेयर जमीन को सिंचाई सुविधा उपलब्ध करने का दावा किया जाता है। सतही जल की छोटी योजनाओं से करीव 2.62 लाख हेक्टेयर और भूगर्भजल से करीव 1.90 लाख हेक्टेयर की सिंचाई होने का अनुमान हे।

इस हिसाव से झारखंड क्षेत्र में 11.46 लाख हेक्टेयर खेती को सिंचाई सुविधा उपलब्ध हैं। लेकिन यहां अधिकांश भूमि वर्षा के पानी पर निर्भर है। 97 प्रतिशत से अधिक जमीन एक फसली है। सिर्फ 3.14 प्रतिशत जमीन पर दूसरी फसल (साल में) लगती है। अनुमानत: सिर्फ 1.50 प्रतिशत भूमि ही सुनिश्चित सिंचाई सुविधा से लैस है।

इसे मुख्य फसलों की सालाना वृद्धि दर के इस आंकड़े से समझा जा सकता है।

फसल	झारखंड प्रतिशत में	विहार प्रतिशत में
धान	0.42	1.68
गेंहूं	1.01	1.11
मक्का	0.18	3.16
महुआ	3.36	1.16
अरहर	1.00	2.27

(1981 से 1989 तक के उत्पादन के आधार पर)

प्रति हेक्टेयर उत्पादन और रासायनिक खाद का इस्तेमाल

क्षेत्र	उत्पादन किलोग्राम			रासायनिक
	धान	गेंहू	मकई	खाद
उत्तर विहार	986.59	1599.24	1384.74	48
मध्य विहार	1249.40	1522.40	1152.50	76
झारखंड	977.09	1211.45	878.45	16
भारत	2329	1870		

झारखंड क्षेत्र में गरीवी रेखा से नीचे जीनेवाली आदिवासी आवादी का उपलव्ध आंकड़ा इस प्रकार है।

गरीवी रेखा से नीचे की आवादी का %

	शहरी क्षेत्र	ग्रामीण क्षेत्र
1. विहार के आदिवासी (झारखंड क्षेत्र में 60.44 लाख और विहार के वाकी क्षेत्र में करीव 6 लाख आदिवासी वसते हैं)	39.8	64.9
2. पूरे विहार की आवादी	30.0	42.7
3. पूरे भारत की आवादी	20.1	33.4

श्रोत: सी.एम.आई.ई. 1991

1983–84 के आंकड़ो के अनुसार झारखंड क्षेत्र की 85 प्रतिशत आवादी गरीवी रेखा से नीचे जीवन वसर करती थी, जवकि पूरे विहार में गरीवी रेखा के नीचे जीनेवाले लोग 51.4 प्रतिशत थे।

उक्त आंकड़े झारखंड क्षेत्र में सर्वाधिक वड़े उद्योग (खनिजों के उत्खनन, उत्पादन के संवंद्ध) होने का प्रमाण हैं। टिस्को, टेल्को, टिन–प्लेट, वोकारो स्टील प्लांट, एच.ई.सी. कोल इंडिया के सभी कोयला उत्पादन क्षेत्र तांवा एवं यूरेनियम के उत्खनन की कंपनियां झारखंड क्षेत्र में ही है। इसके रुवरु यह तथ्य भी गौर तलव है कि झारखंड क्षेत्र में करीव 37.13 प्रतिशत आदिवासी आवादी 'श्रमशक्ति' है। उसमें 63.06 प्रतिशत किसान, 23.2 प्रतिशत खेतिहर मजदूर, 1.8 प्रतिशत घरेलू उद्योग में लगे कारीगर और 11.59 प्रतिशत अन्य उद्योगों में लगे हैं।

झारखंड आंदोलन: यूं झारखंड क्षेत्र में आजादी के पूर्व नहीं आंदोलन हुए। औपनिवेशिक काल के आंदोलन मुख्यत: जमीन से संवंधित थे। 19 वीं शताव्दी के अंतिम दशक में जंगल संवंधी सवाल और संघर्ष सामने आये। 20 वीं शताव्दी के पूर्वाहन में आदिवासियों के वीच उभरे मध्यम वर्ग द्वारा आदिवासी संगठन वनाये गये। उनका लक्ष्य भूमि और जंगल की समस्याओं के सुलझाने के वजाय 'राजनीतिक अधिकार प्राप्त करना' था।

इस तरह व्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ 1938 तक झारखंड क्षेत्र में निम्नलिखित आंदोलन हुए।

1783	–	तिलाका मांझी आंदोलन
1795–1800	–	चेरो आंदोलन
1832–33	–	कोल विद्रोह
1857	–	सिपाही विद्रोह
1860–85	–	सरदार आंदोलन

झारखंड क्षेत्र में स्त्री आवादी के अनुपात के निम्नलिखित आंकड़े पूरे क्षेत्र की सामाजिक आर्थिक स्थिति, और वाहरी दवाव के आकलन के लिए उल्लेखनीय हैं –

जिला	आदिवासी आवादी			प्रति हजार
	कुल	पुरुष	स्त्री	पु. में स्त्री
पं. सिंहभूम	978069	488892	489177	स्त्री अधिक 1000
रांची	964422	490510	473912	966
गुमला	816988	408004	408984	स्त्री अधिक 1002
दुमका	621484	314616	306868	975
साहेवगांज	507321	257135	250185	973
पूर्वी सिंहभूम	466572	236318	230254	974
पलामू	443266	226486	216780	957
गिरिडीह	271924	139560	132364	948
हजारीवाग	250586	129321	121265	938
धनवाद	225282	116569	108713	933
गोड्डा	216047	109314	106733	976
लोहरदग्गा	162964	82045	80919	986
देवघर	119085	60945	58140	954

(1991 की जनगणना के झारखंड क्षेत्र के 18 जिलों सिर्फ 13 जिलों

1895–1900	–	विरसा आंदोलन
1912	–	टाना भगत आंदोलन
1915	–	छो उन्नति समाज
1938	–	आदिवासी महासभा

1765 के पूर्व ही झारखंड क्षेत्र में मुगल एवं अन्य राजाओं के वक्त से 'बाहवीं लोगों (राज व्यवस्था के पोषक व आश्रित) का प्रवेश शुरू हो चुका था। 1765 में इस क्षेत्र में अंग्रेजों के आने के बाद यह प्रक्रिया और तेज हुई। 1793 में यहां परमानेंट सेटलमेंट कानून लागू हुआ। इससे शोषण का क्रूरतम स्वरूप सामने आया। 1783 से 1899 तक यानी 100 वर्षो तक झारखंड क्षेत्र में इस शोषण के खिलाफ संघर्ष चलता रहा। इन्हीं आंदोलनों की वजह से तात्कालिक राहत के रूप में विलिकंसन कानून (1834, कोल्हान क्षेत्र में), संथालपरगना टेनेंसी कानून (1857) और छोटानागपुर टेनेंसी कानून (1908) लागू हुए जो कतिपय सशोधनों के साथ कमोवश आज भी लागू हैं।

अलग झारखंड का आंदोलन: राजनीति में श्री जयपाल सिंह का उदय 'आदिवासी समाज की अस्मिता' की मुख्य पहचान बना। श्री जयपाल सिंह ने 1949–50 मे 'आदिवासी महासभा' को भगकर झारखंड पार्टी का निर्माण किया।

1950 के दशत मे झारखंड पार्टी अपना राजनीतिक उत्कर्ष पर पहुंची इसके साथ आदिवासी सांस्कृतिक अस्मिता को पहचानने और उसी सुरक्षा की चेतना मुखर हुई।

1960 के दशक के बाद पारपरिक झारखड आंदोलन बिखर गया। 1970 के बाद एक नयी विचारधारा से झारखंड आदोलन को नयी दिशा मिली। यह विचारधारा सांस्कृति स्वायत्तता के रूप मे प्रकट हुई।

झारखंड क्षेत्र मे सास्कृतिक स्वायत्तता का संघर्ष 1980 के दशक मे जातीय आदिवासी आंदोलन से उठकर क्षेत्रिय आंदालन के रूप में ढला। अन्तत. यही सांस्कृतिक स्वायत्तता राजनीतिक स्वायत्ता और फिर बाद में अलग राज्य की मांग के रूप में सामने आयी। यानी लगभग तमाम राजनीतिक दलो ने सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा के लिए राजनीतिक स्वायत्तता को जरूरी माना।

वैसे, 22 अप्रैल 1954 को जयपाल सिंह की झारखंड पार्टी ने पुराने 14 जिलों को मिलाकर झारखंड राज्य बनाने का प्रस्ताव राज्य पुनर्गठन आयोग के समक्ष रखा था, उसे नामंजूर कर दिया गया था। झारखंड पार्टी के कांग्रेस में विलय से झारखंडी स्वायत्तता का राजनीतिक आंदोलन बिखर गया।

अस्सी के दशक में झामुओं के नेतृत्व में झारखंड आंदोलन तेज हुआ।

1986 में राजीव सरकार के निर्देश से झारखंड विषयक समिति का गठन हुआ। उसमें झारखंड क्षेत्र स्वशासी परिषद के गठन की अनुशंसा की।

1987 से झामुओं और उससे अलग अन्य सभी झारखंड दलों के 'झारखंड को आदिजेशन कमिटी' की ओर से उग्र आंदोलन शुरू हुआ।

1990 के दशक आते–आते छोटानागपुर संथालपरगना के झारखंड क्षेत्र को कई मायने में स्वायतता देने और पूरे क्षेत्र को पृथक इकाई के रूप में देखने का सिलसिला शुरू हो गया।

9 अगस्त 1995 को झारखंड क्षेत्र स्वशासी परिषद (जैक) का गठन हुआ (विहार विधानसभा में 18 जिलों के जैक विधेयक को स्वीकृति मिली। इसे झामुमों सहित कई झारखडो पार्टियों ने झारखंड अलग राज्य की दिशा में पहला ठोस कदम माना। 1997 में मुख्यमंत्री रावड़ी देवी के नेतृत्व में सरकार को स्थिर रखने के लिए लालू प्रसाद ने विधान सभा में अलग झारखंड राज्य के गठन का संकल्प पारित करवा दिया। उसी के आधार पर भाजपा की गठबंधन सरकार ने 1998 में अलग वनांचल राज्य से संबंधित विधेयक तैयार कर विहार सरकार को भेजा।

छत्तीसगढ़

मध्यप्रदेश पुर्नगठन विधेयक 1998 के द्वारा स्थापित होनेवाले राज्य छत्तीसगढ़ की सीमायें उड़ीसा, विहार, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र और स्वाभाविक ही मध्यप्रदेश से सटकर रहेंगी। यह राज्य मध्य प्रदेश के पूर्व में 17–23.7 अंश उत्तर अक्षांश एवं 80.40 –83.38 अंश पूर्व देशांश के मध्य स्थित होगा।

छत्तीसगढ़ राज्य का क्षेत्रफल 13594 वर्ग किलोमीटर होगा। यह मध्य प्रदेश की 30.53 प्रतिशत भूमि है। यहां 59290 हैक्टेयर कृषि योग्य भूमि है।

प्रस्तावित राज्य में मध्य प्रदेश के 16 जिले दुर्ग, रायपुर, राजनादगांव, विलासपुर, वस्तर, रायगढ़, सरगुजा, पूर्वी सरगुजा, कोरवा, जांजगीर, जशपुर, कांकेर, दंतवाड़ा महासमुन्द, कवर्धा और धमतरी शामिल होंगे। इनमें आखिरी नौ जिलों का गठन 25 मई, 1998 को किया गया था। राज्य मे मध्य प्रदेश के तीन राजस्व संभाग, रायपुर, विलासपुर और वस्तर शामिल होंगे।

इस प्रदेश का उच्च न्यायालय मध्य प्रदेश के साथ ही जबलपुर में होगा। अर्थात् मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ का संयुक्त उच्च न्यायालय होगा। इस प्रदेश की विधान सभा के 90 क्षेत्र होंगे तथा राजधानी व अन्य महत्वपूर्ण स्थानो का चयन यह राज्य के गठन के बाद वहां की विधानसभा करेगी। राज्य की सोन नदी जो मध्य प्रदेश के हिस्से से बहती है, के जल बटवारें के लिए सोन जल के बोर्ड के गठन का प्रस्ताव है।

राज्य में जनसंख्या का वितरण असमान है। राज्य की जनसख्या एक करोड़, 45 लाख 50 हजार 235 लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। यह जनसंख्या मध्य प्रदेश की जनसंख्या का 26.63 प्रतिशत है।

छत्तीसगढ़ मूलत: एक ग्रामीण प्रदेश है। यहां की 82.56 प्रतिशत जनसंख्या 19,658 गांवों में रहता है।

आदिवासी वहुल वस्तर, रायगढ़ एवं संरगुजा जिलों में ग्रामीण जनसंख्या अधिक है।

यहां जनसंख्या का घनत्व 130 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। दुर्ग जिला सर्वाधिक सघन है, यहां 281 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर निवास करते हैं। सबसे कम घनत्व वस्तर जिले में 58 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है। वस्तर का घनत्व सवसे कम जवकि क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य का सवसे वड़ा जिला है और केरल राज्य से भी वड़ा है।

यहां प्रति हजार स्त्रियों में पुरूषों की औसत जनसंख्या 985 है। राज्य में सर्वाधिक लिंगानुपात राजनांदगांव जिले में 1012 है।

शिक्षा की दृष्टि से पिछड़ा हुआ राज्य है। यहां स्त्री पुरुष साक्षरता का प्रतिशत मात्र 35 है। पुरुषों की साक्षरता 47 प्रतिशत है जवकि महिला साक्षरता 23 प्रतिशत है। सवसे अधिक साक्षरता दुर्ग जिले में 47 प्रतिशत है जवकि सवसे कम 28 प्रतिशत वस्तर जिले में है।

छत्तीसगढ़ राज्य की अर्थ व्यवस्था कृषि प्रधान है। यहां की भूमि उपजाऊ एवं कीमती खनिजों से भरी पड़ी है। मध्य प्रदेश का 70 प्रतिशत राजस्व इस क्षेत्र से मिलता है। राज्य के 85 प्रतिशत लोगों की आजीविका कृषि से ही चलती है।

यहां पैदा किया जानेवाला मुख्य खाद्यान्न चावल है। इसी कारण छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा कहते हैं। इसके अलावा गेहूं, मक्का, कोदो, ज्वार, वाजरा इत्यादि फसलें भी पैदा होती है।

दाल का उत्पादन 21.16 प्रतिशत भूमि में और 7.51 प्रतिशत क्षेत्र में तिलहन होता है। राज्य का सिर्फ 12 प्रतिशत यानि 9 लाख हैक्टेयर क्षेत्र ही सिंचित है। सिंचित क्षेत्र का 70.95 प्रतिशत हिस्से की सिंचाई नहरों द्वारा होती है। शेष क्षेत्र प्राकृतिक वर्षा पर नर्भर है। यहां की मुख्य सिंचाई परियोजनाओं में रविशंकर सागर, महानदी परियोजना, हसवदे-वांगों, कोडार, जोंक, पैरी और अरपा है।

छत्तीसगढ़ वन संपदा के मामले में भी समृद्ध है। यहां का 46 प्रतिशत हिस्सा वनों से आच्छादित है। 36 प्रतिशत हिस्से में साल के वन है। राज्य के पश्चिमी और दक्षिणी भाग के वनों में सागौन के वन हैं। इसके अतिरिक्त वांस, सरई, साजा, वीजा, हल्दू आदि के वृक्ष भी भारी संख्या में हैं। इमरती लकड़ी का वार्षिक औसत उत्पादन 4.45 लाख घनमीटर है, जिससे कुल वन राजस्व का 40 प्रतिशत प्राप्त होता है। वीड़ी उद्योग का आधार तेन्दू पत्ता छत्तीसगढ़ के वनों की प्रमुख उपज है। यहां भारत के कुल तेन्दूपत्ता उत्पादन का 17 प्रतिशत होता है। जो कि यहां के आदिवासियों की जीविका का प्रमुख स्रोत है।

खनिजों के मामले में यह राज्य काफी समृद्ध है। वैलाडीला में लोह अयस्क के विश्व प्रसिद्ध भंडार हैं। टीन अयस्क का पूरे देश में एकमात्र उत्पादक क्षेत्र है। इसके अलावा चूना पत्थर, डोलोमाइट, कोयला तथा वाक्साइट का वाहुल्य है। दुर्लभ वहुमूल्य पत्थर एलेक्जेंड्राइट तथा कार्नपीन भी इस क्षेत्र में मिलते हैं। अन्य खनिजों जैसे सकोरंडम, गारनेट, क्वार्टज, सिलीकासॅट, क्वार्टजाईट, फ्लोराइट, वेरिल, एडाल्युसाईट, कायनाइट, सिलिमेनाइट, टाल्क, तोपस्टोन, स्टिाएटाइट संगमरमर आदि खनिजों विभिन्न आयामों में निक्षेप पाये जाते हैं।

गुणवत्ता में वैलाडीला का लौह अयस्क श्रेष्ठतम है। यहां का खनिज जापान भी निर्यात किया जाता है। लौह अयस्क दूसरा वड़ा भंडार वस्तर जिले में भंडारण घाट क्षेत्र में उपलब्ध है। इसके अलावा दुर्ग जिले में लौह अयस्क के मुख्य भंडार दल्ली राजहरा क्षेत्र में है। इसी भंडार के कारण भिलाई इस्पात संयंत्र कार्यरत हैं।

विलासपुर जिले के फुटकर पहाड़ क्षेत्र के वाक्साइट भंडार के आधार पर कोरवा में एक एल्यूमीनियम संयंत्र स्थापित है। रायपुर जिले में पायलोखंड क्षेत्र में हीरा की खोज की गई है।

राज्य में 1957 में भारत सरकार के उपक्रम भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना की गई थी, जिसकी वार्षिक उत्पादन क्षमता 50 लाख टन है। इसके अलावा कृषि व वन पर आधारित लघु उद्योग व कारखाने यहां स्थित हैं। भिलाई संयत्र की स्थापना के वाद राज्य में अनेक इंजीनियरिंग कारखाने, इस्पात फाउंड्री, री रोलिंग मिलों, कास्टिंग्स एवं लघु इस्पात सयंत्रों की स्थापना हुई। कोरवा में एक वृहद थर्मल पावर संयंत्र है। यहां पर वाल्को का इस्पात संयंत्र व आई.वी.पी. एक्सप्लोसिक संयंत्र भी स्थित है। इसके अलावा सीमेन्ट के कई वड़े कारखाने स्थित है। रायपुर में रेलवे वैगन मरम्मत का कारखाना भी है। इसके अलावा कई छोटे वड़े खनिजों पर आधारित कारखाने हैं।

इस क्षेत्र में रेल लाइन की लंवाई एक हजार किलोमीटर तथा सड़कों की लंवाई 20 हजार किलोमीटर है। रायपुर हवाई मार्ग से दिल्ली, मुंवई, कलकत्ता आदि वड़े शहरों से जुड़ा हुआ है।

महानदी छत्तीसगढ़ की प्रमुख नदी है, इसका उद्‌गम धमतरी के निकट सिहावा के पास है। इसकी सहायक नदियां शिवनाथ, हसदों, मांड, ईव, पैरी, जोंक, केलो, उदंती और सूखा इत्यादि नदियां भी राज्य में हैं।

खनिज संपदा से भरपूर नए प्रदेश में रोजगार के अवसर वहुत कम है। नतीजा यह है कि इस अंचल के निर्धन मजदूर समीपवर्ती राज्यों में जाकर वधुंआ मजदूर की तरह काम करने के लिए विवश हैं।

आज स्थिति यह है कि खनिजों की रायल्टी और उत्पाद कर, वाणिज्य कर आदि से मध्य प्रदेश के राजकोष में सवसे अधिक योगदान छत्तीसगढ़ क्षेत्र में होता है। मध्यप्रदेश में इंदौर के वाद रायपुर का वाजार सवसे वड़ा वाजार माना जाता है। किंतु इन साधनों की वहुलता के वाद भी छत्तीसगढ़ का जिस गति से विकास होना चाहिए था, नहीं हो सका। प्रदेश का सवसे वड़ा विद्युत उत्पादन केंद्र कोरवा (छत्तीसगढ़) में ही हैं।

छत्तीसगढ़ की पहली कल्पना पं. संदरलाल [illegible] 1918 में की थी और इसका वुनियादी आधा[illegible]

रूप में सन् 1956 के पूर्व उस समय पड़ा जब डा. खूबचंद बघेल ने पुराने मध्य प्रदेश के रवि शंकर शुक्ल मंत्री मंडल के संसदीय सचिव पद लेकर वे रायपुर आए। सन् 1956 से इस मांग ने विशेष स्वरूप पकड़ा। राज्य पुनर्गठन आयोग के कार्यकाल में जब नया मध्य प्रदेश बन रहा था उसी समय पुराने और नये मध्य प्रदेश के दो हिस्से बरार और छत्तीसगढ़ ने अलग राज्य होने की मांग रखी। बरार में श्री बृजलाल बियानी जी के नेतृत्व में आंदोलन हुआ। पर छत्तीसगढ़ में पृथक छत्तीसगढ़ की मांग को लेकर आवाज उठाई गई पर आंदोलन नहीं हुए। विचारों में मतभेद में आंदोलन का सही स्वरूप खड़ा नहीं हो सका।

सन् 1957 में छत्तीसगढ़ महासभा का रायपुर में एक सम्मेलन हुआ जिसमें कांग्रेस समाजवादी और साम्यवादी दल तथा कुछ ऐसे लोग जो इस मांग से सहमत थे शामिल हुए। इस सम्मेलन की विषय निर्वाचन समिति की बैठक में कहा गया कि इस मांग को गैर राजनैतिक स्वरूप प्रदान करने संसद व विधायक अपने-अपने दल से अलग हो जाएं इस पर एकमत नहीं हुए।

सन् 1966 में भिलाई इस्पात कारखाने के लगभग डेढ़ हजार मजदूरों की छटनी का मामला सामने आया इस विषय को लेकर छत्तीसगढ़ मजदूर कल्याण सभा का गठन हुआ। और मजदूरों की छटनी को लेकर आंदोलन प्रारंभ हुआ। इस आंदोलन से जुड़े नेताओं के मन में छत्तीसगढ़ी और गैर छत्तीसगढ़ी की परिभाषा का अंतर्द्वंद चला। और 1968 में इसी संदर्भ में छत्तीसगढ़ भ्रातसंघ की स्थापना हुई। सभी एक मंच पर आकर भ्रातसंघ की सदस्यता को बढ़ावा दिया।

छत्तीसगढ़ आंदोलन से जुड़े लोगों के मन में जो रिजर्वेशन था वह कभी खुले तौर पर उजागर नहीं होता। मुख्य रूप से सत्ताधारियों को इस आंदोलन का विरोधी मानकर चला जा रहा था। इस संशय का पहला मुकाबला श्री विद्याचरण शुक्ल ने 1997 के आम चुनाव के समय रायपुर में ब्राह्मणपारा की एक आमसभा में किया था। उन्होंने स्वतः ही पूछा था कि उन्हें छत्तीसगढ़ी क्यों नहीं माना जाता।

उस समय इस आंदोलन में एक नया रूप आया और भ्रातसंघ से हटकर यह कहा जाने लगा कि जो छत्तीसगढ़ के हितों की रक्षा करता हो उसे ही छत्तीसगढ़ी कहना चाहिये।

सन् 1967 के चुनाव में पुनः छत्तीसगढ़ का प्रश्न उठा। उस समय मध्य प्रदेश में संविद सरकार का शासन था। दुर्ग के अहिवारा में एक सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता राजा नरेश चंद्र सिंह ने की। इस सम्मेलन में बृजलाल वर्मा ने एक बार फिर छत्तीसगढ़ी और गैर छत्तीसगढ़ी होने का प्रश्न उठाया और कहा कि वास्तव में राजा नरेश चंद्र सरीखे आदिवासी ही छत्तीसगढ़ के मूल निवासी हैं। बाकी लोग तो सदैव ही बाहर के आदमी माने जायेंगे। उस समय भी यह कहा गया कि बुनियादी सवाल से हटकर इस बात को बार-बार विवाद का मुद्दा न बनाकर इस मामले को सदैव के लिए समाप्त किया जाये।

मध्य प्रदेश की संविद सरकार टूटने के बाद पुनः इस मामले पर सम्मेलन हुआ और बृजलाल वर्मा ने फिर से छत्तीसगढ़ के शोषण की बात कही। उस समय श्री वर्मा संविद सरकार के मंत्री पद से हट गये थे और श्री श्यामा चरण शुक्ल की नई सरकार बन चुकी थी।

इसी बीच सन् 1972 के आम चुनाव तक यह मामला लगभग ठंडा रहा। पर 1977 में आम चुनाव के बाद पुनः इस विषय पर जोर पकड़ना प्रारंभ हुआ। उस समय लोगों ने जनता सरकार के छोटे-छोटे राज्यों की ओर ध्यान दिलाया।

इसी बीच रायपुर में एक बैठक हुई जिसमें दावा किया गया कि 90 विधायकों के हस्ताक्षर व समर्थन मिल गये है कि पृथक छत्तीसगढ़ प्रदेश की मांग पूरी की जाये। रायपुर में 26 जनवरी 1980 को पृथक छत्तीसगढ़ राज्य गठित करने की मांग को जोर दिया गया। इस प्रकार छत्तीसगढ़ के हितों की रक्षा करने का मुद्दा लगातार चलता रहा।

पृथक छत्तीसगढ़ राज्य की उपेक्षा का प्रश्न का इतिहास यह स्पष्ट करता है कि यह आवाज उसी समय अधिक जोर शोर से उठी जब शासन पर छत्तीसगढ़ का वर्चस्व नहीं रहा। प्रारंभ में डा. कैलाश नाथ काटजू के कार्यकाल में, फिर संविदकाल में, उसके बाद श्री प्रकाश सेठी के कार्यकाल में सन् 1977 के बाद इस मांग को बलवती करने का प्रयास हुआ। इस राजनैतिक प्रश्न को गैर राजनैतिक बनाने का भी प्रयत्न कई बार किया गया पर आवाज को बुलंद करने वालों में एक मत नहीं हुआ।

प्रस्तावित छत्तीसगढ़ राज्य के राजस्व के मुख्य स्रोत आबकारी और मनोरंजन कर तथा खनिज की रायल्टी से होने वाली आय है, जो क्रमशः छप्पन करोड़ पैंसठ लाख पचानवे हजार छह सौ नब्बे रूपये एक करोड़ छप्पन लाख छत्तीस हजार दो सौ चौंतीस रूपये हैं।

उपरोक्त आर्थिक स्थिति में प्रस्तावित छत्तीसगढ़ राज्य के विकास की और उसके पीछे निहित स्वार्थी उद्देश्यों की कल्पना की जा सकती है, 1990 से 1996 के बीच मध्य प्रदेश की विकास दर 3.1 प्रतिशत थी और 1993-94 में प्रति व्यक्ति आय 5485 रूपये प्रति वर्ष यानी कि प्रति माह 457.08 रूपये, मध्य प्रदेश के लोगों के जीवन स्तर के बारे में इसी एक आंकड़े से सारी तस्वीर सामने आ जाती है, इसलिए तो गरीबी की रेखा के नीचे रहने वाले लोगों का प्रतिशत कई राज्यों का तुलना मे मध्य प्रदेश में अधिक है।

प्रस्तावित राज्य की नई सरकार के गठन के लिए और सरकार से लेकर प्रशासनिक मशीनरी के भारी-भरकम व्यय के बोझ के नीचे छत्तीसगढ़ राज्य की जनता के विकास का अंकुरण होगा या नहीं, यह तो समय ही बतायेगा, कहीं ऐसा न हो, जिसकी संभावनाएं प्रमाणों के आधार पर काफी पुख्ता हैं – धान का कटोरा कहे जाने वाले छत्तीसगढ़ की आज जनता के हाथों में अलग राज्य बन जाने के बाद भी आज की ही तरह केवल खाली कटोरा ही बचे।

छत्तीसगढ़ बनने के बाद पृथक राज्यों की समस्याओं की इतिश्री होने वाली नहीं है। मध्य प्रदेश में ही कई और राज्य बनाये जाने की मांग प्रबल होने लगी है। बुंदेलखंड, महाकौशल, विन्ध्य की मांगे जोर पकड़ने लगी है।

टीवी और विज्ञापन

भारत में टीवी का विकास

भारत में दूरदर्शन का प्रसारण नई दिल्ली से 15 सितंबर 1959 को आरंभ हुआ। शुरूआत में यह नितांत प्रयोग मूलक था। एक कामचलाऊ स्टूडियो में एक लो पावर ट्रांसमीटर से यह प्रसारित होता था शुरू में कुल 21 सामुदायिक टीवी सैट थे। उस दिन के लिए आल इंडिया रेडियो के कर्मियों और कलाकारों ने ही सारे कार्यक्रम बनाए थे। टीवी का अपना कोई स्टाफ तक नहीं था।

1965 में एक घंटा प्रतिदिन समाचारों का प्रसारण होने लगा। 1972 में मुंबई स्टेशन शुरू हुआ। 1975 में कलकत्ता, चेन्नई, श्रीनगर, अमृतसर, लखनऊ में टीवी स्टेशन बने। 1975–76 में सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरीमेंट यानी 'साइट' कार्यक्रम आरंभ किया गया। इसके अंतर्गत 2400 गांवों को प्रसारण की परिधि में लाया गया। ये गांव पिछड़े थे और सामान्यत: पहुंच से दूर थे।

1 जनवरी 1976 में दूरदर्शन ने कुछ विज्ञापन देने शुरू किए। लेकिन प्रायोजन की अवधारणा अभी नहीं आई।

15 अगस्त 1982 के दिन 'काले–सफेद' प्रसारण का अंत हुआ और उसकी जगह रंगीन प्रसारण ने ले ली। एशियाई खेलों के आरंभ के साथ ही दिल्ली तथा अन्य केंद्रों को जोडने के लिए सैटेलाइट लिंक उपलब्ध हुआ और दूरदर्शन का 'राष्ट्रीय कार्यक्रम' शुरू हुआ। अब तक कम शक्तिवाले ट्रांसमीटरों का देश भर में जाल बिछ गया और कोई सत्तर फीसदी जनता तक टीवी प्रसारणों के पहुंचने की क्षमता हो गई। 15 जुलाई 1984 को दूरदर्शन ने अपना पहला सीरियल 'हमलोग' प्रसारित किया जिस ने एक विराट 'टीवी दर्शक वर्ग' बनाया। 19 नवंबर 1984 के दिन दिल्ली से दूसरा चैनल शुरू किया गया जो बाद में मैट्रो चैनल के नाम से विख्यात हुआ और 'मल्टीचैनल युग' की शुरूआत हुई।

सैटेलाइट चैनलों का आरंभ

1990 का वर्ष दूरदर्शन के लिए सैटेलाइट चैनलों की चुनौती का वर्ष रहा। खाड़ी युद्ध को सी.एन.एन. नामक एक अमरीकी प्रसारण चैनल ने सीधा प्रसारित किया जिसे डिश एंटीना लगाकर देखा जा सकता था, इससे सैटेलाइट से सीधे प्रसारण का आरंभ हुआ और दूरदर्शन का एकाधिकार टूट गया यही नहीं आँकाश मार्ग को सैटेलाइट प्रसारण ने सबके लिए खोल कर राष्ट्र राज्य की सीमाओं को बेकार कर दिया सैंसर बेकार हो गया और सैटेलाइट एवं केवल टीवी का युग आरंभ हो गया। इसके बाद दूरदर्शन तेजी से बदला। जी.टी.वी. का आगमन हुआ। स्टार टी.वी. का आगमन हुआ सोनी चैनल का आगमन हुआ। दूरदर्शन का एकाधिकार खत्म हो गया। इसके दबाव में दूरदर्शन को अपना चाल ढर्रा न बदलना पड़ा और क्षैतिज प्रसारण से जुड़ न रहकर उन केबलोन्मुख होना पडा और मनोरंजन को अपना प्रमुख सेतु बनाना पड़ा। 1 अप्रैल 1993 को दूसरा चैनल मेट्रो एंटरटेनमेंट चैनल बना दिया गया। 15 अगस्त 1993 को पांच सेटेलाइट चैनल शुरू हुए। 14 नवंबर 1995 में दूरदर्शन 'चैनल थ्री' शुरू हुआ।

आज भारत में कोई तीन दर्जन चैनल हर कहीं और सहजता से उपलब्ध हैं। दूरदर्शन के दो चैनल, जीटीवी, जी सिनेमा, सोनी. सोनी मैक्स, सब टीवी, जैन टीवी, सहारा टीवी हिन्दी चैनल है। स्टार प्लस, स्टार न्यूज, एमटीवी, वी चैनल में अंग्रेजी और हिन्दी के मिले जुले कार्यक्रम आते हैं। तमिल के उपलब्ध चैनलों में सन टी.वी., राज टी.वी., विजय टी.वी. और जय टी.वी. प्रमुख हैं। पंजाबी में तारा, लश्कारा और पंजाबी दूरदर्शन है, गुजराती के दो है, मराठी का एक है। बांग्ला के दो हैं। मलयालम के चार चैनल हैं, एशिया नेट, सूर्या, कैरली और दूरदर्शन का मलयालम चैनल। कन्नड़ के भी दो दिखते हैं। बी.बी.सी., सी.एन.एन., डिस्कवरी नेशनल ज्योग्राफिक, सी.एन.बी.सी., स्टार मूवीज, एक्शन, कारटून नैटवर्क, एनीमल प्लैनेट, महर्षि टी.वी. आदि बहुत सारे चैनल उपलब्ध है। क्षैतिज, सेटेलाइट और केबल–तीन तरह का प्रसारण आज उपलब्ध है। देश में करीब छह करोड़ टी.वी. सेट उपलब्ध हैं। दर्शकों की कुल संख्या कम से कम चालीस से पचास करोड के बीच बताई जाती है जो कोई न कोई चैनल किसी न किसी समय देखती है। 1997 के दूरदर्शन के आंकड़ों के अनुसार देश म 1996 तक 5 करोड़ 77 लाख 'टी.वी.–गृह'/टी वी. हाउस होल्ड/थे। यदि एक गृह में एक टी.वी. सेट को दस दर्शक देखते हैं तो देश में टी.वी. के कुल दर्शकों की संख्या का पचास करोड़ से ज्यादा मानी जा सकती

है। सिर्फ केवल नेटवर्कों से कोई तीन करोड़ गृह जुड़े बताए जाते हैं जिनकी संख्या आनेवाले कुछ वर्षों में साढे चार करोड़ तक हो जाएगी। केबल की सहायता से राजस्थानी, बिहारी चैनल शुरू होने वाले हैं उनमें भी राजस्थानी बोलियां और बिहार की बोलियों के कार्यक्रम रहेंगे। इस तरह टी.वी. के दर्शकों की सकल संख्या लगातार बढने वाली है।

टी.वी. और विज्ञापन का अर्थशास्त्र

विज्ञापन जगत के लिए इस 'दर्शक संख्या' का बड़ा महत्व है। टीवी के अर्थ शास्त्र में भी इस दर्शक संख्या का बड़ा महत्व होता है। टी.वी. के विज्ञापनों के जिन 'प्रभावों' की बात कही जाती है वह एक जटिल प्रक्रिया का परिणाम होते हैं।

टी.वी. अपनी प्रसारण प्रक्रिया से दो तरह के आर्थिक कार्य संपन्न करता है: एक ओर वह जनता को 'दर्शक' में बदलता है। दूसरे स्तर पर वह दर्शक को उपभोक्ता वस्तुओं के निर्माताओं के हाथों बेच देता है। इस तरह से टी.वी. का काम मूलत: और अंतत: जनता को 'उपभोक्ता' में बदलने का होता है। हर टी.वी. चैनल का अर्थशास्त्र इसी प्रकार से चलता है। हर टी.वी. चैनल इसलिए किसी न किसी बड़ी आर्थिक क्रिया और उपभोक्ता बाजार की प्रक्रिया से जुड़ा होता है। टी.वी. का संचार एक महंगा कार्य है। यदि वह अपनी लागत के मुकाबले लाभ नहीं कमा सकता तो बंद ही हो सकता है। इसलिए हर टी.वी. चैनल को अपने को लाभ में लाने के लिए अपने बनाए दर्शकों को बाजार के हाथों बेचना पडता है। इसीलिए हर चैनल की असली लड़ाई परदे के पीछे अपनी 'टी.आर.पी'/टेलीविजन रेटिंग प्वांइट यानी 'किसी कार्यक्रम की कुल दर्शकता के बिंदु'को लेकर होती है। कार्यक्रम दर्शकता गिरी तो प्रायोजकों ने हाथ खींचा कार्यक्रम बंद हुआ। यदि कोई कार्यक्रम दर्शक नहीं बना , बांध नहीं सकता तो उसे प्रायोजक नहीं मिलते। , नहीं है तो उसे दिखाया नहीं जा सकता। टी.वी. की स्कृतिक प्रक्रिया इस तरह प्रायोजन और विज्ञापन से भिन्न रूप से जुड़ी हुई प्रक्रिया है जिसे किसी को तिकतावादी हस्तक्षेप से नहीं रोका जा सकता। विज्ञापन उसकी 'लाइफ लाइन' हैं। ऐसा दुनिया में हर जगह है। जहां ऐसा नहीं होता वहां टी.वी. का स्वतंत्र प्रसारण नहीं हो सकता। जहां राज्य से टी.वी. को समर्थन रहता है वहां का टी.वी. सरकारी भौंपू हो जाता है जिसे 'मजबूर' दर्शक मिलते हैं जो दर्शकों का निर्माण नहीं करता!

टी.वी. के प्रभाव की बात इसीलिए निर्णायक है। यदि विज्ञापन का प्रभाव ही न होगा तो वह मार्केट क्या करेगा? तो जिस टी.वी. चैनल के जिस कार्यक्रम का जितना प्रभाव होता है उसे बनाने के लिए पैसे देनेवाले प्रायोजक का विज्ञापन उतना ही दिखता है। इस मानी में विज्ञापन टी.वी. कार्यक्रमों के निर्माता बन जाते हैं। उन्हें कार्यक्रमो से अलग करके नहीं देखा जा सकता।

आजकल विज्ञापन को ब्रांड का निर्माण करने वाला कहा जाता है। ये कार्यक्रमो के साथ नत्थी हो जाते हैं।

विज्ञापन की ताकत इस बात में है कि उसे देखने के बाद उसे कितने लोग याद रख पाते हैं। तकनीकी भाषा में इसे विज्ञापन की रिकाल वैल्यू कहा जाता है। यदि विज्ञापन याद ही नहीं रहा तो बेकार गया समझिए। इसके लिए विज्ञापन बनाने वाली कंपनियां तरह तरह के नुस्खे अपनाया करती है। हर विज्ञापन का एक सुस्पष्ट सुलक्षित उपभोक्ता समूह होता है। बच्चों के लिए जो चीजें बेची जाती हैं उनके विज्ञापन कुछ अलग किस्म के होते हैं और बड़ों के अलग तरह के, औरतों के लिए अलग विज्ञापन होते हैं। विज्ञापन एक हाइब्रिड कला है वह कई तरकीबों का इस्तेमाल करती है। आज भारत में 'टी.वी. विज्ञापन कला' एक विकसित कला है और इस क्षेत्र में कई ग्लोबल विज्ञापन कंपनियां भी काम करती हैं।

'हम लोग' और 'बुनियाद' के दिनों में दूरदर्शन पर 'निरमा पावडर' और 'विक्को वज्रदंती' के विज्ञापन ज्यादा आते थे। ये विज्ञापन सीधे सादे विज्ञापन के साधारण फारमूले पर बने थे जो एक परिवार को संबोधित होते थे। गृहिणी के लिए साफ धुलाई करने वाला निरमा था और दांत चमकाने वाला विक्को वज्रदंती और त्वचा को साफ करने वाला टरमेरिक क्रीम। हम लोग ने ज्यों ज्यों दर्शकों का निर्माण किया विज्ञापन बढते गए। हमने देखा कि 'हम लोग' से 'बुनियाद' और उसके बाद ये विज्ञापन पीछे चले गए। उनकी जगह रसना पेय ने ले ली। विक्स ने ले ली। विक्स एक्शन फाइव हंड्रैड ने ले ली और सर्वोपरि 'लिरिल' ने ले ली। लिरिल का विज्ञापन स्त्री को एक नए रूप में ही दिखाता जो स्विम सूट पहने कर झरने में नहाती थी। लिरिल वाल के लिए इस विज्ञापन को बनाने वाले अलीक पदमसी का कहना था कि यह विज्ञापन नहाने की इच्छा को सेलीब्रेट करता है। यह एक बिग आइडिया है। कहने की जरूरत नहीं कि लिरिल बाजार में छा गया। सारे साबुनों ने लिरिल की नकल की। इसी तरह रिन के विज्ञापन ने बाद में निरमा को हाशिए पर डाला। और बाद में एरियल पावडर ने बाजार को हथिया लिया और बाद में सर्फ ने उसे यह कह कर टक्कर दी कि दाग ढूंढते रह जाओगे। यह वाक्य मुहावरा ही बन गया। इसी तरह इन दिनों पेप्सी का ये दिल मांगे मोर एक मुहावरा ही बन गया। डेढ दो सौ उपभोक्ता सामान के ब्रांड विज्ञापन आजकल चलन में है क्रीम पावडर, तेल, शैंपू, लोशन, हेयर डाई, आइसक्रीम, बिस्कुट, टाफी, चाकलेट, खाना पकाने के तेल, टायर, जूते, दूध, बीमा लोन, दवाइयां, कपडे अ[illegible] तमाम तरह के विज्ञापन आज ज्यादा तादाद में र[illegible] विज्ञापन के कुल बजट के एक तिहाई पर टी.वी. का कब्जा रहता है। टी.वी. के विज्ञापनों ने [illegible] सिनेमाहाल और पोस्टर आदि में विज्ञापनों को कम [illegible] है। अब तो केबल वाले तक स्थानीय मोहल्लों, [illegible] स्कूलों और घटनाओं का विज्ञापन देने लगे हैं।

1976 में विज्ञापनों से हुई आय का कोई [illegible] मिलता। वे ज्यादा थे भी नहीं। 1982 से [illegible] दूरदर्शन की विज्ञापनों से होनेवाली आय में [illegible] हुई। यह अनुपात दर्शकों के अनुपात से मिल[illegible] सकता है। 1982 में दूरदर्शन के कुल द[illegible]

1 करोड़ 70 लाख थी जो 1997 तक आते आते 29 करोड़ 60 लाख तक पहुंच गई। हम कह सकते हैं कि जिस अनुपात में दर्शक बढ़े विज्ञापनों की आय बढी यानी विज्ञापन बढ़े। विज्ञापन से कमाई करने में दूरदर्शन सन् 1998 तक आगे रहा लेकिन याद में प्रसार भारती के कुप्रबंध और राजनीति के कारण उसकी हिस्सेदारी घटने लगी। उसके खाते में जी.टी.वी. और सोनी जैसे चैनल दांत मारने में सक्षम रहे। कारण यह रहा कि दूरदर्शन ने नए दर्शक बनाने के लिए नए कार्यक्रम लांच नहीं किए। उसने रामायण और महाभारत के जमाने के दर्शकों को बदला ही नहीं जब कि जी.टी.वी. ने और सोनी ने बदला। उन्होंने अपने फिल्मों के लिए दर्शक बनाए अपने रेट घटाए और इस तरह वे छोटे विज्ञापकों को खींचने में कामयाब रहे।

यदि हम दर्शक बनाने की बात को देखें तो हिन्दी में स्टार ने दर्शक बनाने के लिए 75 करोड़ रुपए की लागत लगा कर 'कौन बनेगा करोडपति' कार्यक्रम दिया और पहली रात से ही उसे कुल दर्शकों का 40 फीसदी मिला। उसके विज्ञापकों को नितांत नया दर्शक वर्ग मिला। इसका कारण अमिताभ बच्चन का होना तो था ही करोड़पति बनने के लालच का होना भी था।

कोई पैंतीस हजार करोड़ के कुल विज्ञापन – बाजार में दूरदर्शन इन दिनों तीन सौ करोड़ रुपए तक नहीं कमा पारहा। जी.टी.वी. मुनाफे में है सोनी ब्रेक ई वन पर है और स्टार बढ़ रहा है।

विज्ञापन के प्रभाव

विज्ञापनों को लेकर अक्सर यह बहस उठती रही है कि वे नैतिक मूल्यों का ध्यान नहीं रखते। वे कृत्रिम इच्छा जगाते हैं। फालतू की जरूरतों को बढ़ावा देते हैं। वे बढ़ाचढ़ा कर बातें करते हैं।

किसी हद तक ये बाते सही हैं लेकिन यदि अर्थशास्त्रियों से पूछें, मार्केटिंग वालों से पूछे तो वे विज्ञापनों के लाभ बताते हैं: उनका कहना है कि विज्ञापन स्पर्धा पैदा करके इजारेदारी को तोड़ते हैं, जानकारी देते हैं अच्छे उपभोक्ता बनने में मदद करते हैं। जैसा कि हमने कहा टी.वी. ऐसा माध्यम है जो बिना विज्ञापन के नहीं चल सकता। देखना यह चाहिए कि जो विज्ञापन आएं वे समाज के साथ किसी प्रकार का छल न करें, और समाज के प्रति उत्तरदायी रहें।

कुछ विज्ञापनों का बुरा असर भी रहा है जैसे 'थम्स अप' के रिलांच वाले विज्ञापन का जिसमें एक लड़के को थम्स अप की बोतल के लिए बंगी जंपिंग करते दिखाया जाता था उसकी नकल में कच्चे दिमागों के कई बच्चे रस्सी या धोती बांध कर कूद गए और मर गए। बाद में इस विज्ञापन की खूब आलोचना हुई। दबाव में इसे बंद करना पड़ा। एक अन्य साबुन के विज्ञापन का प्रभाव यह हुआ कि एक लड़की उसमें क्रीम है, ऐसा समझ कर उसे खा गई और मरते मरते बची। ऐसे दुष्प्रभाव मूलक विज्ञापन नहीं होने चाहिए। विज्ञापन एक लालच की कहानी की तरह होते हैं। वे पहले समस्या को बढ़ाचढ़ाकर पेश करते हैं फिर किसी वस्तु को दिखाकर उसका समाधान करते हैं। हर विज्ञापन 'सुख के सिद्धांत' की रचना करता है। इसके लिए कभी वह सीधे निवेदन करता है कभी चौंकाने से काम लेता है कभी हंसाता है कभी छेड़ता है। ये विज्ञापन की तरकीबें हैं। उपभोक्ता वस्तुओं के विज्ञापन प्रायः 'हिंसामूलक दृश्यों', और 'सैक्सोन्मुखी आशयों' का सहारा लेते हैं। वे मनुष्य को सिर्फ 'उपभोग के सुख' दिखाते हैं, उत्पादन और श्रम के महत्व को नहीं बताते। वे उपभोक्ता भाव को सेलीब्रेट करते हैं और श्रम के मूल्यों को प्रायः हाशिए पर धकेलते हैं। वे मनुष्य को पूंजी की संस्कृति में ले जाते हैं और कामना को कभी तुष्ट नहीं होने देते। उनका कोई अंत नहीं होता। वे बचत के मूल्य को नष्ट करके खर्च के मूल्य को बढ़ाते हैं। लेकिन व्यवसायी वर्ग की नजर से देखें तो उपभोक्तावादी विज्ञापन मनुष्य को नई स्पर्धा में लाकर, उत्तेजित करके नए ढंग से जरूरत पैदा करके उसे नए ढंग के श्रम और उत्पादन की प्रक्रिया में लगाते हैं। वे कार्पोरेट–दुनिया की कला है। कई टी.वी. विज्ञापन विकासमूलक भी होते हैं। बच्चों के लिए पल्स पोलियो अभियान अखिल भारतीय स्तर पर अगर सफलतापूर्वक चला तो उसके पीछे टी.वी. के विज्ञापन का हाथ रहा है। इसी तरह परिवार नियोजन संबंधी माला डी, निरोध और नसबंदी के कार्यक्रम काफी लोकप्रिय हो सके हैं उनका अच्छा असर देखा गया है। परिवार कल्याण चेतना और छोटे परिवार की भावना बढ़ी है। बालश्रम अपराध है, बालिका शिक्षा और जीवन रक्षा पर जोर, साक्षरता मिशन, प्रसव में मां के स्वास्थ्य की भावना, पर्यावरण रक्षा, अंधता निवारण और दृष्टिदान, एड्स जागरूकता संबंधी विज्ञापनों ने इन विषयों के बारे में लोगों में चेतना जगाई है। कारगिल फंड के लिए आते संदेशों ने भी बड़ा असर डाला है। सेनिटरी नेपकिन के विज्ञापनों ने स्त्री को आजादी दी है। विज्ञापनों ने स्त्रियों को नए रूपों में दिखाया है। इससे स्त्री की छवि बदली है। उसका पहनावा उढ़ावा उसकी चाल ढाल से दब्बूपना और बेकार की लाज खत्म हुई है। इसे देख अनेक नैतिकतावादी हाहाकार करते हैं लेकिन यह एक शुभ बदलाव है। स्त्री उत्पीड़न को लेकर शिकायत संबंधी संदेशों ने स्त्रियों को हिम्मत दी है। कमजोर तबकों को वाणी दी है। कामकाजी महिलाओं की तसवीर भी बदली है स्वच्छता संबंधी संदेशों ने पानी के रखाव संबंधी विज्ञापनों ने अच्छा असर डाला है।

कहने की जरूरत नहीं कि आधुनिक जीवन में विज्ञापन एक अनिवार्य सामाजिक प्रक्रिया है। उनका असर होता है। एक ओर वे उपभोक्ता समाज बनाते हैं तो दूसरी ओर उनके असर से दूसरे विकास मूलक मूल्य भी लोकप्रिय होते हैं। जरूरत इस बात की है कि टी.वी. पर सिर्फ उपभोक्तावादी संस्कृति के विकास न हों, उसमें विकासमूलक विज्ञापन भी पर्याप्त होने चाहिए। विज्ञापनों में आपत्तिजनक अंशों और संदेशों की समीक्षा के लिए कोई स्थायी बंदोबस्त होना चाहिए। विज्ञापनों की शिकायत के लिए कोई कानून व्यवस्था जनता के पास होनी चाहिए जो अभी तक नहीं है। विज्ञापन के जरिए बेची गई किसी वस्तु के दुष्प्रभाव से होनेवाले नुकसान की भरपाई के लिए उपभोक्ता अदालतों में जनता को जाने का हक मिलना चाहिए, जैसा कि अमरीका में है। तभी उनकी गैर जिम्मेदारियों पर अंकुश लग सकेगा।

सुधीश पचौरी

इन्फोसिस 55,984 करोड़ रुपये की बाजार पूंजी के साथ टेक्नालोजी हिंदुस्तान लीवर को पछाड़ते हुए पहले स्थान पर आ गया। जनवरी 10 तक सेनसैक्स 5668 अंक पर पंहुच गया और फरवरी 11 में सेनसैक्स ने पहली बार 6000 के अंक को छू लिया। फरवरी 14 को एतिहासिक ऊंचाई 6150.69 अंकों की हो गई। संसद में बजट के पेश करते ही 29 फरवरी को बाम्बे स्टाक एक्सचेंज में 519.88 अंको की बढ़ोत्तरी हुई।

सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री ने जनवरी महीने में कहा कि भारतीय सूटना प्रौद्योगिकी उद्योग के अंदर सन 2010 तक 100 बिलयन डालर की वृद्धि क्षमता है। इसी माह हिंदुस्तान लीवर स्टाक विभाजन 10.1 मुख्य समाचार रहा। कंपनी ने 290% के लाभांश का भुगतान किया।

मार्च तक म्युचुअल फंड्स के अंतर्गत कुल संपत्ति 100,000 करोड़ रुपये की हो गई। सरकार ने सेक्युरिटीज की फरवर्ड ट्रेडिंग पर 30 वर्षो से लगे प्रतिबंध को उठा लिया।

बाम्बे स्टाक एक्सचेंज में 4 मार्च को 361 अंको की भारी गिरावट आई। इतनी बड़ी अचानक गिरावट 28 अप्रेल 1992 में 570 अंको की गिरावट के बाद अंकित हुई। इस गिरावट के प्रमुख कारण नास्डाक में गिरावट, एफ.आई.आई. से कर विभाग द्वारा कर की मांग और माइक्रोसाफ्ट पर अमरीकी अदालत का फैसला था। भारतीय स्टाक बाजार में उतार-चढ़ाव इसकी विशेषता रही है। इसका उदाहरण 7 अप्रेल को सेनसेक्स में 352 अंको की बढ़ोत्तरी से मिलता है, लेकिन इसी माह के अंत से सेनसेक्स में गिरावट का दौर शुरु हो गया। नास्डाक भारतीय बाजार पर छाया की तरह छाया रहा और बाम्बे स्टाक एक्सचेंज में 291 अंको की गिरावट आई और यह 4880 अक पर बंद हुआ। मई 11 को गिरावट बढ़ी और यह 4189 अंक तक आ गया। माह के अंत में और गिरावट आई और यह 3920 अंक पर बंद हुआ।

जून में बाम्बे स्टाक एक्सचेंज और एन.एस.ई. में व्यापार गतिविधियां बढ़ीं। सिलवर लाइन टेक्नालोजी न्यूयार्क स्टाक एक्सचेंज की सूची में जगह पाने वाली पहली भारतीय इन्फोटेक कंपनी बनी। इन्फोटेक की प्रमुख कंपनियां इन्फोसिस टेक्नालोजी और सत्यम ने 109 और 95 % लाभांश का कीर्तिमान बनाया। छह भारतीय कंपनियां – आई.ओ.सी. बी.पी., एस.बी.आई., आर.आई.एल., ओ.एन.जी.सी., और सेल ने फोर्ब्स पत्रिका में अपनी जगह बनाई।

जुलाई महीने में डालर की तुलना में रुपये में भारी गिरावट आई और यह 1 डालर की तुलना में 45.08 पर आ गया। रुपये की गिरावट को रोकने के लिये भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंक दर को 8% और सी.आर.आर. की दर में 8.5% की बढ़ोत्तरी की। लेकिन रुपये की गिरावट जारी रही और अगस्त माह में यह 1 डालर की तुलना में 46.05 पर आ गया।

सितंबर माह में उजागर हुआ कि इन्फोसिस के 27% और विप्रो के 18% कर्मचारी लखपति हैं। इन्फोसिस के 657 कर्मचारी करोड़पतियों की श्रेणी में थे। कस्टमर रिलेशनशिप मैनेजमेंट, ई-कामर्स, वित्तीय सेवाओं व बीमा के क्षेत्र में विकास के लिये सितंबर माह में इन्फोसिस व माइक्रोसाफ्ट के विश्वव्यापी गठबंधन महत्वपूर्ण रहा।

टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेस की बाजार पूंजी 150,000 करोड़ रुपये की रही जबकि विप्रो और इन्फोसिस क्रमश 67,000 करोड़ व 56,000 करोड़ रुपये पर रहे।

निर्यातक देश

(1998-99 अप्रेल-फरवरी) अंतिम

देश	रुपये करोड़
अमरीका	32070
अफ्रीका	7874
पश्चिमी युरोप	35439
पूर्वी युरोप	3905
एशिया व ओशेनिया	44907

आयात का स्रोत

(1998-99 अप्रेल-फरवरी)

देश	करोड़ रुपये
अमरीका	17847
अफ्रीका	14527
पश्चिमी युरोप	51636
पूर्वी युरोप	3260
एशिया व ओशेनिया	71792

अक्टूबर महीने में इन्फोसिस की लाभांश में 134% की वृद्धि की घोषणा और सत्यम कंपनी की 118% लाभांश की घोषणा बाजार में प्रसन्नता लाने में असमर्थ रही। मध्य एशिय में तनाव व कच्चे तेल की कीमत में बढ़ोत्तरी ने पूरे विश्व के बाजार को मंदा रखा। सितंबर महीने में सेनसेक्स सबसे कम अंको 3738.93 पर आ गया और रुपये में गिरावट बढ़ कर 46.33/35 तक आ गई।

विदेशी ऋण: देश पर विदेशी ऋण मार्च 1999 के 97.666 बिलयन डालर से मार्च 2000 में बढ़ कर 98.435 बिलयन डालर हो गया। लांग टर्म रेजीडेंशियल डिपाजिट, भागीदारी (आई.एम.एफ. को छोड़कर) द्विपक्षीय ऋण में बढ़ोत्तरी हुई। जबकि आई.एम.एफ., विदेशी व्यवसायिक ऋण एवं पूर्व सोवियत संघ के ऋण में कमी आई है।

विदेशी विनिमय: भारतीय विदेशी मुद्रा रिजर्व जिसमें स्वर्ण और विशेष विनिमय अधिकार में सितंबर 2000 में 94 मिलयन डालर घटकर 35.2 बिलयन डालर रह गया। इस गिरावट का कारण विदेशी मुद्रा संपत्ति में कमी था। 1999-2000 में भुगतान अनुपात पोखरण के बाद लगे प्रतिबंध और पूर्वी एशिया संकट के बावजूद संतुलित रहा। इस वर्ष फोरेक्स रिजर्व में 2.4 बिलयन डालर की बढ़ोत्तरी हुई।

विदेशी मुद्रा विनिमय पर लगी सीमा को इस वर्ष बढ़ाया गया। विदेश यात्रा करने वाले को 3,000 डालर की सीमा को बढ़ाकर 5,000 डालर और विदेश व्यापार उद्देश्य की यात्रा पर 25,000 डालर की नई सीमा कर दी गई।

साफ्टवेयर सेवा: साफ्टवेयर के निर्यात में प्रशंसनीय 50% की वृद्धि हुई। सेवाक्षेत्र अकेला ऐसा क्षेत्र है जिसमें अनेक वर्षो से वृद्धि में निरंतरता बनी हुई है। भारतीय कंप्यूटर व साफ्टवेयर

निर्यात में 29% की वृद्धि के साथ पिछले वर्ष के 3.32 विलियन डालर की अपेक्षा 1999 में यह 4.28 विलियन डालर का रहा। कंप्यूटर साफ्टवेयर और सेवा क्षेत्र में सेक्टेरियल क्षेत्र में 66% की वृद्धि दर्ज की गई। सिंगापुर, हांगकांग और अन्य एशियाई देश भारतीय इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रमुख ग्राहक रहे। संयुक्त राज्य अमरीका और कनाडा में भी भारतीय मांग में वृद्धि हुई है। इस वर्ष 85 देशों को साफ्टवेयर के निर्यात का लक्ष्य रखा गया था।

अनिवेश: मई, 2000 में भारत सरकार ने एयर इंडिया से 60% के अनिवेश को स्वीकृत दी। विदेशी भागेदारी को 26% तक सीमित कर दिया गया।

कर संकलन: चालू वित्तीय वर्ष के पहले छह महीनों में (अप्रेल–सितंबर) कर वसूली (प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष) में 19.21% की वृद्धि हुई। पिछले इसी काल में कर वसूली 69,094 करोड़ रुपये की थी जो इस वर्ष बढ़ कर 82,312 करोड़ की हो गई। आयकर में 44.97% की बढ़ोत्तरी हुई और यह राशि 12,938 करोड़ रुपये की हो गई। अक्टूबर 99 में आयकर देने वालों की संख्या 20 मिलयन को पार कर गई। मार्च 2000 में आयकर देने वालों की संख्या 25 मिलयन हो गई।

विदेशी प्रत्यक्ष निवेश: कैलेंडर वर्ष 2000 में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का आंकलन 5 विलियन डालर का था। जबकि 1991 में यह 4 विलियन का था। सरकार ने अगले चार पांच वर्षों में 10 विलियन डालर विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का लक्ष्य रखा है।

मंदी: सरकारी सूत्रों के अनुसार पिछले 17 वर्षों में मंदी सबसे कम रही। सेंटर फार मानिटरिंग इंडियन इकोनामी ने अक्टूबर में कहा था कि थोक मूल्य सूची में मंदी 8% और उपभोक्ता मूल्य सूची मे मंदी 7% की होगी। लेकिन 99 को याद किया जा सकता है जब अचानक मदी में तेजी से कमी आई थी।

आजादी के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था ने लंबी छलांगे भरी हैं। आज हम खाद्यान्न–निर्भर हैं। हमारे पास एक मजबूत औद्योगिक आधार है और संयुक्त विश्व के अर्थतंत्र से हमारे बंधन मजबूत हो रहे हैं।

पंद्रहवीं सबसे बड़ी अर्थ शक्ति के रूप में हमारा देश 21वीं सदी में क्षेत्रीय आर्थिक शाक्ति के रूप में उभरा है। विश्व बैंक के अनुसार 2020 में प्रमुख आर्थिक शाक्तियों के संघ में सम्मिलत होने की आशाप्रद पांच विकासशील अर्थ–व्यवस्थाओं में एक भारत की है।

पचास के दशक के आरंभ में भारत ने प्रजातांत्रिक ढांचे में अर्थ–व्यवस्था के नियोजन का एक अनोखा कार्यक्रम प्रारंभ किया था। विकास के प्रत्येक क्षेत्र – प्रति व्यक्ति आय की दर, अशिक्षा, परिवार नियोजन, वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति– सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ने के प्रयत्न किए गए। किन्तु इस प्रगति और विकास के मध्य अनेक गंभीर कमियां भी रहीं। गरीबी उन्मूलन और बेरोजगारी की समस्या मुंह बाए खड़ी रही। यह एक स्थापित तथ्य है कि जब एक विकास दर से 8 फीसदी की दर से कई वर्षों तक स्थिर नहीं रहती, भारत का पूर्ण सामाजिक विकास असंभव है।

90 के दशक में उल्लेखनीय घटना बचत और निवेश में वृद्धि की है। ये कुल आय की क्रमशः 24.3 और 25.7 प्रतिशत रही।

पहले तीन दशकों में विकास की दर 3.5% के साथ बहुत धीमी थी। अस्सी के दशक में 5.9%हो गई। फिर भी अनेक असंतुलन रहे। घाटे और बाह्य ऋणों के कारण 91 में विदेशी रिजर्व भंडार में भारी कमी की विपत्ति आई। विवश होकर हमें इटरनेशनल मानीटरी फंड की शरण में जाना पड़ा। इस विपत्ति ने आर्थिक सुधारों की क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया। व्यापार, निवेश में आमूलयूत परिवर्तन हुआ और सर्वत्र उदारीकरण की नीति अपनाई जाने लगी। भारत कुछ देशों में से एक है जहां

असली 'करोड़पति' तो बनाए हैं आई.टी. कंपनियों ने!

असली करोड़पति बनाए हैं आई.टी. क्षेत्र की शीर्ष कंपनियों ने। बीते अप्रैल में अमरीकी शेयर बजार नास्डैक में जब तगड़ी गिरावट आई तो एक बार लगा कि इन कंपनियों के कर्मचारी करोड़पति की श्रेणी से अचानक गिरकर महज लखटकिए रह जाएंगे, लेकिन समय ने इस आशंका को निर्मूल साबित कर दिया। ताजा आंकड़ों के अनुसार इन्फोसिस में लगभग 7000 कर्मचारी काम करते हैं, जिनमें से 657 लोग अभी करोड़पति हैं।

इन्फोसिस के 7000 कर्मचारियों में से 1913 लोग अभी दस लखटकियों से ऊपर की श्रेणी में हैं। 342 लोग एक से तीन करोड़ रुपए की श्रेणी में हैं, जबकि 112 लोगों का आंकड़ा 3 से 5 करोड़ रुपए के बीच बैठता है। 61 लोग 5 से 7 करोड़ की श्रेणी में हैं और 47 लोगों का धन 7 से 9 करोड़ रूपए के बीच है। इन्फोसिस के 95 कर्मचारी ऐसे हैं, जिनका धन आश्चर्यजनक रूप से 9 करोड़ रुपए से अधिक है।

पिछले डेढ़ वर्षों में इन्फोसिस के करोड़पतियों की संख्या में जबरदस्त 721 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है।

अजीम प्रेमजी की कंपनी विप्रो में भी कर्मचारियों के धन की यही कहानी है। अगस्त में इस कंपनी में दस लखटकियों की संख्या 1,785 थी, जिसमें से 107 करोड़पति हैं। बीते दिसंबर में दस लखटकियों की संख्या 1,010 थी।

विप्रो के कुल कर्मचारियों की संख्या 10 हजार है, जिसमें से 7,000 सोफ्टवेयर के क्षेत्र में हैं, जबकि 3,000 इन्फोसिस, कंज्यूमर केयर एवं लाइटिंग आदि क्षेत्रों में हैं। कंपनी के अधिकांश धनाढ्य सोफ्टवेयर और इन्फोसिस क्षेत्र के हैं, हालांकि अन्य क्षेत्र के कर्मचारियों को भी स्टाक आप्शन की सुविधा दी गई है। नास्डैक में गिरावट से पहले इस कंपनी में दस लखटकियों और करोड़पतियों की अचानक बाढ़ आ गई थी, जब कंपनी के 2 रुपए मूल्य के शेयर का भाव 10 हजार रुपए की आकाशतोड़ ऊंचाई पर था। इन कंपनियों की राह पर अब अन्य कंपनियों में भी होड़ है कि कौन अपने कर्मचारियों को कितना स्टाक आप्शन देता है।

मुद्रास्फीति की आकाश छूती दर 17% में तीव्रता से कमी आई है। आठवीं पंचवर्षीय योजना के समय विकास दल 6.8% तक हो गई।

1950 में भारत ने आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए सोवियत माडल के आधार पर पंचवर्षीय योजना स्वीकार की थी। प्रथम पंचवर्षीय योजना बहुत कुछ विभाजन और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पुनःनिर्माण की थी। दूसरी योजना में भारी उद्योग तंत्र की स्थापना पर ध्यान दिया गया। इस योजना के तहत निर्यात पर कम ध्यान दिया गया। चीन के आक्रमण और फिर 65 में कच्छ में पाकिस्तान की घुसपैठ से तीसरी पंचवर्षीय योजना खटाई में पड़ गई। जून 66 में रूपए का अवमूल्यीकरण करना पड़ा। चौथी योजना में सुरक्षा उपायों पर अधिक व्यय करना पड़ा। भारत और पाकिस्तान के बिगड़े संबंधों की परिणति 71 के युद्ध में हुई।

पहले तीन दशकों में विकास की दर धीमी रही यह चार फीसदी से भी कम थी। अर्थव्यवस्था पर कड़ा नियंत्रण था। लाइसेंस राज की व्यवस्था चल रही थी। विदेशी निवेश को प्रोत्साहित नहीं किया जाता था। इस नीति ने औद्योगिक विस्तार को बढ़ावा अवश्य दिया, पर इसके दुष्परिणाम भी सामने आए। भारत दुनिया से अलग–थलग पड़ गया। पचास में विश्व व्यापार में भारत के भाग में 50 के 2% से 80 में आधे प्रतिशत की गिरावट आयी।

पंचवर्षीय योजनाएं आशा के विपरीत भारत की प्रगति विशेषकर उन्मूलन और रोजगार में सहायक नहीं हो सकी। ये समस्याएं 21 वीं सदी में हमारे साथ रहेंगी। पिछले पचास वर्षो में विकास भी हुआ है। शिक्षा की दर 18.3% से 52% होगी। जीवन दर 62% तक बढी। नवजात शिशु मृत्यु दर में हजार में सत्तर की दर से तीव्र गिरावट हुई। फिर भी आर्थिक वैषम्य बढ़ा।

स्वतंत्रता के समय जनसंख्या 340 मिलयन थी जो 1998 में 980 मिलयन हो गी। जनसंख्या में रोकथाम के कुछ प्रभावी कदम उठाये गए। किंतु उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और राजस्थान में जनसंख्या तीव्रता से बढ़ती रही। इन राज्यों में गरीबी और स्त्री–शिक्षा का अभाव भी रहा। आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति की दृष्टि से विभिन्न राज्यों में बारी अंतर है। केरल में सामाजिक विकास अत्यंत तीव्र गति से हुआ। यहां शिक्षा की दर 90% और जीवन आशा की दर 72% होगी।

भारत में अर्थव्यवस्था की कमियां अस्सी के दशक में दृष्टिगोचर होने लगी। 1990 में कुवैत पर ईराक के आक्रमण के बाद तेल मूल्यों में वृद्धि और भारतीय श्रमिकों के घर भागने से अर्थव्यवस्था पर संकट आया। मुद्रा स्फीति की दर दुगुनी हो गयी। आई.एम.एफ से ऋण के उपाय किए गए। ऐसी परिस्थितियों में कड़े उपायों की आवश्यकता थी। तत्कालीन वित्त मंत्री डा. मनमोहन सिंह उदारीकरण और आर्थिक सुधारों की नीति अपनाई। लगभग सभी उद्योगों से लाइसेंस व परमिट व्यवस्था को हटा दिया गया। पहली बार 1991 में सार्वजनिक क्षेत्रों में सरकार के निवेश को रोकने की नीति बनायी गयी। उत्तर–उदारीकरण की नीतियों से भारतीय अर्थतंत्र में सार्वजनिक क्षेत्रों के प्रभुत्व में आयी कमी प्रकट होती है। यद्यपि पूरी तरह से निजीकरण नहीं हुआ है फिर भी कुछ सार्वजनिक क्षेत्र पूरी तरह से सरकारी नियंत्रण से बाहर हो चुके हैं।

विदेश व्यापार में निर्यात के बढ़ावा मिला है। 1990–91 में 18 बिलियन डालर का निर्यात 98–99 में 33 मिलियन डालर हो गया है। किंतु विश्व व्यापार में 70–75 मिलियन डालर के निर्यात से एक प्रतिशत के भाग की इच्छा अभी भी स्वप्न बनी हुई है। एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में भारत में न केवल तीव्र आर्थिक दर होनी चाहिए बल्कि व्यापार के क्षेत्र में भी उसे प्रमुख शक्ति के रूप में उभरना चाहिए। चीन में अभी 180 मिलियन डालर का निर्यात हो रहा है। भारत को व्यापारिक अलगाव से निकल कर बाजारों में अपनी पहचान बनानी होगी। भारत में श्रमिकों और तकनीक की प्रचुरता है। साफ्टवेयर जैसे क्षेत्रों में नयी विकास की राहें निर्यात के क्षेत्र में एक नया आयाम जोड़ सकती है।

92–93 से भारत में विदेशी निवेशकों का आकर्षण बढ़ा है। तब से प्रति वर्ष 4 से 5 बिलियन डालर का निवेश हो रहा है। अमरीका, मारिशस, इंग्लैंड, जापान, जर्मनी प्रमुख निवेशक रहे हैं। भारत का बाह्य ऋण दिसंबर 98 में 95.7 बिलियन डालर का था। यह कुल आय का 2308 फीसदी है। विश्व में आठवें स्थान पर ऋणी देशों में भारत आता है। हमें निर्यात में वृद्धि करनी होगी और विदेशी निवेशकों को आकर्षित करना होगा।

कृषि

भारत में इस साल 20 करोड़ 8 लाख टन अनाज उत्पादन का अनुमान लगाया गया है। राज्यों से मिले आंकड़ों के मुताबिक गेंहू का उत्पादन 7 करोड़ 6 लाख टन होने का अनुमान है। पिछले साल यह आंकड़ा छह करोड़ 59 लाख टन था। चावल आठ करोड़ 44 लाख टन पैदा होने का अनुमान है। पिछले साल यह आंकड़ा 8 करोड़ 23 लाख टन था। दलहन, तिलहन, गन्ना और कपास का उत्पादन भी इस बार बढ़ने का अनुमान है। मोटे अनाज के मामले में इस साल उत्पादन में कमी आई है। इस वर्ष [illegible] करोड़ पाच लाख अस्सी हजार टन होने का [illegible] पिछले साल तीन करोड़ 11 लाख [illegible] 1992–93 में सर्वाधिक तीन करोड़ [illegible] टन हुआ था।

दालों के उत्पादन में [illegible] एक करोड़ 51 लाख 90 [illegible] पिछले साल एक करोड़ [illegible]

1990–91 में सर्वाधिक एक करोड़ 42 लाख 60 हजार टन हुआ था।

तिलहनों के उत्पादन में भी इस साल मामूली सुधार होने की संभावना है। इस साल इसका उत्पादन दो करोड़ 53 लाख टन होने का अनुमान है। पिछले साल दो करोड़ 20 लाख 20 हजार टन हुआ था। सर्वाधिक दो करोड़ 43 लाख 40 हजार टन उत्पादन 1996–97 में हुआ था।

मूंगफली का उत्पादन 87 लाख 80 हजार टन अनुमानित है जो पिछले साल के 78 लाख 50 हजार टन से थोड़ा ज्यादा है। अरंडी, सरसों का उत्पादन भी पिछले साल के 47 लाख 10 हजार टन से थोड़ा ज्यादा 65 लाख 40 हजार टन संभावित है। सोयाबीन का उत्पादन भी पिछले साल के 65 लाख 30 हजार टन से बढ़कर 67 लाख 70 हजार टन होने की संभावना है।

गन्ने का इस साल रिकार्ड उत्पादन होने की संभावना है। इस साल गन्ने का 28 करोड़ 26 लाख 80 हजार टन उत्पादन होने का अनुमान है। जबकि पिछले साल 27 करोड़ 62 लाख 50 हजार टन गन्ना पैदा हुआ था।

कपास उत्पादन में भी सुधार होने का अनुमान है। इस साल एक करोड़ 32 लाख 80 हजार गाठें होने की संभावना है। जबकि पिछले साल एक करोड़ ग्यारह लाख बीस हजार गाठें हुई थी। पूर्व में वर्ष 1985–86 में सर्वाधिक उत्पादन एक करोड़ 26 लाख 50 हजार गाठें हुआ था।

दलहन की पैदावार

सरकारी अनुमान के मुताबिक इस वर्ष दलहनों का उत्पादन 17 लाख टन बढ़कर एक करोड 48 लाख टन होने की उम्मीद है जबकि पिछले वर्ष यह एक करोड़ 31 लाख टन रहा था।

गेहूं उत्पादन के मामले में भारत अव्वल

इस वर्ष 74.25 मिलियन टन के रिकार्ड उत्पादन से भारत ने 2.85 टन प्रति हेक्टेयर की उत्पदाकता प्राप्त कर अमरीका के 2.8 टन प्रति हेक्टेयर के रिकार्ड को भी तोड़ दिया है। गेहूं के कुल उत्पादन में भी भारत ने वर्ष 1998 में संयुक्त राज्य अमरीका को पीछे छोड़ दिया था और इस प्रकार भारत विश्व में गेंहू का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश बन गया है।

उत्तर–पश्चिमी मैदानी भागों में उत्पादकता 4 टन प्रति हेक्टेयर है जबकि गेहूं के दूसरे बड़े उत्पादक क्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश और उत्तरी बिहार में उत्पादकता केवल 2.7 टन प्रति हेक्टयर उपज प्राप्त करने की क्षमता है। इस अन्तर को पाटने के लिए 'भाकृअप' ने पूर्वी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्में और प्रौद्योगिकियां विकसित की हैं। इनमें 'अगेती' पकने वाली किस्में जैसे एच.डी. 2733 आती है जो 120 दिन में पक जाती है और इसका दाना भी उत्तम क्वालिटी का है। शून्य जुताई बीज बुवाई प्रौद्योगिकी के विकास से चावल की कटाई और गेहूं की बुवाई के बीच की अवधि कम हो गई है जो कि एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

पूर्वी क्षेत्र में चावल देर से बोया जाता है जिसके कारण गेहूं की बुवाई में भी देरी की जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि गेहूं की सामान्य किस्मों और बुवाई पद्धतियों से पैदावार कम होती है। 'रोटेशन' से खेत की तैयारी करने से भी अच्छे परिणाम मिले हैं। इस पद्धति से परंपरागत ढंग से सात–आठ बार जुताई करने की अपेक्षा एक बार जुताई करने से ही मिट्टी एकदम भुरभुरी हो जाती है। इन दोनों जुताई पद्धतियों से 7 से 10 दिन का समय कम लगता है। इसके अलावा ईंधन या डीजल की भी बचत होती है क्योंकि ट्रैक्टर का इस्तेमाल भी कम हो जाता है। इस नई प्रौद्योगिकी से पोषक तत्वों का सही उपयोग होता है खरपतवारों का बेहतर नियंत्रण हो सकता है।

उत्तर–पश्चिमी मैदानी भागों के लिए परिषद ने समय पर बुवाई करके उपज को टिकाऊ बनाने पर अधिक बल दिया है। इस क्षेत्र में शून्य जुताई बीज बुवाई यंत्र काफी लोकप्रिय हो रहा है अतः यहां कई सिंचित उठी क्यारियों में रोपाई की अन्य पद्धति की सिफारिश की गई है। पिछले वर्ष देश के लगभग 10,000 एकड़ क्षेत्र में बुवाई शून्य जुताई द्वारा की गई जिसमें हरियाणा सबसे आगे रहा। एफआईआरबी पद्धति से न केवल खेती की लागत में कमी आती है बल्कि प्रति हेक्टेयर बीज और खाद की मात्रा में भी बचत होती है। क्योंकि इसमें परंपरागत पद्धति में 100 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की तुलना में केवल 75 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है। कुंड सिंचाई से लगभग 30 प्रतिशत पानी की बचत भी होती है।

आगामी रबी गेहूं की फसल के लिए यह रणनीति हाल ही में हुए लगभग 200 गेहूं वैज्ञानिकों की एक कार्यशाला में तय की गई थी। इस कार्यशाला में गेहूं की तीन किस्मे पहचानी गईं। एचडी 2733 किस्म उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में सिंचित व समय पर बुवाई की अवस्थाओं के लिए पहचानी गई। इसके अलावा इसी क्षेत्र के लिए पी.बी.डब्लू. 343 किस्म की भी सिफारिश की गई।

उत्तर–पूर्वी क्षेत्र में मध्य उत्तर प्रदेश, पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल और असम राज्य आते हैं। गेहूं की नई किस्मों से इन राज्यों में गेहूं की उत्पादन बढ़ने की संभावना है। उत्तर भारत के साधनविहीनपर्वतीय क्षेत्रों के बारानी व सिंचित दोनों ही भागों के लिए वी. एल. 804 किस्म पहचानी गई। इन नई प्रौद्योगिकियों और किस्मों के विकास से परिषद द्वारा गेहूं की पैदावार को और आगे बढ़ाने की योजना बनाई गई है।

इस वर्ष गेहूं के रिकार्ड उत्पादन उत्तर परिचमी भारत में नई किस्मों के इस्तेमाल पूरे गंगा–यमुना के मैदना में बुवाई से पहले आई पर्याप्त नमी, उर्वरकों का बढ़ता उपयोग, निवेशी की समय पर उपलब्धता, ठंडी और बढ़ा हुआ सर्दी का मौसम तथा रतुआ और करनाल बंट रोग से मुक्त से संभव हो सका है।

वर्ष 1998–99 में दलहनों की कुल दो करोड़ 29 लाख हेक्टेयर भूमि पर बुवाई हुई है जबकि पिछले वर्ष दो करोड़ 28 लाख 50 हजार हेक्टेयर भूमि में बुवाई हुई थी। इससे पहले देश में वर्ष 1990–91 में दलहनों का सर्वाधिक एक करोड़ 43 लाख टन उत्पादन हुआ था।

इस वर्ष देश में दलहनों की आपूर्ति सामान्य रहेगी और इसी के मद्देनजर बाजार में दाल–दलहनों के मूल्यों में नरमी का रुख पहले ही बन गया है। दलहन उत्पादन वाले राज्यों मध्य प्रदेश, उत्तर प्रेदश, महाराष्ट्र और राजस्थान में इस बार मौसम अनुकूल रहा है और इन्हीं राज्यों में देश के कुल दलहन का 70 प्रतिशत से अधिक उत्पादन होता है जबकि पंजाब, हरियाण, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल में तो मात्र छह प्रतिशत दलहन होती है।

रबी फसल में दलहनों की उपज 95 लाख टन तक होने का अनुमान लगाया जा रहा है जबकि पिछले वर्ष इस मौसम में 87 लाख टन दलहनों का उत्पादन हुआ था। केंद्र का कहना है कि इस बार रबी मौसम में दलहनों की बुवाई पिछले वर्ष के 123 लाख हेक्टेयर पर हुई है। अरहर उत्पादन में ही इस बार 20 प्रतिशत वृद्धि होने का अनुमान लगाया जा रहा है।

खाद्यान्न भंडार में 33 प्रतिशत की वृद्धि

देश में सरकारी गोदामों में एक दिसंबर '98 की स्थिति के अनुसार गेहूं और चावल का दो करोड़ 49 लाख 60 हजार टन का खाद्यान्न भंडार है जो कि पिछले वर्ष इसी दिन के भंडार से 33.2 प्रतिशत अधिक है।

सरकारी आंकड़े के मुताबिक विभिन्न सरकारी गोदामों में एक दिसंबर '98 को एक करोड़ 13 लाख टन चावल और एक करोड़ 37 लाख टन गेहूं का भंडार मौजूद था जबकि पिछले वर्ष चावल का भंडार करीब एक लाख टन अधिक था जबकि गेहूं का भंडार इस वर्ष 63 लाख 40 हजार टन अधिक है। कुल मिलाकर दोनों खाद्यान्नों का भंडार इस वर्ष पिछले वर्ष की तुलना में 62 लाख 20 हजार टन ज्यादा है।

अप्रैल से नवंबर '98 के दौरान सार्वजनिक वितरण प्रणाली के लिए केंद्रीय पूल से खाद्यान्नों का एक करोड़ 31 लाख टन उठाव हुआ जो कि पिछले वर्ष की इसी अवधि में हुए उठाव से 8.6 प्रतिशत अधिक रहा है। चावल का उठाव इस दौरान 77 लाख 90 हजार टन और गेहूं का उठाव 53 लाख 40 हजार टन हुआ है।

11 जनवरी तक की नवीनतम स्थिति के अनुसार चावल की वसूली 65 लाख 50 हजार टन और गेहूं की वसूली एक करोड़ 26 लाख 50 हजार टन रही है। चावल की वसूली मौसम अक्तूबर से सितंबर और गेहूं की अप्रैल से मार्च तक होती है। इस दौरान चावल की वसूली 18 प्रतिशत कम रही जबकि गेहूं की वसूली में 36 प्रतिशत की जोरदार वृद्धि हुई।

निर्यात में भी वृद्धि: चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही मे गैर बासमती चावल और गेहू उत्पादों समेत अन्य कृषि उत्पादों के निर्यात में पिछले साल की इसी अवधि की तुलना में सवा सैंतीस प्रतिशत की बढ़ोत्तरी दर्ज की गई।

कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) की त्रैमासिक पत्रिका के अनुसार

रिकार्ड अन्न उत्पादन

कृषि मंत्रालय ने वर्ष 1999–2000 के लिए हालांकि रिकार्ड अन्न उत्पादन का दावा किया है लेकिन ज्वार, बाजरा, रागी, जौ और दालों जैसे प्रमुख खाद्यान्न फसलों के उत्पादन में वह निर्धारित लक्ष्य से पिछड़ गया है जिसका सीधा असर कुल खाद्यान्न उत्पदान पर भी पड़ा है। कुल उत्पादन का लक्ष्य 210 मिलियन मीट्रिक टन रखा गया था लेकिन कुल अनुमानित उत्पादन 205.91 मिलियन मीट्रिक टन आंका गया है।

चावल, गेंहू और मक्का के उत्पादन में अनुमानित फसल निर्धारित लक्ष्य से आगे हैं। गेंहू के उत्पादन का लक्ष्य 74 मि.मी. टन, चावल का लक्ष्य 86 मि.मी. टन और मक्के का लक्ष्य 10.81 मिलियन मीट्रिक टन रखा गया था। जबकि अमुमानित उत्पादन के मुताबिक चावल 88.25 मि.मी. टन, गेंहू 74.25 मि.मी. टन और मक्के का अनुमानित उत्पादन 11.47 मि.मी. टन आंका गया है।

1998–99 की पहली छमाही में गैर–बासमती चावल का निर्यात 148.73 प्रतिशत बढ़कर 1668 करोड़ रु. पर पहुंच गया। वर्ष 1997–98 में पूरे वर्ष के दौरान गैर–बासमती चावल का कुल निर्यात 1600 करोड़ रू. का रहा था और इसमें 16.85 प्रतिशत की गिरावट आई थी पिछले वित्त वर्ष में पहली छमाही के दौरान मात्र 670 करोड़ रुपए का गैर–बासमती चावल निर्यात हुआ था।

पिछले साल गेंहू का निर्यात 99.91 प्रतिशत घटकर 42 लाख रू. का रह गया था। चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही के दौरान गेंहू का निर्यात 332.51 प्रतिशत बढ़कर पिछले साल की इस अवधि के 36 लाख रू. के मुकाबले एक करोड 56 लाख रू. का हो गया।

देश में फल–सब्जियों का उपभोग बढ़ा

भारत में प्रति व्यक्ति अनाज का उपभोग घटा है जबकि दूसरे खाद्य पदार्थो के उपयोग में भारी वृद्धि हुई है। यह प्रवृत्ति सिर्फ शहरी क्षेत्रों में ही नहीं, बल्कि ग्रामीण इलाकों में भी देखने को मिली है। सभी आय वर्गो के लोगों ने अनाज का [illegible] किया है और फल, सब्जी तथा दूध जैसे पौष्टिक [illegible] का उपभोग काफी बढ़ाया है। यह प्रवृत्ति भारतीय [illegible] संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट में उजागर की गई है।

निम्न आय वर्ग के लोगों में भी [illegible] जागरूकता बढ़ी है और इसी वजह से [illegible] ने अनाज छोड़कर दूसरे खाद्य [illegible] प्राथमिकता दी है जबकि पहले [illegible] देते थे। इस बदलाव से देश में [illegible] लिए नई रणनीति बनाने की [illegible] पर आय के प्रभाव पर पहले [illegible] था, लेकिन अब [illegible]

अनुमान है कि [illegible] टन अनाज की [illegible]

केरल में नारियल के भाव में भारी गिरावट

केरल में चाय, रबड़ और धान उपजाने वाले किसानों के कंगाल होने के बाद अब नारियल किसानों की बारी है। केरल के नारियल किसानों को नारियल के भाव में भारी गिरावट के कारण अपना अस्तित्व बचाए रखने के लिए जूझना पड़ रहा है।

देश में हाल के वर्षों में नारियल के उत्पादन में भारी बढ़ोत्तरी हुई है। लेकिन देश का बाजार आयातित नारियलों से भी अटा पड़ा है। इस स्थिति में सूखे नारियल और नारियल तेल का भाव पिछले एक दशक के निम्नतम स्तर तक जा पहुंचा।

सूखे नारियल का मूल्य मौजूदा समय में 1975 रुपए प्रति क्विंटल है जबकि पिछले साल इस समय इसका मूल्य 3450 रूपए प्रति क्विंटल था। सूखे नारियल का सरकारी समर्थन मूल्य हालांकि 3250 रुपए प्रति क्विंटल है लेकिन किसानों को अपना नारियल 1275 रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से बेचाना पड़ रहा है। केरल के नारियल किसानों को 1990 में ही मूल्य घटने से कंगाली का सामना करना पड़ा था।

'राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन परिसंघ' (नैफेड) ने शुरूआती दौर में केरल के नारियल किसानों की मदद करने और उन्हें कंगाली से निकालने का प्रयास किया था। लेकिन नैफेड ने भी अब नारियल की सरकारी खरीद की अपनी योजना पूरी तरह बंद कर दी है। नारियल किसानों को आशंका है कि आनेवाले दिनों में उन्हें और अधिक बुरे समय का सामना करना पड़ेगा। केरल में 35 लाख से भी अधिक परिवार कुल 17 लाख हेक्टेयर ज़मीन पर नारियल की खेती करते रहे हैं। इनमें से ज्यादातर छोटे और सीमांत किसान हैं। छोटे किसानों को ही इस समय कंगाली का सामना करना पड़ रहा है। नारियल किसानों को चूंकि पैसे की गंभीर किल्लत का सामना करना पड़ रहा है, इसलिए नारियल खेतों में कामकाज लगभग बंद हो गया है। इससे दैनिक मजदूरों के लिए भी अपनी रोजी-रोटी कमाना मुश्किल हो गया है।

एक नारियल का औसत मूल्य इस समय लगभग दो रुपए है जबकि इस साल जनवरी में यह मूल्य 7.80 रूपए था। केरल में हर साल 6.6 अरब नारियल का उत्पादन होता है। केरल के नारियल किसानों को बचाने के लिए यदि तत्काल कदम नहीं उठाए गए तो राज्य में सामूहिक आत्महत्या की घटनाओं मे भारी बढ़ोत्तरी होने का खतरा पैदा हो जाएगा। नारियल और इसके उत्पादों के मूल्य में भारी गिरावट होने से केरल को 20 अरब रुपए का नुकसान होगा।

श्रीलंका, फिलीपींस और इंडोनेशिया से खुले सामान्य लाइसेंस के तहत नारियल, नारियल तेल और नारियल के अन्य उत्पादों का आयात किया गया जिससे स्थिति और भयावह हो गई हैं। नारियल के उत्पादन में उस समय बढ़ोत्तरी हुई हैं जब राज्य में इसका उत्पादन घटने की आशंका जताई जा रही थी।

करोड़ टन हो जाएगी। सन् 2001 में भारत में 9.4 करोड़ टन चावल, 7.57 करोड़ टन गेंहू, 1.82 करोड़ टन दालें लगभग 3.26 करोड टन दूसरे अनाजों की मांग होगी। छोड़कर दूसरे खाद्य पदार्थों में 79 लाख टन खाद्य, 9.36 करोड़ टन सब्जियां, 5.37 करोड़ टन फल 1.68 करोड़ टन दूध, 46 लाख टन मांस तथा अंडे 75 लाख टन मछलियों की भी मांग होगी।

इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उत्पादन , पर ध्यान देना होगा और उपलब्ध भूमि पर ही बढ़ाने की योजना बनानी होगी क्योंकि कृषि के लिए उपलब्ध भूमि में वृद्धि संभव नहीं है। अनाज के उत्पादन में उपयोग की जाने वाली भूमि में से 30 लाख हेक्टेयर भूमि दूसरे खाद्य पदार्थों के उत्पादन में लगाई जाएगी। बढ़ती हुई घरेलू और विदेशी मांग को देखते हुए राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न खाद्य पदार्थो के औसत उत्पादन में नवीं पंचवर्षीय योजना के अंत तक 50 प्रतिशत तक की बढ़ोत्तरी करनी होगी। इसके लिए देश में 2001-2 तक प्रति हेक्टेयर पर 2.2 टन चावल, 2.9 टन गेंहू, 0.83 टन दालें, 1.1 टन खाद्य तेल, 0.34 टन कपास, 80 टन गन्ना, 17.7 टन सब्जियां तथा 16.8 टन फलों का उत्पादन करना होगा। इसका अर्थ है कि इन मांगों को पूरा करने के लिए प्रति वर्ष अनाज में 2.5 प्रतिशत, दालों में 4.5 प्रतिशत, खाद्य तेलों में 3.9 प्रतिशत, कपास में 3.8 प्रतिशत, सब्जियों में 3.5 प्रतिशत तथा फलों के उत्पादन में 6 प्रतिशत की वृद्धि आवश्यक है।

सन् 2001-2 तक खाद्य पदार्थों में आत्मनिर्भर बनने के लिए चावल और गेंहू के उत्पादन में क्रमशः 2.35 और 2.22 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी होना जरूरी है। नवीं पंचवर्षीय योजना में अपेक्षित उत्पादन विकास को हम नहीं प्राप्त कर पाए हैं। इसलिए अगली सदी में निर्धारित लक्ष्य को पाने के लिए हमें काफी मेहनत करनी पड़ेगी। नई-नई खोजों और इस दिशा में बेहतर प्रयोग से ही इस लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है।

आने वाले वर्षों में अनाज के उत्पादन में विकास के लिए बेहतर रणनीति बनाने की भी आवश्यकता है। धान के उत्पादन के लिए पंजाब और हरियाणा के साथ-साथ बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश में अधिक प्रयासों की आवश्यकता है। गेंहू के लिए भी पंजाब व हरियाणा के अलावा मुख्यत: उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान और बिहार पर निर्भर रहना पड़ेगा। दालों के उत्पादन पर काफी ध्यान दिये जाने की जरूरत है। इसका उत्पादन लगभग सभी राज्यों में हो सकता है। यदि दालों के उत्पादन में निर्धारित छह प्रतिशत की वृद्धि नहीं हुई तो देश में दाल की कमी हो जाएगी। दाल के उत्पादन के लिए अधिक भूमि और बेहतर सिंचाई व्यवस्था उपलब्ध करानी होगी अन्यथा अपेक्षित विकास संभव नहीं दिखता।

बढ़ता जल संकट

कृषि क्षेत्र और देश के सर्वांगीण विकास के लिये जल महत्वपूर्ण है। जलस्रोतों का सही इस्तेमाल करके ही कृषि के क्षेत्र में उन्नति हो सकती है।

अभी तक धरती के अलावा किसी भी दूसरे ग्रह पर पानी नहीं मिला।

आदिकालीन पृथ्वी के खौलते महासागरों में ही जीवन के आदिस्वरूप का उद्‌भव हुआ था। और फिर जलचरों से जल–थल चर और फिर थलचर और नभचर इस तरह प्राणियों की सृष्टि हुई। तभी तो जीव जंतु और पेड़–पौधे सवकी देह का 75 प्रतिशत और इससे भी अधिक अंश जल ही होता है, हमारी देह का भी।

हाइड्रोजन के दो और आक्सीजन के एक परमाणु (एटम) के वनने से H_2O यानी जल का एक अणु (मोलीक्यूल) वनता है। पानी ऐसा अद्‌भुत यौगिक है जो कार्वन के साथ मिलकर कार्वोहाइड्रेट वनाता है जो अन्न, कंद, मूल और फल के रूप में सवका पेट भरते हैं। पानी तरल, ठोस वर्फ और गैसीय वाष्प तीन रूपों में मिलता है। यह एक मात्र तरल है, जो ठोस रूप ग्रहण करने पर फैलता है।

जल का एक चक्र है वर्षा के रूप में वरसना और भाप वनकर उड़ जाना, वादल वनाना और फिर वरस पड़ना। यही जल चक्र समस्त जीवन क्रियाओं का आधार है। पानी के विन

दुनिया में आवादी वढ़ने के साथ–साथ पानी की खपत वढ़ रही है। सन् 1940 में पूरे साल में लगभग 1000 घन किलोमीटर पानी इस्तेमाल हुआ था। सन् 1960 में यह दुगना हो गया। इसकी भी दुगनी खपत सन् 1990 में हुई। सन् 2000 तक इसमें 20 प्रतिशत की और वढ़ोत्तरी होगी यानी सन् 1940 के मुकावले इक्कीसवीं सदी में प्रवेश के समय पानी की खपत पांच गुनी होने लगेगी यानी 5190 घन कि.मी.।

आवादी वढ़ने से पानी की कमी कैसे पैदा होती है यह 'जल संसाधन विकास और प्रवंध' के इस्लामी नेटवर्क द्वारा किए गए सर्वेक्षण से स्पष्ट हुआ है। इसके अनुसार अव संघ के 21 देशों में पानी की न्यूनतम आवश्यकता प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष 1205 घनमीटर थी। इसमें से 55 घन मीटर घरेलू कामों के लिए और सवको पर्याप्त भोजन मिल सके इसके वास्ते कृषि कार्यों में, 1150 घनमीटर पानी की खपत आंकी गई। पर्याप्त भोजन का मतलव है साल में 375 किलोग्राम फल और सब्जी, 35 किलोग्राम मांसाहार या दालें और दूध और 125 किलोग्राम अनाज।

सन् 1985 में इन देशों में प्रतिव्यक्ति 1750 घनमीटर पानी की आपूर्ति की गई, फिर भी 21 देशों में से 12 दशों में पानी की वुनियादी जरूरत पूरी नहीं की जा सकी। आशंका है कि यहां सन् 2000 तक पानी की उपलव्धता वुनियादी जरूरत से ठीक नीचे 1000 घन मीटर रह जाएगी और सन् 2025 में प्रति व्यक्ति 600 घनमीटर ही पानी मिल पायेगा। तव अरव संघ के केवल तीन देश, इराक, मारिटानिया और लेवनान ही अपनी जरूरत पूरी कर पायेंगे। कुल मिलाकर यहां 42100 करोड़ घन मीटर पानी की कमी हो सकती है।

दुनिया के अनेक इलाकों को कुदरत ने ही पानी से वंचित कर रखा है। दक्षिण अमरीका के अराकामा नामक रेगिस्तानी इलाके में सन् 1989 से 1994 तक पांच सालों में एक वूंद भी पानी नहीं वरसा। जहां 300 मि.मी. से कम वर्षा होती है, उन्हें शुष्क क्षेत्र में गिना जाता है। दुनिया की 60 करोड़ से ज्यादा आवादी इन्हीं इलाकों में गुजर–वसर करती है। अफ्रीका में 70–80 के वाद के दशकों में सूखे के कारण 40% से ज्यादा आवादी भूख और अकाल के चंगुल में कराह उठी थी। विना वर्षा वाले सूखे मौसम में पानी के स्रोत सूख जाते हैं।

पानी में वहुत ज्यादा गंदगी हो, तो उसका होना न होना वरावर है। वड़े जमाने तक अपनी गंदगी को पानी खुद ही साफ कर लेता था। आज तो हालत यह है कि हर साल झरने और नदियां 450 घन किलोमीटर गंदा पानी ढोती है। इसको फिर से इस्तेमाल के लायक वनाने में 6000 घन किमी. साफ पानी खप जाएगा, जो इसकी गंदगी के गाढ़ेपन को पतला वनाकर वहा ले जाए। यह मात्रा धरती पर होनेवाली वर्षा का दो तिहाई है। रूसी जल विशेषज्ञ एम.आई.एल. योविच के अनुसार सन् 2000 तक गंदगी को पतला करने और वहाने में दुनिया की सारी नदियों का पानी खप जाएगा।

मनुष्य की वीमारियों और मौतों के लिए सवसे ज्यादा जिम्मेदार है गंदा पानी। गंदे पानी से फैले डायरिया की वजह से हर साल 40 लाख वच्चे मौत के शिकार होते हैं। 81 से 90 के वीच संयुक्त राष्ट्र की प्रेरणा से अंतराष्ट्रीय पेयजल आपूर्ति और स्वच्छता दशक मनाने के वावजूद विकास शील देशों में 31 प्रतिशत आवादी के पास पीने के लिए शुद्ध पानी उपलब्ध नहीं था 40 प्रतिशत आवादी स्वच्छता के मानदंडों से कोसों दूर थी। ये आंकड़े ग्रामीण क्षेत्रों में तो और भी भयावह है।

पीने के पानी में 100 मिलीमीटर में केवल 100 कालीफोर्म जीवाणु हों, तो उसे पीने योग्य माना जाता है। लेकिन इण्डोनिशया, नाइजीरिया और कोलंविया में पेयजल के नमूनों में 100 मिलीमीटर पानी में 30 लाख तक कालीफोर्म जीवाणु पाये गये हैं। संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित जल सम्मेलन में गंदे पानी से 30 खतरनाक वीमारियां जुड़ी वताई गई। इनमें से अनेक रोग घेंघे, मच्छर और ऐसे कीड़ों द्वारा होते हैं, जो पानी में ही वसेरा करते हैं। आंत्रशोथ ऐसा ही रोग है जो हर साल लगभग 40 करोड़ लोगों को मुसीवत में डालता है। 16 करोड़ लोग मलेरिया के चंगुल में फंसते हैं। विश्व वैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार 'सहारा के [illegible] अफ्रीका में दूषित पेय जल और गंदे रहन–सहन क[illegible]

संक्रामक और परजीवी रोग इतने ज्यादा बढ़ गए हैं कि तमाम मौतों में से 62% इन्हीं की वजह से होती हैं।

दुनिया का ज्यादातर मीठा पानी जमीन के अंदर जमा है। सहारा और अरब के रेगिस्तानों के नीचे पानी के विशाल स्रोत छुपे हैं। अनेक देश भूमिगत पानी से अपनी जरूरतें पूरी करते हैं। इनमें भारत और चीन मुख्य है। भू जल के इन स्रोतों पर भी बराबर दबाव बढ़ रहा है। जो तालाब और कुएं सदियों से आदमी की प्यास बुझा रहे हैं, वे या तो सूख रहे हैं या उनमें पानी बहुत गहरा चला गया है। चीन की राजधानी बीजिंग में साल भर में ही इतना भू-जल इस्तेमाल किया गया कि वहां पानी का स्तर एकदम चार मीटर नीचे चला गया। भारत में महाराष्ट्र में गन्ने के खेतों और चीनी मिलों ने इतने नलकूप (ट्यूबवेल) लगा दिए कि तालगांव तालुके के 2000 के करीब कुएं सूख गए। इससे कोई 23,000 गांव प्रभावित हुए और वहां पीने का पानी दुर्लभ हो गया।

आजादी के समय हमारे देश में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता 5326 घनमीटर प्रतिवर्ष आंकी गई थी, जो कि 1991 में घटकर 2267 घनमीटर रह गई। सन् 1990 में सभी क्षेत्रों में पानी की मांग 550 घन कि.मी. की थी। 2000 तक यह बढ़कर 750 घन कि.मी. और 2025 तक 1050 घन कि.मी. होने की आशंका है। इसका सबसे बड़ा कारण है बढ़ती आबादी, जो अब 100 करोड़ से ऊपर जा पहुंची है। हर साल वर्षा और बर्फ के रूप में भारत को 4000 घन कि.मी. पानी मिलता है। लेकिन वर्षा हर जगह एक सी नहीं होती। राजस्थान में 100 मि.मी. औसत वर्षा से लेकर मेघालय में चेरापूंजी में 11000 मि.मी. तक वर्षा दर्ज की गई है, जो कि विश्व का सर्वाधिक वर्षा का रिकार्ड है। लेकिन वर्षा का अधिकतर जल बह जाता है और नदियों, तालाबों कुओं और बावड़ियों वगैरह में धरातल पर 1669 घन किलोमीटर पानी बचा रहता है। लेकिन से भी 690 घन किलोमीटर पानी ही विविध उपयोगों लिए उपलब्ध हो जाता है। इसमें सिंचाई के लिए 360 न किलोमीटर भू जल मिलता है। भू जल और जमीन के ऊपर उपलब्ध पानी को मिलाकर खेती के लिये 1050 घन किलोमीटर पानी की उपलब्धता है। 1985 में सिंचाई में 87 प्रतिशत पानी की खपत थी और बाकी कामों में 13 प्रतिशत पानी इस्तेमाल किया जा रहा था। लेकिन 2025 तक बाकी कामों में पानी का इस्तेमाल बढ़कर 27 % तक पहुंच जाएगा।

विशेषज्ञों के अनुसार विविध क्षेत्रों में पानी की मांग बढ़ने से जल संकट का पूरा असर देश में 2007 से दिखाई देने लगेगा। 2025 में सिंचाई के लिए कुल उपलब्ध जल का मात्र 64.7 % ही मिल पाएगा, जब कि सिंचाई के लिए पानी की मांग बहुत बढ़ जाएगी। हमारे यहां नदियों के 20 कछार हैं। सबसे अधिक पानी 18061 घनमीटर प्रतिव्यक्ति ब्रह्मपुत्र के कछार में उपलब्ध रहता है, जबकि साबरमती में 360 घनमीटर, पेन्नार और कन्याकुमारी में 366 घनमीटर और कावेरी नदी के कछार में 928 घनमीटर पानी प्रतिव्यक्ति की उपलब्धता है।

नदियों के पानी को नहर बनाकर जहां नदी नहीं है, वहां पहुंचाने का सिलसिला बड़ा पुराना है। मुगलों के जमाने में यमुना नहर और आगरा नहर बनाई गई थीं। इनसे हिमालय का पानी पंजाब, उत्तर प्रदेश और राजस्थान ले जाया गया। 19 वीं सदी में कुरनूल-कड़प्पा नहर और पेरियार बेगल नहर बनी और 20 वीं सदी में इंदिरा गांधी नहर बहुत बड़ा प्रयास था। लेकिन अब तो जल संकट इतना बढ़ गया है कि दो राज्यों के बीच से नहर जा रही है, जो राज्य ऊपर वाले इलाके हैं, वे नीचे के राज्य की ओर के हिस्से में पानी देने में आनाकानी करने लगे हैं। इस समय ऐसे अन्तर्राज्यीय नदी विवादों की संख्या नौ है। इनमें से तीन पर उच्चतम न्यायालय विचार कर रहा है।

पंचवर्षीय योजनाओं में सिंचाई के साधन विकसित करने पर शुरू से ही बल दिया गया। 1950-51 में सिंचित क्षेत्र 2 करोड़ 26 लाख हेक्टर था, जो 1994 तक बढ़कर 8 करोड़ 40 लाख हेक्टर हो गया। सन् 1999 तक 8 करोड़ 49 लाख हेक्टर क्षेत्र में सिंचाई की व्यवस्था की गई है। सिंचाई आयोग के अनुसार इसे लगभग 13 करोड़ हेक्टर तक बढ़ाया जा सकता है। इसके लिए बड़े बांध बनाए गए, नहरें निकाली गई, नलकूप लगाए गए और कुएं खोदे गए। आजादी के समय छोटे-बड़े 300 बांध थे। अब इनकी संख्या 4,300 हो गई है, जिनमें से 700 बांध बनाए जा रहे हैं।

सन् 1950 से अब तक सारी दुनिया में 36000 से अधिक बड़े बांध बनाए जा चुके हैं। यूरोप, अफ्रीका और उत्तरी अमरीका में 40 प्रतिशत वर्षा जल बांध बनाकर रोका गया है। जापान में 109 नदियों में से सिर्फ एक बची है, जिस पर कोई बांध नहीं है। सन् 1960 के बाद के दशक में हर साल दुनिया भर में 500 से अधिक नए बांधों का निर्माण शुरू किया जाने लगा। बड़े बांध की जगह छोटे बांध ओर जगह-जगह तालाब, बावड़ियों और कुंओं का इंतजाम करना सिंचाई और पेयजल दोनों जरूरतों को पूरा करने का, साथ ही ऊर्जा की व्यवस्था का सबसे बेहतर तरीका है। धरती की करीब एक तिहाई जमीन शुष्क और अर्धशुष्क इलाकों ने घेरी हुई है, जो वर्षा पर निर्भर है। यहां किसान बारानी खेती करते हैं। जहां बारिश हो और वहां से जहां तक पानी बहकर जाए, वह वाटर शेड या जलागम क्षेत्र या जल संभर क्षेत्र कहा जाता है। भारत में कृषि क्षेत्र का 67 प्रतिशत बारानी है। अगर सिंचित क्षेत्र बढ़ाने की संभावना अर्जित कर ली जाए, तो भी आधा कृषि क्षेत्र बादलों की बाट जोहता मौसम का जुआ बना रहेगा। सन् 1994 की रपट के अनुसार छोटे अनाजों की खेती का 95 प्रतिशत क्षेत्र, दलहनों का 91 प्रतिशत क्षेत्र, तिलहनों का 80 प्रतिशत क्षेत्र, कपास का 65 प्रतिशत क्षेत्र और धान का 53 प्रतिशत कृषि क्षेत्र बारानी है। यहां किसान को साल में 75 दिन ही मिलते हैं, फसल उगाने के लिए। ज्यादातर किसान साल में एक ही फसल उगाते हैं।

मौसम की इस दगाबाजी का असर खेती पर ही नहीं उद्योगों, ऊर्जा-संसाधनों और पेयजल स्कीमों सभी पर पड़ता है। पेयजल की आपूर्ति के लिए भारत सरकार ने सन् 1986 में राजीव गांधी राष्ट्रीय पेयजल मिशन बनाया था। सन्

1991 में इस तकनीकी मिशन का नाम बदलकर राष्ट्रीय पेयजल मिशन कर दिया गया। जल की कमी वाले 55 जिलों को चुनकर काम शुरू किया गया। पानी के स्रोतों का पता लगाने, पानी की गुणवता की जांच और समस्याग्रस्त पानी को सुधारने के लिए अनेक उप मिशन बनाए गए। पांचवीं योजना के अंत तक लगभग 94,000 समस्याग्रस्त गांवों की पेयजल की आपूर्ति के लिए कम से कम एक हैंडपंप लगाया गया। छठी योजना तक इनमें से 1 लाख 92 हजार गांवों को कवर किया गया। फिर से सर्वेक्षण करने पर पता चला कि सातवीं योजना में कवर करने के लिए 1 अप्रैल 1985 के आंकड़ों के हिसाब से 1 लाख 62 हजार समस्याग्रस्त गांव थे।

पीने के पानी में भारत के अनेक इलाकों की अपनी-अपनी समस्याएं रही हैं। सन् अस्सी के बाद के दशक में पश्चिम बंगाल के आठ जिलों में भूजल में संखिया (आर्सेनिक) होने की शिकायत मिली। 10 राज्यों के 150 जिलों में और केन्द्र शासित दिल्ली प्रदेश में पेयजल में फ्लोराइड की समस्या का पता चला। उत्तर पूर्वी राज्यों के पानी में लोहा जरूरत से ज्यादा है। राजस्थान में गिनीवर्म की समस्या ने विकराल रूप ग्रहण कर लिया था। अंतिम समस्या से तो राष्ट्रीय पेय जल मिशन के तहत पूरी तरह निपट लिया गया है और देश गिनीवर्म से मुक्त हो गया है। पानी का खारापन दूर करने के भी 150 संयंत्र शुरू किए गए हैं। कुल 194 लगाये जाने हैं। फ्लोराइड हटाने की तकनीक खोज ली गई है जो नालगोंडा तकनीक के नाम से मशहूर हैं। पानी में से लोहा हटाने के 16316 संयंत्र स्वीकृत हुए थे, जिनमें से लगभग 10 हजार लग चुके हैं। पश्चिम बंगाल में भू-जल में से संखिया हटाने के लिए 1777 लाख 56 हजार रुपये की जलापूर्ति योजना चल रही है। स्वच्छ जल आपूर्ति पर अनुसंधान की 84 से अधिक अनुसंधान और विकास परियोजनाएं चल रही हैं, जिनमें 40 से अधिक संगठनों को शामिल किया गया है।

प्रमुख सिंचाई परियोजनायें

बार्गी परियोजना (मध्य प्रदेश): यह बहुउद्देशीय परियोजना है इसमें जबलपुर जिले में बार्गी नदी पर सोनरी बांध और नहर है।

ब्यास (हरियाणा, पंजाब और राजस्थान का संयुक्त उपक्रम): इसमे ब्यास व सतलुज को जोड़ने के साथ पोंग में ब्यास बांध सम्मिलत है।

गंडक (बिहार व उत्तर प्रदेश का संयुक्त उपक्रम): इस परियोजना से नेपाल भी कृषि व विद्युत का लाभ उठाता है।

घाटप्रभा (कर्नाटक): बेलगांव व बीजापुर जिले के बीच घाटप्रभा पर एक परियोजना।

भद्रा (कर्नाटक): भद्रा नदी पर बहुउद्देशीय परियोजना।

भीम (महाराष्ट्र): इसमें दो बांध हैं एक पुणे जिले में फागने के निकट पवाना नदी पर व दूसरा शोलापुर जिले में उज्जैन के निकट कृष्णा नदी पर है।

चंबल (मध्य प्रदेश व बिहार का.संयुक्त उपक्रम): इस परियोजना मे गांधी सागर बांध, राणा प्रताप सागर बांध और जवाहर सागर बांध हैं।
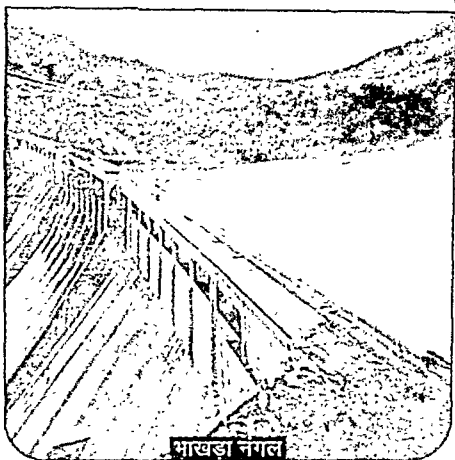
भाखड़ा नंगल

भाखड़ा नंगल (यह हरियाणा, पंजाब और राजस्थान का संयुक्त उपक्रम है) : भारत का सबसे बड़ा बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना।

इसमें भाखड़ा में सतलुज पर बांध एवं नांगल हायडल चैनल के साथ दो भाखड़ा बांध पर दो विद्युत गृह व गंगुवाल व कोटमा में दो विद्युत गृह हैं।

फरक्का (प. बंगाल): इस परियोजना को कलकत्ता बंदरगाह की देखभाल, संरक्षण और हुगली में नौपरिवहन में सुधार के लिये शुरू किया गया था। इसमें गंगा नदी में फरक्का पर बैरेज, भागीरथी पर बैरेज व जांगीपुर बैरेज के नीचे गंगा के पानी को भागीरथी में मिलाने के लिये चैनेल है।

हसदेव बांगो परियोजना (मध्य प्रदेश): यह हसदेव बांगो परियोजना का तीसरा चरण.है। इसमें हसदेव नदी पर पत्थर का बांध बनाना है। इस परियोजना का पहला व दूसरा चरण पूरा हो चुका है।

दामोदर घाटी परियोजना (पं. बंगाल व बिहार) : पश्चिम बंगाल व बिहार में कृषि, बाढ़ को रोकने व विद्युत उत्पादन के लिये बहुउद्देशीय परियोजना। इसमें कोनार, तिलाइया, मैइथन और पंचेट में बहुउद्देशीय बांध हैं। जल विद्युत स्टेशन कोनार, तिलाइया, मैइथन और पंचेट में हैं। दुर्गापुर मं बैरेज व बोकारो, चंद्रपुरा और दुर्गापुर में

दामोदर घाटी परियोजना, मैइथन

हीराकुड बांध
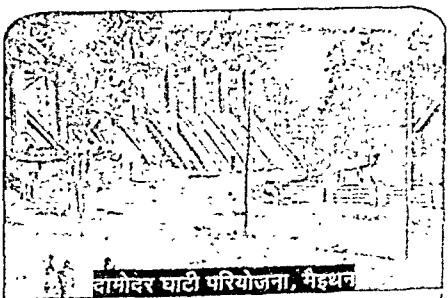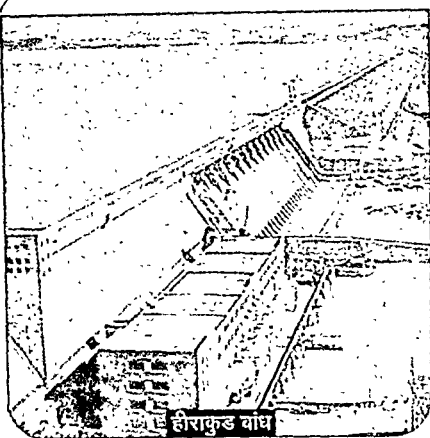
थर्मलपावर हाउसेज हैं। परियोजना का प्रशासन दामोदर घाटी निगम करता है।

हीराकुड (उड़ीसा): महानदी पर विश्व का सबसे बड़ा बांध बनाया गया है।

जयाकवाडी (महाराष्ट्र): गोदावरी नदी पर पत्थरों से बना बांध।

ककरापार (गुजरात): सुरत जिले में ककरापार के निकट ताप्ति नदी पर बांध।

कंगसाबाटी (प. बंगाल): इस परियोजना में कंगसाबाटी व कुमारी नदी पर बांध बनाने हैं।

कर्जन (गुजरात): भरूच जिले के नंदू तालुक के जीतगढ़ के निकट कर्जन नदी पर पत्थरों का बांध बनाना है।

कोसी (बिहार): बिहार व नेपाल के लिये बहुउद्देशीय रियोजना।

कृष्णा परियोजना (महाराष्ट्र): कृष्णा नदी पर ढोम गांव के निकट बांध व सतना जिले के कन्हार गांव के निकट वर्मा नदी पर बांध बनाना है।

कुकाडी परियोजना (महाराष्ट्र): पांच अलग संग्रहण बांध – योदगांव, मानिकदोही, दिम्भा, वादाज और पिंपलगांव जोग। नहर प्रणाली में हैं – कुकाडी, सिम्भा, दिम्भा, मीना फीडर और मीना ब्रांच।

लेफ्ट बैंक घाघरा कैनाल (उत्तर प्रदेश): गिरिजा बैराज से घाघरा नदी के बाईं तट से लिंक चैनल जो सरयू नदी को जोड़े।

मध्य गंगा नहर (उत्तर प्रदेश): बिजनौर जिले में गंगा नदी पर बैराज।

महानदी डेल्टा योजना (उड़ीसा): हीराकुड रिजर्ववायर से छोड़े गये पानी का कृषि के लिये उपयोग।

महानन्दी रिजर्ववायर परियोजना (मध्य प्रदेश): इसके तीन चरण हैं –

1. रविशंकर सागर परियोजना और भिलाई इस्पात संयत्र में जलापूर्ति के लिये फीडर कैनाल सिस्टम,
2. महानदी फीडर कैनाल का विस्तार, 3. पैरी बांध।

माही (गुजरात): यह परियोजना दो चरणों की है। एक वानकयोरी गांव के निकट माही नदी पर और कनादा गांव के निकट माही नदी पर बांध।

मालाप्रभा (कर्नाटक): बेलगांव जिले में मालप्रभा नदी पर बांध।

मयूरक्षी (प. बंगाल): कनाडा बांध से सिंचाई और जल विद्युत परियोजना।

नागार्जुनासागर (आंध्र प्रदेश): हैदराबाद से लगभग 44 किलोमीटर दूर नांदिकोना गांव में कृष्णा नदी पर बांध।

पनम (गुजरात): पंचमहल जिले में केलेडेजर गांव के निकट पनम नदी पर बांध।

परंबिकुलम अलियार (तमिलनाडु व केरल का संयुक्त उपक्रम): इस परियोजना में अन्नामलाई पाड़ियों की 6 व 2 मैदानी नदियों के पानी का कृषि के लिये उपयोग करना।

पोकमपाद (आंध्र प्रदेश): गोदावरी नदी पर बांध।

राजस्थान कैनाल (अब इंदिरा गांधी कैनाल) : 650 किलोमीटर लम्बी कैनाल पोंग बांध से छोड़े गये पानी को प्रयुक्त करती है और राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराती है। इसमें राजस्थान फीडर कैनाल (पहले 167 किलोमीटर पंजाब व हरियाणा, शेष 37 किलोमीटर राजस्थान) मुख्य 445 किलोमीटर कैनाल राजस्थान में है।

रामगंगा (उत्तर प्रदेश): गढ़वाल जिले में गंगा नदी की सहायक नदी रामगंगा पर बांध का निर्माण। परियोजना में केंद्रीय व पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बाढ़ के प्रकोप को कम करना और दिल्ली जलापूर्ति योजना में जल की आपूर्ति करना है।

साबरमती (गुजरात): मासाणा जिले में धारी गांव में साबरमती नदी पर संग्रहण बांध व अहमदाबाद के निकट वास्रा बैरेज का निर्माण।

शारदा सहायक (उत्तर प्रदेश): इस परियोजना में घाघरा नदी पर बैराज, एक लिंक चैनल, शारदा नदी पर बैराजऔर एक फीडर कैनाल का निर्माण जो गोमती और साई नदियों कृत्रिम जल प्रयाण का कार्य करे।

सोन हाई लेवल कैनाल (बिहार): सोन बैराज परियोजना का विस्तार।

तावा (मध्य प्रदेश): होशंगाबाद जिले में नर्मदा की सहायक नदी तावा पर एक परियोजना।

टेहरी बांध (उत्तर प्रदेश): टेहरी जिले में भगीरथी नदी पर बांध।

थेन बांध (पंजाब): रावी नदी पर बांध और इसके पश्चिमी तट पर विद्युत संयत्र।

थुंगभद्रा (कर्नाटक व आंध्र प्रदेश का संयुक्त उपक्रम): थुंगभद्रा नदी पर परियोजना।

उकाई (गुजरात): उकाई गांव के निकट ताप्ती नदी पर बहुउद्देशीय परियोजना।

अपर कृष्णा (कर्नाटक): कृष्णा नदी पर नारायणपुर बांध पर परियोजना और अलमाट्टी बांध।

अपर पेनगंगा (महाराष्ट्र): यावतमल जिले में इसापुर के निकट पेनगंगा नदी पर दो रिजर्ववायर और परभानी जिले रायाधु नदी पर दूसरा।

योजना

भारत में योजना अपना उद्देश्य संविधान में निहित नीति [illegible]र्देश तत्व के सामाजिक वायदों से प्रेरणा लेकर पूरा करता [illegible]। योजना आयोग का गठन 1950 में देश की जरूरतों व [illegible]ोतों का अध्ययन करते हुए विकास की रूपरेखा वनाने को [illegible]ा।

पूर्व में आर्थिक योजना का उद्देश्य सार्वजनिक उपक्रमों को [illegible]ढ़ावा देते हुए आधारीय व वृहद उद्योगों में वड़ा निवेश करने [illegible]ी थी। लेकिन अव योजना का उद्देश्य सार्वजनिक उपक्रमों पर [illegible]म ध्यान देते हुए देश के सामान्य आर्थिक विकास की है।

पहली योजना – 1951–56: पहली योजना में कुल [illegible]यय 1396 करोड़ रुपये का था। यह वहुत अस्त–व्यस्त [illegible]यास था क्योंकि योजना आयोग के पास काम करने के लिये [illegible]ोई विश्वसनीय आंकड़े नहीं थे। फिर योजना को विभिन्न [illegible]रकारी विभागों के चल रहे क्रियाकलापों से भी आवद्ध [illegible]रना था। इसलिये अलग–थलग परियोजनाओं को जोड़–[illegible]ाड़ लिया गया। इस पर भी इस योजना का राष्ट्रीय स्वरूप [illegible]ा और यह वुद्धि संगत परिकल्पना पर आधारित थी। इसमें [illegible]ृषि, सिंचाई, विजली, परिवहन पर वल दिया गया था ताकि [illegible]विष्य में तीव्र औद्योगिक विकास के लिए ढांचा तैयार हो सके। [illegible]ह योजना आशा से भी अधिक सफल हुई क्योंकि इसके अन्तिम [illegible]ो सालों में वहुत अच्छी फसल की पैदावार हुई।

दूसरी योजना–56–61: यह योजना देश की वहुत ऊंची छलांग थी। इसमें भारी उद्योगों पर वल दिया गया। औद्योगिक नीति के प्रस्ताव में ऐसे संशोधन किये गये जिससे विकास की प्रथम जिम्मेदारी लोक–क्षेत्र के माथे पर रखी जा सके। निजी क्षेत्रों को उपभोक्ता उद्योग दिये गये। लेकिन योजना में आयात को जिस परिमाण में रखा गया उससे भारत का विदेशी–मुद्रा कोष खप–सा गया; करीव 500 करोड़ की विदेशी मुद्रा रुकी जिससे भारी पैमाने पर विदेशी सहायता लेनी पड़ी। कृषि और लघु उद्योग जहां के तहां रहे।

तीसरी योजना–61–66: दो योजनाओं से देश की अर्थ–व्यवस्था मे जिस प्रकार भी चतुर्मुखी वृद्धि हुई, उसके कारण यह तीसरी योजना वड़ी–वड़ी महत्वाकांक्षाओं के शिखर पर तैयार हुई। तीसरी योजना में देश की अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर वनाने का लक्ष्य रखा गया। घरेलू साधनों का पूरा दोहन हो जाने के कारण इस योजना में भारी विदेशी सहायता पर निर्भर होना पड़ा।

तीसरी योजना के दौरान राष्ट्रीय आय पहले चार वर्षों में वढ़ती रही यानि सन् 60–61 की कीमतों के आधार पर इससे 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई मगर पांचवे वर्ष में राष्ट्रीय आय 5.6 प्रतिशत गिर गई। प्रति व्यक्ति आय [illegible] 61 में थी वही सन् 65–66 में भी रही। [illegible] अवनति और कर्ज की वढ़ती हुई जिम्मेदारियों के [illegible] अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा निधि से अधिक से अधिक कर्ज [illegible] जून 1966 में मुद्रा का अवमूल्यन हुआ मगर इससे भी खास फायदा नहीं हुआ। तीसरी योजना ठप्प हो गई।

अन्तरिम योजना: तीसरी योजना ठप्प हो जाने के कारण, योजना आयोग लोगों की निगाहों में गिर चुका था और कई तरफ से मांग होने लगी कि योजनाओं से हाथ धो लिया जाए। लेकिन सरकार या योजना–आयोग असफलता को स्वीकार करने को तैयार नहीं हुये। उन्होंने योजनाओं से हाथ खींच लेने की मांग ठुकरा दी और वे सन् 66–67 से ही नई योजना वनाने लगे। लेकिन अर्थव्यवस्था इतनी खराव थी कि चौथी योजना समय पर यानि सन् 1966 में शुरु नहीं की जा सकी। इसलिए योजना सालाना कर दी गई। सालाना योजनायें सन् 1966 से 1969 तक चलती रहीं।

चौथी योजना – 1969–74: आधिकारिक तौर पर चौथी योजना 1 अप्रैल 1969 को आरंभ हुई क्योंकि उसी दिन प्रारूप–योजना प्रकाशित हुई। इस योजना का लक्ष्य "स्थिरता के साथ वृद्धि" था। कृषि के वारे में उम्मीद की गई कि प्रति वर्ष 5 प्रतिशत के हिसाव से वृद्धि होगी और कृषि में ऐसी वढ़ोत्तरी अर्थव्यवस्था को हर ओर से प्रभावित करेगी। उद्योग में प्रति वर्ष 9 प्रतिशत वृद्धि की दर का लक्ष्य रखा गया। आशा की गई कि राष्ट्रीय आय प्रतिवर्ष 5.5 प्रतिशत के हिसाव से वढ़ेगी वढ़ती जनसंख्या को देखते हुये जो 2.5 प्रतिशत प्रति वर्ष थी, अनुमान लगाया गया कि प्रति व्यक्ति आय प्रति वर्ष 3 प्रतिशत वढ़ेगी यानि योजना अवधि में 16 प्रतिशत वढ़ जाएगी।

पांचवीं योजना – 74–79: योजना–प्रारूप पहले [illegible] लम्वी अवधि के परिप्रेक्ष्यगत योजना के रूप में तैयार [illegible] गया था जिसमें सन् 74–75 से 85–86 तक के [illegible] की अवधि ली गई। इस योजना में गरीवी हटाने के [illegible] को ध्यान में रख कर अर्थव्यवस्था के विभिन्न [illegible] समन्वित करने का [illegible] था। इसमें अर्थ–[illegible] अवधि की वृद्धि–दर का अनुमान प्रतिवर्ष [illegible] लगाया गया

[illegible]

इसमें प्रति वर्ष योजना के पिछले वर्ष के काम का आंकलन किया जाना था जिसके आधार पर दूसरे वर्ष के लिये नई योजना तैयार होगी । यह योजना वार्षिक योजना के रूप में और रद्द की गई पांचवीं योजना की श्रृंखला के रूप में 78-79 में आरंभ हुई।

छठी योजना -(1980-81-1984-85): योजना की पिछली तीन दशाब्दियों के हानि-लाभ का मनन करके यह तैयार किया गया । छठी योजना का वास्तविक व्यय 1,09,291.7 करोड़ रुपये (वर्तमान कीमत से) है जिसमें लोक क्षेत्र पर कुल व्यय 97,500 करोड़ (79-80 की कीमत) है । इससे औसत रूप से 12 प्रतिशत वृद्धि हो गई । छठी योजना में औसत वार्षिक वृद्धि दर 5.2 प्रतिशत आंकी गई है और यह दर योजना अवधि की वृद्धि-दर के समरूप है ।

सातवीं पंचवर्षीय योजना(1985-90): इसमें कुल खर्च 348148 करोड़ था जिसमें लोकक्षेत्र पर खर्च 180000 करोड़ है । जिसकी औसत घरेलू उत्पादन का इस वर्ष की समाप्ति पर 5.4 से 5.5 प्रतिशत के बीच रहने की सभावना थी । 1989-90 के लिये योजना में 34 445 97 करोड रु.केन्द्र के लिये, 22,292.65 करोड़ रु राज्यों के लिये और 859.90 करोड़ केन्द्र शासित प्रदेशों के लिये निर्धारित किये गये हैं । आर्थिक योजना, योजना आयोग के जिम्मे है । भारत सरकार ने सन् 1950 में योजना आयोग की स्थापना देश के साधनों के सर्वाधिक प्रभावी और सन्तुलित पयोग के लिये की। तय से योजना आयोग देश के विकास में एकछत्र भूमिका निभा रहा है।

आठवीं योजना (1992-97) - सकल घरेलू उत्पादन 5.6 पर: योजना दस्तावेज के अनुसार सकल घरेलू उत्पाद में 5.6 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि के लक्ष्य को उसी प्रकार रखा गया था । निर्यात दर को भी 13.6 प्रतिशत/वार्षिक की दर पर स्थिर रखा गया । जबकि आयात वृद्धि को सकल घरेलू उत्पादन के 8.4 प्रतिशत पर सीमित किया गया। आर्थिक स्थिति में बचत औसत को भी 21.6 प्रतिशत रखा गया और यह माना गया कि सरकार द्वारा खर्च में कटौती में कुल सकल घरेलू उत्पादन का 1.1 प्रतिशत कम रहेगी जब कि योजना दस्तावेज में इसे 1.43 प्रतिशत माना गया था ।

1991-92 में सरकार की खर्चों में कटौती सकल घरेलू उत्पादन का 2 3 प्रतिशत थी ।

विदेशी कोष के भारत में आने की ऊंची संभावनाओं के देखते हुए आयोग ने आठवीं योजना का कुल विनियोग 7,98,000 करोड तक बढ़ा दिया था। ।

पच वर्षीय योजना में दो वर्षों का स्थगन वर्ष 1990-91 और 1991-92 के वित्तीय वर्ष को वार्षिक योजना काल मान कर किया गया । क्योंकि इस दौरान केंद्र में राजनीतिक अस्थिरता थी ।

औद्योगिक उत्पादन: आठवीं योजना में औद्योगिक उत्पादन का लक्ष्य 7 5 पतिशत रखा था जबकि पिछली योजना में 8.5 पतिशत का लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया था।

आठवीं योजना में औद्योगिक एवं खनिज कार्यक्रमों के लिये विचारे गये कुल विनियोग में 40,911 करोड़ रु. रखे गये थे।

नौवीं पंचवर्षीय योजना

केन्द्रीय कैबिनेट ने नौवीं पंचवर्षीय योजना के मसौदे को अंतिम मंजूरी दे दी। वर्ष 1997-2002 तक की अवधि वाली यह योजना 8 59 000 करोड रु. की होगी। इसमें 3,74,000 करोड़ रु का बजटीय-समर्थन होग। बाकी राशि अलग स्रोतो से जुटाई जाएगी। योजना अवधि के लिए 6.5 प्रतिशत की विकास दर निर्धारित की गई है।

यह योजना पहले से ही दो साल पिछड चुकी है। बीते दिसंबर 1996 में पूर्ण योजना आयोग ने इसके मसौदे को मंजूरी दी थी। पर भाजपा सरकार ने प्राथमिकताएं बदलने के नाम पर इसमें और समय लगाया।

मोटे तौर पर इसे दो भागों में बांटा जा सकता है। केन्द्रीय क्षेत्र की योजना राशि 4,89,000 करोड रु. होगी, जबकि राज्यों व केन्द्र शासित क्षेत्र की योजना राशि 3,70,000 करोड़ रु. के बराबर तय की गई है। इसके अलावा केन्द्र के सरकारी क्षेत्र अपने आंतरिक स्रोतों से 2,90,000 करोड़ रु. उगाहेंगे, जबकि राज्यों के लिए यह राशि 1,95,000 करोड़ रु. रखी गई है।

रेलवे, संचार व ऊर्जा जैसे क्षेत्रों से कहा गया है कि वे अपने आंतरिक संसाधनों में अच्छीखासी बढ़ोतरी करें। तभी योजना-लक्ष्य हासिल किए जा सकेंगे। इन क्षेत्रों का विशेष महत्व है, क्योंकि ये ढांचागत सुविधाएं मुहैया कराते हैं।

पहले के मसौदे में योजना विकास-दल सात फीसदी तय की गई थी, जिसे अब संशोधित कर घटा दिया गया है। आज के फैसले से नई व संशोधित विकास दर अब 6.5 प्रतिशत तय की गई है। सरकार का दावा है कि इसमें कोई आपत्ति नहीं क्योंकि योजना मसौदे को व्यावहारिक बनाए रखना है।

चूंकि निर्यात के क्षेत्र में गिरावट आई है, इससे अधिक विकास दर रख पाना संभव नहीं था। अगर निर्यात वृद्धि की सालाना दल 14-15 फीसदी बने तो सकल विकास दर सात प्रतिशत भी हासिल की जा सकती है, पर ऐसा लगता नहीं है। इसलिए पहले से ही इसे कम रखा गया।

आयोग के सचिव के अनुसार कृषि क्षेत्र में विकास दर 4.5 प्रतिशत तय की गई है। आज की बैठक में वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा ने योजना राशि में कटौती का कोई जिक्र नहीं किया, हालांकि अटकलें थीं कि वह नौवीं योजना के आकार में कटौती का प्रस्ताव करेंगे। श्री हाशिम ने बताया कि योजना मसौदे में नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन के विचारों को भी शामिल किया गया है। उन्हीं के जोर देने पर प्राथमिक शिक्षा को वरीयता दी गई है।

मसौदे का प्रारूप विभिन्न राज्य सरकारों को भेजा जा रहा है, ताकि राष्ट्रीय विकास परिषद की बैठक में वे अपनी राय व्यक्त कर सकें।

योजना राशि में 21,946 करोड़ रु. प्रधानमंत्री की विशेष कार्ययोजना के लिए रखे गए हैं।

मानव पूंजी: जवकि आठवीं योजना में मानव पूंजी के निवेश को प्राथमिकता दी गयी है । यह प्रयत्न भी किये जायेंगे कि पारिस्थितिकीय संतुलन को किसी कीमत पर नुकसान न हो।

उदारीकरण के लाभ और आगमन एवं गमन नीति में ढील में कमी आयेगी अगर सरकार मूल्यों को नियंत्रित एवं औद्योगिक उत्पादनों का वितरण करती रहेगी ।

जहां पर उत्पादन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिये हो सरकार मूल्यों के निर्धारण से स्वयं को हटाये ।

लघु एवं मध्यम उद्योग क्षेत्र के क्षेत्र के साथ सवसे वड़ी कमी आधुनिकता एवं तकनीकी सुधार का अभाव इन उद्योगों पर हावी है ।

नौवीं योजना (199702002 योजना आयोग जो कि नौवीं योजना को रूप देने में व्यस्त है के सामने दो प्रमुख उद्देश्य हैं।

1. यह सुनिश्चित करना कि कामन मिनिमम प्रोग्राम (प्रारंभिक स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षित पीने का पानी, सड़क, रोजगार और जन वितरण प्रणाली को मजवूत करना) को वर्ष 2000 तक पूरी तरह से पा लिया जाये। योजना संभावना की तलाश कर रहा है कि ऐसी संरचना का विकास, जैसे सड़क, वंदरगाह और रेल नेटवर्क हो जिससे सकल घरेलू उत्पादन के 7% वृद्धि दर के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया जाये। चालू वित्तीय स्थिति ऐसी है कि सकल घरेलू उत्पादन की तो वृद्धि दर 7.5% है लेकिन संरचना सुविधाओं की वृद्धि दर केवल 4.5% है जिससे कि विकास में वाधा पड़ रही है।

संयुक्त मोर्चे की सरकार की प्रमुख प्राथमिकता संरचना का विकास करना है। वित्त मंत्रालय ने प्रयास शुरु कर दिये हैं और इस क्षेत्र में निजी क्षेत्र को आने का निमंत्रण दिया है। आठवीं योजना में शुरु की गयी वित्तीय नीति के परिणाम नौवीं योजना में फलप्रद होंगे।

2. कृषि निवेश को वढ़ावा देना जोकि छठी योजना से ही स्थिर हैं। योजना विशेषज्ञों के अनुसार अगर सार्वजनिक क्षेत्र योजना को दुगना 3,30,000 करोड़ रु. का कर दिया जाये तो भी यह वहुत कम वृद्धि होगी।

नौवीं योजना में निजी निवेश को विशेष प्रोत्साहन दिया जा रहा है। सार्वजनिक क्षेत्र निवेश को सामाजिक क्षेत्र और निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रमों के लिये सीमित किया जा रहा है। नवीं योजना दस्तावेज में स्रोतों के संकट व उदारवादी नीतियों के परिणामस्वरूप निजी निवेश की [illegible] है। [illegible] की भावी नीति यह है कि निजी क्षेत्र का पूंजी निवेश 64% तक हो और सार्वजनिक क्षेत्र को 36% तक [illegible] रखा [illegible]।

एक साधारण अनुमान के अनुसार नौवीं योजना का [illegible] 8,80.000 करोड़ रुपये का होगा जो कि आठवीं योजना के 4,34,300 करोड़ रु. के दुगने के करीव है।

इसी के अनुरूप नौवीं योजना में निजी निवेश 5,50.000 करोड़ रु. की सीमारेखा में होगा और सार्वजनिक क्षेत्र में निवेश 3.30,000 करोड़ रु. का होगा।

आठवीं योजना में सार्वजनिक क्षेत्र व निजी क्षेत्र की [illegible] 46.54 की थी यह वात दीगर है कि न तो सार्वजनिक क्षेत्र और न ही निजी क्षेत्र ने निवेश योजना के प्रति अपने उत्तरदायित्व को पूरा किया।

जहां वित्त मंत्रालय की आशा है कि निजी क्षेत्र का नौवीं योजना में निवेश तेजी से वढ़ेगा वहीं पर योजना आयोग का मानना है कि सरकार को निजी क्षेत्र के निवेश के वारे में अधिक आशान्वित नहीं होना चाहिये विशेषकर सारभाग क्षेत्र जैसे विद्युत, वंदरगाह, सड़क और रेल परिवहन में।

ऊर्जा क्षेत्र में एक आंकलन के अनुसार नौवीं योजना में 50,000 मेगावाट विद्युत की जरूरत पड़ेगी। इसमें आंठवी योजना की 12,000 मेगावाट की शेष विद्युत उत्पादन भी शामिल है। आंठवीं योजना मे 12,000 मेगावाट विद्युत उत्पादन निजी क्षेत्र के लिये आवंटित था, लेकिन इस योजना के दौरान निजी क्षेत्र द्वारा एक भी मेगा वाट का उत्पादन नहीं किया गया था।

आयोग की गणना के अनुसार नौवीं योजना में 50,000 मेगावाट विद्युत उत्पादन के लिये 1,50,000 करोड़ रुपये के निवेश की आवश्यकता होगी। 60,000 करोड़ रुपये की आवश्यकता सड़क निर्माण के लिये होगी जिसके लिये सामाजिक क्षेत्र के पास कोई स्रोत नहीं वचेगा।

हालांकि आयोग चाहता है कि सामाजिक क्षेत्र को आगे वढ़ाया जाये लेकिन इसका यह भी मानना है कि इन क्षेत्रों के पास वड़े निवेश को निर्वाह कर पाने और आधारीय संरचना को [illegible] क्षमता नहीं है। स्थानीय संकाय जैसे कि ग्राम पंचायत केवल कुछ ही प्रदेशों में है। उनके पुनरुत्थान में चार से पांच वर्ष [illegible] ऐसी स्थितियों में सरकार को विकास और [illegible] ऊंचा करने के लिये निवेश की प्राथमिकता [illegible]

बैंक

प्राचीन काल से ही ऋण आदि के रूप में वैंकिग प्रणाली भारत में प्रचलित रही है, लेकिन आधुनिक वैंकिग का प्रत्युदय हाल की ही शताव्दी में हुआ है। व्रिटिश शासन में सवसे पहला संस्थान जिसने व्यापार के अतिरिक्त वैंकिंग व्यवसाय शुरु किया वह थे एजेंसी हाउसेस। अधिकांश एजेंसी हाउसेस 1929-32 के दौरान वंद हो गये। 1930 व 40 के [illegible]

रहे थे। इनमें तीन [illegible] संकट के कारण 19[illegible] इंडिया वने।

पहला [illegible] इसकी [illegible] में पंजाव [illegible]

के गठन के लिये लोगों को प्रोत्साहित किया। 1913-17 में वैंको के संकट और 1949 में विभिन्न प्रांतो में 588 बैंकों के बंद हो जाने से जरूरत महसूस की गयी कि व्यवसायिक बैंको को सुचारु रूप से चलाने व नियंत्रित करने के लिये विधि-विधान बनाये जायें। बैंकिंग कंपनी (निरीक्षण विधेयक) जनवरी 1946 में पारित किया गया और दी बैंकिंग कंपनी एक्ट (शाखाओं पर नियंत्रण) फरवरी 1946 में पारित किया गया। जिसे बाद में संशोधित कर बैंकिंग रेगुलेशन एक्ट कहा गया।

आर्थिक विकास के लिये राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने के लिये और सामाजिक उत्तरदायित्वों को पूरा करने के लिये सरकार ने 19 जुलाई 1969 को एक अध्यादेश जारी किया। जिसके अंतर्गत देश के प्रमुख 15 बैंक जिनकी प्रत्येक की जमा 50 करोड़ थी को राष्ट्रीयकृत किया गया। बाद में 6 अन्य व्यवसायिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया।

सार्वजनिक उपक्रम के बैंक सार्वजनिक उपक्रम के बैंकों के कार्यकाज में सुधार धीमें लेकिन दृढ़ता के साथ दिखाई पड़ रहा है। बैंक के क्षेत्र में नरसिम्हा समिति-2 के परामर्शों के आधार पर भारतीय रिजर्व बैंक ने 30 अक्टूबर 1998 को पूंजी व ऋण नीतियों की मध्यावधि समीक्षा के लिये अनेक निर्णय लिये।

निजी क्षेत्र के बैंक 31 मार्च 1997 तक निजी बैंकों ने समूह के रूप में 695.09 करोड़ रुपये का लाभ अर्जित किया। 1996 में 533.69 करोड रुपये का लाभ अर्जित किया था। 1995-96 में उदारीकरण के बाद नये खुले निजी बैंकों का लाभ 191.90 करोड रुपये रहा।

विदेशों में शाखाये राष्ट्रीयकृत 12 बैंकों की 1984 मे 4 देशों मे 141 शाखाये थीं। वर्तमान में 8 सार्वजनिक बैंक निजी बैंक की 26 देशों में 98 शाखाये है। इसके 15 प्रतिनिधित्व कार्यालय, 7 सयुक्त उपक्रम व 11 हैं। 31 मार्च 1997 तक विदेश मे शाखाओं की बैलेंस शीट 20,872 मिलयन अमरीकी डालर की

बैंकों की मजबूती कैपिटल एडीक्वेसी नार्म वर्ष 95-96 ...ये 27 राष्ट्रीयकृत बैंको से रिजर्व बैंक आफ इडिया को ...गयी सूचना के अनुसार 19 बैंकों ने सी आर ए.आर का 8 प्रतिशत प्राप्त कर लिया था, 3 बैंक 4 से 8 प्रतिशत (आंध्र बैंक, इंडियन ओवरसीज बैंक और यूको बैंक), 4 बैंक 0 से 4 प्रतिशत (युनाइटेड बैंक आफ इडिया, विजय बैंक, पंजाब एड सिंध बैंक और संट्रल बैंक आफ इंडिया) की सी ए आर प्राप्त कर ली थी।

निजी क्षेत्र में नये बैंकों का आगमन जनवरी 1993 मे नये नये निजी बैंको के लिये दिशानिर्देशों के जारी होने के बाद रिजर्व बैंक आफ इंडिया ने सिद्धांत रूप से निजी स्वामित्व वाले 13 नये घरेलू बैंको को स्वीकृत दी। इनकी सूची रजिस्टर्ड आफिस के साथ इस प्रकार है:- 1. यू.टी.आई. बैंक लिमिटेड, अहमदाबाद, 2. इंदुस इंडिया बैंक लि., पुणे, 3 आई.सी.आई.सी.आई. बैंक लि., बड़ौदा, 4. ग्लोबल ट्रस्ट बैंक लि., सिकंदराबाद, 5. एच.डी.एफ.सी. बैंक लि., मुंबई, 6 सेंचुरियन बैंक लि. पानाजी, गोवा, 7. बैंक आफ पंजाब लि., चंडीगढ़, 8. टाइम्स बैंक लि., फरीदाबाद, 9. आई.डी.बी.आई. बैंक लि., इंदौर, 10. डेवलपमेंट क्रेडिट बैंक लि., मुंबई।

भारतीय औद्योगिक विकास बैंक इस बैंक की स्थापना जुलाई 1964 में रिजर्व बैंक के स्वामित्व में अधीन बैंक के रूप में हुई लेकिन 16 फरवरी, 1976 को इसे रिजर्व बैंक से अलग कर दिया गया। लेकिन अब भी इस बैंक में रिजर्व बैंक के मनोनीत लोग होते हैं। 1996-97 में स्वीकृत औसत मदद में 4.2% की गिरावट रही जबकि पिछले वर्ष की तुलना में वितरण। 1,439 करोड़ रुपये का रहा और इसने 7% की वृद्धि अर्जित की।।

इंडस्ट्रियल क्रेडिट एंड इन्वेस्टमेंट कार्पोरेशन आफ इंडिया: इसके द्वारा 19978-98 में 25,532 करोड़ रुपये की स्वीकृत रही जो कि पिछले वर्ष की अपेक्षा 81.3% अधिक है। वितरण में 41.4%, 15,807 करोड़ रुपये का रहा। मार्च 1997 मे आई.सी.आई.सी.आई. की संपत्ति 36,267 करोड़ रुपये की थी।

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक: 31 मार्च 1996 में अपने कार्यकाल के 6 वर्ष पूरा करने वाले इस बैंक की 1998 में स्वीकृत और वितरण क्रमशः 7485 करोड़ व 5239 करोड रुपये रही। इसने पिछले वर्ष की अपेक्षा स्वीकृत व वितरण मे क्रमश: 15.4% व 14.3% वृद्धि अर्जित की।

भारतीय आयात-निर्यात बैंक: एक्जिम बैंक के पास निर्यात चक्र की 35 स्थितियों के लिये 35 प्रमुख कार्यक्रम हैं। 1998 मार्च में समाप्त हुए वर्ष अनेक प्रमुख परियोजनाओ के लिये 1840 करोड़ रुपये के ऋण दिये जोकि पिछले वर्ष की तुलना में 598 करोड़ रुपये अधिक है। 1997-98 में वितरण पिछले वर्ष के 1257 करोड़ रुपये की अपेक्षा 1370 करोड़ रुपये रहा।

भारतीय वित्त निगम (आई.एफ.सी.आई) इसे जुलाई 1993 में स्टेट्यूरी कार्पोरेशन से कंपनी के रूप में पुनर्गठन किया गया। वर्ष 1997-98 के दौरान इसका विभिन्न योजनाओं में योगदान 10,983 करोड़ रुपये रहा।

इंडस्ट्रियल रिकांस्ट्रक्शन बैंक आफ इंडिया: इस बैंक की स्थापना 20 मार्च 1985 को हुई थी। वर्ष 1996-97 में कुल स्वीकृत व वितरण क्रमशः 816.01 और 549.60 करोड रुपये रही।

राज्य वित्त निगम (एस.एफ.सी) राज्य स्तर पर कार्यरत यह सस्थान देश की आर्थिक परियोजनाओं में सहयोग देता है। वर्तमान में देश में इसके 18 सस्थान हैं।

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक: देश के 23 राज्यों के 427 जिलों में 196 शाखाओं के साथ ग्रामीण बैंकों का लक्ष्य दूर-दराज क्षेत्रों में बचत को प्रोत्साहन देना है। 1997 में इन बैंको का ऋण सहयोग 8704 64 करोड़ रुपये रहा।

यूनिट ट्रस्ट आफ इंडिया (यू.टी.आई.) रिजर्व बैंक भारतीय औद्योगिक वित्त निगम, राज्य वित्त निगम, भारतीय औद्योगिक विकास बैंक यूनिट ट्रस्ट की प्रोन्नति से प्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध रहा। बहुत समय तक, इन सस्थाओं के बोर्ड का अध्यक्ष गवर्नर या उप-गवर्नर जैसे रिजर्व बैंक के उच्च अधिकारी होते थे। सन् 1976 में इन सस्थाओं को रिजर्व बैंक से अलग कर दिया गया। अब भी रिजर्व बैंक इन सस्थाओं को उधार और अग्रिम राशि आवधिक उधार के रूप में देता है तथा इन्हें सलाह और मार्गदर्शन भी देता है

लोकपाल। 995–96 के दौरान वैंक लोकपाल योजना के अंतर्गत 8 लोकपालों की नियुक्ति से जन शिकायतों का तेजी से निपटारा हो सकेगा। कुल 15 लोकपालों की नियुक्ति होनी है। वैंको के व्याज दर को अनियंत्रित और दो लाख के ऊपर न्यूनतम उधार दर को समाप्त कर देने को 1995–96 तक वढ़ा दिया गया।

वैंक को अप्रवासी खाते के जमा और मैच्योरिटीज पर व्याज दर निर्धारित करने का अधिकार है। मंत्रालय के अनुसार लघु उद्योगों को ऋण सुविधा सुगम वनाने के प्रयत्न किये गये हैं।

मार्च 1996 में चुने हुए 85 जिलों में 100 विशेषज्ञता प्राप्त एस.एस.आई. वैंकों की शाखायें खोली गयीं हैं।

विश्व के वड़े 1000 वैंकों में 13 भारतीय वैंक: फिनैन्शियल टाइम्स के वैंकर आफ लंदन की विश्व के 1000 वड़े वैंकों की सूची में 13 भारतीय वैंक शामिल हैं। स्टेट वैंक आफ इंडिया 1,379 मिलयन डालर की कुल साम्य पूंजी के साथ 212वां स्थान व इंडियन ओवरसीज वैंक का 495 मिलयन डालर की कुल साम्य पूंजी के साथ 512 वां स्थान है।

अन्य वित्तीय कंपनियां (नान वैंकिंग फिनैन्शियल कंपनीज): भारतीय औद्योगिक ऋण एवं निवेश निगम द्वारा एन.वी.एफ.सी. कंपनियों के वित्तीय कार्य पर 1991–92 से 1994–95 के दौरान किये गये एक अध्ययन से पता चलता है कि लाभ की दृष्टि से एन.वी.एफ.सी की कंपनियों ने वैंक व उत्पादक कंपनियों की तुलना में वेहतर निष्पति प्राप्त की है।

राष्ट्रीयकरण से लेकर अव तक निगम अपने स्रोतों को लोकहित के लिए जुटाता–उन्मुख करता रहा है। निगम के कुछ सराहनीय निकट के और दीर्घ अवधि के लक्ष्य है।

शिक्षा

भारत ने पिछले पचास वर्षों में विशाल शिक्षा प्रणाली तैयार करके एक ऐसा वातावरण वनाया है जिसमें वैज्ञानिक व तकनीकी, मानवता विज्ञान, दार्शनिक और रचनात्मक कुशलता से समृद्ध युवक–युवतियां का समूह वना लिया है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली केवल 140 वर्ष पुरानी है। वर्ष 1857 व्रिटिश सासन काल में पहले तीन विश्वविद्यालयों – कलकत्ता, मद्रास व वाम्वे में स्थापना की गई थी। आज भारत में 242 विश्वविद्यलाय और इतने ही संस्थान हैं। इनमें से 146 सामान्य विश्वविद्यालय 18, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, 5 महिला विश्वविद्यालय, 8 खुले विश्वविद्यालय 30 कृषि व 17 चिकित्सा विश्वविद्यालय हैं। इनकी विशेषताओं में भी विविधता है। कुछ शित्रा एवं सलंग्न एक विश्वविद्यालय से या एक कैम्पस वाले हैं। 18 भाषाई विश्वविद्यालय, 16 केंद्रीय विश्वविद्यालय, 40 सुदूर विश्वविद्यालय, 169 राज्य के विश्वविद्यालय और 11 राष्ट्रीय महत्व के संस्थान हैं। कालेजों की संख्या 10,600 है इनमें से 1260 महिला कालेज हैं और 119 स्व: कालेज हैं। 7000 शिक्षा/ प्रशिक्षण कालेज हैं, 110 पालीटेक्नीक 600 प्रवंधन संस्थान, 550 इंजीनियरिंग कालेज और 170 मेडिकल कालेज हैं। उच्च शिक्षा में पंजीकृत छात्रों की संख्या लगभग 7.5 मिलयन है और शिक्षकों की संख्या 0.321 मिलयन है। 74,000 शोध कार्य कर रहे हैं और प्रत्येक वर्ष 10,000 को पी.एच.डी. की उपाधि मिलती है।

...... हमारी शिक्षा का उद्देश्य छात्र के व्यक्तित्व में संपूर्ण व एकाग्र विकास जिसमें पांच मुख्य गुणों का सही अनुपात हो। यह गुण हैं शारीरिक, व्यवहारिकता, कर्तव्यपरायणता, नैतिकता और वौद्धिकक्षमता और जिसमें समावेश हो उच्चकोटि का आदर्शवाद, देशप्रेम और मानवता की सेवा हो। हमारा भविष्य, कल्याण और लक्ष्य हमारी भौतिक समृद्धता के वजाये हमारी आध्यात्मिक शक्ति पर अधिक निर्भर है।

–डा. हरि गौतम, अध्यक्ष, यू.जी.सी.

(युनिवर्सिटी न्यूज, वाल्यूम 38–26, पेज 9, पैरा 1)

महिला साक्षरता महिला पुरुष साक्षरता अनुपात एक चिंता का विषय है। 1997 में महिला साक्षरता दर 39.3% था जवकि पुरुष साक्षरता दर 64.1% थी। प्रांतों में भी महिला साक्षरता दर में विषमतायें हैं। केरल में महिला साक्षरता दर 86.2% है तो राजस्थान में 20.4% ही है। ऐसी ही विषमतायें पुरुष साक्षरता दर में भी हैं। अनुसूचित जाति में 1981 से 1991 में लगभग 10% की वढ़ोत्तरी हुई है। 1981 में प्रतिशतता 21.4 थी जोकि 1991 में वढ़कर 37.4 हो गयी। जनजातियों में 1981 में साक्षरता प्रतिशतता 16.4 थी जोकि 1998 में वढ़कर 29.6 हो गयी। महिलाओं में साक्षरता वढ़ाने के प्रयास किया जा रहे हैं।

प्राथमिक शिक्षा और महिलाएं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की संशोधित कार्य योजना तथा आठवीं योजना में 21 वीं सदी के पूर्व 14 वर्ष की आयु के सभी वच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के निर्देशों के अनुसार प्राथमिक शिक्षा को महत्व दिया गया। इसमें निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का संकल्प व्यक्त किया गया। 1979–80 में अनौपचारिक शिक्षा का कार्यक्रम शुरु किया गया। इसके अंतर्गत स्कूल छोड़ देने अथवा स्कूल न जा सकने वाली लड़कियों को और कामकाजी वच्चों को औपचारिक शिक्षा के समतुल्य शिक्षा दिलाना शामिल था।

प्राथमिक शिक्षा काफी काम हुआ है। 1950–51 के 42.6% पंजीकरण की तुलना में वृद्धि 104.5% की हुई है। लेकिन यहां पर भी प्रांतो की दृष्टि से काफी विषमतायें हैं। प्रत्येक वच्चे के लिये निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का लक्ष्य रखा गया था। लेकिन आधी सदी वीत गयी है और यह अभी तक सपना ही है। आज प्राथमिक शिक्षा के प्रसार में चीन ने भारत को काफी पीछे छोड़ दिया है। 1993 में जारी युनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार 87 विकासशील देशों में शिक्षा के क्षेत्र में भारत का स्थान पचासवां है। शिक्षा क्षेत्र के विशेषज्ञों का कहना है कि साक्षरता कार्यक्रम की असफलता का एक प्रमुख कारण यह है कि निर्धन परिवार अपने वच्चों को स्कूल भेजने के वजाये रोजगार में लगाना चाहता है।

साक्षरता प्रसार 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति:प्राथमिक शिक्षा की सार्वजनिकता को उच्च प्राथमिकता दी गई ताकि 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को आवश्यक कम से कम शिक्षा प्राप्त हो जाए । इसके लिए खंड विभाजित अभियान आरंभ हुआ जिसका नाम ''ब्लैक बोर्ड अभियान'' है । इसका लक्ष्य प्राथमिक पाठशालाओं के बुनियादी ढांचे को उन्नत बनाना है। 1989–90 तक 383.09 करोड़ रु. इस योजना के अंतर्गत खर्च किये जा चुके हैं । 1995 तक 15 से 35 वर्ष आयु समूह के लोगों में 80 प्रतिशत साक्षरता को पाने के लिये 1988 में राष्ट्रीय साक्षरता प्राधिकरण की स्थापना की गयी थी (वर्तमान में राष्ट्रीय साक्षरता 52.11% है) । राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मेधावी छात्रों के लिए आवासीय स्कूलों के खोलने का प्रावधान है । इन स्कूलों को नवोदय विद्यालय कहा जाता है ।

माध्यमिक शिक्षा: अनेक राज्यों तथा संघ शासित क्षेत्रों में उच्च माध्यमिक स्तर तक निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। गुजरात में लड़कियों के लिए बारहवीं कक्षा तक निःशुल्क शिक्षा है। हरियाणा में लडकियों के लिए आठवीं कक्षा तक तथा मेघालय और मिजोरम में छठी–सातवीं तक निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध है।

माध्यमिक शिक्षा का व्यवसायीकरण विद्यार्थियों को बिना उच्च शिक्षा प्राप्त किए लाभकारी रोजगार मिलने के उद्देश्य से शिक्षा में सुधार के लिए गठित समय–समय पर विभिन्न समितियों एवं आयोगों ने माध्यमिक स्तर पर ही शिक्षा में व्यवसायों की विविधता लाने पर बल दिया। फरवरी, 1988 में माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के व्यावसायीकरण की एक योजना शुरू की गई। इसके अतर्गत 1991–92 तक केंद्रीय सरकार द्वारा 12,543 शिक्षा शाखाओं तथा फरवरी 1993 तक 1,623 व्यावसायिक शिक्षा शाखाओं को सुविधा दी गई जिससे 0.81 लाख अतिरिक्त विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय अक्तूबर, 1990 में सरकार द्वारा पारित एक प्रस्ताव राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय द्वारा अपनी ब्रिज, माध्यमिक/उच्च माध्यमिक परीक्षाए आयोजित करने तथा प्रमाण–पत्र देने का अधिकार दिया गया। इसके द्वारा सुदूर शिक्षा के जरिए लाखों लोगों को वैकल्पिक मुक्त शिक्षा मिलती है। इन विद्यालयों में पूरे देश के 2 लाख से अधिक विद्यार्थी नामांकित हैं।

केंद्रीय विद्यालय 1963 में शुरू की गई इस योजना का उद्देश्य स्थानांतरणीय पदों पर काम करने वाले महिला–पुरुष कर्मचारियों एवं उनके बच्चों की शिक्षा की अनवरता एवं पूर्ति करना रहा है। इसके अतिरिक्त अनेक योजनाएं हैं जिनमें:

(1) शैक्षिक टैक्नोलोजी कार्यक्रम
(2) विद्यालयों में विज्ञान–शिक्षा में सुधार
(3) स्कूली शिक्षा को पर्यावरणोन्मुख बनाना
(4) विद्यालयों में कंप्यूटर शिक्षा
(5) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
(6) विश्वविद्यालय तथा उच्च शिक्षा

नवोदय विद्यालय यह भी शिक्षा का एक रूप है जो भारत सरकार ने उन स्थानों के प्रतिभाशाली छात्रों के लिए विशेष रूप से शुरू की है जहां गांवों की मात्रा अधिक हो। इसके अंतर्गत लक्ष्य यह है कि 1995–96 तक प्रत्येक जिले में एक के औसत से नवोदय विद्यालय स्थापित किए जाएंगे।

लड़के	लड़कियां	ग्रामीण	शहरी	कुल
68,390	27,511	74,398	21,503	95,901
71%	29%	78%	22%	11%

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना स्कूल–कालेजों के छात्रों और वयस्कों को परिवार–नियोजन एवं जनसंख्या–शिक्षा का संदेश आज की अनिवार्यता है। इसी संदर्भ में इस योजना को तीन माध्यमों से क्रियान्वित किया जा रहा है :

(क) विद्यालय एवं अनौपचारिक शिक्षा
(ख) कालेज तथा
(ग) वयस्क शिक्षा

वर्तमान में यह योजना 29 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में चल रही है।

अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों की शिक्षा 1990–91 में डा. अम्बेडकर की जन्म शताब्दी पर प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में यह कार्यक्रम शुरू किया गया, जिसमें शिक्षित अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के लोगों को रोजगार देने एवं आरक्षण कोटे को कार्यान्वित करने पर भी ज़ोर दिया गया।

लड़कियों का नामांकन महिलाओं की शिक्षा में भागीदारी को बढ़ाने के प्रत्येक संभव उपाय किए गए। इसके अंतर्गत उठाए गए विशेष कदम जैसे आपरेशन ब्लैकबोर्ड के लिए 1987–88 में प्राथमिक विद्यालयों के लिए शिक्षकों के 1,22,890 पदों के सृजन के लिए सरकार ने सहायता दी जिनमें मुख्यत: महिलाओं को ही रखने की योजना है। अद्यतन सूचना के अनुसार 69,926 भरे गए पदों में ।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद की स्थापना 1 सितंबर, 1961 को हुई । इसका पंजीकरण सोसाइटी अधिनियम 1860 के अंतर्गत हुआ । इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य शिक्षा का कार्यान्वयन और विशेषकर स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय की नीतियों और प्रमुख कार्यक्रमों में परामर्श और सहायता देना रखा गया ।

परिषद के जो बहुमुखी क्रियाकलाप हैं उनमें एक उल्लेखनीय क्रियाकलाप केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सहयोग–संबंध से माध्यमिक स्कूलों के पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के संशोधनों का काम है ।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड हाईस्कूल और इंटर मीडियट शिक्षा बोर्ड राजपूताना की, जिसमें अजमेर, मेवाड़ मध्य–भारत और ग्वालियर आते थे की स्थापना भारत सरकार के एक प्रस्ताव द्वारा सन् 1929 में की गई थी । सन् 1952 में इस बोर्ड को केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में परिवर्तित कर दिया गया। इस बोर्ड से समेकित स्कूल देश के हर भाग में तथा विदेश में भी है जिससे बोर्ड को स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में गर्व का स्थान प्राप्त है । ऐसे स्कूलों से अपेक्षा की जाती है कि वे भाषायी और राज्य की सीमा संबंधी बंधनों से ऊपर एक रूप स्कूल शिक्षा प्रदान करें । निहित उद्देश्य यह है कि छात्रों के अंतर–राज्य संचरण से राष्ट्रीय एकता बढ़े । इसके

शैक्षिक संस्थानों की सूची (22-11-99 तक)

1. विश्वविद्यालय एवं उच्च शिक्षा:- 1. दिल्ली विश्वविद्यालय, 2.जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली 3. अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ 4. बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस 5. पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पांडिचेरी 6. हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद 7.उत्तर पूर्व हिल विश्वविद्यालय, शिलांग 8.इंदिरा गांधी खुला विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 9. असम विश्वविद्यालय, गोहाटी 10.तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर 11. विश्व भारती, शांतिनिकेतन 12. नागालैंड विश्वविद्यालय, कोहिमा 13. जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली 14. बाबा साहेब अम्बेदकर विश्वविद्यालय, लखनऊ 15 मौलाना आजाद उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद 16. महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा 17. युनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन, नई दिल्ली 18. इंडियन इंस्टीट्यूट आफ एडवांस स्टडी, शिमला 19. इंडियन काउंसिल आफ सोशल साइंस रिसर्च, नई दिल्ली, 20. इंडियन काउंसिल आफ फिलासिफकल रिसर्च, नई दिल्ली, 21. इंडियन काउंसिल आफ हिस्टारिकल रिसर्च, नई दिल्ली, 22. नेशनल काउंसिल आफ रूरल इंस्टीट्यूट।

तकनीकी शिक्षा 23. इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालोजी, नई दिल्ली, 24. इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालोजी, कानपुर, 25. इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालोजी, मंबई, 26. इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालोजी, खड़गपुर, 27. इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालोजी, चेन्नई, 28. इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालोजी, गोहाटी, 29. इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट, अहमदाबाद, 30. इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट, बंगलौर, 31. इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट, कलकत्ता, 32. इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट, कालीकट, 33. इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट, इंदौर 34. इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट, लखनऊ, 35. इंडियन इंस्टीट्यूट आफ सांइस, बंगलौर, 36. रीजनल इंजीनियरिंग कालेज, कालीकट, 37. एस.वी. रीजनल इंजीनियरिंग एंड टेक्नालोजी कालेज, सूरत, गुजरात, 38. रीजनल इंजीनियरिंग कालेज श्रीनगर, 39. मोतीलाल नेहरू रीजनल इंजीनियरिंग कालेज इलाहाबाद, 40. रीजनल इंजीनियरिंग कालेज, वेस्ट बंगाल, 41. रीजनल इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालोजी, दमशेदपुर, 42. विश्वेश्वर्या रीजनल इंजीनियरिंग कालेज नागपुर, 43. कर्नाटक रीजनल इंजीनियरिंग कालेज सुरथकल, 44. रीजनल इंजीनियरिंग कालेज, वारंगल, 46. रीजनल इंजीनियरिंग कालेज, राउरकेला, 47. मौलाना आजाद कालेज आफ टेक्नालोजी, भोपाल, 48. रीजनल इंजीनियरिंग कालेज, तिरुचिरापल्ली, 49. रीजनल इंजीनियरिंग कालेज, कुरुक्षेत्र, 50, रीजनल इंजीनियरिंग कालेज, सिल्चर, असम, 51. रीजनल इंजीनियरिंग कालेज, हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश, 52. रीजनल इंजीनियरिंग कालेज, जलंधर, पंजाब, 53. नेशनल इंस्टीट्यूट आफ फाउंड्री एंड फोर्ज टेक्नालोजी, रांची, 54. नेशनल इंस्टीट्यूट आफ ट्रेनिंग इन इंडस्ट्रियल इंजीनियरिंग, मंबई, 55. इंडियन इंस्टीट्यूट आफ इन्फार्मेशन टेक्नालोजी एंड मैनेजमेंट, ग्वालियर, 56. इंडियन इंस्टीट्यूट आफ इन्फार्मेशन टेक्नालोजी, इलाहाबाद, 57. काउंसिल आफ एग्रीकल्चर, नई दिल्ली, 58. स्कूल आफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर, नई दिल्ली, 59. टेक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग इंस्टूट्यूट, कलकत्ता, 60. टेक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग इंस्टूट्यूट, चेन्नई, 61. टेक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग इंस्टूट्यूट, भोपाल, 62. टेक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग इंस्टूट्यूट, चंडीगढ़, 63. बोर्ड आफ एप्रेन्टसेशिप ट्रेनिंग, चेन्नई, 64. बोर्ड आफ एप्रेन्टसेशिप ट्रेनिंग, मुंबई, 65. बोर्ड आफ प्रैक्टिकल ट्रेनिंग, कलकत्ता, 66. बोर्ड आफ एप्रेन्टसेशिप ट्रेनिंग, कानपुर, 67. आल इंडिया काउंसिल फार टेक्निकल एजुकेशन, नई दिल्ली, 68 नार्थ ईस्ट रीजनल इंस्टीट्यूट आफ साइंस एंड टेक्नालोजी, इटीनगर (अरुणाचल प्रदेश) 69. संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट आफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नालोजी, चंडीगढ़।

उच्च माध्यमिक शिक्षा:- 70. सेंट्रल बोर्ड आफ सेकेंडरी एजुकेशन, नई दिल्ली, 71. नेशनल काउंसिल फार एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग, 72. नेसनल ओपेन स्कूल, दिल्ली, 73. सेंट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन, नई दिल्ली, 74. केंद्रीय विद्यालय संगठन।

प्रौढ़ शिक्षा, 83 नेशनल इंस्टीट्यूट आफ एडल्ट एजुकेशन, नई दिल्ली।

प्रारंभिक शिक्षा, 84, नेशनल काउंसिल फार टीचर एजुकेशन, नई दिल्ली, 85, राष्ट्रीय बाल भवन, नई दिल्ली।

वजह से जिन बच्चों के अभिभावकों की बदली होती रहती है, उनकी पढ़ाई में भी कोई व्यवधान नहीं पड़ता।

परिषद ने सन् 1979 से 'खुला विद्यालय' की भी स्थापना की है जिसका लक्ष्य देश में दूरस्थ शिक्षा देना है। दूरस्थ शिक्षा तकनीकों द्वारा माध्यमिक स्तर की शिक्षा दी जाती है जिसके लिए मुद्रित सामग्री निजी संपर्क कार्यक्रम तथा अन्य सहायक सेवायें दी जाती है। सन 82-83 से 'खुला विद्यालय' परिषद के माध्यमिक स्कूल सर्टिफिकेट की परीक्षायें ले रहा है।

जिनके अभिभावकों की बदली [illegible]
सरकार कर्मचारी और सेना के [illegible]
भर में सेंट्रल स्कूल या केंद्रीय [illegible]
भारत सरकार ने सन् [illegible]
माध्यमिक विद्यालयों में [illegible]
भाग लागू करना है [illegible]
तक आरम्भ में [illegible]
स्कूलों को केंद्रीय [illegible]

गया। साथ ही केंद्रीय विद्यालय संगठन को बनाने और उन्हें संचालित रखने का काम दिया गया ।

इस वक्त देश में 729 केंद्रीय विद्यालय हैं ।52 और विद्यालय खोले जाने का प्रस्ताव है ।

केंद्रीय विद्यालय में आठवीं कक्षा तक पढ़ाई निशुल्क है। ऊपर की कक्षाओं के लिए केंदीय/सरकार कर्मचारी/केंद्रीय लोक क्षेत्र उपक्रम/स्वायत्त संस्थायें आदि के लोगों के बच्चों के लिए ट्यूशन की फीस अभिभावकों के वेतन के हिसाब से तय है ।जो बाहर के लोग है, उनके बच्चों के लिए शुल्क निश्चित है ।अनुसूचित जाति/जनजाति के बच्चों और केंदीय विद्यालय के शिक्षकों अथवा दूसरे कर्मचारियों के बच्चों से किसी कक्षा में शुल्क नहीं लिया जाता ।

केंद्रीय विश्वविद्यालय उच्चतर शिक्षा का समन्वय और मानक निर्धारण विषय संघ–सूची में है और इस तरह यह केंद्र सरकार का विशेष उत्तरदायित्व है ।इस उत्तरदायित्व का निर्वाह मुख्य रूप से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के माध्यम से किया जाता है। इस आयोग की स्थापना संसद अधिनियम के अधीन अभी 11 विश्वविद्यालय कार्यरत हैं जिन्हें केंद्रीय विश्वविद्यालय कहा जाता है ।केंद सरकार ने इसके अतिरिक्त ऐसी एजेंसियां भी स्थापित की हैं जो विशिष्ट क्षेत्रों में अनुसंधान प्रयासों की प्रोन्नति और समन्वय का काम करें ।इस वक्त देश में ऐसी चार एजेंसियां हैं : भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद, भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद और भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान ।

11 केंद्रीय विश्वविद्यालय ये है:– अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (अलीगढ़), दिल्ली विश्वविद्यालय (दिल्ली), हैदराबाद विश्वविद्यालय (हैदराबाद), जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (नई दिल्ली), इंदिरा गांधी खुला विश्वविद्यालय (नई दिल्ली), उत्तरी–पूर्वी पर्वत विश्वविद्यालय (शिलांग), विश्वभारती शांतिनिकेतन, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (वाराणसी), पांडिचेरी विश्वविद्यालय (पांडिचेरी), असम विश्वविद्यालय (सिलचर) और तेजपुर एंड नागालैंड विश्वविद्यालय; खड़गपुर, बंबई, मद्रास, कानपुर और दिल्ली में पांच भारतीय टेक्नालाजी संस्थान की स्थापना इंजीनियरी और प्रयुक्त विज्ञान में शिक्षा और प्रशिक्षण के प्रारंभिक केंद्रों के रूप में की गई ।उद्देश्य यह भी था कि स्नातकोत्तर/अध्ययन और अनुसंधान में भी इनसे पर्याप्त सुविधा मिले । इन संस्थानों में इंजीनियरी और टेक्नालाजी के विभिन्न क्षेत्रों में अंडर–ग्रेजुएट कार्यक्रम चलाये जाते है, जिसके बाद स्नातक–डिग्री दी जाती है ।इन संस्थानों में भौतिकी, रसायनशास्त्र, गणित में पांच वर्ष की समेकित मास्टर डिग्री भी दी जाती है ।विभिन्न विशिष्ट अध्ययनों में दो वर्ष की एम. टेक् डिग्री मिलती है तथा चुने हुए विषयों में एक वर्ष का स्नातकोत्तर डिप्लोमा दिया जाता है ।. इसके अलावा इंजीनियरी, विज्ञान, मानविकी और समाज–विज्ञानों में भी संस्थान पीएचडी डिग्री कार्यक्रम चलाता है ।विशिष्टीकरण के चुने हुए क्षेत्रों में प्रशिक्षण और अनुसंधान के लिए इन सभी संस्थान में उन्नत अध्ययन की सुविधायें भी है ।

भारत सरकार ने अहमदाबाद, बंगलौर, कलकत्ता और लखनऊ में चार भारतीय प्रबंध संस्थान स्थापित किये है। दूसरी और तीसरी योजना अवधि में देश के प्रमुख राज्यों से प्रत्येक में एक–एक कर 14 क्षेत्रीय इंजीनियरी कालेजों की स्थापना की गई ।इसके पीछे आने वाली योजना अवधि में प्रशिक्षित कर्मचारियों की मांग को देश पूरी कर सके, यह उद्देश्य रहा ।चौदहवां ऐसा कालेज सिलचर (असम) 1977 तथा हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश) में 1986 में खोला गया।

इस वक्त देश में प्रथम डिग्री–स्तर के करीब 180 तकनीकी संस्थायें हैं तथा करीब 425 से अधिक डिप्लोमा–स्तर के पोलीटेक्नीक है जिनमें सालाना क्रमशः 34,000 और 85,000 छात्रों का दाखिला होता है.। करीब 80 से अधिक संस्थाओं में स्नातकोत्तर तथा अनुसंधान पाठ्यक्रम है जिसमें वार्षिक 7000 दाखिले होते हैं ।

इलेक्ट्रानिक विभाग ने सन् 1988 में घोषणा की है कि वह पुणे, भुवनेश्वर, हैदराबाद और दिल्ली में चार भारतीय सूचना टेक्नालाजी संस्थान स्थापित करने जा रही है ।

प्लानिंग और आर्किटेक्चर स्कूल (योजना और वास्तुशिल्प विद्यालय), नई दिल्ली, इसकी स्थापना जुलाई 1956 में स्कूल आफ टाउन एंड कंट्री प्लानिंग के नाम से हुई थी। इसका उद्देश्य ग्रामीण, शहरी और क्षेत्रीय प्लानिंग में प्रशिक्षण प्रदान करना और टाउन प्लानिंग के लिए केंद, राज्य तथा स्थानीय विभागों की कर्मचारी जरूरतें पूरी करना था । अब यह "विश्वविद्यालय समान सम्मानित" का दर्जा पा चुका है।

रक्षा

विगत वर्ष में भारतीय रक्षा सेनायें जनमानस के पटल पर छाई रही।मई महीने में पोखरण में नाभिकीय विस्फोटों के बाद भारत विश्व की सार्वजनिक तौर पर परमाणु शक्ति बन गया। और इसी वर्ष काश्मीर की कारगिल पहाड़ियों पर पाकिस्तानी सेना की घुसपैठ को भारतीय सेना ने विपरीत परिस्थितियों के बावजूद जिस शौर्य से वापस फेंका वह अपने आप में एक मिसाल बन गई है।लेकिन कारगिल जो कि एक युद्ध ही था ने भारतीय सेना को आयुद्धों की आपूर्ति पर एक प्रश्न चिन्ह लगा दिया है जिस पर सोचना बहुत जरूरी है।दुर्गम चौकियों को पाकिस्तानी सेना से छुड़ाने के लिये बोफोर्स तोपें बहुत उपयोगी साबित हुईं, लेकिन राजनीतिक कारणों से इन तोपों के कलपुर्जे और गोला बारूद की कमी महसूस की गई।इस युद्ध में भारतीय वायु सेना ने भी अपना पूरा कौशल दिखाया. लेकिन यहां पर भी उन्नत प्रौद्योगिकी की कमी महसूस की गई।

जैसा कि माना जा रहा था कि परमाणु शक्ति वन जाने से देश की सुरक्षा पूरी हो गई। लेकिन कारगिल युद्ध से सावित हो गया कि छोटी लड़ाइयों में इनका उपयोग नहीं है। अपनी विशाल सीमा को देखते हुए देश को सीमा पर दुश्मनों के जमाव की छानवीन और निगरानी तकनीक में पूर्ण दक्षता प्राप्त करनी होगी और भविष्य में रक्षात्मकता व आक्रामकता में तेजी लानी होगी जिससे हमारे जवानों का खून कम से कम वहे। इसके लिये रात्रि युद्धास्त्र, स्मार्ट वम, इलेक्ट्रानिक युद्ध प्रणाली, निगरानी रखने वाले उपग्रह, अवाक्स, जार्मिंग तकनीकएंटी मिजाइल तकनीक आदि को अपनाना जरूरी हो गया है। सेना, वायु सेना व जल सेना के लिये पृथ्वी मिजाइल का सफल परीक्षण देश के लिये गर्व का विषय है। अग्नि मिजाइल –2 श्रृंखला कार्यक्रम को हरी झंडी मिलना एक सुखद संकेत है।

एल.सी.ए. आठ टन का बहुउद्देशीय लड़ाकू विमान है। नवंवर 17 को भारत का प्रथम स्वदेश में वना लड़ाकू विमान वाहर लाया गया। इसको इस प्रकार वनाया गया है कि यह तेजी से प्रहार कर सके, शीघ्रता से गति पकड़ सके और रनवे पर अच्छा प्रदर्शन कर सकने के साथ अधिक वजन के सैन्यास्त्र ले जा सके। यह एक सेकेंड में 20 डिग्री तक का घुमाव ले सकता है और 600 किमी के कंवैट क्षेत्र में वायु युद्ध कर सकता है। एल.सी.ए की 4000 कि.ग्रा. भार उठाने की क्षमता है जो कि मिग–21. से दुगनी है। 1990 में इसके विकसित करने में 100,000 करोड़ रु. का खर्चा हुआ था। सन् 2002 में इसे सेना में शामिल कर किया जायेगा।

'कावेरी' इंजिन अव जवकि अगले साल के शुरू में हलका लड़ाकू विमान (एल.सी.ए.) पहली परीक्षण उड़ान के लिए तैयार किया जा रहा है इस विमान में लगाए जाने वाला भारतीय इंजन 'कावेरी' भी अव वनकर तैयार है और इनके अंतिम परीक्षण के लिए इसे रूस या इस्राइल के 'टेस्ट वेड' पर ले जाया जाएगा। इस परीक्षण के लिए दोनों देशों की कंपनियों से वातचीत चल रही है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के सूत्रों के अनुसार इस परीक्षण के लिए चालीस से पचास करोड़ रूपए का खर्च हो सकता है। एल.सी.ए. की पहला परीक्षण अमरीकी जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी के इंजन पर ही हो रही है और इस तरह के ग्यारह इंजन भारत ने आयात कर लिया है। इन इंजनों पर एल.सी.ए. के ढांचा और मशीन को लगाकर ही एल.सी.ए. को प्रमाणिक वताया जा सकता है इसलिए भारत ने शुरू में अमरीकी कंपनी की यह मदद ली है।

आवाज से अधिक गति से उड़ने वाले किसी विमान के इंजन का भारत में ही विकास एक उल्लेखनीय तकनीकी उपलब्धि है और विकासशील देशों में ऐसा इंजन वनाने वाला भारत पहला देश होगा। कावेरी इंजन के अवतक तीन नमूने वनाए जा चुके हैं जिनका हिन्दुस्तान एरोनाटिक्स लि. के विभिन्न 'टेस्ट वेड़ो' (इंजन परीक्षण केन्द्र) में परीक्षण कार्य तीन सप्ताह पहले ही पूरा किया गया है। इस इंजिन का विकास वेंगलूर स्थित गैस टरवाइन रिसर्च इस्टैव्लिशमेंट (जी.टी.आर.ई.) में किया गया है। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन के एक सूत्र के अनुसार कावेरी इंजन को 75 घंटे तक चला कर देखा गया है और इसके वाद इस इंजन को पूरी तरह खोलकर देखा गया है। इंजन की इस जांच के वाद इंजीनियरों को इंजन के किसी भी कलपुर्जे में कोई घिसावट या टूटफूट नहीं दिखायी पड़ी जिससे इंजीनियर कावेरी इंजन की संरचना व डिजाइन को लेकर काफी संतुष्ट हैं।

'जी.टी.एक्स.–35 वी.एस.' तकनीकी नाम से ज्ञात कावेरी इंजन का माडल वास्तव में अमरीकी जीई–404 पर ही वनाया गया है। लेकिन कावेरी इंजन की एक खासियत यह होगी कि इसे दक्षिण एशिया के मौसम के अनुकूल ही विकसित किया गया है। भारतीय उपमहाद्वीप में एक ही समय में कहीं तापमान शून्य से 50 डिग्री अधिक या शून्य से तीस डिग्री कम या शतप्रतिशत आद्रता हो सकती है।

रक्षा अनुसंधान एवं शोध संगठन के एक सूत्र के अनुसार कावेरी इंजन से 18 हजार पौंड का दवाव पैदा किया जा सकता है जिससे एल.सी.ए. 8500 किलोग्राम का ईंधन व हथियार ढो सकता है। यह इंजन एल.सी.ए. को प्रति सेकंड 13 से 17 डिग्री की दर से घुमाव दे सकता है और साथ ही 12 सौ किलोमीटर प्रतिघंटा की गति भी हासिल कर सकता है।

पृथ्वी: कम दूरी की सतह से सतह मिसाइल 'पृथ्वी' को सेना को सौंप दिया गया है । सेना ने जून 1994 में इसका सफल परीक्षण किया ।

मिसाइल को पश्चिमी मोर्चे पर स्थापित कर दिया गया जहां से यह पाकिस्तान की हारर्फ–1 और हाट्प–2 मिसाइलों का सामना कर सकती है ।

अग्नि सेना ने 6 जून 1994 को उड़ीसा वालासौर के निकट चांदीपुर से अग्नि मिसाइल के समुद्र में परीक्षण किये। 8.5 मीटर की मिसाइल को गतिशील प्रक्षेपक से 11.07 वजे प्रक्षेपित किया गया, इसने वंगाल की खाड़ी में 150 कि.मी. दूर पूर्व निर्धारित लक्ष्य को 287 सेकेंड में भेजा ।

भारत के पास दो रक्षात्मक मिसाइलें हैं – 'आकाश' और 'त्रिशूल' । इन्हें सेना को सौंपा जा चुका है ।

मध्यम दूरी की मिसाइल पृथ्वी की मारक परिधि 25[illegible] किलो मीटर है और इसके शस्त्रमुख पर 500 किलो[illegible] विस्फोटक सामग्री रखी जा सकती है । अन्तर माध्यमिक दूरी की सामरिक मिसाइल 'अग्नि' एक हजार किलो[illegible] विस्फोटक सामग्री के साथ 2500 किलोमीटर [illegible] सकती है । इस पर पारम्परिक' रासायनिक [illegible] हथियार तैनात किये जा सकते हैं ।

'अग्नि' दो चरणों की मिसाइल है । [illegible] एस.एल.वी.–3 को भांति टोस् राकेट का [illegible] जवकि दूसरे चरण में पृथ्वी मिसाइल के [illegible] पद्धति का उपयोग किया गया है । [illegible] दौरान मिसाइल का शस्त्रमुख जल [illegible] लिए 'अग्नि' के शस्त्रमुख पर एक [illegible] है । इस पूरी तरह स्वदेश में विकसित [illegible]

'अग्नि' की पहली परीक्षण उड़ान [illegible] सफल रही । मिसाइल ने [illegible] तक उड़ान भरी ।

इसका दूसरा परीक्षण [illegible] दूसरे चरण के मोटर के [illegible] यह परीक्षण विफल रहा ।

'अग्नि' के परीक्षण [illegible] का देखते हुए भारत ने [illegible]

ाणविक अस्त्र तैनात नहीं करेगा । इससे ये अटकलें तेज ो गयी थीं कि इस पर पारम्परिक या रासायनिक हथियार ैनात किये जायेंगे । मगर इसके लिए टर्मिनल गाइडेंस सिस्टम का सटीक होना जरूरी है । ।

अर्जुन टैंक, भारतीय सेना का आयुद्ध टैंक अर्जुन में आयातित जर्मनी डीजल इंजन लगा हुआ है और यह युद्ध के मैदान में 72 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ सकता है। इसमें लेजर रेंज फांइडर, कंप्यूटीकृत फायरिंग प्रणाली और तोप के साथ 12.7 एम.एम. मशीनगल से लैस है। टैंकों को इस स्वचलित प्रणाली से लैस कर दिया गया है। यह प्रणाली अग्नि अनुसंधान रक्षा संस्थान में विकसित की गई है । टी-72 टैंकों में भी यह प्रणाली शुरु की जाएगी ।

पिनाका

भारत में स्वदेशी तकनीक पर विकसित बहुनाली राकेट प्रक्षेपक (मल्टी वैरल राकेट लांचर) का सफल परीक्षण किया गया है । 'पिनाका' नामक इन राकेट प्रणाली का यह 14 वां सफल परीक्षण था । रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डी.आर.डी.ओ.) द्वारा विकसित यह राकेट प्रणाली 40 किलोमीटर दूर तक गोलाबारी कर सकती है । यह प्रणाली लंबी मारक दूरी वाली तोपों की सहायक भूमिका में दुश्मन व सैन्य जमाव पर मैदानी बमवर्षा के काम आयेगी ।

पिनाका 'राकेट प्रक्षेपक' में ठोस प्रणोदक वाले 14 राकेट लगे हैं । इसे आठ पहियों वाले टाटा वाहन पर रखा है, जिससे यह राकेट प्रक्षेपक शीघ्र ही आवश्यक स्थान पर ले जाया जा सकता है । इसके राकेट में विस्फोटक छोटे-छोटे टुकड़ों में भरे जा सकते हैं जो किसी स्थान पर बमों की वर्षा जैसी स्थिति पैदा कर सकते हैं। इनके राकेट में ऐसे ज्वलनशील विस्फोटक भी भरे जा सकते हैं जो निर्धारित स्थान के ऊपर जलते हुए गिरेंगे ।

पिनाका का विकास पुणे स्थित शस्त्र शोध एव विकास प्रतिष्ठान की कुशल देखरेख में किया जा रहा है । इसके विकास में विस्फोटक शोध एव विकास प्रयोगशाला (ई.आर.डी.एल.) इलेक्ट्रानिक्स शोध एवं विकास प्रतिष्ठान (एल.आर.डी.ई.) तथा टर्मिनल वैलिस्टिक रिसर्च सेंटर का सहयोग लिया गया है ।

पुरुष प्रधान भारतीय सेना में महिलाओं का सेना के तीनों अंगों – थल सेना, वायू सेना और जलसेना में प्रवेश एक बड़े कीर्तिमान की प्राप्ति है ।

पूरे एशिया में भारतीय जल सेना को महिलाओं की नियुक्ति करने का गौरव प्राप्त है । 22 महिला अधिकारियों के पहले दल ने कार्यकारी शाखा में प्रवेश कर लिया है ।

थल सेना में 25 महिलाओं के पहले दल को प्रशिक्षित करके सम्मिलित किया गया है ।

वायु सेना में 12 महिलाओं को पायलट आफिसर पद दिया गया है ।

वायुसेना में नवीन तकनीकी विकास से सांमजस्य रखने के लिये और इस बात को ध्यान में रखते हुए कि सीमित संसाधनों के कारण आधुनिक शस्त्र तकनीक निम्नतम व्यय से प्राप्त करनी है। अनुसंधान कार्य जारी है ।

रक्षा वैज्ञानिकों ने इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट कार्यक्रम के अंतर्गत बहुआयामी आर्मी रडार को विकसित किया है । यह रडार इलेक्ट्रानिकली नियंत्रित एंटीना से संयुक्त है। इसकी क्षमता निगरानी रखने व लक्ष्य निर्धारित करने में अद्भुत है । यह एक बार में 100 लक्ष्य निर्धारित कर सकता है ।

संगठन : भारत की रक्षा सेनाओं का सर्वोच्च कमान्डर भारत का राष्ट्रपति है । किन्तु देश की जिम्मेदारी मंत्रिमंडल की है। रक्षा से सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण मामलों का फैसला राजनतिक कार्यों संबंधी मंत्रिमंडल समिति (कैबिनेट कमेटी ऑन पोलिटिकल अफेयर्स) करती है, जिसका मुखिया प्रधानमंत्री है । रक्षा मंत्री रक्षा सेवाओं से सम्बन्धित सभी विषयों के बारे में संसद के समक्ष उत्तरदायी है ।

रक्षा मंत्रालय का प्रमुख रक्षा मंत्री है, सबसे बड़ा वित्तीय अधिकारी रक्षा मंत्रालय का वित्तीय सलाहकर होता है । रक्षा मंत्रालय में चार विभाग हैं । (1) रक्षा विभाग, (2) रक्षा उत्पादन विभाग, (3) रक्षा आपूर्ति विभाग, (4) रक्षा विज्ञान एवं अनुसंधान विभाग । रक्षा मंत्रालय देश की रक्षा करने और सशस्त्र सेनाओं-स्थल सेना, नौ सेना और वायु सेना के साज-सम्मान जुटाने और उनका प्रशासन चलाने के लिए उत्तरदायी है ।

रक्षा मंत्रालय भारत की रक्षा सशस्त्र सेनाओं अर्थात् थलसेना, नौसेना और वायु सेना के गठन और उनके प्रशासन, सशस्त्र सेनाओं के लिए अस्त्र-शस्त्र, गोला-बारूद, पोत, विमान, वाहन, उपकरण और साज-सामान की व्यवस्था करने, अभी तक आयात होने वाली मदों को देश के भीतर निर्मित करने की क्षमता स्थापित करने और रक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने के लिए सीधे उत्तरदायी हैं ।

इस मंत्रालय की कुछ अन्य जिम्मेदारियां हैं : मंत्रालय से सबद्ध असैनिक सेवाओं पर नियंत्रण कैन्टोनमेंट बनाना, उनके क्षेत्र का निर्धारण करना और रक्षा सेवा कर्मचारियों के लिए आवास सुविधाओं का विनिमयन करना।

सेना के प्रमुख सहायक संगठन ये हैं : (1) प्रादेशिक सेना (2) तट रक्षक, (3) सहायक वायु सेना (4) एन.सी.सी. जिसमें स्थल सेना, नौसेना और वायुसेना तीनों पार्श्व होते हैं।

आज भारत की सेना विश्व की सबसे बड़ी स्थल सेनाओं में चौथे नंबर पर, वायु सेना में पांचवें नंबर पर और नौसेना में सातवें नंबर पर मानी जाती है ।

भारत की सशस्त्र सेनाओं में तीन मुख्य सेवायें हैं: थल-सेना, नौसेना और वायु-सेना । ये तीनों सेवायें एक सेनाध्यक्ष अर्थात् क्रमशः स्थल सेनाध्यक्ष, नौ सेनाध्यक्ष और वायु सेनाध्यक्ष के अधीन है । ये तीनों सेनाध्यक्ष जनरल या इसके बराबर ओहदे वाले होते हैं । इन तीनों सेनाध्यक्षों की एक सेनाध्यक्ष समिति है । इस समिति की अध्यक्षता यही तीनें सेनाध्यक्ष अपनी वरिष्ठता के आधार पर करते है । इस समिति की सहायता के लिए उप-समितियां होती हैं जो विशेष समस्याओं जैसे आयोजन, प्रशिक्षण, संचार आदि का काम देखती है ।

स्थल सेना का मुख्यालय नई दिल्ली में है । निम्नलिखित अधिकारी स्थल सेनाध्यक्ष की सहायता करते हैं – 1. थल सेना उपाध्यक्ष 2. थल सेना सहायक अध्यक्ष 3. एडजुटेंट जनरल 4. क्वार्टर मास्टर जनरल, 5. मास्टर जनरल आफ आर्डनेन्स 6. मिलिट्री सेक्रेटरी 7. इंजीनियर-इन-चीफ

भारत की स्थल सेना निम्नलिखित कमांडों में विभाजित है – 1. पश्चिमी कमांड 2. पूर्वी कमांड, 3. उत्तरी कमांड 4. दक्षिणी कमांड 5. मध्य कमांड । प्रत्येक कमांड का सर्वोच्च अधिकारी लेफ्टीनेंट जनरल के बरावर ओहदे वाला एक जनरल अफसर कमांडिंग–इन–चीफ होता है । प्रत्येक कमांड एरिया, इन्डिपेंडेंट सव–एरिया और सव–एरिया में विभाजित है, जिनका प्रधान क्रमशः एक मेजर जनरल और ब्रिगेडियर होता है ।

स्थल सेना में अनेक विभाग और सेवायें हैं जिनके नाम हैं – 1. प्रेसीडेंट्स वाडीगार्ड, 2. आर्म्ड कोर, 3. रैंजिमेंट आफ आर्टिलेरी, 4. कोर आफ इंजीनियर्स, 5. कोर आफ सिग्नल्स, 6. मिलिट्री नर्सिंग सर्विस, 7. आर्मी मेडिकल कोर, 8. कोर आफ इलेक्ट्रिकल एंड मैकेनिकल इंजीनियर्स, 9. रिमाउंट एंड वेटेरिनरी कोर, 10. मिलिटरी फार्म सर्विसेज़, 11. आर्मी एजुकेशन कोर, 12. इंटेलिजेंस कोर, 13. कोर आफ मिलिट्री पुलिस, 14. आर्मी फिजिकल ट्रेनिंग कोर, 15. पायनियर कोर, 16. आर्मी पोस्टल सर्विस कोर, 17. डिफेन्स सेक्युरिटी कोर।

प्रादेशिक सेना एक अंशकालिक स्वेच्छिक सेना है, जिसमें ऐसे व्यक्ति शामिल होते हैं, जो कुशल सैनिक नहीं वल्कि सामान्य नागरिक होते हैं और देश की रक्षा में भूमिका अदा करने के इच्छुक होते हैं । 14 वर्ष से 35 वर्ष तक की आयु वाले सभी भारतीय इसमें भर्ती हो सकते हैं । प्रादेशिक सेना में पैदल सेना, इंजीनियरिंग और चिकित्सा टुकड़ियां हैं।

राष्ट्रीय छात्र-सेना, अर्थात् एन.सी.सी. नवयुवकों का संगठन है और इसमें शिक्षा संस्थानों के विद्यार्थी शामिल हो सकते हैं । इस संगठन का लक्ष्य नवयुवकों में नेतृत्व के गुण, चरित्र और खिलाड़ी की भावना, सहयोग और सेवा भाव विकसित करना है । यह एक स्वेच्छिक संगठन है और इसके अफसरों और छात्रों दोनों में से किसी के लिए सेना में भर्ती होना अनिवार्य नहीं होता।

एन.सी.सी. में तीन प्रभाग–सीनियर, जूनियर और वालिकाओं का प्रभाग हैं । इसके तीन पार्श्व–स्थल सेना, नौसेना और वायु सेना हैं । सीनियर प्रभाग में प्राधिकृत संख्या 4 लाख, जूनियर प्रभाग में 7 लाख और वालिकाओं के प्रभाग में 62,000 है।

नौसेना का मुख्यालय नई दिल्ली में है । नौसेना अध्यक्ष की सहायता के लिए निम्नलिखित अधिकारी हैं :

1. नौसेना उपाध्यक्ष, 2. चीफ आफ मेटीरियल, 3. नौसेना सहायक अध्यक्ष, 4. चीफ आफ पर्सनल, 5. कंट्रोलर आफ वारशिप प्रोडक्शन एंड एक्युजिशन, 6. चीफ आफ लाजिस्टिक्स।

नौसेना के तीन कमांड हैं – प्रत्येक कमांड का प्रमुख वाइस एडमिरल के वरावर ओहदे वाला फ्लैग अफसर कमांडिंग–इन–चीफ होता है । ये कमांड हैं:

1. वंवई में पश्चिमी नौसेना कमांड, 2. विशाखपटणम में पूर्वी नौसेना कमांड, 3. कोचीन में दक्षिणी नौसेना कमांड ।

नौसेना के दो वेड़े हैं – पश्चिमी वेड़ा और पूर्वी वेड़ा । प्रत्येक वेड़े का मुख्य अधिकारी वाइस रियर एडमिरल के वरावर ओहदे वाला फ्लैग अफसर कमांडिंग होता है । गोवा एरिया और अंडमान–निकोवार द्वीपसमूह के लिए भी फ्लैग अफसर कमांडिग है । इनके अलावा वंवई, मद्रास और कलकत्ता में नावेल अफसर इंचार्ज है ।

दोनों नौसेना वेड़ों में विमान वाहक, आई.एन.एस. विक्रान्त, नव अर्जित आई.एन.एस. विराट हैं, कई फ्रिगेट स्कवाड्रन हैं, जिनमें आधुनिक विमान भेदी, पनडुब्वी भेदी और सामान्य प्रयोजन वाले पोत हैं । मिसाइलों से सुसज्जित फ्रिगेट/डेस्ट्रायर हैं । पनडुब्वी भेदी गश्ती जहाजों का एक स्क्वार्डन है । वारूदी सुरंग नष्ट करने वाले कई स्क्वाड्रन हैं, पनडुब्वियां, एक पनडुब्वी डिपो जहाज, एक पनडुब्वी वचाव जहाज, टैंक और सैनिक ले जा सकने वाले लैंडिंग जहाज हैं और तीव्र गति से आक्रमण करने वाले अनेक पोत हैं, जो धरती से धरती पर मार करने वाली मिसाइलों से सज्जित हैं । इनके अलावा सर्वे वाले पोत, सर्वे वाली नावें, फ्लीट टैंकर और टग और मूरिंग पोतों जैसे सहायक पोत हैं। नौसेना का सर्वे यूनिट भारत के समुद्र तट और उसके आस–पास के समुद्र, वंदरगाहों के रास्तों आदि का सर्वेक्षण करता है।

वंगाल की खाड़ी के द्वीपों की रक्षा के लिए पोर्ट व्लेयर में नौसेना का एक संगठन कार्यरत है ।

समुद्री टोह की जिम्मेदारी नौसेना ने वायुसेना से अपने हाथों में ले ली है और उसने इस कार्य के लिए उपयुक्त किस्म के टोही विमान खरीदे हैं ।

नौसेना के पास कई किस्म के वायुयान और हेलीकाप्टर भी हैं, जैसे सुपर कान्सटेलेशन, आई.आर–38, एलिजेस, सी–हैरियर्स, आईलैंडर्स, सी–किंग, अल्युटर और के. ए–25 । इनका उपयोग कई कामों के लिए होता है जैसे समुद्री टोह, पनडुब्वी विध्वंस कार्य, खोज और वचाव, सैनिकों और सामग्री को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना, विमानों का अपरोधन, स्थल सहायता और पोत–भेदन आदि ।

1964 के वाद भारत ने स्वयं पोत वनाने के काम में वड़ी तरक्की की है । इस समय नौसेना के लिए अनेक पोतों, पनडुब्वियों और छोटे यानों का निर्माण वंवई के मझगांव डाक, कलकत्ते के गार्डन रीच शिपविल्डर्स और गोवा शिपयार्ड में हो रहा है ।

लियण्डर श्रेणी के छह फ्रिगेट आई.एन.एस. नीलगिरी, हिमगिरी, उदयगिरी, तारागिरि, विंध्यागिरि, देशी डिजाइन का एक पोत आई.एन.एस. गोदावरी, दो सर्वे पोत आई. एन.एस. सण्डल्याक और नीरदेशक समुद्री रक्षा नावें, वंदरगाहों के लिए उपयोगी और समुद्र में जाने वाली नावें, मूरिंग पोत और गश्ती नावें यहीं वनाई गई हैं और सेवारत हैं ।

तीन मिसाइलवाही विध्वंसक पोतों के आ जाने के वाद भारत की नौसेना की कार्यकुशलता काफी वढ़ गई है ।

तटरक्षक सेना रक्षा मंत्रालय के अधीन है । इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है और इसका प्रधान एक डायरेक्टर जनरल है। इसके तीन क्षेत्रीय मुख्यालय वंवई (पश्चिमी क्षेत्र), मद्रास (दक्षिणी क्षेत्र) और पोर्ट व्लेयर (अंडमान और निकोवार द्वीपसमूह) में हैं । तट रक्षक सेना के मुख्य कर्तव्य हैं – तटीय और तट से दूर के प्रतिष्ठानों और टर्मिनलों की रक्षा करना, मीन क्षेत्र की रक्षा करना, अनन्य आर्थिक क्षेत्र में गश्त करना और मछली के अवैध शिकार व तस्करी को रोकना और तलाशी व वचाव के कार्य । तटरक्षक सेना के वेड़े में कुठार (पहले नौसेना का पोत था), विक्रम, वीर (सव देश में वने) जैसे पोत, तट पर और दूर गश्त लगाने वाले जहाज हैं ।

वायुसेना पांच लड़ाकू कमांडों और दो समर्थन देने वाले कमांडों में संगठित है, जिनके नाम हैं :

1. पश्चिमी वायु सेना कमांड 2. पूर्वी वायु सेना कमांड, 3. दक्षिणी वायु सेना कमांड, 4. मध्य वायु सेना कमांड, 5. दक्षिणी-पश्चिमी वायु सेना कमांड, 6. प्रशिक्षण कमांड, 7. मेन्टीनेंस कमांड।

वायु सेना का मुख्यालय नई दिल्ली में है। वायु सेना अध्यक्ष की सहायता के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी हैं:

1. वायु सेना उपाध्यक्ष, 2 वायु सेना सहायक अध्यक्ष, 3. एयर अफसर इंचार्ज एडमिनिस्ट्रेशन, 4. एयर अफसर इंचार्ज पर्सनल, 5. एयर अफसर इंचार्ज मेंटीनेंस।

1947 भारत के विभाजन के समय भारत के हिस्से में वायु सेना का जो भाग आया उसमें 10 पूरे स्क्वाड्रन नहीं थे। आज भारत की वायु सेना में 50 से अधिक स्क्वाड्रन हैं जिसमें लड़ाकू, परिवहन, संपर्क और टोही वायुयान/हेलीकाप्टर सम्मिलित हैं। 1000 से अधिक वायुयान और हेलीकाप्टर हैं, जिनमें मुख्य हैं – कैनवरा, हंटर, अजीत, किरण, चेतक, मिग-21, मिग-23, मिग-25, सेक-7, एन-32, 11-76, एम.आई.-8, जगुआर और मिराज-2000। विदेशों से खरीदने के अतिरिक्त भारत स्वयं वायुयानों की डिजाइन तैयार करता और विमान बनाता है। भारतीय वायुसेना का तेजी से विकास होने का परिणाम यह है कि भारतीय वायुसेना एक संतुलित शक्ति बन गई है, जिसमें आधुनिक किस्म के वायुयान है, उपयुक्त उपकरण हैं और हर मौसम में कार्यवाही करने की क्षमता है। भारतीय वायु सेना के पास सब प्रकार के अस्त्र-शस्त्र हैं जिनमें अवरक्त और रडार और लक्ष्य पर वार करने वाली मिसाइलें शामिल हैं, जिन्हें दिन में और रात में भी छोड़ा जा सकता है और जो लक्ष्य बेधन में परिपक्व हैं।

चिकित्सा सेवाओं और जनसंपर्क आदि जैसे विषयों के बारे में जो तीनों सेवाओं के मिले-जुले संगठन हैं, जो रक्षा मंत्रालय के सीधे अधीन काम करते हैं। ऐसे कुछ महत्वपूर्ण संगठनों के नाम नीचे दिये गये हैं: 1. आर्म्ड फोर्सेज, फिल्म एंड फोटो डिवीजन, 2. आर्म्ड फोर्सेज, मेडिकल सर्विसेज, 3. डिफेन्स लैण्ड्स एंड कैन्टनमेंटस, 4. डायरक्टेरेट आफ पब्लिक रिलेशन्स, 5. हिस्टारिकल सेक्शन, 6 ज्वाइंट साइफर ब्युरो, 7. मिनिस्ट्री आफ डिफेन्स लाइब्रेरी, 8. नेशनल डिफेन्स कालेज, 9. सर्विस स्पेर्ट्स कंट्रोल बोर्ड, 10. विदेशी भाषा विद्यालय।

तीनों सेवाओं के मिले-जुले महत्वपूर्ण प्रशिक्षण संस्थान ये हैं – 1. इंस्टीट्यूट आफ डिफेंस मैनेजमेंट, 2. इंस्टीट्यूट आफ आर्मामेन्ट टेक्नालाजी, 3. डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कालेज 4. नेशनल डिफेंस अकादमी।

आर्म्ड फोर्सेज मेडिकल सर्विसेज: इसके अंतर्गत आर्मी मेडिकल कोर, आर्मी डेन्टल कोर और मिलिट्री नर्सिंग सर्विस सम्मिलित हैं, जो आर्म्ड फोर्सेज मेडिकल सर्विसेज के डायरेक्टर जनरल के नियंत्रण में काम करते हैं।

आर्म्ड फोर्सेज मेडिकल कालेज पुणे: यहां पूना विश्वविद्यालय के एम.बी.बी.एस. पाठ्यक्रम के लिए उम्मीदवारों को प्रशिक्षण दिया जाता है। हर साल 108 लड़कों और 26 लड़कियों को भर्ती किया जाता है। 110 बच्चों को छात्रवृत्ति मिलती है। लड़कों को स्थायी कमीशन्ड अफसर के रूप में काम करना पड़ता है। अन्य लोगों को केवल 7 साल तक काम करना आवश्यक होता है। पुणे में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की भी व्यवस्था है। विमान चालकों से संबंधित बीमारियों/समस्याओं की ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट आफ एवियेशन मेडिसिन बंगलोर में दी जाती है और नौसेना विशेषतया गोताखोरों और पनडुब्बी में काम करने वालों से संबंधित बीमारियों/समस्याओं की ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट आफ नेवल मेडिसिन, बंबई में दी जाती हैं।

कैन्टनमेंटों की स्थापना 1924 कैन्टनमेंट्स ऐक्ट के अधीन सशस्त्र सेनाओं के कर्मचारियों के लिए निवास की व्यवस्था करने और उनके स्वास्थ्य, कल्याण और सुरक्षा का ध्यान रखने के लिए की जाती है। चूंकि कैन्टनमेंट्स में बहुत से गैर-सैनिक लोग भी रहते थे, अतः इन क्षेत्रों के लिए स्थानीय स्वशासन की व्यवस्था करना आवश्यक माना गया।

कैन्टनमेंट्स ऐक्ट 1924 के अधीन बनाये गये कैन्टनमेंट्स बोर्ड केंद्र सरकार के अधीन अपने क्षेत्र के नगरपालिका प्रशासन का काम देखते हैं। ये बोर्ड अपने क्षेत्र के निवासियों के लिए नागारिक सुविधायें उपलब्ध कराते हैं और उनके कल्याण का काम करते हैं। भारत में कुल 62 कैन्टनमेंट्स हैं।

अंतरिक्ष

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम ने अपने उद्भव के साथ ही अंतरिक्ष तकनीक द्वारा मनुष्य और समाज की समस्याओं का समाधान का एक उद्देश्य रखा था।

इसी के अंतर्गत भागेदारी कार्यक्रम का भारत ने प्रस्ताव रखा है, जिसके तहत वह विकासशील देशों के साथ अंतरिक्ष तकनीक पर अपने अनुभवों, कार्यपद्धति, और प्रशिक्षण की भागेदारी करेगा।

नवंबर 1963 में रोहिणी राकेट के प्रक्षेपण से लेकर अब तक इसो ने एक लंबी दूरी को पूरा कर लिया है। 1969 में यान प्रक्षेपण विकास कार्यक्रम को तुम्बा से श्रीहरिकोटा में स्थानांतरित कर दिया गया था। इसो ने तीन पीढ़ियों की यान प्रक्षेपण का पी.एस.एल.वी.-डी 3 के 11 वें प्रक्षेपण के साथ प्रयोग किये है। इसो के यान प्रक्षेपण कार्यक्रम, उपग्रह विकास कार्यक्रम की अपेक्षा 50 प्रतिशत सफल रहे हैं। उपग्रह विकास कार्यक्रम की सफलता शत प्रतिशत रही है।

इसो द्वारा हाल में इनसैट के प्रक्षेपण के कार्यक्रम से भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में एक नयी दिलचस्पी का माहौल बन गया है। इन कार्यक्रमों में डाट के हजारों वी.एस.एन.एल. ग्राहक टकटकी लगाये बैठे हैं। उपग्रह [illegible]

मौसम के उद्देश्य के लिये है तो 3वी केवल संचार उपग्रह है। इस्रो को आशा है रिक इससे सी वैंड सेवा पर पड़ रहा वोझ हलका हो जायेगा। इस वैंड के ऊपर काम का वोझ इन्सैट2 डी के अक्टूवर 1997 में असमयिक निधन से 6 ट्रांसपोर्डरों का नुकसान हो गया था।

वृद्ध होते 2ए, 2वी. और 2सी प्रणाली और वढ़ायी गयी सी. वैंड की प्रवंध व्यवस्था अंतरिक्ष में है लेकिन यह दूरदर्शन और डाट की वढ़ रही मांग को पूरा करने में असमर्थ हैं। नुकसान होने के वाद इस्रो ने 25 ट्रांसपोर्डर वाले अरवसाट को अंतरिक्ष में भेजा। इससे वहुत सहायता भी मिली लेकिन इसके पास सी वैंड सुविधा नहीं है। मांग और आपूर्ति के वीच कमी वढ़ती जा रही है वावजूद इस्रो 2ई का प्रक्षेफण करने जा रहा है। इसमें 11 ट्रांसपोर्डर हैं और अधिकतर सी वैंड हैं इसलिये जरूरी हो गया है कि 3वी. के प्रक्षेपण से पहले 3ओ का प्रक्षेपण किया जाये ताकि वढ़ रही कमी को पूरा किया जा सके।

3ए और 3वी. पर काम जारी है और 99 के मध्य में इनके प्रक्षेपण की योजना है।

इस समय इस्रो के 4 अंतरिक्ष यान वजूद में है जो कि इन्सैट प्रणाली को 70 ट्रांसपोर्ड्र दे रहे हैं। यह सारे ट्रांसपोर्डर पूरी तरह से आरक्षित हैं। इन्सौट 3 की श्रृंखला की शुरुवात के साथ 150 ट्रांसपोर्डर उपलब्ध हो जायेंगें।

ई.ओ. सैट आई.आर.एस.–1 सी से भारतीय केंद्रों की ओर से इकट्ठा आंकड़े भी खरीद कर और देशों को वेचेगा। अमरीका का लैंडसे–6 पांच अक्तूवर 1993 को छोड़े जाने के तुरंत वाद नष्ट हो गया था। इससे आई.आर.एस.–1 ए आई.आर.एस.–1 वी और प्रस्तावित आई.आर.एस.–1 सी के आंकडों की मांग वढ़ गई है। आई.आर.एस. श्रेणी के उपग्रहों के आंकड़ों अमरीका लैंड सेट उपग्रहों से मिलते जुलते हैं। इसलिए अमरीकी कंपनियों के लिए भारतीय उपग्रहों के आंकड़े ज्यादा मूल्यवान हैं। अमरीका का अगला लैंडसेट अभी 1998 में छोड़ा जाना है।

ए.एस.एल.वी.–डी 4 भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिकों ने उपग्रह व अंतरिक्ष विज्ञान में अपनी क्षमता का परिचय देते हुए 113 किलोग्राम के स्त्रेस सी–2 नामक रोहिणी शृंखला के दूसरे दूर संवेदी उपग्रह को पृथ्वी की निचली कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित कर दिया।

शार (वेंगलूर) तिरुवनंतपुरम और कार निकोवार में स्थापित टेलीमेट्री तथा ट्रैकिंग केन्द्रों के नेटवर्क की मदद से यान की गतिविधियों पर निगरानी रखी गयी। कार निकोवार केन्द्र में प्राप्त सूचनाओं के अनुसार स्त्रेस सी–2 यान के चौथे चरण से सामान्य रूप से अलग हुआ।

इस्रो के प्रक्षेपण यानों के अग्रणी केन्द्र तिरुवनंतपुरम स्थित विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र वी.एस.एस.सी. ने एस.एल.वी. का डिजाइन तैयार किया है और उसका विकास व निर्माण किया है। जिन अन्य केन्द्रों ने प्रक्षेपण में योगदान दिया है उनमें तिरुवनंतपुरम स्थित लिक्विड प्रोपल्सन सिस्टम सेंटर, तिरुवनंतपुरम स्थित इसरो इनर्शियल सिस्टम यूनिट वंगलूर स्थित स्पेसक्राफ्ट मिशन कंट्रोल सेंटर के अलावा अनेक भारतीय उद्योग, अनुसंधान संस्थान और

इन्सैट–3वी परिक्रमा कक्ष में

इन्सैट–3वी का प्रक्षेपण 22 मार्च को किया गया था सफलतापूर्वक अपने परिक्रमा कक्ष में पंहुच गया। 2.5 डिग्री की दर से मुड़ते हुए 83 डिग्री पूर्वी रेखांश पर आकर यह स्थापित हो गया। इस्रो द्वारा अनेक परीक्षणों से पता चला कि यह अपना कार्य सुचारु रूप से कर रहा है। इस उपग्रह का मुख्य कार्य दूरसंचार है और इसका लाभ सवसे अधिक व्यवसायियों को होगा।

वंगलूर स्थित इसरों उपग्रह केन्द्र ने स्त्रेस सी–2 का डिजाइन तैयार किया है और उपग्रह का विकास व निर्माण किया है।

ए.एस.एल.वी की यह दूसरी सफल उड़ान है। 1987 और 1988 में पहली दो उड़ानें मिशन में नाकाम रही थी। तीसरा प्रक्षेपण 20 मई 1992 को हुआ, जो सफल रहा।

स्त्रेस सी–2 रोहिणी श्रेणी के पहले दूर संवेदी उपग्रह स्त्रेस नवंवर 1963 में रोहिणी राकेट के प्रक्षेपण से लेकर अव तक इसरो ने एक लंवी दूरी को पूरा कर लिया है। 1969 में यान प्रक्षेपण विकास कार्यक्रम को तुम्या से श्रीहरिकोटा में स्थानांतरित कर दिया गया था। इसरो ने तीन पीढ़ियों की यान प्रक्षेपण का पी.एस.एल.वी–डी 3 के 11वें प्रक्षेपण के साथ प्रयोग किये है।

इसरो के यान प्रक्षेपण कार्यक्रम, उपग्रह विकास कार्यक्रम की अपेक्षा 50 प्रतिशत सफल रहे हैं। उपग्रह विकास कार्यक्रम की सफलता शत प्रतिशत रही है।

इसरो के एनाट्रिक्स निगम और अमेरिका की अर्थ आब्जर्वेशन सैटेलाइट (इ.ओ. सैट) के वीच आई.आर.एस. उपग्रहों के आंकड़ों के वारे में 21 अक्तूवर 1993 को समझौता हुआ था। यह व्यावसायिक व्यवस्था उसी समझौते के लागू होने के सिलसिले में की जा रही है। ई.ओ. सैट दूर संवेदी आंकड़ों को इकट्ठा कर उन्हें अमेरिका और दूसरे देशों में वेचने वाली वड़ी एजंसियों में से एक है।

ई.ओ. सैट को मालूम है कि भारत को दूसरी पीढ़ी का दूरसंवेदी उपग्रह आई.आर.एस.–1 सी अमरीका के मौजूदा लैंड सैट से वेहतर और यह अमरीका और फ्रांस के ऐसे अगली पीढ़ी के उपग्रहों की टक्कर का है और उनसे पहले छोड़ा जाएगा।

ई.ओ. सैट आई.आर.एस.–1 सी से भारतीय केंद्रों की ओर से इकट्ठा आंकड़े भी खरीद कर और देशों को वेचेगा। अमरीका का लैंडसे–6 पांच अक्तूवर 1993 को छोड़े जाने के तुरंत वाद नष्ट हो गया था। इससे आई.आर.एस.–1 ए, आई.आर.एस.–1 वी और प्रस्तावित आई.आर.एस.–1 सी के आंकडों की मांग वढ़ गई है। आई.आर.एस. श्रेणी के उपग्रहों के आंकड़ों अमरीका लैंड सेट उपग्रहों से मिलते जुलते हैं। इसलिए अमरीकी कंपनियों के लिए भारतीय उपग्रहों के आंकड़े ज्यादा मूल्यवान हैं। अमरीका का अगला लैंडसेट अभी 1998 में छोड़ा जाना है।

ए.एस.एल.डी.वी : पन्द्रह करोड़ रुपये की लागत से वना 23.8 मीटर लंवा और 41.7 टन भारी ए.एस.एल.वी.डी.– 4 भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन द्वारा विकसित दूसरी

भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम: आर्यभट्ट से जी. सेट तक

पच्चीस वर्ष पूर्व आर्यभट्ट के साथ शुरू हुए भारत के उपग्रह कार्यक्रम की गौरव गाथा को इस वर्ष जी. सेट के प्रक्षेपण के साथ नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने की तैयारी में वैज्ञानिक जुटे हुए हैं।

आर्यभट्ट के प्रक्षेपण के इस रजत जयंती वर्ष तक भारतीय उपग्रह कार्यक्रम ने इतने लंबे-लंबे डग भरे हैं कि यह विश्वास करना मुश्किल है कि इसकी शुरुआत छह टिन शैडों में हुई थी और आर्यभट्ट महज तीन करोड़ रूपए में बनकर तैयार हो गया था।

19 अप्रैल, 1975 को अंतरिक्ष में प्रक्षेपित आर्यभट्ट के साथ भारत ने अंतरिक्ष में अपना पहला कदम रखा था। आज भारत एक महत्वपूर्ण अंतरिक्ष शक्ति बन चुका है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) इन 25 वर्षों में 26 उपग्रह बना चुका है। इनमें आर्यभट्ट के अलावा भास्कर एक व दो एरियन पैसेंजर पेलोड एक्सपेरिमेंट (एप्पल), रोहिणी इंडियन रिमोट सेंसिंग सैटेलाइट (आईआरएस) और इंडियन नेशनल सैटेलाइट (इनसैट) शामिल हैं। इसके अलावा पीएसएलवी जैसे उपग्रह प्रक्षेपण राकेटों के निर्माण में भी महारत हासिल कर ली है। अब तक का सबसे बड़ा राकेट जियोस्टेशनरी सैटेलाइट लांच व्हीकल (जीएसएलवी) इस वर्ष छोड़ा जाएगा, जो अब तक के सर्वाधिक परिष्कृत 1600 किलो वजन वाले जी सैट को अंतरिक्ष में स्थापित करेगा।

बेंगलूर स्थित इसरो सैटेलाइट सेंटर (इसैक) की रजत जयंती के अवसर पर इसरो द्वारा प्रकाशित स्मारिका के अनुसार आर्यभट्ट की कहानी भारतीय वैज्ञानिकों के अथक परिश्रम और दुरूह चुनौतियों से जूझने की कहानी है। इसरो के युवा वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की टीम ने 360 किलो वजन के इस उपग्रह का निर्माण बेंगलूर के निकट पीन्या औद्योगिक क्षेत्र के टिन शैडों में महज 30 महीनों में कर दिखाया था, जहां उन्हें प्रयोगशालाओं ओर कार्यशालाओं तक का निर्माण खुद ही करना पड़ा था। भारतीय वैज्ञानिकों की इस उपलब्धि ने विकसित देशों को दांतों तले उंगली दबाने पर मजबूर कर दिया था।

आर्यभट्ट परियोजना के प्रणेता और इसरो के तत्कालीन प्रमुख प्रो. विक्रम साराभाई के दिसंबर 1971 में निधन से इसे गहरा धक्का पहुंचा था। उस समय तक इसके लिए आवश्य बुनियादी सुविधाएं भी मौजूद नहीं थीं। लेकिन अंतरिक्ष आयोग के वर्तमान सदस्य प्रो. यू. आर. राव के नेतृत्व में वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की युवा टीम ने इस चुनौती को स्वीकार किया। इसरो के वर्तमान प्रमुख प्रो. कस्तूरीरंग इस टीम के एक महत्वपूर्ण सदस्य थे।

इसैक रजत जयंती स्मारिका के अनुसार 1957 में सोवियत संघ के स्पुतनिक उपग्रह के साथ अंतरिक्ष युग की शुरुआत हुई थी और इसके तुरंत बाद अमरीका ने भी अपने उपग्रह छोड़े थे। भारत ने भी अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का महत्व बहुत जल्द पहचान कर 1962 में ही इस क्षेत्र के कदम रख दिया था। इसी वर्ष अंतरिक्ष अनुसंधान पर राष्ट्रीय समिति गठित की गई और 21 नवंबर 1963 को तिरुवनंतपुरम के निकट स्थापित थुम्बा विषुवतीय राकेट प्रक्षेपण केन्द्र से भारत का पहला प्रायोगिक राकेट छोड़ा गया।

प्रो. यू. आर राव ने अमरीका में नासा में काम करते हुए पायनियर तथा एक्सोरर उपग्रह श्रंखलाओं पर अपने अनुसंधान तथा अनुभव को आर्यभट्ट के निर्माण में झोंक दिया। उन दिनों की याद करते हुए वह कहते है कि परियोजना के लिए जगह की खोज करने से लेकर पीन्या के टिन शैडों में प्रयोगशालाओं के लिए साफसुथरे कमरे तैयार कराने तक का काम उन लोगों को खुद ही कराना पड़ा था।

इन विषम परिस्थितियों के बावजूद आर्यभट्ट इस समय अन्य देशों द्वारा प्रक्षेपित उपग्रहों से किसी भी मायने में कम उन्नत और परिष्कृत नहीं था। इसमें 12000 से अधिक इलेक्ट्रोनिक कलपुर्जे तथा 20000 सौर बैटरियां लगी थीं। उपग्रह के भीतर 25000 से भी अधिक विद्युत जोड़ थे और इसमें लगे तारों की कुल लंबाई 6 किलोमीटर से भी ज्यादा थी। इसकी तकनीकी प्रणालियां इसके अनुमानित कार्यकाल छह माह के बाद भी सुचारू रूप से काम करती रहीं।

प्रो. राव ने कहा कि प्रो. सारभाई ने शुरु से हमारे सामने उपग्रह कार्यक्रम का यह स्पष्ट लक्ष्य रखा था कि इससे देश और समाज की समस्याओं के समाधान में मददगार होना चाहिए। शिक्षा के प्रसार के लिए संचार उपग्रहों के निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसके बाद दूरसंवेदी उपग्रह (आईआरएस) का निर्माण किया गया, जो किसानों और मछुआरों से लेकर मौसम वैज्ञानिकों और भू-वैज्ञानिकों तक के लिए बेहद मददगार साबित हुए हैं।

इसैक के निदेशक प्रो. पी.एस. गोयल के अनुसार जिस समय आर्यभट्ट का निर्माण किया गया, उस वक्त भारत में आयात संस्कृति का बोलबाला था। उच्च प्रौद्योगिकी के लिए भारत लगभग पूरी तरह विदेशों पर निर्भर था। ऐसे माहौल में आर्यभट्ट ने भारतीयों में जबर्दस्त आत्मविश्वास भर दिया था, जिसकी आज फिर बहुत जरूरत है।

इसैक ने आर्यभट्ट के प्रक्षेपण के दिन 19 अप्रैल को हर वर्ष उपग्रह प्रौद्योगिकी दिवस के रूप में मनाने का निर्णय किया है।

पीढ़ी का प्रक्षेपण यान है। यह एक सौ से डेढ सौ किलोग्राम तक के उपग्रहों को निकट की कक्षा में स्थापित कर सकता है, जो पृथ्वी से करीब 400 कि.मी. दूर है। इसमें सत्तर प्रतिशत उपकरण स्वदेशी हैं।

पी.एस.एल.वी.: पी.एस.एल.वी. से भारतीय दूर सवेदी वर्ग आई.आर.एस.एस. के एक टन भारी उपग्रह को सूर्य सापेक्ष कक्षा में तथा जी.एस.एल.वी. से इनसेट वर्ग के दो टन भारी उपग्रह को भूस्थैतिक कक्षा में भेजा जा सकेगा।

ए.एस.एल.वी.-डी-3 के 19 मई 1992 को सफल प्रक्षेपण जो स्ट्रेटेड रोहिणी श्रृंखला के अंतर्गत किये गये है

स्वदेश में निर्माण और प्रक्षेपण के द्वार खोल दिये । इस प्रकार पोलर सैटेलाइट लांच वेहिकिल की शुरुवात हुई ।

275 टन के वजन और 44 मीटर ऊंचे पी.एस.एल.वी. की लागत 45 करोड़ रु. आयी थी । इसकी क्षमता 1000 किलो के रिमोट सेंसिग उपग्रह को 900 किमी की कक्षा में स्थापित करने की थी. 20 सितंबर 1993 को श्रीहरिकोटा से इसे 850 कि. ग्रा. के आई.आर.एस. आई.ई. उपग्रह के साथ प्रक्षेपित किया गया ।

बावजूद इसके कि प्रारंभिक उड़ान बिलकुल ठीक हुई । इसके समस्त 30 उपकरण सही कार्य कर रहे थे जिसमें 10 प्रमुख मोटर्स भी शामिल थे, प्रक्षेपण उपग्रह को कक्षा में स्थापित नहीं कर सका । दूसरे चरण और तीसरे चरण में अलग होने के दौरान कोई असंभावित कारण से यह मार्ग से हटकर समुद्र में गिर गया । इसरो ने इस प्रक्षेपण को आंशिक रूप से सफल माना । पी.एस.एल.वी.–डी–1 की सफलता आने वाली पीढ़ी के प्रक्षेपण के विकास से जुड़ी हुई थी । जियोसिंक्रेनस सैटेलाइट लांच वेहिकिल की ओर तेजी से काम हो रहा था । लेकिन दो कारणों से अब इस पर काम रोक दिया गया है । पहला तो पी.एस.एल.वी–डी–1 का असफल प्रक्षेपण और दूसरा संयुक्त राज्य के दबाव में आकर रूस द्वारा क्रायोजेनिक इंजन व तकनीक देने से इंकार कर देना ।

जी.एस.एल.वी: इसकी क्षमता 2,500 कि.ग्रा. के वर्ग के दूरसंचार उपग्रह को अंतरिक्ष में स्थापित करने की है। इसका विकास पी.एस.एल.वी. के आधार पर किया गया है। यह तीन चरण का यान है। पहले चरण ने 229 टन ठोस प्रोपेलेंट कोर मोटर, जिसमें चार द्रवीय प्रोपेलेंट स्ट्रैयान्स है जिसमें 40 टन का ईंधन है। दूसरे चरण में लिक्विड प्रोपेल्शन सिस्टम है जिसमें 37.5 टन जैसा कि पी.एस.एल.वी में होता है और तीसरे चरण में दुबारा चालू होने वाले क्रायोजेनिक इंजन जिसमें 12 टन द्रव आक्सीजन और द्रव हाइड्रोजन का ईंधन है। जी.एस.एल.वी का प्रक्षेपण 1997–98 में रूस से प्राप्त क्रायोजेनिक इंजन के साथ किया जायेगा।

क्रायोजेनिक इंजन: भारतीय अंतरिक्ष विज्ञानियों ने इस तकनीक पर पूरा ध्यान केंद्रित कर लिया है और उनका पूरा यत्न है कि इसका विकास देश में कर लिया जाये। ताकि 1997 में और अत्यधिक विकसित जियोसिंक्रोनस सेटेलाइट लांच वेहिकल से 2000 किलो के उपग्रह का सफल प्रक्षेपण किया जा सके।

इसरो ने संरचना और विकास के लिये प्रारंभिक कार्य शुरू कर दिया है।

आने वाले 7 वर्षों के प्रमुख भारतीय अंतरिक्ष योजनाएं निम्न हैं–

(क) इंडियन रिमोट सेंसिग सैटेलाइट श्रृंखला: आई.आर.एस.–1 सी 1994–95 में, 1 डी 1996–97 में आर–एस ए या 2 बी 1998–99 में ।

(ख) इंडियन नेशनल सैटेलाइट श्रृंखला: इन्सेट–2 सी 1994–95 में, इन्सेट–2 डी 1995–96 में, इन्सेट–2 ई 1996–97 और इन्सेट–3 ए 1999–2000 में।

(ग) खोजी व तकनीकी पेलोड: आई.आर.एस.पी.–2 1994–95 ग्रामसैट 1995–96 व 1996–97 में ।

(घ) स्ट्रेटड रोहिणी सैटेलाइट श्रृंखला : स्रोस–सी 2 1993–94 और स्रोस–सी 3 1095–96 में ।

(ज) पोलर सैटेलाइट लांच वेहिकिल पी.एस.एल.वी.–डी–1 1993–94 और पी.एस.एल.वी–डी–2 1994–95 में ।

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम 1963 में त्रिवेंद्रम के निकट मछुआरों के एक गांव तुम्बा में साउंडिग राकेट प्रक्षेपण सुविधा केंद्र (साउंडिग राकेट लांचिंग फेसेलटी) की स्थापना के साथ आरंभ हुआ । तुम्बा इक्वेटोरियल राकेट लांचिंग स्टेशन ने, जिसे 1968 में संयुक्त राष्ट्र संघ को समर्पित कर दिया गया, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के विकास के लिए केंद्र के रूप में काम किया । आज भारतीय अनुसंधान संगठन के अंतर्गत निम्नलिखित संस्थान काम कर रहे हैं ।

(1) विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर, त्रिवेंद्रम; (2) शार सेंटर, श्रीहरिकोटा; (3) इसरो सेटेलाइट सेंटर, बंगलौर; (4) आक्जीलरी प्राफ्लशन सिस्टम यूनिट, बंगलोर; (5) स्पेस एप्लीकेशन सेंटर, अहमदाबाद; (6) डेवलपमेंट ऐंड एज्युकेशनल कम्युनिकेशन यूनिट, अहमदाबाद; (7) इसरो टेलीमीटरी ट्रैकिंग एंड कमांड नेटवर्क जिसका मुख्यालय बंगलौर में है ।

भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम ने 1975 में देश में निर्मित भारत के पहले अन्तरिक्ष यान आर्यभट्ट को अन्तरिक्ष में भेज कर महत्वपूर्ण कदम उठाया । 360 कि. ग्रा. का यह उपग्रह, जिसे उपग्रह टेक्नोलोजी में आधारभूत विशेषज्ञता अर्जित करने हेतु तैयार किया गया था, सोवियत संघ के एक राकेट कैरियर की सहायता से कक्षा में पहुंचाया गया ।

आर्यभट्ट के बाद एक प्रायोगिक भू–प्रक्षेपण उपग्रह भास्कर–1 छोड़ा गया । भास्कर–1 को, जिसे 1979 में कक्षा में पहुंचाया गया, जल विज्ञान, वानिकी, हिम गलन और समुद्र विज्ञान संबंधी भू–प्रक्षेपण अनुसंधान के लिए टीवी कैमरे और माइक्रोवेव रेडियोमीटर से सुसज्जित किया गया था । इस उपग्रह का सुधरा हुआ रूप भास्कर–2 था, जिसे 1981 में छोड़ा गया ।

उपग्रह संचार के क्षेत्र में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने भारत की संचार आवश्यकताओं के अनुरूप [illegible] प्रयोग किये । ये थे – 1977–78 में [illegible] दूरदर्शन प्रयोग परियोजना (एस.आई.टी.ई.) जिसे [illegible] कार्यक्रम" कहा गया । "साइट" के अंतर्गत [illegible] ए.टी.एस–4 का प्रयोग करके भारत के [illegible] सामुदायिक टीवी रिसीवर्स के लिए [illegible] सीधा प्रसारण किया गया । इसी [illegible] अंतरिक्ष यान "सिम्फोनिया" की [illegible] कार्यक्रम के अधीन नवीन संचार [illegible]

अंतरिक्ष टेक्नोलाजी के [illegible] उपग्रह प्रेपण यान तैयार करने [illegible] भारत का पहला उपग्रह प्र[illegible] चार चरण वाले ठोस प्रो[illegible] 1981 और 1983 में [illegible] के रोहिणी श्रृंखला के [illegible] जून 1981 में [illegible]

'एपल' फ्रेंच गयाना में कोरु नामक स्थान से यूरोपियन स्पेस एजेन्सी के एरियान प्रक्षेपण यान की मदद से छोड़ा गया। यह उपग्रह अपनी कक्षा में 27 महीने सक्रिय रहा और इस अवधि में इसने अनेक उच्चस्तरीय उपग्रह संचार प्रयोग किये।

1983 में अमरीकी अंतरिक्ष शटल की सहायता से भारत के बहुप्रयोजनीय उपग्रह इन्सेट-1 बी को सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में पहुचाने और उस उपग्रह के संचालन में सफलता प्राप्त करने के बाद भारत देश के भीतर संचार, मौसम विज्ञान और सामुदायिक दूरदर्शन प्रसारण में पूरी तरह से सक्षम हो गया। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने मौसम विज्ञान संबंधी और उच्चतर वायुमंडलीय अनुसंधान के लिए आर.एच.-125, आर.एच.-200, सेंचूर आर.एच.-300 आर एच-560 जैसे साउंडिग राकेटों की एक श्रृंखला [illegible]कसित कर ली है। आर.एच.-जो 100 कि.ग्रा. वजन के [illegible]ाथ 350 कि.मी. की ऊंचाई तक पहुंच सकता है। भारत [illegible] तीनों साउंडिंग राकेट रेंजों - थुम्बा, श्रीहरिकोटा और [illegible]लासोर से लगातार परीक्षण किए जा रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय [illegible]कास के लिए अंतरिक्ष के उपयोग में अन्य देशों के साथ [illegible]क्रिय सहयोग करने की भारत की नीति की कुछ महत्वपूर्ण [illegible]तिहासिक घटनाएं हैं- तुम्बा इक्वेटोरियल राकेट लांचिग [illegible]टेशन संयुक्त राष्ट्र संघ को समर्पित करना, अमरीका के ए.टी.एस.-6 उपग्रह की सहायता से शैक्षणिक दूरदर्शन, फ्रांस-रूस के अंतरिक्ष यान 'सिम्फोनी' की सहायता से संचार प्रयोग करना, सोवियत रूस के सहयोग से आर्यभट्ट और भास्कर अंतरिक्ष यान अंतरिक्ष में भेजना और यूरोपीय स्पेस एजेन्सी एरियान की सहायता से एपल को अंतरिक्ष में पहुंचाना और अमरीकी स्पेस शटल की सहायता से इन्सेट-1 बी को कक्षा तक पहुंचाना।

पूर्णतः भारत में निर्मित पहले अत्याधुनिक बहुउद्देश्यीय उपग्रह इनसेट-2 ए को फ्रेंच गयाना अंतरिक्ष केन्द्र से सफलता-पूर्वक प्रक्षेपित कर दिया गया। इसे यूरोप के सबसे शक्तिशाली राकेट एरियन-4 के जरिए अंतरिक्ष में छोड़ा गया है। प्रक्षेपण की इसरो के तीन दशक के अंतरिक्ष कार्यक्रमों को मील का पत्थर माना जा रहा है क्योंकि उपग्रह के सफल प्रक्षेपण के साथ ही आयातित उपग्रहों पर भारत की निर्भरता समाप्त हो गई है और स्वदेशी संचार उपग्रहों के निर्माण के एक नए युग का सूत्रपात हुआ है। इनसेट-1 श्रृंखला के सभी उपग्रह अमेरिका से खरीदे गए थे।

भारतीय उपग्रह को ई.एल. ए-2 प्रक्षेपण पैड से एरियन 44 राकेट के जरिए अंतरिक्ष में छोड़ा गया। यह एरियन वाहनों का सबसे शक्तिशाली राकेट है। इसे पहली बार अप्रैल 1991 में छोड़ा गया था।

परिवहन

देश में वर्तमान में परिवहन व्यवस्था अनेक प्रणालियों को लेकर है। इसमें रेलवे, सड़क परिवहन, वायु परिवहन और समुद्रीय यान परिवहन शामिल है। पिछले वर्षों में इसे क्षेत्र का अभूतपूर्व विकास हुआ है।

रेलवे

भारतीय रेलवे एशिया की सबसे बड़ी और संसार के चौथे नंबर की सबसे बड़ी रेलवे व्यवस्था है। भारत में पहली रेल बंबई से थाना तक (34 कि.मी.) अप्रैल 1853 में आरंभ हुई थी जोकि अब बढ़ कर 62,915 किलोमीटर मार्ग को तय कर रही है। 7,056 स्टेशनों से गुजरती भारतीय रेल प्रतिदिन लगभग 11270 रेलें चलाती हैं। भारतीय रेलों के तीन गेज - ब्राडगेज (बड़ी लाइन), मीटर गेज (छोटी लाइन) और नैरोगेज (संकरी लाइन) हैं। रेलवे के पास 7,206 इंजन, 34,728 सवारी डिब्बे और 263,981 माल वैगन हैं। भारतीय रेलवे में 16 लाख लोग कार्यरत हैं जो देश में सर्वाधिक है।

माल ढुलाई: माल गाड़ियां प्रति दिन लगभग 11 लाख विभिन्न वस्तुओं की ढुलाई करती हैं। अप्रैल-अगस्त 1999 के दौरान रेलवे ने 18.174 करोड़ टन माल की ढुलाई की जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में की गई ढुलाई से 1.346 करोड़ टन तथा निर्धारित लक्ष्य से 22.4 करोड़ टन ज्यादा है। ढोये गये कुल माल में 8.583 करोड़ टन निर्यात के लिये लौह अयस्क, 1.730 करोड़ टन सीमेंट, 1.206 करोड़ टन खाद्यान्न, 1.232 करोड़ टन उर्वरक, 1.413 करोड़ टन पेट्रोलियम, तेल एवं स्नेहक तथा 1.668 करोड़ टन अन्य माल शामिल था।

भारतीय रेलवे ने मेट्रो रेलवे (भूमिगत रेलवे) का आरंभ 1984-85 में हुआ। कलकत्ते में एस्प्लैनेड से भवानीपुर के बीच पांच स्टेशनों को जोड़ने वाले 3.5 कि.मी. के मार्ग पर मेट्रो रेलवे का व्यावसायिक परिचालन इसी अवधि में आरंभ हुआ। बाद में दमदम से बेलगाछिया तक 2.2 कि.मी. का रेल मार्ग भी व्यावसायिक परिचालन के लिए खोल दिया गया।

रेलवे के प्रशासन और प्रबंध का काम रेलवे बोर्ड के अधीन है और रेलवे बोर्ड एक कैबिनेट मंत्री की देखरेख में काम करता है। रेलवे बोर्ड में एक चेयरमैन होता है, जो [illegible] मंत्रालय का पदेन मुख्य सचिव होता है, एक वित्त आयु[illegible] है और चार अन्य सदस्य होते हैं, जो भारत सरकार [illegible] सचिव होते हैं।

भारतीय रेलवे नौ खंडों (जोनों) में विभाजित है। [illegible] खंड का प्रधान एक जनरल मैनेजर होता है।

सड़क

भारत में सड़क नेट विश्व में सबसे बड़ा है। 19[illegible] सड़कों की लंबाई 1.69 मिलयन कि.मी से 199[illegible] में बढ़कर 2.04 मिलयन किमी हो गयी। 31 मार्च [illegible] तक सीमा सड़क संगठन ने 24,000 किमी. सड़[illegible]

र्माण किया जिसमें से 19,000 किमी. की देखभाल भी ह संगठन कर रहा है। राष्ट्रीय राज्य मार्ग 1995 तक 34,058 किलोमीटर का था जो कि कुल सड़क की लंवाई का 2 प्रतिशत है।

प्रांतीय राजमार्ग, जिलों और ग्रामीण क्षेत्रों की सड़कों का त्तरदायित्व प्रांतीय सरकार पर होता है । ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कें विकसित की जा रही है । उद्देश्य यह रखा गया है कि 500 या उससे अधिक आवादी वाले गांवों को सड़क सुविधा मिलनी चाहिये ।

राज्यों, जिलों और ग्रामीण क्षेत्रों की सड़कों की जिम्मेदारी राज्य सरकारों के ऊपर है । ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों का विकास न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम के अधीन किया जा रहा है, जिसका लक्ष्य 1990 तक 1500 और इससे अधिक जनसंख्या वाले सभी गांवों और 1000 से 15,000 तक जनसंख्या वाले 50 प्रतिशत गांवों को सभी मौसमों में इस्तेमाल होने लायक सड़कों से जोड़ना है ।

सड़क संचार के माध्यम से आर्थिक विकास को तेज करने और सीमा रक्षा को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से 1960 में सीमा सड़क विकास वोर्ड की स्थापना की गई थी । सीमा सड़क संगठन सड़क निर्माण का काम स्वयं करता है ।

राष्ट्रीय राज मार्ग (राजमार्ग संख्या, रास्ता और कुल दूरी किलोमीटर में) 1. दिल्ली अंवाला–जालंधर–अमृतसर–भारत पाक सीमा (456), 2. दिल्ली–मथुरा–आगरा–कानपुर–इलाहावाद–वाराणसी–मोहानिया–वरही–पल्सित–वधायाती–वारा–कलकत्ता (1490), 3. आगरा–ग्वालियर–शिवपुरी–इंदौर–धुले–नासिक–थाने–मुंबई (1161) 4. राजमार्ग संख्या 3 थाने–पुणे–बेलगांवहुबली–बंगलौर–रानीपेट–चेन्नई के निकट जंक्शन (1235) ,5. राजमार्ग संख्या 6 वहारगोरा–कटक–भुवनेश्वर–विशाखापट्टनम–विजयवाड़ा–चेन्नई के निकट जंक्शन (1533), 6. धुले–नागपुर–रायपुर–सम्वलपुर–बहारगोरा–कलकत्ता (1645), 7. वाराणसी–मंगावन–रेवा–जवलपुर–लखनदन–नागपुर–हैदरावाद–कुर्नूल–वंगलौर–कृष्णागिरी–सेलम–दिंदीगुल–मदुराई–कन्याकुमारी (2369), 8. दिल्ली–जयपुर–अजमेर–उदयपुर–अहमदावाद–वदोदरा–मुंवई (1428), 9. पुणे–शोलापुर–हैदरावाद–विजयवाड़ा (791), 10. दिल्ली–फजिल्का–भारत–पाक सीमा (403), 11. आगरा–जयपुर–वीकानेर (582), 12. जवलपुर–भोपाल–खिलचीपुर–अखलेरा–झालावाड़–कोटा–वूंदी–देवली–टोंक–जयपुर (890), 13. शोलापुर–चित्रदुर्ग (451). 14. ब्यावर–सिरोही–राधापुर (450), 15. पठानकोट–अमृतसर–भटिंडा–गंगानगर–वीकानेर–जैसलमेर–वाड़मेर–सामख्याली कंडला के निकट (1526), 16. निजामावाद–मन्चीरेल–जगदलपुर (460), 17. पानवेल–महद–पणजी–कारवार–मंगलौर–कन्नूर–कोझीकोड़–फरुख–कुट्टीपुरम–पुतुपोन्नानी–चावक्काड़–कीडगल्लूर जंक्शन इडपल्ली के निकट (1269), 18. कुरनूल–नंदियाल–कुडप्पा चिट्टूर के निकट (369), 19. गाजिपुर–वलिया–पटना (240), 20. पठानकोट–मंडी (220), 21. चड़ीगढ़–रोपड़–विलापुर–मंडी–कुल्लु–मनाली (323), 22. अम्वाला–काकला–शिमला–नारकंडा–रामपुर–चिनी भारत तिव्वत सीमा (459), 23. चास–रांची–राउलकेला–तलचेर (459), 24. दिल्ली–वरेली–लखनऊ (438), 25. लखनऊ–कानपुर–झांसी–शिवपुरी (319), 26. झांसी–लखनदन (396), 27. इलाहवाद–मंगावन (93), 28. वरोनी–मुजफ्फपुर–पिपरा–गोरखपुर–लखनऊ (570), 29. गोरखपुर–गाजीपुर–वारणासी (230), 30. मुहानिया–पटना–वचतीवरपुर (230), 31. वरही–वख्तियारपुर–मोकामेह–पूर्णिया–दालकोला–सिलिगुड़ी–सिवोक–कूंच विहार–उत्तरी सलमाड़ा नाल वड़ी–चिराली (1125), 32. गोविन्दपुर–धनवाद–जमशेदपुर (179), 33. वरही–रांची (352), 34. दालकोला–वहरामपुर–वारासात–कलकत्ता (443), 35. वारासात–वनगांव–भारत वंगलादेश सीमा (61), 36. नवगांव–दबाका–दीमापुर (170), 37. गोलपाड़ा–गौहाटी–जोरहाट–कामरगांव–माकम–सैकोघाट (680), 38. माकम–लैडोह–लेखापानी (54), 39. नमालीगढ़–इंफाल–पालेन–भारत वर्मा सीमा (436), 40. जोरवाट–शिलांग–भारत वंगलादेश सीमा (161), 41. कोलाघाट–हल्दिया (51), 42.

रेलवे जोन

जोन	मुख्यालय	किलोमीटर	वीच में आने वाले राज्य
मध्य	मुंवई	7076	हरियाणा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश,महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश
पूर्वी	कलकत्ता	4303	विहार, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, प. वंगाल
उत्तरी	नई दिल्ली	10995	गुजरात, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, चंडीगढ़
पूर्वोत्तर	गोरखपुर	5131	विहार, उत्तर प्रदेश, [illegible]
पूर्वोत्तर सीमांत	मालेगांव (गौहाटी)	3858	नागालैंड, त्रिपुरा, प. [illegible]
दक्षिण	चेन्नई	7009	आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल
दक्षिण-मध्य	सिकंदरावाद	7218	आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश,गोवा,
दक्षिण-पूर्व	कलकत्ता	7161	आंध्र प्रदेश, विहार,मध्य प्र.
पश्चिमी	मुंम्वई	9735	महाराष्ट्र, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात

चौदह नए राजमार्गों की घोषणा

सरकार ने ग्यारह राज्यों में दो हजार 411 किलोमीटर लंबाई के चौदह नए राजमार्गों की घोषणा की।

इसके साथ ही देश में राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लंबाई 41 हजार 996 किलोमीटर हो जाएगी। इन अतिरिक्त राजमार्गों से देश के पिछड़े आदिवासी इलाकों तक राजमार्गों से देश के पिछड़े आदिवासी इलाकों तक पहुंच होने के साथ-साथ बंदरगाहों, तटवर्ती, पर्यटन केंद्रों से बेहतर संपर्क स्थापित करने में मदद मिलेगी। इससे देश की अर्थव्यवस्था के विकास को भी बल मिलेगा। सूत्रों ने बताया कि इन नए राष्ट्रीय राजमार्गों से हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, असम ओडीशा, आंध्र प्रदेश, केरल और कर्नाटक को लाभ होगा।

देश के चारों कोनों को जोड़ने वाली इस महत्वाकांक्षी परियोजना पर करीब 50 हजार करोड़ रुपए का खर्च होने का अनुमान है।

संभलपुर–अंगुल (261), 43. रायपुर–विजयनगरम (551), 44. शिलांग–पासी–बदरपुर–अगरतला (495), 45. चैन्नई–तिरुचिरापल्ली–डिंडीगुल (387), 46. कृष्णगिरी–रानीपेठ (132), 47. सेलम–कोयंबत्तूर–त्रिशूर–एरणाकुलम–तिरुवनन्तपुरम–कन्याकुमारी (640), 48. बंगलौर–हसन–मंगलौर (328), 49. कोचिन–मदुराई–धनुषकोड़ी (440), 50. पुणे के निकट राजमार्ग न. 4 के ... नासिक जंक्शन (192), 51. पैकांग–दुरा–दालु (149), 52. बाईहाटा–चेराली–तेजपुर–बांदेर–देवा–उत्तरी लखिनपुर–पैसीघाट–तेजु–सीतापानी जंक्शन (850), 53. बदरपुर–जिरीघाट–इंफाल–सिलचर (320), 54. सिलचर–ऐजवाल–तुईपांग (560), 55. सिलीगुड़ी–दार्जलिंग (77), 56. लखनऊ–वाराणसी (285)। कुल–34298।

राष्ट्रीय जल मार्ग

भारत में नदी मार्ग व्यापक है, हालांकि क्षेत्रानुसार इनमें भिन्नता है। दुर्भाग्य से प्रकृति के इस वरदान का समुचित उपयोग नहीं हो पाया है। नदियों का उपयोग केवल सिंचाई तक ही आधारित नहीं है बल्कि इनका उपयोग परिवहन के रूप में भी किया जा सकता है। जो कि न केवल अल्प व्यय का ही है बल्कि पर्यावरण के अनुकूल भी है।

अभी तक तीन राष्ट्रीय जल मार्ग परिवहन के लिये घोषित किये गये हैं। 1986 में गंगा–भागीरथी : हुगली नदी प्रणाली के इलाहाबाद–हल्दिया तक (1,620 किमी) की दूरी को राष्ट्रीय जलमार्ग–1 घोषित किया गया था। दो वर्ष के पश्चात ब्रह्मपुत्र नदी में सदिया–बंगलादेश सीमा (891 किमी) को राष्ट्रीय जल मार्ग–2 घोषित किया गया और 1993 में केरल में वेस्ट कोस्ट कैनाल चम्पाकरा कैनाल (14 किमी) और उद्योगमंडलम केनाल (23 किमी) से कोल्लम–कोट्टापुरम (168 किमी) को राष्ट्रीय जल मार्ग–3 घोषित किया गया।

तीन और जलमार्गों का विकास किया जा रहा है। इनमें से एक सुंदरवन (191 किमी) जिसके द्वारा सागर व बंगालादेश सीमा पर रानीमंगल तक स्टीमर मार्ग उपलब्ध हो सकेगा, दूसरा गोदावरी की डेल्टा कैनाल्स में चर्ला व राजामुंदरी (208 किमी) और तीसरा जलमार्ग गोवा में है।

राष्ट्रीय जलमार्ग–1 को तीन भागों में बाटा जा सकता है हलिद्या दूरा (560 किमी) फरक्का–पटना (460 किमी) और पटना–बलिया। पहली–दूरी में सुव्यवस्थित टर्मिनल और दिन में नौकायन की सुविधा है। राष्ट्रीय जलमार्ग–2 द्वारा अधिकतर कलकत्ता के लिये जाने वाले सामान की भरमार है।

दुर्भाग्य से इन तीन राष्ट्रीय जलमार्गों की पूर्ण क्षमता का उपयोग नहीं किया गया। पिछले वर्ष इन जलमार्गों पर दुलाई के काम में गिरावट आयी है। 1991–92 में जहां 534,000 टन माल की दुलाई हुई थी, 1994–95 में यह घटकर 13,000 टन रह गयी।

राष्ट्रीय देशीय जलमार्ग प्रणाली के विकास हेतु 1989 में भारतीय देशीय जलमार्ग प्रधिकरण की स्थापना की गई।

शिपिंग: विकासोन्मुख देशों में भारत के व्यापारिक जहाजों का बेड़ा सबसे बड़ा बेड़ा है और जहाजों की क्षमता की दृष्टि से भारत के व्यापारिक जहाजों का बेड़ा संसार में 16 वें नंबर पर है।31 दिसम्बर 1999 को भारतीय बेड़े में 490 जहाज थे।

देश में 92 नौवहन कंपनियां हैं, जिनमें से 61 केवल तटीय व्यापार में संलग्न हैं, 18 कंपनियां विदेशी व्यापार करती हैं और शेष कंपनियां तटीय और विदेशी व्यापार दोनों करती हैं। एकमात्र सरकारी कंपनी शिपिंग कार्पोरेशन आफ इंडिया तटीय और विदेशी व्यापार दोनों करती है।

भारतीय नौवहन पंजीकरण का मुख्यालय मुम्बई में है और चौकी कार्यालय मुम्बई, कलकत्ता, विशाखापटणम, चेन्नई, कोचीन, गोवा, राउरकेला और तिरुचिरापल्ली में है।

भारत में चार बड़े और चार मध्यम आकार वाले शिपयार्ड हैं। निजी क्षेत्र में 32 छोटे शिपयार्ड हैं, जो छोटे जहाज की जरूरतें पूरी करते हैं। बड़े शिपयार्डो में से हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड, विशाखापटणम और कोचीन शिपयार्ड भूतल परिवहन मंत्रालय के नियंत्रणाधीन हैं। दूसरे शिपयार्ड अर्थात् मझगांव डॉक लिमिटेड, बंबई और गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स, कलकत्ता रक्षा मंत्रालय के रक्षा उत्पादन विभाग के अधीन हैं।

चौथे दशक के मध्य में सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कंपनी द्वारा स्थापित हिंदुस्तान शिपयार्ड ने, जिसे 1961 में केंद्र सरकार ने अपने हाथ में ले लिया, 1947 से अब तक 91 जहाज बनाये हैं। जापानी सहयोग से निर्मित कोचीन शिपयार्ड में 85,000 टन भार वाले जहाजों के निर्माण के लिए एक गोदी और 100,000 टन तक भार वाले जहाजों की मरम्मत के लिए एक गोदी है। यहां बनने वाला सातवां जहाज 'मोती लाल नेहरू' पहला आयात टैंकर है जिसकी क्षमता 86,000 डी डब्ल्यू टी है।

राष्ट्रीय देशीय जलमार्ग प्रणाली के विकास हेतु 1989 में भारतीय देशीय जलमार्ग प्राधिकरण की स्थापना की गई।

भारत में 11 बड़े बंदरगाह (पत्तन) हैं। इनके अलावा देश के लगभग 6,000 कि.मी. लंबे समुद्र तट पर कुल 2[illegible]

छोटे बंदरगाह हैं जिनमें से 139 छोटे बंदरगाह चालू स्थिति में हैं । पश्चिमी तट के बड़े बंदरगाह हैं – कांडला, मुम्बई, मरमोगोवा, नया मंगलौर और कोचिन ।

अन्य बंदरगाहों के नाम हैं – तुतीकोरिन, चेन्नई, विशाखपट्टनम, पाराद्वीप और कलकत्ता –हल्दिया ।

वायू परिवहन

वायु निगम विधेयक, 1953 के अंतर्गत इसका गठन 1953 में हुआ था। यह 46 गंतव्यों के लिये उड़ान भरती है और इसके बेड़े में 26 वायुयान हैं। एयर इंडिया ने 1997–98 में 2.93 मिलयन यात्रियों के साथ उड़ान भर कर कीर्तिमान स्थापित किया

निजी एयर टैक्सी: नयी खुली आकाश नीति ने भारतीय वायु मार्ग पर इंडियन एयरलाइंस के एकाधिकार की समाप्ति कर दी है । 1994 के अंत तक 120 से अधिक वर्गो में 19 वायुयान कार्यरत् थे। निजी वायुसेवा में 1990 में 15000 यात्रियों ने उड़ान भरी थी। 1992 में इनकी संख्या बढ़कर 4.1 लाख, 1993 में 29 लाख और 1994 में 35 लाख से अधिक हो गयी थी।

1992 में सरकार द्वारा प्रतिबंध उठा लेने के बाद एयर टैक्सियां चलनी शुरू हो गयी थीं । लेकिन एयर टैक्सियों को अपना कार्यक्रम प्रकाशित करने या यात्रियों में वितरित करने की मंजूरी नहीं दी । इनके साथ आम मोटर गाड़ियों की ही तरह व्यवहार किया जाता था । लेकिन इन आपरेटेरों की व्यवसाय कुशलता उत्कृष्ट थी और इन्होंने ब्रेकफास्ट टेक आफ, मिड डे फ्लाइट, और सनसेट लैंडिग जैसी उड़ानों की शुरूवात की, इनका कार्यक्रम भी यात्रियों को पता रहने लगा।

एयर लाइंस के रूप में मान्यता प्राप्त टैक्सी आपरेटरों को सरकार द्वारा अनुशासित समय सारणी, छोटे शहरों की उड़ान जहां वायुदूत उड़ाने संचालित होती थीं और जहां से लाभ की अपेक्षा न हो का पालन करना होगा ।

एयर इंडिया के पास सिर्फ 16 विमान

भारत के सरकारी अंतरराष्ट्रीय एयर लाइन एयर इंडिया ने अब सात और विमान बेचने का फैसला कर लिया है। इन सात विमानों में तीन एयर बस ए300–बी4 और चार बोइंग 747–200 विमान हैं। अगर ये सात विमान बिक जाते हैं तो एयर इंडिया के विमानों का बेड़ा महज सोलह का रह जाएगा। यह संख्या किसी भी एयरलाइन के लिए सम्मानजनक नहीं कही जाएगी।

फिलहाल एयर इंडिया के पास छह बोइंग बी 747–400, दो बी 747–300 और आठ ए 310 विमानों के अलावा चार बी 747–200 और तीन ए300–बी4 विमान हैं जिन्हें बिकना है। ये ए300–बी4 विमान लगभग 18 साल पुराने हैं जबकि बी747–200 विमान 22 साल पुराने हैं। कंपनी इन विमानों को इसलिए भी बेचना चाहती है क्योंकि वह विमानों के ज्यादा प्रकारों से छुटकारा पाना चाहती है।

उद्योग के सूत्रों का आंकलन है कि इस बिक्री से एयर इंडिया को एक करोड़ पचास लाख डालर मिलेंगे। ए300–बी4 विमानों की बिक्री से प्रति विमान 35 लाख डालर मिलेंगे। हर बी747–200 की बिक्री से बीस लाख डालर मिल सकते हैं।

जब ये विमान बिक जाएंगे तो एयर इंडिया में स्टाफ और विमान का अनुपात और बिगड़ जाएगा। कम विमानों के उड़ने से आय भी कम होगी। ऐसे में अगर कंपनी और विमान ड्राई लीज पर नहीं लेती है तो उसके लिए मुसीबतें बढ़ जाएंगी। एयर इंडिया ने लीजिंग के लिए आठ विमानों का टेंडर दे रखा है। अब तक छह जवाब आ चुके हैं। लेकिन टेंडर की कड़ी शर्तो में ज्यादातर इच्छुक पार्टियां खरी नहीं उतरती हैं। अब तक अमीरात का ही टेंडर योग्य जान पड़ रहा है।

पर्यटन उद्योग

पर्यटन उद्योग को नया आयाम देने तथा अत्यन्त तीव्र गति से इसका विकास करने के उद्देश्य से सरकार ने पर्यटन उद्योग को निर्यात हाउस (एक्सपोर्ट हाउस) का दर्जा देने की घोषणा की है। इससे पर्यटन उद्योग को नया आयाम मिलेगा तथा पर्यटन उद्योग द्वारा अर्जित की जाने वाली विदेशी मुद्रा में कई गुना वृद्धि हो सकेगी।

1998–99 के पहले नौ महीनों अप्रैल से दिसंबर के दौरान भारत का दौरा करने वाले कुल विदेशी पर्यटकों से 8424.04 करोड़ विदेशी मुद्रा की प्राप्ति हुई। नौवीं पंचवर्षीय योजना के लिए पर्यटन संबंधी कार्यदल ने वर्ष 2001 तक पर्यटन अगमन में आठ फीसदी वृद्धि का लक्ष्य तय किया है। उस वर्ष 3.37 मिलियन पर्यटकों के आने का अनुमान है। यदि वृद्धि की यह दर रही तो वर्ष 2002 में पर्यटक आगमन 26 लाख 40 हजार होगा।

अनुमोदित क्षेत्र में 66522 होटल के कमरे हैं तथ 46866 होटल के कमरे तैयार किए जा रहे हैं। आनेवाले पर्यटकों को ठहराने के लिए ये कमरे पर्याप्त हैं।

पर्यटन उद्योग को निर्यात हाउस की तरह कई सुविधाएं मिल सकेंगी। लेकिन पर्यटन को 'निर्यात' का नया दर्जा दिए जाने के कारण पर्यटन उद्योग को कुछ और विशेष सुविधायें भी प्राप्त होंगी। आम तौर पर 12.5 करोड़ रुपये के मूल्य की विदेशी मुद्रा कमाने वाली इकाई को निर्यात हाउस माना जाता है। लेकिन दो

हमारी सांस्कृतिक विरासतें

इंडिया गेट, दिल्ली – प्रथम विश्वयुद्ध में 90,000 से अधिक शहीद भारतीय सिपाहियों की याद में निर्मित। 13,516 सिपाहियों के नाम इस पर खुदे हुए हैं। 42 मीटर ऊंचा स्मारक चारों ओर से पत्थर से घिरा है जहां अनजान शहीदों की स्मृति में अमरज्योति जल रही है।

स्वर्ण मंदिर, अमृतसर (पंजाब) – सिक्ख तीर्थस्थलों में सर्वाधिक पवित्र। बाहर के भाग का कुछ हिस्सा सोने के वर्क से जड़ा हुआ। मध्य के सरोवर में हरिमंदिर अपनी शोभा बढ़ाता है। सिक्खों की पवित्र पुस्तक गुरु ग्रंथ साहेब अंदर प्रतिष्ठित है इसका निर्माण 1577 में हुआ था।

कुतुब मीनार, दिल्ली – दिल्ली की सबसे शानदार यादगारों में से एक। इसका निर्माण दास वंश के कुतुबुद्दीन ऐबक ने विजय स्तम्भ के रूप में करवाया था। इसकी ऊंचाई 72.5 मीटर है। लाल पत्थर की पांच-मंजिला यह मीनार कुरान की आयतों से अलंकृत है। इसके निकट ही चंद्रवर्मन द्वारा निर्मित लोह-स्तम्भ है जिस पर पिछले 1500 वर्षों से कोई जंग नहीं लगा है।

लाल किला, दिल्ली – सातवीं दिल्ली-शाहजना-बाद का किला। परिधि- में इसका क्षेत्रफल दो किमी. से भी अधिक है और इसके अंदर अनेक सुंदर इमारतें हैं। शाहजहां द्वारा सत्रहवीं सदी में निर्मित लाल किला 1857 तक मुगल शक्ति का केन्द्र था।

राष्ट्रपति भवन, दिल्ली – भारत के राष्ट्रपति का सरकारी निवास। 330 एकड़ में फैला यह शानदार भवन पहले वायसराय का महल था। समीप ही मुगल गार्डेन है। इस इमारत में 340 कमरे, 37 सैलून, 74 लाबी, एक किमी. लंबे गलियारे तथा 37 झरने हैं।

हुमायूं का मकबरा, दिल्ली – भारतीय शिल्प की सर्वाधिक नियोजित अष्टकोणीय इमारतों में से एक। ताजमहल के निर्माण में इस इमारत का प्रभाव है।

जामा मस्जिद, दिल्ली – दिल्ली की सबसे बड़ी इस मस्जिद का निर्माण शाहजहां के शासनकाल में हुआ था। 20,000 से अधिक लोग यहां एक साथ नमाज पढ़ सकते हैं।

जंतर मंतर, दिल्ली – सबसे प्राचीन वेधशाला। इसका निर्माण जयपुर के महाराजा जयसिंह द्वितीय ने सन् 1725 में करवाया था।

मीनाक्षी सुंदरेश्वर मंदिर, मदुराई (तमिलनाडु) – दक्षिण भारत में सर्वाधिक सुंदर अलंकृत मंदिर। 300 लाख से अधिक मूर्तियां।

यहूदी सिनोगोग (कोच्चि, केरल) – 1556 में निर्मित। इसमें ओल्ड टेस्टामेंट के ग्रेट सक्रॉल, तांबे की प्लेटें, तथा हाथ से पेंट की गयी कीमती चीनी टाइले हैं।

विक्टोरिया मेमोरियल, कलकत्ता – साम्राज्ञी विक्टोरिया की स्मृति में बनाया गया संगमरमर का स्मारक।

महाबोधि मंदिर, बोधगया (बिहार) (7वीं शताब्दी) – बुद्ध को जिस जगह ज्ञान प्राप्त हुआ था, वहीं यह मंदिर बना है। 170 फीट ऊंचे इस भवन में मुकुट के रूप में स्तूप है।

सांची स्तूप, सांची (मध्य प्रदेश) – गौतम बुद्ध के स्मृति-शेष यहां सुरक्षित। 120 फीट के व्यास में फैला हुआ।

गोल गुंबज, बीजापुर (कर्नाटक) (17वीं शताब्दी) – इसका गुम्बद विश्व में दूसरा सबसे बड़ा है। इसे फुसफुसाता गलियारा भी कहते हैं क्योंकि दूर से प्रतिध्वनियां सुनायी पड़ती हैं।

ताज महल, आगरा (उ.प्र.) – दुनिया के सात आश्चर्यों में से एक। सफेद संगमरमर से निर्मित यह मकबरा शाहजहां द्वारा अपनी बेगम मुमताज़ महल की याद में बनवाया था। इसका

साल के लिये पर्यटन उद्योग के लिये इस राशि को घटा कर 6 करोड़ रुपये किया जा रहा है।

पर्यटन उद्योग की इकाइयां भी विदेशी मुद्रा अर्जित करने के अपने अनुपात में पर्यटन संबधी वस्तुओं का आयात कर सकेगी। आयात के लिये उन्हे बैंक गारंटी देना जरूरी नहीं होगा तथा पर्यटन उद्योग को आयकर की धारा 80 एच डी. के तहत मुनाफे की राशि को पर्यटन संबधी परियोजनाओं में लगाने पर आयकर से छूट का लाभ मिल सकेगा।

माल के निर्यात संवर्धन योजना के तहत पर्यटन इकाइयों के लिये भी न्यूनतम सीमा को 20 करोड़ रु. से घटा कर 1 करोड़ रु. कर दिया जायेगा ताकि जीरो ड्यूटी का लाभ कुछ खास आयात के लिये पर्यटन उद्योग को मिल सके। आयात की जाने वाली वस्तुओं के बारे में फैसला वित्त मंत्रालय के साथ विचार विमर्श करके किया जा सकेगा। इस समय पर्यटन उद्योग हर साल 12,000 करोड़ रु. की विदेशी मुद्रा अर्जित कर रहा है।

आज पर्यटन विश्व का तेजी से आगे बढ़ रहा उद्योग है। 500 करोड़ से अधिक पर्यटकों से संपूर्ण विश्व को होने वाली आय 3.5 खरब अमरीकी डालर की है। पर्यटकों में निरंतर हो रही वृद्धि से संभवता वर्ष 2000 तक पर्यटकों की संख्या 600 मिलियन हो जायेगी।

बावजूद इसके कि पूरे विश्व में पर्यटकों की संख्या मे वृद्धि हो रही है इसमें भारत का भाग केवल 0.37 प्रतिशत ही है।

पर्यटन भारत का विदेशी मुद्रा की आय कराने वाला तीसरा उद्योग है। हीरे, जवाहरात और तैयार कपड़ों के बाद पर्यटन का स्थान है। 1995-96 के दौरान 91.86 बिलयन रुपये की आय हुई। 1994-95 में पर्यटन से अर्जित विदेशी मुद्रा 73.66 अरब रुपये की थी।

पर्यटन मंत्रालय नौवीं योजना में 58 अरब रुपये की राशि निर्धारित करा रहा है जोकि आठवीं योजना की इस मद की राशि 4.5 अरब से तीन गुना अधिक है। पर्यटन क्षेत्र में 1994-95 में 10 लाख अतिरिक्त रोजगार जुड़े। इस क्षेत्र में प्रत्यक्ष रूप से 78 लाख लोगों को रोजगार मिला

निर्माणावधि 1630 से 1648 तक रही। संगमरमर में एक ख्वाब है ताजमहल।

बुलंद दरवाज़ा, फ़तहपुर सीकरी (उ.प्र.) – 53.5 मीटर की ऊंचाई का भारत का यह सबसे ऊंचा दरवाजा है। इसका निर्माण अकबर द्वारा गुजरात में खानदेश की विजय के उपलक्ष्य में कराया गया था।

बड़ा इमामबाड़ा, लखनऊ – एशिया का सबसे बड़ा हाल जिसमें लोहा, लकड़ी, पत्थर किसी भी संधि का सहारा नहीं है।

लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर (उड़ीसा) – 11 वीं शताब्दी के इस मंदिर की ऊंचाई 36.5 मीटर है।

गेटवे आफ इंडिया, बम्बई – ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम तथा महारानी मैरी के 1911 में भारत आने पर बनाया गया विजय–स्मारक। अंग्रेजों की सेना की आखिरी टुकड़ी इस द्वार से बाहर गयी थी।

सोमनाथ मंदिर, गुजरात – चंद्र भगवान द्वारा बनाया गया, ऐसा विश्वास लोगों में फैला है। मंदिर की अकूत सम्पदा के लालच में महमूद गजनवी ने यहां सात बार आक्रमण किये। अलाउद्दीन खिलजी और औरंगजेब द्वारा भी यहां विध्वंस किया गया किंतु हर एक बार इस मंदिर का पुनःर्निमाण हुआ और यह शान से सिर उठाये आज भी खड़ा है।

कैलाश मंदिर, एलोरा (महाराष्ट्र) – भारत में चट्टान काट कर बनाया सबसे बड़ा मंदिर। इसका क्षेत्रफल 84 मी. × 47 मी. है। 760 ई. में सिंहासनारूढ़ राजा कृष्ण–प्रथम के शासनकाल में निर्मित।

से–कैथिड्रल, गोवा – एशिया का सबसे बड़ा चर्च। 1652 में निर्माण पूरा हुआ। सेंट कैथरीन को समर्पित कैथड्रल में पांच घंटे हैं जिनमें एक विश्व में सर्वोत्तम प्रसिद्ध स्वर्ण घंटा है।

बैसिलिका आफ बोम जीसस, गोवा (17 वीं शताब्दी) – इस चर्च में सेंट फ्रांन्सिस जेवियर के अवशेष सुरक्षित हैं। गोवा के चर्चों में सर्वाधिक सम्पन्न।

हवा महल (जयपुर) – गुलाबी शहर का कीर्तिस्तम्भ। पांच मंजिला महल में 953 खिड़कियां हैं। अंतःपुर की रानियों हेतु विशेष रूप से निर्मित।

जगन्नाथ मंदिर, पुरी (उड़ीसा) – 12 वीं शताब्दी में भगवान जगन्नाथ का यह मंदिर निर्मित। जून में रथ–यात्रा यहां का मुख्य पर्व।

सूर्य मंदिर, कोणार्क (उड़ीसा) – भगवान सूर्य के रथ के रूप में राजा नरसिंहदेव प्रथम द्वारा तेरहवीं शताब्दी में निर्मित मंदिर।

खजुराहो मंदिर (मध्य प्रदेश) (11 वीं शताब्दी) – 22 मंदिर। (इनमें 8 मूलतः चंदेल शासकों द्वारा निर्मित) मर्यादापूर्ण रूप–रेखा और कामोद्दीपक मूर्तियों के लिये प्रसिद्ध।

शत्रुंजय पहाड़ी के मंदिर – पालिताना (गुजरात) – पहाड़ी पर लगभग 1000 शानदार जैन मंदिर जिनका निर्माण 900 वर्षों में हुआ। जैनियों का तीर्थ स्थल।

बहाई मंदिर, दिल्ली – कमल की आकृति में निर्मित यह पूजागृह इक्कीसवीं सदी का ताज कहलाता है। 1986 में इसका निर्माण पूरा हुआ। प्रतिदिन 10,000 तक दर्शक यहां आते हैं।

चारमिनार, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश): चार अद्भुत मिनारों का यह भव्य स्मारक का निर्माण 1591 में किया गया था। शहर में प्लेग की समाप्ति की स्मृति में इसका निर्माण किया गया था।

वैष्णोदेवी, जम्मू : त्रिकुटा पहाड़ी की गुफा में यह अद्भुत मंदिर हिंदुओं के लिये एक पवित्र तीर्थस्थल है।। 4 किलोमीटर की चढ़ाई के बाद लोगों को चट्टानों पर बनी मां काली, लक्ष्मी और सरस्वती की मूर्तियों के दर्शन होते है।

एलीफेंटा गुफाएं : बंबई से 9 किलोमीटर की दूरी पर एक द्वीप पर स्थित 634 में चालुका काल में निर्माण किया गया था यहां शिव के अनेक रूपों को चट्टानों पर उकेरा गया है।

हुआ है जो कि 1993–94 से 4 लाख अधिक है। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संयुक्त रोजगार पाने वालों की संख्या एक करोड़ 84 लाख है जो कि 1993–95 की अपेक्षा 10 लाख अधिक है।

पर्यटन उद्योग की विशेषता यह है कि होटल, उड़ान सेवा ट्रावल एजेंसीज, हथकरघा और सांस्कृतिक गतिविधियों के जरिये सबसे अधिक रोजगार महिलाओं को मिला है। दरअसल इस उद्योग में महिलाओं की संख्या पुरुषों की अपेक्षा दुगनी है। इस समय पर्यटन विश्व सबसे तेजी से विकासित हो रहा उद्योग है।

पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया है। 5 उत्तरी राज्यों में इसे पूर्ण उद्योग का दर्जा दिया गया है। पंजाब, जम्मू काश्मीर और चंडीगढ़ ने पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिये जाने पर अपनी सहमति दे दी। हरियाणा और हिमाचल पहले ही पर्यटन को उद्योग का दर्जा दे चुके हैं।

पर्यटन में विविधता लाने के कार्यक्रम में वन्यजीव पर्यटन समुद्रतट विहार–स्थल और रोमांचक पर्यटन का विकास शामिल है। विश्व के सबसे तेजी से विकसित हो रहे कार्यकलापों में से एक, सावकाश घटक का पूरा–पूरा लाभ उठाने के लिए सुविधाओं को विकसित करने पर भी बल दिया जाता है।

यात्रा परिपथ

(1) कुल्लू–मनाली–लेह
(2) ग्वालियर–शिवपुरी–ओरछा–खजुराहो
(3) बागडोगरा–सिक्किम–दार्जिलिंग–कालिम्पोंग
(4) भुवनेश्वर–पुरी–कोणार्क
(5) हैदराबाद–नागार्जुन सागर–तिरुपति
(6) मद्रास–मामल्लापुरम–पांडिचेरी
(7) ऋषिकेश–नरेन्द्र नगर–[illegible]
(8) इन्दौर–उज्जैन–महेश्वर–ओंकारेश्वर–मांडू
(9) जैसलमेर
(10) बंगलौर

(11) रायगढ़ दुर्ग–जंजीरा दुर्ग–कुदा गुफाएं–हरिहरेश्वर –श्रवर्धन–सिन्धुदुर्ग

गन्तव्य–स्थल

(1) लक्षद्वीप द्वीपसमूह
(2) अण्डमान द्वीपसमूह
(3) मनाली (सोलांग नाला)
(4) बेकल समुद्रतट
(5) मुस्तुकाडु समुद्रतट
(6) कांगड़ा (पोंग बांध)

समुद्रतट पर्यटन

केरल में काप्पड और वरकला, महाराष्ट्र में बालवेश्वर और गणपतिकुले, गुजरात में अहमदपुर और तिथल, पश्चिम बंगाल में दीघा, तमिलनाडु में कन्याकुमारी, कर्नाटक में मारावंथे आदि में समुद्रतट विहार–स्थलों/समुद्रतट कुटीरों के निर्माण के लिए परियोजनाएं स्वीकृति की गई हैं ।

वन्य जीव पर्यटन

पहले से चली आ रही स्कीमों के तहत, वन्य जीव पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए, अभयारण्यों/राष्ट्रीय उद्यानों में वन–गृहों के निर्माण हेतु धन के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है । असम के मानस वन गृह का निर्माण कार्य पूरा हो गया है । राजस्थान में जैसलमेर के समीप साम मरू राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटक कुटीरों का कार्य भी पूरा हो गया है ।

रोमांचक पर्यटन

रोमांचक पर्यटन और खेल पर्यटन का संवर्धन करने हेतु, पैदल भ्रमण, पर्वतारोहण, और हिम/जल से संबंधित खेल और रोमाचक शिविर स्थलों पर तम्बू आवास के लिए भी आधाभूत ओं के सृजन हेतु राज्यों को और संघ राज्य क्षेत्रों को सहायता प्रदान की जाती है । दस ट्रैकर्स हट्स जिन्हें हिमाचल प्रदेश में अधिक ऊंचे क्षेत्र पर निर्मित किया जा रहा है और जिनके लिए हाल ही में धन अवमुक्त किया गया है, पूरी होने वाली हैं । पर्यटन विभाग ने राज्य सरकारों और राज्य पर्यटन निगमों को साथ मिलाकर शिविर पर्यटन के क्षेत्र में पहल की है । दवी में नागोआ समुद्रतट पर भारत पर्यटन विकास निगम के पर्यटन वल के साथ मिलकर बनाए गए रोमांच... सफलता उल्लेखनीय है । धुकसोम, सिक्किम अ... काजीरंगा मानस, भलूकजंग और उमरांगसो में अ... आयोजित किए गए हैं । पर्यटन विभाग द्वारा 19... विश्व पर्यटन परिदृश्य में भारत को पर्यटन स्थल के र... करने के लिये एक समग्र विश्व बाजार योजना बना... ऐसा पहली बार हुआ है जब विभाग ने बाजार को ध्या... हुए कोई समग्र योजना बनायी है।

मानव विकास

मानव विकास की दृष्टि से भारत चार सीढ़ी ऊपर खिसका है । यह बताता है कि देश में स्थितियां बदल रही हैं ।

वर्ष 2000 के लिए जारी संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम यूएनडीपी की मानव विकास रिपोर्ट में भारत का स्थान ऊपर खिसक कर 128 वां हो गया है । यह रिपोर्ट नागरिकों की औसत आयु, स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता, शिक्षा और नागरिकों की अपनी बुनियादी जरूरत की चीजें खरीद सकने की आर्थिक क्षमता जैसे मानों के आधार पर तैयार की जाती

भारत के त्योहार: संक्रांति, पोंगल (जनवरी), ब... (जनवरी, फरवरी), गणतंत्र दिवस (26 जनवरी), ... (फरवरी), इदउल जुहा, (वकरीद), होली (मार्च), गणग... अप्रेल), मोहर्रम, वैसाखी (अप्रेल), पूरम (मई), मीनाक्षी ... (अप्रैल–मई), रथ यात्रा (जून–जुलाई), नाग पंचमी (... अगस्त), तीज (जुलाई–अगस्त), ओणम (सितंबर), रक्ष... (अगस्त), अमरनाथ यात्रा (जुलाई अगस्त), जन्माष्टमी, ... चतुर्थी (अगस्त– सितंबर), दशहरा/रामलीला/ दुर्गा ... नवरात्रि (सितंबर–अक्टूबर), दिवाली (अक्टूबर–नवंबर), गु... (नवंबर), इदउल फितर, क्रिसमस (दिसंबर), कुंभ ... खजुराहो महोत्सव, मुगल संगीत महोत्सव, एलोरा महोत्स...

प्रसिद्ध मेले

त्यौहारों के अतिरिक्त भारत में बड़ी संख्या में मेले लगते... इनमें से कुछ मेले ग्रामीण जीवन को अवगत कराते हैं । जो ... भारत की आत्मा से एक रुबरु जैसा लगता है, ग्रामीण कल... सुरीला संगीत, हथकरघा आदि मन मोह लेते हैं।

पुष्कर मेला: प्रत्येक वर्ष कार्तिक पूर्णिमा (पूरा खिला चांद... अक्टूबर–नवंबर महीने में अजमेर से 11 किलोमीटर दूर पुष्क... में भव्य मेले का आयोजन होता है। लाखों तीर्थयात्री इस अवसर... पर पुष्कर की पवित्र झील में स्नान करते हैं। यह मेला सबसे... बड़े ऊंट बाजार के रूप में भी जाना जाता है। ऊंटो के अतिरिक्त, घोड़े, बैल आदि जानवरों की भी खरीद फरोख्त होती है। इस अवसर पर, राजस्थान का पर्यटन विभाग सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत करता है।

सोनपुर मेला: नवंबर महीने में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला सोनपुर बिहार में आयोजित किया जाता है। इसका जिक्र ईसा पूर्व छठी शताब्दी में आता है। यहां राजा व नवाब किसी समय मौज–मस्ती करने आते थे।

भावनाथ मेला: फरवरी–मार्च में गुजरात के भावनगर में लगने वाला यह मेला उस्तादों द्वारा भजन, कीर्तन, भवाई, लोक संगीत और लोक नृत्य के लिये प्रसिद्ध है।

सरखेज मेला: गुजरात के अहमदाबाद के बाहर लगने वाला यह सर्वाधिक प्रसिद्ध मुस्लिम मेला है। यह मेला संत शाह अहमद खाल्टु गंज बख्श जिन्होंने अहमदाबाद शहर की स्थापना की थी की स्मृति में लगता है।

सूरजकुंड मेला: हरियाणा में फरवरी में सूरजकुंड में लगने वाले इस मेले में हस्तकला कौशल का भरपूर प्रदर्शन होता है।

ट्रेड फेयर आफ इंडिया: नयी दिल्ली के प्रगति मैदान में प्रत्येक वर्ष नवंबर में लगने वाला यह मेला व्यवसाय व संस्कृति का प्रतीक है।

समाचारपत्र / पत्रिकाएं

देश के निर्माण में भूमिका, देश में चल रहे घटनाक्रम और समाज के विकास में पत्र पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान है। समाचार पत्र पत्रिकायें न केवल आम लोगों के लिये मनोरंजन का ही साधन हैं बल्कि वे उनके व्यक्तित्व का भी विकास करते हैं।

संपूर्ण देश में 1998 में भारतीय प्रेस की प्रसार संख्या 126,849,500 थी। 31 दिसंबर 1998 तक समाचारपत्रों, व पाक्षिक, साप्ताहिक व मासिकों की संख्या 41,705 थी। इनमें से 4,890 दैनिक, 331 तृ. द्वि साप्ताहित, 15,645 साप्ताहिक, 12065 मासिक, 5,931 पाक्षिक, 3127 त्रैमासिक व 383 वार्षिकी हैं। इसके अतिरिक्त 1,474 ऐसे प्रकाशन हैं जो कभी साप्ताहिक कभी छमाही छपते हैं। 1997 में समाचार पत्र 100 भाषाओं में छप रहे थे। अंग्रेजी और संविधान की सूची में दर्ज 18 भारतीय भाषाओं के अलावा समाचारपत्र 81 अन्य भाषाओं में छपे। इनमें से अधिकतर भारतीय भाषाओं और कुछ विदेशी भाषाओं में ते सबसे अधिक समाचारपत्र हिंदी में हैं।

जिन राज्यों में एक हजार से अधिक अखबार छप रहे हैं वे इस प्रकार हैं : मध्य प्रदेश – 2 हजार 629, राजस्थान – 2 हजार 590, तमिलनाडु – 2 हजार 10, कर्नाटक – 1 हजार 774, आंध्र प्रदेश – 1 हजार 660, बिहार – 1 हजार 500, व केरल – 1 हजार 443, प्रसार संख्या के क्षेत्र में एक करोड़ 23 लाख 30 हजार प्रतियों

भारत में समाचार पत्रों की संख्या

भाषा	दैनिक	सप्ताह में 3 अंक	साप्ताहिक	पाक्षिक	मासिक	त्रैमासिक	अन्य	वार्षिक	कुल
हिन्दी	2,118	124	8,500	2,621	2,796	510	167	28	16,864
अंग्रेजी	338	29	797	593	2,503	1,133	689	145	6,227
असमिया	14	3	72	38	57	12	10	1	207
बंगाली	93	12	562	448	636	421	147	14	2,333
गुजराती	99	8	473	149	433	56	41	13	1,272
कन्नड	279	6	335	216	525	43	17	3	1,424
कश्मीरी	0	0	1	0	0	0	0	0	1
कोंकणी	0	0	3	1	1	0	0	0	5
मलयालम	209	4	164	147	664	51	21	8	1,268
मणिपुरी	12	0	6	5	7	5	3	0	38
मराठी	283	19	773	157	434	97	36	97	1,896
नेपाली	3	2	14	6	7	16	5	0	53
उड़िया	63	2	122	78	250	84	22	4	625
पंजाबी	104	15	324	80	224	31	17	1	796
संस्कृत	3	0	7	4	15	13	6	0	48
सिंधी	8	0	35	10	34	8	2	0	[illegible]
तमिल	341	42	389	211	662	27	19	7	[illegible]
तेलुगू	126	3	229	163	421	23	9	[illegible]	[illegible]
उर्दू	495	20	1,253	348	485	51	15	[illegible]	[illegible]
द्विभाषी	63	19	515	291	1,048	311	131	[illegible]	[illegible]
बहुभाषी	15	4	90	60	189	63	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अन्य	53	13	79	28	114	46	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुल	4,719	325	14,743	5,654	11,505	3,001	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सर्वाधिक प्रसार संख्या के पत्र/पत्रिकायें

प्रमुख दैनिक

मलयाला मनोरमा (8)	मलयालम	11,46,252
टाइम्स आफ इंडिया* (10)	अंग्रेजी	10.09,527
आज (10)	हिंदी	9,13,137
दैनिक जागरण (12)	हिंदी	8.91,602
पंजाब केसरी (3)	हिंदी	8,16,413
इनाडु (11)	तेलगु	8,06,109
मातृभूमि (6)	मलयालम	7,54,626
हिंदू (8)	अंग्रेजी	7,20,549
आनंद बाजार पत्रिका (1)	बंगाली	6,92,359
संदेश (5)	गुजराती	6,57,253
दैनिक भास्कर (10)	हिंदी	5,83, 474
दैनिक तांती (13)	तमिल	5,63,851
दैनिक सकाल (5)	मराठी	5,20,417
राजस्थान पत्रिका (6)	हिंदी	5,01,693
नवभारत टाइम्स (2)	हिंदी	4,89,954

* दिल्ली के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

स्रोत: आडिट ब्यूरो आफ सर्कुलेशन/जुलाई-दिसंबर 1999

प्रमुख साप्ताहिक

दी सनडे		
टाइम्स आफ इंडिया	अंग्रेजी	17,06,925
मलयाला मनोरमा	मलयालम	11,63,307
मंगलम	मलयालम	7,14,184
इंडिया टुडे	अंग्रेजी	4,30,027
कुमुदम	तमिल	3,99,118

प्रमुख पाक्षिक व मासिक

सरस सलिल	हिंदी	11,30,099
वनिता	मलयालम	369,220
गृहशोभा	हिंदी	3,27,955
स्टारडस्ट	अंग्रेजी	3 08,004
मेरी सहेली	हिंदी	2,96,134

प्रमुख वार्षिक

कालनिर्णय	मराठी	46,28,240
कालनिर्णय	हिंदी	4,49,836
मनोरमा इयर बुक	अंग्रेजी	2,00,391

स्रोत: आडिट ब्यूरो आफ सर्कुलेशन/जुलाई-दिसंबर 1999

के साथ हिंदी दैनिक प्रेस पहले स्थान पर रहा। यह प्रसार संख्या देश में दैनिकों की कुल प्रसार संख्या का 39 प्रतिशत है। अंग्रेजी प्रेस 46 लाख 50 हजार प्रतियों के साथ दूसरे स्थान पर रही जो कि कुल प्रसार संख्या का 14.7 प्रतिशत है।

इतिहास: भारतीय समाचार पत्र उद्योग में 41 संस्थान ऐसे हैं जो शताब्दी पूरी कर चुके हैं। बंबई से प्रकाशित हो रहा गुजराती अखबार बंबई समाचार न केवल भारत मे बल्कि पूरे एशिया में सबसे पुराना अखबार है।

इसकी स्थापना 1822 में हुयी थी। भारत में छपने वाला पहला साप्ताहिक बंगाल गजट (हिकीज़ गजेट के नाम से भी जाना जाता है) 1780 में कलकत्ता में प्रकाशित हुआ। संपादक जेम्स हिकी अंग्रेज थे। दिगदर्शन (बंगाली) भी कलकत्ता से छपने वाला पहला भारतीय भाषा का (1818) पत्र था। भारत में रजिस्ट्रार आफ न्यूज पेपर आफ इंडिया की स्थापना 1556 में हुयी थी

समाचार एजेंसी भारत में चार समाचार एजेंसियां हैं – प्रेस ट्रस्ट आफ इंडिया (पी.टी.आई.), यूनाइटेड न्यूज आफ इंडिया (यू. एन. आई.) समाचार भारती और हिंदुस्तान समाचार।

प्रेस ट्रस्ट आफ इंडिया की स्थापना 27 अगस्त 1947 को हुई। इसे एसोसियेटेड प्रेस आफ इंडिया और रायटर के स्थान पर बनाया गया था। देश में इसके 124 समाचार ब्युरो है जिनमें चार महानगरों के कम्प्युटर सज्जित कार्यालय भी सम्मिलित हैं।

यू.एन.आई. का पंजीकरण एक कंपनी के रूप में 1954 मे हुआ था और इसने समाचार का काम 1961 में आरंभ किया। 1982 में इसने हिंदी समाचार सेवा यूनिवार्ता के नाम से शुरू की। यह खाड़ी के चार देशों के समाचार पत्रों को समाचार देने के लिए एक समाचार सेवा चलाती है।

प्रेस परिषद ऐक्ट 1978 के अधीन भारत की पहली प्रेस परिषद का गठन 1979 में, दूसरी का 1982 में और तीसरी 1985 मे किया गया और चौथी का 28 सितम्बर 1988 को किया गया। न्यायमूर्ति आर.एस. सरकारिया इसके अध्यक्ष हैं। प्रेस परिषद का उद्देश्य समाचार पत्रो की स्वाधीनता की रक्षा करना, समाचार पत्रों और समाचार एजेन्सियों के स्तर को बनाये रखना तथा उसमें सुधार करना है।

आर.एन.आई. इसकी स्थापना 1956 में की गयी थी। आर.एन.आई. कागज कोटे को नियत करती है और विदेश से कागज व छपायी मशीन आयात करने की संस्तुति करती है। प्रत्येक अखबार पत्रिका को आर.एन.आई. से पंजीकरण कराना होता है।

प्रेस इनफार्मेशन ब्यूरो भारत सरकार की यह केंद्रीय एजेंसी है। इसके 40 क्षेत्रीय कार्यालय/शाखायें हैं। पीआईबी समस्त सरकारी सूचनाओं कार्रवाइयों व अन्य कार्यक्रमों को पत्र पत्रिकाओं को उपलब्ध कराती है। पत्रकारों फोटोग्राफर तकनीशियनों को एक्रेडियेशन भी देती है।

सिडनी–2000

सिर्फ 1 कांसे से खुश हुआ जाए

विजय कुमार

एक अरब की आबादी और ओलंपिक में कुल एक पदक, वह भी कांसे का। क्या इसे उपलब्धि माना जाए और इस उपलब्धि पर खुश हुआ जाए। इस सदी के पहले ओलंपिक खेल 15 सितंबर से पहली अक्तूबर तक आस्ट्रेलियाई शहर सिड्नी में संपन्न हुए।

अमरीका ने खेलों की दुनिया में अपने वर्चस्व को कायम रखते हुए इस बार फिर से अपना पहला स्थान बरकरार रखा। इससे पहले अटलांटा ओलंपिक–96 और उससे पहले भी अमरीका लगातार ओलंपिक खेलों में पहले स्थान पर बरकरार रहता आया है। कुल मिलाकर अभी तक आयोजित हो चुके 27 ओलंपिक खेलों में अमरीका का ही वर्चस्व रहा है।

अमरीका ने सिड्नी 2000 के ओलंपिक खेलों तक कुल मिलाकर 851 स्वर्ण, 666 रजत और 575 कांस्य पदक जीते हैं। कुल मिलाकर यह संख्या 2092 बैठती है।

लेकिन इस बार एक अन्य एशियाई देश चीन ने आश्चर्यजनक ढंग से प्रदर्शन करते हुए तीसरा स्थान हासिल कर लिया। अटलांटा ओलपिक मे 16 स्वर्ण, 22 रजत और 12 कांस्य पदक जीतकर चीन अमरीका. 44 स्वर्ण 32 रजत और 25 कांस्य, रूस 26–21–26, जर्मनी 20–18–27 के बाद चौथे स्थान पर रहा था। चीन ने इस बार 28 स्वर्ण, 16 रजत और 15 कांस्य सहित कुल 59 पदक जीते।

कुल मिलाकर सिडनी ओलंपिक हर तरह से भव्य रहे। करीब एक खरब रुपए के खर्च से आयोजित इन खेलों का

कुल परिदृश्य भव्य और अनूठा रहा। इसमें सर्वाधिक 199 देशों और पूर्वी तिमोर के एथलीटों ने स्वतंत्र रूप से भाग लिया। कोकाकोला, मैक्डोनाल्ड, आई.बी.एम, सैमसंग इसके मुख्य प्रायोजक थे। इनके अलावा आठ अन्य बड़ी कंपनियों ने भी इन खेलों के प्रायोजन में भाग लिया। इसे करीब चार अरब लोगों ने दुनिया भर में टीवी पर देखा। यह संख्या दुनिया की कुल आबादी की आधे से भी ज्यादा है।

सिडनी ओलंपिक के उद्घाटन समारोह को अब तक का भव्यतम आयोजन इसके आयोजकों ने बताया था। उनका वादा एकदम सही था। यह एक भव्य उद्घाटन समारोह था। सिडनी के मुख्य ओलंपिक स्टेडियम में एक लाख 10 हजार से अधिक दर्शकों के सामने इस उद्घाटन समारोह में एक तरफ जहां आस्ट्रेलियाई संस्कृति के पत्ते साकार हो रहे थे, वहीं विश्व संस्कृति भी साकार हो रही थी। कुछ इसी तरह का पहली अक्तूबर को आयोजित समापन समारोह भी रहा।

लेकिन हर 4 साल बाद होनेवाले इस खेलों के महाकुं[illegible] में भारत का प्रदर्शन अत्यंत दयनीय ही रहा है। 1896 [illegible] फ्रांसीसी सज्जन बैरन पियरे द कुबर्तिन ने इन खेलों [illegible] शुरुआत करवाई थी। तब से हर 4 साल बाद ये आधुनि[illegible] ओलंपिक खेल खेले जाते हैं।

वैसे, प्राचीन काल में ये खेल कैसे शुरू हुए इसके पी[illegible] एक किंवदंती है। वह यह कि यूनानी देवताओं के बीच लड़ा[illegible] के कारण ये खेल शुरू हुए। कारण जो भी हो यह तो था [illegible] कि यूनानी गणराज्य के देश उन दिनों आपस में लड़ाई–झग[illegible] में व्यस्त रहते थे। उस लड़ाई के बीच कुछ दिन तक तो शां[illegible] रहे, इसलिए इन खेलों की शुरुआत हुई।

पहले ओलंपिक आज से 2776 साल पहले 776 ईस्वी पूर्व ग्रीस यूनानी के ओलंपिया शहर में होने की जानकारी इतिहास से मिलती है। अगली छह शताब्दियों तक ये खे[illegible] तत्कालीन छोटी सी दुनिया में लोकप्रिय हो गए थे। लेकि[illegible] ओलपिक खेलों की अत्यधिक प्रसिद्धि ही इसके विनाश [illegible] भी कारण बनी। इनाम जीतकर लाने की लालसा [illegible] ओलपियावासियों ने बढ़िया खिलाड़ी लेने शुरू कर दि[illegible] दूसरे गणराज्य भी यही करने लगे। यहां तक तो ठीक [illegible] लेकिन खिलाड़ियों से खेल जजों द्वारा रिश्वत लेने की [illegible] प्रथा का प्रारंभ हो गया। जिससे ये खेल बदनाम होने लगे [illegible]

393 ईस्वी मे रोमन शासक थियोडोसियस ने ओलं[illegible] खेलों पर प्रतिबंध लगा दिया। उसके बाद की अगली [illegible] शताब्दियों में बाढ़, भूकंप और विदेशी आक्रमणों की त[illegible] से ओलपिया शहर ही ध्वस्त हो गया और लोग ओलंपिक [illegible] आकर्षण को ही भूल गए।

इसके बाद आधुनिक ओलंपिक खेलों को शुरू कराने का श्रेय 1863 में जन्मे फ्रांसीसी सज्जन बैरन पियरे द कुबर्तिन को है। उन्होंने 1894 में अंतर्राष्ट्रीय खेल कांग्रेस की स्थापना की वहीं बाद में अंतराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के नाम से विख्यात हुई। खेल कांग्रेस की अप्रैल 1894 में पेरिस में पहली बैठक हुई। कुबर्तिन को इस काम में उनके व्यापारी मित्र इवान गिलियास जुप्पे ने भी काफी मदद की थी। इनके प्रयासों से 6 अप्रैल, 1896 से आधुनिक ओलंपिक खेल शुरु हुए।

प्राचीन ओलंपिक खेलों में महिलाओं के लिए ये खेल प्रतिबंधित थे। यहां तक कि अगर कोई महिला इन खेलों को देख भी ले तो उसे मौत की सजा दी जाती थी। हां सिर्फ एक महिला को इसे देखने की इजाजत की और वह की ग्रीक देवता डेमेटर के मंदिर की मुख्य पुजारिन।

आधुनिक ओलंपिक खेलों में ओलंपिक मशाल, ओलंपिक झंडे और ओलंपिक शुभंकर का अत्यंत महत्व है। ओलंपिया जहां से प्राचीन ओलंपिक शुरू हुए थे, में ओलंपिक खेलों की देवी हेरा की समाधि पर एक ज्वाला निरंतर प्रज्जवलित रहती थी। आधुनिक ओलंपिक खेलों में 1928 के. अम्स्टर्डम ओलंपिक से ओलंपिक ज्योति की प्रथा शुरु की गई। अब हर ओलंपिक में पूरे आयोजन के दिनों तक ओलंपिक ज्योति या मशाल जलती रहती है। इस बार भी इस ओलंपिक ज्योति ने लगभग पूरे आस्ट्रेलिया का दौरा किया, फिर इसे महान आस्ट्रेलियाई धाविका कैथी फ्रीमैन ने सिडनी के ओलंपिक स्टेडियम में प्रज्जवलित किया।

सन् 1896 के पहले ओलंपिक में भी महिलाओं के भाग लेने पर रोक थी। लेकिन पेरिस में हुए 1900 के ओलंपिक से इन खेलों के दरवाजे महिलाओं के लिए भी खुल गए। ओलंपिक में महिलाओं के लिए पहली पदक विजेता इंग्लैंड की टेनिस खिलाडिन सी.कूपर थीं।

ओलंपिक झंडा सफेद रंग का होता है। इसमें नीले, पीले, काले, हरे और लाल रंग के पांच छल्ले होते हैं। ये छल्ले या गोले पांचों महाद्वीप का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके अलावा भाग लेनेवाले सभी देशों का झंडा भी ओलंपिक आयोजन स्थल पर फहराया जाता है। झंडे के संदर्भ में एक रोचक तथ्य यह है कि 1908 के लंदन ओलंपिक में आयोजक अमरीका का झंडा मंगवाना भूल गए। इससे अमरीकी टीम का नाराज होना स्वाभाविक था। हर ओलंपिक की शुरूआत पारंपरिक मार्च पास्ट से की जाती है। इस मार्च पास्ट में सभी देश अपने झंडे झुकाकर मुख्य अतिथि को सलामी देते हैं। लेकिन 1908 के ओलंपिक में चूंकि स्टेडियम में आयोजक अमरीकी झंडा लगाना भूल गए थे, इसलिए इससे नाराज अमरीकी टीम ने मार्च पास्ट में अपना झंडा नहीं झुकाया। अमरीकी टीम आज भी उसी परंपरा का पालन करती आ रही है और वे मार्च पास्ट में अपना झंडा न झुकानेवाले एकमात्र राष्ट्र है। वैसे, पांच छल्ले या गोलों वाले ओलंपिक झंडे का प्रयोग 1920 के एंटवर्प ओलंपिक से शुरू हुआ है।

इसी तरह मस्कट या शुभंकर की प्रथा 1932 के लास एंजेल्स खेलों से शुरू हुई। तब छोटे से काले रंग कर स्काटिश टेरियर कुत्ते 'स्मोकी' को इसका मस्कट चुना गया था। लेकिन

नियमित रूप से यह प्रथा 1968 के मैक्सिको सिटी ओलंपिक से जारी हुई। मैक्सिको सिटी में लाल जगुआर को मस्कट चुना गया। 72 के म्यूनिख ओलंपिक का मस्कट वहां का शिकारी कुत्ता चुना गया, जिसका नाम वाल्दी रखा गया।

76 के मांट्रियल ओलंपिक में कनाडा वासियों ने अपने प्रिय जानवर उदबिलाव को शुभंकर चुना और उसका नाम बीवा रखा गया। 80 के मास्को ओलंपिक में भालू के चुलबुले बच्चे को मस्कट या शुभंकर चुना गया। उसका नाम मीशा रखा गया। 84 से लास एंजलिस ओलंपिक का मस्कट अमरीकावासियों ने अपने मन पसंद बाज को चुना और उसका नाम सैम रखा।

88 में जब एशिया महाद्वीप में टोक्यों 1964 के बाद दूसरी बाद ओलंपिक आयोजित हुए तो आयोजकों ने पूरे एशिया महाद्वीप की पहचान बन चुके चीते को इसका शुभंकर बनाया। इसका नाम होदोरी रखा गया। 92 के बार्सीलोना ओलंपिक का मस्कट कार्टून चरित्र कोबी था तो 96 में हुए अटलांटा ओलंपिक में भी कार्टून चरित्र छोटे बच्चे–इज्जी–मिंकी माउस को मस्कट चुना गया।

इस बार सिडनी में चूंकि इस नई सदी के पहले ओलंपिक हुए तो तीन कार्टून चरित्रों को इसका मस्कट बनाया गया। निका नाम सिद, मिली और ओली रखा गया– इसका मतलब था 'सिडना मिलेनियम ओलंपिक'।

यह ओलंपिक भी अब खत्म हो चुके हैं। इतिहास का हिस्सा बन चुके हुए ओलंपिक में भी कई रिकार्ड बने और टूटे। दूसरे देशों के खेल प्रेमियों की तरह भारत के खेल प्रेमी भी टीवी से चिपके बैठे रहे कि शायद उनके खिलाड़ी भी कुछ करिश्मा कर दिखाएं। लेकिन 1928 से ओलंपिक में आधिकारिक रूप से भाग ले रही भारतीय टीम का निराशाजनक प्रदर्शन इस बार भी जारी रहा।

भारत के लिए पदक जीतने वालों की सूची इतनी छोटी है कि उनका वर्णन करने के लिए सिर्फ एक प[illegible] ही काफी है। जबकि दूसरे देशों के पदकों का वर्ण[illegible] तो उसके लिए किताबें लिखनी पडेंगी।

ओलंपिक खेल स्थान एवं तिथियां

1.	1986	एथेन्स	6–15 अप्रैल
2.	1900	पेरिस	20 मई–28 अक्टूबर
3.	1904	सेंट लुइस	1 जुलाई–23 नवंबर
	1906	एथेंस	22 अप्रैल–2 मई
4.	1908	लंदन	27 अप्रैल–31 अक्टूबर
5.	1912	स्टाकहोम	5 मई–22 जुलाई
6.	1916	बर्लिन	युद्ध के कारण नहीं हुए
7.	1920	अंटवर्प	20 अप्रैल–12 सितंबर
8.	1924	पेरिस	4 मई–27 जुलाई
9.	1928	एम्सटर्डम	17 मई–12 जुलाई
10.	1932	लास एंजेल्स	30 जुलाई–14 अगस्त
11.	1936	बर्लिन	1–16 अगस्त
12.	1940	टोक्यो (हेलसिंकी)	युद्ध के कारण नहीं हुए
13.	1944	लंदन	युद्ध के कारण नहीं हुए
14.	1948	लंदन	29 जुलाई–14 अगस्त
15.	1952	हेलसिंकी	19 जुलाई–3 अगस्त
16.	1956	स्टाकहोम	10–17 जून
		मेलबोर्न	22 नवंबर–दिसंबर
17.	1960	रोम	25 अगस्त–11 सितंबर
18.	1964	टोक्यो	10–24 अक्टूबर
19.	1968	मैक्सिको सिटी	12–27 अक्टूबर
20.	1972	म्यूनिख	26 अगस्त–10 सितंबर
21.	1976	मांट्रियल	17 जुलाई–1 अगस्त
22.	1980	मास्को	19 जुलाई–3 अगस्त
23.	1984	लास एंजेल्स	28 जुलाई–12 अगस्त
24.	1988	सियोल	17 सितंबर–2 अक्टूबर
25.	1992	बार्सिलोना	25 जुलाई–7 अगस्त
26.	1996	अटलांटा	20 जुलाई–4 अगस्त
27.	2000	सिडनी	15 सितंबर–30 सितंबर
28	2004	एथेंस	–

भारत की ओर से सबसे पहले नार्मन पिचर्ड नाम के एक सज्जन ने सन 1900 के पेरिस ओलंपिक मे दो रजत पदक जीते थे। लेकिन नार्मन प्रिचर्ड ने उन खेलों मे व्यक्तिगत रूप से भाग लिया था। वह उन दिनों वहां घूमने गया था और लगे हाथों ओलंपिक मे भी भाग ले लिया था।

भारत ने आधिकारिक रूप से 1928 के एम्सटर्डम ओलंपिक से इन खेलों मे भाग लेना शुरू किया है। सिडनी से पहले तक भारत के पदकों का विवरण इस प्रकार है – 1928 से 56 तक लगातार छह बार हाकी का स्वर्ण पदक। फिर हाकी में ही 64 और 80 मे स्वर्ण पदक। हाकी में एक बार सन 60 मे भारत ने रजत पदक जीता है फिर 1968 और 1972 मे हाकी मे ही कास्य पदक भी भारत ने जीता।

इसके अलावा 1952 मे हेलसिंकी ओलंपिक मे भारत के खशावा जाधव ने कुश्ती मे कास्य पदक जीता। इसके लंबे अर्से बाद 1996 में अटलांटा ओलंपिक मे लिएंडर पेस ने टेनिस में कांस्य पदक जीता था।

इस परिप्रेक्ष्य में इस बार सिडनी ओलंपिक मे भी ज्यादा पदकों की उम्मीद तो नहीं ही थी। लेकिन हर बार की तरह इस बार भी भारतीय खेल प्रेमियों ने अपनी टीम से उम्मीदें लगा रखी थीं। हर भारतीय खेल प्रेमी की यही इच्छा थी कि भारत इस ओलंपिक में पदक जरूर जीते। लेकिन 1928 से लगातार भाग ले रही भारतीय टीम ने इस बार भी निराशा किया।

इस बार भारत ने करीब 70 सदस्यीय दल सिडनी ओलंपिक में भाग लेने के लिए भेजा था। भारतीय खिलाड़ियों ने हाकी, टेनिस, टेबल टेनिस, बैडमिंटन, एथलेटिक, तैराकी, घुड़सवारी, नौकायन, मुक्के बाजी, भरोत्तोलन, कुश्ती और निशानेबाजी में भाग लिया था।

भारतीय हाकी संघ के अध्यक्ष के.पी.एस.गिल ने अपनी टीम को युवा और अनुभवी खिलाड़ियों का मिश्रण बताया था। उनके साथ-साथ पूरे देश के हाकी प्रेमियों को उम्मीद थी कि भारत हाकी मे अच्छा प्रदर्शन करके कोई न कोई पदक अवश्य जीतेगा। पूल बी में भारत, आस्ट्रेलिया, अर्जेंटीना, दक्षिण कोरिया, पोलेंड और स्पेन थे। पूल ए में हालैंड, जर्मनी, पाकिस्तान मलेशिया, ब्रिटेन और कनाडा थे।

भारत ने पिछले तीन ओलंपिक खेलों में हाकी में पहला मैच हार के साथ शुरुवात की थी लेकिन इस बार पहले मैच में जब भारत ने अर्जेंटीना को 3–0 से हराया और दूसरे मैच में मेजबान सशक्त आस्ट्रेलियाई टीम को 2–2 से बराबरी पर रखा तो एक बार उम्मीद यह बधी कि इस बार भारत पदक की तरफ बढ़ रहा है। लेकिन अगले ही मैच में दक्षिण कोरिया ने 2–0 से भारत को हराकर जो झटका दिया वह अंत तक भारत के लिए किसी भारी ग्रह सा ही बना रहा। हालाकि इसके बाद के पूल मैच में रमणदीप सिंह के नेतृत्व मे सिडनी गई टीम ने स्पेन को 3–2 से हरा कर उम्मीदों की कुछ किरण जगाई जरूर। पर अपने अंतिम पूल मैच मे पोलैंड से ड्रा खेलकर भारतीय हाकी टीम ने भारतीय खेल प्रेमियों की आशाओं पर पानी फेर दिया। करो या मरो की तर्ज पर वह मैच भारत के लिए जीतना जरूरी था। तभी अपनी टीम सेमी फाइनल में पहुंच सकती थी।

लेकिन महत्वपूर्ण मैचों मे अवसर गंवाने की कहानी दोहराते हुए भारत ने पोलैंड की टीम को मैच ड्रा करने दिया। बाद मे ब्रिटेन ने भी भारत को क्लासीफिकेशन मैचों में हरा दिया। हां अर्जेंटीना को एक बार फिर से हराते हुए भारतीय टीम ने सातवा स्थान जरूर पा लिया। इससे पहले 96 के अटलांटा ओलंपिक मे हमारा स्थान आठवां रहा था।

इसके अलावा सिर्फ कर्णम मल्लेश्वरी ही कुछ अपने दे[illegible] की की लाज रख सकी। भारोत्तोलन में 69 किलोग्राम भ[illegible] वर्ग मे मल्लेश्वरी ने कास्य पदक जीता। भारत के लिए [illegible] ओलंपिक में प्रिचर्ड, जाधव और पेस के बाद व्यक्तिगत पद[illegible] जीतने का चौथा मौका बना। भारत की किसी महिला द्वा[illegible] ओलंपिक मे व्यक्तिगत भारत की किसी महिला द्वा[illegible] ओलंपिक मे व्यक्तिगत पदक जीतने का यह पहला मौका[illegible] इसलिए कर्णम मल्लेश्वरी का मान और बढ़ जाता है।

ओलंपिक मे महिलाओं के भाग लेने के सौ वर्ष पूरे हो चु[illegible] है। लेकिन भारत की तरफ से महिलाओं ने 1952 [illegible] ओलंपिक से इन खेलो मे भाग लेना शुरु किया है। भारत [illegible] ओर से ओलंपिक खेलों मे भाग लेने वाली पहली महिला मे[illegible] डिसूजा और नीलिमा घोष थीं। लेकिन भारतीय महिला[illegible] द्वारा पदक जीतने का क्रम उनके भाग लेने के 48 वर्षों ब[illegible] इस बार सिडनी ओलंपिक से शुरू हुआ है।

हालांकि यह उपलब्धि अन्य देशों के महिला खिलाड़ियों की तुलना में नगण्य है, लेकिन अपने देश में जिस तरह से पदकों का सूखा है, उसे देखते हुए इसे उपलब्धि ही माना जा सकता है। खास बात यह है कि इसी कांस्य पदक की ही वजह से भारत का नाम भी पदक तालिका में अंकित हो सका।

इसके अलावा गत अटलांटा–96 ओलंपिक में कांस्य विजेता लिएंडर पेस से भी काफी उम्मीदें थीं कि वह टेनिस में इस बार भी कोई न कोई पदक अवश्य जीतेंगे। पर ओलंपिक का पदक जीतना एक सतत अभ्यास और कड़ी मेहनत वाली प्रक्रिया रहती है। जिसका कि इस बार भारतीय टेनिस खिलाड़ियों में अभाव दिखा। महेश भूपति और लिएंडर पेस वर्ष 99 में चारों ग्रैंड स्लैम–विंबलडन, फ्रेंच, अमरीकी और आस्ट्रेलियाई ओपेन के फाइनल में पहुंचे थे। उनमें से दो खिताब उन्होंने जीते थे और विश्व की नंबर एक जोड़ी के रूप में उन्हें ख्याति मिली थी।

अगर वे अपनी जोड़ी बनाए रहते तो शायद इस बार ओलंपिक में वे कोई न कोई पदक जीत सकते थे। लेकिन यह उनका और देश का दुर्भाग्य था कि उनका अहम टकरा गया और वे अलग–अलग हो गए। फिर दोनों चोटग्रस्त भी हो गए। करीब आठ महीने अलग रहने के बाद अगस्त के अंत में दोनों ने फिर से जोड़ी भी बनाई तो क्या। ओलंपिक पदक जीतना कोई इतना आसान नहीं है कि कोई भी टहलते हुए जाए और ओलंपिक पदक जीत ले। इसके लिए वर्षों का परिश्रम आवश्यक है। इस तरह अलग होने का खामियाजा पेस और भूपति ने दूसरे ही दौर में हार के साथ भुगता। एकल मुकाबलों में भी पेस कुछ न कर सका और पहले ही चक्र में स्वीडन के माइकल टिलस्ट्रोम से हार गए।

भारतीय टीम का अन्य लगभग उन सभी खेलों में, जिसमें उसके खिलाड़ियों ने भाग लिया था, यही हाल हुआ। यानी खेलों में भाग लेना सिर्फ रस्म अदायगी भर ही बन कर रह गई। हां, भरोत्तोलन, हाकी और कुछ हद तक मुक्केबाजी ही अपवाद रहा। बाकी सभी खेलों में तो कहीं 37 में 35 वें स्थान पर रहे तो कहीं 31 में 29 वें स्थान पर रहे।

दौड़ कूद में पुरुष और महिलाओं की रिले टीम और महिला भाला फेंक में गुरमीत कौर हीट्स में ही होड़ में बाहर हो गई। महिलाओं की 4 गुणा 400 मीटर रिले दौड़ में अपनी टीम 1996 के अटलांटा ओलंपिक के फाइनल चक्र में पहुंची थी। पी.टी. उषा 1984 के लास एंजलिस ओलंपिक खेलों में 400 मीटर बाधा दौड़ का कांस्य पदक सेकेंड के सौवें हिस्से से गंवा बैठी थी।

इस बार एथलेटिक में के. एम. बीनामोल ने 400 मीटर महिला दौड़ के सेमीफाइनल में अवश्य प्रवेश किया लेकिन सेमीफाइनल हीट्स में आठ धाविकाओं में उनका स्थान आठवां ही रहा। पी. टी. ऊषा और शाइनी विल्सन इससे पहले महिलाओं के वर्ग में सेमीफाइनल तक पहुंच सकी हैं।

मुक्केबाजी में गुरुचरण भी पदक जीतने के करीब पहुंचा, लेकिन लाइन हेवीवेट के क्वार्टर फाइनल में उक्रेन के थेडी फेडटुक से बैक कांउट में हार गया। यहां अगर किस्मत ने थोड़ा सा भी साथ दिया होता तो भारत को मुक्केबाजी में भी पहला पदक–यानी कांसा तो मिल ही जाता।

निशानेबाजी में 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में अंजलि वेद पाठक ने फाइनल में पहुंच कर कुछ आशा जरूर जगाई। लेकिन फाइनल में वह भी आठ प्रतियोगियों में आठवें स्थान पर ही रही। पुरुषों के वर्ग में अनवर सुल्तान भी कोई उल्लेखनीय प्रदर्शन न कर सके। अफसोस इस बात का रहा कि ज्यादातर भारतीय खिलाड़ियों ने सिडनी से पहले जो प्रदर्शन किया था या सिडनी के लिए आयोजित क्वालीफाइंग टूर्नामेंटों में जो प्रदर्शन किया था। सिड़नी में वे उस प्रदर्शन को भी दोहरा न सके। होना यह चाहिए था कि सिड़नी में वे अपने पूर्व प्रदर्शन से अच्छा प्रदर्शन करते लेकिन हुआ इसका उलटा और कई खिलाड़ी अपने पहले के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को भी पार नहीं कर सके।

शाटपुटर शक्ति सिंह और बहादुर सिंह और जेवलिन थोअर जगदीश विश्नोई भी कुछ नहीं कर सके। जर्काता में एशियन ट्रैक एंड फील्ड में शक्ति ने रजत पदक जीता था। वो और बहादुर दोनों ही प्रशिक्षण के दौरान 20 मीटर तक गोला फेंक रहे थे। लेकिन सिडनी में तब अग्नि परीक्षा थी तो बहादुर 18.70 और शक्ति सिंह 18.40 मीटर ही गोला फेंक सके. जगदीश विश्नोई ने जकार्ता में 79.67 मीटर तक भाला फेंका था, पर सिडनी में उनका भाला 70.86 मीटर तक ही पहुंच सका।

पुरुषों के 400 मीटर दौड़ में फ्लाइंग सिख मिल्खा सिंह ने 45.60 सेकेंड का एशियाई रिकार्ड बनाया हुआ है। वह रोम में 1960 के ओलंपिक में सेकेंड के बहुत ही कम हिस्से से कांस्य पदक चूके थे। मिल्खा ने अपना रिकार्ड तोड़नेवाले को इनाम देने की घोषणा कर रखी है। वर्षों बाद परमजीत सिंह का दावा है कि उन्होंने 45.56 सेकेंड का समय निकालकर यह रिकार्ड तोड़ दिया है। लेकिन सिडनी ओलंपिक में परमजीत सिंह भी कुछ नहीं कर सके और 46.64 सेकेंड का समय लेकर दौड़ पूरी की।

मिल्खा सिंह का कहना है कि भारतीय एथलीट ड्रग्स लेकर एशियाई या क्वालीफाइंग राउंड में तो अच्छा प्रदर्शन कर जाते हैं। लेकिन जब फाइनल मुकाबला सामने पड़ता है तो सबकी पोल पट्टी खुल जाती है। सिडनी में भारत का जो प्रदर्शन रहा है, उससे मिल्खा सिंह की बात सच ही प्रतीत होती है।

ओलंपिक से हटाई गई स्पर्धायें

सिडनी ओलंपिक में कुल 28 स्पर्धायें थी जोकि अटलांटा ओलंपिक से दो अधिक थीं। कुछ स्पर्धायें कम कर दी जाती है और कुछ बढ़ा दी जाती हैं।

निम्न स्पर्धायें ओलंपिक से हटा दी गई हैं।

स्पर्धायें	अंतिम बार खेली गईं
क्रिकेट	पेरिस, 1900
क्रोकुएट	पेरिस, 1900
गोल्फ	सेंय लुइस, 1904
मोटर नौकायन	लंदन, 1908
टग आफ वार	अंटवर्प, 1920
रग्बी	पेरिस, 1924
पोलो	बर्लिन, 1936

एथलीट, हाकी, टेनिस, मुक्केबाजी, बैडमिंटन सभी में भारत पिछड़ता ही गया। बैडमिंटन में भारत के पी. गोपीचंद का दूसरे चक्र में इंडोनेशिया के तौफीक हीदायत से मुकाबला हो गया। हीदायत हालांकि बाद में चक्र में हार गया, पर इस ओलंपिक की शुरुआत से पहले उसीको स्वर्ण का प्रबल दावेदार माना जा रहा था। उसने पुलेला गोपीचंद को आसानी से हरा दिया। महिलाओं के वर्ग में भी हमारी बैडमिंटन खिलाड़िन कुछ न कर सकीं।

कुल मिलाकर सिडनी ओलंपिक भी भारत के लिहाज से हर बार की ही तरह निराशाजनक हार की शर्म से भरा और खराब रहा। जहां अन्य देश और उसके खिलाड़ी अपने चमत्कार प्रदर्शन से चकाचौंध करते रहे, वहीं भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन हर लिहाज से ऐसा रहा जिसे अगर और सन्नाटे के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता।

अफसोस इसी बात का है कि साल दर साल, ओलंपिक दर-ओलंपिक यही प्रदर्शन दोहराया जाता रहा है। इस हालात को बदलने के लिए कोई कोशिश ही नहीं की जा रही। दूसरे देश जहां एक ओलंपिक खत्म होते ही दूसरे ओलंपिक की तैयारी में जुट जाते है वहीं अपने देश मे सब कुछ जब ओलंपिक सिर पर आ जाते हैं तब शुरू होता है।

जब तक यह परिदृश्य बदला नहीं जाएगा तब तक पदक सूची में नाम आने की कल्पना और इच्छा कैसे की जा सकती है? हर ओलंपिक हमे सबक दे जाते है कि हमारी तैयारी मे कहां और क्या कमी है। लेकिन हम शायद इनसे कुछ सीखने ही नहीं या इन सबसे आंखे चुरा रहते है।

अब कम से कम यह तो करना ही चाहिए कि कुछ खेलों में प्राथमिकता तय करके हमे पूरे देश मे प्रतिभाओं की तलाश करनी चाहिए। उन्हें तलाश करने के बाद उन्हें तराशने की जरूरत है तराशने के लिए पूरे देश में जगह-जगह प्रशिक्षण केंद्र खुलने चाहिए।

नए खिलाड़ियों के प्रशिक्षण में वैज्ञानिक तकनीक का भरपूर फायदा उठाना चाहिए और उसकी मदद लेनी चाहिए। इन सबसे बढ़कर जरूरत है पदक जीतने की दृढ़ इच्छा और संकल्पशक्ति। बिना इसके पदक हासिल करने का सपना कभी भी सिरे नहीं चढ़ सकता। अब भारतीय खिलाड़ियों, अधिकारियों और सभी को इस सिलसिले में गंभीरता से विचार करना चाहिए। इसकी शुरुआत भी अभी होनी चाहिए अन्यथा हर बार की कहानी ही दोहराई जाती रहेगी।

आधुनिक ओलंपिक

आधुनिक ओलंपिक खेल 6 अप्रैल 1896 को यूनान के शहर एथेन्स मे शुरू हुए। इसे फिर से शुरू कराने का श्रेय एक फ्रांसीसी जमींदार और खेल प्रेमी पियरे द फ्रेडी को जाता है। वैसे यह सज्जन बैरन पियरे द कुबर्तिन के नाम से ज्यादा विख्यात है।

पियरे कुबर्तिन का जन्म 1863 में हुआ था। उन्हे विश्वास था कि खेल कूद की मदद से विश्व बंधुत्व और भाईचारे को बढ़ाया जा सकता है। पियरे कुबर्तिन ने 1894 को अंतर्राष्ट्रीय खेल कांग्रेस की स्थापना की। यह खेल कांग्रेस बाद में 'अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति' (आईओसी) बनी।

1894 में पेरिस में अंतरराष्ट्रीय खेल कांग्रेस की बैठक में विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से फैसला लिया कि ओलंपिक खेल फिर से शुरू किए जायें।

पहले आधुनिक ओलंपिक खेल 6 से 15 अप्रैल, 1896 तक एथेन्स में हुए। किंग जार्ज प्रथम ने इन खेलों का उद्घाटन किया। सभी भाग लेने वाले खिलाड़ी पुरुष ही थे। इसमे 13 देशों ने नौ खेल स्पर्धाओं में भाग लेने के लिए कुल 311 खिलाड़ी भेजे।

दूसरा ओलंपिक: 20 मई से 28 अक्तूबर, 1900 तक पेरिस में हुआ। इसमे 26 देशों के 1225 खिलाड़ियों ने 12 खेल स्पर्धाओं में भाग लिया। महिलाओं के लिए भी ओलंपिक मे इसी बार से दरवाजे खुले और 11 महिला खिलाड़ी भी भाग लेने पहुची। एक खास बात यह भी थी कि पहले के ओलंपिक खेलो में सोने का तमगा देना खराब माना जाता था। तब जीतने वाले को चांदी का पदक और जैतून की एक शाखा दी जाती थी। दूसरे स्थान पर आनेवाले को कांस्य पदक और तीसरे स्थान पर रहने वाले को कुछ भी नहीं दिया जाता था।

तीसरा ओलंपिक पहली जुलाई से 23 नवंबर, 1904 तक सेंट लुई अमरीका में हुए। पहले यह शिकागो में होना तय हुए थे लेकिन तत्कालीन राष्ट्रपति थियोडोर रुजवेल्ट के आग्रह पर इन्हें सेंट लुई में कराया गया। तीसरे ओलंपिक में 13 देशों के 687 प्रतिस्पर्धियों ने 10 खेल स्पर्धाओं में भाग लिया।

चौथे ओलंपिक: 27 अप्रैल से 31 अक्टूबर, 1908 तक लंदन मे हुए। पहले इनका आयोजन रोम में तय था। लेकिन बाद में लंदन ने इसके आयोजन की जिम्मेदारी संभाली। इस बार 22 देशों के 2035 खिलाड़ियों ने 17 खेल स्पर्धाओं मे भाग लिया।

पांचवें ओलंपिक: 5 मई से 22 जुलाई, 1912 तक स्वीडन की राजधानी स्टाकहोम में हुए। इसमें 28 देशों के 2547 खिलाड़ियों ने 13 खेल स्पर्धाओं में भाग लिया। इसी ओलंपिक से पहली बार हर देश की टीम के आगे मार्च पास्ट में उस देश के नाम का बोर्ड लेकर चलने की भी परंपरा और इलेक्ट्रानिक घड़ियों का भी प्रयोग शुरू किया गया।

छठे ओलंपिक: 1916 में छठे ओलंपिक का आयोजन बर्लिन मे तय था। लेकिन प्रथम विश्व युद्ध के कारण उसका आयोजन रद्द कर दिया गया।

सातवा ओलंपिक: 23 अप्रैल से 12 सितंबर, 1920 तक बेल्जियम के शहर एंटवर्प में किया गया। इस बार इसमें 29 देशों के 2669 खिलाड़ियों ने 19 खेल स्पर्धाओं में भाग लिया।

आठवां ओलंपिक: 4 मई से 27 जुलाई, 1924 तक पेरिस में किया गया। यह पहला मौका था जब किसी शहर में दोबारा ओलंपिक खेलों का आयोजन हुआ। इस बार 44 देशों के 3092 खिलाड़ियों ने 18 खेल स्पर्धाओं में भाग लिया।

नौवा ओलंपिक: 17 मई से 12 अगस्त, 1928 तक हालैंड के एम्सटर्डम मे हुआ। इस में 46 देशों के 3014 खिलाड़ियों ने 16 खेल स्पर्धाओं में भाग लिया। इसी ओलंपिक खेलों से भारतीय टीम ने भी ओलंपिक में भाग लेना शुरू किया।

दसवां ओलंपिक: 30 जुलाई से 14 अगस्त, 1932 तक अमरीका के लास एंजेल्स में हुए। इसमें 37 देशों के

पदक तालिका–सिडनी ओलंपिक, 2000

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
अमरीका	39	25	33
रूस	32	28	28
चीन	28	16	15
आस्ट्रेलिया	16	25	17
जर्मनी	14	17	26
फ्रांस	13	14	11
इटली	13	8	13
हालैंड	12	9	4
क्यूबा	11	11	7
ब्रिटेन	11	10	7
रोमानिया	11	6	9
द. कोरिया	8	9	11
हंगरी	8	6	3
पोलैंड	6	5	3
जापान	5	8	5
बल्गारिया	5	6	2
यूनान	4	6	3
स्वीडन	4	5	3
नार्वे	4	3	3
इथियोपिया	4	1	3
उक्रेन	3	10	10
कजाकिस्तान	3	4	0
बेलारूस	3	3	11
कनाडा	3	3	8
स्पेन	3	3	5
ईरान	3	0	1
तुर्की	3	0	1
चेक गणराज्य	2	3	3
कीनिया	2	3	2
डेनमार्क	2	3	1
फिनलैंड	2	1	1
आस्ट्रिया	2	1	0
लिथुआनिया	2	0	3
अजरबैजान	2	0	1
स्लोवेनिया	2	0	0
स्विट्जरलैंड	1	6	2
इंडोनेशिया	1	3	2
स्लोवाकिया	1	3	1
मैक्सिको	1	2	3
अल्जीरिया	1	1	3
उजबेकिस्तान	1	1	2
लातविया	1	1	1
यूगोस्लाविया	1	1	1
बहामास	1	1	0
न्यूजीलैंड	1	0	3
एस्तोनिया	1	0	2
थाईलैंड	1	0	2
क्रोएशिया	1	0	1
कैमरून	1	0	0
कोलंबिया	1	0	0
मोजाम्बिक	1	0	0
ब्राजील	0	6	6
जमैका	0	4	3
नाइजीरिया	0	3	0
बेल्जियम	0	2	3
द. अफ्रीका	0	2	3
अर्जेंटीना	0	2	2
मोरक्को	0	1	4
चीनी चाइपे	0	1	4
उ. कोरिया	0	1	3
मालदोवा	0	1	1
सऊदी अरब	0	1	1
त्रिनिदाद	0	1	1
आयरलैंड	0	1	0
उरुग्वे	0	1	0
वियतनाम	0	1	0
जार्जिया	0	0	6
कोस्टरिया	0	0	2
पुर्तगाल	0	0	2
आर्मेनिया	0	0	1
बारबाडोस	0	0	1
चिली	0	0	1
आइसलैंड	0	0	1
भारत	0	0	1
इजरायल	0	0	1
किर्गिस्तान	0	0	1
कुवैत	0	0	1
मैसिडोनिया	0	0	1
कतर	0	0	1
श्रीलंका	0	0	1

1408 खिलाड़ियों ने 15 खेल स्पर्धाओं में भाग लिया। इस बार से प्राचीन ओलंपिक खेलों की तरह मशाल प्रज्जवलित करने की परंपरा भी शुरू हुई।

ग्यारहवां ओलंपिक: 1 से 16 अगस्त, 1936 तक बर्लिन में हुआ। इस ओलंपिक में 49 देशों के 4066 खिलाड़ियों ने 19 खेल स्पर्धाओं में भाग लिया। पहली बार इसी ओलंपिक से ओलंपिक खेलों को टेलीविजन पर भी दिखाने की प्रथा शुरू हुई। इसी ओलंपिक से ओलंपिक मशाल को ओलंपिया से प्रज्वलित कर ओलंपिक आयोजनकर्ता शहर तक ले जाने की परंपरा भी शुरू हुई।

12 वें ओलंपिक 1940 में टोक्यों और 13वें ओलंपिक 1944 में लंदन में आयोजित होने थे। लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के कारण ये न हो सके।

चौदहवां ओलंपिक: 29 जुलाई से 14 अगस्त 1948 तक लंदन में ही हुआ। इसमें 59 देशों के 4099 खिलाड़ियों ने 17 खेल स्पर्धाओं में भाग लिया। इसमें दूसरी लड़ाई में पराजित जर्मनी और जापान को भाग लेने के लिए ही नहीं आमंत्रित किया गया।

पन्द्रहवां ओलंपिक: 19 जुलाई से 3 अगस्त, 1952 तक फिनलैंड की राजधानी हेलसिंकी में हुआ। इसमें 69 देशों के 4925 खिलाड़ियों ने 17 खेल स्पर्धाओं में भाग लिया। इसमें पहली बार सोवियत संघ की टीम भी ओलपिक में भाग लेने पहुंची।

सोलहवां ओलंपिक: 22 नवंबर से 8 दिसंबर 1956 तक आस्ट्रेलियाई शहर मेलबोर्न में हुआ। इसमें घुडसवारी की स्पर्धा स्टाकहोम में हुई। मेलबोर्न ओलंपिक मे 67 देशों के 3184 खिलाड़ियों ने 16 स्पर्धाओं में भाग लिया। जबकि स्टाकहोम मे 10 से 17 जून के बीच घुड़सवारी की स्पर्धा मे 29 देशों के 158 खिलाड़ियों ने भाग लिया।

सत्रहवां ओलंपिक: 25 अगस्त से 11 सितंबर, 1960 तक रोम में हुआ। अब तक की यह सबसे भव्य प्रतियोगिता था। तब तक के सर्वाधिक 83 देशों के 5348 खिलाडियों ने 17 खेल स्पर्धाओं में भाग लिया।

अठारहवां ओलंपिक: 10 से 24 अक्तूबर, 1964 तक टोक्यों में हुआ। एशिया में पहली बार ओलपिक खेलों का आयोजन हुआ। 93 देशों के 5140 खिलाड़ियों ने 19 खेल स्पर्धाओं में भाग लिया।

उन्नीसवां ओलंपिक: 12 से 27 अक्तूबर, 1969 तक मैक्सिको में हुआ। इसमे पहली बार भाग लेने वाले देशों की संख्या सौ से ऊपर पहुच कर 112 हुई। कुल 5330 खिलाड़ियों ने 19 खेल स्पर्धाओं में भाग लिया।

बीसवां ओलंपिक: 26 अगस्त से 11 सितंबर, 1972 तक जर्मनी के म्यूनिख शहर मे हुआ। यह अब तक के सबसे भव्य आयोजन थे। कुल 121 देशों के 7123 खिलाडियों ने 21 खेल स्पर्धाओं मे भाग लिया।

इक्कीसवां ओलंपिक: 17 जुलाई से 1 अगस्त, 1976 तक कनाडा के मांट्रियल मे हुए। 92 देशों के 6028 खिलाड़ियों ने 21 खेल स्पर्धाओं में भाग लिया।

बाईसवां ओलंपिक: 19 जुलाई से 3 अगस्त, 1980 तक मास्कों में हुआ। इसमें 80 देशों के 5217 खिलाड़ियों ने 21 खेल स्पर्धाओं में भाग लिया।

चौबीसवां ओलंपिक: 17 सितंबर से 5 अक्तूबर, 1988 तक दक्षिण अफ्रीका की राजधानी सोल में हुए। जापान मे टोक्यों के बाद यह किसी एशियाई देश में होनेवाला दूसरा ओलंपिक आयोजन था। इसमे 1984 लास एंजेल्स से भी ज्यादा 159 देशों के 8465 खिलाड़ियों ने 23 खेल स्पर्धाओं मे भाग लिया।

पच्चीसवां ओलंपिक: 25 जुलाई से 9 अगस्त, 1992 तक स्पेन के बार्सिलोना में हुआ। इसमें 169 देशों के 9367 खिलाड़ियों ने 25 खेल स्पर्धाओं में भाग लिया।

छब्बीसवां ओलंपिक: 19 जुलाई से 4 अगस्त, 1996 तक अटलांटा (अमरीका) में हुआ। इसमें 197 देशों के 11500 खिलाड़ियों ने कुल 26 केल स्पर्धाओं में भाग लिया।1964 के ओलंपिक में रंग भेद की नीति बरतने के लिए दक्षिण अफ्रीका को ओलंपिक से निकाल दिया गया। 1968 के मैक्सिको ओलंपिक में ओलंपिक मशाल प्रज्जवलित करने का मौका पहली बार किसी महिला खिलाड़ी को दिया गया।

1976 के मांट्रियल खेलों का सभी अफ्रीकी देशों ने बहिष्कार कर दिया था। 1964 के टोक्यो ओलंपिक का भी उत्तर कोरिया ओर इंडोनेशिया ने बहिष्कार किया। लेकिन बहिष्कार की सबसे बड़ी घटना 1980 मास्को ओलपिक में हुई। तब अफगानिस्तान में फौज भेजने के विरोध मे अमरीकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर के आह्वान पर अमरीकी गुट के दर्जनों देश मास्को ओलंपिक में भाग लेने नहीं गए।

रूस ने इसका बदला 1984 के लास एंजेल्स ओलंपिक का बहिष्कार कर के लिए। इसी तरह 1996 में अंटलांटा ओलपिक के दौरान भी बम विस्फोट किया गया लेकिन सौभाग्य से उस घटना में कोई हताहत नहीं हुआ और उसका उन खेलो पर कोई असर नहीं हुआ।

1980 तक ओलंपिक खेल हमेशा से ही आयोजकों के लिए घाटे का सौदा रहे हैं। लेकिन 1984 लास एंजेल्स ओलपिक से आयोजकों ने इसे बिना किसी सरकारी मदद के भारी मुनाफे का सौदा बना दिया है। उस बार से प्रायोजकों की मदद से अरबों रुपए खर्च करके अरबों का मुनाफा कमाने वाली चीज इसे बनाया गया है।

27 वां ओलंपिक–सिडनी–2000: जब छह साल पहले सन 1994 में सिडनी को सन् 2000 का ओलपिक अलाट किया गया तो स्वयं एक बार सिडनी वासियों तक को यकीन नहीं हुआ, क्योंकि तब चीन की राजधानी बीजिंग को ओलंपिक 2000 का तगड़ा दावेदार माना जा रहा था। अब जब सिडनी ओलंपिक सपन्न हो चुके हैं निगाहें टिक गई हैं एथेंस पर जहां 2004 में ओलपिक खेलों की तैयारियां शुरु हो चुकी हैं।

ओलंपिक में भारतीयों के गौरव क्षण

ओलपिक खेलों में भारत को सिडनी ओलंपिक तक 8 स्वर्ण, 3 रजत व दो कांस्य पदक मिले हैं। इनमें से दो कांस्य पदक को छोड़कर सभी पदक भारत ने हाकी में प्राप्त किये। यहां हम उन भारतीयों का जिक्र कर रहे हैं जिन्होंने ओलंपिक खेलों में शानदार प्रदर्शन किया है:–

नार्मन पिकर्ड प्रथम एशियाई ओलंपिक पदक विजेता, नार्मन ने 1900 के पेरिस ओलंपिक खेलों में दो रजत पदक जीते थे। कलकत्ता मे जन्में नार्मन ने अपना खेल जीवन फुटबाल से प्रारंभ किया लेकिन लंदन में बसने के बाद एथलेटिक्स की ओर मुड गये। 200 मीटर की दौड़ में उन्होंने अमरीका के वाल्टर टेवेसबरी से पिछड़ कर रजत पदक जीता। बाधा दौड़ में भी वे अमरीका के एलविन क्रीन्जलियान से पिछड़ कर रजत पदक पा सके।

खेल छोड़ने के बाद वे अमरीका में अभिनेता बन गये, लेकिन
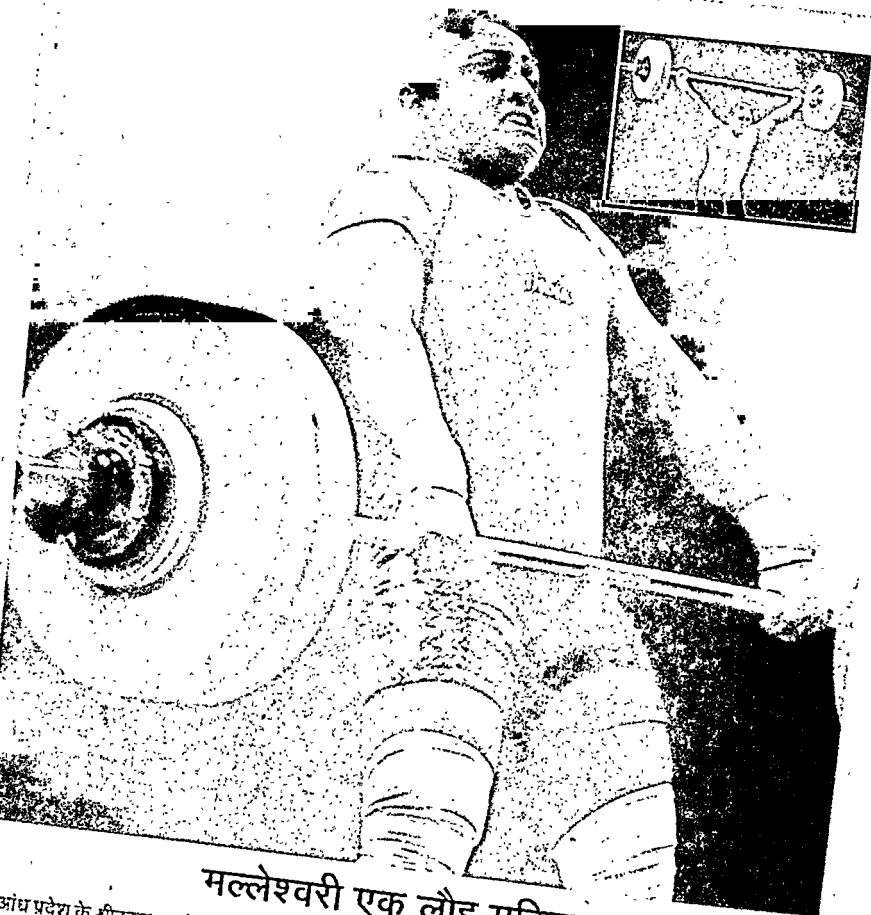
मल्लेश्वरी एक लौह महिला

आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम में जन्मी मल्लेश्वरी की चार
और एक भाई हैं। इनके पिता पुलिस विभाग में कार्य
थे। मल्लेश्वरी ने अपनी बहन नरसम्मा का अनुसरण
हुए भारोत्तोलन को अपना लिया।

खनऊ में आयोजित राष्ट्रीय कनिष्ठ भारोत्तोलन
गिता में 1992 में वे सर्वश्रेष्ठ रहीं, 1994 के
में आयोजित राष्ट्रीय खेलों में उन्होंने स्वर्ण पदक

नी में 1991 में आयोजित विश्व भारोत्तोलन
ता में उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया और
ान पर रहीं। एशियाई महिला भारोत्तोलन में 54
में 1992 में थाईलैंड में उन्हें रजत पदक मिला

और आस्ट्रेलिया के मेलबोर्न में आयोजित विश्व महिला भारोत्तोलन प्रतियोगिता में उन्हें कांस्य पदक मिला। 1994 के हिरोशिमा एशियाई खेलों में उन्हे रजत पदक मिला। टर्की विश्व महिला भारोत्तोलन में और गुआंगझान (चीन) में विश्व महिला भारोत्तोलन में उन्हें स्वर्ण पदक मिला। 1998 के बैंकाक एशियाई खेलों में 63 किलो वर्ग में उन्होंने रजत पदक जीता। 1995 में उन्हे अर्जुन सम्मान और 1996 में राजीव गांधी खेल रत्न सम्मान मिला। 1999 में उन्हें पदमश्री सम्मान से भारत सरकार ने सम्मानित किया। सिडनी ओलंपिक में वे 240 किलोग्राम का भार उठा कर पदक जीतने वाली एकमात्र भारतीय महिला बनीं।

बैंकाक एशियाई खेल परिणाम

एथलेटिक (पुरुष)

100मी.	कोजी इटो	जापान	10.05
	साहीरवोंग रींचाई	थाई	10.31
200मी.	कोजी इटो	जापान	20.25
	हान चाउमिंग	चीन	20.70
400मी.	सुगत तिलकरत्ने	श्रीलंका	44.99
	इब्राहिम इस्माइल	कतर	45.32
800मी.	ली जिन-2	कोरिया	1:46.56
	किम सून हुंग	कोरिया	1:46.61
1500मी.	मुहम्मद सुलेमान	कतर	3:40.03
	किम सून हुंग	कोरिया	3:40.56
5000मी.	मोहम्मद सुलेमान	कतर	13:35.79
	अहमद इब्राहिम वरसमा	कतर	13:56.65
10000मी.	केनजी टकाओ	जापान	28:45.99
	अहमध इब्राहिम	कतर	28:46.55
3000मी. स्टीपलचेज			
	यासुनोरी उचिटोमी	चीन	8:41.0
	हामिद सदजादी हजावेह	इरान	8:42.53
100मी. बाधा			
	चेन यान्हो	जापान	13.65
	एंद्रेइवलायेरेन्को	कजा.	13.86
400मी. बाधा			
	हिडीआकी कावागुरा	जापान	49.59
	योशिहिको सैइटो	जापान	49.94

. तक के एशियाई खेलों के आयोजन स्थल

वर्ष	स्थान	देश
1951	नई दिल्ली	भारत
1954	मनीला	फिलीपींस
1958	टोक्यो	जापान
1962	जकार्ता	इंडोनेशिया
1966	बैंकाक	थाईलैंड
1970	बैंकाक	थाईलैंड
1974	तेहरान	ईरान
1978	बैंकाक	थाईलैंड
1982	नई दिल्ली	भारत
1986	सियोल	दक्षिण कोरिया
1990	बीजिंग	चीन
1994	हिरोशिमा	जापान
1998	बैंकाक	थाईलैंड
2002	पुसान	दक्षिण कोरिया

ऊंची कूद		
ली जिन टेइक	कोरिया	2.27
झाउ झोंग	चीन	2.23
पोल वाल्ट		
इगोर पोटापोविच	कजा.	5.40
किम चुल क्यून	कोरिया	5.40
लंबी कूद		
मसाकी मोरिनागा	जापान	8.10
लियु हांगनिंग	चीन	8.05
ट्रिपल जंप		
सर्गी अर्जमास्सोव	कजा.	17.00
डुआन क्विफेंग	चीन	16.98
शाट पुट		
लियु हाओ	चीन	19.20
शक्ति सिंह	भारत	18.81
डिस्कस		
लि शाउजी	चीन	64.58
अनिल कुमार	भारत	58.43
हैमर		
कोजी मुरोफुशी	जापान	78.57
एंद्रेई अब्दुवालियेव	उज.	77.14
जैवलीन		
सर्गी वोइनोव	उज.	79.70
झांग लियानबियाउ	चीन	78.58
डिकेथलान		
ओलेग वर्टीलनिकोव	उज	8278
रामिल गानियेव	उज	8167

4x100 मी. रिले

जापान– यासुकाट्सु ओटसुकी, कोजी इटो, हिरोयासु सुची, शिन कुबोटा — 38.91

थाइलैंड–निट पियापन, सीहारवोंग रियांची, वी. वोरासिट, सोपानिक विस्सानु — 39.17

4x400 मी. रिले

जापान–जुन ओसाकाडा, केन्जी टयाटा, मसायोशी कान, शुनजी कारुबे — 3:01.70

भारत– लिजो डेविड, पी. रामाचंद्रन, परमजीत सिंह, जटा शंकर — 3:02.62

20 किलोमीटर पैदल		
यु गुहोई	चीन	1:20:25
वैलेरी योरिस्सोव	कजा.	1:23:52
50 किलोमीटर पैदल		
वांग यिन हांग	चीन	3:59:26
सर्गी कोरेपानोव	कजा.	3:59:27

न		
ली योंग जू	कोरिया	2:12:32
अकिरा मनाई	जापान	2:13:25
ला		
0 मी.		
लि जुएमी	चीन	11.05
लि याली	चीन	11.36
0 मी.		
दमयंती दर्शा	श्रीलंका	22.48
लि जुएमी	चीन	22.53
00 मी.		
दमयंती दर्शा	श्रीलंका	51.57
चेन युकिस्यांग	चीन	52.50
800 मी.		
ज्योतिर्मय सिकदर	भारत	2:01.00
के.सी. रोजाकुट्टी	भारत	2:03.34
1500 मी.		
ज्योतिर्मय सिकदर	भारत	4:12.82
वांग क्विेनफेंग	चीन	4:13.19
800 मी.		
सुप्रियाती सुटोनो	इंडो.	15:54.45
सुनीता रानी	भारत	15:54.47
10,000 मी.		
युको कवाकामी	जापान	32:01.25
के.सी. रोजाकुट्टी	भारत	32:18.81
100 मी. बाधा		
ओल्गा शिशिंगा	कजा.	12.63
लियु जिंग	चीन	12.89
400 मी. बाधा		
नटाल्या टोर्शिना	कजा.	55.33
सु पी विन	ताइपाई	55.72
ो		
योको ओटा	जापान	1.88
जिन लिंग	चीन	1.88
वाल्ट		
काई वेइयन	चीन	4.00
मासुमी ओनो	जापान	4.00
कूद		
गुआन यिंगनान	चीन	6.89
यु यिंक्वान	चीन	6.77
पल जंप		
रेन रुइपिंग	चीन	14.27
वु लिंगमेई	चीन	14.25
पुट		
ली मिसु	चीन	18.96
चेंग जियावान	चीन	18.55

पहले अफ्रीकी–एशियाई खेल

पहले अफ्रीकी–एशियाई खेलों का आयोजन भारत में नई दिल्ली में 3 नवंबर से 11 नवंबर 2001 में होगा। हालांकि पहले अफ्रीकी–एशियाई खेलों की अवधारणा का जन्म 1998 में हो गया था लेकिन इसे मंजूरी सेविल्ले में विश्व एथलेटिक चैम्पियनशिप के दौरान एक बैठक में मिली। छह दिनों के इस आयोजन में एथलेटिक, एक्वाटिक्स, मुक्केबाजी, फुटबाल, निशानेबाजी और टेनिस प्रतिस्पर्धायें शामिल होंगी।

जैवलीन		
ली योंग सुन	कोरिया	62.09
लियांग लिली	चीन	60.11
हिपैथलान		
शेन शेंगफेई	चीन	5817
श्वेतलाना कजानिया	कजा.	5775
4x100 मी. रिले		
चीन–लियांग यी, जुएमी, लि याली, यान जियानकुई		43.36
उजबेकिस्तान येलेना क्वेतकोवस्काया, गुजेल हुब्बिएवा, ल्यूडमिला दमित्रादी, ल्यूबोव पेरिपेलोवा		44.38
4x400 मी. रिले		
चीन–झांग हेंगुआ, झांग हेंगुइन, लि युलियान, चेन युक्सियांग		3:32.03
भारत–जिंसी पिलिप, रोजा कुट्टी, के.एम. बीनामोल, ज्योतिर्मय सिकदार		3:32.20
10,000 मी. पैदल		
लियु होंग्यू	चीन	43:57:28
री मिटसुमोरी	जापान	44:29:82
मैराथन		
नाओको टाकाहासी	जापान	2:21:47
किम चांग	उ. कोरिया	2:34:55

पी.टी. ऊषा ने अलविदा कहा

जकार्ता एशियन एथलीट चैम्पियनशिप से पूर्व पी.टी. ऊषा ने खेलों से अलविदा की घोषणा कर दी। ऊषा ने भारत को अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में 102 पदक दिलाये। केरल के कोझिकोड जिले के कूथाली में 1964 में जन्मी ऊषा का लालन–पालन पयोली गांव में हुआ। ऊषा को 1978 में कोल्लम में आयोजित अंतर्राज्यीय खेल प्रतिस्पर्धा में कनिष्ठ (14 वर्ष तक आयु) 100 मीटर, 60 मीटर बाधा और 16 वर्ष तक की स्पर्धा में 200 मीटर की दौड़ जीतकर प्रसिद्ध मिली। 1980 में कराची (पाकिस्तान) में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में ऊषा ने 100 मीटर, 200 मीटर, 4x100, 4x400 मीटर की दौड़ जीतकर चार स्वर्ण पदक प्राप्त किये। ... एशियाई खेलों में 90 में खेलों से ... ली थी लेकिन वे दुबारा प्रतिस्पर्धा में ...

विश्व एथलेटिक रिकार्ड्स

पुरुष/प्रतिस्पर्धा	समय	नाम	स्थान	तिथि
100 मी.	9.79	मारिस ग्रीन (स.रा.)	एथेंस	16.6.99
200 मी.	19.32	माइकल जान्सन (स.रा)	अटलांटा	1-8-96
400 मी.	43.18	माइकल जान्सन (स.रा)	सेविले	26-8-99
800 मी.	1:41.11	विल्सन किपकेटर	कोलोग	24-8-97
1500 मी.	3:26.00	हिकाम एल ग्वेरोई (मारि.)	रोम	14-4-98
5000 मी.	12:39.3	हैले गब्रेसेलासी (इथियो.)	हेलसिंकी	13-6-98
10000 मी.	26:22.75	हैले गब्रेसेलासी (इथियो.)	हेंगेलो	1-6-98
3000 मी. स्टीपल चेज	7:55.72	बर्नार्ड बर्मासी (केन्या)	कोलोगने	24-8-97
110 मी. बाधा	12.91	सी. जैक्सन (ग्रे. ब्रि.)	स्टटगार्ड	20-8-93
400 मी. बाधा	46.78	के यांग (सं. रा.)	बार्सिलोना	6-8-92
4 × 100 मी रिले	37.40	सं. रा. अमरीका	बार्सिलोना	8-8-92
4 × 100 मी रिले	37.40	सं. रा. अमरीका	स्टटगार्ड	21-8-93
4 × 400 मी.	2:54.20	सं.रा. अमरीका	न्यूयार्क	22-7-98
20 किमी पैदल	1:17:25.6	बर्नाडो सर्गुरा (मैक्सिको)	बर्गेन	7-5-94
50 किमी पैदल	3:37.26	वालेरी स्पीटसिन (रूस)	मास्को	21-5-00
उंची कूद	2.45मी.	जे. सोटामेयर (क्यूबा)	सालामांका	27-7-93
लंबी कूद	8.95मी.	एम. पावेल (सं. रा.)	टोक्यो	30-8-91
ट्रिपल जम्प	18.29	जोनाथन एडवर्ड्स (ग्रे.ब्रि)	गोथेन्सबर्ग	7-8-95
शाट पुट	23.12	आर. बार्न्स (सं.रा.)	लास एंजेल्स	20-5-90
डिस्कस	74.08	जे.शुल्ट (जर्मनी)	ब्रांडेनबर्ग	6-6-86
जैवलिन	98.48	जान सेलेस्नी (चेक)	जेना	25-5-96
हैमर	86.74	वाई. सेडिका (उक्रेन)	स्टटगार्ड	30-8-86
पोल वाल्ट	6.14मी.	एस. बुबका (उक्रेन)	सेस्ट्ररियरे	31-7-94
डिकेथ्लान	8994	टोम डीवोराक (चेक)	प्राग	4-7-99
विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन				
माराथोन	2:05:42	खालिद कनौजी(एम.ए.आर)	शिकागो	24-10-99
महिला				
·0 मी.	10.49	एफ. जी. जायनर (सं.रा)	इंडियनपोलिस	16-7-88
00 मी.	21.34	एफ. जी. जायनर (सं.रा)	सियोल	29-9-88
400 मी.	47.60	एम. कोच (जर्मनी)	कानबरा	6-10-85
800 मी.	1:53.28	जे. क्रेटोचिविलोवा (चेक)	म्यूनिक	26-7-83
1500 मी.	3:50.46	सु यानसिया (चीन)	बिजिंग	11-9-83
5000 मी.	14:28.09	जियांगबो (चीन)	शंघाई	23-10-97
10000 मी.	29:31.78	वांग जंक्सिया (चीन)	बिजिंग	8-9-93
100 मी. बाधा	12.21	वाई. डोनकोवा (बल्गे.)	स्टारा ज्गा	20-8-88
400 मी. बाधा	52.61	किम बाटेन (सं.रा)	गोथनबर्ग	11-8-95
4 × 100 मी. रिले	41.37	ग्रेट ब्रिटेन	कानबरा	6-10-85
4 × 400 मी. रिले	3:15.17	सोवियत संघ	सियोल	1-10-88
10 किमी पैदल	41:04	येलेना निकोयावेवा (रूस)	सोची	20-4-96
उंची कूद	2.09	एस.कोस्टाडिनोवा (बल्गे.)	रोम	30-8-87
लंबी कूद	7.52	जी. चिस्त्यैकोव (रूस)	लेनिनग्राड	11-6-88
शाट पुट	22.63	एन. लिसोव्सकाया (रूस)	मास्को	7-6-87
डिस्कस	76.80	जी. रेन्श (जर्मनी)	ब्रांडेनबर्ग	9-7-88
हेप्टथलान	7291	जे.जोईनर-केरसी (सं.रा)	सियोल	24-9-88
ट्रिपल जम्प	15.20	इनेसा क्रावेड (उक्रेन)	गोथनबर्ग	10-8-95
जैवलिन	16.48	ट्रिनेहाटेस्टाट (नार्वे)	ओस्लो	28-7-00
विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन				
माराथोन	2:20:43	टेगला लोरेपे (केन्या)	बर्लिन	26-9-99

एथलेटिक–एशियन रिकार्ड (पुरुष)

प्रतिस्पर्धा	समय	नाम	देश	तिथि
100 मी	10.00	कोजिइटो (जापान)	बैंगकांग	13–12–98
200 मी.	20.16	कोजिइटो (जापान)	कुमामाटो	2–10–98
400 मी.	44.56	मोहम्मद अलमाट्की (ओमान)	बुडापेस्ट	12–8–88
800 मी.	1.44.14	ली जिन–11(कोरिया)	सियोल	17–6–94
1500 मी.	3.32.10	मोहम्मद सुलेमान (कतार)	ज्यूरिख	13–8–97
5000 मी.	13.13.40	टोशिनारी टकाओका (जापान)	हेचेल	1–8–98
10,000 मी.	27.35.33	टाकेयुकी नाकायामा (जापान)	हेलसिंकी	2–7–87
3,000 मी. स्टीपल चेज	8.08.26	सादाद अल–अस्मारी (स.अरबिया)	स्टाकहोम	7–7–97
110 मी.बाधा	13.25	लि टांग (चीन)	लिन्ज	4–7–94
400 मी. बाधा	48.17	मुबारत अल नुबी (कतर)	जोहांसबर्ग	11–9–98
4×100मी.	38.31	जापान (राष्ट्रीय टीम)	एथेंस	9–8–97
4×400मी.	3:00.76	जापान (राष्ट्रीय टीम)	अटलांटा	3–8–96
ऊंची कूद	2.39	झू जियानहुआ (चीन)	एबर्स्टाट	10–6–84
पोलवाल्ट	5.90	ग्रिगोरी येगोरोव (कजाकस्तान)	स्टुटगार्ड	19–8–93
	5.90	इगोर पोटापुविक (कजाकस्तान)	नीस	10–7–96
लंबी कूद	8.40	लाओ जियानफेंग (चीन)	झाओजिंग	8–7–97
ट्रिपल कूद	17.35	ओलेगसाकिरिकिन (कजा.)	मास्को	5–6–94
शाटपुट	20.45	सर्गी रुबर्टसोव (कजा.)	अलमाटी	15–6–96
डिस्कस थ्रो	65.16	लीसोआबजी (चीन)	नानजिंग	7–5–96
हैमर थ्रो	83.36	ऐंड्रे अब्दुवालियू (टर्की)	बुडापेस्ट	3–6–94
जैवलिन थ्रो	87.60	काजुहिरो मिजोगुची (जापान)	सैनजोस	2–7–89
डिकाथलान	8445	रामील गैनियेव (उज.)	एथेंस	6–8–97
[illegible] प्रदर्शन				
मैराथन	2.06.57	टाकायुकी इनुवुशी (जापान)	बर्लिन	26–9–99
20 किमी पैदल	1.18.04	वुलिंगटांग (चीन)	बीजिंग	7–4–94

[illegible]ल

प्रतिस्पर्धा	समय	नाम	देश	तिथि
100 मी	10.79	ली.जुएनी (चीन)	शंघाई	18–10–97
200 मी	22.01	ली जुएनी (चीन)	शंघाई	22–10–97
400 मी.	49.81	मा युक्विन (चीन)	बीजिंग	11–9–93
800 मी.	1.55.54	लियु डांग(चीन)	बीजिंग	9–9–93
1,500 मी.	3.50.46	क्यु युनजिया (चीन)	बीजिंग	11–9–93
[illegible],000 मी.	14:28.09	जियांग बो (चीन)	शंघाई	23–10–97
10,000 मी.	29.31.78	वांग जुक्जिया (चीन)	बीजिंग	13–9–93
[illegible]00 मी. बाधा	12.44	ओल्गा शिशिगिना (कजा.)	लुजेम	27–6–95
[illegible]00 मी. बाधा	53.96	हान क्विंग (चीन)	बीजिंग	9–9–93
[illegible]×100 मी. दौड़	42.23	सिचुआन टीम (चीन)	शंघाई	23–9–97
[illegible]×400 मी. दौड़	3.24.28	हेबेइ.टीम (चीन)	बीजिंग	13–9–93
[illegible]ची कूद	1.97	जिन लिंग (चीन)	हमामाट्सु	7–5–89
	1.97	एस. जलावेस्क्या (कजा.)	पियरे बेनिटे	14–6–96
[illegible]	4.33	काई वेइयान (चीन)	शेंझेन	5–1–96
[illegible] कूद	7.01	याओ वेइली (चीन)	जिनन	5–6–93
[illegible]ल कूद	14.66	रेन रुइपिंग (चीन)	हिरोशिमा	24–9–97
[illegible] पुट	21.76	लि मीसु (चीन)	शिजियसुंग	23–4–88

डिस्कस थ्रो	71.68	जियाओ यानलिंग (चीन)	बीजिंग	14-3-92
हैमर	63.75	लियु यिंगवुइ (चीन)	शेनयांग	17-6-99
जैवलिन थ्रो	62.97	वी जियानहुआ (चीन)	सेविल्ले	28-8-99
हिपैथलान	69.42	घाडा शोउआ (सीरिया)	गोट्सिज	26-5-96
सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन				
मैराथन	2.21.47	नाओको टकाशाशी (जापान)	बैंगकाक	6-12-98
10 किमी पैदल	41.16	वांग यानो (चीन)	———	8-5-99
20 किमी पैदल	1:29.05	वांग लीपेंग(चीन)	सिडनी	2000

एशियाई एथलेटिक चैम्पियनशिप

फुकुवोका जापान में 12वीं एशियाई एथलेटिक चैम्पियनशिप जुलाई 1998 में संपन्न हुई।

पुरुष

100 मीटर – 1. झाऊ वी (चीन), 10.39 से., 2. याटसन न्यागवेक (मस्कट), 10.42 से.।

200 मीटर – 1– कोजी इटो (जापान) 20.70 से. 2– हान चाओमिंग (चीन) 20.77।

400 मीटर–1–सुगत तिलकरत्ने (श्रीलंका),44.61, 2 – मासायोशि कान (जापान), 45.64।

800 मीटर – 1 – चेंग यिंग (चीन) 1:47.71, 2 – अब्दुल रहमान अब्दुल्ला (कतर) 1:47.74।

1500 मीटर – 1–मुहम्मद सुलेमान (कतर) 3:43.70, 2 – कियोनारी शिवाटा (जापान) 3:44.38।

5000 मीटर – 1 – तोशिनारी टकउका (जापान) 13:54.34, 2 – गुलाब चंद (भारत) 13:55.40।

10,000 मीटर –1– याइक सियोंग डो (कोरिया), 30:12.26, 2 – टोशिहिरो इयासा (जापान) 30:12.57।

3000 मीटर स्टीपल चेज – 1– शाद शहादद अलअसमारी (स.अरेबिया) 8:31.14, 2– यासुनोरी उचिटोमी (जापान) 8:33.40।

100 मीटर बाधा दौड़ – 1 –चेन यान्हो (चीन) 13.53, 2 – क्वि झेन (चीन) 13.74,

400 मीटर बाधा दौड़ – 1 – फराज मुबारक अलनबी (कतर) 48.71, 2 – हिडियाकी कावामुरा (जापान) 49.39

ऊंची कूद– 1 – झाऊ झांगे (चीन) 2.30, 2 – ली जिन टियाक (कोरिया) 2.27।

लंबी कूद– 1 – मसाकी मोरीनागा (जापान) 8.08, 2 – लियु होंगनिंग (चीन) 7.97।

ट्रिपिल जंप – 1 – डुआन क्विफेंग (चीन) 16.79, 2 – टाकानोरी सुगियायारी (जापान) 16.50।

पोलवाल्ट –1 – इगोर पोटापोविक (उजबे.) 5.55, 2 – एलेक्जेंडर कोर्चागिन (कजाकस्तान) 5.40।

शाटपुट – 1– साद बिलाल मुबारक (कतर) 19.17, 2–लियु हाउ (चीन) 18.86।

डिस्कस – 1 – लियु शाउजी (चीन) 60.28, 2 – दशदेनदेव माकाश्री (मंगोलिया) 57.00, 3, अजीत भदूरिया (भारत) 55.46

हैमर – 1 – एंड्रे अब्दवालियेव (उजबे.) 76.67, 2–कावजी मुराफुशी (जापान) 74.17।

जैवलीन – 1 – झांग लियानबिआओ (चीन) 77.61, 2 – लि रोंगजियांग (चीन) 77.61।

डिकैथलान – 1 – टोरु यासुइ (जापान) 7439अंक, 2–टोकोमाजु सुगामा (जापान) 7347।

400 मीटर रिले– 1– चीन 39.03 सेकेंड, 2 – जापान 39.30, 3 – फ्रांस 42.21

1600 मीटर रिले– 1– जापान 3:02.61, 2– कोरिया 3:04.44

20 किमी पैदल– लि जेविन, (चीन) 1:27.58, 2 – योशिमी हारा (जापान)1:28.16

महिला

100 मीटर – 1 – यान जियांकुई (चीन) 11.39, 2 – कुई डानफेंग (चीन) 11.42,

200 मीटर – 1 –यान जियांकुई (चीन) 23.00, 2– हुआंग मेई (चीन) 23.21, 3– पी.टी. ऊषा (भारत) 23.27

400 मीटर – 1 – दमयंती दर्शा (श्रीलंका) 51.23, 2. स्वेतलाना योद्रित्सकाया (कजाक) 52.46, 3–पी.टी. ऊषा (भारत) 52.55 ।

800 मीटर – 1 –झांग जियान (चीन) 2:01.16, 2– लियु जिंग (चीन) 2:01.85।

1500 मीटर – 1 –लियु जिंग (चीन) 4:12.76, 2– वांग चुनमेई (चीन) 4:13.45,

5000 मीटर – 1 – वांग चुनमेई (चीन) 15:49.48, 2– लियु शिक्जांग (चीन) 15:53.76

10,000 मीटर – 1– लियु शिक्जांग (चीन) 32:28.49, 2–चीमी तकाशी (जापान) 32:32.99।

100 मीटर बाधा – 1– वोल्गा शिशिगां (कजाक) 13.04, 2–फैंग युंग (चीन) 13.10,

विश्वकप फुटबाल

इस सदी का आखिरी फुटबाल कुंभ 10 जून से 12 जुलाई, 1998 तक फ्रांस के कई शहरों में पूरा हुआ। 1930 से शुरू हुए विश्व कप का यह 16 वां पड़ाव था। इस बार सबसे ज्यादा 32 टीमों ने इस कप में भाग लिया। मेजबान फ्रांस ने सभी को सकते में डालते हुए बेहतरीन और उम्दा फुटबाल का प्रदर्शन करते हुए ब्राजील को 3-0 से हराकर पहली बार खिताब जीता।

फुटबाल इस समय दुनिया का सबसे लोकप्रिय खेल है। इसका संचालन फीफा (अंतर्राष्ट्रीय फुटबाल संघ) करती है। फीफा के सदस्यों का संख्या 203 है। यह दुनिया की किसी भी संस्था, यहां तक कि संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्य संख्या से भी ज्यादा है।

विश्व कप की कुछ झलकियां

कुल खिलाड़ी 1930 से लेकर 1998 तक संपन्न हुए 16 विश्व कप मैचो में 238 खिलाड़ियों को विश्व चैम्पियन बनने का सौभाग्य मिला। देशों के अनुसार उनकी संख्या इस प्रकार है अर्जेन्टाइना 35 ब्राजील 52, इंग्लैंड 15, जर्मनी 53, इटली 43 उरुग्वे 29, और फ्रांस 11।

अब तक के विश्व विजेता

	स्थल	फायनल
1930	उरुग्वे	उरुग्वे4 अर्जेन्टाइना2
1934	इटली	इटली2 चेकोस्लोवाकिया1
1938	फ्रांस	इटली4 चेकोस्लोवाकिया1
1950	ब्राजील	उरुग्वे2 ब्राजील1
1954	स्विटजरलैंड	प.जर्मनी3 हंगरी2
1958	स्वीडन	ब्राजील5 स्वीडेन2
1962	चिली	ब्राजील3 चेकोस्लोवाकिया1
1966	इंग्लैंड	इंग्लैंड4 प.जर्मनी2
1970	मैक्सिको	ब्राजील4 इटली1
1974	प. जर्मनी	प. जर्मनी2 हालैंड1
1978	अर्जेन्टाइना	अर्जेन्टाइना3 हालैंड1
1982	स्पेन	इटली3 प. जर्मनी2
1986	मैक्सिको	अर्जेन्टाइना3 प. जर्मनी2
1990	इटली	प.जर्मनी1 अर्जेन्टाइना0
1994	अमरीका	ब्राजील3 इटली2
1998	फ्रांस	फ्रांस3 ब्राजील0

पहला विश्व कप मैच व गोल 1930 में उरुग्वे ने चिली को 1-0 से हराया।

विश्व कप का पहला गोल मांटेवीडियो में 13 जुलाई 1930 को खेले जा रहे मैच में फ्रांस के लारेंट ने मैक्सिको के विरुद्ध खेल प्रारंभ होने के 19 मिनट के बाद किया था।

हैट ट्रिक करने वाला पहला खिलाड़ी 1930 में मैक्सिको के विरुद्ध अर्जेन्टाइना के इलर्गो स्टाबाइल ने तिकड़ी बनाई थी।

पेनाल्टी शूट आउट वाला पहला विश्व कप मैच 1930 में अर्जेन्टाइना मैक्सिको के बीच खेले गये मैच मे बोलविया के रावडो ने पेनाल्टी शूट आउट का निर्देश दिया था।

विश्व कप में सर्वाधिक गोल 1982 के विश्व कप मे कुल खेले गये 52 मैचों में 146 गोल हुए।

सबसे तेज गोल 1962 के विश्व कप में चेकोस्लोवाकिया के वाक्लेव मास्सेक ने मैक्सिको के विरुद्ध 15 सेकेंड में गोल करके यह कीर्तिमान बनाया।

एक मैच में सर्वाधिक गोल 12 गोल (1954 के विश्व कप में आस्ट्रेलिया 7 स्विटजरलैंड 5)।

सबसे अधिक विश्व कप खेलने वाला खिलाड़ी लोथार मथायस ने 25 विश्व कप मैचों में खेल कर इतिहास रचा।

विश्व कप जीतने वाला सबसे कम आयु का खिलाड़ी ब्राजील के पेले ने 1959 विश्व कप जब खेला था तब उनकी आयु 17 वर्ष 8 महीने थी।

विश्व कप जीतने वाला सबसे अधिक आयु का खिलाड़ी 1982 के विश्व कप में इटली के गोलकीपर व कैप्टेन डिनो जोल्फ की आयु 40 वर्ष की थी।

लियोनिडास डीसिल्वा ने विख्यात बाइसाइकल किक को जन्म दिया था। 1938 के विश्व कप में वे सबसे अधिक गोल करने वाले खिलाड़ियो में थे। उन्हें पेले के बराबर परिद्ध मिली।

मैक्सिको के एंटोनियो कार्वाजाल अकेले गोलची है जिन्होंने 1950 से 1966 तक पांच विश्व कप खेले।

ब्राजील के पहले राष्ट्रीय फुटबाल हीरो आर्थर फ्रेंडेनरिक थे। उन्हे टाइगर के नाम से भी जाना जाता था। उन्होंने अपने 25 वर्ष के काल में 1,329 गोल किये।।

पेले फुटबाल के सबसे विख्यात खिलाड़ी। तीन बार पांच विश्व कप जीतने वाली टीम के सदस्य। दो बार विश्व कप जीतने वाले देशो के खिलाड़ियों की संख्या 11 है। ये है - डिलीमैरिन्का, गिलमर, सान्टोस डी, वावा, जगालो, जिटो (ब्राजील) फेराई, मिएज्जा, मान्सेग्लो (इटली)।

जायरजिनहो अकेले ऐसे खिलाड़ी है जिन्होने हर मैच मे गोल किया है। ऐसा कीर्तिमान अभी तक किसी और खिलाड़ी के पास नहीं है।

फुटबाल (यूरो कप)

वर्ष	स्थल	विजेता	द्वितीय स्थान
1960	फ्रांस	सोवियत संघ	युगोस्लाविया
1964	स्पेन	स्पेन	सोवियत संघ
1968	इटली	इटली	युगोस्लाविया
1972	वेल्जियम	प. जर्मनी	सोवियत संघ
1976	युगोस्लाविया	चेक स्लोवाकिया	प. जर्मनी
1980	इटली	प. जर्मनी	वेल्जियम
1984	फ्रांस	फ्रांस	स्पेन
1988	जर्मनी	नीदरलैंड	सोवियत संघ
1992	स्वीडन	डेनमार्क	जर्मनी
1996	इंग्लैंड	जर्मनी	चेक गणराज्य
2000	वेल्जियम/ नीदरलैंड	फ्रांस	इटली
2004	जर्मनी		

ऐतिहासिक कप

यूरो 2000 प्रतियोगिता फुटवाल के इतिहास के पन्नों महानतम अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धा के तौर पर दर्ज की जायेगी। पहली वार फ्रांस ने अपने देश के वाहर प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा जीती। इसके पूर्व अपने देश में खेलते हुए फ्रांस ने 1998 का विश्व कप और 1984 का युरोपियन कप जीता था। फ्रांस पहला ऐसा देश है जिसने विश्व कप जीत कर यूरो कप जीता। इसके पूर्व प. जर्मनी ने 1972 में वेल्जियम में यूरोपियन कप व पं. जर्मनी में आयोजित विश्व कप को जीता था।

कप आंकड़े

1. जर्मनी ने 1972 में सोवियत संघ को फायनल में 3-0 से हराया था। यह यूरो कप के फायनल में अव तक का सवसे वड़ा स्कोर है। उल्लेखनीय है 1972 के अतिरिक्त 1960 के वाद से यूरो दो हजार तक जीतने वाली टीम ने फायनल में दो गोल किये।

2. 1960, 1968, 1976, 1996 के यूरो कप फायनल अतिरिक्त समय तक खेले गये।

3. जर्मनी के उली होइनेस अकेले ऐसे खिलाड़ी हैं जिन्होंने युगोस्लाविया के विरुद्ध 1976 के फायनल में पेनाल्टी किक को गोल में वदलने में असमर्थ रहे।

कप 2000 आंकड़े

यूरो कप 2000 के 31 मैचों में कुल 85 गोल हुए। 1988 में 15 मैचों में 34 गोल हुए थे।

1992 के 15 मैचों में 32 गोल और 1996 के 31 मैं में 64 गोल हुए थे।

विजेता फ्रांस ने 6 मैचों में 13 गोल किये, उपविजेता । ने 6 मैचों में 9 गोल किये।

विश्व कप 2006 की मेजवानी जर्मनी को

दक्षिण अफ्रीका से एक वोट अधिक पाकर जर्मनी ने 2006 विश्व कप की मेजवानी करने के सुअवसर पा लिया। और इसी के साथ दक्षिण अफ्रीका की मेजवानी करने की कोशिश पर पानी फिर गया। तीन चक्रों तक चले मतदान का नाटकीय क्षण तव आया जव जर्मनी 11 के मुकावले 12 मतों से जीत गया। जर्मन की तरफ से वागडोर संभाली थी फ्रैंज वेकेनवायुर ने जो कि अपनी कप्तानी में जर्मनी को 1974 में विश्व कप जिता चुके हैं। 1990 का विश्व कप जीतने वाली जर्मनी की टीम के वे कोच थे, और एक वार फिर उनके प्रयत्नो से ही जर्मनी 1906 विश्व कप की मेजवानी करने जा रहा है।

युगोस्लाविया के सावो मिलोसेविक और हालैंड के पैट्रिक क्लुवर्ट ने प्रतिस्पर्धा में पांच-पांच मैच खेल कर पांच-पांच गोल करके सर्वाधिक गोल करने वाले खिलाड़ी वनें।

इंग्लैंड के एलन शेरियर ने इंग्लैंड को जर्मनी पर ऐतिहासिक जीत दिलवाई। इंग्लैंड की जर्मनी पर 1966 के विश्व कप फायनल के वाद पहली जीत थी।

पुर्तगाल के सर्गियो कानसीसा की हैट ट्रिक यूरो कप मे पहली वार वनीं।

हालैंड ने युगोस्लाविया को 6-1 से हराकर इस कप मे सवसे अधिक अंतर से विजय प्राप्त की।

जर्मनी, स्वीडन, स्लोवानिया और डेनमार्क की टीमें एक भी मैच नहीं जीत सकीं।

इस प्रतियोगिता में स्वीडन की टीम अकेली ऐसी टीम रही जिसने एक भी गोल नहीं किया।

एशिया कप

पहला एशिया कप हांगकांग में 1956 से प्रारंभ हुआ दक्षिण कोरिया ने इजराइल को हरा कर पहला कप जीता जापान ने दूसरी वार सउदी अरविया को फायनल में 1-0 से हराकर कप जीत लिया।

वर्ष	स्थल	विजेता	द्वितीय स्थान
1956	हांगकांग	दक्षिण कोरिया	इजराइल
1960	दक्षिण कोरिया	दक्षिण कोरिया	इजराइल
1964	इजराइल	इजराइल	भारत
1968	इरान	इरान	बर्मा
1972	थाइलैंड	इरान	दक्षिण कोरिया
1976	इरान	इरान	कुवैत
1980	कुवैत	कुवैत	दक्षिण कोरिया
1984	सिंगापुर	सउदी अरबिया	चीन
1988	कतर	सउदी अरबिया	द कोरिया
1992	जापान	जापन	सउदी अरबिया
1996	यू ए ई	सउदी अरबिया	यू ए ई
2000	लेबनान	जापान	सउदी अरबिया

विश्व कप क्रिकेट

सातवां विश्व कप इंग्लैंड में खेला गया। इसका उद्‌घाटन मैच 14 मई को पिछले चैम्पियन श्रीलंका और मेजवान इंग्लैंड के बीच खेला गया।

फाइनल मैच 20 जून 1999 को लाड्‌र्स लंदन के ऐतिहासिक मैदान पर आस्ट्रेलिया और पाकिस्तान के बीच हुआ और इस बार विश्व विजेता बनने का गौरव आस्ट्रेलिया को मिला। इस बार भी 12 टीमों ने विश्व कप में भाग लिया। पाकिस्तान ने पहले खेलते हुए इस विश्व कप का सबसे कमजोर प्रदर्शन करते हुए 39 ओवर में 132 रन बनाकर आउट हो गई। जवाब में आस्ट्रेलिया ने 20.1 ओवर में 2 विकेट खोकर 133 रन बनाकर विश्वकप जीत लिया। सेमिफायनल न्यूजीलैंड–पाकिस्तान, आस्ट्रेलिया–साउथ अफ्रीका के बीच हुआ। सुपर सिक्स में पाकिस्तान, साउथ अफ्रीका, जिम्बाबवे भारत, न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया पंहुचे।

क्रिकेट के इतिहास में कीर्तिमान क्रिकेट चहेतों के लिये आकर्षण का विषय रहे हैं। कुछ कीर्तिमान इस प्रकार है।

विश्वकप मैचों में सर्वाधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज

नाम	देश	मैच	विकेट
वासि१म अकरम	पाकिस्तान	32	43
एलन डोनाल्ड	सा. अफ्रीका	22	37
[illegible] खान	पाकिस्तान	28	34
[illegible] याथम	इंग्लैंड	22	30

[illegible] और याथम क्रिकेट से अवकाश ले चुके हैं।

विवियन रिचर्ड्स, वेस्ट इंडीज	23	1013
मार्क वाघ, आस्ट्रेलिया	22	1004

विश्व कप में 300 से अधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी

खिलाड़ी	रन	मैच
राहुल द्राविड़, भारत	461	8
स्टीव वाघ, आस्ट्रेलिया	398	10
सौरभ गांगुली, भारत	379	7
मार्क वाघ, आस्ट्रेलिया	375	10
सइद अनवर, पाकिस्तान	368	10
नील जानसन, जिम्बाबवे	367	8
रिकी पॉटिंग, आस्ट्रेलिया	354	10
हर्शल गिब्स, दक्षिण अफ्रीका	341	9
रोगर ट्वोज, न्यूजीलैंड	318	9
जैक्वेस कालिस, दक्षिण अफ्रीका	312	8

एक ही विश्व कप में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज

नाम	रन	मैच	वर्ष
सचिन तेंदुलकर, भारत	523	–	1996
ग्राहम गूच, इंग्लैंड	471	–	1997
राहुल द्राविण, भारत	461		[illegible]99
मार्टिन क्रो, न्यूजीलैंड	456		
डेविड ग्रोवर, इंग्लैंड	384		
ग्लेन टर्नर, न्यूजीलैंड	333		
गार्डन ग्रीनिज, वेस्ट इंडीज	253		

एलेन बार्डर	आस्ट्रेलिया	27
गैरी सोबर्स	वेस्ट इंडीज	26
ग्रेग चैपल	आस्ट्रेलिया	24
विवियन रिचर्ड्स	वेस्ट इंडीज	24
जावेद मियांदाद	पाकिस्तान	23
जियोफ बायकाट	इंग्लैंड	22
कोलिन काउंड्रे	इंग्लैंड	22
वैली हम्मद	इंग्लैंड	22
सचिन तेंदुलकर	भारत	22
स्टीव वाघ	आस्ट्रेलिया	22
मोहम्मद अजहरुद्दीन	भारत	22
डेविड बून	आस्ट्रेलिया	21
नील हार्वे	आस्ट्रेलिया	21
केन बारिंगटन	इंग्लैंड	20
ग्राहम गूच	इंग्लैंड	20

सर्वाधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज

नाम	देश	मैच	विकेट
कर्टनी वाल्श	वेस्ट इंडीज	122	483
कपिल देव*	भारत	131	434
रिचर्ड हैडली*	न्यूजीलैंड	86	431
वासिम अकरम	पाकिस्तान	98	407
कर्टली एम्ब्रोस*	वेस्ट इंडीज	98	405
इयान बाथम*	इंग्लैंड	102	383
शेन वार्न	आस्ट्रेलिया	84	366
मैल्कम मार्शल*	वेस्ट इंडीज	81	376
इमरान खान*	पाकिस्तान	88	362
डेनिस लिली*	आस्ट्रेलिया	70	355
आर.जी.डी. विल्स	इंग्लैंड	90	325
लांस गिब्स	वेस्ट इंडीज	79	309
वाकर युनुस	पाकिस्तान	67	308

* अवकाश लेने वाले खिलाड़ी

सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज (8000+)

नाम	देश	मैच	रन
अलन राबर्ट बार्डर	आस्ट्रेलिया	156	11,174
सुनील गावस्कर	भारत	124	10,122
ग्राहम गूच	इंग्लैंड	118	8900
जावेद मियांदाद	पाकिस्तान	124	8832
विवियन रिचर्ड्स	वेस्ट इंडीज	121	8540
स्टीव वाघ	आस्ट्रेलिया	128	8373
डेविड गावर	इंग्लैंड	117	8231
जियाफ बायकाट	इंग्लैंड	108	8114

टेस्ट मैचों में हैटट्रिक

किसी भी गेंदबाज द्वारा हैटट्रिक लेना इसके देश के लिये गौरव की बात है। टेस्ट क्रिकेट में केवल 27 बार हैटट्रिक्स हुई हैं। और इंगलैंड के गेंदबाज इस तालिका में सबसे ऊपर है। उनके गेंदबाजों ने 9 बार, आस्ट्रेलिया – 8, वेस्ट इंडीज – 2, पाकिस्तान – 2, और दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैंड, और श्रीलंका के गेंदबाजों ने एक-एक बार हैटट्रिक ली है। भारत के किसी भी गेंदबाज को हैटट्रिक का श्रेय नहीं मिला है लेकिन विश्व की कोई भी टीम का गेंदबाज भारत के विरुद्ध हैटट्रिक नहीं ले पाया है।

1. हैटट्रिक लेने वाले प्रथम गेंदबाज आस्ट्रेलिया के फ्रेड स्पोफोर्थ थे जिन्होंने इंगलैंड के वी. रोयले, एफ. मैकिन्नान और टी एम्मेट को 1878-79 में आउट किया था। यह क्रिकेट इतिहास का तीसरा टेस्ट मैच था।

2. इंगलैंड के विली बेट्स ने 1882-83 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध हैटट्रिक बनाने वाले दूसरे गेंदबाज बने। उन्होंने मेलबोर्न टेस्ट में पी.एस. मक्कोन्नेल, डब्ल्यू.जी. गिफ्फेन, और जी. जे. बोन्नोर को आउट किया।

3. इंगलैंड के जानी ब्रिग्ज ने 1891-92 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध हैटट्रिक बनाने वाले तीसरे गेंदबाज बने। उन्होंने सिडनी टेस्ट में डब्ल्यू.जी. गिफ्फेन, एस.टी. कालावे और जे.एम. ब्लाकम को आउट किया।

पांच सौ टेस्ट विकेट की दौड़ में

कर्टनी वाल्श (वेस्ट इंडीज), 122 टेस्ट में 487 विकेट, आयु – 37 वर्ष : क्रिकेट गेंदबाजी में कर्टनी वाल्श का दौर शायद सबसे लंबा है। उनकी गेंद में तेजी और विविधता है। एक तेज गेंदबाज का गुण दौड़ते समय अपनी लय बनाये रखना और गेंद फेंकते समय सही संतुलन का होना होता है जो कर्टनी में है।। 5 वर्षीय काल में कर्टनी केवल दो टेस्ट में चोटिल थे। इस समय वे अपनी पूरी लय में हैं और विकेट ले रहे हैं।

वासिम अकरम (पाकिस्तान) 99 टेस्ट में 404 विकेट, आयु – 33वर्ष : अकरम विश्व के एकमात्र गेंदबाज हैं जो टेस्ट और एकदिवसीय दोनों में 400 विकेट ले चुके हैं। और कर्टनी वाल्श के बाद आज के दौर के वे दूसरे गेंदबाज हैं जो बल्लेबाजों को आतंकित करते हैं। अकरम की गेंदे विविधता भरी होती हैं और वे गेंद को दोनों तरफ से घुमाव देने में सक्षम हैं। उनकी एक गेंद जो कि मिडल स्टंप पर पड़ती है और लेग स्टंप को उखाड़ देती है सबसे खतरनाक गेंद मानी जाती है।

शेन वार्न (आस्ट्रेलिया) 84 टेस्ट में 366 विकेट, आयु – 30 वर्ष : आस्ट्रेलिया के धीमी गति के स्पिन गेंदबाज बल्लेबाजों के लिये दहशत हैं। अगर वे चुस्त दुरुस्त रहते हैं तो निश्चय ही 500 विकेट लेने वाले गेंदबाज बन सकते हैं।

ग्लेन मैक्ग्रेथ (आस्ट्रेलिया) 62 टेस्ट में 288 विकेट, आयु – 30 वर्ष : इनकी सबसे बड़ी विशेषता है पिच से बाउंस लेना। लंबे कद के तेज गेंदबाज ग्लेन की गेंदों में तेजी के साथ स्विंग काफी रहती है। अपनी लंबाई से वे गेंद को पिच से पर्याप्त उछाल दिलाकर बल्लेबाज को आतंकित करते हैं।

विश्व कप क्रिकेट

सातवां विश्व कप इंग्लैंड में खेला गया। इसका उद्घाटन मैच 14 मई को पिछले चैम्पियन श्रीलंका और मेजबान इंग्लैंड के बीच खेला गया।

फाइनल मैच 20 जून 1999 को लार्ड्स लंदन के ऐतिहासिक मैदान पर आस्ट्रेलिया और पाकिस्तान के बीच हुआ और इस बार विश्व विजेता बनने का गौरव आस्ट्रेलिया को मिला। इस बार भी 12 टीमों ने विश्व कप में भाग लिया। पाकिस्तान ने पहले खेलते हुए इस विश्व कप का सबसे कमजोर प्रदर्शन करते हुए 39 ओवर में 132 रन बनाकर आउट हो गई। जवाब में आस्ट्रेलिया ने 20.1 ओवर में 2 विकेट खोकर 133 रन बनाकर विश्वकप जीत लिया। सेमिफायनल न्यूजीलैंड-पाकिस्तान, आस्ट्रेलिया-साउथ अफ्रीका के बीच हुआ। सुपर सिक्स में पाकिस्तान, साउथ अफ्रीका, जिम्बाबवे भारत, न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया पंहुचे।

क्रिकेट के इतिहास में कीर्तिमान क्रिकेट चहेतों के लिये आकर्षण का विषय रहे हैं। कुछ कीर्तिमान इस प्रकार है।

विश्वकप मैचों में सर्वाधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज

नाम	देश	मैच	विकेट
वासिम अकरम	पाकिस्तान	32	43
एलन डोनाल्ड	सा. अफ्रीका	22	37
इमरान खान	पाकिस्तान	28	34
इयान बाथम	इंग्लैंड	22	30

इमरान और बाथम क्रिकेट से अवकाश ले चुके हैं।

विवियन रिचर्ड्स, वेस्ट इंडीज	23	1013
मार्क वाघ, आस्ट्रेलिया	22	1004

विश्व कप में 300 से अधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी

खिलाड़ी	रन	मैच
राहुल द्राविड़, भारत	461	8
स्टीव वाघ, आस्ट्रेलिया	398	10
सौरभ गांगुली, भारत	379	7
मार्क वाघ, आस्ट्रेलिया	375	10
सइद अनवर, पाकिस्तान	368	10
नील जानसन, जिम्बाबवे	367	8
रिकी पोंटिंग, आस्ट्रेलिया	354	10
हर्शल गिब्स, दक्षिण अफ्रीका	341	9
रोगर ट्वोज, न्यूजीलैंड	318	9
जैक्वेस कालिस, दक्षिण अफ्रीका	312	8

एक ही विश्व कप में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज

नाम	रन	मैच	वर्ष
सचिन तेंदुलकर, भारत	523	–	1996
ग्राहम गूच, इंग्लैंड	471	–	1997
राहुल द्राविण, भारत	461	8	1999
मार्टिन क्रो, न्यूजीलैंड	456	–	1992
डेविड ग्रोवर, इंग्लैंड	384	7	1983
ग्लेन टर्नर, न्यूजीलैंड	333	4	1975
गार्डन ग्रीनिज, वेस्ट इंडीज	253	4	1979

एलेन वार्डर	आस्ट्रेलिया	27
गैरी सोयर्स	वेस्ट इंडीज	26
ग्रेग चैपल	आस्ट्रेलिया	24
विवियन रिचर्ड्स	वेस्ट इंडीज	24
जावेद मियांदाद	पाकिस्तान	23
जियोफ वायकाट	इंग्लैंड	22
कोलिन काउंड्रे	इंग्लैड	22
वैली हम्मद	इंग्लैंड	22
सचिन तेंदुलकर	भारत	22
स्टीव वाघ	आस्ट्रेलिया	22
मोहम्मद अजहरुद्दीन	भारत	22
डेविड यून	आस्ट्रेलिया	21
नील हार्वे	आस्ट्रेलिया	21
केन वारिंगटन	इंग्लैंड	20
ग्राहम गूच	इंग्लैंड	20

सर्वाधिक विकेट लेने वाले गेंदवाज

नाम	देश	मैच	विकेट
कर्टनी वाल्श	वेस्ट इंडीज	122	483
कपिल देव*	भारत	131	434
रिचर्ड हैडली*	न्यूजीलैंड	86	431
वासिम अकरम	पाकिस्तान	98	407
कर्टली एम्ब्रोस*	वेस्ट इंडीज	98	405
इयान वाथम*	इंग्लैंड	102	383
शेन वार्न	आस्ट्रेलिया	84	366
मैल्कम मार्शल*	वेस्ट इंडीज	81	376
इमरान खान*	पाकिस्तान	88	362
डेनिस लिली*	आस्ट्रेलिया	70	355
आर.जी.डी. विल्स	इंग्लैंड	90	325
लांस गिब्स	वेस्ट इंडीज	79	309
वाकर युनुल	पाकिस्तान	67	308

* अवकाश लेने वाले खिलाड़ी

सर्वाधिक रन वनाने वाले वल्लेवाज (8000+)

नाम	देश	मैच	रन
अलन रावर्ट वार्डर	आस्ट्रेलिया	156	11,174
सुनील गावस्कर	भारत	124	10,122
ग्राहम गूच	इंग्लैंड	118	8900
जावेद मियांदाद	पाकिस्तान	124	8832
विवियन रिचड्र्स	वेस्ट इंडीज	121	8540
स्टीव वाघ	आस्ट्रेलिया	128	8373
डेविड गावर	इंग्लैंड	117	8231
जियाफ वायकाट	इंग्लैंड	108	8114

पांच सौ टेस्ट विकेट की दौड़ में

कर्टनी वाल्श (वेस्ट इंडीज), 122 टेस्ट में 487 विकेट, आयु – 37 वर्ष : क्रिकेट गेंदवाजी में कर्टनी वाल्श का दौर शायद सबसे लंबा है। उनकी गेंद में तेजी और विविधता है। एक तेज गेंदवाज का गुण दौड़ते समय अपनी लय वनाये रखना और गेंद फेंकते समय सही संतुलन का होना होता है जो कर्टनी में है। 15 वर्षीय काल में कर्टनी केवल दो टेस्ट में चोटिल थे। इस समय वे अपनी पूरी लय में हैं और विकेट ले रहे हैं।

वासिम अकरम (पाकिस्तान) 99 टेस्ट में 404 विकेट, आयु – 33वर्ष : अकरम विश्व के एकमात्र गेंदवाज हैं जो टेस्ट और एकदिवसीय दोनों में 400 विकेट ले चुके हैं। और कर्टनी वाल्श के वाद आज के दौर के वे दूसरे गेंदवाज हैं जो वल्लेवाजों को आतंकित करते हैं। अकरम की गेंदे विविधता भरी होती हैं और वे गेंद को दोनों तरफ से घुमाव देने में सक्षम हैं। उनकी एक गेंद जो कि मिडल स्टंप पर पड़ती है और लेग स्टंप को उखाड़ देती है सबसे खतरनाक गेंद मानी जाती है।

शेन वार्न (आस्ट्रेलिया) 84 टेस्ट में 366 विकेट, आयु – 30 वर्ष : आस्ट्रेलिया के धीमी गति के स्पिन गेंदवाज वल्लेयाजों के लिये दहशत हैं। अगर वे चुस्त दुरुस्त रहते हैं तो निश्चय ही 500 विकेट लेने वाले गेंदवाज वन सकते हैं।

ग्लेन मैक्ग्रेथ (आस्ट्रेलिया) 62 टेस्ट में 288 विकेट, आयु – 30 वर्ष : इनकी सबसे बड़ी विशेषता है पिच से वाउंस लेना। लंबे कद के तेज गेंदवाज ग्लेन की गेंदों में तेजी के साथ स्विंग काफी रहती है। अपनी लंबाई से वे गेंद को पिच से पर्याप्त उछाल दिलाकर वल्लेवाज को आतंकित करते हैं।

टेस्ट मैचों में हैटट्रिक

किसी भी गेंदवाज द्वारा हैटट्रिक लेना इसके देश के लिये गौरव की वात है। टेस्ट क्रिकेट में केवल 27 वार हैटट्रिक्स हुई हैं। और इंगलैंड के गेंदवाज इस तालिका में सबसे ऊपर हैं। उनके गेंदवाजों ने 9 वार, आस्ट्रेलिया – 8, वेस्ट इंडीज – 2, पाकिस्तान – 2, और दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैंड, और श्रीलंका के गेंदवाजो ने एक–एक वार हैटट्रिक ली है। भारत के किसी भी गेदवाज को हैटट्रिक का श्रेय नहीं मिला है लेकिन विश्व की कोई भी टीम का गेंदवाज भारत के विरुद्ध हैटट्रिक नहीं ले पाया है।

1. हैटट्रिक लेने वाले प्रथम गेंदवाज आस्ट्रेलिया के [illegible] स्पोफोर्थ थे जिन्होंने इंगलैंड के वी. रोयले, [illegible] और टी एम्मेट को 1878–79 में [illegible] क्रिकेट इतिहास का तीसरा टेस्ट मैच था।

2. इगलैंड के विली वेट्स ने 188[illegible] के विरुद्ध हैटट्रिक वनाने वाले दूसरे [illegible] मेलवोर्न टेस्ट में पी.एस. मक्डोनेल [illegible] और जी. जे. वोन्नोर को [illegible]

3. इगलैंड के जानी ब्रिग्स ने [illegible] के विरुद्ध हैटट्रिक वनाने [illegible] सिडनी टेस्ट में डब्ल्यू. [illegible] जे.एम. ब्लाकहम को [illegible]

टेस्ट मैच में सबसे तेज शतक

गेंद	खिलाड़ी	देश	विपक्ष	स्थल	वर्ष
56	विवियन रिचर्ड्स	वेस्ट इंडीज	इंग्लैंड	एंटीगुआ	85-86
67	जैक ग्रेगोरी	आस्ट्रेलिया	दक्षिण अफ्रीका	जोहांसवर्ग	21-22
71	रोय फ्रेड्रिक्स	वेस्ट इंडीज	आस्ट्रेलिया	पर्थ	75-76
74	मो. अजहरुद्दीन	भारत	दक्षिण अफ्रीका	कलकत्ता	97-97
76	गिलबर्ट जेस्सोप	इंग्लैंड	आस्ट्रेलिया	ओवल	76-77
77	माजिद खान	पाकिस्तान	न्यूजीलैंड	कराची	76-77
80	कार्ल हूपर	वेस्ट इंडीज	पाकिस्तान	कराची	97-98
83	ब्रूस टेलर	न्यूजीलैंड	वेस्ट इंडीज	आकलैंड	68-69
85	क्लाइव लायड	वेस्ट इंडीज	भारत	बंगलौर	74-75
86	इयान बाथम	इंगलैंड	आस्ट्रेलिया	मैंचेस्टर	81
86	क्रिस क्रेन	न्यूजीलैंड	जिम्बावे	आकलैंड	95-96
86	वासिम अकरम	पाकिस्तान	श्रीलंका	गाले	2000

4. इंगलैंड के जार्ज लोहमैन हैटट्रिक बनाने वाले देश के तीसरे और विश्व के चौथे गेंदबाज बनें। उन्होंने 1895-96 में दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध पोर्ट एलिजाबेथ में एफ.जे. कूक, जे. मिडलेटन और जे.जे. विल्लोघबी को आउट किया।

5. इंगलैंड के जे.टी. हीअर्ने लीडस् में 1899 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध तिकड़ी लेने वाले विश्व के पांचवें गेंदबाज बने। उन्होंने सी. हिल्स, एस.ई. ग्रेगोरी और एम.ए. नोबल को जीरो पर आउट किया।

6. इंग्लैंड-आस्ट्रेलिया टेस्ट श्रृंखला 1901-02 में आस्ट्रेलिया के आफ ब्रेक गेंदबाज ह्युग ट्रम्बल बीसवीं सदी के प्रथम तिकड़ी बनाने वाले गेंदबाज बने। उन्होंने मेलबोर्न में इंग्लैंड के ए.ओ.जोनेस, जे.आर. गुन्नाड और एस.एफ. बार्नेस को आउट किया। एक बार और 1903-4 में [illegible] में फायनल टेस्ट मैच खेलते हुए उन्होंने इंग्लैंड के [illegible]. बोसानक्वेट, पी. वार्नर और ए. लिली को दीसरी पारी में आउट करके अपनी दूसरी तिकड़ी बनाई।

7. आस्ट्रेलिया के लेग ब्रेक गेंदबाज टाम जिमी मात्यु ने मैंचेस्टर में दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध 1912 में दोनों पारियों में तिकड़ी बनाई। पहली पारी में उन्होंने एस.जे. पेगलर, आर. बियामाउंट और टी. वार्ड तथा दूसरी पारी में आर.ओ. स्मिथ, एच. डब्ल्यू. टेलर और टी. वार्ड को आउट किया। टी. वार्ड दोनों पारियो में जीरो पर आउट हुए। टाम ने यह 6 विकेट बिना किसी क्षेत्ररक्षक के सहयोग के लिये। उन्होने या तो क्लीन बोल्ड किये या एल.बी. डब्ल्यू किये।

न्यूजीलैंड चैम्पियन

न्यूजीलैंड ने भारत को हरा कर आई.सी.सी. नाक आउट प्रतिस्पर्धा जीत ली। भारत ने अच्छी शुरुवात की और गांगुली के 117 व सचिन के 69 रनों की मदद से 265 रन बना लिये। लेकिन न्यूजीलैंड ने पूरी लगन और धैर्य के साथ खेलते हुए 4 विकेट से भारत को हरा दिया। न्यूजीलैंड की यह पहली प्रमुख जीत रही।

1983 के विश्व कप व 1985 के विश्व चैम्पियनशिप के बाद विदेश में पहली बार भारत की वर्ल्ड टाइटिल जीतने की संभावनायें बढ़ गई थीं। लेकिन शायद यह दिन न्यूजीलैंड का था।

8. इंग्लैंड के मारिस एल्लम ने 1929-30 में न्यूजीलैंड के विरुद्ध क्राइस्टचर्च में अपने पहले ही टेस्ट मैच में तिकड़ी बनाई और विश्व के आठवे हैटट्रिक बनाने वाले गेंदबाज बनें। उन्होंने टी.सी. कोवरी, के.सी. जेम्स और एफ.टी. बैडकोक को आउट किया।

9. हैटट्रिक बनाने वाले 9वें गेंदबाज इंग्लैंड के टाम गोडार्क थे। उन्होंने जोहांसबर्ग में दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध 1938-39 में ए. नौर्स, एन. गोर्डोन और डब्ल्यू. वाडे को आउट किया।

10. लीड्स में इंग्लैंड के पेटेर लोएडर ने वेस्ट इंडीज के विरुद्ध 1957 में जे.डी.सी. गोड्डार्ड, एस. रामादीन और आर गिलक्रिस्ट को आउट कर तिकड़ी बनाई।

11. आस्ट्रेलिया के लिंडसे क्लाइन ने दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध केपटाउन में 1957-58 में ई. फुल्लर, एच. टेफील्ड और एन. एडकाक को आउट करके तिकड़ी बनाई।

12. वेस्ली हाल वेस्ट इंडीज के पहले हैटट्रिक बनाने वाले गेंदबाज बने। उन्होंने पाकिस्तान के विरुद्ध 1958-59 की श्रृंखला में लाहौर में मुश्ताक मोहम्मद, फजल महमूद और नासिम उल घानी को आउट किया।

13. लार्ड्स के मैदान में पहली और दक्षिण अफ्रीका के लिये पहली तिकड़ी बनाने वाले गेंदबाज थे जियाफ ग्रिफिन। उन्होंने इंग्लैंड के एम.जे.के. स्मिथ, पी.एम. वाकर और टी.एस. टुमैन को आउट किया। 1960 में इस तिकड़ी बनाने वाले जियाफ का अंतिम टेस्ट मैच था।

14. आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1960-61 में लांस गिब्स वेस्ट इंडीज के दूसरे हैटट्रिक बनाने वाले गेंदबाज बने। उन्होंने आर.डी. मक्काय, ए.टी. डब्ल्यू. ग्राउट और एफ. एम. मिशन को पहली पारी में आउट किया।

15. न्यूजीलैंड के आफ ब्रेक गेंदबाज पीटर पैथेरिक ने

पाकिस्तान के जावेद मियांदाद, वासिम राजा और इंथिकाव आलम को 1976–77 में लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में आउट करके तिकड़ी वनाई। यह उनका पहला टेस्ट मैच था और इस प्रकार पहले ही टेस्ट मैच में तिकड़ी वनाने वाले वे विश्व के दूसरे गेंदवाज वन गये।

16. वेस्ट इंडीज के कर्टनी वाल्श की हैटट्रिक दो पारियों में वनीं। 1988–89 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध व्रिसवेन में पहली पारी की अंतिम गेंद से ए.आई.सी. डोडे मैइडे का कैच पकड़वा कर आउट किया और दूसरी पारी की पहली दो गेंदो में माइक वेलेटा और जी. वुड के विकेट लेकर तिकड़ी वनाई।

17. आस्ट्रेलिया के मेरी ह्यूघ्स की तिकड़ी भी कुछ अजीव तरीके से वनीं। 1988–89 में पर्थ में 36वें ओवर की अंतिम गेंद पर कर्टली एम्ब्रोज को आउट किया और 57वें ओवर की पहली गेंद पर पैट्रिक पैटर्सन को आउट करके वेस्ट इंडीज की पहली पारी का अंत कर दिया। दूसरी पारी में अपनी पहली ही गेंद में उन्होंने गार्डन ग्रीनिज को आउट करके तिकड़ी वनाई।

18. आस्ट्रेलिया के डैमियन फ्लेमिंग अपने पहले ही टेस्ट मैच में तिकड़ी वनाकर विश्व के तीसरे गेंदवाज वने। 1994–95 में रावलपिंडी में उन्होंने पाकिस्तान के आमिर मलिक, इंजामम–उल–हक और सलीम मलिक के विकेट लेकर तिकड़ी वनाई।

19. आस्ट्रेलिया के शेन वार्न मेलवोर्न में इंग्लैंड के डैरेन घाउघ, फिलिप डेफ्रिटिस और डोवोन मेल्कोम को आउट करके तिकड़ी वनाने वाले 19वें गेंदवाज वने।

20. इंग्लैंड के डोमिनिक कार्क 1995 में वेस्ट इंडीज के रिची रिचर्डसन, जूनियर मुरे और कार्ल हूपर के विकेट लेकर 20वें तिकड़ी गेंदवाज वने।

21. इंग्लैंड के डैरेन घाउघ ने सिडनी में 1998–99 में आस्ट्रेलिया के इयान हीली, स्टुअर्ट मैक्गिल और कोलिन मिलर को आउट करके तिकड़ी वनाई।

22. पाकिस्तान के पहले तिकड़ी गेंदवाज वासिम अकरम वने। एशियन टेस्ट चैम्पियनशिप मैच में उन्होंने श्रीलंका के रोमेश कालुविर्थना, निरोशन वंडारातिलाके और प्रमोदया विक्रमसिंघे को आउट करके तिकड़ी [illegible]

23. लगातार दो टेस्ट मैचों में तिकड़ी वनाने [illegible] के पहले गेंदवाज वने वासिम अकरम। [illegible] में उन्होंने श्रीलंका के अविष्का गुनावर्दने, [illegible] माहेला जयवर्धने को ढाका में [illegible] वनाई।

24. श्रीलंका के नुवान [illegible] 26 हैटट्रिक वनाने वाले गेंदवाज वने। उन्होंने 1999 में हरा मे मैच का दूसरा ओवर और अपने पहले ही ओवर की पहल तीन गेंदो में जिम्वावदे के ट्रेवर ग्रिपर नील जान्सन और गु गुडविन को पैवेलियन भेज कर सवसे तेज कही जाने वाल तिकड़ी वनाई।

25. पाकिस्तान के अब्दुर रजाक सवसे कम आयु मे तिकड़ी वनाने वाले गेंदवाज वने। 2000 में गाले में श्रीलंक

लार्ड के मैदान पर 100 वां टेस्ट

क्रिकेट का मक्का कहा जाने वाले लार्ड्स के मैदान पर टेस्ट मैचों का शतक पूरा हो गया।

इस मैदान पर 1884 में इंग्लैंड–आस्ट्रेलिया के वीच पहला टेस्ट मैच खेला गया था। इस टेस्ट मैच को इंग्लैंड ने पांच रन और एक पारी से जीता था।

टेस्ट मैच का शतक जुलाई 2000 में वेस्ट इंडीज की टीम के साथ पूरा हुआ। वेस्ट इंडीज की टीम पांच टेस्ट मैच की श्रृंखला खेलने इंग्लैंड आई थी। इसी श्रृंखला का दूसरा टेस्ट लार्ड्स का 100वां टेस्ट था।

टेस्ट मैच में सबसे तेज अर्धशतक

गेंद	खिलाड़ी	देश	विपक्ष	स्थल	[illegible]
30	कपिल देव	भारत	पाकिस्तान	कराची	[illegible]
31	हैंसी क्रोंजिये	द. अफ्रीका	श्रीलंका	सेंटुरियान	[illegible]
32	विवियन रिचर्ड्स	वेस्ट इंडीज	भारत	किंग्सटन	[illegible]
32	इयान वाथम	इंग्लैंड	न्यूजीलैंड	ओवल	
33	रोय फ्रेड्रिक	वेस्ट इंडीज	आस्ट्रेलिया	पर्थ	
33	कपिल देव	भारत	पाकिस्तान	कराची	
33	कपिल देव	भारत	इंग्लैंड	मैंचेस्टर	
33	एलेन लैंय	इंग्लैंड	न्यूजीलैंड	[illegible]	
34	इयान स्मिथ	न्यूजीलैंड	पाकिस्तान		
35	विवियन रिचर्ड्स	वेस्ट इंडीज	इंग्लैंड		
35	मो. अजहरुद्दीन	भारत	द. अफ्रीका		

टेस्ट मैच में सचिन के शतक

रन	विपक्ष	स्थल	वर्ष
119*	इंग्लैंड	ओल्ड ट्रेफर्ड	1990
148*	आस्ट्रेलिया	सिडनी	1991
114	आस्ट्रेलिया	पर्थ	1991
111	द. अफ्रीका	जोहांसबर्ग	1992
165	इंग्लैंड	चेन्नई	1993
104*	श्रीलंका	कोलंबो	1993
142	श्रीलंका	लखनऊ	1994
179	वेस्ट इंडीज	नागपुर	1994
122	इंग्लैंड	एडबस्टन	1996
177	इंग्लैंड	ट्रेंट ब्रिज	1996
143	श्रीलंका	कोलंबो	1996
139	श्रीलंका	कोलंबो	1997
169	दक्षिण अफ्रीका	केप टाउन	1997
148	श्रीलंका	मुंबई	1998
155	आस्ट्रेलिया	चेन्नई	1998
177	आस्ट्रेलिया	कलकत्ता	1998
113	न्यूजीलैंड	वेलिंग्टन	1999
136	पाकिस्तान	चेन्नई	1999
124	श्रीलंका	कोलंबो	1999
126*	न्यूजीलैंड	मोहाली	1999
217	न्यूजीलैंड	अहमदाबाद	1999
116	आस्ट्रेलिया	मेलबोर्न	1999

* अविजित

एकदिवसीय शतक

रन	विपक्ष	स्थल	वर्ष	परिणाम
110	आस्ट्रेलिया	शारजाह	1994	31 रन से जीत
115	न्यूजीलैंड	बड़ोदरा	1994	7 विकेट से जीत
105	वेस्ट इंडीज	जयपुर	1994	5 विकेट से जीत
112*	श्रीलंका	शारजाह	1995	8 विकेट से जीत
127*	केन्या	कटक	1996	7 विकेट से जीत
137	श्रीलंका	दिल्ली	1996	6 विकेट से हार
100	पाकिस्तान	सिंगापुर	1996	8 विकेट से हार
118	पाकिस्तान	शारजाह	1996	28 रन से जीत
110	श्रीलंका	कोलंबो	1996	9 विकेट से हार
114	दक्षिण अफ्रीका	मुंबई	1996	74 रन से जीत
104	जिम्बाब्वे	बेनोई	1997	6 विकेट से जीत
117	न्यूजीलैंड	बंगलौर	1997	8 विकेट से जीत
100	आस्ट्रेलिया	कानपुर	1998	6 विकेट से जीत
143	आस्ट्रेलिया	शारजाह	1998	25 रन से हार
134	आस्ट्रेलिया	शारजाह	1998	6 विकेट से जीत
100*	केन्या	कलकत्ता	1998	9 विकेट से जीत
128	श्रीलंका	कोलंबो	1998	6 रन से जीत
127*	जिम्बाब्वे	बुलावायो	1998	8 विकेट से जीत
141	आस्ट्रेलिया	ढाका	1998	44 रन से जीत
118*	जिम्बाब्वे	शारजाह	1998	7 विकेट से जीत
124*	जिम्बाब्वे	शारजाह	1998	10 विकेट से जीत
140*	केन्या	ब्रिस्टल	1999	94 रन से जीत
120	श्रीलंका	कोलंबो	1999	23 रन से जीत
186*	न्यूजीलैंड	हैदराबाद	1999	174 रन से जीत
122	दक्षिण अफ्रीका	बड़ोदरा	2000	4 विकेट से जीत
101	श्रीलंका	शारजाह	2000	4 विकेट से हार

(इंग्लैंड के विरुद्ध कोई शतक नहीं) * अविजित

जब जब सचिन शतक लगाते हैं प्रायः भारत जीतता है। उनके द्वारा लगाये गये 26 शतकों में भारत को 21 बार विजय मिली और केवल पांच बार पराजय हुई।

के रोमेश कालुविर्तने, चमिंदा वास और रंगाना हेराथ को आउट कर तिकड़ी बनाई। उनसे पहले सबसे कम आयु (21) में तिकड़ी बनाने वाले गेंदबाज दक्षिण अफ्रीका के ज्योफ ग्रिफिन थे।

टेस्ट मैच में सबसे कम स्कोर

26: न्यूजीलैंड–इंग्लैंड, आकलैंड, 1954–55
30: द. अफ्रीका– इंग्लैंड, पोर्ट एलिजाबेथ, 1895–96
35: द. अफ्रीका– इंग्लैंड, बर्मिंघम, 1924
36: द. अफ्रीका– इंग्लैंड, केप टाउन, 1898–99
36: आस्ट्रेलिया–इंग्लैंड, बर्मिंघम, 1902
36: द. अफ्रीका– आस्ट्रेलिया, मेलबोर्न, 1895–96
42: आस्ट्रेलिया–इंग्लैंड, सिडनी, 1887–88
42: न्यूजीलैंड–आस्ट्रेलिया, वेलिंग्टन, 1945–46
42: भारत–इंग्लैंड, लार्ड्स, 1974
43: द. अफ्रीका– इंग्लैंड, केप टाउन, 1988–89
44: आस्ट्रेलिया–इंग्लैंड, ओवल, 1896
45 इंग्लैंड–आस्ट्रेलिया, सिडनी, 1886–87
45: द. अफ्रीका–आस्ट्रेलिया, मेलबोर्न, 1931–32
46: इंग्लैंड–वेस्ट इंडीज, पोर्ट आफ स्पेन, 1993–94
47: द. अफ्रीका– इंग्लैंड, केप टाउन, 1988–89
47: न्यूजीलैंड–इंग्लैंड, लार्ड्स, 1958
51: वेस्ट इंडीज–आस्ट्रेलिया, पोर्ट आफ स्पेन, 1998–99

टेस्ट क्रिकेट में मील के पत्थर

1. पहला टेस्ट मैच मेलबोर्न में 1877 में खेला गया।

2. भारत ने पहला टेस्ट मैच 1932 में लार्ड्स में खेला।

3. टेस्ट में पहला शतक आस्ट्रेलिया के चार्ल्स बैन्नरमैन ने बनाया।

4. दोहरा शतक लगाने वाले पहले क्रिकेटियर आस्ट्रेलिया के डब्ल्यू. एल. मर्डोक ने 1884 में इंग्लैंड के विरुद्ध बनाया।

5. तिहरा शतक लगाने वाले इंग्लैंड के एंटी सांढम थे। उन्होंने 1929–30 में वेस्ट इंडीज के विरुद्ध किंग्सटन में 325 रन बनाये थे।

6. आस्ट्रेलिया के वारेन बार्डस्ले ने पहली बार 1909 में ओवल में दोनों पारियों में शतक लगाया।

7. सौ टेस्ट मैच खेलने वाले पहले क्रिकेटियर इंग्लैंड के कोलिन काउड्रे थे।

8. इंग्लैंड के जान ब्रिग्ज ने सबसे पहले 100 विकेट लिये।

9. 200 विकेट लेने वाले पहले गेंदबाज आस्ट्रेलिया के क्लैरी ग्रिमेट थे।

10. इंग्लैंड के फ्रेड्डी ट्रुमैन ने सबसे पहले 300 विकेट लिये।

11. 400 विकेट का आंकड़ा पाने वाले प्रथम गेंदबाज न्यूजीलैंड के रिचर्ड हैडली बने।

12. 450 विकेट का आंकड़ा पाने वाले प्रथम गेंदबाज वेस्ट इंडीज के कर्टनी वाल्श बने।

13. आस्ट्रेलिया के फ्रेड स्पोफ्फोर्थ ने 1878–79 में पहली हैटट्रिक बनाई।

14. टेस्ट मैच में पहला छक्का मारने वाली महिला इंग्लैंड की राचेल हीलो, उन्होंने आस्ट्रेलिया के विरुद्ध महिला टेस्ट मैच में 1963 में छक्का मारा था।

15. टेस्ट मैच में रन आउट होने वाले पहले आस्ट्रेलिया के क्रिकेटियर डी. डब्ल्यू. ग्रेगोरी।

16. आस्ट्रेलिया के डब्ल्यू. ए. ओल्ड फील्ड 100 खिलाड़ियों को आउट करने वाले पहले विकेट कीपर बने।

17. क्रिकेट के इतिहास में पहली बार 1884 के मेलबोर्न टेस्ट को आस्ट्रेलिया के अखबार मेलबोर्न अर्गनस ने पहले टेस्ट मैच के रूप में दर्ज किया।

18. आस्ट्रेलिया के टी. केंडाल एक पारी में पांच विकेट लेने वाले प्रथम गेंदबाज बनें। उन्होंने 1876–77 में इंग्लैंड के विरुद्ध पांच विकेट लिये थे।

19. इंग्लैंड के जिम लेकर एक ही पारी में दस विकेट लेने वाले पहले गेंदबाज बने।

20. पाकिस्तान के इंथिकाब आलम पहली ही गेंद पर विकेट लेने वाले प्रथम एशियाई क्रिकेटियर बने।

21. इंग्लैंड के एलन नाट 4000 रन बनाने वाले पहले विकेट कीपर बने।

22. वेस्ट इंडीज के डेसमंड हेन्स पहले बल्लेबाज बने जिन्होंने दोनो पारियों की शुरुवात की और अंत तक आउट नहीं हुए।

23. आस्ट्रेलिया के ग्राहम यालूप पहले बल्लेबाज थे जिन्होंने हेलमेट पहन कर खेला।

24. आस्ट्रेलिया के डांग वाल्टर्स पहले बल्लेबाज बने जिन्होंने पहली पारी में शतक और दूसरी पारी में दुहरा शतक बनाया।

25. आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेलते हुए भोजन के समय से पहले शतक बनाने वाले इंग्लैंड के के. एस. रणजीत सिंहजी पहले बल्लेबाज बने।

बंगला देश का टेस्ट मैच में प्रवेश

बंगला देश 10वां टेस्ट मैच खेलने वाला देश बन गया है। 10 नवंबर, 2000 को ढाका में भारत के विरुद्ध अपने पहले टेस्ट मैच में बंगला देश भारत से 9 विकेट से पराजित हुआ। लेकिन अमीनुल इस्लाम को पहले ही टेस्ट मैच में शतक बनाने का गौरव मिला। बंगला देश ने 24 मई को आई.सी.सी. ट्राफी मैच खेला था और पिछले 21 वर्षों से टेस्ट मैच खेलने वाले देश का दर्जा प्राप्त करने की कोशिश में था। इसने अपना पहला अंतर्राष्ट्रीय एकदिवसीय मैच पाकिस्तान के विरुद्ध 31 मार्च, 1986 को खेला था। अन्य टेस्ट मैच खेलने वाले देश हैं: इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैंड, भारत, पाकिस्तान, वेस्ट इंडीज, श्रीलंका और जिम्बाब्वे।

बंगला देश ने विश्व कप में पहली जीत 24 मई 99 को स्काटलैंड को हरा कर दर्ज की थी। इसी विश्व कप में उन्होंने पाकिस्तान को 62 रनों से हरा दिया था।

टेस्ट मैच में सचिन के शतक

रन	विपक्ष	स्थल	
119*	इंग्लैंड	ओल्ड ट्रेफर्ड	
148*	आस्ट्रेलिया	सिडनी	
114	आस्ट्रेलिया	पर्थ	
111	द. अफ्रीका	जोहांसबर्ग	
165	इंग्लैंड	चेन्नई	1
104*	श्रीलंका	कोलंबो	1
142	श्रीलंका	लखनऊ	1
179	वेस्ट इंडीज	नागपुर	1
122	इंग्लैंड	एडबस्टन	19
177	इंग्लैंड	ट्रेंट ब्रिज	19
143	श्रीलंका	कोलंबो	19
139	श्रीलंका	कोलंबो	19
169	दक्षिण अफ्रीका	केप टाउन	19
148	श्रीलंका	मुंबई	199
155	आस्ट्रेलिया	चेन्नई	199
177	आस्ट्रेलिया	कलकत्ता	199
113	न्यूजीलैंड	वेलिंग्टन	1998
136	पाकिस्तान	चेन्नई	1999
124	श्रीलंका	कोलंबो	1999
126*	न्यूजीलैंड	मोहाली	1999
217	न्यूजीलैंड	अहमदाबाद	1999
116	आस्ट्रेलिया	मेलबोर्न	1999

* अविजित

एकदिवसीय शतक

रन	विपक्ष	स्थल	वर्ष	परिणाम
110	आस्ट्रेलिया	शारजाह	1994	31 रन से जीत
115	न्यूजीलैंड	वडोदरा	1994	7 विकेट से जीत
105	वेस्ट इंडीज	जयपुर	1994	5 विकेट से जीत
112*	श्रीलंका	शारजाह	1995	8 विकेट से जीत
127*	केन्या	कटक	1996	7 विकेट से जीत
137	श्रीलंका	दिल्ली	1996	6 विकेट से हार
100	पाकिस्तान	सिंगापुर	1996	8 विकेट से हार
118	पाकिस्तान	शारजाह	1996	28 रन से जीत
110	श्रीलंका	कोलंबो	1996	9 विकेट से हार
114	दक्षिण अफ्रीका	मुंबई	1996	74 रन से जीत
104	जिम्बाब्वे	बनोई	1997	6 विकेट से जीत
117	न्यूजीलैंड	बंगलौर	1997	8 विकेट से जीत
100	आस्ट्रेलिया	कानपुर	1998	6 विकेट से जीत
143	आस्ट्रेलिया	शारजाह	1998	25 रन से हार
134	आस्ट्रेलिया	शारजाह	1998	6 विकेट से जीत
100*	केन्या	कलकत्ता	1998	9 विकेट से जीत
128	श्रीलंका	कोलंबो	1998	6 रन से जीत
127*	जिम्बाब्वे	बुलावायो	1998	8 विकेट से जीत
141	आस्ट्रेलिया	ढाका	1998	44 रन से जीत
118*	जिम्बाब्वे	शारजाह	1998	7 विकेट से जीत
124*	जिम्बाब्वे	शारजाह	1998	10 विकेट से जीत
140*	केन्या	ब्रिस्टल	1999	94 रन से जीत
120	श्रीलंका	कोलंबो	1999	23 रन से जीत
186*	न्यूजीलैंड	हैदराबाद	1999	174 रन से जीत
122	दक्षिण अफ्रीका	वडोदरा	2000	4 विकेट से जीत
1	श्रीलंका	शारजाह	2000	4 विकेट से हार

ंड के विरुद्ध कोई शतक नहीं) * अविजित

जब जब सचिन शतक लगाते हैं प्राय: भारत जीतता है। उनके द्वारा लगाये गये 26 शतकों में भारत को 21 बार विजय मिली और केवल पांच बार पराजय हुई।

के रोमेश कालुविर्तने, चमिंदा वास और रंगाना हेराथ को आउट कर तिकड़ी वनाई। उनसे पहले सवसे कम आयु (21) में तिकड़ी वनाने वाले गेंदवाज दक्षिण अफ्रीका के ज्योफ ग्रिफिन थे।

टेस्ट मैच में सवसे कम स्कोर

26: न्यूजीलैंड-इंग्लैंड, आकलैंड, 1954-55
30: द. अफ्रीका- इंग्लैंड, पोर्ट एलिजावेथ, 1895-96
35: द. अफ्रीका- इंग्लैंड, वर्मिघंम, 1924
36: द. अफ्रीका- इंग्लैंड, केप टाउन, 1898-99
36: आस्ट्रेलिया-इंग्लैंड, वर्मिघंम, 1902
36: द. अफ्रीका- आस्ट्रेलिया, मेलर्वोन, 1895-96
42: आस्ट्रेलिया-इंग्लैंड, सिडनी, 1887-88
42: न्यूजीलैंड-आस्ट्रेलिया, वेलिंग्टन, 1945-46
42: भारत-इंग्लैंड, लार्ड्स, 1974
43: द. अफ्रीका- इंग्लैंड, केप टाउन, 1988-89
44: आस्ट्रेलिया-इंग्लैंड, ओवल, 1896
45 इंग्लैंड-आस्ट्रेलिया, सिडनी, 1886-87
45: द. अफ्रीका-आस्ट्रेलिया, मेलवोर्न, 1931-32
46: इंग्लैंड-वेस्ट इंडीज, पोर्ट आफ स्पेन, 1993-94
47: द. अफ्रीका- इंग्लैंड, केप टाउन, 1988-89
47: न्यूजीलैंड-इंग्लैंड, लार्ड्स, 1958
51: वेस्ट इंडीज-आस्ट्रेलिया, पोर्ट आफ स्पेन, 1998-99

टेस्ट क्रिकेट में मील के पत्थर

1. पहला टेस्ट मैच मेलवोर्न में 1877 में खेला गया।

2. भारत ने पहला टेस्ट मैच 1932 में लार्ड्स में खेला।

3. टेस्ट में पहला शतक आस्ट्रेलिया के चार्ल्स बैन्नरमैन ने वनाया।

4. दोहरा शतक लगाने वाले पहले क्रिकेटियर आस्ट्रेलिया के डब्ल्यू. एल. मर्डोक ने 1884 में इंग्लैंड के विरुद्ध वनाया।

5. तिहरा शतक लगाने वाले इंग्लैंड के एंटी सांढम थे। उन्होंने 1929-30 में वेस्ट इंडीज के विरुद्ध किंग्सटन में 325 रन वनाये थे।

6. आस्ट्रेलिया के वारेन वार्डस्ले ने पहली वार 1909 में ओवल में दोनों पारियों में शतक लगाया।

7. सौ टेस्ट मैच खेलने वाले पहले क्रिकेटियर इंग्लैंड के कोलिन काउड्रे थे।

8. इंग्लैंड के जान व्रिग्ज ने सवसे पहले 100 विकेट लिये।

9. 200 विकेट लेने वाले पहले गेंदवाज आस्ट्रेलिया के क्लैरी ग्रिमेट थे।

10. इंग्लैंड के फ्रेड्डी ट्रुमैन ने सवसे पहले 300 विकेट लिये।

11. 400 विकेट का आंकड़ा पाने वाले प्रथम गेंदवाज न्यूजीलैंड के रिचर्ड हैडली वने।

12. 450 विकेट का आंकड़ा पाने वाले प्रथम गेंदवाज वेस्ट इंडीज के कर्टनी वाल्श वने।

13. आस्ट्रेलिया के फ्रेड स्पोफ्फोर्थ ने 1878-79 में पहली हैटट्रिक वनाई।

14. टेस्ट मैच में पहला छक्का मारने वाली महिला इंग्लैंड की राचेल हीलो, उन्होंने आस्ट्रेलिया के विरुद्ध महिला टेस्ट मैच में 1963 में छक्का मारा था।

15. टेस्ट मैच में रन आउट होने वाले पहले आस्ट्रेलिया के क्रिकेटियर डी. डब्ल्यू. ग्रेगोरी।

16. आस्ट्रेलिया के डब्ल्यू. ए. ओल्ड फील्ड 100 खिलाड़ियों को आउट करने वाले पहले विकेट कीपर वने।

17. क्रिकेट के इतिहास में पहली वार 1884 के मेलवोर्न टेस्ट को आस्ट्रेलिया के अखवार मेलवोर्न अर्गुनस ने पहले टेस्ट मैच के रूप में दर्ज किया।

18. आस्ट्रेलिया के टी. केंडाल एक पारी में पांच विकेट लेने वाले प्रथम गेंदवाज वनें। उन्होंने 1876-77 में इंग्लैंड के विरुद्ध पांच विकेट लिये थे।

19. इंग्लैंड के जिम लेकर एक ही पारी में दस विकेट लेने वाले पहले गेंदवाज वने।

20. पाकिस्तान के इंथिकाव आलम पहली ही गेंद पर विकेट लेने वाले प्रथम एशियाई क्रिकेटियर वने।

21. इंग्लैंड के एलन नाट 4000 रन वनाने वाले पहले विकेट कीपर वने।

22. वेस्ट इंडीज के डेसमंड हेन्स पहले वल्लेवाज वने जिन्होंने दोनो पारियों की शुरुवात की और अंत तक आउट नहीं हुए।

23. आस्ट्रेलिया के ग्राहम यालूप पहले वल्लेवाज थे जिन्होंने हेलमेट पहन कर खेला।

24. आस्ट्रेलिया के डांग वाल्टर्स पहले वल्लेवाज वने जिन्होंने पहली पारी में शतक और दूसरी पारी में दुहरा शतक वनाया।

25. आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेलते हुए भोजन के समय से पहले शतक वनाने वाले इंग्लैंड के के. एस. रणजीत सिंहजी पहले वल्लेवाज वने।

वंगला देश का टेस्ट मैच में प्रवेश

वंगला देश 10वां टेस्ट मैच खेलने वाला देश वन गया है। 10 नववर, 2000 को ढाका में भारत के विरुद्ध अपने पहले टेस्ट मैच में वंगला देश भारत से 9 विकेट से पराजित हुआ। लेकिन अमीनुल इस्लाम को पहले ही टेस्ट मैच में शतक वनाने का गौरव मिला। वंगला देश ने 24 मई को आई.सी.सी. ट्राफी मैच खेला था और पिछले 21 वर्षों से टेस्ट मैट खेलने वाले देश का दर्जा प्राप्त करने की कोशिश में था। इसने अपना पहला अंतर्राष्ट्रीय एकदिवसीय मैच पाकिस्तान के विरुद्ध 31 मार्च, 1986 को खेला था। अन्य टेस्ट मैच खेलने वाले देश हैं : इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैंड, भारत, पाकिस्तान, वेस्ट इंडीज, श्रीलंका और जिम्वावे।

वंगला देश ने विश्व कप में पहली जीत 24 मई 99 को स्काटलैंड को हरा कर दर्ज की थी। इसी विश्व कप में उन्होंने पाकिस्तान को 62 रनों से हरा दिया था।

टेस्ट मैच में सचिन के शतक

रन	विपक्ष	स्थल	वर्ष
119*	इंग्लैंड	ओल्ड ट्रेफर्ड	1990
148*	आस्ट्रेलिया	सिडनी	1991
114	आस्ट्रेलिया	पर्थ	1991
111	द. अफ्रीका	जोहांसबर्ग	1992
165	इंग्लैंड	चेन्नई	1993
104*	श्रीलंका	कोलंबो	1993
142	श्रीलंका	लखनऊ	1994
179	वेस्ट इंडीज	नागपुर	1994
122	इंग्लैंड	एडबस्टन	1996
177	इंग्लैंड	ट्रेंट ब्रिज	1996
143	श्रीलंका	कोलंबो	1996
139	श्रीलंका	कोलंबो	1996
169	दक्षिण अफ्रीका	केप टाउन	1997
148	श्रीलंका	मुंबई	1997
155	आस्ट्रेलिया	चेन्नई	1998
177	आस्ट्रेलिया	कलकत्ता	1998
113	न्यूजीलैंड	वेलिंग्टन	1998
136	पाकिस्तान	चेन्नई	1999
124	श्रीलंका	कोलंबो	1999
126*	न्यूजीलैंड	मोहाली	1999
217	न्यूजीलैंड	अहमदाबाद	1999
116	आस्ट्रेलिया	मेलबोर्न	1999

* अविजित

एकदिवसीय शतक

रन	विपक्ष	स्थल	वर्ष	परिणाम
110	आस्ट्रेलिया	शारजाह	1994	31 रन से जीत
115	न्यूजीलैंड	वदोदरा	1994	7 विकेट से जीत
105	वेस्ट इंडीज	जयपुर	1994	5 विकेट से जीत
112*	श्रीलंका	शारजाह	1995	8 विकेट से जीत
127*	केन्या	कटक	1996	7 विकेट से जीत
137	श्रीलंका	दिल्ली	1996	6 विकेट से हार
100	पाकिस्तान	सिंगापुर	1996	8 विकेट से हार
118	पाकिस्तान	शारजाह	1996	28 रन से जीत
110	श्रीलंका	कोलंबो	1996	9 विकेट से हार
114	दक्षिण अफ्रीका	मुंबई	1996	74 रन से जीत
104	जिम्बाब्वे	बेनोई	1997	6 विकेट से जीत
117	न्यूजीलैंड	बंगलौर	1997	8 विकेट से जीत
100	आस्ट्रेलिया	कानपुर	1998	6 विकेट से जीत
143	आस्ट्रेलिया	शारजाह	1998	25 रन से हार
134	आस्ट्रेलिया	शारजाह	1998	6 विकेट से जीत
100*	केन्या	कलकत्ता	1998	9 विकेट से जीत
128	श्रीलंका	कोलंबो	1998	6 रन से जीत
127*	जिम्बाब्वे	बुलावायो	1998	8 विकेट से जीत
141	आस्ट्रेलिया	ढाका	1998	44 रन से जीत
118*	जिम्बाब्वे	शारजाह	1998	7 विकेट से जीत
124*	जिम्बाब्वे	शारजाह	1998	10 विकेट से जीत
140*	केन्या	ब्रिस्टल	1999	94 रन से जीत
120	श्रीलंका	कोलंबो	1999	23 रन से जीत
186*	न्यूजीलैंड	हैदराबाद	1999	174 रन से जीत
122	दक्षिण अफ्रीका	बड़ोदरा	2000	4 विकेट से जीत
101	श्रीलंका	शारजाह	2000	4 विकेट से हार

(इंग्लैंड के विरुद्ध कोई शतक नहीं) * अविजित

जब जब सचिन शतक लगाते हैं प्राय: भारत जीतता है। उनके द्वारा लगाये गये 26 शतकों में भारत को 21 बार विजय मिली और केवल पांच बार पराजय हुई।

के रोमेश कालुवितिंने, चमिंदा वास और रंगाना हेराथ को आउट कर तिकड़ी बनाई। उनसे पहले सबसे कम आयु (21) में तिकड़ी बनाने वाले गेंदबाज दक्षिण अफ्रीका के ज्योफ ग्रिफिन थे।

टेस्ट मैच में सबसे कम स्कोर

26: न्यूजीलैंड-इंग्लैंड, आकलैंड, 1954-55
30: द. अफ्रीका- इंग्लैंड, पोर्ट एलिजाबेथ, 1895-96
35: द. अफ्रीका- इंग्लैंड, बर्मिघम, 1924
36: द. अफ्रीका- इंग्लैंड, केप टाउन, 1898-99
36: आस्ट्रेलिया-इंग्लैंड, बर्मिघम, 1902
36: द. अफ्रीका- आस्ट्रेलिया, मेलबोर्न, 1895-96
42: आस्ट्रेलिया-इंग्लैंड, सिडनी, 1887-88
42: न्यूजीलैंड-आस्ट्रेलिया, वेलिंग्टन, 1945-46
42: भारत-इंग्लैंड, लार्ड्स, 1974
43: द. अफ्रीका- इंग्लैंड, केप टाउन, 1988-89
44: आस्ट्रेलिया-इंग्लैंड, ओवल, 1896
45 इंग्लैंड-आस्ट्रेलिया, सिडनी, 1886-87
45: द. अफ्रीका-आस्ट्रेलिया, मेलबोर्न, 1931-32
46: इंग्लैंड-वेस्ट इंडीज, पोर्ट आफ स्पेन, 1993-94
47: द. अफ्रीका- इंग्लैंड, केप टाउन, 1988-89
47: न्यूजीलैंड-इंग्लैंड, लार्ड्स, 1958
51: वेस्ट इंडीज-आस्ट्रेलिया, पोर्ट आफ स्पेन, 1998-99

टेस्ट क्रिकेट में मील के पत्थर

1. पहला टेस्ट मैच मेलबोर्न में 1877 में खेला गया।

2. भारत ने पहला टेस्ट मैच 1932 में लार्ड्स में खेला।

3. टेस्ट में पहला शतक आस्ट्रेलिया के चार्ल्स बैन्नरमैन ने बनाया।

4. दोहरा शतक लगाने वाले पहले क्रिकेटियर आस्ट्रेलिया के डब्ल्यू. एल. मर्डोक ने 1884 में इंग्लैंड के विरुद्ध बनाया।

5. तिहरा शतक लगाने वाले इंग्लैंड के एंटी सांढम थे। उन्होंने 1929-30 में वेस्ट इंडीज के विरुद्ध किंग्सटन में 325 रन बनाये थे।

6. आस्ट्रेलिया के वारेन बार्डस्ले ने पहली बार 1909 में ओवल में दोनों पारियों में शतक लगाया।

7. सौ टेस्ट मैच खेलने वाले पहले क्रिकेटियर इंग्लैंड के कोलिन काउड्रे थे।

8. इंग्लैंड के जान ग्रिग्ज ने सबसे पहले 100 विकेट लिये।

9. 200 विकेट लेने वाले पहले गेंदबाज आस्ट्रेलिया के क्लैरी ग्रिमेट थे।

10. इंग्लैंड के फ्रेड्डी ट्रुमैन ने सबसे पहले 300 विकेट लिये।

11. 400 विकेट का आंकड़ा पाने वाले प्रथम गेंदबाज न्यूजीलैंड के रिचर्ड हैडली बने।

12. 450 विकेट का आंकड़ा पाने वाले प्रथम गेंदबाज वेस्ट इंडीज के कर्टनी वाल्श बने।

13. आस्ट्रेलिया के फ्रेड स्पोफ्फोर्थ ने 1878-79 में पहली हैटट्रिक बनाई।

14. टेस्ट मैच में पहला छक्का मारने वाली महिला इंगलैंड की राचेल हीलो, उन्होंने आस्ट्रेलिया के विरुद्ध महिला टेस्ट मैच में 1963 में छक्का मारा था।

15. टेस्ट मैच में रन आउट होने वाले पहले आस्ट्रेलिया के क्रिकेटियर डी. डब्ल्यू. ग्रेगोरी।

16. आस्ट्रेलिया के डब्ल्यू. ए. ओल्ड फील्ड 100 खिलाड़ियों को आउट करने वाले पहले विकेट कीपर बने।

17. क्रिकेट के इतिहास में पहली बार 1884 के मेलबोर्न टेस्ट को आस्ट्रेलिया के अखबार मेलबोर्न अर्गुनस ने पहले टेस्ट मैच के रूप में दर्ज किया।

18. आस्ट्रेलिया के टी. कैंडाल एक पारी में पांच विकेट लेने वाले प्रथम गेंदबाज बनें। उन्होंने 1876-77 में इंग्लैंड के विरुद्ध पांच विकेट लिये थे।

19. इंग्लैंड के जिन लेकर एक ही पारी में दस विकेट लेने वाले पहले गेंदबाज बने।

20. पाकिस्तान के इंथिकाद आलम पहली ही गेंद पर विकेट लेने वाले प्रथम एशियाई क्रिकेटियर बने।

21. इंग्लैंड के एलन नाट 4000 रन बनाने वाले पहले विकेट कीपर बने।

22. वेस्ट इंडीज के डेसमंड हेन्स पहले बल्लेबाज बने जिन्होंने दोनों पारियों की शुरुवात की और अंत तक आउट नहीं हुए।

23. आस्ट्रेलिया के ग्राहम यालूप पहले बल्लेबाज थे जिन्होंने हेलमेट पहन कर खेला।

24. आस्ट्रेलिया के डाग वाल्टर्स पहले बल्लेबाज बने जिन्होंने पहली पारी में शतक और दूसरी पारी में दुहरा शतक बनाया।

25. आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेलते हुए भोजन के समय से पहले शतक बनाने वाले इंग्लैंड के के. एस. रणजीत सिंहजी पहले बल्लेबाज बने।

बंगला देश का टेस्ट मैच में प्रवेश

बंगला देश 10वां टेस्ट मैच खेलने वाला देश बन गया है। 10 नवंबर, 2000 को ढाका में भारत के विरुद्ध अपने पहले टेस्ट मैच में बंगला देश भारत से 9 विकेट से पराजित हुआ। लेकिन अमीनुल इस्लाम को पहले ही टेस्ट मैच में शतक बनाने का गौरव मिला। बंगला देश ने 24 मई को आई.सी.सी. ट्राफी मैच खेला था और पिछले 21 वर्षों से टेस्ट मैच खेलने वाले देश का दर्जा प्राप्त करने की कोशिश में था। इसने अपना पहला अंतर्राष्ट्रीय एकदिवसीय मैच पाकिस्तान के विरुद्ध 31 मार्च, 1986 को खेला था। अन्य टेस्ट मैच खेलने वाले देश हैं : इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैंड, भारत, पाकिस्तान, वेस्ट इंडीज, श्रीलंका और जिम्बाबवे।

बंगला देश ने विश्व कप में पहली जीत 24 मई 99 को स्काटलैंड को हरा कर दर्ज की थी। इसी विश्व कप में उन्होंने पाकिस्तान को 62 रनों से हरा दिया था।

एक दिवसीय क्रिकेट मैच में सचिन की उपलब्धियां

रन	मैचेज	विपक्ष	स्थल	वर्ष
1000	36	जिम्बाबवे	हैमिल्टन	1991-92
2000	73	यू.ए.ई.	शरजाह	1993-94
3000	96	श्रीलंका	शरजाह	1994-95
4000	115	दक्षिण अफ्रीका	शरजाह	1995-96
5000	141	दक्षिण अफ्रीका	डरबन	1996-97
6000	176	पाकिस्तान	ढाका	1997-98
7000	196	श्रीलंका	खटरमा	1997-98
8000	217	पाकिस्तान	ओल्ड ट्रैफर्ड	1999
9000	242	दक्षिण अफ्रीका	नागपुर	1999-2000
9500	254	श्रीलंका	शरजाह	2000

1000 रन एवं 100 विकट: आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेलते हुए इंग्लैड के इयान बोथम 1985

2000 रन एवं 200 विकट: वेस्टइंडीज के विरुद्ध खेलते हुए भारत के कपिल देव 1991

2000 रन एवं 300 विकट: पाकिस्तान के वासिम अकरम 1997

50 मैचों की मेजबानी करनेवाला स्टेडियम: मेलबोर्न क्रिकेट ग्राउंड 1987

100 मैचों की मेजबानी करनेवाला स्टेडियम शरजाह 1996

150 मैचों की मेजबानी करनेवाला स्टेडियम शरजाह 1999

बराबरी पर रहने वाला मैच आस्ट्रेलिया - वेस्टइंडीज मेलबोर्न 1984

100 एव 200 मैच खेलनेवाला खिलाडी आस्ट्रेलिया के अलन बोर्डर (1985 - 1990)।

300 मैच खेलनेवाला खिलाडी: भारत के मुहम्मद अजहरुद्दीन।

1000 रन पूरे करनेवाले खिलाडी: विवियन रिचर्ड्स वेस्ट इंडीज, 1980

2000 रन पूरे करनेवाले खिलाडी: विवियन रिचर्ड्स वेस्टइंडीज, 1983

3000 रन पूरे करनेवाले खिलाडी विवियन रिचर्ड्स वेस्टइंडीज, 1984

4000 रन पूरे करनेवाले खिलाडी: विवियन रिचर्ड्स वेस्टइंडीज, 1985

5000 रन पूरे करनेवाले खिलाडी. विवियन रिचर्ड्स वेस्टइंडीज, 1987

कोकाकोला कप शरजाह

श्रीलंका ने भारत को 245 रनों से हराकर कप जीत लिया। श्रीलंका के 299 रन/5 विकेट के जवाब में भारत की टीम 54 रनों पर आउट हो गई। एकदिवसीय क्रिकेट में यह भारत का अब तक का सबसे कम स्कोर है।

6000 रन पूरे करनेवाले खिलाडी: विवियन रिचर्ड्स वेस्टइंडीज, 1989.

7000 रन पूरे करनेवाले खिलाडी: डेसमंड हेंस वेस्टइंडीज, 1991.

8000 रन पूरे करनेवाले खिलाडी: डेसमंड हेंस वेस्टइंडीज, 1993.

9000 रन पूरे करनेवाले खिलाडी: मोहम्मद अजहरुद्दीन, भारत, 1999.

100 विकेट लेने वाले गेंदबाज: आस्ट्रेलिया के डेनिस लिली, 1983

एक ही मैदान में 100 विकेट लेने वाले गेंदबाज: पाकिस्तान के वासिम अकरम, शरजाह, 1999

200 विकेट लेने वाले गेंदबाज: भारत के कपिल देव, 1991

300 विकेट लेने वाले गेंदबाज: पाकिस्तान के वासिम अकरम, 1996

400 विकेट लेने वाले गेंदबाज: पाकिस्तान के वासिम अकरम, 2000

तेज शतक

शाहिद अफरीदी (पाकिस्तान), श्रीलंका के विरुद्ध नैरोबी में में 37 गेंदों में 102 रन।

ब्रायन लारा (वेस्ट इंडीज), बंगलादेश के विरुद्ध 1999 मे 45 गेंदो में 117 रन।

सनत जयसूर्या (श्रीलंका), पाकिस्तान के विरुद्ध 1996 में सिंगापुर मे 48 गेंदों में 134 रन।

मोहम्मद अजहरुद्दीन (भारत), बदोदरा में 1988 में न्यूजीलैंड के विरुद्ध 62 गेंदों में 108 रन।

यासित अली (पाकिस्तान), शरजाह में 1993 में वेस्ट इंडीज के विरुद्ध 67 गेंदों में 127* रन।

इजाज अहमद (पाकिस्तान), लाहौर में भारत के विरुद्ध 68 गेंदों में 139 रन।

सचिन तेंदुलकर (भारत), शरजाह में 1998 में जिम्बाबवे के विरुद्ध 71 गेंदों में 124 रन।

एशिया कप क्रिकेट

वर्ष	विजेता	उपविजेता	स्थल
1984	भारत	श्रीलंका	शरजाह
1986	श्रीलंका	पाकिस्तान	कोलंबो
1988	भारत	श्रीलंका	बंगलादेश
1990-91	भारत	श्रीलंका	भारत
1995	भारत	श्रीलंका	शरजाह
1997	श्रीलंका	भारत	कोलंबो
2000	पाकिस्तान	श्रीलंका	बंगलादेश

सक्लेन मुश्ताक (पाकिस्तान): ओवल में जिम्बाबवे के विरुद्ध, 1999 में।

उच्चतम पारी का स्कोर (300+)

आस्ट्रेलिया

349/6, न्यूजीलैंड के विरुद्ध क्राइस्टचर्च में ,1999-2000
332/3, श्रीलंका के विरुद्ध शरजाह में 1990
328/5, श्रीलंका के विरुद्ध ओवल मे 1975
324/8, पाकिस्तान के विरुद्ध कराची में 1998
323/2, श्रीलंका के विरुद्ध एडीलेर्ड में , 1985
320/9, भारत के विरुद्ध ट्रेमटब्रिज मे , 1983
316/4, पाकिस्तान के विरुद्ध लाहौर मे , 1998
310/4, न्यूजीलैंड के विरुद्ध डुनेडिर्न मे , 2000
310/8, श्रीलका के विरुद्ध मेलबोर्न मे , 1998-99
304/7 केन्या के विरुद्ध विशाखापट्टनम मे , 1996
302/8 न्यूजीलैड के विरुद्ध मेलबोर्न मे , 1982-83
300/5 पाकिस्तान के विरुद्ध ब्रिसबेर्न में 1989-90

इंगलैंड

363/7 पाकिस्तान के विरुद्ध ट्रेटब्रिज मे 1992
334/4, भारत के विरुद्ध लार्ड्स मे , 1975
333/9, श्रीलका के विरुद्ध टाटन मे , 1983
322/6, न्यूजीलैड के विरुद्ध ओवल मे 1983
320/8, आस्ट्रेलिया के विरुद्ध एड्जबेस्टन मे , 1980
306/5, पाकिस्तान के विरुद्ध कराची मे , 2000
363/7, श्रीलंका के विरुद्ध कोलबो मे , 1997

भारत

376/2, न्यूजीलैंड के विरुद्ध हैदराबाद मे , 1999
373/6, श्रीलंका के विरुद्ध टांटन में , 1999
329, केन्या के विरुद्ध ब्रिस्टल में , 1999
316/7, पाकिस्तान के विरुद्ध ढाका में , 1998
310, दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध नागपुर में , 2000
309/5, आस्ट्रेलिया के विरुद्ध कोच्चि में , 1998
307/6, श्रीलंका के विरुद्ध कोलंबो में , 1998
307/8, आस्ट्रेलिया के विरुद्ध ढाका में , 1998
306, न्यूजीलैंड के विरुद्ध राजकोट में
305/5, पाकिस्तान के विरुद्ध शरजाह में , 1996
302/7, दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध कोच्चि में , 2000
301/3, जिम्बाबवे के विरुद्ध कटक में , 1997-98
300/7, श्रीलंका के विरुद्ध कोलंबो में , 1997

केन्या

347/3, बंगला देश के विरुद्ध नैरोबी में , 1997

न्यूजीलैंड

349/9 , भारत के विरुद्ध राजकोट में , 1996
348/8, भारत के विरुद्ध नागपुर में , 1995
338/4, बंगला देश के विरुद्ध शरजाह में , 1990
309/5, पूर्वी अफ्रीका के विरुद्ध बर्मिघंम में , 1975
307/8, हालैंड के विरुद्ध बदोदरा में , 1996
301/9, आस्ट्रेलिया के विरुद्ध क्राइस्टचर्च में , 2000

पाकिस्तान

371/9, श्रीलंका के विरुद्ध नैरोबी में , 1996
338/5, श्रीलंका के विरुद्ध स्वानसी में , 1983
330/6, श्रीलका के विरुद्ध नार्टिघम में , 1975
328/2, न्यूजीलैंड के विरुद्ध शरजाह में , 1994
327/5, भारत के विरुद्ध चेपाक में , 1997
320/3, बगला देश के विरुद्ध ढाका में , 2000
319/5, बगला देश के विरुद्ध कोलंबो में , 1997
315/3, श्रीलका के विरुद्ध एडीलेड में , 1989-90
347/8, आस्ट्रेलिया के विरुद्ध लाहौर में , 1998
315, श्रीलंका के विरुद्ध सिंगापुर में , 1996
314, भारत के विरुद्ध ढाका में , 1998
304/9, इंग्लैंड के विरुद्ध कराची में , 2000
300/6, श्रीलका के विरुद्ध किंबर्ली में , 1998

दक्षिण अफ्रीका

328/3, हालैंड के विरुद्ध रावलपिंडी में , 1996
324/4, न्यूजीलैंड के विरुद्ध प्रिटोरिया में , 2000
321/2, यू.ए.ई. के विरुद्ध रावलपिंडी में , 1996
321/8, पाकिस्तान के विरुद्ध नैरोबी में , 1996
320/7, भारत. के विरुद्ध नागपुर में , 1999-20(
314/3, पाकिस्तान के विरुद्ध शरजाह में , 1995-1996
301/3, भारत के विरुद्ध कोच्चि में , 2000
300/6, न्यूजीलैड के विरुद्ध ब्रिसबेन में , 1997

श्रीलंका

398/5, केन्या के विरुद्ध कैंडी में , 1996
349/9, पाकिस्तान के विरुद्ध सिंगापुर म, 1996
339/4, पाकिस्तान के विरुद्ध मोहाली में , 1997
329, वेस्ट इंडीज के विरुद्ध शरजाह.में , 1995
303/9, इंग्लैंड के विरुद्ध एडीलेड में , 1988-19(
302/4, भारत के विरुद्ध कोलंबो में , 1997
301, भारत के विरुद्ध कोलंबो में , 1998

वेस्ट इंडीज

360/4, श्रीलंका के विरुद्ध कराची में , 1987
333/7, श्रीलंका के विरुद्ध शरजाह में , 1995
333/8, भारत के विरुद्ध जमशेदपुर में , 1983
309/6, श्रीलंका के विरुद्ध पर्थ में , 1984-85

जिम्बाबवे

312/4, श्रीलंका के विरुद्ध न्यूप्लाइमाउथ में , 19

टेनिस

[विं]म्बलडन विजेता

[व]र्ष	पुरुष	महिला
[1]990	स्टीफेन एडवर्ग	मार्टिना नवरातिलोवा
[1]991	माइकेल स्टिच	स्टेफी ग्राफ
[1]992	आंद्रेअगासी	स्टेफी ग्राफ
[1]993	पीट सम्प्रास	स्टैफी ग्राफ
[1]994	पीट सम्प्रास	कोनचिटा मार्टिनेज
[1]995	पीट सम्प्रास	स्टेफी ग्राफ
[1]996	रिचर्ड क्राजिसेक	स्टेफी ग्राफ
[1]997	पीट सम्प्रास	मार्टिना हिंगिस
[1]998	पीट सम्प्रास	जोना नोवोतना
[1]999	पीट सम्प्रास	लिंडसे डेवेनपोर्ट
2000	पीट सम्प्रास	वीनस विलियम्स

फ्रेंच ओपेन

पुरुष 1990 इक्वेडोर के एंड्रेज गोमेज ने अमरीका के एंद्रे अगासी को हराया; 1991 अमरीका के जिम कोरियर ने अमरीका के एंद्रे अगासी को हराया; 1992 अमरीका के जिम कोरियर ने चेकोस्लाविया के पीटर कोर्डा को हराया; 1993 स्पेन के सर्गी वर्गुआ ने अमरीका के जिम कोरियर को हराया; 1994 स्पेन के सर्गी वर्गुआ ने स्पेन के अल्यर्टो वेरासाट्गुई को हराया; 1995 आस्ट्रेलिया के थामस मस्टर ने अमरीका के माइकल चांग को हराया; 1996रूस के युवगेनी काफेल निकोव ने जर्मनी के माइकल स्टिच को हराया; 1997 ब्राजील के गुस्टावो कुएर्टन ने स्पेन के सर्गी वर्गुआ को हराया; 1998 स्पेन के कार्लोस मोया ने स्पेन के एलेक्स कोरेट्जा को हराया; 1999 अमरीका के एंद्रे अगासी ने उक्रेन के एंड्रेई मेडेवेडी को हराया; 2000 अमरीका के गुसावो कुएर्टन ने स्वीडन के मेगनस नोरमन को हराया।

महिला 199[illegible] [illegible] की मोनिका सेलेस ने जर्मनी की स्टेफी ग्राफ को हराया; 1991 युगोस्लाविया की मोनिका सेलेस ने [illegible] को हराया; 1992 युगोस्लाविया की मोनिका सेलेस ने [illegible] की स्टेफी ग्राफ को हराया; [illegible] की मैरी जो [illegible] को हराया; [illegible] अरांक्जा सांचेज ने [illegible]; [illegible] जर्मनी की स्टेफी ग्राफ ने [illegible] सांचेज को हराया; 1996 [illegible] सांचेज को हराया; 199[illegible] [illegible] स्विटजरलेंड की मार्टिना हिंगिस को हराया; [illegible] की अरांक्जा सांचेज ने [illegible] हराया; 1999 जर्मनी की स्टेफी ग्राफ ने स्विटजरलैंड की मार्टिना हिंगिस को हराया; 2000 अमरीका की मेरी पियर्स ने स्पेन की कोंचिटा मार्टिनेज को हराया।

आस्ट्रेलिया ओपेन

पुरुष 1990 चेकोस्लाविया के इवान लेंडल ने स्वीडन के स्टीफेन एडबर्ग (चोट के कारण मैदान से हटे) को हराया; 1991 जर्मनी के बोरिस बेकर ने चेकोस्लाविया के इवान लेंडल को हराया; 1992 अमरीका के जिम कोरियर ने स्वीडन के स्टीपेन एडबर्ग को हराया; 1993 अमरीकाके जिम कोरियर ने स्वीडेन के स्टीफेन एडबर्ग को हराया; 1994 अमरीका के पीट सम्प्रास ने अमरीका के टोड मार्टिन को हराया; 1995 अमरीका के एंद्रे अगासी ने अमरीका के पीट सम्प्रास को हराया; 1996 जर्मनी के वोरिस बेकर ने अमरीका के माइकल चांगको हराया; 1997 अमरीका के पीट सम्प्रास ने स्पेन के कार्लोस मोया को हराया; 1998 चेक गणराज्य के पीटर कोर्डा ने चिली के मारसेलो रियोस को हराया; 1999 रूस के येवेगनी केफेलनिकोव ने स्वीडन के थामस इन्क्विस्ट को हराया; 2000 अमरीका के एंद्रे अगासी ने रूस के केफलनिकोव को हराया।

महिला 1990 जर्मनी की स्टेफी ग्राफ ने अमरीका की मैरी जो फर्नान्डीज को हराया; 1991 युगोस्लाविया की मोनिका सेलेस ने चेकोस्लाविया की जाना नोवोत्ना को हराया; 1992 युगोस्लाविया की मोनिका सेलेस ने अमरीका की मैरी जो फर्नान्डीज को हराया; 1993 युगोस्लाविया की मोनिका सेलेस जर्मनी की स्टेफी ग्राफ़ को हराया; 1994 जर्मनी की स्टेफी ग्राफ ने स्पेन की अरांक्जा सांचेज को हराया; 1995 फ्रांस की मेरी पियर्स ने स्पेन की अरांक्जा सांचेज को हराया; 1996 अमरीका की मोनिका सेलेस ने जर्मनी की एंके हुबर को हराया; 1997 स्विटजरलैंड की मार्टिना हिंगिस ने फ्रांस की मेरी पियर्स को हराया; 1998 स्विटजरलैंड की मार्टिना हिंगिस ने स्पेन की कोंचिटा मार्टिनेज को हराया; 1999 स्विटजरलैंड की मार्टिना हिंगिस ने फ्रांस की [illegible] को हराया; 2000 अमरीका की लिंडसे डेवेनपोर्ट ने स्विटजरलैंड की मार्टिना हिंगिस को हराया।

अमरीकन ओपेन

पुरुष 199[illegible] [illegible] को हराया; 199[illegible] [illegible] को हराया; 1992 [illegible] को हराया;

1993 अमरीका के पीट सम्प्रास ने फ्रांसके एंद्रे कैडेरिक पेओलिनको हराया; 1994 अमरीका के एंद्रे अगासी ने जर्मनी के माइकल स्टिच को हराया; 1995 अमरीका के पीट सम्प्रास ने अमरीका के एंद्रे अगासी को हराया; 1996 अमरीका के पीट सम्प्रास ने अमरीका के माइकल चांग को हराया; 1997 आस्ट्रेलिया के पैट्रिक राफ्टर ने ब्रिटेन के ग्रेग रुडगेस्की को हराया; 1998 आस्ट्रेलिया के पैट्रिक राफ्टर ने आस्ट्रेलिया के मार्क फिलिप्पौसिस को हराया; 1999 अमरीका के एंद्रे अगासी ने अमरीका के टाड मार्टिन को हराया; 2000 अमरीका के मारट साफिन ने अमरीका के पीट सम्पास को हराया।

महिला 1990 अर्जेन्टाइना की गैब्रियेला सबातिनी ने जर्मनी की स्टेफी ग्राफ को हराया; 1991 युगोस्लाविया की मोनिका सेलेस ने अमरीका की मार्टिना नवरातिलोवा को हराया; 1992 युगोस्लाविया कीमोनिका सेलेस ने स्पेन की अरांक्जा सांचेज को हराया; 1993 जर्मनी की स्टेफी ग्राफ ने बल्गारिया की मैनुएला मलीवा फ्रैंग्रीवेव को हराया; 1994 स्पेन की अरांक्जा सांचेज ने जर्मनी की स्टेफी ग्राफ को हराया; 1995 जर्मनी की स्टेफी ग्राफ ने अमरीका की मोनिका सेलेस को हराया; 1996 जर्मनी की स्टेफी ग्राफ ने अमरीका की मोनिका सेलेस को हराया; 1997 स्विटजरलैंड की मार्टिना हिंगिस ने अमरीका की वीनस विलियम को हराया; 1998 अमरीका की लिंडसे डेवेनपोर्ट ने स्विटजरलैंड की मार्टिना हिंगिस को हराया; 1999 अमरीका की सेरेना विलियम ने स्विटजरलैंड की मार्टिना हिंगिस को हराया; 2000 अमरीका की वीनस विलियम्स ने अमरीका की लिंडसे डेवेनपोर्ट को हराया।

हिमालय के साए में अंतरराष्ट्रीय दौड़

एशिया में भारत एकमात्र ऐसा देश है जहां पहाड़ों के बीच चरण बद्ध दौड़ होती है। इसका आयोजन हिमालयन रन एंड ट्रैक संस्था करती है। इसे शुरु कराने का श्रेय सुप्रसिद्ध पर्वतारोही और साहसिक खेलों के प्रेमी चन्द्रशेखर पांडे को है।

इस दौड़ का खास उद्देश्य पर्यावरण और प्रकृति के बीच संतुलन कायम करना है। पर्यावरण के प्रति मित्रता निभाने का प्रयास इस पूरी रेस में किया जाता है। सभी धावक दौड़ते समय या वहां ठहरते समय न केवल पर्यावरण का ख्याल रखते हैं बल्कि हिमालय पर्वत पर बिखरे कूड़ा-कचरे को भी साफ करते हैं।

चन्द्रशेखर पांडे ने 12 से 27 अक्तूबर 1991 को हिमालयन रन एंड ट्रैक की शुरुआत करवाई थी। 1995 से इस दौड़ के तीसरे दिन हिमालयन रन एंड ट्रैक के साथ-साथ 'माउंड एवरेस्ट चैलेंज मैराथन' का भी आयोजन किया जाता है। इस मैराथन को विश्व प्रसिद्ध खेल पत्रिकाओं, खास तौर से इंग्लैंड की 'रनर्स वर्ल्ड' ने 'दुनिया की सबसे खुबसूरत मैराथन दौड़' आंका है।

पांच दिन की हिमालयन रन एंड ट्रैक अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा पश्चिम बंगाल के दार्जीलिंग जिले में माउंट एवरेस्ट और कंचनजंघा के साये में होती है। सभी धावक पहले साढ़े छह हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित मिरिक में ठहरते हैं। वहां से भारत-नेपाल सीमा पर स्थित मानेभंजन से यह दौड़ शुरू होती है। पहला पड़ाव है साढ़े 12 हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित संदकफू। इसके सामने ही माउंट एवरेस्ट और कंचनजंघा अपने भव्य स्वरूप में नजर आते हैं। डेढ़ सौ किलोमीटर की इस दौड़ का अगला पड़ाव हैं रिम्बिक (RIMBIK) यह दौड़ पांच दिन में पूरी होती है। पर्यावरण की देखभाल करने के लिए इस रेस को तीन ए (ट्रिपल ए) ग्रेड भी दिया गया है और इस रेस की वीडियो क्लिपिंग के कारण यहां आने वाले पर्यटकों से भी भारी आय हुई है। वर्ष 2000 में इसका दसवां आयोजन हुआ। यह 4 से 10 नवंबर के बीच आयोजित हुआ। इसमें इस वर्ष ब्रिटेन, अमरीका, जापान, आस्ट्रेलिया, हांगकांग, जर्मनी आदि के 70 से अधिक धावकों ने भाग लिया।

आम चुनाव, 1999

वर्ष 99 में देश में 13वीं लोकसभा के गठन के लिये आम चुनाव सबसे महत्वपूर्ण घटना रही। अब तक के संसदीय चुनावों में यह चुनाव सर्वाधिक लंबे समय में पूरे हुए। यह चुनाव एक महीनें से अधिक समय व पांच चरणों में पूरे किये गये। निर्वाचन आयोग के लिये यह एक बड़ा कार्य था कि इतने विशाल देश में अपर्याप्त सुरक्षा दलों के साथ निर्वाचन कार्य को निष्पक्ष पूरा करवाना। पांच सितंबर को जब पहले चरण के लिये मतदान हुआ तब देश उस समय भी कारगिल की छाया में था। और इस बार तो चुनाव ऐसे समय हो रहे थे जबकि मानसून अपनी चरम सीमा पर था, बाढ़ के कारण अनेक स्थानों पर निर्वाचन की तिथियां अंतिम समय में बदलनी पड़ीं। विवाद भी उभरे। निर्वाचन आयुक्त की आचार संहिता की चुनावी सर्वेक्षण वैध नहीं हैं को उच्चतम न्यायालय ने गलत ठहरा दिया।

चुनाव संबधी कुछ आंकड़ें निम्न हैं। वस्तुगत आंकड़े: कुल मतदाता 62.04 करोड़; मतदान प्रतिशत 59.7%; निर्वाचन बूथ 7,73,708; कुल प्रत्याशी 4648; महिला प्रत्याशी 277; निर्वाचित महिला प्रत्याशी 46; चुनाव खर्च 845 करोड़ रुपये; इलेक्ट्रानिक मशीनें प्रयुक्त की गईं 46 निर्वाचन क्षेत्रों में; सर्वाधिक मतदाताओं का क्षेत्र बाहरी दिल्ली (31,01,838 मतदाता); निम्नतम मतदाताओं का क्षेत्र लक्षद्वीप (3,53,598 मतदाता); सर्वाधिक अंतर से जीत 3,53,598 मत; नागालैंड से कांग्रेस के संगतम; निम्नतम अंतर से जीत 105 मत; बी.एस.पी. के प्यारेलाल; शंखवार, घाटमपुर (उ.प्र.); कम आयु की सांसद सुश्री भावना पुडालिक राव शिवसेना, वाशिम महाराष्ट्र; दो जगह से निर्वाचित प्रत्याशी सुश्री सोनिया गांधी; अमेठी (उ.प्र.) व वेल्हारी (कनार्टक) मुलायम सिंह यादव संभल व कन्नौज (उ.प्र.)।

अब तक के केंद्रीय मंत्रिमंडल

क्रम	प्रधानमंत्री	शपथ	काल	कुल दिवस	कुल	लोकसभा
1.	जवाहरलाल नेहरू	15-8-47	1	895		संविधान सभा
2.	जवाहरलाल नेहरू	26-1-50	2	100		अंतिम संसद
3.	जवाहरलाल नेहरू	6-5-50	3	738		अंतिम संसद
4.	जवाहरलाल नेहरू	13-5-52	4	1800		1
5.	जवाहरलाल नेहरू	17-4-57	5	1819		2
6.	जवाहरलाल नेहरू	10-4-62	6	778	6130	3
7.	गुलजारी लाल नंदा*	27-5-64	1	13		3
8.	लालबहादुर शास्त्री	9-6-64	1	581	581	3
9.	गुलजारी लाल नंदा*	11-1-66	2	13	26	3
10.	इंदिरा गांधी	24-1-66	1	413		3
11.	इंदिरा गांधी	13-3-67	2	1466		4
12.	इंदिरा गांधी	18-3-71	3	2198	4077	5
13.	मोरारजी भाई देसाई	24-3-77	1	856	856	6
14.	चरण सिंह	28-7-79	1	170	170	6
15.	इंदिरा गांधी	14-1-80	4	1752	5829	7
16.	राजीव गांधी	31-10-84	1	61		[illegible]
17.	राजीव गांधी	31-12-84	2	1797	1858	[illegible]
18.	विश्वनाथ प्रताप सिंह	2-12-89	1	343	343	[illegible]
19.	चंद्रशेखर	10-11-90	1	223	223	[illegible]
20.	पी.वी. नरसिम्हाराव	21-6-91	1	1791	179[illegible]	[illegible]
21.	अटल बिहारी वाजपेई	16-5-96	1	16		
22.	एच.डी. देवगौड़ा	1-6-96	1	324	[illegible]	
23.	इंदर कुमार गुजराल	21-4-97	1	332	[illegible]	
24.	अटल बिहारी वाजपेई	19-3-98	2	[illegible]	[illegible]	[illegible]
25.	अटल बिहारी वाजपेई	13-10-1999	3	[illegible]	[illegible]	[illegible]

15-8-1947 से 13-10-2000 तक कुल दिवस, अंतरिम प्रधानमंत्रियों के दिवस [illegible] * [illegible]

प्रसिद्ध व्यक्तियों के जीवन के रोचक प्रसंग

भारत के कितने प्रधानमंत्री हुए हैं जिनके बच्चों ने भारत के विश्वविद्यालयों में पढ़ाई की है? पहले किस प्रधानमंत्री का बेटा कालेज गया? हममें से कितनों को मालूम है कि कालेज जाने वाला प्रधानमंत्री का बेटा सरकारी कार या किसी पिछलग्गू की कार से न जाकर साधारण बस से कालेज जाता था? विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन में अनेक ऐसे प्रसंग आये हैं जो खासे रोचक हैं। अपने जमाने की सेक्स बम मार्लिन मुनरो जिन्होंने प्रेसीडेंट कैनेडी के जन्मदिवस पर हैप्पी बर्थडे गीत गाया था ने शायद निजी कुंठाओं के चलते आत्महत्या कर ली थी। जुबीन मेहता जो संगीत की महानता के पर्याय बने बचपन से ही संगीत के प्रति लगाव रखते थे। उपहार में मिले ड्रम स्टिक को वे अपने तकिये के नीचे रख कर सोते थे। नेल्सन मंडेला जिन्हें पूरा विश्व दक्षिण अफ्रीका का महानतम व्यक्ति मानता है को 27 वर्ष जेल में काटने पड़े। लेकिन सुर्खियों में एक बार फिर आये, लेकिन इस बार कोई राजनीतिक कारण से नहीं वरन 80 वर्ष की आयु में ग्रेका मैशल से विवाह करने के कारण। ग्रेका मोजाम्बिक के राष्ट्रपति सैमोरा मैशेल की विधवा हैं। सैमोरा का निधन वायुयान दुर्घटना में हो गया था। इस प्रकार ग्रेका मोजाम्बिक की प्रथम महिला और दक्षिण अफ्रीका की प्रथम महिला बनीं।

यहां हम कुछ महान व्यक्तियों के जीवन के रोचक प्रंसगों की जानकारी दे रहे हैं।

ब्रुनाई के सुल्तान

एक छोटे से देश के महाराजा हाल ही में विश्व के सबसे धनी व्यक्ति थे। हस्सनल बोलकियाह की संपत्ति 37 अरब डालर की है। उन्होंने अपना जीवन विशेष शैली से जिया। उनके महल में 1700 कमरे हैं, और नलके सोने के है, सीढ़ियों पर भी सोने का मुलम्मा चढ़ाया गया है। उनके तबेले में 200 अर्जेन्टाइनी घोड़े है। उनके राज्य में नागरिकों को प्रकार का कर नहीं देना पड़ता है और स्कूल व स्वास्थ्य सेवा निशुल्क है। एक बार सुल्तान जब विदेश यात्रा पर थे तो उन्हें यादगार अनुभव हुआ। उन्हें एक सुरक्षा गार्ड ने न पहचानने के कारण दरवाजे पर रोक दिया और परिचयपत्र दिखाने को कहा, सुल्तान ने जेब से बुनाई का करेंसी नोट उसे दिया जिसपर सुल्तान की तस्वीर छपी थी।

विश्व बाजार में तेल के दाम में मंदी आने के कारण आज ब्रुनाई के सुल्तान विश्व के धनी लोगों की सूची में तीसरे स्थान पर है।

सर क्लिफ रिचर्ड

ब्रिटेन के महान पाप सितारे सर क्लिफ रिचर्ड को पोप से बेहतर इसाई माना जाता है। दिसंबर 1999 में क्रिश्चियन रेडियो द्वारा इसाई खरीददारों द्वारा कराये गये एक सर्वेक्षण से मालूम पड़ा कि उनको जानने वालों की संख्या पोप से भी अधिक है। पाप के क्षेत्र में रिचर्ड पहले सितारे थे जिन्हे नाइट (सर) की उपाधि से सम्मानित किया गया था। उल्लेखनीय है कि रिचर्ड का जन्म भारत के उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में हुआ था। उनका वास्तविक नाम हैरी वेब था। उनका नया गीत *मिलियेनियम प्रेयर* की बिक्री जोर–शोर से हो रही है। उन्होंने अपना पहला हिट 1958 में *'मूव इट'* दिया था, पिछले चार दशकों में वे शीर्ष स्थान पर बने हुए हैं।

मैडलीन अल्ब्राइट

अमरीका की सेक्रेटरी आफ स्टेट बनने वाली पहली महिला अल्ब्राइट अपनी कार्यकुशलता से विश्व में धाक जमा चुकी हैं। सुश्री अल्ब्राइट रूसी भाषा में पारंगत हैं और चेक, पोलिश आदि भाषायें भी जानती हैं।

युरोप के धनी

ब्रिटेन के सबसे धनी लोगों की सूची में महारानी एलिजाबेथ का नाम पहले स्थान पर नहीं है, पहले स्थान पर हैं फार्मूला नम्बर वन रेसिंग के प्रमुख बर्नी एक्लिस्टन। 'यूरो बिजनेस मैगजीन' के अनुसार उनकी संपत्ति 3.8 अरब डालर है। महारानी एलिजाबेथ 3.2 अरब डालर की संपत्ति के साथ दूसरे स्थान पर हैं। एक्लिस्टन युरोप के धनी लोगों की सूची में 48वें स्थान पर है। पहले स्थान पर लोरियाल कास्मेटिक फर्म के मालिक लिलियन बेटेन कोट (14.6 अरब डालर) हैं। महारानी का स्थान इस सूची में 60वां है। फ्रांसीसी लिलियाने के बाद दूसरे स्थान पर हैं जर्मनी के सुपरमार्केट श्रृंखला के मालिक थियो अलबर्कट (व्यक्तिगत संपत्ति 11 अरब डालर)। इनके बारे में सबसे रोचक बात यह है कि यह अपनी जिंदगी से खुश नहीं हैं। वे छुप कर रहते हैं, उन्हे हमेशा डर लगा रहता है कि उनका अपहरण हो जायेगा। पिछले 21 वर्षों से उन्हें सार्वजनिक रूप से नहीं देखा गया है। फ्रांस के सर्वाधिक धनी (9.2 अरब डालर) फैंकोइस पिनो हैं। विशाल व्यवसाय के मालिक जिनके अनेक उत्पाद बाजार में है का अपने बारे में कहना है कि उनकी योग्यता ड्राइविंग लाइसेंस के बराबर है।

सबसे कम आयु के धनी हैं तीन वर्षीय अलेगरा बेरसाश। यह गुआनी बरसेस की भतीजी हैं। बरसेस की 97 में गोली

मार कर हत्या कर दी गई थी।(1.85 अरब डालर)। ब्रिटेन के प्रापर्टी किंग पाल रेमंड कुछ नहीं से अरबपति (2.4 अरब डालर) बने हैं। बचपन में लंदन के सोवो जिले में एक छोटे से होटल में एक पौंड प्रतिदिन के वेतन पर बरतन मांजते थे। आज उन्हें एक अश्लील साहित्य लिखने वाला माना जाता है, और पाल साहब इससे इंकार भी नहीं करते हैं।

यूरोप के राजघरानों में सबसे धनी कौन है, लिचटिंस्टीन के राजकुमार हांस आडम (4.783 अरब डालर) का नाम आता है। याद रखिये इस प्रायद्वीप के 165 राजघरानों की सूची में इनका नाम छठे स्थान पर है।

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

सादगी की प्रतिमूर्ति बुद्धि का अथाह सागर और भारतीय प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम के प्रणेता अब्दुल कलाम का बचपन

रामेश्वरम में अखबार बेच कर जरूर बीता लेकिन अंतरिक्ष विज्ञान में महानतम बनने के स्वप्न को न केवल संजोये रखा बरन पूरा भी किया। मई 1998 में पोखरण में दूसरे परमाणु परीक्षण उन्हीं ही की अध्यक्षता में किये गेय थे। स्व.सी.वी. रमन के बाद वे दूसरे वैज्ञानिक हैं जो कि भारत रत्न से सम्मानित किये गये। रक्षामंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार पद पर कार्य करने के बाद अब वे देश के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार पद (कैबिनेट मंत्री का दर्जा) पर कार्य कर रहे हैं। उनकी पुस्तक इंडिया 2020 – ए विजन फार दी न्यू मिलियेनियम' में स्वप्न देश अर्थात सन 2020 में भारत अति उन्नतदेश हो जायेगा की कल्पना की गई है।

बारबरा कार्टलैंड

प्रसिद्ध लेखिका जिन्होंने 635 उपन्यास लिखे जिनकी 650 मिलयन प्रतियां विश्व भर में बिकीं। वर्तमान में सबसे अधिक उनके उपन्यास बिकते हैं। दिवंगत अगाथा क्रिस्टी के अपराध उपन्यास 44 भाषाओं में अनूदित हुए हैं और उनकी 2 अरब प्रतियां बिक चुकी हैं।

आंग सान सु ची

म्यानमार की नोबल शांति पुरस्कार से सम्मानित सु की ने दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ाई की है। उनकी मां भारत में अपने देश की राजदूत थीं और सु की ने दिल्ली के लेडी श्री राम कालेज में दाखिला लिया। इस कालेज के लिये गर्व की बात है कि इसकी एक छात्रा को नोबल पुरस्कार मिला है। सु की के पिता जनरल आंग सान म्यानमार के नेता थे और उनकी हत्या कर दी गई थी। सुकी को म्यानमार के सैनिक शासन ने 20 जुलाई 1989 से 10 जुलाई 1995 तक घर में नजरबंद रखा जो कि इस देश का सबसे अधिक अवधि की नजरबंदी है। सांग सु ची के पति का हाल ही में लंदन में कैंसर के कारण निधन हो गया और सू की उनके अंत्येष्टि पर इस भय से लंदन नहीं जा पाईं, कि सैनिक शासन दुबारा उन्हें अपने देश आने नहीं देगा।

सर्वाधिक विवाह, बच्चे

जर्मनी के चांसलर गेरहाड श्रोडर विश्व के अकेले प्रधानमंत्री है जिन्होंने चार विवाह किये। उनकी चौथी पत्नी का नाम डोरिस है। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर भी चौथे बच्चे के पिता होने वाले हैं , ब्रिटेन में वे पहले प्रधानमंत्री हैं जिनकी इतनी संताने हैं। भारत में बिहार की मुख्यमंत्री राबड़ी देवी 9 बच्चों की मां हैं, शायद वे विश्व की पहली राजनीतिज्ञ हैं जिनके इतने सारे बच्चे हों।

प्रिंस रोजेस नेल्सन

पाप स्टार प्रिंस का पहला एल्बम 1978 में 'फार यू' प्रिंस के नाम से आया था। उसके बाद कहा जा सकता है कि उन्होंने अनेक नामों से एल्बमों का कीर्तिमान बनाया। टोरा-टोरा, कोको, एलेक्जेंडर, विक्टर, कैमिले, क्रिस्टोफर और जैरी के नाम से उनके एल्बम आये।

अमर्त्य सेन

अमर्त्य नाम गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर का दिया हुआ है। शांतिनिकेतन में पैदा होकर यह बालक बड़ा होकर केवल 23 वर्ष की आयु में एकेडमी बर्ल्ड को स्तब्ध करते हुए जादवपुर विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग का प्रमुख बन गया। दिल्ली स्कूल आफ इकोनामिक्स और लंदन स्कूल आफ इकोनोमिक्स में भी उन्होंने पढ़ाया है।

ट्रिनिटी कालेज, कैम्ब्रिज के पहले गैर ब्रिटेनवासी और पहले अश्वेत प्रमुख अमर्त्यसेन 1998 में बने। और इसी वर्ष उन्हे अर्थशास्त्र के नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अमर्त्य ने तीन शादियां कीं, उनकी पहली पत्नी नब्रीता देव प्रसिद्ध कवि थीं। नब्रीता ने दो लड़कियों को जन्म दिया। दूसरी पत्नी इटली की अर्थशास्त्री इवा कोलोरिन, विवाह के आठ वर्ष के बाद दिवंगत हो गईं। उनके दो संताने हैं। अमर्त्य की तीसरी पत्नीं इम्मा रोथसील्ड कैम्ब्रिज में इतिहासज्ञ हैं। सेन हर वर्ष शांतिनिकेतन आते हैं और अपना समय मित्रों के साथ पुराने ढाबे पर चाय पीने में व्यतीत करते हैं।

बेंजामिन नेतानयाहु

इजराइल के सबसे कम आयु में प्रधानमंत्री बनने वाले बेंजामिन ने विश्व में असीम लोकप्रियता अर्जित की। उनके बड़े भाई जोनाथन युगांडा में अपहृत किये विमान के यात्रियों को बचाने में कमांडो अभियान में शहीद हो गये थे, बेंजामिन ने उनकी स्मृति में जोनाथन इंस्टीट्यूट की स्थापना की जिसका उद्देश्य आतंकवाद के विरुद्ध मुहिम रखना है। बेंजामिन 'बिबि' के नाम से लोक प्रिय थे, उन्होंने तीन विवाह किये लेकिन किसी भी के साथ पारिवारिक सुख से वंचित रहे।

माइकल जैक्सन

पाप संगीत का पर्याय बन चुके माइकल जैक्सन ने 1984 में एक ही साथ 8 ग्रैमी पुरस्कार जीते थे जो अभी तक किसी

अन्य कलाकार के लिये एक बड़ी चुनौती है। दस वर्ष बाद उनका एल्बम थ्रिलर रिलीज हुआ और इसकी बिक्री पूरे विश्व में 50 मिलियन की हुई। उनके एकल एल्बम की 150 मिलियन प्रतियां बिक चुकी हैं जोकि बीटिल्स की तुलना में 20 गुना अधिक है।

जैक्सन के पास सबसे कीमती ओस्कर है। उन्होंने सर्वश्रेष्ठ ओस्कर फिल्म पुरस्कार जीतने वाले निर्माता डेविड ओ. सेल्जनिक को उनकी फिल्म ग्रेस विध विंड के लिये न्यूयार्क शहर के सूतबी को 1.54 मिलियन डालर दिये।

एल्विस प्रेस्ले

संगीत सितारे प्रेस्ले का निधन अगस्त 1997 में हुआ था। पूरी दुनिया में 480 से अधिक एल्विस प्रस्ले फैन क्लब फैले हुए थे। इतने फैन क्लब किसी भी अन्य कलाकार के नसीब में नहीं रहे। याद रखने की बात यह है कि प्रेस्ले ने किसी और भाषा में गीत रिकार्ड नहीं करवाये। उनका पुराने घर ग्रेसलैंड पर उनके अंतिम संस्कार के समय दुनिया भर से 700,000 लोग आये।

लाल बहादुर शास्त्री

भारत के सिवाये किसी भी एशियाई देश में लाल बहादुर शास्त्री जैसा नम्रता की प्रतिमूर्ति, देशभक्त प्रधानमंत्री नहीं हुआ है। उनकी प्रतिबद्धता की आज मिसाल दी जा सकती है कि तमिलनाडु में अरियालूर में ट्रेन दुर्घटना के तुरंत बाद ही उन्होंने रेलमंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया था।

यह वह मानव थे जो कि प्रधानमंत्री बनने के बाद भी अपने उन दिनों को नहीं भूले थे जब 2.50 रुपये मासिक वेतन पर गुजारा करते थे।

श्री जी.बी. पंत के बाद 1961 में जब वे गृह मंत्री बने तो कहा जाता था गृह मंत्री जिसका अपना कोई घर नहीं है, क्योंकि श्री लाल बहादुर शास्त्री के पास निजी कोई घर नहीं था।

लाल बहादुर शास्त्री भारत के पहले प्रधानमंत्री हुए हैं जिनका बेटा विश्वविद्यालय गया। उनका बेटा सेंट स्टीफेन कालेज कार से नहीं जाता था बल्कि बस से जाता था।

एक बार लाल बहादुर शास्त्री आगरा ट्रेन से गये, मंत्री, पुलिस अधिकारी और अन्य विशिष्ट गण प्रथम श्रेणी के डिब्बे की ओर उनका स्वागत करने गये, लेकिन श्री शास्त्री को तृतीय श्रेणी के डिब्बे से उतरते देखकर सभी स्तब्ध रह गये।

उन्हें 'शास्त्री' क्यों कहा जाता था? उन्होंने काशी विद्यापीठ से दर्शनशास्त्र में शास्त्री परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी।

उन्होंने सर्वेंट आफ पीपुल्स सोसाइटी में गहन प्रशिक्षण लिया था। इस सोसायटी का नियम था जिसके अंतर्गत शपथ लेनी पड़ती थी कि कम से कम 20 वर्ष तक सेवा करनी होगी और सारा जीवन सादगी से जीना होगा। श्री लालबहादुर शास्त्री ने उस समय ली शपथ को पूरी जिंदगी का अपना ध्येय बना लिया।

पोप जान पाल द्वितीय

इस शताब्दि के सबसे कम आयु के और 456 वर्ष के इतिहास में प्रथम गैर इतालवी जान पाल 2 सर्वाधिक यात्रा करने वाले पोप हैं। वे भारत की तीन यात्रायें कर चुके हैं। उन्होंने किसी भी विगत पोप की तुलना में सर्वाधिक व्यक्तियों को संत का दर्जा दिया। जनवरी 99 तक 283 लोगों को उन्होंने कैनोनाइज्ड और 805 लोगों को बीटिफाइड (ब्लेस्ड की पदवी) किया। यह संख्या विगत के पोप द्वारा संत का दर्जा दिये जाने के कुल योग का 10 गुना अधिक है।

अशोक कुमार

भारतीय सिनेमा के सबसे वरिष्ठ अभिनेता अशोक कुमार ने अपना फिल्मी कैरियर की शुरुवात 'जीवन नैय्या' (1936) से शुरु की थी, फिल्म 'किस्मत' से उनको सबसे अधिक प्रसिद्धि मिली और इस फिल्म को भी अपार सफलता मिली थी। उनके सबसे छोटे भाई किशोर कुमार ने पहले हास्य अभिनेता के तौर पर अपनी पहचान बनाई, वे एक अच्छे गायक भी थे, और शीघ्र ही महान पार्श्वगायक के रूप में स्थापित हो गये। छोटे भाई अनूप कुमार को अभिनय के क्षेत्र में अपेक्षित सफलता नहीं मिली।

अशोक कुमार की मंगनी केवल इस बात पर टूट गई थी क्योंकि लड़की वालों को पता लग गया कि वे फिल्म के क्षेत्र में हैं।

लुसिनो पावारोटि

ओपेरा सिंगर के क्षेत्र में शीर्ष पर पंहुचने वाली लुसिनो का पहला एल्बम 1961 में आया था। अब तक उनके 60 मिलयन एल्बमों की बिक्री हो चुकी है। 1988 में बर्लिन में उनके कार्यक्रम के बाद दर्शक एक घंटा 7 मिनट तक तालियां बजाते रहे थे। उनका वार चाइल्ड चैरिटी कंसर्ट 'पावारोटि एंड फ्रेंड्स जिसे जून 99 में मंचित किया गया था से 73.4 मिलयन डालर की आय हुई।

कपूर परिवार

पृथ्वी राज कपूर सबसे पहले पर्दे पर 1929 में नजर आये। उनके बेटे राज कपूर, शम्मी कपूर और शशि कपूर ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। उनकी परपौत्री करिश्मा कपूर आज की सफल अभिनेत्री है। कपूर खानदान का वैवाहिक संबंध अमिताभ बच्चन, रमेश सिप्पी, मनमोहन देसाई और ब्रिटेन की अभिनेत्री फेलिसिटी कौंडाल से रहा।

डा. राजेंद्र प्रसाद

भारत के प्रथम राष्ट्रपति जिन्हें लोग आदर से राजेंद्र बाबू कहते थे, अपने यौवनकाल में सर्वश्रेष्ठ छात्र थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा में प्रथम रहे, स्नातक परीक्षा में भी प्रथम रहे और एम.एल. परीक्षा भी में भी प्रथम रहे थे। छात्र जीवन में सदैव प्रथम आने वाली यह महान विभूति राजनीति मे जब आई तो यहां भी अपने प्रखर मेधा से लोगों के लिये प्रेरणा बन गई। राजेंद्र बाबू अपने जीवन काल में ही नव भारत के रत्न बन गये।

राष्ट्रीय घटनाएं, 2000

जनवरी

1. विदेश मंत्री जसवंत सिंह ने कहा कि यात्रियों की जान बचाने के लिये आइ.सी. 814 विमान के अपहरणकर्ताओं की मांग को मानने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था, उन्होंने पाकिस्तान का इस कांड में लिप्त होना कहा।

2. पूर्वी दिल्ली की दो दुकानों में आग लगने से दम घुटने से 6 बच्चों समेत 10 मरे; असम में उग्रवादियों ने तेल गैस पाइप लाइन उड़ाई।

3. प्रधानमंत्री अटल विहारी वाजपेई ने प्रमुख देशों से पाकिस्तान को आतंकवादी देश घोषित करने की अपील की।

5. रिहा उग्रवादी पाकिस्तान पंहुचे; उत्तर भारत में कड़ाके की ठंड से मरने वालों की संख्या 241 हुई।

6. राजधानी में पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर खड़ी रेलगाड़ी के डिब्बे में बम विस्फोट से 12 घायल; चर्चित बीमा बिल को राष्ट्रपति ने मंजूरी दी।

7. कारगिल घुसपैठ पर गठित सुब्रह्मण्यम समिति की रपट प्रधानमंत्री को सौंपी गई।

8. बिहार, हरियाणा व उड़ीसा में विधानसभा चुनाव 12, 17 व 22 फरवरी को, मतगणना 25 फरवरी को होगी; तिब्बत की निर्वासित सरकार ने तीसरे सर्वोच्च लामा करमापा के धर्मशाला पंहुचने की पुष्टि की; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के न्यासी मंडल का पुर्गठन, सोनिया गांधी अध्यक्ष पद से हटाई गईं।

9. बिहार में पूर्व रेलवे के पटना मोकमा रेल खंड के पंडारक स्टेशन पर राजधानी एक्सप्रेस से कट कर 11 मरे।

10. लखनऊ में विधानसभा के सामने उत्पीड़न से तंग आकर एक सिख युवक ने आत्मदाह किया।

11. बहुचर्चित धारावाहिक इंडियाज मोस्ट वांटेड के निर्माता सुहैब इलियासी की पत्नी अंजू इलियासी की रहस्मय परिस्थिति में मृत्यु।

12. 1984 के दंगो की जांच के लिये नया आयोग, पांच हवाई अड्डों को लीज पर देना और उड़ीसा के लिये विशेष पैकेज देने का सरकार का फैसला; टी.एस. कृष्णामूर्ति नये चुनाव आयुक्त नियुक्त किये गये।

13. कर्ण सिंह, अंबिका सोनी और ए.आर. किदवई राज्यसभा के लिये निर्वाचित।

14. सभी लघु बचत योजनाओं पर ब्याज दरों में कटौती की; राष्ट्रपति के.आर. नारायणन ने बाबा आम्टे को गांधी शांति पुरस्कार से सम्मानित किया

15. भोपाल नगर निगम अध्यक्ष के चुनाव में भा.ज.पा. पार्षदों की पिटाई के विरोध में केंद्रीय मंत्री उमा भारती ने कैबिनेट से त्यागपत्र दिया; उत्तर प्रदेश में विधुत अभियंताओं के हड़ताल पर जाने से प्रदेश अंधेरे में डूबा; दिल्ली सरकार ने पेट्रोल, डीजल, मिट्टी का तेल और रसोई गैस सहित 80 वस्तुओं पर बिक्रीकर में बढ़ोतरी की।

16. कश्मीर में बारामुला जिले में आतंकवादियों ने बिजली के ट्रांसमिशन टावर को उड़ाया।

17. खिलौनों में आर.डी.एक्स छिपा कर लाते तीन पाकिस्तानी एजेंट गिरफ्तार।

18. उत्तर प्रदेश सरकार ने आंदोलनकारी विद्युतकर्मियों के खिलाफ कड़े कदम उठाये; बेहतर वेतनमान की मांग कर रहे देश भर के समस्त गोदी कर्मचारी हड़ताल पर, कामकाज ठप्प।

19. भारत व अमरीका आतंकवाद के विरुद्ध कार्यदल बनाने को सहमत; भारत ने पाकिस्तान द्वारा इस्लामाबाद में भारतीय उच्चायोगकर्मी पी. मोजेज को भारत वापस भेजने के बाद पाकिस्तानी उच्चायोगकर्मी शबीर हुसैन शाह को 26 जनवरी तक भारत छोड़ने का आदेश दिया; सरकार ने दूरसंचार नियामक प्राधिकरण को भंग कर एक नया प्राधिकरण गठित करने का फैसला किया।

20. चुनाव आयोग ने समता पार्टी के विधानसभा चुनावों के लिये अधिकृत फार्मों को हस्ताक्षरित व जारी करने के सिलसिले में समता पार्टी के जार्ज फर्नान्डीज व नितीश कुमार समेत 10 नेताओं की मान्यता समाप्त की।

21. जया जेटली समता पार्टी की अध्यक्ष चुनी गईं; फिल्म अभिनेता, निदेशक व निर्माता राकेश रौशन पर अज्ञात बंदूकधारियों ने गोली चलाकर घायल किया।

22. भारतीय सेना ने जम्मू क्षेत्र के चम्बा सब सेक्टर की रायपुर चौकी पर पाकिस्तान के हमले को विफल करते हुए 18 पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया; प्रधानमंत्री ने उग्रवाद की समस्या से झेल रहे पूर्वोत्तर राज्यों और सिक्किम के लिये समाजिक आर्थिक विकास के लिये 10,271 करोड़ रुपये के पैकेज की घोषणा की।

24. उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली और हरियाणा में औद्योगिक कचरा डालने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया; दिल्ली पुलिस के विशेष प्रकोष्ठ ने एक और पाक नागरिक को गिरफ्तार करके उसके कब्जे से विस्फोटक व नकली नोट बरामद किये।

25. गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या को देश को संबोधित करते हुए समाजिक अन्याय पर राष्ट्रपति ने चिंता जताइ; सरकार ने इंडियन एयरलाइंस के निजीकरण का फैसला।

26. गणतंत्र दिवस की परेड प्रारंभ होने के तुरंत पूर्व लालकिला मैदान में बम का पता चल जाने से बड़ा हादसा टला; भारतीय गणतंत्र की पचासवीं वर्षगांठ देश भर में धूमधाम से मनाई गई।

28. दिल्ली में पुलिस ने दो लोगों को गिरफ्तार करके 8 लाख रुपये के जाली नोट पकड़े; भारत की 19 वर्ष से कम

लड़कों की टीम ने श्रीलंका को पराजित करके युवा विश्व क्रिकेट कप जीता।

31. विख्यात अभिनेता के.एन. सिंह का 91 वर्ष की आयु में निधन; सात अभियुक्तों के आरोप मुक्त होने के साथ ही पांच वर्ष पुराना अति राजनीतिक महत्वपूर्ण हवाला कांड का पटाक्षेप।

फरवरी

1. संविधान समीक्षा के लिये आयोग बनाने का फैसला, उच्चतम न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायधीश एम.एन. वेंकटचलैया ने प्रस्तावित आयोग का अध्यक्ष बनने पर सशर्त सहमति दी; आस्ट्रेलियाई मिशनरी ग्राहम स्टेंस व उनके दो बेटों की हत्या के प्रमुख आरोपी दारा सिंह हिरासत में; प्रतिबंधित नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल आफ नागालैंड के महासचिव टी मुइवा को थाइलैंड की सरकार ने जाली पासपोर्ट से यात्रा करने के अपराध में एक वर्ष की सजा दी; प्रधानमंत्री ने पर्यटन मंत्री उमा भारती का त्यागपत्र स्वीकार किया।

2. एक विशेष अदालत द्वारा तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री सुश्री जयललिता को भ्रष्टाचार के मामले में सजा सुनाने के बाद भड़की हिंसा में तीन छात्रायें मरीं; कांग्रेस कार्य समिति की सदस्य सुश्री मीरा कुमारी ने पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से त्यागपत्र दिया; केंद्रीय सूचना मंत्रालय ने दीपा सिन्हा की फिल्म 'वाटर' को अनुमति दी।

3. प्रख्यात तबलावादक अल्ला रखा का 81 वर्ष की आयु मे निधन; उत्तर प्रदेश सरकार के राज्यपाल ने विवादास्पद धर्मस्थल विधेयक को मंजूरी न देकर राष्ट्रपति के पास भेजा।

4. वाटर फिल्म की शूटिंग भारी विरोध के कारण शुरू न हो पाई; रिटायर विंग कमांडर सतनाम सिंह के नई दिल्ली आवास से 150 किलो चरस पकड़ी गई।

5. सरकार ने पिछले 15 वर्षों में सभी रक्षा सौदों की जांच के आदेश दिये।

6. बनारस मे एक शिवसैनिक द्वारा आत्महत्या की कोशिश कुछ संगठनों द्वारा पत्थरबाजी करने के बाद फिल्म वाटर की शूटिंग रोकी गई।

7. वाराणसी जिला प्रशासन ने दीपा मेहता की विवादास्पद फिल्म वाटर पर क्षेत्र मे बिगडती कानून व्यवस्था के कारण दो सप्ताह की रोक लगाई; उस्ताद विलायत खां ने पद्म विभूषण सम्मान को यह कह कर स्वीकार करने से इंकार कर दिया कि सरकार यह पुरस्कार उनसे कनिष्ठों को पहले दे चुकी है और उसके बाद मे इसका देना उनका अपमान करना है।

9. मणिपुर में चुनाव से पहले उग्रवादियों ने घात लगाकर सेना के 10 जवान मार डाले; आयातित चीनी पर 60% शुल्क लगाने का फैसला; वाराणसी में बंद के दौरान आगजनी और झड़पों के बीच दीपा मेहता अपनी यूनिट समेत वापस लौटीं।

9. भारत और अमरीका अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद को रोकने और भारतीय विमान के अपहर्ताओं को संयुक्तरूप से पकड़ने को सहमत; उत्तर प्रदेश में दो मंत्रियों ने त्यागपत्र दिया; विश्व पुस्तक मेले मे हंस के संपादक व लेखक राजेंद्र यादव ने मनोरमा इयर बुक के हिंदी संस्करण का लोकार्पण किया।

10. जम्मू के निकट सियालदाह एक्सप्रेस में बम फटने से 10 मरे, सौ घायल।

12. बिहार में चुनाव के पहले चरण में व्यापक हिंसा, 17 पुलिसकर्मियों और दो अधिकारियों सहित 21 मरे, मणिपुर में चुनावी हिंसा मे 6 मरे, 70% मतदान; केरल के परिवहन मंत्री ए. नीललोहित दास नाडर जिन पर आई.ए.एस. महिला अधिकारी पर यौन शोषण का आरोप था ने त्यागपत्र दिया।

16. राजस्थान में 64 दिनों से चल रही कर्मचारी हड़ताल समाप्त; विश्व हिंदू परिषद ने वाटर फिल्म की शूटिंग कहीं पर भी न होने देने की धमकी दी।

17. अमरीकी राष्ट्रपति ने कहा कि अगर भारत व पाकिस्तान चाहेंगें तो वे मध्यस्थता करने के लिये तैयार हैं।

18. भोपाल में बजरंग दल का प्रतीकात्मक सम्मेलन प्रयास विफल, उमा भारती व गिरिराज किशोर हिरासत में लिये गये; कास्मीर घाटी में विस्फोट से दस जवानों समेत 11 मरे।

19. मुंबई से फिरोजपुर जा रही पंजाब मेल में दसखेड़ा और सावदा स्टेशनों के बीच भीषण आग लग जाने से 18 यात्री मरे; आंध्र प्रदेश में नक्सलवादियों ने विशाखापट्नम के पास अचानक धावा बोल कर 8 पुलिसवालों को मार डाला व इतनों को ही घायल कर दिया।

20. मध्य प्रदेश के नक्सल प्रभावित बस्तर जिले मे नारायणपुर के समीप नक्सलियों ने बारूदी सुंरग में विस्फोट कर 23 पुलिसवालों की जानें लीं; क्रिकेट कप्तान सचिन तेंदुलकर ने कप्तानी छोड़ने की घोषणा की।

22. चार राज्यों के विधानसभा चुनावों में मतदान के अंतिम दिन हिंसा में 18 मरे।

23. सरकार ने पेट्रोलियम पदार्थों के मूल्यों में वृद्धि के अपने फैसले को स्थगित किया।

24. कारगिल की जांच के लिये बनी सुब्रह्मण्यम समिति ने सुरक्षा प्रणाली की समीक्षा के लिये कहा; नई दिल्ली में वकीलों व पुलिस के बीच संघर्ष में अनेक घायल।

25. रेल बजट में यात्री किरायों में कोई बढ़ोत्तरी नहीं, माल भाड़े की ढुलाई में 5% की वृद्धि; उड़ीसा में बीजू जनता दल व हरियाणा में चौटाला को पूर्ण बहुमत, बिहार में राजदा व राजमा में कांटे की टक्कर।

26. दक्षिण अफ्रीका के साथ एकदिवसीय श्रृंखला व शरजाह में होने वाली त्रिकोणीय श्रृंखला के लिये सौरभ गांगुली भारतीय टीम के कप्तान घोषित।

27. बिहार मे रा.ज.द. विधायक नेता राबड़ी देवी व रा.ज.म. विधायक दल के नेता नितीश कुमार बने; असम के नलबाड़ी जिले में उल्फा उग्रवादियों ने एक बम विस्फोट के द्वारा वन एवं लोक निर्माण मंत्री नागेन शर्मा सहित चार लोगों की हत्या कर दी।

28. मणिपुर में सत्तारूढ़ युनाइटेड फ्रंट को बहुमत मिला।

29. वर्ष 2000 का बजट वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा ने प्रस्तुत किया, आयकर अधिभार उर्वरक के दाम बढ़े, सूचना प्रौद्यगिकी को राहत।

मार्च

1. बिहार में सरकार बनाने के लिये राजमा के नितीश कुमार और राजदा की राबड़ी देवी ने सरकार बनाने का दावा किया;

2. उत्तर प्रदेश में जाटों को आरक्षण सुविधा मिलेगी;

हरियाणा में मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला समेत 11 मंत्रियों ने शपथ ली; उड़ीसा में राज्यपाल ने बीजू जनता दल के नवीन पटनायक को सरकार बनाने के लिये आमंत्रित किया।

3. बिहार में राज्यपाल विनोद पांडे ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन विधायक दल के नेता नितीश कुमार को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई; विरोध में राष्ट्रीय जनता दल ने बिहार बंद का आह्वान किया; जम्मू से दिल्ली आ रही बस में बम विस्फोट से 9 मरे, 6 घायल।

4. बिहार विधानसभा की बैठक सात मार्च से, नितीश 10 मार्च से पूर्व विश्वास मत प्राप्त करेगें।

5. बिहार बंद के दौरान अनेक स्थानों पर हिंसा और तोड़फोड़ से रेल सेवायें प्रभावित।

6. राजगा के घटक दलों ने सरकार से यूरिया व खाद्यान्नों की कीमतों में वृद्धि वापस लेने की मांग की; बिहार के मुद्दे को लेकर सदन में गतिरोध जारी।

7. पश्चिम बंगाल में वाममोर्चा सरकार से भाकपा ने हटने का फैसला किया; आंध्र प्रदेश के पंचायती राज्य मंत्री ए. माधव रेड्डी की बारूदी सुरंग द्वारा हत्या।

8. गुजरात सरकार ने संघ संबधी विवादास्पद परिपत्र वापसे लिया; तमिलनाडु विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष और अखिल भारतीय अन्ना द्रमुक के नेता सेदापत्ती आर. मुतैया और उनके दो बेटों को विशेष अदालत ने दो वर्ष के सश्रम कारावास की सजा सुनाई।

9. बिहार विधानसभा में कांग्रेस पार्टी के सदानंद सिंह के अध्यक्ष चुने जाने के साथ ही नवनियुक्त मुख्यमंत्री नितीश कुमार को झटका।

10. बिहार के मुख्यमंत्री नितीश कुमार ने त्यागपत्र दिया, राजद ने सरकार बनाने का दावा किया; हिंदी के जाने माने लेखक निर्मल वर्मा और पंजाबी लेखक गुरदयाल सिंह को संयुक्त रूप से ज्ञानपीठ पुरस्कार; कुप्हल्ली सीतारामय्या सुदर्शन राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के नये सरसंघचालक बने।

11. बिहार में राबड़ी देवी ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली, बहुमत साबित करने के लिये 10 दिन का समय।

12. रक्षा मंत्री फर्नाडीज ने कहा कि खुफियातंत्र को मुस्तैद करने के लिये विशेषज्ञ दल गठित किया जायेगा; कर्नाटक में 7 लोगों को जिंदा जला दिया गया।

13. अकाल तख्त के जत्थेदार ज्ञानी पूरन सिंह ने मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल को निर्देश दिया कि बीबी जागीर कौर को एसजीपीसी के अध्यक्ष पद से हटा दें; ट्राई विधेयक को लोकसभा की मंजूरी; कांग्रेस राबड़ी सरकार में शामिल होगी।

14. श्रीनगर में सुरक्षा बलों ने दो अलग-अलग घटनाओं में उग्रवादी गुट हिजबुल मुजाहिदीन के सौ से भी अधिक हत्या में वांछित उग्रवादी अब्दुल हमीद गादा उर्फ बबर खान समेत 6 उग्रवादियों को मारने में सफलता पाई।

15. दिल्ली सरकार ने 24 फरवरी को वकीलों पर लाठी चार्ज करने वाले तीन सिपाहियों को निलंबित कर दिया।

16. बिहार में राबड़ी देवी सरकार को विश्वास मत मिला; केंद्रीय सरकार ने सार्वजनिक उपक्रमों के कर्मचारियों के लिये स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति योजना को मंजूरी दी; दिल्ली के सदर बाजार में बम फटने से आठ घायल, दिल्ली में [illegible]

आतंकवादियों से भारी मात्रा में आर.डी.एक्स. व हथियार बरामद

17. भारत ने दक्षिण अफ्रीका को पांच एक दिवसीय क्रिकेट मैच श्रृंखला के चौथे मैच को जीत कर श्रृंखला जीती; बिहार के राज्यपाल ने पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव पर मुकदमे की अनुमति दी, मुख्यमंत्री राबड़ी देवी सह अभियुक्त; पांडिचेरी में विकल्प सरकार बनाने के लिये टीएमसी कांग्रेस को समर्थन देने के लिये तैयार।

18. राज्यसभा के लिये केंद्रीय मंत्री राम जेठमलानी, अरुण जेटली, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अर्जुन सिंह और फिल्म अभिनेता दिलीप कुमार सहित 23 लोग निर्विरोध निर्वाचित।

19. अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन अपने शिष्टमंडल के साथ पांच दिवसीय राजकीय यात्रा पर नई दिल्ली पंहुचे; विप्रो साफ्टवेयर कंपनी के संस्थापक अजीम प्रेमजी दुनिया के तीसरे धनी व्यक्ति।

21. भारत और अमरीका के बीच 22 वर्ष के बाद ऐतिहासिक शिखर वार्ता के दौरान अमरीका ने भारत के साथ स्थाई साझेदारी के रिश्ते का संकल्प लिया; अमरीकी राष्ट्रपति की भारत यात्रा की पूर्व संध्या पर विदेशी उग्रवादियों ने दक्षिण कश्मीर में 35 सिखों की हत्या कर दी; पी. षणमुगम पांडिचेरी के नये मुख्यमंत्री बने।

22. रसोई गैस व किरोसिन के दामों में भारी वृद्धि; श्रीनगर में सीमा सुरक्षा बल के शिविर को सैन्यबलों ने मुक्त कराया, दो उग्रवादी मारे गये।

23. संविधान समीक्षा के लिये आठ क्षेत्रों की पहचान की गई; जम्मू में कर्फ्यू के बावजूद कत्ले आम के विरुद्ध सिखों ने जुलूस निकाला; अमरीकी राष्ट्रपति क्लिंटन राजस्थान पंहुचे।

24. राष्ट्रपति क्लिंटन ने कहा कि अगर पाकिस्तान ने भारत के साथ लड़ाई छेड़ी तो उसे मदद नहीं मिलेगीअमरीकी राष्ट्रपति क्लिंटन ने हैदराबाद में अनेक स्थानों को देखा; अमरीकी राष्ट्रपति क्लिंटन भारत यात्रा के अंतिम चरण के दौर में मुबंई पंहुचे; अनंतनाग हत्याकांड में लिप्त एक उग्रवादी पकड़ा।

25. गिरफ्तार उग्रवादी की सूचना पर सुरक्षा बलों ने सिक्खों के हत्याकांड में लिप्त पांच विदेशी उग्रवादियों को मार गिराया; अमरीकी राष्ट्रपति क्लिंटन ने कहा कि अगर सीमा पर हमले जारी रहे तो पाक हमदर्दी खो देगा।

26. धर्मस्थल में छिपे उग्रवादियों की गोलीबारी में भारतीय सेना के मेजर का निधन; प्रधानमंत्री अटल बिहार वाजपेई सितंबर में अमरीका की यात्रा पर जायेंगें।

27. दिल्ली के बजट में कोल्ड ड्रिंक व पान मसालो पर बिक्रीकर बढा; पांडिचेरी में षणमुगम सरकार ने विश्वास मत प्राप्त किया।

28. धारावाहिक मोस्ट वांटेड के निर्माता सुहेब इलियासी को पुलिस ने उनकी पत्नी की दहेज हत्या के आरोप पर गिरफ्तार किया; वेस्ट इंडीज के तेज गेंदबाज कर्टनी वाल्श ने टेस्ट कैरियर में 435 विकेट लेकर कपिलदेव के कीर्तिमान को भंग किया।

29. राज्य सभा चुनावों में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को 10 और कांग्रेस को 6 सीटें मिलीं; आरक्षित पदों को भरने के लिये संविधान में संशोधन किये जायेंगें।

30. भारत ने पाकिस्तान के फौजी शासक जनरल परवेज मुशर्रफ की [illegible] के प्रस्ताव को ठुकराया।

31. तुर्की के प्रधानमंत्री बुलेत एचाविट भारत की राजकीय यात्रा पर, आतंकवाद पर भारत की चिंता से सहमत।

अप्रेल

1. अंजू इलियासी हत्याकांड के अभियुक्त सुहेब इलियासी को पुलिस ने तीन दिन के रिमांड पर लिया।

2. बिहार में मुख्यमंत्री रावड़ी देवी ने मंत्रियों के विभाग बांटे, प्रमुख विभाग कांग्रेसियों को न मिलने से उनमें रोष।

3. कश्मीर घाटी के अनंतनाग शहर में प्रदर्शनकारियों पर पुलिस की गोलीबारी से सात मरे, शहर में कर्फ्यू लगाया गया।

4. बिहार में केंद्रीय जांच ब्यूरो की एक विशेष अदालत ने मुख्यमंत्री रावड़ी देवी और लालू यादव के विरुद्ध आय से अधिक संपत्ति के आरोप में गैर जमानती वारंट जारी किया; कथाकार डा. महेश्वर व सुविख्यात लेखिका शशिप्रभा शास्त्री का निधन।

5. केंद्रीय जांच ब्यूरो की एक विशेष अदालत ने लालू यादव को हिरासत व रावड़ी देवी को जमानत देने के आदेश दिये।

7. दिल्ली पुलिस ने मैच फिक्सिंग के अंतर्राष्ट्रीय रैकेट का खुलासा करते हुए भारत के दो सटोरियों समेत दक्षिण अफ्रीका की क्रिकेट टीम के कप्तान हैंसी क्रोंजिये व उनके चार सह खिलाड़ियों को नामजद किया।

9. निर्गुट सम्मेलन में भारत ने मांग की कि सैन्यशासित देशों की सदस्यता समाप्त की जाये।

10. दिल्ली मे उच्चतम न्यायालय के आठ वर्ष पुराने वाहनों को सड़क से हटाने के फैसले के विरुद्ध आटो रिक्शा व टैक्सी दो दिनों की हडताल पर हुर्रियत कांफ्रेंस के प्रतिनिधियों को विदेश जाने से रोका गया।

13 बिहार के डाल्टनगंज शहर मे रामनवमी के जुलूस पर हाई वोल्टेज की तार टूट कर गिरने से 29 मरे 60 गंभीर रूप से घायल।

14 समझौता एक्सप्रेस मे यात्रियों को बेहतर सुविधा प्रदान करने के लिए दोनों देशों की बैठक शीघ्र होगी; जासूसी के आरोप में पकड़े गये रूपलाल 26 वर्ष के बाद पाकिस्तान की जेल से रिहा होकर भारत वापस पहुंचे।

15. मैच फिक्सिंग के आरोपी अभिनेता किशन कुमार गिरफ्तार; भारत का रूस से तीन अवाक्स विमान पट्टे पर खरीदने का फैसला।

16. पश्चिम बंगाल में महागठबंधन के मुद्दे पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अब्दुल गनी खां ने इस्तीफे की धमकी दी।

17. दिल्ली उच्च न्यायालय ने 55 दिनों से चल रही वकीलों की हड़ताल को अवैध करार दिया।

18. भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने मैच फिक्सिंग व सट्टेबाजी के आरोपों की जांच के लिये चंद्रचूड जांच रिपोर्ट को सार्वजनिक करने का निर्णय लिया।

19. वाराणसी में दंगा भड़कने के बाद पांच थाना क्षेत्रों में कर्फ्यू लागू; उच्चतम न्यायालय ने उत्तर प्रदेश मे पंचायत चुनाव कराने के इलाहाबाद उच्च न्यायालय के आदेश पर रोक लगाई।

22. केंद्र सरकार ने सूखे से निपटने के लिये केंद्रीय दलों को इन क्षेत्रों में भेजने और सस्ती दर पर अनाज व चारा उपलब्ध कराने के फैसला लिया।

23. केंद्रीय विधि मंत्री राम जेठमलानी ने कहा कि संविधान समीक्षा के पीछे कोई गुप्त एजेंडा नहीं है।

24. बिहार पुनर्गठन विधेयक 2000 पर चर्चा के लिये बुलाये गये विधानसभा के विशेष सत्र में सत्ता और विपक्षी दलों के बीच हंगामा और मारपीट।

25. बिहार विधानसभा ने झारखंड विधेयक को पारित किया; सुप्रीम कोर्ट ने कर्नाटक को अलमाटी बांध की ऊंचाई को बढ़ाने की इजाजत दी।

27. उत्तर प्रदेश के मंत्री कलराज मिश्रा ने भ्रष्टाचार के आरोपों से क्षुब्ध होकर त्यागपत्र दिया।

28 अमरीका ने भारत से अनुरोध किया कि वह पाकिस्तान से वार्ता का माहौल बनाये; मैच फिक्सिंग कांड के अभियुक्त किशन कुमार को पुलिस ने पांच दिन के रिमांड पर लिया; मदन लाल खुराना को भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष पद से हटाया गया; भरतपुर के आयुद्ध डिपो में आग भड़की तीन लोग मरे।

29. भरतपुर के सेना के आयुद्ध डिपो में लगी आग से अरबों का असला स्वाहा।

30 भरतपुर के आयुद्ध डिपो में लगी आग के कारणों की सैन्य जांच प्रारंभ।

मई

1. डाककर्मियों ने संचार मंत्री रामविलास पासवान के आश्वासन के पश्चात अपनी हड़ताल सत्तर दिनों के लिये स्थगित कर दी; भारतीय सैनिकों ने उत्तर सियाचिन में पाक के जोरदार हमले को विफल कर दिया।

2. श्रीलंका ने लिट्टे के विरुद्ध कार्रवाई के लिये भारत से मदद मांगी, उत्तर प्रदेश में टुंडला में पुलिस की गोली से चार श्रमिकों की मृत्यु।

3. वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा ने बजट में कई संशोधनों की घोषणा की।

4. विपक्ष के तीखे विरोध के बीच लोकसभा में बजट पारित; भारतीय क्रिकेट बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष आई.एस. बिंद्रा ने आरोप लगाया कि मनोज प्रभाकर को तेजगेंदबाज कपिलदेव ने धन की पेशकश की थी।

5 विदेश मंत्री जसवंत सिंह के अनुसार भारत श्रीलंका की मांग पर मानवीय सहायता देने पर विचार करेगा; कपिल देव ने बिंद्रा को कानूनी नोटिस भेजा।

7 वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा के अनुसार सार्वजनिक क्षेत्र के निजीकरण पर फैसला शीघ्र लिया जायेगा; नोएडा के भा.ज.पा. के उपाध्यक्ष अतर सिंह शर्मा की हत्या।

9 श्रीलंका के सभी राजनीतिक दलों ने भारत की सरकार व लिट्टे के बीच मध्यस्था की घोषणा का स्वागत किया; केंद्रीय करों का 29% हिस्सा राज्यों को देने का बिल को मंजूरी।

10 लोकसभा में संविधान संशोधन के साथ खाली पडे आरक्षित पद अब 50 प्रतिशत के बंधन से मुक्त हुए।

11 केंद्र सरकार की आर्थिक नीतियों के विरुद्ध श्रमिक संगठनों की देशव्यापी हड़ताल का वाम राज्यों की सरकारों वाले प्रदेशों में असर; नई दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में प्रतीकात्मक एक अरबवें बच्ची 'आस्था' का जन्म।

12. बिहार के लखीसराय जिले के बालूघाट में अज्ञात

हमलावरों ने अंधाधुंध गोलियां चलाकर 10 दलित श्रमिकों की हत्या कर दी।

13. साइप्रस की राजधानी निकोसिया में मिस युनिवर्स प्रतियोगिता में भारतीय सुंदरी, फेमिना मिस इंडिया लारा दत्ता मिस युनिवर्स चुनी गईं।

14. पंजाब परिवहन निगम की एक बस रोपड़ में नहर में गिर जाने से 40 के मरने की आशंका।

15. काश्मीर में अनंतनाग जिले में उग्रवादियों ने बारूदी सुरंग में विस्फोट कर बिजली मंत्री की कार को उड़ा दिया, हादसे में मंत्री गुलाम हसन बट्ट के साथ वायरलेस आपरेटर, सुरक्षाकर्मी व ड्राइवर की मृत्यु हो गई; फैजाबाद में रामजन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष सहित 13 लोग बम विस्फोट में घायल।

16. सूचना प्रौद्योगिकी बिल को संसद में मंजूरी; रंगमंच व सिने अभिनेता सज्जन का 80 वर्ष की आयु में निधन।

17. उत्तर प्रदेश, बिहार व मध्य प्रदेश को काट कर तीन नये प्रांतों के गठन का विधेयक भारी हंगामें के कारण लोकसभा में प्रस्तुत नहीं किया जा सका।

18. प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेई ने कहा कि धर्मस्थल बिल पर आपत्तियों की समीक्षा की जायेगी; मुंबई में वर्षा ने सारे रिकार्ड तोड़े, जनजीवन अस्तव्यस्त व एक महिला की जान गई।

21. त्रिपुरा में आदिवासी छापामारों ने 20 लोगों की हत्या की; जाने माने उद्योगपति तथा गोदरेज कंपनी समूह के अध्यक्ष सोराब पी. गोदरेज का 87 वर्ष की आयु में निधन।

22. भारतीय सेनायें श्रीलंका में भूमिका निबाहने के लिये तैयार स्थिति में; त्रिपुरा में उग्रवादियों ने सात और हत्यायें कीं मरने वालों की संख्या 45 हुई।

23. आई.एस.आई के लिये काम कर रही एक महिला पत्रकार को दिल्ली पुलिस ने गिरफ्तार किया।

24. हिंदी फिल्मों के जाने-माने गीतकार मजरूह सुल्तानपुरी का निधन; मनोज प्रभाकर ने खुलेआम खुलासा किया कि 1994 में सिंगर सीरीज में पाकिस्तान के विरुद्ध खराब खेलने के लिये कपिलदेव ने उन्हे 25 लाख का प्रस्ताव दिया था।

26. सरकार ने एयर इंडिया के आंशिक निजीकरण का फैसला लेते हुए 60 फीसदी शेयर बेचने का निर्णय लिया।

27. क्रिकेट मैच फिक्सिंग कांड में पूर्व क्रिकेटर मनोज प्रभाकर ने गुप्त रूप से बनाये 90 मिनट के वीडियो केसिट को जाहिर करने से कपिल देव, मो. अजहरुद्दीन, अजय जडेजा और अजय शर्मा को आरोपों के घेरे में लिया; आंध्र प्रदेश के महबूब नगर में वरिष्ठ नेता जयपाल रेड्डी के घर को नक्सलियों ने उड़ाया; मंत्रिमंडल विस्तार में नितीश कुमार फिर से शामिल।

28. राष्ट्रपति के.आर. नारायणन 6 दिन की राजकीय यात्रा पर चीन गये; कानपुर से सेना आयुध केंद्र में आग लगने से लाखों का नुकसान।

30. हिंदी साहित्य के शताब्दि पुरुष डा. रामविलास शर्मा का निधन; चेन्नई की विशेष अदालत ने टीवी घोटाले के आरोप से जयललिता और उनकी मित्र शशिकला को बरी कर दिया, लेकिन इनके पूर्व मंत्रिमंडल सहयोगी व वर्तमान सांसद टी.एम. सेल्वागणपति और तीन आई.ए.एस. अफसरों समेत 6 लोगों को पांच वर्ष के कारावास की सजा दी।

31. दिल्ली में साइबर अपराध के तहत एक कंप्यूटर इंजीनियर की इंटरनेट का समय चुराने के आरोप में गिरफ्तारी।

जून

1. केरल उच्च न्यायालय की एक खंडपीठ ने किसी भी हड़ताल को सफल बनाने के लिये मानसिक या शारीरिक तौर पर लोगों के साथ जबरदस्ती को असंवैधानिक ठहराया।

2. निरंतर विलंब से चलने वाली गाड़ियों से क्षुब्ध होकर गाजियाबाद में दैनिक यात्रियों ने रेल यातायात ठप किया; उत्तर काश्मीर में दोपहर की नमाज के दौरान बम विस्फोट से 11 मरे व अनेक घायल; ऋषिकेश-गंगोत्री राजमार्ग के बीच चम्बा कस्बे के निकट एक बस के खाई में गिर जाने से 18 मरे।

4. राष्ट्रपति नारायणन की चीन यात्रा से दोनों देशों के बीच आर्थिक संबधों की मजबूती का रास्ता बना।

5. सरकार ने वाहनों में होने वाले ईंधन में मिलावट को रोकने के लिये दो नियंत्रण आदेश जारी किये।

6. मुद्रा कोष के निदेशक हर्स्ट कोहलर ने भारत को बढ़ते राजकोषीय घाटे पर आगाह किया।

8. द्रमुक नेता मुरासोली मारन ने श्रीलंका के मामले में साथ रहने का वक्तव्य दिया; आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और गोवा के चर्चों में बम विस्फोटों से तीन लोग घायल; पश्चिम बंगाल पांसकुड़ा लोक सभा सीट से तृणमूल कांग्रेस का प्रत्याशी विजयी।

10. संचार मंत्री रामविलास पासवान द्वारा संचार कर्मियों को मुफ्त टेलिफोन देने के फैसले को प्रधानमंत्री की मंजूरी।

11. पूर्व केंद्रीय मंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राजेश पायलट की दौसा के पास सड़क दुर्घटना में मृत्यु।

12. तेलशोधन में विदेशी भागेदारी को शत-प्रतिशत किया गया; बिहार में नवादा जिले के वारिसलीगंज थाना के अंतर्गत गांव में एम.सी.सी. उग्रवादियों ने 12 सवर्णो की हत्या कर दी; साहित्यकार व रंगकर्मी पुरुषोत्तम लक्ष्मण देशपांडे का 81 वर्ष की आयु में निधन।

13. खाद्य तेलों के आयात शुल्क में 10 से 20 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी की गई।

14. गुजरात के गृहमंत्री हरेन पंड्या ने अपना त्यागपत्र दिया; उत्तर प्रदेश के पंचायत चुनावों के पहले चरण में हिंसा से आठ लोग मारे गये।

15. दक्षिण अफ्रीका के बर्खास्त कप्तान हैंसी क्रोंजिये ने कहा कि उनकी सट्टेबाज से मुलाकात भारतीय पूर्व कप्तान मु. अजहरुद्दीन ने कराई थी; गुजरात के गृहमंत्री हरेन पंड्या ने अपना त्यागपत्र वापस लिया।

17. बिहार के औरंगाबाद जिले में प्रतिबंधित रणवीर सेना द्वारा किये गये भीषण नरसंहार में 35 मारे गये।

18. राजधानी दिल्ली में लालकिले के पास दो बम विस्फोटों में दो मरे 11 घायल।

19. बिहार में उग्रवाद और अपराध रोकने के लिये मुख्यमंत्री राबड़ी देवी ने सर्वदलीय बैठक बुलाई

20. केंद्र सरकार ने गरीबी रेखा से नीचे रहने वालों के लिये जनश्री बीमा योजना की घोषणा की।

21. भारत की कैथोलिक बिशप कांफ्रेंस के अध्यक्ष और दिल्ली के आर्चबिशप एलन द लास्टिक का पौलैंड में एक सड़क दुर्घटना में निधन।

22. जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री फारूख अब्दुल्ला ने कहा कि स्वायत्ता के मुद्दे पर विधानसभा में कोई नया प्रस्ताव नहीं लाया जायेगा।

23 भारत सरकार ने दस और कंपनियों के शेयर बेचने का फैसला किया।

24. उत्तरी दिल्ली के कोतवाली क्षेत्र में विजयघाट के समीप झुग्गी बस्ती में पुलिस और झुग्गीवासियों के बीच संघर्ष में एक मरा 16 घायल।

26. जम्मू काश्मीर विधानसभा राज्य को वृहत्तर स्वायत्ता देने के प्रस्ताव को मंजूरी दी।

27. केंद्रीय गृहमंत्री लाल कृष्ण अडवाणी ने कहा कि काश्मीर के स्वायत्ता संबधी प्रस्ताव का भविष्य संसद तय करेगी।

29. उत्तर भारत में मानसून पंहुचा, दिल्ली में वर्षा से जलभराव से यातायात ठप।

30. प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने कहा कि काश्मीर के स्वायत्ता प्रस्ताव पर संविधान के दायरे मे ही विचार किया जायेगा।

जुलाई

1. भारतीय जनता पार्टी ने जम्मू काश्मीर विधान सभा के स्वायत्ता के प्रस्ताव का कड़ा विरोध किया; अंबाला में पंजाब मेल के एक खाली खड़ी गाड़ी के टकरा जाने से दो की मौत पांच घायल; विश्व के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार विक्टोरिया क्रास से सम्मानित सैनिक गंजू लामा का दक्षिणी सिक्किम के रावोंगला उपमंडल के सांगमो गाव में 81 वर्ष की आयु मे निधन।

2. जम्मू काश्मीर के मुख्यमंत्री फारूख अब्दुल्ला ने जम्मू काश्मीर के भारत में विलय को अंतिम व अपरिवर्तनीय बताते हुए कहा कि स्वायत्ता का मतलब अलगाव नहीं है।

3. पंजाब के सगरूर जिले के विधायक भगवानदास अरोड़ा ने आत्महत्या की· कोयला आयात मामले मे तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री जयललिता सहित 9 व्यक्तियों पर आरोप निर्धारित।

4 सरकार ने मंत्रिमंडल बैठक के बाद जम्मू काश्मीर के [illegible] प्रस्ताव को ठुकराते हुए वहा की सरकार को विकास [illegible]र्यों पर ध्यान देने को कहा।

5. हुर्रियत कांफ्रेस केंद्र के साथ बिना शर्त बातचीत करने को तैयार; उड़ीसा के नदनकानन अभयारण्य में एक रहस्यमय बिमारी से 10 बाघों की मौत।

7. उड़ीसा के नंदनकानन अभयारण्य में एक और बाघ की मौत; नेपाल की हवाई यात्रा करने वालों के लिये पासपोर्ट अनिवार्य।

8. वित्त मंत्री सिन्हा ने कहा कि बैंक ऋण का भुगतान न करने वालों पर आपराधिक कार्रवाई की जायेगी; कलकत्ता मेयर पद पर तृणमूल–भा.ज.पा. का कब्जा।

9. बिहार में मंत्री ललित कुमार यादव पर एक ट्रक ड्राइवर व खलासी को एक माह तक घर में बंद कर उत्पीड़न करने के आरोप पर प्राथमिकी दर्ज।

10. ट्रक ड्राइवर व खलासी को एक माह तक घर मे बंद कर उत्पीड़न करने के आरोप पर बिहार के मंत्री ललित कुमार यादव मंत्री पद से बर्खास्त किये गये।

11. सार्वजनिक उद्यमों के लिये नई वेतन नीति की घोषणा; राजस्थान के टोंक जिले में साम्प्रदायिक दंगे भड़के, 12 मरे, कर्फ्यू लागू; जम्मू काश्मीर के मुख्यमंत्री फारूख अब्दुल्ला की मां का निधन।

13. उत्तर प्रदेश के गौतमबुद्ध नगर जिले में जहरीली शराब पीने से तीन मरे; रांची के नामकुल थाने के जामचुआ घाटी में एक पादरी की हत्या कर दी गई; तिरुवनंतपुरम में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं द्वारा हिंसा पर उतारू होने पर पुलिस वालों सहित 45 घायल व 400 से अधिक वाहनों को नुकसान।

14. बंगलौर बम विस्फोट कांड के पकड़े गये आरोपी एवं घायल सैयद इब्राहिम ने कार बम विस्फोट में संलग्न होने को स्वीकार करने के साथ चर्चो में बम धमाकों के पीछे पाकिस्तानी संगठन के होने की पुष्टि।

15. महाराष्ट्र सरकार ने शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे पर 1992–93 में साम्प्रदायिक दंगों में कथित भूमिका पर मुकदमे की अनुमति दी।

16. महाराष्ट्र सरकार द्वारा शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे पर मुकदमें की अनुमति देने से नाराज शिवसैनिकों ने मुंबई में दस और ट्रेनें रोकीं व बाजार बंद करवाये; शाम पांच बजकर 27 शुरु होकर 6 बजकर 32 मिनट पर पूर्ण होकर रात 10 बजकर 19 मिनट पर समाप्त होने वाला चंद्रग्रहण पिछले 150 वर्षों के बाद सबसे लंबा चंद्रग्रहण रहा।

17. इंडियन एयरलाइंस के सहयोगी एलायंस एयर का एक बोइंग–737 विमान पटना हवाई अड्डे पर उतरने से एन पहले दुर्घटनाग्रस्त हो गया, दुर्घटना में 55 मरे।

19. शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे के विरुद्ध कार्रवाई किये जाने के विरोध में शिवसेना मंत्रियों द्वारा दिये गये त्यागपत्र नामंजूर; केंद्र ने स्वायत्ता के मामले पर जम्मू काश्मीर के मुख्यमंत्री फारूख अब्दुल्ला से नये सुझाव मांगे।

20. क्रिकेटरों और उनसे जुड़े लोगों के यहां आयकर व सी.बी.आई. ने संयुक्त तौर पर छापे मारे; उत्तर प्रदेश में बागपत में आर.एस.एस. कार्यकर्ता, उनकी पत्नी व दो बेटियों की हत्या।

21. भारतीय क्रिकेट बोर्ड के कोषाध्यक्ष किशोर रूंगटा के यहां 100 करोड़ की एफ.डी. बरामद की; सरकार ने राशन के गेंहू के मूल्य में 35 पैसे की कमी की।

24. शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे के मामले को लेकर राजग के घटक दलों की बेरुखी से शिवसेना ने नाराजगी व्यक्त की; जलंधर के पास एक निजी बस में बम विस्फोट से 7 मरे।

25. अदालत ने शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे के विरुद्ध मामले को खारिज कर दिया; भारत की सामाजिक कार्यकर्ता अरुणा राय को मैगसेसे पुरस्कार; स्प्रिंट क्वीन पी.टी. ऊषा ने अतर्राष्ट्रीय एथलेटिक्स से सन्यास लिया।

26. उत्तर प्रदेश सरकार ने हिन्दू धर्मादता कानून रद्द किया; केंद्र सरकार ने 14 वर्ष से कम की आयु के बच्चों को नौकर रखने पर रोक लगाई।

27. अयोध्या में बाबरी मस्जिद गिराये जाने के मामले की जांच कर रहे लिब्राहम आयोग ने पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह के नाम वारंट जारी किया; पश्चिम बंगाल के बीरभूमि जिले में हुए झगड़े में तृणमूल कांग्रेस के 11 समर्थकों की हत्या।

28. केंद्र सरकार ने पाक समर्थक आतंकवादी गुट के

एकतरफा युद्ध विराम के प्रस्ताव पर उन्हे बातचीत के लिये आगे आने के लिये कहा।

29. भारत सरकार ने स्पष्ट किया कि हिजबुल के साथ बातचीत संविधान के दायरे मे ही होएगी।

30. हिजबुल मुजाहिदीन ने शर्तो के साथ बातचीत करने से मना किया.

31. चंदन के कुख्यात तस्कार वीरप्पन ने कन्नड़ सिनेमा के लोकप्रिय अभिनेता राजकुमार के साथ उनके दामाद, एक रिश्तेदार व एक फिल्म निदेशक का अपहरण कर लिया; छत्तीसगढ़ राज्य विधेयक को लोकसभा की मंजूरी।

अगस्त

1. पहलगाम में भाड़े के संदिग्ध विदेशी उग्रवादियों ने अमरनाथ यात्रियों के एक लंगर पर अचानक हमला करके 24 लोगों की हत्या कर दी, हादसे में 22 घायल हुए; लोकसभा नें उत्तरांचल विधेयक पारित किया; हिमाचल प्रदेश में सतलुज नदी में आई बाढ़ से 85 लोगों के मरने की आशंका; प्रख्यात कन्नड़ अभिनेता राजकुमार व उनके साथ तीन और अन्य बंधकों को छुड़ाने के प्रयास के लिये तमिल साप्ताहिक नकीरन के संपादक आर.आर. गोपाल वीरप्पन से संबध साधने के लिये रवाना; उर्दू अदब के तरक्की पसंद शायर और स्वतंत्रता सेनानी अली सरदार जाफरी का निधन।

2. जम्मू काश्मीर में उग्रवादी हिंसा में तेजी पहलगाम में भाड़े के कथित विदेशी उग्रवादियों ने 70 और व्यक्तियों की हत्या की; तीन नये राज्यों के गठन के क्रम में झारखंड विधेयक भी लोकसभा में पारित।

3. केंद्र सरकार व जम्मू काश्मीर में पाक समर्थक उग्रवादी गुट हिज्बुल मुजाहिदीन के बीच सीधी वार्ता प्रारंभ।

4. सरकार ने जम्मू काश्मीर में नरसंहार की अदालती जांच के आदेश दिये, नरसंहार के विरुद्ध देश बंद का मिला–जुला असर।

5. स्वतंत्र भारत के पहले क्रिकेट कप्तान आलराउंडर लाला अमरनाथ का निधन; मुख्यमंत्री सम्मेलन में विरोध के कारण संघीय सुरक्षा एजेंसी बनाने का प्रस्ताव खारिज।

6. तमिलनाडु और कर्नाटक सरकार ने वीरप्पन की अधिकतर मांगे स्वीकार कीं, अभिनेता राजकुमार व उनके साथियों की रिहाई के आसार बनें।

8. पाक समर्थित आतंकवादी गुट हिजबुल मुजाहिद ने युद्ध विराम को वापस लेने का एलान किया; मुंबई उच्च न्यायालय ने शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे के खिलाफ दंगो के मामलों को खारिज करने को अनुचित कहा; बंगारू लक्ष्मण भा.ज.पा. के नये अध्यक्ष निर्वाचित।

9. छत्तीसगढ़ राज्य विधेयक को राज्य सभा ने मंजूरी दी।

10. श्रीनगर में एक कार में रखे बम विस्फोट से 12 मरे व पचास जख्मी; भारत पाकिस्तान के विरुद्ध कनाडा में सहारा क्रिकेट प्रतियोगिता में भाग नहीं लेगा।

11. झारखंड विधेयक को राज्य सभा की मंजूरी के साथ तीन नये राज्यों के गठन का कार्य नवंबर तक पूरा हो जायेगा; स्वतंत्रता दिवस पर विस्फोट करने की साजिश दिल्ली पुलिस ने नाकाम की आई.एस.आई एजेंट के पास से 10 किलो आर.डी.एक्स. बरामद; दादा साहेब फाल्के से सम्मानित वयोवृद्ध अभिनेता जयराज का निधन।

12. प्रधानमंत्री के आश्वासन कि विनिवेश अभियान में कर्मचारियों की छंटनी नहीं होगी के बाद सार्वजनिक उपक्रमों की प्रस्तावित हड़ताल स्थगित; कर्नाटक के मुख्यमंत्री एस.एम. कृष्णा ने वीरप्पन की तमिल भाषा संबधी मांग को ठुकराया।

13. एस.टी.डी. सेवा में निजी क्षेत्र के प्रवेश के लिये दिशा निर्देश जारी; नकीरन पत्रिका के संपादक आर.आर. गोपाल वीरप्पन से बातचीत करने दुबारा जायेंगें; हिजबुल उग्रवादियों ने बी.एस.एफ. का वाहन उड़ाया, 4 जवान मरे।

17. प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने उग्रवादी गुटों को बातचीत का न्यौता दिया; बिहार में कलराज मिश्रा उत्तर प्रदेश भ.ज.पा. के अध्यक्ष निर्वाचित।

18. बिहार के गोपालगंज जिले में पुलिस ने चर्चित हिंदी आलोचक व जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष मैनेजर पांडे के बेटे आनंद पांडे की गोली मार कर हत्या कर दी।

19. कनार्टक की एक विशेष अदालत ने वीरप्पन के 51 साथियों की टाडा मामले में रिहाई का आदेश दिया।

21. चंद्रबाबू नायडू के नेतृत्व में अनके राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने सरकार से कहा कि पिछड़ापन राजस्व बटवारे का आधार नहीं बनना चाहिये; सासंद उमा भारती ने लोकसभा से अपना त्यागपत्र प्रधानमंत्री को भेजा; महात्मा गांधी की पुत्रवधु सुश्री निर्मला गांधी का 91 वर्ष की आयु में निधन।

22. अमरनाथ यात्रियों की हत्या की अदालती जांच कराने की कांग्रेस पार्टी की मांग सरकार ने ठुकराई।

23. केंद्रीय ऊर्जा मंत्री रंगराजन पी. कुमारमंगलम का अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में 10 दिनों की बिमारी के बाद निधन, विद्युत शवदाहगृह में राजकीय सम्मान के साथ अंत्येष्टि; आंध्र प्रदेश व केरल में मूसलाधार वर्षा से जान–माल का भारी नुकसान।

24. आंध्र प्रदेश व केरल में मूसलाधार वर्षा से भारी बाढ़; संगीतकार कल्याणजी का निधन।

25. विख्यातसिने अभिनेता राजकुमार को बंधक बनाये वीरप्पन ने 70 और साथियों की रिहाई की मांग रखी।

26. भारतीय जनता पार्टी की कार्य समिति ने सरकार की काश्मीर नीति व आर्थिक नीति की आलोचना की, लेकिन उसने समस्त विवादित मुद्दों को छोड़कर सरकार की नीतियों को समर्थन देना मंजूर किया।

28. कांग्रेस और वामपंथी दलों द्वारा आंध्र प्रदेश में बिजली की दरों में बढ़ोत्तरी को लेकर विधानसभा पर प्रदर्शन के दौरान पुलिस के लाठीचार्ज व गोलीबारी में तीन मरे।

30. प्रधानमंत्री वाजपेई की अमरीका यात्रा के कार्यक्रम में फेरबदल, पैरों की तकलीफ के कारण दो दिनों की कटौती

31. भारत संचार निगम बनाने का फैसला एक अक्टूबर से लागू होगा।

सितंबर

1. उच्चतम न्यायालय ने वीरप्पन मामले में कड़ा रुख अपनाते

सरकार से कहा कि अगर वो वीरप्पन को पकड़ने में असफल है तो सत्ता छोड़ दे।

2. मैच फिक्सिंग विवाद में फंसे मोहम्मद अजहरुद्दीन, अजय जडेजा और निखिल चोपड़ा को टीम से निकाला गया; चुंडला जंक्शन पर लोको शेड के गिरने से 26 श्रमिकों की मृत्यु।

4. हिंदी फिल्मों के मशहूर चरित्र और हास्य अभिनेता मुकरी का निधन; वीरप्पन के साथियों की जल्द रिहाई की कर्नाटक सरकार की याचिका को सुप्रीम कोर्ट ने ठुकराई।

5. दूरसंचार मंत्री पासवान के आश्वासन के बावजूद दूरसंचार कर्मचारी हड़ताल पर; प्रख्यात फिल्म निदेशक हृषिकेश मुखर्जी को दादा साहेब फाल्के पुरस्कार।

6. संयुक्त राष्ट्र के सहस्त्राब्दि शिखर सम्मेलन मे भाग लेने के लिये प्रधानमंत्री वाजपेई, न्यूयार्क रवाना; विदेश सचार निगम का एकाधिकार 2004 के बजाये 2002 मे ही समाप्त करने का सरकार का निश्चय।

7. मैच फिक्सिंग के मामले में सी.बी.आई. ने कोच कपिल देव व पूर्व कप्तान तेंदुलकर से पूछताछ की।

8. संयुक्त राष्ट्र के सहस्त्राब्दि शिखर सम्मलन म प्रधानमन्त्री वाजपेई ने पाकिस्तान के गिरगिटिया चरित्र पर हमला बोलते हुए कहा कि उग्रवाद और बातचीत साथ-साथ नहीं चल सकती दूरसंचार कर्मियों की तीन दिन पुरानी हड़ताल समाप्त।

12. कपिल देव ने क्रिकेट बोर्ड के आग्रह का ठुकराते हुए बतौर प्रशिक्षक अपना नाम वापस लिया।

13. बिहार में रांची जिले के नरकुंगी गाव म एम सी सी उग्रवादियों ने 9 लोगों की हत्या की भारत क ग्रैंडमास्टर विश्वनाथ आनद नेफिडे विश्वकप जीता सॉफ्टवेयर की दुनिया के बेताज बादशाह बिल गेट्स भारत यात्रा पर।

14 अमरीकी ससद का सबोधित करते हुए प्रधानमन्त्री वाजपेई ने आतकवाद के खिलाफ सहयोग की अपील की, आयोडीन नमक की अनिवार्यता समाप्त।

15 सिडनी म सहस्राब्दि का पहला ओलंपिक प्रारभ अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने भारत क ओर परमाणु परीक्षण न करने वादे का स्वागत किया भारत और अमरीका के द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग बढ़ाने के लिये ऊर्जा ई कामर्स और बैंकिंग क्षेत्र मे परियोजनाओ के लिये 6 अरब डालर के समझौते।

16. भारतीय प्रधानमन्त्री वाजपेई और अमरीका के राष्ट्रपति क्लिंटन के सयुक्त बयान म अमरीका ने काश्मीर के मुद्दे पर भारतीय रुख को सही बताया।

17. गुजरात मे अहमदाबाद निगम चुनावों म हिंसा भड़क जाने के कारण पुलिस की गोलियो स 7 मरे अनेक घायल।

18. राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारो का राष्ट्रपति द्वारा वितरण प्रख्यात फिल्म निदेशक हृषिकेश मुखर्जी को दादा साहेब फाल्के पुरस्कार।

19. आंध्र प्रदेश के कुडापाह जिले की 25 वर्षीय कर्णम मलेश्वरी ने ओलंपिक खेलों मे भारत की प्रथम पदक विजेता बनीं, उन्होंने कांस्य पदक भारोत्तोलन मे जीता, प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई अमरीका की 13 दिन की यात्रा के बाद भारत पहुंचे।

20. दूरसंचार कर्मियो की हड़ताल के कारण एस.टी.डी सेवायें अस्त-व्यस्त।

21. एस.टीयडी. की दरों में कटौती, नई दर एक अक्टूबर से लागू।

22. पेट्रोल की कीमतों के दबाव में शेयर बाजार लुढ़का।

23 ओलंपिक खेलों में भारत ने स्पेन को तीन के मुकाबले दो गोल से हराया

25 बदला लेने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश में सहारनपुर में पुलिस ट्रक पर हमला कर 6 विचाराधीन कैदियों की हत्या।

26 दिल्ली में केवल आपरेटरों की हड़ताल से चैनलों का प्रसारण ठप भारत ने पूल का अंतिम मैच पोलैंड से एक-एक की की बराबरी के साथ सेमीफायनल में प्रवेश करने से वंचित।

28 वीरप्पन के चंगुल से अभिनेता राजकुमार का एक साथी नागप्पा माराडानी भाग निकला।

29 सी बी आई. की एक विशेष अदालत ने झारखंड मुक्ति मोर्चा सासद घूसखोरी काड में पूर्व प्रधानमंत्री नरसिम्हाराव व पूर्व गृहमंत्री बूटा सिह को दोषी पाया; पेट्रो उत्पादन के दाम में बढ़ोत्तरी। नई दिल्ली में केवल आपरेटरों की हड़ताल समाप्त।

30 मन्त्रिमडल का विस्तार छह नये मंत्रियों ने शपथ ली; पेट्राल पदार्थों की मूल्यवृद्धि पर तृणमूल की ममता सहित उनके साथियों ने त्यागपत्र दिया; मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय मान्यता समाप्त।

अक्टूबर

1. सरकार ने दूरसचार सेवा विभाग को भारत संचार निगम लिमिटेड मे परिवर्तित कर दिया।

2 रूस के राष्ट्रपति व्लादिमिर पुटिन भारत की राजकीय यात्रा पर नई दिल्ली पंहुचे।

3 भारत व रूस के बीच सामरिक साझेदारी का समझौता।

4 रक्षा क्षेत्र में में सहयोग के लिये भारत व रूस के बीच अनेक बडे समझौते; बिहार के लोहरदग्गा जिला के पुलिस अधीक्षक अजय कुमार सिंह की उग्रवादियों ने हत्या की।

5 नई दिल्ली मे रामलीलाओं के दौरान विस्फोट करने आया हिज्बुल उग्रवादी को पुलिस ने 5.5 किलो आर.डी.एक्स के साथ गिरफ्तार किया।

6 हैदराबाद के चिड़ियाघर में वहशी शिकारियों ने एक तेरह माह की बाघिन को मार कर उसकी खाल उतार ली; ममता बनर्जी व अजीत पाजा ने अपना त्यागपत्र वापस लिया।

7 राष्ट्रीय स्वक सेवक संघ के सरचालक के.सी. सुदर्शन ने भारतीय इसाइयों को स्वदेशी चर्च की स्थापना का परामर्श दिया देश भर मे विजयदशमी धूमधाम से मनाई गई।

9 तासी जमीन घोटाले में तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री जयललिता को तीन वर्ष का कठोर कारावास की सजा सुनाई गइ।

10 प्रधानमंत्री वाजपेई के घुटने का मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल मे सफल आपरेशन; जाने-माने साहित्यकार यशपाल जैन का निधन।

12 पूर्व प्रधानमंत्री नरसिंहाराव व पूर्व गृहमंत्री बूटा सिंह को झामुमा रिश्वत कांड मे तीन-तीन वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई।

14 बिहार मे मोजाहिदपुर गांव में मठ के विवाद पर लड़ाई मे 11 की हत्या।

15. नई दिल्ली में दो आतंकवादी 30 किलो आर.डी.एक्स के साथ गिरफ्तार।

16. वीरप्पन ने अभिनेता राजकुमार के दामाद को छोड़ा; नई दिल्ली में वायु सेना के दो मिग विमान उड़ान भरते समय टकरा गये, एक पायलट की मृत्यु।

17. सुप्रीम कोर्ट द्वारा फिल्म अभिनेता राजकुमार को वीरप्पन की कैद से रिहाई के मामले में कर्नाटक सरकार की की कार्रवाई से असंतुष्टि जाहिर की; उत्तर प्रदेश में गाजियाबाद में भा.ज.पा. के नेता ओम दत्त त्यागी की गोली मार कर हत्या।

18. सुप्रीम कोर्ट ने नर्मदा पर 138 मीटर ऊंचाई वाले सरदार सरोवर बांध के निर्माण की अनुमति दी।

19. प्रवर्तन निदेशालय के पूर्व उप निदेशक अशोक अग्रवाल को गिरफ्तार किया गया; फिल्म अभिनेता राजकुमार के संदर्भ में 51 टाडा कैदियों को छोड़े जाने के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया।

20. पंजाब की तर्ज पर हरियाणा के धान उत्पादकों को आर्थिक पैकेज मिलेगा; क्रिकेट फिक्सिंग कांड में सी.बी.आई. की रिपोर्ट में अजहर, जडेजा, अजय शर्मा और मनोज प्रभाकर पर आरोप, कपिल और मोंगिया के खिलाफ सबूत नहीं।

21. गोवा मे भा.जा.पा. ने 11 महीने पुरानी फ्रांसिसको सरदिन्हा सरकार से समर्थन वापस लिया।

22. प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई घुटने का आपरेशन करवा कर मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल से वापस दिल्ली पंहुचे; केरल के कोल्लम जिले में जहरीली शराब पीने से 21 लोगों की मृत्यु।

23. सरकार ने तीन निजी कंपनियों – रिलायंस जनरल इंस्योरेंस कंपनी, एच.एफ.डी.सी.–स्टैंडर्ड लाइफ इंस्योरेंस कंपनी और रायाल सुंदरम एलायंस इंस्योरेंस कंपनियो को बीमा क्षेत्र में कार्य करने की अनुमति दी।

24. भा.ज.पा. नेतृत्व ने केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह को उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाया; गोवा मे मुख्यमंत्री फ्रांसिसको सरदिन्हा के त्यागपत्र के बाद भा.ज.पा. के मनोहर पारीख नये मुख्यमंत्री बने; कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सीताराम केसरी का निधन।

25. केंद्रीय भूतल परिवहन मंत्री राजनाथ सिंह को उत्तर प्रदेश में भा.ज.पा. विधायक मंडल का नेता चुना गया; केरल सरकार ने कोल्लम जिले मे जहरीली शराब के हादसे की जांच उच्च न्यायालय के न्यायाधीश से कराने का फैसला किया।

27. उत्तर प्रदेश के उधमसिंह नगर मे शारदा नहर मे ट्राली के गिरने से एक ही परिवार के 26 मरे।

28. उत्तर प्रदेश में राजनाथ मंत्रिमंडल ने शपथ ली; वाम मोर्चे ने प. बंगाल मे बसु के हटने और बुद्धदेव भट्टाचार्य को मुख्यमंत्री बनाने की मंजूरी दी।

29. कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिये जीतेंद्र प्रसाद द्वारा नामांकन भरने से चुनाव निश्चित; ज्योति बसु का त्यागपत्र मंजूर।

नवंबर

1. नया राज्य छत्तीसगढ़ अस्तित्व में आया, अजीत जोगी प्रथम मुख्यमंत्री बने; सी.बी.आई. द्वारा जारी रिपोर्ट में मो. अजहरुद्दीन, अजय जडेजा, नयन मोंगिया, अजय शर्मा और मनोज प्रभाकर को मैच फिक्सिंग कांड में लिप्त पाया गया, कपिल निर्दोष।

2. डायरेक्ट टू होम सेवा को कैबिनेट की मंजूरी।

3. पांचों दोषी क्रिकेटरों पर देश–विदेश में खेलने पर आजीवन प्रतिबंध; उत्तर कश्मीर में श्रीनगर–गुलमर्ग मार्ग पर उग्रवादियों ने बारूदी सुरंग द्वारा किये गये विस्फोट मे शिया नेता आगा सैयद मेंहदी सहित 7 लोग मारे गये; उत्तर प्रदेश के राज्यपाल सूरजभान सिंह हिमाचल के और हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल विष्णुकांत शास्त्री उत्तर प्रदेश के राज्यपाल बने।

4. श्रीनगर मे शिया नेता आगा सैयद मेहदी की हत्या के बाद कश्मीर में हिंसा; उपग्रह इन्सैट–2 फिर से सफलतापूर्वक चालू।

5. झारखंड मुक्ति मोर्चा ने रा.ज.गा. से संबंध तोड़ने का फैसला लिया; पश्चिम बंगाल में ज्योति बसु के त्यागपत्र के बाद बुद्धदेव भट्टाचार्य नये मुख्यमंत्री।

6. उत्तर प्रदेश मे शिया–सुन्नी दंगों में 11 लोगों की मृत्यु व 32 घायल. हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायक भीमसेन जोशी को आदित्य बिड़ला पुरस्कार।

7. अटल बिहारी वाजपेई मंत्रिमंडल का विस्तार, उमा भारती और अरुण जेटली कैबिनेट मंत्रा व मेजर खंडूरी स्वतंत्र राज्य मंत्री बने; उच्चतम न्यायालय ने वीरप्पन के साथियों की रिहाई पर रोक लगाई; उच्च न्यायालय ने पूर्व प्रधानमंत्री नरसिम्हाराव व पूर्व गृह मंत्री बूटा सिंह की सजाओं पर रोक लगाई।

8. उत्तरांचल 27वां राज्य बना, नित्यानंद स्वामी ने प्रथम मुख्यमंत्री पद की शपथ ली।

10. उत्तरांचल मंत्रिमंडल गठन में असंतोष, नित्यानंद स्वामी की सरकार में तीन मंत्रियों ने शपथ समारोह का बहिष्कार किया।

11. राज्य रक्षा मंत्री हरीन पाठक ने त्यागपत्र दिया।

12 कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव मे 90% से अधिक मतदान, लखनऊ में दोनों पक्षों के समर्थकों के बीच टकराव; पुलिस लाठीचार्ज में सात कार्यकर्ता जख्मी।

13 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट समिति के पूर्व अध्यक्ष समेत पांच दूरदर्शन के अधिकारियों के घर केंद्रीय जांच ब्यूरो ने छापे मारे; कांग्रेस ने झारखंड में शिबु सोरेन को समर्थन देने से मना किया।

14. देश के 28वे राज्य के रूप मे झारखंड अस्तित्व मे, बाबू लाल मराण्डी नये मुख्यमंत्री बने।

15 मशहूर कन्नड़ अभिनेता राजकुमार 109 दिनों के बाद कुख्यात चंदन तस्कर वीरप्पन के चंगुल से छूट कर रिहा कांग्रेस अध्यक्ष चुनावों में सोनिया गांधी विजयी; बैंकिंग क्षेत्र के निजीकरण के सरकारी प्रयासों के विरोध मे राष्ट्रीयकृत बैंकों में हड़ताल।

16. सरकार बैंकों में अपनी हिस्सेदारी घटायेगी लेकिन उसका नियंत्रण बना रहेगा।

18. वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा के अनुसार आयकर दर में अगले बजट मे कोई कमी नहीं की जायेगी।

19. प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने जम्मू एवं कश्मीर मे रमजान के पवित्र माह मे सैन्य कार्रवाइयों को एकतरफा रोकने की घोषणा की; मिट्टी के तेल व रसोई गैस के दामों में वृद्धि; केरल के तिरुवनंतपुरम में भूमिगत गोदाम से 90,000 [illegible] स्टिक बरामद; उत्तरी त्रिपुरा में जातीय दंगों में 14 मारे गये।

अंतरराष्ट्रीय घटनाएं, 2000

जनवरी

1. सपूर्ण विश्व ने नयी सहस्त्राब्दि का स्वागत किया; अटलांटिक व प्रशांत महासागर के बीच महत्वपूर्ण जलमार्ग पनामा कैनाल पर 785 वर्ष के बाद पनामा का पूर्ण प्रभुत्व; सहस्त्राब्दि के पहले दिन पर भयावह वाई-2 के दुस्वप्न का कोई प्रभाव नहीं; ग्रोज्नी पर रूस द्वारा भारी बमबारी; इंडोनेशिया में साम्प्रदायिक दंगों के भड़कने से सैकड़ों विस्थापित।

2. पीनट्स कामिक के रचयिता चार्ल्स शुल्ज की अंतिम विदाई; एक अमरीकी पायलट ने हवाना में फीदल कैस्ट्रो के विरुद्ध पर्चे गिराये।

3. मिस्त्र में भड़के दंगो में 16 इसाइयों की गोली मार कर हत्या; मलेशिया में उपप्रधानमंत्री ए.ए.बदावी महातिर के उत्तराधिकारी बन; जर्मनी में होलमुंट कोल पार्टी फंड घोटाले की जांच शुरू।

4. मनीला में 41 वर्षीय एलेक्स बार्टोलोम को एक किशोरी के साथ कई बार बलात्कार करने के आरोप पर मृत्युदंड; क्रोएशिया मे राष्ट्रपति टुड्जमैन की पार्टी की चुनावों में दुर्दशा, इरान में पहली बार एक महिला उपराज्यपाल बनीं; अतर्राष्ट्रीय टेनिस फेडरेशन ने महेश भूपति व लियेंडर पेइस की जोड़ी को विश्व चैम्पियन घोषित किया।

5. श्रीलंका में मानव बम विस्फोट से 13 लोग मारे गये।

6. छह वर्षीय एलियान गोंजालेज जो 25 नववर को फ्लोरिडा मे अप्रवासी नाव दुर्घटना में बच गया था को क्यूबा मे उसके पिता के पास भेजा जायेगा; कबोडिया के प्रधानमंत्री , सेन ने। 970 मे खमर रोग द्वारा नरसंहार के आरोपी बचे ओं पर मुकदमा चलाने की योजना बनाई, चीन के कैथोलिक ने पोप द्वारा पाच नये नियुक्त बिशप को स्वीकार करने से ... किया; तिब्बत के बुद्ध अनुयाइयों के प्रमुख किशोर कर्मापा ने चीन से भाग कर दार्जिलिंग मे शरण ली।

7. इक्वेडोर मे राष्ट्रपति जमील महाउद के इस्ताफे की मांग को लेकर आंदोलन के बाद वहां आपातकाल लगाया गया; इंडोनेशिया में मुसलमानों ने जिहाद का नारा दिया।

10. मीडिया मुगल टाइम वार्नर और अमरीका की सबसे अधिक इंटरनेट सुविधा दिलाने वाली कपनी आन लाइन द्वारा संयुक्तीकरण पर सहमति से नई कंपनी की कुल संपत्ति 350 बिलयन डालर हुई; इस्लाम करिमोव उजबेकिस्तान के दुबारा राष्ट्रपति निर्वाचित।

12. चिली के पिनोचेट (जोकि अब लदन मे थे) को अस्वस्थता के कारण मुकदमें का सामना न कर पाने के कारण वापस चिली भेजे जाने की अनुमित दी सकती है, निर्वासित तिब्बत सरकार का भारत पर कर्मापा की रिहाइश को मान्यता देने के लिये दबाव।

14. बिल गेट्स ने माइक्रोसाफ्ट कंपनी का प्रमुख पद छोड़ा।

20. ब्रिटेन की स्मिथ क्लाइन बीचम व ग्लैक्सो एक होने पर सहमत, अब नई कंपनी ग्लैक्सो स्मिथ क्लाइम विश्व की सबसे बड़ी दवा कंपनी होगी।

24. म्यानमार के विद्रोही करेन दल ने थाईलैंड के एक अस्पताल को घेरे में लेकर 500 लोगों को बंधक बनाया।

25. बार्सिलोना के ब्राजील के फुटबाल खिलाड़ी रिवाल्डो को फीफा ने 99 का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया; थाइलैंड की सेना ने अस्पताल पर धावा बोल कर बंधकों को रिहा करवाया, कार्रवाई में 10 म्यानमार के विद्रोही मारे गये; बिल गेट्स ने 55 अरब डालर गेट्स फाउंडेशन को दान में दिये।

26. पाकिस्तान के 15 न्यायधीशों ने अंतिम संविधान के अतर्गत दुबारा शपथ लेने से इंकार किया।

30 मैंचेस्टर में माइक टाइसन ने जूलियस फ्रांसिस को हराया; केन्या का वायुयान आइवरी कोस्ट में गिरा, 169 मरे।

फरवरी

1. अलास्का एयरलाइंस का जेट प्रशांत महासागर में गिरा, 88 मरे; ब्रिटेन के कुख्यात हत्यारे हैरोल्ड शिपमैन (15 महिलाओं का हत्यारा) को मौत की सजा।

2. फुटबाल खिलाडी रोनाल्डो संयुक्त राष्ट्र के गुडविल एम्बेसेडर बने।

4. श्रीलंका की राष्ट्रपति चंद्रिका ने 17 वर्ष के जातीय युद्ध को समाप्त करने के लिये नये संविधान का आश्वासन दिया।

6. अफगानिस्तान का वायुयान 178 यात्रियों के साथ हाइजैक, विमान कजाकस्तान में उतरा; फिनलैंड में श्रीमती टार्जा हैलोनेन पहली महिला राष्ट्रपति बनीं।

7. ग्रोज्नी पर रूस का नियंत्रण; अपहृत अफगानी विमान लंदन पंहुचा, पांच यात्री रिहा किये गये; पाकिस्तान ने सतह से सतह पर मार करने वाली कम दूरी की हाफ-। मिजाइल का परीक्षण किया; हिलैरी क्लिंटन ने न्यूयार्क से सीनेट का चुनाव लड़ने की घोषणा की; बेलग्रेड में युगोस्लाव के रक्षामंत्री डेनियल माइनहान की हत्या।

10. वासिम अकरम ने पाकिस्तान क्रिकेट टीम की कप्तानी छोड़ी; अपहृत अफगानी विमान के सारे यात्री रिहा।

11. ब्रिटेन की सरकार ने उत्तरी आयरलैंड पर दुबारा प्रत्यक्ष शासन लागू किया।

14 इंडोनेशिया के पूर्व सैनिक प्रमुख जनरल विरांटो को राष्ट्रपति वाहिद ने मंत्रिमंडल से निकाला।

16 युगोस्लाविया में नाटो द्वारा हवाई हमले के बाद रूस व नाटो के बीच आई कड़ुवाहट को समाप्त करने के लिये दोनों पक्ष सहमत।

18. टुवालू संयुक्त राष्ट्र का 189वां सदस्य बना।

21. चीन ने ताइवान को धमकी दी कि अगर उसने एकीकरण के लिये बातचीत शुरूवात नहीं की तो सैन्य कार्रवाई के लिये तैयार रहे; यू.एन.पी. ने श्रीलंका की राष्ट्रपति चंद्रिका

द्वारा बुलाई बैठक में शामिल होने से इंकार किया; युनेस्को ने वर्ष 2000 को शांति–संस्कृति का वर्ष घोषित किया; इरान में सुधारवादियों की जीत ने खटामे को समाजिक, राजनीतिक व आर्थिक सुधारों के प्रयास को नया आयाम दिया।

22. भारतीय मूल के रुबिन फिलिप दक्षिण अफ्रीका की प्रथम अश्वेत बिशप बनें; चीन ने जी–8 सम्मेलन में शामिल होने से इंकार किया।

24. फिलीपींस में मेयोन ज्वालामुखी फटा। ,6000 लोग विस्थापित; नाइजीरिया के काडुना में जातीय संघर्ष में 100 मरे।

25. इरान के पूर्व राष्ट्रपति चुनाव में संसदीय सीट जीते।

26. चीन की एकीकरण पर बातचीत शुरू नहीं करने पर सैन्य कार्रवाई को ताइवान ने इसे चीन की गुंडागर्दी कहा।

27. फ्रांस के प्रधानमंत्री लियोनेल जास्पिन द्वारा वेस्ट बैंक शहर रामाल्लाह शहर में हेजबुल्ला दल को आतंकवादी गुट कहने पर फिलीस्तीनी छात्रों ने उनपर पत्थरबाजी की।

28. उत्तरी नाइजीरिया के काचिया शहर में इसाइयों व मुसलमानों के संघर्ष में 65 लोग मारे गये।

29. जोयेर्ग हैदर ने आस्ट्रिया की जीनोफोबिक एक्सट्रीम राइट फ्रीडम पार्टी के नेतृत्वपद से त्यागपत्र दिया; चीन ने तिब्बत के लामा कर्मापा के माता–पिता को बंदी बनाया।

मार्च

1. मोजाम्बिक में बाढ़ के कारण दस लाख से अधिक लोग विस्थापित; मिशीगन में एक छह वर्षीय लड़के ने बंदूक चुरा कर अपनी ही उम्र की लड़की की गोली मार कर हत्या कर दी।

2. चिली के पूर्व तानाशाह जनरल अगस्टो पिनोचेट कमजोरी के कारण मुकदमे से बरी चिली जाने को स्वतंत्र।

3. अत्याचार के आरोपों से ब्रिटेन में हिरासत के 16 वर्ष के बाद पिनोचेट चिली वापस पंहुचे।

4. संयुक्त राष्ट्र क्राइम ट्रिब्यूनल ने युगोस्लाविया के पूर्व क्रोएट जनरल तिहोमिर ब्लास्किक को 45 वर्ष कैद की सजा।

5. मोजाम्बिक में बाढ़ के कारण दस लाख से अधिक पीड़ित लोगों के लिये राहत कार्य प्रारंभ।

6. चीन ने रक्षा बजट में 12% की बढ़ोत्तरी की [illegible] में रूस को कड़े प्रतिरोध के बीच भारी नुकसान.

7. बंगला देश ने सी.टी.बी.टी. का समर्थन किया संयुक्त राष्ट्र शांति सेना और विद्रोही दल के बीच संघर्ष जारी

13. चेचन युद्ध के सर्वाधिक वांछित सलमान रुडुवेव पकड़े गये; स्पेन के प्रधानमंत्री जे.एम. अजनर दुबारा निर्वाचित।

16. पाकिस्तान का कुख्यात हत्यारा जिसने 100 से अधिक बच्चों की हत्या की थी को फांसी पर लटकाने के बाद उसके शरीर के टुकड़े–टुकड़े करके अम्ल में डाले गये; नेपाल के प्रधानमंत्री के.पी. भट्टाराई ने त्यागपत्र दिया।

17. ओस्कर के 40 प्रतीक चोरी हुए।

18. ताइवान में पचास वर्ष से अधिक सत्ता में रहने वाली नेशनलिस्ट पार्टी को सत्ताच्युत, विपक्ष नेता चेन शुइ बियान सत्ता में; नेपाली संसद ने पूर्व प्रधानमंत्री जी.पी. कोइराला को दुबारा प्रधानमंत्री चुना।

19. उगांडा के कनान्गु में टेन्थ कमांडेंट आफ गाड आंदोलन के समर्थक 470 लोगों ने बंद चर्च में सामूहिक आत्महत्या की; अमरीका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की दिवसीय एशियाई यात्रा प्रारंभ; चुनाव में हारने के बाद ताइवान के नेशनलिस्ट पार्टी के नेता ली टेंग हुई ने पार्टी अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दिया।

20. अमरीका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन एक दिन के लिये बंगला देश पंहुचे; पेरिस, अर्म्सटडम और ब्रुसेल्ज 11 यूरोप क्षेत्र के देशों में सबसे बड़े स्टाक एक्सचेंज को बनाने के लिये एक हुए; गायब ओस्कर प्रतीक एक कूड़ाघर में मिले; सेनेगल के एब्डोन डियोफ राष्ट्रपति चुनाव में पराजित, अब्डाउले वाडो नये राष्ट्रपति निर्वाचित; पोप जान पाल जोर्डन की यात्रा पर।

21. इजराइल ने फिलीस्तीन को पूर्ण या आंशिक [illegible] के लिये वेस्ट बैंक के 6.1% से अपने सैनिकों को वापस बुलाना प्रारंभ किया, जर्मनी की क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन ने सुश्री अंजेला मार्केल को अध्यक्ष मनोनीत किया

22. इसाई धर्म के मुख्य तीर्थ बेथलहम की यात्रा पर पोप जान पाल ने स्वतंत्र फिलीस्तीन का समर्थन किया।

23. पाकिस्तान के सैनिक शासक जनरल मुशर्रफ ने दिसंबर 2000 से [illegible] 2001 तक स्थानीय चुनाव कराने की घोषणा [illegible] के राष्ट्रपति पास्टियर [illegible] ने त्यागपत्र दिया

24. [illegible] के राष्ट्रपति ली टुंग हुई ने [illegible] [illegible] आई.एम.एफ. के [illegible] [illegible] पिनोचेट का मस्तिष्क [illegible] [illegible] के नेताओं ने कहा कि [illegible] [illegible] जबतक दुबोस्लाव के [illegible]

29. ओपेक के 11 देश प्रतिदिन 1.45 मिलयन बैरेल कच्चे तेल के उत्पादन वृद्धि करने पर सहमत; इजराइल के पूर्व प्रधानमंत्री नेटानयाहु एवं उनकी पत्नी पर घूसखोरी का आरोप; अफगानिस्तान में संयुक्त राष्ट्र ने अपने कार्यालय को तालिबान सैनिकों द्वारा रेड करने के बाद बंद किया।

30. श्रीलंका में वायु दुर्घटना में 40 सैनिकों की मृत्यु; उक्रेन ने चर्नोबन परमाणु भट्टी को बंद करने का निर्णय लिया।

अप्रेल

1. रूस के नये राष्ट्रपति पुटिन ने परमाणु हथियारों के जखीरे को बनाये रखते हुए शस्त्र कटौती की अपील की।

3. जापान के प्रधानमंत्री कीजो ओबिची गंभीर रूप से अस्वस्थ; रूस के राष्ट्रपति पुटिन ने संयुक्त राष्ट्र मानव अधिकार उच्चायुक्त सुश्री मैरी राबिन्सन द्वारा चेचन्या पर की गईं टिप्पणियों के बाद उनसे मिलने से इंकार कर दिया।

4. अफगानिस्तान के प्रांत कुंडुज व तालिबान नेता मोहम्मद आरिफ खां की हत्या; जापान के मंत्रिमंडल को कीजो ओबुची के कोमा में चले जाने से हटना पड़ा, योशिरो मोरी नये प्रधानमंत्री; अमरीका की अदालत ने फैसला दिया कि माइक्रोसाफ्ट कंपनी ने अमरीका के एंटी ट्रस्ट ला का उल्लंघन किया; आई.बी.एम. ने दावा किया कि उसने ऐसी चिप्स का विकास किया है जो प्रक्रिया समय में एक तिहाई की कमी ला देगी।

5. स्पेन के दोनों सदनों की अध्यक्ष महिलायें – सुश्री लुइसा फर्नान्डा और सुश्री एस्पेरेंजा अगुइरेरे बनीं; जिम्बाबवे में अश्वेतों द्वारा श्वेतों के फार्म पर कब्जा करने के दौरान एक पुलिसकर्मी की मृत्यु; अफ्रीका में सूखे से 16 मिलयन लोग प्रभावित।

6. आतंकवाद व विमान अपहरण के आरोप मे पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को 25 वर्ष की सजा; रूस का अंतरिक्ष यान सोयूज अंतरिक्ष स्टेशन मिर पर उतरा।

7. पुटिन ने रूस के राष्ट्रपति पद की शपथ ली; जिम्बाबवे के संविधान मे संशोधन, इसके अंतर्गत सरकार बिना किसी मुआवजा दिये श्वेतों की भूमि जब्त कर सकने का अधिकार दिया गया, यह तब तक जारी रहेगा जबतक ब्रिटेन किसानों को मुआवजे के रूप मे धन नहीं उपलब्ध कराता है।

9. ला पाज मे प्रदर्शनों के बाद बोलविया में आपात काल की घोषणा; यूनान (ग्रीक) में चुनाव।

10. जार्जिया में राष्ट्रपति ए. शेवार्डनाडजे विजयी।

11. हैंसी क्रोंजिये द्वारा मैच फिक्सिंग कांड में लिप्त होने की स्वीकारने के साथ टीम से हटाये गये, सुश्री एंजेला मार्केल जर्मनी की क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी की अध्यक्ष बनीं।

12. चीनी राष्ट्रपति जियांग जेमिन वियतनाम यात्रा पर चीनी राज्याध्यक्ष की वियतनाम की पहली यात्रा; दक्षिण अफ्रीका मैच फिक्सिंग कांड की न्यायिक जांच करायेगा।

13. इंडोनेशिया ने सुहार्तो की विदेश यात्रा पर प्रतिबंध लगाया।

14. हवाना में पांच दिवसीय जी–77 सम्मेलन समाप्त; अमरीका ने चीन द्वारा लीबिया को लंबी दूरी की मिजाइल विकसित करने के प्रयास पर अमरीका ने चिंता जाहिर की।

16. किन्हासा हवाई अड्डे पर एक के बाद एक बम विस्फोटों से 50 मरे।

17. वाल स्ट्रीट में लगातार नुकसान के कारण टोक्यो हांगकांग और सिंगापुर के स्टाक एक्सचेंज में भारी गिरावट इटली के प्रधानमंत्री मैसिमो डी अलेमा ने त्यागपत्र दिया।

19. फिलीपींस का वायुयान दवाओ के निकट दुर्घटनाग्रस्त, चालक दल समेत 131 मरे।

20. ओंटेरियो में एक 15 वर्षीय किशोर ने चार छात्रों व एक सचिव को चाकू घोंपा।

21. नाइजीरिया में नाव दुर्घटना में 500 मरे; रूस की संसद ने सी.टी.बी.टी. का समर्थन किया।

22. क्यूबा का बालक एलियान अपने पिता से मिला।

24. मलेशिया और फिलीपींस जिम्बाबवे में भूमि हड़पने के अंतर्गत 20 बंधकों को छुड़ाने के लिये एक मत हुए।

26. युगोस्लाव के एयर लाइन के प्रमुख की बेलग्रेड में हत्या; इटली में गियुलियानो अर्नाटो (डा. सब्टल) के नेतृत्व में नई सरकार (58वीं) बनी।

27. जिम्बाबवे में भूमि हड़पने के मुद्दे पर विक्टोरिया फाल में चार अफ्रीकी देशों की बैठक।

28. अमरीका के वैज्ञानिकों ने कोशिकाओं में उस तथ्य का पता लगाने में सफलता पाई जिसके कारण वृद्धावस्था आती है।

29. अमरीका के न्यायधीश डेप्टि ने संघीय अदालत से माइक्रोसाफ्ट कंपनी को दो अलग कंपनियों में विभाजित करने को कहा।

मई

2. लंदन में पूंजीवाद के विरोधी प्रदर्शनकारियों ने चर्चिल की प्रतिमा को नुकसान पंहुचाया।

3. कामनवेल्थ ने राष्ट्रपति मुगाबे की भर्त्सना की।

4. यू.के. ने जिम्बाबवे में शस्त्र विशेषज्ञों पर प्रतिबंध लगाया; श्रीलंका ने इजराइल से राजनयिक संबंध कायम किये; ट्रुआंट फिलिपिनो स्कूल के लड़के द्वारा विकसित एक ई–मेल वायरस 'आई लव यू' ने विश्व की कंप्यूटर प्रणाली में अवरोध पैदा किया।

6. सियेरा लियोन में विद्रोहियों ने संयुक्त राष्ट्र शांति सेना के 300 सैनिकों को बंधक बनाया, इनमें से अधिकांश भारतीय; लेबर पार्टी के पूर्व एम.पी. केन लिविंगस्योन लंदन के प्रथम निर्वाचित मेयर बने।

7. चीन ने 2010 तक शून्य प्रतिशत जनसंख्या वृद्धि का लक्ष्य रखा।

9. पुलिस ने ई–मेल वायरस 'आई लव यू' जिसके कारण अरबों डालर का नुकसान हुआ के आरोपी फिलिपिनो के रिओरेल रैमोन्स को पर्याप्त सबूत न मिल पाने के कारण रिहा।

10. विद्रोहियों के आक्रमण के भय से संयुक्त राष्ट्र शांति सेना की 220 सैनिक टुकड़ियों को हटाया गया; युनेस्को ने चीन की अभिनेत्री गांग लियान को 'एन आर्टिस्ट आफ पीस' की उपाधि दी; जापान के प्रधानमंत्री योशियो मोरी स्कैंडल में फंसे।

11. लंका की वायुसेना द्वारा लिट्टे के ठिकानों पर बमबारी से 108 मरे।

12. इथियोपिया और एरिट्रिया में भारी युद्ध शुरू।

13. संयुक्त राष्ट्र ने इथियोपिया और एरिट्रिया को युद्ध बंद न करने पर प्रतिबंध लगाने की चेतावनी दी।

14. जापान के पूर्व प्रधानमंत्री कीजो ओबुची का 62 वर्ष

की आयु में निधन; जिम्बाब्वे के भूमि हड़पने वालों ने इयान स्मिथ की भूमि पर कब्जा किया; इथियोपिया और एरिट्रिया ने एक दूसरे को भारी नुकसान पहुंचाने के दावे किये; पुटिन ने रूस को 7 संघीय जिलों में विभाजित किया; श्रीलंका ने लिट्टे से अपने बंधक सैनिकों की वापसी के लिये लिट्टे के पकड़े गये लोगों की अदला-बदली की पेशकश की; पाकिस्तान की पाप गायिका नाजिया हसन (कुर्बानी गीत की गायिका) को फेफड़े का कैंसर; नीदरलैंड के पटाखे के गोदाम में आग लगने से 20 मरे, 540 घायल।

15.काठमांडु में बच्चों का सेना में इस्तेमाल किये जाने पर बैठक; सियेरा लियोन में विद्रोहियों ने संयुक्त राष्ट्र शांति सेना के 500 बंधक सैनिकों में से 139 को रिहा किया; जापान को 10,000 भारतीय आई.टी. इंजीनियरों की जरूरत; वाशिंगटन में शस्त्र अधिनियम को कड़ा करने के लिये हजारों महिलाओं ने प्रदर्शन किया; जापान के प्रधानमंत्री मोरी के वक्तव्य कि जापान ईश्वर का देश है, को वहां के राजा पर केंद्रित माना गया और विवाद उत्पन्न हो गया।

16.लिट्टे ने जाफना के पूर्व पर हमले तेज किये; जनरल बिरातो ने इंडोनेशिया मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दिया; श्रीलंका मुकिर्वीतो से इस शर्त पर बात करने को तैयार कि प्रभाकरन खुद बातचीत करें, डब्ल्यू.एच.ओ. में ताइवान का पर्यवेक्षक का प्रयत्न विफल।

17.लिट्टे ने उत्तरी और पूर्व श्रीलंका सुरक्षा बलों पर दबाव बढ़ाया; सियेरा लियोन के विद्रोही नेता फोडे संकोह गिरफ्तार; हिलेरी क्लिंटन न्यूयार्क अमरीका की सीनेट सीट से चुनाव लड़ने के लिये डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार घोषित; भूटान ने उल्फा को एक और मौका दिया कि वह भूटान के पूर्वी वन से शांतिपूर्वक हट जाये।

18. लिट्टे ने पालाडी हवाई अड्डे को तहसनहस किया; श्रीलंका ने 15,000 भगोड़े सैनिकों को आम माफी दी; पोप जान पाल 80 वर्ष के हुए; सुरक्षा परिषद ने इथियोपिया और एरिट्रिया पर युद्ध समाप्त न करने की स्थिति में शस्त्र प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया; इजराइली सैनिको की दक्षिण लेबनान से वापसी प्रारंभ; चीन और फिलीपींस स्प्राटलीज मुद्दे को समाप्त करने पर सहमत; प्रिंस चार्ल्स ने जेनेटिकली खाद्य पदार्थो की आलोचना की; नवाज शरीफ की पत्नी ने मुस्लिम लीग की सदस्यता ली; यूनान (ग्रीक) ने पहचान पत्र पर धार्मिक अनिवार्यता को हटाने का आदेश दिया।

19.फिजी में एक व्यवसाई जार्ज स्पीट ए.के.47 रायफल से लैस अपने सात अनुयाइयों के साथ पार्लियामेंट में घुस कर भारतीय मूल के प्रधानमंत्री महेंद्र चौधरी और उनके मंत्रिमंडलीय सहयोगियों को बंधक बना लिया; सुआ शहर में भारतीयों की दुकानों में लूटमार प्रारंभ; न्यूयार्क के मेयर रोडोल्फ गुइलियानी हिलेरी क्लिंटन के विरुद्ध चुनाव मैदान से हटे।

20. फिजी में स्वघोषित प्रधानमंत्री जार्ज स्पीट ने महेंद्र चौधरी के साथ मारपीट व दुर्व्यहार किया; भारत के प्रधानमंत्री ने श्रीलंका में अपनी भूमिका को निभाने के लिये संकल्पता जाहिर की; ब्रिटेन के प्रधानमंत्री चौथे बच्चे लियो के पिता बने, ताइवान के नवे निर्वाचित प्रधानमंत्री चेन ने कहा कि वे तब तक स्वतंत्रता की घोषणा नहीं करेंगे जब तक चीन आक्रमण नहीं करता, पाक ने सैनिक विद्रोह के 75 आरोपी हिरासत में; सियेरा लियोन में विद्रोही दल (आर.यू.एफ.) शांति वार्ता के लिये संकोह की रिहाई की मांग की।

21.रूस ने अधिक आयु के मिर अंतरिक्ष स्टेशन को त्यागने का निर्णय लिया; जाफना प्रायद्वीप में युद्ध ने तेजी पकड़ी, लिट्टे चावाकाचेरी शहर के निकट पंहुचा; फिजी के राष्ट्रपति ने सत्ता पर कब्जे को अवैध ठहराया; रिक लाजियो हिलैरी क्लिंटन का चुनावी मुकाबला करेंगें; बार्बरा कार्टलैंड, ब्रिटेन की रोमांटिक लेखिका का 98 वर्ष की आयु में निधन।

22.नार्वे द्वारा श्रीलंका में शांति प्रयास; फिजी में महेंद्र चौधरी के प्रधानमंत्री बने रहने के आसार कम; भारत की नौसेना जाफना द्वीप में फंसे श्रीलंका के सैनिकों को बचाने के लिये 72 घंटे के लिये चौकस।

23. अर्कांसास सुप्रीम कोर्ट की पेशेवर आचरण समिति ने ने निर्णय दिया कि पाउला जोन्स मामले में क्लिंटन को सजा दी जाये; बिल गेट्स ने कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी को 130 मिलियन डालर दान में दें; इजराइल की सुप्रीम कोर्ट ने महिलाओं को वेलिंग वाल पर प्रार्थना करने की अनुमति दी; अटलांटिस अंतरिक्ष यान से अंतरिक्ष यात्री अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन की मरम्मत करने के लिये यान से बाहर आये; फिजी में ग्रेट काउंसिल आफ चीफ्स ने राष्ट्रपति का नागरिक विद्रोह को मान्यता न देने के फैसले को सही ठहराया; श्रीलंका की राष्ट्रपति ने भारत द्वारा सैनिक सहायता उपलब्ध न कराने पर असंतोष जाहिर किया, भारत का कहना है कि केवल मानवीय आधार पर ही वो जाफना में फंसे 30,000 सैनिकों को निकालने में सहायता कर सकता है।

24. भारत और अमरीका ने स्वतंत्र तमिल राष्ट्र ईलम को समर्थन देने से मना किया।

25. अमरीका के [illegible] और [illegible] क्रोएशिया नाटो का सदस्य बना, अमरीका ने चीन को स्थायी व्यापार देश का दर्जा दिया, एरिट्रिया ने विवादास्पद सीमा क्षेत्र से अपनी सेनायें वापस बुलाने की घोषणा की, इथियोपिया ने इसे अपनी जीत बताया।

26.लिट्टे ने जाफना के [illegible] पर 10 घंटे के युद्ध विराम की घोषणा की; राष्ट्रपति कुमारतुंगे ने लिट्टे प्रमुख को जाफना का मुख्यमंत्री बनाने का प्रस्ताव दिया, जार्ज स्पीट ने महेंद्र चौधरी को छोड़ने से इंकार किया, इरान के राष्ट्रपति रफसंजानी ने संसदीय सीट छोड़ी।

27 फिजी के राष्ट्रपति रातू कामिसेसे मारा ने जार्ज स्पीट द्वारा बंधक बनाये महेंद्र चौधरी की सरकार को बर्खास्त किया, [illegible] में एक कैथोलिक पादरी को बाइबिल बांटने पर [illegible]; फ्लोरिडा में एक 13 वर्षीय लड़के ने अपने शिक्षक की गोली मार कर हत्या की, फिजी की [illegible] पर रोक [illegible]।

28 उत्तरी कोरिया के [illegible] 18 [illegible] चीन की गुप्त यात्रा [illegible] एजेंट [illegible] व्यवसाई से [illegible] पर भारी [illegible] प्रधानमंत्री [illegible] पर रोक, सियेरा लियोन के विद्रोहियों ने [illegible] और [illegible] होगा।

29. पेरू मे चुनावों मे फुजिमोरी राष्ट्रपति निर्वाचित, अमरीका ने इसे अवैधानिक कहा. अंतरिक्ष यान अटलांटिस अपने मिशन को पूरा करके पृथ्वी पर वापस उतरा; फिजी में सेना प्रमुख फ्रैंक वाइमिमाराामा ने मार्शल ला लगाकर सत्ता अपने हाथ मे ली राष्ट्रपति मारा ने त्यागपत्र दिया, इंडोनेशिया में सुहार्तो नजरबंद।

30 ब्रिटेन ने उतरी आयरलैंड को शासन का स्थानांतरण किया. फिजी के सेना प्रमुख फ्रैंक वाइमिमारामा ने राटु ई नाइलाटकाउ को प्रधानमंत्री नामांकित किया; फिजी में अनेक जातीय संविधान को निरस्त कर 1990 के संविधान जिसमें केवल फिजी मूल के लोग उच्च पदो पर आ सकते हैं को वापस लागू किया. जिम्बाववे के पूर्व राष्ट्रपति कनान बनाना को जबर्दस्ती समलैंगिक संबध बनाने पर एक वर्ष की कैद; इथियोपिया ने अपनी जीत की घोषणा करते हुए सीमा से अपनी सेना को वापस बुलाना प्रारंभ किया।

31. रिपब्लिकन पार्टी ने न्यूयार्क सीनेट चुनाव में रिको लाजियो को अपना उम्मीदवार बनाया; इंडोनेशिया के राष्ट्रपति वाहिद ने करोड़ो डालर के स्कैंडल में शामिल होने के आरोप को निराधार कहा।

जून

1. एरिट्रिया ने कहा कि इथियोपिया युद्धबंदी के बाद सैनिकों की वापसी की गारंटी दे।

2. रंगभेद समय के कुख्यात जासूस क्रेग विलियमसोन को दक्षिण अफ्रीका की टी.आर.सी. एम्नेस्टी ने क्षमादान दिया।

3. श्रीलंका ने जाफना को बचाने के लिये 4000 सैनिकों की तैनाती की; क्रिकेटियर हैंसी क्रोंजिये ने भारतीय दलाल से स्वीकार करने पर लताड़े जाने के बाद इसे उन्होंने शैतानी माया का असर कहा; जिम्बाववे की सरकार ने श्वेतों के 804 फार्म्स अधिग्रहण करने के लिये चिन्हित किय।

4. संयुक्त राज्य अमरीका और रूस परमाणु बम बनाने मे आने वाले तत्व प्लुटोनियम को समाप्त करने और अर्ली मिजाइल सिटेविंग टेक्नालोजी पर सहयोग करने पर ... घटिका कुमारतुंगे लिट्टे से बिनाशर्त बातचीत करने को ... ही अमरीका के भौतिक विज्ञानियों ने सिद्ध किया कि ... की गति को तीन गुना बढ़ाया जा सकता है। ... सोलोमोन आइसलैंड के प्रधानमंत्री बार्थोलोमियू को ... ने बधक बना कर उनके त्यागपत्र की माग की; एंड्र ... तृत्व मे मलाइटा ईगल फोर्स के नाम से जाने वाले इस ... गवर्नर जनरल फादर जान लापली को भी बधक ... स्को मे रूस-अमरीका की तीन दिवसीय बैठक ... का की मिजाइल डिफेंस प्लान्ज पर बिना किसी ... त; इंडोनेशिया के सुमात्रा मे रिचर स्केल पर 7.9 ... 03 मरे; सर्बो ने नाटो के नेतृत्व मे शांति सेना ... के आक्रमण से रक्षा में नाकामयाबी के बाद ... से हटे; अमरीका के राष्ट्रपति ने रूस की ससद ... ते हुए अमरीका की मिजाइल डिफेंस शील्ड ... की किसी प्रकार की आशंका को निराधार ... यल परमाणु भट्टी को बंद करने की घोषणा ... इस भट्टी से प्रदूषण को नियन्त्रित करने के लिये 78 मिलयन डालर मिलेंगें; रूस के राष्ट्र... वैटिकन यात्रा पर।

6. सोलोमन आइसलैंड के प्रधानमंत्री बार्थोलोमियू ... गृहयुद्ध से बचाने के लिये त्यागपत्र देने को राजी; ... राष्ट्रपति चिराक 7 वर्षीय राष्ट्रपति काल को कम कर ... वर्ष करने के पक्ष में।

7. श्रीलंका के उद्योग विकास मंत्री सी.वी. गूनेरत्ने ... 21 लोग कोलंबो के निकट लिट्टे के आत्महंतक बम विस्फ... द्वारा बम विस्फोट में मारे गये; सोलोमन आइसलैंड में जा... दंगों में 100 से अधिक मारे गये; कामनवेल्थ ने फिजी ... सदस्यता को स्थगित किया।

9. दक्षिण अफ्रीका के ओपेनिंग बल्लेयाज एच. गिब्स द्वा... स्वीकार करने पर कि खराब प्रदर्शन करने के लिये उसने भारत ... में रिश्वत ली थी को टीम से हटाया गया।

10. सीरिया के राष्ट्रपति हफेज अल असद का 69 वर्ष की आयु में निधन।

11. स्वर्गीय राष्ट्रपति असद के पुत्र बाश्हर सीरिया के नये राष्ट्रपति नामांकित।

13. दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति किम डाय जुंग ने प्यांगपोंग मे कोरियन सम्मेलन में कहा कि पचास वर्ष पूर्व विभाजन से 10 लाख से अधिक बिछुड़े परिवार के सदस्यों का दुबारा मिलन आसान हो जायेगा।

14. मेहमट अली अग्का जिसने 1981 मे पाप जान पाल द्वितीय को मारने का प्रयास किया था को क्षमा मिली और उसे टुर्की भेजा गया जहां पर उसपर 1979 में एक पत्रकार की हत्या का मुकदमा चलेगा; मास्को के मीडिया मुगल व्लादिमि... गुइस्की की गिरफ्तारी से पुटिन की छवि को धक्का।

15. अपमानित हैंसी क्रोंजिये ने आरोप लगाया कि उन्हें सटोरिये से मिलाने का काम अजहरुद्दीन ने किया था; तीन दिवसीय कोरियन सम्मेलन के अंतिम दिन दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति ने कहा कि दोनों देशों का संयुक्तीकरण संभव।

16. सर्बिया के विपक्षी नेता युक ड्रास्कोविक की मांटेनेग्रो मे गोली मारकर हत्या; ब्रिटेन के सर्वाधिक वृद्ध जुड़वा जोकि अविविवाहित भी है 100 वर्ष के हुए; इजराइल व फिलीस्तीन शांति वार्ता के लिये सहमत, जर्मनी ने अपने समस्त परमाणु संयत्रों को 32 वर्ष के कार्यकाल के बाद बंद किया।

18 श्रीलका सरकार ने प्रायद्वीप के उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में लिट्टे के प्रशासन के प्रस्ताव को नामजूर कर दिया; ओ.ए.यू. के प्रयत्नों से एरिट्रिया और इथियोपिया द्वारा शाति योजना पर सहमति से दो वर्षीय युद्ध रुका।

19 ब्रिटेन के कस्टम विभाग ने चीनी मूल के 58 व्यक्तियों के शव एक लारी से बरामद किये, इन्हें अवैधानिक रूप से शरण लेने के लिये लाया जा रहा था; इथियोपिया की सैनिक टुकड़ी एरिट्रिया के गाव टेस्सेग से लौटी।

20 इंडोनेशिया मे डुगा में मुस्लिम इसाइयों के बीच दंगों मे 116 मारे गये, जी.15 सम्मेलन कायरो में समाप्त, इरान और कोलंबिया नये सदस्य बने; ताइवान के राष्ट्रपति ने कोरिया की राह पर चलते हुए चीन के राष्ट्रपति को आमंत्रित किया, लेकिन चीन ने आमंत्रण ठुकरा दिया।

21. अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (हेग) ने पाकिस्...

के विरुद्ध 10 अगस्त, 1999 को उसके विमान को मार गिराने की शिकायत को यह कहते हुए निरस्त कर दिया कि यह मामला उसके अधिकार के बाहर है; भारतीय कैथोलिक चर्च के प्रमुख आर्चविशप एसन डी लास्टिक का पोलैंड में कार दुर्घटना में निधन; हैंसी क्रोंजिये ने किंग आयोग के समक्ष धन लेने की बात स्वीकार की।

22. चीन का वायुयान दुर्घटनाग्रस्त, 42 मरे; नासा के वैज्ञानिकों ने मंगल पर पानी होने की पुष्टि की; डेल्टा एयर लिब्ज, एयर फ्रांस और कोरियन एयर द्वारा एक समझौते को स्काईटीम कहा गया।

24. इंडोनेशिया में डुमा में मुस्लिम इसाइयों के बीच दंगों में मृतकों की संख्या 150 हो गई; जिम्बाबवे में चुनाव; क्रोएशिया में एक टैंकर ट्रक में 26 अवैधानिक रूप से ले जारहे चीनी मूल के लोग मिले।

25. इंडोनेशिया में मुस्लिम इसाइयों के बीच दंगों के कारण मोलुकुस में नागरिक आपातकाल लगाया गया।

26. लोकतंत्र को मजबूत करने के लिये 100 देसों के विदेश मंत्रियों की बैठक; लंदन में मानव जीन परियोजना की प्रेस कांफ्रेंस में वैज्ञानिको ने ह्यूमन जेनेटिक कोड के प्रारूप के पर्ण होने की पुष्टि की, इससे बिमारियों की समझ, बचाव व इलाज में आसानी आयेगी; इजराइल के विदेश मंत्री ने अराफात को स्वंय फिलीस्तीन को स्वतंत्र राष्ट्र की घोषणा पर चेतावनी दी; कुवैत पर इराक के आक्रमण के दौरान पिकासो की चोरी हुई तैलीय कलाकृति डोरा मार बरामद; जापान मे मोरी की पार्टी को पराजय लेकिन, अन्य दलों के सहयोग से सत्ता में; ई-11 के अनुसार जिम्बाबवे में चुनाव निष्पक्ष नहीं हुआ; अमरीका के राष्ट्रपति चुनाव में उपभोक्ता कार्यकर्ता राल्फ नाडर ग्रीन पार्टी के प्रतिनिधि।

27. जिम्बाबवे में मुगाबे की पार्टी को कम अंतर से जीत हासिल; विपक्षी दल ने 57 सीटें जीतकर बेहतर प्रदर्शन किया।

29. लार्ड्स का मैदान 100 टेस्ट मैचों का आयोजन करने वाला प्रथम स्टेडियम बना; क्यूबा का शरणार्थी बालक 7 महीने अमरीका में गुजारने के बाद अपने देश वापस पंहुचा; माहेकु आइसलैंड में जातीय दंगों के कारण भाग रहे 580 लोगों से सवार जलयान पूर्वी इंडोनेशिया में डूब गया।

30. मुगाबे ने कहा कि 800 से अधिक फार्मलैंड का अधिग्रहण कर लिया जायेगा। दक्षिण कोरिया व उत्तरी कोरिया ने संबंधों को दुबारा एक करने के समझौते पर हस्ताक्षर किये।

जुलाई

1. स्ट्रेट आफ ओरेसुंड पर नये सेतु के खोले जाने से स्वीडन व डेनमार्क का संयुक्तीकरण, इससे स्वीडन एक बार और युरोपियन महाद्वीप से जुड़ गया; इतिहास में पहली बार एक महिला को बकिंघम पैलेस में संतरी की ड्यूटी मिली।

2. मंगोलिया में चुनाव।

3. गैर राजनीतिक बैंकर लाइसेनिया क्यारासे को फिजी का प्रधानमंत्री बनाया गया, भारतीय मूल के प्रधानमंत्री महेंद्र चौधरी अभी भी जार्ज स्पीट के बंधक; भारतीय मूल के लोगों को नये मंत्रिमंडल में शामिल नहीं किया गया। मंगोलिया में पूर्व के साम्यवादी शासकों को भारी बहुमत मिला।

4. उत्तरी आयरलैंड में ड्रमक्री में हिंसा फैली; राष्ट्रपति रुडोल्फ शुस्टर के गंभीर रूप से बिमार पड़ जाने से स्लोवाक के प्रधानमंत्री मिलकुलास जुरिंडा ने सत्ता संभाली; आइवरी कोस्ट के सैन्य शासक जनरल राबर्ट गुइ ने कहा कि सेना में अराजकता पर नियंत्रण कर लिया गया है; चीन ने पाकिस्तान को मिजाइल प्रौद्योगिकी के बेचने के आरोप को नकारा; मैक्सिको में विपक्ष के नेता विंसेटे फाक्स राष्ट्रपति चुनाव में विजयी; फ्रांस ने यूरो-2000 कप जीता; सउदी अरबिया ने कहा कि अगर वर्तमान के विश्व में कच्चे तेल के दाम नहीं गिरे तो वो भी प्रतिदिन 500,000 बैरल कच्चे तेल का उत्पादन बढ़ायेगा।

5. फिजी की सेना ने दो दिन के अदर संसद के चारों ओर सैन्य क्षेत्र को स्वेच्छा से खाली कर देने पर क्षमा करने का आश्वासन दिया; स्काट के सिने सितारे सीन कोन्नरी को नाइटहुड की उपाधि; आस्ट्रेलिया युरोपीय संघ के विस्तार को रोकने के लिये चुनाव पर जोर देगा अगर वियेना से प्रतिबंध नहीं हटाये गये; जापान ने विश्व की पहली तैरती उड़ान पट्टी का परीक्षण किया।

6. आइवरी कोस्ट में सैन्य शासको और वेतन बढ़ाने की मांग पर सैनिकों के बीच समझौता; ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ब्लेयर का 16 वर्षीय पुत्र इवान नशे की अधिकता के कारण हिरासत में।

7. ओ.ए.यू. अन्वेषण ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद पर आरोप लगाया कि अमरीका, बेल्जियम और फ्रांस के दबाव के कारण कारण 1994 में रुवांडा में 800,000 मृतकों को बचाने का प्रयत्न नहीं किया; नामीबिया और अंगोला ने ओ.ए.यू. के 36वें सम्मेलन का बहिष्कार करने का फैसला किया।

8. अमरीका का बहुचर्चित मिजाइल डिफेंस टेस्ट असफल।

9. विद्रोही नेता जार्ज स्पीट और सेना के बीच समझौते के साथ सात हफ्तों से बंधक बने महेंद्र चौधरी व उनके सहयोगियों की रिहाई शीघ्र संभव।

10. फिजी में अराजकता फैली; डर्बन में एड्स पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति ने कहा कि एच.आई.वी. एड्स का अकेला कारण नहीं है, निर्धनता और विकास का न होना प्रमुख कारण हैं; इजराइल के राष्ट्रपति एजेर वीजमैन ने त्यागपत्र दिया; पीट सम्प्रास ने पुरुषों की विम्बलडन एकल स्पर्धा जीती।

11. नाइजीरिया में अडेजे में पाइपलाइन विस्फोट में 114 मरे; पाकिस्तान ने नवाज शरीफ की पत्नी खुलसून नवाज द्वारा पाकिस्तान की मुस्लिम लीग के प्रदर्शन को नेतृत्व न दे पाने के लिये उनके घर पर एक सप्ताह तक पुलिस की घेराबंदी रखी।

12. कैम्प डेविड वेस्ट एशिया सम्मिट में बिल क्लिंटन, बाराक और अराफात ने हिस्सा लिया; यूरो 100 में छपाई की गल्ती निकली जिससे छपाई के छह महीने बरबाद हुए और 33 मिलयन यूरो का नुकसान हुआ।

13. फिजी के अपदस्थ प्रधानमंत्री महेंद्र चौधरी और अन्य 17 बंधकों की 55 दिनों के बाद रिहाई, युनिसेफ ने लिट्टे द्वारा बच्चों को युद्ध में इस्तमाल करने पर प्रताड़ना की।

14. मियामी की ज्यूरी ने अमरीका की फिलिप मोरी सहित पांच तंबाखू कंपनियों पर फ्लोरिडा के धूम्रपान करने वालों को नुकसान पंहुचाने के जुर्म में 145 बिलयन डालर का जुर्माना किया।

16. मार्टिना नवरातिलोवा का नाम इंटरनेशनल टेनिस हाल आफ फेम में रखा गया।

17. डा. वस्हद अल असद ने सीरिया के राष्ट्रपति पद की शपथ ली; नाइजीरिया में एक और पाइपलाइन विस्फोट में 30 मरे; पुटिन ने अमरीका को चेतावनी दी कि यदि वह नेशनल मिजाइल शील्ड की योजना को आगे वढ़ायेगा तो रूस व चीन उसका जवाव देंगें।

18. रूस के राष्ट्रपति ने चीन में जियांग जेमिन के साथ संयुक्त घोषणापत्र पर हस्ताक्षर; रूस के अंतिम जार निकोलस द्वितीय को आर्थोडाक्स चर्च शहीद के तौर पर सम्मानित करेगा; आई.पी.पी. एफ. के अनुसार दक्षिण अफ्रीका में 33,000 औरतों की मृत्यु असुरक्षित गर्भपात के कारण हो जाती है; फिजी में नये राष्ट्रपति की शपथ ग्रहण और मंत्रिमंडल की शपथ ग्रहण की स्थगन के साथ जार्ज स्पीट ने दुवारा हिंसा की धमकी दी।

22. विशेष अदालत ने नवाजशरीफ को हेलीकाप्टर मामले में 14 वर्षीय आजीवन कारावास की सजा दी।

25. पेरिस के चार्ल्स डी गाले हवाई अड्डे के निकट अमरीका के गंतव्य पर कंकार्ड विमान दुर्घटनाग्रस्त होने से 113 मरे।

26. फिजी के वागी नेता जार्ज स्पीट को सेना ने गिरफ्तार किया; श्रीलंका में नया संविधान ठंडे वस्ते में।

27. अराफात फिलिस्तीन राज्य को स्वतंत्र घोषित करने पर दृढ़; फिजी में स्पीट के समर्थक गिरफ्तार।

29. पेरू में राष्ट्रपति फुजिमोरी के शपथ ग्रहण का वड़े पैमाने पर विरोध, 7 प्रदर्शनकारी मारे गये; आई.आर.ए. विद्रोहियों के लिये हथियारों से लदा जलयान क्रोएशिया में जब्त।

30. इजराइल के 64 वर्षीय व्यक्ति कृत्रिम हृदय वाले विश्व के प्रथम व्यक्ति वने; फिजी में स्पीट के समर्थकों ने 30 भारतीय मूल के लोगों को वंधक वनाया; वेनेजुएला ने हुगो चावेज को दुवारा राष्ट्रपति चुना।

31. दोनों कोरियायी देशों ने नो मैन्स लैंड पर लायजन कार्यालय खोले।

अगस्त

1. इजराइल के विदेश मंत्री डेविड लेवी ने वाराक के मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दिया, सोलोमन आइसलैंड में 19 महीने से चल रहा हिंसाक्रम रुका, जिम्वावे ने आधे से अधिक श्वेतों की कृषि भूमि पर विना किसी मुआवजे के कब्जा कर ...00 निर्धन अश्वेतों को वाटने का फैसला किया। ... श्रीलंका का नया संविधान ससद में प्रस्तुत किया गया; ... अपने 6.5 मिलयन डालर के वेतन के साथ विश्व के ... अधिक भुगतान पाने वाले फुटवालर वनें। ... के पाशाखा गांव मे भूस्खल से 200 लोगों के ... मरे; दूरी पर विचरण कर रहे नौ नये ग्रहों की खोज ... मंडल के वाहर ग्रहों की संख्या 51 हुई. 11 ... में 63,000 एकड़ वनों मे आग फैली, रिपोर्ट ... पिछली आधी सदी की सवसे भयंकर आग नवंवर ... और लाखों एकड़ की वन भूमि नष्ट हो जायेगी; ... दलों ने उत्तरी शहर वांगी पर कब्जा किया; ... न्यायालय ने जनरल पिनोचेट की सीनेट की ...।

8. मलेशिया के पूर्व उपप्रधानमंत्री को अप्राकृतिक जुर्म में उच्च न्यायालय ने 9 वर्ष की सजा दी।

10. श्रीलंका की प्रधानमंत्री सुश्री सिरिमावो भंडारनायके ने त्यागपत्र दिया, रत्नासिरी विक्रमनायके नये प्रधानमंत्री; विद्रोहियों ने किर्गिज्स्तान पर हमला किया।

12. मैडोना दूसरे वच्चे की मां वनीं; इवांडर हाली ने जान रुइज को हरा कर मुक्केवाजी के विश्व चैम्पियन ...

14. जनरल मुशर्रफ ने काश्मीर के अलगाववादियों को समर्थन देने के निश्चय को दुहराया; रूस के आर्थोडाक्स चर्च के पादरियों ने अंतिम जार निकोलस द्वितीय को सम्मानित करने का विरोध किया; रूस की पनडुव्वी कुर्स्क वैरेंट सागर में डूवी; उत्तरी व दक्षिणी कोरिया के परिवार के सदस्य 50 वर्ष वाद एक दूसरे से अस्थाई रूप से मिले।

16. रूस की पनडुव्वी कुर्स्क के चालक दल के जीवित वचने के आसार क्षीण पड़े; व्रिटेन के विशेषज्ञ दल ने परामर्श दिया कि मानव भ्रूण कोशिकाओं पर ध्यानपूर्वक नियंत्रित प्रयोग किये जायें; पेरिस के निकट कंकोर्ड विमान की दुर्घटना के वाद वेड़े के समस्त 13 विमानों को हैंगर में रखा गया।

17. अमरीका की दो अलग शोध दल ने सुअर के क्लोनिंग करने का दावा किया।

18. इजराइल के प्रधानमंत्री वाराक ने फिलीस्तीनियों को स्वतंत्र देश इस शर्त पर देने को कहा कि वे इजराइलों के साथ झड़पें वंद करें।

19. दक्षिण अफ्रीका के क्रिकेट खिलाड़ी एच. गिव्स और एच. विलियम्स को भारत में धन लेकर घटिया प्रदर्शन करने का आरोपी माना गया।

20 रूस के अंतिम जार निकोलस द्वितीय को आर्थोडाक्स चर्च ने शहीद के तौर पर सम्मानित किया।

22. वैरेंट सागर में रूसी पनडुव्वी के डूवने के 10 दिनों वाद गोताखोरों ने समस्त 118 चालक दल के सदस्यों की मृत्यु की पुष्टि की; व्रिटेन के 11 वर्षीय डैनियल रेडक्लिफ को हालीवुड की हैरी पाटर फिल्म का स्टार माना गया।

23. यूरो डालर की तुलना में 90 के अंक तक लुढ़का; इंडोनेशिया के राष्ट्रपति वाहिद ने वी.पी. मेघावती को प्रतिदिन शासन कार्य देखने के लिये अधिकृत किया।

24. वहरीन मे मनामा के निकट गल्फ एयर के विमान के दुर्घटना ग्रस्त होने से समस्त सवार 143 लोग मारे गये।

27 दक्षिण फिलीपींस में अवु सय्यफ दल द्वारा अपहृत 5 पश्चिमी वंधक रिहा।

28 मास्को के विश्व के दूसरे लंवे टी.वी. टावर ओस्टानकिनो में आग लगी; संयुक्त राष्ट्र में 100 देशों के 1500 धार्मिक नेताओं का सम्मेलन प्रारंभ; म्यानमार की आंग सान सू ची स्वाम्पी क्षेत्र में फंसी, सेना ने चिकित्सा सु... उपलव्ध कराने से इकार किया।

29. अरुशा में वुरुंडी शांति समझौते पर हस्ताक्षर।

30. मैडोना अपने मित्र गय रिची से विवाह करेंगी।

31. इडोनेशिया के पूर्व राष्ट्रपति जनरल सुहार्तो गंभीर रु... से अस्वस्थ, अदालत में जाने में असमर्थ; वंगला देश के पू... सैनिक शासक जनरल इरशाद को पांच वर्ष की कैद दे... उनकी संसद सदस्यता समाप्त हुई।

जा रहे दगों को वंद करवायें; वोजिसलाव कोस्तुनिक युगोस्लाविया के नये राष्ट्रपति वने।

8 वंग्लादेश में वाढ़ से 50 गांव प्रभावित, 500,000 लोग वेघर हुए।

9 पोलैंड में एलेक्जाडर क्वासिनिवेस्की दुवारा राष्ट्रपति निर्वाचित।

10. श्रीलका की पूर्व प्रधानमंत्री सरीमावो भंडारनायके की 84 वर्ष की आयु में निधन।

11. श्रीलंका में संसदीय चुनावों में सत्ताधारी दल वहुमत गने से वंचित।

12. संयुक्त राज्य के लडाकू जलयान पर हमला 17 मरे।

13. पश्चिमी एशिया की स्थिति तनावपूर्ण, पेरिस में भी यहूदी चर्च (synagogue) आग के हवाले।

14. वोस्निया के मुस्लिम नेता अलिजा इस्त्वेगोविक ने त्रिपक्षीय प्रसिडेंसी पद से त्याग पत्र दिया। फिलिपींस में कैथोलिक विशप्स कांन्फ्रेंस में राष्ट्रपति एस्ट्राडा जिन पर अवैध लोटरी विक्रेता से 8.6 मिलियन डालर रिश्वत लेने का आरोप है, से त्याग पत्र मागा।

16. मिस्र (इजिप्ट) के राष्ट्रपति मुवारक द्वारा आयोजित वेस्ट एशिया सम्मिट में वारक, अरफात और क्लिंटन ने हिस्सा लिया। शर्म अल–शेख में इजराइल – फिलिस्तीन वैठक में रूस ने भाग लेने से इनकार किया।

17. पश्चिमी एशिया में वारक और अराफात युद्ध विराम पर सहमत। क्वीन एलिजावेथ पोप से मिलने वैटिकन गई।

21. अरव देशों के नेताओं ने इजराइल के विरुद्ध सयुक्त होने के लिए कायरो में आपात वैठक वुलाई।

25. श्रीलंका में 25 तमिलियों के नरसंहार करने वाले सिंहलियों ने आत्मसमर्पण किया; आइवरी कोस्ट में सैनिक ासक रोवर्ट गुई सत्ता से वाहर समाजवादी नेता लोरट गावगो त्ता में।

31. पेरु मे विद्रोह को कुचल दिया गया; पहली वार इन्टर नल स्पेस स्टेशन के प्रथम नागरिकों को अंतरिक्ष में ले जाने लिए एक रूसी राकेट का वेकानूर से सफल प्रक्षेपण रूस निर्मित अगोला का वायु या दुर्घटनाग्रस्त 48 मरे।

र

सिगापुर एयर लाइन्स का वायुयान ताइपे में दुर्घटनाग्रस्त रतियों सहित 79 मरे। सिगापुर ने घोषणा की अगले 5 ,50,000 भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी पेशेवारों को

ोनिया के राष्ट्रपति वाहिद ने टोमी सुहार्तो को क्षमादान र किया; विश्व की सबसे वृद्ध महिला इवा मोरिस 114 वर्ष की आयु में निधन; इंटरनेशनल स्पेस अवधि की योजना), प्लेटफार्म पर पहुच चालक दल ेश लिया; यूके मे पिछले 50 वर्ष के वाद सर्वाधिक ुनिसेफ के अनुसार हर एक मिनट में 25 वर्ष व्याति एड्स के रोगी हो रहे हैं; युगोस्लाविया दुवारा सदस्य वना। 5 वर्षों से शतरंज की दुनिया के महान नायक लादिमिर क्रामनिक से पराजित।

6. नाइजीरिया में एक पेट्रोल टैंकर के वेकावू ह गाड़ियों से टकराने और विस्फोट से 200 लोग फिलीपींस के राष्ट्रपति एस्ट्राडा पर महाभियोग पर शुरुवात।

7. सं.रा. अमरीका में राष्ट्रपति चुनाव, जार्ज डब्ल्यू अल गोरे प्रमुख प्रतिद्वंदी; स्पाइस गर्ल्स की तीसरा 'फारएवर' जारी।

8. अमरीकी राष्ट्रपति चुनावों में अंतिम परिणामों वे फ्लोरिडा में पुनः मतगणना; कनाडा के उपन्यास लेखक मा को उनके उपन्यास 'दी ब्लाइंड एसेसिन' के लिये वुकर स हिलैरी क्लिंटन न्यूयार्क से सीनेट का चुनाव जीतीं; द अफ्रीका के नार्थ ईस्ट रैंड डाग यूनिट के 6 पुलिस कर्मियों कुत्तों के प्रशिक्षण देने के नाम पर दो वर्ष पहले अश्वेत संदि अवैध अनिवासियों पर कुत्तों से क्रूरता पूर्वक आक्रमण के दृश् टी.वी. पर दिखाये गये।

9. अमरीकी राष्ट्रपति चुनावों में अनिश्चितता जारी, कम अंतर से जीत रहे वुश की फ्लोरिड़ा में हाथ से वोटों की गिनती के वाद जीत का अंतर और घटा।

10. भारत, म्यानमार, कंवोडिया, लाओस और थाइलैंड के मंत्रियों का मेकांग–गंगा ग्रुपिंग वियनटाने घोषणापत्र को जारी करने के लिये वनाया गया; अमरीकी राष्ट्रपति चुनावों में हजारों वाहर के मतों की गणना से परिणाम आने में सप्ताह लग सकता है लेकिन अदालती कार्रवाई से परिणाम में और देर हो सकती है; इजराइल के प्रधानमंत्री वारक फिलिस्तीनी नेता से वातचीत की शुरुवात के लिये आशान्वित; वंगलादेश का टेस्ट क्रिकेट में प्रवेश।

13. न्यूयार्क की सीनेट श्रीमती हिलैरी क्लिंटन भारत की इच्छुक; इजराइल के प्रधानमंत्री वारक ने कहा कि हिं परिचम एशिया का समाधान संभव नहीं है।

14. अमरीका ने पहली वार मुस्लिम त्योहार पर ईद मुवार का डाक टिकट जारी किया; दोहा में संपन्न शीर्ष इस्लामी दे की वैठक में पाकिस्तान व हुर्रियत कांफ्रेंस द्वारा काश्मीर मु को उठाने की कोशिश नाकामयाव।

15. अमरीकी राष्ट्रपति चुनावों में फ्लोरिडा की फेडरल अदालत ने पाम वीच काउंडी में हाथ से की जा रही गिनती को रोकने की रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार जार्ज डब्ल्यू वुश की अपील को खारिज कर दिया; फिजी के उच्च न्यायालय ने भारतीय मूल के अपदस्थ प्रधानमंत्री महेंद्र चौधरी की सरकार को वहाल करने का आदेश दिया, सेना ने इस फैसले का विरोध करने का निश्चय किया।

16. फ्रांस में पेरिस के निकट पहले आनुवांशिक रोगयुक्त शिशु का जन्म।

17. फ्लोरिडा की एक अदालत ने अल गोर की याचिका जिसमें हाथ से हुए वोटों की गिनती को शामिल करने की मांग थी को ठुकरा दिया।

18. फिलीपींस में राष्ट्रपति एस्ट्राडा के विरुद्ध सड़कों पर प्रदर्शन।

19. जापान में विपक्ष ने प्रधानमंत्री मोरी पद छोड़ने का दवाव वढ़ाया; ब्रिटेन के प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर रूस की के साथ विशेष वैठक।

अनुक्रमणिका

र

ल

व